পণ্ডিত শ্রী গোবিন্দ ঝা
অর্চা ও চর্চা

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा

[Pandit Govind Jha Felicitation Volume]

प्रधान सम्पादक

प्रो. श्री आनन्द मिश्र

सम्पादक मण्डल

श्री गोपाल जी झा 'गोपेश'
डा. श्री हरिनारायण मिश्र
श्री धर्मनाथ झा

प्रबन्ध सम्पादक

डा. श्री रमानन्द झा 'रमण'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा

[Pandit Govind Jha Felicitation Volume : by a board of editors]

© पण्डित श्री गोविन्द झा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, पटना

प्रकाशन : पण्डित श्री गोविन्द झा अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
C/o फ्लैट नं. 13, आर. बी. स्टाफ क्वार्टर्स, राजेन्द्रनगर, पटना-800 016

प्राप्तिस्थान : श्री नन्दन
216, राजवंशीनगर, पटना 23; दूरभाष 284265.

मूल्य : 700 टाका (साधारण)
1000 टाका (पुस्तकालय)

प्रकाशन-वर्ष : 1997 ई.
1919 शक

कुलपृष्ट : 474

आवरणशिल्पी : श्री निर्मलेन्दु कुमार झा

फोटो कम्पोजिंग 1. एक्मे कम्प्यूटर, डी. एन. दास लेन, पटना
2. एम. एस. कम्प्यूटर, लवकुश टावर, पटना
3. बी. के. कम्प्यूटर, खाजांची रोड, पटना

मुद्रक : श्री स्वस्तिका मुद्रणालय, कदमकुआँ, पटना–3

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा

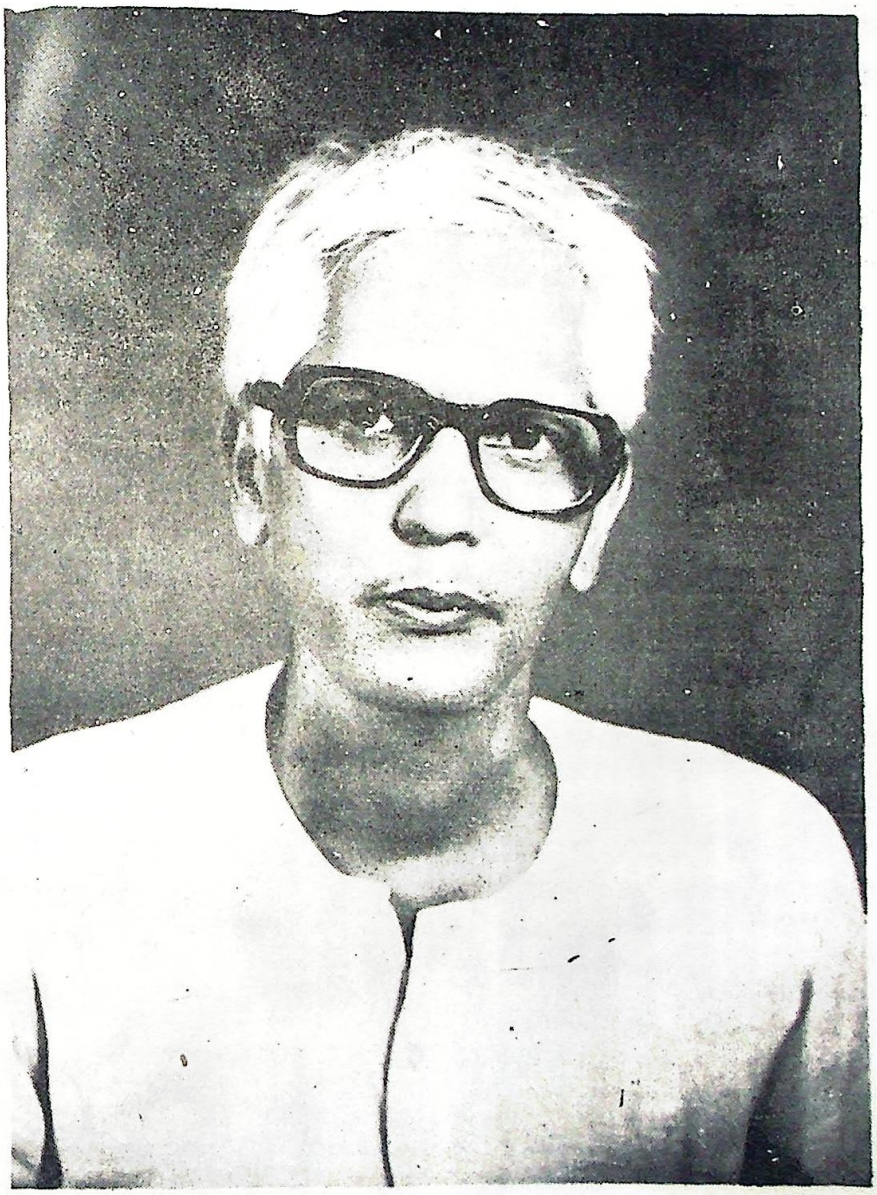

पं. श्री गोविन्द झा :-अर्चा ओ चर्चा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

परामर्श

पण्डित श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'
पण्डित श्री आद्याचरण झा
डा. श्री देवकान्त झा
डा. श्री किशोरनाथ झा
डा. श्री हेतुकर झा
डा. श्री जगदीश मिश्र
डा. श्री शशिनाथ झा
श्री मोहन भारद्वाज
श्री अजित कुमार ठाकुर
डा. श्री सत्यनारायण मेहता
डा. श्री मेघन प्रसाद
श्री सारस्वत

ऋत्विक्

श्री राजनन्दन लाल दास
डा. श्री भीमनाथ झा
श्री केदार कानन
श्री सियाराम झा 'सरस'
श्री चन्द्रेश
श्री भक्तीश्वर झा
प्रो. श्री विनोद कुमार मिश्र
डा. श्री शैलेन्द्र कुमार झा
डा. श्री शिवशंकर श्रीनिवास
डा.श्री गणपति नाथ झा
श्री रमेश
श्री ललित कुमार झा
श्री रमानाथ मिश्र
श्री गंगानाथ झा
श्री पुरुषोत्तम मिश्र
श्री अशोक
श्री जीवेन्द्रनाथ झा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कथय की ?

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अर्चा ओ चर्चा किएक ?	प्रधान सम्पादक	
2.	Why this adoration and appreciation ?	Chief Editor	
3.	सङोरक अनुभव	प्रबन्ध-सम्पादक	

(क) चित्र ओ चरित्र

1.	शुभाशंसनम् (संस्कृत)	पं. श्री श्यामसुन्दर झा	1
2.	गोविन्दाय नमो नमः (संस्कृत)	श्री यात्री	1
3.	शुभाशंसा (मैथिली)	पं. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'	1
4.	शुभाशंसा (मैथिली)	कविवर आरसी प्रसाद सिंह	2
5.	शुभाशंसा (हिन्दी)	श्री विष्णु प्रभाकर	2
6.	शुभाशंसनम् (संस्कृत)	पं. श्री आद्याचरण झा	3
7.	गोविन्द-प्रशस्तिः (संस्कृत)	अभिराजो डा. श्री राजेन्द्र मिश्रः	3
8.	अभिनन्दनम् (संस्कृत)	डा. श्री उमारमण झा	4
9.	श्री गोविन्दाभिनन्दम्	डा. श्री शशिनाथ झा	4
10.	मैथिलीक शान	श्री फजलुर रहमान हाशमी	5
11.	हाथ दहिना	पं. श्री शम्भुनाथ झा	5
12.	सप्त स्वर	डा. श्री हीरानाथ झा	6
13.	हे मिथिला केर विश्वास	श्री मार्कण्डेय प्रवासी	6
14.	जीवन-यात्रा––करैवेति करैवेति	डा. श्री रमानन्द झा 'रमण'	7
15.	मैथिली साहित्यक विकासमे पं. श्री गोविन्द झाक परिवारक योगदान	डा. श्री जगदीश मिश्र	18
16.	व्यक्तित्त्व अलौकिक तथा कृतित्त्व अनन्यसाधारण	आचार्य पं. श्री परमानन्दन शास्त्री	22
17.	सहज व्यक्तित्त्व	श्री बाबू साहेब चौधरी	24
18.	श्री गोविन्द जी	पं. श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	25
19.	मैथिलीक सौभाग्य श्री गोविन्द बाबू	डा. श्री जयंकान्त मिश्र	26
20.	चिन्तनशील लेखक	आचार्य पं. श्री आद्याचरण झा	28
21.	सूर्यक समक्षहु भासमान	पं. श्री हीरानन्द झा 'शास्त्री'	28
22.	एक विलक्षण व्यक्तित्त्व	डा. श्री मदनेश्वर मिश्र	31
23.	अपन समानकर्मीक बीच	श्री गोपालजी झा 'गोपेश'	32
24.	प्रगतिशील पंडित	श्री विजयनाथ ठाकुर	35
25.	हमर पंडित जी	श्री धूमकेतु	38
26.	आदर्शपुरुष पं. गोविन्द झा	डा. श्री गंगानाथ झा 'बुझनुक'	39
27.	पंडित जी	श्री जीवकान्त	40
28.	मैथिलीक सफल साधक पं. गोविन्द झा	श्री कीर्तिनारायण मिश्र	41
29.	श्री गोविन्द बाबू अपन कपार अपने लिखल	श्री मन्त्रेश्वर झा	44
30.	पं. गोविन्द झा–एक अनुवादक-प्रशिक्षक	श्री राधावल्लभ कण्ठ	46
31.	रोटी, लताम, पूल	श्री बुद्धिनाथ झा	47
32.	पं. गोविन्द झा हमरा नजरिमे अजातशत्रु	श्री देव	49

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

33. कहियो जुनि थाकथि गोविन्द बाबू	श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद'	51
34. नारी-जागरणक अग्रदूत	श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'	55
35. उदार व्यक्तित्व	श्री पूर्णेन्दु चौधरी	56
36. अपन औंठा दान कए सकैत छथि	श्री नवीन चौधरी	58
37. सगर राति दीप जरए आ श्री गोविन्द झा	श्री अशोक	60
38. युव-चेतनाक दीपक लाबन	श्री सारस्वत	65
39. भाइक भ्रातृप्रेम	पं. श्री माधव झा	66
40. शब्दशास्त्री	डा. श्री शिववंश पाण्डेय	67
41. विशिष्ट अनुवादक	डा. (श्रीमती) प्रतिभा राय	69
42. साहित्य साधक	डा. (श्रीमती) मिथिलेश कुमारी मिश्र	70
43. पानी की तरह तरल और मुलायम व्यक्तित्त्व	श्री गंगाधर प्रसाद श्रीवास्तव	71
44. स्नेहमूर्ति पण्डित जी	श्री नसीमुद्दीन अंसारी	72
45. सूत्रपात	श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय	73
46. Pandit Govind Jha : A Successful Translator	Sri Sushil Jha	74

(ख) दृष्टि ओ सृष्टि

1. पं. श्री गोविन्द झा एवं मैथिली भाषाध्ययन	प्रो. श्री आनन्द मिश्र	1
2. गद्यकार पं. श्री गोविन्द झा	डा. श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश'	3
3. वैयाकरण पं. श्री गोविन्द झा	डा. श्री नवीन चन्द्र मिश्र	7
4. मैथिली व्याकरण आ पं. श्री गोविन्द झा	प्रो. श्री विष्णुकान्त झा	9
5. गोविन्द झाक मैथिली शब्दकोश पढ़ला सताँ	डा. श्री रामावतार यादव	11
6. सम्पादन-कला आ पण्डित श्री गोविन्द झा	प्रो. श्री किशोरनाथ झा	17
7. सम्पादक गोविन्द झा	श्री मोहन भारद्वाज	20
8. मैथिली नाटकक विकासमे पं. गोविन्द झाक योगदान	डा. श्री प्रेमशंकर सिंह	24
9. गोविन्द झाक बसात : एक पुनर्मूल्यांकन	श्री छत्रानन्द सिंह झा	32
10. पं. गोविन्द झाक नाटकमे लोकतत्व	श्री कुणाल	35
11. नाटक बसातमे रसनिष्पत्ति	श्री अजीत मिश्र	37
12. पं. श्री गोविन्द झाक नाटकक पात्र	डा. (श्रीमती) इन्दिरा झा	40
13. पं. गोविन्द झाक नाटकक मंचीय आकलन	वनदेवीपुत्र श्री भवनाथ	42
14. पं. श्री गोविन्द झाक कथा-दृष्टि	श्री रमानन्द रेणु	45
15. कथाकार पं. श्री गोविन्द झा	डा. श्री शिवशंकर झा 'कान्त'	50
16. पं. श्री गोविन्द झाक किछु स्मरणीय कथा	डा. (श्रीमती) नीरजा रेणु	52
17. विधात्मक तोड़फोड़ करैत गोविन्द झाक कथा-शिल्प	डा. श्री देवशंकर नवीन	54
18. मातृभारतीक मनीषी काव्यकार पं. गोविन्द झा	डा. श्री देवकान्त झा	57
19. पं. श्री गोविन्द झाक कविताक विषयवस्तु	डा. श्री अमरनाथ झा	62
20. पं. गोविन्द झाक बाल-कविता	श्री कृष्णमोहन मिश्र	65
21. कवि रूपमे पं. श्री गोविन्द झा	प्रो. श्री राजकुमार झा	67
22. विद्यापतिक आत्मकथा : चरित्र-चित्रण आ भाषा-शिल्प	प्रो. श्री भैरवेश्वर झा	69
23. विद्यापतिक आत्मकथा	डा. श्री तारानन्द वियोगी	73

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

24. विद्यापतिक आत्मकथामे नव बोध	श्री भवनाथ भवन	78
25. साहित्येतिहासमे पं. गोविन्द झा	प्रो. श्री विनोद कुमार मिश्र	80

(ग) साध्य आ आराध्य

1. Mithila School and Law of Privacy	Dr. Govind Mishra	1
2. Constituent Structure in Maithili and Discourse Strategies	Dr. Yogendra P. Yadava	10
3. Problems of Unscheduled National Languages	Dr. Sureshwar Jha	16
4. मैथिल अस्मिता : किछु विचारणीय बात	प्रो. श्री हेतुकर झा	18
5. क्षेत्रीयता, भाषा आ राजनीति	प्रो. श्री शंकर कुमार झा	21
6. मिथिलाक राजनीतिक शोषण	श्री जटाशंकर दास	24
7. आधुनिक मिथिलाक किछु मैथिल पंडितक आप्रवासन एवं ओकर परिणाम	डा. प्रो. श्री जगदीश चन्द्र झा	27
8. मिथिलाक दुइ रामायणमे मौलिक उद्‌भावना	डा. श्री रामचन्द्र मिश्र	34
9. देवघर परिसरक मैथिली ओ मैथिलीक साहित्यकार	डा. श्री मोहनानन्द मिश्र	38
10. मैथिली जागरण ओ पं. श्री गोविन्द झाक परिसर	पं. श्री जितेन्द्र नारायण झा.	43
11. पण्डित श्री गोविन्द झाक परिसरक रंगमंचीय क्रियाकलापक क्रम-विकास	डा. श्री यशोदानाथ झा	48
12. मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे काशीक योगदान	डा. श्री भीमनाथ झा.	56
13. धेमुराञ्चलमे पल्लवित मैथिली साहित्य	श्री केदार कानन	61
14. मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर'क योगदान	डा. श्री सत्यनारायण मेहता	78
15. मिथिलाक सांस्कृतिक लोकचित्रकला	श्री मनोज कुमार मिश्र 'मनु'	84
16. मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल बलिराजगढ़	डा. श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'	88
17. मैथिलीक व्रतकथा : सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति	डा. श्री ताराकान्त मिश्र	90
18. मैथिलीक कथाक भाषा-शैली	डा. श्री फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'	95
19. आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्प	डा. श्री नरनारायण राय	98
20. मैथिली प्रसार प्रभाव : सन्दर्भ उड़ीसा	डा. श्री बदरी नारायण झा	103
21. नेपाली : नेवारी : मैथिली अन्तःसम्बन्ध	डा. श्री धीरेन्द्र	104
22. नेपाल मैथिली पत्र-पत्रिका	डा. श्री रेवतीरमण लाल	105
23. नेपालक सरकारक मैथिली नीति आ लोकक संलग्नता	श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि	108
24. मैथिली आ बंगला रंगमंच : अन्तःसम्बन्ध	श्री रामलोचन ठाकुर	111
25. मिथिलांचलमे कृषि-उद्योगक संभावना	डा. श्री मदन मोहन मिश्र	114
26. मैथिली फोल्डर पत्रिका : स्थिति आ संभावना	श्री राज	117
27. ग्रामीण रंगमंच : बाधा आ संभावना	श्री शैलेन्द्र आनन्द	120
28. मैथिली रङ्गमंच आ नाटक	डा. श्री शिवशंकर श्रीनिवास	123
29. मिथिलांचलक औद्योगिक बर्चस्व	डा. श्री शैलेन्द्र कुमार झा	128
30. उच्चतर शिक्षामे मैथिलीक प्रवेश ओ वर्त्तमान स्थिति	डा. श्री जगदीश मिश्र	142
31. मैथिल विद्वानक चमत्कार	डा. श्री उमारमण झा	145
32. मैथिल जीवनमे कुश	श्री सतीश चन्द्र झा	147

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

(घ) लोढ़ल फूल

1. महावैयाकरण दीनबन्धु झा कृत मिथिलाभाषाक प्रसङ्ग परामर्श	सम्पा. डा. श्री शशिनाथ झा	1
2. अर्थ आओर अर्थ-विकार	प्रो. श्री उमानाथ झा	12
3. नऽव घर खसय पुरान घर उठय	प्रो. श्री बैद्यनाथ सरस्वती	18
4. उत्तरभारतीय शास्त्रीय गायन–पक्का गायन	पं. श्री रामाश्रय झा	20
5. कीर्तिलताक प्रासंगिकता	डा. श्री बदरीनारायण झा	22
6. तरौनी गामक परमहंस श्री विष्णुपुरी	डा. श्री रामचन्द्र मिश्र	23
7. पण्डित रमानाथ झा	डा. श्री दामोदर ठाकुर	27
8. शाक्त आगममे कामकलातत्त्व	डा. श्री किशोरनाथ झा	29
9. आर्य संस्कृति और विहार	विद्यावाचस्पति डा. श्री रंजन सूरिदेव	32
10. विमानकाव्य : बीसवीं शती की नवीन संस्कृत काव्य-विधा	डा. श्री राजेन्द्र मिश्र	36
11. असम तथा मिथिला का सांस्कृतिक समागम	डा. श्री ताराकान्त झा	41
12. कहानी जो मैने जानी	डा. श्री गुलावदास ब्रोकर	45
13. काव्यानुवाद की मूल मनोवैज्ञानिक समस्या आस्वाद और अनुवादमे कशमकश	डा. श्री रणवीर रांग्रा	49
14. पुनर्जन्म : शोध के नये आयाम : भारतीय ज्योतिष के आलोकमें	डा. श्री उमेशदत्त भट्ट	52
15. मिथिलाया नैयायिको गोविन्दठक्कुर :	डा. श्री रामजीठाकुर	56
16. भागवती मिथिलामितिः	डा. श्री बटोही झा	59
17. महाकविमङ्कदृष्ट्या कवेस्तत्काव्यस्य च स्वरूपविमर्शः	डा. श्री रामकिशोर झा	62
18. My concern for art	Dr. K. Shiva rama Karanth	65
19. Democracy in the Mahabharata	Prof Anant Lal Thakur.	66
20. Bankimchandra Chatterji — A tribute to the greatest novelist of Bengal	Prof. Nilratna Sen.	70
21. On Mediating Between English and Kannada	Dr. Ram Chandra Sharma.	73
22. Word and Meaning : Identical ?	Prof V. N. Jha	76
23. Bandhu relation in Utkala School of Dharmashastra	Prof Braja Kishore Swain	81
24. Witch Doctor and Nepali Society	R. P. Lama	87
25. The Satra Institution of Asssam	Prof Keshavananda Deva Goswami	89

परिशिष्ट

1. चित्रावली–	1	5. पुरस्कार-प्रशस्ति-अभिनन्दन	23
2. साहित्य-मनीषीक दृष्टिमे	13	6. समाचारपत्रमे	33
3. प्रकाशन–मूल ओ अनूदित	15	7. Contributors	41
4. अनूदित रचनाक बानगी	19	8. याज्ञिक	46

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अर्चा ओ चर्चा किएक ?

रुचिभिन्नता मनुष्यक साधारण धर्म थिक। जतेक लोक ततेक रुचि। ताहूमे वैचित्र्य जे प्रत्येक मनुष्यक रुचि सभ खन समान नहि। सतत बदलैत। एक व्यक्तिक कतेक रुचि भए सकैछ से निश्चित नहि। मनुष्यमात्रमे एहि रूपक विशेषता देखल जाइछ। तखन स्वाभाविक जे जाहि व्यक्तिमे जतेक विशेषता तनिका पर ततेक लोकक आकर्षण। जकरामे विशेष आकर्षण से व्यक्ति ततेक चर्चित। यदि वैशिष्ट्यक मात्रा बेशी तँ ओहन व्यक्ति मात्र चर्चिते नहि, अर्चितो। भारतीय वाङ्मयक एहने एक गोट विशेष व्यक्तिक नाम थिक पं. श्री गोविन्द झा। एक व्यक्तिमे एतेक वैशिष्ट्य साधारणतः दुर्लभ।

एक एहन परिवारमे जन्म जे अपन सारस्वत-साधनासँ समाजमे विशिष्ट स्थान बनओने अछि, जतए साहित्य, शास्त्र एवं कलाक त्रिवेणी प्रवाहित अछि, अपन सदस्यकेँ सतत प्रेरणा दैत रहलैक अछि। पं. श्री गोविन्द बाबू अपन परिवारक पाण्डित्य-परम्पराक पालन करैत ओकरा नव विस्तार दैत आगाँ बढ़एबाक प्रयास करैत रहलाह अछि। पूज्य पिता एवं अग्रजक शास्त्र एवं साहित्य-साधनासँ प्रेरित होइत श्री गोविन्द बाबू शास्त्र एवं साहित्य दूनूक साधना करैत प्रगतिक पथ पर अग्रसर छथि।

एहन व्यक्तिक प्रति यदि केओ आकृष्ट होइत अछि तँ स्वाभाविके। प्राचीन न्यायक शब्दावलीमे एक पारिभाषिक शब्द अछि 'कथा', जकर तीन भेद अछि–वाद, जल्प एवं वितण्डा। एहिमे 'वाद'क स्थान उच्च अछि, कारण उचित वादसँ यथार्थक ज्ञान होइत छैक। तेँ श्री गोविन्द बाबूक कृतित्त्व एवं व्यक्तित्त्वक प्रसंग किछु चर्चा करबाक विचार साहित्य-मण्डली मे भेल जकर परिणाम अछि *पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा*।

चर्चाक हेतु पं. श्री गोविन्द बाबूक कृतित्त्व एवं व्यक्तित्त्व पर प्रकाश देल गेल अछि। जे मैथिली भाषा ओ साहित्यक महलक चारू खाम्ह–कोष, व्याकरण, छन्द एवं अलंकार–केँ मजगूत कएलक, जे अपन नाटक, कथा, कविता एवं उपन्यासादि लिखि मा मैथिलीक भण्डारकेँ समृद्ध कएलक, जे सतत अपना माटि-पानिसँ सटल रहैत अपना चारू कातक साहित्यिक गतिविधि देखैत अपन मातृभाषाक उत्थानक दिशामे सतत प्रयत्नशील रहल, तकर मात्र चर्चा पर्याप्त नहि बूझि ओहन व्यक्तिक अर्चा सेहो उचित बूझि पड़ल। अर्चाक हेतु अनेक सामग्रीक आवश्यकता; आ' मोन पड़ल कविचूड़ामणि 'मधुप'क ई पंक्ति–

नहि अक्षत अछि अक्षत भावक, सम्भव न अरसमे रसभावक।
छी विमन सुमन अथ लैब कोना, पुनि पूजा की यदि त्रुटि एतेक॥

किन्तु यदि विचार नीक हो तँ प्रयास कएला पर सहयोगो भेटिए जाइत छैक। चारू कात रचनाक हेतु पत्रव्यवहार प्रारम्भ भेल तथा सम्पादक-मण्डलकेँ भारतवर्षक प्रत्येक कोनक अतिरिक्त नेपालहुसँ रचना भेटए लगलैन्हि। देश-विदेशक लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान-लेखकलोकनिक रचनासँ उत्साहित भए कार्य आगाँ बढ़ल, जकर फलाफलक रूपमे ई पोथी समक्ष अछि। अनेक विशिष्ट रचना विलम्बसँ प्राप्त भेल, जकर समावेश अपरिहार्य कारणेँ नहि भए सकल, तकर हार्दिक खेद अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जे व्यक्ति बहुमुखी प्रतिभासँ सम्पन्न अछि, बहुभाषाविद् अछि, साहित्यक अनेक विधामे अपन भावाभिव्यक्ति करैत अछि, तकर चर्चा एवं आलोचना तँ होइते रहैत छैक, किन्तु ओ व्यक्ति अपन कर्मपथपर तथापि अग्रसर होइते रहैत अछि। इएह थिकैक ओकर महत्ता जे अनका ओकर अर्चा करबाक दिशामे प्रेरित करैत छैक ।

जँ हमरालोकनिक चरित-नायक स्वयं बहुभाषाविद् छथि, बहुआयामी साहित्यकार छथि, शास्त्रकार छथि, तँ हमरालोकनिकेँ संस्कृत, मैथिली, अंग्रेजी, हिन्दी सभ भाषाक रचना प्राप्त भेल अछि जकरा एहि पोथीमे समावेश कएल गेल अछि, जकर रसास्वादन सुधीवर्ग अवश्य करताह ।

पोथीमे चेष्टा राखल गेल अछि जे लेखशैली जनिक जे छैन्हि तकरा तहिना रहए दी तथापि यदि किनकहुमे किछु परिवर्त्तन भए गेल होन्हि तँ तदर्थ क्षमायाचना करैत छी ।

एहि पोथीक प्रस्तुतिक हेतु जे सभसँ बेशी सक्रिय रहलाह अछि से थिकाह डा. श्री रमानन्द झा 'रमण', जनिक अहर्निश श्रमक फलस्वरूप ई कार्य सम्पन्न भेल अछि । विद्वान लेखकलोकनि यदि समय पर रचने नहि पठबितथि तँ सभ योजना मोनेमे रहि जाइत, तेँ सभ रचनाकारक प्रति हार्दिक कृतज्ञता-ज्ञापन ।

अर्चाक कोनो सीमा नहि । जकरा जएह जुड़ैत छैक ताहीसँ पूजा-अर्चा करैत अछि । ओहिमे भावनाक प्राबल्य होइत छैक । सामग्रीक वैविध्य तँ ओकर शृंगार थिकैक । तथापि यथाभाग नैवेद्य लए उपस्थित भेल छी । केहन सामग्रीक संकलन भेल अछि से तँ रसज्ञ पाठके कहताह । यदि एहि ग्रन्थक किछुओ उपयोगिता हुनका बूझि पड़तैन्हि तँ सम्पादक-मण्डल सन्तुष्ट होएत ।

त्रुटि एहिमे अनेक भेटतैन्हि पाठककेँ । किछु अनुभवक अभाव, किछु आलस्य आदिक कारणेँ बहुतठाम त्रुटि भेल छैक । ताहि हेतु क्षमा-याचना छाड़ि आन उपाये की ?

प्रो. आनन्द मिश्र
प्रधान सम्पादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Why this adoration and appreciation ?

Diversity in interest is inherent in human nature. Every one has his own interest. And curiously enough even one's own interest does not remain the same all the time; rather it is always tickling. Nobody knows how many interests one man can have. A man becomes as much interesting as many interests he cultivates, and naturally he is also appreciated to that extent. And the more appreciation one deserves the more adoration he commands. In the realm of the Indian intelligentsia, such a name is Pandit Shri Govind Jha. It is hard to find a match of Pandit Jha in respect of the variety of interests.

Pandit Jha comes from a family which is known for academic cultivation, and being the holy confluence of philosophy, literature and art, has been inspiring its off-springs all the time. Following the tradition of erudite scholarship of his family Pandit Shri Govind Jha came forward to carry on and enrich the same. Equipped with the scholarship and literary heritage of his father and his elder brother respectively Pt Govind Jha has been running on the double track of scholarship and literary art.

If anybody is attracted to such a person, it is quite natural. In the terminology of the old school of Indian logic, there is a term कथा (which may be rendered in English as *discussion* or *deliberation*) consisting of three components namely वाद (argument), जल्प (disputation) and वितण्डा (aimless controversy). Of these the first i.e. वाद is of the foremost importance, as only this leads to the appreciation of the fact. So, a set of litterateurs once resolved to have a वाद (चर्चा) for appraising the works and life of Pt. Shri Govind Jha, which now has culminated to the *Pandit Shri Govind Jha Archa O Charcha (पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा).*

The appreciation is limited to the evaluation of the works and life of Pandit Shri Govind Jha. But, for a man, who raised all the four pillars of language and literature namely dictionary, grammar, rhetorics and prosody, who enriched the store of Maithili literature with his dramas, short stories, poems, novels and the like, who constantly remained in warm touch with his native soil watching and overseeing the literarary activities around him, and remained all the time busy with enriching his mother tongue, mere चर्चा (appreciation) will not be enough; for him अर्चा (adoration) is also a must. But adoration cannot be done with bare hands. It needs something tangible, as the Poet Laureate Kashi Kant Mishra 'Madhup' has rightly said :

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

I lack the grains of rice unbroken and fair.
I lack befitting heart devoid of care.
My mind is lost in dirt never to find
How can I worship now one of your kind ?

Never-the-less, if you endeavour for a noble cause co-operation is sure to come up. We started correspondence far and wide for obtaining suitable articles and got appreciable response from all corners of India as well as Nepal. Encouraged with the success of getting articles from a number of native and foreign scholars of high esteem, we proceeded on and now the result is before you. Unfortunately, some articles of exquisite quality reached late depriving us of the benefit of their utilisation. Now, we can only regret for the same.

A polymath, polyglot and plorific writer of versatile genre like Pt, Shri Govind Jha, is often talked of, discussed and even criticised. But heedlessly, he goes on and on in his usual way. Here lies his greatness which prompts others to adore him.

Befitting the versatile genius of Pt. Jha as described above, articles on variegated subjects in several languages such as Sanskrit, Maithili, English and Hindi have been accommodated of various disciplines and tastes.

So for as, the way of spelling (specially in Maithili) is concerned, our policy was to retain the same as adopted by the respective authors. If. however, any undue interference is found committed, we beg apology for the same.

The credit of producing this voluminous work goes to Dr. Shri Ramanand Jha 'Raman' who was the most active, and managed the work throughout intelligently as well as diligently. We sincerely thank our contributors, but for whose valuable articles all our plan would have collapsed.

There is no limit in adoration. Any body may pay homage with whatever meagre he can afford. The only thing essential in adoration is the sense of devotion. Plethora of offerings is only a pomp and show. So, we appear before you with what we could afford. The quality of the things we have produced may be judged only by the readers blessed with the best mind and heart..

Prof. Anand Mishra

Chief Editor

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सङोरक अनुभव

पण्डित श्री गोविन्द झा अर्चा ओ चर्चाक हेतु आलेख संग्रहक क्रममे मोटा-मोटी तीन तरहक प्रतिक्रियाक अनुभव भेल। मैथिलीसँ भिन्न भाषाक लेखक, जाहिमे संयोगवश किछु मैथिल विद्वानो छथि, समय-सीमामे अपन रचना पठा देल अथवा पूर्व निर्धारित व्यस्तताक कारणेँ शुभकामनाक सँग असमर्थता प्रकट कएल। मैथिलीक अधिकांश रचनाकार प्रसन्नता प्रकट कएल। सामान्यतः तीन-चारि तगेदाक बाद हुनक आलेख भेटि गेल। मैथिलीक किछु रचनाकार अनुरोधपत्र पाबि ततेक स्तब्ध भए गेलाह जे आठ-दश बेर मोन पाड़लो पर ने तँ असमर्थता प्रकट कएल आ ने दू आखर लिखब प्राथमिकता पाबि सकल। कचोटक ई बात जे एहिमे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिलीक किछु साहित्यकारो छथि।

पं. झाक व्यक्तित्त्व संस्थानी नहि अछि। ने ओ आधुनिक युगक सत्ताक केन्द्रसँ सटले रहलाह। एहन स्थितिमे कोनो लक्ष्मी-पात्रक संरक्षण एहि सारस्वत यज्ञकेँ प्राप्त भए सकैत, कल्पनो नहि कए सकैत छलहुँ। पं. झा एक सारस्वत साधक छथि आ सारस्वत साधकक स्थान सत्ताक केन्द्रक निकट नहि, कोटि-कोटि भाषा-साहित्य एवं संस्कृति प्रेमीक हृदयमे संरक्षित रहैछ। एही हेतु 'नगरी नगरी' याचनापत्र पठाएब आ 'द्वारे-द्वार' प्रस्तुत होएब एकमात्र विकल्प उचित बूझल गेल। एहि मे आशानुरूप सफलता भेटल, किन्तु किछु विलक्षण अनुभवो भेल, जे प्रथम चरणक अनुभवसँ सर्वथा फूट अछि।

किछु व्यक्ति सांस्कृतिक-सामाजिक महत्त्वक अनुष्ठानमे केन्द्रस्थ रहले पर सहयोग कए सकैत छथि। जँ केन्द्रस्थ नहि राखल गेल तँ भङठा सेहो सकैत छथि। साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थामे सक्रिय व्यक्ति एहि आतंकसँ निष्क्रिय बनल रहलाह जे हुनक अपन बाजार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ि जाएत। किछु लोक पं. झाकेँ वर्त्तमान भारतीय वाङ्मयक एक विराट अक्षरपुरुष नहि, विशेष कुल-गोत्रक मानल, तेँ अपेक्षित सहयोगसँ वंचित रहलहुँ। दोसर दिस पं. झाक मूल-गोत्रक साधन-सम्पन्न एवं व्यापक सम्पर्क-क्षेत्रबला व्यक्ति, एहि हेतु अपन कर-कमल छीपि लेल जे, छवि बिगड़ि जाएत। मैथिलीक किछु लेखकक नीति रचनहिटासँ सहयोग करब अछि; अनुष्ठानक सफलता लेल कौखन अन्यो प्रकारक सहयोगक प्रयोजन होइछ से प्रायः ओ नहि मानैत छथि। ई सभ बाधा नहि आएल रहैत तँ संभव थिक सम्पर्कक क्षेत्र बढ़एबामे अपेक्षाकृत कम समय लगैत। किन्तु पंडित झाक व्यक्तित्त्व ततेक निर्मल आ मैथिली भाषा साहित्यक विकासमे हुनक योगदान ततेक बेशी अछि जे सामान्य साहित्यानुरागीक द्वारि पर सँ खाली हाथ घुमैए नहि पड़ल, भलहि मैथिली भोगीवर्ग टारैत रहल होथि।

एहिमे जे किछु अछि पं. झाक व्यक्तित्त्व आ कृतित्त्वक आकर्षण, बृहत्तर समाजक शुभकामना एवं सहयोगक सुपरिणाम थिक आ जे किछु त्रुटि अछि से हमर अनुभवहीनता थिक।

हम डा. किशोरनाथ झा,डा. जगदीश मिश्र, डा. शशिनाथ झा, डा. सत्यनारायण मेहता, डा. मेघन प्रसाद, केदार कानन, डा. शिवशंकर श्रीनिवास, बुद्धिनाथ झा, सियाराम झा, 'सरस', 'चंद्रेश', डा. गणपतिनाथ झा, भक्तीश्वर झा, रमेश, विनोद कुमार मिश्र, डा. शैलेन्द्र कुमार झा, राजनन्दन लाल दास, डा. भीमनाथ झा, अशोक, ललित कुमार झा, रमानाथ मिश्र, गंगानाथ झा, पुरुषोत्तम मिश्र,जीवेन्द्रनाथ झा आदिक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे साधन जुटेबामे सहयोग कएल।

स्वस्तिका प्रेसक अधिष्ठाता श्री ललितेश्वर प्रसाद वर्मा आ हुनक पुत्र राहुलक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे एहि ग्रन्थकेँ सुरुचिपूर्वक मुद्रित करेबामे तत्परता देखाओल।

अन्तमे हम सद्यः दिवंगत अपन दू सहयोगी रचनाकार महाकवि आरसी प्रसाद सिंह एवं डा. गोविन्द मिश्रक आत्माक चिरशान्तिक हेतु मा मैथिलीसँ प्रार्थना करैत छी।

डा. रमानन्द झा रमण

प्रबन्ध-सम्पादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा :

अर्चा ओ चर्चा

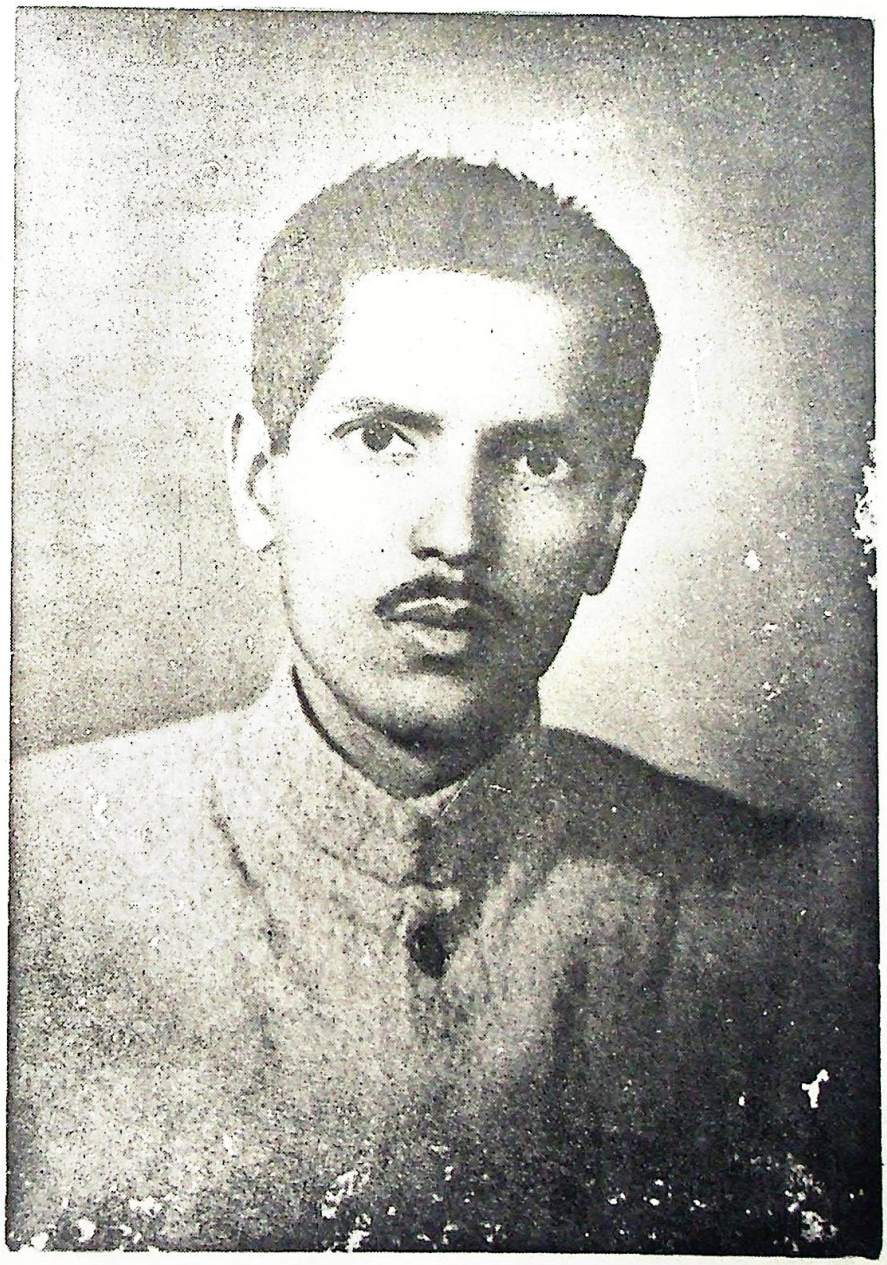

चित्र ओ चरित्र

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शुभाशंसनम्

❑ *पं. श्री श्यामसुन्दर झा*

अनिन्द्य चृन्दारक-वृन्द मौलि
मन्दार-माला-मकरन्द-विन्दुम् ।
विन्दन्नखेन्दुर्ददतां शिवन्ते
'गोविन्द' ! वन्दारुनुतो मुरारेः ।। 1 ।।

गुरुपुत्रः कनीयांश्च भ्राता सम्मन्यते भवान् ।
अतः शुभाशिषा नूनं वर्द्धनीयः सदा मया ।। 2 ।।

योग्यतां भवदीयान्तु श्रावंश्रावं मुदो मम ।
हृदये नैव सम्मानं लभते किमतः परम् ।। 3 ।।

दूरस्थितस्य भवतो वीक्षणं दुर्लभं मम ।
तथापि हृदये वासः केन संप्रति वार्य्यते ।। 4 ।।

मैथिलानान्तु विदुषां कीर्तिः संवर्द्धिता त्वया ।
धन्यवाद-प्रदाने तु न तृप्तिर्मम जायते ।। 5 ।।

गोविन्दाय नमो नमः

❑ *श्री यात्री*

विद्याविद्योतितस्वान्तःकरणाय तपस्विने ।
बहुभाषानिविष्टाय गोविन्दाय नमो नमः ।।
निर्लोभायाल्पतुष्टाय विशोकाय सहिष्णवे ।
आडम्बरविहीनाय गोविन्दाय नमो नमः ।।
विकुण्ठाय प्रसन्नाय सुहृज्जनसमागमे ।
जिज्ञासुजनमित्राय गोविन्दाय नमो नमः ।।
निर्भीकाय वरेण्याय पैशुन्यध्वंसकारिणे ।
स्वतेजसैव दीप्ताय गोविन्दाय नमो नमः ।।
श्लोकचतुष्टयममलं रचितमिदं वैद्यनाथेन ।
यात्रीनाम्ना प्रथितं यस्य यशः को न जानाति ।।

◆

शुभाशंसा

❑ *पं० श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'*

गुरुवरेण्य पण्डितवर श्रोत्रिय
दीनबन्धुकेर तनुजन्मा ।
सहृद्-सुहृद् प्रिय जीवनाथ
कवि-बन्धुक छथि जे अनुजन्मा ।।
साहित्यिक उपवनक अद्यतन
कुसुमाकर गोविन्द विदित ।
तनिक करी अभिनन्दन हार्दिक,
होथु शतायु सुकीर्ति-कलित ।।
मलय बसात बहाय काव्य-
काननकें कयलनि सुरभित हन्त ।
गद्य पद्य अनवद्य, श्रव्य ओ
दृश्य विविधविध कृति विकसन्त ।।

ज्योतिरीश्वरक रत्न विभासित,
विद्यापतिक आत्मवृत्तान्त ।।
छन्द-बन्ध ओ कोष-व्याकृतिक
संस्कृत भाषा भाष्य नितान्त ।।
कथा-नवलिका प्रतिभा भास्वर,
मौलिक अनुवादहुक प्रशस्त ।
नव पुरान दुहु दिशा विभासित
रचना जनिक सरस विन्यस्त ।।
अभिनन्दन हित भाव-चन्दनक,
तिलक लगाय करी अभिषेक ।
सुमनक शुभ-आशंसा अर्पित
राखथु सत् साहित्यक टेक ।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शुभाशंसा

1

❑ *कविवर आरसी प्रसाद सिंह*

पं. गोविन्द झाकेँ अभिनन्दनग्रंथ समर्पित कए सम्मान देबाक शुभ समाचारसँ हमरा हार्दिक प्रसन्नता भए रहल अछि । ओहि ग्रंथमे किछु लिखबाक लेल हमरो सँ अनुरोध कएल गेल अछि । किन्तु, दीर्घकालीन अस्वस्थताक कारण हम ततेक दुर्बल छी जे लिखनाइ-पढ़नाइ छुटलेजकाँ अछि । डाक्टर मना कएने छथि जे कोनो मानसिक आयास नहि करी । किन्तु, एक तऽ गोविन्द बाबू हमर परम स्नेह-भाजन मित्र आ दोसर हुनक अभिनन्दन । एहि मंगलमय अवसर पर यदि किछु नहि कही आ चुप्पे रहि जाए तऽ इहो बड़ अनर्गल कथा होयत । तें दम साधि कए हम हुनक संदर्भमे कोनो विशेष निबंध तऽ नहि, एकटा हार्दिक उद्‌गार प्रकट कए रहल छी ।

मिथिला एवं मैथिलीक प्राचीन परम्परामे गोविन्द झाकेँ पाण्डित्य तऽ सहजे जन्मक संगे प्राप्त भेल होएतनि, किन्तु सहृदयता, सरसता एवं भावुकताक उन्मेष सेहो हुनका मे प्रचुर मात्रामे देखल जाइत अछि, जे हुनका कवि एवं साहित्यकार बनौने अछि । एहि प्रसंग मे हम विशेष की कहियौ, मैथिलीक अखिल संसार जनैत अछि जे मैथिली साहित्यक केहन नीक एवं अनवरत साधना ओ कएने छथि । आ एखनो पचहतरिम बरसक अवस्थामे कएने जा रहल छथि । हमरा जनिते मैथिली साहित्यमे एहन कर्मठ एवं सक्रिय रचनाकार कोनो दोसर नहि देखय मे अबैत अछि। एहि वर्ष साहित्य अकादेमी हुनका पुरस्कृत कएलक अछि । कविता, कहानी, समीक्षा, कोष, व्याकरण आदि अनेक विधाकेँ ओ अपन लेखनी द्वारा जीवन्त बनौन छथि । ओ हमरा सँ 10 बर्ख छोट छथि, तेँ सारस्वत संबन्धे हमर शुभाशीषक पूर्ण अधिकारी छथि। किन्तु कुल, संस्कार एवं विद्वतामे ततेक पैघ छथि, जे आशीषक स्थानमे नमस्कार करबाक योग्य छथि । एहि शुभ अवसर पर हम हुनका प्रति अपन हार्दिक शुभकामना प्रकट करैत छियनि जे ओ शतायु होथि आ एहिना सारस्वत साधनामे निरत रहथु ।

◆

2

❑ *पं. श्री विष्णु प्रभाकर*

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप सुप्रसिद्ध भाषाविद् और साहित्यकार पण्डित श्री गोविन्द झा की 75वें जन्म दिन के शुभ अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ निकालने की योजना बना रहे हैं । मुझे विश्वास है कि वह ग्रन्थ उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही होगा । इस शुभ अवसर पर मैं उनका अभिनंन्दन करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि वह अभी और हमारा मार्ग दर्शन करते रहेगें ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शुभाशंसनम्

❑ *पण्डित श्री आद्याचरण झा*

1.

यद् वेदवाचि निहितं हितकारि तत्त्वं,
यद् भौतिकं किमपि पश्चिमलोकवाचि ।
माध्वीकमस्ति यन्मम मातृवाचि,
सर्वं हि तद्गुणयुतेऽस्ति बुधे मदीये गोविन्दे ।

2.

एषैवामरभारती द्युतिमती नि:शेषविद्याप्रसू: ।
अज्ञानान्धतम:समूहमखिलं निर्वास्य चानन्ददा ।
सन्तापाधिकनाशने सुनिपुणा विद्युत्-श्रिया "मैथिली"
तस्यै संप्रददाति शक्तिमचलां 'गोविन्द' नामा बुध: ।

3.

ग्रन्थानपूर्वानसृजत् सदैष समादृता: सन्ति सुधीजनैस्ते
गोविन्दवैदुष्यमुदाहरन्तो यशांसि तस्यैव प्रकाशयन्ति।

4.

पञ्चसप्ततितमे वर्षे प्रवेशे भव्यभावुके
शतायु: कामये कीर्तिं नैरुज्यसहितं मुदा ।

◆

गोविन्दप्रशस्ति:

❑ *अभिराजो डा० श्री राजेन्द्र मिश्र*

1.

विश्वे वैदुष्यकीर्तिर्हिमकरधवला ख्यातवृत्ता यदीया
नव्यन्यायाऽधिगन्त्री श्रुतिविवृतिपरा नन्दिनी कोविदानाम्।
वैदेहीजन्मपूता जनकपदिगता तीरभुक्तिप्रसिद्धि:
गोविन्दस्तामवद्यां प्रथितवसुमतीं संश्रयन् वन्दनीय:

2.

नानाशास्त्र प्रवीणो गुणगणगरिमाऽवाप्तलोकाक्षतश्री:
सच्चारित्र्यप्ररोह: प्रथितसुजनत: शिष्यवाञ्छासुरद्रु: ।
गोविन्दो विद्वग्र्यस्सजयति मिथिलासाहितीसूत्रधार:
प्रीत्या राजेन्द्रमिश्र: प्रणतिसुखनतस्यस्य भव्यं व्यनक्ति

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अभिनन्दनम्

❑ *डा. श्री उमारमण झा*

1

विद्यावैभवभूषितो बुधवरः श्रीदीनबन्धोः सुतः
शास्त्रे दत्तमनाः सदा विजयते विद्वत्प्रियो धार्मिकः ।
लोकाचारविचारसारुकेशलो मान्यः सतामग्रणीः
जीव्याद्वर्षशतं कुटुम्बसहितः श्रीमान् स गोविन्द झाः ।।

2.

बाल्ये शास्त्रमधीत्य येन जलकाल्लब्धं यशो भूरिशो
ग्रन्था नैक विद्याश्च येन रचिता विद्वत्प्रिया हर्षदाः ।
साहित्ये च कृतश्रमो गुणनिधिमूर्त्तिर्विविकस्य यो
जीव्यात्सः सुचरित्रवान् भुवि सदा गोविन्दशर्मा बुधः।।

3.

मूर्धन्यो विबुधेषु शास्त्र रसिकः सन्मैथिलीसेवकः
काव्ये नाटकलेखने पटुतमः सर्वत्र सम्मानित : ।
विद्यावान् विनयी नितान्तसरलः ख्यातो जगन्मण्डले
धन्यः श्रीयुतमैथिलो मतिमतां श्रेष्ठोऽधुना पूज्यते ।

4.

धर्माचाररतः प्रफुल्लवदनः काये कृशः कान्तिमान्
साक्षाद् ब्रह्मवदेव योऽस्ति भुवने सच्चिनतकः पण्डितः ।
यस्यास्ते मधुरा च वाङ्मधुमयी यो लोकबन्द्यः सदा
विप्रोऽसौ विबुधः प्रसन्नमनसा जीव्यान्नु गोविन्दझाः ।।

5.

श्री गोविन्द ! नमस्तुभ्यं ज्ञानविज्ञानरूपिणे ।
समर्प्यतेऽद्य वाक्पुष्पुमारमणशर्मणा ।।

◆

श्रीगोविन्दाभिनन्दनम्

❑ *डा. श्री शशिनाथ झा*

सदात्मानं चिदात्मानं, सदानन्दं महाशयम् ।
विद्या-निकुञ्ज-गोविन्द, श्रीगोविन्दं नमाम्यहम् ।।1।।
संस्कृतं मैथिलीञ्चैव, आङ्ग्लं हिन्द्यादिकं तथा ।
सदा करेषु बिभ्राणं, श्रीगोविन्दं नमाम्यहम् ।।2।।
मैथिली-पोषकं विज्ञं, विरोधि-पदमर्दकम् ।
समस्या-धनुशो वीरं, श्रीगोविन्दं नमाम्यहम् ।।3।।
व्याकृति-व्यसनञ्चैव, साहित्याभ्यसनन्तथा ।
भाषाणां न्यसनञ्चैव श्रीगोविन्दं नमाम्यहम् ।।4।।
निश्छलं मित्रवर्गेषु निर्मलं शास्त्र मन्दिरे ।
निर्भयंचैववादेषु, श्रीगोविन्दं नमाम्यहम् ।।5।।
संस्कृतस्य महान् विज्ञ आङ्ग्लस्य महार्णवः ।
मैथिल्याः सुकविः ख्यातः श्रीगोविन्दो विराजते ।।6।।
नाटकानां प्रणेता यः कथानां हृद्य-लेखकः ।
उपन्यास-महाकाव्य-छन्दःशास्त्रादिपूरकः ।।7।।
भाषाशास्त्रस्य कृतिमान्, नानाग्रन्थानुवादकः ।
प्राचीनमैथिलीग्रन्थे पाठोद्धार-विधायकः ।।8।।
नानाभाषासु मर्मज्ञो बहुसम्मान-भाजनम् ।
कवीनां प्रेरणादाता, विदुषामाश्रयः परः ।।9।।
आबाल्यं मैथिली-सेवा-व्रतोऽद्यापि प्रवर्त्तते ।
वार्धक्येऽपि न शैथिल्यं कर्मण्यस्मिन हि दृश्यते ।।10।।
साहित्य-साधकस्यास्य, हार्दिकं स्वागतं ब्रुवन् ।
एभिः शब्दसुमैः कुर्वे श्रीगोविन्दाभिनन्दम् ।।11।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिलीक शान

❑ *श्री फजलुर रहमान हाशमी*

अनेकानेक भाखाक
सशक्त रचनाकार
अनेकानेक दशक सँ उपेक्षित
मुदा विद्वत्ता सँ
जन-समुदाय परिचित
ने ककरो सँ शिकवा
ने शिकाइत
'कर्मण्येवाऽधिकारस्ते' पर आस्था
मृदुभाषी
ज्ञानक अथाह सागर
संस्कृतिक प्रतीक
मातृभाखाक हितैषी
नव तूरक लेल अपार श्रद्धा
अनेकानेक भाखा
अनेकानेक विद्या
ओ छथि
लेखनीक धनी
मिथिलाक गौरव
मैथिलीक शान
माननीय पण्डित श्री गोविन्द झा ..... !

◆

हाथ दहिना

❑ *पं० श्री शम्भुनाथ झा*

गोलोकसँ गोविन्द मुरलीकें बजाओल
भूलोकमे ओ आबि जन-जनकें जगाओल ।
अन्तस्थमे सुषुप्त धिषणाकें उठाओल
मैथिली साहित्य महिमाकेँ जनाओल ।।

विमल भाषामे नवल व्याकरण रचलन्हि
अमलता साहित्यमे शब्देँ चिखौलन्हि ।
कविता कलापक काव्य कौशलता बनौलन्हि
छन्द वेदक चरणकें ओ गावि कहलन्हि ।।

नाट्यमे सामाजिकक "बसात" अनलन्हि
पात्र स्त्री रहित अभिनयकें देखौलन्हि ।
सामाक-पौती तथा विद्यापतिक परिचय
विरचि जन-जनमे कयल ओ यशक संचय ।।

अनुवाद मे महिमा नवल इतिहास नेपाली अमल
सुधी हृदयक माल्य बनि-बनिकें सुपूजल ।
नेपालिओ साहित्यमे स्थान तहिना
अखनिओ ओ कविगणक छथि हाथ-दहिना ।।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सप्त स्वर

❑ *श्री हीरानाथ झा*

असीम शब्द प्रवाह गद्य मानि जे,
ससीम हित छन्दक प्रयोजन जानिकेँ ।
भाखाक सुष्ठु प्रयोग "लघु विद्योतिनी"
सहज परिचय देल पढुआ-वृन्दकेँ ।।1।।

आदिपुस्तक वर्णरत्नाकरक "सायण",
कविता-ऋचा कविकोकिलक सद्य: "महीधर"।
अपर पाणिनि पूज्यपाद पदानुव्राजक,
अभिनव ऋषि गोविन्द! लोकभाषा उद्धारक ।।2।।

साधना सारस्वतक ई सृष्टि-दृष्टि,
संग "उद्गम मैथिलीक विकस" सँ ।
स्वच्छ कएलक पहिल भाखा बाट जेँ,
धन्य मैथिल! गौरवान्वित भेल छी ।।3।।

"सामाक-पौती" मे सहेजल कर्म केँ,
दिग् दिगन्तक प्रान्त तक लए गेल जे ।
ताहू "बसात" क विरलता बनले रहल,
अन्ततः "अन्तिम प्रणाम" क काल तक ।।4।।

जागरित कए प्रत्यहक चिर साधना सँ,
वर्ष चौहत्तरिम यापित मुनिक लेखा ।
साम्प्रतिक "नखदर्पण" क प्रतिविम्ब मे सँ,
मैथिल मैथिली मिथिलाक जागल भाग्यरेखा ।।5।।

की वेद, की पुराण, आ की आजुक अशेष ज्ञान,
सहज पचाए मुग्ध कएल नवारी ।
मैथिलीक सेवा निरत ध्येय मुख्य मानि,
सगर राति दीपो जराओल बुढ़ारी ।।6।।

कर्म सँ पूरल भविष्यक भाल जे,
मर्म जानल आधुनिक निरपेक्षताक ।
कए रहल छी वन्दना अभिनन्दनक,
आइ तनिके "पञ्चसप्तति वर्ष" पर ।।7।।

◆

हे मिथिला केर विश्वास

❑ *श्री मार्कण्डेय प्रवासी*

शब्द-रथी, अक्षर-पथी, शुद्ध कलमधर नाम !
हे पण्डित गोविन्द झा, अछि कोटिशः प्रणाम !!

गद्य-पद्यमय देहमे, अछि अहाँक प्रियप्राण !
तुच्छ प्रवासी की करत, अहँक मान-सम्मान !!

वैयाकरणात्मज अहाँ, अहाँ शुद्धताधीश !
हे हिन्दी-मैथिलीकेर, धवल ऋषीश-मुनीश !!

हे सुरेन्द्र झा सुमनकेर, बादक साहित्येश !
हे भाषाविज्ञान केर, नव मैथिली-नरेश !!

भने अहाँ द' देल अछि, दुष्टोकेँ वरदान !
तैयो सदिखन छी अहाँ, साहित्यक भगवान !!

जतय मूल लेखन ततय, अछि अहाँक अनुवाद !
जेँ अछि धीरोदात्तता, तैँ नहि हर्ष-विषाद !!

हे अभिनन्दित देवता, हे अभिनन्दन-मूर्त्ति !
अछि मनमे अभिनन्दनक, वयशः गुणशः स्फूर्ति !!

हे संस्कृत केर प्रगाता, हे संस्कृति केर दास !
अछि अहाँक प्रति समर्पित, मिथिला केर विश्वास !!

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

करैवेति करैवेति

❑ डा० श्री रमानन्द झा 'रमण'

मिथिलाक सारस्वत साधक अपन अगाध ज्ञान, चिन्तन आ वैदुष्यक वैविध्य, व्यक्तित्वक सहजता आ प्रखरता लेल विश्वविख्यात छथि। व्यावहारिक जीवन मे व्यक्तिगत सुख-सुविधा आ कुलार्थ कें सर्वथा गौण मानि समष्टिक मंगल कामना कें सदासँ महत्व एवं प्रधानता देल अछि। हिनका लोकनिक-ज्ञान पिपासा, जिज्ञासु वृत्ति तथा परहिताय जीवनमूल्य सँ एक ओहन प्रकाश-स्तम्भ विश्व-मंच पर गड़ाएल अछि जाहिसँ सदतिकाल निःसृत होइत किरणपुञ्ज मे भरतखण्डक सीमाक पारहुक हारल-थाकल मानवसमुदाय अपन हेराएल बाट तकैत रहल अछि । श्रान्त-क्लान्त मानवता अपन शीताएल मनःस्थिति आ निःसत्व भेल सक्रियता लेल पर्याप्त ऊष्मा बटोरि नव नव दिशाक अनुसंधानक हेतु प्रेरित प्रभावित भेल अछि ।

मिथिलाक एही उज्ज्वल सांस्कृतिक परम्परा मे आधुनिक कालक एक महत्वपूर्ण अक्षर-पुरुष छथि पण्डित श्री गोविन्द झा । पण्डित श्री गोविन्द झा एकहि ठाम यशस्वी साहित्यकार, प्रकाण्ड पण्डित आ भाषाशास्त्री, स्वतन्त्र विचारक, निर्भीक वक्ता, विविध भाषावेत्ता, सुपटु व्यवहारविद ओ एक सफल अनुवादक रूपमे ख्याति अर्जित कए विभिन्न भाषाभाषी विद्वानक मध्य मैथिलक गौरव बढ़ाओल अछि । ओ मिथिलाक गौरवशाली परम्पराक सुदृढ़ पायाकें अपन अध्ययन-अनुशीलन, मनन-चिन्तन तथा अथक परिश्रमक पजेबा सँ निरन्तर जोड़ि रहलाह अछि।

पण्डित श्री गोविन्द झाक प्रपितामह पं. रघुवर झा 1860 ई. मे दीप (झंझारपुर) सँ, जतय औखन रघुवर बाबूक चभच्चा प्रसिद्ध अछि, अपन मातृक इसहपुर, (सरिसब पाही, मधुवनी) आबि बसि गेलाह । इसहपुर परिसरक मिथिलाक सांस्कृतिक मानचित्रपर अपन विशिष्ठ स्थान छैक। एकर चारूकात प्रसिद्ध विद्वानक गाम अछि, यथा - सरिसब, पाही, हाटी, बिट्ठो, रामपुर, राजग्राम,भराम, रैयाम, भट्टपुरा, लोहना, लालगंज, उजान, नरुआर, सर्वसीमा, नवटोल, सखवाड़, राजे आदि । अयाची, शङ्कर तथा गोविन्द ठाकुरक चौपाड़ि सरिसबमे छल । वर्तमान कालहु मे म. म. गंगानाथ झा, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र म. म. मार्कण्डेय मिश्र, म. म. बालकृष्ण मिश्र, नैयायिक यदुनाथ मिश्र, नैयायिक षष्ठीनाथ मिश्र, डा. अमरनाथ झा आदि एही परिसरक छलाह । मैथिलीक प्राचीन आ कतेको नवीन कवि यथा गोविन्द, रामदास, देवानन्द, लोचन, रमापति, कुलपति, गोकुलानन्द, विश्वनाथ, शिवदत्त, नन्दीपति, हर्षनाथ, कविशेखर बदरीनाथ आदि तथा मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार जीवछ मिश्र, मैथिलीक पहिल यात्रा-साहित्य लेखक पं. चेतनाथ झा, मैथिलीक नाटककार महाकवि मुंशी रघुनन्दन दास एवं महान कलासाधक दरवारी दास एही परिसरक छलाह । खास इसहपुर मे एक *भानुमती* नामक पोखरि अछि, जतए *रसमंजरीकार* भानुदत्तक निवास छल । पण्डित श्री गोविन्द झा माण्डर सिहौल मूलक काश्यपगोत्रीय श्रोत्रियप्रवर महावैयाकरण पण्डित दीनबन्धु झाक पुत्र छथि । अपन माता-पिताक चारिम सन्तानक रूप मे हिनक जन्म, जन्मपत्री क अनुसार वैशाख कृष्ण दशमी शाके 1844, सन 1329 साल कें भेलनि। किन्तु सरकारी अभिलेखक अनुसार पण्डित झाक जन्मतिथि आब 10 अक्टूबर 1923 ई. भए गेलनि अछि। पण्डित झा छओ भाए-बहिनि छथि - 1. श्री भागेश्वरी (बाबू श्री चन्द्रपति सिंह, पचही) 2. पं. श्री जीवनाथ झा (मैथिलीक ख्यातनामा साहित्यकार) 3. श्रीमती अवहेला (पं. श्री गंगानाथ झा, दीप) 4. पं. श्री गोविन्द झा, 5. पं. श्री माधव झा (प्राचार्य संस्कृत महाविद्यालय, इसहपुर) तथा 6. श्रीमती चिन्ता (पं. श्री बुद्धिनाथ मिश्र, भडे.र, भट्टपुरा) ।

पण्डित झाक वंश विद्या ओ वैभव मे बड़ प्रख्यात रहल अछि । मूलग्राम 'सिँहौल' *सिंहकुल* शब्दक तद्भव थिक । पाँजिक पोथीमे एहि कुलक बीजी पुरुषसँ बादक कतिपय पुरुषक उपाधि 'सिंह' पाओल जाइछ, जाहि मे *पहराज_सिंहक* बनाओल प्राकृतकोश *(पाइअ कोस:)* दरभंगासँ प्रकाशित भेल अछि । ई उपाधि अकारण नहि प्राप्त भेल होएतनि । उपाधि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आ ग्रामसँ अनुमान कएल जा सकैछ जे मिथिला मे नान्यवंश सँ पूर्व एही वंशक शासन छल होएत । बादोमे म. म. वटेश्वर उपाध्यायक वैदुष्य ओ दानशीलता सर्वविदिते अछि । वैदिक विश्वम्भर एही वंशक रत्न छलाह ।

पं श्री गोविन्द झाक माताक नाम थिक यागेश्वरी देवी । ओ अमहए झंझारपुर मूलक लखनौर ग्राम निवासी श्रोत्रिय अग्निहोत्री पं. जयानन्द झाक कन्या छलीह । हुनक भाए सर्वतन्त्रस्वतन्त्र पं. श्री देवानन्द झा ओ पण्डित श्री तुलानन्द झा मिथिलाक मान्य विद्वान मे परिगणित भेलाह अछि । सन्स्कृत विद्याक प्रचार, प्रसार आ पण्डित्य लेल दूनू भाए राष्ट्रपति पुरस्कार सँ सम्मानित भेल छथि । एहि प्रकारें पण्डित झाक मातृपक्ष सेहो सरस्वतीक कृपाभाजन अछि ।

पं श्री गोविन्द झाक उपनयन 1931 ई. में भेलनि । पिता आचार्य छलथिन । पन्द्रह वर्षक अवस्था मे 1938 ई. मे हिनक विवाह खड़ोरए भौरवंशीय गोधनपुर (झंझारपुर) निवासी श्रोत्रिय पं. खुशरी ठाकुरक प्रथम पुत्री सीता दाइ (जन्म 1927 ई.) सँ भेलनि । सासुरमे हिनक नाम श्री मती सीता बहुआसिनि पड़ल । पण्डित झा कें पहिल सन्तान (सुषमा झा)क जन्म स्थायी आजीविका पएबासँ पूर्वहि 12 फरवरी 1948 ई. कें भए गेलनि । दोसर कन्या (अम्बिका झा)क जन्म 29 नवम्बर 1951 ई. कें पटना अएला पर भेलनि। मगध मे जन्म होएबाक कारणें हिनका दुलारें *मगही* कहल तथा पत्नी कें *मगहीक माए* । 1956 ई. मे जेठ बालक श्री अरविन्द कुमारक जन्म भेल । संक्षेप मे *अ. कु.* कहए लगलाह। बाद मे ई अपन उपनाम 'अक्कू' राखि लेल। दोसर बालक मिलिन्द कुमार (मि. कु.)क जन्म 1958 तथा तेसर बालक निर्मलेन्दु कुमार (नि. कु.)क जन्म 9 जन. 1965 मे भेलनि ।

शिक्षा-औपचारिक - आजुक पिता जेना अपन सन्तानकें अपन समस्त साधन आ शक्ति लगाए कण्ठ मोकि मोकि अधिक सँ अधिक विद्या घोँटएबाक प्रयास मे रहैत अछि, तकर उनटा उदाहरण छथि पं. गोविन्द झा । ने गुरुजनक कड़ाइ छलनि, ने साधन सामग्रीक अमार । स्वत: प्रेरणा, स्वत: स्वाध्याय, स्वत: यथोपलब्ध साधन-सामग्री – इएह छल हुनक विद्यार्जनक संवल । पाँच वर्षक अवस्थामे पिता महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा अपना हाथे भाठा धराओल, खरी नहि । ने भोजभात भेल आ ने गीतनाद । तिरहुता माटि पर माटिसँ सिखल । गामक एक इसकुलमे नाम लिखाओल गेलनि । शिक्षक छलाह भवानीपुरक सिद्धिनाथ झा । ओतहि देवाक्षर सिखल, दस काड. धरि गणित आ इसकुलिया बोली काहे-कूहे हिन्दी सिखल । ई इसकुलिया शिक्षा बेशी दिन नहि चलल । एक दिन एकटा नव मास्टर द्वारा पेट मे बिठुआ काटि लेलासँ इसकूल जाएब पिता छोड़ा देल । तकर बाद पिताहिक संग महारानी लक्ष्मीवती विद्यालय, सरिसब, जतए पिता प्राचार्य छलथिन्ह, बिदा भए गेलाह । ई क्रम 1929 ई. सँ 1947 ई. धरि, अठारह वर्ष चलल । भट्टपुराक पण्डित मधुसूदन मिश्र मध्यमा धरि हिनक गुरु रहलाह ।

पं. गोविन्द झा नेनहिसँ परिश्रमी आ मेधावी छलाह । दस वर्षक अवस्थामे ई 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' आ 'रघुवंश' कण्ठस्थ कए लेने छलाह । मुदा जोड़, घटाव, गुणा आ भागसँ परिचय नहि भेल छलनि । प्रथमा परीक्षाक पाठ्यक्रममे 'अभिन्न कर्मचतुष्टय' छल । ई अभिन्न कर्मचतुष्टय अर्थात् जोड़, घटाव, गुणा आ भाग पितासँ परीक्षामे पास होएबा लेल सीखि लेल । प्रथम श्रेणीमे प्रथमा उत्तीर्ण भेलाह। मुदा भिन्न आ अभिन्न की होइत छैक से नहि सीखि सकलाह ।

तहिआ मध्यमा धरि व्याकरण आ साहित्यक सम्मिलित पाठ्यक्रम छलैक, तें व्याकरणक सङ्ग. सङ्ग. साहित्यहुक पाठ्य-अपाठ्य सभ तरहक पोथी पढ़ैत रहलाह । उच्च कक्षामे जखन पिता सँ पढ़ब आरम्भ कएल, एकमात्रव्याकरणमे डूबि गेलाह । पिताक इच्छा छलनि पल्लवग्राही षट्शास्त्री नहि, एक शास्त्रक निविष्ट विद्वान बनथि । हुनक ई कामना पूर्ण भेलनि । 1947 ई. मे 'बिहार संस्कृत-समिति'सँ प्रथम श्रेणीमे व्याकरणाचार्य परीक्षा पास कएल । मुदा, लब्धांक देखि, प्रसन्नता नहि भेलनि । व्याकरण विषयक निबंधवला पत्रअपना जनैत सभसँ उत्तम भेल छलनि, परञ्च अंक भेटल केवल 52 प्रतिशत ।

पुनर्विलोकनक नियम नहि छलैक तथापि 'संस्कृत-समितिक' तत्कालीन सचिव पं. रामनारायण शर्माकें पत्रलिखि अपन व्यथा सूचित कएल। ओ अनौपचारिक वैयक्तिक पत्रद्वारा ई उत्तर देल जे एहि पत्रमे परीक्षक महोदय सभसँ अधिक अङ्क. अहींकें देल अछि । पछाति ज्ञात भेलनि जे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

परीक्षक छलाह पं. निरसन मिश्र, जनिका हाथेँ एतबो अङ्क. पाएब कम सौभाग्यक गप्प नहि थिक ।

व्याकरणाचार्य भेलाक पश्चात् पिता आ अग्रज पं. जीवनाथ झाक विचार भेल जे ई नव्यन्याय पढ़ि बड़का विद्वान बनथि । एही बीच सरिसबमे म. म. अयाची मिश्रक डीह पर 'शङ्कर दर्शन विद्यालय' स्थापित भेल । अध्यापक छलाह लालगञ्जक नैयायिक पण्डित जगदीश मिश्र (1895-1959) । हुनकासँ किछु दिन *मुक्तावली, व्याप्तिपञ्चक* आ *सिद्धान्तलक्षण* पढ़बो कएल । किन्तु सहसा सांसारिक चिन्तामे हरिभजन छाड़ि, जिनगीक तूर धूनए पड़ि गेलनि। भट्टोजिदीक्षित आ गङ्गे.श उपाध्याय पाछू छूटि गेलाह ।

पिताक इच्छा आ अग्रजक नव्यन्यायक बड़का विद्वान् बनबाक मनोरथ एहि प्रकारेँ पूर्ण नहि भए सकल । अजेय शास्त्रार्थी रूपमे देखबाक कामना सेहो पूर्ण नहि भए सकलनि; ओना ओ बिदेसरक मेलामे अनेको बेर शास्त्रर्थ कएल । एहि दिस प्रवृत्ति नहि होएबाक एक इहो कारण रहल होएत जे ताधरि शास्त्र ार्थ मुरगाक लड़ाइ बूझल जाए लागल छल, प्रतिष्ठाक वस्तु नहि छल ।

उच्च कक्षामे पिता यद्यपि गुरु भए गेल छलथिन, मुदा कक्षाक अन्य छात्रसँ बेशी ध्यान अपन पुत्रपर नहि छलनि । समूहेमे पढ़थि । लाभ एतबे जे जाइत-अबैत काल जिज्ञासा आ शंकाक समाधान सुविधापूर्वक भए जाइत छलनि। परिश्रमी आ तेजस्वी तँ छलाहे, महावैयाकरणजीक संक्षिप्त आ सारगर्भ उपपादन साधारण प्रतिभाक छात्रक हेतु जखन समस्या भए जाइत छलैक तँ ई कतेको सहपाठी हेतु निःशुल्क सहायक भए, सरल भाषामे व्याकरणक सूत्रबुझाबथि । एकर अतिरिक्त प्राचीन परिपाटीक शिक्षण-प्रणालीमे अपनासँ कनीय कक्षाक छात्रकेँ पढ़ाएब अध्ययन कार्यहिक अंग छल । पं. गोविन्द झा अपन एहि दायित्वक पालन सन्तोषप्रद ढंगसँ करैत छलाह। हिनक सहपाठीमे पाहीक पं. मणिनाथ झा, रुपौलीक पं. अमरनाथ झा, लालगंजक पं. भवनाथ झा 'दीपक', हाटीक पं. कृष्णवल्लभ झा, करियनक पं. जगदीश पाठक, भट्टपुराक पं. बुद्धिनाथ मिश्र, टटुआर-बिशौलक पं. सदानन्द झा आदि छलाह । ओहने किछु छात्रमे छथि - पं. खगेन्द्र झा (लखनौर), पं. तीर्थनाथ झा (दीप), पं. हरिहर झा (दीप) आदि । पाठावस्थाक बाद फेर कहियो गुरु कि आचार्य कहएबाक आ छात्रवर्गसँ चरण स्पर्श करएबाक सौभाग्य कदाचिते भेटलनि ।

व्याकरणाचार्य होएबा धरि ई जे किछु पढ़लनि पिताक इच्छानुसार । 1947 ई. मे देशक स्वाधीनताक संग बएस आ आँखि-पाँखि देखि पिता स्वयं हिनका परसँ नियंत्रण हटाए लेल । आब विद्याक चिन्तासँ बेसी नोकरीक चिन्ता भेलनि । नोकरी लेल अंग्रेजी जानब आवश्यक छल । महावैयाकरण जी अंग्रेजी पढ़बाक घोर विरोधी छलाह । तथापि जेना-तेना जिला स्कूल दरभंगासँ, जतय शिक्षकक रूपमे काज शुरू कएने छलाह, अपन छात्र हिक संग सेंटअप भए 1950 ई. मे मएट्रिक परीक्षा दए उत्तीर्ण भेलाह । पुनः अंग्रेजीसँ आइ. ए. (1951 ई. मे नोकरीमे अएलाक बाद) कएलनि । पटना विश्वविद्यालयसँ बी. ओ. एल. (बिचलर ऑफ ओरिएन्टल लर्निंग) क परीक्षाक समय पिताक श्राद्ध पड़ि गेलापर परीक्षा नहि दए सकलाह । एहिसँ पूर्वहि अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा द्वारा सञ्चालित 'साहित्यरत्न' परीक्षा (1949 ई.) मे उत्तीर्णता प्राप्त कएल । एहिमे एक सङ्गी छलथिन्ह प्रो. श्री आनन्द मिश्र ।

पटनाक मन्दिरी मोहल्ला स्थित हथुआ महाराजक स्थापित ज्ञानोदय संस्कृत विद्यालयमे छात्रक कमी छलैक । नोकरी भेटि गेल छलनि । आवासक प्रयोजन छलनि । छात्र बनि निःशुल्क आवास प्राप्त कए लेल । छात्रत्व सिद्ध करबा लेल परीक्षा देब आवश्यक छल । साहित्य पढ़ल छलनि । साहित्यक आचार्य (1952 ई.)क परीक्षामे बैसि गेलाह । स्वर्णपदकक सङ्ग. सर्वोच्च स्थान प्राप्त कएल । एहि परीक्षामे एक अद्भुद घटना भेल । पाठ्यग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' सँ प्रश्न छल । मुदा, उत्तर लिखि देल पण्डितराज जगन्नाथक 'रसगङ्गाधर'सँ । उत्तर अशुद्ध नहि छलनि । अङ्क. भेटि गेलनि, किन्तु परीक्षक (कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक भूतपूर्व प्राध्यापक पं. रामचन्द्र मिश्र) भेंट भेला पर कहिए देल - 'अहाँ हमरा ठकलहुँ, मुदा हम अहाँकेँ नहि ठकलहुँ' । पटनामे आवासक हेतु छात्रबनल रहब आवश्यक छल । साहित्याचार्यक बाद वैदिक भए गेलाह । वेदाचार्यक परीक्षा दए व्याकरण, साहित्यक संग आब वेदाचार्य सेहो भए गेलाह ।

अनौपचारिक विद्यार्जन - सम्प्रति देशहि नहि, विश्वभरिमे अनौपचारिक शिक्षाक माध्यमे विद्यार्जनक घोल अछि । कोटिक कोटि शिक्षाक एहि माध्यम पर प्रशासनिक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आ स्वैच्छिक संस्थाक माध्यमसँ खर्च भए रहल अछि। परञ्च गोविन्द झा जाहि विधिएँ निरन्तर विद्यार्जन करैत रहलाह अछि, ओहिमे विद्याक प्रति दृढ़ अनुरागेटा अपेक्षित छैक, पैघ-पैघ योजना आ विशाल व्यवस्थाक नेटवर्क अपेक्षित नहि अछि ।

पं. झाक बाल्यकालमे कहबी प्रचलित छल 'पाठो विवाहावधि:' विवाह भेल, पढ़नाइ गेल । मुदा आजुक नवयुवकमे जाहि प्रकारेँ आर्थिक आसक्ति बढ़ल जाइछ, जाहि कोटिक विभिन्न प्रकारक मनोरंजक साधन सुलभ भेल जाइत छैक, नबका कहबी ''नोकरी भेल, विद्या गेल' प्रचलित भए सकैत अछि । परंच पं. गोविन्द झा लेखेँ दुनू कहबी व्यर्थ अछि । विआह पन्द्रह वर्षक अवस्थामे भेल छलनि तैओ पढ़ितहि रहि व्याकरणाचार्य भेलाह । छब्बीस वर्षक अवस्थामे नोकरी धएल, तैओ पढ़ितहि रहलाह । औखन जे किछु समक्ष अबैत छनि, पढ़ि लैत छथि । एहि हेतु टारि नहि दैत छथि जे ई फलाँक थिकैक अथवा अमुक विषयक थिक ।

पढ़बाक लुतुक पण्डित झाकेँ नेनहिसँ छनि । पाठावस्थामे आन छात्र पाठ्यग्रन्थक निर्धारित अंशहि धरि अपनाकेँ सीम्मित रखैत छलाह मुदा ई निर्धारित अंश अथवा निर्धारित पोथीक अतिरिक्तो अंश अथवा समस्त ग्रन्थ पढ़ि लैत छलाह । गाममे जे किछु पढ़ैत छलाह तकर क्षेत्र नियंत्रित छलनि । आँखि नियंत्रित छलनि । एकहि दृष्टिकोणसँ वस्तुकेँ देखबाक अभ्यास लगाओल गेल छलनि । किन्तु, पटना अबितहि सभटा बान्ह-छेक टूटि गेल । गाममे पाठ्य सामग्रीओ सीमित छल । किन्तु पटनामे असीमित विषय आ अनन्त पुस्तकक भंडार समक्ष अएलनि । पढ़बाक हेतु पहिल स्थान भेल 'सिन्हा लाइब्रेरी' । मन्दिरीक हथुआ विद्यालयमे डेरा छलनि, पाँच मिनटमे लाइब्रेरी पहुँचि जाइत छलाह आ जा धरि लाइट जरैत रहैक, पढ़ैत रहथि । कहिओ एकसरे तँ कहिओ विमानबिहारी मजुमदारक संग बहराथि ओना हुनक कृतिक परिचय पहिनेसँ रहनि । साक्षात् दर्शन एहीठाम भेलनि।

अध्ययनक दोसर स्रोत बिहार रिसर्च सोसाइटीक पुस्तकालय छल । सामान्य पाठकक चित्त एतेक पाठ्य सामग्री सुलभ देखि चंचल भए सकैत छैक । परंच, पण्डित झा अपन चित्तकेँ चंचल नहि होअए देल । अध्ययनक हेतु भाषाशास्त्र आ भारतीय इतिहासक चयन कएल । पाणिनि आ पतञ्जलि पढ़ल छलनि, आधार सुदृढ़ छलनि तेँ भाषाशास्त्र सोझ आ रसगर लगलनि । मुदा दृष्टि सर्वथा भिन्न छल । *बीम्स साहेबक कम्परेटिभ ग्रामर ऑफ माडर्न आर्यन लैंगुएजेज ऑफ इंडिया* सँ आँखि खूजि गेलनि । आँखि मूनि तीनू खण्डक (हजार पृष्ठ) अनुवाद कए गेलाह । एही क्रममे तारापुरवालाक *एलेमेन्ट्स ऑफ लैंगुएजेज* तथा सुनीति कुमार चटर्जीक *ओरिजिन एन्ड डेवलपमेंट ऑफ बंगाली लैंगुएज* सेहो पढ़ि गेलाह ।

अध्ययनक तेसर स्रोत राजभाषा विभागक पुस्तकालय छल । निदेशक सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' तथा उपसचिव शिवनारायण सिंह दूनू संस्कृत व्याकरण ओ साहित्यक प्रगाढ़ पण्डित छलाह । हिनकहि पुस्तकालयक प्रभारी बना देल । प्रशासन एवं विधि संबंधी पारिभाषिक शब्दावली बनएबाक क्रममे संस्कृत धर्मशास्त्र खूब मथल ।

सुलभ इन्टरनेशनलमे अएला पर पढ़बाक पर्याप्त अवसर भेटलनि । समाजशास्त्र इतिहास आ सन्दर्भ ग्रन्थसँ समृद्ध पुस्तकालयमे ई अनुभव कएल जेना हिनकहि लेल स्थापित कएल गेल हो । मिथिलामे नीलक खेती पर बहुत रास ऐतिहासिक रचना एतय देखल जकर उपयोग ई *रूक्मिणीहरण* नाटक लिखबामे कएने छथि । एहिना विद्यापतिकालीन मिथिलाक प्रसंग प्राप्त तथ्यक उपयोग ई उपन्यास *विद्यापतिक आत्मकथा* मे कएल । देशी, विदेशी पत्रिकाक सेहो एतए नियमित अध्ययन करैत रहलाह ।

पण्डित झा भाषाशास्त्र आ भारतीय इतिहासक अतिरिक्त अन्य भारतीय साहित्समे सेहो अपन रूचि बना कए, ओहि साहित्यक अद्यतन गतिविधिक परिचय बढ़बैत गेलाह । पण्डित झाक इएह रूचि हिनका मैथिली साहित्यक अन्य पाठक, रचनाकार एवं अध्येतासँ पृथक् पंक्तिमे स्थान दैत अछि ।

लिपि-भाषा-ज्ञान-तिरहुता लिपि ओहि समयमे घर-घरक लिपि छल। अक्षरारम्भ ओहीसँ कएने छलाह। गामक स्कूलमे देवाक्षर सीखल। सरिसबमे इसकूल आ पाठशाला एकहि परिसर मे अछि। पाठशालाक छात्र आ इसकूलक विद्यार्थी सेहो एकहि परिसरक रहैत छथि। अंग्रेजी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अर्थकरी भाषा थिक से सुनि आ बाल्यकालहिसँ बेसीसँ बेसी भाषा-लिपि सिखबाक हार्दिक उत्कण्ठाक कारणे अंगरेजी सिखबाक प्रबल इच्छा भेलनि किन्तु पिता अंगरेजीक घोर विरोधी। अंगरेजी पढ़लासँ धर्मक क्षति होइछ, से हुनक मान्यता छल । पिताक पूर्ण अनुशासनमे रहितो बालक गोविन्द पितासँ चोरा कए अंग्रेजी सिखब शुरू कए देल । किताब नहि छलनि, शब्दकोश नहि छलनि । पितासँ एहि हेतु पाइ माँगि नहि सकैत छलाह । तखन अपन एक पित्ती श्री गंगानाथ झासँ, जे बनैलीक राजा कीर्त्यानन्द सिंहक जमाए छलाह मनक व्यथा कहबाक साहस कएल । लहेरियासराय जाए, पुस्तक भंडारसँ कुञ्जी सहित किछु पोथी आ शब्दकोश किनि बिनु कोनो गुरुक केवल एक वर्षमे काज चलएबा जोग अंगरेजी सीखि लेल । अंगरेजी सिखबा मे पाणिनि आ पतञ्जलिक गहन अध्ययन सहायक भेलनि ।

नेपाली - स्वदेशी बिलेतीक झाँकक समय लगभग तीन वर्ष नेपालमे बसए पड़ल छलनि । ओतए सभ पढ़ल लिखल लोक नेपाली बजैत छल । जेठ भाए नेपाल सरकारक संस्कृत विद्यालय जनकपुरमे अध्यापक छलथिन । एहूसँ पर्याप्त सम्पर्क छलनि । एही क्रममे ज्ञात भेलनि जे आचार्य पास छात्रसोझे त्रिभुवन विश्वविद्यालयमे एम. ए. क परीक्षा दए सकैत अछि । एहिमे एक पत्र नेपाली भाषा आ साहित्य अनिवार्य छलैक । तेँ किछु दिन विधिवत् नेपालीक अध्ययन कएल। यद्यपि परीक्षामे सम्मिलित नहि भए सकलाह मुदा नेपाली भाषा आ साहित्यक अध्ययन पछाति पर्याप्त सहायक आ लाभकारी भेलनि ।

1955 ई. क धऽकमे पटना आकाशवाणी सँ एक नेपाली कार्यक्रम 'उत्तराञ्चल' प्रसारित होइत छलैक । एहिमे एक आलेख, आज को कुरा (आजुक बात) दिल्लीसँ अंगरेजीमे अबैत छलैक आ पटनामे अनुवाद कराए प्रसारित होइत छल। ई काज ओ कतेको मास कएल मुदा अल्प लाभ देखि छोड़ि देल । काठमाण्डू स्थित 'इण्डिअन एड मिशन' मे एक ओहन अनुवादक सह दुभखिआक प्रयोजन छलैक जाहि हेतु हिन्दी, नेपाली आ अंगरेजी भाषाक अभिज्ञता अपेक्षित छलैक । बिहार सरकार द्वारा आवेदन पत्र अग्रसारित नहि होएबाक कारणेँ नेपाली भाषा ज्ञानक ओहि समय तँ लाभ नहि लए सकल छलाह मुदा, अनुवादक समय आब ओ काज अबैत छनि।

साहित्य अकादेमी साहित्यकारकेँ अपन क्षेत्रसँ भिन्न क्षेत्रमे साहित्यिक यात्राक हेतु अनुदान दैत अछि । अधिकांश लोक ओहि अनुदानक उपयोग अपन सर कुटुम्बक भेँटमे करैत छथि । मुदा पण्डित गोविन्द झा ओहि अनुदानक उपयोग भाषा सिखबा हेतु कएल । 1990 ई. मे एही क्रममे ई उत्कल यात्रक चयन कएल । साँझ परात ओड़िया दैनिक 'क. ट.' कए पढ़थि आ टूटल-भाङल भाषामे ओड़ियामे गप्प करबाक प्रयास शुरू कएल । भाषा सिखबाक उत्कट इच्छाशक्तिक कारणेँ ओड़िया पोथी पढ़ब आ ओड़ियामे संभाषण करब सीखल ।

असमी - घटना 1990-91 क थिक । साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्श समितिक एक बैसार मे साहित्य अकादेमीक उपसचिव श्री रमेश भसीन असमीक एक उपन्यासक मैथिलीमे अनुवादक प्रस्ताव राखल । पण्डित गोविन्द झा सोर्स भाषा सँ टारजेट भाषामे अनुवादक पक्षधर छलाह । जखनि कि अकादेमी एहि कोटिक अनुवादकक अभावेँ हिन्दी वा अंग्रेजीसँ अनुवादक नीति अपनओने अछि । पण्डित झाक एहि नीतिक विपरीत जोर पर हिनका गरदनिमे असमीक एक उपन्यास बान्हि देल गेल । जोसमे गछि लेलनि। गुवाहाटीसँ भारतीय रिजर्व बैंक, पटना स्थानान्तरित भए आएल एक असमी भाषी श्री रामेश्वर शर्माक, मदतिसँ प्राप्त दायित्वक निर्वाह कएल । पुनः दोसरो बाल-उपन्यासक अनुवाद असमी सँ मैथिली मे कएल ।

नेवारी - नेवारी सिखबाक घटनाक्रम कम रोचक नहि अछि । ओहि समय मैथिली अकादमी, पटना मे सेवारत छलाह । जर्मनीक एक विद्वान् हर्स्ट ब्रिड्क हाउस पाँच सात वर्ष नेपालमे रहि मैथिलीक एक मध्यकालीन नाटक पर शोध कार्य करैत छलाह । एक बेर ओ पटना आबि पं. झा सँ सम्पर्क कएल । ई यथासंभव सहायता कएलथिन्ह । उक्त नाटकक मूल मातृका नेवारी लिपिमे छल । ओकर एकटा फोटोकापी प्राप्त भेलनि । राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, काठमाण्डू द्वारा प्रकाशित 'नेपाल लिपि संग्रह' नामक एक विलक्षण पोथी उपहारमे ओ देल । ओहि पोथीमे नेवारीक अतिरिक्त तिरहुता, रञ्जना, तिब्बती आदि अनेक लिपिक वर्णमाला आ पुराभिलेख अछि । एहि सभक आधार पर ई नेवारी लिपिमे अपन प्रवेश बनाओल ।

उर्दू - पण्डित गोविन्द झा किशोरावस्थहिमे गांधीवादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भाषादर्शनसँ प्रभावित भए गेल छलाह। गान्धीजी हिन्दुस्तानी भाषाक समर्थक रहथि । हुनक उपदेश छल जे प्रत्येक हिन्दुस्तानी कैं नागरी आ फारसी लिपि अवश्य सीखि लेबाक चाही । द्वितीय विश्वयुद्धक समय बिहार सरकार 'फौजी खबर' नामक एक पत्रिका छपैत छल । पूर्ण सामग्री नागरी आ फारसी लिपिमे एक सङ्ग. छपैत छलैक । किछु दिन मिलाए-मिलाए पढ़ला पर उर्दू पढ़ए आबि गेलनि । राजभाषा विभागमे नोकरी पएबामे उर्दूक ज्ञान सहायक भेलनि । अवसरो भेटलनि । बिहार सरकार द्वारा हिन्दी राजभाषा घोषित भेलाक बाद कोर्ट-कचहरीक भाषाकेँ जन सामान्यक हेतु बोधगम्य हिन्दी बनेबाक आवश्यकता भेलैक ।*पण्डित झाकेँ ई दायित्व देल गेल । फारसी आ कइथी लिपिमे लिखित दस्तावेजकेँ पढ़ि हिन्दीमे नमूना तैयार करबाक छलैक । बेगूसरायक एक प्रख्यात ओकील झारखण्डी प्रसाद, जे कानून तँ जनिते छलाह, उर्दू, फारसी, संस्कृत आ कइथी सेहो जनैत छलाह, हुनका ओहिठाम डेढ़ मास रहि, उर्दूक ज्ञान बढ़ाओल ।

तिरहुता, नेवारी आ बंगलाक प्रशिक्षक - सारनाथ तिब्बतन इंसटीच्यूट जनवरी 1992 मे किछु शोधछात्रक हेतु नेवारी, तिरहुता आ बंगला लिपिक एक मासक प्रशिक्षण-कार्यक्रम आयोजित कएने छल । पण्डित झा तिरहुताक प्रशिक्षण लेल बजाओल गेल छलाह । बंगलाक भार छलनि प्रो. अनन्त लाल ठाकुरकेँ तथा नेवारी लेल काठमाण्डूसँ एक विद्वान् अएबा लेल छलाह। नेवारी-प्रशिक्षणक कार्यक्रम प्रशिक्षकक अभावमे स्थगित भए गेल । एक जर्मन महिला जनिक शोधक आधार नेवारी लिपिमे लिखल हीनयानक एक संस्कृत पोथी छल, पण्डित जानि एक दिन निकट आबि, किछु जिज्ञासा कएल । जखनहि ओ वाचन शुरू कएल कि पण्डित जी पोथी हाथसँ लए पढ़ए लगलाह । एहि पर मुग्ध भए ओ रजिस्ट्रारसँ कहि नेवारी प्रशिक्षणक कार्यक्रम शुरू करबा देल । किछु दिन बाद प्रो. अनन्त लाल ठाकुर बंगला लिपि प्रशिक्षणक भार सेहो हिनकहि दए स्वयं पाण्डुलिपि-शास्त्रपढ़बए लगलाह। एहि प्रकारेँ पण्डित गोविन्द झा एकहि संग तिरहुता, बंगला आ नेवारी लिपिक उद्भव ब्राह्मीसँ देखबैत तीनू लिपिक प्रशिक्षण देल ।

पण्डित झा अक्षरारम्भ तिरहुतासँ कएने छलाह आ अपूर्ण पंचमे वर्षमे देवांक्षर सीखल तँ बंगला, ओड़िया आ असमी सिखबामे असुविधा नहि भेलनि । शेष भाषा आ लिपि प्रबल इच्छाशक्तिसँ अर्जित कएलं । सम्प्रति ई मैथिली, संस्कृत, हिन्दी, बङ्ला आ अंग्रेजी पढ़ि-लिखि सकैत छथि तथा असमी, नेपाली, ओड़िया आ उर्दू पढ़ि बूझि सकैत छथि।

आजीविका - पण्डित गोविन्द झाक बाल्य काल समृद्धि आ सम्पन्नतामे बितबाक कारण छल । हिनक प्रपितामह रघुवर झाक एक बहिनिक विवाह महाराज कुमार बाबू वासुदेव सिंहसँ छल, जनिक डेओढ़ी गन्धवारिमे छलनि, । रघुवर झाक एक कन्याक विवाह महाराज महेश्वर सिंहक पौत्र बाबू सुरेश्वर सिंहसँ भेलनि, जनिक डेओढ़ी मब्बीमे रहए । हिनक पिताक मातामह मुरली मिश्र महाराज छत्र सिंहक दौहित्र छलाह। तँ प्रयोजन अनुसार धन आ सुविधा प्राप्त भए जाइत छलनि। महावैयाकरण जीक पितामह आ पिताक देहावसानक बाद ई डेओढ़ीसभ हुनका हेतु बिसुखि गेल । ओ अकिञ्चन-असहाय भए गेलाह । 'धौत परीक्षा' मे प्रथम अएलाक बाद हुनक कीर्तिपताका पर आकृष्ट छात्र समुदाय परिवारक अंग बनैत गेलाह। चौपाड़ि पसरैत गेल । यश बढ़ैत गेलनि । आश्रमक खर्च बेसम्हार भए गेलनि । तदुपरान्त देवघर आ लक्ष्मीपुरमे सवैतनिक अध्यापन शुरू कएल । स्वाभिमान-रक्षाक लेल लक्ष्मीपुरक विद्यालयक प्रधानाध्यापकक पदकेँ त्यागि जीवन-निर्वाह हेतु गामहि पर कपड़ाक दोकान खोलल । आ जखन गामहिक अति निकट सरिसबमे आजीविका भेटलनि तँ परिवार मे क्रमशः समृद्धि अबैत गेल। महावैयाकरणजीक माम केशी मिश्र, बी. ए. अपन प्रतिपामह म. म. सचल मिश्रक एक कृति (गोवर्धनाचार्यकृत *आर्यासप्तशतीक* टीका) क प्रकाशनमे हिनका खटाओल । एकर पारिश्रमिक स्वरूप माम घरहि लग अठारह बीघा खेत नीलाममे किनवाए देल । एकर प्रभाव पण्डित गोविन्द झाक लालन-पालन पर पड़ल । किन्तु स्वदेशी-बिलेतीक चक्करमे महापलायन, उपटब-बसब हिनक पिताक आर्थिक रीढ़केँ जेँ तोड़लक नहि तँ कचका अवश्य देने छल । व्याकरणाचार्य भेला पर जखन पिताक लगाम ढील भए गेलनि, प्रथम पुत्रीक जन्मसँ सांसारिक दायित्व बढ़लनि तँ आजीविका तकबा लेल ई विवश विकल भए गेलाह।

पण्डित गोविन्द झा पहिल नोकरी जिला स्कूल, दरभंगामे धएल । दू मास भेल होएतनि की पटनासँ एक दोसर पण्डित बहालीक पत्र लेने गेलाह आ 15 फरवरी 1949 कैं पं. झा ओ छोड़ि देल । एक विज्ञापनक आधार पर हरावत राज एच. ई. स्कूल, लालपुर-सरोपट्टी (सिंहेश्वर स्थान)मे नियुक्ति

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेलनि । घोर जातिवादी दलबन्दीसँ मुक्ति पएबाक हेतु मासाभ्यन्तरे अपन मोटा-चोटा छोड़ि राता-राति पड़ाए गेलाह। आठ-नओ मास बैसल रहलाह । फेर फरवरी 1950 मे अजन्ता प्रेसक मालिक श्री जयनाथ मिश्रसँ शब्दकोशक निर्माणक प्रसंग किछु गप्पक आधार पर यात्रीजीक पत्रभेटलनि। लिखल छलनि 'एहि काजमे अहीं सन चौचक लोकक प्रयोजन छैक ।' एही तरहक दोसर पत्रछलैक दि न्यूजपेपर्स एन्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. पटनाक । एतहु शब्दकोश-संकलनहिक काज छलैक। आजीविकाक प्रयोजन छलनि । 8 मार्च 1950 कें प्रात: काल मिथिलाक धरती कें छोड़ि मगधक धरती पर पैर रोपल । अध्ययनक क्षेत्र सँ कर्मक्षेत्र मे प्रेवश कएल । श्री जयनाथ मिश्रसँ सए टाका प्रतिमास भेटबाक छलनि आ इंडियन नेशन प्रेसमे पचहत्तरि टाका भेटबाक छलनि । द्विविधामे पड़ल देखि गामक ओकिल पं. रघुनाथ झाक प्रतिक्रिया - 'कतए राजा भोज आ कतए भोजवा तेली' सुनि सए टाकाक चपचपी दिससँ मुँह मोड़ि लेल । पचहत्तरि टाकाक मासिक वेतन पर संस्कृत-हिन्दी शब्दकोशक संकलनकर्ताक रूपमे पदग्रहण कएल। श्री श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' *आर्यावर्त* क सम्पादकीय विभागमे अनबाक कतेको प्रयास कएल किन्तु, पण्डित झा ओहि दिश नहि गेलाह । 10 मार्च 1950 सँ 16.7.51 धरि एहि ठाम काज कएल । ओकर बाद बिहार सरकारक अनुवाद विभागमे शब्दकोश सहायक Lexicon Assistant क पद पर हिनक नियुक्ति भए गेल । 1978 धरि राजभाषा विभागमे विभिन्न पद पर छलाह । 1978 सँ 1985 धरि मैथिली अकादमीमे उपनिदेशक पद पर काज कएल । बिहार सरकार, राजभाषा विभागसँ मैथिली अकादमी अनबाक पाछू श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार छलाह । जनिक अनुरोधकें छोड़ि राजभाषा विभाग गेल छलाह, हुनकहि सत्प्रयासें मैथिली अकादमी आबि मुक्तिक साँस लेल । श्री विद्यालंकार जी आ निदेशक श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' लेल ई एक परम उपयोगी सुगन्धित फूल भए गेलाह। मैथिली अकादेमीमे हिनका शब्दकोशक संकलन आ प्रकाशनसम्बन्धी काज छलनि । दूनू मे अनियमितता छलैक । शब्दकोशक काज दरभंगा मे होइत छलैक । बैसार पर बैसार होइत छलैक मुदा बिना कोनो प्रगतिक । दू-चारिटा शब्द जोड़ाइत छल मात्र । शब्दकोश सम्पादन समिति फेर पटनामे मासेमास बैसए लागल । शब्द संग्रहसँ द्रव्यसंग्रह प्रमुख लक्ष्य भए गेल । अकादमीपर राजनीतिक दबाब होअए लागल । नियम-कानून तर पड़ि गेल । मुह देखि मुंगबा परसाए लागल । पण्डित झा एहि रीतिक अनुकूल नहि छलाह। हिनक समक्ष मैथिली छलनि, मैथिली अकादेमीक हित छलनि, सरकारी आचार-संहिता आ कार्यप्रणालीक दीर्घ अनुभव छलनि । हिनक ई निष्ठा, अनुभव आ दक्षता अकादमीमे बादक अधिकारीकें सुलफा जकाँ भेंसाए लगलनि ।

पण्डित झा मैथिली अकादेमीसँ मुक्त भए गेलाह । किन्तु ओ बैसयवला लोक तँ छलाहे नहि । अनुवाद केन्द्रक स्थापनाक विज्ञापन कएल। काजक अमार लागि गेलनि । एही बीच सुलभ इंटरनेशनल, पटनाक पुस्तकालय मे डा. विन्देश्वर पाठक राखि लेल । 1988 मे पुस्तकालय दिल्ली चल गेल । ओतए किछु मास रहि पटना घूमि अएलाह । सुलभ इंटरनेशनलमे एक बेर पोथी सरिआ देलाक बाद बैसल-बैसल पढ़ैत रहब मात्र काज छलनि । ई देखि प्रतिनियुक्ति पर आएल एक प्रोफेसर साहेब एक दिन डा. पाठकक ओतय शिकाइत कएल, 'पण्डित जी भरि दिन व्यर्थ बैंसल रहैत छथि।' पाठकजीक प्रश्नक उत्तरमे ओहि महानुभावक मुँहसँ अकस्मात सत्य बात बहरा गेल - 'ओ किताब पढ़ैत रहैत छथि' । डा. पाठकक उत्तर - "पढ़ब कें अहाँ कोनो काज नहि बुझैत छिऐ की ?'' - सूनि ओ प्रोफेसर साहेब अवाक् भए गेलाह ।

किछु गोटए 10 बजेसँ पाँच बजे धरि खटि, शेष समय गप्प-सरक्का आ पान-सुपारी चिबेबामे गमा लैत अछि । परन्तु पण्डित गोविन्द झा यद्यपि राजभाषा विभागसँ मुक्ति पएबा धरि घड़ी नहि बन्हलनि, मुदा एको मिनट व्यर्थ नहि गमाओल । प्रात: काल शब्दकोश निर्माण वा कोनो प्रकारक अनुवादकार्य करैत रहलाह । पटनाक प्रारम्भिक जीवनक कतेको वर्ष पतौरक एक जमीन्दार आ नामी ओकील श्री रामचन्द्र सिंहक डेरा पर नओ बजे राति धरि खटथि । एहि खटनीसँ भेल अर्थलाभ द्वारा बीच-बीच मे आएल अनिवार्य व्ययभारसँ मुक्ति भेटैत छलनि तँ दोसर दिस ज्ञान-विस्तार । एहि प्रकारें कही जे पं. झा तीनबर ड्यूटी करैत *चरैवेति-चरैवेतिक* स्थान पर अपन जीवनक लक्ष्य *करैवेति-करैवेति* निर्धारित कए लेने होथि तँ अत्युक्ति नहि होएत । पंडित गोविन्द झाक ई जीवनमूल्य - 'नहि मानव हम हारि' शीर्षक कवितामे व्यक्त भए गेल अछि :-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अर्चन नहि, हंम करैत छी
स्वयं शक्तिकेर सर्जन
भीख न मंगलहुँ, कहिओ, कएलहुँ
बाहुक बलसँ अर्जन

धार्मिक मान्यता - पण्डित गोविन्द झाक लालन-पालन प्राचीन रीतिक नैष्ठिक आचार-विचारक अनुसार भेलनि । नित्य संध्यावंदन, शालग्रामक पूजा, भस्म, त्रिपुण्ड आ सिन्दूरक ठोप करैत छलाह । हिनक परिवार मे धर्म अध्ययनक विषय छल । वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि पोथी ज्ञानक वस्तु छल, आस्थाक वस्तु नहि । धर्महिक रक्षाक हेतु पिता नेपाल उपटल छलथिन । किन्तु पटना अएला पर हिनक धार्मिक आचरण आ मान्यतामे आमूल परिवर्तन आबि गेल! एकर दू टा कारण रहल होएत, कठोर धार्मिक आचरण आ रीति-रेबाजक प्रति क्रमशः बढ़ैत आक्रोश तथा राहुल सांकृत्यायन, बर्ट्रेण्ड रसेल, दयानन्द सरस्वती आदि अनेक विद्वानक निरन्तर अध्ययन । एहि अध्ययनसँ अन्धविश्वासावस्था आ विश्वासावस्थाकेँ टपि हिनक बुद्धि अविश्वासावस्थामे आबि गेल । तर्कशक्ति बढ़ि गेलनि । कतेको आचार-विचार आ धार्मिक अनुष्ठान हिनका लेल निस्सार भए गेल । चानन-ठोप त्यागल, शिखा-सूत्र त्यागल, सन्ध्या वन्दन आ शालग्रामक पूजा त्यागल आ पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष भए गेलाह । धोतीक स्थान पएजामा लए लेलक। चानन-ठोप आ शिखा-सूत्र त्यागलाक प्रसंग दूटा रोचक घटना जीवनमे घटलनि । मैथिली अकादमीक कार्यकालमे मैथिलीक एक महान् साहित्यकार आ परम नैष्ठिक पुरुष अकादेमीक सभ ब्राह्मण स्टाफकेँ मातृनवमीक अवसर पर नोति, हिनका मात्र एहि लेल बारि देल जे ई जनौ नहि धारण करैत छथि । दोसर दिस एक परम धर्मपरायणा वृद्धा ई जनितहु जे ई चानन-ठोप नहि करैत छथि, जनौ नहि पहिरैत छथि , एहि हेतु बेरोबरि नोतैत रहलीह जे पण्डित झा चोरि-छिनरपन नहिँ करैत छथि, दारू ताड़ी नहि पीबैत छथि ।

कहि सकैत छी जे पण्डित गोविन्द झा लेल धर्म प्रदर्शनक वस्तु नहि थिक । ओ हृदयक विशालता थिक । लोकक प्रति सद्भावना थिक। भूखल-पियासलक प्रति करुणा आ सहानुभूति थिक- 'परोपकरः पुण्याय, पापाय परपीडनम्' ।

राजनीतिक यात्रा - पण्डित गोविन्द झाक पिता स्वराजी नहि छलाह । धर्मरक्षाक हेतु अंगरेज बहादुरक शासनक पक्षपाती छलाह । किन्तु हिनकहु परिसर मे किछु पण्डित लोकनि छलाह जे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीक विचारक अनुयायी भए आचरण करैत छलाह । एहिमे हिनक पाठशालाक गुरु पण्डित मधुसूदन मिश्र छलथि । ओ खद्दर पहिरैत छलाह तथा विभिन्न समाचारपत्रकीनि स्वाधीनता-आन्दोलनक गतिविधि सँ अपनाकेँ अद्यतन रखैत छलाह । नेता जकाँ गाम-गाम घूमि-घूमि भाषण करैत छलाह । ई अपन गुरुक एही आचरणसँ प्रभावित भेलाह । हिनक बाल्य कालहिमे सरिसबमे *कर्मवीर आश्रमक* स्थापना भेल छल । एहि प्रकारेँ महात्मा गांधीक विचारधारा बालक गोविन्दकेँ आकर्षित-प्रभावित कएलक । ई स्वराजी लोकनिक सभामे जाए लगलाह । 1942 ई. क क्रान्तिक समय मनीगाछीक टेढ़का पुलकेँ तोड़निहारक दलमे सामिल भए गेलाह। एहिसँ पूर्व पिता स्वराजीक सभामे जएबासँ मना नहि कएने छलथिन। किन्तु आब हिनका पर कड़ा प्रतिबन्ध लागल । पिताक आज्ञाक विरोध नहि कएल । किन्तु सात दिन धरि मौनव्रत आ एकभुक्त राखल । चरखा डंबरामे फेकल गेलनि । खद्धरक स्थान पर विदाइमे कतहु भेटल लाल मिलहा धोती पहिराओल गेल । राजनीतिक सक्रियता यद्यपि सदाक लेल बन्द भए गेलनि, किन्तु गांधी-दर्शनक प्रभाव क्रमशः जमैत गेलनि । एम्हर आबि मिथिला राज्यक हेतु डा. जयकान्त मिश्रक नेतृत्वमे भेल पदयात्रमे एक-आध ठाम सम्मिलित भेलाह अछि। ओहि प्रसंग अपन विचार व्यक्त कएल अछि । हिनक राजनीतिक सक्रियता एहिसँ बेसी नहि अछि। ओना देश-विदेशक राजनीतिक घटनाचक्रक अद्यतन परिचय रखैत छथि ।

परिधान यात्रा - पण्डित गोविन्द झाक पालन-पोषण आ शिक्षा-दीक्षा जाहि प्रकारक परिवेश तथा जेहन सनातनी पिताक नियंत्रामे भेलनि, धोती कुर्त्ताक अतिरिक्त अन्य कोनो परिधानक कल्पना करब असंभव छल । तथापि 1942 क क्रान्तिक समय ओ मिलहा वस्त्रअवश्य अपनाओल किन्तु धोती नहि त्यागल । पटना अएला पर धोती त्यागि पएजामा धारण कए लेल। एकर मुख्य कारण महगी छल । एहि प्रसंग *आर्यावर्तक* एक स्तम्भमे चुटकुलानन्दजी समीक्षा करैत लिखल - 'कपड़ाक मूल्य ततेक बढ़ि गेल अछि जे हमरा ओहि ठाम एक पण्डित धोती पहिरब छाड़ि देलनि अछि । एकर अर्थ ई नहि बूझू जे ओ नंगटे बौआएल फिरैत छथि । ओ धोतीक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बदला पएजामा पहिरि पण्डितसँ मौलवी बनि गेल छथि ।' एहि प्रकारेँ खिधांसक बिना परवाहि कएने पण्डित गोविन्द झा धोतिआहा पण्डित धरि नहि रहलाह । युग आ आयस्रोतक अनुरूप अपन परिधानमे परिवर्तन आनब ।

देशाटन - वैचारिक यात्रा जकाँ यद्यपि पं. गोविन्द झाक भौगोलिक यात्रा व्यापक नहि अछि किन्तु स्वदेशी-बिलेंती उधबाक समय बिनु गाछ-पातक निर्जन परती पर बनल कुटीमे प्राय: तीन वर्ष वनवास-यात्रा अवश्य कएलं । ई एक दिस त्रासद अछि तँ दोसर दिस जाति, धर्म, समाज आ अन्धविश्वाससँ मुक्ति पएबाक बाट अवश्य हिनका देखओलक।

हिनक जीवनक दोसर महत्वपूर्ण यात्रा थिक साहित्य अकादेमीक खर्च पर नवम्बर 1990 मे उत्कल-यात्रा । एहि यात्राक्रममे ओड़िआक प्रख्यात रचनाकर मनोरंजन दास (साहित्य अकादेमी में ओड़िआक प्रतिनिधि), प्रतिभा राय, जयन्त महापात्र कुञ्जबिहारी दास (पं. खुद्दी झाक शिष्य जे मैथिली विषय राखि पढ़ने छलाह), सरोजकान्त महन्ती, विजय रमण सतपथी, मालविका राय, साहित्यकार दम्पति देवेन्द्र महन्ती आ रेखा महन्ती आदिसँ सम्पर्क कए उत्कलक भाषा, संस्कृति, आचार-व्यवहारकेँ निकट सँ अध्ययन करबाक अवसर तँ भेटबे कएलनि, ओड़िआ लिपि आ भाषा सेहो पढ़य आ बाजए लगलाह। फरवरी 1995 क चंडीगढ़ यात्रा जतए ओ 'विद्यापतिक आत्मकथा' क हिन्दी अनुवादक विमोचन क अवसर पर आमंत्रित छलाह, सेहो पंडित झाक जीवनक एक महत्वपूर्ण यात्रा थिक। मुदा *सगर राति दीप जरए* क क्रममे काठमाण्डू, जनकपुर, विराटनगर, तथा बिहारक अनेक स्थानक यात्रा हिनक वृद्धावस्थाक ऊर्जाक परिचायक तँ थिके, अनुज पीढ़ीक साहित्यकारक लेल प्रेरणाक स्रोत सेहो सिद्ध भए गेल अछि।

लेखन यात्रा - पण्डित गोविन्द झाक पाठावस्थामे संस्कृत छात्रआ पण्डित लोकनि केवल पाठ्यपुस्तक पढ़थि आ पढ़ावथि। अपन सभटा शक्ति ओकरे घोखबामे लगा देथि । किन्तु पण्डित झाकेँ परिवारक साहित्य-साधनाक संस्कार केवल पाठ्यपुस्तक धरि सीमित नहि रहए देलक । पिता पुस्तकप्रेमी साहित्यकार छलथिन । जेठ भाए पं. श्री जीवनाथ झा कविक रूपमे चर्चित भए गेल छलाह । पिसिऔत श्रीवल्लभ झा सुकवि छलाह। ई प्रथमा पास करितहि संस्कृत भाषा किछु-किछु बूझए लागल छलाह । गृह-पुस्तकालयक प्रभार भेटि गेलनि । घरमे तेरह गोट संस्कृतक नाटक छलनि, मध्यमा पास करबासँ पूर्वहि पढ़ि गेलाह। पाठ्यक्रमक प्रस्तावित अंशे नहि, सम्पूर्ण पोथी पढ़ि लेल करथि । एहिसँ साहित्य दिस रुचि बढ़लनि ।

साहित्य-सर्जनामे पहिल बेर कलम उठाओल मैथिल महासभाक मधुबनीमे 1936 मे भेल अधिवेशनक मध्य । समस्या-पूर्तिक प्रतियोगिता छलैक । माइक पर बेरि-बेरि सुनैत छलाह' 'आओर केओ ! आओर केओ, हाथ उठाउ'! मात्रतेरह वर्षक गोविन्द हाथ उठा देल । समस्या छल 'नीक कहाएब 'जोड़लनि' किछु पाती :-

जँ निज उदयमसँ दिनराति पहाड़हुँकेँ
लघु बूझि ढहाएब ।
तँ ध्रुव निश्चय सत्य सुनू
अओ मैथिल बान्धव नीक कहाएब ।

पहिल स्थान प्राप्त भेल छलनि । अगिला अधिवेशनक अवसर पर जंखन नाम छपलनि तँ प्रसन्नताक सीमा नहि रहल । महासभाक मधेपुरक अधिवेशनमे दू टा समस्या-पूर्ति बना लेल । जे नीक नहि बूझल, मित्र रेवती रमण झा केँ दए देल । रेवती रमण झा हिनक खरहबा समस्यापूर्ति पढ़ि प्रथम स्थान पाबि गेलाह । ई हारि कए जीति गेलाह । मुदा आत्मविश्वास अवश्य जागि गेलनि । दोसराक हेतु लिखबाक ई प्रवृत्ति सेहो क्रमश: बढ़ैत गेलनि । यद्यपि पिता, अग्रज, पिसिऔत भाए कविता करैत छलथिन किन्तु सभसँ बेसी प्रेरित भेलाह सरसकवि ईशनाथ झाक कविता 'अन्तरमे हाहाकर भरल नहि वाणीमे साहस ओ बल' सूनि, मधुबनीक एक कवि सम्मेलनमे ई कविता सुनने छलाह । एकर बाद जखन कविता लिखथि सुनेबा लेल नवटोल पहुँचि जाइत छलाह । 'अभिज्ञान शाकुन्तल, क अनुवाद कए महावैयाकरण जीकेँ सुनेबा लेल आबथि तँ पं. गोविन्द झा कान पाथि लेथि । कालिदासक दोसर नाटक 'मालविकाग्निमित्र क अनुवाद सरसकविक देखौंसमे शुरू कए देल आ प्रथम प्रयास छपिओ गेलनि । एहिना कथा मनमोहन झाक प्रेरणासँ लिखब शुरू कएल ।

पं. गोविन्द झाक मूल, अनूदित आ सम्पादित तथा अप्रकाशित पोथीक सूची अनुलग्नकमे अछि।

संस्था - पण्डित गोविन्द झा प्रारम्भहिसँ संस्था सभसँ सरोकार रखलनि अछि मुदा हिनक ई सम्बद्धता कार्यमूलक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वा स्नेहमूलक छनि । ओकर दाव-पेच आ उठा पटकसँ अपनाकेँ सदा फराक राखल । एहि ठाम किछु संस्थाक नाम प्रस्तुत अछि जकरा संग कार्यमूलक संबंध रहलनि अछि :

1. चेतना समिति, पटना - स्थापना-दिवसहिसँ एकर साहित्यिक कार्यकलापसँ संबंद्ध छथि । किन्तु कहिओ सदस्यताक पदधारण नहि कएल। आँखि मूनि प्राप्त दायित्वक पालन कएल । पत्रिकाक प्रकाशन, विचार गोष्ठीक संयोजकत्व वा मानपत्र लिखबाक भार हो, सहर्ष स्वीकार करैत रहलाह। 'रुक्मिणीहरण' आ 'अन्तिम प्रणाम' नाटक तथा 'विद्यापतिक आत्मकथा' (उपन्यास) क प्रेरक चेतना समितिए थिक ।

2. राष्ट्रभाषा परिषद् - एकर अनुरोध पर बीम्स कृत 'तुलनात्मक व्याकरण' क अनुवाद कएल । पिशेल कृत 'प्राकृत भाषा व्याकरण' तथा कुमार गंगानन्द सिंह सम्पादित 'विद्यापति पदावली'क समीक्षा कएल । विद्यापतिकृत *विभागसारक* सम्पादन कएल । डा. शिववंश पाण्डेयक निदेशकत्व कालमें 'विद्यापति अपभ्रंश कोश' प्रस्तुत कएल ।

3. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी - निदेशक डा. शिवनन्दन प्रसादक अनुरोध पर 'मैथिली भाषा आ साहित्य' पर अनुबन्धपत्र लिखाएल । पोथीक परीक्षक भेलाह प्रो. हरिमोहन झा । अनुबंधपत्रकेँ दू खण्ड कराए ओ साहित्य पर लिखबाक भार प्रो. शैलेन्द्र मोहन झा केँ दिआ देल । हिनक अंश 'मैथिली भाषा का विकास' नामसँ छपि गेल । दोसर खण्ड प्रस्तुत नहि भेल। मैथिलीकेँ प्राप्त अवसर संबंधवादक दलदलमे फँसि गेल ।

4. साहित्य अकादेमी - मैथिली परामर्श समितिक दुइ बेर सदस्य मनोनीत भेलाह । ओकर संगोष्ठी, परियोजना, ग्रन्थक अनुवाद कार्यशालामे भाग लेल । अकादेमीक एक अधिकारी रमेश भसीन क टिटकारी पर असमी सीखल । ओ ओहनो काज हिनकासँ कराओल जाहिसँ पण्डित झा सम्बद्ध नहिओ रहैत छलाह । अकादेमीक अधिकारी लोकनि पं. झा लेल सदा शीतल बनल रहलाह तँ समितिक सदस्य रुक्ख आ तप्पत ।

एकर अतिरिक्त अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद दरभंगा, बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना; भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनउ; विद्यापति संस्थान, पटना; लोक साहित्य संगम, गया; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना; अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना; पुस्तक भंडार, पटना आदिसँ हिनक कार्यसंबंध रहल अछि । मात्र मैथिली अकादेमी, पटनासँ दूनू प्रकारक संबंध छलनि ।

समाज सेवा - साहित्यिक संस्था देहकेँ कम, कलमकेँ बेसी सक्रिय करैत अछि । मुदा सामाजिक संस्था कलमकेँ कम देह केँ वेशी धूनैत अछि । पण्डित गोविन्द झा कलम केँ तँ साहित्य मे सक्रिय बनौने रहलाह किन्तु सामाजिक कार्यमे देहकेँ कम थकाओल । तथापि जीवनमे कतेको एहन अवसर अएलनि जखन प्राप्त सामाजिक दायित्वक ई प्रतिष्ठापूर्वक निर्वाह कएल । मन्दिरी मोहल्ला मे कतेको वर्षधरि 'प्रवासी सेवा समिति' क अध्यक्ष छलाह। एकर मुख्य कार्य छल रोगीक परिचर्या, झगड़ा फरिछाएब आ मुरदा जराएब । एहिना राजवंशी नगर अएला पर, राजवंशीनगर निवासी समिति बनाओल । एकर चारि वर्ष धरि अध्यक्ष छलाह। पहराक व्यवस्था, उपभोक्ता भंडार आ प्राथमिक पाठशाला एकर मुख्य तीन काज छल । सहकारी उपभोक्ता भंडार आइ धरि चलि रहल अछि । प्राथमिक पाठशाला, जे हँसीमे झोपड़ी महाविद्यालय कहल जाइत छल, सरकारी मान्यता पाबि झोपड़ीसँ महल भए गेल अछि ।

शब्दकोश यात्रा - पण्डित गोविन्द झाक जीवन-यात्रामे सब सँ बेशी जे कोनो काज समय आ श्रम लेलक अछि से थिक शब्दकोशक निर्माण । पाठावस्थहिमे पिताक 'मिथिला भाषा कोष' मे जोतएलाह । प्रेस कापीसँ छपएबा धरि लागल छलाह । दोसर भेलनि अजन्ता प्रेसक प्रस्तावित हिन्दी शब्दकोश जाहि लेल यात्री जी पटना बजओने रहथिन । तेसर भेल इण्डियन नेशन प्रेसक 'संस्कृत-हिन्दी आ हिन्दी संस्कृत कोश' । एकर आयोजक रहथि डा. सुभद्र झा । चारिम भेल बिहार सरकारक 'राजकीय प्रशासन शब्दावली', एकर पचास हजारसँ अधिक प्रति बिकाएल । मुदा नाम सिपाहीक नहि, हवलदारक अछि। पाँचम भेल मैथिली अकादमीक 'मैथिली शब्दकोश' । ई तँ छपल मुदा छेकाएल अछि । जे एहि शब्दकोशकेँ छूबो नहि कएल से सम्पादक बनि गेलाह । छठम अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक 'विद्यापति अवहट्ट कोश' । एकर पाण्डुलिपि कोल्ड स्टोरेजमे सरिआओल अछि। सप्तम थिक "मैथिली अंगरेजी शब्दकोश" । ई निर्माता लग अछि । आठम थिक महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगा द्वारा प्रायोजित मैथिली शब्दकोश (मैथिलीसँ मैथिली आ अंगरेजी) । ई सम्प्रति नेहाइ पर अछि । एहू शब्दकोशक की गति होएत, सम्प्रति कहब मुश्किल अछि । पुत्रलोकनिकेँ विज्ञान आ गणित पढ़ेबाक क्रममे शब्दसंग्रह दिस प्रवृत्त भए 'विज्ञान परिभाषा कोश'क निर्माण कएल । ई

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वाणी प्रकाशन, दिल्ली मे विचाराधीन अछि । 'दस्तावेजों के नमूने' नामक पोथीक सम्पादनक क्रममे दस्तावेजी भाषाक अरबी-फारसी शब्दक विस्तृत सूची हिन्दी आ अंगरेजी पर्यायक संग तैआर कएल । ई एक नव प्रकारक शब्दकोश थिक । साहित्य अकादेमीक परामर्श समितिक एक बैसार मे A Compact Maithili Dictionary क विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कएल । मुदा नव रूप रेखा बनएबाक भार श्री प्रबोधनारायण सिंहकेँ दए टारि देल गेल। परिणाम समक्षहिं अछि। एहि प्रकारेँ 1946 सँ पण्डित गोविन्द झा मैथिली शब्दकोशक निर्माणमे लागल छथि ।

पुरस्कार यात्रा - पण्डित गोविन्द झाकेँ पहिल पुरस्कार भेटल मैथिल महासभाक 1936 ई. क अधिवेशनमे जखन मात्र तेरह वर्षक अवस्था में 'समस्यापूर्ति' मे प्रथम आबि गेल छलाह । पण्डित झा अपन भाषा, साहित्य आ संस्कृति लेल जे किछु कए गेलाह अछि तकर वास्तविक पुरस्कार थिक कोटि-कोटि साहित्यानुरागीक हृदयमे हुनक आदरपूर्वक स्थान। समय-समय पर सरकार आ संस्था द्वारा पण्डित झाक सम्मान होइत रहल अछि । जे पुरस्कार प्राप्त भेलनि अछि, तकर किछु उदाहरण निम्न प्रकार अछि :

1. बिहार सरकार राजभाषा विभाग द्वारा 1988 ई. मे दस हजार टाकाक कामिल बुल्के पुरस्कार (चन्दाझाकृत *मैथिली रामायणक* हिन्दी अनुवाद)।

2. चेतना समिति, पटना द्वारा १९८९ ई. मे सम्मानस्वरूप ताम्रपत्र ।

3. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 1993 मे सम्मान।

4. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा *'सामाक पौती'* कथासंग्रह पर वर्ष 1993 क पचीस हजार टाकाक साहित्य अकादेमी पुरस्कार ।

5. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा *'नेपाली साहित्यक इतिहास,* पर वर्ष 1993 ई. मे दस हजार टाकाक अनुवाद पुरस्कार ।

6. अरिपन, पटना एवं अखिल मिथिला संघ, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य लेखन प्रतियोगिता 1988 मे *लोढ़ानाथ* नाटक पाण्डुलिपि पर प्रथम पुरस्कार, आदि ।

नेपाली समाजमे एकटा कहबी अछि - 'लघु रघु पंडित'। 'लघु' भेल *लघुसिद्धान्त कौमुदी* आ 'रघु' भेल *रघुवंश* । से जे पढ़ि लेलक पण्डित भए गेल । एकर जँ व्यंग्यार्थ पर विचार करी तँ एक भेल भाषा पर अधिकार आ दोसर भेल साहित्य-सर्जना । पण्डित गोविन्द झा एहि अर्थमे वस्तुतः पण्डित छथि । पाण्डित्य-पूर्ण सम्पादन, आकरग्रन्थक निर्माण तथा साहित्यक विभिन्न विधामे रचना आ अनुवाद कए अपन मातृभाषहि नहि, राजभाषा हिन्दीअहुक विशेष सेवा कए यश आ अर्थक प्राप्ति कएल अछि । अपन जीवनक उपलब्धिक प्रसंग स्वयं लिखने छथि-

पाओल कतेक की से तौलू नहि अनेरे
पासडे. रहैछै एहि हाटक तराजू

ई जीवन भरि कठोरतर श्रम करैत रहलाह। जे किछु अर्जन कएल, सञ्चय नहि कएल । कठोरतर परिश्रमसँ दू टा सिद्धि प्राप्त भेलनि-सरल जीवन आ थोड़हिसँ तृप्ति, तँ दरिद्रताक पीड़ा नहि, अभावक ग्रन्थि नहि आ जीवन - यापनमे प्रदर्शनप्रियता नहि अएलनि । सत्यनिष्ठा आ इमानदारीक महत्व बूझल । श्रमकेँ हेय नहि मानल । महावैयाकरण जी जे लक्ष्मीपुर विद्यालय में किञ्चित अपमान बोध पर प्रधानाध्यापक पद छोड़ि जीवन-निर्वाह लेल कपड़ाक दोकान दरवाजा पर खोलि लेने छलाह, ओहिना पण्डित गोविन्द झा प्रथम श्रेणीमे प्रथम आएल गोल्ड मेडलिस्ट जेठ बालकके निरर्थक बैसल नहि रहए देबा लेल 'अक्कू-मिक्कू' दोकान खोलि जीविकोपार्जनक बाट धरा देल ।

महाभारतमे सांसारिक सुखक कसौटी कहल गेल अछि:-

अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ।

महाभारतकालीन सांसारिक जीवनक एहि छओ कसौटीमे बेटा-जमाएक जीविकापन्न होएब केँ जँ जोड़ि पण्डित गोविन्द झाक जीवन यात्रा केँ देखी तँ, हिनक जीवन-यात्रा परम भाग्यवानहि नहि, स्पृहणीय सेहो अछि । तीनू बालक जीविकापन्न छथि । अपन-अपन परिवारक संग माता-पिताहिक संगे एकहि घरमे रहैत छथि । दूनू जमाय जीविकापन्न रहि आवासक निकटहि रहैत छथिन्ह। एहि प्रकारेँ पण्डित गोविन्द झा बेटी-जमाय, नाति-नातिन, परनाति-परनातिन, बेटा पुतहु, पौत्र- पौत्रीसँ मण्डित भए निरन्तर सारस्वत साधनामे लीन छथि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली साहित्यक विकासमे पं० श्री गोविन्द झाक परिवारक योगदान

❑ डा० श्री जगदीश मिश्र

मड़रए-सिहौलि मूलक काश्यपगोत्रीय श्रोत्रिय ब्राह्मण पं. रघुवर झा जहिआ गोधनपुरसँ इसहपुर आबि बसलाह, तहिआ केओ नहि जनैत छल जे हुनक वासस्थान निकटे भविष्यमे मिथिला-मैथिल-मैथिलीक 'तीर्थ' बनि जाएत । मिथिलामे पाण्डित्यक परम्परा अति प्राचीन तथा पण्डित लोकनिक मातृभाषाक प्रति अनुरागो कम प्राचीन नहि । किन्तु पं. रघुवर झाक पौत्र महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक विलक्षणता ओहि भूमिकें 'तीर्थ' बनाए देलक । निर्मल वैदुष्य, भव्य आदर्श, कठोर अनुशासन ओ त्याग एवं साधनाक प्रतिमूर्ति छलाह, अक्षर-पुरुष पं. दीनबन्धु झा ।

ओ युग छलैक आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम उत्थान-कालक । कवीश्वरक देहान्त भए गेल छलैन्हि । मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक प्रारम्भ भए गेल छलैक । पत्र-पत्रिकामे मैथिलीक लेखकलोकनि नाना प्रकारें मैथिली लिखल करथि। सएह देखि कविवर सीताराम झा लिखने रहथि - "मैथिलीमे व्याकरण ग्रन्थक अभावें लेखक परिपाटी बहुत बिगड़ल अछि । जकरा जेना इच्छा होइ छैक लिखै अछि ।" *हमरा जनैत अपन मातृभाषाक इएह अभाव ओ एहने परिस्थिति महावैयाकरणकें 'मिथिलाभाषा विद्योतन' क सर्जन लेल प्रेरित कएने हेतैन्हि* । हिनकासँ पूर्व मात्रकवीश्वरकें छोड़ि प्रायः सभ संस्कृतक पण्डितलोकनि मैथिलीमे प्राचीन परिपाटीक गीत लिखल करथि तथा केओ-केओ त्रैभाषिक नाटक सेहो लिखथि किन्तु ओकरहु प्राण मैथिलीक गीते छलैक। किन्तु संस्कृत पण्डितक एहि प्रचलित परिपाटीक परित्याग कए महावैयाकरण अपन मातृभाषाक रिक्त भण्डारकें *विद्योतनरूप* रत्नसँ जगमगाए देल । महावैयाकरणक सुदीर्घ साधनाक प्रतिफल थिक ई ग्रन्थ-रत्न जकरा पाबि आइ हमरालोकनि गौरव पुरस्सर कहैत छिऐक जे एहन अनुपम व्याकरणक ग्रन्थ कोनो आधुनिक भारतीय भाषामे विरले होएत । एहि ग्रन्थक विलक्षणता पर मुग्ध भए विश्वविश्रुत आर. एल. टर्नर ओ सुनीति कुमार चटर्जी सन भाषावैज्ञानिक लोकनि मुक्त कण्ठें प्रशंसा कएने छथि ।

महावैयाकरण अपन मातृभाषामे जाहि-जाहि विषयक ग्रन्थक अभाव देखथि ओ तकरे प्रणयनमे लागि जाथि । व्याकरणक प्रणयनक पश्चात् ओ *'मिथिला-भाषा-कोष'* क सर्जन प्रारम्भ कएल । स्व. मणिपद्म लिखने छथि *"कोष नइ तँ राजा की ? कोष (असिकोष) नइ तँ वीर की ? आ कोष नइ तँ विद्वान आ भाषा की ?"* अपन मातृभाषाक आगाँ लागल प्रश्नचेन्ह कें हटएबाक लेल महावैयाकरण दीर्घ पच्चीस वर्ष धरि साधना कएल । ओ तखन *मिथिला-भाषा-कोष* प्रकाश मे आबि सकल । किन्तु एहि कोषक प्रकाशन सँ पूर्वहि प्रकाशमे आबि गेल महावैयाकरणक दोसर ग्रन्थ *'मिथिलाभाषा धातुपाठ'*।

महावैयाकरणक एक अनुपम ग्रन्थ अछि *'अलंकार-सागर'*। खेद जे ई अपूर्ण प्रकाशित अछि । हम जखन 'महाकवि गोविन्ददासक अलंकार-योजना' पर कार्य करैत रही तँ अनेको भाषामे लिखित अलंकारक कतेको पुस्तक देखबाक सुयोग भेटल । ताही क्रममे अलंकार-सागर सेहो पढ़ल । जतबे अलंकारक व्याख्या एहि ग्रन्थमे भेल छैक से स्वतः ग्रन्थकारक शास्त्रीय संस्कार ओ निर्मल वैदुष्यक परिचायक अछि । तेँ हम एहि ग्रन्थकें अनुपम कहल अछि ।

महावैयाकरणक हृदय तँ मातृभाषाक अनुरागसँ रंजित छल । ओ मैथिलीक सर्वतोभावेन उन्नयनक पक्षधर छलाह । तेँ जखन आचार्य किरणक सत्प्रयासें सरिसबमे 1948 ई. मे *विद्यापति गोष्ठीक* स्थापना भेल तँ महावैयाकरण अपन वार्द्धक्यकें बिसरि मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे पूर्ण सहयोग देल । आचार्य किरण लिखैत छथि *"51 ई.क सप्ताहव्यापी स्मृतिपर्व जेना संजीवनी-वर्षाक काज कयने छल । महावैयाकरण दीनबन्धु झा, कविशेखर बदरीनाथ झा, पं. मधुसूदन मिश्र पं. रामनाथ मिश्र ..... झुण्ड बान्हि पैरहि पहुँचैत छलाह तखन युवक ओ नेनाक कथे कोन ।"* महावैयाकरण विभिन्न पत्र पत्रिकामे भिन्न-भिन्न विषयक अनेकानेक निबन्ध लिखल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

व्यक्तिक हृदयकेँ चिन्हबाक लेल कहल गेलैक अछि जे ओहि व्यक्तिक पुत्रमे यशकेँ तथा ओहि व्यक्तिक द्वारा खुनाओल पोखरि वा इनारक जलकेँ देखबाक चाही । एहि कसौटी पर महावैयाकरणक हृदय गंगाजल-सन पवित्र देखबामे अबैछ । महावैयाकरण केँ तीन गोट पुत्रमहाकवि जीवनाथ झा, पं. श्री गोविन्द झा तथा पं. श्री माधव झा भेलथिन्ह । तीनू पुत्र पिताक जीवितावस्थहिमे संस्कृतक निविष्ट पण्डित भए गेलथिन्ह। तथा मातृभाषाक सेवाक भार हिनकालोकनिकेँ कौलिक दायित्वक रूपमे भेटलैन्हि।

महाकवि जीवनाथ झा व्याकरण ओ साहित्यक निविष्ट आचार्य छलाह । *'रावणवध'* महाकाव्य हिनक कवित्व प्रतिभाक परिचायक अछि । महाकाव्यक प्राय: समस्त लक्षणसँ समन्वित एहि ग्रन्थमे वर्णनक वैशद्य सर्वाधिक चमत्कारक अछि । युद्धक वर्णनक क्रममे वीर रसक अनुकूल ओजगुणक विलक्षण दृष्टान्त एहिमे भेटैत अछि । हिनक अन्य काव्यकृति थिक *'कल्पना'* ओ *'जल्पना'* ।

मिथिलाक ऐतिहासिक गौरव-गाथा पर आधृत पं. जीवनाथ झाक पाँच गोट नाटक प्रकाशित अछि - *वीर नरेन्द्र सिंह, अयाचीक शंकर, दुर्गाविजय, अहल्योद्धार* तथा *याज्ञवल्क्य-विजय*। ई सभ संस्कृत शास्त्रानुकूल नाटक थिक जकर कथनोपकथन सरल तथा भाषा स्वाभाविक अछि। ई सभ नाटक मञ्चनक दृष्टिएँ उपयुक्त अछि ।

पं. जीवनाथ झा मैथिलीक सर्वाङ्गपूर्ण काव्य शास्त्र लिखबाक योजना बनाओल । किछु अध्याय लिखबो कएल तथा प्रकाशितो अछि जेना - *काव्यलक्षण-समन्वय-समालोचना, दोषाकर, साधुशब्द-समीक्षा* आदि । किन्तु ग्रन्थ सम्पूर्ण नहि भए सकल । एकर अतिरिक्त हिनक अनेकानेक निबन्ध प्रकाशित अछि- *महाकविक दृष्टिमे चन्द्रमा, जनकपुर महिमा, परिक्रमा, निबन्धावली* तथा *कीर्तन-महिमा* आदि । पं. जीवनाथ झा वैयाकरण छलाह ओ तेँ एक गोट व्याकरणक ग्रन्थ *व्याकरणकौतुक* सेहो लिखलैन्हि। एकर अतिरिक्त पं. जीवनाथ झा संस्कृत, हिन्दी ओ नेपालीमे सेहो अनेकानेक ग्रन्थक रचना कएलैन्हि ।

महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक दोसर पुत्रथिकाह पं. श्री गोविन्द झा । इहो अपन अग्रजे जकाँ व्याकरण ओ साहित्यक आचार्य छथि, बहुभाषाविद् छथि तथा छथि भाषाशास्त्री । मैथिलीमे हिनकासँ पूर्व केओ व्यक्ति भाषा विज्ञानक ग्रन्थ नहि लिखने छलाह । डा. सुभद्र झाक ग्रन्थ अंगरेजीमे अछि । हम जखन पढ़िते रही तँ आचार्य रमानाथ झा हमरा पं. गोविन्द झा रचित *'मैथिली भाषाक उद्गम ओ विकास'* ग्रन्थक पाण्डुलिपि मात्रएक दिनक लेल पढ़बाक हेतु देने छलाह । आ हम जखन बुझलिऐक जे एक आवृत्तिसँ ग्रन्थक सभ विषय स्मरण नहि रहि पाओत तँ ओही एक दिनमे पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि कए राखल । पश्चात् जखन ओ पाण्डुलिपि तथा ओकर प्रतिलिपि आचार्य जीकेँ देलिऐन्हि तँ ओ बड़ प्रसन्न भेलाह । इएह भेल हमर ग्रथम परिचय पं. गोविन्द झाक रचनाक संग । पश्चात् ओ ग्रन्थ मुद्रितो भेल तथा ओकर हिन्दी रूपान्तर *'मैथिली भाषा का विकास'* सेहो देखबाक सुयोग भेटल । पं. गोविन्द झा भाषावैज्ञानिकक संगहि अपन पारिवारिक परम्पराक अनुकूल एक निविष्ट वैयाकरण सेहो छथि जकर साक्ष्य हिनक *'लघु विद्योतन'* तथा *'उच्चतर मैथिली व्याकरण'* अछि ।

मैथिलीक रिक्त भण्डारकेँ पूर्ण करबाक प्रयासमे लागल पं. झा 'छन्दशास्त्र ग्रन्थक रचना कए साहित्य-शास्त्रक जिज्ञासुक लेल केहन उपकार कएल से सर्वजन विदित अछि । सरल शैलीमे रोला छन्दक परिभाषा दैत पं. झा कहैत छथि *"हो सोलह पर आठ कला यदि रोला कहबए ।"* कलाक अर्थ एतए मात्र बुझबाक थिक। अपन पिताक चरण-चेन्ह पर चलैत पं. झाक एक अन्यतम कृति थिक *'मैथिली शब्दकोश'*।

संस्कृतमे कहल गेल छैक जे काव्यक सब विधामे सबसँ रमणीय नाटक होइत अछि । पं. गोविन्द झाक जे प्रथम नाटक प्रकाशमे आएल, ओ थिक *'बसात'* । हमरा जनैत एहि नाटकक जतेक मंचन भेल प्राय: विरले कोनहुँ नाटकक एतेक मंचन भेल होएत । एहि नाटकक सफलताक प्रमाण आओर की भए सकैछ ? एहि नाटकमे नारी-जागरणक स्वर कर्णगोचर होइछ । नव शिल्प, चित्रांकनक नवीन स्वरूप, पात्रक अन्त: संघर्षक चित्रण आदि एहि नाटकक सफलताक रहस्य थिक । पं. झाक दोसर नाटक थिक *'राजा शिवसिंह'* । विद्यापति साहित्य ओ तद्युगीन मिथिलाक इतिहासक मर्मज्ञ पं. गोविन्द झाक ई दोसरो नाटक प्रथमे जकाँ पूर्ण सफल अछि । हिनक दुइ गोट आओर नाटक प्रकाशित अछि *'अन्तिम प्रणाम'* तथा *'रुक्मिणीहरण'* । कथ्य ओ शिल्पक नवीनता एहि दुहू नाटकक प्राण थिक। हिनक एक गोट आओरो नाटक अछि *'लोढ़ानाथ'*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जकर प्रकाशनक बाट हमरालोकनि उत्सुकतासँ ताकि रहल छी ।

मैथिली साहित्यमे नाटकसँ अधिक रचना एकाङ्कीक भेल अछि । समयक स्वल्पता, अभिनयक सुगमता तथा प्रभावोत्पादकताक कारणेँ एकाङ्कीक प्रचार-प्रसार अत्यधिक भेल अछि । पं. गोविन्द झाक 'मिथिलाक प्रतिनिधि', 'उपचार', 'मोछक संहार', 'वर्णवर्णिनी' ओ 'वीर कीर्तिसिंह' आदि कतिपय एकाङ्की मे एकाङ्कीकार विलक्षण परिस्थितिक निर्माण कए कुशलतासँ कथाकेँ विकसित कएल अछि। हिनक एकाङ्कीक सर्वाधिक महत्वक तत्व थिक पात्रसभक मनोवैज्ञानिक अन्तःसंघर्षक चित्रण । मात्रएही तत्वक कारणेँ हिनक एकाङ्कीकेँ कोनहु भाषाक श्रेष्ठतम एकाङ्कीक कोटिमे राखल जाए सकैछ।

युगक गतिशील पृष्ठभूमि पर मानव जीवनक पूर्ण व्यापक चित्र अंकित कएनिहार गद्यकाव्य उपन्यास कहबैत अछि । पं. गोविन्द झाक *'विद्यापतिक आत्मकथा'* नामक उपन्यास प्रकाशित अछि । एहि उपन्यासक किछु आलोचना पढ़बाक सुयोग हमरा भेटल । आलोचकलोकनिसँ हमर विनम्र निवेदन जे एहि कृतिकेँ इतिहास नहि, ऐतिहासिक उपन्यास बूझि आलोचना करथि । ओ तखनहिँ 'आलोचना' एकाङ्की होएबासँ बाँचि सकत।

कथा जीवन रस ग्रहण कए जीवन्त रहैछ। कथाकार अनुभूत जीवनक यथार्थकेँ पूर्ण रोचकताक संग चित्रित करैछ। किन्तु कौतूहल एकर प्रधान तत्व थिक । पं. गोविन्द झाक दुइ गोट कथा-संग्रह अद्यापि प्रकाशित भेल अछि - *'सामाक पौती'* तथा *'नख-दर्पण'* । *सामाक पौती* साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत भए चुकल अछि। सामाक पौती शीर्षक कथा [illegible] सशक्त अछि जे कोनहुँ भारतीय भाषाक श्रेष्ठतम कथाक संग एकर तुलना कएल जाए सकैछ । हिनक कथा-साहित्यक प्रमुख तत्व थिक चरित्र चित्रणक सूक्ष्मता, वातावरण ओ परिस्थितिक सुन्दर संयोजन तथा चारित्रिक विलक्षणताकेँ रसात्मक उत्कर्ष प्रदान करब । एकटा कथा हुनक चिट्ठी' प्रवासीक छद्म नाममेँ संचयितामे प्रकाशित अछि से हिनके थिक तथा अपन रोचकता ओ सरसताक कारणेँ ख्यात अछि ।

पूर्वहि कहि आएल छी जे पं. गोविन्द झा अनेक भाषाक ज्ञाता छथि । आन-आन भाषाक श्रेष्ठ रचनासभक मैथिली अनुवाद कए ई मैथिलीक शृङ्गार करैत अएलाह अछि । साहित्यक विकासक लेल अनुवादक प्रचुरता आवश्यक होइछ। पं. झा *'स्वप्नवासवदत्त'* तथा *'मालविकाग्निमित्र'* क मैथिली अनुवाद संस्कृतसँ कएल अछि, *'पाताल भैरवी'* क अनुवाद असमियासँ कएल अछि, 'चित्रांगदा' ओ 'वीरांगना' क अनुवाद बंगलासँ कएल अछि । *नेपाली साहित्यक इतिहासक* मैथिली अनुवाद पर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कृत कए चुकल अछि । एकर अतिरिक्त *'आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण'* क अनुवाद ई अंगरेजी सँ हिन्दीमे कएने छथि । एही क्रममे हिनका द्वारा अनूदित एक आओरो ग्रन्थ अछि *चण्डीदास* ।

पं. गोविन्द झा अनेकानेक ग्रन्थक सफल सम्पादन सेहो कएने छथि जे हिनक प्रगाढ़ पाण्डित्यक परिचायक अछि । ज्योतिरीश्वरक *'वर्णरत्नाकर'*, विद्यापतिक *'विभागसार'*, *'विद्यापतिगीतावली'*, *'कीर्तिलता'*, *'कीर्तिपताका'*, *'गोविन्ददास भजनावली'*, महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक *'मिथिला भाषा विद्योतन'*, *'शिखरिणी'* ओ *'स्मृति-सन्ध्या'* (भाग-दू) आदि ग्रन्थक सम्पादन अद्यापि हिनका द्वारा कएल गेल । भ्रमाह पाठक शुद्धि ओ दुरूह पदक अर्थ कए सम्पादकमहोदय जिज्ञासु व्यक्तिक बड़ पैघ उपकार कएल अछि। ओ सम्पादनक जखन चर्चा चलल अछि तँ 'जिज्ञासा' क चर्चा बिना कएने ई चर्चा अपूर्ण रहैत । राँटी (मधुबनी)सँ प्रकाशित अर्द्धवार्षिक शोधप्रधान पत्रिकाक सम्पादक इएह थिकाह ।

पं. झाक एक गोट आओर ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि *'उमेश मिश्र'* । थिक तँ ई जीवनी किन्तु एहिमे हिनक प्रौढ़ ओ परिमार्जित गद्यक दर्शन सहजहिँ कएल जाए सकैछ । भारतीय साहित्यशास्त्रक मर्मज्ञ आचार्य तथा कुशल नाटककारक लेखनीसँ निःसृत आलोचनाक एक विलक्षण ग्रन्थ थिक *"मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ"* । यथार्थतः पं. गोविन्द झाक ग्रन्थ मालाक ई एक विलक्षण प्रसून थिक, जाहिमे आलोचकक सभ गुणक (सहृदयता, पूर्वाग्रहक अभाव, विस्तृत ज्ञान तथा निष्पक्षताक) दर्शन भेटि जाइछ ।

यद्यपि पं. झाक एकहु टा कविता-संग्रह प्रकाशित नहि छैन्हि किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे ओ कविता लिखितहि नहि छथि । जँ तीन चारि दशकक विभिन्न पत्र-पत्रिका उनटाओल जाए तँ 'बाह रे बजार' सन हिनक अनेको कविताक रसास्वादन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कएल जाए सकैछ । एवं प्रकारेँ हम देखल जे पं. गोविन्द झाक प्रतिभा काव्यक अनेकानेक विधामे रूपायित भेल अछि ।

महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक तेसर पुत्र थिकाह पं. माधव झा । इहो अपन अग्रजे लोकनि जकाँ साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य छथि संगहि विद्यावारिधि सेहो । ई संस्कृत ओ मैथिलीक नीक कवि छथि । यद्यपि मैथिलीमे हिनक काव्य-संग्रह एखन धरि प्रकाशित नहि भेल अछि किन्तु लिखने छथि बहुतो कविता । हिनक कवित्व-प्रतिभाक परिचयार्थ 'अंशुमान भगवान' शीर्षक कविताक चारि गोट पंक्ति द्रष्टव्य थिक -

निशा सापिनी ग्रसित जीव जन
निद्रा विष मूर्च्छित तन मन
भुवन बीच कर-अमृत-वृष्टि सँ
दी संजीवन दान ।
अंशुमान भगवान ।।

एहिमे शब्दतत्त्वसँ संगीतात्मकता, अर्थ तत्त्व सँ प्रसाद गुणक आधान, कल्पना तत्त्व सँ अलंकारक सन्निवेश तथा भावतत्त्वसँ रसात्मकता आएल अछि । एहिना हिनक अनेको कविता देखल जाए सकैछ । हिनक *'दीक्षा'* दैनिक आ व्यावहारिक जीवनक हेतु परम उपयोगी पोथी थिक ।

महावैयाकरणक पौत्रमहाकवि पं. जीवनाथ झाक पुत्र पं. श्री शम्भुनाथ झा साहित्याचार्य छथि। आचार्य तँ थिकाह ई संस्कृत साहित्यक किन्तु सेवामे लागल छथि मातृभाषा मैथिलीक। पं. शम्भुनाथ झाक दुइ गोट नाटक *'पुत्रदान'* ओ *'विभाजन'* एखन धरि प्रकाशित भए चुकल अछि । पुत्रदान महाभारतक कथा पर आधृत पौराणिक नाटक थिक । पं. श्री शम्भुनाथ झामे प्रतिभा छैन्हि, व्युत्पन्न छथि तथा अभ्यास तँ करितहिँ छथि । मुदा हमरा जनैत हिनक नाटक द्वयसँ सुन्दर हिनक पदावली अछि । *'भावना' 'बिरड़ो'* तथा *'चौक-चालीसा'* हिनक अप्रकाशित काव्य-कृति थिक । नव काव्य नव समस्याकेँ नव परिस्थितिमे व्यक्त कए रहल अछि । एही परिप्रेक्ष्यमे हिनक कविता सभ देखल जएबाक चाही । किन्तु एखन ई युवक छथि । हिनका सँ आओरो श्रेष्ठ रचनासभक आशा कएल जाइछ ।

महावैयाकरणक पौत्र पं. श्री गोविन्द झाक पुत्र डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू' आइ समस्त मिथिलांचलमे अपन बहुमुखी प्रतिभाक कारणेँ ख्यात छथि । एतेक अल्प अवस्थामे जतेक ई रचना कएल अछि से यथार्थतः मैथिलीक प्रति हिनक समर्पणभावकेँ देखबैत अछि । एखन धरि हिनक सात गोट नाटक - *आगि धधकि रहल छै, ताल मुद्दी, पातक मनुक्ख, एना कते दिन, अन्हार जंगल, आतंक* तथा *रक्त* प्रकाशित भए चुकल अछि । एहिमे अधिक पटनाक चेतना समिति द्वारा प्रकाशित अछि । चेतना समितिक रंग मंच पर एहि नाटक सभक सफल मंचन भए चुकल अछि । आ इहो ओहिना निर्भ्रान्त सत्य अछि जे मिथिलाक कोनहुँ सुदूर गाममे आइ जँ मैथिलीक दुइटा नाटक अभिनीत होइछ तँ ओहिमे सँ एकटा अवश्ये डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू' क नाटक रहैछ । ओना समीक्षक लोकनि नाट्य-समीक्षा अनेक प्रकारेँ करैत छथि मदा हमरा जनैत कोनहुँ नाटकक उत्कृष्टताक एक अतिरिक्त प्रतिमान ओकर मंचीय सफलता सेहो मानल जएबाक चाही । ओ एहि कसौटी पर हिनक नाटकसभ सफल नाटक कहाओत । मुदा खेदक विषय जे आइ आलोचना ततेक वर्गीय भेल जा रहल अछि जे एक कविक ई पंक्ति स्मरण आबि गेल *"धातु ओतेक अधलाह नहि, जतेक कसौटी अविश्वसनीय"* ।

डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू' नाटककारक अतिरिक्त एक गीतकारक रूपमे सेहो ख्याति अर्जित कएल अछि । हिनक दुइ गोट गीत-संग्रह एखन धरि प्रकाशित भए चुकल अछि - *चानीक रुपैया* तथा *कही त गाबि सुनाबी* । कोनहुँ गीतकाव्यक सर्वोत्तम धर्म किछुओ भए सकैत अछि तँ ओ ई जे ओकरामे गायक ओ श्रोता सभकेँ आनन्द प्रदान करबाक क्षमता सेहो पूर्ण रूपेँ स्थित होइक । एहि माध्यमे जाहि आनन्दक प्राप्ति होइछ से अलौकिक होइत अछि । तेँ रसात्मकता गीतक मूल धर्मक रूपमे स्वीकार कएल गेल अछि । हिनक दुनू संग्रहक प्रायः प्रत्येक गीत रसात्मक, संगीतात्मक ओ आह्लादक अछि आ तेँ एतेक प्रसिद्धि पओलक अछि । एकर अतिरिक्त ई बहुतो गजल लिखने छथि जे मिथिला-मिहिर आ अन्यो पत्रिकासभमे प्रकाशित छैन्हि ।

नाटक, गीत ओ गजलक अतिरिक्त हिनक अनेक कथा मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित छैन्हि । 'दोषी हम', 'सम्बन्ध', 'भोरुकबा' ओ 'सन्देह' हिनक श्रेष्ठ कथासब थिक । मुदा हमरा जनैत हिनक व्यंग्यवार्त्तासभ बड़ धरगर अछि, जकर प्रसारण ई आकाशवाणीसँ अधिक काल कएल करैत छथि ।

मैथिली साहित्यक विकासमे जे योगदान पं. गोविन्द झाक परिवार द्वारा कएल गेल अछि से यथार्थतः अभिनन्दनीय थिक । हमरा जनैत साहित्यक भिन्न-भिन्न विधा मे एतेक ग्रन्थक निर्माण प्रायः कोनो एक परिवार द्वारा नहि भेल होएत ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं० श्री गोविन्द झा हमरा नजरिमे

व्यक्तित्व अलौकिक तथा कृतित्व अनन्यसाधारण

❑ *आचार्य पं० श्री परमानन्दन शास्त्री*

'दुनिया गोल' अछि आ, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा 'नेति नेति जेहि वेद निरूपा' क रूपेँ निरूपित भगवान यदि क्यो होथि ? तँ हुनक दुइएटा काज एहि लेखकक जनिते अछि, एक उनटबाँसी चलायब आ, दोसर 'उनटे बसात' बहायब।

बूढ़-बुढ़ानुससभक मुँहेँ वारंवार सुनैत आयल छी जे एक बसय ईर घाट आ दोसर बसय वीर घाट' तँ दूनूक बीच एक आरि खेत नहि रहबाक कारणेँ प्रियाऽप्रिय सम्बन्ध (दोस्ती, दुश्मनी) नहि भेल करैछ । मुदा नोकरीक हेतु लाहौर ठेकल एहि लेखकक हेतु 'नरकहु ठेलमठेला' भए गेल। देश-विभाजनक कारणेँ 1947 क 9 अगस्तसँ 'पटनिया' बनल छी !! हँ, तऽ पटना प्रवासमे एक आश्चर्य घटना थिक प्रोफेसर आनन्द मिश्रक 'शत्रु' भावक अक्षयवट ! श्री मिश्र पुरनका पुबारि पारक लोक आ, ई लेखक पछवारि पारक । आधुनिक परिप्रेक्षहु मे श्री मिश्र दरभंगिया त, ई लेखक 'मुजफ्फरपुरिया' ! एहुनो एक आरि खेत नहि ! तेसर बात इयौह उल्लेखनीय अछि जे श्री मिश्र स्कूलसँ विश्वविद्यालय धरि जीवन्त भाखा अंगरेजीक शिक्षाप्रणालीसँ पढ़ने तऽ ई लेखक बाल्यावस्थामे मृत भाखा संस्कृतक अध्ययन मे टोलसँ पाठशालाक बीच रहिकासँ ककरौड़ करैत रहलाह । ई बात भिन्न थिक जे आइ ओ 'टोल' संस्कृतक मिडिल स्कूलमे बदलि गेल अछि ओ 'पाठशाला' सेहो वाराणसेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयक रूपमे विराजमान अछि ।

मुदा एतबा होइतहुँ श्री मिश्रसँ जखन जान-पहिचान भेल तऽ ने जानि कियैक श्री मिश्र 'शत्रु' भाव जोड़ि बसैलाह, आ जखन तखन 'चुनौतिये' पठबैत आबि रहलाह अछि । एक सनातनी परिवारमे जन्म रहबाक कारणेँ प्रतिकर्त्तव्यताक निर्वाह यथाशक्ति करैते आयल छथि । मुदा, आइ आठ वर्षसँ दुर्घटनाग्रस्त अस्सी वर्षक अवस्थो पार कए चुकल ई लेखक श्री मिश्रक नजरिमे पुरनके "शत्रु" भावक उचित पात्र मानल जा रहल छथि । ई तखने बुझना गेल जखन कि पछिले एक दिन संन्ध्याःकाल मैथिली संसारक दू-दू प्रमुख सिपहसालार श्री गोकुलनाथजी तथा श्री 'रमण'जीक मारफत दस्ती फरमान (पत्रसं. 255 दिनांक 26.11.1995 क) अचानक हस्तगत भऽ गेल । आश्चर्य भेल जे पटना विश्वविद्यालयक भूतपूर्व विभागाध्यक्ष श्री मिश्र मैथिलीक अएहर्ता रावणक एहि कथासँ सर्वथा अनजान-जकाँ बुझना जयताह जे बीमार ककरो शत्रु नहि भेल करैछ ? पूछऽ की आयल छी वैद्यराज (सुषेण) ! जल्दी लक्ष्मणकेँ देखिऔन !! आ, 'फरमान पढ़ला' सँ बुझना गेल जे मैथिली भाषाक विकास तथा साहित्य-साधनाक क्षेत्रमे मिथिलाक वरेण्य अक्षर'पुष्प' श्री गोविन्द झाक प्रस्तावित अभिनन्दन-ग्रन्थमे एक संस्मरण तथा दोसर प्रस्तावित मिथिलाक वैयाकरण पर 'आलेख' एक मासक अभ्यन्तर पठयबाक (चुनौती भरल) आग्रह ! 'चुनौती भरल' ई लेखक अपना दिशसँ एहि कारणेँ जोड़लन्हि अछि जे एहिमे एहू अवस्थामे बल परीक्षा कऽ रहलाह अछि। संस्मरण मनोधर्म आ वैयाकरण पर व्यक्तिचयन बुद्धिधर्म सुस्पष्ट मुदा सम्भ्रान्तो शत्रु जखन 'गराँ ढोल' बान्हिये देलनि, तऽ बजायबे सनातन धर्म बुझना जाइछ।

अस्तु, जहाँ धरि एहि 'प्रस्तुत अक्षरपुष्प'क व्यक्तित्व तथा कृतित्वक प्रश्न भेल, एहि लेखकक जनिते व्यक्तित्व 'अलौकिक' तथा कृतित्व 'अनन्य साधारण' ! कारण व्यक्तित्व अंगरेजी पर्सनलिटीक तथा कृतित्व अंगरेजियैक ऐक्टिविटीक पर्याय प्रयोगक रूपमे धुरझाड़ प्रयुक्त होइत देखबा मे अबैत अछि । मुदा, एहि लेखकक जनिते तद्-व्यक्ति विशेषक 'बाह्य' तथा 'आभ्यन्तर' परिचायक यावतो गुण समुदायक 'समवायितया' परिचायक तन्निष्ठ धर्मविशेष 'व्यक्तित्व' भेल करैछ, आ तहू व्यक्तिनिष्ठ कारण निरूपित कर्मताश्रयताविशिष्ट यावतो तादृश कर्मसमूहक पूर्णता प्रत्यायक तन्निष्ठ धर्मविशेष केँ 'कृतित्व' कहल जा सकैत अछि । एहना स्थितिमे सम्बद्ध वरेण्य अक्षरपुष्पक उभय धर्मक 'पूर्ण ग्रहण' पंक्तिबद्ध करब असम्भव-अमानुषेय कार्य, तै आंशिके ग्रहणकेँ ई लेखक स्वकृतिसाध्य मानैत किच्छु पंक्तिबद्ध कए रहल छथि । पाठकसमाज एतदर्थ क्षमा करथि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हँ तऽ जहाँ धरि संस्मरणीय एहि अक्षर 'पुष्प'क प्रथम दर्शनक पुण्य एहि लेखककेँ कहिया भेल छलनि से तऽ आब सुस्मरणविषय नहिएँ रहलनि, मुदा एतबा एखनहुँ इयाद छनि जे पटना प्रवासक आरंभ युगहिमे नवतुरिया मैथिली साहित्यिक समाजक एक आब विस्मृतनामा व्यक्तिक मुँहसँ -

'खजनी, खएबें जँ पान कने तँ खा ले ।
कतिकहरक सूखल ओठ आइ चमका ले ।'

सुनितहिँ ई लेखक 'सुधिबुधि' बिसरि बैसल छलाह ! आह्व इयौह स्मरण नहि छनि जे पूराक पूरा कविता पढ़ल गेल छलैक किंवा एतबे मात्र मुदा एतबा स्मरण छनि जे सुनिते मात्र महाभाष्यकार पतञ्जलिक शब्दमे भगवत: पाणिनेराचार्यस्य आबे नहि, हजारक हजार वर्ष पहिनहिसँ लुप्तप्राय संस्कृत महाकाव्य जाम्बतीजयक एकाध श्लोक खण्ड -

'अपश्यती वत्समिवेन्दुबिम्बं
तच्छर्वरी गौरिव हुंकरोतिं ।'

आँखिक आगाँ नाच करय लागल छलनि ! 'खेंजनी' आ 'कतिकहर' पर जखन आइयो ध्यान आबि जाइत छनि तऽ 'रोमाञ्च' भए जायल करैत छनि ।

खजनी के ? की ख-जनी ? किंवा ख-ज-नी? कतिकहरो की ? 'कति कहर, थिकैक किंवा 'कतिक हर' ? आ जँ 'खजनी' 'खञ्जन' क अपभ्रष्ट रूप तऽ नायिका खञ्जननयन। आ बिम्बोठी छलि की जे ओठ सूखि गेल छलैक। आ एहि तमाम पर आधृत आलंकारिक सन्दर्भमे तुरन्त जाड्यपात्र त्रिविक्रम (भट्ट) रचनाक उत्कर्ष एहि श्लोकेँ सुना देल करैत छथिन्ह -

किं कवेस्तेन काव्येन? किं काण्डेन धनुष्मत: ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयामि यच्छिर: ?

एना, नाम छनि गोविन्द (गो-विन्द) । वर्ण- कारी । आ कद मध्यम ! जात्या ब्राह्मण (श्रोत्रिय मैथिल) मुदा स्वभाव हिनक एहन मधुर जे हिनकाँ देखि कऽ 'रुद्र' धरि कँ कंपकपी आबि जायब परम्परोचित, मुदा एहि लेखककेँ जहिया जहिया भेँट होइत छनि - रोमाञ्च तऽ अवश्ये भेंए जायल करैत छनि, मुदा ओ भऽ जाइत छनि भयसँ नहि, प्रत्युत प्रमोदसँ ।

एहि प्रसंगमे ई लिखबो अप्रांसगिक नहि होएत जे देश-विभाजनोत्तर पटनाक प्रथम मैथिली संघटन भेल छल 'विद्यापति परिषद' जे विद्यापति वाचनागार सेहो चलबैत स्थापित भेल । मुदा ओकरा जनमिते पोलियौक शिकार भऽ जयबाक पड़लैक तऽ अक्षरपुरुष श्री 108 मान यात्रीजीक प्रखर प्रेरणासँ नव मैथिली संघटन स्थापनार्थ जे आयोजन भेल छल से एहि लेखकहिक दरवज्जा पर, जतय समागत मैथिली सेवी उपस्थित समाज (अमरुदी गली, पटना-4) क बैसकमे। श्रीयात्रीजीहिक प्रस्ताव नुसार सबसँ दूर सँ पहुँचल इयैह छलाह तेँ हिनके अध्यक्षतामे बैसक सम्पन्न भेल छल आइ *चेतना समितिक* रूपमे पूर्ण पल्लवित-पूर्ण पुष्पित प्रांतष्ठानक रूपमे प्रतिष्ठित अछि ।

एहि लेखककेँ सदिखन ई छगुन्ता छोड़ि नहि रहैत आबि रहल छनि जे ई हेन घोर कलियुग आबि गेल अछि जाहिमे प्रमाण प्रतिभाक अनादरे अनादर भेल करैछ । नहि तऽ जतय कहियो मैथिल कालिदासक रघुवंशक एक पद्यांश *सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रै यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा -'* पर हुनक नामकरणे *दीपशिखा कालिदासक* रूपमे कऽ देल गेल छल । मुदा, आइ ओहन दिलदार (सहृदय) नहि क्यो भेलाह अछि जे एहि 'महाप्रतिभा' अक्षर पुरुषक नामकरण *खजनी गोविन्दक* रूपमे करबाक सत्प्रयास कऽ सकतथि । हा ! हन्त !! हन्त !!!

जहाँ धरि एहि वरेण्य व्यक्तित्वक कृतित्वक प्रश्न अछि ई लेखक ओहिसँ सर्वाधिक परिचित प्रभावित होएबाक भाग्यशाली मानल जयबाक पात्र अपनाकेँ मानैत छथि । कारण हिनक पटनियाँ बनल रहबामे एकटा असधारण कारणक कोटिमे ओ (कृतित्व) आबि रहल अछि । कियैक तऽ नवीन भारतमे पटनहिसँ प्रकाशित हिन्दी दैनिकमे नियुक्त भऽ कऽ एहि लेखककेँ पटना रहबाक अवसर भेटल छलनि । ओ पत्रजखन बन्द भऽ गेलैक तऽ पटनास्थिते दरभंगा महाराजाधिराजक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान न्यूज पेपर्स एन्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. क दिससँ प्रस्तावित संस्कृत हिन्दी महाकोशक संरचनामे प्रतिनियुक्त एक पण्डित छोड़ि कय चलि गेल रहथि आ दोसर इयैह वरेण्य अक्षर पुरुष सेहो सरकारी राजभाषा विभागक नोकरी पकड़ि चुकल छलाह । आ बाहर रहितहुँ अपन निर्धारित दायित्वक निर्वाह कए रहल छलाह । आ कोश विभागक प्रभारी प्रकाशन प्रभारीक रूपेँ प्रतिनियुक्त छलाह मधेपुर शाखा (खण्डवला कुल) क महावरेण्य अक्षर पुरुष बाबू श्री लक्ष्मीपति सिंह जी महानुभाव जे अपन अनन्यसुलभ सौजन्यानुकूल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एहि लेखक तथा मैथिली साहित्यक एक 'विकसन्त' अक्षर पुरुष श्री भवनाथ झा 'बच्चा' (दीपक) केँ ओहि कार्यमे लगा लेने छलाह । इयैह एकटा अवसर एहि लेखककेँ कार्यभाराम्भक सप्ताहाभ्यन्तरहि [illegible] प्रकाशनक व्यवस्थापक पं. श्री कालीकान्त झा जीक बजाहटि भेल छलनि जाहिमे कोना, की काज भए रहल अछि क प्रश्न लेखकक समक्ष आयल छलनि । संयोगवश ओहिठाम एक 'बूढ़' व्यक्ति बैसल छलाह । उत्तरमे एहि लेखकक ई तथ्यपूर्ण तर्क रहनि जे आप्टेक शब्दकोश अंगरेजिया पण्डितक पद्धतिसँ बनल अछि आ ओकरे आधार पर जे संस्कृत-हिन्दी कोश निर्मीयमाण अछि से संस्कृत पण्डित-परम्पराक विरुद्ध अछि. । तेँ ओकर पतिसंस्कार पुरनका पद्धतिसँ कयल जा रहल अछि । पं. झाकेँ आश्चर्य लागल छलनि। विषयकेँ फड़िछवैत काल एहि लेखकक कथ्य छलनि जे पण्डित परम्परा केवल व्याकरण परिशुद्ध शब्दहिक कोशमे उल्लेख करैत आयल अछि आ अंगरेजी परम्परामे संस्कृत साहित्यमे उपलभ्यमान शुद्ध अशुद्ध दूनू शब्दक प्रयोग करैत आबि रहल अछि । आप्टेक संस्कृत कोश सेहो ओही परम्परा मे अबैत अछि । उदाहरणस्वरूप संस्कृतक एक शब्द (शुद्धरूप) अनृणिन् अछि । *अनृणीचाप्रवासी च स वारिचर मोदते* । कत्तहु आप्टेजी केँ अऋणिन् (अशुद्धरूप) से भेटलनि तेँ ओ तकरो अर्थविन्यास शुद्धरूपहिक समान कयने छथि । वस्तुतः वैयाकरण सम्प्रदायानुसार अऋणिन् द्रष्टव्य_ *'अनृनिन्'* लिखबे एहन [illegible] मार्ग होयत । आप्टे जखन अशुद्धो रूपक अर्थ कोशमे कयने छथि तखन एहूकोशमे ओहि परम्पराकेँ मानबामे छति की ? पं. झाक जिज्ञासा भेलनि, जकरा विस्तारमे एहि लेखकक कहब छल जे व्याकरणमहाभाष्यक रचयिता महर्षि पतञ्जलि महाभाष्यक प्रारम्भहिमे एक 'गो' शब्दक *गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका* आदि बहुत राश अपभ्रंश शब्दक संगहि 'वाग्योगविद्' (वैयाकरण)क हेतु *गावी* आदिक प्रयोगकेँ-आर्षप्रमाणक उल्लेख पूर्वक करैत दोषाधायक तथा अवैयाकरणक हेतु क्षम्य कहने छथि । तेँ दूनूमे भेद रखैत अर्थनिर्देशक सुलभ सुगम रास्ताक उपयोग कयल जा रहल अछि । 'बूढ़' सभ सुनैत छलाह आ पं. झाक हुनका दिस तकैते हुनका मुँहसँ बहरा गेल छलनि 'ई नेना नीक कहि रहलाह अछि ।' बादमे एहि लेखककेँ पता चललनि जे ओ बूढ़ आन क्यों नहि महावैयाकरण दीनबन्धु झाजीए छलाह ।

उपसंहारमे ई लेखक एतबा कहब अत्यावश्यक बुझैत छथि जे कोशकार्यसंलग्नताक अवधिमे कखनहुँ-कखनहुँ 'अत्र-स्मरणीय' एहि अक्षरपुरुष सँ अंगरेजिया पण्डित समाज विषयक अत्यधिक निष्ठाक दुर्गन्धिक बोध होइत छलनि एहि लेखक केँ। हिनक मैथिली पुस्तक कोनो एहि लेखकक अक्षिविषय भेबे नहि कयलनि अछि, अद्यपर्यन्त तेँ तद्विषयक संस्मरणसँ विरागहि पाठकसमाज सँ न्यूनातिरिक्तत्वक्षमापनप्रार्थना मात्र पर्याप्त । ओना मासी धं (ओम् नमः सिद्धम्) ।

◆

सहज व्यक्तित्व

❑ *श्री बाबू साहेब चौधरी*

पं. श्री गोविन्द बाबूक सम्बन्धमे हमरा सन अल्पशिक्षित आ अनुभवहीन व्यक्तिक लेल किछु लिखब असम्भवे गप्प छैक। हम त मिथिला-मैथिलीक मात्र एकटा साधारण उपासक । दिवा-रात्रि इएह ध्यान लगौने रहैत छी जे की हमर ई अभिलाषा पूर्ण होएत जे मैथिली संविधानक आठम अनुसूचीमे आओत तथा मिथिला राज्यक निमार्ण होएत । कतेक वर्ष हमर आयुर्दे आब । उनासीमे छी । तीन-चारि औरो सएह ने !

गोविन्द बाबू जाहि परिवारसँ आएल छथि, ओतय विद्याक उपासना होइत अछि । हिनक पिताजी सेहो गणमान्य व्यक्तिमे सँ एक तथा पुत्र सेहो मंचक विशेषज्ञ एवं लेखक । किन्तु, हमरा जे सभसँ बेशी आकर्षण हिनका दिस अछि ओ थिक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हिनक सादगी तथा कोनो परिवेश में अपनाकेँ मना लेब । सौभाग्यवश एक बेर हिनक आगमन कलकतामे हमर डेरा पर भेल। हम लजा गेल रही । इच्छा भेल जे कतहु अनतय हिनक व्यवस्था करी । हम बड़ गरीबक परिवेशमे रहैत छी। मुदा ओ जिद्द कएलनि जे एतहि अहींक बासामे रहब । हम्रा सौभाग्य छल । साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भेलाक बाद *अखिल भारतीय मिथिला संघ* हिनका सम्मानित करबाक कार्यक्रम बनौलक मुदा नहि आबि सकल छलाह । तकर कचोट हमरा लोकनिकेँ रहि गेल।

हम अपनाकेँ साहित्यकार नहि मानैत छी, तेँ हिनक साहित्यक प्रसंग किछु कहि नहि सकब । मुदा हिनक सादगीक अतिरिक्त जे सभसँ बेशी हमरा आकृष्ट करैत अछि, ओ थिक मिथिला आ मैथिलीक प्रति हिनक अगाध प्रेम । हम हिनका सँ आआरो साहित्यिक सेवाक लेल आन्तरिक अनुरोध आ प्रार्थना माँ मैथिलीसँ करैत छिअनि जे पं. श्री गोविन्द बाबूकेँ नमहर आयुर्दा देथिन्ह जाहिसँ ओ यथेष्ट मैथिली सेवा कए सकथि ।

◆

श्री गोविन्द जी

❑ *पं० श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'*

दूनू गोटाक आचार-विचारमे बहुत किछु वैषम्य रहलो उतर कतेको व्यक्तिकेँ आश्चर्य लगैत होएतन्हि जे हमरा आ श्री गोविन्द जी मे एतेक मेल आपकता कोना अछि । पटनामे सम्प्रति यदि ककरोसँ अधिक काल गप्प-सप्प टेलीफोनसँ होइत रहैत अछि तँ हिनकहिसँ ।

अपन अभियन्त्रण सेवा कालमे हम पटनामे बहुत बेसी समय नहि रहलहुँ । एक बेर चारि मास, दोसर बेर साढ़े तीन वर्ष आ अन्तमे छओ वर्ष । एहि छओ वर्षक अवधिमे हमर कार्यालय आ श्री गोविन्द जीक कार्यालय पुरना सचिवालय मे सटले छल । तथापि दुनू गोटामे तेना भएकए चिन्हारे नहि छल । ओना किछु साहित्यिक रुचि रहबाक कारणेँ हिनक नामसँ परिचित अवश्य छलहुँ, पाण्डित्यसँ बेशी नहि । ओ अवसर आएल, हम जखन सचिवालय-सेवासँ मुक्त भए चारि वर्षक बाद मैथिली अकादेमीमे निदेशक रूपे कार्यरत भेलहुँ ।

श्री गोविन्दजी पहिनहुँ ओतए आएल गेल करथि । क्रमहि हिनका विषयमे अनको सँ बुझलहुँ आ संस्कृतक निविष्ट पण्डित, राजभाषा विभागमे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व रखैत मैथिलीक प्रति हिनक कर्त्तव्यनिष्ठता देखि हमरा हिनका प्रति सहज आकर्षण भेल । ई ताबत राजभाषा विभागमे छलाहे । हमरा अपना कखनहुँ कोनो विषयमे सन्देह होअए आ विचार लेबाक होअए तँ सभसँ उपयुक्त व्यक्ति हिनके बूझि, सोझराबी। पाछाँ हिनक सहमति आ तत्कालीन अध्यक्ष पं. श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार' (जे हिनक वैदुष्यसँ पहिनहिसँ परिचित छलाह आ यदाकदा हिनकासँ काजो करबैत छलाह) क विचार लए हम पूर्ण प्रयास कए श्री गोविन्दजीकेँ मैथिली अकादमीमे उपनिदेशक रूपें सहयोगी बनाओल ।

कार्यालयक समयमे आ डेरो पर लिखबा पढ़बामे ई थकैत नहि छथि । एहि तरहक मस्तिष्क गुण बौद्धिक विलक्षणताक संग, शारीरिक क्षमता एहेन जे पाँच-छओ किलोमीटर पएरेँ आएब-जाएब हिनका लेखेँ साधारण बात । समयबद्ध सभ विषयमे, कार्यालय अएबामे, कोनो काज हाथमे लेलासँ ओकरा सम्पन्न करबामे नितान्त सचेष्ट रहैत छथि । बहुत विषयक ज्ञाता - संस्कृत व्याकरणक बाते नहि, अपन पिता महावैयाकरण दीनबन्धु झाक ठोकल-ठाकल, मांजल शिष्य, शब्दव्युत्पत्ति संस्कृत व्याकरणक हिसाबेँ अबितहि छलन्हि पाछाँ डा. श्री सुभद्र झासँ अर्वाचीन भाषाशास्त्रक विषयमे आ अपन अनुशीलनसँ सेहो पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कएलन्हि। राजभाषा विभागमे ई सभक आदरपात्रछलाहे, मैथिली अकादमीमे सेहो अपन कर्मठता सँ आदरपात्र भेलाह । हिनके सहयोगसँ मैथिली अकादमी (द्विमासी) पत्रिका प्रकाशित करब हमरा समयमे सम्भव भेल छल, जे हमरा अएलाक बादो कतेको वर्ष धरि प्रकाशित होइत रहल । एहिसंग हिनका उपर विशेष

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भार देल गेलन्हि मैथिली शब्दकोश तैयार करबाक लेल । कतेको वर्ष धरि ओ अथक परिश्रम कए ई तैयार कएलन्हि जकर अर्धांश करीब (अ सँ थ तक) एमहर आबि प्रकाशित भेल अछि ।

संस्कृत व्याकरण एवं काव्यशास्त्रतँ नीक जेकाँ पढ़नहि छथि पण्डित भए ई उर्दू सेहो सिखलन्हि, नेपाली, ओड़िया, बंगला आ असमी, ताहूमे अधिकार रखैत छथि, काज चलएबा जोगर। अंगरेजी जे एखन सर्वमान्य भए गेल अछि, सीखहि पड़लन्हि ।

सभ भाषाक प्रति प्रेम ओ आदरभाव रखैत अपन मातृभाषामे रचना करब आ से विविध विधामे - निबन्ध, शोधकार्य, उपन्यास, कविता, कथा, नाटक अनुवादकार्य - सभमे हिनक लेखनी अव्याहत रूपेँ चलैछ, जे हिनक असाधारण प्रतिभा एवं क्षमताक द्योतक थीक ।

आन-आन व्यक्तिकेँ प्रोत्साहन देब, सिखाएब, कठिन-कठिन रचनाक संकलन आ सम्पादनमे, प्रकाशनमे सहायक होएब, ओहिमे अपन बहुमूल्य समय लगाएब, सेहो हिनकहिसँ होअए । स्व. रामलोचन शरणजी द्वारा 'रामचरित मानस' क कवितामे मैथिली अनुवाद करबामे हिनक बहुत किछु सहयोग छलन्हि ।

विद्या विषय लए कए हिनका सभ वर्गक लोकसँ मेल, ओहिमे आयु, भाषा वा पदप्रतिष्ठा कोनो रूपेँ बाधक नहि । मैथिलीक कथाक्षेत्रमे तीन-चारि वर्षसँ, *सगर राति दीप जरए* जे कार्यक्रम तीन मास पर मिथिलाञ्चल वा अन्यत्रहु मैथिलीभाषीलोकनिक आग्रह पर चलि रहल अछि, ओहिमे एके आध ठाम गोविन्द जी नहि गेल होथि, काठमाण्डू हो वा सुपौल - ई जाइतहि छथि अपन खर्चसँ । आब अवस्थो भेलन्हि, परन्तु आन्तरिक साहस एवं स्फूर्ति एहि सभ कार्यमे अदम्य सन । पूर्ण रूपेँ व्यवहार पटु । योगः कर्मसु कौशलम् - ताहि हिसाबेँ ई योगसाधक अवश्य छथि ।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तिमे ई पछुअएलाह, परन्तु दूनू पुरस्कार - मूल ग्रन्थ एवं अनुवाद ग्रन्थ पर एके वर्ष प्राप्त कएनिहार प्रायः ई प्रथमे व्यक्ति छथि ।

संस्कृतक विद्वानकेँ किछु क्रोधी होएब साधारण बात । ई बात हमरा अपना गाम मे बहुत देखल अछि । जें कि गोविन्द जी पर आनो अनेक भाषाक प्रभाव रहल छन्हि, व्यावहारिक कुशलता छन्हि, तेँ ओ तेहन उग्ररूप नहि, परन्तु कहिओ-काल इहो उखड़ि जाइत छथि । ई साधारण दोष गुण समूहमे - निमज्जतीन्दोः किरणे ष्विवांङ्कः सरस्वतीक वरद पुत्र पं. श्री गोविन्द झा जी स्वस्थ सुखी रहैत शतायु होथु विविध विधामे रचना करैत मैथिलीक श्रीवृद्धि करथु ई शुभाशंसा।

वाणीवरदपुत्रोऽयं बहुभाषाज्ञपण्डितः
मैथिल्या मातृभाषायाः समृद्ध्यर्थं समुद्यतः ।।
रचयन् विविधग्रन्थान् स्वस्थो जीवेच्छतंसमाः
श्रीगोविन्दो हि सततं सुहृदानन्ददायकः ।।

◆

मैथिलीक सौभाग्य श्री गोविन्द बाबू

❑ *डा० श्री जयकान्त मिश्र*

हमरा बारम्बार अनुरोध कएल गेल अछि जे हम श्री गोविन्द झाक भाषा, शिल्प आ वर्तनी पर एकटा आलेख प्रस्तुत करी । मुदा भाग्यवशात् एखन हम तेना मैथिलीविरोधी राजनीतिक जाल मे ओझराएल छी जे स्थिर भए विचार करबाक अवसरे नहि भेटि रहल अछि ।

श्री गोविन्द बाबू हमरासँ एगारह मास दस दिन छोट छथि । हमर स्नेह, आदर ओ श्रद्धाक पात्रछथि ओ हम हुनक लेखनीक सक्रियता देखि-देखि मुग्ध रहैत छी । निरर्थक बिना किछु काज कएने ओ एको क्षण नहि रहैत छथि । हुनक जीवन ओ दिनचर्यामे जे सभसँ पैघ गुण हम देखैत छी, से थिक कार्य करबाक सुनिश्चित प्रणाली ओ एकनिष्ठ रात्रिन्दिवा कार्यमे संलग्न रहबाक उत्कण्ठा । किछु ने किछु ओ सदैव

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

लिखैत ओ सोचैत रहैत छथि ।

दोसर जे महत्वपूर्ण हुनक गुण हम देखैत छी से थिक हुनक लिखल कोनो विधाक कार्य हो सभ ठाम हुनक शैली प्राञ्जल, प्रसादगुणसँ सम्पन्न, सारगर्भित ओ धारावाही रहैत छनि । वर्तनी उएह छनि जे रमानाथ झाक शैलीक नामसँ विख्यात अछि ।

ओ लिखने छथि कविता प्रारम्भमे अधिक आब कवितासँ बेसी गद्ये लिखैत छथि । विशुद्ध साहित्यकारक रूपमे हम हुनक कवितासभसँ ओतेक प्रभावित नहि छी जतेक नाटक ओ कथासभसँ । हुनक उत्कृष्ट साहित्यिक ग्रन्थमे *सामाक पौती* ओ *नखदर्पण* कथासंग्रह तऽ मानल जाएत से हमरा विश्वास अछि । ताही कोटिक *रुक्मिणीहरण* नाटक अछि । कविताक कोनो पोथी एहि प्रकारक नहि छनि । हमरा बुझने पितासँ बेसी पुत्र श्री अक्कू सफल एकाङ्कीकार छथि ।

किन्तु, एहि सभसँ श्री गोविन्द बाबूक गणना मिथिलाक महान व्यक्तित्वमे ओहन नहि होएतनि जेहन भाषा-शास्त्री वा मैथिलीक वैयाकरणक रूप मे । लघु-विद्योतन हिनक सभ कृतिसँ अधिक स्थायी रहत । हिनक मौलिकता *छन्दःशास्त्र*ओ *मैथिलीक उद्गम ओ विकास* मे बेसी महत्वक अछि । मौलिकता पाण्डित्यमे छनि से तँनहि कहल जायत, मुदा तकरासँ कतेको बड़ बेसी मौलिकता गवेषकक रूपमे छनि । तत्वकेँ पकड़ि कए आगाँ बढ़ब आइ मैथिलीक कोनो दोसर लेखकमे नहि देखैत छिअनि ।

तस्मात् हमर धारणा अछि जे श्री गोविन्द बाबूक विशिष्टता एही कारणे अछि जे ओ साहित्यकारिता एवं विद्वत्ता दुनू क्षेत्रमे आइ सभसँ अधिक सफल छथि ।

लिखबामे हम बुझैत छी, हिनकर लेखनी अनुवादक कार्य बेसी तीव्र गतिसँ करैत रहलन्हि अछि । तकर कारण प्राय: राजभाषा विभागक नोकरी छलनि - अंग्रेजी वा हिन्दी ततबे अधिक स्पष्ट ओ द्रुत ई बुझैत ओ लिखैत छथि जतेक मैथिली । तथापि हिनका हम मैथिलीक लेखक मानबनि । अनुवाद ई असमिआ, बंगला एवं नेपालीसँ सेहो करैत छथि ।

ओ कल्पना-जगतमे कतेक सिद्धहस्त छथि तकर प्रमाण तँ कथानक जोड़बामे देखल जाएत आर से विद्यापतिक आत्मकथामे लोक बुझतनि विशिष्ट वा ओ अपनो कहैत छथि। मुदा हमरा एखनो हिनकर कथासभ सामाक पोती अथवा नखदर्पणमे विशिष्ट बुझाइछ । *उमेश मिश्र*क जीवनीमे कल्पना ओ अनुसन्धान दुनूक सम्मिश्रण छनि तँ ओ एक साधारण गतिवला पण्डितक जीवनयात्रकेँ रोचक बनाए देलथिन, से अपनहु कहैत छथि ।

जे हो, हम हिनका ग्रिअर्सनक विचारसँ आगू एवं छन्दक विवेचनमे लोचनसँ आगू देखि मुग्ध छी ।

श्री गोविन्द बाबू एखन आरो काज करताह । कोशकारक रूपमे एखन जे काजसभ ओ कएलनि अछि आर प्रकाशनसापेक्ष्य छनि तकर पूर्ण परिचय भविष्य देत । तथापि ई कहबा मे हमरा कोनो तारतम्य नहि अछि जे ओ साहित्य कारसँ अधिक विद्वान छथि । ई निस्संकोच कहल जाए सकैत अछि जे आइ मैथिली जगत् मे श्री गोविन्द बाबूसँ विशिष्ट दोसर केओ विद्वान् नहि कहल जएताह । प्रमाणसभक कमी नहि अछि मुदा नवीनतम प्रकाशन *जिज्ञासा* नामक उच्च कोटिक मैथिली शोधपत्रक सम्पादनकेँ देखल जाएत ।

श्री गोविन्द बाबू हमरालोकनिक सौभाग्य छथि । भगवती हिनका दीर्घायु करथुन्ह मुदा हिनका भगवतीमे विश्वास छनि से हमरा कखनो कए सन्देह होइत रहैत अछि । तथापि हमरासभ सन पछुआएल विचारधाराक विश्वास अछि जे ओ मैथिलीकेँ हिनक आरो उत्कृष्ट अवदानसँ एखन परिचय करबैत रहतीहि, कमसँ कम शतायु पुराए कृतकृत्य करतीहि ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चिन्तनशील लेखक

❑ *आचार्य पं० श्री आद्याचरण झा*

महान् विद्वान्, गहन चिन्तक, व्याकरणशास्त्रक अभिनव पाणिनि, महावैयाकरण पण्डित दीनबन्धु झा जीक प्रतिभाशाली पुत्र क रूपमे हम अपन छात्रावस्था 1935-40सँ जनैत छियैन्ह गोविन्द बाबूकेँ । यद्यपि हम दूनू दू विद्यालयक छात्र रही, परन्तु समकालीन । मुजफ्फरपुर परीक्षा केन्द्रमे भेँट होइत रहल । ओ सम्प्रति अमृतवर्ष प्रवेश कयलैन्ह अछि । हम ओ सम्पन्न कए 76 मे प्रतिष्ट भेल छी ।

पूज्य महावैयाकरणजीक अशेष कृपापूर्ण स्नेहभाजन हम रहल छी । ओ प्रयाग सँ 9.4.1951 ई. केँ लिखने छलाह - *"स्वस्ति मिथिलोन्नतिविधानपरायण श्रीमदाद्याचरण बाबू महोदयेषु दीनबन्धोर्नमस्काराः । आगाँ 'मैथिलीक प्रसङ्ग.'* — *अहाँक लेख 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित देखल । अहाँक वक्तव्य विचारपूर्ण ह्वैत गम्भीर तथा सकल त्रुटिमार्जनक साधक । अहाँके जे मैथिली समुन्नतिक वाञ्छा अछि से निःस्वार्थ - अर्थात् मैथिली पुस्तकसँ आयानपेक्ष केवल देशोन्नतिक हेतुक"* ।

संस्कृतक एतेक पैघ प्रकाण्ड पण्डित से मातृभाषा मैथिलीक सेवा कयलैन्ह जे हुनक 'मिथिला भाषा विद्योतन' आइये नहि अनन्त काल तक मैथिली भाषाक क्षेत्रमे प्रकाशदायक रहत । ओही परम्परामे गोविन्द बाबू व्याकरणक विशिष्ट विद्वान् होइत मातृभाषाक क्षेत्रमे सुदीर्घ राजकीय सेवासँ अवकाशप्राप्त छथि, तथा संगहि अंग्रेजीक सफल लेखक अनुवादक छथि - एहीरूप मे हमर सम्पर्क हुनका संग रहल अछि ।

मैथिली सेवामे मिथिलाक परम्परानुसार महाकवि विद्यापति, चन्दा झा, मनबोधक बाद म. म. मुकुन्द झा बक्शी, म. म. डा. सर गंगानाथ झाक क्रममे पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्र, पण्डित बलदेव मिश्र, पण्डित ऋद्धिनाथ झा, पण्डित ताराचरण झा, म. म. डा. उमेश मिश्र, पण्डित कालीचरण झा, पण्डित कपिलेश्वर झा शास्त्री, पण्डित जनार्दन झा 'जनसीदन', पण्डित यशोधर झा, प्रभृतिक बाद पंडित सुरेन्द्र झा 'सुमन', पण्डित काशीकान्त मिश्र 'मधुप', पण्डित उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', पण्डित काञ्चीनाथ झा 'किरण', पण्डित रामकृष्ण झा 'किसुन', पण्डित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदि मूलतः संस्कृते टाक पण्डितमूर्धन्य विद्वान् होइत मैथिलीक अखण्ड सेवा करैत मैथिलीक भण्डारमे अक्षय निधि राखि देने छथि । ओही श्रेणी-पँक्तिमे संस्कृतक मूर्धन्य मनीषी गोविन्द बाबू छथि ।

गोविन्द बाबू चिन्तनशील लेखक, मधुमयी शैलीक वक्ता छथि । राति-दिन सारस्वत सेवा मे संलग्न रहैत छथि । हँ, यदा-कदा कोनो विषय पर विचार-भेद रहलो पर कखनो भेँट भेला पर जे होइते रहैछ, संकेतमे चर्चा कए लैत छी । सार्वजनिक रूप देबाक स्वप्नो नहि देखल ।

हुनक एहि अमृतवर्षमे प्रवेशक मंगलक अवसर पर हम ऋग्वेदी सूत्र - *जीवेम शरदः शतंकारक* संगहि *भूयश्च शरदः शतम्* - एकर कामना करैत गोविन्द बाबूक नैरुज्य - कीर्ति- कान्तियुक्त जीवनक मंगल-कामना करैत छी ।

◆

सूर्यक समक्षहु भासमान

❑ *पं० श्री हीरानन्द झा शास्त्री*

गोविन्द बाबूक प्रसंग किन्तु कहब हमरा लेल बड़ कठिन भए जाइत अछि, कारण हमर दुनू गोटाक जीवन-यात्रा क शैलीमे एतेक साम्य रहल अछि जे गोविन्द बाबूक कथा कहैत-कहैत कखनहुँ कए हमरा लगैत अछि जे हम कतहु अपने कथा तँ ने कहैत छी । सभ केओ जनितहि छी जे गोविन्द बाबू महावैयाकरण स्वर्गीय पं. दीनबन्धु झाक सुपुत्र

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

थिकाह । एतेक पैघ विद्वानक बालक सामान्यतः विद्याक वटवृक्षक नीचाक स्नेह छाह लेबाक आशे लोक करैत अछि मुदा वटवृक्षक विशालताक कारण प्रकाशमे नहि आबि पबैत अछि। गोविन्द बाबू एकर अपवाद छथि जे सूर्यक सामीप्य रखनहु पर ओ सूर्य जकाँ तेजस्वी भले नहि भए सकल तथापि परम्परा दीपकक रूपमे अपन अस्तित्व आ अपन अस्मिताक परिचय सदैव लोककेँ करबैत रहलाह अछि। हम जाहि गोविन्द बाबूकेँ चिन्हैत छिऐन्ह ओ गोविन्द बाबू आजुक गोविन्द बाबू नहि प्रत्युत आइसँ साठि वर्ष पूर्व सरिसब पाठशालामे परम्परागत ढंगसँ संस्कृत पढ़निहार मेधावी छात्र छथि । जनिक अन्तरमे साहित्य, संस्कृतिक प्रतिभा पर्याप्त छल ।

ओ युग केहन छल । संस्कृतक पण्डितकेँ लोक 'पण्डितजी प्रणाम' अवश्य कहैक, परञ्च प्रशासनिक आ सामाजिक स्तर पर ओकर उपेक्षा सेहो शुरू भए गेल छल । एहि उपेक्षाक स्थिति ई छल जे महावैयाकरणक वेतन बीसो टका प्रतिमास नहि छल । समाजक लोक अंगरेजी पढ़निहारक सोझामे संस्कृत पढ़निहारकेँ हेय दृष्टिसँ देखए लागल छल । संस्कृतक प्रसंग लोकक धारणा कतेक भ्रान्त भए चुकल छल जे व्याकरण, साहित्य आ न्याय पढ़निहारसँ लोक दिन तकबाक अपेक्षा करए लागल छल । एहने समयमे हम आ गोविन्द जी दुनू गोटे छात्रक रूपमे संस्कृतक आगन में प्रवेश कएने रही । ओ समय की छल ? बाहरक लोक किंवा सरकार संस्कृतक प्रति जे धारणा रखने होअए, परंच संस्कृत पढ़निहार हमरालोकनि हृदयसँ संस्कृत एवं संस्कृतिक प्रति पूर्णतः समर्पित रही । आइ सरिसब विद्यालयमे कवि-सम्मेलन होअए, काल्हि लोहनामे, स्व. गोविन्ददासक स्मृतिमे गोविन्द पुस्तकालयक स्थापना । आइ बिदेश्वरक मकरमे शास्त्रार्थक आयोजन होअए त काल्हि पैटघाट मे । मनीगाछी मे मैथिली साहित्य परिषदक आयोजन होअए तँ हमरालोकनि ओतहु जुमि जाइ । सरस्वती-पूजामे नाटक मंचनक प्रतिस्पर्धा रहए । यदि केओ सर्वेक्षण करय तँ नाटकक मंचक विकासमे आओर ओकर प्रचार - प्रसारमे हमरालोकनिक प्रयासक चर्चा अवश्य रहत । ओहि समय ई अद्भुत वस्तु देखबामे अबैत छल जे सरस्वतीक पूजाक अवसर पर वसन्त-पंचमीमे हमरालोकनि संस्कृत नाटकक मंचन करी त ओकरा देखबा लेल हजारो लोक रातिमे शीत मे बैसल रहैत छल जखन कि एहि दर्शकसमूह मे संस्कृत जननिहारक संख्या पाँचो प्रतिशत नहि रहैत छल । हम मानैत छी जे [illegible] पारसी नाटक प्रभावित छल, जनताक त कथे कोन, पण्डितोक नहि छलैक प्रकाशक पृष्ठपोषक नहि छलैक आ एहन हाल पोशाकोक छल । हमरालोकनि जेना तेना माड़ी चिबैत रही, परंच सांस्कृतिक चेतना समाजमे कतेक मौलिक छल । साहित्यिक चेतना बोध भए रहल छल आ हमरालोकनि भविष्यक चिन्तासँ मुक्त भए नहि जीवनक पूर्ण उपभोग कए रहल छलहुँ । आब सोचैत छी जे कतेक नीक दिन छल ओ ।

क्रमशः हमरालोकनि चेतन भेलहुँ आ जीविकाक समस्या मुँह बाबि आगूमे ठाढ़ छल, तखन ओ जे कहबी छैक जे 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः' - ओकरे शरण लेलहुँ हमरा लोकनि। तँ जे कथी लाइए तँ अनायासे हमरालोकनिकेँ ढोंगी कहि सकैत अछि । परंच ई ढोंग परिस्थितिक देल छल आ हमरालोकनि गर्दनिमे पड़ल ढोल जकाँ ओकरा बजएबा लेल बाध्य रही । गामक गमार पंडित नगरमे आबि मान्य नागरिक भए गेल आ धोती छाड़ि पैजामा पहिरय लागल । गोविन्द बाबूक अभ्यन्तर मे आरो तिक्तता छलनि । पाण्डित्यक दुर्दशा ओ नेनहिसँ देखने छलाह । कर्मकाण्डक निस्सारताक बोध हुनका नेनहिमे भए चुकल छलन्हि । साहित्य किंवा सांस्कृतिक घटनमे जे मठाधीशलोकनि अहिकेँ बैसि चुक्ल छलाह तनिकासभकेँ ओ चिन्हैत छलाह । मुदा हुनकेलोकनिक बीच रहबाक विवशतो छलन्हि । पूजीक नामपर केवल अपन प्रतिभा आ श्रम छलन्हि । ओ लेखन-कार्य छोड़लन्हि नहि, परंच हुनक प्रतिभा अनेक धारामे बहय लागल, कहुखन कथा लिखथि तँ कहुखन कविता आ कहुखन नाटक किंवा एकांकी लिखए बैसि जाथि । अनुभव आ अनुशीलनक प्राचुर्य छलन्हि आ अभिव्यक्तिक लूरि । जाही दिशामे बढ़लाह ओम्हरे सफलता भेटैत गेलन्हि। महावैयाकरणक पुत्रकेँ भाषाविज्ञानक प्रति सहजहिँ आकर्षण छलन्हि तेँ ओ लुतुक छुटबे नहि कएलन्हि । तेँ गोविन्द बाबूक व्यक्तित्व विवादास्पद भलहिँ भेल रहन्हु परंच हुनक पाण्डित्यक धाक सभ मानैत रहलन्हि। हमर दुर्भाग्य जे हम गोविन्द बाबूकेँ पण्डित नहि मानैत छिऐन्हि, कारण नेनहिसँ हम जाहि प्रकाण्ड पण्डितलोकनिक निकट सम्पर्कमे रहलहुँ, हुनकालोकनिक समकक्ष गोविन्द बाबूकेँ ठाढ़ करबामे हमरा संकोच होइत अछि । परंच एहिसँ हमरालोकनिक पारस्परिक सद्भावमे कनेको अन्तर नहि आएल । हमरालोकनिकेँ एक दोसरसँ भेंट घाँट होइत रहल आ दुनू गोटे एक दोसरक प्रसंग

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नाना प्रकारक गप्पो सुनैत रहलहुँ जे ओ अमुक कार्य चोरा कए करैत छथि आ ओ अमुक काज देखा कए करैत छथि । मुदा ने पुरनका दिन रहल आ ने पुरनका परिवेश, रहि गेल मात्र पुरनका जमानाक गप्प जे हम दुनू गोटे जखन भेटी तँ खूब जमिकए गप्पक रसास्वादन करी । हम तँ आर्यावर्तमे खुटेसल रहलहुँ हुदा गोविन्द बाबू अनेरुआ साढ़ जकाँ बाधमे बौआइत रहलाह । कखनहुँ हिन्दीक खेतमे तँ कहुखन मैथिलीक खेतमे । एहि चिक्का दरबारिमे ओ अपन आलोचकक संख्या खूब बढ़ओलन्हि, दोष अपनहुँ छलन्हि । अपन मान्यताक प्रतिवाद ओ कहिओ स्वीकार नहि कएलन्हि । जँ कहिओ ककरो खुशामदो करए पड़ल होन्हि तँ ओ सम्भवत: कम्बल ओढ़िएकेँ खुशामद कएने होएताह । बादमे गप्पक प्रसंग ई बुझबामे आबए जे ओ सभ वस्तुसँ विरक्त जकाँ भए गेलाह । परंच एही बीच साहित्य अकादेमीक पुरस्कार हुनकामे नवजीवन, नव प्रेरणाक प्रादुर्भाव कए देलक । कतेको बेर ओहि बीच गोविन्द बाबूकेँ बुझौने होएबैन्ह जे पुरस्कारक राजनीति चाणक्यक राजनीति नहि थिकैक, कारण एहि राजनीतिमे व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक अवमूल्यनेटा होइत छैक । बहुतो एहन पोथीकेँ पुरस्कृत होइत देखि चुकल छी जाहि पोथीक प्रसंग आइ धरि ई बुझबामे अयबेनहि कएल जे ओहि पोथीमे की छैक तथा ओहि पोथीकेँ विशेषता की छैक । लेखकलोकनिसँ जिज्ञासा करी तँ ई कहि निरुत्तर कए देथि जे ओ अपन गुरुजीक मुहे सुनल सब बात लिखने छथि तेँ एहिमे शंकाक कोनो अवकाशे नहि छैक । एहि तर्कक आगाँ मे हमरालोकनि की बजितहुँ आ मैथिलीक पुरस्कार तँ एहनो-एहनो पोथी पर भेटैत छैक तेँ जँ पुरस्कार चाहैत छी तँ व्याकरणक टाँग तोड़ू, शास्त्रक टाँग तोड़ू आ एहिना कुदैत-कुदैत नचबो सीखि जाएब । परंच गोविन्द बाबू एतबा विषादमे छलाह जे हमर कथापर भरिसक काने नहि देलन्हि । जे हो, अन्तत : बिलाड़िक भागसँ सीक टूटल आ हमर गोविन्द बापू 'सामाक पौती' मे पुरस्कार लए अनलन्हि । परंच, गोविन्द बाबू तँ पुरस्कृत भए विषाद-सागरसँ उत्तीर्ण भए गेलाह मुदा पुरस्कारक मैदानमे लाठा-लठौबलि एखन धरि चलिए रहल अछि । एखनि बेचारे जयमन्त बाबू पुरस्कृत भए गरीबक बहुसभक भौजी बनल छथि, ई थिक पुरस्कारक महिमा । आब लोक गोविन्द बाबूसँ अपेक्षा करैत अछि जे ई अपन नव यौवनमे किछु एहन वस्तु दएकेँ जाथि जे अगिलो युगक लोक हेतु मार्गदर्शक रहए । गोविन्द बाबू तँ बहुतो दिन धरि शब्दकोषमे लटपटायल रहलाह । एम्हर हुनक दू-एक पोथी देखबामे अवश्य आएल अछि । परंच ओहिमे पिआजु-लहसूनक तँ कथे कोन जे हींगक छौको पड़लैक अछि वा नहि, ताहूमेँ सन्देह । जे लोकनि सार्त्र कामूक आधार पर कोनो साहित्यक मूल्यांकन करैत छथि ओ गोविन्द बाबूकेँ कोन कोटिमे रखथिन्ह से ओएहलोकनि जानथि । गोविन्द बाबू कतेको भाँड़ छूबि चुकल छथि, तेँ कोनो परिस्थितिमे ओ जँ किछु करए चाहताह तँ परिस्थिति हुनका नहि रोकि पौतन्हि, एहि प्रसंगमे हमरा रंच मात्र सन्देह नहि अछि । तेँ अधिकाधिक लोकप्रियता प्राप्त करबाक हेतु आब जेँ हम हुनका सिंह तोड़बाए कखनहुँ काल पड़रुक जेड़मे बैसल देखैत छिऐन्ह तँ हमरा कोनो आश्चर्य नहि होइत अछि । हम एतबे चाहैत छी जे गोविन्द बाबू कोनो एक क्षेत्र मे पूर्णता अवश्य प्राप्त करथु, एखन ओ कोनो क्षेत्र मे पूर्ण नहि कहल जा सकैत छथि। एहि हेतुक हुनका नवीन व्यावहारिक राजनीतिशास्त्र पढ़हि पड़तैन्ह कारण नेनेसँ देखैत आएल छी जे 'एहि नगरीक इएह व्यवहार खोलू धरिया उतरू पार' । एखनि धरि ओ मार्क्सकेँ पएर छानने रहलाह आ आब हुनका फ्राइडक पएर छानए पड़तन्हि । की गोविन्द बाबू ई कए सकताह? अथवा हारल नटुआ जकाँ झिटुका बिछैत रहि जएताह ? प्रतिस्पर्धा बढ़ि रहल अछि आ हमरा लोकनिक पीढ़ी अपन अस्तित्वक रक्षा लेल संघर्ष कए रहल अछि । मूल्य बदलि रहल छैक, मान्यता बदलि रहल छैक, आलोचकक सौन्दर्य बोधो बदलि रहल छैक । जे कहिओ डोका देखबे नहि कएलक ओ डोका सन-सन आँखिसँ की बुझत ! एहिना जे गोरहा नहि देखने अछि से गोरहाक जेठक की अर्थ बुझतैक ? की खंजनकेँ बगराक चालिमे चलल होएतैक ? हम प्रश्न कए चुप भए जाइत छी । उत्तर संभवत: गोविन्दे बाबू देताह ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एक विलक्षण व्यक्तित्व

❑ डा० श्री मदनेश्वर मिश्र

पण्डित श्री गोविन्द झा जीक नामसँ आ पाण्डित्यसँ हम पूर्वहिसँ परिचित रही मुदा हुनक सान्निध्य पयबाक अवसर तखन भेटल जखन हम अध्यक्ष रूपमे मैथिली अकादमी, पटनामे योगदान देलहुँ । पण्डितजी ओतय उपनिदेशक रहथि । हुनक विद्वत्ता, कर्मठता, कार्यदक्षता एवं अनुशासनप्रियतासँ हम प्रभावित भेलहुँ । पण्डितजी नियत समय पर कर्यालय आबथि आ पूर्ण अवधि धरि अनवरत कार्यशील रहथि । प्रशासनिक कार्यक संगहि हिनकापर प्रकाशन-कार्यक दायित्व सेहो रहनि । तकर निर्वाह ई निष्ठापूर्वक करथि। मैथिली अकादमी द्वारा हमरा समयमे जतेक पोथी छपाओल गेलैक, तकर प्रूफ आदिसँ लऽ कऽ साज-सज्जा धरिमे हिनक हाथ छलनि ।

पण्डितजी बहुज्ञ छथि । बहुत भाषा जनैत छथि, बहुत काज अनैत छनि । संस्कृत विधिवत् पढनहिँ छथि, आचार्य छथि । हिन्दी, अंगरेजी, बंगला, नेपाली, उड़िया, उर्दू आ अन्य भाषाक सेहो नीक जानकार छथि, ई हमरा ओहि समय मे अनुभव भेल । भाषा आ साहित्यक अतिरिक्त, इतिहास-सन विषयमे सेहो हिनक प्रवेश छनि ।

ई बिहार सरकारक अनुवाद विभागमे तँ बहुत दिन धरि कार्य कयनहि छलाह व्यक्तिगत रूपेँ अनुवाद-कार्यमे ई किछु कारणसँ अधिक रुचि रखैत छथि । संस्कृत, अंगरेजी, नेपाली साहित्यक हिनक कतिपय अनुवाद प्रशंसित पुरस्कृत छनि ।

हमरा ई जानि कऽ बहुत प्रसन्नता भेल जे कवीश्वर चन्दा झाक 'मिथिला भाषा रामायण' क ई हिन्दीमे विलक्षण अनुवाद कएने छथि जे प्राय: बिहार सरकारसँ पुरस्कृत भेल छनि ।

प्रेस-तकनीकक हिनकासँ नीक जानकार मैथिल मे बड़ कम अछि, मैथिल पण्डितमे तँ भरिसक इएह टा होएताह । मैथिली अकादमीक पोथीसभक जे उच्चस्तीरय प्रकाशन संभव भेल छैक, ताहिमे पण्डितजीक विशेषज्ञताक बड़ पैघ हाथ छैक।

सम्पादनक क्षेत्रमे हिनक सफलता सराहनीय छनि । ग्रन्थ-सम्पादनक हेतु जतेक योग्यता अपेक्षित छैक, सभ हिनकामे विद्यमान छनि । विषयकेँ नीक जकाँ जाँचब, वांछनीय - अवांछनीय अंशक ज्ञान, भाषाकेँ शुद्ध आ प्रांजल करबाक क्षमता, प्रूफ-संशोधनमे महारत, तथ्यपूर्ण ओ विश्लेषणात्मक भूमिका - लेखनमे दक्षता आदि ग्रन्थ-सम्पादनक उच्च कोटिक गुणसँ ई युक्त छथि ।

मैथिलीमे अनेक प्रकारक वर्तनी चलैत छैक। ई जाहि वर्तनीमे स्वयं लिखैत छथि, से वर्तनी मैथिली अकादमीमे नहि चलैत छलैक । किन्तु, ओहि प्रसंग ई कनियो आग्रहशील नहि भेलाह । मैथिली अकादमीक वर्तनीकेँ सहर्ष स्वीकार कएलनि। हिनक उदारवादी दृष्टिकोण हमरा बड़ प्रभावित कएलक । मैथिल पण्डितक कट्टरता हिनकामे कनियो नहि छनि ।

साहित्यक मान्यतो मे ई बहुत उदार छथि । कोनो बान्हल विचारक अपेक्षा उन्मुक्त विचारक ई समर्थन करैत छथि । तँ नवीन पीढ़ीक लेखकक ई प्रिय छथि । कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, समीक्षा - सभटा ई लिखने छथि आ सभमे यशस्वी भेल छथि ।

उच्च कोटिक साहित्यकार तँ छथिहे, उच्च कोटिक भाषावैज्ञानिक आ उच्च कोटिक कोशकार सेहो छथि । ई गुण विरल विद्वान्मे भेटैत अछि । जतबे तत्परता सँ ई कथा लिखैत छथि ततबे तत्परतासँ कोशक निमित्त शब्द-चयन ओ अर्थ-अनुसंधान सेहो करैत छथि । एहू अर्थमे ई पण्डित छथि ।

हिनक व्यक्तित्व बड़ आकर्षक छनि । बगय बानिसँ आर जे लागथु, पण्डित धरि नहि लगैत छथि । पण्डितक घटाटोप हिनकामे एकदम नहि छनि, व्यवहारमे सेहो नहि छनि । कृत्रिमताक ई घोर विरोधी छथि । सहजता अतिशय छनि । एकर एक दृष्टान्त दैत छी ।

मैथिली अकादमीमे एक दिन हमरा लग एक टा कार्ड बढ़ा देलनि । ओ हिनक पुत्रक विवाहक कार्ड छलनि । ओहिमे लिखल छलैक *'हमर पुत्र फल्लाँक कन्यासँ विवाह करताह'* । कार्ड पढ़िकऽ हम चकित भेलहुँ । हम पुछलियनि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जे अपनेक पुत्र अपने मने विवाह करताह कि अपने ठीक कएलनि अछि ? ओ कहलनि ठीक जँ मानि लेल जाओ जे हमही कयलियनि अछि तैयों तँ विवाह करताह ओएह तँ, ओ 'विवाह करताह' से कोन बेजाय लिखलिऐक अछि ? जे बात छिऐक, से खुलासा लिखलिऐक अछि । हम मनेमन कहलियनि, वाह रे पण्डित जी ।

हमरा पण्डितजी स्वयं कहने छथि जे एक बेर रातुक बसमे यात्रा करैत छलाह तँ ओहिमे डकैती भए गेलैक । हिनक संगमे किछु हजार टाका छलनि । डकैतसभ हिनक अत्यन्त सरल वेश-भूषा देखि कऽ हिनका किछु पुछबो नहि कएलकनि ।

पण्डितजीक व्यक्तित्व आ हुनक पाण्डित्यसँ हम बहुत प्रभावित छी । हुनका साहित्य अकादमीक मूल आ अनुवाद पुरस्कार एक्के बेर भेटलनि तँ हमरा बड़ आनन्द भेल छल। हम बधाइक पत्र लिखने छलियनि । हमर उपन्यास 'एक छलीह महारानी' पढ़ि कए ओ अपन मन्तव्य सेहो लिखने छलाह ।

आइ हुनक अभिनन्दन-ग्रन्थक विषयमे सुनलियनि अछि तँ फेर बहुत आनन्द भेल अछि। ईश्वर हुनका शतायु करथुन जाहिसँ मैथिलीक भण्डार आर अधिक समृद्ध होइत रहैक एवं एहन विलक्षण व्यक्तित्वक सान्निध्य अधिकसँ अधिक दिन धरि लोक पबैत रहय ।

◆

अपन समानकर्मीक बीच

❑ *श्री गोपालजी झा 'गोपेश'*

हम 11 दिसम्बर, 52 ई. मे अनुवाद विभाग, बिहार सरकारक अन्तर्गत अनुवाद-सहायकक रूप मे पद-ग्रहण कएने छलहुँ । ओहि समयमे अनुवाद विभागमे अनुवादकक पद पर आसीन छलाह रामलोचन शर्मा 'कंटक' जे देश-देशान्तरमे 'कंटकजी'क नामे ख्यात रहथि । तहिआ अनुवाद विभागक आजुक रूप नहि छलैक । 'कंटकजी'क अतिरिक्त उप-अनुवादकक पद सुशोभित करैत छलाह संस्कृत साहित्यक उद्भट एवं ख्याति-लब्ध विद्वान् सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' । कंटकजीक खेमासँ, हमरा छोड़ि मिथिलांचलक चारि-पाँच गोटे अनुवाद सहायक निकट रूपेँ जुड़ल छलाह । पं. गोविन्द झा दूनू खेमासँ एक्के रंग सम्बद्ध रहथि, जतबए कंटकजीक खेमासँ, ततबए सुजनजीक खेमासँ । हम लोकाचारक दृष्टिसँ 'सुजन' जीसँ बेसी प्रभावित छलहुँ । ओ अपेक्षाकृत बेसी विनयशील, विद्याव्यसनी एवं उदारवादी छलाह, मुदा कंटकजी अपन सोझाँ ककरहु मोजर देबा लेल प्रस्तुत नहि रहथि । मात्र एकटा पंडित गोविन्द झा छथि जनिक आचार्यत्वक सोझा कंटकहुजीकेँ झुकए पड़ैत छलन्हि । गोविन्द बाबू लेक्सिन असिस्टेंट (शब्दावली सहायक) होएबाक कारणेँ दुनू दरबार मे बरोबरि जाइत-अबैत रहैत छलाह । कंटकजीक ओतएसँ अर्जित छुट्टी स्वीकृत होइत छल आ सुजनजी आकस्मिक छुट्टी मंजूर करैत रहथि । हम नितान्त अस्थायी रूपेँ नियुक्त भेलाक कारणेँ जतेक आकस्मिक छुट्टीक लेल आकांक्षी छलहुँ ततेक उपार्जित छुट्टीक नहि । जखन ककरहु उपार्जित छुट्टीक प्रयोजन पड़ैत छलैक तखन ओ पंडितजीसँ कंटकजीक ओतए पैरवी करबाबैत छल ।

एक दिन पंडितजी हमरा कहलन्हि जे कंटकजीसँ किएक अहाँ एतेक दूर रहैत छी ? वस्तुत: हृदयसँ ओ नीक लोक छथि । हम उंत्तर देलिअनि-नीक रहथु वा बेजाए, ताहिसँ कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक, छथि धरि दरबारपसन्द लोक । पंडित जी हमर बातकेँ सोलहो आना नहि कटलन्हि। ओ एतबए कहलन्हि - जखन अहाँ कंटकजीक निकट सम्पर्क मे जाएब तखन अहाँक धारणा किछु अंश धरि विभ्रान्त भए जाएत । आओर भेबो कएल सएह । एक दिन कंटकजीक ओतए किछु गोटेकेँ माछ-भातक नोत भेटलैक । सभकेँ जाहि माध्यमेँ नोत भेटल होइक से नहि जनैत छी, किन्तु पंडितजी हमरा कहलन्हि जे 'राणा' अहाँकेँ माछ-भात पर बजओलन्हि अछि । हम कनेक उत्तेजित स्वरमे कहलिअन्हि - के राणा? कोन राणा ? ताहि परसँ केओ टिपि देलक-कंटकजीक प्रशासक।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

यदि राणाक प्रशासनसँ कंटकजी स्वयं प्रशासित छथि, तँ राणाक हुकुमक अर्थ भेल चीफ सेक्रेटरीक हुकुम। बिहारक तत्कालीन चीफ सेक्रेटरी छलाह एल. पी. सिंह, जनिक प्रशासनिक क्षमता यत्रतत्रसर्वत्रख्यात छल । पंडितजीक ठोर पर कनेक मुसकी आबि गेल । ओ सहज भावसँ कहलन्हि - "ठीके तँ कहलन्हि अछि । हमहू सोचल जे यदि अहाँ कंटकजीसँ नहि ठीक होएब तँ राणेसँ ठीक कराए दी ।" हमरा ई बुझबामे कनेकहु भांगठनहि रहि गेल जे ई सबटा योजना छल पंडितजीक, ओहुना हमरा निमंत्रण भेटबे करैत, किन्तु राणाक व्याजें संवाद - प्रेषणमे कनेक जान तँ आबि गेल । जे-से । जखन भोज खएबा लेल कंटकजीक डेरा पर पहुँचलहुँ तँ वातावरण पूर्ण हास्य-विनोदमे परिणत भए गेल । पंडितजी सहज भावेँ टिपि देल 'आबि गेलहुँ ने चीफ सेक्रेटरीक हुकुम बजाबए' ।

पंडितजीक सानिध्यमे दीर्घकाल धरि शब्दावलीक प्रशिक्षण प्राप्त भेल । ओहि समय मे 54-56 ई. क बीच मे भरिगर अनुवाद नहि अबैत छलैक । एकटा शाखा छलैक 'गजट एवं नोटिफिकेशन'क । बेसी गोटे गजटे नोटिफिकेशनक संग सम्बद्ध रहथि । डा. बदरी दास (सेवानिवृत्त राजभाषा-निदेशक) कार्यरत छलाह सहायक अनुवादकक पद पर । दू तीन गोटे आओर सहायक अनुवादक रूपमे काज करैत छलाह, जे डॉ. बदरीनाथसँ जूनियर छलथिन-जेना बृजमोहन प्रसाद, हरिवल्लभ ा, तारकेश्वर सिन्हा, देवकीनन्दन लाल, सिद्धेश्वरी आदि । डा. दासक वृत्ति ने अनुवाद मे रमैत छलन्हि पुनरीक्षण कार्यमे । अनुवाद जाही रूपमे जाइत छल रूप मे ओ टिक लगा कए अनुवादकर्ता कँ टाइप एबा लेल आपस कए दैत छलथिन । ओना आब हिन्दी न्तर पर हमरा पूर्ण भरोस छल, कारण जे काफी बूझि-सूझि ए शब्द प्रयोग कएल करी - (तथापि शब्दावलीक चयन ए गोविन्द बाबूसँ हिन्दी पर्याय निर्धारित करा लेल करी) । कर परिणाम ई भेल जे गुणवत्ताक दृष्टिसँ हमर काज प्रशंसित होमय लागल । हिन्दी अनुवादकेर क्षेत्रमे शब्दावलीक जे प्रशिक्षण हम हिनकासँ प्राप्त कएल, से हमरा निरन्तर सारस्वत साधनहुमे आइ काज दए रहल अछि । हम दर्शन ऑनर्सक स्नातक छलहुँ आ दोसर विषय छल प्रिंसिपल हिन्दी। पंडितजीसँ अनुवाद-कार्यसँ फराक बाहरहुक विषय पर चर्च-वर्च होइत छल - वादे वादे जायते तत्वबोधः। साहित्य, भाषा-विज्ञान, दर्शन आदि-आदि ।

ओहि समयमे दरभंगासँ जे 'मिथिला मिहिर' बहराइत छल, ताहिमे किछु ने किछु लिखैत छलहुँ । अनुवाद विभागमे गेलासँ पहिनहिसँ । पहिल कविता तत्कालीन मि. मि. मे 1952 ई. क बीचमे बहराएल छल । अनुवाद विभाग गेलाक बाद मैथिली कविता दिस बेसी प्रेरित भेलहुँ - जकर प्रमुख श्रेय छन्हि पंडित गोविन्द झाकेँ । काव्य-लेखनमे हमहु मुख्यतः मुक्त वृत्तिक अनुगमन करैत रहलहुँ अछि । 'मिथिला मिहिर' मे तहिआ 'नीलामी इश्तिहार' छपैत छलैक आ अनुवाद विभागमे 'ट्रान्सलेटर टु गवर्नमेंट'केँ फ्री-कॉपी देल जाइत छल। कहिओ काल जे' 'मिथिला मिहिर' ओ 'वैदेही' मे हमर कविता छपैत छल, से पंडितहुजीक नजरिसँ गुजरैत रहए । ओहि समय मे पंडितजी काव्य लेखनसँ विराग नहि लेने रहथि, तेँ ओहो 'मिथिला मिहिर' एवं 'वैदेही' क माध्यमे काव्य लेखन करैत छलाह । परञ्च विधाक दृष्टिसँ ई कथा-साहित्यकेँ चुनलन्हि आ कालान्तरमे कविताक आंगनसँ अपन बोरिया बिस्तर समेटि कए कथाक आंगनमे लगा देल ।

हम आ पंडितजी दुनू गोटे सम्मिलित प्रयास सँ विनोदवश किछु ने किछु कविता लिखलैत रही । एक बेर हमर सासुरमे केओ फरमाइश कएलन्हि जे ओझाजी जँ फेर एतए आबए लागी तँ एकटा रसगर गीत बना कए नेने आएब । आषाढ़ आबि गेल छलैक । हम तहिआ अपन अग्रज (प्रो अनिरुद्ध झा) क संग पटना कालेजक परिसरक अन्तर्गत जैक्सन होस्टलक सुनरिंटेडेन्ट क्वार्टरमे रहैत छलहुँ । इंजीनियरिंग कालेजक आस-पड़ोसमे हमर कतोक आत्मीय लोकसभ डेरा रखने रहथि, तनिकोलोकनिक माँग छलन्हि जे किछु गेय रचना सेहो लिखल जाए । हम आचार्य गोविन्द झाक समक्ष प्रस्ताव रखलहुँ । ओ एकर चट अनुमोदन कए देलनि । बातहि बातमे तत्क्षण हम दुनू गोटे विनोदवश सम्मिलित प्रयास सँ एकटा गीत लिखि लेलहुँ, जकरा एतए देल जाइत अछि :-

सखि, आखाढ़क प्रथम दिवसमे
नभ मंडलमे उमड़ि-उमड़ि कए
पवन वेग वश लहरि-लहरि कए
झर झर झर झर झहरि-झहरि कए
जलद बहाओल धार धरा पर

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हृदय हमर भासिआएल रसमे
श्यामल वायुयान पर चढ़िकेँ
परम वेगपूर्वक बढ़ि बढ़िकेँ
हे घनश्याम ! कतएसँ आबथि
ककरा कए घनघोष बजाबथि
व्याकुल ताकि रहल छी ऊपर
हृदय हृदय नहि अपना बशमे
सखि ! आखाढ़क प्रथम दिवसमे

पटना कॉलेजक निकट लालबागमे उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' रहैत छलाह । ओहि समयमे हुनक *फुलडाली* क गीतसभ बेसी लोकप्रिय भए चुकल छल । *वैदेही* (अगस्त 1955) मे हमरालोकनिक सम्मिलित प्रयासेँ रचित ई गीत हुनका बड़ नीक लगलनि । ओ मुक्त कंठे प्रशंसा कए कहने रहथि - 'गोविन्द बाबूकेँ जूनि छोड़ब - ओ *रस* क मर्म बुझैत छथि । जे स्वयं रसज्ञ नहि होएत, ओकरा रसबोध किन्नहु नहि भए सकैछ।'' मोहनजीक एहि बातकेँ हम गेँठ बान्हि लेल ।

जहिया हम 'सोनदाइक चिट्ठी' लिखने छलहुँ तहिओ ओकर 'मीटर' पंडितहिजीसँ चेक करओने रही । ई कविता अनेक ठाम छपल आ आकाशवाणीसँ श्रोताक अनुरोध पर निरन्तर 1955 सँ '57 धरि पटना केन्द्रसँ प्रसारित होइत रहल । एकर सभटा श्रेय हम पंडितजीकेँ दैत छिएनि । कल्पना आ भावावेश हमर अपन छल, दृष्टि-दिशा आ शिल्प-विधानक मार्गदर्शन हुनकहिसँ प्राप्त भेल । तत्पश्चात् *मिथिला मिहिर* (दरभंगा प्रकाशन) क माध्यमे (हम इन्टरव्यू मे आयल छी एवं अन्य) अनेक कविता प्रकाशित भेल तकर अनुमोदन हिनकहि (गोविन्द बाबू) सँ करा लैत छलहुँ । कतए कोन शब्द उपयुक्त होएतैक, ताहिपर हम दुनू गोटे घमर्थन करी । हुनक सब बात हम नहि मानिअनि । पंडितजी स्वयं कहने छथि - *'यात्रीजीसँ अहाँ ततेक बेसी प्रभावित छी जे कतहु कुशक कलेप नहि लागत'* । यात्रीजीसँ प्रभाव आओर प्रेरणा हम दुहू ग्रहण कएल अछि । किन्तु, यदि आइ पंडित गोविन्द झाक आशीर्वाद नहि प्राप्त रहैत तँ एतेक नहि कए पबितहु, जतेक एखन धरि कए सकलहुँ अछि । हमर सद्यः प्रकाशित काव्यसंकलन *मखानक पातक* भूमिका इएह लिखलनि आ लोकार्पण-समारोहक अध्यक्ष सेहो इएह छलाह ।

हम तँ कहब जे पंडितजी सभदिन फूजल चिट्ठी रहलाह आछ । किछु गोट रागद्वेषसँ ग्रस्त भए हिनक मूल्यांकन करैत छथि । परञ्च, एहि प्रकारक जे केओ लोक छथि, तनिक अपनहि दृष्टि संकुचित छनिं पंडितजी जे अनुभव करैत छथि से बजैत छथि - भलँहि ओ सभा-सोसाइटीमे बाजथु वा लेखनक स्तर पर किछु शंखनाद करथि । जेँ कि ई ककरहु पछलगुआ नहि बनल रहलाह तेँ अद्यावधि संपूजित छथि । जाहि विभागसँ केओ दीर्घकालीन सेवाक पश्चात् अवकाश ग्रहण करैत अछि, ओहि विभगमे चिरकाल तक ओ आदरकपात्र बन रहि जाएत, से बहुत कम गोटे देखल जाइत अछि । पंडित गोविन्द झाक नाम अपवादस्वरूप लेल जा सकैछ । यदि केओ हिनक पांडित्यक प्रशंसक रहताह, तँ लोकाचारक दृष्टिसे हिनका प्रसंग एकटा दोसरे बात कहि देताह जाहिसँ ओ विवादक घेरामे आबि जाथि । पंडितजी ततेक सरल हृदयक लोक छथि जे अन्यायक पक्षधर ई कहिओ नहि भए सकैत छथि। हिनक 'एप्रोच' ततेक युक्तिसंगत अछि जे यदि अहाँ हिनक दोषदर्शन करए लागब तँ नीक जकाँ आत्म-मंथन कए लेअए पड़त । अन्यथा स्वयंकेँ निर्दोष होएबा लेल प्रस्तुत करए पड़त । परञ्च, यदि केओ मूल्यांकनक कैनवास छोट राखत, तँ से पंडितजीक दुर्भाग्य । पंडितजीकेँ यदि अहाँ वैचारिक धरातल पर खंडन कए देबनि तँ एहिसँ हुनका अत्यंत प्रसन्नता होइत छनि आओर ओ आश्वस्त भए कए तुरत सहमतिक बिन्दु पर आबि जएताह । आकाशवाणी, पटनासँ विद्यापतिक् पदसबहिक प्रसारण पहिने 'विद्यापतिक संगीत' क शीर्षकसँ होइत छल । हम पंडितजीकेँ कहलिअनि जे 'विद्यापति संगीत' क बदला मे 'विद्यापति गीत' शीर्षक ठीक बुझि पड़ैत अछि । पंडितजी तुरंत बजैत छथि, अहाँ हमर मुहक बात छीनि लेलहुँ । ओहि समयमे 'चौपाल विभाग' आ मैथिली कार्यक्रम' जे केओ देखैत रहथि, तनिका हम तुरत सुझाओ लिखि पठओलिअनि । हमरा आकाशवाणी, पटनाक तत्कालीन केन्द्र निदेशकक ओतएसँ बजाहटि भेल । विचार विमर्शक पश्चात् हमर सुझाओ हुनका समीचीन बूझि पड़लनि आ तहिएसँ 'विद्यापति गीत' शीर्षक प्रसारण होइत आबि रहल अछि ।

आब हम ओहि विभागक कार्यकलापक सन्दर्भमे पंडितजीक भूमिकाक प्रसङ्ग दू शब्द कहए चाहब । पहिलुका अनुवाद विभाग उर्दूक काजसँ सम्बद्ध छल । कंटकजीसँ पूर्व जे अनुवादक छलाह तनिक नाम छल अनवार अहमद । कंटकजीकेँ चन्द्रधारी मिथिला कालेजसँ बजा कए एहि पद

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पर स्थापित कएल गेल छल । कंटकजी द्वारा पंडितजीसँ बहुत किछु काज लेल गेल । पहिनेसँ बहुतोक दस्तावेज उर्दू मे छल जकर देवनागरी मे लिप्यन्तरण आवश्यक छलैक । 'दस्तावेजों के नमूने'क प्रकाशन हिन्दीकरणक दिशामे एकटा अभिनन्दनीय प्रयास छल, जकर पूर्ण श्रेय पंडित गोविन्द झाकेँ प्राप्त छनि । 'पद और पदाधिकरी' सेहो एकटा अनुवर्ती उपलब्धि थिक जे प्रारंभिक स्तर पर हिन्दीक उत्थानक दिशामे एकटा स्तुत्य प्रयास कहल जा सकैछ । जखन अनुवाद विभागक सीमामे विस्तार-विकास भेलैक, तखन राजभाषा विभाग बनल आ एकटा स्वतंत्रविभागक रूपमे ओकरा मान्यता भेटि गेलैक । ओकरा स्वतंत्रसचिवक अन्तर्गत आनल गेल । स्वतंत्र बजट उपबन्ध भेटलैक । 'ट्रान्सलेटरक' पदनाम भए गेल निदेशक आ 'डिपटी ट्रांसलेटर' क उपनिदेशक । तत्पश्चात् डा. बदरीदास जखन निदेशक भेलाह तकर संग-संग राजभाषा विभागमे कतोक राजपत्रि त पदक सृजन भेल, राजभाषा पदाधिकारी धरिक पद राजपत्रित कए देल गेल । विभागक परिचय विषयक एकटा पुस्तिका बनाओल गेल । ओहि पुस्तिकामे विभागीय ढाँचाक जे रूप-रेखा तैयार भेल, ताहूमे पं. गोविन्द झाक योगदानकेँ विस्मृत नहि कएल जा सकैत अछि । कालान्तर मे राजभाषा विभाग प्रमंडलसँ प्रखंड स्तर धरि विस्तृत भए गेल अछि । एकर विस्तार-विकास मे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ पंडितजीक अवदानकेँ विस्मृत करब, एकटा ऐतिहासिक तथ्यपर आवरण देब होएत । 'राजभाषा' पत्रि काक हम आओर पंडितजी दुहू गोटे प्रारम्भमे सम्पादन करैत छलहुँ। हमरालोकनि संगहि संग 'मैथिली प्राइमर ओ रीडर' लिखने छी जे भारती भवन. पटनासँ 1972 मे प्रकाशित आ बिहार ऐजुकेशनल बुक कारपोरेशनसँ स्वीकृत भेल छल । मोन अछि जे पंडितजी केना हमरा डा. अमरनाथ बाबूसँ परिचय करओने रहथि । पंडितजी परिचयक क्रम मे हमर 'सोनदाइक चिट्ठी' आ 'कोशीक माछ' शीर्षक कविताक उल्लेख हुनकासँ कएने छलथिन। डॉ. झा रुचिपूर्वक हमर दुनू कविता सुनने रहथि आ इएह परामर्श देलनि जे लिखैत जाउ, किन्तु चेष्टा इएह राखब जे जाहि विधामे लिखी, देश काल पात्रक संग-संग भाषा शैलीमे एकरूपता रहए । इएह कारण अछि जे जाहि भाषा शैलीकेँ हम एक बेर अपनाओल, अद्यपर्यन्त ओकर अनुसरण कए रहल छी ।

गोविन्द बाबूक ई विशेषता थिक जे यदि ओ कनेक कालक लेल अहाँ पर तमसएबो करताह तँ तुरन्ते ओ ओहि बातकेँ बिसरि जएताह । अग्रज पीढ़ीक एकटा पुरोधा होइतहुँ अग्रिम एवं नव पीढ़ीकेँ एकटा स्वस्थ संदेश दैत छथि । जेना कि पंडितजीक सम्बन्धमे हम पूर्वहि कहल हुनक निकटसँ निकटतम लोकक हमरा जनैत इएह अवधारणा रहल अछि । शास्त्रीय विषयक प्रसङ्ग, पंडितजीक दरबार सभक लेल फूजल रहैत अछि । व्यंग्य एवं हास्यकेँ एतेक नीक जकाँ चीन्हए बला हिनका जकाँ कम लोक होइत छथि । एकटा सहकर्मीक रूपमे जे केओ निकटसँ देखि सकल, सएह हिनका प्रसङ्ग, अधिकारपूर्वक किछु कहि सकैत अछि । संस्कृतक परम्पराक लोक हिनका एहि दुआरे कम अरचैत छथिन जे ओ रागद्वेषसँ अधिकांशतः ग्रस्त होइत छथि आ नवताक प्रति हुनकामे संवेदनशीलताक अभाव भेटैत छनि । सड़ल-गलल विचारक आचार्यजी कहिओ मुखापेक्षी नहि भए सकैत छथि।

◆

प्रगतिशील पंडित

❑ *श्री विजयनाथ ठाकुर*

श्री गोविन्द झाक चर्चा होइतहि सोझाँ आबि जाइत अछि एकटा एहन व्यक्तित्व जे परस्पर विरोधी बातक ज्वलन्त दृष्टान्त होथि । शरीर जतबे कृश, बुद्धि ओतबे प्रखर । संस्कृत भाषा सँ आवेष्टित परिवारक होइतहु विचारमे कट्टरताक बदला प्रगतिशीलता । महावैयाकरणक आत्मज भए व्याकरणमे पदवी पाबि ओकरा मूलाधार नहि राखि भाषाविज्ञानक दिशामे गहन अभिरुचि। सखा-समाजक बीच 'पंडितजी' शब्दें अभिहित भइयो कें पंडिताउपनसँ सर्वथा विरत, श्रोत्रि य वंशोद्भव किन्तु कर्मकांडीय टंटघंटसँ छूति नहि। विद्वान् सुच्चा संस्कृतक मुदा यवनभाषा आधारित जीविकाक वरण कयनिहार हिनक अपूर्व स्वरूप हमरा बरबस आकृष्ट करैत रहल अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडित गोविन्द झासँ हमरा पहिल परिचय पटनामे राजभाषा विभागमे भेल जे पहिने अनुवाद विभाग कहबैत छल। एतय शासकीय साहित्यकेँ अंग्रेजीसँ हिन्दीमे रूपांतरित करबाक कार्य प्रमुख मानल जाइत छल । 1953 ई. मे जखन हम एहि विभागमे नियुक्त भेलहुँ तँ एक जेबारक हेबाक कारणेँ अनकासँ पूर्व पं. गोविन्द झासँ सान्निध्य भेल । जखन कार्यालयक कार्य सोझाँ आबय तँ हिन्दी आ अंग्रेजीक ज्ञानकेँ एकटा चुनौती बूझि पड़य । वाक्य-विन्यास, उपयुक्त शब्दावली, रचना-कौशल आदि कतोक समस्या जखन देखी, तँ विस्मय होअय लागय जे ई पंडितजी महोदय, जे खाँटी संस्कृतक विद्वान् छथि, कहियो कॉलेजमे पदार्पण नहि केलनि, से कोना एहि अनुवादक धक्का सम्हारैत छथि । जिज्ञासा भेल तँ पूछि बैसलियनि, औ पंडित जी, अपने कोना प्रवेश पाओल एहि अंग्रेजी ज्ञान बहुल प्रकोष्ठमे ? हुनका मुहेँ सुनल बात आइ एतय दोहरायब प्रायः प्रसंगोचित होयत । एहिमे सहकर्मीक रूपमे अनुभूत तथ्य सेहो अछि ।

संवैधानिक दायित्वसँ जखन विधानमंडलक समस्त प्रक्रिया हिन्दी भाषामे संचालित करबाक बाध्यता भेल, तखन राजकीय कार्यक लेल हिन्दी माध्यम बनल । आब त बहुविध कार्य जेना, अनुवाद, शब्दावली-निर्माण, विधि-साहित्यक हिन्दी रूपांतर, मानक वाक्यखंडक स्वरूप निर्धारण आदिक संपादन करय पड़ैक । अंग्रेजीसँ हिन्दीक अतिरिक्त उर्दू-फारसीमे लिखल दस्तावेजसभक हिन्दी रूपांतर करबाक निर्णय सेहो भेल । एतय आवश्यकता भेल एहन व्यक्तिक जे संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आ उर्दू सभ भाषाक ज्ञान रखैत हो । अरबी-फारसी शब्दक टक्साली हिन्दी पर्याय निर्धारित करबामे सक्षम हो । एही क्रममे 1951 ई. मे श्री गोविन्द झा जीक नियुक्ति शब्दावली-सहायक (लेक्जिकन असिस्टेंट) पद पर भेल । एहि नियुक्तिमे हिनका उर्दू कोना अरघलनि । पहिनहि कहि चुकल छी जे ई उदारवादी विचारक छथि आ अन्तःप्रेरणासँ नेपाली, उर्दू आ अंग्रेजी ज्ञानार्जन विविध उपायसँ कयलनि ।

शब्दावली सहायकक रूपमे हिनक उल्लेखनीय अंशदान अछि राजभाषा विभागसँ प्रकाशित दस्तावेजों के नमूने हिन्दी। ई नमूना तैयार करबाक क्रममे पंडित जी कतोक जिला रजिस्ट्रारक कार्यालयसँ विभिन्न प्रकारक उर्दू-प्रारूपक दस्तावेज अनलनि । ओकर अध्ययन कए पारिभाषिक शब्दक संकलन कयलनि आ तकर हिन्दी पर्याय ताकि ओकर हिन्दी नमूना बनौलनि । एतबा आरंभिक कार्य कयलाक बाद एक मास धरि बेगूसरायक एक सुयोग्य वकील श्री झारखंडी प्रसादक ओतय रहि 100 उर्दू दस्तावेजसँ ताकि-हेरि हिन्दी नमूना तैयार केलनि । ओकरा एकटा विशेषज्ञ समितिसँ अनुमोदित कराय राजकीय मुद्रणालयसँ मुद्रित एवं प्रकाशित कराय ओ परिचारित करौलनि । ओहि पुस्तकक आधार पर कतोक दस्तावेज हिन्दीमे निबंधित भेल आ भए रहल अछि । संस्कृतक पंडित आ उर्दूक जटिल कार्यक संपादन । थिक ने एक विरोधाभास?

हिन्दी जखन आरंभिक प्रयोगक दिशामे छल त एकर आलोचक डेग-डेग पर छलाह । डा. रघुवीरक एकटा बेस मोटगर शब्दकोश तखन प्रकाशित भेल छल । सैद्धान्तिक आधार पर ओहिमे उपलब्ध पर्याय क्लिष्ट रहय ओ सर्वसुलभ नहि बूझि पड़य । हिन्दीमे पत्रचार करबामे रघुवीरी कोशक पर्यायक आधार पर पदाधिकारीकेँ संबोधित चिट्ठी-पत्री डाकिया सभ घुमाकए दय जाइ आ कहैक जे पओनिहारक पता नहि चलल । एहि तरहेँ जखन बहुत रास पत्र घूमय लागल तखन ओकर निदान केनाइ अनिवार्य भए गेल । एतय फेर पंडित जी भिरलाह । सरकारक विभिन्न विभागमे तथा मोफस्सिल कार्यालयमे घूमि-घूमि साइन बोर्ड, नामपट्ट ओ बहुधा प्रयुक्त होअयवला शब्दक सूची संकलित कयलनि । अपन सहयोगीसभकेँ लए ओकरा वर्गीकृत कयलनि आ तखन राज्य सरकार द्वारा गठित हिन्दी परामर्श समितिमे ओकरा राखि अनेक बैसकमे विचार-विमर्शक उपरांत अनुमोदित करौलनि । एहि परामर्श समितिक अध्यक्ष स्वनामधन्य श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु रहथि आ सदस्य रहथि पं. जगन्नाथ मिश्र ओ श्री बुद्धिनाथ झा "कैरव"। विभागाध्यक्षक रूपमे प्रो रामलोचन शर्मा "कटक" रहथि । शिक्षा सचिव डा. जगदीश चन्द्र माथुर ओ मुख्य सचिव श्री ललन प्रसाद सिंह तथा श्री सत्यव्रत शर्मा "सुजन" विशेषज्ञक रूपमे एहि प्रशासनिक शब्दावलीकेँ अंतिम रूप देलनि । एहि समस्त व्यापारक परिणामस्वरूप "पद और पदाधिकारी" ओ "राजकीय प्रशासन शब्दावली" प्रकाशित भेल आ अनेक तरहक पसरल भ्रम दूर भेल । एकर प्रकाशन भेला पर एक-एक कार्यालयमे एकर प्रति पहुँचल आ एकरूपता एवं बोधगम्यताक आलंबन पाबि, हिन्दीक गाड़ी ससरय लागल । एहि कार्यमे पं. गोविन्द झाक स्तुत्य अंशदान भेल ।

हिन्दी प्रयोगक प्रारंभिक कालमे कार्यालय सभक अंग्रेजी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मोहर (रबर स्टाम्प) कें बदलि कें हिन्दीमे बनायब सेहो एकटा वृहत् कार्य छल । विभिन्न स्रोतसँ एकर संकलन कए ओकर हिन्दी रूप स्थिर करबामे गोविन्द झा जी पूर्ण धैर्य देखौलनि । हिनक कार्य-शैलीमे मिशनरी भावना स्पष्ट परिलक्षित होइत रहय । एहि क्षीण-काय व्यक्तिमे एतेक मेधा, एहन कर्त्तव्यपरायणता आ असीम उत्साह देखि हमरालोकनि चकित-विस्मित रही । हद भए गेल तखन जहिया हिनका सरकारक गया जेल प्रेस ओ गुलजारबाग प्रेस जाय सरकारी कार्यालयमे प्रयुक्त मानक ओ अमानक प्रपत्र (फारम) सभकें छटिया कें बोराक बोरा राजभाषा विभागमे आनय पड़लनि । फारम सभ हिन्दीमे शीघ्र उपलब्ध कराओल जाए, ताहि लेल विभाग पर विशेष दबाव छल किएक त हिन्दी परामर्श समितिक अनुशंसा पर अंग्रेजीमे फारमसभक मुद्रण रोकि देल गेल छल । हजारक हजार फारमकें चटपट अनूदित कय छपा देब संभव नहि छल तें हेतु प्राग्रता निर्धारण करबाक छल । पंडित जी एकर प्रभारीक रूप मे तीन वर्ष धरि कार्य कयलनि । हिन्दी फारम उपलब्ध करा देल गेल ।

एकटा आर रोचक प्रसंग अछि विभिन्न स्थानक हिन्दी नामकरण करबाक दिशामे । भारत सरकारक सर्वेक्षण एवं अभिलेख विभागसँ बेर-बेर किछु स्थानक अंग्रेजी रूप पठाय ओकर वास्तविक हिन्दी स्वरूपक मांग करय । विभाग दिससँ जे नामकरणक सुझाव देल जाए ताहि पर ओ चिरौरी सेहो करय । तखन ओकरा तर्कपूर्ण उत्तर देल जाय, भाषावैज्ञानिक आधार देखाय ओकरा मानि लेबाक विवेचन कयल जाय आ एहि रूपें ओकर अध्याय पूर्ण होअय । एहि कार्यमे तत्कालीन विद्वान् उपनिदेशक श्री सत्यव्रत शर्मा "सुजन"क दहिना हाथ पंडित गोविन्द झा जी रहथि ।

विधानमंडलमे हिन्दी माध्यमसँ कार्य-संपादन होइत रहय। ओतय 1960 ई. क लगभग विधान-सभा मार्गदर्शिका हिन्दीमे तैयार कए देबाक भार राजभाषा विभागकें देल गेल । एकर संकलन, संपादन ओ हिन्दी रूपांतरण मुख्यत: गोविन्द झा जी कयलनि आ तत्कालीन अध्यक्षक प्रशस्ति पओलनि । तहना विभिन्न प्रकारक मोकदमामे प्रस्तुत होअयवला वादपत्र (प्लेन्ट) एवं याचिका (पेटीशन)क मानक हिन्दी रूपांतर तैयार करबाक लेल *मेागाक* विश्रुत ग्रन्थ सँ नमूना संकलन कय ओकरा हिन्दीक साँचमे ढारय लेल हिनक प्रयास स्मरणीय अछि । शासकीय पत्रक प्रारंम्भ एवं संचिकामे लिखल जयबाक टिप्पणीक अनेकानेक नमूना तैयार करबामे हिनक सक्रिय योगदान रहल। ई त सरकारी कर्मचारी एवं पदाधिकारीक अन्त:सेवा परीक्षामे सेहो सहायक बनल ।

पुलिस मैनुअलक अनुवाद जखन भए रहल छल तखन अंग्रेजीमे तैयार "क्राइम इंडेक्स" कें हिन्दी वर्णमालाक क्रमसँ विन्यस्त करबाक समस्या आयल । पुलिस विभागक अधिकारीक संग विमर्श चलैत रहल । कतेक तरहक विकल्प रखैत-रखैत अन्ततः एकटा सिद्धांत निरूपित भेल जाहि पर अधिकारीलोकनि सहमत भेलाह । ई समस्त प्रक्रिया श्री गोविन्द झा जी द्वारा सम्पादित भेल ।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय जखन अखिल भारतीय स्तर पर प्रशासकीय शब्दावलीमे एकरूपता अनबाक प्रयास आरंभ केलक आ सभ राज्यसँ विशेषज्ञलोकनिक कमिटी बनौलक त ओहि मे भिन्न-भिन्न राज्यकें शब्द-सूची पठाय ओकरा पर टिप्पणी आ सहमति माँगल जाए । अमुक शब्द कियैक, ताहि पर समीक्षात्मक राय अपेक्षित रहैक । दिल्लीमे आयोजित बैसकमे ओहि पर शास्त्रार्थ होअय आ टीका-टिप्पणीक क्रममे अपन शब्दकें मनयबाक लेल नोक-झोंक तक भए जाए । बिहारक शब्दावली अपन श्रेष्ठता स्थापित कयलक आ एकर पूर्व प्रकाशित राजकीय प्रशासनिक शब्दावलीक 80 प्रतिशत शब्दकें केन्द्र अंगीकार कयलक । शब्दावलीसंबंधी उक्त टिप्पणी तैयार करबामे पंडित जीक ओ सुजन जीक प्रमुख योगदान छल।

श्री गोविन्द झाजी राजभाषा विभागमे शब्दावली सहायकक रूपमे नियुक्त भए उपनिदेशक पद तक प्रोन्नति पाबि सेवा-निवृत्त भेलाह । सेवा अवधिमे उपर्युक्त कार्यक अतिरिक्त ओ विभागीय कोड-मैनुअलक अनुवादमे सेहो संलग्न रहलाह आ ताहिमे अंग्रेजीक ज्ञानक परिचय देलनि । सभ केओ ई जनैत छी जे व्याकरणाचार्य हेबामे कतहु गणितक पढ़ाइ नहि होइत छैक आ विभागीय लेखा-कार्यमे पग-पग पर गणितीय ज्ञान अपेक्षित रहैत छैक । जखन पंडित जी लेखा-कार्यक प्रभारी उपनिदेशक बनाओल गेलाह त वित्तीय नियम, विनियम ओ गणनाकार्यमे अपन अवगति देखौलनि आ गणितीय क्षमताक परिचय सेहो देलनि । राजभाषा हिन्दीक प्रारंभिक चरणमे पं. गोविन्द झा जीक अंशदान अप्रतिम अछि। ओ एकर इतिहासक स्मरणीय अंग रहताह । अपन पांडित्य, विवेक, कर्त्तव्यनिष्ठता ओ सदाचरणक लेल ई विभागीय सखाक बीच श्रद्धा, सम्मान ओ स्नेहक पात्र बनल छथि। ◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडित गोविन्द झासँ हमरा पहिल परिचय पटनामे राजभाषा विभागमे भेल जे पहिने अनुवाद विभाग कहबैत छल। एतय शासकीय साहित्यकेँ अंग्रेजीसँ हिन्दीमे रूपांतरित करबाक कार्य प्रमुख मानल जाइत छल । 1953 ई. मे जखन हम एहि विभागमे नियुक्त भेलहुँ तँ एक जेबारक हेबाक कारणेँ अनकासँ पूर्व पं. गोविन्द झासँ सान्निध्य भेल । जखन कार्यालयक कार्य सोझाँ आबय तँ हिन्दी आ अंग्रेजीक ज्ञानकेँ एकटा चुनौती बूझि पड़य । वाक्य-विन्यास, उपयुक्त शब्दावली, रचना-कौशल आदि कतोक समस्या जखन देखी, तँ विस्मय होअय लागय जे ई पंडितजी महोदय, जे खाँटी संस्कृतक विद्वान् छथि, कहियो कॉलेजमे पदार्पण नहि केलनि, से कोना एहि अनुवादक धक्का सम्हारैत छथि । जिज्ञासा भेल तँ पूछि बैसलियनि, औ पंडित जी, अपने कोना प्रवेश पाओल एहि अंग्रेजी ज्ञान बहुल प्रकोष्ठमे ? हुनका मुहेँ सुनल बात आइ एतय दोहरायब प्रायः प्रसंगोचित होयत । एहिमे सहकर्मीक रूपमे अनुभूत तथ्य सेहो अछि ।

संवैधानिक दायित्वसँ जखन विधानमंडलक समस्त प्रक्रिया हिन्दी भाषामे संचालित करबाक बाध्यता भेल, तखन राजकीय कार्यक लेल हिन्दी माध्यम बनल । आब त बहुविध कार्य जेना, अनुवाद, शब्दावली-निर्माण, विधि-साहित्यक हिन्दी रूपांतर, मानक वाक्यखंडक स्वरूप निर्धारण आदिक संपादन करय पड़ैक । अंग्रेजीसँ हिन्दीक अतिरिक्त उर्दू-फारसीमे लिखल दस्तावेजसभक हिन्दी रूपांतर करबाक निर्णय सेहो भेल । एतय आवश्यकता भेल एहन व्यक्तिक जे संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आ उर्दू सभ भाषाक ज्ञान रखैत हो । अरबी-फारसी शब्दक टक्साली हिन्दी पर्याय निर्धारित करबामे सक्षम हो । एही क्रममे 1951 ई. मे श्री गोविन्द झा जीक नियुक्ति शब्दावली-सहायक (लेक्जिकन असिस्टेंट) पद पर भेल । एहि नियुक्तिमे हिनका उर्दू कोना अरघलनि । पहिनहि कहि चुकल छी जे ई उदारवादी विचारक छथि आ अन्तःप्रेरणासँ नेपाली, उर्दू आ अंग्रेजी ज्ञानार्जन विविध उपायसँ कयलनि ।

शब्दावली सहायकक रूपमे हिनक उल्लेखनीय अंशदान अछि राजभाषा विभागसँ प्रकाशित दस्तावेजों के नमूने हिन्दी। ई नमूना तैयार करबाक क्रममे पंडित जी कतोक जिला रजिस्ट्रारक कार्यालयसँ विभिन्न प्रकारक उर्दू-प्रारूपक दस्तावेज अनलनि । ओकर अध्ययन कए पारिभाषिक शब्दक संकलन कयलनि आ तकर हिन्दी पर्याय ताकि ओकर हिन्दी नमूना बनौलनि । एतबा आरंभिक कार्य कयलाक बाद एक मास धरि बेगूसरायक एक सुयोग्य वकील श्री झारखंडी प्रसादक ओतय रहि 100 उर्दू दस्तावेजसँ ताकि-हेरि हिन्दी नमूना तैयार केलनि । ओकरा एकटा विशेषज्ञ समितिसँ अनुमोदित कराय राजकीय मुद्रणालयसँ मुद्रित एवं प्रकाशित कराय ओ परिचारित करौलनि । ओहि पुस्तकक आधार पर कतोक दस्तावेज हिन्दीमे निबंधित भेल आ भए रहल अछि । संस्कृतक पंडित आ उर्दूक जटिल कार्यक संपादन । थिक ने एक विरोधाभास?

हिन्दी जखन आरंभिक प्रयोगक दिशामे छल त एकर आलोचक डेग-डेग पर छलाह । डा. रघुवीरक एकटा बेस मोटगर शब्दकोश तखन प्रकाशित भेल छल । सैद्धान्तिक आधार पर ओहिमे उपलब्ध पर्याय क्लिष्ट रहय ओ सर्वसुलभ नहि बूझि पड़य । हिन्दीमे पत्रचार करबामे रघुवीरी कोशक पर्यायक आधार पर पदाधिकारीकेँ संबोधित चिट्ठी-पत्री डाकिया सभ घुमाकए दय जाइ आ कहैक जे पओनिहारक पता नहि चलल । एहि तरहेँ जखन बहुत रास पत्र घूमय लागल तखन ओकर निदान केनाइ अनिवार्य भए गेल । एतय फेर पंडित जी भिरलाह । सरकारक विभिन्न विभागमे तथा मोफस्सिल कार्यालयमे घूमि-घूमि साइन बोर्ड, नामपट्ट ओ बहुधा प्रयुक्त होअयवला शब्दक सूची संकलित कयलनि । अपन सहयोगीसभकेँ लए ओकरा वर्गीकृत कयलनि आ तखन राज्य सरकार द्वारा गठित हिन्दी परामर्श समितिमे ओकरा राखि अनेक बैसकमे विचार-विमर्शक उपरांत अनुमोदित करौलनि । एहि परामर्श समितिक अध्यक्ष स्वनामधन्य श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु रहथि आ सदस्य रहथि पं. जगन्नाथ मिश्र ओ श्री बुद्धिनाथ झा "कैरव"। विभागाध्यक्षक रूपमे प्रो रामलोचन शर्मा "कटक" रहथि । शिक्षा सचिव डा. जगदीश चन्द्र माथुर ओ मुख्य सचिव श्री ललन प्रसाद सिंह तथा श्री सत्यव्रत शर्मा "सुजन" विशेषज्ञक रूपमे एहि प्रशासनिक शब्दावलीकेँ अंतिम रूप देलनि । एहि समस्त व्यापारक परिणामस्वरूप "पद और पदाधिकारी" ओ "राजकीय प्रशासन शब्दावली" प्रकाशित भेल आ अनेक तरहक पसरल भ्रम दूर भेल । एकर प्रकाशन भेला पर एक-एक कार्यालयमे एकर प्रति पहुँचल आ एकरूपता एवं बोधगम्यताक आलंबन पाबि, हिन्दीक गाड़ी ससरय लागल । एहि कार्यमे पं. गोविन्द झाक स्तुत्य अंशदान भेल ।

हिन्दी प्रयोगक प्रारंभिक कालमे कार्यालय सभक अंग्रेजी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मोहर (रबर स्टाम्प) कें बदलि कें हिन्दीमे बनायब सेहो एकटा वृहत् कार्य छल । विभिन्न स्रोतसँ एकर संकलन कए ओकर हिन्दी रूप स्थिर करबामे गोविन्द झा जी पूर्ण धैर्य देखौलनि । हिनक कार्य-शैलीमे मिशनरी भावना स्पष्ट परिलक्षित होइत रहय । एहि क्षीण-काय व्यक्तिमे एतेक मेधा, एहन कर्त्तव्यपरायणता आ असीम उत्साह देखि हमरालोकनि चकित-विस्मित रही । हद भए गेल तखन जहिया हिनका सरकारक गया जेल प्रेस ओ गुलजारबाग प्रेस जाय सरकारी कार्यालयमे प्रयुक्त मानक ओ अमानक प्रपत्र (फारम) सभकें छटिया कें बोराक बोरा राजभाषा विभागमे आनय पड़लनि । फारम सभ हिन्दीमे शीघ्र उपलब्ध कराओल जाए, ताहि लेल विभाग पर विशेष दबाव छल किएक त हिन्दी परामर्श समितिक अनुशंसा पर अंग्रेजीमे फारमसभक मुद्रण रोकि देल गेल छल । हजारक हजार फारमकें चटपट अनूदित कय छपा देब संभव नहि छल तें हेतु प्राग्रता निर्धारण करबाक छल । पंडित जी एकर प्रभारीक रूप मे तीन वर्ष धरि कार्य कयलनि । हिन्दी फारम उपलब्ध करा देल गेल ।

एकटा आर रोचक प्रसंग अछि विभिन्न स्थानक हिन्दी नामकरण करबाक दिशामे । भारत सरकारक सर्वेक्षण एवं अभिलेख विभागसँ बेर-बेर किछु स्थानक अंग्रेजी रूप पठाय ओकर वास्तविक हिन्दी स्वरूपक मांग करय । विभाग दिससँ जे नामकरणक सुझाव देल जाए ताहि पर ओ चिरौरी सेहो करय । तखन ओकरा तर्कपूर्ण उत्तर देल जाय, भाषावैज्ञानिक आधार देखाय ओकरा मानि लेबाक विवेचन कयल जाय आ एहि रूपें ओकर अध्याय पूर्ण होअय । एहि कार्यमे तत्कालीन विद्वान् उपनिदेशक श्री सत्यव्रत शर्मा "सुजन"क दहिना हाथ पंडित गोविन्द झा जी रहथि ।

विधानमंडलमे हिन्दी माध्यमसँ कार्य-संपादन होइत रहय। ओतय 1960 ई. क लगभग विधान-सभा मार्गदर्शिका हिन्दीमे तैयार कए देबाक भार राजभाषा विभागकें देल गेल । एकर संकलन, संपादन ओ हिन्दी रूपांतरण मुख्यत: गोविन्द झा जी कयलनि आ तत्कालीन अध्यक्षक प्रशस्ति पओलनि । तहना विभिन्न प्रकारक मोकदमामे प्रस्तुत होअयवला वादपत्र (प्लेन्ट) एवं याचिका (पेटीशन)क मानक हिन्दी रूपांतर तैयार करबाक लेल *मेागाक* विश्रुत ग्रन्थ सँ नमूना संकलन कय ओकरा हिन्दीक साँचमे ढारय लेल हिनक प्रयास स्मरणीय अछि । शासकीय पत्रक प्रारंम्भ एवं संचिकामे लिखल जयबाक टिप्पणीक अनेकानेक नमूना तैयार करबामे हिनक सक्रिय योगदान रहल। ई त सरकारी कर्मचारी एवं पदाधिकारीक अन्त:सेवा परीक्षामे सेहो सहायक बनल ।

पुलिस मैनुअलक अनुवाद जखन भए रहल छल तखन अंग्रेजीमे तैयार "क्राइम इंडेक्स" कें हिन्दी वर्णमालाक क्रमसँ विन्यस्त करबाक समस्या आयल । पुलिस विभागक अधिकारीक संग विमर्श चलैत रहल । कतेक तरहक विकल्प रखैत-रखैत अन्ततः एकटा सिद्धांत निरूपित भेल जाहि पर अधिकारीलोकनि सहमत भेलाह । ई समस्त प्रक्रिया श्री गोविन्द झा जी द्वारा सम्पादित भेल ।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय जखन अखिल भारतीय स्तर पर प्रशासकीय शब्दावलीमे एकरूपता अनबाक प्रयास आरंभ केलक आ सभ राज्यसँ विशेषज्ञलोकनिक कमिटी बनौलक त ओहि मे भिन्न-भिन्न राज्यकें शब्द-सूची पठाय ओकरा पर टिप्पणी आ सहमति माँगल जाए । अमुक शब्द कियैक, ताहि पर समीक्षात्मक राय अपेक्षित रहैक । दिल्लीमे आयोजित बैसकमे ओहि पर शास्त्रार्थ होअय आ टीका-टिप्पणीक क्रममे अपन शब्दकें मनयबाक लेल नोक-झोंक तक भए जाए । बिहारक शब्दावली अपन श्रेष्ठता स्थापित कयलक आ एकर पूर्व प्रकाशित राजकीय प्रशासनिक शब्दावलीक 80 प्रतिशत शब्दकें केन्द्र अंगीकार कयलक । शब्दावलीसंबंधी उक्त टिप्पणी तैयार करबामे पंडित जीक ओ सुजन जीक प्रमुख योगदान छल।

श्री गोविन्द झाजी राजभाषा विभागमे शब्दावली सहायकक रूपमे नियुक्त भए उपनिदेशक पद तक प्रोन्नति पाबि सेवा-निवृत्त भेलाह । सेवा अवधिमे उपर्युक्त कार्यक अतिरिक्त ओ विभागीय कोड-मैनुअलक अनुवादमे सेहो संलग्न रहलाह आ ताहिमे अंग्रेजीक ज्ञानक परिचय देलनि । सभ केओ ई जनैत छी जे व्याकरणाचार्य हेबामे कतहु गणितक पढ़ाइ नहि होइत छैक आ विभागीय लेखा-कार्यमे पग-पग पर गणितीय ज्ञान अपेक्षित रहैत छैक । जखन पंडित जी लेखा-कार्यक प्रभारी उपनिदेशक बनाओल गेलाह त वित्तीय नियम, विनियम ओ गणनाकार्यमे अपन अवगति देखौलनि आ गणितीय क्षमताक परिचय सेहो देलनि । राजभाषा हिन्दीक प्रारंभिक चरणमे पं. गोविन्द झा जीक अंशदान अप्रतिम अछि। ओ एकर इतिहासक स्मरणीय अंग रहताह । अपन पांडित्य, विवेक, कर्त्तव्यनिष्ठता ओ सदाचरणक लेल ई विभागीय सखाक बीच श्रद्धा, सम्मान ओ स्नेहक पात्र बनल छथि। ◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हमर पंडितजी

❑ *श्री धूमकेतु*

एकटा बात प्रारंभेमे कहि दी । पंडितजी सऽ हमर पारिवारिक परिचय । ई बात जे जनैत होथि, से आश्वस्त रहथु जे पंडितजीक विषयमे जे किछु कहब से एकदम अनुभूत। जाहि परिवार सऽ पंडितजी अबैत छथि, से नमहर सोइत ज्ञानदानक थिकैक । सरस्वती पुस्तैनी खबासनी रहलथिन अछि । तैं विद्याविलास पंडितेजीक टा नै, हुनक स्वर्गीय अग्रज पं० जीवनाथ झा जीओक देखल अछि । महावैयाकरणक अन्तान तऽ एखनहुँ दिमागसँ निरकटैल नहिंऐ भेल अछि । मुदा लड़ऽ हम दोसर बात चाहै छी । से ई, जे "विद्या ददाति विनय" हमरा नजरिमे पंडितजीसँ उत्कृष्ट उदाहरण एकर नै भऽ सकैत अछि । आपादमस्तक विनयशील । शिष्टते, पहिल दिन जाहिओ पंडितजीकेँ देखने छलियनि, आकर्षित केने हेता । ता हम पटनामे पढ़िते रही । पंडितजी पंडित केदार मिश्र उर्फ मंगा एनके डेरामे रहैत छलाह । हुनका ओतऽ हमर जाब-आन । पंडितजी लागो ओही पहिल परिचयक उपलब्धि ।

बातक कोन स्तर पर जबाब अपेक्षित, वा अपेक्षित कि ने, से अन्तमे लेन तेनी बातक हृ हुँ गे जवाब दैत जेतथि । परच शिष्टता ताहू स्थितिमे बनल रहतनि । मुदा तकर ई अर्थ नै, जे जे बजल अपेक्षित तऽ पंडितजी हरि जेता । मुदा जे भऽड़ जेता तऽ तर्क वा प्रमाण सऽ नै हटता । दोसर शब्दमे, जोर से करै छथिन । मुदा जे अन्त ठेकि जेतनि तऽ पंडितजी कोन रूप लबऽ सकै छथि, आ की रूप लेबऽ सकै छथि, हमरा नेरो भागल अछि । चेतना समिति द्वारा पटनामे "सांस्कृतिक चेतना ओ मैथिली साहित्य" विषय पर विचार-गोष्ठी आयोजित छल, आ गोष्ठीक अध्यक्षताक भार देल गेल छल हमरा । आलेखसभ तऽ विषयवस्तु सऽ हटिएकऽ चलि रहल छलैक, आ जें बीच मे डॉ. खगेन्द्र ठाकुर जत्रे "देवियो ओर सज्जनो" उच्चारण केलथिन कि पंडितजी तमकिकऽ ठाढ़ भऽ गेला - "मैथिलीमे बाजू, ई मैथिली गोष्ठी थिक ।" खगेन्द्रजी तर्क देलथिन तऽ पंडितजी हमरा सबोधित केलनि जे "हम सभाक त्याग करै छी ।" आ विदाइयो भऽ गेला । आब हमरा दूध-माछ, दूनू बाँतर । खगेन्द्रजी खड़ी बोलीक नवीनतम पीढ़ीक मान्य होइत आलोचक, माइक कोना छीनि लियौन ? पंडितजी आदरणीय, मैथिलीक स्तंम्भ, सभाक त्याग कऽ देलनि। मुदा हम तऽ अध्यक्ष छलौं । भेल ई जे चेहरा पर रक्त आएल, आ मुँह सऽ बहराएल "हमरालोकनि एकटा विशिष्ट संस्कृति आ तेकर अपन भाषामे ओकर प्रतिच्छाया विषय पर विचार करैक हेतु बैसल छी । आदरणीय वक्ता सूत्र बद्ध होथु।" खगेन्द्र जी कें तऽ किछु कहबाक छलनि नै । ने कोनो आलेख छलनि । किछु-किछु कहिकऽ माइक छोड़ि देलनि । क्रुद्ध पंडितजीकें हम पुनः सभामे आमंत्रित कएल । आ ओ घूमिकऽ एला ।

से कहलौं जे पंडितजी कुसुमादपि कोमल आ वज्रादपि कठोर, दुनू छथि । कुसुमादपि कोमल तऽ बाहरे सऽ छथि, वज्रादपि कठोर जरूर भीतरसँ हेता । आब एहन व्यक्तिक एकटा दुविधाग्रस्त चरित्र जरूर भऽ जेतै, से पंडितोंजी मे छनि। बौद्धिक चिंतनसँ पंडितजी जतेक प्रगतिशील हमरा लगला, आत्मिक आओर व्यावहारिक दुनू स्तर पर ततेक छथि नै । तैं पंडितजी ओइ पीढ़ीक प्रतिनिधि साहित्यकार थिका, जे साहित्यकेँ कर्मक रूपमे स्वीकार करैत अछि । मुदा व्यक्तिगत रूपेँ पंडितजीकेँ लगैत छनि जे रचना जखनि धर्म भऽ जाइत छैक, तऽ साहित्य विश्वसनीय होइत छैक । आब अइ दुनू स्तर पर पंडितजी बैलेंस सधने रहै छथि । अइ अर्थमे ओ कविता नै बुझनहार आ कविता लिखनहार, दुनूक बीचक कड़ी बनि जाइत छथि। बुद्धिक स्तर पर, भावक स्तर पर ओ समसामयिक कविता वा लेखन दुनूक स्वाद लेबामे सक्षम छथि । मुदा जखन तर्ककेँ बेर ओतैक, पंडितजी अबूझ पाटीक पाँतीमे बैस जेता । मैथिली साहित्यमे पंडितजीकेँ ई एकटा अतिविशिष्ट स्थान छनि । नवीन पीढ़ीक रचनाकारलोकनि पंडितजी द्वारा बूझल जाकऽ आश्वस्त होइत छथि जे अबूझ आचार्यलोकनि तक ओ पहुँच गेला । मुदा पंडितजी आत्मिक-व्यावहारिक स्तर पर प्रगतिशील नै हेबाक कारणेँ - से नै कऽ सकै छथि ।

"अगुरबान" देशी-विदेशी, बहुतो भाषामे अनूदित भेल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडितजी ओकर मुखर प्रशंसा कहियो ने केलनि । पंडिताइनिक दोखरि देल जाएब पंडितजीकेँ विगलित नै करऽ सकलनि । मुदा एकटा कथा अछि "विघटन", जे "भुसबा" नामसँ जनकपुर कथा-गोष्ठीमे अएन भोरहरबामे पढ़ने रही । पंडितजी हबोढकार कानऽ लगला । "बंगट"क प्रति हुनक घृणा आ "छौंड़ा"क प्रति हुनक ममता की निष्कर्ष दैत अछि ?

एकटा नव बात सुनल अछि, जे पंडितजी मैथिलीक राहुल सांकृत्यायन थिका, मुदा पंडितजी तौं चुप । हमरा तऽ दुनू गोटेमे कोनो साम्य देखै मे नै अबैत अछि । मुदा पंडितजी अइ हँसीकेँ नै बुझैत हेता, से बात नै । चुप छथि जेँ शिष्ट छथि, शालीन छथि । कतऽ-कतऽ खंडन बाजल फिरता ? आ राहुल जी कोनो टेंटी-फेंटी तऽ नै थिका । मुदा बुझबाक ई थिक, जे जँ राहुलजीकेँ खड़ी बोलीक गोविन्द झा कहल जैतनि, तऽ पंडितजीक मर्यादा बढ़ितनि । उल्टा कऽ कहने पंडितजीक कोनो पदवीमे वृद्धि नै होइत छनि । जे-से ।

पंडितजीक रचनाकार सँ हम बहुत थोड़ परिचित छी । बहुत पुरान भाव-भंगिमाक हुनक किछु रचनाकर्म हमरा देखल अछि । भाषा-शास्त्र संबन्धी हुनक अध्ययन भेटबो करत तऽ हम नै पढ़बनि । ओइसभ लेखक हमरा आतंक अछि।

हम पं. गोविन्द बाबूक शतायु हेबाक कामना करैत छी।

◆

आदर्श पुरुष पं० गोविन्द झा

❑ *डा० श्री गंगानाथ झा 'बुझनुक'*

परमपूज्य गुरु साहित्यवाचस्पति स्वर्गीय पण्डित मधुसूदन मिश्रक मुहसँ सुनल अछि जे श्री गोविन्द झा पढ़बाक समयमे बड़ तेज आ कुशाग्र बुद्धि छलाह । अपन शिष्यक प्रति गुरुक ई मन्तव्य क्रमशः प्रत्यक्ष होइत गेल अछि । कुशाग्रबुद्धिक परिश्रमी व्यक्तिए एकहि संग विभिन्न भाषाक ज्ञाता भए सकैत अछि । साहित्यक विभिन्न विधामे शीर्षस्थ स्थान प्राप्त कए सकैत अछि । हृदयक विशालता, विभिन्न शास्त्र-पुराण एवं देशक समसामयिक घटनासँ परिचित पं. झाक व्यक्तित्वमे अद्‌भुत आकर्षण छनि । एक बेरक घटना थिक । कतहुसँ कानमे पड़लनि 'बुझनुक' बौक भए गेलाह । सुनितहि पण्डित काशीनाथ झाक संग गाम पर आबि बहुत काल धरि गप्प कएल । बिदा होइत काल अपन अएबाक उद्‌देश्यकेँ प्रकट करैत कहलनि - 'फुसिए उड़ौलक अछि 'बुझनुक' बौक भए गेलाह । बुझनुक लोक कतहु बौक हो ।'

प्रशासनिक ओहदावला हो अथवा धर्मशास्त्र कर्मकाण्ड, शास्त्र पुराण आ भाषाविद् किछु व्यक्ति ततेक आत्मकेन्द्रित भेल भेटताह जे समाजक सामान्य लोकक कोन कथा, निकट संबंधीवर्गो हुनका धरि पहुँचि नहि पबैत छथि । किन्तु पं. झा सहज छथि । गाम अएला पर लोकक ओहिठाम जाएब, भेँट करब, कुशलादि पूछब अपन सम्मानक प्रतिकूल नहि मानैत छथि । एहन लोक प्रेरणादायक होइछ, समाजक आदर्श होइछ ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडित जी

❑ *श्री जीवकान्त*

पंडित गोविन्द झाक नाममें पंडित शब्द लगायब नीक लगैत अछि । विशेष काल पंडित शब्द गुणवाचक नहि भए, जातिवाचक भए अबैत अछि । हिनक प्रसंगमे पंडित शब्द गुण वाचक भेल अछि ।

हिनक योगदान मैथिली भाषा आ साहित्यमे बहुत पैघ अछि । एतबा विशद आ विविध काज वास्तवमे गर्व करबाक योग्य अछि । स्वयं पंडितजी अपन एहि ऋद्ध योगदान पर गर्व अनुभव कए सकैत छथि ।

मैथिली अपने जनता लेल पछलग्गू भाषा भेल अछि । कतबो श्रेष्ठ रचना होइक, जकर पाठक नहि छैक, से स्वत: महत्वपूर्ण नहि भए पबैत अछि । अधिसंख्य मैथिल एहि भाषाकेँ पढ़ब-लिखब छोड़ि देने छथि । से बात मैथिली लेखकलोकनिक लेल दुर्भाग्यक बात थिक । एहि दुर्दशाक भोग आन-आन लेखकक संग पंडित झा सेहो कए रहल छथि ।

मैथिलीक अनेक प्रतिभाशाली लेखक दोसरो भाषामे लिखब शुरू कयलनि आ यश अर्जित कयलनि । हिन्दीमे लिखलासँ दिनकर, नागार्जुन, राजकमल चौधरी, फणीश्वरनाथ 'रेणु' एक पैघ पाठकसमुदायक बीच परिचित आ सम्मानित भेलाह । तेँ मैथिली छोड़ि हिन्दी लिखब हुनका सभ लेल फलदायी भेल । किरणजी मैथिलीक छोट पाठक समुदायकेँ छोड़ि हिन्दीक पैघ पाठकसमुदायक प्रति आकर्षणक अनुभव नहि कयलनि । तहिना पंडित झा छोट पाठक-समुदाय वला मातृभाषाक त्याग कथमपि नहि कयलनि । तेँ गोविन्द बाबूक ई त्याग एहि छोट भाषाक कृतघ्न समुदायकेँ स्मरण रखबाक चाही ।

एहि भाषाकेँ भाषा-विज्ञान, शब्द-कोष आ व्याकरण देबाक जे काज ई कयलनि अछि, से स्मरणीय रहत । एक व्यक्ति लेल एतबा काज कए सकब, वास्तवमे प्रशंसाक बात थिक ।

मैथिली कवितामे हिनक योगदान अछि । सिद्धि-प्राप्त ऋषि जकाँ ई कविता लिखलनि । फेर कविता लिखब ई छोड़ि देलनि । कविता-लेखन छोड़ब हिनक विकासक एक सही दिशाक निर्देशक अछि । अपन अनुभवक परिपक्वताक संग हुनक ई निर्णय निश्चये प्रशंसनीय रहल । शिल्प आ कथ्यक दृष्टिएँ मैथिली कविता उत्तर-शती मे अनेक हवा-पानि आ तकर आलोड़न-विलोड़नक अनुभव कयलक अछि । अनेक कविलोकनिक एहि समय-खण्डमे गंजन भेल अछि । गोविन्द बाबूक कवि एहि दुर्दशासँ बचल रहल अछि ।

नाटक-लेखन सेहो हिनका गौरवान्वित कयलक अछि । एहि समयमे नाटक-लेखन साहित्यक एक प्रमुख विधा थिक । गोविन्द बाबू नाटक-लेखनक निर्णय लए साहित्य लेल नीक काज कयलनि अछि । हिनक निर्णयकेँ समय सही सिद्ध कयलक अछि ।

कथा-लेखन आ उपन्यास-लेखनक क्षेत्रकेँ सेहो ई अनुभवी लेखनीसँ समृद्ध कयलनि अछि । हिनक कथामे मनुक्खक स्वाभिमानक चित्र आयल अछि ।

मिथिलाक मानव-संसाधन एखन बहुत गतिशील अछि। ओकरा पर अनेक प्रकारक दबौट छैक। ओकर संतान देश-परदेश पड़ायल जाइत छैक । अनेक बातकेँ छोड़ि ओकर संतान सहसा भाषा-विहीन, परम्परा-विहीन, भेल जाइत अछि। एहि संकटक क्षणमे पंडितजीक कथा-साहित्य एहि संक्रमणक चित्र बहुत स्पष्टतासँ अंकित करैत अछि । ई एहि भू-भागक भाषा, संस्कृति आ परम्पराक एक एहेन अलबम थिक, जे समयक प्रभावमे मन्द आ नष्ट नहि होयत ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिलीक सफल साधक पं० गोविन्द झा

❑ *श्री कीर्तिनारायण मिश्र*

किछु व्यक्तिकेँ जानए वला व्यक्ति केर संख्या बड़ बेशी होइत अछि । ओ अपनाकेँ सर्वसुलभ बना कए छोट-पैघ सभक परिचित आ मित्र भए जाइत छथि । सभक संग निश्छल व्यवहार । सभ हुनका लेल आत्मीय ।

एहन व्यक्ति पहिने सभ ठाम भेटि जाइत रहथि, किन्तु जेना-जेना भौतिक संघर्ष आ स्वार्थ - केन्द्रित दृष्टिकोण बढ़ल, हुनक संख्या न्यून होइत गेल । किन्तु ओतेक संख्या एखनहुँ अछि जिनका गनबाक लेल आँगुरिक व्यवहार आवश्यक भए जाय । अपन जन्मजात प्रतिभा/संस्कारक कारण एहन व्यक्ति पद-प्रभुताक अभावोमे समाजमे विशिष्ट स्थान बना लैत छथि ओ सम्माननीय आ आदर्श मानल जाइत छथि ।

आइ यद्यपि एक दिस एहन व्यक्तिक संख्यामे उत्तरोत्तर ह्रास भए रहल अछि किन्तु दोसर दिस एहि मानवीय गुणक प्रयोजन आ प्रासंगकिता बढ़ल जा रहल अछि । आइ दुष्टक लेल सहृदय, वंचकक लेल विनम्र, धूर्तक लेल निर्विकार, चोरक लेल इमानदार, भ्रष्टक लेल पवित्र शत्रुक लेल मित्रआ विध्वंसक लेल सर्जक देखब आवश्यक भए गेल छैक । ओ ओहन नहि होअए तथापि ओकरा देखबामे ओहने लगबाक चाही ।

एहि लुप्त होइत जन्मजात गुण, प्रतिभा आ संस्कारक प्रत्याहरण, प्रत्यारोपण आ कृत्रि म विकासक लेल बहुविध प्रयास भए रहल अछि । विज्ञान एहि क्षेत्र मे अनुसंधान आ परीक्षण कए रहल अछि आ प्रोफेसनल इन्स्टीच्यूटसभ 'बोनसाई टेकनीक' द्वारा एकर विकास कए रहल अछि, ठीक ओहिना जेना विशाल वट-वृक्षकेँ शयन कक्षमे सजा देल जाइत अछि 'टेल्समेड' मानवीय गुण आजुक संवेदनात्मक क्रान्तिक नव्यतम रूप थिक।

पण्डित श्री गोविन्द झाकेँ पहिल कोटिमे दुर्लभ मानवीय गुणसँ सम्पन्न व्यक्तिक रूपमे राखल जा सकैछ ।

हम हुनक नामसँ कहिया परिचित भेलहुँ अथवा हुनक पहिल दर्शन कहिया कएलहुँ से मन नहि अछि मुदा एकटा बात छल जाहि हेतु हम हुनका बेर-बेर स्मरण करैत छलियनि। हम मैथिली सीखब आ लिखब जहिया शुरू कैने रही, सोचैत रहैत रही जे अमुक शब्दकेँ मैथिलीमे कोना लिखल जाय अथवा ओकर साहित्यिक रूप की होएतैक । यद्यपि घरमे खाँटी मैथिली (ओ कतेक खाँटी छल से आइयो नहि बूझल अछि) बाजल जाइत छल, मुदा मैथिलीक कोनो शब्दकोश नहि छल । एकटा हितैषी हमर आतुरता देखि महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक 'मिथिला भाषा कोष' जखन आनि कए देलनि तऽ भेल जे कोनो अमूल्य वस्तु पाबि गेल छी । शब्द आ पृष्ठक संख्या ओहिगे बेशी नहि रहैक । ताहूमे मैथिली शब्दक लेल अर्थ अथवा पर्यायक रूपमे अधिकांशत: संस्कृत शब्दावलीक प्रयोग । यथा नोकरीक लेल "दास्य" आ नोचनीक लेल-"कण्डूति" तथापि व्यवहारमे आबएवला मैथिली शब्दकेँ कोन रूप मे लिखल जाइ, ताहि लेल ओकरे बेर-बेर उनटाबैत रही ओ हमरा संगमे हरदम रहए लागल । घरमे, यात्रामे, सभ ठाम । कागत-कलमक अतिरिक्त प्रयोजनीय सामग्रीमे ओ अनिवार्य रूपसँ सम्मिलित होअए लागल । कतेक वर्षक बाद ज्ञात भेल छल जे श्री गोविन्द बाबू महावैयाकरणजीक सुपुत्रछथि । हुनकासँ भावनात्मक लगाव बढ़ल आ ओ आओर प्रगाढ़ भए गेल जखन ज्ञात भेल जे चर्चित नाटककार अरविन्द अक्कूक ओ पिता छथि । साहित्यमे हुनक व्यक्तिगत अवदान की छनि (अनुवाद, सम्पादन आ नाटकलेखन मंचनक अतिरिक्त) तकर ज्ञान हमरा कतेक वर्ष धरि नहि भेल, ने जनबाक लेल हम कोनो विशेष प्रयास कएलहुँ । पटनाक साहित्यिक गतिविधिमे हुनक सक्रियताक जतबा पता पत्र-पत्रिकासँ लगैत छल, कोनो विशेष आकर्षण उत्पन्न करइ मे अपर्याप्त ।

पटना गेला पर मैथिली अकादमीमे हुनक दर्शन होअए। कार्यालयक पछिला भागमे कोनवला टेबुल-कुर्सी पर किछु लिखैत वा कोनो आलेखमे हेराएल । प्रणाम-पाती आ कुशल-समाचारक अतिरिक्त आओर किछु नहि । प्रत्येक वेर पोथी हेरइ आ कीनय मे जतबे अल्प समय लागय, ओहि मध्य किछु मित्र जमा भए जाथि आ प्रवेशद्वारवला बरण्डामे एकटा गोष्ठी जमि जाय । गोविन्द बाबू अपन काज छोड़ि कए कहियो ओहिमे सम्मिलित नहि भेलाह । बिदा होयबासँ पूर्व पुनः प्रणाम करय जइयनि तऽ हुनका ओहिना व्यस्त देखियनि । हुनका देखि, विद्यार्थी जीवनमे देखल आचार्य श्री

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शिवपूजन सहाय बेर-बेर मोन पड़ैत छलाह ।श्री नचिकेताक उद्योगेँ साहित्य अकादमी 1994 क अन्तमे (कलकत्तामे) सप्ताहव्यापी अनुवाद कार्यशालाक आयोजन कएलक । हमरा समेत नव कविताक अनेक कवि-लेखक आमंत्रि त छलाह। अनुवाद-कार्यकेँ गंभीरतासँ लैत ओहिमे सहयोगक लेल किछु विद्वान् सेहो बजाओल गेलाह जाहिमे पण्डित श्री गोविन्द झाक नाम सर्वप्रमुख छल ।

ओ महाराष्ट्र-निवासमे ठहराओल गेलाह । पछाति हम अयलहुँ तऽ हमरा ओहि कक्षमे लए जाओल गेल, जाहिमे पहिनेसँ प्रो रमेश चन्द्र झा रहथि । हम पुछलियनि - जीवकान्त आ केदार कानन अयलाह ? ओ कहलनि जे जीवकान्त जीक पहिल गाड़ी छूटि गेल छनि । ओ दोसर गाड़ीसँ आओताह । केदार कानन यात्रासँ डेराइत छथि । ओ अपन असमर्थता व्यक्त कए देने छथिन । संगहि आन-आन, साहित्यकारक आगमनक सूचना देलनि आ सुझाव देलनि जे अपने चाही तऽ गोविन्द बाबू वला रूममे रहि सकैत छी । ओ एखन एकसरे छथि । प्रत्येक रूममे दूटा सीट छैक । किन्तु, महाप्रकाश, सुभाष चन्द्र यादव एवं हरेकृष्ण झा तीनू एक्के रूममे रहि रहल छथि ।

एहि प्रसंग चर्च भइए रहल छल कि एतबे मे महाप्रकाश, सुभाष आ हरेकृष्ण कक्षमे प्रवेश करैत छथि । 'रूम-सर्विस'क अभाव आ आन-आन असुविधा पर चर्चा होइत अछि आ निश्चय होइत अछि जे संध्याकाल अकादेमीक अधिकारी लोकनिकेँ एकर सूचना दए कोनो नीक होटलमे रहल जाय ।

संध्याकाल जखन कार्यशालाक उद्घाटन समाप्त भेल तऽ प्रो इन्द्र नाथ चौधुरी, सचिव, साहित्य अकादेमी कुशल-समाचार पूछैत छथि । एहि पर हमर प्रतिक्रिया होइछ । गौशाला (महाराष्ट्र निवास) मे बासा भेटल अछि, भोजन कए प्राय: पयरे टैक्सी जोहैत-जोहैत एतय धरि पहुँचि गेल छी ।' तत्काल डा. निर्मल कान्ति भट्टाचार्य, उप सचिव, साहित्य अकादेमी, डा. नचिकेता आ पं. गोविन्द झा साकांक्ष होइत छथि । कहल जाइत अछि जे असुविधाक स्थितिमे कोनो अन्य होटल मे ठहरि सकैत छी, दिनमे माछ-भातक व्यवस्था अकादेमीक ऑफिसेमे कए देल जाएत आ अकादेमीक अधिकारी अहाँलोकनिकेँ अनबा आ पहुँचयबाक व्यवस्था करताह।

बासा घूरि मित्रलोकनि तय करैत छथि जे जखन दिनुका भोजन आ यातायातक नीक व्यवस्था भए गेल, तऽ एही ठाम रहल जाए, कीर्ति नारायणजी हमरासभक संग एक-दू दिन रहि होटल जा सकैत छथि ।

दोसर दिन स्नानादिसँ निवृत्त भए पण्डित गोविन्द झा जी हमरा कमरामे प्रवेश करैत छथि। साहित्य अकादेमी एवं मिथिला सांस्कृतिक परिषदक (कलकत्ता) संयुक्त प्रयाससँ कलकत्ता मे 28-29 जनवीर, 95 केँ आयोजित होअए बला मैथिली कविताक विकास पर सेमिनारक उल्लेख होइत अछि आ मुक्तक काव्य पर चर्चा शुरू भए जाइत अछि । उपस्थित मित्र वर्गमे किछु व्यक्ति ओहिमे आमंत्रि तो रहथि । चर्चा चलल सभक अपन-अपन दृष्टिकोण, किन्तु एहि बात पर सभ एकमत जे प्राचीन आ नवीन समस्त स्फुट काव्य मुक्तक काव्य थिक । हमर विचार छल जे नव कविता मुक्तक काव्य होइतो पारम्परिक अर्थमे मुक्तक काव्यक परिसीमामे नहि अबैत अछि । गोविन्द बाबू हमर तर्क आ मान्यताकेँ स्वीकार करैत किछु एहन तथ्य दिस संकेतित कएल जाहि पर विचार करब लेखकेँ प्रामाणिक बनयबाक हेतु आवश्यक बुझना गेल छल । हम हुनक अध्ययन, विद्वत्ता, तर्कशैली एवं कोनो विषय पर बिना कोनो पूर्वाग्रह, तटस्थ भए तथ्यक आधार पर सोचबाक शक्ति पर चकित छलहुँ ।

पण्डित गोविन्द झा अनेक भाषाकेर विद्वान् छथि, भाषाशास्त्री मानल जाइत छथि, अनुवाद, नाटक, सम्पादन आदिक क्षेत्रमे यथेष्ट प्रतिष्ठा अर्जित कैने छथि, से तऽ ज्ञात छल, किन्तु पत्र-पत्रि कामे प्रकाशित किछु कथा, लेख आ समालोचनाक अतिरिक्त मौलिक लेखनक क्षेत्र मे हुनक की उपलब्धि छनि, से जानएमे हमरा कतेक वर्ष लागि गेल ।

गोविन्द बाबूक कथा-उपन्यास पढ़लाक बाद हुनक मौलिक रचनाकार आ श्रेष्ठ गद्यकारसँ हमर साक्षात्कार भेल । हमरा भेल जे गोविन्द बाबू कथा कम, आत्मकथा बेशी लिखैत छथि । आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल अपन कथा सभमे ओ पात्र आ ओकर परिस्थितिकेँ अपना मे समाहित कए, ओहिसँ कथा-सूत्र बाहर करैत छथि आ ओकरा विस्तार दैत छथि । कतहु ई दूनू हुनका संचालित करैत बुझाइत छनि अथवा आत्मविस्तार दैत छनि । कतहु पात्रआ घटना मे ओ स्वयंकेँ भ्रमित बुझाइत छथि । हुनकर कथासभ हुनके कथा कहैत बुझाइछ ।

मराठीगे आत्मकथा शैलीमे कथालेखन बहुत पहिनेसँ भए रहल अछि आ आत्मकथाकेँ एकटा कथा-विधाक रूपमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

स्वीकृति भेटल छैक । हिन्दीओ मे ई विधा विकसित भए रहल अछि । मैथिलीमे गोविन्द बाबू एहि विधाकेँ प्रारम्भ करय वला मानल जा सकैत छथि । एहि विधा-शिशु मे आने विधा जकाँ अनन्त संभावना छैक । किन्तु, ओकर भविष्य एहि बात पर निर्भर करैत छैक जे अपन विकास-विस्तारमे मानवीय संघर्ष आ संवेदनाकेँ कतेक दूर आयात कऽ सकैत अछि, पूर्व अथवा प्रचलित विकल्पसँ कतेक वेशी प्रभावी सिद्ध भए सकैत अछि ।

कथा-विधाक क्षेत्रमे समाक पौतीक माध्यमसँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल छलाह । *'नखदर्पण'* हुनक अग्रिम पदक्षेप मानल जा सकैत अछि ।

हुनक ऐतिहासिक उपन्यास *विद्यापतिक आत्मकथा* सेहो एही आत्मकथात्मक शैलीमे अछि । विद्यापति कथानायक आ कथावाचक दूनू छथि । साधारण मैथिल जका हुनको जन्म, शिक्षा-दीक्षा आ विकास पारम्परिक पारिवारिक सामाजिक एवं शैक्षणिक परिवेशमे भेल छलनि । काव्यप्रतिभा छात्रजीवनेसँ परिलक्षित होअए लागल छलनि आ राजनीतिक जागरूकता प्रारंभिके उठानमे आबि गेल रहनि । ओ एकटा भावुक तथा रसिक कविक रूपमे प्रकट होइत छथि आ मानवीय संवेदनाक उद्गाता बनि जाइत छथि । अन्ततः महान् भक्त कविक रूपमे अध्यात्म चिन्तनसँ भक्तिक धार बहबैत छथि । शुरूसँ अन्त धरि भावावेग, अन्तर्द्वन्द्व, वैचारिक संघर्ष एवं आत्मचिन्तन हुनका आन्दोलित कएने रहैत छनि । ओहिना जेना कोनो साधारण मनुक्ख एहन अवस्थामे उद्वेलित होइत रहैत अछि। तीव्र राजनीतिक चेतनाक कारणेँ ओ समाज तथा दरबारमे परमादरणीय भए गेल छलाह, अध्यात्म-चिन्ता हुनका महान् भक्तक कोटिमे लए अनने रहनि एवं राष्ट्रीय भावनासँ देशभक्त कविक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह । कविकोकिल आ अभिनव जयदेवक नामसँ सम्बोधित भारतक ई महान कवि मिथिलामे किंवदन्तीक रूपमे सेहो विख्यात छथि ।

मणिपद्म जीक प्रसिद्ध औपन्यासिक कृति *'विद्यापति' विद्यापतिक जीवनी थिक* । ओ अपन अथक प्रयाससँ जुटाओल सामग्रीकेँ यथातथ्य राखि दितथि तऽ सेहो बड़का काज होइतए। किन्तु तथ्यमे कथात्मक सरसता आ रोचकता अनबाक लेल ओ हुनका अपन उपन्यासक नायक बना कए प्रस्तुत कएल । कालान्तरमे जखन शरच्चन्द्रक जीवन पर आधारित विष्णु प्रभाकरक *'आवारा मसीहा'* बहराएल तऽ मैथिली भाषीकेँ लागल छलनि जे मणिपद्म जी विद्यापति पर बड़का काज कए रहल छथि ।

मणिपद्म जी अथवा गोविन्द बाबू चाहितथि तऽ डा. रामविलास शर्मा जेना निराला पर विशाल ग्रन्थ लिखलनि (निराला की साहित्य साधना-3 भाग मे) तहिना विद्यापति पर लिखि सकैत छलाह, किन्तु ओकर पाठकक संख्या सीमित रहितनि ।

हमरा जनैत गोविन्द बाबूक समक्ष मणिपद्म, रामविलास शर्मा, विष्णु प्रभाकर संगसंग विभिन्न भाषाक अनेकानेक जीवनीलेखक छलथिन । ओ एहन दायित्वपूर्ण काजक लेल अपेक्षित तथ्य संकलन, ओकर प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण आ ताहि लेल आवश्यक समय आ साधन जुटयबाक संकट सँ परिचित रहथि, तेँ ओ ई सहज आ सरल मार्ग अपनाओल । विद्यापतियेकेँ कथावाचक बना ओ आत्मकथाक नाम पर हुनकासँ ओ संभ बात वा तथ्य कहबा देल जकर संकलन अपन अध्ययन, महाकविक रचना आ जनश्रुतिक आधार पर कएने रहथि । कथामे मुख्य बात रोचकता आ कहबाक शैली होइत छैक, तथात्मकता नहि । ओहिमे कल्पना एवं अतिरंजनाक लेल गुंजाइश रहिते छैक, ई आवश्यक नहि होइत छैक जे कथ्य प्रामाणिक होअए । ओ एहि सभ पक्षकेँ ध्यानमेँ राखि पूर्ण सजगता आ चतुरतासँ मिथिलाक परम्परा, संस्कृति, चिन्तन, दर्शन सभकेँ तटस्थ आ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखैत ओहि विद्यापतिसँ अपन कथा कहबाओल अछि जनिक साहित्य मिथिलाक जनकंठमे पाँच सए वर्षसँ वास करैत छल आ जनिक जीवन आ जनिक वास्तविकता एवं किंवदन्ती दुनू एकात्म भए प्रत्येक व्यक्तिक हृदयमे अपन-अपन विद्यापतिक प्रतिमा ठाढ़ कए देने छल ।

ओ विद्यापतिक कोनो आदर्श प्रतिमा नहि गढ़ि, हुनका समस्त मानवीय दुर्बलताक संग प्रस्तुत कएल अछि । शिशु, किशोर, युवा, वृद्ध विद्यापतिक जीवनमे अनेक अभाव, संघर्ष, तनाव आ द्वन्द्व छलनि । पुत्र पति, पिता, प्रेमी आ मित्रक रूपमे प्रतिभाशाली छात्रआ रसिक कविक रूपमे, सौन्दर्य-प्रेमी रचनाकार आ प्रकाण्ड शास्त्रवेत्ताक रूपमे, सामान्य जन आ राजदरबारक कविक रूपमे, सौन्दर्य प्रेमी आ भाव-विह्वल भक्तक रूपमे ओ कोना द्वन्द्व आ संघर्षमे जिबैत छलाह, कोना काव्यदृष्टि आ अध्यात्मचिन्तन विह्वल बनौने रहैत छलनि, कोना सामाजिक सरोकार एवं राजनीतिक दायित्वक प्रति सजग तथा सक्रिय रहैत छलाह-सभ आत्मकथाक रूपमे ओ प्रस्तुत कए दैत छथि । गोविन्द बाबूकेँ एहि जीवन्त प्रस्तुतीकरणमे अद्भुत सफलता भेटल छनि । ◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

श्री गोविन्द बाबू अपन कपार अपने लिखल

❑ श्री मन्त्रेश्वर झा

ठीकसँ मोन नहि अछि जे पहिलेपहिल गोविन्द बाबूसँ कहिया भेँट भेल छल । गाममे स्कूल अवधिमे गोविन्द बाबूसँ बेशी हुनकर अग्रज पं. श्री जीवनाथ झाजीसँ परिचित रही । हुनकासँ भेटसँ पहिने हुनक नाटकसँ परिचित रही, हुनक नाटक पढ़ने रही, देखने रही ।

नोकरीमे घुमैत-फिरैत जखन सर्वप्रथम पटना अएलहुँ, तखन सम्भवत: गोविन्द बाबू स्वयं भेँट करबाक लेल हमरा डेरा पर आएल रहथि। तहिया जे अपन स्नेह ओ देखौलनि से एखन धरि देखबैत रहलाह अछि । एकरा हम अपन सौभाग्य बुझैत छी जे ओ जखन 'विद्यापतिक आत्मकथा' लिखनि तऽ प्रकाशनसँ पूर्व हमरा ओकर पाठक बनौलनि ।

पुरान पण्डितक आभासँ युक्त पण्डित गोविन्द झाक अगय-बगय पण्डितवला कहियो ने रहलनि - ने चानन-ठोप, ने धोधि, आ ने धोती-तौनी । एकबेर पायजामाक बदला धोती परिने देखलियनि तऽ आश्चर्य प्रकट कएलियनि । हुनकर कहब रहनि जे ओ धोतीक विरोधी नहि छथि । धोती कतहु बिदाइमे भेटि गेलनि तऽ पहिरि लेलनि । पहिल भेँटमे पं. गोविन्द झा हमरा एक फक्कड़ सन लगलाह-सर्वहारा वर्गक सामान्य प्रतिनिधि । हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व तऽ हुनकर लेखनीमे प्रकट होइत छनि, हुनकर वाणीमे प्रतिध्वनित होइत छनि ।

गोविन्द बाबूक चालि-ढालि पंडिताउ रहनु की नहि, हम हुनका सर्वप्रथम महापंडित बुझैत छियनि । जे केओ अपन पंडिताइकेँ भजा-भजा कए अपन यशोगान करबैत छथि, ताहि किनको सँ कम पंडित नहि छथि गोविन्द बाबू । शास्त्रार्थक पुरनका परिपाटी जँ बचल रहितैक तऽ गोविन्द बाबू अपन प्रखर विद्वत्ता आ तर्कबुद्धिएँ ककरो केहनो पंडितकेँ परास्त कए सकैत छथि।

गोविन्द बाबू मूलत: अनुवादकक रूपमे अपन लेखनकार्य आरम्भ कएलनि आ अनुवादकक जीविकामे लागि गेलाह । पहिने ओ संस्कृतसँ मैथिलीमे अनुवाद कएलनि आ तकरबाद हिन्दी सँ अंग्रेजी, अंग्रेजीसँ हिन्दी, असमीसँ मैथिली, ओड़ियासँ मैथिली अनुवाद करैत रहलाह । मौलिक मैथिली नाटक लिखलनि, कथा लिखलनि, कविता लिखलनि, उपन्यास लिखलनि, सदति लिखैत रहलाह, लिखि रहल छथि ।

नवका पीढ़ीक लेल तऽ एक प्रेरणापुञ्ज छथि गोविन्द बाबू । 'सगर राति दीप जरए' कार्यक्रममे यत्रतत्र जाय भरि राति जागि कए कथा पढ़ब आ कथाक समीक्षा करब, हुनका वयसमे मात्रहुनके-सनक अद्वितीय लोक लेल संभव भए सकैत छैक । एक बेर हम विनोदमे गोविन्द बाबूकेँ कहलियनि, *'की अहाँ सिंह तोड़ि परडूमे मिलल करैत छी'* । तँ गोविन्द बाबू हमर कटाक्ष पर हतप्रभ होइत बजलाह, *"ने हमरा सिंघे अछि आ ने हम ककरो परडू मानैत छी ।"* हमरा पर असीम स्नेह रखनिहार गोविन्द बाबू हमरा पर क्रोध प्रकट नहि कएलनि । केओ आन जँ ऐहन गप कहने रहितनि तऽ ओहि दिन की की ने भए जाइत ।

दोसर बेर एही प्रसंगकेँ उठबैत हम गोविन्दं बाबूकेँ कहलियनि, *'आब अहाँक वयस बस-ट्रेन मे लदि-फदि कें कथा गोष्ठी मे जएबाक आ भरि-भरि राति जागि कए सुनबाक नहि अछि ।'* हम आश्चर्य प्रकट केलियनि जे एतेक हरारतिक बादो अहाँ कोना स्वस्थ रहैत छी । हमर एहि प्रश्न पर गोविन्द बाबू जे प्रतिक्रिया व्यक्त कएलनि से हमरा निरुत्तर कए देलक । ओ कहलनि *"अहाँ हमर वयसक लोककेँ रिक्सा चलबैत, मजदूरी करैत, आ की स्टेशन पर कुलीक काज करैत नहि देखैत छिऐक ? ओकरा सभकेँ जखन आराम करबाक काज नहि पड़ैत छैक, तऽ हमरा किएक पड़त । आराम करू अहाँलोकनि जकरा आराम करबाक हिस्सक अछि ।"*

एहेन कर्मठता केओ गोविन्द बाबूसँ सीखय ।

गोविन्द बाबू केवल संस्कृतेक उद्भट विद्वान् नहि छथि, केवल भाषाशास्त्री टा नहि छथि, अपितु इतिहास, समाजशास्त्र मनोविज्ञान, दर्शन इत्यादिक मर्मज्ञ अध्येता छथि । हुनकासँ कोनो विषय परं गप्प करू तऽ ओ उदाहरण दए ओहिपर तर्कसम्मत विचार प्रकट करलाह । गोविन्द बाबू बराबरि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हमरा डेरा पर आबि साहित्य एवं संस्कृतिक विशद चर्चा करैत रहलाह। हुनकासँ सीखल ज्ञानक हम अपना नाम पर कतोक ठाम उपयोग कएल, ताहि लेल हम हुनका प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करब अपन कर्त्तव्य बुझैत छी ।

गोविन्द बाबू क्रोधी स्वभावक छथि आ शास्त्रीय परम्पराक अनुसार अपन जे मत एक बेर बना लेताह ताहिसँ एकोरती टस्स सँ मस्स नहि होएताह । एकबेर हम श्री कौशल कुमार दास हुनका संग कारमे जनकपुर कथा-गोष्ठीमे गेल रही । रस्तामे मैथिली नाटक पर बहस प्रारम्भ भेल । गोविन्द बाबू स्व. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाट्यशैली एवं नाट्यलेखनक मानदण्डक एहन प्रबल विरोधी छथि से तहिए एतेक विस्तार सँ बुझल । कतेको प्रयास कएल, मुदा गोविन्द बाबू अपन अभिमतमे कनियो परिवर्तन करबा लेल तैयार नहि भेलाह ।

जनकपुर यात्राक क्रममे मैथिली नाट्य लेखन पर बहसकेँ बदलबाक लेल हम गोविन्द बाबूकेँ एक दोसर प्रश्न दिस मोड़ि देलियनि आ पुछलियनि, पंडितजी मैथिल कुलीन ब्राह्मणमे पारंपरिक रूपसँ एहन कोन विशिष्टता रहैक वा छैक जाहि आधार पर अन्य हिन्दू धर्मालंबी अथवा ब्राह्मणसँ ओकरा पृथक् अस्तित्व प्रदान करैत छैक । हिन्दू धर्मशास्त्र जखन मूल रूपमे एक्के अछि तखन ब्राह्मण-ब्राह्मणमे भाषागत अथवा स्थानगत भिन्नता तऽ भए सकैत छैक, मुदा आन तरहक अन्तर कोना होएतैक । पंडितजी गंभीर होइत कहलनि जे प्रश्न जटिल अछि आ एकर उत्तर सहज देब सम्भव नहि। बड़ी काल धरि एहि प्रश्न पर विचार-विमर्श होइत रहल आ अन्तमे जे निष्कर्ष निकलल से यैह जे कुलीन मैथिल ब्राह्मण ओएह भेल जे साहित्य आ संस्कृतिक प्रति अभिरुचि राखय, आत्मसम्मानसँ भरल हो, सन्तोषी हो, असंग्रही हो, आडंबररहित जीवन जीवय आ 'अतिथि देवो भव'क पालन करय ।

भेंट-घांटक क्रममे एक दिन गोविन्द बाबू जे एकटा गप्प कहलनि से तऽ आँखि खोलि देलक । विषय आत्मसम्मानक रक्षा करबाक छल । ओ कहलनि जे हुनकर पिता महावैयाकरण पंडित दीनबन्धु झा दरभंगा राजक कोनो निर्णय सँ एतेक आहत भऽ गेलाह जे अध्यापनक नोकरी सँ त्यागपत्र दए गाम चल अएलाह आ गाममे कपड़ाक दोकान प्रारम्भ कएलनि । आइ-काल्हि बेरोजगार युवक यदि एहिसँ प्रेरणा लए अपन व्यवसाय शुरू करथि आ केहनो नोकरीक ताक मे एमहर-ओमहर नहि बौआथि तऽ बेरोजगारीक समस्याक निदान ओतेक कठिन नहि रहत ।

हम एक बेर गोविन्द बाबूसँ आग्रह कएलियनि जे ओ अपन आत्मकथा लिखथि । गोविन्द बाबू मुसकिआइत बजलाह *"आत्मकथा तऽ ओ ने लिखय मन्त्रेश्वर बाबू जे किछु हो । हम तऽ किछु छीहे नै, तखन हमर आत्मकथाक की प्रयोजन? के पढ़त हमर आत्मकथा ।"* तहिया गोविन्द बाबू हमर अनुरोधकेँ टारि गेलाह मुदा एहि अभिनन्दनक अवसर पर हम फेर हुनकासँ आग्रह करबनि जे ओ अपन आत्मकथा अवश्य लिखथि, हमरालोकनिकेँ, मैथिलीक पाठककेँ अभिनन्दित करथि। मैथिली साहित्यमे आत्मकथा लेखन लगभग शून्य अछि । हमरा बूझल अछि जे गोविन्द बाबूक जीवनमे बड़-बड़ उतार-चढ़ाव अयलनि । ओ जतय एक दिस स्वतंत्रता-आन्दोलन मे भूमिगत भेलाह तऽ दोसर दिस मिथिलाक स्वदेशी-बिलेती आन्दोलनमे सेहो सक्रिय रहलाह। नेपाल गेलाह मुदा अपने हाथे अपन कपार लिखलनि । लगभग चारि पीढ़ीक दस्तावेज छथि गोविन्द बाबू ।

गोविन्द बाबू एक विवादास्पद व्यक्ति छथि आ अपन दू-टूक बातसँ विवाद ठाढ़ करबा मे संकोच नहि करैत छथि। निर्भीक जीवन जीवैत छथि गोविन्द बाबू । गुप्त रूपसँ मैथिलीक कतेको महन्थलोकनिक लेल पोथी पर पोथी लिखलनि मुदा कहियो ओकरा सार्वजनिक नहि कएलनि । निरन्तर निरादर पबितो अनवरत साहित्य सृजन करबाक दृढ़ निश्चय केओ हुनकासँ सीखय ।

ईश्वरसँ प्रार्थना करैत छियनि जे आदरणीय गोविन्द बाबू शतायु होथु आ एक दिन मैथिलीक लेल नोवेल प्राइज प्राप्त करथि ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडित गोविन्द झा : एक अनुवादक प्रशिक्षक

❑ श्री राधावल्लभ कण्ठ

सन् 1971 ई. क अंतिम मास । बिहार सरकार द्वारा विज्ञापित पद 'हिन्दी अनुवादक' लेल लिखित परीक्षा पटना पुराना सचिवालयमे भेल छल । हमहुँ परीक्षार्थी छलहुँ । परीक्षा दए कए बाहर अएलहुँ तऽ एक दूटा शब्दक प्रति शंकालु छलहुँ, जे ओकर प्रयोग ठीक ढंगसँ कए सकलहु कि नहि । बाहरमे बहुत गोटे छलाह, जाहिमे हमर एकटा ग्रामीण सेहो छलाह । ओ हमर परिचय करौलनि श्री गोविन्द झा जीसँ, जे राजभाषा विभागमे अनुवाद पदाधिकारी छलाह । वेश-भूषा, कद-काठीसँ नहि अनुमान भेल जे ओ हमर अनुवाद-यात्रामे गुरु होमयवला छथि।

अनुवादक प्रश्नपत्रमे एक शब्द प्राय: 'परिमल' आयल छल । हम साधारण अर्थ 'गन्ध' जनैत छलहुँ । आरो एक-आध शब्दक विषय मे शंका छल । पंडित जी शब्द-विश्लेषण करैत बुझौलन्हि जे 'परिमल' क अर्थ होइछ 'रगड़ासँ उत्पन्न गंध' । बादमे जखन हमर नियुक्ति अनुवादकक पद पर भेल, तऽ हमरा पंडितजीक संगे काज करबाक मौका भेटल । ओ कहथि जे जतेक शब्द-संपदा अर्जन कए सकी से उत्तम, कारण जे अनुवादमे तऽ शब्दक खेलमात्रहोइत छैक । शब्दक अर्थ जानिकए यदि ओकर सुष्ठु प्रयोग कैल जाए, तऽ अनुवाद उत्तम होएत । ओ विभिन्न शब्दक व्युत्पत्ति, मूल अर्थ, कालान्तरमे परिवर्तित अर्थ सबटा विस्तार सँ बताबथि । वस्तुत: गुरुमे जे धैर्य, शिष्यक उत्कंठाक समाधान करबाक चाह होइत छैक, सभटा पंडित जीमे छन्हि ।

हम हिन्दी विषयसँ एकटा साधारण स्नातकोत्तर उत्तीर्ण व्यक्ति । विश्वविद्यालयक पढ़ाइ केहन होइत छैक, से हम आब बूझैत छी । मात्रअंक बटोरनाइ उद्देश्य रहैत छैक । विषयक गहराइमे जाकए ने कोनो छात्रपढ़ए चाहैत अछि, आ ने गुरुजी कें ओतेक समय आ धैर्य रहैत छनि जे ओ शब्दक मर्म बुझाबथि । अस्तु, राजभाषा विभागमे डेढ़ वर्षक अल्पावधिमे पंडित जी, जिनका हम गुरु मानि लेलहुँ, हमरा अनुवादक कलहरा बौलन्हि । यद्यपि समय कम भेटल हुनका सान्निध्यमे रहबाक, तथापि हमर ज्ञान-वृद्धि भेल । हम ई सीखि सकलहुँ जे शब्दक सटीक अर्थक प्रयोग कोना कएल जा सकैछ, कानूनी भाषाक अनुवादमे एक - एकटा अल्पविरामक की महत्ता होइत छैक, अंग्रेजीक एक वाक्य यदि एतेक नम्हर होइक जे पूरा पन्नामे एकटा पूर्णविराम हो, तऽ ओकर सार्थक आ असंदिग्ध अनुवाद कोना कयल जा सकैत अछि । हमरा मोन पड़ैत अछि जे बिहार सरकारक एकटा कोनो मैनुअल अनुवाद हेतु आयल छलैक । ओकर वाक्य-विन्यास हमरा हेतु कठिन छल । किन्तु पंडितजीक मार्गदर्शनमे हम ओकर किछु अंशक अनुवाद केलहुँ आ ओही क्रममे बहुत किछु अनुवादक सिद्धान्त पंडित जी हमरा सिखौलनि । वैह थाती छल जे हम रिजर्व बैंकद्वारा आयोजित लिखित परीक्षामे सफल भेलहुँ । कारण जे हम ने कहियो वाणिज्यशास्त्र वा ने अर्थशास्त्र अध्ययन कएलहुँ, तथापि बैंकिंगसम्बन्धी अनुवादमे अखिलभारत स्तर पर आयोजित परीक्षामे हमरा तृतीय स्थान भेटल । ई परीक्षा 1979 मे भेल छल, आ हम सचिवालय 1973 क मइ मास मे छोड़ि चुकल छलहुँ तथा सिंदरी खाद कारखाना मे अनुवादक नियुक्त भए गेल छलहुँ ।

बैंकिग क्षेत्र मे फारमक उपयोग बेसी होइत छैक । किछु दिन पंडितजी फारम प्रशाखाक प्रभारी बनाओल गेल छलाह । फारमसंबंधी अनुवादमे बेसी संयम अपेक्षित होइत छैक । अंग्रेजी शब्दक सटीक अर्थ हिन्दीमे तऽ अयबाक चाही अवश्य, लेकिन फारम द्विभाषी बनेबाक हो, तऽ अंग्रेजीमे जेना वाक्य प्रारंभ भेल आ आगाँ रिक्त स्थान इत्यादि अछि, तहिना यदि हिन्दीमे सेहो कयल जा सकय तऽ सर्वोत्तम । किछु गोटे एकरा कठिन मानैत छथि, किन्तु पंडितजी बुझौलनि जे ई कठिन नहि, केवल अभ्याससापेक्ष अछि ।

पंडित जीक कृपासँ हमर ज्ञानमे जे थोड़ बहुत वृद्धि भेल, तकर सुफल हमरा एखनहुँ भेटि रहल अछि जे रिजर्व बैंक सन संस्थामे केहनो जटिल अनुवाद हम कऽ सकैत छी आ केओ ई नहि कहि सकैत अछि जे हमर अनुवाद सटीक अर्थ नहि देलक ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रोटी, लताम, पूल

❑ श्री बुद्धिनाथ झा

हम एकटा नाटक लिखल अछि - *हमर महादेव* । उक्त नाटकमे एकटा पात्रअछि माधव आ एकटा मधुकान्त । ग्रामीण परिवेश । छओ वर्षीय माधव अत्यंत चंचल, मधुर देखनहुर एकटा गरीब बालक अछि । ओकर मजूर बापक हेतुएँ पनिपिआइ पहुँचएबाक निमित्त आयलि अपन माइक संग लागि ओ बाध धरि आबि जाइत अछि । मधुकान्त, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक छात्रअपन बहिन्वेक पटैत खेत लग ठाढ़ छथि । हुनका एहि चंचल नेनाक प्रतिएँ आकर्षण होइत छन्हि । ओ एकरासँ पूछि बैसैत छथि - 'एकटा एहन फलक नाम कहह जकर आँठी, गुद्दा आ खोंइचा सब किछु खाएल जाइत हो ।' नेना, मोने मोन गणना कए, झट कहि बैसैत अछि, "लताम" । मधुकान्त गद्गद भए जाइत छथि । हुनका एहि नेनामे एकटा अपूर्व 'सम्भावना'क विश्वासक उदय होइत छन्हि, इत्यादि ।

पूज्य पंडितप्रवर माननीय श्री गोविन्द झाक मादे किछु लिखबाक हेतुएँ मान्यवर डा. आनन्द मिश्र महोदयक पत्र बन्धुवर डा. रमणजीक मार्फत प्राप्त कयल तँ हमरा मोंनमे सबसँ पहिने जे कौतूहल भेल से कहैत छी ।

कौतूहल भेल जे पूज्य ककाजीक मादे हम कतऽ सँ आरम्भ करी । "कतऽ सँ"क ई तारतम्य हमरा हेतुएँ किछु एहन सन जेना केओ ककरो हठात् पूछि बैसौक रोटीक मुह केमहर ? से प्रश्न ककरो लेल जेहन अप्रत्याशित उक्त प्रश्न सेहो हमरा किछु तेहने अप्रत्याशा दए छोड़लक । धरि, तकर उत्तरहु, प्रश्नक समीपहि अवस्थित अछि, अर्थात् रोटीक मुह कोम्हर, जेम्हरसँ अहाँ खोंटि दिऔक वा कहू जे तोड़ि दिऔक रोटीक मुह तेम्हरहि । उक्त जटिलताक समाधान हमरहु तहिना कए भेल अर्थात् ककाजीक प्रतिएँ कतऽ सँ आरम्भ करी ? समाधान जे जतहिसँ आरम्भ कए दी ।

एकटा एहन विलक्षण व्यक्ति, जिनकर वैयक्तिक परिवृत्त एहन सुस्वादु हो जेना आसिन मास टटका उलाएल मडुआक चिक्कसक चिक्कन चुनमुन गोल भफाएल रोटी एकटा छिपलीक एक कातमे, सरिसो पीसिकए देल गढ़गर कए झोराओल मारा माछक पाँजरमे राखल हो । अथवा, अरबा चाउरक सुन्दर सपाट रोट, जे अन्य कतिपय व्युत्पन्न खीर, मखानक पकमान बतासा लड्डूक संग-संग कुलदेवताक सीड़ पर फल-फूल, धूप-दीपक संग नैवेद्यक निमित्त सबहिक उपरमे राखल हो । ..... से रोटीक मुह जतहिसँ तोड़ि दिऔक, से रोटीक मुह जतहिसँ खोंटि दिऔक, ततहि ओकर मुह, ततहिसँ आरम्भ । तहिना माननीय ककाजीकेँ कहबाक लेल जतहिसँ आरम्भ कए दी, सएह आरम्भ । हुनका एकटा कुशल कविक रूपमे कहब आरम्भ करू तँ से ठीक । एकटा सफल कथाकारक रूप मे आरम्भ करू त सेहो ठीक एकटा सिद्ध नाटककारक रूपमे तँ सेहो ठीक । एकटा श्रेष्ठ अनुवादकक रुपमे तँ सेहो ठीक । ओना भाषाविज्ञानवेत्ता, श्रेष्ठ शब्दकोषरचयिता सबटा छथि ओ ।

आब सवाल उठैए 'लताम'क मादे । प्रारम्भहिमे जे प्रसंग उठाओल गेल तकर की तात्पर्य ? एहि मादे हम जे किछु कहए चाहब से हमरा हेतुए आओर आनन्दप्रद, आह्लादकारी इतिवृत्ति थिक । पं. गोविन्द झा एकटा विद्वान् साहित्यकार, कवि, नाटककार, कथाकार, जे छथि से हिनक उत्तम संस्कारजन्य परमोत्तम क्षमता थिक । परंच ताहि सबसँ उपर पं. गोविन्द झा एकटा जे व्यक्ति छथि, जिनकर भिनसर सँ संध्या, रात्रि पर्यन्तक दैनन्दिनी, से खाहे हिनक भेष-भूषाक सादगीक मादे हो, खान-पानक संयमक मादे हो, पठन-पाठनक पद्धतिक मादे हो, अथवा लेखन-सम्पादनक प्रतिएँ समर्पणक मादे हो, वा पैघसँ पैघ चर्चित-अर्चित, ख्यात प्रख्यातनामा गुरुजन, विद्वज्जनक संग व्यवहारक मादे हो, वा अदना-गुदस्ता कोनो सामान्यजनसँ हो, बरु जकरा सँ हो, से सबटा तेहन श्लाघनीय, तेहन अविस्मरणीय, तेहन अनुकरणीय यतःपर हो नहि। एहन पं. झा एकटा विद्वान्, साहित्यकार, व्यक्ति अनमन लताम जकाँ, जकर कोनो टा अंशसँ निषेध नहि, बारबाक योग्य नहि, खाहेँ गुद्दा हो, आँठी हो वा खोइँचा, सबटा महत्वपूर्ण, सबटा ग्राह्य । समान रूपसँ ।

नेना रही । तखनहिसँ नाटक खेलयबाक सओख छल । सत पूछी तँ नाट्यकर्म हमर संस्कारमे छल । पिता,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कलकत्ताप्रवासी संपादकप्रवर स्व. पं. सभाकान्त झा शास्त्री मैथिली भाषा चेतना आन्दोलनक बीजी पुरुष छलाह । जकर कारण थिक जे ओ अपन ज्येष्ठ पुत्र अर्थात् हमर अग्रज स्वनामधन्य मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ अभिनेता निदेशक श्री दयानाथ झा जीकेँ इंजिनियरिंग शिक्षा देलाक बादहु हुनका रवीन्द्र भारतीसँ नाट्यविषयमे स्नातकोत्तर कराओल । यत:पर हमरहुमे नाट्यधर्मिताक संचार होएब स्वाभाविक छल । से भेबो कएल। आ से जखन भेल तखन मैथिली भाषामे सरल मंचोपयोगी आओर नाटके कतए ? *उगना, बसात* आ *चीनीक लड्डूक* अपन महत्व छैक परंच *बसातमे* जे विषयक आधुनिकता, प्रासंगिकता, प्रोग्रेसिवेसनेस, पात्र दृश्याभिराम एवं शब्द व्युत्पन्नक समायोजन अछि से गुणवत्ताक मादे भारतीय नाट्य-संसारमे ईर्षनीय अछि आ तकर श्रेय नाटक बसातक रचनाकार पं. गोविन्द झाकेँ छैन्हि । 'बसात' नाटक हमहु खेलाइत छलहु, कतेको बेरि खेलयने छी । कहियो कृष्णकान्त बनी, कहियो टुनटुनमा, कहियो घूटर आ जोतखी जी तँ कतेको बेर बनल छी - 'ला अठन्नी फट द' ।

एहन रचनाकार पं. गोविन्द झाकेँ कनेक देखितिअनि ? से लालसा ओही अवस्थासँ छल। धरि, पंडितजी तहिया हमरा लोकनिक लेल दुर्लभ छलाह । हम गाम (नागदह) क समीपस्थ अरेर अथवा लोहा हाइस्कूलमे पढ़ैत छलहु आ इसहपुर निवासी प्रात:स्मरणीय महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक सुपुत्रपं. गोविन्द झा पटना प्रवास करैत छलाह । तखन एतेक धरि अवश्य जे, से सुअवसर बरु जहिया भेल तहिया इएह बुझा पड़ल जे पण्डितजीसँ हमर सम्बन्ध-सम्पर्क वर्ष-वर्षानुगत अछि । हुनक सस्नेह कृपाभाजन हमरा जन्म-जन्मातरसँ सुलभ अछि। पहिलहि भेटमे ओ हमरा लेल पंडितजी नहि, हमर ककाजी भए गेलाह ।

पं. झा सबसँ बेशी परिमाणमे, सबसँ बेशी लोक खाहे ओ साहित्यकार, रचनाकार होथु वा जन-सामान्य सबहिक हेतुएँ सबसँ बेशी सुलभ भेलाह अछि -'सगर राति दीप जरय'क माध्यम सँ । बन्धुवर प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, डा. रमानन्द झा 'रमण' प्रभृतिक अगुआइमे मैथिली कथा साहित्य विधामे 'सगर राति दीप जरय' एकटा अभियान, एकटा आन्दोलन, एकटा चमत्कार आनिकए ध' देलक अछि। कत दर्जन कथाकार, पुरानसँ नव धरि अपन झोड़ीमे रचना आ धोती धए अपन दैनन्दिनीक खर्चसँ ल' क' काठमाण्डू, बनारस, बोकारो धरि पहुँचैत छथि, माँ मैथिलीक अलख जगबैत छथि, कथा साहित्यक माध्यमसँ । रचनाकारक दल जे आब क्रमश: जमात, हेँज वा भीड़ बनल चलल जा रहल अछि, तकर प्रेरणापुरुष पंडितजी छथि - से निश्चय जानू । हमरा नहि बूझल अछि जे आओर किनको जँ एक-आध गोट गोष्ठी छुटिओ गेल होइन्ह तँ पंडित जी केँ एकहुटा छूटल हेतैन्ह । कोनहु ठाम नव-नौतार जँ कनेक देरीयो सबेर कए पहुँचैत छथि तँ तिनका पंडितजीकेँ पहिनहिसँ पहुँचल देखि ग्लानि, प्रेरणा आ उत्साह सब किछु एक संग होमय लगैत छैन्हि । पंडितजीक रससिक्त पुछारि निके छी किने ? कोना अएलहुँ ? कष्ट तँ ने भेल ? इत्यादि साहित्य-पथिककेँ लगैए जेना महानारायण तैलसँ टघारिक' जाँति सबटा थाकनिकेँ थकूचि दैए । पंडितजी सबतरि जाइत छथि, सगर राति जगैत छथि । कथा पढ़ैत छथि ।

एतबए नहि, एक बेरि तँ एहनो भेल अछि जे पंडितजी अपन गाममे, अपन दलान पर 'सगर राति दीप जरय' क आयोजन अपन विद्वान् नाटककार ज्येष्ठ पुत्र डा. अरविन्द कुमार 'अक्कू' जीक संयोजनमे सम्पन्न करौने छथि । हमरा उक्त अवसर पर पहुँचबाक सौभाग्य भेल अछि। दालनमे आगूमे अवस्थित महावैयाकरण पं. दीनबंधु झाक आवक्ष प्रतिमा, ताहि ठाम दीप जराए, प्रतिमाकेँ माल्यार्पण कए जखन कथा गोष्ठीक आरंभ भेल तँ बुझा पड़ैत छल जे वस्तुत: आइ कोनो तीर्थस्थानमे बैसल छी । हमर कथापाठक बेरि आएल तँ सहसा सुषुप्त काव्य-निर्झरिणी जेना फूटि पड़ल आ अन्तर्निनादक स्वर बनि सोझाँ आबय लागल -

'अएलहु इसहपुर ईशक सन्धानमे
सगर राति दीप जरय मैथिलीक गाममे
मैथिलमणि दीनबन्धु गोविन्द गीत गुंजित अछि
मिथिला केर धानमे, पानमे, मखानमे ।'

हमहि कोन ? सब केओ झंकृत भए गेलाह । पंडितजी डायरी निकालि कए देलनि, लिखि देलियनि। काव्य-पाँति कार्यवाही बहीमे अंकित कयल गेल । पंडितजी पीठ ठोकि देलनि तँ लागल जेना जीवन धन्य भए गेल ।

साहित्यकार, साहित्यप्रेमी जन-जनक प्रतिएँ पंडितजीक आतिथेय, स्नेह, सामीप्य सबटा दर्शनीय छल ।

पंडितजीक अनुराग, आशीर्वाद, प्रेरणा, प्रोत्साहनक कतेक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बात कहू । हमरहि नहि, हमरा सन-सन कतेको अखरकट्टू उत्साही, कलाकार मैथिलीक पहरूकेँ होइत छैक जे पंडितजीक सबसँ बेशी प्रिय 'उएह' अछि । हम बुझैत छी जे पंडितजीक व्यक्तित्वक ई सबसँ पैघ विशेषता थिक ।

पं. गोविन्द झा - हमरा नजरिमे की ? तँ हम काकाजीकेँ रोटी आ लताम तँ कहल । धरि एकटा आओर वस्तु कहब छूटि गेल । से थिक सेतु अर्थात् पुल । सेतुओमे कोन ? महात्मा गांधी सेतु जे पटनामे गंगानदी पर बनल अछि । पुलहु लगभग छओ कि.मी.क, नमती गंगाक कतबहु कटाओकेँ सह्य करबाक लेल सक्षम अछि । पंडितजी साहित्यक दुइए टा कोन (?) जे तीन चारि टा पीढ़ीक माझ एकटा विशाल सेतु छथि - महात्मागांधी सेतु सन । कविता, नाटक, कथा साहित्यक परिभाषा, अर्थवत्ता, दृष्ठिकोणमे कालधर्मानुभावें बरु कतबओ भिन्नता आबि गेल हो, कतबओ अन्तर आबि गेल हो, पंडितजी प्रत्येक पीढ़ीमे सर्वथा समीचीन बुझना जाइत छथि । हमरा जनैत तकर सबसँ बड़का कारण अछि, भाषाशास्त्र ओ शब्द शक्ति पर हिनक अपूर्व अधिकार आ विश्वास । तँ ने शब्दकोशक रचना करैत छथि । एखनहु 'कम्पैक्ट मैथिली इंगलिश डिक्शनरी' लिखैत छथि । हिनक उक्त शक्ति ओहि विशाल सेतुक ओ सुदृढ़ पाया थिक जकरा पर पीढ़ीक पीढ़ीसँ बहैत निर्झरिणी त्रिपथगामिनी गंगाक कोनो टा मौसम आ मिजाजिकेँ सह्य करबाक शक्ति छैक ।

अथच, हम रोटी आ कि लताम जे कहल से कहब हमरा सबटा अपूर्ण रहि जाएत जँ पंडित झाकेँ सेतु अर्थात् पुल नहि कही । तँ पण्डितजी अर्थात् पंडित झा अर्थात् पूज्य काकाजी हमरा नजरिमे एके संगे सबटा छथि - रोटी छथि, लताम छथि, पुल छथि ।

◆

पं० गोविन्द झा : हमर नजरिमे अजातशत्रु

❑ *श्री देव*

भारत सरकारक चाकरीमे रहैत, अद्यावधि मात्र किछु बरखक लेल पटनामे रहबाक अवसर भेटल । तीस बरखसँ बेसीक चाकरीक क्रममे अस्सी-दशकक ओ पटना बासक अवधि मैथिली साहित्यक हेतु बड़ सुखद छलैक । मिथिला-मिहिर, जे निर्बाध रूपेँ अपन साप्ताहिक कलेवरमे प्रकाशित भऽ रहल छल, से दैनिक बनि एक गोट पैघ अभावक पूर्ति कयलक । संगहि कैक गोट अन्य सावधिक नीक-नीक पत्रिकासब सेहो बहराइत छल । चेतना समितिक छत्र छायामे सेहो कैक गोट वित्पन्न कार्य भऽ रहल छल । मैथिली अकादमी अपन निस्सन योग-दान दैते छल । एहि सब साहित्यिक गतिविधिसँ कोनो-ने कोनो रूपेँ अपनाकेँ संबंद्ध पाबि बड़ पैघ मानसिक सन्तुष्टि भेटैत छल । मुदा, पटना छोड़लाक पूर्ण एक दशाब्दक उपरान्त जँ एकान्त मे बैसि कए, अपना मोनसँ जिज्ञासा करैत छी तऽ मात्र एकहि गोट उत्तर पबैत छी जे कथित अवधिक सबसँ स्मरणीय उपलब्धि रहल श्रद्धेय पं. गोविन्द झाजीक सम्पर्क ।

ई सम्पर्क ने तऽ गहन छल आ ने विशेष क्रमिक । ने तँऽ ओ कहियो हमरा डेरा पर अएलाह आ ने हमहीं कहियो हुनका ओहि ठाम गेलहुँ । पटना बासक पूर्व ने तऽ ओ हमरा जनैत छलाह, ने तदुपरान्त हमरालोकनिक बीच कोनो सम्पर्कसूत्रे बनि पाओल अछि । एकर खुलासा मात्र एहि बातसँ भए जायत जे एहि ठाम हम दू गोटसँ बेसी प्रसंगक चर्चा नहि कए पाएल ।

गाविन्द जीकेँ जननिहार लोकसभक बीच ओ पण्डितजीक नामसँ प्रसिद्ध छथि, आ से सर्वथा उचिते । महावैयाकरणक सुपुत्र होइत अपनहुँ तँ ख्यात पण्डित छथिये । मैथिलीक बेसी पुरान आ प्रसिद्ध साहित्यकार संस्कृत परिपाटीक लोक छथि। एहि वर्गक प्रथम लक्षण थिक परम्पराक सक्कत बन्हनमे बन्हायल रहब । सामाजिक आ सांस्कारिक चेतना एवं सीमाक पैघ छाप एहि वर्ग पर रहैत छैक । संस्कृत भाषा एवं साहित्यक सहज प्रभावक कारण जन-मानससँ ई वर्ग प्रायः नहिये जूड़ि पबैत अछि । एहि परिप्रेक्ष्यमे प्रथमतः यात्री जी ओ द्वितीयतः गोविन्द बाबू ओहि वर्गसँ एकदम फराक आ जन-सामान्य दिस अभिमुख हमरा दृष्ठिगोचर होइत रहलाह। यैह ओ अवधि थिक जखन गोविन्द बाबूक मीलक पाथरक प्रतीक नाटक विद्यापति जयन्तीक मंचसँ देखबाक सुयोग भेटल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ताधरि हिनक सुपुत्र सेहो रंग-कलामे आबि चुकल छलाह । अस्तु, दिनानुदिन गोविन्द जीक दर्शन करबाक अभिलाषा हमरा मोनमे बढ़ैत गेल ।

एक गोट प्रयोजनसँ ओ सम्पर्कक सुयोगो आबिये गेल । गोविन्द बाबू बिहार सरकारक सेवासँ निवृत्त भए मैथिली अकादमी आबि गेल छलाह । हम एहि तथ्यसँ अनभिज्ञ रही। घटना ओहिसँ पहिनेक थिक । श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर मैथिली अकादमीमे छलाह । कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रमक हेतु जमशेदपुर आयल छलाह । संगमे जोड़ीदार महेन्द्रजी सेहो छलथिन । पटनाक बस भोरमे भेटतनि, से राति बितयबाक लेल हमरा ओहि ठाम अयलाह । भरि राति गीत आ साहित्यिक चर्चाक झड़ी लागल रहल । ओहिसँ किछुए दिन पहिने हम 'संस्थिता' नामक काव्य-पोथी लिखने छलहुँ । हम ओकर किछु अंश हुनका सुनाओल । ठाकुर जी पाण्डुलिपि हमरासँ लए लेलनि आ आश्वासन देलनि जे मैथिली अकादमी ओकरा छापत ।

ताधरि हमर बदली भए गेल आ हम कश्मीर चलि गेलहुँ । घुरि कए पटना अयला पर ओहि पाण्डुलिपिक खोज-पुछारिक मोन भेल । ओही क्रममे मैथिली अकादमी गेल छलहुँ । हमरा ककरोसँ कोनो पूर्व परिचय नहि छल । बाहरे मे जे भेटि गेलाह जिज्ञासा कएल । ओ पं. गोविन्द झाजीकेँ उपयुक्त व्यक्ति मानि हुनका कोठली लए गेलाह ।

हम अपन वेदनाक चर्चा हुनका समक्ष कएल । हम साफ-साफ कहलियनि जे नव-नव समर्पित पाण्डुलिपि सबकेँ अकादमी छापि रहल अछि आ हमर रचना पर पछिला सात-आठ बरखसँ कोनो विचार नहि भए रहल छैक ? स्वल्प आ मधुरभाषी पण्डितजी अपन भावनाकेँ कने काल धरि रोकि कए रखलनि । प्रायः खोइँचा छोड़ा कए बाजबामे असौकर्य भए रहल छलनि, कारण हमरासँ कोनो पूर्वक वैयक्तिक परिचय नहि छलनि । तथापि विश्वासमे लैत जे बात हमरा कहलनि, एतय लिखि देब, विश्वासघात होएत । मुदा, ई संकेत अवश्य छलैक जे कतिपय लोक अपन वैयक्तिक स्वार्थ साधबाक हेतु अकादमीक दुरुपयोग कए रहल छलाह । ओ ईहो सूचना देलनि जे मात्रमासे दिन पूर्व अकादमीक प्रकाशन-उप समिति (जाहिमे पण्डितजी आर प्रो आननद मिश्र सेहो सदस्य छलाह) अन्य पाण्डुलिपिक संगहि 'संस्थिता' पर सेहो विचार कए ओकरा प्रकाशनक योग्य घोषित कयलक । परंच जेँ कि निदेशक नहि चाहैत छलाह, ओ पाण्डुलिपि हमरा सखेद आपस घुरा देल गेल । प्रथमहि भेटमे हमरा ईहो आभास भेटि गेल जे पण्डितजी अजातशत्रुकिएक छथि । कोनो विवादास्पद बातकेँ मात्र मुस्की दए टारि दैत छलाह । हमरा नीक जकाँ मोन अछि जे हम कहलियनि जे पटना स्थित मैथिली साहित्यकारलोकनि साहित्य-सेवा कम, पश्चिमी पटनाक चक्कर बेसी लगबैत छथि । पण्डितजी ठहाका मारि बजलाह - 'अपने कपाड़ फोड़ायब की' ?

उपरोक्त प्रसंगक सात-आठ साल बादक घटना थिक । पण्डितजी, श्री छत्रानन्द आ श्री रमानन्द झा 'रमण' साहित्य अकादमीक काजसँ दिल्ली आयल छलाह। रहबाक बन्दोबस्त विश्व-युवक केन्द्र, चाणक्यपुरीमे छलनि । एक दिन मौका भेटलनि । दूरभाषसँ हमरा अएबाक आग्रह कयलनि । हम शीघ्रहि ओतय पहुँचि गेलहुँ । गोष्ठी चलैत रहल ।

ओहि संध्या हुनकहि मुहसँ हुनक जीवन संघर्ष आ साहित्यिक सेवाक लेखा-जोखा सुनल । हम तखनहि बूझि पौलहुँ जे बिना संघर्ष आ बहुमुखी प्रतिभा एवं अनुभवक, दीर्घजीवी साहित्यक रचना ककरहु लेल सम्भव नहि छैक । तकरा बाद ओ बड़ धैर्य आ उत्सुकतासँ मैथिली साहित्यमे आधुनिक विषय आ विधाक अभावक चर्चा सुनल । हम कैक गोट लघु कथा आ छोट-छोट कविताक रूपान्तर हुनका सुनाओल जे स्पैनिश ओ अंग्रेजीमे मूलतः प्रकाशित भेल छलैक । हमर एहि बात पर जे मैथिलीक रूप ताधरि नहि निखरत आ ओ ताधरि विश्व साहित्यमे अपन स्थान नहि पाओत, जाधरि हमरालोकनि सन तथाकथित साहित्यकारक एहन-एहन मोहक आ सुवासित पुष्प खोइँछामे नहि रखबनि, पण्डितजी नोरायल आँखिएँ हमरा भरि पाँज कए पकड़ि लेलनि । हमरा आग्रह कयलनि जे हम अपन स्थगित लेखनकार्य पुनः आरम्भ करी ।

ओहि गोष्ठीकेँ एक गोट अन्य मुख्य चर्चित विषय बनल हमर ई कहब जे 1982 ई. सँ हम अनीश्वरवादी छी । हम चारू गोटे एहि कठिन आ अन्तहीन विषय पर बहुत काल धरि मगजमारी कयल । ई परम्परासँ हटि कऽ एक गोट नवीन चर्चा छल । आध्यात्मिक पण्डितजी जाहि सहजता आ सौहार्द्रसँ हमर ईश्वर - विरोधी तर्क सुनलनि ताहि लेल उपकृत छी । दुख एक बातक रहि गेल जे तड़ल तिलकोर खयबाक हमर निमंत्र ण कोनो व्यस्तताक कारणेँ स्वीकार नहि कए सकैत गेलाह ।

पण्डितजीक पचहत्तरिमक यात्राक उपलक्ष्य मे जे लोकनि अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करबाक बीड़ा उठौलनि अछि, ओ सब साधुवादक अधिकारी छथि आ, ओहिसँ जुड़ि कऽ हमहुँ अपनाकेँ धन्य-धन्य बूझि रहल छी । आउ ! गोविन्दजीक हेतु हृदयसँ कामना करी - "जीवेद् वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जितः" । ◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कहियो जुनि थाकथि गोविन्द बाबू

❑ श्री उदय चन्द्र झा 'विनोद'

कहबाक प्रयोजन नहि जे मिथिला-मैथिली पर दहोदिससँ आफत आयल अछि । विपत्तिमे पड़ल छी हमरालोकनि । ई विपत्ति कोनो एकाएक अनासुरतेमे आइए नहि आबि तुलायल अछि । एकर पेनी तँ तहिए छानल गेल, जहिया लाल किला पर तिरंगा झंडा फहरायला पर तथाकथित राष्ट्रीय एकता आ राष्ट्रभाषाक नाम पर मैथिलीकेँ ओकर अपन स्थिति-स्थानसँ विस्थापित करबाक श्रीगणेश भेल । अबोधी, दुर्बोधी तथा अतिबोधी अपनो समांगलोकनि गाहे-बगाहे एहि अभियानमे शामिल होइत गेलाह आ तकरे परिणाम अछि जे आइ आंगन-घरसँ पर्यन्त मैथिली निकाल-बाहर कैल जा रहल अछि तथा मिथिला विपन्ना-बिलटलि अपन पाँच कोटि संतानक रँगल-ढँगल मुह दिस टुकुर टुकुर ताकि रहल अछि । जनक-याज्ञवल्क्य जानकीक मानुषी-भाषा तथा पावन जनपद हकन्न कानि रहल अछि । स्थिति एतेक दारुण भऽ गेल अछि जे सत्ता आ समाज दुनू एकर दमने मे अपन उन्नतिक मार्ग देखि रहल अछि । एहि विकट परिस्थितिमे ई सत्ते सुखद आश्चर्यक बात अछि जे एखनहु हमर रचनाशीलता अविच्छिन्न अछि तथा सरहपाद-ज्योतिरीश्वर-विद्यापतिठाकुर सँ चलल मैथिली साहित्यक धारा बीसम शताब्दीक एहि अवसान-वेला तक तेज गतिसँ आगू बढ़त जा रहल अछि । अपन अस्मिताक रक्षामे एहि रचनारत चेतनादलक एक गोट अप्रतिम आ अद्वितीय हस्ताक्षर छथि पंडित गोविन्द झा ।

मैथिलीक पाणिनि पंडित दीनबन्धु झाक सुपुत्र पंडित गोविन्द झा अपन पैतृक पारिवारिक मार्ग पर चलि अपन लेखनक प्रखर मनोहारी स्वरूप तथा विस्तारक प्रसादात् आइ मात्र मैथिली साहित्यक नहि अपितु भारतीय वांगमयक एक गोट विरल-विराट व्यक्तित्व भऽ आयल छथि । *"अतीतक अभिज्ञता, वर्तमानक आभिमुख्य, सर्जनक प्रतिभा, विवेचनक प्रज्ञा, अध्ययनक व्यापकता, लेखनीक सक्रियता, बहुभाषा-विज्ञता, दृढ़ तार्किकता इत्यादि गुण हिनकामे महापण्डित राहुल सांकृत्यायनक आभास दैत अछि ।"* विद्यापति ठाकुर कृत 'विभागसार'क प्रथम प्रकाशनक बेरमे इएह ताकल जाइत छथि, कविकोकिलक गीतक प्रामाणिक संग्रह हिनके हाथे तैयार भऽ पबैत अछि, 'मिथिला तत्व विमर्श' क पुनःप्रकाशन लेल इएह उपयुक्त बूझल जाइत छथि । हिनके लिखल 'बसात' नाटक मैथिलीक एहि विधाकेँ नव मोड़ दैत अछि तँ हिनके नाट्य-कृति 'रुक्मिणी हरण' द्वारा मैथिली रंगमंच अखिल भारतीय परिचय पबैत अछि । 'विद्यापतिक आत्मकथा' सनक महत्वपूर्ण अनुसंधानात्मक उपन्यास हिनकेसँ रचब संभव होइत अछि आ चेतना समितिकेँ पत्रिकाक सम्पादन लेल इएह भेटैत छथिन । मैथिली आ संस्कृत तथा मैथिली आ अन्य देशी-विदेशी भाषासाहित्यक मध्य सेतु इएह बनैत छथि । कवि, कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषाशास्त्री, अनुवादक, सम्पादक - आश्चर्य होइछ जे एतेक रास बहुआयामी एवं बहुधा परस्परविरोधी विद्यामे काज सफलतापूर्वक कोना कऽ पबैत छथि । एहि तथ्यकेँ स्वीकार करबामे प्रायः किनको असौकर्य नहि होयतनि जे मैथिली साहित्यक आदिकालसँ अध्यावधिक रचना-संसार पर विवेकी दृष्टि राखयबला एहन कोनो दोसर व्यक्तित्व आजुक तिथिमे मैथिलीकेँ प्राप्त नहि छैक ।

अर्जुन कविराज सनक जनकविकेँ ई 'रूपलाल बाबूक बड़का टरक' आ 'उभर-खाभर सड़क' कारणे मान्य छथिन तँ रंगकर्मी कुणालकेँ 'रुक्मिणी हरण'क कारणे अद्वितीय लगैत छथिन । किनको हिनक भाषावैज्ञानिक रूप बेजोड़ बुझाइत छनि तँ किनको हिनक कथाकार रूप । पढ़लनि संस्कृत, अनुवाद करैत छथि अंगरेजी-बंगला-नेपाली । विरल अध्येता छथि । मुदा पटनाक सड़क पर पैदल चलैत अभरि सकैत छथि । वर्तनी देखबाक हेतनि तँ भाषा तक देखि लेताह । हिनक परिचयक प्रसंग हिनक कथा 'पंडितक पराभव' वस्तुतः सही दिशामे इंगित करैत अछि। कथाक आरम्भहिमे कहैत छथि *"कथा अपने थिक । पढ़ल संस्कृत । पहिरैत छी पैजामा। धोती पाबनिए-तिहारे । धर्मकर्म बिसरि गेल अछि। ग्रह-भूत-पिशाच के कहए, देवी-देवतो केवल दन्तकथा मात्र बुझाइत छथि ।"*

गोविन्द बाबू पंडित छथि आ नहियो छथि। छथि तकर प्रमाणमे तँ नाना विधा आ अनेको भाषामे पसरल हिनक विपुल रचना-संसार अछि मुदा नहि छथि तकर आधार ई जे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पारम्परिक पंडितक कोनो नेम-टेम, रूढ़ि-संकुचन हिनकामे नहि छनि । रूढ़ अर्थमे प्रगतिशील मानल जएबाक लोभ नहि छनि, मुदा हिनक जीवनचर्या आ रचना-संघर्ष चिकरि-चिकरि हिनक प्रगतिशीलताक उद्‌घोषणा करैत अछि ।

एहि प्रसंग बानगी स्वरूप 'विद्यापतिक आत्मकथा'क ओहि स्थल पर दृष्टि-निक्षेप रोचक होयत जाहि ठाम विद्यापति ठाकुरक पर्यन्त धर्मनिरपेक्ष छवि स्थापित कऽ छोड़ैत छथि । महाराज शिवसिंहसँ बिसफी ग्रामदान प्राप्त कयलाक उपरान्त महाकवि गाम अबैत छथि । सगर गाम-जबार तुरुकक अनाचारसँ संत्रस्त अछि । हिनक काका सेहो भयभीत छथिन। गपशपक प्रसंग विद्यापति अपन पित्तीकेँ कहैत छथि *"हँ, इसलाम धर्मक बात जे अहाँ कहल से अवश्ये ध्यानमे रखबाक योग्य अछि । धर्म धर्म थिक । सभ धर्मक आदर होएबाक चाही । सावधान रहबाक होएत जे केओ इसलाम धर्मक अपमान वा निन्दा नहि करय । जकरा जे धर्म रुचैक तकरा अपन इच्छानुसार ओहि धर्ममे रहए वा जाए देल जाए । आ संगहि, जँ केओ बलपूर्वक धर्मपरिवर्तन कराबए चाहए तं ओकरा कठोरसँ कठोर दण्ड भेटबाक चाही । राजाक कोनो अपन धर्म नहि होइत छैक । सभक धर्म ओकर धर्म थिकैक। तँ सभ धर्मक रक्षा राजाक कर्तव्य थिकैक ।"*

एही पोथीमे सृजित एक गोट असहाय दीना नारी मझौरवालीक माध्यमे हिनक नारी-दृष्टिकेँ सेहो नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि । कहज गेल अछि *"अभागलि नारीके तँ अपन नामो नहि होइत छैक । बेटा रहितैक तँ फलाँक माए कहितिऐक । सासुर बसैत तँ फलाँ गामवाली कहितिऐक ।"* मनोहर राउतक धर्मपत्नी मझौरबाली रुक्मिणी तुरुकक बाँदी हमीदा बना देल जाइत अछि, मुदा ओ जीवन ओकरा रास नहि अबैत छैक । पड़ा कऽ ओ कविक शरणमे राजप्रासाद चलि अबैत अछि ।

संकटमे पड़ि जाइत अछि राजप्रासाद;पंडित-समाज एक दिस तँ दोसर दिस प्रभावी मालिक द्वारा ओकरा घुरा देबाक निमित्त दबाब पड़ैत अछि । विद्यापति अपन कौशलसँ एहि मामिलाक उचित समाधान करैत छथि । पंडितलोकनिक दीर्घ विचार-विमर्श उपरान्त निर्णय लेल जाइत अछि जे डेओढ़ीक भीतर गुप्त रूपेँ हमीदा केँ प्रायश्चित्त कराए पुनः रुक्मिणी बनाओल जाए आ ओकरा पूर्ण सुरक्षाक संग सम्मानपूर्वक स्वामीक संग घर पठाए देल जाए ।

पंडितजीक प्रगतिशीलताक कथा हिनक रचनासभ डेग-डेग पर कहैत अछि । परम्पराक सम्यक् ज्ञाताक प्रसादात् वर्तमानक परीक्षण करैत छथि आ ताहिसँ निःसृत निष्पत्ति हिनका प्रगतिशील बनबैत अछि । हिनका अपन माटि-पानि, शासन-साम्राज्य, भाषा-संस्कृति, इतिहास-भूगोलक सम्यक परिचय छनि आ ताहि इजोतमे वर्तमान पर्याप्त धूमिल आ विकृत लगैत छनि । ई ओएह देखैत छथि जे देखबाक चाही, ओएह कहैत छथि जे कहबाक चाही आ तकर अभिव्यक्ति लेल हिनका लग अपन पारम्परिक भाषा छनि । ई भिन्न बात जे भाषाक स्तर पर आवश्यकता पड़नहु नीचाँ उतरब हिनकासँ नहि होइत छनि, तैँ ताहि आधार पर हिनक नेत पर सन्देह नहि कैल जा सकैछ। स्थिति खाहे नारीक हो वा मजूरक, छात्रक हो वा अध्यापकक, गामक हो वा शहरक, *अयाचीक डीह* पर हो वा *एक धरिका अमोटक* बुढ़िया सोझाँ, ई सदत सीदितक पक्ष मे ठाढ़ भेटैत छथि । हिनक प्रसिद्ध कथा 'सामाक पौती'क निम्नांशकेँ हिनक दृष्टिकोण बुझबाक निमित्त देखल जा सकैत अछि ।

"कदीमाक फूल तँ सभ देखने होयब आ ओकर शोभा पर मुग्धो भेल होयब, मुदा कहियो कुम्हड़ोक फूल पर ध्यान गेल अछि ? एकरो किछु शोभा छैक, एकरो कोनो उपयोग छैक से सभ नहि जनैत होयब, से जनैत होयत ओ बहिन जकर हृदय कहियो भ्रातृ-स्नेहक बाढ़िसँ उमड़ि उठल होयतै, से जनैत होयत ओ भाग्यवान भाय जकर हाथ कहियो बहिन सिन्नुर-पिठार, फूल-पान सँ पुजने होयतैक ।"

'विद्यापतिक आत्मकथा' उपन्यास सँ बटोरल किछु विचार-विन्दुकेँ देखब सेहो रोचक तथा उपयोगी होयत ।

1. पीड़ासँ पाप कटैत छैक ।
2. बेरा-बेरी एक-एक कुमर राजा बनथि । हमर आ अमिअकरक पीठ बनए सिंहासन ।
3. पंछी सभ खोता दिस चलल तँ ध्यान आएल, माए बाट तकैत होइतीह ।
4. हमरा सभक समाजमे प्रेम स्वयं होइत नहि छैक, ओ कराओल जाइत छैक, सिखाओल जाइत छैक, जे कोना प्रेम करी । मौसी हमरा दुनूमे प्रेम कराए देलनि आ विवाहक बाद गीत गाबि-गाबि सिखाए देलनि जे हेम-समतूल सुजनक पेम कोना दिन-दिन चमकैत जाइत अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

5. एक नगरक दृश्य सदा स्मरण रहत । एकहि नगर मे हिन्दू आ तुरुक दुनूकेँ बसैत देखल । एकक धर्म पर दोसराकेँ हँसैत देखल । कतहु मुल्लाकेँ बाङ दैत तँ कतहु पंडितकेँ वेदध्वनि करैत देखल । कतहु अल अलल्लाह बिस्मिल्ला पढ़ि गाए हलाल होइत देखल तँ कतहु अजापुत्रक रक्तसँ पूजास्थल लाल होइत देखल । कतहु तमारु देखल तँ कतहु कूजा, कतहु निमाज तँ कतहु पूजा । कतहु व्रत तँ कतहु रोजा, कतहु ओझा तँ कतहु खोजा । कतहु बाट-बटोहीकेँ बेगारीमे पकड़ाइत देखलहुँ तँ कतहु बाभनक बेटाकेँ माथ चढ़ाए गोमांस लए जाइत देखलहुँ ।

6. महाराज किछुओ करथु, लोक हुनका कलंक नहि लगओतनि । महारानी कतबो दूधक धोअलि होथु, कलंक लगबे करतनि । आँगुर देखओने कुम्हड़क बतिया सड़ैत अछि, सुरुज आ चान नहि सड़ैत अछि ।

मानवीय विवशता, नारीक दुरवस्था, मानवीय सम्बन्धक वायवीयता, प्रेमक कमनीयता, आततायी शासनक अमानवीयता, मोह-भंग तथा निराशा-ई सभ भाव हिनक रचनामे स्थायी रूपसँ भेटैत आबि रहल अछि आ कहि रहल अछि हिनक बेचैनी, दए रहल अछि हिनक क्षोभ, देखा रहल अछि हिनक तामस । स्पष्ट अछि जे गोविन्द बाबू यथास्थितिमेँ परिवर्तनक प्रबल आकांक्षी छथि । जे भऽ रहल अछि से नहि होयबाक चाही, जेना भऽ रहल अछि से न्यायोचित नहि थिक। हेबनिमे प्रकाशित हिनक नव्यतम कथासंग्रह 'नखदर्पण' क कथासभ सेहो एहि बातकेँ रेखांकित करैत अछि जे पंडितजी समसामयिक जीवन-स्थितिक च-तूकऽ पता रखैत छथि तथा तकर सम्यक् जाँच-पड़तालक उपरान्त अपन निष्पत्ति दैत छथि । चाहैत छथि जे स्थितिमे परिवर्तन हो । ओना एतबा एहिठाम कहब आवश्यक जे ताहि लेल कोनो युद्ध ठनबाक जोगार हिनका रचनामे नहि भेटत ।

मनुक्खक सीमा होइत छैक आ रचनाकार सेहो मनुष्येतर नहि, तेँ ओकरो ओहि सीमामे रहबाक नियति थिकैक । प्रत्येक रचनाकार अपन सामर्थ्यक अनुसार अपन सीमाकेँ जीवनभरि अतिक्रमण करबाक प्रयास करैत अछि, रचनाक स्तर पर, कथ्यक स्तर पर शिल्पक स्तर पर, भावक स्तर पर, कलात्मकताक स्तर पर । आ से पंडितजी करैत अयलाह अछि आ आइयो बदस्तूर कऽ रहल छथि । अपन माटिकेँ चीन्हैत छथि, अपन पानिक शीत-ताप गमैत छथि, अपन भाषाक इतिहास-वर्तमान जनैत छथि अपन संस्कृतिक मर्म बूझैत छथि आ ताहि इजोतमे अपन कर्त्तव्य निर्धारण करैत छथि । 'निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्रसंघ' क जूलूस-धरना हो कि स्तरहीन पोथीकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कारक विरोध करबाक हो, पंडितजी अगिले मोहरा भेटैत छथि । एहि प्रसंग एक गोट आर घटनाक उल्लेख प्रायः अप्रासंगिक नहि होयत । किछुए दिन पूर्वक बात थिक । चेतना समितिक आरणीय अध्यक्ष पंडित जयदेव मिश्र जीक देहान्त भऽ गेल रहनि । समितिक सोझाँ तत्काल नव अध्यक्ष चुनबाक समस्या छलै । श्री बिलट पासवान 'विहंगम' उपाध्यक्ष छलाह । पंडितजी समेत अनेक लोकक विचार छल जे विहंगम जीकेँ अध्यक्ष बनाओल जाय । मुदा से नहि भऽ सकलै । पंडित जी बिरुझि गेलाह से कतेको मास धरि बिरुझल रहलाह ।

गोविन्द बाबू चिन्तित रहैत छथि । अपन लोकक स्खलन हुनका चिन्तित करैत छनि । अनुचित पर तमसा जाइत छथि आ तेँ कतेको हुनका तुनुकमिजाजी बूझि बैसैत छथि । दरभंगा मे परम प्रसिद्ध संस्था छल मैथिली साहित्य परिषद । अपन उठान-कालमे महत्वपूर्ण प्रकाशन कएने छल। कालान्तरमे मृतप्राय भऽ गेल । ओना किछु लोक ओकरा एखनो जीवन्त मानैत छथि तँ तकर कोन उपाय । गोविन्द बाबू 'मैथिली साहित्य परिषदक शवपरीक्षा' नामसँ 'माटिपानि' मासिकमे ओकर इतिवृत्ति लिखि छपौलनि । दरभंगासँ विरोध भेल । एहने तामसक चर्च करैत अछि लोक । क्रियाशील छथि पंडितजी । एम्हर किछु वर्षसँ आयोजित होइत 'कथा रैली' मे बोकारोसँ काठमाण्डू धरिक यात्रा पर एहि वयमे अपना **खर्च पर** जाइत छथि, कथा पढ़ैत छथि, राति भरि जागि कऽ **सुनैत छथि,** टिप्पणी दैत छथि । सतत साकांक्ष, सक्रिय, सावधान । जाहि बीच पटनामे असालतन अध्यक्ष स्व सुधांशु 'शेखर' चौधरी आ सचिव श्री प्रभास कुमार चौधरीक नेतृत्वमे 'युवा लेखन' क मासिक बैसार होइत छल पंडितजी नियमित भाग लैत रहलाह । आलस नहि, कोनो ताम-झाम नहिं, कोनो महिमा-गरिमाक ताकहेर नहि । वस्तुतः हिनक साधारणतामे हिनक असाधारण नुकायल अछि । 'हम आ हमर माटि पानिक संस्कृति' (माटिपानि) शीर्षक लेख मे वर्त्तमानक अधोगतिक पता लगयबाक क्रममे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अतीतकेँ उधेसैत कहैत छथि :

"हमर माटिपानिक देश एकटा सोनाक राजा पओलक। राजा एहि ठामक माटिपानिमे नहि जनमल । ओ आएल बाहर, बहुत दूर बाहर, कर्णाट देशसँ बंगाल होइत । राजासे प्रजा नहि पोसाएल, प्रजासँ राजा पोसाएल । राजशक्तिक पेटसँ सम्पत्तिवाद जन्म लेलक । माटिपानि, जे सभकेँ पर्याप्त भेटैत छलैक, सम्पत्तिशालीक मुट्ठी मे संचित होअए लागल । प्रजा दीनसँ दीनतर होइत गेल । राजाक एकमात्र कर्त्तव्य भेलैक सम्पत्ति आ सम्पत्तिशालीक रक्षा करब, सामान्य प्रजाक जीवन-मरण ईश्वरक कृपा पर छोड़ि देल गेल । शासनक तथा शास्त्रक भाषा संस्कृत रहल, प्रजाक भाषा मैथिलीके दरबारमे केवल नर्तकी जकाँ राजाक मनोरंजनार्थ प्रवेश भेलैक।"

मैथिली भाषाक हित-चिन्तामे लिखल तथा 'निखिल भारतीय मैथिली भाषी छात्र संघ' द्वारा प्रकाशित मार्च 80 केर स्मारिकाक अपन निबन्ध 'की मैथिली मरि सकैत अछि?' केँ समापन करैत कहैत छथि :

"हम केवल खतराक घंटी बजाओल अछि। विद्वान्लोकनि विचार करथु जे मैथिलीकेँ एहि मृत्युक मुहसँ कोना बचाबी । हमरा जनैत आब मैथिलीक प्राणरक्षा केवल राजनैतिक उपायसे भए सकैत अछि । जँ मैथिलीकेँ जीवित रखबाक हो तऽ कानून बनाए ओकरा सुपरिभाषित अनन्य अधिकार क्षेत्रदेअए पड़त आ ओहि अधिकारक्षेत्रक भीतर हिन्दीक प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाबए पड़त । मैथिली बकरी आ हिन्दी बाघिनके एक घाट पर पानि पिअएबाक दुर्नीति छोड़ए पड़त ।"

पंडितजीक संयमित टिप्पणी परवर्ती पीढ़ीक ध्यान आकृष्ट करैत अछि । गोष्ठी-सभामे देखल अछि जे कोना अनन्वित तथा अवांछित निन्दा-प्रशंसा पर हिनक मुखाकृति पर नाना तरहक रंग चढ़ैत-उतरैत रहैत छनि । आ जेँ कि से छनि तेँ से कखनो काल अप्रियो भऽ जा सकैछ । अपने बूढ़ भऽ गेलाह तेँ कि बूढ़केँ बकसि देताह ? एकटा हिनक कथा अछि *'पहिआपर पहिआतर'* । तकर आरम्भ एना होइत अछि ।

"कहू तँ पीठ पर आँखि ककरा होइ छै ? नहि बुझलहुँ? बेस तँ सुनू हमही कहि दै छी। पीठ पर आँखि होइ छै बूढकेँ। आगाँ अन्हार आ पाछाँ भकभक इजोत । ओहि इजोतमे ओ तकैए अपन भोगल एक-एक क्षण, एक-एक कण । जँ भेटि जाइ छै तँ आनन्द-विभोर, जँ नहि भेटै छै तँ दू ठोप नोर ।"

आ तखन कथा मे उनचालीस इसबीसँ आइ धरिक कालावधिमे ग्रामीण सर्वहाराक जीवनमे आयल परिवर्तनक विश्वसनीय खाका देल गेल अछि । कठही गाड़ी चला कऽ अपन जीविका चलबैत रुपना आइ तकरा अकार्यक जानि डाहि कऽ तापि लैत अछि आ अपने फूदन मड़रक टाएरगाड़ीक बहलमानी करय लगैत अछि, मालिकसँ नोकर भऽ जाइत अछि । एक दिन एक टा ट्रक टाएरमे धक्का मारि दै छै आ अपन टांग टाएरक पहिआ तर पिचा घायल भऽ कुहरैत अछि।

पंडितजी व्यक्तिक चाम नहि ओकर काज देखैत छथि। *हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ* आ *माटिपानि* मासिक समेत अनेको मैथिली पोथीक प्रकाशक स्व देवेन्द्र झामे ओ रामलोचन शरणक सपना देखैत छलाह ।

हुनक असामयिक अवसान पर मर्माहत भऽ गेल छलाह। संस्कारमे, अपने गेल रहथि । हुनका श्रद्धाञ्जलि दैत 'नोरसँ भिजल एक पात' (माटिपानि : जून 84) निबन्धमे लिखैत छथि ।

"आचार्य रामलोचन शरणक स्मरण जगओनिहार छलाह स्वागत-परायण मुद्रामे बैसल ओएह व्यक्ति (देवेन्द्र झाए) जनिक नश्वर काया सम्प्रति चिताक हव्य भए रहल अछि । हम सपना देखि रहल छलहुँ ..... हमर ओहि सपनाक नायक आइ चिता पर जरि रहल छथि । आब के छापत मैथिलीक पोथी ?"

प्रणम्य छथि पंडितजी, सरिपहुँ अभिनन्दनीय छथि गोविन्द बाबू । साधक छथि, आराधक छथि, अरिदलक मार्गक सबल बाधक छथि । हमरालोकनि सौभाग्यशाली छी जे एहन उत्खनक-अनुसंधानी, मानी-अभियानी, अपन माटि-पानि-भाषा-संस्कृति हित जीवनदानी, संधानी हमरा उपलब्ध छथि । एहन चिन्तनशील आत्मचेतन व्यक्तित्वकेँ पाबि हमर साहित्य समृद्ध भेल अछि । हिनका अन्तर मे ज्वाला धधकि रहल छनि, जाहिमे समस्त दुष्टतत्व समय-समय पर स्वाहा होइत रहल अछि। ठीके कहैत छथि कविवर :

'आगि जते जकरा छैक
सएह तते पैघ भेल
पूजै छै तकरहि जहान ।'

आगि धधकि रहल अछि । ई होमक आगि थिक । थकलाह नहि अछि पुरोधा । माँ मैथिली सँ एतबे प्रार्थना जे गोविन्द बाबू कहियो जुनि थाकथि । इत्यलम् । ◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नारी जागरणक अग्रदूत

❑ *श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'*

हमरा जीवनक संग एकटा ऐतिहासिक घटना घटित भेल अछि । आ से रगमंचीय जीवनमे प्रवेश करबाक प्रारम्भेमे। घटना थिक 1961 ई. पन्द्रह अगस्तक । स्वतंत्रता-दिवसक अवसर पर हमरा गामक (रहिकाक) विद्यालयमे आने वर्षक जकाँ एहू वर्ष रंगविरंगी कार्यक्रम जेना-नाटक, खेलधूप, कवितापाठ,कथापाठ, वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताक आयोजन कएल गेल छल । ओहि समयक हमर शिक्षकलोकनि बेश उत्साहक संग कार्यक्रमक तैयारी करथि । नेतृत्व रहैत छलनि माननीय प्रधानाध्यापक श्री चन्द्रिका प्रसादक । एकटा नाटक करबाक योजना बनल जाहिमे महिला पात्रक भूमिका छात्रालोकनि करितथि । ओ नाटक छल 'बसात' आ नाटककार छलाह पं. श्री गोविन्द झा । दिनमे भेल कार्यक्रममे हमरा लोकनि ओहि नाटकक एकटा जागरण-गीत पर नृत्य कएने छलहुँ 'सखि हे जागह-जागह भेल प्रात' । नाटकक आयोजन साँझमे छल । छात्रा सभ तैयार भए स्कूल पहुँचि गेलि छलहुँ। मेकअप भए रहल छल । एम्हर काने-कान गाम मे ई बात पसरि गेल जे शिक्षकलोकनि एहि गामक धी-बेटीसँ नाटक करबा रहल छथि । सहेसुस्ते दलाने-दलान गलकुल होइत-होइत किछु गोटे हमर पिताक समक्ष ई बुझयबाक हेतु उपस्थित भेलाह जे ससुरबासि बेटी एक तँ प्रतिदिन स्कूल जाइत अछि, सएह अनर्गल, ओहि पर सँ आब नाटक करत । 'घोर कलिकाल आबि गेल ।'

हमर माता-पिता हुनकालोकनिकेँ निरुत्तर कए विदा कए देल । तदुपरान्त ओ सब गोल बना कए शिक्षकलोकनिक हाथ-पैर तोड़बाक नेयारसँ विद्यालयक प्रांगण मे जमा होइत गेलाह । एम्हर हमरालोकनिक ग्रूपक किछु छात्र शिक्षक लोकनिक कानमे ई बात जुगुता कए दए देल । कोनो अनट-बिनट नहि भए जाए, तेँ हमरालोकनि केँ विद्यालयक पछुआर बाटे गाम पर पहुँचबा देल गेल । आ एतहि हमर प्रथम रंगमंचक जीवन प्रारम्भ होएबासँ पूर्वहि समाप्त भए गेल। तेँ जखनहि पं. श्री गोविन्द झाक दर्शन होइछ, अथवा हुनका प्रसंग पढ़ैत-सुनैत छी, ई घटना धक्सन हमर अन्तरक रंगमंच पर नाचय लगैत अछि ।

पटना अएला पर ओकर क्षतिपूर्ति नीक जकाँ भए गेल अछि । पं. झाक कतेको नाटकमे भूमिका करबाक सुअवसर प्राप्त भेल, यथा- 'रुक्मिणीहरण', 'अन्तिम प्रणाम' तथा हिनके कथा पर आधारित नाटक 'पातक मनुक्ख', जकर नाट्य रूपान्तर कयने छथि हिनक जेठ बालक डा. अरविन्द अक्कू ।

पं. झाक नाटकक माध्यमे हमरा अपन अभिनय कलामे विविधताक अवसर भेटल अछि । ओना होइत ई छल जे बेसी नाटकमे एक्के रंगक भूमिका करय पड़ैत छल । ओहिसँ मन उबिया गेल छल । पं. झाक नाटक ओहि अकुलाहटिकेँ दूर कए हमरामे स्फूर्ति आनि देलक अछि ।

पं. झाक नाटकक पात्र सभ तत्कालमे जे सामाजिक धारा चलि रहल अछि, ओहि धाराक विपरीत परिवर्तन चाहैत अछि। आइसँ चालीस वर्ष पूर्व जे नाटक लिखल गेल ओहूमे ओ भाव छल आ जे नवीनतम कृति (रुक्मिणीहरण) छनि ओहूमे अछि । एहि नाटकक जन-बोनिहार यद्यपि अशिक्षित अछि, परंच लिलहा कोठीवलाक अत्याचारसँ त्राण पएबाक हेतु एक संग भए संघर्ष करैत अछि । ओकरालोकनिक एकतासँ समाजमे परिवर्तन अबैत अछि ।

रंगकर्मीकेँ सम्मान आ आदर भेटैत छैक नाटकक सफल प्रस्तुतिसँ । पं. गोविन्द झाक नाटक विशेषत: *'रुक्मिणीहरण'* हमरालोकनिकेँ प्रतिष्ठा दिऔलक अछि । मैथिली नाटकक सुदीर्घ परम्पराकेँ आन भाषाक नाटकक समक्ष ठाढ़ कएलक। से अपने प्रान्तमे नहि, आनो प्रान्त मे।

कतेको ठाम नाटककार आ निर्देशकमे, जँ संयोगसँ एकठाम भए जाथि, अनेको विन्दु पर सहमति नहि भए पबैत अछि । नाटककार अपन शब्द-शब्द पर अड़ल रहैत छथि तँ निर्देशक प्रभावोत्पादनक हेतु यत्किंचित् परिवर्तन-परिमार्जन चाहैत छथि । पं. गोविन्द झा एहि विन्दु पर विचार करैत छथि । अपन बात मनेबा लेल अड़ि नहि जाइत छथि । कोनो नाटक लिखबाक क्रममे छोटो वयक कलाकारक समक्ष अपन योजना राखि हुनक विचार धैर्यपूर्वक सुनैत छथि । एहन अवसर पर कतहुसँ ई आभास नहि होइत अछि जे एतेक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

महान् विद्वानक समक्ष बैसि तर्क-वितर्क कए रहल छी । हुनक एहि उदारता सँ कलाकारकेँ सन्तोष होइत छैक । आत्मबल बढ़ैत छैक ।

पं. श्री गोविन्द झा एक ओहन सांस्कृतिक पुरुष छथि जनिक जीवनक समस्त स्नेहबाती अनुज साहित्यकार-कलाकार लेल छनि । जतेक स्नेह हिनकासँ रंगकर्मीकेँ भेटलैक अछि अथवा भेटि रहल छैक ओतेक आन कोनो व्यक्तिसँ नहि । कखनहुँ पहुँचू, आवास पर अनवरत रूप सँ मिथिला-मैथिलीक प्रति सक्रिय भेटताह । कखनहुँ शब्दकोशक निर्माणमे लागल तँ कखनहुँ उपन्यास लिखैत, कखनहुँ मंचोपयोगी नाटक पर विचार करबामे तल्लीन तँ कखनहुँ भाषाविज्ञान पर चिन्तनलीन, जेना सदिखन कोनो अपूर्ण कार्य केँ कमसँ कम समयमे पूर्ण करबामे तत्पर होथि । पं. झाक ई सक्रियता हुनक समतुरिये नहि, अल्पोवयक लोक लेल स्पृहाक विषय बनि गेल अछि ।

जखनि कौखन पं. श्री गोविन्द झाक समक्ष जएबाक अवसर अबैत अछि अथवा हुनक नाम स्मरण होइत अछि, होइछ जेना मिथिलाक कोनो प्राचीन मनीषीक सोझामे ठाढ़ छी। हिनक जीवन-शैलीसँ सत्ते हमरा लगैत अछि जेना हम मण्डन मिश्र वा वाचस्पति मिश्रक युगमे पहुँचि गेल छी । महाकवि विद्यापतिक तऽ एकटा रेखाचित्रसेहो हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध अछि परंच अनेको ओहन विद्वान्लोकनि छथि जे सम्पूर्ण जीवन एक आसन पर बैसि हाथमे कलम आ आगाँमे मोसिदानी राखि तकरे संग किछु तालपत्र जाहि पर अपन कठिन तपस्याक माध्यमे प्राप्त कएल असीमित ज्ञानक भंडार हमरालोकनिक लेल एक धरोहरिक रूपमे छोड़ि गेलाह अछि। पं. झा ओही परम्पराक जाग्रत रूप थिकाह । श्री गोविन्दझा केँ देखि ऋषिलोकनिक चित्र साकार भए जाइत अछि ।

◆

उदार व्यक्तित्व

❑ *श्री पूर्णेन्दु चौधरी*

छात्रावस्थहिमे साहित्यकार श्री गोविन्द झाक नामसँ परिचित भए गेल रही । जखन पटनामे नौकरी करबाक लेल गेल रही, हुनका साहित्यिक गोष्ठीसभमे देखैत छलियनि । दुब्बर-पातर । पैजामा-कुरता पहिरने । कहियो हाथमे एक हाथक बैग तऽ कहियो कान्हमे झोड़ा लटकौने ।

हमर रचना 'मिथिला मिहिर' मे छपय लागल छल । गोविन्द बाबू, गोपेश जी, व्यासजी आदि वरिष्ठ साहित्यकारकेँ जखन शेखरजीक संग गप करैत देखैत छलियनि तऽ पाछुमे ठाढ़ भऽ कऽ गप सुनैत रही । मुदा, धाखसँ कहियो आगू बढ़ि कऽ अपन परिचय नहि दैत छलियनि। ताहि समयमे एकटा भय मोनमे ई रहैत छल जे क्यो हमरा शेखरजीक भातिजक रूपमे नहि चिन्हय । जकरा चिन्हबाक छैक से हमरा हमर रचनासँ चिन्हय । एकर अवसरो लगले हमरा भेटि गेल । मिथिला मिहिरक 'कविता अंक' मे हमर प्रेम कविता : पाँच क्रम' छपल, जे अप्रत्याशित रूपसँ हमरा चर्चित बना देलक । ओ कविता पढ़ि कऽ गोपेशजी हमरा तकैत हमर कार्यालय आयल रहथि । गोपेशजीकेँ गप्पक क्रममे हम हुनका दऽ एवं अन्य वरिष्ठ साहित्यकारक नाम एवं हुनकर रचना दऽ कहने रहियनि । एही प्रसंग मे गोविन्द बाबूक नाम सेहो आयल छल । आ ओ अपना संगे गोविन्द बाबूसँ परिचय करावय राजभाषा विभाग लए गेल रहथि । गोपेश जी जखन गोविन्द बाबूकेँ हमर परिचय देलखिन तँ ओ एक क्षण हमरा दिस देखैत रहलाह । फेर कहलनि-'अहाँक कविता पढ़ि कऽ लागल छल जे अहाँ हमर समवयस्क होयब, मुदा अहाँ बड़ छोट छी।'

आब हम ई मानैत छी जे ओ शुभ मुहूर्त्त छल जे राजभाषा विभागमे कार्यरत गोविन्द बाबू, गोपेशजी आ सुशील बाबूक स्नेह हमरा पर, जा धरि हम पटनामे रही, बरोबरी रहल ।

कॉलेजमे पढैत काल सोति संगीसभक व्यवहारसँ मोनमे ई धारणा बैसि गेल छल जे ओसभ अन्यवर्गक लोकसभकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छथि । मुदा, पहिले-पहिल गोविन्द बाबू हमर एहि धारणाकेँ तोड़लनि । गोविन्द बाबूक सरकारी आवास दूर रहनि तेँ हम जखन कोनो जिज्ञासाक क्रममे गोविन्द

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बाबूक कार्यालयमे जाइत रही तऽ ओ आगू राखल फाइलक काज खतम कए हमर अयबाक कारण पुछैत रहथि । संगहि जे जिज्ञासा रहैत छल तकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बुझबैत सभ बात स्पष्ट कए संतुष्ट करैत रहथि । हुनकर व्यवहार कहियो अनसोहाँत नहि लगैत छल ।

एक बेर मिथिला मिहिर लेल किछु साहित्यकार सभक पत्नीसँ 'इन्टभ्यू' लेबाक योजना बनौलहुँ। एहिमे गोविन्द बाबूक नाम हम बेर-बेर लिखी आ काटी । एक दिन साहस कऽ गोविन्द बाबूकेँ अपन बात कहलियनि । संगहि इहो कहलियनि जे 'इन्टरभ्यू' हम एकसरमे लेब, अहाँ ओहि ठाम नहि रहब । मोनमे भय छल जे कहीं गोविन्द बाबू बिगड़ि ने जाथि । मुदा, ओ हमर सभ धारणाकेँ एके क्षणमे खंडित करैत सहर्ष तैयार भऽ गेलाह । तारीख आ समय निश्चित करैत आवास पर अयबा लेल कहलनि । जखन हम हुनकर आवास पर पहुँचहुँ तऽ ओ कोठरीमे लऽ गेलाह । हुनक धर्मपत्नी एकसरमे इन्टरभ्यू देबऽ लेल तैयार नहि होइत छलीह। बेर-बेर हुनको बैसऽ लेल कहथिन । एहिपर ओ कहलथिन 'ई अहाँक बच्चा जकाँ छथि । जे पुछैत छथि से उत्तर दियनु ।' ई कहैत ओ हुलकी मारैत धीयापुताकेँ कोठरी मे नहि अयबा दऽ कहि बाहर चल गेलाह ।

गोविन्द बाबू गप-शपमे सदा शालीन रहैत छलाह । गोष्ठीमे गलत बातक खंडन तँ करैत रहथि, मुदा तमसाइत नहि छलाह । परंच, एक बेर हुनको तमसाइत देखने छी । गोविन्द बाबू चेतना समितिक साहित्यकारक प्रति व्यवहारसँ रुष्ट रहैत छलाह । युवा लेखककेँ चेतना समिति स्वीकार नहि करैत छल । ई अलग बात जे ओकर कवि-गोष्ठीमे सभ भाग लैत छल । ठीक एकर विपरीत गोपेशजी लेखकसभक संग रहितो चेतना समितिक कार्य-कलापमे पूर्णरूपसँ डुबल रहैत छलाह । चेतना समितिक विद्यापति पर्वक तैयारी शुरू भऽ गेल छल । ताही समय मे राजभाषा विभाग गेल रही । गोपेशजी गोविन्द बाबूक संग गप कऽ रहल छलाह । हम चर्चा मे चेतना समितिक कार्य-कलापक विरोध कऽ देने रही। गोपेशजी चेतना समितिक समर्थन कयलनि। एहि पर गोविन्द बाबू एकाएक गोपेशजी पर तमसाइत बजलाह - "चेतना समिति की अछि ? राजनेता सभक दरबार मे पहुँचबाक पौदान । हिनका दरबारमे नहि जयबाक छनि । अहाँकेँ दरबारमे ..... गोविन्द बाबूक ताहि समयक रूप आ आक्रोश देखि हम हतप्रभ भऽ गेल रही । गोपेशजी बातकेँ टारबाक लेल हँसैत बजलाह-जाउ पंडितजी, अहूँ भसिया जाइत छी । आ, हमरा उठाकऽ चाहक दोकान दिस विदा भऽ गेलाह ।

गोविन्द बाबूक अपन पृष्ठभूमि विशुद्ध परम्परावादी ब्राह्मणक छनि । हमरा जनैत ओ एकर छाया अपना पर तथा अपन धीया-पुता पर नहि पड़य देलाह । हुनक जेठ बेटा अक्कू चेतना समितिक मंचसँ 'केरिकेचर' कऽ रहल छलाह । ओ हमरे सभक संग बैसि कऽ देखैत छलाह आ अक्कूक बातसभ पर हँसितो छलाह । बादमे हमसभ चाहक दोकान पर गेलहुँ । एकटा परम्परावादी साहित्यकार हमरा धीरेसँ कहलनि - "आइ महावैयाकरण दीनबन्धु बाबूक आत्मा बड़ प्रसन्न भेल हेतनि, पोताक जोकड़इ आ बेटाक हँसी देखि कऽ।"

हम हुनका कहने रहयनि - गोविन्द बाबू समयक अनुसार चलऽवला लोक छथि । समयक अनुसार चलऽवला लोक मृत आत्माकेँ नहि देखैत अछि ।

ओ व्यक्ति चुप भऽ गेल रहथि ।

हमर ई धारणा अछि जे ओ समयक अनुसार चलऽवला लोक छथि, तेँ जखन अक्कू केँ एम. ए. मे फर्स्ट क्लास फर्स्ट भेलो पर नौकरी नहि भेटलनि तँ एकटा जेनरल स्टोरक दोकान खोलि देलखिन । एक दिन कहबो कयलनि, *अक्कू घर पर बैसि कऽ कुंठाग्रस्त ने भऽ जाथि तेँ एकटा छोट-छिन दोकान खोलि देलियनि अछि ।* हमरा जनैत ई काज हुनक प्रगतिशीलताक लक्षण छल ।

हम जाहि विभागमे काज करैत रही तकर वेतन मदक राशिक आवंटन सरकार कतिपय कारणसँ बंद कऽ देने छल। फलस्वरूप हम आर्थिक संकटमे रही । परिवार संगे छल तेँ आरो कष्टमे रहैत रही । ताहि स्थितिमे मुरलीधर प्रेसक प्रूफ हम देखब शुरू कऽ देने रही । हमर परिचित सभ साहित्यकारकेँ हमर स्थितिक भान रहनि । कतिपय कारणसँ हमरा मैथिली अकादमीसँ मतान्तर छल । मैथिली अकादमीमे योगदान कयलाँ गोविन्द बाबूकेँ एक मास भऽ गेल रहनि । मुदा, हम भेँट कऽ शुभकामना नहि देने रहियनि । एक दिन मैथिली अकादमी गेलहुँ, हुनकासँ भेँट करबा लेल । बैसौलनि । हाल-चाल पुछलनि । आ कहलनि - *"हम सभ मध्यमवर्गीय*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

लोक छी । जीबाक लेल सतत संघर्ष करऽ पड़ैत अछि । हमहुँ संघर्ष कयलहुँ अछि । हम अपन सरस्वतीकेँ लक्ष्मीसे 'एक्सचेंज' कऽ कऽ खर्च जुटबैत रहलहुँ अछि । एहि काजके हम अधलाह नहि मानैत छी । हमरा लग सरस्वती छथि । लक्ष्मी अनका लग छथि । बिना लक्ष्मीक केनो काज ससरयवला नहि । अहूँ लग सरस्वती छथि । जीबाक लेल लक्ष्मीसे बदलब सीखू ।"

ओहि दिन बहुत देर धरि गप होइत रहल । जखन हम जाय लेल तैयार भेलहुँ तँ ओ कहलनि - *"एखन हमरा लग अनेक काज अछि। अहाँ ई पोथी प्रूफ देखऽ लेल लऽ जाउ । एकर प्रूफ देखऽ मे हमरा एतेक रुपैया प्रति पृष्ठ भेटत। एहि हिसाबसँ एतेक रुपैया पूरा पोथीक होइत अछि । हमरा जहिया भेटत से देखल जयतैक । अहाँ ई रुपैया पहिने धऽ लियऽ ।"*

हम गोविन्द बाबू दिस देखैत रहि गेलहुँ । हुनकर देल निर्धारित समय पर प्रूफ देखि कऽ दऽ देने रहियनि । हमर कार्यसँ ओ संतुष्ट रहथि। गोविन्द बाबू एहि तरहेँ कतेको पोथीक प्रूफ, अग्रिम राशि दऽ कऽ, जे हुनका आवंटित रहनि, हमरा सँ देखबौलनि । एहिमे प्रमुख अछि मैथिली अकादमी सँ प्रकाशित 'नातिक पत्रक उत्तर' आ साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित बंगला साहित्यक इतिहास । ई गोविन्द बाबूक महान उदारता रहनि हमरा प्रति जे चन्दा झाक रामायणक हिन्दी अनुवाद करबामे सेहो हमरासँ सहयोग लेने रहथि ।

एक दिन ओ कहलनि जे बेसी काल पैदल चलल करू। पैदल चलबासँ शरीर स्वस्थ रहत । दोसर जीवनक विभिन्न स्थितिकेँ लगसँ देखबाक अनुभव सेहो होइत रहत ।

हमरा गोविन्द बाबू व्यक्ति आ कथाकार नीक लगैत छथि । मुदा, कवि गोविन्द बाबू असफल लगैत छथि । नाटककार भइयो कऽ मंचसँ कविता पढ़य नहि अबैत छनि ।

हमरा नजरिमे गोविन्द बाबू ने कहियो बूढ़ होयताह, ने कहियो काजसँ थकताह, आ ने उदारतासँ चुकताह ।

◆

अपन औंठा दान कए सकैत छथि

❑ *श्री नवीन चौधरी*

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ।।

भगवद्गीता : 2 : 54

गोविन्द बाबूसँ जहिआ भेँट भेल उपरोक्त श्लोक बेर-बेर मन पड़ैत रहल । डा. सर गंगानाथ झा वा डा. अमरनाथ झाक दर्शनक सौभाग्य होइत तँ कदाचित यैह श्लोक मन पड़ैत ।

1979-80 मे सिन्धी साहित्यक इतिहास अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद कए साहित्य अकादेमी कें पठाओल । अनुवाद प्रकाशनयोग्य अछि वा नहि से विचार कए रहल छल 'सलाहकार समिति' । विद्वान् सदस्यलोकनि अनुवादक एको पाती बिनु पढ़नहि एहेन महुराएल तर्क सभ दए रहल छलाह जकर सोझ अर्थ छल - एहि पोथी केर प्रकाशन उचित नहि । अनुवादक कतोक पृष्ठ स्व. मणिपद्मक देखल छलनि । ऋग्वेदक उद्धरणवला अंशक अनुवाद मणिपद्मे कएने छलाह । विद्वान्लोकनिक तर्क-वितर्कमे मणिपद्म बाझल छलाह । अनुवादक गोड़ तीसेक पृष्ठ अकादेमीक सचिव माझ ठाम राखि देने छलाह। एते कालमे श्री गोविन्द बाबू अनुवादक ओतेक पृष्ठ पढ़ि लेलनि । अन्तमे हुनक मत पूछल गेल तँ ओ अनुवादकेँ प्रकाशनयोग्य कहलनि । मणिपद्मजी आ गोविन्द बाबूक आशीर्वादसँ सिन्धी साहित्यक इतिहास 1983 मे छपल।

1986 मे हमर उपन्यास बाट आ बटोही मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता प्रकाशित कएलक । कतोक दिन बाद कर्णामृत (त्रैमासिक कलकत्ता) मे श्री चन्द्रेशजीक लिखल समीक्षा पढ़ला पर गोविन्द बाबू श्री जीवकान्त जीकेँ पत्र लिखलनि । जीवकान्त जी हमरा पत्र लिखलनि। आदेश छल जे गोविन्द बाबूकेँ "बाट आ बटोही" पठाबी । संयोगसँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

लगले हमरा पटना जेबाक छल । ओहि दिनमे गोविन्द बाबू ६ पटेल नगर, पटनामें रहैत छलाह । हमर विश्राम स्थल ओतहि अपन मित्रश्री राधेश्याम शर्मा (न्यायिक दण्डाधिकारी)क ओहि ठाम छल । राधेश्यामकेँ संग लेने श्री गोविन्द बाबूक आवास पर उपस्थित भेलहुँ । अपने परिचयमे मात्रअपन नाम कहए पड़ल । राधेश्यामक परिचय देलिअनि । तखन आरंभ भेल भाषा-साहित्यक क्षितिज धरि पसरल गप्पक प्रसंग-गप्पक प्रसंगमे उठैत ज्ञान-विज्ञानक हिलकोर । मुदा राधे मैथिली भाषी नहि होएबाक कारण एहि गपमे साझी नहि भेल । ओना बेर-बेर हम ओकरा साझी कए लेबाक प्रयास कैल । श्री गोविन्द बाबू एहि प्रयासमे रुचि नहि लेल । गोटेक घंटाक बाद हमसभ गोविन्द बाबूसँ विदा लेलौं । "बाट आ बटोही" देलिअनि ।

सीढ़ीसँ हेठ होइत काल हम कहलिअइ, राधे, मुझे माफ करना । वहाँ तुम्हें उपेक्षित .... राधे हमर बात छिनैत बाजल, "क्या कह रहे हो ? उनकी अमृतसमान वाणी सुनने का अवसर मिला । ः तो मेरा सौभाग्य है । गोटेक मास बाद हुनक पत्र भेटल । लिखनि:

अहाँक 'बाट आ बटोही' पढ़ल । बीच-बीच मे भदबा नहि पड़ैत तँ एके निसासेँ पढ़ए पड़ितए से शक्ति एहिमे छैक। तैओ भदबासँ लट टूटल नहि आ एके निसासे पढ़बाक जे लाभ छैक ताहिसँ हम वंचित नहि भेलहुँ ।

आलोचना नहि, पाठकीय प्रतिक्रिया लिखैत छी । तेँ एतबे लिखब पर्याप्त जे नीक लागल । सभ सँ नीक लागल अहाँक प्रतिपादन-रीति आ भाषाक विशुद्ध प्रयोग । मैथिलीक बहुतो लेखक लोकनि पर हिन्दीक वाग्धारा भूत जकाँ सबार रहैत छनि आ मैथिलीमे जे अपन विलक्षण अभिव्यक्ति-सामर्थ्य छैक तकरा ओ भूत टपए नहि दैत छैक । सौभाग्यवश ओहि भूतकेँ अहाँ टपए नहि देलिऐक ।

एहिसँ पहिने "माटि मंगल" पढ़ने रही । ओहिमेँ अहाँक टांग छानल छल तेँ उचिते ओकर भाषा *बाट आ बटोहीक* भाषासँ किछु कम प्रवाहवती अछि ।

ई कहब फूसि होएत जे कतहु किछु खटकल नहि । कथ्यक बान्ह किछु ढील-सन लागल । किछु नीक सम्भावनाबाला पात्र सभ हुलकी दए-दए चल गेल । पाठक अतृप्त रहि गेलाह । लगैत अछि जेना लेखक पुस्तकक आकार बढ़बाक डरेँ किछु हड़बड़ीमे होथि । कतहु-कतहु Overtone सेहो हमरा बुझाएल ।

सर्वैकत्वेन उपन्यास परम मर्मस्पर्शी आ रोचक अछि । एकर प्रतिपादन-रीति आ भाषाक विलक्षणता सभ दोषकेँ काटि दैत छैक । *एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दो: किरणेष्विवाङ्क:: ।* सामान्य पाठककेँ प्राय: ई सभ दोष देखिओ नहि पड़तैक। कतोक दृष्टिएँ एकरा मैथिलीक सर्वोत्कृष्ट उपन्यास मानब कोनो विशेष पक्षपात नहि होएत। अहाँकेँ आशीर्वाद दैत छी आ भविष्यमेँ अहाँ सँ बड़-बड़ गोट आशा करैत छी ।'

अमर कीर्ति कवि तोर (मधुप स्मृति ग्रंथ) मे मधुपजीक सभ पोथी पर एक-एक टा निबन्ध देबाक आदेश छल । *राधा विरह* पर कतोक निबन्ध आएल । कोनो निबंध हमरा ग्रंथक स्तरक अनुरूप नहि बुझि पड़ल । पोथी छपबाक बेर लगिचाएल । *राधा विरह* पर निबंध लेल चिन्तित रही । गोविन्द बाबू हमरा लोकनिकेँ चिन्तामुक्त कए देल । *शिखरिणी*मे प्रकाशनार्थ कोनो पैघ विद्वानक निबन्ध प्राप्त करब चेतना समिति लेल सहज संभव छलैक, किन्तु ई बूझितो जे हम त मधुपजीक रचनाक एक सामान्य पाठक छी विशेषज्ञ नहि, गोविन्द बाबू ई अवसर हमरा देलनि । ई हमरा प्रेरणा देब नहि तँ आर की भेल ?

1994मे एकटा कथा-गोष्ठी वा रैलीक आयोजन घोघरडीहामे भेल । आयोजक छलाह श्री नारायण जी । ओहि ठाम जाइत काल सकरी सँ घोघरडीहा धरि हमरा सर्वश्री गोविन्द बाबू, राजमोहन झा, रमानन्द झा 'रमण'क सहयात्री होएबाकेर सौभाग्य प्राप्त भेल । कथा-रैलीक तरंगमे राति बीतल । भोरे कथा रैलीक समापन भेल । कथाकारलोकनि बस स्टैण्ड वा टीशन दिस विदा भेलाह । हमरा प्रदीप जीक संग जेबाक छल । संयोगवश श्री गोविन्द बाबूकेँ सेहो हुनकहि संग जेबाक छलनि । दरभंगा टीसन पर सँ श्री प्रदीपजीक निवासस्थान धरि चारि पाँच-घंटा लेल श्री गोविन्द बाबू एकान्त भावेँ आ निर्विघ्न स्थितिमे हमरा लेल उपलब्ध छलाह। कतोक, प्रकारक जिज्ञासा छल, ताहि सभ पर चर्चा भेल। कोनो पियासलकेँ कमला धार भेटल होइ, ओहि दिन हमरा तेहने अनुभव भेल।

जनवरी 1995मे कलकत्तामे साहित्य अकादेमी आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक साझी सेमिनारमे श्री किशोरी कान्त मिश्रक हमरा प्रति स्नेहसँ मठाधीशलोकनि विवश भए गेल छलाह । अन्तिन पहरमे हमरा विषय देल गेल 'मैथिलीमे गीत काव्य ।' संयोगवश गोविन्द बाबू, हम, आर तीन-चारि गोटे (प्राय: मठाधीश लोकनिक दृष्टिमे अनुपयुक्त लोक सभ) अन्तिम सत्रमे रही । प्रयास कए हुनकासँ जे गप्प भेल ताहि मे ई बिन्दु स्मरणीय जें 'मैथिलीमे गीत काव्य' क प्रति व्यक्त मान्यतासँ गोविन्द बाबू सहमत छलाह । हम एकरा गोविन्द बाबूक प्रेरणादायक व्यक्तित्व मानैत छी ।

सितम्बर 1991 धरि गोविन्द बाबूसँ हमरा गप नहि भेल छल । कहिओ-काल समारोहसभ मे मंच पर देखैत आ सुनैत रहल छलिअनि । हुनक प्रेरणा, आशीर्वाद आ शुभकामना हमरा कदाचित 1981 सँ भेटए लागल छल । एहि दुर्लभ उपलब्धिक श्रेय एकमात्रहमरा छुटकही लेखिनीकें छैक अर्थात् गोविन्द बाबू एहेन व्यक्ति नहि छथि जे कोनो एकलव्यक औंठा काटि लेताह । प्रयोजन हेतै तँ ओ कोनो एकलव्य लेल अपन औंठा दान कए आनन्द मगन होएताह ।

हमरा दृष्टिमे गोविन्द बाबू जँ "स्थितप्रज्ञ" वा "स्थितधी" नहि तँ तकर अवश्य समतुल्य छथि । हमर शत-शत अभिनन्दन, शत-सहस्र अभिनन्दन ।

◆

सगर राति दीप जरय आ श्री गोविन्द झा

❑ *श्री अशोक*

मधुबनी जिलाक सरिसव गामसँ धर्मपुर गामक बीचमे लोहना पड़ैत अछि । सरिसव सँ सटल मुदा कने हटल इसहपुर अछि । इसहपुर सँ सेहो धर्मपुर जएबाक लेल लोहने बाटे रस्ता छैक । लोहनाक सटले लालगंज अछि । केवल अलकतराक रोड बीचमे । एकदम सामानान्तर । सरिसवसँ धर्मपुरक दूरी हैत लगभग छओ कि.मी. । सरिसवसँ लोहना तीन कि.मी. । इसहपूरोसँ करीब सैह दूरी । सोझे गेला पर कने कमे । मुदा एहि सभक आ ओकर खेरहा कोन जरूरी अछि एहिठाम ? जरूरी अछि । सरिसव मनमोहन झाक गाम थिक । *'अश्रुकण'* आ *'वीरभोग्या'* क कथाकार । 'रुना', 'झगड़ा', 'चाँपकली', 'मीनाक्षी' आ 'सुकेशी' सन मैथिली कथाक धराउ पटोर । कोमल बाँहि परहक जस्सन ..... । हिनके सम्पर्कमे गोविन्द झाकें कथाकारक बाट देखल भेलनि । धर्मपुर *कथाकिरण* क कथाकार कांचीनाथ झा 'किरण'क गाम । 'मधुरमनि', 'धर्मरत्नाकर', 'रुपा'.... सन मैथिलीक गर्दनिक हँसुली । शृंगारक शृंगारआ विपत्तिमे काज देनिहार । किरणेजयन्तीक अवसर पर 'सगर राति दीप जरय'क निर्णय भेल। लोहना गाममे । लोहना गाम थिक डा. धीरेन्द्रक । 'मामी', 'दादी माँ' आ 'सुगरक बाप' सन कथाक कथाकारक । दरकैत आ झरकैत नेह-छोहक नगीना जड़ल औंठी । शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक आ शैलेन्द्र आनन्दक गाम सेहो थिक लोहना । कथाकार मन्त्रेश्वर झाक गाम थिक लालगंज । मुदा इसहपुर ? धर्मपुर आ लोहनाक नजदीकी असगर टिमटिमाइत पण्डितक गाम इसहपुर । इसहपुर गाम थिक गोविन्द झाक । 'फूलक चोट', 'अंतिम एकन्नी' होइत 'नखदर्पण' धरि पहुँचल कथाकारक । हुनके तऽ गप्प करबाक अछि 'सगर राति दीप जरय' क संग. . . . . ।

महाकवि गोविन्ददास एवं कथाकार डा. धीरेन्द्रक गाम लोहनामे एक दिसम्बर उन्नैस सए नबासीकें स्व. कांचीनाथ झा 'किरण' क जयन्ती पर जागरण-दिवस आयोजित भेल रहय । किरणजी पर चर्चा-परिचर्चाक बाद कवि-सम्मेलन भेल । कवि-सम्मेलनक बाद भोजनोपरान्त मिडिल स्कूलक हॉलमे विश्राम करैत निशीभाग रातिमे एकटा विचार जनमल। पंजाबी जकाँ 'दिवा बले सारी रात' क तर्ज पर मैथिलीमे सेहो आयोजन करबाक निर्णय भेल । आयोजनक सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर केलनि उपस्थित साहित्यकारमण-जीवकान्त, नारायणजी, विभूति आनन्द, शिवशंकर श्रीनिवास, अशोक, रमेश, उदयचन्द्र झा 'विनोद', शैलेन्द्र आनन्द,, कुमार शैलेन्द्र आ मोहन भारद्वाज । पहिल कार्यक्रम हमरहि संयोजकत्वमे 24 दिसम्बर 1989 कें कटिहारमे राखल गेल । मुदा जेठ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बहीनिक असामयिक निधनक कारणेँ ओ कार्यक्रम स्थगित करय पड़ल । फेर 21.1.1990केँ मुजफ्फरपुरमे प्रभास कुमार चौधरीक संयोजकत्वमे पहिल आयोजन भेल । नाम राखल गेल - 'सगर राति दीप जरय' । तकर बादसँ हरेक तीन मास पर ई कार्यक्रम भेल करैए विभिन्न स्थान पर । एखनि धरि पचीस स्थान पर आयोजन सम्पन्न भए चुकलए। एखनि धरि मुजफ्फरपुर, ड्योढ़, दरभंगा, पटना (दू बेर), बेगूसराय, कटिहार, नवानी, सकरी, नेहरा, विराटनगर, वाराणसी, सुपौल, बोकारो, पैटघाट, घोघरडीहा, इसहपुर, सरहद, झंझारपुर, जनकपुर, बहेड़ा, सुपौल (बिरौल), काठमाण्डू, राजविराज, कलकत्तामे सफलतापूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न भऽ चुकल अछि । एहि पचीस आयोजनमे सात सएसँ बेशी कथा पढ़ल गेल अछि । निश्चित रूपसँ दू सएसँ बेशी श्रेष्ठ कथा ई आयोजन मैथिली साहित्यकेँ देलक अछि । तीसटा चुनल कथाक संग्रह *श्वेतपत्र*नामसँ रमेश ओ डा. तारानन्द वियोगीक सम्पादकत्वमे निकलि चुकल अछि । बोकरोमे पढ़ल गेल कथाक संग्रह बुद्धिनाथ झा एवं तुलानाथ मिश्रक सम्पादकत्वमे *कथाकुम्भ* नामसँ निकलल अछि । पटनाक आयोजनमे पढ़ल गेल कथा सभकेँ मैथिली अकादमी पत्रिकामे रवीन्द्र नाथ ठाकुर (पूर्व निदेशक) क प्रयाससँ छापल गेलए । एहि आयोजनमे विभिन्न ठाम अनेक पोथीक लोकार्पण सेहो भेल अछि जाहिमे कथासंग्रह सभ सेहो अछि ।

'सगर राति दीप जरय' क प्रारम्भिक रूपरेखा मादे प्रस्तावक शिवशंकर श्रीनिवासक वक्तव्य कार्यक्रमक मूल भावनाकेँ सेहो स्वर दैत अछि ।

"कोनो साहित्यकार वा साहित्यप्रेमी बन्धु अपना ओहिठाम गोष्ठी करेबाक प्रस्ताव रखताह आ तदनुसार कथाकारलोकनि अपन-अपन खर्चसँ ओहि गोष्ठीमे भाग लैत जयताह । समारोह-स्थल पर जे खर्च होयत से आयोजकक रहत । मुख्य रूपसँ एहिमे कथाकार आ आलोचक भाग लेताह । ई एक प्रकारक लेखक-सम्मेलन होयत । परिकल्पनामे रहैक जे आइ मैथिलीक कथाकारलोकनि अधिकतर शहरमे रहैत छथि, जाहि कारण कैक स्तर पर गाम हुनकासँ छुटि रहल छनि । तेँ ई आयोजन अधिकतर गाममे होमय, जे लेखककेँ ग्रामीण परिवेशसँ जोड़ने राखत । दोसर बात, पत्र -पत्रिकाक अभावमे जे साहित्यिक गतिहीनता आबि गेल अछि, तकरा ई तोड़त आ कथा-आन्दोलनकेँ आगू बढ़ाओत । निर्णय भेल जे ई कथा गोष्ठी साँझसँ भोर धरि चलत ।" (स्वर-समंवेत, श्वेतपत्रसँ)

आइ पचीस टा आयोजनक समाप्तिक बाद देखैत छी जे उपर्युक्त परिकल्पना बहुत अंशमे मूर्त रूप धारण केलक अछि। खाली अधिकतर गाममे आयोजन करबाक परिकल्पना सफल नहि भऽ सकल । तथापि ड्योढ़, नवानी, नेहरा, पैटघाट, इसहपुर, सरहद, घोघरडीहा, बहेड़ा, सुपौल (बिरौल) क संग-संग मिथिलाक छोटछीन कस्बा सभमे सेहो आयोजन सम्भव भऽ सकल अछि । तथापि सहरसा, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, पूर्णिया, भागलपुर आदि शहर अथवा गाममे आयोजन एखन धरि नहि भेल अछि जे आवश्यक अछि ।

एहि आयोजन मे, मैथिलीक अधिकांश कथाकार कोनो ने कोनो स्थान पर सम्मिलित भऽ चुकल छथि । कथा-पाठ केलनि अछि । तथापि किछु उल्लेखनीय कथाकार जे एखन धरि एहि आयोजन मे कथा-पाठ नहि केलनि अछि से छथि-सोमदेव, हंसराज, प्रो॰ मनमोहन झा, बलराम, विनोद बिहारी लाल आदि । आश्चर्यजनक रूपसँ प्रसिद्ध कवि-कथाकार उदयचन्द्र झा 'विनोद' आयोजनक निर्णय एवं सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर कइयो कए एखन धरि कार्यक्रममे सहभागी नहि बनि सकलाह अछि । हिनकालोकनिक सहभागिता सुनिश्चित होयब जरूरी लगैत अछि । अनेक प्रसिद्ध समालोचक-समीक्षक सेहो एहि आयोजन मे नियमित रूपसँ भाग लैत रहलाह अछि । डा॰ रमानन्द झा 'रमण' असगर व्यक्ति छथि जे पचीसो आयोजनमे भाग लेलनि अछि । प्रत्येक आयोजनमे भाग लेबाक दाबा हिनका छोड़ि आन कियो कथाकार-समीक्षक प्रायः नहि कऽ सकैत छथि । हिनकर अतिरिक्त मोहन भारद्वाज, डा० भीमनाथ झा, प्रो. रमाकान्त मिश्र, कुलानन्द मिश्र, डां. जयधारी सिंह, प्रो. उमानाथ झा, डा. अमरनाथ झा, डा. शिवशंकर झा कान्त, प्रो. सदन मिश्र, डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव आदि मैथिलीक प्रसिद्ध समालोचक विद्वान् सेहो 'सगर राति दीप जरय' मे अपन सहभागितासँ आन्दोलन केँ सक्रिय आ महत्वपूर्ण बनौलनि अछि । तथापि प्रो॰ आनन्द मिश्र, डा हरिनारायण मिश्र, प्रो ललितेश मिश्र, डा॰ देवकान्त झा, हरेकृष्ण झा एवं मैथिली साहित्यसँ जुटल समाजशास्त्री डा हेतुकर झा ओ डा महेन्द्र नारायण कर्णक सहभागिताक प्रतीक्षा छैके एहि आयोजनकेँ ।

'सगर राति दीप जरय' आयोजनक उपलब्धि क

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सम्बन्धमे अनेक ठाम बहुत चर्चा भेल अछि । श्वेतपत्र कथासंग्रहक आमुख 'स्वरसमवेत' मे रमेश आ डा॰ तारानन्द वियोगी कहैत छथि, "जेना लोक बेटीक बियाह करब, बेटाक शिक्षा क ओरियान करब अपन व्यक्तिगत काज बुझैत अछि आ' व्यक्तिगत स्तरसँ ब्योंत कए पाइ लगबैत अछि, तहिना मैथिलीक लेखक अपन रचनाक प्रकाशन सेहो व्यक्तिगत प्रयाससँ करैत रहल अछि । (कुलानन्द मिश्रक एक कथन पर आधारित) ई जबदाह स्थिति लेखकक हेतु लिखबाक आवश्यकताकेँ कुंठित करैत छैक । लेखनक लेल कोनहुँ पारम्परिक उत्प्रेरक परिस्थिति अथवा उत्साह-विन्दु नहि रहि गेने मैथिली लेखनक गति असंभावित रूपसँ अवरुद्ध भऽ गेल अछि । एहना स्थितिमे कथा-गोष्ठी आन्दोलन लेखकक लेल एक उत्साहजनक परिस्थिति तैयार कएलक अछि आ लिखबाक लेल उत्प्रेरक बनल अछि।"

यदि आयोजनक निर्णयकाल (दिसम्बर 1989) पर ध्यान देल जाय तऽ ज्ञात होइत अछि जे ओहि कालमे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन लगभग शून्य भऽ गेल छल । ओहि कालमे *मिथिला-मिहिर* पत्रिका बन्द भऽ चुकल रहय । *भाखा* सेहो नहि निकलि रहल छल । दरभंगासँ खाली *वैदेही* टा टेक धयने रहय । स्थिति आइयो कोनो नीक नहि अछि । मुदा ओहेन नहि अछि । कोनो साहित्यिक आयोजन सेहो नहिये जकाँ चलैत रहय । विद्यापति पर्वक आयोजन सेहो घटि गेल छल । ताहूमे कविसम्मेलन कार्यक्रम तऽ नहिये जकाँ । विचारगोष्ठी ; परिचर्चा आदि एकदम शून्य । कथाकारक कथे कोन, कवि, विद्वान, समीक्षक लोकनिक भेँट-घाँट, पारस्परिक विमर्श समाप्त प्राय रहय । सर्जनात्मक वातावरणक तऽ ओहिना अभाव रहैये । ताहि परिप्रेक्ष्यमे एहि आयोजनक निर्णय आ' नियमित क्रियान्वयन अन्हार घरमे रोशनी-सन छिटकि गेल । प्रसिद्ध कथाकार जीवकान्त लिखैत छथि ।

"कथा-रैली एक आन्दोलन थिक । एक सृजनात्मक कार्यक्रम थिक । एहिमे अनेक लोकक सहभागिता एकरा महत्वपूर्ण बनबैत अछि। मैथिली-सन भाषामे जतऽ जीवंततांक अवसर घटल जाइत छैक, आत्मविश्वासमे क्षरण होइत जाइत छैक, ई आन्दोलन बहुत प्राणमय आ आलोकमय बुझाइत अछि।"

एखनि धरि जे कविलोकनि अथवा साहित्यकार कोनो कार्यक्रममे रचनापाठ करबाक लेल अथवा लेख आदि पढ़बाक लेल आयोजकक खर्च पर जाइत छलाह से अपन खर्चसँ एहि कार्यक्रममे आबऽ लगलाह । पछिला पचीस कार्यक्रम पर जँ ध्यान देब तऽ ज्ञात होयत जे साहित्यकारलोकनि विराटनगरसँ वाराणसी धरि आ सुपौलसँ बोकारो, काठमाण्डू धरि अपन खर्चसँ जा कऽ कार्यक्रममे सहभागी बनि मैथिली कथाक दीप जरा रहल छथि । ई मैथिली आ साहित्यक प्रति प्रेम, प्रतिबद्धताक अपूर्व प्रतिमान उपस्थित करैये । एहि प्रतिरोधी आ विपरीत वातावरणमे अपन सर्जनात्मकता बचा कऽ रखबाक आर ओकरा मँजबाक, विकसित करबाक एहेन अभिलाषा जाहि भाषाक रचनाकारमे रहत ओ भाषा कोना मरि सकैये । जाहि भाषामे सत्तरि बरखक बुजुर्ग पांचम दशकसँ कथा लिखब प्रारम्भ कए निहार पं. गोविन्द झा आ ओकर बादक प्रतिष्ठित, स्थापित कथाकारक संग एक मंचसँ दशम दशकक अद्यतन पीढ़ीक कथाकार भरि राति कथा-पाठ करथि आ' ओहि पर समीक्षा चर्चा होअए ताहि भाषा-साहित्यकेँ ककरा दबेबाक सामर्थ छैक ? ई आयोजनक उपलब्धिक एक पक्ष भेल । दोसर पक्ष अछि पत्र-पत्रिकाक अभाव मे मैथिलीप्रेमी पाठकवर्गकेँ मैथिलीक टटका कथा सुनबाक आ' गुनबाक अवसर भेटब । ओहि पर अपन विचारो प्रकट करबाक सोझाँ-सोँझी मोका । लेखक-पाठक सम्बन्धक स्थापन । संगहि समीक्षक लेखकक सोझाँ-सोझी होयब सभसँ महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक । ठामहि कथाक आलोचना करब आ ओकरा सुनब । एहि आयोजनसँ लेखक-समीक्षक दूनू लाभान्वित भेलाह अछिं । आत्मविश्वास बढ़ल अछि । रमेश आ डा॰ तारानन्द वियोगी कहैत छथि, "कथा-गोष्ठीक समीक्षा-प्रक्रिया लेखककेँ योजनाबद्ध रूपसँ, सम्हरि क' नीक लिखबाक उत्साह देलकैक अछि ।....कथा-गोष्ठी आलोचनाक एक नवीन धाराक उपस्थापन कयलक अछि । आइ धरि समीक्षा मात्र रचनाकारक परोक्षमे होइत रहलैक अछि-से कि तऽ बन्न ड्राइंग रूममे अथवा पत्र-पत्रिकामे । कथा-गोष्ठी मे रचनाकारक आमने-सामने समीक्षाक चेष्टा कएल गेलैक अछि आ' तकर परिणाम बहुत उत्साहजनक बहरायल अछि ।"

प्रसिद्ध समीक्षक मोहन भारद्वाज एहि बातकेँ कथा-गोष्ठीक सभसँ पैघ उपलब्धि मानैत छथि जे रचनाकारमे आत्ममुग्धता समाप्त भेलैक अछि आ' ओ अपन रचनाक आलोचना सुनबाक सहनशक्ति अर्जित केलक अछि ।

किछु अपवादकेँ यदि छोड़ि देल जाय तऽ कियो कथाकार

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एहि कारणेँ कथा-गोष्ठीमे आयब बन्द नहि केलनि जे हुनकर कथाक निर्ममतापूर्वक समीक्षा कएल गेल । नव आ युवा कथाकारक कथे कोन, सभसँ बएसेँ वृद्ध कथाकार गोविन्द झा एहि मादे कहैत छथि, *"आरम्भमे प्राय: बूढ़ होयबाक कारणे हम आलोचनाक अपात्र बूझल गेलहुँ, परन्तु पछाति हमरहु पर आलोचनाक निर्मम प्रहार पड़य लागल । हम नीक चटिया जकाँ ओहि प्रहारकेँ पथ्य बूझैत रहलहुँ ।"* अपन कथाक निर्मम समालोचना ओ समीक्षा सुनियो कऽ अन्यथा नहि लए अनवरत कार्यक्रममे सहभगी बनल रहनिहार गोविन्द बाबूक व्यक्तित्वक विशालता सहजेँ जानल जा सकैये । ई तखने सम्भव अछि जखन रचनाकार रचनाकर्मक प्रति एकनिष्ठ भावसँ समर्पित हो । एतबे नहि, गोविन्द बाबू *सगर रातिमे* अपनाकेँ विशिष्ठ बनेबाक ने प्रयास करैत छथि ने अपनाकेँ विशिष्ट बूझैत छथि । ओ सदिखन आन सभ लेखक / कथाकार जकाँ अपनहुँकेँ मानैत एहि लेल दुखी ओ रुष्ट होइत छथि जे हुनकर कथाक खूब नीक जकाँ आलोचना नहि भऽ रहल अछि । सकरीगोष्ठीमे ओ एहि लेल रुष्ट भेल रहथि । ओ अपन रचनामे कमी आ गड़बड़ी सुनबाक लेल उत्सुक छलाह । हमरा जनैत पं. गोविन्द झाक रचनाकार अथवा व्यक्तिकेँ आलोचना सुनबाक जे 'उत्सुकता' रहलनि सैह हुनकर रचना आ व्यक्तित्वकेँ बहुत अंशमे अद्यतन (up to date) रखने अछि । ओ कहियो-कोनो क्षण आत्ममुग्ध नहि होइत छथि । अपना संग अन्याय होइत देखि ओ तमसाइत छथि जरूर । मुदा कहियो-कखनो अनर्गल लाभक लालसा हुनकर स्वभावमे नहि भेटैत अछि । जेना देखैत छी अनेक बूढ़केँ जेना अपनाकेँ कुण्ठाक कोठलीमे बन्द करैत, सभामध्य रहितो 'असगर' रहैत, सेँ सभ दोषसँ गोविन्द बाबू बहुत दूर छथि । नव आ युवा आधुनिक लेखकक बीच हुनक लोकप्रियताक ई सभ जबर्दस्त कारण रहल अछि । कतहु ने कतहु 'विशिष्टता' 'साधारणत्व' सँ अर्जित होइत अछि । ई दृष्टि जिनका नहि छनि से बूढ़ लोकनि गोविन्द झा सन बयोबृद्ध लेखकक नवतुरिया द्वारा प्राप्त स्नेह आ सम्मान देखि अपन आँगुरी दाँतसँ काटि सकैत छथि । एहि तथ्य केँ सगर राति... गोविन्द बाबूक सन्दर्भमे प्रमाणित कऽ चुकल अछि ।

एहि प्रसंग किछु लोकक मानसिकता दोसर भऽ सकैत अछि । ओहने कियो साहित्यकार गोविन्द बाबूकेँ *सगर रातिमे* बेर-बेर जाइत देखि हुनका टोकबो कएलनि । गोविन्द बाबू अपन कथासंग्रह *'नखदर्पण'* क भूमिका (नेपथ्य सँ) मे लिखैत छथि, *"एहि सगररतिया कथा गोष्ठीमे हमरा बेरि-बेरि जाइत देखि हमर शुभचिन्तक एक प्रतिष्ठित साहित्यकार अयाचित सत्परामर्श देलनि, 'पण्डितजी, की अहाँ सींघ तोड़िके पड़रू मे मिलै छी ।* हुनक कहब फूसि नहि । गोष्ठीमे जे-जे सामान्यत: जाइत रहलाह अछि ताहिमे प्राय: सभ केओ बएसमे हमरासँ कमसँ कम पनरह बरखक छोट छथि । तेँ ठीके हमरा समक्ष पड़रू भेलाह । मुदा हमरा एहि पड़रूसभसँ ततेक स्नेह भए गेल जे ओ परामर्श एहि काने सुनल, ओहि काने उड़ाए देल। वास्तवमे साहित्य-सर्जनामे बएसेँ ने केओ पड़रू होइत अछि, ने पाड़ा । ओकर आयुक निर्धारक होइत अछि ओकर दृष्टि आ सृष्टि । एहि अर्थ मे, सत्य कहब जँ अभिमानोक्ति नहि हो तँ, हम अपनाकेँ एखन धरि बूढ़ नहि मानलहुँ अछि । प्राय: इएह कारण थिक जे ओहि पड़रू सभसँ हमरा 'स्ववर्गे परमा प्रीति:' अछि । हमरा तँ इहो कहबामे संकोच नहि होइत अछि जे वय:श्रेष्ठ वा समवयस्क कथाकार हमरा ततेक प्रेरित-प्रभावित नहि कएलनि अछि जतेक एहि पड़रू वर्गक जीवकान्त जी, प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा, आ' रमेश पर्यन्त कएलनि अछि ।"

गोविन्द बाबू यदि अपनाकेँ बूढ़ नहि मानलनि अछि तऽ हुनक अनुज कथाकार आ साहित्यकारलोकनि सेहो हुनका बूढ़ मानबाक लेल तैयार नहि अछि । ने व्यक्तिक स्तर पर, ने रचनाक स्तर पर । जाहि कथाकारक 1947 मे पहिल कथा प्रकाशित भेल हो, जे एखनि धरि कथालेखनमे संलग्न हो, परवर्त्ती एकदम नव कथाकारलोकनिक संग डेग सँ डेग मिला कऽ चलबामे प्रसन्नताक अनुभव करैत हो, एहेन रचनाकार मैथिलीमे असगर गोविन्द झा छथि । अपन अनुज रचनाकारक संग जेहेन निकट सम्पर्क गोविन्द बाबूकेँ छनि से अनका सम्भव नहि भेल अछि । एकर कारण की अछि ? गोविन्द बाबूक व्यक्तित्वमे एहेन कोन तत्वसभ अछि जे हुनका अनुज साहित्यकारक निकटवर्ती बनबैत अछि ? ओ एखनो युवा कोना बुझाइत छथि ? ई तथ्यसभ हुनका संग 'सगर राति' मे जागि कऽ नीक जकाँ सहजेँ अनुभव कएल जा सकैत अछि । जेना ओ अपनो कहैत छथि ओ पीढ़ीक अन्तरक मानसिकतासँ ग्रस्त नहि छथि । संवादहीनताक स्थिति अपन अनुज साहित्यकारक संग कहियो नहि अएलनि । ओ एहि सभ 'गैप' केँ सर्वप्रथम तऽ निरंतर अद्यतन साहित्यक आ आन अनुशासनक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पोथी सभकेँ पढ़ैत-गुनैत रहबाक कारणेँ, दोसर, बस्तु एवं यथार्थकेँ क्रमशः समकालीन दृष्टिसँ देखबाक शक्ति अर्जित कऽ लेबाक कारणेँ, आ तेसर, युवा, अनुज रचनाकारक प्रति ममत्वक संग बात बुझबाक पूर्वाग्रहहीन मानसिकताक कारणेँ भरि लैत छथि । हुनका संग आरामसँ बिना कोनो उत्तेजनाक विमर्श-विचार कएल जा सकैत अछि । विवाद कएल जा सकैत अछि । मतभिन्नतोक स्थितिमे अपन वृद्धत्व ओ ज्ञानक बल पर विचार थोपबाकक कोनो आग्रहसँ ओ सदैव ओ सर्वथा मुक्त रहैत छथि । गोविन्द बाबू हमरा सभ दिन प्रवहमान आ शान्त लगलाह अंछि । निश्छल लगलाह अछि । हुनकर कोनो बात पर छनकि आ तनकि गेनाइ सेहो हुनकर रंगहीनता ओ निश्छलतेक परिचायक थिक । भावनाकेँ, ओ अपन भीतर सड़ा नहि सकैत छथि । ओकर मूड़ी गोंति नहि पबैत छथि। तेँ कखनो-कहियो हुनकर क्रिया-प्रतिक्रिया अव्यावहारिक, अगम्भीर बूझि पड़ि सकैत अछि । मुदा हमरा इहो लागल अछि जे ई तमाम गुण ओ आयास आ प्रयाससँ अर्जित कएलनि अछि । अपन व्यक्तित्वकेँ जटिलसँ सहज बनेबाक उद्यम हमरालोकनिकेँ गोविन्द बाबूसँ सिखबाक चाही । ओना एकर सुदीर्घ परम्परा हमरालोकनिक संस्कृतिमे पूर्वहुसँ विद्यमान अछि ।

जहिना अपन व्यक्तित्वकेँ जटिलतासँ सहजता दिस उन्मुख करैत छथि गोविन्द बाबू तहिना रचनाकेँ व्यक्तिसँ समाज दिस सेहो यत्नपूर्वक उन्मुख करैत देखाइत छथि । हुनकर 'हम' क्रमशः क्षीणतर होइत गेलए रचनामे । समाज दिस उन्मुख होइत छथि तऽ अपन सहज संस्कारक विरुद्ध वातावरण पाबि छगुन्तामे पड़ैत छथि । विडम्बनासँ टकराइत छथि । आत्मीयताक अभाव, ज्ञानक अवेहलना, विद्याक प्रति अनास्था, अर्थक बढ़ैत प्रभावक कारणेँ जोगाड़ लेल लोकक निर्लज्ज होयब, संवेदनहीनता, संस्कृतिक उद्योगीकरण आदिसँ मर्माहत गोविन्द बाबूक कथाकार क्रमशः व्यंगात्मक होइत गेल अछि। कतेक कथामे ई व्यंगक धार बेश तीक्ष्णतासँ उभरि कए आएल अछि । खास कऽ कए *नखदर्पणक* कथासभ मे । नखदर्पणक सम्पूर्ण कथा *'सगर राति दीप जरय'क* विभिन्न आयोजनमे पढ़ल अछि । गोविन्द बाबू मानैत छथि जे एहि कथासभकेँ लिखेबाक श्रेय *'सगर राति'* केँ छैक । यदि *सगर राति* नहि भेल रहितय तऽ गोविन्द बाबूक एहि कथासभक जन्मो भरिसक सम्भव नहि होइत । कतेक क्षति होइतय मैथिली कथाक ? पं. गोविन्द झा पण्डित छथि । बहुत शास्त्रक ज्ञाता छथि । अनेक पोथीक अनुवाद कएने छथि । अनुवादक छथि । सम्पादक छथि । शब्दकोशक निर्माता छथि । व्याकरणक विद्वान छथि । साहित्यक विभिन्न विधामे रचना कएलनि अछि । कऽ सकैत छथि । भाषाविज्ञानसँ लऽ कए देशमे चलैत राजनीति पर्यन्त पर आवश्यकता भेला पर लिखि सकैत छथि। हुनकर कर्मठताक मादे तऽ कहल नहि जाय। सभ दिन कर्म पर आस्था रखनिहार, श्रम पर भरोस कएनिहार गोविन्द बाबूक व्यक्तित्व हमरालोकनिक लेल प्रेरणाक स्त्रोत अछि। साधना ओ श्रम, निश्छलता ओ सहजता, आत्मीय व्यवहार, सदैव विमर्श लेल प्रस्तुत आदि विभिन्न गुणक लेल गोविन्द बाबू आदरणीय छथि। मैथिली साहित्य हुनकर योगदान सँ समृद्ध भेल अछि। भाषा समृद्ध भेल अछि। गोविन्द बाबू हमरा लोकनिक मित्र छथि। एक बुजुर्ग मित्र.....। ईश्वरसँ प्रार्थना जे ओ एहिना रहथु। चिर युवा.....।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

युव-चेतनाक दीपक लाबन

❑ *श्री सारस्वत*

पटनाक अशोक राजपथ । बाँकीपुर पोस्ट ऑफिससँ पूर्व सड़कक कातेकात किताबक दोकान । दोकान पर ठाढ़ एकटा व्यक्ति । केस पाकल । हाथमे छड़ी । कान्हमे एकटा झोड़ा लटकल । दोकानदारसँ पूछि रहल अछि - *'ओड़िया भाषाक डिक्शनरी अछि ?'* 'नहीं' । सूनि दोसर दोकान दिस बढ़ि जाइछ । हम चौंकि ई सोचैत पछोड़ धरैत छी जे पटनाक अशोक राजपथ पर मैथिली बजनिहार ई के छथि । ओहू मे ओड़िया भाषाक डिक्शनरी तकनिहार । धखाइत नाम पुछलिअनि । कहलनि - पं. गोविन्द झा । झुकलहुँ,पैर छूबि प्रणाम कएलिअनि । आशीर्वादक बदलामे कहलनि - 'कलमक संग समझौता किन्नहुँ नहि होमक चाही, अपन नजरि कें अपन कलमक नोक पर सदिखन रखबाक प्रयास करू ।'

फेर साहस कएल । अपने तँ छी पंडित मुदा चानन-ठोप किछु नहि ? कहैत छथि-पाखंडी अन्धविश्वासी प्रवृत्ति कें हम नहि मानैत छी आ ने एहेन लोककें हम देखय चाहैत छी । हिनक प्रत्येक शब्द हमरा अपना-सन बुझाएल । हृदय मे धसि गेलाह ।

हृदयमे तँ ओही दिन बसि गेल छलाह जखन नवम वर्गमे हिनक एकांकी 'मनुक्खक मोल' पढ़ने छलहुँ । शिक्षक आ विद्यार्थीक बीच चर्चा चलैक पं. गोविन्द झाक 'मनुक्खक मोल' समग्र समाजक चेतनाक मोल थिक । सहजरूपें एतेक पैघ गप्प कहि देब ओहि दिनमे हम नहि बुझैत रही । गुरूजी जे पढ़ाबथि तकरा मनोयोग पूर्वक सूनि खिस्सा जकाँ मोन राखि ली । मुदा 'मनुक्खक मोल' क लेखककें देखबाक सेहन्ता होअय लागल । समय बीतैत गेल । मिथिला मिहिरमे प्रकाशित एकटा कथा 'भीख' पढ़लहुँ । आनो-आनो रचना पढ़बाक आ देखबाक अवसर भेटैत गेल छल । आ से जखन अशोक राजपथ पर अकस्मात् पं. गोविन्द झा भेटि गेलाह तँ अनुभव कएलहुँ कोनो हेराएल दामी वस्तु भेटि गेल हो । संयोग एहन जे मैथिली साहित्यमे सेहो पंजाबी साहित्य जकाँ कथा-आन्दोलनक जन्म भेल । सगर राति दीप जरय लागल। पं. गोविन्द झा दीपक लाबन बनि गेलाह । साँझसँ भोर धरि एकाग्र भए कथा सुनैत आ अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत । अपना वयवर्गक एक मात्र प्रतिनिधि । ऊर्जासम्पन्न । बिना झुकने ओघेंने । जखनि कतेको अनुज कथाकार आ आ श्रोता गर ताकि पसरि जाएब नहि बिसरैत छथि । पं. झाक व्यक्तित्वक एकटा सबल पक्ष एतय ई होइछ जे जखन ई कथा पढ़ैत छथि, वाचन शक्ति मध्य एकटा एहन अभिनय करैत छथि जे लोक उद्वेलित भए उठैछ । कतेको गोटय हुनका सुनबा लेल पहुँचैत छथि । घटना थिक घोघरडीहा कथा-गोष्ठीक। तेसर पहर राति । अधिकांश भाषाप्रेमी झपकी लेमय लागल छलाह । मुदा जखनहि पं. गोविन्द झाक नामक घोषणा भेल धाँय-धाँय सभ किओ बैसि एकाग्र भए गेल । ई घटना सिर्फ रचनेक व्यक्तित्वक नहि, हुनक विशिष्ट व्यक्तित्वक प्रति आकर्षणक सेहो थिक । पैटघाटक सगर राति मे *'विद्यापतिक आत्मकथा'* क लोकार्पण होएबाक रहैक । हम चौकि गेलहुँ, विद्यापति कहिया ने भेलाह । मुदा हुनक आत्मकथा आब ? ई निश्चिते पंडितजीक आत्मकथा होएत । विद्यापतिक बहाने अपन गप्प कहने होएताह, मुदा पढ़ला पर एकटा गप्प सोचैक लेल बेर-बेर बाध्य कए दैत अछि जे ऐतिहासिकताकें प्रमाणिकता मे अनबाक लेल ई जे काज कएलनि अछि, से की सरिपहुँ सत्य अछि अथवा सत्य-सन अछि । हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत जे *'विद्यापतिक आत्मकथा'* मे अभिव्यक्त सत्य, सत्य सनक नहि, वस्तुत: सत्य थिक । पंडितजीक सत्य ओएह थिक जे समाजक सत्य अछि । तें सत्यकें कहबाक सेहो एकटा अपन पृथक बाट बनौने छथि भाषिक ऋषि।

मैथिलीक अधिकांश ख्याति लब्ध आ वयोवृद्ध साहित्यकार नवका तूरक साहित्यकारकें प्रतिभाहीन, उखठाह आ अविनयी मानि फराक रहबाक आ रखबाक चेष्टा करैत छथि, ओतय ओहि वर्गकें पण्डित झाक स्नेह आ मार्गदर्शन भेटैत छैक । एक दिनक घटना थिक । दरभंगाक मिश्रटोला चौक । नवयुवक साहित्यकार घेरने छनि सभकें सूनि रहल छथि । अन्तमे कहैत छथिन्ह- *'यौ जखन दसटा वेश्याकें अपन आँखिसे देखबैक, तखन ने सर्वश्रेष्ठक चुनाव होएत । नै तँ जएह भेटल, सएह अपूर्व अद्वितीय; तें सभ किछु पढ़ू, सभकें पढ़ू । आ तखने उत्कृष्टक चयनक आँखि पाएब ।'* दसमे एकक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चयन करएवला व्यक्ति एहू अवस्थामे कतेक युवा छथि, युवासँ वेशी दृष्टिक ताकतवर छथि, से एहिसँ स्पष्ट भए जाइछ । हिनक व्यक्तित्वक इएह विशेषता पं. गोविन्द झाकेँ मैथिली भाषा-साहित्यक अद्यतन गतिविधिसँ परिचित रखैत छनि जखनि कि हिनक वयवर्गक अथवा कमो वयसक कतेको रचनाकार ततेक आत्ममुग्ध जे गतिविधिक कोनो पता नहि रहैत छनि । *सामाक पौती* मैथिल समाजक पौती थिक । उघाड़ि कए देखब तँ सभ किछु सैंतल भेटत । कोना सुरक्षा लेल झँपने छथि ई अपन सभ्यता आ संस्कृतिकेँ, कथाक माध्यमसँ से विचारणीय अछि । *नखदर्पण* केँ देखू, बात किछु नहि, मुदा आधुनिकतामे पौराणिकताकेँ, रुढ़िवादिताकेँ, कुरूपताकेँ, विसंगतिकेँ, कुहरैत समाजक दर्दकेँ कोना राखल गेल अछि । हिनक रचनाक व्यक्तित्व जिनगीक एकमेव व्यक्तित्व नहि थिक। तेँ हमरा नजरिमे पं. गोविन्द झा अपन भाषाक एकटा प्रबल आ प्रखर प्रहरी थिकथि जे कखनहुँ, कतहु आ कोनो ठाम ठाढ़ भए वर्तमान मानव-हृदय केँ भाषाक माध्यमे रक्षा करैत ठाढ़ भेटैत छथि । हिनक व्यक्तित्वमे अपूर्व विलक्षणता अनुभव करैत छी । एक तँ संस्कृतक विद्वान, दोसर अंग्रेजी, ओड़िया, असमी, नेपाली भाषाक अद्यतन गतिविधिक परिचय आ अनुवादक क्षमता, तेसर प्रवासी मैथिल समाज केँ जगेबाक आ एकसूत्र भए बढ़बाक सदिखन प्रोत्साहन मुद्रा एवं सभकिछु अपनहि आँखिए देखबाक प्रयास, आदि गुण हिनक व्यक्तित्वमे एहन सक्रियता भरि देलक अछि जे ओ कौखन थकैत नहि छथि । खाहे दिन हो वा राति, रौद ओ पानि, मैथिली भाषाक समस्या हो, उत्थान संबंधी कोनो कार्यक्रम हो, सूचना पबितहि प्रस्थान कए जाइत छथि । समवयस्कलोकनि भनहि हिनक लोकप्रियतासँ स्पर्धावश सिंघ तोड़ि पररूमे मिलबाक काकु करैत रहथु, मुदा पं. गोविन्द झा युवा साहित्यकारक प्रेरणा स्रोत छथि। शब्दयोद्धा छथि । लाबन छथि जाहि पर युवा तूरक चेतनाक दीप बरि रहल अछि ।

◆

भाइक भ्रातृप्रेम

❑ *श्री गोविन्दानुजो माधवः*

तीनूमे जेठ भाइ छलाह पं जीवनाथ झा 'विद्याभूषण' जनिका हम दुनू भाइजी कहैत छलिऐन्हि । हमरासँ सतरह वर्ष जेठ । जखन ओ अध्यापन करए लगलाह तखन हम दुनू भाइ 'लघुसिद्धान्त कौमुदी' प्रारम्भ कएल । भाइ (पं गोविन्द झा) हमरा सँ तीन वर्षक जेठ छथि। दुनू गोटे संगहि विद्याध्यन शुरू कएल । हमर अवस्था अल्प तथा भाइक अवस्था अधिक एवं हमरासँ अधिक तीक्ष्ण बुद्धि । हम डरपोक तथा भाइ निर्भय । अतः हमरा चरिआएकेँ भाइ अपना संग विद्यालय लए जाथि तथा लए आबथि । गाम पर पाठ लगएबाक समयमे जतए-जतए हमरा गड़बड़ाए, भाइ बुझादेल करथि ।

शास्त्रि द्वितीय खण्डक परीक्षा समीप भाइ दुखित पड़ि गेलाह । परीक्षा नहि देबाक निश्चय कए लेल । किन्तु जखन ओ ई बुझलैन्हि जे हुनका छोड़ि हमहू परीक्षा नहि देब तँ परीक्षामे सम्मिलित भेलाह । भाइकेँ अपन श्रेणी (प्रथम) आ हमरा अपन श्रेणी (द्वितीय) पूर्वहि जकाँ भेटल ।

एक बेर तराइ सँ ठक्कन झाक संगे दुनू भाइ अबैत रही । साँझ भए गेलाक कारण ओ पण्डौलमे अपन मामक ओतय रात्रिविश्रामक हेतु लए गेलाह । देखितहि हुनक मामा हमरा दुनू भाइकेँ कोड़मे लए आनन्दसँ गदगद भए - 'बहराउ ऐ, बहराउ ऐ' ई कहैत आंगन दिस विदा भेलाह । गृहिणीकेँ कहलथिन्ह-देखू रामलक्ष्मणकेँ हमरा कोड़मे । अहाँक आंगन भगवान आएल छथि । आनन्द मनाउ, अपन कर्तव्य करू ।' स्वदेशी विलेतीक कारण बाबूक परिवार तीन खण्ड भए गेल छलन्हि । अपने असगरे गाममे छलाह । हम दुनू भाइ जखन गाम अएलहुँ तँ एक साँझ हम आ दोसर साँझ भाइ भानस करथि । हमरा मनमे ई विषय उत्पन्न भेत जे भाइ जेठ थिकाह तथा प्रतिदिन हमरा पाठ लगाए दैत छथि तें हुनको पारमे हमहि भानस करी से उचित थिक । दोसर ई बात जे, भानसो करबाक काल भाइ कोनो पोथी संगहि रखैत छथि । बीच-बीचमे समय पाबि पढ़ैत छथि, हिनका भानस करबामे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मन नहि लगैत छैन्हि । अत: हमरे भानस करब उचित थिक । ई हम मनहि मन बूझि, हमहि दुनू सांझ भानस करए लगलहुँ । भाइओ आबि जाथि, ओतए रहथि । परन्तु ई बुझब हमर ठीक नहि भेल "क्षणश: कणश्चैव विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्" - एकर पालन भाइ करैत छलाह ।

भाइजी जनकपुरमे सावधिक ज्वरसँ ग्रस्त भए गेल छलाह । एक छात्रद्वारा पत्र पठाए बाबूकेँ सूचित कएलथिन्ह जे परिचयकि हेतु एक भाइ एहि छात्रक संग आबथि । एहि प्रसंग दाइ-बाबूक गप्प सुनि भाइ कहलथिन्ह - *"हम जाएब, माधव छोट छथि । हम जेठ छी ओ गाम पर रहथु ।"* भाइक गेला पर हम बूझि सकलहुँ । एक मास ओतए रहय पड़लनि । अवशिष्ट समयमे 'तीस दिन मे अंग्रेजी' ई पुस्तक रटि गेलाह ।

एक बेरक घटना थिक । परिवारक काज हेतु भाइ दू दिन लागातर 2 बजे रातिमे मधुबनी विदा होथि आ संबंधित व्यक्तिक दरभंगासँ नहि अएलाक कारणेँ घूमि आबथि, तेसर दिन फेर मधुबनी अएबाक समाद अएलैक । बाबू कहलथिन्ह - *अहाँ थाकि गेल छी लगातार दू दिन यातायात भए गेल । अहाँ आइ नहि जाउ, माधवकेँ पठबैत छिऐन्हि । किन्तु भाइ कहलथिन्ह - 'नहि, दू दिन जखन पार लागि गेल तखन तेसरो दिन पार लगबे करत, आइ धरि हमरे जाए दिअ ।'* भाइ तेसरो राति मधुबनी प्रस्थान कएलन्हि आ काज कराए अएलाह। कनेको थकनी नहि बूझि पड़लैन्ह । ई थिक भाइक श्रमशीलता आ ज्येष्ठता निर्वाहक उदाहरण-*क्लेश: फलेन हि पुनर्नवता विद्यते ।*

भाइजी दुखित भए पटना आएल छलाह । अपना डेरा पर राखि भाइ जे भाइजीक सेवा कएल से प्रशंसनीय, अतुलनीय एवं आदर्श छल । समय पर भोजन कराएब, औषध खुआएब औषध कीनि आनब, चिकित्सक केँ स्थिति कहब आदि भाइ स्वयं करैत छलाह । भाइजी पुछैत छलथिन्ह, कतेक पाइ भेल, भाइ कहैत छलथिन्ह- *हमरा संगमे टाका छल, हम दए देलिऐंक । अहाँ बुझिकेँ की करबैक । अहाँ जहिआ नीके भए जाएब, तहिआ बुझल जएतैक ।* भाइ एक मास रहि गाम घूमि अएलाह । जा धरि बाजल होइत छलन्हि करोपरि कहैत छलाह-एहन भ्रातृप्रेम एहन उदारता कहिओ टाका नहि मङलैन्हि, हमर कुल परिचर्या ओएह करैत छलाह । ई सभ सपनहुँमे नहि देखने छलहुँ जे साक्षात् देखल । गोविन्दसँ हम उऋण नहि होएब ।

भाइ निश्छल छथि, विशुद्ध छथि स्वाचारसँ हमरा लोकनिक सफल अध्ययन लेखन तथा संलग्नताक, जेठ तथा छोट भाइक प्रति कर्तव्यताक तथा मनूक्त दशविधलक्षण धर्मावलम्बिताक आदर्श स्थापित कएल और अपन उज्ज्वल यश:प्रसारसँ संसारकेँ उपकृत कएल अछि ।

यद्यपि 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात सत्यमप्रियम्' ई नीतिकारक उक्ति थिक किन्तु भाइ एकरा नहि मानैत छथि। *'सत्ये नास्ति भयं क्वचित्'* एकरा पूर्णत: मानैत छथि।

◆

दशास्त्री

❑ *डा० श्री शिववंश पाण्डेय*

शब्दब्रह्म के अनन्य उपासक पंडित गोविन्द झा शीर्षस्थ विद्वानों की पंक्ति में रखे जाने की सभी अर्हताओं से परिपूर्ण बहुभाषाविद् साहित्यकार हैं । संस्कृत, हिन्दी, मैथिली भाषाओं के घुरिकीर्तनीय विद्वान के रूप में इनकी यशोगाथा से तो सभी परिचित हैं किन्तु कम लोगों को ज्ञात है कि अंग्रेजी, उर्दू, नेपाली, असमिया, बंगला, आदि भाषाओं में भी इनकी गति है। इनके बहुआयामी साहित्यिक व्यक्तित्व को किसी एक आलेखमे समेटना दुस्साध्य है, अत: इनके कृतित्व के किसी एक पक्ष को ही आधार बनाकर तोष धारण करना एकमात्र विकल्प है ।

पंडित झा वैयाकरण एवं शब्दशास्त्री के रूपमें सर्वख्यात हैं । इन दोनों पक्षों का समवेत दर्शन मुझे प्राप्त है । एक अबोध द्रष्टा की भाँति कूल पर खड़ा रहकर ही हमने इनके गंभीर ज्ञानार्णव को विस्मयविमूढ़ हो केवल निहारा है। अपने

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सरकारी सेवा-काल में मैंने दो अधीत शब्द-शिल्पियों - सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' और पंडित गोविन्द झा को शास्त्रीय संघर्ष करते कई बार देखा है। पाणिनि की *अष्टाध्यायी* के मर्मज्ञ और पतंजलि के महाभाष्य के निर्वचनकर्त्ता पुण्यश्लोक 'सुजन'जी को भी कई शास्त्रीय विन्दुओं पर पंडित झा से जिज्ञासा और परामर्श करते देख मुझे उस समय आश्चर्य होता था । 'सुजन' जी सदृश भाषाविद् से शब्दशास्त्रीय या व्याकरणिक गुत्थियों पर साधिकार बात करने का साहस विरले को ही होता था । पंडित झा को ऐसे ही एकमात्रविरल विद्वान के रूप में सबों ने स्वीकारा है ।

सर्वविदित है कि स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद बिहार ही प्रथम राज्य था जिसने सबसे पहले हिन्दी को राजकाज की भाषा अर्थात् राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया । शताब्दियों से विदेशी भाषाओं में हो रहे राजकाज को हिन्दी माध्यम से किये जाने के प्रारंभिक चरण में सर्वाधिक कठिनाई पारिभाषिक हिन्दी शब्दों की थी । चूँकि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में भी बिहार को अग्रणी की भूमिका निभानी पड़ी थी । इस गुरुतर उत्तरदायित्व का भार उठानेवाले स्व. रामलोचन शर्मा 'कंटक' और स्व. सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' को एक ऐसे सहयोगी की आवश्यकता थी जो संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं पर समान अधिकार रखता हो और जो सन्निष्ठ भाव से इस महत्वपूर्ण कार्य में उनका सहसंगी बने । पंडित गोविन्द झा उनकी अपेक्षाओं के संपूरक बने और उनके अध्यवसाय एवं कारयित्री प्रतिभा के प्रतिफल हैं - **राज्य** सरकार द्वारा प्रकाशित *पदनाम-शब्दावली* और *राजकीय प्रशासन- शब्दावली*। शब्दनिर्माण की दिशा में इन दोनों प्रकाशनों का अखिल भारतीय स्तर पर क्रोशशिलात्मक महत्व रहा है । इनमें अन्तर्विष्टि शायद ही कोई शब्द हैं जिनके निर्माण, रूपायन, प्रसंस्करण में पंडित झा का यथेष्ट योगदान न रहा हो । एवंविध स्पष्ट है कि पंडित झा बिहार में पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण की नींव के ध्यानाकर्षण पत्थर रहे हैं ।

पंडित झा के साथ या उनके सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में मुझे शब्द-निर्माण कार्य एक लम्बी अवधि तक करने पड़े थे। इस दरम्यान इनकी विद्वत्ता, कार्य-संस्कृति एवं कार्यशैली से सुपरिचित होने का सुयोग मेरे जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । व्यवस्थित कार्य-पद्धति और आचार्यानुकूल व्यवहार इनके अधीनस्थों में कार्य के प्रति अभिरुचि ही नहीं पैदा करते बल्कि उन्हें कर्त्तव्यनिष्ठ तथा जागरुक भी बनाते । मद, मत्सर, अमर्ष से असम्पृक्त इनका शालीन व्यवहार "विद्या ददाति विनयं" का प्रत्यक्ष संमूर्तन था । "पंडित जी" के अभिधान से सर्वत्रचर्चित श्री गोविन्द झा भाषा संबंधी समस्याओं के संहारक और शब्द-निर्माण सम्बन्धी जटिलताओं के प्रत्याश्रयी थे ।

पंडित झा शब्दों के प्रयोग में, चयन में सदा सतर्क और सजग रहते थे । ये महाभाष्यकार पतञ्जलि के इस विचार के अनुपोषक थे कि "एक: शब्द: सम्यग् ज्ञात: सुप्रयुक्त: स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति" अर्थात् एक भी शब्द भलीभाँति जानकर प्रयोग करने से लोक परलोक में कामनाओं को प्रदान करने वाला होता है । शब्द शास्त्रकी महिमा का बखान करते वे थकते नहीं । वे *वाक्यपदीय* के इस श्लोक का सदा उल्लेख किया करते थे -

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके य: शब्दानुगमादृते ।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ।।

अर्थात् लोक में कोई भी प्रत्यय (ज्ञान) ऐसा नहीं जो शब्द के बिना प्राप्य है । प्रत्येक ज्ञान शब्द से अनुविद्ध रहता है । अनादि परम्परा जानने वाले ऋषियों का भी कथन है कि संसार शब्द का परिणाम है -

शब्दस्य परिणामोऽयमित्याम्नायविदो विदु: ।

(वाक्यपदीय)

वैयाकरणों का मत भी प्राय: इसी आशय का द्योत्क है-

अथेदमान्तरं ज्ञानं सूक्ष्मवागात्मना स्थितम् ।
व्यक्तये स्वस्य रूपस्य शब्दत्वेन विर्वतते ।।

(वाक्यपदीय, ब्रह्मकांड-112)

वाक्यपदीयकार भर्तृहरि के अनुसार मनुष्यों के शरीर में सूक्ष्म वाक् के रूप में स्थित जो आन्तरिक ज्ञान (ज्ञाता) है, वही अपने रूप की अभिव्यक्ति के लिए शब्द या ध्वनि के रूप में परिणत होता है ।

शब्दसम्बन्धी उपर्युक्त सिद्धान्तों का उल्लेख मात्र यह उपदर्शित करने के लिये किया गया है कि पंडित झा वस्तुत: शब्द को ब्रह्म (ज्ञाता) रूप में सदा से स्वीकारते रहे हैं, इसीलिए शब्दान्वेषण एवं शब्दार्थान्वयन की तप:पूत साधना में इनका अभी तक का सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा है ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शब्द को अर्थ देने का काम भाषा-वैज्ञानिक करते हैं और शब्द के अनुसार अर्थों को विन्यस्त करने का दायित्व कोशकार निभाते हैं । सफल एवं दक्ष कोशकार वही हो सकता है जिसमें भाषा (शब्द) में आरोपित अर्थों की अद्यावधिक यात्रा और गतिविधियों का सम्यक् ज्ञान हो । प्रण्डित झा मेरी दृष्टि में ऐसे ही कुशल एवं कीर्तनीय कोशकारों की श्रेणी में वरेण्य हैं । इसीलिए बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के निदेशक रूप मे जब मुझे विद्यापति-कोष-निर्माण के लिए विशेषज्ञ की आवश्यकता का अनुभव हुआ तो पंडित झा ही ऐसे विद्वान दिखे जो प्रस्तावित कोश को अपनी ज्ञान-रश्मियों से प्रद्योतित कर सकते थे । दुर्भाग्य है कि पंडित झा के निर्देशन में प्रस्तुत उक्त कोश का प्रकाशन कतिपय कारणों से अभी तक नहीं हो सका है । कोशनिर्माण के क्रम में मुझे इनकी अवहट्ट भाषा एवं अपभ्रंश भाषा में जैसी गहरी पैठ दिखाई पड़ी उससे मैं चमत्कृत हो उठा । संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिली भाषा की इनकी स्वीकृत ख्याति से तो मैं अवगत था किन्तु अवहट्ट एवं अपभ्रंश भी इनके लिए हस्तामलकवत् हैं, इसकी पूर्व जानकारी मुझे नहीं थी ।

पारिभाषिक कोश-निमार्ण के लिए विविध विषयों का सम्यक् ज्ञान और अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के विभिन्न अर्थ-संदर्भो के सूक्ष्म अन्तर की जानकारी आवश्यक है । इसके बाद विभिन्न अर्थों के लिए पृथक-पृथक हिन्दी पर्याय ढूढ़ने एवं गढ़ने होते हैं । पर्याय सटीक एवं ठीक अर्थबोधक हों, इसके लिए दोनों भाषाओं (अंग्रेज़ी और हिन्दी) पर शब्द-निर्माता का समान अधिकार होना चाहिए । पंडित झा की संस्कृत-विद्वत्ता का लोहा तो सब मानते थे किन्तु अंग्रेजी भाषा भी इनकी वशवर्तिनी थी, इसे मेरे जैसे लोग तबतक नहीं जान सके थे जबतक कि शब्द-निर्माण के लिए चयनित विद्वन्मंडली में इन्हें जाने-माने अंग्रेजी विद्वानों से अंग्रेजी शब्दों का निर्वचन भी साधिकार करते देखा गया है । विज्ञान में व्यवहृत तकनीकी शब्दों की इनकी व्याख्या भी विज्ञानवेत्ताओं को बहुधा मान्य होती रही हैं । समान्यत: कहा जा सकता है कि पंडित झा पारिभाषिक कोशकार की सभी सदलंकृतियों से द्युतिमान अक्षरपुरुष हैं और इस क्षेत्रमें इनके यशस्य अवदान स्मर्यमाण हैं । इनके द्वारा वर्षो के विद्वज्जन्य श्रम से प्रस्तुत मैथिली-अंग्रेजी कोश क़ी पाण्डुलिपि प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। पांडुलिपि के अवलोकन से पंडित झा की भाषा वैज्ञानिक सूक्ष्मदर्शिता और शब्दकोशीय निपुणता का सहज ही संज्ञान हो सकता है ।

पंडित झा के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में भी दो शब्द कहने के लोभ का संवरणा नहीं होता है । "काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्" को श्री झा ने अपने जीवन में पूर्णत: उतार लिया है ।"विद्यैव सर्वम्" ही उनका मोटो है । "अद्रोह: सर्वभूतानां कर्मणा मनसा गिरा" इनका स्वभाव है और "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" इनका व्यापार है ।

ऐसे विद्याव्यसनी एवं वंदनीय विद्यापुरुष के लिए वेदकार के शब्दो में हमारी कामना है।

पश्येम शरद: शतम्
अदीना: स्याम शरद: शतम् ।

◆

विशिष्ट अनुवादक

❑ *डा० (श्रीमती) प्रतिभा राय*

बिहार का मधुबनी इलाका अपनी कला और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध रहा है, गोविन्द झा उसी तरफ के हैं । हालांकि बाद में पटना की हवा लगी । पर मूल संस्कार मधुबनी के हैं। चाहे अनुवाद हो या मौलिक लेखन, वह सौकुमार्य, वह कलात्मक चयन-विश्लेषण हमेशा उनसे जुड़ा है।

साहित्य अकादेमी से उनका सम्पर्क काफी पुराना है । परन्तु मैं जब अनुवाद कार्यशाला में दिल्ली गई थी, तब उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला । भाषा-बोली का उतार-चढ़ाव बरावर होता रहा । आज मैथिली की जो स्थिति है, उसमें पं. झा का योगदान उल्लेखनीय है । अनुवाद कार्यशाला में उनकी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भाषा पर सूक्ष्म पकड़ के कारण मेरा ध्यान उधर गया । अनुवाद साधारणत: भाषा के ऊपरी आवरण को देखकर दूसरी भाषा में कथ्य ले जाता है, परन्तु उसमें भाषा के जरिये जो संवेदना अभिन्न भाव से जूड़ी होती है वह घायल हो जाती है । पं. झा का ध्यान अनुवाद के समय इस ओर अधिक रहता है । अत: उनके अनुवाद मैथिली में हों वा हिन्दी में उनकी दृष्टि भाव-सघनता से कभी नहीं हटती ।

वैसे आज आंचलिकता का जोर अधिक है। परन्तु झा आंचलिक भाषा के रचनाकार होते हुए भी उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय है । उड़ीसा प्रवास के दौरान उनमें जो मुक्त भाव और संयत व्यवहार मिले, लगता है, देश को पं. गोविन्द झा जैसी मानसिकता वाले लोगों की अधिक आवश्यकता है ।

◆

साहित्यसाधक

❑ *डा० (श्रीमती) मिथिलेश कुमारी मिश्र*

लोग कहीं जाते हैं तो अपनी-अपनी रुचि के अनुसार भ्रमण करते हैं किन्तु मेरा व्यसन अलग है । मैं जहाँ भी जाती हूँ वहाँ के साहित्यसेवियों, साहित्यिक संस्थाओं से मिलने का ऐसा लोभ होता है कि अन्य भौतिक चीजें देखने की सुध ही नहीं रहती । साथ के लोग मुझे साहित्यिक उन्माद का असाध्य रोगी मान मेरी खिल्ली उड़ाते हैं, यहाँ तक कि कभी-कभी अशोभनीय व्यंग्य भी करते हैं जिससे मुझे आनन्दमिश्रित क्लेश का यदा-कदा सुखानुभव होता है । साहित्य-साधकों के प्रति मेरी भक्ति और साहित्यिक संस्थाओं एवं आयोजनों के प्रति मेरी अनुरक्ति को कदाशयपूर्ण अर्थ देने वाले द्वेषी बन्धुओं के व्यापार को सहज ढंग से लेने की मुझे अब आदत-सी हो गयी है । जो भी हो, साहित्य-साधना मेरी दृष्टि में ब्रह्म-साधना से कम गौरवपूर्ण नहीं और साहित्य-साधक ज्ञानपिपासु सन्त से कम पूज्य नहीं । पंडित गोविन्द झा ऐसे ही साहित्य-सन्त हैं जिन्हें अपनी अन्वेषण की प्रवृत्ति से मैंने प्राप्त किया ।

बहुभाषाविद् के रूप में श्री झा की ख्याति से अवगत होने का अवसर मुझे तब मिला जब मैं भाषा-संगम नाटक संस्था के समन्वयक की हैसियत से पटना मे भाषा संगम तथा पटना विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक समारोह का आयोजन कर रही थी । मुझे उस समय ऐसे विद्वानों की खोज थी जो अधिकाधिक हिन्दीतर भाषाओं के जानकार हों । उसी समय पता चला कि झा जी केवल संस्कृत, मैथिली के ही विद्वान नहीं हैं, अपितु बंगला, असमिया, नेपाली और उर्दू के भी निष्णान्त मनीषी हैं । उनकी अपभ्रंश, तथा अवहट्ट की जानकारी का ज्ञान मुझे तब हुआ जब बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में मुझे उनके मार्ग निर्देशन में *विद्यापति-कोश* निर्माण का गुरुतर भार सौंपा गया था । संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं पर उनके साधिकार निर्वचन से कोई भी साहित्य-साधक उनकी ज्ञान समिधा से अप्रभावित नहीं रह सकता । कृश कलेवर में इतने ज्ञान का अँटाव किसी को भी स्तंभित कर सकता है । संस्कृत भाषा में इनकी प्रवीणता से प्रभावित होकर मैंने अपनी संस्कृत रचना *'सुमनाञ्जलि'* उन्ही को समर्पित की थी । संस्कृत के साथ ही साथ अंग्रेजी की गम्भीर जानकारी उनके सास्वत आकर्षण का महत्वपूर्ण तथ्य है ।

मैथिली भाषा के पांक्तेय विद्वानों में भी झा परिगण्य हैं। विद्यापति के व्यक्तित्व पर इनका गवेषणात्मक उपन्यास मैथिली जगत में क्रोशशिलात्मक यश अर्जित कर चुका है । विद्यापति के अस्पष्ट कई स्थलों एवं प्रसंगों का सप्रमाण विवेचन उपन्यास को फैक्ट्स और फिक्शन (तथ्य और कल्पना) के मणिकांचन संयोग से दीप्त कर देता है । विद्यापति पर आधारित इस कोटि का उपन्यास शायद ही अन्य हो । 'सादा जीवन उच्च विचार' के ध्वजवाहक झा की विद्वत्ता के समक्ष शैक्षिक उपलब्धियाँ महत्वहीन हो जाती है । विद्या को ही सर्वस्व माननेवाले झा जी के विचार, विनम्रता, विनयशीलता, उदारता दर्शनीय हैं । सिद्धान्तो के प्रति कठोरता, आस्थाओं के प्रति निष्ठा, संकल्पों के प्रति आंशिक सहिष्णुता उनके व्यक्तित्व का मूलधन है ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्रचार-प्रलोभनों से प्रविरत झा जी की मूक साहित्य-साधना की अन्तर्ध्वनि सर्वत्रनिनादित होने लगी है । अश्वत्थ वृक्ष की तरह साहित्य-सेवा में छह दशकों से अन्तर्लीन पंडित झा अपनी स्नेह-छाया में विद्यानुरागियों, जिज्ञासुओं, ज्ञान पिपासुओं को विश्रान्ति प्रदान कर रहे हैं ।

अब साहित्य-साधना के संन्यास आश्रम में इनका प्रवेश हो चुका है । हाथ में कागज कलम का कमंडल लिये इनका वीतरागी स्वरूप अध्ययन-मनन की आराधना में स्थितप्रज्ञता प्राप्त कर चुका है । यजुर्वेद के शब्दों में मेरी कामना है :

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

◆

पानी की तरह तरल और मुलायम व्यक्तित्व

❑ *श्री गंगाधर प्रसाद श्रीवास्तव*

सेवाकाल में स्वनामधन्य पंडित गोविन्द झाजी और मैं एक ही मुहल्ले (राजवंशीनगर) में आगे-पीछे सरकारी आवास में लम्बे समय तक साथ रहे थे । ईश्वरीय विडम्बना है कि अभी भी हम दोनों एक ही आवासीय मुहल्ले, पटेलनगर में हैं। वे पूर्वी पटेलनगर में और मैं पश्चिमी पटेलनगर में हूँ । कभी-कभार पंडित जी से भेंट हो जाती है तो उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे हम स पूर्व ही सेवानिवृत्त हुए थे ।

अनन्त ऊर्जा समेटे, अपनी ही धुन में मस्त, मैथिली साहित्य के मूर्धन्य पुरोधा, साहित्य की अन्य कई विधाओं में निष्णात, आत्माभिमानी साधक पंडित गोविन्द झा जी को देखते ही अतीत अपनी ओर खींचता है और आज से लगभग तैंतालीस वर्ष पूर्व की कुछ यादें जीवन्त हो जाती हैं ।

घटना 1953 की है । मैं अनुवाद विभाग में आया ही था । अनुवाद संवर्ग में पिछले बरामदे में एक कुर्सी-टेबुल पर बैठे मेरी निगाह एक अत्यन्त अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर पड़ी जो पहनावे से लेकर अन्य सभी आचरण में विलक्षण दीख पड़े । इकहरे तन पर कुर्ता-पायजामा और आँखों पर चश्मा चढ़ाए बराबर अपने कार्यो में लीन इस व्यक्ति के प्रति मैं सहज ही आकृष्ट हुआ । पता करने पर मालूम हुआ, वे श्री गोविन्द झा जी हैं, जिन्हें उनके पांडित्य के लिए सभी पंडित जी कहते हैं । उनकी पोशाक उन दिनों सचिवालय में प्रचलित पोशाक (पैंट-शर्ट) से सर्वथा भिन्न थी । श्रद्धावश उनके करीब होने की उत्कंठा हुई जिसका उन्होंने सहर्ष स्वागत किया । तब से लगभग तीस-बत्तीस वर्षों तक हम लोग साथ ही रहे । अनुवाद की जटिलता एवं क्लिष्टता, शब्द अथवा जटिल वाक्य-खण्ड की सही व्याख्या तथा विभागीय अन्य समस्या आदि के सुलझाव, सभी विषयों में पंडितजी प्रेरणापुंज बने रहे। राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित अनमोल शब्दकोशों के निर्माण में पंडित जी का कृतित्व राजभाषा विभाग कभी भुला नहीं पाएगा ।

इस संदर्भ मे 1978 की एक छोटी, किन्तु उनके व्यक्तित्व के मानवीय और स्नेहिल पक्ष को उजागर करनेवाली घटना का उल्लेख मैं न करूँ तो यह बेईमानी होगी । उन दिनों पंडितजी सहायक निदेशक के पद पर आसीन थे । इस पद को धारण करते हुए वे विभाग के निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी थे । जहाँ तक मुझे स्मरण है मैं इन दिनों लेखाशाखा का प्रभारी राजभाषा पदाधिकारी था । मेरी पुत्री का विवाह उसी वर्ष मई महीने में होने वाला था । मेरे मासिक वेतन से गृह-निर्माण अग्रिम की वापसी के मद में लगभग 400 /- रु० प्रतिमाह कटौती हो रही थी । विपत्र तैयार करनेवाले सहायक से अप्रैल माह के वेतन से मैंने इस कटौती को छोड़ देने का आग्रह किया । सहायक बेचारा पेशो-पेश में पड़ गया । इस विषय में उसने निकासी पदाधिकारी की हैसियत से पंडितजी को सूचित करना आवश्यक समझा । पंडितजी इस बात के लिए राजी नहीं हुए । सहायक ने यह बात जब मुझसे कही तो मैं भी पंडितजी से स्वयं मिला और उनसे कटौती स्थगित करने का घोर आग्रह किया । 1978 में 400 /- रु० की कीमत आज से कहीं अधिक थी । मगर पंडितजी किसी कीमत पर राजी नहीं हुए । क्षोभ और खुदगर्जी में मैंने उनसे कुछ कटु-वचन भी कहे मगर पंडितजी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हँस कर टाल गए मगर कटौती रोकने को किसी कीमत पर राजी नहीं हुए । पंडित जी के प्रति एक अत्यन्त कठोर और असहयोगी व्यक्ति की धारणा लेकर मै लौट आया । कटौती होनी थी सो हो गई । वेतन की निकासी हुई।मुझे भी और पंडितजी को भी वेतन मिला। शाम में कार्यालय छोड़ने के पूर्व पंडितजी मेरे कक्ष में आए और मेरी बगल में बैठ गए । विवाह की तैयारी आदि कें संबंध में कई प्रश्न उन्होंने मुझसे पूछे जिनका उत्तर मैंने पूर्वाग्रह के चलते बड़े अनमने ढंग से दिया । मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद वे जले पर नमक छिड़कने आए हैं । पंडितजी बिल्कुल सामान्य थे। चलते समय उन्होने मुझे एक लिफाफा थमा दिया, खोलकर देखा तो उसमें 400 /- रु० थे। मैं तो अवाक रह गया । एक-दो दिन पूर्व जिस व्यक्ति को मैंने हृदयहीन, असहयोगी, न जाने क्या-क्या नाम मन ही मन दे रखा था वह व्यक्ति अपने कर्त्तव्य और आपसी संबंध का पालन किस खूबी से कर गया इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। अपने कर्त्तव्य के निर्वहन में नारियल की ऊपरी परत के सामान कठोर और अन्दर से पानी की तरह तरल और मुलायम व्यक्तित्व का साक्षात्कार उसी दिन मुझे हुआ और साथ ही, अपनी सोच के बौनेपन का एहसास भी ।

भीड़ से सर्वथा भिन्न और साहित्यिक साधना की निरन्तरता ने पंडितजी को सीढ़ी-दर सीढ़ी नाम और यश की ऊँचाइयाँ दी हैं । हाल ही, साहित्य अकादमी ने उनकी मैथिली कृति "सामाक पौती" के लिए उन्हें पुरस्कृत किया है, जो उनकी साहित्यिक उपलब्धि को कहीं गहरे रेखांकित करती है । हिन्दी, मैथिली और संस्कृत साहित्याकाश को अभी पंडितजी से बहुत कुछ पाने की आशा और प्रतीक्षा है । मेरी अमित शुभकामना है कि समर्थन और प्रशंसा की भूख से परे पंडित गोविन्द झाजी को ईश्वर और चिरायु रखें ।

◆

स्नेहमूर्ति पण्डितजी

❑ *श्री नसीमुद्दीन अंसारी*

पंडित गोविन्द झा राजभाषा विभाग के मेरे आधा दर्जन बुजुर्गों में से एक हैं । दुबला-पतला बदन, सादा कपड़ा और विशाल हृदय - ये हैं श्री पंडित गोविन्द झा । राजभाषा में अपने पदस्थापन के दौरान मुझे भाषा सीखने में पंडित जी से बड़ी मदद मिली । आज भी जब उनकी ओर ध्यान जाता है तो लगता है मानों वे सदा शान्त भाव में रहते, कभी उत्तेजित नहीं होते । यही उनके व्यक्तित्व का अपार गुण है जिससे हम कनिष्ठ उनकी ओर लपकते और भाषा-ज्ञान प्राप्त करते।

बिहार प्रशासनिक सेवा में योगदान देने हेतु राजभाषा विभाग से विदा होते समय पंडित जी ने मुझे फारसी-अंग्रेजी का एक शब्द-कोश भेंट स्वरूप दिया था । बड़ी उपयोगी पुस्तक थी । आवास-परिवर्तन में कहीं खो गई । बेहद मलाल है । पर पंडित जी का स्नेह-भाव आज भी ताजा है क्योंकि *मिटता नहीं है नक्शे-कुहन एक बार में ।*

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सूत्रपात

❑ श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय

कभी जिन्दगी में कुछ ऐसा भी हो जाता है जिसकी व्यक्ति कल्पना भी नहीं किये रहता है। वैसे मुझे साहित्य-सर्जना में अभिरूचि बचपन से थी, लेकिन अपनी इस साहित्यिक जिन्दगीमें मैं कभी अनुवाद भी करूँगी, इसे तो सोचा भी नहीं था । मेरी एक सहेली है, नीता बैनर्जी । उसने मुझे मैथिली में बातचीत करते हुए सुना था। एक दिन उसने मुझसे कहा - 'तुम मैथिली में अनुवाद का काम क्यों नही करती हो ?' सुनकर मुझे हँसी आ गई । मैने बस इतना ही कहा - 'धत्, क्या बात करती हो ? मैथिली बोल लेती हूँ, इसका मतलब यह तो नहीं कि उस भाषा पर मेरी इतनी पकड़ हो जाय कि मैं अनुवाद करने लगूँ ?' उस समय तो वह कुछ नहीं बोली पर दो-चार दिनों के बाद ही साहित्य अकादेमी की लाइब्रेरी से एक-दो मैथिली कहानी संग्रह ले आई और मुझसे पढ़ने को कहा । मैथिली साहित्य की किताबें पढ़ने का यह मेरी जिन्दगी का पहला मौका था । जैसे-जैसे पढ़ने लगी, मैं उसमें डूबने लगी और अन्त में ऐसा हुआ कि मैं कलम लेकर उसका हिन्दी रूपान्तरण करने लगी । यह सब हुआ था , पर मुझे अपने आप पर विश्वास नहीं हो रहा था । लगता था, जैसे यह क्षणिक घटने वाली घटना है । कहाँ अनुवाद और कहाँ मैं ?

घटना 1991 के अन्तिम दिनों की है । साहित्य अकादेमी द्वारा राष्ट्रीय साहित्यिक अनुवाद कार्यशाला प्रायोजित थी । नीता भी एक सहभागी थी । एक दिन सुबह-सुबह वह मेरे पास आई और मुझे विश्वयुवा केन्द्र ले गई, जहाँ कार्यशाला चल रही थी । वहाँ जाकर उसने मेरी भेंट पं. श्री गोविन्द झाजी से करवाई ।

मैथिली के प्रकाण्ड विद्वान, एक दिव्य और आपादमस्तक धवल व्यक्तित्व के समक्ष अपने को पाकर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था । लेकिन जैसे ही पं. श्री गोविन्द झाजी से मैंने बातचीत शुरू की, संशय का सारा कोहरा एकदम छट गया और यहीं से शुरू हुई मेरे साहित्यिक जीवन की एक नई यात्रा, नई विद्या अनुवाद की ।

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Pandit Govind Jha : A Successful Translator

❑ *Sri Sushil Jha*

Pandit Govind Jha and I worked in the Department of State Language, Govt. of Bihar. At that time, it was called Translation Deptt., the main work of which was to translate official matters from English to Hindi and at times, from Hindi to English. It was considered as a department of experts.

I joined the department in sept. 1956. Pandit Jha was there from before, about five years or so. Thus, he was my senior colleague, senior in all respect - in respect of age, in length of service and seniority and above all in matters of scholarship.

After the retirement of Pt. Satyavarta Sharma 'Sujan' who gave the department a name and fame in realms of scholarship, Pt. Jha filled the void to a great extent. Pt. Sharma was a scholar of Sanskrit, English and Hindi of outstanding repute, rather scholarship incarnate. Though Pt. Jha had not received higher education in college, he amply supplemented his knowledge of English by acquisition from different sources. With strong background of Sanskrit, he emerged as a guru when occasion demanded. While interpreting the meaning of a sentence with multiple clauses, he proved his worth and made the way easier for other translators. His study of Sanskrit grammar combined with his deep insight in philology made the meaning of the sentence clear and gave the translation a natural and artistic look.

Those were the days when Hindi was taking a definite shape in official use and was struggling to forge out standard terminology and expression to be used uniformly for various official purposes such as acts, bills, rules, regulations, codes, manuals etc. With the enactment of the Official Language Act and the Language of Laws Act, Hindi was in a hurry to enter govt. offices. Now it had become incumbent upon govt. to dislodge English with utmost speed. The personnel of the then Translation Deppt (now the Deptt. of State Language or Rajbhasha Deptt.) had a tough time particularly in deciding standard replica of technical English terms. The Govt. of India and different State Governments particularly in Hindi speaking states were struggling to come out with their handouts of standard glossaries prepared by different boards of experts. Dr Prof. Raghuvira's monumental dictionary (Comprehensive English - Hindi Dictionary) acted as a principal source for synonyms and was a becon light for those who consulted it.

In the background Pt. Govinda Jha acted as a co-ordinator and path-finder. He helped the board of experts constituted to finalise technical terms

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

by finding suitable synonyms from different sources and also by providing suitable pieces of translation for others. Pandit Ji was and still is a very swift translator. He understood the inherent meaning of the sentence and finished the translation quickly. His translation seldom needed revision and correction. His swiftness in work saved him ample time to translate works falling outside the official sphere. He finished translation of Beam's Comparative Grammar of the Modern Aryan languages of India in Hindi and of History of Nepali Literature in Maithili. The latter translation brought the coveted award to Pandit Jha from Sahitya Academy who was already in reciept of Akademi's award in literature in Maithili. He also lent a helping hand to Achaya Ramlochan Sharan in his opus magnum (the Mathili version of *Ramcharit manas*) and also finished the translation of a number of books from the Indian Council of Historical Research and the NCERT. After departure of Pandit Satyavrata Sharma 'Sujan' it was my privilege to consult Pt. Jha with confidence while finishing some ticklish pieces of translation.

Apart from help he rendered to translators, he proved an asset in formulating Hindi equivalents for technical English words. I quote an instance in this aptitude. I was engaged in translation of Wildlife Protection Rules. The serivces of an expert (perhaps Shri V.N.Singh then a conservator of forests) was sought to help me. He explained to me the nature, habits and other particulars of birds and animals. He was an introvert scholar. The word SANCTUARY come before us. I suggested "अभयारण्य" in Hindi which is usually accepted for sanctuary. Shri Singh disagreed. He asked "well what would you then suggest for sanctuary for crocodiles or turtles ? Would you suggest अभयारण्य for sanctuary even for these aquatics ? अरण्य has the shade of 'forest' while crocodiles or turtles has nothing or very little to do with it. अरण्य does not fit well in this context. So please find out other suitable equivalent". I felt like a pricked balloon. I consulted Pt. Ji. He too agreed with Shri Singh. After a good deal of brain raking, he found out आश्रयणी which Shri Singh thanked us to have searched a very good word in Hindi. Perhaps Govt. of India has also accepted this word for all India use. This was Pandit Govind Jha's marvel.

Lexical aptitude is an integral part of translation. Pt. Jha is a very good lexicographer. He has compiled his own glossary of technical terms. He is still engaged in this work. One who knows him intimately knows him first as a wizard of words. Others call him a 'grammarian'. Some one will tell, he is a litterateur. Here I have confinied myself to the caption of this article. I have delineated only his qualities as a translator It is for others to bring to light other facets of his personality. For me he is *Guruji* who combined in him all the above qualites and qualification. Above all he is a good citzen, an idiosyncrat.

◆

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा :

अर्चा ओ चर्चा

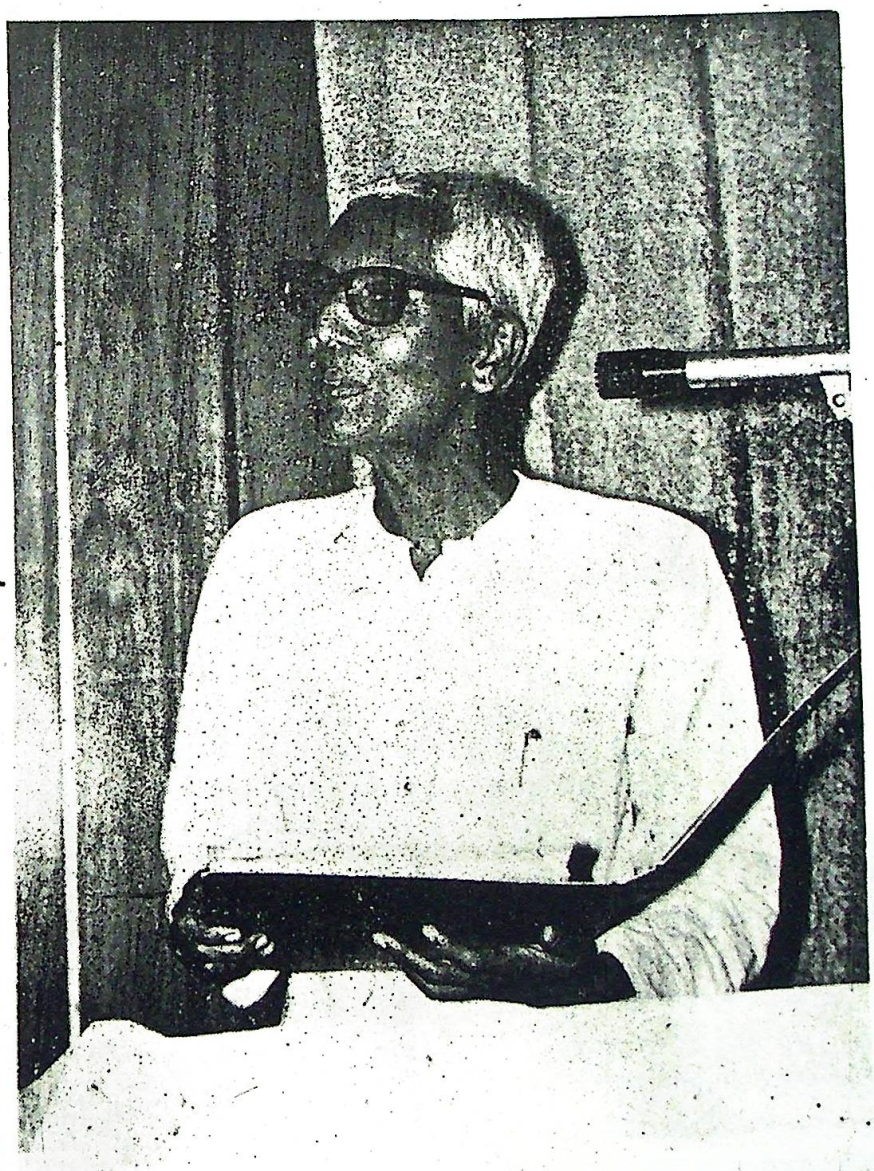

दृष्टि ओ सृष्टि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं. श्री गोविन्द झा एवं मैथिली भाषाध्ययन

□ प्रो. श्री आनन्द मिश्र

मैथिलीक पठन-पाठन जखन विद्यालय तथा विश्वविद्यालय धरि प्रारम्भ भेल तँ सभसँ पहिने पाठ्यग्रन्थक उपलब्धिक समस्या उत्पन्न भेल। साहित्य पढ़एबाक हेतु संग्रहंसभक निर्माण भेल तथा व्याकरण आदिक हेतु ग्रन्थरचनाकार्य सेहो आरम्भ कएल गेल। व्याकरण आदिक हेतु जाहि ग्रन्थक रचना आरम्भिक कालमे भेल ताहिमे परम्परानुसारे पोथी लिखल गेल तथा आदिसँ अन्त धरि ओएह क्रम रहल जाहिसँ छात्रलोकनि बराबरि चर्वित-चर्वणे करैत रहलाह तथा व्याकरणमे हुनकालोकनिक रुचि नहि भए सकलैन्हि। समस्या किछु जटिल तखन भए गेल जखन स्नातकोत्तर कक्षामे मैथिलीक प्रवेश भेल। पढ़एबाक हेतु भाषाविज्ञान, छन्दःशास्त्र, काव्यशास्त्र आदिक पोथीक मैथिलीमे सर्वथा अभाव छल। मिथिलाभाषा एवं साहित्यक अभिभावक लोकनिक ध्यान एहि दिशामे गेल तथा ओहि विषयसभक ग्रन्थक प्रणयन दिस विद्वान् लोकनि साकांक्ष भेलाह। मैथिलीमे व्याकरण, कोष, छन्दःशास्त्र एवं अलंकारशास्त्र तथा भाषाविज्ञानक पोथी प्रस्तुत करब साधारण व्यक्तिसँ सम्भवो नहि छल तेँ एहि हेतु तत्तद् विषयक विद्वान्लोकनिसँ आग्रह एवं अनुरोध कएल गेल जे ओलोकनि मिथिलाभाषामे ओहन ग्रन्थक प्रणयन कए मैथिलीक भंडारकेँ समृद्ध करथि। एहि दिशामे पं. श्री गोविन्द झाक परिवारक जे योगदान मैथिलीकेँ प्राप्त भेलैक से शब्दतः व्यक्त नहि कएल जाए सकैछ। पं. श्री गोविन्द झाक पूज्य पिता महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा *मिथिलाभाषाविद्योतन, मिथिला भाषाकोष* तथा *अलंकार-सागर* एहि तीनि ग्रन्थक रचना कए मैथिलीक हेतु जे कार्य कएल से मिथिलाभाषाक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे अंकित रहत। महावैयाकरणक *मिथिला-भाषा-विद्योतन* आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक क्षेत्रमे एक एहन ग्रन्थ अछि जकर जोड़ा भेटब दुर्लभ अछि। पाणिनीय शैलीमे लिखित उक्त ग्रन्थ सर्वसाधारण हेतु ओतेक उपयोगी होएब कठिन तेँ हुनक स्वनामधन्य द्वितीय पुत्र पं. श्री गोविन्द झा *मिथिलाभाषा विद्योतनक* सुलभ रूप *लघु-विद्योतकनक* नामेँ प्रकाशित कएल जाहिसँ मैथिली भाषाक अध्ययनक मार्ग किछु प्रशस्त भेल। लघु विद्योतनमे पं. श्री गोविन्द झा सरल भाषाक द्वारा व्याकरणक स्थल सभक व्याख्या उपस्थित कएल जाहिसँ शिक्षक तथा छात्र दूनू उपकृत भेलाह। एहिसँ पूर्व भाषाध्ययनसम्बन्धी ग्रन्थसभ देशी एवं विदेशी विद्वान् लोकनि द्वारा अंग्रेजीमे उपलब्ध रहलासँ मैथिली पाठकक हेतु अबोध छल। भाषामे एहन रचनाक सर्वत्र स्वागत भेल।

पं. श्री गोविन्द झा अपन पूज्य पिताक कार्यकेँ आओर आगाँ बढ़ाओल। अंग्रेजीमे उपलब्ध ग्रियर्सन, बीम्स, हॉर्नले, कॅलॉग, डा. श्री सुभद्र झा, डा. सुनीति कुमार चटर्जीक ग्रन्थ सभक अध्ययन कए मैथिलीमे ओहि भाषाक अध्ययन प्रस्तुत करबाक दिशामे अग्रसर भेलाह। *लघुविद्योतनक* अतिरिक्त *मैथिली भाषाक उद्गम ओ विकास, मैथिली भाषाका विकास* तथा *उच्चतर मैथिली व्याकरण लिखि* मैथिलीक भंडारक एहि रिक्त अंशकेँ पूर्ण करबाक भागीरथ प्रयास कएल। हुनक पोथीसभ पाठ्यक्रममे राखल गेल, जाहिसँ छात्र तँ उपकृत होएबे कएलाह संगहि शिक्षकोवर्गकेँ परम उपकार भेलैन्हि।

भाषाविषयक पं. श्री गोविन्द झाक चारि गोट पोथी प्रकाशित अछि–(1) *लघु विद्योतन,* (2) *मिथिलाभाषाक उद्गम ओ विकास,* (3) *उच्चतर मैथिली व्याकरण* तथा (4) *मैथिली भाषाका विकास।* एहिमे अन्तिम पुस्तक हिन्दी भाषामे अछि तथा अन्य तीनू मैथिलीमे प्रकाशित अछि। **लघुविद्योतनमे** पं. श्री गोविन्द झा *मिथिलाभाषा-विद्योतनक* सूत्रसभकेँ छोड़ि देल अछि तथा यथासाध्य सुलभ भाषामे व्याकरणक विषयसभक उपस्थापन कएल अछि। महावैयाकरण अपन ग्रन्थमे सर्वत्र ओहन भाषाक प्रयोग कएल अछि जे संस्कृतसँ अनभिज्ञ व्यक्तिक हेतु बूझब कठिन अछि किन्तु पं. श्री गोविन्द झाक भाषा सरल रहलासँ व्याकरणक गूढ़ तत्वहुकेँ बुझबामे सौकर्य होइत छैक। ओना व्याकरणक भाषा किछु शास्त्रीय होएबे करैतक कारण पारिभाषिक शब्दावलीक विना ओकर कार्य नहि चलतैक तथा शास्त्रक भाषा तँ शास्त्रीये होएतैक। दोसर विषय ई जे शास्त्र बुझबाक हेतु पहिनेसँ किछु पृष्ठभूमि रहब सेहो आवश्यक, अन्यथा बुझबामे असौकर्य स्वाभाविके। *लघु विद्योतन* क प्रकाशनसँ पूर्व प्रकाशित *मिथिलाभाषाविद्योतनक* अनेक कठिन स्थल स्पष्ट भेल तथा ओहि ग्रन्थक सर्वत्र स्वागत भेल।

जखन मैथिलीक अध्यापन एम. ए. कक्षा धरि प्रारम्भ भेल तखन पाठ्यक्रममे एक सम्पूर्ण पत्र (100 नम्बरक) भाषा-विज्ञानक राखल गेल किन्तु मैथिलीमे लिखल भाषाविज्ञानक सैद्धान्तिक पक्ष पर कोनो पोथी उपलब्ध नहि छल। फलतः छात्रलोकनि अंग्रेजी वा हिन्दीक पोथीसँ अपन निर्वाह करैत रहलाह। विकल्पो कोनो दोसर नहि छल। स्व. रमानाथ झा मैथिलीक कतोक व्यक्तिसँ तद्विषयक पोथी लिखबाक आग्रहो कएल, अन्तमे पं. श्री गोविन्द झा एकटा, पोथी लिखल *मैथिली भाषाक उद्गम ओ विकास* जे कलकत्तासँ प्रकाशित भेल। पं. श्री झा स्वयं ओहि पोथीक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भूमिकामे अपन सीमाकेँ स्वीकार कएल अछि तथा कहल अछि जे ओ परम्परानुसारेँ विभिन्न पोथीसँ वस्तु-संग्रह कए ग्रन्थ लिखल अछि। उक्त ग्रन्थ 'निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते' उक्तिकेँ चरितार्थ कएलक तथा मैथिलीक छात्र लोकनि, जे अंग्रेजी भाषामे ओतेक पटु नहि छलाह, से निसाँस, छोड़लैन्हि। हिन्दी भाषामे ग्रन्थ तँ उपलब्ध छल किन्तु उदाहरणादिक हेतु छात्रलोकनिकेँ बेशी ऊहि करए पड़ैत छलैन्हि। पं. श्री झाक पोथीक प्रकाशनसँ छात्रक ओहि कष्टक बहुत दूर धरि निवारण भेल।

पं. श्री गोविन्द झा दोसर दिस भाषाविज्ञानक सम्यक् अध्ययनक दिशामे जुटि गेलाह तथा ओहि विषयक अनेक ग्रन्थक अध्ययन कएल। बीम्स, हॉर्नले आदिक रचनासँ ओ बड़े प्रभावित भेलाह। बीम्सक पोथीक हिन्दीमे अनुवादो कएल। निरन्तर भाषाक विषयमे चिन्तन करैत पं. श्री झा मैथिली भाषाक ऐतिहासिक विकासक दिशामे कार्यरत भेलाह जकर फलस्वरूप ओ हिन्दी मे *मैथिली भाषा का विकास* नामक ग्रन्थक रचना कएल जे हिन्दी ग्रन्थ अकादेमीसँ प्रकाशित भेल। उक्त ग्रन्थमे पं. श्री झा मैथिलीक ग्रन्थ पर आधारित भाषाक सम्यक अध्ययन प्रस्तुत कएल। एतए हुनका जाहि पूर्वाचार्यलोकनिक मतसँ पार्थक्य भेलैन्हि ओकरा ओ तर्कपूर्ण भाषासँ खण्डन कए अपन मतक स्थापना कएल। एहि क्रममे हुनका ग्रियर्सन, डा. सुनीति कुमार चटर्जी आदिक मतक खण्डन करए पड़ल। ई कार्य पं. श्री झाक गहन अध्ययन एवं चिन्तनक परिणाम थिक। जार्ज ग्रियर्सन प्राकृतक क्षेत्रीय विभाजन, बहिरंग उपशाखा, मध्यवर्ती उपशाखा तथा अंतरंग उपशाखामे कएल। मैथिली बहिरंग उपशाखाक प्राच्य समूहक अन्तर्गत राखल गेल। बहिरंग उपशाखाक प्राच्य समूहक अन्तर्गत ग्रियर्सन ओड़िया, बिहारी (मैथिली, मगही, भोजपुरी), बंगला तथा असमिया एहि चारि भाषाकेँ राखल। डा. सुनीति कुमार चटर्जी एहि विभाजनक खंडन करैत नवीन भारतीय भाषाक क्षेत्रीय विभाजन उदीच्य, प्रतीच्य, मध्यदेशीय, प्राच्य एवं दाक्षिणात्य-एहि पाँच भागमे कएल। पं. श्री झा अपन पुस्तक *मैथिली भाषा का विकास* क पृ. 27 मे एकर विशद चर्चा कएल अछि। मैथिली तथा अपभ्रंशक मध्यमे अवहट्ठ भाषाक स्थितिकेँ मानैत पं. श्री झा मैथिलीकेँ पश्चिमी मागधीक अन्तर्गत मानैत छथि। पुनः मैथिलीक उपभाषाक प्रसंग सेहो पं. श्री झा ग्रियर्सनक सिद्धान्तक खंडन युक्तियुक्त कएल अछि। ग्रियर्सनक गँवारी, छिका-छिकी, जोलहा, खोट्टा आदि नामक पं. श्री झा खण्डन कएल अछि।

पुनः पं. श्री झा मैथिलीक स्वन, स्वनिम एवं उपस्वन सभक विशद चर्चा सोदाहरण कएल अछि। एहि विषय पर हिनकासँ पूर्व डा. श्री सुभद्र झा अपन ग्रन्थ **Formation of Maithili** मे एकर वर्णन कएने छथि किन्तु ग्रन्थ अंग्रेजीमे रहलासँ तथा मूल्याधिक्यक कारणेँ सर्वसाधारण ओहिसँ परिचित नहि छथि। पं. श्री गोविन्द झा द्वारा एकर फड़िछाएब मैथिलीक पाठकक हेतु परम उपकारी सिद्ध भेल अछि। सिद्ध साहित्य, ज्योतिरीश्वर एवं विद्यापति आदिक रचनासँ उद्धरण दए, पं. श्री झा ओकरा विशेष प्रामाणिक एवं विश्वसनीय सेहो बनाओल। सभ भाषाक अपन-अपन स्वनिक विशेषता होइत छैक। मैथिलीक स्वनिक विशेषताक जे दिग्दर्शन पं. श्री झा कराओल अछि ओ विलक्षण अछि। एहिसँ पं. श्री झाक पाण्डित्य एवं गम्भीर अध्ययनक परिचय भेटैत अछि। स्वनक पश्चात् शब्द-सम्पदाक वर्णन भेल अछि जाहिमे तत्सम, अर्द्धतत्सम, तद्भव एवं नवीन तद्भवक संग-संग देशी एवं विदेशी भाषासँ लेल गेल शब्द-सम्पदाक विश्लेषण कएल गेल अछि। एतेक विस्तार एवं वैज्ञानिक रीतिसँ प्रायः पं. श्री झासँ पहिने आन नहि कएने छलाह। एकर पश्चात् नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदिक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत भेल अछि जे पारम्परिक अध्ययन नहि भए नवीन वैज्ञानिक परिपाटीसँ भेल अछि। अन्तमे पं. श्री झा 'वाक्यरचना' पर भारतीय विचारधारानुसार विचार कएल अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे पं. श्री झा पश्चिमी पद्धति तँ पकड़ल अछि किन्तु ओकर सिद्धान्तक अन्धानुकरण नहि कएल अछि। एहि पोथीक विषयमे बहुत किछु लिखल जाए सकैछ किन्तु ई स्थल उपयुक्त नहि बूझि एकरा एतहि छोड़ैत छी।

पं. श्री गोविन्द झाक *उच्चतर मैथिली व्याकरण* 1979 ई. मे *मैथिली अकादेमी* सँ प्रकाशित भेल। एहिमे पं. श्री झा पारम्परिक-व्याकरण-रचना प्रक्रियासँ हटि कए नवीन परम्परानुसार ग्रन्थक प्रणयन कएल अछि। व्याकरणकेँ कोना व्यावहारिक तथा इष्टसाधक बनाओल जाए एहि विषय पर विचार करैत पं. श्री झा ओकरा भाषावैज्ञानिक भित्ति पर नव रूप देबाक प्रयास कएल अछि। पहिने व्याकरणक परिभाषामे ओकर प्रयोजन ई लिखल जाइत छैक जे व्याकरण ओ थिक जकरा पढ़लासँ भाषा शुद्ध-शुद्ध बाजए तथा लिखए आबए। ई उद्देश्य प्राचीन भाषा तथा परकीय भाषाक हेतु ठीक बुझना जाइछ किन्तु मातृभाषाक व्याकरणमे ओकर उद्देश्य निष्प्रयोजन बुझना जाइछ। कारण मैथिली बजनिहार तँ जन्महिसँ ओकरा बजैत छथि, ओकरा जनैत छथि, अपन विचार-विनिमय करैत छथि, तखन व्याकरणक उक्त परिभाषा हुनका निरर्थक बुझना जाइत छैन्हि। एकर फल ई भेल जे छात्रलोकनि व्याकरणसँ निरपेक्ष भए भाषाक विषयमे जनबाक आवश्यकता नहि बूझि व्याकरणक अध्ययनसँ विमुख भए गेलाह। फलतः मैथिली पढ़निहार पढ़ैत काल अपन भाषाक सम्यक् अध्ययन करबासँ वंचित रहलाह। पं. श्री झा अपन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उच्चतर व्याकरणक माध्यमसँ छात्र एवं शिक्षक दुहूक उपकार कएल अछि। यद्यपि एहि व्याकरणकेँ पूर्ण नव नहि राखल अछि। पं. श्री झा एतए मध्यम मार्गक अनुसरण कएल जाहि विषयकेँ ओ अपनहु 'आत्मनिवेदन' मे स्पष्ट कएल अछि। ओ एहि विषयक मार्मिकताकेँ बुझल जे मैथिलीक उच्चवर्गक छात्रकेँ मैथिली भाषाक स्वरूपक नहि, ओकर कृत्यक तथा भाव-बोधनमे ओकर भूमिकाक ज्ञान होएब परमावश्यक अछि तेँ पं. श्री झा सोचल जे एहि हेतु व्याकरणक पठन-पाठन, रीति, प्रश्नक शैली एवं परम्परागत व्याकरणक स्वरूपकेँ बदलव आवश्यक अछि। किन्तु आमूल परिवर्त्तन एकाएक कएने केओ ओकरा स्वीकार करत वा नहि तेँ पं. श्री झा मध्यमार्गक अनुसरण कएल।

एहि *उच्चतर व्याकरणमे* स्वतः स्तर किछु ऊँच अछि। कारक, सकर्मक, अकर्मक आदि विषयक गहन विवेचन एहिमे भेल अछि। जतए किछु विशेष गम्भीर विवेचन भेल अछि तकरा टिप्पणीमे स्थान भेटल अछि। पुनः परिभाषाक क्षेत्रमे सेहो पं. श्री गोविन्द झा नवीनता एवं गम्भीरताक परिचय दैत छथि। नवीन वैज्ञानिक सरणि पर परिभाषासभ देल गेल अछि। ओ परिभाषा सभ ओहने अछि जे भाषावैज्ञानिक क्षेत्रमे विश्वस्तर पर मान्यता प्राप्त कएने अछि। आधुनिक भाषाविज्ञानसँ स्वन-स्वनिम, अपिनिहित, युग्मक, लग्नक आदि पद एवं पदार्थक समावेश कए पं. श्री झा मैथिली व्याकरणकेँ नवरूप देल अछि।

अपन लेखकेँ पैघ नहि बनाए अन्तमे हम एतबए कहए चाहैत छी जे पं. श्री गोविन्द झाक भाषासम्बन्धी कार्यक जतेक प्रशंसा कएल जाए ओ थोड़ होएत। ओना पं. श्री झा मैथिली भाषाक अध्ययनक हेतु अपन परिसरक भाषा पर विशेष ध्यान देल अछि। एकरा हम लेखकीय सीमा मानैत छी। ओतेक विस्तारमे जएबामे समय तथा किछु अन्यो लोकक साहाय्यक आवश्यकता होइत छैक।

पं. श्री गोविन्द झाक भाषासम्बन्धी पुस्तकसभमे *मैथिली भाषाका विकास* विशेष विस्तारसँ लिखल गेल अछि। *उच्चतर व्याकरण* भाष्यक अपेक्षा रखैछ। पं. श्री झा मानि लेल अछि जे मैथिलीक उच्च कक्षाक छात्र बहुत विषय जनितहिँ होएताह किन्तु वस्तु-स्थिति भिन्न छैक। *उच्चतर व्याकरण* यद्यपि सूत्र शैलीमे नहि लिखल गेल अछि किन्तु ओकर प्रत्येक वाक्य विशद व्याख्याक अपेक्षा रखैछ, विशेषतः छात्रलोकनिक हेतु। आशा अछि जे पं. श्री झा मैथिलीक विशद व्याकरण आधुनिक रीतिएँ भविष्यमे मैथिलीकेँ देथिन्ह।

●

गद्यकार पं. श्री गोविन्द झा

□ डा. श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश'

मैथिलीक सुप्रतिष्ठित ओ वयोवृद्ध साहित्यकारलोकनिमे पं. श्री गोविन्द झाक स्थान निस्सन्देह विलक्षण छैन्हि से दुहू दृष्टिएँ—सहज, सरल, मधुर ओ सुस्निग्ध सामाजिक व्यक्तित्वक दृष्टिएँ, जे द्रुत गतिएँ परिवर्तनशील एहि युगक संग अपनाकेँ समन्वित करबाक सामर्थ्यक कारणे नव-नव पीढ़ीक साहित्यकारहु मध्य लोकप्रिय ओ चर्चित बनल रहैत छथि तथा अद्भुत शास्त्रीय मर्मज्ञता एवं असीम रचनात्मक प्रतिभाक कारणे, जाहिसँ मैथिली साहित्य हिनक विविध महत्वपूर्ण कृतित्वसँ अनवरत समृद्ध होइत रहल अछि। ओ एक दिस यदि भाषाविज्ञान, व्याकरण, छन्दःशास्त्र प्रभृतिक विद्वान् छथि, ओ ताहि विषयक अनेक पुस्तकक रचना कएल अछि, तँ दोसर दिस रचनात्मक साहित्यक प्रायः एकोटा विधा नहि छूटल अछि, जकर सफल प्रयोग ओ नहि कएने होथि। एतावता ओ एक संग विशिष्ट भाषावैज्ञानिक, वैयाकरण, कोषकार, छन्दःशास्त्री प्रभृति छथि तँ मैथिलीक निविष्ट कवि, कथाकार उपन्यासकार, नाटक, एकांकीकार, निबन्धकार, गवेषक, आलोचक, आदि सब किछु छथि। ओ अनेक प्राचीन ग्रन्थक सम्पादन कएने छथि एवं अनेक संस्कृत, बंगला आदि भाषाक अमर कृतिक सफल अनुवाद सेहो प्रस्तुत कएल अछि। एहीसँ स्वतः सिद्ध अछि जे हिनक साहित्यिक कृतित्व विशाल, बहुमुखी ओ विविधतामण्डित अछि ओ ताहि प्रसंग विद्वान्लोकनि पृथक्-पृथक् सूक्ष्म विवेचना कएनहि होएताह। एतए हम हिनक गद्यकार स्वरूप मात्रकेँ थोड़मे सुस्पष्ट करबाक प्रयास करैत छी।

मैथिलीमे गद्यरचनाक आरम्भ, वस्तुतः आधुनिक युगमे भेल, ओना मैथिलीक प्राचीन प्रामाणिक प्रथम गद्यग्रन्थ *वर्णरत्नाकर* चौदहम शताब्दीक प्रथमे चरणमे रचित भेल छल। तत्पश्चात् मैथिली गद्य-रचनाक कोनो विशिष्ट कृति 19म शताब्दीक अन्त धरि उपलब्ध नहि होइत अछि। आधुनिक युगमे मैथिली गद्यक आरम्भ भेल अंगरेजी शिक्षामे गद्यक प्रधानता देखि, ओकर महत्वकेँ बूझि आओर अन्य आधुनिक भारतीय भाषा-साहित्यमे द्रुतगतिएँ होइत गद्यक विकासकेँ देखि। पत्रकारिताक आरम्भ भेलासँ मैथिलीमे सेहो एकर विकासमे गति आएल। आरम्भमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली गद्य संस्कृतसँ उद्‌बोधित छल जे चन्दा झा, पं. जयदेव मिश्र, म. म. परमेश्वर झा, म. म. मुकुन्द झा 'बख्शी', प्रभृतिक गद्यमे परिलक्षित कएल जाए सकैत अछि। एहि शताब्दीमे पाछाँ मैथिली गद्यक जे सम्यक् विकास भेल, से पाश्चात्य साहित्यक गद्यक आदर्शसँ प्रभावित भए। मूलतः संस्कृत शिक्षासँ दीक्षित पं. गोविन्द झा आरम्भहिसँ अंगरेजी आदर्शकेँ ग्रहण कए, अपन गद्य-रचना आरम्भ कएल।

पाश्चात्य भाषामे 'प्रोज' (गद्य) शब्दक उत्पति भेल लैटिनक Prosa अथवा Proversa oratio सँ जकर तात्पर्य भेल सरल, सुस्पष्ट एवं प्रत्यक्ष वाग्धारा (straight forward discourse) सँ अर्थात् साधारण उपयोगक हेतु लेख-रूपमे अथवा भाषणक रूपमे प्रयुक्त भाषाक प्रत्यक्ष ओ अनलंकृत स्वरूपकेँ गद्य कहल गेल। व्याकरणक अनुसरण ओ लेखनशैलीक शुद्धता ओ परिनिष्ठताक संग यदि ओहिमे अह्लाद उत्पन्न करबाक विशेष गुण आबि गेल तँ ओ साहित्यिक गद्य भए गेल। लेखकक भेदसँ गद्यक अनेक भेद भए सकैत अछि एवं गद्यकारक रचना प्रतिभा ओ अभिप्रेषण शक्तिक अनुपातमे ओहिमे विविध गुण-दोषक समाहार सेहो होइत रहैत अछि। एतए एहि सभक विस्तारसँ विवेचनाक अवकाश नहि अछि, तथापि अनका प्रभावित करबाक गुणसँ युक्त उत्तम गद्यरचनाक निम्नलिखित लक्षण प्रसिद्ध अछि–"(1) जाहि समाजक हेतु लिखल गेल अछि, तकर बोधगम्य लेख भेल कि नहि, दुर्बोध तँ नहि रहि गेल, (2) जाहि रूपक प्रभाव लेखककेँ अभिप्रेत छैन्हि, सएह प्रभाव उत्पन्न भेल कि नहि, (3) लेखमे अशिष्टता वा अश्लीलता तँ नहि आएल, (4) लेख अत्यन्त हल्लुक तँ ने भए गेल जे केओ लिखि सकैत अछि, (5) जाहि विषयक निरूपण कएल अछि तकर प्रकृतिक अनुकूल लेख भेल कि नहि; ओ, (6) संवादमे संवादकर्त्ताक प्रकृतिक अनुकूल योग्यता, स्वाभाविकता तथा संगति भाषामे छैक कि नहि।"[1] एहिसँ अतिरिक्त गद्यक रचनारीति ओ गतिशीलता भाषाक मूलभूत प्रकृतिक अनुरूप भेल अछि वा नहि अथवा ओहिमे अंगरेजी, संस्कृत अथवा कोनो आने भाषाक प्रकृतिक छाप तँ नहि पड़ि गेल अछि। इएह मूलभूत प्रकृति कोनो भाषाक भिन्न लयबद्धता कहबैत अछि आओर जाहिसँ ओहि भाषाक विशिष्ट व्यक्तित्व स्थापित होइत अछि।

संक्षेपमे कोनो सफल गद्य-रचनाक मुख्य गुण थिक सरलता, स्वच्छता ओ स्पष्टता तथा वाग्धाराविशेषक अपन व्यक्तिगत प्रकृतिक अनुकूल शब्दसंरचना ओ वाक्यविन्यासक माध्यमसँ, स्वाभाविक गति ओ लयक समाहार एवं विचारक उपपादन ओ उत्प्रेषणमे प्रभाव उत्पन्न करबाक क्षमता। एहि दृष्टिएँ विचार कएल जाए तँ पं. गोविन्द झाक गद्य-रचनासबहिमे उपर्युक्त गुणसबहिक सहज सन्निवेश भैटैत अछि।

पण्डित झाक गद्य-रचनाकेँ मुख्यतः दुइ प्रभेदमे विभक्त कएल जाए सकैत अछि–(i) विविध साहित्यिक विषयक विवेचनाक रूपमे रचित ओ समय-समय पर पत्र-पत्रिका प्रभृतिमे प्रकाशित गवेषणात्मक निबन्ध एवं अधिकांशतः स्वरचित अथवा सम्पादित (यथा, छन्दःशास्त्र, विद्यापतिसंग्रह प्रभृति) ग्रन्थक भूमिकाक रूपमे रचित गद्य रचना, एवं (ii) अपन कथा, उपन्यास, नाटक सबहिमे प्रयुक्त गद्य-रचना। एही प्रभेदमे हिनका द्वारा अनूदित नाटकहुक गद्यरचनाकेँ समाविष्ट कएल जाए सकैत अछि। प्रथम प्रकारक गद्यरचनाकेँ व्यापक अर्थमे निबन्धक संज्ञा देल जाए सकैत अछि, विशिष्ट अर्थमे नहि जकर परिचय अंगरेजी साहित्यक सुप्रसिद्ध चिन्तक जानसन 'ए लूज सैली ऑफ माइण्ड' शब्दमे देने छथि। हमरा हिनक एहन शिथिल ओ अनियमित रीतिक निबन्ध दृष्टिपथ पर नहि आएल, कारण ओ जेहन तार्किक ओ नियमित दृष्टिक व्यक्ति छथि, तनिकासँ ओहि रीतिक रचनाक आशा नहिए कएल जाए सकैत अछि। तथापि हिनक कथात्मक कृतिसबहुमे ताहि शैलीक तात्विक अनुसन्धान स्थान-स्थान पर कएल जाए सकैत अछि।

उच्च कोटिक गद्यक सर्वप्रमुख विशेषता थिक सरलता ओ सरलताक सम्पादन होइत अछि परिचित शब्दक प्रयोगसँ। एहि दृष्टिसँ हिनक रचना सरलतासँ ओतप्रोत अछि। ई सामान्यतः छोट-छोट वाक्यक एहन विन्यास करैत छथि, जेना सामान्य शिक्षित वर्गक वार्तालापमे प्रयुक्त होइत अछि। पण्डित होइतहुँ दुरूह संस्कृत शब्दसँ विरत रहि जनसामान्यमे प्रचलित तत्सम शब्दक तँ प्रयोग अवश्य करैत छथि, परन्तु हिनक चेष्टा रहैत अछि तद्‌भव शब्दक अधिकाधिक प्रयोग करबाक, विशेषतः अपन कथात्मक गद्यरचनामे। भाषान्तर शब्दहुक ई प्रयोग करैत छथि, ओहन भाषान्तर शब्दसबहिक जे सहज रूपेँ सुपरिचितेटा नहि, मैथिली वाग्धाराक अभिन्न अंग भए गेल अछि; एहि प्रकार हिनक गद्य पढ़लासँ अर्थग्रहण प्रसादगुणात्मक तँ होइतहि अछि, स्वाभाविक ओ प्रभावपूर्ण सेहो लगैत अछि। हिनक रचनाक सरलताक ई गुण हिनक कथा, उपन्यास ओ नाटकमे प्रयुक्त गद्यमे तँ सहजहिँ निहित अछि, साहित्यिक गवेषणा-विषयक निबन्धमे सेहो ओही रूपक अछि। उदाहरणार्थ किछु उद्धरण देखल जाए :–

1. *"हमारा एक अन्दाज लगैत अछि। अपनेक हुकुम अछि जे लालटेम बारिकेँ आनए तखन भोजन देल जाए। हमरा इआरकेँ लालटेम नहि छैक। ओ हमरे लालटेम लए नित पढ़ै अछि। सम्भव तँहि ओ खाए नहि आएल अछि।"*[2]

1. मैथिली गद्यक प्रसंग– रमानाथ झा, पृ. 35.

2. लालटेम, सामाक पौती, पृ० 88.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

2. *"नाम राखल विद्यापतिक आत्मकथा। शुद्ध अर्थमे एकरा सेहो नहि कहि सकैत छी। विद्यापति बकलम खास लिखने रहितथि तखन ने हुनक आत्मकथा होइत।"*[3]

3. *"आइ-काल्हि हमरालोकनि अपन नामक संग झा, मिश्र, महतो आदि कोनो शब्द जोड़ैत छी जे कौलिक उपाधि कहबैत अछि। एतए हम मध्ययुगीन मिथिलामे प्रचलित कतिपय आस्पदक विवेचन करैत छी।"*[4]

उपर्युक्त उद्धरणसँ पं. गोविन्द झाक गद्य-शैलीक सरलताजन्य गुणात्मक स्वरूपक नीक जकाँ परिचय भए जाइत अछि। कथा-उपन्यास अथवा नाटक-एकांकीक कथनोपकथनमे प्रयुक्त हुनक गद्यक दृष्टान्त थिक पहिल उद्धरण जाहिमे 'अन्दाज, हुकुम, लालटेम' भाषान्तरक परिचित शब्दक संग-संग 'भोज, नित्य' सदृश सुपरिचित तत्सम ओ 'इआर' सदृश देशज शब्दक प्रयोग भेल अछि एवं जाहि-जाहिसँ प्रसादगुणात्मक अर्थग्रहण होइत अछि।

दोसर उद्धरण थिक *विद्यापतिक आत्मकथाक* लेखकक वक्तव्यक एक छोट-छीन अंश जाहिमे उक्तिमे वक्रता तँ अवश्य अछि, तँ ताहिमे निहित सरलताकेँ केओ अस्वीकार नहि कए सकैत अछि, कारण लेखकक कथ्य की अछि, से सत्वर स्पष्ट भए जाइत अछि। तेसर उद्धरण थिक पं. झाक गवेषणात्मक निबन्धक आरम्भिक अंश, जे अपेक्षाकृत अधिक संस्कृतगर्भित अछि यथा *कौलिक उपाधि, कतिपय आस्पद* आदि शब्द, किन्तु जाहि वर्गक पाठकक हेतु ई निबन्ध थिक, तनिके हेतु नहि, जनसामान्य शिक्षित वर्गहुक लेल ई शब्दसब कोनो कठिन नहि जाहिसँ उपनिबद्ध वाक्यक अर्थग्रहण सरलतापूर्वक नहि होइत हो।

गद्यमे स्वच्छताक तात्पर्य थिक बहुलताक संग *अभिधार्थमे* शब्दक प्रयोग। बहुलता एहि हेतु जे लक्ष्यार्थ अथवा व्यंग्यार्थमे शब्दक प्रयोग तँ जनसामान्योमे, वार्तालापहुक क्रममे स्वाभाविक रूपेँ सर्वत्र ओ सतत होइत अछि ओ एहिसँ बाँचल नहि जा सकैत अछि। मिथिलाभाषाक ई विशेषता थिक जे विशेष-विशेष पदक संयोगसँ धातुक अर्थ बदलैत रहैत अछि आओर ई अर्थ-परिवर्तन लक्षणासँ होइत अछि। तँ रूढ़ अर्थमे यदि लक्ष्यार्थक प्रयोग हो तँ, से भाषाक स्वच्छतामे बाधक नहि होइत अछि। व्यंग्यार्थक बिना गद्योक्तिमे वास्तविक साहित्यिक आस्वाद्य कहाँ प्राप्त होइत अछि आओर से पं. गोविन्द झाक गद्य-रचनामे सेहो विन्यस्त अछि, विशेषतः कथा, उपन्यास ओ नाटकक कथोपकथनमे ठाम ठाम एवं चारित्रिक विशेषताक चित्रण-विश्लेषणक क्रममे स्वयं लेखकक कथन अथवा निबद्ध चरित्रक टिप्पणीक रूपमे, परन्तु बहुलताक संग नहि, जेना प्रो. हरिमोहन झाक गद्यरचनामे अछि प्रत्युत कतहु-कतहु जाहिसँ हुनक गद्यक स्पष्टता दूरि नहि होइत अछि, कनेक अलंकृत अवश्य भए जाइत अछि। जतए धरि विशुद्ध *अभिधेयार्थमे* शब्दक प्रयोग द्वारा गद्यमे स्वच्छता-सम्पादनक प्रश्न अछि से हिनक विवेचनात्मक निबन्धमे देखल जाए सकैत अछि, जकरा हिनक समर्थनात्मक शैलीक गद्य-निबन्धनक उत्कृष्ट दृष्टान्त कहल जाए सकैत अछि, कारण एहन रचनामे लक्षणा-व्यंजनाक अवकाश नहि रहैत अछि, एहिमे उक्त रहैत अछि तथ्यक स्वच्छ अभिप्रेषण मात्र, यथा-

1. *काव्यमे छन्दक स्थान बड़ प्रमुख अछि किन्तु आश्चर्यक विषय जे साहित्यशास्त्रक आचार्यलोकनि काव्यस्वरूप निरूपणक प्रसंगमे छन्दक काव्यसँ कोन सम्बन्ध छैक, तकर सुस्पष्ट उल्लेख नहि कएने छथि।*[5]

2. *अदिव्य विभूतिक गाथा मैथिलीमे लोरिक, दीनाभद्री, नैका आदिक गीतक रूपमे उपलब्ध अछि... वस्तुतः इएह थिक हमरालोकनिक लौकिक अथवा मौखिक परम्पराक प्रबन्धकाव्य।.....जहिआसँ प्रबन्धकाव्यक लिखित परम्परा चलल मैथिली साहित्य पछुआए लागल।*[6]

गद्यक तेसर गुण मान्य अछि स्पष्टता। एहन वाक्यसंघटन ओ पदयोजना जे सहज ओ सरल रूपेँ अर्थक अभिप्रेषण करैत जाए से गद्यक स्पष्टतागुण कहल जाइत अछि। पं गोविन्द झा पैघ-पैघ वाक्य नहि लिखैत छथि, तँ अर्थान्वयनमे कतहु बाधा उपस्थित नहि होइत अछि आओर हुनक सदैव चेष्टा रहैत छैन्हि जे एहन शब्दसबहिक प्रयोग करी जे सामान्य शिक्षित जन प्रयोग करैत छथि तथा अपन भाषाक प्रकृतिक अनुकूल स्वाभाविक सेहो हो। साहित्यिक विषयविवेचनामूलक निबन्धमे ओ अपेक्षाकृत किछु अधिक ओ कतहु-कतहु किछु कठिनो तत्सम शब्दक प्रयोग अवश्य करैत छथि, परन्तु ओहने तत्सम शब्दक जे विज्ञ पाठकक हेतु सुस्पष्ट रहए जकरा हेतु ओकर रचना होइत अछि। हुनक एहन गद्यक उदाहरण हम हुनक भाषाक स्वच्छता विवेचना करैत कए चुकल छी। भाषाक ई गुण हिनक कथात्मक गद्यरचनामे सर्वत्र देखल जाए सकैत अछि। कथोपकथनमे भाषा पात्रानुकूल तँ अछिए, परिस्थिति-विवेचनहुँमे से सुस्पष्ट ओ मनोरंजक अछि:-

1. "नचारी एहि यात्राक एक विशेष वस्तु भए गेल। गाओले गीत गबैत रहब हमरा नीक नहि लागल। गाबए पड़ए प्रत्येक दिन। तँ नव-नव नचारी बनबैत गेलहुँ। महाराजक अंगरक्षक राउत केदरनाथ नटराज शिवक मुद्रामे डमरू बजबैत नाचथि आ हम गाबी। अड़ोस-पड़ोसक लोकक भीड़ लागि जाए।"[7]

3. *विद्यापतिक आत्मकथा*, पृ० 126। 4. प्रो० रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० 200। 5. *'छन्दःशास्त्रक भूमिका* पृ० 4। 6. मैथिली काव्यक विकास संगोष्ठी-28-29 जनवरी 95 मे पठित निबन्धसँ। 7. विद्यापतिक आत्मकथा पृ० 68।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

2. हमर कथापुरुष आइ नेता भए गेल छथि। केओ जे किछु होइत अछि से जन्मसँ नहि। परिस्थिति जेहन भेल जाइत छैक, लोक तेहन भेल जाइत अछि। प्रेयसीक पदाघात पाबि कतेक लम्पट महात्मा बनि गेल छथि, भूखक ज्वालामे झरकि-झरकि कतेक साधु-पुरुष डाकू बनि गेल छथि- ई सभ तँ पुरान कथा भए गेल। परन्तु लोक नेता कोना भए जाइत अछि से कथा एखन किछु नव अछि।[8]

उपर्युक्त उद्धरणमे उपनिबद्ध कथ्य कतेक स्पष्ट अछि, से व्याख्या-सापेक्ष नहि। परन्तु एहि मध्य गद्यक सुस्पष्टता-गुण मात्र ध्यातव्य नहि थिक, कथाक उपस्थापनक क्रममे उपनिबद्ध भाव ओ विचारक उत्प्रेरक गद्यक विशिष्ट ध्वनि ओ प्रभाव केहन प्रभावपूर्ण रीतिएँ सुनियोजित अछि, सेहो विचारणीय थिक। एकरा पढ़ला उत्तर एहन लयात्मक आरोह-अवरोह उत्पन्न होइत अछि जे गद्यकेँ अद्भुत साहित्यिक सौन्दर्य प्रदान करैत अछि, संगहि लेखक द्वारा वर्णित पात्र ओ परिस्थितिकेँ सजीव रीतिएँ अभिव्यक्त कए दैत अछि। इएह साहित्यिक सौन्दर्य गद्यरचनाक अनिवार्य तत्व थिक जे एकरामे साहित्यिक मर्यादा उत्पन्न करैत अछि। वस्तुतः सरलता, स्वच्छता अस्पष्टताक संग-संग गद्यक एक भिन्ने प्रकारक लयात्मक गुणक सन्निवेश भेलासँ ओहिमे गुण स्वतः आबि जाइत अछि। ई गद्यकारक सर्जनात्मक प्रतिभा थिक जे ओ गद्यक समग्र गुणात्मक तत्त्वकेँ समेटने भाव, विचार ओ भाषाकेँ अविच्छेद्य सूत्रमे एकरूप बनाए दैत अछि आओर सएह गद्यकारक अभिव्यंजना-शैलीक गुरुता थिक।

एही अभिव्यंजना-शैलीक महत्ताक अनुरूप पं. गोविन्द झा सर्वत्र भावानुरूप गद्य-शिल्पक कुशल प्रयोग कएने छथि जे हिनक विविध प्रकारक गद्य-रचनाक तुलनात्मक अध्ययनसँ स्वतः स्पष्ट भए जाइत अछि। विवेचनात्मक निबन्ध प्रभृतिक हिनक गद्य-प्रकारक उदाहरण दए चुकल छी, नीचाँ कथपोकथनमे प्रयुक्त भाषाक किछु उदाहरण उद्धृत अछि :–

1. घूटर–बूढ़ि नहि तन। हम नाङरि-लूल्हिसँ करब रओ।
   टुनटुन–'कका, अपने तँ छिऐ एकटङ्गा आ' कनिञा तकबै दुटङ्गी, से कोना हएत।"[9]

2. लिली–बाबूजी ई की कएल? भाइजीक कोन गति हेतनि?
   ओकील–आह! ओहि अबाराक नाम नहि लएह। हम मृत्यु-शय्या पर छी, तैओ एकहु बेर देखहु आएल? बेटाक मनोरथ तोरहिसँ पूरल।[10]

3. युवराज हमरा कानमे पुछलनि, 'किछु सत्यो लिखलह अछि कि सभटा फुसिए?'
   "तोरा हेतु लिखल अछि तखन तोरा जे रुचतहु सएह ने लिखब?" हम जेहने प्रश्न तेहने उतर देलियनि।
   "गायक एहि काव्यकेँ अहाँ संगीतबद्ध सुनाए सकैत छी?" युवराज पुछलथिन्ह अर्थात् आज्ञा देलथिन्ह।[11]

4. "अनेरे तोँ सभ कलंक लगबै छिही। एतेक ऊँच कुलक लोक कतहु अपन पितामहीक हत्या करए। फूसि बजबा लेल डेरओने–धमकओने हेतैक कि हार्टफेल भए गेल हेतै। असली बात तखन खुजतै जखन अनल आ सिवदत जमानत पर छूटत आ टाइगर पर खूनी मोकदमा ठाँसि देतनि।"[12]

5. *रविआ*–कुकुर बिलाड़ि खइतए ताहिसँ तँ हमही खाए लेलहुँ सएह ने नीक।
   ठाकुर–धन्य थिके तोँ। झाड़ि बूड़ि हमरहि घरमे वास लेलक अछि।[13]

उपर्युक्त उद्धरणक गद्य पात्रानुकूल भाषाक सुन्दर उदाहरण थिक, पात्रविशेषक जेहन सांस्कृतिक ओ शैक्षणिक स्तर तहेने वाक्यविन्यास ओ शब्दावलीक प्रयोग, सबटा मैथिली वाग्धाराक प्रकृतिक अनुकूल, स्वाभाविक, गतिशील ओ सजीव, उपनिबद्ध पात्रक चरित्र ओ मनोवेगक परिचायक लयात्मक सौन्दर्यसँ ओत-प्रोत, सरल, स्वच्छ ओ सुस्पष्ट। पं. झाक गद्यक स्वाभाविक विशेषता हुनक अनूदित नाटकक गद्यहुमे दृष्टिगत होइत अछि। यथा–

दुइ गोटए (प्रणिपातपूर्वक)–जय हो! महाराजक जय हो।'
माल–सखी, ओहि दिन हड़बड़ाइलि महाराजक मुह देखल तँ तृषा-शान्ति नहि भेल। परन्तु एखन निश्चिन्त भए देखितहुँ, तृप्ति नहि होइत अछि।[14]

जतए धरि गद्य-शैलीक प्रयोगक विषय अछि, पं. झा अपन स्वतन्त्र निबन्धसबहिमे समर्थनात्मक शैलीक प्रयोग कएने छथि। कारण ओ निबन्धसब विवेचनात्मक अछि, साहित्य, व्याकरण अथवा भाषावैज्ञानिक विषयक तर्कसँ समर्थित। हुनक एहन निबन्ध हमरा नहि देखल अछि जाहिमे ओ अपन कल्पनापूर्ण उक्ति अथवा अलंकारपूर्ण शब्दविन्याससँ चमत्कृत करबाक प्रयास कएने होथि। हुनक निबन्धसब महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विषय पर

---

8. सामाक पौती, पृ० 84। 9. बसात, पृ० 9। 10. ऐ० पृ० 39। 11. विद्यापतिक आत्मकथा पृ० 63। 12. अयाचीक डीह पर, सामाक पौती-पृ० 102। 13. मिथिलाक प्रतिनिधि एकांकी, पृ० -60। 14. मालविकाग्निमित्र पृ० 42.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आधारित अछि। सूक्ष्म ओ गम्भीर विवेचना सेहो ओहिमे भेल, अछि, परन्तु तकर गद्य-शैली संस्कृत साहित्यधाराक पाण्डित्यपूर्ण, अलंकरणसँ युक्त गद्य-शैली नहि थिक, पाश्चात्य धाराक आधुनिक गद्यशैली थिक सरल स्वच्छ ओ सुस्पष्ट ऋजुतापूर्ण सहज अभिव्यंजना (Straight forward expression) सँ युक्त। ई पं. गोविन्द झाक गद्यशैलीक विशेषता थिक जे ओ स्वाभाविक मिथिलाभाषाक सरल गद्यक प्रयोग करैत छथि ओ अत्यन्त गम्भीर सँ गम्भीर ग्रन्थिपूर्ण विषयकेँ सोझ ओ सामान्य भाषामे सारगर्भित रीतिएँ एनाकेँ सोझरबैत अभिव्यक्त करैत छथि जे हुनक कथ्य सहज रूपेँ बुझल भए जाइत अछि। साहित्यशास्त्रमे एकरे अर्थव्यक्तिरीति अथवा भाषाक अनन्य सौन्दर्यमूलक प्रसादगुण कहल जाइत अछि।

हिनक गद्य-शैलीमे विविधताक दर्शन होइत अछि हिनक उपन्यास अथवा गल्पसबहिमे प्रयुक्त हिनक गद्यमे। विस्तारसँ विवेचना नहि कए एतए *सामाक पौती* मे संगृहीत हिनक "ओधि: बाँस: कोपड़", "महामार्जरपदाधिकारी" प्रभृतिक उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जाहि मध्य हिनका द्वारा प्रयुक्त लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक गद्यशैलीक अनुशीलन कएल जाए सकैत अछि। कथाक शीर्षक एहि कथ्य केँ इंगित करैत अछि। *बाध हरिअर कंच पानिवाला झील जकाँ पुरिबाक झोंक पर हिलकोर लए रहल अछि। ठीक ओहिना जेना पालवाला नाओ* मे उपमा उत्प्रेक्षाक प्रयोग भेल अछि आओर एही तरहक हिनक अनेक गद्यपंक्तिकेँ अलंकरण-रीतिक गद्य-शैली कहल जाए सकैत अछि, परन्तु अलंकरणशैलीसँ जे सामान्यतः बोध होइत अछि, अलंकारक विशद प्रयोग द्वारा पाण्डित्यपूर्ण चमत्कार उत्पन्न करबा ताहि अर्थ मे, पं. झा अपन गद्यमे अलंकारक प्रयोग कतहु नहि कएने छथि। *पं. झा अलंकारक प्रयोग करैत छथि, पृष्ठभूमिकेँ* सजीव रीतिएँ चित्रित करबाक हेतु आओर एहि प्रकारक प्रयोगसँ हुनक गद्य-रचनाक स्वाभाविकता, सुलभता ओ सरलतामे कतहु बाधा नहि उपस्थित होइत अछि, ओ प्रभावोत्पादकता उत्पन्न होइत अछि आओर हुनक गद्यक साहित्यिक सौन्दर्य निखरि उठैत अछि।

इहए थिक पं. गोविन्द झाक गद्यकारक स्वरूप जे हुनक व्यक्तित्वक प्रतिविम्ब थिक। हुनक सम्पर्कमे जे आएल होएताह से हुनक व्यक्तित्वक स्वाभाविक सरलता, शालीनता ओ सौहार्द-सम्पन्नतासँ परिचित भेल होएताह। हुनक रहन-सहन, वेष-भूषा, वाणी-विन्यास आदि सभटा शुभ्र ओ सहज, कृत्रिमता ओ प्रदर्शनक लेशमात्र नहि आओर जे हुनकासँ साहित्य-चर्चा कएने होएताह से हुनका चिन्तनशील गम्भीरता ओ विद्या-विदग्धतासँ सेहो प्रभावित भेल होएताह ओ हुनका इहो बुझल भेल होएतैन्हि जे ओ कतेक स्वच्छ, संक्षिप्त रीतिएँ गम्भीरतासँ गम्भीर विषयकेँ अभिव्यक्त कए देवामे केहन कुशल छथि। हुनक व्यक्तित्वक ई गुण हुनक गद्यरचनामे प्रतिबिम्बित अछि। हुनका द्वारा लोकग्राह्य शब्दावलीक प्रयोग, स्वाभाविक उक्ति-विन्यास, छोट-छोट वाक्य संरचना आओर ओहिमे निहित गद्यक एक भिन्ने प्रकारक लयात्मक प्रवाह सबटा हुनक गतिशील रचनात्मक प्रतिभाकेँ द्योतित करैत अछि। मैथिलीमे अनेक उत्कृष्ट गद्यकार भए चुकल छथि ओ एखनहुँ अनेक हमरालोकनिक बीच अनुवर्तमान छथि, जे अपन-अपन रचनात्मक विशिष्टताक हेतु प्रसिद्ध छथि ए: ताही मध्य पं. गोविन्द झाक नाम उल्लेखनीय अछि। हमरा जनितेँ पं. गोविन्द झा एक गद्यकारक रूपमे चिर काल धरि स्मरणीय रहताह अपन सहज ऋजुतापूर्ण प्रेषणीयता गुणक कारणेँ, कारण दूरूह सँ दुरूह विषय हिनक गद्य द्वारा अभिव्यक्त भए सहसा कोनो जिज्ञासु पाठकक बौद्धिक चेतनाकेँ आलोकित कए अपन चिर छाप छोड़ि जाइत अछि।

वैयाकरण पं. श्री गोविन्दझा

□ *डा. श्री नवीनचन्द्रमिश्र*

मिथिला अनादिकालहिसँ ज्ञान-विज्ञानक परिधि-विस्तारमे अनुपमेय दृष्टिगत होइत रहल अछि। कालचक्रमे घूर्णित सृष्टिक कार्य-व्यापारक संग, जगत-जागतिक नानानुभूतिक रँगमे रंगल, विभिन्न वेश-परिवेशमे रमल जनमानसक वृत्ति-प्रवृत्ति स्वाभाविक रूपमे दृष्टिपथकेँ आलोकित करैत रहल अछि, ज्ञान-गंगाक सागरमे अवगाहनसँ परितृप्त करबाक सत्प्रयास करैत रहल अछि। केओ हंस-न्यायक पक्षधर बनल, केओ वंश-परम्पराक निर्वहण करैत सकल समाजक अभ्युदयार्थ सत्साहित्यक सृजन कए सेवा-भावमे प्रवृत्त रहल एवं "वैयाकरण" आ "महावैयाकरण" क अभिधा ग्रहण कए नव-नव प्रयोगसँ स्थापित भए गौरव-गर्वक टेक धरैत रहल।

भूमिजाक भूमि मिथिलाक साहित्यमनीषीक शृंखलाक कड़ी रूपमे ख्यात पं. गोविन्द झाक भाषा ओ साहित्य- सेवासँ सम्पूर्ण मिथिलांचले सुपरिचित अछि। ई प्रकाण्ड विद्वान् ओ मिथिला-विभूति महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक सुपुत्र थिकाह, जनिक पिताक अशेष आशीषस्वरूप व्याकरण ओ भाषाक समुचित प्रज्ञा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेटलनि। मैथिलीक सम्यक् अभ्युन्नतिक दिशामे हिनक अवदान अविस्मरणीय अछि।

वर्तमान शताब्दीक सर्वाधिक ख्यातिलब्ध साहित्यकार हास्यरसावतार प्रो. हरिमोहन झाजी पं. गोविन्द झाजीक प्रसंग लिखने छथि–

"पं. गोविन्द झा राजभाषा-विभाग, बिहार सरकार के वरिष्ठ अनुवाद पदाधिकारी, भाषाशास्त्र और व्याकरण के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ "मैथिली भाषाका विकास" आपकी विद्वत्ता तथा विवेचन-पटुता का परिचायक है। इस विषय पर बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, के विशेष आग्रह पर पण्डितजी ने यह ठोस प्रामाणिक ग्रन्थ लिखकर एक विशिष्ट अभाव की पूर्ति की है।"

वस्तुतः प्रो. हरिमोहन झाजीक उपर्युक्त उक्तिसँ गोविन्द बाबूक बहुमुखी प्रतिभाक संगहि विद्वत्ताक परिचय भेटैत अछि, आ संगहि भेटैछ ठोस प्रमाण, जे वस्तुतः श्लाघायोग्य थीक।

गोविन्द बाबू द्वारा लिखित भाषा-विज्ञान पर पोथी हिन्दी आ मैथिली दुनू भाषामे उपलब्ध अछि। व्याकरण एवं छन्दशास्त्र पर लिखित पुस्तक सेहो अतिविलक्षण अछि जे चर्चित - प्रशंसित अछि। मैथिलीक पाणिनि रूपेँ सुविख्यात अपन पिता महावैयाकरण दीनबन्धुझाक अमर कृति *मिथिलाभाषाविद्योतन* क संक्षिप्त संस्करण गोविन्द झा *लघुविद्योतनक नामसँ* प्रकाशित कराओल। अपनहुँ ई *उच्चतर मैथिली व्याकरण* नामसँ उच्चस्तरीय छात्र ओ जिज्ञासु अध्येताक निमित्तेँ रीतिएँ एहि विषयक प्रतिपादन उत्तम ढंगेँ कए, ग्रन्थ निर्माण कए ख्याति अर्जित कएने छथि। *मिथिलाभाषाविद्योतन* सूत्र-शैलीमे अछि जकर अर्थबोध कएनिहारक संख्या अत्यल्प अछि। तेँ प्रयोजन छल व्याकरणक विभिन्न गुत्थीकेँ सोझराए ओकरा सहज - सरल भाषामे बोधगम्य बनाएब, जाहि दिशामे गोविन्द बाबू आशातीत सफलता प्राप्त कएल अछि। छन्दशास्त्रपर लिखल गोविन्द झाजीक पुस्तक एहन अछि, जकर पारायणसँ छन्द शास्त्रक सामान्य ज्ञान पाठककेँ भए जाइत छैक।

पं. गोविन्द झा द्वारा सृजित *मैथिलीक उद्गम ओ विकास* मैथिली भाषाविज्ञानक प्रायः प्रथम मैथिली पोथी थीक। यद्यपि भाषा-विज्ञानक समस्त पक्षक चित्रण - निरूपण एहिमे नहि भए सकल अछि, तथापि जतबे विषय एहिमे सन्निविष्ट अछि से भाषा - वैज्ञानिक दृष्टियेँ अतीव उपादेय थीक।

मैथिली भाषासँ सम्बद्ध हिन्दीमे सृजित हिनक *मैथिली भाषा का विकास* अति उत्कृष्ट पोथी थीक, जे स्तरीयताक उच्चतम मानदंड स्थापित करैत अछि।

उपर्युक्त पुस्तकमे मैथिली भाषाक कालविभाजन ओ एकर विभिन्न उपभाषा आदिसँ लए व्याकरणसँ सम्बद्ध तथ्यकेँ उजागर कएल गेल अछि। स्वन, नामक रूपावली जाहिमे कारक ओ एकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभक्ति, कारक - चिह्न, विभक्ति - प्रतिरूप, लिंग, वचन आ संख्याबोधन, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद, वाक्य - रचना आदि पर विशद विवेचन भेटैत अछि।

स्वनक वर्णनक्रममे लिपिबद्ध स्वन एवं ओकर प्रतीक स्वनक वर्णमालानुसार वर्णन, स्वनक भाषावैज्ञानिक विश्लेषण, मैथिलीक स्वनिम ओ उपस्वन, स्वनक विशेषता, सानुनासिकता, मात्रा, ह्रस्वतर स्वर, विभिन्न स्वनक उच्चारण - वैशिष्ट्य, स्वनिक अभिरचना, स्वरगुच्छ, विसन्धिताक परिहार, व्यंजन गुच्छसंभक्ति, आघात ओ मात्रा-सन्तुलन, मात्रात्मक आघात, बलात्मक आघात, द्वितीयक आघात, शेषह्रस्वता, - नियम, मात्रात्मक अभिरचनाक दू दीर्घस्वरक अस्तित्व, उपान्त्य "इ" आओर "उ", स्वन-लोपन, स्वर-संकोचन, अपिनिहिति, वर्तनीक समस्या, मैथिलीक लिपि, तत्सम, अर्धतत्सम, तद्भव, नवीन तद्भव, देशी शब्द, सामासिक शब्द, मैथिलीमे लिंगक स्थिति, नवीन मैथिलीमे लिंगक स्थिति, लिंगानुसार शब्दक वर्गीकरण, स्त्री-प्रत्यय आदिक युक्ति-संगत उदाहरण-लक्षण प्रस्तुत कए अपन पाण्डित्यक परिचय देलन्हि अछि।

निस्सन्देह पं. गोविन्दझाक व्यक्तित्व ओ कृतित्व दुहू पक्ष अतिशय सबल ओ प्रेरक थीक जे चन्दनसदृश सौरभ चहुदिशि व्यापित कए रहल अछि। वर्तमान कालमे हिनका सन विशिष्ट वैयाकरण ओ भाषावैज्ञानिक मैथिलीमे विरल छथि। हमरा विचारेँ अपन पिताक सदृशे इहो *महावैयाकरण* थिकाह।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली व्याकरण आ पं. श्री गोविन्द झा

□ प्रो. श्री विष्णुकान्त झा

मैथिली प्राचीनहि कालसँ विद्याक अनुपम आ उदार महाकेन्द्र रहल अछि। महर्षि याज्ञवल्क्य-सन ब्रह्मवादी एंवं गार्गी-सन सर्वशास्त्रनिष्णात, विशेषतः वेदान्ततत्त्वक पराकाष्ठा पर पहुँचल परम विदुषी महिला मिथिलहिक नहि, अपितु ततोधिक भारतक परम गौरव छलीह। विदेह जनक, कपिल, कणाद, गौतम एवम् जैमिनि ब्रह्मविद्या आ वेदविद्याक संग बहुतोरास श्रौत दार्शनिक अगाध विद्वान एवं पारगामी प्रज्ञाक निदर्शनक संग-संग मिथिलाक महनीय प्रतिभाक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण छलाह।

एही परम्परागत विद्याक केन्द्र मिथिलामे बीसम शताब्दीमे वेदाङ्गप्रमुख पाणिनीय व्याकरणक एक अत्युज्ज्वल प्रतिभाक धनी पं. दीनबन्धु झा नामक आचारनिष्णात धर्मकर्मप्रतिष्ठित महान् वैयाकरण भेलाह जनिक प्रसिद्धि महावैयाकरणरूपमे मिथिलाक बहारो सर्वत्र अछि। हुनकहि प्रतिष्ठित एवं सरस्वतीलालित कुलमे महान् साहित्यकार पं. गोविन्द झाजीक उद्भव भेल जे प्रारम्भहिसँ संस्कृत व्याकरण किंवा प्राच्यविद्याक महानुरागी पितृभक्त तथा मिथिलाक गौरवक बढ़ओनिहार सतत स्वाध्यायप्रेमी, जिज्ञासु, एवं नव-नवोन्मेषक धनी भेलाह। व्याकरण तँ हिनका उत्तराधिकारमे भेटल छलन्हि जकरा ई पिताक परामर्शक अनुसारे शीघ्रहि आत्मसात् कैलन्हि आ नीक वैयाकरण बनि गेलाह।

आइ महान् साहित्यकार पं. झा मिथिला आ मैथिलीक अक्षर पुरुष छथि। सरस्वतीक वरद पुत्र दर्जनो एहेन साहित्य माँ मैथिली केँ देल अछि जकर अध्ययनाकर्षण, गम्भीर विचार आ शैली एहि साहित्यसभकेँ युगान्तरस्थायी बनौने रहतैक। पं. गोविन्द बाबू मैथिली व्याकरण आ भाषाविज्ञान दूनूक लब्धकीर्ति विद्वान लेखक छथि। संगहि उभय क्षेत्रमे समान गतिसँ स्वच्छन्द विचरण करैत छथि।

डा. सुभद्र झाक अनन्तर विश्रुत-विख्यात भाषावैज्ञानिक आ वैयाकरण हिनका कहब कोनो अनुचित नहि। विभिन्न भाषा साहित्यक प्रसिद्ध अनुवादक रूपमे तँ हिनक नाम अछिये संगहि ई उपन्यासकार आ कोशकार, निबन्धकार, आलोचक तथा मैथिलीक विलक्षण वैयाकरणो छथि।

ई तँ जगजाहिर बात छैक जे भारतक प्रायः समस्त क्षेत्रीय भाषा संस्कृतहिक अपूर्व शब्दभण्डारकेँ लए प्राणवन्त होइछ। किन्तु ओहि सभमे समयानुसार बहुत रास परिवर्तन, वक्ताक विविधविवक्षाक कारणेँ आ युगीन नाना वस्तुक नवनव आविष्कारक, नव नव अभिप्रायक अभिव्यञ्जनक हेतु क्षेत्रीय भाषामे नव शब्दक समावेश आवश्यक एवं स्वाभाविक भए जाहत छैक। तहिना मैथिलीओमे भेलैक। एहूमे नव-नव क्रान्तिकारी उद्भावना भेलैक अछि।

मैथिली व्याकरण : एक संक्षिप्त परिचय--

जेना सभ भाषामे व्याकरण ओकर स्वाभाविक चंचलता, अस्थिरता एवं गतिशीलता किंवा कहू जे स्वतंत्रताकेँ मार्यादित कए ओकर रूपकेँ ओहि-ओहि भाषासाहित्यक अनुरूप कए दैत छैक तहिना मैथिली व्याकरणक परमोपादेयताकेँ सभ केओ विद्वान् स्वीकार कएने छथि। अतएव महावैयाकरण दीनबन्धु झा जी एकर व्याकरणकेँ मर्यादित एवं सुव्यवस्थित करबाक लेल दीर्घकालावधिक कठिन श्रम कए *मैथिली भाषाविद्योतन* नामक अनमोल मैथिली व्याकरण लिखल। ओकर जतेक प्रशंसा करी से थोड़ होएत।

मिथिलाभाषामे सन्धि नहि होइत अछि। बहुवचन हेतु सभ, ओ **लोकनि, सभकेयो**, इत्यादि शब्दक प्रयोग होइछ। उपर्युक्त शब्द सभमे **सब, सभ**, आदर अनादर दुनू मे प्रयुक्त होइछ। किन्तु **'लोकनि'**, प्रायः आदरहिक सूचक अछि। संस्कृत अथवा हिन्दी जेकाँ लिंगक रूप मैथिलीमे नहि अछि। एहिमे केवल लिंगक लौकिक रूप अछि- शास्त्रीय रूप नहि भेटैत अछि। यद्यपि पण्डित झाजी जन्म तथा कर्मसँ शुद्ध सनातनी आ निगमागम एवं तदुपजीवी वाङ्मयक प्रति अटूट आस्था रखनिहार शास्त्रश्रद्धालु व्यक्ति छथि तथापि अखण्ड भारतीय चिन्तनधाराक एक सशक्त, एवं वेदक मुख्य अंग व्याकरणकेँ मैथिलीमे नव तरीकासँ नवीन आ व्यापक रूपेँ चिरन्तन चिन्तनक विषय बनाय तेना व्यक्त कएलन्हि अछि जाहिसँ हुनक एहि शास्त्रीय असीम प्रतिभाक साक्षात्कारमे पाठककेँ देरी नहि लगैत छनि। ओ गतानुगतिक मैथिली व्याकरण शिक्षणसँ अकछा केँ एकरा अधिकाधिक उद्देश्यसापेक्ष बनएबाक हेतु **उच्चतर मैथिली व्याकरण** पोथीक निर्माण कएल।

एहि ग्रन्थमे व्याकरणविषयक उच्च बोधक वास्ते कतेको ठाम गम्भीर चिन्तन अछि जाहिसँ मैथिली व्याकरणमे गम्भीर ज्ञानार्जनक मार्ग प्रशस्त होइछ। शास्त्रीय परिभाषासभकेँ नवातिनव वैज्ञानिक शैलीमे प्रस्तुत करवामे ग्रन्थकारकेँ पूर्ण सफलता भेटलनि अछि। संगहि कतोको-रास अत्यन्त उपयोगी पारिभाषिक पद ओ पदार्थ आधुनिक भाषाविज्ञानक शिक्षणक अनुसार एहिमे निरूपित कएल गेल अछि, जेना स्वनिम, अपनिहिति इत्यादि। उक्त ग्रन्थ मे मैथिलीक नाना तरहक व्याकरणिक विषय पर क्रमानुसार विचार भेल अछि। पाणिनिमुनि-प्रणीत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विश्वविख्यात व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी, जकाँ पण्डित झाजी आठ अध्यायमे बटने छथि । बुझू इहो मैथिलीक- अष्टाध्यायी थिक। *प्रथमाध्यायमेँ* मैथिली व्याकरणक परिभाषाकेँ सुग्राह्य भाषामे व्यक्त करैत एवं अनेको उदाहरण दैत मैथिलीक मूलानुसार, कालानुसार एवं क्षेत्रानुसार विभाजन कएल गेल अछि एवं तीनू केँ मैथिली रूपेँ समान प्रतिष्ठा देल गेल अछि।

द्वितीय अध्यायमे ध्वनि-विचार पर गम्भीर अनुशीलन प्रस्तुत अछि । विषयमे प्रवेश करैत ग्रन्थकार व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानमे समाहित ध्वनितत्वक विशद निरूपण परिभाषाप्रदानपूर्वक कएने छथि । पछाति ध्वनिक परिगणन, उच्चारण-रीति ओ वर्गीकरण उपशीर्षकसँ अध्यायकेँ विशिष्ट अध्ययन सामग्रीसँ ओत-प्रोत करबाक सफल प्रयास भेल अछि। एहि क्रममे स्वनिम, उच्चारणवैशिष्ट्य, अपनिहिति इत्यादि भाषावैज्ञानिक शब्दावलीक माध्यमसँ मैथिली ध्वनिक चिन्तनकेँ व्यापक एवं आन समृद्धतर भाषाक संग तुलना कए देखाओल गेल अछि ।

तेसर अध्याय पद-*विचार नामसँ* लिखल गेल अछि। एहिमे पदक परिभाषा एवं वर्गीकरण, पदबन्ध, उपवाक्य ओ युग्मकतीनू पर प्रकाश देल गेल अछि। पदक व्युत्पति स्रोत आ अर्थक अनुसार वर्गीकरण सेहो एहि अध्यायमे भेल अछि ।

चारिम अध्याय नामविचार थिक । एहिमे संज्ञाक रूपपर मौलिक यथासंभव विवेचना कएल गेल अछि। संगहि संज्ञाक भेद सेहो प्रस्तुत अछि । कारक विषय पर लेखक प्रर्याप्त एवं प्रमाणपुरस्सर अनुशीलन कयलनि अछि । ओकर थोड़े चर्चाक लोभ संवरण नहि कए सकैत छी तेँ किञ्चित् निदर्शन दए रहल छी–

ई त जनिते छी जे संज्ञा क्रियाक साधनभूत विविध वस्तुक बोधक होइत अछि । जेना गेनक खेलमे विभिन्न खेलाड़ी सभगोलकीपर, बैंक, हाफ बैक आदि रूपमे अपन-अपन कृत्य करैत खेल सम्पन करैत अछि तहिना क्रियाक निष्पादनमे भिन्न-भिन्न साधन भिन्न-भिन्न भूमिकामे अपन-अपन कृत्य करैत अछि।

एवं प्रकारेँ आचार्यप्रवर झाजी कारककेँ संस्कृत व्याकरण केर आधार पर फरिछा -फरिछा कए बुझौने छथि । सामान्य परिभाषाकेँ छात्र एवं कतहु अध्यापकोक लेल आलोकित करबाक क्रममे कारक प्रकरणकेँ विस्तार प्रदान कएलनि अछि। ओ लिखैत छथि-*"भारतक प्राचीन वैयाकरणलोकनि संस्कृतमे सात गोट कारक निर्धारित कएने छथि -कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध एवं अधिकरण ।*

यद्यपि संस्कृतमे मात्र छओ कारक होइछ–कर्ता, कर्म च करणंच सम्प्रदानं तथैव च अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् । परन्तु भए सकैछ जे हिन्दीमे सम्बन्धकेँ किञ्च मैथिलीओमे सम्बन्धकेँ जेँ कारक मानल गेलैक अछि तेँ किंवा संस्कृतमे सप्तम अथवा एक अतिरिक्त कारक मानैत होथि । विवाद तँ संस्कृतहुमे उठाओल गेलैक जे सम्बन्धनकेँ कारक मानल जाय किन्तु प्रायः सभकेयो संस्कृत वैयाकरण सम्बन्धकेँ साक्षात् क्रियाक संग अन्वय नहि मानि मात्र विभक्ति कहलनि । यथा 'देवदत्त स्य पुत्रः पन्थानं पृच्छति - देवदत्तक नेना मार्गक जिज्ञासा करैत छथि' अथवा रास्ता पुछैत छथि मे पुत्र मात्र कारक थिक देवदत्त नहि जेँ कि देवदत्तक्रियासँ अन्वित नहि होइछ । शेषहु सभ कारक पर लेखक बहुत सारगर्भित एवं वैदुष्यपूर्ण, संगहि सूक्ष्म विचार मण्डित, विवरण देलनि अछि ।

पाँचम अध्यायमे क्रिया-वर्णित अछि । एकर अन्तर्गत क्रियापदक स्वरूप, क्रियाक अुनषंगी भाव, धातुरूपावली, कालक भेद-उपभेद, व्युत्पन्न धातु, कर्मवाच्य, नामधातु, वाच्यभेद, असमापिका वा क्रियान्विता क्रिया आदिक सोदाहरण उपन्यास कएल गेल अछि ।

छठम अध्यायमे–कृदन्त पद, संस्कृत कृदन्त, उपसर्ग, तद्धितान्त नाम, संस्कृत तद्धित, समास एवं संस्कृत समास इत्यादि विषयक उदारणसमेत व्याख्या बड़े रुचिकर भए गेल अछि ।

सातम अध्याय निपात-विचार पर आश्रित अछि, जाहिमे निपातक परिभाषा दैत लेखक अन्वय-सूचक, समुच्चय-सूचक, विस्मयादिसूचक, क्रियाविशेषक प्रभृति विषय सांगोपाङ्ग देने छथि।

आठम अध्ययमे वाक्य पर सविस्तर विचार कएल गेल अछि। वाक्यक प्रकार, पदक्रम, सामानाधिकरण्य, अध्याहार, उद्देश्य तथा विधेय, वाक्य-विश्लेषण, पदबन्ध, उपवाक्य आदि यावतो विषय पर अपेक्षित एवं उपयोगी विषय-विस्तार लेखकक विशिष्ट मेधा आ लेखनक्षमताक स्पष्ट संकेत करैत अछि।

जेना हम पूर्वहि संकेत कएने छी, महावैयाकरण दीनबन्धु झा वैयाकरणक संग-संग काव्य-रचनामे सेहो प्रख्यात छलाह । हुनक व्याकरणमर्मज्ञताक तँ बाते नहि, ओ मैथिलीक पाणिनि कहल जाइत छथि । एही तरहेँ लेखक स्वयं तँ मैथिलीभाषाक भाषिक व्याख्याता छथिए, तदतिरिक्त अपन पितृनिर्मित मैथिली व्याकरणक समयानुसार परिवर्धन-संशोधन कए ओकरा समयानुसार अत्युपयोगी बनओने छथि, इहो हिनक बड़ श्लाघनीय कार्य थिक।

मैथिलीक उद्गम ओ विकास शीर्षक पुस्तक भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे एकटा बड़े पैघ उपहार अछि । आइ जाहिसमयमे भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे मैथिलीमे सरल पुस्तकक नितान्त अभाव छल ओहि समयमे लिखल गेल छल ई पुस्तक भाषाशास्त्रक उच्च अध्येतालोकनिक लेल, सेहो सरल आ संक्षिप्त सारगर्मित होए-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बाक करणेँ ततबे उपादेय भेल जतबा निम्न कक्षांक छात्र तथा भाषाविज्ञानसदृश नव विधासँ अपरिचित अथवा अल्पपरिचित मैथिलीक नव भाषाशास्त्रक अध्येता-अध्यापक लोकनिक लेल। एहिसँ पूर्वो पण्डित गोविन्द बाबू *मैथिली भाषा का विकास* पोथी हिन्दीमे लिखि मैथिली पाठक जगतकेँ बहुत उपकृत एवं अधमर्ण कएने छलाह।

हिनक भाषावैज्ञानिक सूक्ष्मान्वेषण आ विश्लेषणक उदाहरण देखू: *मैथिलीक उद्गम ओ विकास* पुस्तकमे ई लिखैत छथि, *"मैथिलीमे कतोक शब्द पोर्तुगाली भाषासँ आएल अछि यथा- बोतल, केदली, अगस्त, सितम्बर इत्यादि। ई सब शब्द अंग्रेजीसँ आएल एहेन भ्रम नहि करब, कारण जे अंगेरेजीसँ आएल रहैत तँ तवर्गक स्थान टवर्ग रहैत, जेना मोटर, टराम, टेन, टेम, सिकरेट, टीसन, लालटेम इत्यादिमे। आइ-काल्हि कतोक वैज्ञानिक आविष्कारसंबंधी ओ शासनसंबंधी शब्द अंगरेजीसँ सेहो लेल गेल अछि। ओ शब्दसभ मैथिलीमे बहुधा स्वानुरूपे लेल गेल अछि यथा लालटेम, कुटेम, इत्यादि।"*

एवं प्रकारे अपने देखैत छी जे श्रद्धेय पंण्डित जी कोनो विषय एवं उपविषयक वर्णन करैत काल आधार ग्रन्थकेँ यथासम्भव नहि छोड़ने छथि। एहि ग्रन्थसभमे पूज्य झा जी अपन अहंरहित गहन अध्ययनक कारणे मूलभूत सिद्धान्तक दिग्दशनि करबैत स्वतंत्र मान्यताक स्थापना सेहो कयलनि अछि। *नामूलं लिख्यते किञ्चित्* ई मल्लिनाथी प्रतिज्ञा आद्योपान्त हिनके पुस्तकमे दृष्टिगोचर होइत अछि। ई भाषाविज्ञानक विद्यार्थीकेँ एकटा अनुपम एवं सरल रास्ता देल अछि। एहि अवदानक हेतु मैथिली जगत बहुत ऋणी रहतनि।

गोविन्द झाक मैथिली शब्दकोश पढ़ला सन्ताँ

□ डा. श्री रामावतार यादव

1. भूमिका

पं. श्री गोविन्द झा द्वारा संयोजित/सम्पादित आ मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित *मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड (1992) मैथिली भाषाक दोसर मैथिली-सँ-मैथिली शब्दकोश अछि। दीनबन्धु झा रचित *मिथिला भाषा कोष* (1950.) मैथिली भाषाक पहिल मैथिली-सँ-मैथिली शब्दकोश छल। एहि मध्य जयकान्त मिश्र द्वारा संगृहीत *वृहत् मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड (1973) सेहो प्रकाशित भेल; एहि शब्दकोशक प्रमुख विशेषता ई छल जे मूल प्रविष्टि पहिने तिरहुता लिपिमे आ तखन देवनागरी लिपिमे लिखि व्याकरण-विवरण, अर्थ-विवरण, "पहिल प्रयोग", आदि देवनागरी लिपिमे देल गेल ओ अन्ततः मूल प्रविष्टिकेँ रोमन लिपिमे लिखि तकर अधिकाधिक व्यवहृत अर्थ अङरेजी भाषामे देल गेल। ओना तँ के. के. मिश्र (1980.) वैदेही समिति, दरभंगाक संयोजकत्वमे 1960क दशकमे *मैथिली-अङरेजी - हिन्दी शब्दकोश* प्रकाशित करबाक एकगोट बृहत् आयोजनाक संकेत दैत छथि, मुदा हमरा जनिते ई शब्दकोश एखनधरि अप्रकाशित अछि।

अङरेजी भाषाक माध्यमसँ मैथिली भाषाक शब्दसंग्रह/शब्दकोश निर्माणक एक शताब्दी धरिक सुदीर्घ परम्परा विद्यमान अछि जकर उल्लेख करब उचित, यथा : ग्रियर्सन 1882, 1884, 1885; हर्नले-ग्रियर्सन 1885, 1886, चटर्जी-मिश्र, सं. 1940.; ट्रेल 1973; डेभिस 1984, आदि।

नेपाली भाषाक माध्यमसँ लिखल गेल ओ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित नेपालक 14 टा भाषाक *पर्यायवाची शब्दकोश* (1973-74) सेहो उल्लेखनीय अछि, जाहिमे मैथिली भाषाक शब्दसभ सेहो संगृहीत अछि।

मैथिली भाषाक भाषावैज्ञानिक अध्ययनमे गोविन्द झाक योगदान अतुलनीय छैन्हि। ताहि हेतुएँ पाठकवर्ग आशा रखैत छथि जे गोविन्द झा द्वारा सम्पादित *मैथिली शब्दकोश* मैथिली शब्दसंग्रह/शब्दकोश निर्माणक सुदीर्घ परम्पराक निर्वाह करैत मैथिली शब्दकोश निर्माण प्रविधिमे उल्लेखनीय योगदान करत।

2. परिधि

*मैथिली शब्दकोश*क परिधि अति संकीर्ण बुझना जाइत अछि; सम्पादक कहैत छथि जे *"किछु नवीनता अनबाक हम चेष्टा कएल मुदा उपसमितिक विद्वान् सदस्यलोकनि परम्परासँ विचलित होएबाक अनुमति नहि देलनि।"* (परिधि आ प्रविधि, पृ. 'क')। फलस्वरूप, *मैथिली शब्दकोश* क त्रुटिसभ एहि संकीर्ण परिधिजन्य अछि— जकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ कएल गेल अछि।

पहिल, एहि शब्दकोशमे संकेत-सूचीक सर्वथा अभाव अछि जाहिसँ अध्येतावर्गकेँ प्रशस्त असौकर्य होएबाक प्रबल सम्भावना अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विश्वविख्यात व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी, जकाँ पण्डित झाजी आठ अध्यायमे बटने छथि । बुझू इहो मैथिलीक- अष्टाध्यय़ी थिक। *प्रथमाध्यायमेँ* मैथिली व्याकरणक परिभाषाकेँ सुग्राह्य भाषामे व्यक्त करैत एवं अनेको उदाहरण दैत मैथिलीक मूलानुसार, कालानुसार एवं क्षेत्रानुसार विभाजन कएल गेल अछि एवं तीनू केँ मैथिली रूपेँ समान प्रतिष्ठा देल गेल अछि।

द्वितीय अध्यायमे ध्वनि-विचार पर गम्भीर अनुशीलन प्रस्तुत अछि । विषयमे प्रवेश करैत ग्रन्थकार व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानमे समाहित ध्वनितत्वक विशद निरूपण परिभाषाप्रदानपूर्वक कएने छथि । पछाति ध्वनिक परिगणन, उच्चारण-रीति ओ वर्गीकरण उपशीर्षकसँ अध्यायकेँ विशिष्ट अध्ययन सामग्रीसँ ओत-प्रोत करबाक सफल प्रयास भेल अछि। एहि क्रममे स्वनिम, उच्चारणवैशिष्ट्य, अपनिहिति इत्यादि भाषावैज्ञानिक शब्दावलीक माध्यमसँ मैथिली ध्वनिक चिन्तनकेँ व्यापक एवं आन समृद्धतर भाषाक संग तुलना कए देखाओल गेल अछि ।

तेसर अध्याय पद-*विचार नामसँ* लिखल गेल अछि। एहिमे पदक परिभाषा एवं वर्गीकरण, पदबन्ध, उपवाक्य ओ युग्मकतीनू पर प्रकाश देल गेल अछि। पदक व्युत्पत्ति स्रोत आ अर्थक अनुसार वर्गीकरण सेहो एहि अध्यायमे भेल अछि ।

चारिम अध्याय नामविचार थिक । एहिमे संज्ञाक रूपपर मौलिक यथासंभव विवेचना कएल गेल अछि। संगहि संज्ञाक भेद सेहो प्रस्तुत अछि । कारक विषय पर लेखक प्रर्याप्त एवं प्रमाणपुरस्सर अनुशीलन कयलनि अछि । ओकर थोड़े चर्चाक लोभ संवरण नहि कए सकैत छी तेँ किञ्चित निदर्शन दए रहल छी–

ई त जनिते छी जे संज्ञा क्रियाक साधनभूत विविध वस्तुक बोधक होइत अछि । जेना गेनक खेलमे विभिन्न खेलाड़ी सभगोलकीपर, बैंक, हाफ बैक आदि रूपमे अपन-अपन कृत्य करैत खेल सम्पन करैत अछि तहिना क्रियाक निष्पादनमे भिन्न-भिन्न साधन भिन्न-भिन्न भूमिकामे अपन-अपन कृत्य करैत अछि।

एवं प्रकारेँ आचार्यप्रवर झाजी कारककेँ संस्कृत व्याकरण केर आधार पर फरिछा -फरिछा कए बुझौने छथि । सामान्य परिभाषाकेँ छात्र एवं कतहु अध्यापकोक लेल आलोकित करबाक क्रममे कारक प्रकरणकेँ विस्तार प्रदान कएलनि अछि। ओ लिखैत छथि-*"भारतक प्राचीन वैयाकरणलोकनि संस्कृतमे सात गोट कारक निर्धारित कएने छथि –कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध एवं अधिकरण ।*

यद्यपि संस्कृतमे मात्र छओ कारक होइछ–कर्ता, कर्म च करणंच सम्प्रदानं तथैव च अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् । परन्तु भए सकैछ जे हिन्दीमे सम्बन्धकेँ किञ्च मैथिलीओमे सम्बन्धकेँ जेँ कारक मानल गेलैक अछि तेँ किंवा संस्कृतमे सप्तम अथवा एक अतिरिक्त कारक मानैत होथि । विवाद तँ संस्कृतहुमे उठाओल गेलैक जे सम्बन्धनकेँ कारक मानल जाय किन्तु प्रायः सभकेयो संस्कृत वैयाकरण सम्बन्धकेँ साक्षात् क्रियाक संग अन्वय नहि मानि मात्र विभक्ति कहलनि । यथा 'देवदत्त स्य पुत्रः पन्थानं पृच्छति - देवदत्तक नेना मार्गक जिज्ञासा करैत छथि' अथवा रास्ता पुछैत छथि मे पुत्र मात्र कारक थिक देवदत्त नहि जेँ कि देवदत्तक्रियासँ अन्वित नहि होइछ । शेषहु सभ कारक पर लेखक बहुत सारगर्भित एवं वैदुष्यपूर्ण, संगहि सूक्ष्म विचार मण्डित, विवरण देलनि अछि ।

पाँचम अध्यायमे क्रिया–वर्णित अछि । एकर अन्तर्गत क्रियापदक स्वरूप, क्रियाक अुनधंगी भाव, धातुरूपावली, कालक भेद-उपभेद, व्युत्पन्न धातु, कर्मवाच्य, नामधातु, वाच्यभेद, असमापिका वा क्रियान्विता क्रिया आदिक सोदाहरण उपन्यास कएल गेल अछि ।

छठम अध्यायमे–कृदन्त पद, संस्कृत कृदन्त, उपसर्ग, तद्धितान्त नाम, संस्कृत तद्धित, समास एवं संस्कृत समास इत्यादि विषयक उदारणसमेत व्याख्या बड़े रुचिकर भए गेल अछि ।

सातम अध्याय निपात-विचार पर आश्रित अछि, जाहिमे निपातक परिभाषा दैत लेखक अन्वय-सूचक, समुच्चय-सूचक, विस्मयादिसूचक, क्रियाविशेषक प्रभृति विषय सांगोपाङ्ग देने छथि।

आठम अध्ययमे वाक्य पर सविस्तर विचार कएल गेल अछि। वाक्यक प्रकार, पदक्रम, सामानाधिकरण्य, अध्याहार, उद्देश्य तथा विधेय, वाक्य-विश्लेषण, पदबन्ध, उपवाक्य आदि यावतो विषय पर अपेक्षित एवं उपयोगी विषय-विस्तार लेखकक विशिष्ट मेधा आ लेखनक्षमताक स्पष्ट संकेत करैत अछि।

जेना हम पूर्वहि संकेत कएने छी, महावैयाकरण दीनबन्धु झा वैयाकरणक संग-संग काव्य-रचनामे सेहो प्रख्यात छलाह । हुनक व्याकरणमर्मज्ञताक तँ बाते नहि, ओ मैथिलीक पाणिनि कहल जाइत छथि । एही तरहेँ लेखक स्वयं तँ मैथिलीभाषाक भाषिक व्याख्याता छथिए, तदतिरिक्त अपन पितृनिर्मित मैथिली व्याकरणक समयानुसार परिवर्धन-संशोधन कए ओकरा समयानुसार अत्युपयोगी बनओने छथि, इहो हिनक बड़ श्लाघनीय कार्य थिक।

मैथिलीक उद्गम ओ विकास शीर्षक पुस्तक भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे एकटा बड़े पैघ उपहार अछि । आइ जाहिसमयमे भाषाविज्ञानक क्षेत्रमे मैथिलीमे सरल पुस्तकक नितान्त अभाव छल ओहि समयमे लिखल गेल छल ई पुस्तक भाषाशास्त्रक उच्च अध्येतालोकनिक लेल, सेहो सरल आ संक्षिप्त सारगर्मित होए-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बाक करणेँ ततबे उपादेय भेल जतबा निम्न कक्षांक छात्र तथा भाषाविज्ञानसदृश नव विधासँ अपरिचित अथवा अल्पपरिचित मैथिलीक नव भाषाशास्त्रक अध्येता-अध्यापक लोकनिक लेल। एहिसँ पूर्वो पण्डित गोविन्द बाबू *मैथिली भाषा का विकास* पोथी हिन्दीमे लिखि मैथिली पाठक जगतकेँ बहुत उपकृत एवं अधमर्ण कएने छलाह।

हिनक भाषावैज्ञानिक सूक्ष्मान्वेषण आ विश्लेषणक उदाहरण देखू: *मैथिलीक उद्गम ओ विकास* पुस्तकमे ई लिखैत छथि, *"मैथिलीमे कतोक शब्द पोर्तुगाली भाषासँ आएल अछि यथा- बोतल, केदली, अगस्त, सितम्बर इत्यादि। ई सब शब्द अंग्रेजीसँ आएल एहेन भ्रम नहि करब, कारण जे अंगेरेजीसँ आएल रहैत तँ तवर्गक स्थान टवर्ग रहैत, जेना मोटर, टराम, टेन, टेम, सिकरेट, टीसन, लालटेम इत्यादिमे। आइ-काल्हि कतोक वैज्ञानिक आविष्कारसंबंधी ओ शासनसंबंधी शब्द अंगरेजीसँ सेहो लेल गेल अछि। ओ शब्दसभ मैथिलीमे बहुधा स्वानुरूपे लेल गेल अछि यथा लालटेम, कुटेम, इत्यादि।"*

एवं प्रकारे अपने देखैत छी जे श्रद्धेय पंण्डित जी कोनो विषय एवं उपविषयक वर्णन करैत काल आधार ग्रन्थकेँ यथासम्भव नहि छोड़ने छथि। एहि ग्रन्थसभमे पूज्य झा जी अपन अहंरहित गहन अध्ययनक कारणे मूलभूत सिद्धान्तक दिग्दर्शनि करबैत स्वतंत्र मान्यताक स्थापना सेहो कयलनि अछि। *नामूलं लिख्यते किञ्चित्* ई मल्लिनाथी प्रतिज्ञा आद्योपान्त हिनके पुस्तकमे दृष्टिगोचर होइत अछि। ई भाषाविज्ञानक विद्यार्थीकेँ एकटा अनुपम एवं सरल रास्ता देल अछि। एहि अवदानक हेतु मैथिली जगत बहुत ऋणी रहतनि।

गोविन्द झाक मैथिली शब्दकोश पढ़ला सन्ताँ

□ डा. श्री रामावतार यादव

1. भूमिका

पं. श्री गोविन्द झा द्वारा संयोजित/सम्पादित आ मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित *मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड (1992) मैथिली भाषाक दोसर मैथिली-सँ-मैथिली शब्दकोश अछि। दीनबन्धु झा रचित *मिथिला भाषा कोष* (1950.) मैथिली भाषाक पहिल मैथिली-सँ-मैथिली शब्दकोश छल। एहि मध्य जयकान्त मिश्र द्वारा संगृहीत *बृहत् मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड (1973) सेहो प्रकाशित भेल; एहि शब्दकोशक प्रमुख विशेषता ई छल जे मूल प्रविष्टि पहिने तिरहुता लिपिमे आ तखन देवनागरी लिपिमे लिखि व्याकरण-विवरण, अर्थ-विवरण, "पहिल प्रयोग", आदि देवनागरी लिपिमे देल गेल ओ अन्ततः मूल प्रविष्टिकेँ रोमन लिपिमे लिखि तकर अधिकाधिक व्यवहृत अर्थ अङरेजी भाषामे देल गेल। ओना तँ के. के. मिश्र (1980.) वैदेही समिति, दरभंगाक संयोजकत्वमे 1960क दशकमे *मैथिली-अङरेजी - हिन्दी शब्दकोश* प्रकाशित करबाक एकगोट बृहत् आयोजनाक संकेत दैत छथि, मुदा हमरा जनिते ई शब्दकोश एखनधरि अप्रकाशित अछि।

अङरेजी भाषाक माध्यमसँ मैथिली भाषाक शब्दसंग्रह/ शब्दकोश निर्माणक एक शताब्दी धरिक सुदीर्घ परम्परा विद्यमान अछि जकर उल्लेख करब उचित, यथा : ग्रियर्सन 1882, 1884, 1885; हर्नले-ग्रियर्सन 1885, 1886, चटर्जी-मिश्र, सं. 1940.; ट्रेल 1973; डेभिस 1984, आदि।

नेपाली भाषाक माध्यमसँ लिखल गेल ओ नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित नेपालक 14 टा भाषाक *पर्यायवाची शब्दकोश* (1973-74) सेहो उल्लेखनीय अछि, जाहिमे मैथिली भाषाक शब्दसभ सेहो संगृहीत अछि।

मैथिली भाषाक भाषावैज्ञानिक अध्ययनमे गोविन्द झाक योगदान अतुलनीय छैन्हि। ताहि हेतुएँ पाठकवर्ग आशा रखैत छथि जे गोविन्द झा द्वारा सम्पादित *मैथिली शब्दकोश* मैथिली शब्दसंग्रह/शब्दकोश निर्माणक सुदीर्घ परम्पराक निर्वाह करैत मैथिली शब्दकोश निर्माण प्रविधिमे उल्लेखनीय योगदान करत।

2. परिधि

*मैथिली शब्दकोश*क परिधि अति संकीर्ण बुझना जाइत अछि; सम्पादक कहैत छथि जे *"किछु नवीनता अनबाक हम चेष्टा कएल मुदा उपसमितिक विद्वान् सदस्यलोकनि परम्परासँ विचलित होएबाक अनुमति नहि देलनि।"* (परिधि आ प्रविधि, पृ. 'क')। फलस्वरूप, *मैथिली शब्दकोश* क त्रुटिसभ एहि संकीर्ण परिधिजन्य अछि— जकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ कएल गेल अछि।

पहिल, एहि शब्दकोशमे संकेत-सूचीक सर्वथा अभाव अछि जाहिसँ अध्येतावर्गकेँ प्रशस्त असौकर्य होएबाक प्रबल सम्भावना अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अछि तँ किछु वर्ग-संकेत स्वतः स्पष्ट अछि, जेना :

[सं.] = संज्ञा
[वि.] = विशेषण
[क्रि.] = क्रिया
[क्रि. अ.-] = अकर्मक क्रिया
[क्रि. स.] = सकर्मक क्रिया
[पु.] = पुलिङ्ग
[स्त्री.] = स्त्रीलिङ्ग, आदि

आन किछु वर्ग-संकेत भ्रमपूर्ण अछि, जेना:

[सं. पुं.] = संज्ञा, पुलिङ्ग
[सं. स्त्री.] = संज्ञा, स्त्रीलिङ्ग
[वि.पु.] = विशेषण, पुलिङ्ग

प्रश्न उठैत अछि : की ई व्याकरण-विवरण मैथिली व्याकरणक विलक्षणताक दृष्टिएँ तर्कपूर्ण वा तर्कसंगत अछि ? पृ. 55 मे आन्हू प्रविष्टिक लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [सं. पु.] देल गेल अछि; पृ. 61 मे **उझकुन** प्रविष्टिक लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [सं.पु.], **उठल्लू** प्रविष्टिक लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [वि. पु.], तथा **उड़नखटौला** प्रविष्टि लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [सं. स्त्री.] देल गेल अछि। तहिना क्रमे, पृ. 65 मे **उपन्यास** प्रविष्टिक लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [सं. पु.] देल गेल अछि। वैयाकरणलोकनिक मतेँ मैथिली शब्दक शब्दगत/शास्त्रीय लिङ्ग नहि होइत अछि। दीनबन्धु झाक शब्दमे: *"मिथिलाभाषामे [मैथिली भाषामे] शब्दक लौकिके पुंस्त्वादि-लिङ्ग अर्थ अछि, शास्त्रीय नहि।"* (1950.: 'भूमिका', पृ. 8)। तखन माटिक **उझकुन** वा काठक **उड़नखटोला** वा खढ़-पातसँ बनल कागजक **उपन्यास** आदि शब्दमे पुरुषत्व वा स्त्रीत्वक निरूपण करब मैथिली भाषा व्याकरणकेँ अस्वाभाविक रूपेँ दुरूह करब थिक।

आन किछु व्याकरणगत वर्ग-संकेतक विवरण अपूर्ण अछि, जेना :

उठबाएब [क्रि. स.] पृ. 61
उधिअबाएब [क्रि. स.] पृ. 63

उठबाएब ओ **उधिअबाएब** एहि दुहू प्रविष्टिक लेल व्याकरणगत वर्ग-संकेत [क्रि. प्रे.] अर्थात् प्रेरणार्थक क्रिया जनाएब उचित; तखनहि **उठाएब** ओ **उठबाएब** तथा **उधिआएब** ओ **उधिअबाएब** मे फर्क बुझना जाएत।

आन किछु वर्ग-संकेतांक विवरण अस्पष्ट तथा भ्रमपूर्ण अछि, जेना:

ओँघड़ायब [वि.] पृ. 63

संभवतः **ओघड़ायब** प्रविष्टिक लेल तर्कसंगत वर्गसंकेत कि त [ना. धा.] अर्थात् नामधातु अथवा [क्रि. प्रे.] अर्थात् प्रेरणार्थक क्रिया होएत। (प्रेरणार्थक क्रिया विषद वर्णनक हेतु देखू: यादव (1983, 1995)।

दोसर, मैथिली शब्दकोश मे शब्द-निर्माण-विधिक विविधता दिशि अपेक्षाकृत कम ध्यान देल गेल अछि। एकाधटा उदाहरण मात्रेँ देखू :

पृ. 76 मे प्रविष्टि ओँघायब [क्रि.] क देल गेल अछि, मुदा एहि शब्दसँ साधित आन शब्दसभक उल्लेखोटा नहि कएल गेल अछि, जेना : ओँघाएल, ओँघएतहुँ, ओँघाएब, ओँघाएत, ओँघाइत, आदि। तहिना, पृ. 61 मे प्रविष्टि उठब [क्रि. अ.], उठाएब [क्रि. स.] तथा उठबाएब [क्रि. स.] प्रस्तुत कएल गेल अछि। मुदा मैथिली सिखनिहारलोकनि संयुक्त क्रियापद **उठा लेब**, उठा देब, उठि जाएब, उठबा लेब, उठबा देब प्रभृति क्रियापद ओ क्रियायोगी कृदन्त, वर्तमान कृदन्त, भूत कृदन्त आदि शब्दसभ कोन शब्दकोशसँ सिखताह ? मैथिलीक आख्यात विचार (देखू: गोविन्द झा 1979; स्टम्प-यादव 1988; यादव 1995: 150.-239) एहि भाषाकेँ आन आधुनिक आर्यभाषासँ फराक सिद्ध करबामे एकटा प्रमुख कारक तत्त्व अछि, ताहि हेतुएँ कि त शब्दनिर्माण-विधिक विशद चर्चा एहि शब्दकोशक भूमिकामे होएबाक चाहै छल, आ नहि तँ शब्दकोशक कलेवर दिशि तत्काल ध्यान नहि दए ई शब्दसभ स्वतंत्र प्रविष्टि रूपेँ प्रस्तुत होएबाक चाहै छल।

तेसर, *मैथिली शब्दकोश* मे प्रयुक्त शब्दसभक संकलन-विधि द' कोनो स्पष्टोक्ति नहि कएल गेल अछि। ई तँ बुझल जे ज्योतिरीश्वरक **वर्णरत्नाकर** (चटर्जी-मिश्र, सं. 1940) आ ग्रियर्सनक *बिहार पेजेन्ट लाइफ* (1885) सँ "किछुए परम उपयोगी" (परिधि आ' प्रविधि, पृ. 'क') शब्द लेल गेल अछि, मुदा एहिसँ ई स्पष्ट नहि भेल जे आन कोन-कोन कृतिसभसँ शब्द-चयन कएल गेल अछि। शब्दक चयन शब्दक तिरस्कारक मापदण्ड की ? कहल गेल अछि जे *"मौखिक व्यवहारमे जे-जे शब्द प्रचलित अछि सएह टा"* ('परिधि आ प्रविधि', पृ. 'क') लेल गेल; कोन फिल्ड मेथड/अनुसन्धान-विधिसँ "प्रचलित" शब्दक ठेकान कएल गेल ? सँगहिँ, की शब्दकोश निर्मातालोकनि एहि शब्दकोशमे ग्रियर्सनक 'क्रेष्टोमथी ऐण्ड भोकाबुलरी' (1882); ग्रियर्सनक 'इन्डेक्स टू मनबोधूस हरिवंश' (1884); हर्नले-ग्रियर्सनक *ए कम्पारिटिभ डिक्शनरी अफ दि बिहारी लैङ्ग्विज* (प्रथम खण्ड 1885, द्वितीय खण्ड (1889); दीनबन्धु झाक **मिथिला भाषा कोष** (1950.); जयकान्त मिश्रक *बृहत् मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड (1973), डेभिसक *बेसिक कोलोक्वियल मैथिली* (1984) आदि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शब्दसंग्रह/शब्दकोश सभमे संगृहीत शब्दक समावेश कएलैन्हि कि नहि ? जौँ नहि त किएक नहि–स्पष्ट नहि अछि । अर्थात्, गुरुपरम्पराक निर्वाह नहि भेल अछि एहि *मैथिली शब्दकोश* मे ।

चारिम, शब्दक संख्या द' अकादमीक अध्यक्ष ('प्रकाशकीय', पृष्ठविहीन) कहैत छथि जे 'प्रथम खड ''प्रकाशित'' एवं द्वितीय खण्ड ''शीघ्र प्रकाश्य'' मे तीस हजार शब्दक समावेश भ' सकल अछि ।'' मुदा प्रकाशित *मैथिली शब्दकोश*, प्रथम खण्ड मे कतेक शब्दक समावेश भेल अछि तकर जानकारी अप्राप्य अछि ।

पाँचम, मैथिली शब्दक वर्तनीमे विद्यमान व्यापक वैदिध्यक उल्लेख तँ भेल अछि, मुदा उच्चारण-वैशिष्ट्य/वैदिध्य दिशि पूर्ण अनास्था देखाओल गेल अछि, जेना :

अबधारि	[अबधाइर]	पृ. 31
आँखि	[आँइँख]	पृ. 48
इज्जति	[इज्जइत]	पृ. 57
औँघायब	[औँङहायब]	पृ. 76
आँघी	[औँङहीँ]	पृ. 76
कबाछु	[कबाउछ]	पृ. 88
कसरि	[कसइर]	पृ. 94
गँड़िखुल्ला	[गँइँइखुल्ला/गँइँरखुल्ला]	पृ. 129
गाँड़ि	[गाँइँड़/गाँइँर]	पृ. 135
ढेलमासु	[ढलमाउस]	पृ. 221

मुदा,

अधलाहि	[अधलाइह] नहि	पृ. 19
काहि काटब	[काइह काटब] नहि	पृ. 100
ढेलबाहि	[ढेलबाइह] नहि	पृ. 221
त्राहि	[त्राइह] नहि	पृ. 243

मूल त्रुटि ई अछि जे एहि सभ विषयवस्तुपर — — —संक्षेपमे, *मैथिली शब्दकोशकमूल* विस्तृत टिप्पणी एकर भूमिकामे होएबाक चाही छल, मुदा एहि शब्दकोशक भूमिका अत्यन्त संक्षिप्त अछि (कुल दू पृष्ठ) । स्मरणीय अछि जे दीनबंधु झाक मिथिलाभाषा कोष क भूमिका कुल ६० पृष्ठक अछि ।

3. प्रविधि

मैथिली शब्दकोश क निर्माण-प्रविधिसँ सम्बन्धित मूलतः तीनिगोट विषयपर टीकाटिप्पणी नीचाँ, कएल जाएत : वर्तनी, मूल प्रविष्टि, ओ अर्थ तथा अर्थक्रम ।

3.1 **वर्तनी:** नासिक्य व्यञ्जन ओ सवर्ण स्पर्शी व्यञ्जन-वर्तनी व्यंजन-गुच्छकेँ कोना लिखल जाए–ई विवाद मैथिली भाषामे मात्र नहि अपितु अधिकांश आधुनिक आर्यभाषामे व्याप्त अछि । देवनागरी लिपिमे लिखल जाएबला भाषामे, खास क' संस्कृतमे, एहन व्यञ्जनगुच्छकेँ कवर्गसँ ङ, चवर्गसँ पूर्व ञ, टवर्गसँ पूर्व ण, तवर्गसँ पूर्व न, तथा पवर्गसँ पूर्व म् सदृश लिखबाक परिपाटी विद्यमान अछि । गोविन्द झा एहि *मैथिली शब्दकोश* मे (आ आन कृतिसभमे सेहो) अपन ''फूट नीति'' ('परिधि आ प्रविधि', पृ.'क') निर्धारित कएने छथि जाहि अनुरूप ओ ङ, ञ् तथा ण् केँ अनुस्वार रूपेँ तथा न, म् केँ नासिक्य रूपेँ यथावत् राखि मैथिली वर्तनीमे नवीनताक पुट देबाक प्रयास कएने छथि, यथा :

अङ्क = अंक
कञ्चन= कंचन
कण्टक = कंटक

मुदा,

अन्त = अन्त/अंत नहि
कम्प = कम्प/कंप नहि

वर्णविन्यासवेत्तासभक दृष्टिकोण छैन्हि जे एकरूपताक सिद्धान्तक अनुरूप कि तँ संस्कृतभाषहिक समान समस्त नासिक्य व्यञ्जनकेँ यथावत् लिखल जाए जाहिसँ परम्पराक निर्वाह होएत ओ शुद्धतावादी संस्कृतानुरागी मैथिलीक विद्वानकेँ प्रसन्नता होएतन्हि; अथवा, समस्त नासिक्य व्यञ्जनकेँ अनुस्वार रूपेँ लिखल जाए जाहिसँ भाषा-लिपिमे साधारणीकरण तथा सरलीकरण होएत ओ भाषा सिखनिहारलोकनिकेँ प्रशस्त सुविधा सेहो होएतैन्हि । प्रेस, टाइपराइटर, ओ कम्प्युटर समेतक लेल अनुस्वार रूपेँ लिखब सुविधाजनक होएत । एहन गम्भीर विषयमे कोनो अधखँड़ नीति श्रेयस्कर नहि ।

एहि ठाम सानुनासिकता पर किछु कहब सेहो उचित होएत । कथ्य मैथिलीमे सानुनासिकता दू प्रकारसँ प्राप्त होइत अछि । एक तँ स्वनिमिक सानुनासिकता, जाहिमे स्वर/स्वन नासिक्य व्यञ्जनक संसर्गमे बिनु अवितर्हि स्वतः सानुनासिक होइत अछि, जेना :

अँचार	[अँचार]
आँटी	[आँटी]
बाँस	[बाँस]
ऊँट	[ऊँट], आदि ।

दोसर, नासिक्य स्वनक प्रभावसँ निकटवर्ती स्वरक उच्चारण सानुनासिक भ' जाइत अछि, यथा :

आङन [आँङन]	अङना [अँङनाँ]
गाम [गाँम]	माछ [माँछ]
चमार [चँमाँर]	अनार [अँनाँर]
कोन [कोँन]	मूस [मूँस]
मे [मेँ]	नहि [नँहिँ]
नेओँत [नेँओँत],	आदि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

द्रष्टव्य अछि जे मानक लिखित मैथिलीमे स्वनिमिक सानुनासिकता चन्द्रबिन्दु राखि देखाओल जाइत अछि । निकटवर्ती नासिक्य स्वनक प्रभावसँ व्युत्पन्न सानुनासिकता मानक लिखित मैथिलीमे नहि देखाओल जाइत अछि । अर्थात्, मैथिली वर्तनीमे **मूँस, अँनौर, चँमौर, मैं, नँहिँ, नैंऔंत**, आदि अस्वीकार्य अछि । मुदा **मैथिली शब्दकोश** मे किछु मूल प्रविष्टिमे निकटवर्ती नासिक्य स्वनक प्रभावसँ व्युत्पन्न, अर्थात् ध्वन्यात्मक, सानुनासिकता सेहो चन्द्रबिन्दु राखि देखओल गेल अछि, यथा :

आँड, आँड्न, आँडी, आँडुर (पृ. 49), आदि

एहिसँ मैथिली वर्तनीमे व्याप्त विविधताकेँ आओर प्रश्रय भेटत ओ मानक रूपक अभावमे वृद्धि होएत । मैथिली ध्वनिशास्त्रक विशद वर्णनक हेतु देखू : यादव (1984, 1995) ।

3.2 मूल प्रविष्टि: मूल प्रविष्टि ककरा मानी ? एहि प्रश्नक संक्षिप्त चर्चा एकाधटा उदाहरण मात्र दए नीचाँ कएल गेल अछि ।

पृ. 246 मे **थम्ह** प्रविष्टिक अन्तर्गत 'देखू थम्भ' कहल गेल अछि । मैथिलीक **थम्ह** भलेहिँ **थम्भ** → **थम्ह** ध्वनि परिवर्तनक प्रतिफल हो, मुदा मैथिलीक मूल प्रविष्टि **थम्ह** अछि, **थम्भ** नहि ।

कथ्य मैथिलीक अत्यन्त प्रचलित योगसूचक शब्द **आ** (जकर प्रयोग सम्पादक स्वयं पृ. 'क' मे 'परिधि आ प्रविधि' शीर्षक अन्तर्गत कएने छथि) स्वतंत्र प्रविष्टिक सत्तासँ वंचित भ' प्रविष्टि **आओर** (पृ. 50) क एकगोट अर्थक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि । उचित छल जे **आ** केँ मूल प्रविष्टिक सत्ता दए 'देखू आओर' कहल जाइत ।

तहिना, मैथिलीक मौखिक व्यवहारमे अति प्रचलित शब्द **अपटन** स्वतंत्र प्रविष्टिक सत्तासँ वंचित कएल गेल अछि । एकर स्थान ग्रहण कएने अछि मूल प्रविष्टिद्वय **उकटन** (पृ. 59) आ **उबटन** (पृ. 66); एहि दुहू प्रविष्टिक अर्थ ओ अर्थक्रमक रूपमे पर्यन्त **अपटन** शब्दक उल्लेख नहि भेल अछि । एहि प्रसंग सेहो उचित छल जे **अपटन** केँ मूल प्रविष्टिक सत्ता दए ''देखू उकटन/उबटन'' कहल जाइत । स्मरणीय अछि जे जयकान्त मिश्रक *बृहत् मैथिली शब्दकोश* (1973 : पृ. 132) **अबटन** शब्दक प्रयोग कएने अछि । विचित्र बात तँ ई अछि जे **मैथिली शब्दकोश** मे **अपटन** प्रविष्टिक सर्वथा अभाव अछि, मुदा **अपटूडेट** प्रविष्टि (पृ. 28) उपलब्ध अछि । ठीक इहए स्थिति **अन्हार** (प्रविष्टि **अंधार**, (पृ. 4); **कोकड़ा** (प्रविष्टि **काँकोड़**, पृ. 96, मे एकर उल्लेखोटा नहि अछि); **अन्हरौखे, ख्याक/खाएक** आदि शब्दक अछि । प्रश्न अछि : मैथिली भाषा सिखनिहारलोकनि एहन प्रचलित शब्दसभ कोन शब्दकोशसँ सिखताह ?

3.3 अर्थ ओ अर्थक्रम: शब्दकोशक कोनो प्रविष्टिक अर्थ लिखब सामान्य काज नहि अछि; कखनहुँ ई काज अत्यधिक कष्टकर भ' जाइत अछि । खास क' सामान्य शब्दक अर्थ सरल ओ स्पष्ट रूपेँ ताहि भाषामे लिखब आओर विशेष कठिन बुझना जाइत अछि । संभवत: ताहि हेतुएँ दीनबन्धु झा अपन **मिथिलाभाषाकोष** मे **थाल** प्रविष्टिक अर्थ 'कर्दम, कीच' ओ **थाल-खीच** प्रविष्टिक अर्थ 'कर्दमादि' (पृ. 175) दैत छथि; तहिना ओ **लोटा** प्रविष्टिक अर्थ 'जलपानपात्रविशेष' (पृ. 318) दैत छथि, जे **गिलास** प्रविष्टिक अर्थ सेहो अछि (पृ. 92) ।

ओना तँ गोविन्द झा **मैथिली शब्दकोश** मे प्रविष्टिक अर्थ लिखबामे परम प्रवीण तथा कुशल छथि; ओ **गिलास** प्रविष्टिक अर्थ स्पष्ट रूपेँ 'एक प्रकारक जल-पात्र' (पृ. 137) दैत छथि । तथापि, किछु सामान्य शब्दक अर्थ उदाहरणस्वरूप नीचाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि :

कहुना–येन केन प्रकारेण (जेना तेना , नहि पृ. 95)

कलौ–कल्यवर्त, मध्याह्न-भोजन (पृ. 93)

खट्टा–अमत, अम्ल स्वादवाला; अप्रिय (पृ. 116)

द्रष्टव्य अछि जे **अमत** प्रविष्टि एहि शब्दकोशमे अप्राप्य अछि; पृ. 36 मे प्रविष्टि **अम्मत** प्रस्तुत कएल गेल अछि जकर अर्थ अछि 'अम्ल, (हिन्दी खट्टा)' ।

4. निष्कर्ष

एहि शब्दकोशक शीर्षक तीनि प्रकारेँ लिखल गेल अछि: (1) मैथिली शब्दकोश (आवरण पृष्ठ, मिथिलाक्षरमे); (2) मैथिली-शब्दकोश (पृष्ठविहीन); तथा (3) संक्षिप्त मैथिली शब्दकोश (पृ. 1) । एहन गहनतम ओ वैज्ञानिक कृतिक शीर्षकमे एकरूपता होएब परमावश्यक ।

अन्तमे, **मैथिली शब्दकोश**, प्रथम खण्डक सम्पादक/संयोजक गोविन्द झा मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे अपन विलक्षण योगदानक हेतु धन्यवादक पात्र थिकाह; आशा राखी जे एहि शब्दकोशक ''शीघ्र प्रकाश्य'' द्वितीय खण्ड उपर वर्णित त्रुटिसभसँ मुक्त भ' शीघ्र प्रकाशित होअए ।

●

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 1979 *उच्चतर मैथिली व्याकरण,* पटना: मैथिली अकादमी ।

झा, गोविन्द 1992 *मैथिली शब्दकोश,* प्रथम खण्ड, पटना: मैथिली अकादमी ।

झा, दीनबन्धु 1950 *मिथिला भाषा कोष,* पटना : श्री रामभजन प्रेस ।

मिश्र,जयकान्त 1973 *बृहत् मैथिली शब्दकोश,* प्रथम खण्ड, शिमला: इण्डियन इन्स्टिच्यूट अफ एडभान्स्ड स्टडी ।

राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल 1973-74 *पर्यायवाची शब्दकोश,* काठमाण्डू ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Chatterji, S.K. & B. Misra eds. 1941. *Varna-Ratnakeara*. Bibliotheca Indica: 262, Calcutta : Royal Asiatic Society of Bengal.

Davis, A. I. 1984 *Basic Colloquial Maithili* (A Maithili-Nepali-English Vocabulary. Delhi : Motilal Banarsidass.

Grierson, George A. 1882 *An Introduction to the Maithili Language of North Bihar*, part 2, 'Chrestomathy and Vocabulary', Calcutta', Asiatic Society of Bengal.

Grierson, George A. 1884 'Index to Manbodh's Haribans,' *Journal of the Asiatic Society of Bengal* : 53, part 1, 37-75.

Grierson, Geoge A. 1885/1926 *Bihar Peasant Life*, Patna : Superintendent, Government Printing, Bihar and Orissa. Second and Revised Edition.

Hoernle, A.F.R. & George A. Grierson 1885 *A Comparative Dictionary of the Bihari Language*, Part 1, Calcutta : Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. & George A. Grirson 1889 *A comparative dictionary of theBihari Language*, Part-1, Calcutta, Beugal Secretariat Press.

Mishra, K. K. 1980 'Report on the proggress of Maithili-English-Hindi Dictionary and Bibliography of Maithili Books', in : B. G. Mishra Hed. *Lexicography in India*, Mysore: Central Institute of Indian Languages, 1980, 97-97.

Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav 1988 'Maithili Verb Agreement and the Control Agreement Principle, *Chicago Linguistic Society, Parasession on Agreement in Grammatical Theory* 24 : 2, 304-321.

Trail, R. L. 1973 **Word Lists**, Kathmandu : SIL, T.U. Press.

Yadav, Ramawatar 1984 *Maithili Phonetics and Phonology, Mainz* (Germany) : Selden und Tamm.

Yadav, Ramawatar 1985 'Causativization in Maithili : A Preliminary Enguiry,' *Sais Arbetsberichte* (aus dem Seminar fuer Allgemeine und Indogermanische Sprachwissenschaft, Kiel, Germany) : 8,201-221.

Yadav, Ramawatar 1995 *A Reference Grammar of Maithili*, Berlin & New York : Walter de Gruyter (in press).

[पुनश्च : प्रस्तुत लेख **मिथिला वाणी** (जनकपुर) 1 : 3 (1994) मे प्रकाशित लेखक परिमार्जित संस्करण अछि ।]

मिथिला वाणीमे प्रकाशित भेलापर पं. झाक पत्र जे डा. यादवकेँ संबोधित अछि, से एतए डा. यादवक अनुरोध पर प्रस्तुत अछि :

प्रिय श्री यादवजी,

काल्हि अहाँक एक लेख 'मिथिला वाणी' (वर्ष 1, अंक 3) मे पढ़ल । वैदुष्यपूर्ण समीक्षाक हेतु हार्दिक धन्यवाद । अहाँक लगभग सभ मन्तव्य हमरा समीचीन बुझाएल । तखन जे तुरन्त ई पत्र लिखैत छी से प्रतिवादार्थ नहि, केवल एहि हेतुएँ जे अहाँक लेख पढ़ला सन्ताँ एक-दू बात अहाँकेँ जनाए देब आवश्यक बुझाएल ।

मैथिली शब्दकोश (प्रथम खण्ड) क आरम्भसँ अठसठिम पृष्ठ धरिक सामग्री ने हमर लिखल थिक, ने हमर देखल । हम जे प्रारूपित कएने रही आ सम्पादन उपसमिति अनुमोदित कएने रहए से हराए गेलैक । छपबाक समय ककरहुसँ लिखाए जोड़ि देल गेलैक । अधिकांश त्रुटि अहाँ एही अंशसँ बहार कएल अछि आ तकर दायित्व उचित शिष्टताक संग हमरा पर देल अछि । डा. सुभद्र झा तँ एही अंशकेँ देखि हमरा मूर्खक उपाधि सेहो दए देलनि । आश्चर्य जे एहि अंशमे मूर्खताक भंडार देखितहुँ अहाँक मन कोना मानलक जे ई हमर करनी थिक । द्वितीय खण्ड मे एहि बातक उल्लेख कए देल गेल अछि जे उक्त अंश हमर करनी नहि थिक । परन्तु खेद जे द्वितीय खंडकेँ गहन लागल छैक ।

एक बात आओर । शब्दकोशक प्रारूपण समाप्त होइतहिँ हम मैथिली अकादमी छाड़ि देल । एहि प्रारूपक ने पुनरीक्षण-परिमार्जन-सम्पादन भेल, ने प्रतिलेखन । जहिना हमर खड़रल छल तहिना प्रेस चल गेल । केओ गम्भीरतापूर्वक देखनिहार नहि रहल । तखन जे होएबाक चाही सएह भेल । ईसभ भितरका बात पाठक कोना बूझत ? जस कि अपजस सभ हमरहि भोगए पड़त ।

अहाँक गनाओल त्रुटि सभमे बहुतो एहन अछि जे भूमिकहि मे सुविधाजनक रूपमे संक्षिप्तांक संग लिखल जाए सकैत अछि, जेना स्रोत ग्रन्थ, शब्द-चयन-प्रक्रिया, उच्चारणविषयक टिप्पणी, व्याकरणात्मक वैशिष्ट्य, विशेषतः आख्यातसम्बन्धी इत्यादि । परन्तु खेदक विषय जे भूमिका लिखएबे नहि कएल । भूमिकाक नाम पर केवल दू पृष्ठ जगह हमरा देल गेल आ सेहो तुरत छपएबाक हड़बड़ीमे लिखए पड़ल । उच्चारणक जे नवीनतम प्रवृत्ति पसरि रहल छैक तकरो किछु सूत्र रूपेँ प्रतिपादन आवश्यक छलैक ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हँ, उच्चारणक एक प्रवृत्तिक विषयमे अहाँ एकटा नब बात सुझाओल अछि। अन्त्य इ/उ जे उच्चारणमे पूर्ववर्ती अ/आ पर घुसुकि अबैत अछि, 'ह' व्यंजन तकर बाधक होइत अछि - **पानि** [पाइन]। किन्तु **काहि** [काहि], न तु/काइह/. How will you define the situalion for this sound shifting ? अ/आ + व्यञ्जन (ह-भिन्न) + इ/उ → अ/आ + इ/उ + व्यञ्जन ? तखन **कहबहु** [कहबउह] कोना ?

उच्चारणक विविधरूपता आ वैकल्पिकता अङरेजीमे सेहो एक समस्या भए गेल अछि। बहुतो शब्दमे केओ (I) बाजत तँ केओ एहि समस्याक समाधानार्थ Longman एक कोशमे एकटा नब चिह्न चलओलक अछि /ɪ/ अर्थात् /i/ उच्चारण करू वा /ɔ/। अङरेजीमे जखन ई हाल तखन मैथिली सन fluid भाषा मे उच्चारणकेँ रेखामे बान्हब कोना सम्भव होएत। कोन उच्चारण केँ लेब, कतेक भेद देखाएब ? तेँ हम मैथिलीमे एही सिद्धान्त पर पहुँचल छी जे उच्चारण जेना चलैत अछि तेना चलओ; वर्तनी धरि एक (पारम्परिक) रहओ, आ इएह सर्वविध उच्चारणक प्रतीक होएत, जेना अङरेजीमे अछि। वर्तनीकेँ phonetic representation नहि मानि graphic symbol मानू। जेना **नहि** इएह वर्तनी /नइ/,/नञि/,/नै/,/नँहिँ/,/ने/... इत्यादि सर्वविध उच्चारणक प्रतीक होएत। तथापि भूमिकामे उच्चारणविषयक दिशानिर्देश कए देब हम आवश्यक बुझैत छी।

ङ्, ञ् आ ण् केँ अनुस्वार कए देब, किन्तु न् आम् केँ नहि, ई दोरंगा नीति अहाँकेँ पसिन्द नहि अछि। लगैत अछि अहाँ सर्वत्र अनुस्वार लिखबाक पक्षमे छी। दोरंगा नीति हम सम्पादन-उपसमितिक अनुरोधेँ अपनाओल। हम अपने सर्वत्र संयुक्ताक्षर लिखबाक पक्षमे छी, कारण जे (i) अनुस्वार छापामे बड़ टूटैत छैक, कम्प्यूटरहुमे ततेक पातर कए देल जाइत छैक जे मैग्फिाइंग ग्लास चाही; (ii) पहिने काँटाक सुविधालेल अनुस्वार चलल, आद कम्प्यूटर युगमे से असुविधा नहि छैक; (iii) मैथिलीकेँ पूर्वांचलसँ निकटता छैक जतए असमिआ, ओड़िआ आ बङला तीनूमे संयुक्ताक्षरे चलैत छैक; (iv) द्रविड़क्षेत्रमे, अङरेजीमे आ उर्दूमे अनुस्वार छैके नहि; (v) हिन्दीक्षेत्रमे एखनहु आ बहुत ठाम खूब (अनिवार्यतया) चलैत छैक; (vi) नेपालीमे साझा प्रकाशनक कोशमे संयुक्ताक्षरे अछि।

कहुना एकर अर्थ "येन केन प्रकारेण" देब हमर व्यक्तिगत संस्कारक कुपरिणाम भए सकैत अछि; ओना हमरा जनैत ई संस्कृत पदबन्ध हिन्दी आदि बहुतो आधुनिक भाषामे प्रचलित अछि। **कलौ** शब्दक अर्थ "कल्यवर्त" शब्दसँ नहि कएल अछि; से कएल अछि "मध्याह्न-भोजन" शब्दसँ। तद्भव शब्दक व्याख्यामे प्रथमतः पर्यायवाची रूपमे ओकर तत्सम शब्द देल अछि जाहिसँ उद्भवहुक किछु ज्ञान होइक। **'अमत'** शब्द हमर कएल प्रारूपमे अवश्य छल। दोसर व्यक्ति एकरा **'अम्मत'** लिखलनि। मैथिलीमे एक प्रकारक स्वरामात चलल अछि जे अगिला व्यंजनकेँ heavy कए दैत अछि आ ई heaviness व्यंजनकेँ दोहराए व्यक्त कएल जाइत अछि, जेना **अपन > अप्पन, ठकन > ठक्कन**। एहनाठाम हम single consonant लिखबाक पक्षमे छी (एकरा अहाँ हमर conservatism मानि सकैत छी)। लोक-प्रवाह हमर पक्षमे नहि अछि। हिन्दीमे सेहो **लिक्खा, रक्खा** चलैत छलैक एहने स्थितिमे; परन्तु आब नहि चलैत छैक। **अपटन** शब्द कोशमे चाही, **उबटन** सेहो। हमारा जनैत **उबटन** अधिक क्षेत्रमे प्रसिद्ध अछि, मूल **'उद्वर्तन'** क अधिक निकट अछि, ग्रिअर्सन साहेब **अपटन** शब्द नहि लिखैत छथि, तेँ एकरा अल्प प्रचलित बूझल। मुदा मूल प्रविष्टि आ निर्देशबाला प्रविष्टि दूनूकेँ बराबरि बूझी ताहीमे कल्याण। सकल क्षेत्रीय रूप-रूपान्तरक समावेश बृहत् शब्दकोशहिमे सम्भव अछि, जेना जयकान्त बाबू बनाए रहल छथि। हँ, कोकड़ा, अन्हरोख, खाएक इत्यादि शब्द जे छूटल से अवश्य संकलयिताक त्रुटि थिक। आ, इ, उ मे तँ बहुत अधिक शब्द छूटल अछि जे आन व्यक्तिसँ प्रारूपित कराओल गेल, उदाहरण–*आकम (प्रा)., आकर, आकस्मिक, आतंक, आतिख, आपकता, आपट, आपन, आपर, आरसि, आरत, आर्ति, आलाप, आसिख, आसेध, आहेमाहे, इंगित, इहलोक, ईर्ष्या, उकन्नन, उगरास, उखिआर, उचंगा, उचाँस, उजिआर, उजोर (प्रा)* इत्यादि कतेक लिखू।

एक टा नव सूचना। आलोचित शब्दकोशक द्वितीय खंड कहिओ निर्गत भए सकत तकर आशा हमरा नहि रहल। तेँ हम पुनः मैथिली अङरेजी शब्दकोश लिखब आरम्भ कएल जे आब सम्पन्न भए चुकल अछि। लिखि तँ लेलहुँ किन्तु आब की कएल जाए से सोचि रहल छी आ परिमार्जन-परिवर्धन सेहो करैत जाए रहल छी। अहाँक दृष्टिमे जँ एकर उपयोगक कोनो मार्ग हो तँ लिखी।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सम्पादन-कला आ पण्डित श्री गोविन्द झा

□ डा. श्री किशोर नाथ झा

विद्या ओ वयसँ वृद्ध, मिथिलाक वरपुत्र, समाजक गौरव, सरस्वतीक विशिष्ट उपासक, मैथिलीक साहित्यकारलोकनिक अभिनन्द्य आ हमर प्रणम्य पण्डित श्री गोविन्द झा अपन पिता पुण्यश्लोक महावैयाकरण दीनबन्दु झा ओ भट्टपुराक निवासी स्वनामधन्य मधुसूदन मिश्रसँ मूलतः पाणिनिव्याकरण तथा साहित्यविद्याक अध्ययन कए पाण्डित्यक प्रकर्ष पौलैन्हि,स्वाध्यायक बले आनो-आनो भाषाक [हिन्दी, अंगरेजी, असमिया, बंगला, नेपाली तथा ओड़िआक] साहित्यक ओ आधुनिक आलोचना पद्धतिक संगा सम्पादन-कलाक प्रावीण्य अर्जित कएल । मुदा स्वभावतः साहित्यकारक रूपमे ई प्रतिष्ठित भेल छथि भने जीविकार्थ बिहारक सचिवालयमे राजभाषा-विभागमे उपनिदेशक पदसँ अवकाश प्राप्त कएने होथि । पर्वतक शिखरसँ जहिना जल-धाराक अकस्मात् प्रस्फुटन होइछ तहिना हिनकहु विशाल हृदयक सहृदयता अनायास स्वभावतः साहित्य-सर्जनाक धाराक रूपमे प्रस्फुटित भेल आओर ई स्वान्तःसुखाय माँ मैथिलीक सेवामे तत्पर भेलाह । ई अपन घरहिसँ मैथिलीक उपासनौक शिक्षा प्राप्त कएलैन्हि से हमरा बूझि पड़ैत अछि । हिनक गुरु ओ पिता महावैयाकरण दीनबन्धु झा पाणिनिव्याकरणक आधारपर मैथिलीक व्याकरणक निर्माण कएलन्हि जे *मिथिलाभाषाविद्योतनक* नामसँ विदित अछि । हुनक अपूर्ण *अलङ्कारसागर* अलङ्कारविचारक आदर्श प्रस्तुत करैत अछि आरोर हिनक अग्रज महाकवि जीवनाथ झाक *रावणवध* (मैथिलीक महाकाव्य) ओ आन-आन कृति प्रसिद्धे अछि । तैँ मैथिलीक उपासनाक प्रेरणा हिनका घरहिसँ भेटलैन्हि-ई प्रमाणक अपेक्षा नहि रखैत अछि ।

मैथिली-साहित्य-परिषदक बरगोरिया अधिवेशनमे आइसँ लगभग पचास वर्ष पूर्व ई काव्यपाठमे सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार पाबि अपनाकेँ तारुण्यक आरम्भहिमे साहित्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित कएल । साहित्य अकादेमी सन राष्ट्रक सर्वोच्च साहित्यिक संस्था हिनक *सामाक पौती* [कथा संग्रह]केँ पुरस्कृत कए हिनक कथाकार रूपक सम्मान हालहिमे कएलक अछि । अनेक नाटकक प्रणयन ओ कालिदासक दृश्यकाव्य *मालविकाग्निमित्रक* मैथिली अनुवाद (44 ई.) नाटक रचनाक क्षेत्रमे कीर्तिमान स्थापित कएलक अछि । हिनक *रुक्मिणीहरण* भङ्गिमा नामक नाट्य संस्था द्वारा अनेक ठाम अभिनीत भए प्रशंसित भेल अछि । *विद्यापतिक आत्मकथा* हिनक मौलिक उपन्यास एतेक लोकप्रिय भेल जे ओकर हिन्दी अनुवादक माँग होअए लागल आओर सेहो सद्यः प्रकाशित भेल अछि । कहबाक तात्पर्य ई जे काव्य-सर्जनाक सभ क्षेत्रमे हिनक कृतिक आलोक तेना पसरल अछि जे हिनकामे साहित्यकारक परिपूर्णता हमरा भेटैत अछि ।

एतबे नहि, आलोचना ओ सम्पादनहुक क्षेत्रमे ई तेहने प्रतिष्ठाक अर्जन कए यशस्वी छथि जेहन साहित्य-सर्जनाक क्षेत्र मे । एकहि व्यक्तिमे साहित्य-सर्जनाक कारयित्री ओ भावयित्री प्रतिभाक रहलहु पर आलोचनाक बुद्धिक अवस्थिति दुर्लभ जकाँ बूझि पड़ैत अछि जे पण्डितराज जगन्नाथहिक जकाँ एहि अभिनन्द्य पण्डित झामे देखैत छी । धर्मशास्त्रक विलक्षण ओ प्रामाणिक ग्रन्थ विद्यापति-प्रणीत ***विभागसारक*** आलोचनात्मक सम्पादन आ प्रथमतः प्रकाशन (76 ई.) कए सम्पादन-कलाक क्षेत्रमे अपन परिश्रम ओ प्रतिभाक सङ्ग कौशलक तेहन नीक प्रदर्शन कएल अछि जे उत्तर साधकलोकनिक हेतु आदर्श आ पथप्रदर्शक अछि । स्वनामधन्य डा. सर गङ्गानाथ झा अपन ग्रन्थ *'हिन्दू लौ इन इट्स सोर्सेस'* मे लगभग पचहत्तरि वर्ष पूर्व प्रमाण रूपमे विभागसारक वचनक उल्लेखार्थ एहि हस्तलेखक उपयोग कएने छलाह जकर उपयोग पछाति पं. श्री गोविन्द झा प्रकाशनार्थ अपन सम्पादनमे कएल अछि । उभयत्र पृष्ठसंख्याक साम्य एकर साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि ।

हमरा जनैत ग्रन्थलेखनसँ अधिक श्रम आनक कृतिरूप ग्रन्थक सम्पादनमे होइत छैक । आनक मनोभावक संग अपन मनोभावक तादात्यक प्रयास कएलेपर ई सम्भव छैक जे ओहि कृतिक अभिप्रायकेँ आत्मसात् कए प्रकरण-विभाग, पाराग्राफक विभाजन, अनुरूप ओ अनुकूल शब्दक समावेश, अक्षरा शुद्धिक निराकरण, त्रुटिक पूर्ति एवं सन्दिग्ध स्थलक निर्णय आदिमे सम्पादक समर्थ होइत अछि । तैँ सावधानी आ दायित्वबोधक हेतु सतत जागरूकता सम्पादक केँ राखए पड़ैत छैक । प्राचीन हास्तलेख मे एकहि शिरोरेखामे पूरा पंक्तिक लिखल रहने पूर्ण विराम तथा अर्धविराम आदि चिह्नक नहि रहलासँ अर्थानुसन्धानक हेतु ऊहेटा साधन रहि जाइत छैक। फलितार्थ जे सम्पादन ग्रन्थलेखनसँ कठिन होइत अछि । तैँ *अभिनवभारती* मे कहल अछि जे *पूर्वप्रतिष्ठापितयोजनासु मूलप्रतिष्ठाफलमामनन्ति*। ताहिमे पण्डित झा पूर्ण सफल भेल छथि । **'दश राम शराः'** लिखबाक स्थानमे **दशरा मशरा** लिखल रहला पर अर्थानुसन्धानक केहन कठिनता होएतैक से क्यो पाठक वा सम्पादके बूझि सकैत अछि। मिथिलाक्षरमे **काकु नकार** आ' **काकुलकार** मे की फरक छैक से

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सम्पादक ऊहेसँ बूझि सकैत अछि, अक्षरमे बड़ कम फरक देखल जाइत अछि। तेँ प्रमाद आ स्खलन डेग-डेग पर सम्भव रहैत छैक। एहना स्थिति मे *'पाठक्रमादर्थक्रमो बलीयान्'* एहि सूक्तिक कसौटी पर कसबाक हेतु विशेष वैदुष्यक ओ क्षमताक आवश्यकता होइत छैक। सन्दिग्ध पाठक स्थल मे सामान्यतः तीन तरहक स्थिति होइत छैक(i) सम्भवतः ई पाठ होएबाक चही,(ii) इएह पाठ होएबाक चाही तथा(iii) की पाठ होएबाक चाही। अंग्रजी भाषामे May, Must and What कहि एकर विश्लेषण होइत अछि। पहिल स्थितिमे सन्दिग्ध पाठ मूलमे नहि दए टिप्पणीमे मातृकापाठ कहि राखि देल जाइत अछि आओर अपन कल्पित पाठ मूलमे कोष्ठक दए राखल जाइत अछि। दोसर स्थितिमे बिना कोष्ठकक कल्पित पाठ मूलमे आ मातृकाक पाठ टिप्पणीमे देल जाइछ आओर तेसर स्थितिमे सन्दिग्धे पाठ मूलमे ई बूझि राखि देल जाइछ जे हमरा बूझऽ मे नहि आएल अछि क्यो बुझिओ सकैत अछि एकर अभिप्राय, तेँ उक्त पाठक अव्यवहिते पश्चात् कोष्ठकमे प्रश्न-चिह्न राखि देल जाइत अछि। *महाकालसंहितामे* उपासनाक हेतु कहल गेल प्रक्रिया सम्पादनहुक क्षेत्रमे संलग्न होइत अछि जे गुरुक उपदेश, अपन बुद्धि तथा सत्तर्क सँ कएल गेल ऊह एतए आवश्यक होइत छैक– *'गुरूपदेशः बुद्धिः स्वा सत्तर्केणोह एव च'*। परिणामतः सम्पाद्य ग्रन्थक विषयवस्तुक नीक परिचयक सङ्ग बहुश्रुतता, बहुविध शास्त्रीय एवं लौकिक अनुभव, प्रत्युत्पन्न मति, प्रतिभा, ऊह, एक आसनेँ अधिक काल धरि विचारार्थ एकान्तवासक अभ्यास, मनःप्रणिधान आ तदनुकूल श्रमशीलता सम्पादन हेतु अपेक्षित होइत छैक। हमरा जनैत अध्ययन-अध्यापनहुसँ कठिन होइत छैक सम्पादनक कार्य, जकर नीक जकाँ पण्डित श्री गोविन्द झा अपन सम्पादित ग्रन्थसभमे कएल अछि। शास्त्रीय ग्रन्थ शास्त्रान्तरक विषयसँ अवश्य संकीर्ण रहैत अछि। खाहे पूर्वपक्षरूपमे, खाहे दृष्टान्त, साक्ष्य, प्रमाण तथा उपोद्बलक रूपमे ओकरा सभक समावेश रहितहिँ अछि, जाहिसँ ग्रन्थमे जटिलता आबि जाइत छैक। कुमारिल भट्ट श्लोकवार्त्तिक मे एकर संकेत एना करैत छथि–*'मीमांसाख्या तु विद्येयं बहुविद्यान्तराश्रिता'* (का. 13)। एतए मीमांसा पद शास्त्रमात्रक उपलक्षण थिक। ओहि जटिलताक समाधान कए साधारण पाठकक बोधगम्य विषयक प्रस्तुति सम्पादकक कार्य होइत अछि।

महाकवि विद्यापतिक दोसर कृति *गङ्गावाक्यावलीक* सामीक्षिक संपादन आ हिन्दीमे प्रामाणिक अनुवाद कए दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय सँ प्रकाशित कराओल अछि। ईहो धर्म शास्त्रहिसँ संबद्ध अछि। यद्यपि प्रो. यतीन्द्र विमल चौधरीक सम्पादन बंगालसँ कहियो प्रकाशित भेल अछि तथापि पं. झा द्वारा कएल गेल सम्पादन अधिक प्रामाणिक भ' सकल अछि।

मैथिली अकादमी, पटनासँ (91 ई.) प्रकाशित *वर्णरत्नाकरक* सम्पादनमे यद्यपि हिनक अन्तरङ्ग मित्र *प्रो. श्री आनन्द मिश्र* पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय हिनक सहयोग कएल अछि तथापि हम एतए हिनकालोकनिक पाण्डित्यक प्रकर्ष ई देखल अछि जे टिप्पणी लिखबाक काल ज्ञात विषयक व्याख्या तँ साधिकार सरल शब्देँ सुस्पष्ट करैत छथि मुदा अज्ञात विषयक स्पष्ट उल्लेख करैत निःसंकोच कहैत छथि जे हम ई नहि बुझलिऐक। सारस्वत समाजक मध्य अज्ञानक गोपनरूप अपराधसँ ई सर्वथा अपनाकेँ मुक्त रखैत छथि। कोनो व्यक्ति सभ विषयसँ परिचिते रहए सर्वथा एहन कोनो नियम नहि छैक। *मुद्राराक्षस* नाटकमे विशाखदत्त प्रसङ्ग उठाए साधरणपात्र गुप्तचरसँ कहाओल अछि–*'नहि सर्वः सर्वं जानाति। किञ्चित् तवोपाध्यायोऽपि किञ्चन्मादृशोऽपि'*।

महाकवि विद्यापतिएक अपभ्रंश काव्य *कीर्तिलता* ओ *कीर्तिपताकाक* यथाक्रम मैथिली ओ हिन्दी अनुवादक सङ्ग हिनक सामीक्षिक सम्पादन मैथिली अकादमी पटना ओ नाग प्रकाशन दिल्ली सँ प्रकाशित (92 ई.) भए विद्वानक मध्य समादृत ओ अभिनन्दित अछि। कीर्तिपताकाक तँ संस्कृत छाया सेहो देल गेल अछि। एहि दूनू कृतिक आनो प्रतिष्ठित विद्वान् द्वारा पूर्वहु सम्पादित कए प्रकाशन भेल अछि किन्तु ई परवर्ती प्रकाशन रहने निश्चय अधिक परिशुद्ध आकर्षक तथा गुणवत्ताक दृष्टिएँ सर्वथा संग्रहणीय भेल अछि। कीर्तिपताकाक सम्पादनमे हिनक शिष्यकल्प किन्तु विद्याक क्षेत्रमे अपन अध्यवसायक बलेँ यशस्वी डा. शशिनाथ झा हिनक सहयोगी छथि किन्तु हिनकासँ व्याप्य रहने सम्पादनक मार्गदर्शक एतए इएह रहल होएताह से उक्त ग्रन्थक अवलोकनसँ हमरा प्रतीत होइत अछि।

एकर अतिरिक्त हिनक सह-सम्पादित तथा सद्यः प्रकाशित (95 ई.) *शिखरिणी* सुनैत छी जे पुरस्कृतो भेल अछि, जाहिमे मैथिली साहित्यक साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत रचनासभक आलोचनात्मक निबन्ध संकलित अछि। एहि क्रममे मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित (81 ई.) हिनक सम्पादित **विद्यापति** *गीतावाली* ओ *गोविन्ददास-भजनावलीक* उल्लेख सेहो आवश्यक बूझि पड़ैत अछि। हिनक सम्पादनकलाक कौशल देखि सर्वथा हमरासभक सम्मान्य महान् दार्शनिक आ हास्यारसक एकमात्र अपना समयक विलक्षण काव्यसर्जक प्रोफेसर *हरिमोहन झाक अभिनन्दन ग्रन्थक* सम्पादनार्थ हिनक सेवाक उपयोग उक्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अभिनन्दन-समितिक अधिकारी विद्वान् लोकनि कएने होएताह। ई तँ भेल मुख्य कृतिसभक सम्पादनमे पं. झाक योगदान। एकर अतिरिक्त छोट-मोट सम्पादन बहुतरास हिनक सुनल आ देखल अछि जाहिमे सँ किछु स्थालीपुलाकन्यायसँ एतए उल्लिखित करैत छी। जेना (86-87 ई.) दू वर्ष ई *भाखा* मासिक पत्रिकाक सम्पादनमे योगदान कएने छथि। छओ वर्ष (79 सँ 84 ई. धरि) द्वैमासिक *मैथिली अकादमी पत्रिका* क सम्पादक छलाह। (95-96) चेतना पत्रिकाक दुइ अंक हिनके सम्पादनमे प्रकाशित भेल अछि। सम्प्रति शोधप्रधान अर्धवार्षिक मैथिलीक (95-96) **जिज्ञासा** नामक पत्रिकाक सम्पादनमे संलग्न छथि। साहित्य अकादेमी, दिल्लीक प्रकाशन *'नेशनल बिब्लियोग्राफी औफ इण्डियन लिटरेचर'* भाग V *मे मैथिली भागक* सम्पादन पं. झाए कएलैन्हि अछि। एतहि स्मरणीय अछि *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन लिटरेचरमे मैथिलीसँ संबद्ध विषयक संग्रहमे हिनक योगदान*।

जीविकार्थ बिहार सचिवालयक राजभाषा विभागमे नियुक्त भए अपन नियोगानुकूल जे सम्पादन-कार्यक निर्वाह ई कएल तकर पूरा परिचय हमरा नहि अछि। सुनैत छी जे छात्रोपयोगी पुस्तक सभक सेहो ई सम्पादन कएने छथि जकर सम्पादनक क्रमे किछु भिन्न होइत छैक आओर ताहूमे कीर्तिएक अर्जन कएल अछि।

हमरा जनैत उनैसम शताब्दक उत्तरार्धसँ लगभग डेढ़ सए वर्षसँ भारतमे विदेशी विद्वान् द्वारा तथा पाश्चात्य शिक्षासम्पन्न भारतीय विद्वान् द्वारा भारतीय विद्याक ग्रन्थसभक आलोचकनात्मक सम्पादनक क्रम आरम्भ भेल अछि। भारतीय विद्याक मनीषी लोकनिक दृष्टिमे तँ पारम्परिक रीतिक पाण्डित्य आओर आधुनिक पाश्चात्यविद्वानक द्वारा प्रवर्तित आलोचना-पद्धति तथा सम्पादन-कला प्रशंसाक विषय मानल गेल अछि। 'ट्रेडिसनल स्कौलरशिप तथा मोडर्न टेकनीक' केर उद्घोष सर्वत्र आधुनिक विद्वानक मध्य होअए लागल। एकर शिक्षा-दीक्षाक हेतु अनेक प्रान्तक विद्याक केन्द्रमे विश्वविद्यालयसभमे आयोजन आरम्भ भेल। एकर परिणामो नीक भेलैक।

परम्पराक पंडितलोकनि शास्त्रार्थमे, शास्त्रक परिष्कारमे तथा कठिनसँ कठिन पंक्तिक अवबोधनमे समर्थ रहितहुँ सम्पादन ओ आलोचनक पद्धतिसँ सर्वथा असंबद्ध रहि सम्पादन-आलोचन कएनिहारकेँ 'भूमिकापण्डित' कहि उपहास करैत छलाह। भूमिकापण्डितक तात्पर्य भेल जे कोनो ग्रन्थक भूमिका लिखबामे ई कुशल छथि, शास्त्रीय पाण्डित्यक गाम्भीर्य हिनकामे नहि छैन्हि, केवल पल्लवग्राहिता छैन्हि। हस्तलेख देखि ओकर प्रतिलिपि कए छपैत छथि, ओहि ग्रन्थक स्वारस्य बुझबाक क्षमता नहियो रहला पर उपर-झापरसँ किछु-किछु बूझि भूमिका तैयार कए लैत छथि। दोसर दिशि ई भूमिकापण्डित ओहि पारम्परिक पण्डितकेँ 'कूप-मण्डूक' कहि उपेक्षा करैत छलाह जे हुनका केवल विशेष ग्रन्थक वा कोनो एक विशेष शास्त्रक अध्ययन मात्र छैन्हि सामग्रेण कोनो शास्त्र नहि देखल छैन्हि। तँ शास्त्रार्थ मे शास्त्रीय विषयक पूर्वजक लिखल परिष्कारक अभ्यासमे दुरवबोध पंक्तिक अर्थ करबामे भने ओ पटु रहथु किन्तु सम्पादन-आलोचनक अभिज्ञता हुनकामे नहि भेटत।

आइ-काल्हि शिक्षाक क्षेत्रमे अनुसन्धानक प्रसारसँ सम्पादन ओ आलोचन दिशि विद्वानूक ध्यान अधिक आकृष्ट भेल अछि। विभिन्न विद्यापीठ ओ विविध विश्वविद्यालय एहि सभक सेमिनार संगोष्ठी करैत अछि जाहिमे अभिज्ञ सम्पादक लोकनिक द्वारा अनुभव-परिपूत सम्पादनसंबन्धी समस्यासभक समाधान कएल जाइत अछि, ओकर शिक्षा देल जाइत अछि, एहिसँ संबद्ध ग्रन्थक ओ निबन्धक प्रकाशन कएल जाइत अछि। प्रो. सुकृथंकर महाशयक महाभारतक भूमिका, डा. एस. एम. कत्रेक पाठालोचनक प्रक्रिया-ग्रन्थ, जोधपुरसँ प्रकाशित पाण्डुलिपि विज्ञान ग्रन्थ,डा. डी. डी. कौशाम्बीक भर्तृहरिशतकत्रयक सम्पादनक भूमिका, तथा हालहिमे पूनासँ प्रकाशित डा. वसिष्ठ नारायण झाक द्वारा सम्पादित सम्पादनसमस्यासंबन्धी विद्वान्लोकनिक अनुभव-परिपूत निबन्धसंग्रह एहि दिशाक पथ-प्रदर्शक मानल जाइत अछि। एहि ग्रन्थसभक अवलोकनसँ सम्पादन-कलासँ संबद्ध समस्या एवं ओकर समाधानक परिचय भेटला पर जिज्ञासु सुधीजन अवश्य लाभान्वित होएताह से हमरा विश्वास अछि। प्रातःस्मरणीय डा. सर गङ्गानाथ झाक मनुस्मृति आ' ओकर मेधातिथि भाष्यक सम्पादनक क्रममे पाठालोचनसँ संबद्ध टिप्पणीक सङ्ग विश्लेषण-आलोचनसँ संवद्ध ओ तुलनामूलक टिप्पणी कतेक वैदुष्य ओ श्रमसाध्य अछि से तीन भागमे प्रकाशित उक्त टिप्पणीक अवलोकनेसँ क्यो बूझि सकैत अछि।

एहि दिशामे पण्डित टी. गणपतिशास्त्री, म. म. विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, म. म. कुप्पुस्वामी शास्त्री, डा. आर. जी. भण्डारक, महानैयायिक कामाख्यानाथ तर्कवागीश तथा म. म. गोपीनाथ कविराजलोकनिक योगदान चिरस्मरणीय अछि। पछाति एहि मार्गकेँ आगू बढ़ाए प्रशस्त कएल पं. श्री सूर्य नारायणशास्त्री, डा. गौरीनाथ शास्त्री, डा. आर. एन. दाण्डेकर, डा. बी. चौबे, प्रो. श्रीनारायण मिश्र आदि।

हमर प्रणम्य आ अभिनन्द्य पण्डित गोविन्द झाक उपासनासँ हिनक विद्या अवदात छैन्हि आओर तँ विचारमे विशदता भेटैत अछि ओ लेखनमे यावदुक्तोपपन्नता देखैत छी। जे विषय जतबा कहलासँ उपपन्न होइक तदर्थ ओतबा कहबे थिक यावदुक्तो पपन्नता। संस्कृत काव्य ओ दर्शनक व्याख्याकार मल्लिनाथ कहैत छथि जे *'नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते'*। एकर परिपालन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित झासँ स्वभावतः भए जाइत अछि। जेँ हिनकामे स्वाध्याय आ अध्यवसाय पढ़ब-आ-गुनबसँ प्राचीन पारम्परिक पाण्डित्य आ नवीन आलोचन-पद्धतिक परिचय विद्यमान अछि तेँ हिनक सम्पादनमे ने पाण्डित्यक आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन भेटत ने अपेक्षित कथ्यक अभावे। अनपेक्षित कथनो हिनक स्वभावक विपरीते अछि। स्वभावतः सरल होइतहुँ अनसोहाँत आ तर्करहित कथाक प्रतिवादमे कखनहुँ नहि चुकैत छथि तेँ कौखन हिनकासँ लोककेँ कटुता भए जाइत छैक मुदा स्फटिकमे जपाकुसुमक उपराग जकाँ ओ हिनक औपाधिक होइत अछि, ओकर ई राग नहि रखैत छथि।

तस्मात् पण्डित श्री गोविन्द झा अपन वैदुष्य, कौशल तथा परिश्रमक बलेँ सम्पादन-कलामे प्रावीण्य अधिगत कए पूर्ण कीर्ति अर्जित कएल अछि। हमरा ई बुझल अछि जे केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षासंस्थान, सारनाथमे 92 ई. मे ई प्रो. अनन्तलाल ठाकुरक संग प्रशिक्षणार्थीसभकेँ मैथिली आ बंगला लिपि सिखेबाक हेतु बजाओल गेलाह, पछाति दूनू लिपि झा महाशये सिखाबए लगलाह आओर प्रो. ठाकुर सम्पादन-कलाक प्रसंग व्याख्यान देबाक आयोजन कएल जाहिसँ प्रशिक्षणार्थी दूनू लिपिक परिचयक संग सम्पादनहुक शिक्षा पौलैन्हि आ संस्थाकेँ एके आयोजने दूटा कार्यक सिद्धि भेलैक, विद्वान्केँ मोनक अनुसार किछु कहबाक अवसर भेटलैन्हि आ पण्डित झा महाभाग अपन नियोग दिनक पूर्वार्धमे पूरा कए उत्तरभागमे प्रो. ठाकुरक–जे हिनक समसामयिके विद्वान् छथि–व्याख्यान विधिवत् सुनि विद्याक प्रति अपन स्वाभाविक अनुरागक प्रदर्शन कएल, जखन कि एहिसँ पूर्व अनेक सम्पादन हिनक प्रकाशित भए गेल छल। ई हमरा पत्र देलैन्हि जे सम्पादनसंबन्धी लेक्चरसभ प्रो. ठाकुरक सुनि बहुत किछु सीखल आ कृतार्थ भेलहुँ। ई भेल हिनक नैसर्गिक विद्यानुराग जे प्राक्तन तपस्याक प्रभावहि सम्भव। गोवर्धनाचार्य विद्या आ लक्ष्मीक स्वभावक प्रसङ्ग कहने छथि:

'सुखयतितरां न रक्षति परिचयलेशं वाराङ्गनेव श्रीः
कुलकामिनीव नोज्झति वाग्देवी जन्मजन्मापि ॥

तेँ जन्मान्तरक विद्याक परिपाक पण्डित झा महाभागमे यदि एहि जन्ममे प्रकर्षता पौलक अछि तँ से उचिते थिक।

सम्पादक गोविन्द झा

☐ *श्री मोहन भारद्वाज*

मिथिला पण्डित प्रदेश थिक। एहि ठाम एक-सँ-एक पण्डित भेलाह अछि। पाण्डित्य-परीक्षाक अपन प्रणाली रहल अछि। *'जिज्ञासा'* (वर्ष 1,अंक 2, जुलाइ-दिसम्बर, 1995) मे आचार्य रमानाथ झा लिखित *'एक शरयन्त्रीक विज्ञप्ति'* शीर्षक निबन्धसँ ज्ञात होइत अछि जे पाण्डित्य-परीक्षाक एकटा मैथिल परिपाटी छल *शरयन्त्र* लेब। पण्डित स्वयं घोषणा करैत छलाह जे हुनक शरयन्त्र-परीक्षा लेल जाय। निश्चित तिथिकेँ निर्धारित स्थान पर, सार्वजनिक सभा होइत छल आ ओ प्रश्नक उत्तर दैत छलाह। प्रश्नक व्यापकता असीम होइत छल। शास्त्रसँ लए कए दैनन्दिन जीवन धरि। रमानाथ झा उक्त निबन्धमे महामहोपाध्याय गोकुलनाथ उपाध्यायक प्रसंग लिखने छथि–"मैथिल-परम्परामे कहल जाइत अछि जे इएह अन्तिम शरयन्त्री, मिथिलाक अन्तिम पण्डित भेलाह जनिक परीक्षा सार्वजनिक सभामे जनता द्वारा लेल गेल।"

सम्प्रति एहि प्रकारक कोनो परीक्षा-प्रणालीक प्रचलन नहि अछि। किन्तु, हमरा लगैत अछि जे शरयन्त्र-परीक्षामे सम्मिलित होयबसँ मिलैत-जुलैत काज थिक सम्पादन करब। सम्पादकक हेतु विशेषज्ञताक संग-संग जे बहुज्ञता अपेक्षित अछि से शरयन्त्र-परीक्षाक स्वभावगत अपेक्षासँ बहुत भिन्न नहि अछि। कविता, कथा, नाटक लिखि सम्बद्ध विधाक रचनाकार भए सकैत छी, विभिन्न विधामे रचना कए बहुविधावादी रचनाकार कहा सकैत छी, मुदा बहुविधवादी रचनाकार होयबाक संगहि बहुविधावादी विद्वान् होयब सम्पादकक लक्षण थिक।

गोविन्द झा सम्पादक छथि। कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, निवन्ध आदि विधामे तँ रचना करिते छथि, वेद, धर्मशास्त्र, ज्यौतिष, साहित्य, व्याकरण, भाषा-विज्ञान प्रभृतिक शास्त्र-मंथनसँ लए कए सभा-समिति आ साहित्य-राजनीतिसँ सम्बन्द्ध विषयक घमर्थन सेहो करैत छथि। शब्द-प्रयोगसँ खाट घोरब धरि–शुद्धाशुद्धिक ज्ञान लेल अहाँ हिनकासँ सम्पर्क कए सकैत छी। लेखन-रूपान्तरण आ प्रकाशन-मुद्रणमे तँ सहजेँ, पुस्तकक सूचीकरणसँ पत्रिकाक पंजीकरण पर्यन्तमे हिनक परामर्श पार-घाट लगा सकैत अछि।

एक शब्दमे हम कहब जे गोविन्द झा सम्पादक छथि। सम्पादन यदि साहित्य-प्रतिभा आ शास्त्र-निपुणताक समन्वय थिक तँ गोविन्द झा सम्पादक छथि। सम्पादन यदि चिन्तन-मनन आ कार्यान्वयन-निष्पादनक संगम थिक तँ गोविन्द झा सम्पादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

छथि। सम्पादक यदि विषय-वैदुष्य आ विद्या-वैविध्यक गठबन्धन थिक तँ गोविन्द झा सम्पादक छथि। किन्तु, आश्चार्य अछि जे हिनका सम्पादक केओ नहि कहैत छनि। ई सम्पादकजी नहि कहबैत छथि। हिनका लोक कहैत छनि 'पण्डितजी' अथवा 'गोविन्द बाबू'। हमरा जनैत बात एक्के भेल। 'पण्डितजी' अर्थात् सिद्धान्त आ 'गोविन्द बाबू' माने व्यवहार। सम्पादन यदि सिद्धान्त आ व्यवहारक मिलन-विन्दु थिक तँ गोविन्द झा सार्वजनिक स्तरपर जानल-मानल सम्पादक छथि। आपादमस्तक सम्पादक। सर्व-तन्त्र-स्वतन्त्र सम्पादक।

गोविन्द झाक सम्पादन-कार्यक क्षेत्र बड़ व्यापक अछि। संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीसँ सम्बन्द्ध हिनक सम्पादित कृतिक वास्तविक संख्याक निर्धारण करब कठिन अछि। कठिनता आओर बढ़ि जाइत अछि जखन देखैत छी जे किछु सम्पादन ई अपन नामसँ कएने छथि आ किछु बेनामी। मोन पाड़बाक थिक जे बिहार सरकारक राजभाषा विभागमे हिनक नियुक्ति 'लेक्सिकन असिस्टेन्ट' कहि कए भेल रहनि। एहि क्रममे ई अनेक पोथीक अनुवाद-संकलन-सम्पादन कयलनि, मुदा नाम भेल हवलदारक। एकटा पोथी अछि-'दस्तावेजों के नमूने'। पहिने कचहरीमे लिखल जाइत दस्तावेजक भाषा फारसी-उर्दू मिश्रित होइत छलैक। ओकर लिपि रहैक कैथी। बिहार सरकारकेँ एहन किछु दस्तावेजक हिन्दीकरण करयबाक बेगर्ता भेलैक तँ गोविन्द झा ताकल गेलाह। बेगूसराय मे झारखण्डी प्रसाद, वकीलक ओहिठाम रहि हुनक सहयोगसँ गोविन्द झा कचहरिआ दस्तावेजक संकलन आ अनुवादक संग सम्पादन सेहो कयलनि। कार्यालयीय कार्यक प्रसंग एहिना कतोक पोथीक नामी-बेनामी सम्पादन कयलनि जे आइ आदर्श नमूनाक रूपमे चर्चित-प्रशंसित अछि।

मैथिलीमे गोविन्द झा द्वारा सम्पादित प्रमुख कृति अछि : *विभागसार, विद्यापति-गीतावली, गोविन्ददास-भजनावली, कीर्तिलता, भाषा आ समाज, स्मृति-सन्ध्या (भाग दू), वर्णरत्नाकर, हरिमोहन झा अभिनन्दन-ग्रन्थ, शिखरिणी*। एहिमे प्रारम्भिक छौटा स्वतन्त्र सम्पादन थिक, शेष तीनटा संग-सम्पादन। पोथीक अतिरिक्त पत्रिकाक सम्पादकक रूपमे सेहो हिनक ख्याति छनि। 'मैथिली अकादमी पत्रिका' तथा 'भाषा' क संग-सम्पादक छलाह, 'जिज्ञासा' क सम्पादक छथि। एहि तरहेँ हिनक सम्पादन-क्षेत्र आकारे मे व्यापक नहि अछि, स्वरूपोमे बहुरंगी अछि। हिनक सम्पादकीय सीमा-सामर्थ्यक निरूपण वस्तुतः एकटा कठिन काज थिक।

गोविन्द झाक सम्पादन-दृष्टि आ सम्पादन-कला पर विचार करैत काल मैथिली संसारमे सम्पादनक स्थिति पर स्वतः ध्यान चलि जाइत अछि। पत्र-पत्रिकाक सम्पादनक क्षेत्रमे अत्यन्त अव्यवस्था अछि। साहित्यकार आ सम्पादक कहयबाक अधीर उत्साहमे पत्रिका निकालयवलाक कमी नहि अछि। स्थितिक भयावहता तखन आओर मारुक भए जाइत अछि जखन सर्जनात्मक साहित्यकारक रूपमे प्रौढ़ताप्राप्त व्यक्ति पत्रिकाक नाम पर भानुमतीक पेटार सोझाँमे राखि दैत छथि। कविता-कथाक लेखन आ सम्पादनमे जे तात्विक अन्तर अछि तकरा बिनु बुझने सम्पादक बनलासँ एहने स्थिति होइत छैक। पोथीक सम्पादनक प्रसंग सेहो स्थिति असन्तोषजनके अछि। संकलन आ सम्पादन दू काज थिक। एहने एकटा तेसर काज थिक रचनाक प्रस्तुति। संकलनकर्त्ता आ प्रस्तोता सम्पादको होथि से आवश्यक नहि अछि। मुदा, एहि तीनू शब्द केँ समानार्थक बुझि लेल गेल अछि। रचनाक संकलन-कर्त्ता आ प्रस्तुतिकर्त्ता सम्पादक बनि गेलाह अछि। हमर अभिप्राय ई नहि अछि जे समस्त पोथी वा पत्रिकाक सम्पादक एहने छथि। मुदा, एहनो छथि। एहन स्थिति मे, विशेषतः एहन सम्पादक लेल, गोविन्द झाक सम्पादन-कार्य मार्ग-दर्शक प्रकाशस्तम्भ थिक।

जेना कहि चुकल छी, सम्पादन एकटा दृष्टि थिक। ई दृष्टि दृश्य कम, अनुभवगम्य बेसी होइत अछि। उदाहरणक लेल गोविन्द झा द्वारा सम्पादित *'विभागसार'* केँ देखल जाय। गोविन्द झाक उद्देश्य छनि विद्यापतिकृत 'विभागसार' क विशेष सन्दर्भमे धर्मशास्त्रक मैथिल सम्प्रदायकेँ रेखांकित करब। एहि लेल ओ विद्यापति, विभागसार आ मैथिल समाजक सम्यक् विवेचन कयलनि अछि, अधुनातन शैलीमे अपेक्षित सभ सूचना देलनि अछि। भूमिकासँ परिशिष्ट धरिक सामग्री मूल कथ्यकेँ परिपुष्ट करैत अछि। एहि ठाम बुझाइत अछि जे सम्पादन केवल रचनाक प्रस्तुतिए नहि, ओकर टीका, भाष्य आ समीक्षा सेहो होइत अछि। अंग्रेजीमे जकरा पोथीक 'क्रिटिकल एडिसन' कहैत छैक से सभ बुते आ सभ पोथीक संभव-संगत नहियो हो, तैयो दृष्टिकोण विशेषसँ संयुक्त भइये कए कोनो संकलन वा प्रस्तुति सम्पादित कृति कहयबाकं अधिकारी होइत अछि से धरि निश्चित।

गोविन्द झाक एकटा उल्लेखनीय सम्पादित कृति थिक 'विद्यापति-गीतावली'। मैथिली साहित्यमे एहि पुस्तकक ऐतिहासिक महत्व अछि। मैथिलीमे विद्यापतिक गीतक पहिल सम्पादित-कृति होयबाक गौरव एकरा प्राप्त छैक। किछु गुटका संस्करण भने छपल हो, मुदा विद्यापति-गीतक एहन मैथिली संस्करण एहिसँ पूर्व नहि भेल छल। किन्तु, ई तँ भेल संकलनक महत्ता। गीतक संकलन ओहिना नहि कयल गेल अछि। ओकरा पाछाँ एकटा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सुविचारित दृष्टिकोण अछि। सम्पादक एकरा संग्रहक विशेषता कहि जनौलनि अछि। सम्पादकक अनुसार एहि संग्रहक पहिल विशेषता थिक गीतक पाठोद्धार। कहबाक प्रयोजन नहि जे पाठ-शुद्धि आ पाठोद्धाधार विद्यापति-गीतक एकटा विकट समस्या थिक। हमरा जनैत पाठशुद्धि आ पाठोद्धारक नामपर विद्यापतिक गीतमे ततेक जोड़-तोड़ (टेम्परिंग) कयल गेल अछि जे आब ओकर मूलरूपकेँ जानब आ ओकर सही अर्थ बूझब कठिन अछि। हमर अभिप्राय ई नहि जे पाठशुद्धिक प्रयोजन नहि छैक। किन्तु, एहि प्रसंग जे अव्यवस्था आ अराजकता अछि तकरा समाप्त करब नितान्त आवश्यक अछि। एकटा उदाहरणसँ हम अपन बात स्पष्ट करए चाहब। विद्यापतिक एकटा गीत अछि जकर पहिल पंक्ति थिक *'आँचरे वदन झपाबह गोरि'*। ई गीत नेपाल पदावली (पद-संख्या 235), तरौनी-पदावली (न. गु. पदसंख्या 228) आ रागतरंगिणी (पृष्ठ-संख्या 56)–तीनू स्रोत सँ उपलब्ध अछि, किन्तु तीनूमे गीतक तीन रूप अछि। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद सँ प्रकाशित 'विद्यापति-पदावली' (प्रथम भाग, पृष्ट 299) मे सम्पादकीय अभिमतसँ एकर चारिम पाठ देल गेल अछि। गोविन्द झा 'विद्यापति-गीतावली' मे (गीतसंख्या 76) एकर पाँचम रूप प्रस्तुत कयलनि अछि। स्थितिक विकरालताक अनुमान एतबेसँ कयल जा सकैत अछि। एहन उदाहरण एकेटा नहि, अनेक अछि। नेपाल पदावली, तरौनी पदावली आ रागतरंगिणी लोककंठसँ संकलित कयल गेल अछि। लिपिकार गीतकेँ जाहि रूपेँ सुनलनि, ताहि रूपेँ लिखलनि। आब से स्थिति नहि अछि। एकटा सर्वसम्मत–तर्कसंगत रूपक निर्धारण कयल जा सकैत अछि। पाठानुसन्धानक दिशामे गोविन्द झाक प्रयास निश्चित रूपसँ प्रशंसनीय थिक।

'विद्यापति-गीतावली'क दोसर विशेषता थिक 'गीतक नवीन विन्यास-क्रम'। सम्पादकक अनुसार विद्यापति-गीतक क्रम-विन्यासक दू धारा अछि –एकटा मिथिलाक, दोसर बंगालक। मिथिलामे गीतक रागानुसारी विन्यास-क्रम प्रचलित छल, किन्तु बंगालक संग्रहमे गीतकेँ भावक अनुसार क्रमबद्ध कयल गेल अछि। सम्पादकक शब्दमे–*"प्रस्तुत संग्रहमे मिथिलाक परम्परानुसार गीतकेँ रागक्रमेँ विन्यस्त करब सामान्य लोकक हेतु, विशेषतः आजुक समयमे, अनुपयुक्त बूझि बंगालक वैष्णवलोकनि द्वारा प्रवर्त्तित विषयानुसारी क्रम राखल गेल अछि।"* विद्यापति-गीतक अध्येताक लेल ई एकटा विचारणीय विन्दु थिक। निर्विवाद अछि जे विद्यापति मुक्तक गीत लिखलनि। गीतकेँ शीर्षक-बद्ध नहि कयलनि। बंगालक वैष्णव सम्प्रदायक भक्तलोकनि जखन धार्मिक मानसिकताक अन्तर्गत विद्यापति-गीतक संग्रह कयलनि तखन ओकरा एकटा कथा-सूत्रमे बन्हलनि आ तदनुसार गीतक गुच्छा बनौलनि। प्रत्येक गुच्छाक नामकरण तदनुरूपे कयलनि। ई कार्य एकटा खास दृष्टिकोणसँ कयल गेल। एहि प्रसंग गोविन्द झाक कथन छनि–*"चैतन्य-सम्प्रदायक वैष्णवाचर्यलोकनि कृष्णकेँ आलम्बन बनाय एक नवीन काव्यशास्त्रक प्रवर्त्तन कयलनि ओ विद्यापति प्रभृतिक गीतक वर्गीकरण एही काव्यशास्त्रक आधार पर प्रीतिक विभिन्न दशा तथा नायिकाक भेदोपभेदक अनुसार कयलनि, यथा पूर्वराग, वयःसन्धि, विरह, मान, इत्यादि।"* स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक गीतकेँ कोलामे एहि लेल बाँटल गेल जे ओकरा एकटा खास भाव-खेतक उपजा बना कए प्रस्तुत कयल जा सकय। एहिमे ओलोकनि सफल भेलाह। हुनका लोकनिक अभीष्ट-पूर्त्ति भेलनि। किन्तु, विद्यापतिक गीतकेँ देखबाक आ बुझबाक दृष्टि पूर्वाग्रहग्रस्त भए गेल। जानि-बूझि कयल गेल जोड़-तोड़सँ ओ निर्दुष्ट नहि रहल। कालान्तरमे आनो प्रकारक विकृति आबि गेल। तेँ आइ विद्यापतिक असली आ नकली गीतमे अन्तर करब कठिन अछि। गोविन्द झा सदृश विद्वान् सम्पादककेँ सेहो लिखय पड़ैत छनि *"एहि संग्रहमे हम असली-नकलीक फेरमे नहि पड़ि एहन सकल गीत देलहुँ अछि जे शास्त्रीय वा लौकिक प्रसिद्धक अनुसार विद्यापतिकृत मानल जाइत रहल अछि।"*

असलमे गोविन्द झा केँ 'टीम-वर्क' (सामूहिक-कार्यपद्धति) मे विश्वास नहि छनि। ओ कतोक एहन काज कयलनि अछि जे सामूहिक स्तरक काज थिक। जेना, साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित 'बिबलिओग्राफी ऑफ मैथिली लिटरेचर' अथवा विभिन्न प्रकारक शब्द-कोशक सम्पादन। मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित मैथिली शब्दकोशमे हिनक नाम एकटा संग-सम्पादकक रूपमे छनि, मुदा ओहिमे हिनक योगदानसँ सभगोटे अवगते छी। एकर अतिरिक्त अन्य कतोक प्रकारक शब्दकोशक सम्पादन ई कयने छथि जे प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि। 'आरम्भिक विज्ञान-परिभाषाकोष' वाणी प्रकाशन, दिल्लीमे पड़ल अछि तँ 'विद्यापति अपभ्रंश कोष' राष्ट्रभाषा परिषद्, पटनामे गरदा फाँकि रहल अछि। एहि प्रकारक कार्यमे ओ एसगरे संस्था बनि जाइत छथि। व्यक्तिसँ संस्थामे संक्रमण अनका लेल जतेक कष्टसाध्य हो, हिनका हेतु आब सुगम भए गेलनि अछि। व्युत्पन्नता आ कार्य-क्षमताक नियोजित-नियमित उपयोग संस्थागत विशेषता थिक जकरा ई साधि लेने छथि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

संयोगे कहबाक चाही जे हमरा हिनका संग सम्पादन-कार्य करबाक अनेक अवसर भेटल अछि। पोथी आ पत्रिका–दुनू प्रसंग मे। *'हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ'* तथा *'शिखरिणी'* क सम्पादक मण्डलमे हमसभ संग रही। **'भाखा'** क साझी सम्पादन कयने छी। एखनहु *'जिज्ञासा'* क सम्पादमे हम हिनक सहायक छी। तैँ हमरा हिनका सम्पादन-दृष्टिकेँ बुझबाक आ सम्पादन-कलाकेँ जनबाक अनेक अवसर, आ सेहो अत्यन्त निकटसँ, प्राप्त भेल अछि। हिनक द्वारा सम्पादित कृतिक अपन विशेषता आ निजता होइत अछि, आ तकर कारण थिक सुविचारित, दृष्टिसम्पन्न सम्पादन। एहन कतोक अवसर मोन पड़ैत अछि जखन ई अवढँगाह आलेख केँ खराजि कऽ यशस्वी बना देने छथि। सम्पादक-मण्डलक निर्णयानुसार 'शिखरिणी' मे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत पोथीक समीक्षा तथा ओकर रचनाकारक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक परिचयात्मक विवरण देबाक छल। लेखकसभकेँ अनुरोध-पत्र पठाओल गेल। जखन आलेख सभ आयल तँ चकित रहि गेलहुँ। कोनोमे पुस्तकक समीक्षा छल तँ रचनाकारक परिचय नहि, कोनोमे परिचयात्मक विवरण ततेक छल जे पुरस्कृत पोथी नेपथ्यमे चलि गेल छल, आ कोनोमे दूनूक पलड़ा ततेक भारी छल जे उठौने नहि उठय। मुदा, गोविन्द झाक लेल ई सभ काज जेना बामा हाथक खेल हो। हिनक मार्ग-दर्शन आ सक्रियताक परिणामस्वरूप पोथी सुरेबगर भए गेल। किन्तु, बात एतहि समाप्त नहि भेल। एहि स्थितिकेँ कतेक कलात्मक ढंगसँ गाविन्द झा प्रस्तुत कयलनि से 'शिखरिणी' क 'नेपथ्य-कथा' क एहि उद्धरणमे द्रष्टव्य अछि–

'अपन टाङ कतहु अपना हाथेँ काटल होइक। जे करबाक होइक से अहीँ कए दिऔक।' ई छल संक्षेप कए देबाक हमर अनुरोध पर एक लेखकक उत्तर। 'टाङ नहि, घेघ टा काटब।'–हम आश्वासन देलिअनि। खूब सम्भव जे हम जकरा घेघ बुझल तकरा ओ घेँटेँ बुझैत होथि आ तखन जे हुनक प्रतिक्रिया होएत से–कुकुरबधियाक परिणाम के नहि जनैत अछि। क्षमा-याचना हमर कर्त्तव्य थिक, संगहि इहो जनैत छी जे एहन विष 'अपराधक्षमापन स्तोत्र' सँ नहि उतरैत छैक।''

दोसर प्रसंग अछि 'भाखा' सँ सम्बद्ध। नाम भने एक हो, मुदा पोथी आ पत्रिकाक सम्पादनमे अन्तर अछि। ताहूमे मैथिली पत्रिकाक सम्पादन। पत्रिकाक संख्या कम, तैँ सम्पादकसँ बहुत-बहुत अपेक्षा। कथा, कविता, समीक्षे नहि, संस्था-समितिक उपविधिसँ गाम-घरक गतिविधि धरिक जानकारी चाही। हमरा सभकेँ 'मास्टर की' उपलब्ध छलाह। जे चाही, जेहन चाही, अनूदित वा मौलिक चाही–गोविन्द झाकेँ कहबाक काज छल। नामसँ, छद्मनामसँ अथवा बिना नामसँ–हुनक रचना छपैत छल आ पाठकक अपेक्षाक पूर्त्ति पत्रिका करैत छल। किन्तु, महत्त्व एतबे बातक नहि छल। एहिसँ बेसी महत्वपूर्ण छल एहि सभ रचनाक भीतरसँ पारदर्शी शीशा जकाँ झलकैत गोविन्द झाक निजता। उदाहरणक लेल ' विदुर वैदेह' क नामसँ प्रकाशित हिनक रचनाकेँ देखल जा सकैत अछि। किन्तु, हम उद्धरण देब एकटा एहन रचनासँ जाहिमे लेखकक रूपमे हिनक नाम नहि छपल अछि। नाम हो वा नहि, हिनक लेखक-व्यक्तित्व बेछप भइये जाइत अछि। जनवरी, 1989 मे मुखपृष्ठसँ सम्बद्ध एकटा रचना छपल–'विद्यापतिक आङनमे मैथिली-संकीर्तन'। एकर प्रारम्भ एहि तरहेँ कयल गेल अछि– *''कहाँ-दन कोन-दन पुराणमे कथा छैक जे मिथिला कोनो जन्म मे कुम्भकर्णक बहिनि रहथि। से मिथिला लगातार नओ मास धरि 'सर्वमैथिललोकेषु निद्रारूपेण संस्थिता' रहि कातिकमे जागि उठलीह। 'देव-उठाओन' क तेसर दिन पण्डित श्री विद्यापति ठाकुरक आङनमे जय-जय भैरविक घोषक संग टोप-टहंकारसँ 'देवी-उठान' भेल। पटना घटना-मय भए गेल। दरभंगा नव-रंगा भए गेल। बिहारक प्रथित राजधानी आ मिथिलाक व्यथित राजधानीमे एकहि बेर शंख बाजल। एक गिदरक 'हुआ' सुनि आनो गिदर सभ हुआ-हुआ करबे करत, मुदा तकर हाल बादमे। सम्प्रति पटनाक 'हाल' आ दड़िभंगाक 'चाल' अपन 'भाखा' मे सुनल जाए।''* एहि रपटकेँ किछु उपशीर्षकमे बाँटल गेल अछि। तकर नामकरणक व्यंजक-वक्रोक्ति द्रष्टव्य अछि–भाषणबाजी : वचने का दरिद्रता, गुणीक सम्मान-सत्कार : वृद्धपूजा गरीयसी, कविता-लहरीः हँ-हँ-ही-ही, गविता-लहरीः बुलकी देबौ, हुलकी देबौ, रवीन्द्र-रजनी : सुन सुन सजनी, आदि-आदि।

हमरा विचारेँ गोविन्द झा मूलतः सम्पादक छथि। पहिने सम्पादक छथि, बादमे कविता-कथा-नाटकक रचनाकार। कवि-कथाकार-नाटककार पर हिनक आचार्यत्व कतौ-कतौ भारी पड़ि जाइत छनि, मुदा हिनक कारयित्री प्रतिभा जखन भावयित्री प्रतिभासँ सम्बद्ध होइत अछि तखन ओहिमे चमत्कार आबि जाइत छैक। ओ चमकि उठैत अछि। हिनक अवदानी व्यक्तित्वक गरिमा एतहि पूर्णता पबैत अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली नाटकक विकासमे पंडित गोविन्द झाक योगदान

डा. श्री प्रेम शंकर सिंह

मैथिलीक-परंपरामे पंडित गोविन्द झाक एक बहुभाषाविज्ञ, एक कुशल उपन्यासकार, लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकार, कवि, निबंधकार एवं समीक्षकक रूपमे लोकप्रियता अर्जित कयलनि, किन्तु हिनक वास्तविक प्रतिभाक प्रस्फुटन भेल अछि एक बहुचर्चित नाटककारक रूपमे। हिनक रंग-साधनाकेँ अन्वेषण, विकास एवं उपलब्धि एहि तीन कालखण्डमे विभाजित कए देखब अधिक तर्कसम्मत होएत। कोनो नाटककार क्रमशः अनुकरण, अध्ययन एवं मननक अवस्थासँ गुजरैत अपन विकास करैत अछि। अनवरत साधनाक पश्चात् अपन समग्र व्यक्तित्व प्राप्त करैत अछि। पहिने ओ यथार्थ मार्गक अन्वेषण करैत अछि। विभिन्न प्रयोग एवं अनुभवक पश्चात् ओकरा सही दिशा भेटैत छैक तथा अपन अनुरूप रंग-शैलीक निर्माण कए नाट्य-प्रेमी पर अपन विशिष्ट छाप छोड़बामे समर्थ होइत अछि। उपर्युक्त परंपराक पृष्ठभूमिमे पंडित गोविन्द झा मैथिलीनाट्य साहित्यमे अपन हस्ताक्षर कयलनि, जे समयक परिप्रेक्ष्यमे एक बहुचर्चित नाटककारक रूपमे एकर विकासमे नाट्य-साहित्यक सृजन कए योगदान देलनि।

अन्वेषणकाल—मैथिली नाट्य-साहित्यमे पंडित गोविन्द झाक प्रवेश वर्त्तमान शताब्दीक पंचम दशकमे भेल तथा ओ संस्कृत-साहित्यक महान नाटककार महाकवि कालिदासक प्रथम नाट्य-कृतिक अनुवाद मैथिलीमे कयलनि। ओ थिक **मालविकाग्निमित्र**(1354 साल)। एकर अनुवादमे हिनका ईशनाथ झा (1907-1965) अत्यधिक सहायता ओ प्रोत्साहन देलथिन। जहिना कालिदास नाट्य-रचनाक शुभारंभ "मालविकाग्निमित्र"सँ कयलनि तहिना गोविन्द झाकेँ महत्वाकांक्षा जागृत भेलनि जे ओही महान नाटककारकेँ किऐक ने अपन नाट्य-गुरुक रूपमे स्वीकार कयल जाय। एहि भावनासँ प्रेरित भए ओ एकर अनुवाद कए मैथिली नाट्य-साहित्यक द्वार पर थाप देलनि। हुनका प्रबल महत्वाकांक्षा रहल होएतनि जहिना कालिदास अपन नाट्य-कलाक कारणेँ अजर-अमर एवं अक्षुण्ण छथि तहिना हमहुँ मैथिली नाट्य-जगतमे ओएह स्थान प्राप्त कए सकी। एहि भावनासँ प्रेरित भए ओ मैथिली नाट्य संसारमे एक अनुवादकक रूपमे प्रवेश कयलनि जाहिसँ मैथिली नाट्य-प्रेमी सुपरिचित छथि। हिनक प्रारंभिक नाट्यानुवादकेँ हम अन्वेषण-कालक परिधिमे राखल अछि। गोविन्द झाक "मालविकाग्निमित्र"क मैथिली रूपान्तरण संस्कृत नहि जननिहार मैथिली पाठकक हेतु अत्यन्त उपकारी सिद्ध भेल। एहिसँ मैथिलीक अनुवाद-साहित्यक श्रीवृद्धि भेल अछि।

विकासकाल—नाट्य-कौशलक बीजारोपण गोविन्द झाकेँ अनूदित नाटकमे भेलनि, किन्तु हुनक वास्तविक प्रतिभाक प्रस्फुटन वर्त्तमान शताब्दीक षष्ठ दशाब्दमे भेल जखन ओ **बसात** नाटकक रचना कए मैथिली नाट्यकर्मीकेँ देल। एहि नाटकक रचना ओ एक एहन संक्रमण-कालमे कयलनि जखन मैथिली नाटक प्राचीन परंपरावादी उपलब्धिक भार वहन कयने आबि रहल छल। ओहिमे नवीनता नहि आयल छलैक। ई श्रेय वस्तुतः पंडित गोविन्द झाकेँ छनि जे नाटकक पुरातन व्यामोहक परित्याग कए सर्वथा नव कथ्य एवं शिल्पक अन्वेषण कयलनि। यद्यपि **बसातमे** मिथिलाक प्राचीन रूढ़ि वैवाहिक कथानकक उत्थान तँ ओ अवश्य कयलनि, किन्तु ओकर परिवेश सर्वथा आधुनिकतासँ संपोषित अछि। बसात एक सामाजिक मौलिक नाटकक श्रेणीमे अबैत अछि जाहिमे नाटककार प्रथमहि प्रथम एक पात्रकेँ डबल रोलमे प्रस्तुत कयलनि। ओ छथि जोतखी, जे एक बेर कृष्णकान्तक पिताक रूपमे प्रस्तुत होइत छथि तथा दोसर बेर बमबाबाक रूपमे। कृष्ण कान्त द्वारा अपमानिता, प्रताड़िता, उपेक्षिता मैथिल कन्यामे स्वाभिमानकेँ जागृत करयबाक उपक्रम नाटककार एहिमे कयलनि जे कृष्णकान्त अपन भावी पत्नीक रूपमे स्वीकार करबासँ पूर्वहि महिला उत्थानक बात सोचि महिला आश्रमक स्थापना करैत छथि जाहिमे बमबाबा उर्फ जोतखी सहायक होइत छथिन।

स्वातन्त्र्योत्तर युगक नव बसातक आदर्श एकर कथानक थिक। बसात जहिना निर्जीव घास-पातकेँ उड़िया दैछ तहिना नव युगक नव प्रवृत्तिक चेतनासँ प्राचीन रूढ़िवादी मान्यता समाप्त क' नारी-जागरणक शंखनाद नाटकार एहिमे कयलनि अछि। कृष्णकान्त आदर्शवादी कथानायक छथि जे नवीन सभ्यतासँ नव परिवेशसँ प्रभावित पिता द्वारा फलहारीक कन्या पुष्पासँ निर्धारित विवाहकेँ अस्वीकार करैत छथि, कारण हुनका सदृश पाश्चात्य संस्कृतिक अनुरूप ने तँ शिक्षित-दीक्षित छथि आर ने सुसंस्कृता। अतएव ओकरा ओ अपन अनुरूप उपयुक्त नहि बुझैत छथि। इऐह कारण अछि जे ओ मात्र पुष्पाकेँ अपमानित नहि करैत छथि, प्रत्युत सामाजिक परिवेशमे रहनिहार एहि श्रेणीक प्रत्येक कन्याकेँ अपमानित करैत छथि। समयक क्रममे ओ आधुनिक परिवेश, आधुनिक सभ्यता, आधुनिक साज

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शृंगारसँ विभूषित लिलीक चमक-दमकक जालमे फँसि जाइत छथि। पुष्पाकेँ स्वाभिमान जागृत होइत छनि तथा आत्म-हत्याक लाथेँ अपन घरक परित्याग करैत छथि तथा महिला-समाजकेँ जगयबाक हेतु महिला आश्रमक स्थापना कए महिलोद्धारक हेतु कृतसंकल्प होइत छथि। जखन कृष्णकान्तकेँ ई सूचना भेटैत छनि जे हुनक असद्-व्यवहारसँ क्षुब्ध भए हुनक पिता घर छोड़िकेँ पड़ा गेलथिन तखन ओ पश्चात्ताप करय लगैत छथि तथा क्षुब्ध भए अपन भावी पत्नी लिलीक प्रेमपाशकेँ सेहो तोड़ि दैत छथि। पिताक अन्वेषणार्थ ओ बिदा होइत छथि; किन्तु ओहूमे हुनका असफलता भेटैत छनि जाहिसँ विक्षिप्तावस्थामे आबि रेलमे कटबाक हेतु तैयार भए जाइत छथि। किन्तु नाटकीय ढंगसँ महिला सेवाश्रमक कर्मचारीसब हुनका एहन दुष्कर्म करबासँ बचा लैत छथि। एतहि हुनका बमबाबाक रूपमे जोतखीसँ भेँट भए जाइत छनि। पुष्पाक नव परिवेश, नव विचार, रहन-सहनकेँ देखि कृष्णकान्तकेँ अपन मिथ्या धारणाक वास्तविकताक ज्ञान होइत छनि जाहिसँ ओ लज्जित अनुभव करैत छथि। लिली कृष्णकान्तक प्रेममे पागल भए कए महिला आश्रममे उपस्थित होइत छथि। ई ओएह स्थल थिक जतय पुष्पा अपन त्याग ओ श्रेष्ठताक परिचय दैत छथि जे ओ कृष्णकान्तक विवाह लिलीक संग करबैत छथि।

प्रतिपाद्य नाटकक वैशिष्ट्य एहिमे अछि जे नाटककार नारीक सहज त्यागक निरूपण अत्यन्त कौशलक संग कयलनि अछि। जगदीश आधुनिक परिवेशक नव शिक्षित लम्पट युवकक प्रतीक छथि जे लिलीक संग दुर्व्यवहार करैत छथि तथा अपन स्वार्थ-साधनक निमित्त वकील साहेबक पुत्र दिगम्बर जे स्वयं लम्पट एवं अवारा छथि तकरा संग वैमनस्य करैत छथि। नाटककारक उद्देश्य छनि जे सामाजिक परिवेशक नीक एवं अधलाह दुनू पक्षक वास्तविकताक रहस्योद्घाटन कयल जाय। किन्तु हमरा जनैत एहि नाटकक प्रमुख स्वर थिक नारी जागरणक शंखनाद कए मैथिल समाजक अविवाहिताकेँ जगायब जे आब सामाजिक स्वरूपमे परिवर्त्तन भेल जा रहल अछि ताहि परिप्रेक्ष्यमे अपनाकेँ प्रस्तुत करथि।[1]।

बसातक केन्द्रविन्दु थिक अन्तर्द्वन्द्व वा संघर्ष। एकर कथानक स्पष्ट नहि, कारण संघटनक दृष्टिएँ एकर पूर्वार्द्ध जतेक संतुलित अछि ततेक उत्तरार्ध नहि। एकर कथानकमे आधुनिक संक्रमणजन्य संस्कृतिसँ उत्पन्न स्थितिक आँखि मूनि अनुकरणक फलस्वरूप जे दुष्परिणाम होइत अछि तकरा उद्घाटित करब नाट्यकारक अभीष्ट छनि। ओ समाजक रूढ़िवादी परंपरा पर व्यंग्य कयलनि अछि। सामाजिक समस्याक प्रस्तुतीकरण एवं ओकर वास्तविकताक रहस्योद्घाटन कयलनि अछि नाटककार।

एहिमे व्यक्तित्वक अन्तर्विरोध एवं पूर्णताक तलाश व्यंजित अछि। वस्तुतः भारतीय मध्यवर्गीय समाजक नवीनतम परिवर्तित होइत परिस्थितिक बीच मानसिक संघर्ष तथा व्यक्तित्वक नव रूपान्तरण प्रस्तुत करबाक दृष्टिएँ ई नाटक महत्वपूर्ण अछि। एहि नाटकक महत्ता एहू कारणेँ अछि जे ई वर्त्तमान युगमे चरणमे चरण मिला कए चलबामे समर्थ बूझि पड़ैत अछि। नाटककार नवीन वातावरणमे साँस लेबाक प्रयास कयलनि अछि। बसातमे समाजक बदलैत स्वरूपक चित्रण भेटैत अछि। वस्तुतः युगक बहैत बसातमे प्राचीन परंपराक अवसान आर नव आदर्शक स्थापना भए रहल अछि। विशेषतः वैवाहिक समस्याकेँ लए कए समाजमे जे तीव्र परिवर्तन भए रहल अछि ओकरा देखायब नाटककारक उद्देश्य छनि। सम्पूर्ण कथावस्तु घटनावैचित्र्य पर आधारित अछि आर एकर अतिशयता कतहु-कतहु स्वाभाविकताक हनन करैत अछि।[2]

अधिकांश मैथिली नाटकमे पात्रक चरित्रमे अन्तर्द्वन्द्वक प्रयोग नहिएँ जकाँ भेल अछि। एहि दृष्टिसँ हम देखैत छी जे बसातक एक स्थल पर कृष्णकान्तक उक्तिमे एहन अन्तर्द्वन्द्वक विश्लेषण कृष्णकान्तक कथनमे स्पष्ट प्रतिभासित होइत अछि-

"कृष्णकान्त : (घड़ी देखि) समय त भ'ऽ लैक। आइ गाड़ी लेट अछि की ? हाए रे अभागल। मरबहुमे विघ्न। नीक छल जे मुजफ्फरपुरहिमे जीवन-लीला समाप्त क' लेने रहितहुँ। व्यर्थ जन्मभूमिक दर्शन करबाक ममतामे पड़लहुँ। जन्मभूमि, जन्मभूमि, मातृभूमि, शांति दिअ, एहि जीवनसँ मुक्ति पएबाक शांति दिअ', हमरा आओर किछु नहि चाही। पुत्रवत्सल पिता। अज्ञानतामयी बालिके। विफल-स्नेह लिली। सभसँ हम अन्तिम भीख मङै' छी, हमर सब अपराध क्षमा क' दिअ।"[3]

उपर्युक्त कथानकसँ स्पष्ट होइत अछि जे कृष्णकान्तक चरित्र बसाते सदृश अस्थिर एवं चंचल अछि। सम्पूर्ण नाटकमे कोनो एहन स्थल नहि अछि जतय हुनक चरित्रमे स्थिरता हो। एहिमे नारी-पुरुषक द्वन्द्वकेँ ओकर चरित्रमे प्रदर्शित कए एक प्रतीकक निर्माण कयल गेल अछि। एहि नाटकसँ हुनक

---

1. मैथिली नाटक परिचय, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ 98.
2. मैथिली नाटक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, मैथिली अकादमी पटना 1978, पृ 86.
3. बसात, गोविन्द झा, पृष्ठ 98.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आदर्शवादी युगबोधक ज्ञान होइत अछि । एहिमे ओ नाटकक नवीन शिल्प तथा चित्रांकनक नवीन प्रणालीकेँ अपनाओल अछि।[4]

एक दिग्दर्शकक दृष्टिएँ बसात समकालीन जीवनक प्रथम सार्थक मैथिली नाटकक रूपमे परिगणित भेल । यद्यपि वर्त्तमान जीवनक विडम्बनाक किछुएक सघन विन्दुकेँ एहिमे रेखांकित कयल गेल अछि तथापि एकर पात्रक मनःस्थिति यथार्थपरक एवं विश्वसनीय अछि । एकर गठन सुदृढ़ एवं रंगोपयुक्त अछि । पात्रक प्रवेश ओ निष्क्रमण रंगप्रभावक दृष्टिएँ संयोजित अछि। सम्पूर्ण नाटकक पाछाँ रंग-चेतना निहित अछि । । ई जीवनक एक गहन अनुभव-खण्डकेँ मूर्त्त करैत अछि । एकर सबसँ महत्पूर्ण विशेषता थिक एकर भाषा । बसातक संवादमे वर्त्तमान यथार्थवादी गद्यक प्रयोग भेल अछि । वस्तुतः गद्य एतेक विकसित अछि जाहिमे गंभीर कवित्वपूर्ण भाव लयपुक्त एवं संगीतमय गद्य व्यंजित कयल जा सकैछ । एहि दृष्टिएँ बसातक निम्नस्थ अंश अवलोकनीय अछि–

"कृष्णाकान्त : मिथिलामे प्रेम मधुर-मधुर शब्दें नहि, आचरणसँ प्रकट कयल जाइत अछि । अर्थात् मिथिलाक प्रेम-लीला एक प्रकारक मूक अभिनय थिक ।"[5]

नाटककार बदलैत सामाजिक परिप्रेक्ष्यक निदर्शन एहि नाटकमे करौलनि अछि । नाटककार कन्या-वरक विवाह-पूर्व मिलन अनुचित नहि बुझैत छथि । अतएव एहि नाटकान्तर्गत वैवाहिक समस्याक युगीन समाधान ताकबाक प्रयास कयलनि अछि नाटककार । एहि नाटकक प्रसंगमे नाट्य-कारक कथन छनि–*"एहि नाटकसभमे वस्तुचयन सेहो किछु भिन्न प्रकारक अछि । एकर स्वरमे आर्त्तनाद छैक, क्रांतिनाद नहि । ई कोनो स्वर स्वयं नहि उठबैत अछि । समाजमे जे स्वर जाहि कालमे स्वतः मुखरित रहैत छैक ताहीसँ ई कोनो स्वर अकानि लैत अछि । ई मरखाह स्वरसँ दूरे रहय चाहैत अछि । तदनुसार एहि वर्गक नाटकक प्रिय विषय अछि वैवाहिक समस्या, विशेषतः काटर, राष्ट्रीय भावना, मिथिला-मैथिलक उत्थान, क्षेत्रीय सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक कुरीति आदि । अर्थिक आ राजनैतिक गरमीसँ दूर रहब एकर नपुसंकत्वाकेँ देखार करैत अछि ।"* [6]

ऐतिहासिक नाटकक परम्परा स्वान्तन्त्र्योत्तर युगमे जीवित रखनिहारमे गोविन्द झा उल्लेखनीय छथि । विकास-कालक हिनक दोसर नाटक थिक *राजा शिवसिंह* (1973) । प्रतिपाद्य नाटक मैथिली साहित्यक महान् विभूतिक संदर्भमे ऐतिहासिकताक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि जे अनादि कालहिसँ मिथिलाक राजा लोकनि निःसहाय प्रजाजनक धन-धर्म, मान-मर्यादाक सुरक्षार्थ सतत तत्परता देखबैत रहलाह अछि । ओइनवार वंशक चर्चित नरेश महाराज शिवसिंह, हुनक आश्रित कवि विद्यापति एवं विदूषक रंगमंच पर प्रस्तुत भ' मिथिलाक गौरवमयी संगीत-परम्पराक उल्लेख करैत छथि । पारिवारिक वैमनस्यक कारणेँ महाराज शिवसिंह अर्जुन रायक हत्याक संगहि हुनक वंशक अस्तित्व समाप्त क' कए निश्चिन्त भ' जाइत छथि, किन्तु राय अर्जुनक पत्नी रानी कमला देवी गुप्त रीतिएँ अपन एकमात्र पुत्र चतुर सिंहकेँ नजरबन्द क' दैत छथि । शैशवावस्थहिसँ चतुर सिंहकेँ प्रशिक्षित कयल जाइत छनि जे हुनका अपन पिता राय अर्जुनक हत्याक प्रतिशोध कोना लेबाक छनि । तेँ बारंबार प्रतिज्ञा करबैत छथि *"शिवसिंहक मुण्ड अहाँक माथा पर चढ़ायब ।"*[7] एहि योजनाक क्रियान्वयनार्थ ओ दिल्लीक सुल्तान इब्राहिम शाह संग गुप्त रीतिएँ मन्त्रणा करैत छथि । इब्राहिम शाह चतुर सिंहकेँ कहैत छथि *"जँ अहाँ अपन दुनू हाथ एहि तरुआरिसँ काटय दी ।"*[8] अभीष्टक सिद्धयर्थ ओ हुनक प्रस्तावकेँ सहर्ष स्वीकार करैत छथि । चलाक चतुर सिंह एहन गुप्त मंत्रणा इब्राहिम शाहक संग क' कए अपन बुद्धिकौशलक प्रसादात् शिवसिंहक दरबारमे प्रवेश क' अपन बुद्धि कौशलक चातुर्य्य एवं हाव-भावसँ महाकवि विद्यापतिकेँ एकर आभास भ' जाइत छनि तेँ ओ महाराज शिवसिंहकेँ ओकर चक्रचालिसँ सचेष्ट रहबाक अनुरोध करैत छथि । एहि षड्यन्त्रसँ अवगत भेला पर महाराज शिवसिंह सेहो अत्यधिक उत्तेजित भ' जाइत छथि । महाराजशिव सिंहकेँ तुलादानमे अस्त-व्यस्त जानि इब्राहिम शाह एकरा उपयुक्त अवसर मानि मिथिला पर आक्रमण करैत छथि । विद्यापति शत्रुक शरणापन्न भ' कए जीवित रहब अपन अपमान बूझि शत्रुक सामना करबाक हेतु ओहो उत्तेजित भ' जाइत छथि । दुनू दलमे युद्धक गुप्त मंत्रणा होइत अछि । इब्राहिम शाह शिवसिहकेँ गिरफ्तार करबाक हेतु सन्नद्ध छथि । अन्य व्यक्तिक लाशकेँ शिवसिंहक लाश मानि चतुर सिंह इब्राहिम शाहकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास करैत छथि; किन्तु वास्तविकताक रहस्योद्घाटन होइतहि दुनू गोटेमे मतान्तर भ' जाइत छनि । शिवसिंहक पुनः अन्वेषणमे दुनू प्रयासरत होइत छथि; किन्तु ओ अपन बुद्धि-कौशलसँ हुनकासभक आँखिमे धूरा झोकि क' विलुप्त भ' जाइत छथि ।

4. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा "श्रीश", भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा 1991, पृष्ठ 284.
5. बसात, गोविन्द झा, पृष्ठ 33।6. मैथिली नाटकः अधुनातन संदर्भ, गोविन्द झा, मैथिली अकादमी पटना, 1989, पृ.27.
7. राजा शिवसिंह,गोविन्द झा, पृ. 19. 8. नभैव, पृ.19.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पारिवारिक कलह पर रहस्यात्मक ढंगे लिखल मैथिलीक ई सर्वप्रथम नाटक थिक जाहि घटना पर ने तँ इतिहासकार वा साहित्यकारक ध्यान आकर्षित भेल छलनि । एहन रहस्यात्मक घटनाक्रमकेँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत करबाक श्रेय नाटककार पंडित गोविन्द झाकेँ छनि । विद्यापतिक वास्तविक व्यक्तित्वक उद्घाटन वस्तुतः प्रतिपाद्य नाटकान्तर्गत भेल अछि जँ ओ शिव सिंहक अत्यन्त आत्मीय मित्रमे सँ छलाह । एकर रचनाक उद्देश्य अछि ओइनवार वंशक आन्तरिक कलहक उद्घाटन ।[9] मैथिली रंगमंच पर अभिनेत्रीक अभावकेँ जानि प्रतिपाद्य नाटककारक कथन छनि *"मिथिलामे अभिनेत्रीक अल्पता देखि जानि-बूझिकए एकरा स्त्रीभूमिका रहित बनाओल अछि ।"*[10] एकर विदूषकक क्रिया-कलाप संस्कृत नाटकक विदूषकक स्मरण करबैछ ।

राजा शिवसिंहक कथाक सूत्र इतिहासाश्रित अवश्य अछि जकर चरित्र-चित्रणमे सेहो ऐतिहासिकताक आधार अछि, यद्यपि नाटककार एहि चित्रणमे कल्पनाक स्वतन्त्रतापूर्वक उपयोग प्रचुरतासँ कयलनि अछि । चरित्र-चित्रणक दृष्टिएँ इतिहास एवं साहित्यक अन्तर गणितीय उपमान द्वारा एहि शब्दें स्पष्ट कयल जा सकैछ– *"इतिहासमे जतय चल राशिक कलन होइत अछि ओतय साहित्यमे स्थिर राशिक कलन । इतिहासक कलनक आधार तार्किकतासँ युक्त प्रमाण पर निर्भर होइत अछि, परन्तु साहित्यक कलनेक आधार होइत अछि स्वयंप्रकाश्य ज्ञान ।"* एहि नाटकमे नाटककार एही तथ्यकेँ इंगित कयलनि अछि ।

प्रतिपाद्य नाटकान्तर्गत नाटककार पग-पग पर अन्तर्द्वन्द्वक रूप प्रस्तुत कयलनि अछि जे कोना एक दोसराकेँ परास्त करबाक हेतु सन्नद्ध अछि तँ एकर प्रमुखता एहि नाटकमे भेटैत अछि । "शिव सिंहक परमर्शदाता सभ लड़बाक मंत्रणा देलथिन, यवन आक्रमणसँ लड़ैत-लड़ैत ओ मारल गेलाह वा प्रतिकूल परिस्थितिमे निपत्ता भ' गेलाह–ई बात वस्तुतः ओतेक महत्वपूर्ण नहि अछि जतेक ई जे शिवसिंह यवन अक्रमणक विरोध कयलनि । सैन्य शक्तिमे कमजोर रहितहुँ ओ आत्मसमर्पण नहि कयलनि । नाटककार शिवसिंहक एही जुझारू व्यक्तित्वकेँ प्रेरणा मानलनि अछि, तकरा नाटकमे उद्घाटित कयलनि अछि ।"[11] एहि नाटक प्रसंगमे डॉ. दुर्गानाथ झाक कथन छनि– *"एहि मध्य नारी पात्रक सन्निवेश नहि भेल अछि ओ से व्यावहारिक अभिनयोपयोगिताक दृष्टिएँ मुदा आदि ओ अंतमे छायाचित्रक माध्यमसँ लखिमा देवीक विरह-व्याकुलताक अवतारणा कए नाटकार एहि अभावक पूर्ति करैत छथि, मैथिली नाटकक क्षेत्रमे एकटा नवीन शिल्पक प्रयोग करैत छथि, संग-संग अभिनयमे कवित्वक सेहो संचार कए देने छथि ।"*[12]

उपलब्धिकाल–रंगमंचक परिवर्तित होइत स्वरूपकेँ ध्यानमे राखि नाटककार पंडित गोविन्द झाक नाट्य-रचना अबाध गतिएँ अग्रसर होइत रहल । नवम दशकमे हुनक नाट्य-प्रतिभा अधिक चमत्कृत भ' गेलनि तथा ओ नव परिप्रेक्ष्यमे नाटकक नव स्वरूपक स्थापनार्थ तत्पर भेलाह । पंडित गोविन्द झा अपन रंगमंचकेँ, अपन विशिष्ट शैलीक अन्वेषण क' लेलनि–इऐह हुनक सबसँ पैघ उपलब्धि थिक । नाट्य-लेखनमे अनेक प्रयोगक पश्चात् ओ आत्म-साक्षात्कारक माध्यमेँ एहि सत्यकेँ उपलब्ध कयलनि जे पश्चिमक सम्पर्क कखनो स्थायी कृतित्व नहि भ' सकैछ । एकर ई अर्थ भेल जे अपन नाट्य-परम्पराकेँ संस्कृत आर लोकनाट्यसँ जोड़ब अत्यावश्यक अछि । उपलब्धि-कालक नाटकक मर्मकेँ बुझबाक हेतु एहि तथ्यकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि ।

वर्त्तमान शताब्दीक नवम दशाब्दमे पंडित गोविन्द झाक दुइ नाटक *'अन्तिम प्रमाण'* एवं *'रुक्मिणी हरण'* प्रकाशमे आयल जे मैथिली नाट्य साहित्यक विशेष उपलब्धि थिक; तँ एहि दुनू नाटकक आधार पर हम हिनक नाट्य-साधनाकेँ उपलब्धि-काल मानल अछि । "अन्तिम प्रणाम" हिनक पूर्वक नाटकक अपेक्षा सर्वथा भिन्न प्रकृतिक नाटक थिक । इऐह ओ नाटक थिक जकर फलस्वरूप ओ नाटकक क्षेत्रमे सेहो भाव, भाषा, शिल्प ओ समकालीन जीवनक मुहाबड़ाक सर्वथा हुनक नव नाटकीय अनुभव थिक । यद्यपि नाटक निम्नवर्गीय परिवारक एक अति सामान्य कथानककेँ ल' कए चलैत अछि आर सर्जनात्मक स्तर पर सेहो ओहिमे बड़ पैघ संभावना दृष्टि-गत होइत अछि तथापि नाटकीय कार्य-व्यापार एवं प्रभावान्वितिसँ गोविन्द झा गंभीर संवेदना व्यक्त कयलनि अछि । अभाव मनुष्यकेँ विरासतमे भेटल अछि । अभावक अनुभूतिक स्तर वैयक्तिक होइत अछि । व्यक्तिकेँ अपन परिस्थितिक अनुरूप अभाव सोझाँ अबैत छैक जकर प्रतिफल ओकर जीवन पर पड़ैत छैक ।

बेचन शहरी परिवेशसँ प्रभावित रहितहुँ ओही परिवेशमे पिता फूदनकेँ रखने अछि, किन्तु प्राचीन परिवेश, ग्रामीण परम्परा एवं परिवेशक प्रतीक ओहि परिवेशक परित्याग करबाक हेतुडेग-डेग पर विद्रोह करैछ । सामाजिक मानसिकता शनैःशनेः कोना परिवर्तित भेल जा रहल अछि तकर एलबम एहि नाटकमे भेटैछ । आधुनिक जीवन वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे खंडित भेल जा रहल अछि

---

9. मैथिली नाटक परिचय, डॉ.- प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ 111.
10. राजा शिव सिंह, प्रासंगिकी ।
11. भंगिमा, वर्ष-आठ, अंक-चौदह ।
12. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा "श्रीश", पृष्ठ 290

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

तथापि नाटककार एक एहन प्रतीक परिवारक यातनाक चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि जे अद्यावधि वर्तमान अछि। एहिमे ग्रामीण परिवेशक स्वार्थपरक षड्यन्त्र एवं एक निरक्षर बोनिहारक गामक प्रति आकर्षण-विकर्षणक द्वन्द्वकेँ मनोवैज्ञानिक धरातल पर विश्लेषण कयलनि अछि नाटककार पंडित गोविन्द झा।

प्रतिपाद्य नाटकान्तर्गत गामक यथास्थितिक संगहि दू पीढ़ीक दृष्टिकोणक भिन्नता पर नाटककार प्रकाश देलनि अछि। चौधरी आ मुखियाक यारीसँ निम्न वर्गक होइत शोषण एतेक घृणितावस्थामे आबि गेलैक अछि जे प्राचीन पीढ़ीक लोकमे गामक प्रति जे रागात्मक भाव आ आत्मीयताक सम्बन्ध छलैक से समाप्त भए रहल अछि। नाटककारक एहन संकेत सामयिक ओ समीचीन अछि। स्वतन्त्रताक पश्चात् मूल्यहीनताक अथाह सागरकेँ प्रतिबिम्बित कयनिहार नाटक थिक "अन्तिम प्रणाम"। प्रतिपाद्य नाटकक संबंधमे डॉ. दुर्गानाथ झा "श्रीश"क कथन छनि- *"रंगमंचीय सौलभ्य एवं जन-मनोरंजनकेँ ध्यानमे राखि एहि लघु नाटिकाक रचना करितहुँ नाटककार साहित्यिक स्तरीयताक रक्षा, संग-संग सामाजिक ज्वलन्त समस्याकेँ दृश्यांकित कए किछु सोचबाक हेतु विवश करैत छथि। एहि नाटकहुमे रचनाकारक प्रौढ प्रतिभाक परिदर्शन होइत अछि।"*[13] पारिवारिक तनावक माध्यमेँ आधुनिक मूल्यहीन सभ्यताक अत्यन्त तीक्ष्ण आलोचना एहि नाटकमे अछि। टूटैत गामक प्रति पुरान पीढ़ीक मोहक विस्तृत विश्लेषण कयल गेल अछि एहिमे।

प्रयोगधर्मिताक कारणेँ "रुक्मिणीहरण" मैथिली नाट्य साहित्यमे अपवाद थिक। प्राचीन रूपसँ ल' कए वर्त्तमान आकार धरि पहुँचबाक रचना-प्रक्रियाक स्तर धरि एक पैघ जटिल अन्तर्यात्रा एहि नाटककेँ पूर्ण करय पड़ल अछि ताहि दृष्टिएँ प्रतिपाद्य नाटक मैथिली नाटकमे अपवादे रहल। नाटककेँ परखबाक हेतु नाटककारक निम्नस्थ स्पष्टीकरण अत्यधिक सहायक अछि– *"एक किसान सपना देखलक जे चार पर चढ़ल महिसि दूहैत छी; आ एक मनोवैज्ञानिक तकर व्याख्या कयलनि जे ओकरा दू गोट मनोरथ छलैक, नव घर बन्हबाक आ महिसि किनबाक, से दुनू सपनामे मिझरा गेलैक। हमरहु दू गोट मनोरथ छल, पहिल किरतनिया नाटकक लुप्त परम्पराकेँ पुनर्ज्जीवित करी, आ दोसर मिथिलाक इतिहाससँ लीलक खेतीवाला मूनल अध्यायकेँ उघारि एकटा नाटक लिखी। ओहि किसाने जकाँ हमरो दुनू मनोरथ मिझरा गेल–सएह थिक ई जौआँ नाटक रुक्मिंणी हरण : एक नव एक पुरान।"*[14]

नाटकक केन्द्र-विन्दु थिक रमापति उपाध्यायक "रुक्मिणी परिणय"[15] जाहिमे नाटककार कोनो रूपान्तरण नहि, केवल संक्षेपण ओ भाषान्तरण क' कए मंचोपयुक्त बनौलनि अछि। मैथिली नाट्य साहित्यमे रमापतिक "रुक्मिणी-परिणय" निर्विवाद रूपेँ एक उल्लेखनीय नाट्य कृति थिक जे पौराणिक परिवेशमे लिखित किर्तनियाँ वा लीला शैलीमे अभिनीत होइत छल जकर समावेश प्रतिपाद्य नाटकान्तर्गत प्रथम, तृतीय एवं पंचम दृश्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। द्वितीय, चतुर्थ आर षष्ठ दृश्यान्तर्गत नव नाटकक समावेश नाटककार कयलनि अछि। रमापतिक रुक्मिणी-परिणयक पहिल पदक अति संक्षिप्त रूप प्रतिपाद्य नाटकमे अछि। जतय रुक्मिणी-परिणयमे संवाद संस्कृत-प्राकृतमे अछि ततय रुक्मिणी-हरणमे विशुद्ध मैथिली गद्यक प्रयोग नाटककार कयलनि। प्रतिपाद्य नाटकक तेसर दृश्यमे पुनः रुक्मिणीपरिणयक प्रथम अंक पद्यक संक्षिप्त रूपमे प्रस्तुत क' रुक्मिणीक विवाहक चिन्ता व्यक्त करैत छथि। तत्पश्चात् अग्रिम अंकक कथानककेँ संक्षिप्त रूप दैत नाटककार एहिमे समाविष्ट कयलनि अछि। इऐह कारण थिक जे ई नाटक जौँआ नाटकक रूप धारण करैत अछि जे प्रमाणित करैछ जे वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे सेहो एहि कोटिक नाट्य-रचनाक संभावना अछि।

रुक्मिणी-परिणयक जतबे अंशक समावेश नाट्यकार रुक्मी-हरणान्तर्गत कयलनि अछि ओ अत्यधिक नाटकीय अछि। गीतक माध्यमेँ पात्रक वेश-भूषा, व्यक्तित्व, हाव-भाव इत्यादिक चित्रण नाट्यकार कयलनि अछि। नाट्यकार पद्यमे विलक्षण उपमानक स्थल-स्थल पर प्रयोग कयलनि अछि। एहिमे जाहि संस्कृति, सभ्यता एवं लौकिकताक चित्रण नाटककार कयलनि ओ निश्चये जन-जीवनक अन्तस्तल धरि पहुँचि ओकर भावकेँ चिरकालक हेतु उद्वेलित क' दैछ।[16]

एहि नाटकक मौलिक अंशमे नाटककार पुरातन समाजमे व्याप्त अत्याचारक विश्लेषण कयलनि अछि जे अधुनातन संदर्भमे सेहो समीचीन प्रतीत भ' रहल अछि। हमर समाजक जे स्वरूप उनैसम शतकक उत्तरार्धमे छल, ओ वर्त्तमान संदर्भमे सेहो ओहिना अपहरण एवं बलात्कार भ' रहल अछि। समकालीन समाजमे निलहा साहेब एहन दुष्कर्म करैत छल; किन्तु स्वातन्त्र्योत्तर समाजमे ओकर स्थान लेलक अछि आधुनिक नकाबपोश नेता वा समाजविरोधी गुण्डा जे हमर सामाजिक

13. तत्रैव, पृष्ठ 290
14. रुक्मिणी हरण, गोविन्द झा, नेपथ्य-कथा।
15. अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, एलनगंज रोड, इलाहाबाद, 1961.
16. मैथिली नाटक परिचय, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ-117.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

स्वरूपकेँ विरूपित कयने जा रहल अछि। नाटककार ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक एक जीवन्त घटनाक यथार्थताक चित्रण क' कए वर्त्तमान सामाजिक परिदृश्यक संकेत कयलनि अछि जे कहब अत्युक्ति नहि।

एहि नाट्यान्तर्गत नाट्यकारक विशिष्ट नाट्य-प्रतिभाक परिचय भेटैछ जे पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकक मिश्रण एहन पटुतासँ कयलनि जे नाटकीय स्थितिमे कतहु व्यतिक्रमक आभास ने तँ पाठककेँ आर ने प्रेक्षककेँ होइत छनि। नाटकीय अन्तर्द्वन्द्व जे नाटकक नव प्रवृत्ति थिक तकर परिपालन एहिमे भेल अछि। यद्यपि नाटककार एहिमे ब्रिटिशयुगीन मिथिलामे निलहा साहेब द्वारा होइत अत्याचारक केन्द्रविन्दुमे एकर रचना कयलनि अछि तथापि ओ संकेत कए रहल छथि जे नारीक अपहरण अधलाह काज थिक चाहे ओ द्वापर, त्रेता वा कलियुगमे भेल हो वा वर्त्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे भए रहल अछि। हुनक कहबाक अभिप्राय छनि जे हरण रुक्मिणीक हो वा रुकमिनियाँक– एहि समाज-विरोधी कार्यक प्रतिरोध नितान्त प्रयोजनीय अछि।

एकर वैशिष्ट्य अछि जे दू विभिन्न किन्तु समानान्तर कथा-वस्तु नाटकीय द्वन्द्व तथा अन्तर्धारा मध्य भेल अछि। एहिमे परम्पराक सुन्दर ओ लोकप्रिय तत्वक सम-सामयिकताक संदर्भमे विकास करैत, नव धाराक संग अपन प्रतिबद्धता प्रगट करैत, नव-नव बातक अन्वेषण करैत भविष्यक प्रति आशा ओ विश्वास जगबैत अछि। एही अवधारणाक अन्तर्गत प्राचीन किर्तनियाँ वा लीला नाटकक अन्वेषण आ अनुशीलन प्रतिपाद्य नाटकान्तर्गत भेल अछि। दुनू नाटक एक दोसरासँ लेपटाराल अछि। दुनू मिलि क 'भारतीय जन-चेतनाकेँ चित्रित करैत अछि। ब्रिटिश उच्चवर्गीय सुविधाभोगीय वर्ग जनचेतनाकेँ शांत करबामे असमर्थ अछि।

रुक्मिणीहरण प्राचीन एवं समसामयिक समाजक कथानककेँ नाटकीय प्रतीकात्मक पुनराख्यान थिक। कथानायक प्रवृत्ति ओ निवृत्तिक मार्गक अनुगमन क' कए विभक्त मनःस्थितिमे पहुँचि जाइत छथि। एतय यथार्थ द्वन्द्वमे निहित अछि जकर अभिव्यक्ति प्रतीक द्वारा कयल गेल अछि। पात्र एवं कथाक अतिरिक्त रंगमंचीय विधानमे सेहो प्रतीकात्मकता विद्यमान अछि। सम्पूर्ण नाटकक घटनास्थल गोनरक घर थिक जतय रुकमिनियाँ रहैछ। एहि प्रकारेँ नाटकक यथार्थ वास्तवमे ओहि द्वन्द्वमे निहित अछि जे हमरा समीपमे कोनो ने कोन रूपेँ रहैछ। प्रेय ओ श्रेयक संधि रेखा, जतय आजुक मनुष्य नहि टिकि सकैछ चरम उत्कर्ष पर पहुँचला पर स्त्री-पुरुषक द्वन्द्वकेँ व्यक्त करैछ जाहिमे उद्विग्नता, तनाव आर निराशा विद्यमान रहैछ। एतय संघर्ष अपहरण एवं बलात्कारक अछि जाहिमें आश आ विश्वास खंटित भए जाइछ। एहन मनःस्थितिमे क्षोभ एवं विस्फोट अस्वाभाविक नहि प्रतीत होइछ। ई नाटक ऐतिहासिक कम आर समसामयिक समाजक आधुनिक बेशी अछि। ऐतिहासिकता निमित्त मात्र अछि, जे पक्ष उभरि क' पाठक वा दर्शकक सोझाँ अछि-ओ समसामयिक जीवनक आर आधुनिक मानवक यातना थिक।

नाट्य-शिल्प– कोनो नाटककारक नाट्य-शिल्प वस्तुक चयनमे भेटैछ। हिनक शिल्प-दृष्टिमे ओ एहन कथानकक चयन कयलनि जे नाट्यकर्मीक प्रासंगिक भए सकल। नाटकक कथानक प्रायः द्वन्द्व-प्रधान होइत अछि। द्वन्द्वक स्थिति एकाधिक स्तर पर होइछ। कतहु ई द्वन्द्व दुइ विरोधी वा सामानान्तर विचारधाराक होइछ तँ कतहु मात्र निर्णय नहि ल' सकबाक दुर्बलताक कारणेँ उत्पन्न होइछ। "राजा शिवसिंह"क कथानक ऐतिहासिक अछि; किन्तु ऐतिहासिकता द्वारा देल गेल स्वरूपकेँ ओ नहि स्वीकार कयलनि। ओ अपन सर्जनात्मक कल्पना द्वारा ओकरा नाट्योपयोगी बनौलनि। हुनक दृष्टिमे ऐतिहासिकताक अर्थ समयक विस्तारमे नहि स्थितिक प्रक्षेपणमे अछि। "बसात", "अन्तिम प्रणाम" एवं "रुक्मिणी हरण"क कथानक हमर जीवनक अत्यन्त सजीव कथा अछि। ओहिमे व्यक्त यथार्थ-चेतनाक हेतु हमरा कोनो प्रतीक वा प्राचीन आवरणक अपेक्षा नहि रहैछ। नाटकक धरातल सामाजिक अछि। पात्रक नामक अनिवार्यता नहि बुझल गेल। ई यथार्थमे एक पारिवारक नहि; प्रत्युत ओहि भूमिक कथा थिक जतय कोनो परिवारमे कखनो अवस्थित भ' सकैछ। रंगमंचक योजनामे घरक व्यतीतक टुटैत अवशेष निश्चित रूपेँ कतहु ने कतहु अपन स्थान बना लैत अछि। निम्न मध्यवित्त परिवारक ओहि घुटनक अभिव्यक्ति अछि जतय यन्त्रणा वृत्तिमे एकक समाप्ति पर दोसर चक्कर शुरू भ' जाइत अछि। आर्थिक दबाव आर ओहिसँ टूटैत परिवा- चित्रण व्यापक सामाजिक धरातल पर कयल गेल अछि।

हिनक पात्र-परिकल्पनाक मुख्य आधार थिक मानवीयता जे आधुनिक साहित्यक प्रमुख स्वर थिक। समसामयिक साहित्यमे कोनो अन्य देवताक प्रतिष्ठा नहि, प्रतिष्ठा थिक मनुष्य-देवताक। मनुष्य सर्वश्रेष्ठ थिक आर ओकरासँ ऊपो नहि अछि। ई आधुनिक श्रेष्ठ साहित्यमे आधुनिकताक समावेश कयनिहार विन्दु थिक। आधुनिक नाटककार होएबाक कारणेँ हिनक पात्र-परिकल्पनामे एहि यथार्थ चेतनाक निर्वाह भेल अछि। ओ एहि बातक विशेष ध्यान रखलनि जे हुनक पात्र नाटकीय परिस्थितिक निर्माणमे सहायक होथि। हुनक नाटकक पात्रक नाटकीय

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

व्यक्तित्व सुरक्षित अछि जे हुनक सपलताक रहस्य थिक। प्रत्येक पात्रक स्वतंत्र व्यक्तित्व अछि जे परिस्थितिसँ परिचालित होइत अछि। ओकर सहज विकास एक भाग जतय ओकरा सक्रियता प्रदान करैछ ततय दोसर भाग नाटकीयता सेहो।

पंडित गोविन्द झाक प्रत्येक नाटकक चरित्र सेहो विशिष्ट अछि। ओ विश्वसनीय अछि जे मानवीय धरातल पर अधिष्ठित अछि। ऐतिहासासिक चरित्रमे मानवीय संभावनाक नाटककार कल्पना कयलनि अछि। राजा शिवसिंहक प्रत्येक चरित्र एकर प्रत्यक्ष उदाहरण अछि। नाटककार पात्रक कार्य-व्यापार आर भावनाक बीच तारतम्य स्थापित कयलनि अछि। पुरुष पात्रमे जे अस्तित्व अछि ओ नारीक सहचर, सहयोग एवं संग देबाक विवशता अछि तथा जे अनस्तित्वक पाछाँ छटपटाइत अछि ओ स्वावलम्बन, व्यक्तित्व, मान्यताकेँ बनौने रखबाक लालसा प्रतीत भए रहल अछि। प्रत्येक नाटकक प्रतीत व्यापक अनुभव, मानव मनक प्रखर अभिव्यक्ति पौलक अछि आर एहि अनुभवमे व्यक्तित्वक समग्रता, नारी-साहचर्यसँ सम्पुष्ट अछि चाहे ओ सहचरक चित्त-भूमि धरि सीमित किऐक ने हो।

गोविन्द झा अपन प्रत्येक नाटकमे शब्दक माध्यमेँ किछु ने किछु कहबाक प्रयास कयलनि अछि। हिनक नाटकक भाषा अपन पूर्ववर्त्ती नाटकसँ सर्वथा भिन्न, आडम्बरहीन, वार्तालापक भाषा थिक। कतहु-कतहु साहित्यिक बनयबाक चक्करमे व्यर्थ प्रयासरत बुझना जाइत छथि। नाटकक प्रत्येक शब्दक सम्बन्ध पात्रक क्रियाक संग जुड़ल अछि, अतएव कतहु संवाद पात्रसँ पृथक् नहि बुझि पड़ैत अछि। इऐह कारण अछि जे प्रत्येक पात्र दर्शकक सोझाँ अपनहि खुजैत अछि। पात्रक आक्रोश, घुटन ओ तनावपूर्ण वातावरणकेँ प्रदर्शित करबाक हेतु ओ ध्वन्यात्मक शब्दक प्रयोग कयलनि अछि। हिनक नाटकक प्रत्येक संवाद नाट्यानुभूतिसँ जुड़ल नाट्य-स्थितिक अनुकूल अछि, इऐह कारण अछि जे अनेक स्थल पर संवाद विभिन्न स्तर पर चलैत समग्र परिस्थितिकेँ व्यंजनापूर्ण बना दैत अछि। हिनक नाटकक संवादमे कतहु शिथिलता नहि आयल अछि। नाटकमे शब्दक चुनाव संयोजन अधिक महत्वपूर्ण होइछ। एहि संबंधमे गोविन्द झा सतर्क देखबामे अबैत छथि। हिनक नाटकक रंग-चेतना सब नाटकमे विस्तारित अछि। कतहु पात्रक क्रिया द्वारा, कतहु प्रकाश द्वारा, कतहु संगीतक माध्यमसँ सशक्त नाटकीय बिम्बक निर्माण कयलनि अछि जे पात्रक वेदना आर विवशता गंभीरताक संग अंकित हो। हिनक नाटकक यथार्थ चेतना सरल एवं मुखर अछि। "यथार्थ" ओ "भावना" एक दोसराक सोझाँ निरावृत अछि। हिनक पात्रक परिकल्पना ओकर यथार्थ चेतनामे स्पष्टतः परिलक्षित अछि।

"राजा शिवसिंह" क भाषा साहित्यिकताक भारसँ बोझिल बनि गेल अछि। शेष नाटकक भाषा साधारण बोलचालक भाषा थिक जे साहित्यिकतासँ मुक्त अछि। आधुनिक "सैंसिबिलीटी"क पूर्ण अभिव्यक्तिक हेतु ओ ध्वनिक आश्रय लेलनि अछि आर रंग-संभावनाकेँ प्रकट करबाक हेतु नाटकीय शब्द ओ ध्वान तथा अर्थ सम्प्रेषणक प्रक्रिया अपनौलनि। ओ समयक अन्तरालक उपयोग कयलनि। संवादक बीचक समयकेँ अवसरानुकूल किंचित् दीर्घ बनाकए विशेष भाव संप्रेषित कयलनि अछि। भाषाक स्तर पर मितव्ययिता अर्थमे व्यर्थ लफ्फाजी नहि भेटैत अछि। हिनक नाटकक भाषा मे संवाद चुस्त-दुरुस्त अछि। पात्र-सर्जना आर चरित्र-निर्माण नाटकीय "थीम"क अनुरूप अछि जे अन्वितिमे सहायक भेल अछि।

गोविन्द झाक नाट्य-शिल्पक चिन्तन-मननक पश्चात् अनुभव होइत अछि जे ओ शिल्पक प्रति अधिक सचेष्ट, सचेत एवं सतर्क छथि। हुनक शिल्प-रूप अत्यन्त श्रमसाध्य अछि। ओ अपन नाटकक शिल्पकेँ निरन्तर तराशैत, निरन्तर माजैत समारैत रहलाह अछि। संभवतः इऐह कारण अछि जे हुनक नाटकमे पर्याप्त अन्तराल अछि। ओ अपन नाट्यान्तर्गत शिल्पक प्रति अनेक मौलिक उद्भावना प्रस्तुत कयलनि जकर उदाहरण *"रुक्मिणीहरण"* अछि। नाटकक दृश्य ओ ध्वनि दुइ आधारभूत तत्व थिक। एकर अभावमे नाटकक परिकल्पना नहि कयल जा सकैछ। ओ अपन नाटकमे समसामयिक संवेदनाकेँ अत्यन्त नाटकीय ढंगसँ दृश्य एवं ध्वनिमे प्रस्तुत कयलनि। एहि आवश्यकताक पूर्त्यर्थ ओ नाटकीय शब्दक समय-समय पर अन्वेषण कयलनि तथा साहित्यिक भाषाकेँ उत्तरोत्तर नकारैत गेलाह। अतएव हुनक शिल्प-दृष्टि अधिकांशतः रंग-शिल्पक दृष्टि अछि। इऐह ओ क्षेत्र थिक जतय ओ अपन मौलिक उद्भावना प्रस्तुत कयलनि। हुनक शिल्प-दृष्टि हुनक वक्तव्यसँ हुनक नाटकादिमे परोक्ष रूपेँ उद्घाटित भेल अछि।

पंडित गोविन्द झाक समग्र नाट्य-साहित्यक अवलोकनोपरान्त प्रतिभासित होइत अछि जे हुनक नाट्य-शिल्प पर परंपरागत नाट्य-शैलीक पर्याप्त प्रभाव अछि। ओ अपन नाटकान्तर्गत स्थल-स्थल पर गीतक प्रयोग कयलनि अछि। "बसात" मे कुल सात गीत प्रयुक्त अछि। एहि प्रकारक प्रवृत्तिक पाछाँ नाटककारक उद्देश्य रहल हो नाटकक एकरसताक समाप्ति, किन्तु अत्याधुनिक नाट्य-शिल्पमे ई प्रवृत्ति शनैःशैनः विलुप्त भेल जा रहल अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

किन्तु एकरा मैथिलीक पारंपरिक नाटकक प्रभाव कहब बेशी युक्ति-संगत होएत । जहिना परंपरागत नाटकादि गीतक बाहुल्यक कारणेँ बोझिल छल तहिना स्थल-स्थल पर नाट्यकारक एहि प्रवृत्तिक परिचय भेटैछ । एहि प्रवृत्तिक प्रभावेँ "राजा शिव सिंह" मे सेहो सात गीत प्रयुक्त अछि । "रुक्मिणीहरण"तँ परंपरागत नाट्य-शैलीक अनुकरण पर लिखल गेल अछि तेँ एहिमे तँ गीतक प्राचुर्य सर्वथा स्वाभाविके अछि । यद्यपि एहि सभकेँ नाटकसँ निष्कासितो कए देल जाय तथापि एकर कथानक पर कोनो अन्यथा प्रभाव नहि पड़ैत छैक ।

अनूदित नाटकेँ छोड़ि हिनक नाटकान्त बाधा उत्पन्न करैत अछि । *"राजा शिवसिंह"*क अन्त भेल अछि लखिमाक करुण गीतसँ । *"बसात"*क अन्तमे जोतखी जी संवेदना प्रकट करैत देखल जाइत छथि । गामकेँ अन्तिम प्रणाम करैत फूदन कारुणिक दृश्य उपस्थित करैत छथि । तात्पर्य ई जे नाटकक अन्त जाहि अश्रुविगलित भावुकतामे होइत अछि से सामाजिक समस्या पर ठोस रूपेँ विचार करबाक वातावरण नहि बनैत अछि । पुष्पाक पलायन हो अथवा फूदन वा बेचनक पलायन, संघर्षशील चेतना प्रतिगामी भावनामे भसिया जाइत अछि ।"

रंग-शिल्प– मैथिली रंगमंच आन्दोलनकेँ विकसित करबामे पंडित गोविन्द झाक नाटकक महत्वपूर्ण योगदान अछि । विशेष रूपसँ ई नाटकक माध्यमेँ मैथिली नाटककेँ रंगभाषा देबामे महत्वपूर्ण कार्य कयलनि अछि । हिनक नाटक सर्जनात्मकता आर रंगमंचक नव चेतनाक प्रतिनिधि नाटक थिक । अभिनेयताक दृष्टिएँ हिनक नाटक रंगशिल्पक निष्कर्ष पर अक्षरशः सत्य प्रमाणित होइतं अछि । मैथिली नाटकमे हिनक प्रवेशसँ पूर्व अधिकांश नाटक परंपरागत शिल्प पर लिखल गेल जे साहित्यक भण्डारमे बंद रहल, किंतु हिनक कोनो एहन नाटक नहि थिक जे रंगमंच पर प्रस्तुत नहि कयल गेल हो । *"राजा शिवसिंह"*, *"अन्तिम प्रणाम"* एवं *"रुक्मिणी हरण"* प्रकाशनक पूर्व एवं पश्चात् अद्यावधि कतेक बेर अभिनीत भेल अछि तकर गणना नहि । जहाँतक "बसात"क अभिनेयताक प्रश्न अछि ई मिथिलांचल एवं मिथिलेत्तर क्षेत्रमे एकर मंचन विभिन्न रंगकर्मी संस्थादि द्वारा शताधिक बेर भेल अछि ।[17] हिनक नाटकमे अभिनय-संकेत, रंगमंच-सज्जाक संकेत, रंग-संकेत, वेश-भूषा-संकेत, समय-संकेत, नेपथ्य-संकेत, संगीत-संकेत, वर्णित विषय-संकेत, एतेक सोझ एवं सरल अछि जकरा सुगमतापूर्वक शहरी ओ ग्रामीण परिवेशमे प्रस्तुत कयल जा सकैछ ।

अभिनेयताक दृष्टिएँ गोविन्द झाक नाटकमे एक दोष दृष्टिगत होइत अछि जे हिनक नाटक पात्राधिक्यक भारसँ आक्रान्त अछि । बसातमे एगारह पुरुष ओ चारि महिला, राजा शिवसिंहमे बारह पुरुष एवं एक महिला, अन्तिम प्रणाममे बारह पुरुष ओ दुइ महिला तथा *रुक्मिणीहरणमे* अठारह पुरुष ओ सात महिला पात्रक उपयोगक अतिरिक्त अनेक सहायक पात्रक प्रयोजन पड़ैछ। आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे रंग-शिल्पक दृष्टिएँ पात्राधिक्य नाटकक अभिनेयताक आघात करैछ ।

पंडित गोविन्द झाकेँ रंगमंचीय ज्ञान छनि तकर स्पष्ट चित्र हिनक नाटकादिमे परिलक्षित होइत अछि । रंगमंच-व्यवस्था, पट-व्यवस्था, नेपथ्य-व्यवस्था, प्रकाश-व्यवस्था, ध्वनिसंबंधी आवश्यक निर्देश ओ अपन नाटकादिमे देने छथि । हिनक नाटकादिमे दृश्य-व्यवस्थामे सरलता, स्वाभाविकता ओ यथार्थता अछि । हिनक नाटकादिमे डेग-डेग पर नाटकीय प्रभाव उत्पन्न भेल अछि । रंगमंच-संकेत हिनक नाटकादिमे ~~नाटकादि~~ सरल एवं स्वाभाविक अछि । रंगमंचक दृष्टिसँ वस्तुतः नाटककार एवं निर्देशक अधिक अनुभवी होइत छथि । तथापि रंगसंकेतसँ निर्देशककेँ नाटककारक दृष्टि बुझबामे सुविधा होइत छनि । रंग-शिल्पक निष्कर्ष पर हिनक नाटक अभिनेय अछि । कुशल निर्देशक ओ पटु मंच-व्यवस्थापकक सहयोगसँ हिनक प्रत्येक नाटक अभिनीत कयल जा सकैछ । वस्तुतः हिनक नाटक अपन अभिनेयताक आधार पर अपन संज्ञाकेँ चरितार्थ करबामे पूर्णतः समर्थ अछि । रंग-शिल्पक दृष्टिएँ हिनक नाटकादिक उज्ज्वल भविष्य असंदिग्ध अछि ।

सीमांकन–मैथिली नाट्य-जगत्मे पंडित गोविन्द झाक अवदान थिक एक सुस्पष्ट कथा-विन्यास एवं नवयुगक नव प्रवृत्तिग्राहिणी स्पन्दनशील, सूक्ष्म कल्पना । ओ जे लोकप्रियता अर्जित कयलनि तकर स्रोत थिक हुनक अनुभूति जाहिसँ पांडित्य प्रदर्शन एवं चमत्कार-प्रदर्शन प्रवृत्तिक स्पष्ट झाँकी भेटैत अछि । ई एक प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, कारण हिनक नाटकक अवगाहनक अनन्तर अनुभव होइछ जे कखनो-कखनो ई प्राचीनताक अत्यधिक पृष्ठपोषक भए जाइत छथि तेँ आधुनिकतासँ पृथक भ' जाइत छथि तथा कखनो ई अति आधुनिक बनि जाइत छथि। हिनक ई प्रवृत्ति नाटकमे सेहो उपलब्ध होइछ ।

17. मैथिली नाटक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ 197.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मालविकाग्निमित्र तँ अनुवादे थिक तेँ एहि संबंधमे इएह कहब समुचित हैत जे प्राचीन परंपराक पृष्ठभूमिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। राजा शिवसिंह ऐतिहासिकताक पृष्ठभूमिमे लिखित अछि तेँ एहिमे आधुनिकता मात्र रंगमंचोपयोगिताक दृष्टिएँ अछि। आधुनिकताक पृष्ठभूमिमे लिखल अछि हिनक "बसात" एवं "अन्तिम प्रणाम"। "रुक्मिणी हरण" एक एहन नाटक थिक जकरा ने तँ प्राचीन आर ने आधुनिक परम्पराक नाटक कहब, प्रत्युत एकरा एक प्रयोगधर्मी नाटक मानब अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होइछ। प्राचीन आवरणमे ओ ऐतिहासिक घटनाक प्रेक्षण समकालीन सामाजिक पृष्ठभूमिमे कयलनि अछि।

हिनक नाट्य-लेखनमे वैविध्य सेहो अछि आर नाट्यक प्रकृतिकेँ बूझिकए पारंपरिक शैली अथवा साहसपूर्ण प्रयोगकेँ स्वीकृति भेटैत अछि। मैथिली नाट्य-लेखनमे ओ एहि समय विशिष्ट स्थानक अधिकारी छथि। हिनक नाटक नाटकीय अभिनय-कलासँ पूर्ण अछि। अभिनयक संगहि रसात्मक अनुभूतिसँ समृद्ध हैबाक कारणेँ हुनक नाटक हृदयस्पर्शी बनि गेल अछि। नाटकक चरित्र किछु सिद्धान्त आर आदर्शक प्रतीक मात्र अछि, परन्तु ओकर व्यक्तित्व संरल एवं स्थूल अछि, गहन एवं सूक्ष्म नहि। एहि प्रकारेँ पंडित गोविन्द झाक नाटकादिमे सामाजिक समस्याकेँ विभिन्न शैलीमेँ प्रभावशाली ढंगेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। नाटककार यथास्थान सहज स्फूर्ति, मार्मिक विचारक अभिव्यक्ति कयनिहार शैलीकेँ अपनाकए अपन नाटककेँ सशक्त माध्यमक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि प्रकारेँ मंचीय संभावनासँ परिपूर्ण पंडित गोविन्द झाक नाटक सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्यादिकेँ एहि प्रकारेँ चित्रित कयलनि अछि जे ओ ओहिसँ आलोकित भेने बिना नहि रहि सकैछ।

पंडित गोविन्द झाक समग्र नाटक-कृति एहि विषयक साक्षी थिक जे ओ एक प्रतिभासम्पन्न नाटककारक रूपमे प्रवेश कयलनि तथा अपन कृतित्वक माध्यमेँ पाठक एवं दर्शककेँ बोध करौलनि जे ओ अधुनातन संदर्भक संगहि संग पारंपरिक शैलीमे सेहो नाट्य-रचना कए सकैत छथि। वर्त्तमान शताब्दीक नवम दशाब्दमे ओ "रुक्मिणी हरण"क रचना कए अपन प्रतिभाक यथार्थताक परिचय देलनि। जे अद्यावधि मैथिलीक कोनो नाटककार कएल पंडित गोविन्द झा कए-कए प्रेक्षककेँ देलनि अछि।

●

गोविन्द झाक बसात : एक पुनर्मूल्यांकन

□ श्री छत्रानन्द सिंह झा

श्रीगोविन्द झा मैथिलीक यथार्थवादी नाटककारमे अग्रणी छथि। हिनक नाट्य-जीवनक आरंभ एहि शताब्दीक पाँचम दशकमे 'बसात' सँ होइत अछि। एहि नाटकक रचना प्रयोग रूपमेँ कएल गेल अछि जाहिमे नाटककारक सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि आ प्रखर प्रतिभाक परिचय भेटैत अछि। 'बसात'क माध्यमसँ स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद मिथिलाक पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याक व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत कएल गेल अछि। पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याक माध्यमसँ भारतीय जन-जीवनक समस्याक चित्र प्रस्तुत कए गोविन्द झा नाटककेँ वर्त्तमानसँ जोड़लनि अछि जे नाटकक सबसँ शक्तिशाली पक्ष अछि। विभिन्न पाश्चात्य एवं पौर्वात्य नाटककारक अध्ययन-अनुशीलनक पश्चात् ओहि सब नवीन तत्त्वक उपयोग करबाक हुनक प्रयास 'बसात' मे अनुभव कएल जाए सकैत अछि जे स्वभाव आ रुचिक अनुकूल अछि।

भारत स्वतंत्र भेल। लोकमे नव-नव आशा-आकांक्षाक संचार भेलै। नव उत्साह आ उमंगमे जीवन-गाड़ी ससरए लगलैक। परन्तु किछुए दूर चललाक बाद आगाँमे घोर तिमिराच्छादित भविष्य। आशानुकूल परिणाम नहि, तेँ निराशा। युवावर्ग दिशाहीन। आकंठ गुलामी-संस्कार। अपन परंपरा, संस्कृति, कौलिक मर्यादा–सब किछु प्रगतिमे अवरोध बुझएलैक युवा पीढ़ीकेँ। पाश्चात्य सभ्यता एहि वर्गक लेल अनुकरणीय छलैक। शालीनता, मर्यादा एक दिस; नग्नता, अशिष्टता दोसर दिस–एक पूबतेँ दोसर पश्चिम। एही वैचारिक द्वंद्वक उपज थिक 'बसात'।

गोविन्द झा जीवनक अनुभवेसँ अपन नाटकक लेल वस्तु चयन करैत छथि। जे किछु देखलनि तकरे कलात्मक रूपमे प्रस्तुत कएलनि। 'बसात'क कथा-वस्तु मिथिलाक गाम-गामक कथा अछि, जँ कही तँ भारतीय समाजक घर-घरक कथा अछि। विवाहक लेल बाप-बेटाक बीच मनोमालिन्य मात्र बसातेक विषय नहि भए सकैत अछि। मात्र मिथिलेक कथा सेहो नहि भए सकैत अछि। सामर्थ्यवान्द्वारा निर्धनक शोषण, पैसाक बलपर प्रतिभाक क्रय ई सब समस्या भारतीय समाजमे व्याप्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अछि। जोतखीजी विवाहकेँ कल्याणकारी मानैत छथि (भारतीय अवधारणा) तँ कृष्णकान्त एकटा ट्रेजेडी। यैह अछि वैचारिक संघर्ष। फुलेसरीक घरसँ चुपचाप भागि जाएब, पुष्पाक रूपमे एकर कायाकल्प आ महिला आश्रम खोलि अशिक्षित, प्रताड़ित, उपेक्षित महिलाक संरक्षण एवं प्रगतिक पथपर डेग बढ़एबाक लेल प्रेरित करबाक संकल्प-शक्तिक संग पुष्पाक जागल आत्म-विश्वास, कृष्णकान्तक छद्म प्रगतिशीलता पुष्पाक प्रगतिशीलतासँ पराजित आ, अंतमे एकटा नाटकीय मोड़—प्रेमी-प्रेमिकाक मिलन। दर्शकक उत्सुकता चरम पर। दर्शक कृष्णकान्त आ फुलेसरीक मिलन चाहैत छल, मुदा मिलि गेल लीली-कृष्णकान्त। दू प्रेमी आत्माकेँ मिलबैत अछि के...? जकरा गोबरक चोत कहि कृष्णकान्त अपमानित कएने छल। वैह फुलेसरी। भारतीय संस्कृति एतहु अपन अर्थवत्ताकेँ उद्घाटित करैत अछि। पुष्पा भारतीय नारीक आदर्शकेँ एतहु प्रक्षेपित करैत अछि। सामाजिक उत्थानक लेल नेतृ-वर्गक बलिदान (स्वयंक बदलामे लीलीक संग कृष्णकान्तक विवाहक पुष्पाक निर्णय) अनपेक्षित नहि मानल जएबाक चाही।

'बसात' मे मध्यवर्गीय जीवनक अनेक समस्या अपन यथार्थ रूपमे साकार भए उठल अछि। नाटक नारी समस्या पर आधारित अछि। विवाह नहि होएबाक कारणेँ अपमानित फुलेसरी अपन मुक्तिक (आत्म-हत्याक) लेल घरसँ भगैत अछि, पतिसँ प्रताड़ित सुगिया सेहो मुक्तिक बाट तकबाक लेल महिला आश्रमक माइजीक शरणमे अबैत अछि, पुष्पा (फुलेसरीक परिवर्त्तित रूप) नारी समाजक मुक्ति-पथ-प्रदर्शन करबाक शक्ति अर्जित करैत अछि तँ लीली अपन प्रेमीकेँ येन केन प्रकारेण प्राप्त करबाक प्रयासमे उन्मुक्तता आ उच्छृंखलताक सीमा टपैत अछि। समाजक तीन वर्गक महिला-प्रतिनिधि अछि : लीली (उच्चवर्ग), फुलेसरी (मध्यवर्ग) आ सुगिया (निम्न वर्ग)।

तहिना ओकील साहेब (उच्चवर्ग), जोतखीजी (मध्यवर्ग) आ टुनटुनमा (निम्नवर्ग)। 'बसात' एहि तीनू बिंदुक वैचारिक संघर्षक कथा थिक। कृष्णकान्त परम्परा आ नवताक द्वंद्वमे फँसल एकटा एहन दिशाहीन युवक अछि जे बिनु सहाराक अपन जीवनमे किछु कइये नहि सकैत अछि। पढ़बाक लेल टाका चाही तँ पिताक सहारा, पिता टाका पठाएब बंद कए दैत छथिन तँ ओकील साहेबक सहारा, पिताक घरसँ भागि जेबाक समाचार सुनि, (एम.ए. मे थर्ड क्लास, आइ. ए. एस. क सब चांस गमाए देलासँ) निराश कृष्णकान्तकेँ लीलीक सहारा, दिगम्बर जगदीशद्वारा अपमानित भेला पर आ प्रेमिकाक (लीलीक) द्विविधासँ आहत कृष्णकान्तकेँ पुष्पा (ओही गोबरक चोत फुलेसरी) क सहारा। प्रथम दृष्टिमे लगैत अछि जे कथानायक 'बसात' क सबसँ दुर्बल चरित्र अछि। कारण कृष्णकान्त प्रगतिक गप्प तँ करैत अछि, मुदा प्रगतिक लेल ओकरा लग कोनो कार्य-योजना नहि छैक। मैथिल कन्या केँ 'गोबरक चोत' कहनिहार एहि शिक्षित युवक लग एहि अभिशापसँ समाजकेँ मुक्त करएबाक लेल कोनो दृष्टि नहि छैक। ओ ने तँ देशक लेल प्रतिबद्ध अछि आ ने समाजेक लेल। ओ मात्र कुर्सी हथिआबए चाहैत अछि। सुविधायोगी बनए चाहैत अछि। कृष्णकान्तक दुर्बल चरित्र की लेखकीय त्रुटि आ कि एहि पात्रमे अन्तर्गर्भित नाटककारक किछु संदेश छैक ? विचार कए लेबाक चाही।

देश स्वतंत्र भेल तँ जाहि वर्गक हाथमे शासन अएलैक से समाजक विकाससँ बेसी आत्म-विकास पर जोर देलक। अंग्रेजक शासन समाप्त भेलैक तँ यैह वर्ग स्वतंत्र भारतमे नव शासक बनल। परतंत्र भारतक जनता पहिने अंग्रेजक गुलाम छल, स्वतंत्र भारतक जनता एहि नेतृ-वर्गक गुलाम बनल। स्वतंत्र भारत पढ़ल-लिखल युवक लेल सरकारी नोकरीमे बेसी आकर्षण छलैक—शासक बनबाक तीव्र इच्छा। एहन-एहन युवक उपरे ऊपर गतिशीलता आ सामाजिक उत्थान पर नीक वक्तव्य तँ दैत छल, मुदा एहि 'सुजलां सुफलाम्' धरती पर अपन 'राज' चलएबाक मोने-मोने योजना सेहो बनाए रहल छल। एहि दोषपूर्ण युवामानसिकता पर व्यंग्य अछि जे कृष्णकान्तक माध्यमसँ नाटककार (अप्रत्यक्ष रूप सँ) प्रेषित कएलनि अछि। नेतृ-वर्गक दुर्बलताकेँ चिह्नित करैत अछि कृष्णकान्त। एहि चरित्रमे निहित एहि व्यंग्यकेँ उद्देश्यपरक बुझल जएबाक चाही।

नाटकक अन्य महत्वपूर्ण पुरुष पात्र जोतखी जी आ ओकील साहेब छथि। जोतखीजी अपन पारंपरिक कुल-मर्यादाक रक्षामे प्राणपणसँ लागल एक विवश पिता छथि तँ ओकील साहेब कानूनी दाव-पेँचक अपन कौशलकेँ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे उपयोग करबामे व्यस्त नारी-उन्मुक्ताक पक्षपाती। जगदीश एकटा अवसरवादी स्नातक अछि जकरा लेल जीवन एकटा 'पताका' छैक जे हवाक गतिसँ स्वतः संचालित होइत रहैत अछि। विशुद्ध भाग्यवादी दृष्टिकोण। बादमे जगदीश खलनायिकी पर सेहो उतरि अबैत अछि। फुलेसरी स्वाभिमानी अछि, लीली उपभोक्ता संस्कृतिक प्रतिष्ठापक, सुगिया नियतिवादी एवं यथास्थितिवादी। किछु आन-आन पात्र, यथा घूटर, टुनटुनमा, फलहारी, ठेङा झा, खजनी सेहो अछि जे मूल कथाकेँ गति प्रदान करैत अछि। ओना घूटर आ टुनटुनमा प्रेक्षकक मनो-विनोदक लेल आरोपित पात्र बुझाइत अछि, दुनूक हास्यमे कथा-सूत्रक क्रमबद्धता अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गोविन्द झाक 'बसात'क कथा-वस्तु पर्याप्त सुगठित अछि, कतहु विस्तारदोष नहि अछि। प्रासंगिक कथाक सृष्टि एहिमे कम भेल अछि आ जतए कतहु भेलो अछि तँ ओकर उद्देश्य अधिकारिक कथाकेँ विकसित करब आ कार्यक महत्वकेँ बढ़ाएब रहल अछि। घूटर आ टुनटुनमाक वार्तालाप शुद्ध हास्य उत्पन्न करैत अछि अवश्य, परन्तु, ओहि वार्तालापमे मूलकथासँ संबद्धता सेहो निहित रहैत अछि।

एहि नाटकमे समस्याक विविधता अछि तथापि कथानक कतहु ओझराइत नहि अछि। कारण अछि, नाटककारक विस्तृत अनुभव ओ सोझराएल दृष्टिकोणक आधारपर निर्मित ई नाटक। नाटकक विभिन्न तत्वक समन्वयसँ वस्तुक एक सुगठित रूप प्रस्तुत करब गोविन्द बाबूक विशेषता थिक। नाटकक आरंभमे समस्याक रूप स्पष्ट नहि रहैत अछि। प्रारंभमे नाटक वैवाहिक समस्यापर केन्द्रित अछि। परन्तु अंतधरि पहुँचैत-पहुँचैत नाटक इच्छित प्रभाव (नारी उत्थान) सँ युक्त भए जाइत अछि। यैह थिक गोविन्द बाबूक नाटकक शिल्पक विशेषता। अंत-अंत धरि उत्सुकता बनल रहैत अछि। गोविन्द बाबू पात्र आ वस्तुक संतुलनपर विशेष ध्यान दैत छथि तथा चरित्रक माध्यमसँ वस्तुक रूपकेँ निखारैत छथि।

मानव जीवनक विविध रूपक प्रस्तुतीकरण थिक साहित्य। नाटकमे सजीवता एवं स्वाभाविकता अनबाक एक मात्र माध्यम अछि ओकर चरित्र। पात्र नाटकक ओ मूल तत्व थिक जकर क्रिया-कलापसँ नाटकक क्रिया-कलाप गतिशील होइत अछि। नाटककारक सफलता एहन पात्रक निर्माणमे अछि जे प्रेक्षकक मानस-पटलपर शाश्वत प्रभाव छाड़ि सकए। चरित्र-चित्रण कथानक-निर्माणसँ गुरुतर कार्य थिक। गोविन्द बाबू 'बसात'मे अपन नाटकीय पात्रकेँ एतेक सहज रूपमे प्रस्तुत कएलनि अछि जे पात्रक वर्गीय संस्कार निखरि उठैत अछि। कृष्णकान्त (उच्चवर्गीय मानसिकताक प्रतिनिधि), जोतखीजी (मध्यवर्गीय) आ सुगिया (निम्नवर्गीय) तीनू समानान्तर विचारधाराकेँ मिलबैत अछि पुष्पा (मध्यवर्गक एक आहत कन्या-फुलेसरी)। भूत-भविष्य वर्त्तमानक समन्वय। परंपरा आ आधुनिकताक बीच एक कल्याणकारी समझौता। 'बसात'मे एक दिस नारीक प्रगतिक सराहना कएल जाइत अछि तँ दोसर दिस आधुनिकताक नाम पर उच्छृंखल भेल लीली पर कठोर व्यंग्यो कएल जाइत अछि। ई ज्ञात भेलापर जे जगदीश लीलीकेँ ट्यूशन पढ़बैत अछि, कृष्णकान्त टिप्पणी करैत अछि– *'बड़ डेंजर जोनमे छह। सम्हरिकेँ चलिहह।'* लीलीक उन्मुक्तता पर ई व्यंग्य थिक।

नाटकमे संवादक महत्व बहुत बेसी रहैत अछि। साहित्यक अन्य विधामे लेखककेँ प्रत्यक्ष रूपसँ बहुत किछु कहबाक अवसर रहैत छनि। किन्तु, नाटकमे संवादे अभिव्यक्तिक एकमात्र साधन अछि। कथा-वस्तुक प्रगति, चरित्रक विकास, भावक स्पष्टीकरण –सैह अछि संवादक प्रयोजन। 'बसात' मे संवादक स्वाभाविकता पर विशेष ध्यान देल गेल अछिः भाषामे लोच आ समयक सापेक्षता। संवादसँ पात्रक स्थान आ भावनाक पता प्रेक्षककेँ लागि जाइत अछि। पात्रक अनुकूल भाषा-प्रयोग 'बसात'क शिल्पगत विशेषता थिक। कृष्णकान्त आ जगदीशक संवादमे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग, सुगियाक भाषा वर्गीय चरित्रक अनुकूल अत्यन्त ठेँठ आ आंचलिक सौरभयुक्त। लोकोक्तिक अम्बार। कहबाक अभिप्राय ई जे संवादमे सत्सम, सद्भव, देशज आ विदेशी शब्दक संग-संग लोकोक्ति ओ आंचलिकताक प्रयोग 'बसात' केँ विलक्षण व्यंजकताक संग एकटा उत्कृष्ट नाट्यकृति बनबैत अछि। क्रिया-व्यापारकेँ निश्चित गति प्रदान करबाक संग-संग, गोविन्द बाबू संवाद द्वारा वातावरण आ मनःसंघर्षक चित्र घीचि दैत छथि 'बसात' मे।

'बसात'क एकटा पैघ विशेषता अछि एकर अभिनेयता। नाट्य-रचना आ नाट्य-प्रदर्शन वस्तुतः एके नाट्य-कलाक दू पक्ष थिक जकर अस्तित्व एक-दोसर पर निर्भर छैक। जँ कहल जाए जे 'बसात' शौकिया रंगमंच पर खेलाएल जाएबला नाटक थिक, तँ कोनो अनर्गल नहि होएत। नाटकक एहि उपलब्धिक आधार मात्र नाटकमे उल्लिखित दृश्य-विधान आ रंगनिर्देश नहि थिक, प्रत्युत नाटककारक समर्पण-भावना। गोविन्द बाबू 'बसात'क रचनामे जतेक परिश्रम कएने छथि, ओहिसँ कतोक बेसी एकर दिग्दर्शनमे। एहिमे रंग-सूचना विस्तृत एवं व्यापक रूपसँ अछि। एहिसँ नाटक प्रस्तुत करबामे कलाकारकेँ सुविधा होइत छैक। एहिमे संकलन-त्रयक पालन कएल गेल अछि। नाटकक एही विलक्षणताक कारणेँ 'बसात'क शताधिक प्रदर्शन अनेक ठाम भए चुकल अछि। हमरो सुनियोजित नाट्यकर्मक शुभारंभ (1959) बसातेक संग भेल अछि।

एहि विचार-मंथनक क्रममे किछु प्रश्न मोनमे घुमरैत अछि। 1959 सँ लए 1961 धरि 'बसात'क कमसँ कम पचास प्रदर्शनक हम स्वयं साक्षी छी। ओहनो गाममे एहि नाटकक प्रदर्शनक आयोजिन गामक स्कूलिया छात्रलोकनि कएलनि हमर मार्गदर्शन मे। ई नाटक मिथिलाक गाम-गाममे नाट्य-आन्दोलन अनलक। तखन की कारण भेलैक जे 1961 क बाद एहि नाटकक प्रदर्शन मे ओ उत्साह नहि रहलैक, जे पहिने छल ? की कारण छल जे 'बसात'क सफल नाटककार तीस वर्ष धरि (अन्तिम प्रणाम-1980) यथार्थवादी नाटक लिखबासँ विमुख रहलाह जखन कि 'बसात' हिनका लोकप्रियताक शिखर धरि पहुँचा देलक ?

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एकर उत्तर स्वयं गोविन्द बाबू दए चुकल छथि मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित अपन नाट्यविषयक पुस्तिकामे । बेसी दृश्यान्तर एहि नाटकक सबसँ पैघ अवरोध अछि । प्रथम अंकमे नौ दृश्य क्रमशः छात्रावासक कोठली, जोतखीजीक दलान, एकटा सामान्य बाट-घाट, ओकील साहेबक ड्राइंग रूम, छात्रावासक कोठली, फलाहारीक दलान, जोतखीजीक दलान, लीलीक पढ़बाक कोठली, आदि-आदि । दोसर अंकमे छौ दृश्य, यथा—जोतखीक दलान, निरापद स्थानमे धूनी धधकैत, लीलीक पढ़बाक कोठली, नगरक विशाल पार्क, दिगम्बरक कोठली कतहु अन्यत्र, ओकील साहेबक कोठली । तेसर अंकमे सेहो नओ दृश्य, यथा नमछुरूक्का मकान, रंगमंच, गाछीलग रेल लाइन, सेवाश्रम आदि । सब मिलाए चौबीस दृश्य । किछु स्थानक पुनरावृत्ति, तँ बेसी नव । निश्चित समयावधिमे एतेक दृश्यक निर्माण करब कतेक कष्टकर से अनुभव करबाक थिक । आ, जँ बिना सेट बनौने संवाद प्रेषित कएल जाइत अछि तँ से अविश्वनीय होएत ।

बेसी दृश्य रहबाक कारणेँ नाटकमे गतिभंग होएबाक संकट बनले रहैत अछि । 'बसात' कृष्णकान्तक पाँच वर्षक जीवन-यात्राकेँ संयोजित करैत अछि । एहि पाँचो वर्षक जीवन-यात्राकेँ संकलन-त्रयक कसौटी पर कसलापर कतहु-कतहु कथा-सूत्रमे क्रम-भंग भेल बुझाइत अछि । पिताक अस्वस्थताक सूचना पाबि कृष्णकांत फलहारीबाबूक दलान पर की करए जाइत अछि जखन कि ओकर पिता अस्वस्थ छथिन । तेँ कृष्णकांतक पिताक कुशलक्षेम बुझबाक लेल पहिने अपन घर जएबाक चाही । से नहि होइत अछि । ई स्थल अविश्वसनीय लगैत अछि । तहिना गामक कोनो व्यक्तिद्वारा साधुवेषधारी जोतखीजी (बमबाबा)केँ नहि चीन्हि पाएब ।

'बसात'क एक उत्कृष्ट पक्ष थिक एकर संगीत।संगीतक संबंधमे एकटा विषय एतए स्पष्ट करए चाहब । नाटकमे संगीत आ नाटकक संगीत दूनू दू वस्तु थिक । ओहेन संगीत जे नाटकक कथा-वस्तुकेँ विस्तार दैत छैक, जे नाटकक वस्तुक अनुपूरक रहैछ से थिक नाटकक संगीत । आ, ओ संगीत जे मात्र प्रेक्षकक मनोरंजन करबाक लेल नाटकमे गढ़ल जाइत अछि से भेल नाटकमे संगीत । एहि प्रकारक गीत-संगीत दृश्यांतरक मध्य नटुआ प्रस्तुत करैत रहल अछि । मुदा बसातमे लीली ई काज कए लैत छथि। तेँ लीली द्वारा गाओल जाए रहल गीत—*'सखि भिनुसरबा.....'* आ *'नहि बारू, नहि बारू दीपक....'* नाटकमे गीत अछि । एहि दूनू गीतकेँ जँ नाटकसँ हटा देल जाइक तँ मुख्य कथा-वस्तुमे कोनो व्यवधान नहि अओतैक । परन्तु महिला सेवाश्रममे भए रहल नृत्य-संगीत नाटकक मूल स्वरक संग स्वर मिलबैत अछि । तेँ ई भेल नाटकक संगीत ।

गोविन्द झा 'बसात' सँ सफल यथार्थवादी नाटककारक रूपमे चर्चित भेलाह आ ओतबे लोकप्रिय छथि—सफल छथि । हुनकामे समस्याकेँ चिन्हबाक शक्ति आ तकर प्रतिपादनक क्षमता छनि । अनुवीक्षण सूक्ष्म आ पकड़ अचूक । हुनक कृतिमे कथ्य आ शिल्पक सानुपात संतुलन अछि । ओ जीवनमे जे किछु देखलनि, तकरे नाटकीयताक संग व्यक्त कएलनि । अनुभूतिक यथार्थता आ सहजता हुनक कृतित्वकेँ सजीव बनाए दैत अछि। हुनक कृति ने बनाबटी अछि आ ने अप्रामाणिक । 'बसात'क ऐतिहासिक महत्व सेहो अछि । कारण, हुनक पूर्ववर्ती कोनो नाटककार यथार्थवादी नाट्य-धाराकेँ एतेक निष्ठासँ ने तँ स्वीकारे कएलनि अछि आ ने तँ क्यो एतेक आत्मविश्वास आ परिश्रमसँ नाटककेँ सजौने छथि। सर्वप्रथम गोविन्द बाबूए एहन नाटककेँ एकटा नव दिशा देलनि । नाट्यकलाक दूनू पक्ष—नाट्य लेखन आ नाट्य-प्रदर्शनक सहज सामंजस्य हिनकासँ पूर्व (ईश नाथ झाक *चीनीक लड्डूकेँ छोड़ि*) मैथिलीक कोनो नाटककार नहि कए सकलाह । मैथिली नाटकक यथार्थवादी धाराकेँ निजत्व आ स्पष्ट स्वरूप प्रदान करबाक श्रेय गोविन्द झाकेँ छनि ।

पं. गोविन्द झाक नाटक मे लोक-तत्व

☐ श्री कुणाल

नाटकक लेल लोक-जीवनक आत्मामे प्रवेश करब आवश्यक छैक । लोकसँ मतलब इहलोकक समानार्थी मानल जेबाक चाही । एहि संदर्भमे भरतमुनि पर्यन्त लोकधर्मी नाटकक प्रभाग बनबैत लोकजीवनक अनुकरणक बात करैछथि । एहि तरहेँ लोक परलोकक विपरीतार्थक भए जाइए । हमरा जनैत एही परलोकक लेल भरत, 'नाट्य-धर्मी' नाटकक प्रभाग बनौलनि जाहिमे प्रदर्शनकारी भावना प्रमुख होइत छैक । एतय भव्यताक अढ़मे, अलौकिकता-अतार्किकताक सिक्का चलेबाक प्रयास प्रबल भए जाइत छैक ।

लोक-तत्वसँ लोक-जीवनक आत्मामे प्रवेश करब ध्वनित होइत छैक । नाटकक संदर्भमे लोक-तत्वकेँ दू भागमे बाँटि कँ देखल जेबाक चाही । पहिल भाग छैक इहलौकिक जीवन आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ओकर बाह्य एवं आंतरिक जटिलता। एहिसँ नाटकक स्टोरी लाइन बनैए। ई स्टोरी लाइन उपरका तह पर कथ्य, संरचना-आधार आ मांसलताक तकनिकी सिद्धान्तसँ निरूपित होइए। भीतरी स्तर पर संकट, संघर्ष, विरोधाभास, टकराहट आ द्वन्द्वक सघनतासँ चरित्रकेँ खोलैत नाट्यक सृष्टि करैए। लोक-तत्वक दोसर भाग छैक लोकजीवनमे व्याप्त प्रदर्शनकारी परंपरा तथा एकरा अंतर्गत होइत नवीन युक्तिसभक आविष्कार। एकरा स्टाइलाइजेशन वा शैली-बन्ध कहि रूढ़ आ नाट्यधर्मी बनौनाइ अनर्गल छैक अपितु लोकधर्मीक संदर्भमे भरतसँ फराक होइत हम मानै छी जेना नाट्य जीवनक अनुकरण नै होइए आ ने भए सकैए। ओइमे लोक-जीवन पर आत्यंतिक भावसँ संकेन्द्रित होइत अंत:जगतमे प्रवेश करबाक भाव प्रबल होइत छैक। जे स्वाभाविक छैक सएह टा कारण-प्रभावक नियमकेँ उद्घाटित करैत उत्प्रेरित करबाक क्षमता रखैए। एतहि आबि लोक-जीवनक प्रदर्शनकारी तत्व सब नियामक भए जाइए। किएक त इएह लोक-जीवनक 'फार्म आफ एक्सप्रेशन' अछि। तेँ ओ लोकक लेल महत्वपूर्ण अछि आ तेँ लोकप्रिय होइए।

उपरोक्त संदर्भमे बात करैत काल इहो ध्यान राखब आवश्यक जे मैथिलीक लोक-जीवन आ रंगमंचक वस्तुगत परिस्थिति केहन छैक। एतए एतबे कहब पर्याप्त हेतै जे जखन पं. गोविन्द झाक पहिल नाटक *बसात* 1954 मे प्रकाशित भेल तखन मैथिली रंगमंचक परिकल्पनो ठीकसँ प्रस्तुत नै छल। एहनामे ओकर सामाजिक सरोकार वा समाजक रंगमंचीय सरोकार आ नाट्य-चिंतनक बात त उठिए ने सकैए। एहनामे *बसात*, निश्चिते एक नव बसात जकाँ बहल। पूर्व नाट्य-रचना सब जकाँ विवाहविषयक नाटक होइतो, कार्य-कारणसंबंधक व्याख्या दिस अग्रसर होबएवला ई पहिल नाटक अछि। कथ्यक हिसाबे नाटक, मैथिल युवकक महत्वाकांक्षा, मुख्य-धारामे अपन विशेष स्थानक अपेक्षा आ नारी-शिक्षाक बात करैए। हल्लूके स सही, जाति-पाँजि प्रथा पर आक्षेप सेहो करैए। ई सबटा तथ्य एकरा कम-सँ-कम मध्यवर्गक जीवन दिस तँ संकेंद्रित करिते छैक। दोसर तरहेँ नाटक एहन प्रदर्शनकारी युक्ति सभक प्रयोग करैछ जे एहिसँ पहिने मात्र किरतनिआ नाटक वा नाचमे होइत छलै। जेना गायन द्वारा मनोदशाक विवरण तथा 'महिला सेवाश्रम संघ' द्वारा संचालित विभिन्न ट्रेड सभक परिचय। परंतु स्वाभाविकता एवं तज्जन्य उत्प्रेरकीय सामर्थ्यक संदर्भमे नाटक एकाधिक लूज-एन्ड सबसँ ग्रस्त अछि। जेना नायिका पछिलका ट्यूटरकेँ एहि दुआरे हँटबैछ जे ओ खाली गप्प करै छलैक। परंतु नवका ट्युटरक समयमे त आगाँ बढ़ि कए गीतो-नाद होइत छैक। वकील साहेब (नायिकाक पिता) नवका ट्युटर (नायक) बेटीक विवाह निमित्त रखैछ परंतु नायक त पितासँ खर्चा बंद भेला पर स्वयंकेँ सपोर्ट करक लेल ट्यूशन करैए। ई द्वन्द्व हवामे राखल कर्पूर जकाँ बिला देल गेल छैक। वकील साहेबक पुत्र आवारा केना भए गेलैक। ई पात्र एकाएक ट्पकि कए सम्पूर्ण नाट्य-विधानकेँ प्रायोजित कए दैत छैक। फलतः नाटकमे अनायासे नाट्य-धर्मी प्रवृत्तिक समावेश भए जाइत छैक।

1954 सँ 1988 तक प्रकाशित पंडित जीक सात गोट नाट्य- रचना उपलब्ध अछि। हिनक दोसर पूर्णकालिक नाटक, *'राजा शिवसिंह'* मिथिलाक राजवंशक हेराफेरी, व्हीम, भितरघात आ बहरिया आक्रमणक भयमे लटपटाकए लोक-जीवनसँ असंपृक्ते रहि गेल। एहिमे आएल समस्त कैरेक्टर, कॉमिक-स्ट्रिप क सीमारेखासँ आबद्ध अछि। फलतः नाट्य-रचनाक उद्देश्य स्पष्ट नहि होइत छैक। एकरामे लोक-तत्वक बात करब भूसाक ढेरीमे सूइ ताकब सन हैत।

परंतु पंडित जीक तीनू प्रकाशित अल्पकालिक नाटक वा एंकांकी व्यंग्यक तीव्रतासँ आविष्ट भ' क' मैथिल-लोक जीवनक चरित्र विशेषक समीप भए जाइए। *मिथिलाक प्रतिनिधि* मे व्यंग्यक धार ओहन तत्वक चीर-फाड़ करैए जे आधुनिकताक नाम पर संस्कारकेँ अस्वीकार करैत मात्र लाभक लेल संस्कृतिक प्रतिनिधि बनय चाहैए। एहने सन जेना कविता पर नाक-भौँह चमकौनिहारक द्वारा विद्यापति -पर्व समारोहक आयोजन। एहिना ***मनुखक मोल*** मे झूठ गवाही देनिहारक भंडाफोड़ करक लेल किंवदंतीक आधार पर नवीन युक्तिक आविष्कार भेलए तथा *मोछ-संहार* मे माहुरकेँ माहुरसँ कटबाक युक्तिसँ जड़ल सामंती ऐँठी पर पानि ढारल गेलए। ई तीनू नाटक अपना सीमामे सहज, स्वाभाविक एवं चरित्रक द्वन्द्वात्मक विकाससँ पूर्ण अछि।

पंडित जीक तेसर पूर्णकालिक नाटक, *अंतिम प्रणाम* वर्णित चरित्रक हिसाबेँ मध्यवर्गक सीमासँ बहरा कए निम्नवर्गक बीच जाइए। नाटकक संरचनात्मक आधार ग्राम्य जीवनक प्रति भावुक, एक हद तक रूमानी मोहसँ बनैत छैक। स्टोरी लाइन आगाँ बढ़ि कए ग्राम्य जीवनमे परदेश बसल अब्बल-दुब्बल लोकक जमीन हड़पि लेबा पर केन्द्रित भए जाइत छैक। गामकेँ 'अंतिम प्रणाम' कहबाक आधार सेहो ओहि रूमानी मोहक भंग भेला पर भेटैत छैक। नाटक, रियलिस्टिक फ्रेममे बान्हल अछि आ द्वन्द्वक परिचिति चरित्रक अपेक्षा परिस्थिति सँ बेसी होइत छैक। फलतः चरित्र अविकसित रहि जाइत छैक आ परिस्थितिपर ओकर अ-नियंत्रिणसँ नाटकक स्वर पलायनवादी भए जाइए।

परंतु पंडित जीक चारिम नाटक *रुक्मिणी हरण* 1988 अपन 1954 क भूमिकासँ बेस आगू बढ़ि सोझाँ अबैए। लोक-जीवन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आ रंगमंच दूनूक संदर्भमे ई नाटक एकटा प्रशस्त बाटक उन्मेष करैए। नाटक सांस्कृतिक आ सामाजिक जीवनक प्रति संक्रेन्द्रित होइत दू स्तर पर चलितो एक दोसराक पूरक बनिकए एक समग्र प्रभावक सृष्टि करैए। एक दिस आम जन-जीवन,जमीदार एवं लिलहा सबहक आतंक एवं शोषणक विरुद्ध मुखर होइत जनताक आक्रोश आ विद्रोहक कथा अछि त दोसर दिस बिसरल-भुतिआएल सांस्कृतिक धरोहरिक एक नमूना–किरतनिआनाट्य सँ परिचिति। ई परिचिति, नाट्यधर्मी रचना रुक्मिणी -परिणय (रमामति उपाध्याय) क किछु संपादित अंशक एक युक्तिविशेषक रूपमे होइए। एकरा लेल चरित्र ओएह राखल जाइए जे आम जीवनक संघर्षरत लोक अछि आ जकर दैनंदिन जीवनक अंग छैक किरतनिआ नाटकक एहि तरहेँ, जीवन आ संस्कृति एक दोसराक पूरक होइत रचनाकेँ स्वाभाविक आ उद्रेरक बनबैए। आंतरिक स्तर पर ई मेल एक एहन जटिलताक सृष्टि करैत छैक जकर सोझाँ-सोझी सामनासँ नाटक चरित्रक संग-संग एक विशेष काल-खंडकेँ खोलि दैत छैक। एतए आबि नाटक कथ्य, संरचना, मांसलता, सौन्दर्यविधान, उद्देश्य, द्वन्द्वात्मक विकास एवं पूर्णता क संदर्भमे लोकतत्वक शक्तिसँ पूर्णतः आप्लावित होइत बुझाइए।

अंततः कहब आवश्यक अछि जे पं. गोविन्द झाक नाटक मैथिली रंगमंचक दू विशेष कालखंडमे गति आ आवेगक संवाहक बनलए। मैथिली रंगमंचक शून्य-कालमे हिनक नाटक 'बसात' आएल, दू-अढ़ाए दशक तक आडुर पर गनल जाए बला नीक मैथिली नाटक सबमे अग्रगण्य रहल। पुनः जखन नवम दशकमे समकालीन भारतीय रंगमंचक संदर्भमे मैथिली रंगमंचक बात महत्वपूर्ण भेल वा मैथिली रंगमंच कम-सँ-कम अपन उपस्थिति दर्ज करौलक तँ मैथिली रंग-परंपराक विकासकेँ चिन्हबाक आधार प्रदान करयबला नाटक रुक्मिणीहरण हिनकहि द्वारा लिखल गेल। जँ एकरा संयोग मानल जाए त ई सुखद संयोग अछि।

नाटक बसातमे रस-निष्पत्ति

□ श्री अजीत मिश्र

बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न, बहुभाषाक गम्भीर विद्वान्, मातृभाषाक सरस साहित्यकार ओ मान्य भाषा-वैज्ञानिकक नाम थिक : पं. श्री गोविन्द झा। पं. श्री झाजीक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक जँ सम्यक् विवेचन-विश्लेषण हो तँ ई कहब कठिन भए जाएत जे–'ओ की छथि' ? कविता हो वा कथा, निबन्ध हो वा समालोचना, नाटक हो वा एकाङ्की, व्याकरण हो वा भाषा-विज्ञान–प्रत्येक विधामे पारङ्गत, सभ क्षेत्रमे सिद्धहस्त। यथार्थतः श्री गोविन्द बाबूक लेखनी जाहि दिशामे चलल, तकरहि सज्जित-चमत्कृत कए देलक।

महाकवि विद्यापतिक *गोरक्षविजय* सँ शुरू भेल मैथिली नाटक आइ विशाल अट्टालिकाक रूप धारण कए चुकल अछि। एहि विशाल भवनक निर्माण मे जे कुशल कारीगरलोकनिक सहयोग प्राप्त भेल, ताहिमे पं. श्री गोविन्द झाक सप्रयास सदा-सर्वदा प्रातःस्मरणीय रहत। पं. श्री झाजीक चारि गोट मौलिक नाटक प्रकाशित अछि, जे थिक–*बसात, राजा शिवसिंह, अन्तिम प्रणाम ओ रुक्मिणीहरण*। *बसात* नाटकमे नव युगक नव आदर्शकेँ सर्वसमक्ष प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहिमे मैथिल ललनाक त्यागक अपूर्व वर्णन भेल। सङ्गहि समाजक नीक ओ अधलाह दुहू पक्षक चित्रण देखल जा सकैछ। मुदा निश्चित रूपेँ पं. श्री झाजीक नाटकक मुख्य उद्देश्य अछि पर्दामे बन्द नारीक चित्रण करैत मैथिल ललनाक गौरवकेँ प्रस्तुत करब। अन्तर्द्वन्द्वक चित्रणमे झाजी पूर्ण सफलता प्राप्त कएल, किन्तु एहि नाटकक सफलताक सबसँ पैघ प्रमाण थिक एकर मंचन। प्रायः जतबा एहि नाटकक मंचन भेल, ततबा कोनो आन नाटकक नहि। तेँ पूर्ण जोर दए कहि सकैत छी जे नाटक *बसात* मैथिली साहित्यमध्य अद्यावधि सबसँ सफल नाटक थिक।

ई तँ सर्वविदित अछि जे *'रस्यते इति रसः'*, मुदा प्रायः वाङ्मयमे रस-शब्दक विभिन्न अर्थमे प्रयोग देखल जा सकैछ। मुदा एतबा निश्चित जे रस-सिद्धान्त अपनहिमे पूर्ण अछि। किन्तु जखन नाटकमे रस-निष्पत्तिक चर्चा होइछ तखन स्पष्ट होइछ जे जँ नाटकमे रस-सिद्धान्तक पूर्ण उपयोग कएल जाए, तँ नाटकक क्षेत्र सीमित भए जाएत। रसक सीमा ओ रस-परिपाकक समस्या उपस्थित भेलासँ नाटकक पात्रक चरित्र संकुचित भए जाइछ, ओकरा कोनो-ने-कोनो रसक अनुकूल चित्रित करए पड़ैछ, जाहिसँ कथावस्तुक स्वाभाविक विकासमे बाधा उपस्थित होइछ। पात्रक संश्लिष्ट चरित्र-चित्रण करबासँ रस-पद्धतिक कारणेँ व्यवधान पड़ैछ। तेँ वर्तमान साहित्यिक कृति सभक रस-सिद्धान्तक दृष्टिएँ अवलोकन कएला पर स्पष्ट भए जाइछ जे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रस-सिद्धान्तक तराजू एकरा तौलबामे पूर्णतया समर्थ नहि होइछ। प. श्री गोविन्द झाजीक बसात नाटकमे रसक स्थान 'उद्देश्य' लए लेने अछि, यद्यपि नाटककार रस-सिद्धान्तकेँ सेहो ध्यानमे रखने छथि। एतए ध्यातव्य जे हम रस-संबंधी विवेचनाक आधार भरत मुनिक प्रसिद्ध सूत्र *"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"* केँ बनाओल अछि।

नाटक *बसात* रस-सिद्धान्त पर आधारित नाटक नहि थिक, किएक तँ एहिमे कोनो रस-विशेषक निष्पत्ति नहि होइछ। बीच-बीचमे अनेक रसक समावेश कएल गेल अछि, आओर कतहु-कतहु तँ रस मात्र भावदशा तक सीमित रहि गेलैक। पहिल अङ्कक पहिल दृश्यमे हास्य रसक समावेश कएल गेल अछि। कृष्णकान्त ओ जगदीशक बीचमे होइत गप्प-सप्प श्रोता वा पाठककेँ हँसबाक हेतु विवश करैछ। कृष्णकान्त जतए विवाहक फेरमे पड़ि अपन जीवनक महत्वाकांक्षाकेँ नष्ट नहि करए चाहैत अछि तँ जगदीश 'तँ की एकड़ि बेर प्राइम मिनिस्टरे हएबह ?' कहि ओकर महत्वाकांक्षाक हँसी उड़बए चाहैछ। एहि प्रकारेँ जगदीश जतए उद्दीपनक कार्य कए रहल अछि, ओतहि कृष्णकान्त आलम्बन बनल छथि। एहिना दोसर दृश्यसँ लए पाँचम दृश्यधरि हास्यरसेक प्रधानता अछि। तेसर दृश्यमे टुनटुनमा ओ घूटरक चुहलबाजी, चारिम दृश्यमे ठेङा बाबूक क्रियाकलाप ओ पाँचम दृश्यमे जगदीशक व्यवहारसँ हास्यरसक सफल व्यंजना होइछ। मुदा छठम दृश्यमे एकहि सङ्ग अद्भुत, रौद्र, करुण आर वीभत्स रसक समावेश कएल गेल अछि। पिताक अस्वस्थक तार पाबि कृष्णकान्त जखन अपन गाम अबैत अछि ओ बापकेँ पूर्ण स्वस्थ पाबि आश्चर्यचकित होइत पुछैत छैन्हि जे *"तँ ई तार फुसिए गेल छल ?"* सभहक गुम्मीसँ ओ आओर विस्मयमे पड़ि जाइत अछि। आँगनक गीत सुनि ओ चकित छल तखने बटुकक द्वारा लाल धोती, पाग, दोपट्टा बढ़ाओल जाइत छैक। ओ ई बुझि किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए जाइत अछि जे सब तैयारी ओकरहि विवाहक भए रहल छैक। कृष्णकान्त अपन पितासँ पूछि बैसैत अछि– *"बाबूजी, ई कोन तमासा कए रहल छी अहाँ ?"* एहिमे क्रोधमिश्रित विस्मयक दर्शन कएल जा सकैछ। कृष्णकान्त आगाँ जखन मिथिलाक कन्याकेँ गोबरक चौतक संज्ञा दैत छथि, तखन स्पष्टतः पर्दा-प्रथासँ पीड़ित कन्याक प्रति घोर घृणाक वातावरण बनैत अछि, जे कि बीभत्स रसक स्थायी भाव थिक। अन्तमे फलहारी द्वारा अपन पागक मर्यादा रखबाक निमित्त कृष्णकान्तक पएर पकड़ब, मुदा कृष्णकान्त द्वारा सब किछुकेँ लात मारि बिदा भेला पर फलहारी आर जोतखीक स्थितिसँ शोकक वातावरण बनि जाइछ, जाहिसँ करुण रसक सुन्दर परिपाक होइछ। एहि प्रकारेँ छठम दृश्यमे विभिन्न रसक सुन्दरसंयोग देखल जा सकैछ। नाटकक सातम अङ्कमे पुनः करुण रसक साम्राज्य अछि। एक तँ पहिनहिसँ चिन्तित जोतखीजी फलहारीक बेटीक भागि जएबाक खबरि सुनि अत्यन्त शोकाकुल भए अपन प्राण-लीला समाप्त करबाक निमित्त घर छोड़ि भागि जाइत छथि तँ फलहारी बेटीक सङ्ग-सङ्ग जोतखीजीक भागि जएबाक गप्प बुझि अत्यन्त चिन्तित भए जाइत छथि। एहि प्रकारेँ एहिमे करुण रसक सुन्दर उपयोग भेल अछि। आठम दृश्यमे हास्य रसक समायोजनक सङ्ग शृंगार रसक झलकी देखल जा सकैछ। पहिने कृष्णकान्त ओ खजनी तथा पछाति कृष्णकान्त ओ लिलीक गप्प ओ व्यवहारसँ हास्य रसक सफल व्यञ्जना होइछ तँ लिलीक आग्रह पर कृष्णकान्तक चाह पीअब ओ कृष्णकान्तक आग्रह पर लिलीक गीत गाएब दुहूक बीचमे पनघी फेकैत प्रेमक दर्शनसँ शृंङ्गार रसक अनुभूति होइछ। नओम दृश्यमे मुख्यतः शान्त रसक समावेश अछि। चिन्तित कृष्णकान्तकेँ ओकील साहेब द्वारा बुझओला पर अन्तःकरणक विश्रामसँ सुखक अनुभूति होइत छैक, जाहिसँ शान्त रस सिद्ध होइछ।

दोसर अङ्कक पहिल दृश्यमे घूटरक वाणीसँ जतए भयानक रस बहैत अछि तँ टुनटुनमाक व्यवहारसँ हास्यरसक समायोजन होइत अछि। दोसर दृश्यमे घूटरक हाव-भाव दर्शककेँ हँसबाक हेतु विवश करैछ। तेसर दृश्यमे कृष्णकान्त ओ लिलीक मधुर-मिलन होइत अछि, जाहिमे क्षणिक करुण रसक सेहो प्रयोग कएल गेल अछि, मुदा प्रधानता निश्चित-रूपेण शृङ्गार-रसेक अछि। एहि अङ्कक चारिम दृश्यमे बमूबाबा ओ पुष्पाक बीचमे गप्प-सप्प होइछ, जाहिमे बमबाबाक क्रिया-कलापसँ जतए हास्य रसक पुष्टि होइछ, ओतहि पुष्पाक अति उत्साहसँ वीररसक संपुष्टि होइत अछि। एकर चरम तँ तखन होइत छैक, जखन पुष्पा अपन विवाहक हेतु राखल रुपैयासँ महिला-सेवाश्रम खोलबाक गप्प करैत अछि। एहि दृश्यमे बमबाबाक उत्साही वक्तव्य जतए आश्रयक रूपमे प्रस्तुत होइछ, ओतहि मैथिलानीकेँ आदर्श ललना बनएबाक दुष्कर कार्य एकर आलम्बन बनैछ। पुष्पाक उत्साहपूर्ण वाणी जतए अनुभावक रूपमे अबैछ, ओतहि ओकर एहन दुष्कर कार्य करबाक धैर्य संचारीभावक रूपमे दृष्टिगोचर होइछ। पाँचम दृश्यमे समाजक बीभत्स रूपकेँ देखि सकैत छी। जगदीश मने-मन गूड़ चाउर खाइत छल जे लिलीक सङ्ग विवाह करब, मुदा जखन बुझलक जे लिलीक विवाह कृष्णकान्तक सङ्ग होयत तखन ओकरा ओकील साहेबक प्रतिएँ घृणा उत्पन्न भए जाइत छैक। एतए जगदीश जतए आश्रय बनैछ तँ ओकर घृणा स्थायी भाव।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

लिलीक कृष्णकान्तक सङ्ग विवाह स्थिर होएब जतए आलम्ब बनैछ, ओतहि लिलीसँ जगदीश द्वारा मोह छोड़ब संचारी भावक रूपमे प्रस्तुत होइछ। एहि प्रकारेँ एतए बीभत्स रसक संपुष्टि होइछ। दोसर अङ्कक अन्तिम दृश्यमे बीभत्स रसक सङ्ग करुण रस सेहो उपस्थित अछि। जगदीश ओ दिगम्बरक वक्तव्य जतए घृणाक वातावरण बनौलक, ओतहि वक्तव्यसँ पीड़ित ओकील साहेब ओ लिलीक स्थितिसँ कारुणिक दृश्य उपस्थित भए जाइछ।

तेसर अङ्कक पहिल दृश्यमे वीर रसक संपुष्टि होइत अछि। पुष्पाक वक्तव्य–*"जकरा हृदयमे स्वाभिमानक भावना रहतैक, आत्मरक्षाक प्रौढ़ता रहतैक, तकरा के की कए सकतैक ?"* ओकर उत्साहकेँ पूर्ण संपुष्ट करैत अछि। दोसर दृश्यमे सेहो वीररसक अनुभूति होइछ। विभिन्न दलक द्वारा गाओल जाइत पंक्ति–*'सखि हे जागह; जागह, भेल प्रात'* मैथिलानीक आत्मबल कहबामे पूर्ण समर्थ अछि। तेसर अङ्कमे प्रधानता करुण रसक अछि, मुदा हास्य रसक समायोजन सेहो पूर्ण सतर्कताक सङ्ग कएल गेलैक। कृष्णकान्तक वक्तव्य–*".....हे ईश्वर, जँ अहाँ सत्य थिकहुँ तँ हमरा मुक्ति दिअऽ, एहि असफल जीवनसँ मुक्ति दिअऽ।"* हुनक कारुणिक स्थितिकेँ प्रकट करैछ। अपन जीवनक मोह त्यागि ओ रेलमे कटबाक हेतु तैयार छल, मुदा टुनटुनमा ओ घूटर द्वारा बचाए माइजीक आश्रममे आनल गेल। चारिम दृश्यमे रेलमे कटबासँ बँचि गेला पर कृष्णकान्तकेँ आत्मज्ञान होइत छैन्हि आ ओ स्थिरचित्त भए पुष्पाक सेवाश्रममे एकान्त चिन्तनमे लीन भए जाइत छथि, जाहिसँ शान्तरसक दर्शन होइत अछि। पाँचम दृश्यमे वात्सल्य रस देखल जा सकैछ। बमबाबा घूटरसँ ई बूझि जे एकटा कोट-पेंटवला जोतखीभाइक घरकेँ गोड़ लागि रेलमे कटबाक हेतु गेल छल, तकरा पकड़ि माइजी लग पहुँचा देल, झटकारिकए बिदा भए गेलाह, जाहिसँ ओहि व्यक्तिक प्रतिएँ बमबाबाक वात्सल्यपुष्ट होइत अछि। छठम दृश्यमे अद्भुत, करुण ओ किंचित् शृङ्गार रसक अनुभूति कएल जा सकैत अछि। कृष्णकान्तक एक-एक पंक्ति जतए ओकर कारुणिक स्थितिकेँ संपुष्ट करैत अछि, ओतहि बमबाबाक रूपमे अपन पिता ओ माइजीक रूपमे पुष्पाकेँ समक्ष पाबि ओकर आश्चर्यक सीमा नहि रहैत छैक। अन्तमे पिताक मनोरथ पूरा करबाक हेतु तैयार कृष्णकान्त ओ पुष्पाक स्नेह-स्निग्ध अवलोकन शृङ्गार रसकेँ पुष्ट करैत अछि। सातम दृश्यमे जोतखीजी कृष्णकान्तक विवाहक तैयारीमे लागल छथि, जाहिमे स्पष्ट रूपेँ वात्सल्य रसकेँ देखि सकैत छी। आठम दृश्यक पहिल अंशमे जतए शृङ्गारमिश्रित वीररसक प्रधानता अछि, ओतहि दोसर अंशमे आश्चर्यमिश्रित घृणा देखल जा सकैछ। पहिल अंशमे पुष्पा अपनाकेँ विवाहक हेतु तैयार करितो अति उत्साहमे कहैत छथि–*"बिआह नहि करू रहल छी, पुरुष पर विजय क' रहल छी, पुरुष पर विजय।"* एहिमे पुष्पाक उत्साहपूर्ण वाणी जतए अनुभावक रूपमे उपस्थित अछि, ओतहि पुरुष पर विजय प्राप्त करबाक गर्व संचारी भाव थिक। मुदा दोसर अंशमे लिलीक वक्तव्य–*"....हमर सोहाग लूटिकेँ अहाँ सोहागिनि बनि रहलि छी..?"* मे पुष्पाक प्रति घोर घृणाकेँ देखल जाए सकैछ। एहि प्रकारेँ वीर ओ बीभत्स रसक अनुपम संयोग द्रष्टव्य अछि।

नाटकक अन्तमे अद्भुत रसक उत्तम प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ। पहिनेसँ स्थिर कृष्णकान्त-पुष्पाक विवाहक बदलामे कृष्णकान्तक सङ्ग लिलीक विवाह करा देल जाइछ, जाहिसँ सभ आश्चर्यचकित रहि गेल। एतएक आश्चर्य जतए स्थायी भाव थिक, तँ पुष्पा आलम्बन। कृष्णकान्त ओ लिली जतए आश्रयक रूपमे उपस्थित छथि तँ दुहूक विवाह होएब उद्दीपन। अन्तमे फलहारी ओ जोतखीजीक उत्साहपूर्ण वाणीसँ वीर रसक धारा बहैत अछि। फलहारीकेँ पूर्ण गर्व छैन्हि जे– "हमर कन्या आइ ओ फुलेसरी नहि थिक जकरा केओ नवयुवक गराक घेघ कहि अपमान करतैक। आइ एंक के कहए हजार नवयुवक ओकरा पाएर पर माथ झुकएबाक हेतु तैयार छथि।"

एतावता, नाटक *बसात* केँ रस-सिद्धान्तक तराजू पर ज्ञात होइछ जे ई मुख्यतः वीर रसक नाटक थिक। युग-युगसँ पीड़ित अबला नारीक अनुपम रूपकेँ एकरा माध्यमेँ देखल जा सकैछ। पुष्पाक चरित्र जतए आश्रयक रूपमे उपस्थित भेल अछि, ओतहि एहि गोबरैक चोत सन मैथिल ललनाकेँ भारतक आदर्श ललना बनएबाक दुष्कर कार्य आलम्बन थिक। अदौसँ चलैत आबि रहल नारीकेँ निरीह बुझबाक परम्परा एकर उद्दीपनक कार्य करैत अछि। सङ्गहि पं. श्री झाजी पुष्पाकेँ एहि नाटकक कर्त्ता-धर्त्ता बना प्रधान रस वीरक आश्रयक उपयुक्त स्थायी भाव उत्साहक प्रभावशाली स्थापना कएल अछि। नाटकक अन्त धरि ओ उत्साहमे कमी नहि अबैत छैक। आश्रयक भावकेँ उद्दीप्त करबामे आलम्बन जतबा समर्थ होइत छैक ओतबहि आश्रयक गुणक उद्घाटन होइत छैक, जाहिसँ रस-परिपाकमे ओतबहि सफलता प्राप्त होइछ। नारी-जागरणक सदृश समर्थ आलम्बन रहबाक कारणेँ आश्रय पुष्पाक चरित्रमे वीर-रसक सङ्ग-सङ्ग नाटक *बसात* मे अन्य रसक समावेश पूर्ण सजगताक सङ्ग कएने छथि, तेँ तँ सैंतीस सालक होएबाक उपरान्तो *बसात* अपन महत्त्वकेँ पूर्ववत् बनौने अछि।

अस्तु, प. श्री गोविन्द झाजी अपन कलमसँ एहन ने *बसात* बहौलैन्हि जे निर्जीव खर-पात सदृश प्राचीन मान्यता उड़ि गेल आ नवीन युग-प्रवृत्तिक चेतनासँ ओत-प्रोत मैथिल ललना भारतक आदर्श नारीक रूपमे प्रतिष्ठित भए गेलीह। ●

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं. श्री गोविन्द झाक नाटकक पात्र

□ डा. (श्रीमती) इन्दिरा झा

नाटक जीवनक मुखर ओ प्रत्यक्ष प्रतिच्छवि थिक । ई विश्वक प्राचीनतम साहित्य थिक तथा एकर उद्देश्य छैक लोकक मनोरंजन करब । वैदिक युगसँ आइ धरि ई विधा विकसित ओ परिष्कृत होइत वर्तमान रूपमे आएल अछि । एकर यात्रा प्रारम्भ भेलैक संस्कृत नाट्य साहित्यक मार्गक अनुसरण करैत, मुदा आगू जा कँ एकर रूप पथ अथवा निर्णयक व्यामोहमे नहि फँसि, पूर्णरूपसँ स्वानुभव, स्वचिन्तन, आओर युगीन प्रभाव-प्रयोगक संग अग्रसर होइत दृष्टिगत होइत अछि । समसामयिक जीवनक स्वर एवं दृष्टिकोण नाटकक चरित्रक माध्यमसँ मुखरित होइत अछि। नाटक जीवनक परिदृश्य भेलाक कारणेँ एहन मूल्यक अपेक्षा करैत अछि जे जीवनगत हो । नाटककार कथाक चरित्रमे अपन दूरदर्शी मेधाक बल पर प्राण-संचार करैत अछि । नाटकमे सजीव ओ जीवंत पात्रक रचना कएलहिसँ नाटककार सत्य अर्थमे नाटककार होइत अछि ।

वस्तु, नायक ओ रस–नाटकक प्रमुख अवयव अछि । मुदा, नाटकक प्रभाव बहुत किछु पात्रक कथोपकथन पर अवलंबित रहैत अछि । मैथिली साहित्यक मध्यकाल नाट्ययुग रहल मुदा समाज ओ ओकर समस्यासँ निरपेक्ष रहि अबाध गतिसँ नाट्य सृजन भेल । मुदा समयक संग डेगमे डेग मिला कए नहि चलला सँ ओहि परम्पराक लोप भए गेल। मैथिलीक प्रारंभिक नाटक सभमे एकटा सुनिश्चित नियमक अनुसार एक वर्गविशेषक पात्र कँ प्रस्तुत कए, चरित्र-चित्रणकँ अत्यन्त यांत्रिक रूप दए देल गेल छल । मुदा, क्रमशः कलाक एहि सामन्ती, धार्मिक ओ आदर्शवादी नियमसँ नाटककँ मुक्ति भेटल । जनसाधारणक मानसिक जगत्मे आमूल क्रांति उत्पन्न करबाक धारणा नूतन विचारधाराक खोजमे साहित्यकारकँ मोड़लक । आधुनिक कालमे हमरा लोकनिक नाटकक विषय समाजक आलोचना बनल आओर पात्रक चरित्र मनोविज्ञानक आलोकमे आँकल जाए लागल ।

पं. गोविन्द झा आधुनिक युगक नाटककार छथि तथा ओ समस्यामूलक यथार्थवादी नाटकक संग ऐतिहासिक ओ पौराणिक विषयवस्तुकँ सेहो अंगीकार कयलनि । हुनक *बसात, राजा शिवसिंह, अंतिम प्रणाम* ओ *रुक्मिणीहरण* नाटकमे नव शिल्प दृष्टिगत होइत अछि । नाट्य-सृजनमे हुनक मौलिक प्रतिभाक दर्शन होइत अछि तथा हुनक नाट्यकृति सामान्य स्तरसँ उपर अछि । हुनक **बसात** नाटकक नामकरण प्रतीकात्मक थिक । बसात जहिना निर्जीव घासकँ उड़ा दैत अछि तहिना नव युग नव प्रवृत्तिक चेतनासँ प्राचीन मान्यता कँ समाप्त कए नारी-जागरणक शंखनाद करैत अछि । **बसात** नाटकक रचना जाहि कालमे भेल ओहि समय मैथिल समाजमे कन्याक शिक्षा पर ध्यान नहि देल जाइत छलैक। स्त्रीक जीवनक लक्ष्य मात्र विवाह ओ संतानोत्पत्ति छल । तँ समसामयिक समस्याकँ नाट्य-फलक पर राखि नायक कृष्णकांत द्वारा एकर विरोध देखाओल गेल । शिक्षित युवक कृष्णकांत पिताक इच्छाक विरुद्ध मूर्खा पत्नी फुलेश्वरीकँ नहि स्वीकार करैत छथि । अपमानित भए फुलेश्वरी आत्महत्याक लेल प्रस्तुत होइत छथि मुदा बमबाबाक सत्प्रयाससँ ओ महिला समाजकँ जगयबाक हेतु कृतसंकल्प होइत छथि । फुलेश्वरीक प्रति कृष्णकांतक व्यवहार अनपेक्षित घटना अछि मुदा समस्याक संग समाधान देखएबाक हेतु नाटककार बाध्य छथि । जँ कृष्णकांतक आक्रोश ज्वालामुखी बनि नहि फुटैत तँ की ई समस्या असमाधेय नहि रहि जाइत ? कृष्णकान्तक व्यग्रता निम्न पंक्तिमे द्रष्टव्य थिक–

"कृष्णकांत–छोडू ई गपसप । एही सभक चिन्तामे हमर जीवन नष्ट भेल । एम. ए. मे थर्ड क्लास भेटल । आइ. ए. एस. मे सभ चान्स लूज कएलहुँ । जीवनक की लक्ष्यक छल आ कतएसँ आबि खसि पड़लहुँ ।"[1]

वस्तुक गंभीरता खंडित करबाक हेतु घूटर ओ टुनटुनमा नामक पात्रक अवतारणा भेल अछि जे सभ अपन चुटिल संवाद सँ दर्शकक मनोरंजन करैत अछि । द्रष्टव्य थिक निम्न कथोपथन–

"टुनटुनाम–ओ । आब बुझलहुँ । हमरा तँ भेल जे बिलाड़िए सँ.....।

घूटर– धूर बूड़ि । बिलाडिसँ बिआह कतौ सुनलही ए ?

टुनटुनमा–हँ कका । जकर बहु नहि जीबै छै तकरा पहिने बिलाड़िएसँ बिआह करा दैंछै । कका, अहाँ किए चरिटङ्गी सँ बिआह करब ? एहि साल जेना हेतै तेना दुटङ्गिए कनिआ ताकि देब ।"[2]

---

1. 'बसात', पृष्ठ.–2 । 2. ऐजन, पृष्ठ 9

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाक कन्याक अयोग्यता, अकर्मण्यता ओ परावलम्बी व्यक्तित्वसँ कृष्णकांतकेँ घृणा छनि । हुनक कथन मैथिल समाजक आँखि फोलबामे समर्थ अछि । जगदीश लम्पट प्रवृत्तिक व्यक्ति छथि तथा अपन स्वार्थ-साधनाक हेतु ओकील साहेबकेँ पुत्रक संग वैमनस्य करबैत छथि । 'बसात' मे रूढ़िवादिता पर व्यंग्य तीक्ष्ण अछि । घटनाक्रम कतोक स्थल पर अतिनाटकीय लगैत अछि । सहनायिका लिलीक व्यवहार अशोभनीय लगैत अछि मुदा पुष्पाक उदारता प्रदर्शित करबाक हेतु ओ अवसर उपयुक्त अछि । *बसात* नाटक जाहि समयमे लिखल गेल छल ओहि समय भारतीय समाजमे नारी जीवनक विभिन्न प्रश्नक समाधानक प्रयत्न भए रहल छल, मुदा अधिकारवंचित., अपेक्षिता नारी अपन प्राप्य नहि प्राप्त कए सकलि छलीह । पाश्चात्य विचारकक दृष्टिमे नारीक मोक्ष एकमात्र उपाय छल मुदा रूढ़िवादी समाजक नजरिमे ओ हेय छलि ।

गोविन्द झाक *राजा शिवसिंह* नाटकक इतिवृत्त ऐतिहासिक अछि । भारत ओ मिथिलाक महान् विभूतिक महिमामय आदर्श चरित्रकेँ नाटकक माध्यमसँ प्रस्तुत करब मैथिली नाटककारक प्रिय विषय रहल अछि । *राजा शिवसिंह* ओही क्रमक नाटक थिक। एहिमे स्त्रीपात्रक अभाव अछि । पारिवारिक वैमनस्यक कारणेँ शिवसिंह राय अर्जुनक हत्या करैत छथि । एकर प्रतिशोध लेबाक हेतु अर्जुन रायक पत्नी अपन पुत्र चतुरसिंहकेँ बन्दी बना रखैत छथि तथा हुनका शिवसिंहक शिरश्छेदन कए अनबाक हेतु प्रशिक्षित करैत छथि । चतुरसिंह इब्राहिम शाहक संग गुप्त मंत्रणा करैत छथि तथा छद्म रूप धारण कए शिवसिंहक दरबारमे प्रवेश कए गुप्त विषयक सूचना इब्राहिमशाहकेँ दैत छथि । तुलादानक अवसर पर इब्राहिमशाह मिथिला पर आक्रमण करैत छथि तथा शिवसिंहक बुद्धिकौशलसँ समस्याक समाधान होइत अछि । एहि नाटकमे शिवसिंहक संग विद्यापतिक चरित्र सेहो उद्घाटित भेल अछि । शिवसिंह जँ कतहु निर्णय लेबामे शीघ्रता करैत छथि तँ विद्यापति हुनका सावधान करैत छथि ।

"विद्यापति–हाँ, हाँ । सहसा एहन निर्णय नहि कएल जाए श्रीमान् । समय बड़ घातक बीति रहल अछि । ओकरा श्रीमानक समक्ष अनबामे हमरा बहुत प्रकारक शंका भए रहल अछि ।"[3]

राजा शिवसिंह वीर छथि, साहसी छथि । मातृभूमिक वेदी पर प्राण त्याग करबाक लेल तत्पर छथि मुदा हुनक व्यवहार अधीरता प्रदर्शित करैत अछि । विद्यापतिक गुणक ओ उचित मूल्यांकन नहि कए पओलन्हि । शिवसिंहक छत्रच्छायामे कवि, गायक नर्त्तक आदि गुणी व्यक्तिक उचित आदर होइत अछि मुदा हुनका मे मनुष्यकेँ चिन्हबाक क्षमता नहि छनि । ओ ककरहु पर शीघ्रे विश्वास कए लैत छथि । एहि कारणेँ ओ कतोक बेर विपत्तिमेँ फँसैत छथि । कथा-संयोजन हो वा पात्र-योजना *राजा शिवसिंह* ऐतिहासिक नाटकक अनमोल कड़ी थिक ।

निम्नवर्गीय परिवारक समस्या जीवन्त भए उठल अछि हुनक *अंतिम प्रमाण* नाटकमे । बेचन बहिनिक विवाह करएबाक हेतु गामक जमीन बेचि दैत अछि । ओकर वृद्ध लकवाग्रस्त पिता फूदन पुत्रक संग शहरमे रहैत अछि । एकटा स्कूलक चपरासी बेचन गलीक छोटछीन मकानमे रहैत अछि मुदा ओकर बापक प्राण अटकल छलैक गाम पर । ओकर इच्छा छलैक जे ओ अपन माटि पर मरए आ अपन मृत पत्नीक सारा लग डाहल जाए । ओ मंगल ड्राइवरक संग जिद् धए बेचनक परोक्षमे एक दिन लेल गाम आबि जाइत अछि । मुदा गामक कुत्सित राजनीति, मुखियाक प्रपंचक कारण ओकरा बेहोशीएक अवस्थामे मृत घोषित कए देल जाइत छैक । एहि विषयसँ अवगत भेला पर ओ गामकेँ अंतिम प्रणाम करैत शहर आबि जाइत अछि । एहि नाटकमे बेचनक आदर्श चरित्र प्रशंसनीय अछि । बहिनिक विवाह लेल हताश भए जमीन बेचि ओ दहेज-दानवक पेट भरैत अछि । वृद्ध अपंग पिताक लेल अत्यन्त स्नेह रखैत अछि । पिताक भावनाकेँ ठेस नहि पहुँचए तेँ हेतु ओ अंत धरि पिताक समक्ष ई बात नहि खोलैत अछि । द्रष्टव्य थिक कथोपकथनक निम्न अंश–

"बेचन–राधाक विवाह लेल टाका जरूरी भए गेलै तेँ बेचए पड़ल । तोरा कहितिअहु तँ तोँ ठामहि प्राण त्यागय लगितह । तोहर जी तँ एही गाममे गाड़ल छलहु ।" [4]

ओकर पत्नी कमली सेहो पतिक कर्तव्य निर्वाह मे सहयोग दैत अछि ।

गोविन्द झाक एहि नाटकक पात्र निम्न मध्यवर्गक अछि तथा ओकर चरित्र-सृष्टिमे नाटककार पूर्ण सफल भेल अछि ।

रुक्मिणीहरण नाटक गोविन्द झाक नृत्य नाट्य प्रयोग थिक। नाटकक प्राक्कथनमे नाटकक उद्देश्य स्पष्ट अछि–

"हमरहु दू गोट मनोरथ छल, पहिल किरतनिआ नाटकक लुप्त परम्पराकेँ पुनरुज्जीवित करी आ दोसर मिथिलाक इतिहाससँ लीलक खेती बाला मूनल अध्यायकेँ उघारि एकटा नाटक लिखी । ओही जकाँ हमरो दुनू मनोरथ मिझराए गेल–सएह थिक ई जौआँ नाटक रुक्मिणीहरण : एक नव एक पुरान ।"

3. राजा शिवसिंह, पृष्ठ 10.

4. अन्तिम प्रणाम, पृष्ठ 39.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पहिल नाटक *रुक्मिणीहरण* संक्षेप ओ भाषान्तरणक संग प्रस्तुत भेल अछि। दोसर नाटक पूर्णतः मौलिक अछि जाहिमे देखाओल गेल अछि जे उन्नैसम शताब्दीक उतरार्द्धमे विदेशीसभ भीतर मिथिलामे पैसि कोना खेतिहरसभक शोषण कएलक आ किसानसभ संघबद्ध भए विद्रोहक आगि फुकलक। स्वत्वहीन जनता क्रीतदास रहल अंग्रेजक मुदा चेतना जागृत भेला पर ओ सभ भागि कए चंपारनमे शरण लेलक। मिथिलाक जमीन्दारक शह पाबि ओ सभ मिथिलाक प्राकृतिक सम्पदा ओ सुन्दरी पबैत छल। ई आक्रोश व्यक्तिसँ समाजमे पसरल।

मजदूरसभक आर्थिक शोषण पराकाष्ठा पर होइत छल। ओकर विपन्नावस्था निम्न संवादमे द्रष्टव्य थिक–"*रुक : की करितिऐक ? ओकरा आङन मे दू साँझ सँ चूल्हि नहि पजरल छैक। ओकर पेट-पाँजर धसल छलैक। मङलक त दया भए गेल, दए देलिऐ।*"[5]

गोविन्द झाक नाटकक वस्तु ओ पात्र हुनक स्वतंत्र चिन्तनक तथा स्वतंत्र दृष्टिकोणक सूचक थिक। हुनक चारू नाटकक स्वर ओ रूप भिन्न अछि। पात्रसभ जँ किछु काल्पनिक अछि तँ किछु ऐतिहासिक आ पौराणिक सेहो। निम्नवर्गीय पात्रक समावेश सेहो अछि तँ आभिजात्य-वर्गक सेहो।

5. रुक्मिणीहरण, पृष्ठ 19.

पं. गोविन्द झाक नाटकक मंचीय आकलन

□ *वनदेवीपुत्र श्री भवनाथ*

पं. गोविन्द झा एकटा कलाकारसँ नाटककार बनल छथि। हिनक पदार्पणसँ मैथिली साहित्य नव-नव रसपूर्ण आलेखसँ समृद्ध भेल अछि। साहित्यक विभिन्न विधामे लिखैत, अनुवाद करैत आ पत्र-पत्रिकाक संपादन करैत चारिटा पूर्ण नाटक *बसात, राजा शिवसिंह, अंतिम प्रमाण ओ रुक्मिणीहरण* लिखि समाजक सोझाँ राखल। एकर अतिरिक्त किछु एकांकी अनेक संग्रहमे प्रकाशित छनि।

बसात हिनक पहिल नाट्य-रचना थिक। कोनो नाटक पर विचार करबाक काल, जतेक जरूरी ओकर कथावस्तु, पात्र आर भाखा छैक, ओतबे जरूरी छैक रचनाक नियम, ओकर प्रदर्शन-क्षमता, ओकर सम्पूर्ण पद्धतिकेँ प्रभावित करएवला तथ्य, रंगमंचक रूढ़ि, प्रदर्शनक साधन ओ शैली पर विचार करब, आ तखने ओकर निजी सत्ता ओ जड़ताक अनुभव भए सकतैक।

बसात मे कथावस्तु एकटा परम्परागत वैवाहिक सन्दर्भसँ संबद्ध अछि। नाटक नायक कृष्णकान्तसँ प्रारम्भ होइछ जे आधुनिक सभ्यताक प्रतीक छथि, आ अंतमे रूढ़िगत परम्परा पर आश्रय लैत अछि। जखन प्रेम करैछ लिलीसँ त' नाटककार अंतोमे ओकरेसँ विवाह करबाकेँ आदर्श स्थापित कएलनि अछि। ओतहि एकटा सामाजिक विचारधाराकेँ ठेस लगैत छैक–कृष्णकान्तसँ विवाह नहि भेला पर, पुष्पा घर छोड़ि भागि जाइत अछि वा ओकरा भगबाक लेल बाध्य होमए पड़ैत छैक। ओ एकटा'महिला सेवाश्रम' खोलि जीवन बितबैत अछि। एतहि स्त्रीकेँ आत्मनिर्भरता दिश अग्रसर होएबाक बात सेहो उठैछ। अंतमे हारल-थाकल कृष्णकान्तसँ विवाहक बात होइत छैक, तँ बाधक भए लिली आबि स्वयं कृष्णकान्तसँ विवाह कए लैछ आ नायिका पुष्पा अपन धुरबन्हू पतिसँ विवाह नहि कए पबैछ आ यथावत् रहि जाइए। एहि ठाम कृष्णकान्तक नायकक चरित्र दुर्बल बुझाइत छैक। ओतहि पिता जोतखी सेहो बेटाक व्यवहारसँ ऊबि साधु बनि, पुष्पाकेँ महिला सेवाश्रम खोलि आदर्श स्थापित करैत छथि। अनेक पात्र मिला-जुला कँ एकटा लीक पर अबैए।

नाटककार कथावस्तुमे गीतक पुट दए सूक्ष्म सौन्दर्यकेँ उत्पन्न करबाक सफल कोशिश कएल अछि। संगहि छोट-छोट दृश्य रहबाक कारणेँ छिड़िआएल सन बात सामने अबैत छैक। तकर कारण छैक बहुत अधिक सेट्सक समावेश। जेना होस्टल, दलान, घर, बाट, ओकीलक घर, बड़कागाछी, रेलक पटरी, शिव मन्दिर ओ विवाहक स्थल। एतेक रास सेट्स युभेबुले मंच पर संभव भए सकैत छैक। ओना हमरालोकनिक एम्फी थियेटरमे, एतेक सेट्स लेल यथार्थवादी शैलीमे जतए मंचसज्जा प्रतीकक रूपमे रहैछ, ओतय सामान्य ढंगसँ एकर नीक प्रस्तुति संभव छैक।

एहि नाटकमे किछु दृश्य ओ पात्र कम-वेश कएकेँ सरस बनाओल जा सकैत छैक। संभव थिक तखन आओर अधिक प्रभावी भए जाइक। विशेषतः जखन पुष्पा आ लिलीक भेँट होइ छैक, ओतय दृश्य बहुत मार्मिक बनितैक जकरा अंतिम दृश्य सेहो कहल जा सकैछ। किएक तँ एहि ठाम एकटा समाजसेवी स्त्री अपन घूमि आएल जीवनकेँ पुनः उत्सर्ग कए रहल अछि। मुदा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एहि कोटिक घटनाकेँ यथार्थ नहि मानल जा सकैछ। एहि हेतु जे एके गाममे जोतखी जीकेँ दाढ़ी आ मोछ बढ़ि गेलासँ लोक हुनका नहि चिन्हि पओतनि असंभव लगैत छैक। यदि एकरा शहरक परिवेश मानल जाए तँ, ओतय कृष्णकान्तकेँ विक्षिप्तावस्थामे घूटर आ टुनटुनमा महिला सेवाश्रम कोना लए जाइए। संगहि घूटर आ टुनटनमा कृष्णकान्तकेँ नहि चिन्हि पबैछ, जे एके ठामक निवासी थिक। ई कने अखड़ैतै छैक। एहि ठाम त्याग आ बसातमे अंतर्द्वन्द्व छैक।

प्रस्तुतिक दृष्टिएँ, रूप-सज्जा ओ परिधान परिवर्तनीय रहबाक कारणेँ जटिलता उत्पन्न करैत छैक, जाहिसँ नाटकक सरसता कुंठित होइत छैक।

ई नाटक एकटा शिक्षित युव ं आ मूर्ख ललनाक स्वभावक प्रसंग सोचबाक लेल विवश करैत छैक। ओतहि जगदीशक विचार अर्थसँ प्रेरित छैक। जगदीश कहैछ– ''कोनो गुदगरि मसोमातक बेटीसँ बियाह कए लैह। बापो ने अप्रसन्न हेथुन आ पढ़बाक खर्च सेहो सासुरसँ दुहैत रहबह।'' एहिठाम कृष्णकान्त एकरा युवा पीढ़ी पर व्यंग्य करैत बसातक संज्ञा दैत अछि। ओतहि जोतखी कहैत छथि– *''बटुक कहै छथि विवाह नहि करब।''* घटक ठेंगा सेहो एकरा बसातेक नामसँ संबोधन करैत छथि। पुनः जोतखी टीपैत छथि– *''आइ तँ बसाते उनटि गेलैए। पहिलुका समय रहितए त हमरालोकनि हुनक छूबल जलसँ लघुशंको नहि करितहुँ।''* आ ओतहि लिली बसातकेँ गीतमे पवनक रूपमे प्रयोग कएलै छथि– *''सुन मोर घरबा सन-सन बहल बसात रे....।''*

तात्पर्य ई जे सभ पात्र बसातकेँ अपना-अपना ढंगसँ उपयोग कएने अछि आ सभक बात एकेटा बिन्दु पर केन्द्रित अछि तेँ बसात सार्थक अछि। चारि दशक पूर्व लिखल ई नाटक एखनो समसामयिक अछि, ई गोविन्द बाबूक दूरदर्शिता थिक। संगहि इहो स्पष्ट होइछ जे चालीस बर्ख पूव मैथिली नाटक कतेक विकसित छल।

रुक्मिणीहरण एकटा ऐतिहासिक ओ सामान्य जनमानससँ संबद्ध 'किरतनियाँ शैलीक नाटक थिक। एकर प्रकाशित पुस्तकमे आ वर्तमानमे श्री कुणालक निर्देशनमे जे मंचित भए रहल अछि ताहिमे किछु अंतर आबि गेल छैक। ओतय तीनटा लेखक ठाढ़ भए गेल छथि –किरतनियाँ शैलीक पं. रमापति उपाध्याय, मिथिलाक लीलक इतिहास पर पं. गोविन्द झा आ सूत्रधार ओ अन्य किछु दृश्य जोड़ि श्री कुणाल सेहो एक हिस्साक मालिक भए गेल छथि। मुदा से प्रकाशित नहि अछि। एहि नाटकमे प्रेम पर बेशी बल देल गेलैक। एहि नाटकमे राष्ट्रीय ओ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमरो अभिनय करबाक अवसर भेटल तेँ एकर नवनिर्माण बहुत लगसँ देखने छी। अस्तु।

प्रकाशित पोथीमे एकदिस जतय राजकुमार ''रुक्म'' शिशुपालसँ रुक्मिणीक विवाह करबए चाहैत छथि, ओतहि सिपाहीक सहयोगसँ फ्रिंक साहेब रुक्मिनियाँक इज्जति लूटय चाहैत अछि। एकमे कृष्ण रुक्मिणीक हरण करैत छथि तँ दोसर मे रुक्मिनियाँ किसुनमाक वरण करैछ। मुदा प्रेम दुनूकेँ समानान्तर छैक। एतय खलनायक फ्रिंक ओ शिशुपाल अछि। फ्रिंककेँ मंच पर आनल गेल अछि आ शिशुपालकेँ नहि। शिशुपालक अत्याचार जतय प्राचीन इतिहासकेँ पुष्ट करैछ ओतहि आधुनिक इतिहास अंगरेजकेँ अत्याचारी सिद्ध करैछ। नाटककार दृष्टांत वा समानान्तर कथ्य द्वारा एकटा शिल्पकेँ स्थापित करैत छथि। संगहि लुप्त किरतनियाँ शैलीकेँ पुनः जीवन देबाक लेल अपन संस्कृतिक प्रति अत्यधिक स्नेह उजागर करैछ। एहन कम प्रयास मैथिली रंगमंचमे भेल अछि।

'रुक्मिणीहरण'क प्रसंग तीन खण्डमे विभक्त भए जाइछ, पहिल ऐतिहासिक/धार्मिक, दोसर सामाजिक आ तेसर अंगरेजक अमानवीय प्रसंग। एक ठाम राजाक कूटनीतिसँ अपन पुत्री रुक्मिणीक हरण होइत अछि। दोसर ठाम सुच्चा प्रेमक प्रसंग अबैछ आ तेसर ठाम एकटा अपहर्त्ता फ्रिंककेँ बान्हिकेँ पीटल जाइछ। प्रेम आ हरण दू ठाम अबैछ आ एकटा हरदम फराक रहैछ। सूत्रधार रायबहादुर बाबू हरिनन्दन सिंहक दरबारमे नाटक करबाक विषय शुरू करैछ आ ओकर नाटक सामान्य दर्शकक आगु भए रहल छैक। एहि ठाम ओ पूर्वाभ्यास करैछ वा पूर्वमंचन करैत अछि। संगहि नाटकक प्रारम्भ एकटा सुन्दर गीतसँ आ अंत एकर भयंकर विरोध ओ तनावसँ होइत छैक।

नाटकक पद्यांश अत्यधिक मनोरंजक छैक। नाटकमे व्यंजनाशक्ति, छायावादी काव्यगीत ओ इतिहासक नव दृष्टि सामने अबैत छैक जे नाटकक उत्तम गुणकेँ स्थापित करैछ। ओतहि वर्तमान जीवनक आधुनिक बोधकेँ जोड़ि गद्यांश एकटा स्वतंत्र फरमामे समाविष्ट अछि। सिपाही विद्रोह समाजक शक्तिक सचेष्टताक द्योतक अछि। पात्रक स्थितिमे गोनर, फेकनी, राजा ओ किसुनमाक चरित्र समक्ष अबैत अछि।

प्रस्तुतिक सन्दर्भमे किरतनियाँ शैलीमे रूप-सज्जा, परिधान ओ मंच-विन्यासमे थोड़ेक समस्या उत्पन्न करैत छैक। किएक त मंच पर परिधान-परिवर्तन मंचक मर्यादाकेँ कुंठित कए दैत छैक। तेँ एहि ठाम ऐतिहासिक प्रसंगमे समसायियिकता पर प्रश्न-चिह्न लगैत छैक जकर जटिलता नठल नहि जा सकैछ। नाटक मे नाटक कलाकारक मनःस्थितिकेँ पूर्णतः मोड़ि नहि पबैत अछि, किएक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

तँ दूनू तरहक कथा समानांतर चलैत छैक। एक दृश्य ई तँ एक दृश्य ओ। तँ चारित्रिक दोष उत्पन्न होएबाक प्रबल संभावना बनैत छैक, जे सहजताकेँ ठेस मारैत अछि। किरतनियाँ शिल्पमे एकहि प्रसंगकेँ विकसित कएल पर नाटक अत्यधिक रोचक भए सकैत छैक। संगहि एहि शैलीमे कलाकारकेँ मंचसँ उतरब प्रायः वर्जित छैक। एहि तरहेँ एकर प्रस्तुतिक उत्तमता अस्वीकार नहि कएल जा सकैए किन्तु छोट-छोट त्रुटि बाधाक रूपमे सामने अबैत छैक।

राजा शिवसिंह सेहो एकटा ऐतिहासिक नाटक थिक। एहिमे राजा शिवसिंहकेँ इब्राहिम शाह द्वारा परास्त कएल गेल अछि। एहिमे सैनिक चतुर सिंह जे शिवसिंहक भातिज छथि, इब्राहिम शाहसँ मिलि शिवसिंहकेँ पराजित करैत छथि। तकर बाद राजा शिवसिंह विरोधी सैनिक भीमसिंहक परामर्शसँ अपन वस्त्र कोनो सिपाहीकेँ पहिरा दैत छथि आ स्वयं ओकर वस्त्र पहिरि रणभूमिसँ भगैत छथि। ई बात इब्राहिमशाहक दरबारमे लास देखला पर खुजैत अछि। चतुर सिंहकेँ इब्राहिमशाह जहल दैत अछि।

रणभूमिसँ भागि जएबाक कारणेँ एतय शिवसिंहक चरित्र कुंठित होइत छनि। संगहि अपन विचारसँ आनो काज नहि करबाक कारण सम्पूर्ण नाटक दुर्बल लगैत अछि। ओतहि चतुर सिंहक चरित्र नाटकीय रूपमे सामने अबैछ। चतुर सिंहक अतीतक रोचक तथ्य सामने अबैछ। यदि ओहि बातकेँ आओर विकसित कएल जाय तँ स्त्रीपात्र तँ देबहि पड़तैक जाहिसँ सोनमे सुगंधि आबि जएबाक प्रबल संभावना भए जेतैक। चतुर सिंहक चरित्र सुच्चा मैथिलक टङघीचा प्रवृत्तिसँ मेल खाइत अछि। आ तँ ई एकटा स्पष्ट व्यंग्यक रूपमे सामने अबैत अछि। अन्य चरित्र मे महाकवि विद्यापतिक नीति, लखिमाक शोक, इब्राहिमशाहक राजनीति ओ भीमसिंहक मातृभूमि-प्रेम झलकैत अछि।

नाटकक भाषामे महाकवि सन व्यंजनाकार विद्वान् ओ तुर्क सम्राटक रहबाक उपरांतो संवादमे कोनो विशेष व्यंजना नहि अछि। ओना ठाम-ठाम गीतक चर्चासँ किछु नीक संभावना बनैत छैक।

मंच-विन्यास पाँचटा सामने अबैत छैक–राजाक दरबार, राजभवन, इब्राहिम शाहक सैन्य-शिविर, शिवसिंहक सैन्य-शिविर ओ इब्राहिमशाहक दरबार। एतेक रास सेट्ससँ प्रतीकक रूप मे अयथार्थवादी शैलीमे नाटकक नीक मंचन भए सकैत छैक। एहिसँ नाटककारक दूरदर्शिता सोझाँ अबैए। स्त्री पात्रक अभाव तँ खटकैत अवश्य छैक मुदा ताहिसँ कोनो कमजोरी सामने नहि अबैत छैक।

अंतिम प्रणामक कथावस्तु फूदन नामक वृद्धकेँ अपन जन्मभूमिक प्रति मोह गाम घिचने लए जाइए आ बेहोशावस्था मे गौवाँ फूदनकेँ मुइल घोषित कए जरेबाक लेल झगड़ा करैछ। फूदन केँ अपने खेतमे अपने गाछसँ जरेबाक अंतिम इच्छा संगे रहि जाइत छैक आ अंतमे बेचारा घड़ारी बेचि गामकेँ अंतिम प्रणाम कए बेटाक संग शहर चलि अबैत अछि।

एहिमे चौधरीजीक चरित्र गामक प्रति सबल लगैछ। मुखिया ओ सगर समाज दौड-बरहामे रहि जाइए। नाटक दू खण्डमे विभक्त भए जेबाक कारणेँ मात्र फूदनक चरित्र समक्ष अबैत अछि।

नाटकमे गामक जीवन ओ शहरी जीवनकेँ पृथक्-पृथक् रखबाक सेहो एकटा कोशिश अछि। चिड़ै जकाँ पिजड़ामे बन्न रहबाक कारणे दमघोटू जीवन बुझाइत छैक। नाटकक प्रत्येक संवाद समसामयिक परिवेशकेँ स्पष्ट करैछ। नाटकक शैली किछु पात्रक संवादसँ अवशेषक रूपमे बुझाइत छैक। जेना फूदन कहैए– *"भरि दिन एकसरे टाँहि-टाँहि करैत रहू.... ।" "अरे बहुरियाक मुह पर मुस्की त देखू ! चिड़िआ केँ जान जाए लड़िकाक खेलौना-तकरे परि। हम ससुरछूटि गेलिए आ ठकदरुआ भए गेलिऐ।"* एतय ई संवाद यदि शिल्पक फॉसिल नहि तँ, ककरा कहल गेलैए ? संगहि एतय एहन बूढ़क चरित्र समक्ष अबैछ जे मुहक छिनार ओ नेनाक तंगसँ उबि खौझाह भए जाइछ। बेचन कहैए– *"ई बूढ़क लच्छन थिकैक" । "कमली–रंग ढंग तँ देखिओ एखनहि सँ।"* पुनः *"बेचन– ई बात-बात मे हमरा सँ सत्त करा लेत तखने कहत। आब हमहूँ कोनो बात बिना सत्त करौने नहि कहबै।"* ई संवाद यदि आवेशमे लेल जाए त ओतय नाटक जर्क करैत छैक। आ यदि प्रेक्षकक प्रति लेल जाय तँ एकटा शिल्पक संभावना व्यक्त करैत छैक। वा नाटकमे पूर्वमे अर्थात् हस्तलिपिमे एहन शिल्प रहबाक संभावना व्यक्त करैत छैक। संवादमे छोटसँ छोट ओ पैघ-सँ-पैघ अस्तित्वकेँ रखैए। अंतिम गीत हृदयकेँ छूबैत छैक। नाटकक माध्यमसँ अपन जन्मभूमिक प्रति मोह, शहरी जीवनसँ पलायन, प्रेम-परिणय ओ अपन खानदानी सम्पत्तिक प्रति उदासीनता सेहो देखाओल गेल अछि।

प्रस्तुतिक सुगमता छैक। मात्र दू टा मंच-सज्जा छैक। परिवेश सेहो सामान्य छैक। परिधान ओ रूप-सज्जा सेहो स्थायी छैक। समसामयिक सामाजिक जीवनमे पैघ लोक छोट लोककेँ खाइत अछि तकर एकटा सुगम सरल दृष्टांत ई नाटक थिक।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं. श्री गोविन्द झाक कथा-दृष्टि

□ श्री रमानन्द रेणु

पं. गोविन्द झाक कथा पर विचार करबामे एक बात बड़ फरिच्छ भऽकऽ सोझामे अबैत अछि जे ओ अपन कथाकारक दीर्घावधि जीवनमे जतबा किछु लिखलनि अछि, से अनुपातक दृष्टिसँ बड़ थोड़ अछि। हुनक पहिल कथा 'खजनी' 1947 मे 'मिथिला मिहिर' मे छपल छलनि। तँ करीब पचास बर्खक अन्तरालमे मात्र एकतीस कथाकेँ पुस्तकाकार संकलित कयल गेल अछि, जाहिमे उक्त कथा 'खजनी' नहि अछि। जाहि उत्साह आ उभंग सँ ओ एम्हर अधिकाधिक कथा लिखबा दिस प्रेरित भेलाह अछि, से पूर्वमे नहि छलनि। एकरा ओ अपन आलस स्वीकार करैत छथि। ओ स्पष्ट रूपेँ घोषणा करैत छथि जे लिखबाक ऊहि हुनका तखने होइत छनि, जखन क्यो लिखबाक हेतु कंठ पर सवार भऽ जाइत छनि। किन्तु एहन फरमाइस आकि कोनो बाह्य दबाब पर कयल गेल लेखन तेसर कोटिक रचना मानल जाइत अछि, स्वतंत्र रूपेँ घटनासँ संवेदित भऽ रचना करब निश्चित रूपसँ प्रथम कोटिक रचना होयत। एहीमे रचनाकारक पूर्ण मनोयोग आ कौशल देखार होइत अछि।

एतावता, ई कहि सकैत छी जे ओ जैह किछु लिखलनि अछि, ओ जीवनक बहुआयामी प्रवृत्तिकेँ उजागर करैत अछि। पात्र आ संवादक अपेक्षा जीवनक कोनो-ने-कोनो पीड़ा आकि चुभन केँ स्वर देलनि अछि जे हुनक कथाकेँ सार्थक बोध प्रदान कयलक अछि। समाजमे व्याप्त कुंठा, कुत्सा, संकट, संघर्ष आदिक त्रासद स्थिति जे मध्यवर्गीय परिवारक व्यक्तिक भोगैत चरित्रक कथा-दृष्टिकेँ महत्त्वपूर्ण बनौलक अछि। कथाकारक दृष्टि कथाक पात्रसँ अधिक ओकर क्रियात्मक व्यवहार पर रहैत छनि, जतऽ ओ समाजक समक्ष एकटा अपराध-बोध लऽ कऽ उपस्थित होइत अछि आ पाठकसँ, समाजसँ एवं व्यवस्थासँ अपन समस्याक निदानक हेतु अभ्यर्थी बनल ठाढ़ रहैत अछि।

गोविन्द बाबू वेश-भूषासँ निठट्ठ देहाती, कौलिक संस्कार सँ पण्डित, आ संस्कृतनिष्ठ पारिवारिक परिवेशमे जीवैत रहबाक अछैतो, विचारसँ आधुनिक छथि। वैचारिक यैह आधुनिकता हुनक कथा-प्रवृत्तिकेँ निमज्जित कऽ समकालीन रचनाकारक पाँतीमे ठाढ़ करैत छनि। ओ समकालीन तथा वैश्विक कथाक गहन अवगाहन कए अपन कथाक भाषा अर्जित कयलनि अछि। इएह कथाक भाषा हुनक कथाक शिल्प, कथ्य, शैली, घटना आ परिवेशकेँ सरल-सोझ स्वच्छंद प्रवाहित शब्द तथा खिसक्करी वाक्य-संयोजनेँ घटनाक सामंजस्य तँ उपस्थापित करिते छनि, सङे हुनक स्वयंक उपस्थितिसँ कथास्थितिकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। ओ लिखैत नहि, कहैत छथि आ से ने तँ कत्तहु मोहग्रस्त होइत छथि आ ने घटनाक जालमे ओझराइते छथि। ओ पात्रक माध्यमसँ अपन मोनक गुत्थीकेँ खोलैत छथि। पात्र नाटकक अभिनेताजकेँ कथा-मंच पर उपस्थित होइत अछि आ अपन अभिनय प्रस्तुत कऽ नेपथ्यमे ससरि जाइत अछि।

आइ समाजमे व्याप्त कुरीति आ कुव्यस्थाक कारणेँ आर्थिक पक्षसँ दुर्बल व्यक्तिक हेतु बिनु व्यवस्था देने कन्याक लेल कोनो जुगुतगर वर करब संभव नहि भऽ रहल अछि। फलतः समाज मे बेमेल विवाह द्वारा कन्याकेँ कोनो बूढ़ वर सङे साटि देबाक परिणाम ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ गर्त्तमे मिला दैत अछि आ ओ जिनगी भरिक हेतु अभिशप्त जीवन व्यतीत करबाक लेल विवश भऽ जाइत अछि। एहना स्थितिमे कन्यामे अपन अभिभावक पिता आकि भायक प्रति घृणा होयब स्वाभाविक छैक। एहि संतापक कारणेँ आत्माक प्रबल इच्छा रहितो नैहरसँ संबंध तोड़ि लैत अछि आ एहि कुकर्मक कारणेँ अभिभावक सेहो भरि जिनगी मर्माहत होइत रहैत छथि। एही भावक विलक्षण कथा अछि *'सामाक पौती'*। एहि कथामे गोविन्द बाबू बड़ कौशलसँ एहि नग्न चित्रकेँ प्रस्तुत कयलनि अछि। बहिनि जगमाया आ भाय नूनूभाइ, दुनू व्यक्ति अपन स्नेहकेँ एक दोसराक हेतु समर्पित करबामे अत्यन्त व्यग्र रहैत अछि, किन्तु परिस्थितिक विवशता, दारिद्र्यक बाधक तत्त्व आ सामाजिक कुप्रवृत्ति तेना ने दुनू भाय-बहिनिकेँ गछाड़ि लैत छैक जे दुनू गोटेक मध्य बाटसँ 'सामा' क सुअवसर पर अपन उठल डेगकेँ रोकि लैत अछि। कथाकार अपन एहि कथाक माध्यमसँ बहिनिकेँ भायक प्रति आ भायकेँ बहिनक प्रति ममत्व ततेक ने प्रगाढ़ रूपेँ वर्णित कयलनि अछि जे सहजेँ पाठकक मोन आ मस्तिष्ककेँ अत्यन्त प्रभावित करैत अछि आ स्नेहक एकटा अमिट छाप छोड़ि जाइत अछि। यैह अमिट छाप लेख[illegible] सफलता छनि। कथाक अन्तिम अंश ततेक अधिक ने मार्मिक अछि जे पाठककेँ किछु सोचबाक लेल विवश करैत अछि। एकटा एहन बिन्दु पर पाठक पहुँचि जाइत अछि जतऽ एहि कथाक अन्तर्निहित तथ्य जीवन पर्यंत क्यो बिसरि नहि सकैत अछि आ रहि-रहि कऽ ओकर अनुभूति मोनकेँ सदति उद्वेलित करैत रहय, यैह कथाक चरम उत्कर्षक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि।

कोनो कथामे अनुभूतिक यथार्थक प्रत्यक्षीकरण मोनकेँ झंकृत करबामे समर्थ होइत अछि। कथाक वास्तविकता घटनाक बल पर उपस्थित कयल जाइत छैक। ई उपस्थापन ततेक ने सहज, स्वाभाविक आ आन्तरिक संवेदनाक तह पर आधारित भऽ कऽ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आगाँ बढ़य जे घटना मात्र घटना नहि लेखक आ पाठकक अंतरंगता प्रस्फुटित करबामे समर्थ भऽ सकैत अछि। अन्तिम एकन्नी कथामे वैह स्थिति स्पष्ट भेल अछि। वर्त्तमान परिवेश मे मनुक्ख कतेक निरीह भऽ गेल अछि, डेग-डेग पर अर्थक महाजालमे कोना लोक फँसैत रहैत अछि आ कोना अपन सँयोगल एकमात्र बाँचल कैंचाक बल पर नोकरीपेशा व्यक्ति समूचा मास की खेपि लैत अछि, जीवनक गम्भीर उत्स, अभावग्रस्तताक मध्य जीबैत विवशताक स्थितिकेँ खोलि कऽ राखि दैत अछि। यैह अभावग्रस्तता महाजालमे फसल व्यक्तिकेँ अपन मोन पर, अपन सहकर्मीक व्यवहार आ क्रिया-कलाप पर आ परिवार केँ अनावश्यक अर्थव्ययता पर, बढ़ैत लोलुप आकांक्षा पर, सामाजिक कुप्रवृत्ति पर, भीख माँगब आ देबकेँ संस्कारसँ जोड़ि अन्धविश्वासक क्षुद्रता पर, ढोङ आ ठकपनी पर विजय पयबाक एकमात्र साध्य आर्थिक विपन्नता नहि, बाँचल कैंचा 'अन्तिम एकन्नी' निरंकुश प्रवृत्ति पर रोक लगयबामे सफल भेल अछि। कथाकार बड़ आत्मीयताक सङ एहि कथाक प्रस्तुति द्वारा सजगताक परिचय देलनि अछि। आजुक विषम स्थितिमे 'मालिक' सन अल्पवेतनभोगी कर्मचारीकेँ अपन पारिवारिक अत्यन्त आवश्यक उपादानक व्यवस्था करब तँ संभवे नहि भऽ रहल छनि, ऊपरसँ सामाजिकताक निर्वहन पराभवमे *ओझरा* दैत छनि। किन्तु, एहि संघर्षशील जीवनक लाज सभ ठाम *'अन्तिम एकन्नी'* सन कैंचा झाँपबामे सक्षम होइत छनि। रचनाकारक दृष्टिकोण अल्पवेतनभोगीक आकाश छूबैत बाजारक वस्तुजातक क्रयशक्तिक क्षीणता दिस सफलतापूर्वक संकेत करब छनि।

कथाकारक समक्ष जखन जीवनानुभूतिक प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छनि, तँ ओ कथाक मूल तत्त्व जीवन-दर्शनक रासि पकड़ि कऽ पार उतरैत छथि। अपना कथामे ओ जीवन-दृष्टिक एक-एक पर्त्तकेँ, समाजमे व्याप्त घृणा, क्षोभ, अहंकार, सम्प्रभुता, युयुत्सा, दंभ आ स्वार्थकेँ, उघार करब, जीवनक सत्य केँ देखार करब, सम्पूर्ण जीवनक नैरन्तर्यकेँ कदाचारमुक्त राखब वरेण्यक रूपमे उपस्थापित करैत छथि। हुनक अनुभव-वृत्ति ततेक ने विस्तार पौअलक अछि जे दृष्टिकोण ओतवे फरिच्छ भऽ कऽ प्रकट भेल अछि। ओ सम्पूर्ण घटनाचक्रकेँ स्वयं देखैत छथि, ओकर स्वानुभूति करैत छथि आ तखने अपन कुशल लेखनी सँ प्रस्तुत करैत छथि। ओ स्पष्ट रूपेँ कहैत छथि, *''अड़ोस-पड़ोसक यथार्थ जीवनक दर्शन करैत जे कोनो भावोत्तेजक विम्ब मानसमे पड़ि गेल तकरा ओहिना व्यक्त करबाक प्रयास करैत छी।''* (सामाक पौती–कथाक कथा)।

'फूलक चोट' कथामे 'हम' केँ अपन विपन्नता, अपन ग्राम्य वेश-भूषा, अपन सरल आ सहज व्यवहार, अपन सुदृढ सोच आ अपन निर्विकार व्यक्तित्वकेँ शहरी छल-छद्म आ चापल्यसँ अर्जित जीवन द्वारा मखौलक पात्र बूझि जेहन व्यवहार कयल जाइत अछि, ओ विकृत मनोवृत्ति आ अहंमन्यताक तँ परिचय दैतहि अछि, सङे ओहि अहंकारमे जरैत सोझ लोकक मानसिक स्थिति कतेक मारूक, कतेक असह्य आ कतेक पीड़ादायक होइत छैक, से अनुभव करबाक वस्तु छिऐक। लेखक स्वयं कथाक पात्रक अन्तरतममे प्रवेश कऽ जेना जीवन-यथार्थसँ अपने साक्षात्कार कयलनि अछि। एहि मार्मिक कथाक मुख्य पात्र 'हम' कतेक निरीह आ कतेक खिन्न भऽ क्षोभसँ भरि जाइत छथि, जखन जहाज खुजैत काल प्रियपात्र भौजी सनेसक रूपमे हुनक प्रत्येक स्थितिक फोटो मात्र दऽ कऽ उपहासक पात्रे टा बूझैत छथिन। अहंकारक टीप-टहंकारमे व्यक्तिक हृदय जेना मरि गेलैक अछि, स्नेहक उत्स सूखि गेलैक अछि आ ओ मानवीय सहृदयतासँ कोसो दूर भऽ गेल अछि। आत्मीयताक सर्वनाश जे मानवजीवनकेँ आइ मटियामेट कऽ रहल अछि, वैषम्यक आगि धधका रहल अछि, ग्रामीण सोझमतिया लोक विवशताकेँ अपन सुविधाभोगी प्रवृत्तिक द्वारा क्षुद्र प्रदर्शन कऽ स्वार्थ साधन करब, नैतिक मूल्यक ह्रास नहि तँ आर की अछि? 'हम' क आन्तरिक व्यथा आ मर्म पर पड़ैत चोटकेँ व्यक्त करबामे बड़ स्वाभाविक चित्र उपस्थित कयल गेल जखन ओ समस्त फोटोकेँ फाड़ि-फाड़ि कऽ गंगाक अतल जलराशिमे फेँकैत छथि। मात्र भौजीक अहमक फोटो, हुनक बदलल व्यक्तित्वकेँ स्मृतिस्वरूप सहेजि कऽ रखबाक निमित्त राखि लैत छथि। जीवनक कटु यथार्थक चित्रण जतेक गांभीर्य लऽ कऽ एहिमे प्रस्तुत भेल अछि, ओ पाठककेँ किछु सोचबाक लेल विवश करैत छनि।

एहिना भीख माङब मनुक्खक हेतु नैतिक अपराध छैक, किन्तु कखनो एहनो विकट परिस्थिति नीको लोककेँ एहि हेतु पराभवमे दऽ दैत छैक। भीखकेँ भीख नहि बूझि पारस्परिक सहयोग बूझल जयबाक चाही, जखन वास्तवमे भीख माङबाक हेतु नहि, सहयोगक हेतु याचना कयल जाइत होअय। किन्तु, आइ एहि यथार्थताक विश्वसनीयता समाप्त भऽ चुकल छैक आ परिस्थितिजन्य वास्तविक स्थिति पर सहजे विश्वास कयल जायब संभव नहि छैक। **भीखक** कथाकार एहि तथ्यक उद्घाटन कयलनि अछि। जखन 'हम' पवनाक संङ्गे अस्पतालमे जा कऽ स्थितिक यथार्थतासँ परिचय करैत छथि, तखन हुनका ई बोध होइत छनि जे भीख माङनिहार सभ व्यवसाये नहि करैत अछि, किछुकेँ विवशता सेहो होइत छैक। आ तखन ओ अपन समस्त बेगरता, गाम जा कऽ घरहट करयबाक हेतु बिदा भेल अपन सङक सभ टाका-पैसा सँ ओकर (पवनाक) पित्तीक दाह-संस्कार कयलनि। किन्तु एहि कथामे एक बात स्मरण राखबाक अछि जे 'हम' वत्सल भऽ कऽ पवना सन कातर निरीह व्यक्तिक उपकार

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नहि कयलनि, प्रत्युत अपन हारल दावक प्रतिकार वा प्रायश्चित्त कयलनि । स्थिति पर बिनु कोनो विचार कयने, तथ्यक वास्तविकतासँ परिचित बिनु भेने एकभगाह निर्णय लऽ लेब सिद्धान्त रूपसँ अधलाह छैक । पहिने वास्तविकताक मूल विन्दु धरि पहुँचबाक चाही, तखन ने निर्णय । शीघ्रतामे कोनो निर्णयक डेग उठायब स्खलित चरित्रक बोधक होइछ ।

स्नेहक संबंध पारस्परिक आदान-प्रदान पर निर्भर करैत छैक, एहिना ककरो उपकार कयला पर उपकृ॰ व्यक्तिक सेहो कर्त्तव्य भऽजाइत छैक जे एहन कोनो अवसर पर ओहो ओकर कोनो बेगरतामे आगाँ बढ़िकऽ ठाढ़ भऽ सकय । यैह नैतिक आ सामाजिक दायित्व छैक । **एक धरिका अमोट** कथामे बुढ़िया, एक दिन एहनो उपस्थित भेल रहय जखन ओ अपन छातीक दुग्ध-कोषसँ वाचक 'हम' केँ जीवन-दान देने रहनि आ ओ 'हम' एहि उपकारेक कारणेँ बुढ़ियाकेँ सदति दुद्धा माय कहैत छलथिन, किन्तु समय अयला पर जखन 'हम' सरकारी पदाधिकारी भऽ गेलथि आ बुढ़िया अपन अभावग्रस्त जीवनक कष्ट निवारणार्थ एकमात्र बेरोजगार पुत्रक हेतु कत्तहु नोकरी रखा देबाक याचना करैत छनि, अपन स्नेहकेँ पूर्ववत् राखबाक निमित्त एहू अवस्था मे अपने हाथक बनाओल 'हम' क प्रियवस्तु एक धरिका अमोट दऽ कऽ हृदय खोलि कऽ राखि दैत छनि, तथापि 'हम' सन निष्ठुर व्यक्तिक करेज कनियो पघिलि नहि पाबैत छनि, ओ अपन दायित्व-बोधसँ ठामहि पायर घीचि लैत छथि आ ओकर समस्त स्नेहकेँ मोने-मोन नकारि निश्चिन्त भऽ जाइत छथि । बुढ़िया गामक अपन कष्टप्रद जीवनकेँ जेना-तेना लटपटाबैट मृत्युकेँ प्राप्त कऽ लैत अछि, किन्तु 'हम' अपन अमानवीयताक क्रूर अभिव्यक्तिसँ अपनाकेँ देखार करैत छथि। दुद्धा भाइ फेकनाक हेतु किछु नहि कऽ सकलथि, से पश्चात् होइत छनि । की सामर्थ्यवान व्यक्ति अपन पारिवारिक व्यामोहमे एहिना अपन सरोकारकेँ कूचैत रहओ, यैह वर्त्तमान शिक्षा-दीक्षा आ क्रियावदान सिखौलकनि अछि ? वैचारिक तथा आत्मिक करुणाक पतन समाजकेँ कतेक दूर धरि गर्त्तमे धकेलि रहल अछि, गंभीरतासँ विचार करबाक अछि ।

आइ समग्रतः मानवीय मूल्यक क्षरण भऽ गेल अछि । आधुनिकताक छद्म मायाजाल मनुक्खकेँ मनुक्ख नहि रहऽ देलक अछि, ओकर अन्तरक करुणाकेँ तेना ने निर्बीज कऽ देलक अछि जे ओ राक्षसी प्रवृत्तिमे ओझरा कऽ अपन सम्पूर्ण अस्तित्व केँ ध्वंस कऽ रहल अछि । आर्थिक सम्पन्नता मनुक्खकेँ पैशाचिक वृत्ति, क्रूर आचरण आ झूठ मानसिकताक शिकार **बना देलक** अछि । **चाट कतहु : चोट कतहु** क मलिकाइनि **जतेक** विकृति मोनमे पोसने छथि, मालिक ठीक ओतबे **उनटा सहृदय आ उदात्त** दृष्टिकोण लऽ कऽ प्रस्तुत होइत छथि । कारण ओ अपन जीवनक पछिला दुखद आ अभावग्रस्ता केँ नीक जकाँ भोगने छथि, ओहि अवस्थाक कष्टकेँ अनुभव कयने छथि आ ओकर पीड़ा, भूख आ पियाससँ परिचित छथि आ तेँ ओहन स्थितिमे ककरो देखि अपन भुक्तक्षणकेँ स्मरण कऽ द्रवित भऽ उठैत छथि । आइ जे किछु सम्पन्नता अर्जित कयलनि अछि, से ओही व्यथित आत्म बलक कारणेँ । किन्तु पत्नी जन्मेसँ सुविधाभोगी रहबाक कारणेँ चंठ प्रकृतिक व्यक्ति छथिन । हुनक क्रूर स्वभाव एखनो ओहिना परिलक्षित भऽ रहल अछि । मालिक अपन बाल्यकालमे जहिना थाकल, पियासल आ क्षुधार्त भऽ कोनो सम्पन्न व्यक्तिक आहाता मे प्रवेश कए बलात् जल पीयब आ फल तोड़ि कऽ खा लेब अपन विवश आ कातर स्वभाव बूझैत रहलथि मात्र जीवन बचयबाक हेतु आ तेँ ओहि स्थितिकेँ प्राप्त कोनो नेन्नाकेँ देखि अपन पूर्वजीवन स्मरण भऽ जाइत छनि आ सहृदय भऽ उठैत छथि। किन्तु पत्नी एखनो ओहिना चंठ छथिन । ओ बाल्यकालमे अपन अस्वाभाविक क्रूरताक अभ्यस्त छलीह , एखनो हुनकामे कनियो परिवर्त्तन नहि अयलनि अछि । अभावग्रस्तता की छिऐक ? भूख-पियाससँ आर्त मोन केहन होइत छैक ? आ बैसाख-जेठक तबधल दोपहरमे बाट चलैत जुआनो व्यक्ति व्यथित भऽ उठैत अछि, नेन्ना तँ नेन्ने अछि । तेँ मालिक अपन एहि कुटिल आ ममत्वहीन पत्नी केँ वास्तविकताक परिचय पत्रक माध्यमसँ दैत छथिन जे हुनका यथार्थक धरती पर अपन आचरणकेँ निश्छल राखबाक प्रेरणाक काज करैत छनि । एखन धरि जे पत्नी पतिकेँ पति नहि; प्रत्युत पिता, एकटा रुपैयाक गाछ इन्जिनीयरकेँ कीनि कऽ देने छलथिन, एकटा सुन्नर खेलौनाक रुपमे बुझैत रहलथिन । ओतए ने बाप इन्जिनीयरक वास्तविक जीवनकेँ देखलथिन आ ने अपन आधुनिका पुत्रीकेँ । पिता आ पुत्री, दुनूक आँखि पर कुटिल आर्थिक मोहक परदा पड़ल छलनि । किन्तु ओहि ममत्वहीन पुत्रीकेँ पतिक वास्तविक जीवनक परिचय भेटिते अप्॰ दाम्पत्यजीवनक सार्थकता हेतु अपन स्वभावमे परिवर्त्तन आन॰ अनिवार्य भऽ जाइत छनि आ स्वरूप बदलि जाइत छैक । स्थिति सामान्य मानवीय लक्षण लऽ कऽ उपस्थित होइत छनि । सम्पन्नता व्यक्तिकेँ पूर्णतः अव्यवस्थित बना दैत छैक आ अभाव उचित-अनुचित सोचबाक क्षणक सृजन करैत अछि । यैह वास्तविकता छैक ।

आजुक राजनीतिक देन छैक छल-कपट, लूट-खसोट, भ्रष्टाचार, अपराध-वृत्ति आ नैतिक मूल्यहीनता । शहरसँ लऽ कऽ सुदूर देहातोमे लोक एहिमे पूर्णतः लिप्त अछि । से खाहँ कोनो सम्पन्न प्रतिष्ठित सरगना गामक मुखिया होथि आकि अपढ़ निरीह बेकार सामान्य जन । सभ क्यो एही वृत्तिक माध्यमसँ धन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उपार्जित करबाक प्रबल इच्छा पोसने रहैत अछि। एहि हेतु कतबो ने जघन्य काज करऽ पड़नि, एको मिसिया हिचकिचाहटि नहि होयतनि। एकर ज्वलन्त दृष्टांत अछि अयाचीक डीह पर कथा। बाढ़ि आयल। कतेको लोकक घर खसल। सरकार पीड़ित समाजक हेतु साहाय्यमे पोलिथिन जे पठौलक, मुखियाजी अपन चक्रचालिसँ अधिकांशतः ओम्हरे बेचि लेलनि आ तकरा झाँप बाक निमित्त गाममे आयल शेष वस्तुकेँ अपन लठैत आ गुंडा सँ लूटि करौलनि आ ताहिमे फँसल निर्दोष मुहफट्ट अनल आ सिबकन्ता। मुख्य पात्र अयाचीक वंशज टाइगर बेलागि आ बेदाग बाँचल रहलथि। मुखियाजीक प्रियपात्र जेँ छलथि। किन्तु बूढ़ी पितामही जे कुटान-पिसान आ जनौ बेचि कऽ टाइगरक बापोकेँ आ हिनको प्रतिपाल कयलथिन, आइ सत्यवादी होयबाक प्रायश्चित्तस्वरूप पौत्रद्वारा कंठ मोकि देबाक फलाफल प्राप्त कयलनि आ तेँ 'यथार्थ कथा कहि रहल छल अयाचीक डीह पर धहधह जरैत ओ चिता जाहिमे केओ आन नहि, अयाचीमिश्र (सन सत्यावादी) स्वयं जरि रहल छलाह।'

आइ गाम बदलि गेल अछि। जे समाज सद्भावना आ सहयोग-सामंजस्य पर चलैत छल, कोनो जाति वा वर्णक व्यक्ति किएक ने होअओ, सभ क्यो एक-दोसराक सुख-दुखक भागी रहैत छल, सभ क्यो भाय, कका आ बाबा संबंधसँ बन्हायल रहैत छल; ओही समाजमे आइ लोक अपन चक्रचालिसँ स्वार्थ-साधन करबा पर उद्यत रहैत अछि। जँ क्यो मरि गेलाह आकि गाम छोड़ि कत्तहु पड़ा गेलथि, तँ किएक गाम छोड़लनि, कोन तेहन असोकर्य भेलनि, दुखिताहकेँ दबाइबारी पथ्य-पानिक सुविधा छनि आकि असुविधा वा एही व्यर्थेँ मरि गेलाह, ताहिसँ ककरो कोनो सरोकार नहि। किन्तु, श्राद्ध होअय बेस धूमधामसँ। भागल व्यक्तिक बारह बर्ख पुरला पर 'पर्णनर' बना संस्कार कयल जाय आ नीक-जकाँ श्राद्ध होअय। बेस कचरमकूटवाला भोज भेटय लोककेँ। सामर्थ्य नहि कोना छनि, घराड़ी तँ बँचल छनिए। महाजन तुरंत तैयार। ई व्यवस्था, ई व्यवहार, एहन विचार आ एहने स्वार्थांधतासँ भरल-पुरल अछि आजुक गाम आ गामक समाज। पातक मनुक्ख कथामे समाजक एही पतनशीलता दिस संकेत कयल गेल अछि। कुसंस्कारसँ जन्म लेल घातक प्रवृत्ति समाजकेँ विशृंखलित कयलक अछि आ समस्त भाइचाराक संबंध केँ तोड़ि जन-सामान्यकेँ दुर्वृत्तिक अन्हार बोनमे ठेलि देलक अछि।

'नखदर्पण' कथामे लोक-आस्थाक विकृत स्वरूपकेँ उजागर कयल गेल अछि। एहि कथाक माध्यमसँ रचनाकार मिथिलाक संस्कृति आ ग्रामीण जीवनक यथार्थ जे सामाजिक व्यवस्थाक पूजी रहल अछि, तकरा गांभीर्य प्रदान करबाक निमित्त प्राचीन परम्पराक अभ्यन्तरमे नुकायल सामन्ती प्रवृत्तिक प्रतिरक्षण दिस आङुर उठौलनि अछि। समाजमे बहुसंख्य लोक अभावग्रस्त जीवन जीबि रहल अछि। नवयुगक प्रवेश आ नव-नव वस्तुजातक प्रति लोकक विशेष अभिरुचि विपन्न व्यक्तिक चरित्रमे स्खलन होयब स्वाभाविक छैक आ तकरा उघार कऽ एहि प्रवृत्तिसँ जीवन-व्यवस्थाकेँ सुनियोजित करबाक अभिप्राय अछि। चोरि गेल वस्तुक पुनः प्राप्तिक हेतु चोरक नाम उचरबायब, बाटी वा थारी चलायब आकि बट्टाक पेन पर वा औंठाक नह पर कारिख लगा कऽ ओहिमे कोनो अबोध केन्ना द्वारा चोरक प्रतिच्छवि देखायब आदि कार्य-पद्धति प्रचलित अछि। किन्तु, एहि प्रकारक क्रियामे कुटिल स्वार्थक पूर्ति अथवा क्षुद्र मानसिकताक आभास भेटैत अछि। एहि माध्यमसँ एक प्रकारक आतंक पसारल जाइत अछि जकरा बल पर चोरि गेल वस्तु कत्तहु-ने-कत्तहु आपस भेटि जाइत छैक। एहि पद्धतिमे विकार उत्पन्न होयब स्वाभाविक छैक। मोलवी साहेबक यैह क्रिया आ झलकैत आकृति केँ लालकका द्वारा संकेत करब जे ओ आकृति कुसेश्वराक नायक तने छैक, निर्दोष व्यक्तिकेँ फँसयबाक कोनो कानिक बदला लेब सेहो अवश्य सम्भावी छैक आ तेँ बात बढ़िकऽ झगड़ा-फसाद पर पहुँचि गेल। 'जाहि जहरसँ भरि राति (ओ) कछमछाइत आ बेरि-बेरि अचेत होइत रहलथि (लहुँ), सैह जहर मांस आ मस्तिष्कमे पाचल जाइत रहल आ (ओ) बहुत दिन धरि ओहि मानवकल्पित आतंकसँ संत्रस्त होइत रहलथि।' ई जहर की छल ? झूठक बाना। जहिना मोलवी साहेबक वेश-भूषा छलनि, ओहिना विचार। की ओ जँ 'चाउर पढ़ि कऽ फेँकताह, तँ चोर खून बोकरत ? छूरा पढ़ि कऽ अपन टाङक रोआँ पर चलौताह, तँ चोरक चानि परक केस मुड़ा जयतैक ? मंत्र पढ़ि मुरगाक गरदनि मोचरताह, तँ चोर अपनहि अपन गरदनि मोचरऽ लागत ? मुरगीक खून आगिमे जरौताह, तँ चोरनीक नूआमे आगि धऽ लेतैक ?' ईसभ की छलैक ? मात्र आतंक पसारब ने। एहन फरेबी आ भ्रमात्मक आतंक अंधविश्वासक आधारे पर जीबैत अछि आ से एहि कथामे स्पष्ट चित्रित भेल अछि। लाल कका केँ तँ नूआक सङे चौअन्नी सेहो भेटि गेलनि, किन्तु ई आतंक जन-सामान्यक हेतु अनुचित क्रियाक बोधक अछि, से मोन राखबाक अछि।

कोनो घटनाक यथावत् वर्णन करब संवाद-प्रेषण होयत। कथाक संरचनामे कथाकारक कौशल, अनुभव आ जीवनक प्रति हुनक दृष्टिकोण जतेक गंभीर होयत, कथाक प्रस्तुतीकरण ओतबे अधिक मार्मिक, प्रभावोत्पादक तथा पाठकीय मनोयोग उत्पन्न करऽबला होयत। घटनाक मात्र संयोजनसँ कथाक सृष्टिमे गुणात्मक अर्थवत्ता संभव नहि छैक। गोविन्द बाबूक कथा पढ़ला पर ई स्पष्ट बोध भए जाइछ जे ओ स्वयं घटनाकेँ देखैत-भोगैत रहला अछि, प्रत्येक कथामे अपनाकेँ ठाढ़ कयलनि अछि आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

घटनाक तारतम्यक सङ स्वयंकेँ उपस्थित रखलनि अछि अथवा ओ घटनाक प्रत्यक्षदर्शी छथि, से खुजि कऽ कहैत छथि। ओ स्वीकार करैत छथि, *''हमरा अपनहुँ लगैत अछि जे अपन अधिकतर कथामे हम देखारे नहि, उघार भए ठाढ़ छी। प्रायः सर्वत्र हम अपने मुहे बजैत छी, अपने आँखिएँ देखै छी आ अपने भाखामे, अपने भावना पाठक पर फेकैत छी* (नखदर्पण, नेपथ्य सँ)'' ई साफ झलकैत अछि जे कथाक पाठककेँ ओ अपन व्यक्तित्व आ कथाक पात्रक स्थिति-परिस्थितिक सङ जोड़ि जीवनानुभूतिक यथार्थताकेँ व्यक्त करैत छथि आ एहिमे सफल सेहो भेलाह अछि।

कथाक अन्त एक एहन बिन्दु होइत अछि जतऽ पाठकक मोन आ मस्तिष्ककेँ एक क्षणक लेल झिकझोरि देअय। ई प्रभाव जखन अत्यन्त प्रबल भेल, तँ वैह पाठककेँ अधिक दिन धरि अपन संवेदनाकेँ जगौने रहैत अछि आ कथाक पात्र आ घटनाक तीव्रतासँ प्रभावित होइत अछि। *'चन्द्रलोकक एक टा यात्री'*, *'छिन्नमस्ता'*, *'विख औखध पुनि विख अवधारल'*, *'मिथिलाक संस्कृति टोकियोमे'* आदि कथाक अन्त अत्यधिक आकर्षक आ सोच जगाबऽ वाला भेल अछि। *'चन्द्रलोकक एकटा यात्री'*क गृहपतिकेँ जखन अपन कयल गेल गलत व्यवहारक भान मानस पुत्र द्वारा होइत छनि आ पश्चात्ताप करैत अपन पूर्व पत्नीक दुर्दशाग्रस्त जीवनक प्रति मोह पुनः जाग्रत होइत छनि तथा उताहुल भऽ ओकरा ताकि आनबाक आदेश दैत छथिन, तखन दरबानक व्यंग्योक्ति कतेक मार्मिक लगैत अछि। ओकर बड़बड़ायब, *''लागता, साहेब के माथा खराब हो गईल बा''*। एकटा विशेष छाप पाठकक मोन पर छोड़ि दैत अछि। एहिना *'छिन्नमस्ता'*क पण्डितक हृदय-परिवर्तन, *'विख औखद पुनि विख अवधारल'* मे मङलाक मुद्रा आ बेटाकेर अपनोसँ सीनियर जेबकट होयबाक आह्लाद, *'मिथिलाक संस्कृति टोकियोमे'* समाचार प्रकाशन, *'खिसा हंसराजक'* मे बेटा केँ यथार्थक धरती पर घुरि अयबाक संकल्प आ क्रियात्मकता आदि प्रसङ्ग वेश प्रभावोत्पादक आ स्मरणीय भेल अछि।

ई मानवीय स्वभाव रहल अछि जे सभ क्यो किछु ने किछु दोषसँ अबंच नहि रहल अछि। गोविन्द बाबूक कथा सेहो एहन दोष आ त्रुटिसँ मुक्त नहि अछि।

सभसँ पहिने ध्यान आकृष्ट करैत अछि एके शीर्षक *'पण्डितक पराभव'* सँ दुनू संकलनमे एक-एक टा कथा। विषय-वस्तु आ कथ्य फराक-फराक रहले उत्तर एके शीर्षक देखिते आश्चर्यमे पड़ि जाइत छी। गोविन्द बाबूसन शब्दशिल्पी जे कतेको प्रकारक कोशक संकलन-सम्पादन कयलन्हि अछि, हुनका शब्दक एहन अभाव कोना ग्रस्त कऽ लेलकनि?

दोसर अछि परिवेशक एकांगी दृष्टि। सम्पूर्ण कथासाहित्यक अवगाहनक पश्चात् ई बात कचकि उठैत अछि जे एतेक विचारधारामे परिवर्त्तन भेलोपर ओ आभिजात्य संस्कारसँ मुक्त नहि भऽ सकलाह अछि। ई आभिजात्य-चेतना सर्वत्र कथाक घटना आ पात्र पर हाबी रहल अछि जे हुनक दृष्टि-परिक्षेत्रकेँ सीमित कऽ दैत अछि। यैह स्थिति भाषाक सेहो अछि। एकाध ठाम जतऽ निम्न वर्गक पात्र उपस्थित होइत अछि, ओतहु ओकर भाषा ओहिना गौरवाह आ बोझिल भएकेँ उपस्थित होइत अछि। कथाकारक दृष्टि-संस्कार मुक्त रहय, तँ वेशी उत्कर्षजनक होइछ। किछु पात्र सामन्ती भाषाक प्रयोग करैत छनि जे वर्त्तमान समयक परिप्रेक्ष्यमे अशोभनीय लगैत अछि। आइ सामन्तक समग्रतः नाश भऽ चुकल छैक, तखन जौड़ जँ जरि गेल, तँ ओकर ऐँठन सहजे निष्प्रयोजन भऽ जाइत अछि। हाथी नहि अछि, तँ हाथीक सिक्कड़ि झनझनौने की प्रभाव पड़ि सकैत छैक? मात्र छगुन्ताक सृजनेटा करत ने!

गोविन्द बाबूक सभसँ पैघ विशेषता उभरि कऽ आयल अछि जे ओ कथा लिखैत नहि छथि, प्रत्युत कहैत छथि। कथाक ई खिसक्करी शैली संस्कृत-साहित्ये धरि सीमित छल, मैथिली साहित्यसँ कतेको कोस दूर। किन्तु गोविन्द बाबू एहि शैलीक पुनः स्थापन कऽ पाठकक एक खास वर्गकेँ अभिरुचि प्रदान कयलनि अछि जे एखन धरि कथा-साहित्यसँ उदासीन रहल अछि। सङे ओ अपन कथामे एहन वर्गचरित्रकेँ उपस्थित कयलनि जे अपन द्वैध जीवन जीबैत समाजमे आदर्शक पात्र बनल छथि। पात्रक ई दोहरा व्यक्ति समाजकेँ आँखि खोलि दैत अछि। ऊपरसँ जाहि उच्च आदर्शक खोल ओढ़ि सुधुआ समाजकेँ भ्रमित कऽ रहल छथि, अभ्यन्तरमे कारी नागकेँ पोसने रहैत छथि आ सदति समाजकेँ तरे-तर विषाक्त कऽ दैत छथि। पाठक ई सोचबाक लेल विवश भऽ जाइत अछि जे आखिर ई समाज कोन दिशामे बढ़ल जा रहल अछि?

गोविन्द बाबूक कथाक भाषा अत्यन्त सरल आ बोलचालक भाषा अछि जे अत्यन्त रोचक आ कथा-प्रवाहकेँ गति प्रदान करैत अछि। पण्डिताम संस्कृतनिष्ठ शब्द वा क्लिष्ट वाक्य-जालसँ मुक्त अछि। कथाक घटना कोनो तेहन ओझरायल स्थितिमे फँसि कऽ ओकर तारतम्यकेँ भङ्ग नहि करैत अछि। भाषाक सहजता आ एकरसता सभठाम एके रङ रहल अछि। कथाकारिताक जाहि ऊहिक ओ सृजन आ प्रस्तुति कयलनि अछि, से सहजेँ कथाकेँ एक रचनात्मक उपादान भेटलैक अछि आ एहि हेतुएँ ओ सदैव वरेण्य परिगणित होइत रहताह।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कथाकार पं. श्री गोविन्द झा

□ डा. श्री शिवशंकर झा 'कान्त'

मैथिली साहित्यमे वर्तमान स्वरूप, तत्व ओ प्रभावान्वितिसँ पूर्ण कथा-लेखकक पंक्तिमे गोविन्द झाक चर्चा ओ विश्लेषण होइत अछि–से स्वाभाविक अछि। हिनका मूलतः कथालेखक नहि कहल जाए सकैत अछि, कारण जे अपन पैंतालिस-पचास वर्षक सुदीर्घ साहित्य-लेखनक अवधिमे गोविन्द झाक लिखल प्रकाशित कथाक संख्या बड़ थोड़ छल जखन कि हिनक लिखल साहित्यक आन-आन विधामे रचनाक अभाव नहि अछि। कवि, कथाकार, नाटककार, अनुवादक, निबन्धकार गोविन्द झा भाषा-शास्त्रक सेहो ज्ञाता छथि, अनुसन्धान सेहो कएल अछि, व्याकरण ओ छन्दशास्त्रक ग्रन्थक निर्माण सेहो कएल अछि, ओ सुनैत छी जे वर्तमानमे बहु-भाषाशब्दकोशक निर्माणमे ई सेहो लागल छथि। एतेक बहुआयामी, बहुविध लेखक ओ बहु-भाषाक ज्ञाता गोविन्द झाकेँ कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठाक एकटा सशक्त आधार अछि। साहित्य-अकादमीक पुरस्कार हिनका हिनक कथा-संग्रह सामाक पौती पुस्तक पर प्राप्त भेलन्हि अछि। मुदा, ई कहब जे अनचौकेमे, औचक्के हिनक एहि पुस्तककेँ विशिष्ट मानि हिनका सम्मानित कए देल गेल, जेना कदाचित् कोनो-कोनो कृतिक प्रसङ्ग होइत रहल होअए-से तथ्य नहि अछि। अर्थात् *सामाक पौती* अनेक विद्वानक श्रेष्ठ समालोचनाक कसौटी पर पूर्ण निस्सन ओ असली सिद्ध भेल तथा कथा-लेखनक क्रममे एकटा विशिष्ट कृति सिद्ध कए देल गेल ओ तखनहि सम्मानित भेल। मुदा, एतबा होइतहु गोविन्द झाकेँ कथाकार तँ सहजहि नहिएँ, अन्य कोनो विधाक रचनाकारसँ बेसी नाटककारक रूपहिमे श्रेष्ठ मानल जाएत। आलोचनाशास्त्रक कसौटी पर एतेक शुद्ध हिनक नाटकसभ बुझल जाएत ओतेक हिनक कथासभ नहि। तेँ कथाकार गोविन्द झा ओ हुनक कथासभक विश्लेषण, शिल्पक दृष्टिएँ विशेषरूपेँ फराक महत्व रखैत अछि।

गोविन्द झाक दुइगोट कथासंग्रह *सामाक पौती* ओ *नख-दर्पण* उपलब्ध अछि। *सामाक पौती* चालीस वर्षक विशाल अवधिमे रचल हिनक अठारह गोट कथासभक संग्रह थिक तथा *नखदर्पण* मात्र पाँच वर्षक अभ्यतरमे रचल गेल हिनक तेरह गोट कथासभक संग्रह अछि। कतेक विरोधी स्वर अछि एक दोसरक निर्माणमे–नबसिखुआसँ लए प्रौढ़त्व धरिक मानसिक ऊहापोहक उदाहरण अछि *सामाक पौती,* तथा परिपक्व शैलीक, सिद्धहस्त चातुरीक, प्रौढ़ रचना-शक्तिक बानगी अछि *नख दर्पण*। स्वभावतः जेहन अन्तर एहि दुहू संग्रहमे होएबाक चाही से तS भेटितहि अछि, संगहि रचनाक्रमक प्रारम्भहुँमे गोविन्द झाक कथालेखन अपन अस्तित्वकेँ फराक रखबामे पूर्ण सक्षम छल–तकरहु प्रमाण भेटैत अछि। *सामाक पौतीक* कथासभमे वर्णनक आकर्षण तँ अछि मुदा ओहिमे सटीक शब्दयोजनाक सशक्त रूप नहि अछि। नख दर्पणमे कथात्मकताक संग भाषाक जेना सैहार्द बनल होअए; एक दोसराक संग पुरबामे जेना लागल होअए, तेहन बूझि पड़ैत अछि। प्रायः कोनो कथामे हिनक भाषा पंडिताम नहि अछि, किन्तु कतहु अत्यन्त सहज सेहो नहि अछि। चलैत-फिरैत केहनो शब्दसँ अभिव्यक्तिक प्रकाशन नहि कए देल गेल अछि। कतहु-कतहु भाषा-प्रवाह वेगवान अछि ओ कतहु से सामान्य गतिएँ गतिमान-तेँ हिनक कथा सभमे भाषाक समस्या ओकरा बुझबामे नहि अछि। वर्तमान समयक मैथिली कथामे एहि दोषसँ मुक्त किछुए कथाकार छथि ओ गोविन्द झाक नाम ताहिमे अवश्य छन्हि। *नखदर्पणमे* एखनुक जीवन-चरित्र ओ सामाजिक परिवर्त्तनक रूपकेँ स्वर देबाक बेसी ठाम प्रयास अछि। प्रारम्भहि होइत अछि *एक धरिका अमोटस* जाहिमे पारिवारिक समस्याक ओझरौहटिमे मानसिक दुर्बलताकेँ नेङराइत देखएबाक प्रयास अछि। अपना भरि अपन मोनकेँ सैंति राखक प्रयास कोना जखन-तखन धराशायी होइत अछि, सेहो एहि कथामे देखब। आर्थिक तंगीसँ सर्वसाधारण व्यक्ति अत्यन्त प्रबल इच्छा रहितहुँ कोना अपन सामयिक उद्देश्यमे असफल भए जाइत अछि तकर उदाहरण *एक धरिका अमोट अछि*। तहिना *"नखदर्पण"* मे बाल-मनोविज्ञान, द्वेषक प्रवृत्ति, लोभक स्वरूप, गतानुगतिक सामाजिक चित्र, अन्धविश्वासक विकृत रूप ओ गमैया पंचैतीक छोट छीन बिम्ब ई सभ तथ्य भेटैत अछि। अर्थात्, विषय एवं ओकरा स्पष्ट करबाक प्रयास जेना सामान्य रचना समीक्षा, निबन्ध आदिमे होइत अछि से यदि कथामे बिनु आयासेँ प्रविष्ट भए स्वाभाविक रहि सकए तँ बेसी आकर्षणक बिन्दु होइछ से तथ्य हिनक कथासभमे यत्र-तत्र भेटैत अछि।

सामाक पौतीक फूलक चोट कथाक भित्ति निर्मित अछि चिन्तन, आयोजन, प्रयोजन ओ नियमनक दुइ एहन प्रवृत्तिसँ जे एक दोसराक विरोधी अछि। आत्मिक सुखक इच्छासँ कष्टमे पराभूत आत्मीय जनक वेदनाकेँ बिनु अनुभव कएनहि मात्र विनोद करब ओ विनोदी बनल रहब–एहि कथाक सामान्य विशेषता अछि। विनोदक ई रूप कथाक अन्त धरि रहैत अछि जाहिसँ सामाजिक वेदनाक अनुभवी चरित्र आहत होइत अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

इएह कल्पना एहि कथाक वास्तविकता अछि जे मात्सर्य ओ हास्यक भूमिकेँ उर्वरित करैत कखनहुँ यथार्थक संस्पर्श नहि करैत अछि। **जरल जौरक ऐँठन** मे पाकल अनुभव तीत स्वाद एखनुक वातावरणमे अवश्य देखबामे अबैत अछि–किन्तु जागतिक रूपमे एहि अनुभवकेँ अस्वाभाविक कहि मात्र श्रमक महत्त्व पर व्याख्यान दए देलासँ कार्यसिद्धिक कोनहु सम्भावना नहि अछि। तेँ यदि कतबो प्रयास कएलहुँ, कष्टसँ सीदित ओ व्याकुल भेलहुँ, छद्म रूपहिमे अपनाकेँ राखि सकबाक चारित्रिक दुर्बलता देखाओल जाइत अछि तँ से कथाकेँ अस्वाभाविक नहि, भारतीय मूलतः मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे समीचीन बनबैत अछि। **पातक मनुक्ख** परम्परागत भावक उद्‌बोधन ओ द्वेष, लोभक पराकाष्ठा तथा दुर्बल चरित्रक प्रकाशित रूप अछि। मिथिलाक समाजक एहन चित्र आजुक वर्त्तमान सन्दर्भहुँमे यत्र-यत्र देखबामे गाम-घरमे अवश्य भेटि जाएत। एतबा परिवर्त्तन मात्र नवीन दृष्टिकोणमे आएल अछि जे तथ्यकेँ नव रूपमे स्वीकार करी मुदा एखनहु समाजमे वर्चस्व ओही गाहीक गाही मुखपुरुषक भेल करैछ जे अपन चालाकी ओ बुद्धिक तीव्रतासँ पारम्परिक भाव राखि ताहि सभकेँ प्रभावित कए सकैछ।

सामाक पौती कथामे मात्र मनोविश्लेषणक माध्यमेँ कथात्मकताक सजीव ओ कथाकेँ आकर्षक बनएबाक प्रयास भेल अछि। भाए-बहिनिक एक दोसराक हेतु स्नेहक उद्वेग कोनो अवसर विशेष पर स्फुट होइत छैक तकर उदाहरण अछि एहि ठाम। पुनः दुनू कोनो परिस्थितिक कटु अनुभवसँ सीदित-वेधित भए अपनहिकेँ एक दोसराक प्रति प्रेम-मात्सर्य नहि देखाए सकबाक दोषी मानैत मानसिक आवेगसँ उद्वेलित भए जाइत अछि–तकरहु स्पष्ट चित्र एहिमे भेटैत अछि। एहि कथामे शिल्पक दृष्टिएँ नवीनता नहि अछि। *पंडितक पराभव मे वर्त्तमानजीवी* चरित्रक विश्लेषण अछि। भौतिक सुखक इच्छामे समस्त कार्यक्षमता स्तवनक मुद्रामे लागल कोना रहैत अछि तथा ओकर उपलब्धि भए गेने केनो अधलाह शब्द मर्माहत नहि करैत अछि तकर रेखाचित्र थिक प्रस्तुत कथा। मुदा, कथाक अन्तमे ओकर अन्त कथाकार जेना देखाओल अछि ओ कतेक सत्य भए सकैछ, वर्त्तमान समाजमे से विचारणीय अछि। ओना आर्थिक रूपमे नीक-अधलाह अवस्था प्रायः सभक जीवनमे सतत होइते रहैत छैक, *"कथाक अन्त"* मे जतेक शीघ्रतासँ एहि अवस्थाकेँ परिवर्तित होइत देखाओल गेल अछि, ओ सभ शीघ्रतामे घटल घटनाक चित्र जकाँ बुझाइत अछि। "कथा-मात्र अछि से बुझबाक हेतु आयास अवश्य करए पड़त।

"भीख" कथामे भीख माङब व्यापारक प्रतिएँ आवश्यकतासँ बेसी होइत कथावाचकक प्रतिक्रियाक एहन अभिव्यक्ति अछि जाहिमे पारम्परिक रूपक भाव रखनिहार कथाकारक पलीक मोनमे एहि विषय पर विजय प्राप्त कए लेबाक सफलतामिश्रित परिहास ओ स्वयं कथावाचकक हृदयमे एहन विषय पर हारि जयबाक ओ कष्टेँ पराभूत होएबाक भाव अंकित अछि। भीख माँगि कए गुजर कएनिहार व्यक्तिसभमे बेसी आलसी होइत अछि। प्रस्तुत कथामे, जे, उत्तम पुरुषमे लिखल गेल अछि, कथाकारक अनावश्यक रूपक प्रतिक्रियासँ कथावस्तुक सृजन होइत अछि। वातावरण मे अनेक एहन वस्तुक अनावश्यक प्रवेश होइत रहैत अछि जाहिसँ सामान्य व्यक्तिकेँ कोनो प्रयोजन नहि होइछ ओ तेहने एकटा विषय भेल भीखमाङब। किन्तु ताहि हेतु अनेरे एतेक प्रतिक्रियाशील भए जाएब निस्सन्देह अस्वाभाविक होइछ। एही भावकेँ कथावस्तु बनाए मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक आधार पर कथाभित्तिकेँ मजबूत बनएबाक प्रयास कएल गेल अछि। *"अयाचीक डीह पर....."* कथा एखनुक ग्रामीण राजनीतिक सटीक उदाहरण अछि। छोट-छीन बातकेँ बतङर बनाए देब एखन गमैया राजनीतिमे सामान्य बात अछि। ईर्ष्या ओ द्वेषक बड़ विकृत रूप गाममे देखबामे अबैत अछि। लोभक कारणेँ फसाद करब, जेना लोक अपन अधिकार बुझैत होअए, अपन वर्चस्व स्थापित करबाक हेतु पैघसँ पैघ अनैतिक कर्म करैत रहब, नीति बुझैत होअए तथा एककेँ दोसराक शत्रु बनाए जे अपन स्वार्थसिद्धि करैत होअए–एहन लोकक अभाव एखन गाममे नहि अछि। एही तथ्यकेँ आधार बनाए प्रस्तुत कथा लिखल गेल अछि। कथाकेँ पढ़लासँ ई स्पष्ट भए जाइत अछि। जे एखनुक राजनीतिक वातावरणक पहिल पाठ लोक प्रायः ग्रामीण वातावरणहिमे जाए पबैत अछि। जकर आधार एहन तत्व पर आधारित अछि ओ पश्चात् राज्य ओ देशक राजनीतिमे कतेक स्वाभाविक ओ सक्षम रूपेँ समाज ओ राष्ट्रक सुदृढ़ विकास कए सकत, से एकटा प्रश्न बनि जाइत अछि। अपन सुदृढ़ सामाजिक ओ सांस्कृतिक परम्पराक प्रति एहन विचारशील लोक कतेक सुदृढ़ रहि सकैछ–ई तकरहु उदाहरण अछि।

नखदर्पण मे *मिथिलाक संस्कृति टोकियोमे* कथाकेँ जाहि रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिमे गोविन्द झा लिखित *मिथिलाक प्रतिनिधि* एकांकीक भावक संपुष्टि होइत अछि। अन्तर थोड़े वस्तुक सुनियोजन ओ उपस्थापनमे अछि। कथातत्व संग जेना एहि कथामे घटना ओ पात्रक सामञ्जस्य देखाओल गेल अछि से स्वाभाविक अछि। एहि संग्रहमे रचित हिनक अन्य कथा सभमे सेहो कथातत्वक बेसी परिपालन भेल अछि। एहू कथा सभमे मुख्य रूपसँ मनोविश्लेषणकेँ आधार बनाओल गेल अछि। सबल चरित्रक गाथा तँ प्रायः आब कथाक विषय नहि रहल किंतु कथावस्तुमे घटना ओ वर्णनक सामञ्जस्यपूर्ण विवेचन बेसी ठाम देखबामे अबैत अछि। कथाक सफलताक आधार प्रायः

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चरित्रकेँ कथोपयोगी बनाए प्रस्तुत करब रहि गेल अछि। मानसिक तनावसँ युक्त चरित्रकेँ बेसी सक्षम बनाए पैघसँ-पैघ समस्याक समाधान ओहि माध्यमेँ सम्भव नहि, तेँ चरित्रसँ हटि कोनो घटना विशेषकेँ कथाक सूत्रधार रूपमे प्रस्तुत करब उद्देश्य भए गेल अछि। घटना सेहो ततेक विशिष्ट ओ समग्र तथ्यकेँ प्रभावोत्पादकतायुक्त होएबे करए, सेहो आवश्यक नहि रहि गेल अछि। फलतः कथालेखनक अधार सएह परिवर्तित भए गेल। स्वभावतः ओकर प्रभाव सेहो किछु भिन्न प्रकारक भए गेल अछि। अर्थात्, मैथिली कथाक एखनुक स्वरूप वर्णनकेँ आधार बनाए आगाँ बढ़ल अछि। एखनुक जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे एहन घटनाक कखनहुँ अभाव नहि रहैत अछि। तेँ कथा लिखबाक हेतु वस्तुक अभाव रहितहि ने अछि। ग्रामीण वातावरणसँ लए महानगरक जीवन धरि, सभठाम कथाक आधार पसरल अछि, आवश्यक अछि ओकरा बीछि ओकर उपयोग करबाक। *नखदर्पण* मे संकलित कथासभक भावभूमि एखनुक जीवनक जगजियार रूपसँ तैयार कएल गेल अछि।

गोविन्द झाक कथालेखनक परम्परा जे *सामाक पौतीसँ* नेङराइत प्रारम्भ भेल से पूर्णता पओने अछि *नखदर्पण* मे। हिनक कथाक साहित्यिक परिशीलनसँ ई तँ निश्चिते बुझाइत अछि जे कथा लिखबाक क्षमता हिनकामे छन्हि। जीवनक उतार-चढ़ाव ओ विशाल अनुभवक संग जखन ई कथाक संरचनामे संलग्न होइत छथि तँ प्रायः सम्पूर्ण यथार्थक संग वर्त्तमान हिनका समक्ष उपस्थित भए जाइत छन्हि आओर तखन रचना भए जाइत अछि *'पोथी पढ़ि-पढ़ि.....', "खीसा हंसराजक", "सड़क सिंह"* अथवा *"चाट कतहुः चोट कतहु"* आदि कथासभक। कथा-लेखकक प्रायः ई प्रयास रहैत अछि जे कथामे ओही तत्वक समावेश होबए जे मूल कथानकक सम्पर्कमे आबि सामान्यतः किछुओ प्रभाव उपस्थित कए सकए। ई विशेषता हिनक कथा-लेखनमे सर्वत्र भेटैत अछि। तेँ जँ घटनाक समायोजन-कलाकेँ गौण कए देल जाए तँ प्रायः आधुनिक बेसी कथा उत्तम निबन्धक कोटिमे आबि जाएत। पुनः जँ घटनावलीकेँ वर्णनसँ नहि, दृश्यविशेषमे, अवसरविशेष पर छोड़ैत प्रभावसँ युक्त कए देल जाए तँ कथा एकांकी सेहो भए जा सकैत अछि। गोविन्द झाक कथासभमे उपर्युक्त दुहू तत्व बेसी मुखर भए प्रवेश करैत अछि, फलतः कथामे प्रभावोत्पादकताक सृष्टि सहजहि भए जाइत अछि। तेँ *"विख औखध पुनि", "छिन्नमस्ता", "एक बिन्दु चारि वृत्त"* आदि कथासभक इएह सम्भावना अछि से कहबामे कोनो तारतम्य नहि होएबाक चाही।

गोविन्द झा कथाकारक रूपमे अपन जे प्रभाव छोड़ल अछि ताहि आधार पर बादक रचनाकारकेँ ई प्रभावित अवश्य करैत छथि। तेँ यदि हिनका *"पड़रू"* सभक संगतिमे *"स्ववर्गे परमा प्रीतिः"* होइत छनि तँ से स्वाभाविके अछि एवं यदि ओ पड़रू वर्ग हिनकामे अपन समुदायक स्वभावक परिणति पबैत अछि तँ ओकर उत्साहित होएब स्वाभाविके। एतबा अवश्य जे एहिसँ साहित्यक भण्डार तँ भरितहि अछि, समीक्षा ओ आलोचनाक क्षेत्रमे साहित्यमे सेहो एकटा नव दृष्टिक बोध कालान्तरेँ होएब सिद्ध होइत अछि। अतः हिनक कथासभक समीक्षाक हेतु वर्त्तमान पद्धतिकेँ आओर बेसी अगुआबए पड़त।

पं. श्री गोविन्द झाक किछु स्मरणीय कथा

□ डा. (श्रीमती) नीरजा रेणु

पण्डित श्री गोविन्द झाक कथा-यात्रा 1947 ई. सँ आरंभ होइत अछि। मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित 'खजनी' शीर्षक कथा हिनक पहिल रचना भेल। ओ युग मैथिली कथा-विकासक युग कहल जा सकैत अछि। प्रो. उमानाथ झा, स्व. मणिपद्म जी, मनमोहन जी, किरणजीक समकालीन रचनाक संग श्री गोविन्द बाबूक कथा आरंभ भेल। *"सामाक पौती"* तथा *"नखदर्पण"* दूनू संग्रहक हिनक अधिकांश कथा स्मरणीय अछि, किन्तु कथावस्तुक दृष्टिसँ, ओहिमेसँ, पण्डितक पराभव, पातक मनुक्ख तथा *"नखदर्पण"* शीर्षक कथाक एहिठाम चर्चा कएल अछि।

"पण्डितक पराभव" मे एकटा विद्वान् वैयाकरणक ओहि परिस्थितिक वर्णन भेल अछि जाहिमे संस्कृतक ज्ञाताकेँ समाजमे व्यावहारिक धर्म-कर्मक जेना देवी-देवताक पूजा, उपनयन-विवाहक दिन तकनिहार, छिकबाक आ गिरगिट खसबाक शुभाशुभक ज्ञाता, ग्रह-भूतपिशाचकेँ बैलओनिहार, अमोघ अस्त्र-शस्त्रक भंडार मात्र मानल जाइत अछि। पण्डितजीक एक-एकटा अनुभव आ तकर वर्णन हास्य आ व्यंग्यसँ भरल विनोदपूर्ण रचना थिक। स्व. हरिमोहन झाक कथा जकाँ सामाजिक स्थितिक विद्रूपताकेँ उजागर कए चोटगर भंगिमापूर्ण सुधारवादी दृष्टि एहि कथामे परिलक्षित होइत अछि।

पं. गोविन्द झाक समाज-सुधारक दृष्टि *"पातक मनुक्ख"* एवं *"नखदर्पण"* मे सेहो स्पष्टतया ध्वनित भेल अछि।

"पातक मनुक्ख" असहाय नारीक दुर्दशाकेँ देखबैत एकटा एहन कथा थिक जे सोझे सामाजिक शब्दचित्र नहि, परिस्थिति

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कैँ सोझरएबाक दीन-हीन कहओनिहारि महिलामे आत्मविश्वासक किरण जगओनिहार पथ प्रदर्शक कथा सिद्ध भेल अछि। एकटा नारीक पति गरीबीक कारणेँ भागि जाइत अछि। ओकर बारह बरख बीति गेला पर समाजक प्रतिष्ठित कहौनिहार व्यक्ति सभ ओकर रहल-सहल सम्पत्तिकेँ हरण करबाक चेष्टा करैत छथि। लाथ ई जे आब ओहि भागल पतिक श्राद्ध भए जाउन। मुदा, ओ महिला एहि प्रकारक समाजक प्राणीक मनोरथ भंग कए दैत छथि : अपन सम्पत्ति लिखबाक समयमे ओ स्वंय भागि जाइत अछि। आ, जे व्यक्ति लिखब' चाहैत छलथिन, से स्वंय ओहि महिलाक बाद श्राद्ध करबाक अधिकारी होइतथि से जानि अपने मुँहे कहल गेल बात कैँ ओ उनटा दैत छथिन–*"पातक कतौ मनुक्ख भेलैए.....।"* एहि कथामे जे सभसँ अधिक प्रशंसनीय तथ्य थिक से लेखकक सुधारवादी दृष्टिक स्पष्ट संकेत। संगहि वस्तुक प्रवाहमे एहन कोनो गतिरोध नहि उपस्थित भेल अछि जाहिसँ रोचकता भंग होइक।

"नखदर्पण" शीर्षक कथा लेखकक आधुनिक रचना छियनि। समाजक बिसरल जाइत पन्नाक इतिहास आ एही संग हास्य-विनोदपूर्ण सरस कथा। किछु दिन पहिने धरि ककरहु वस्तु हेराए जाइत छलैक तँ चोरकेँ पकड़ैले नाओ काढ़ल जाइत छलैक। एकटा मौलवी साहेब नह पर किछु लगाकेँ कोनो बच्चाकेँ पुछैत छलथिन जे एहि एनामे ककर मुह देखैत छिऐक। ओ नेना ककरहु नाम बाजि दैत छल–कोना, किऐक आ तकरे आधार पर चोर वा चोरनी 'पकड़ा' जाइत छल से उल्लेख कए कथाकार समाजक कुरीतिक उल्लेख सेहो कएलनि अछि। एहिमे कथ्यक विडम्बनापूर्ण परिस्थिति अद्‌भुत रूपेँ उल्लिखित भेल अछि।

पं. गोविन्द झाक कथा-यात्रामे *"सामाक पौती"* मैथिली कथाक उत्कृष्ट रचना मानल गेल अछि। कथानायकक पिता अपन कर्जाक बोझ छोड़ि एहि संसारसँ बिदा भए जाइत छथि। कर्जामे दबाइत पुत्रकेँ पिताक लेल ऋण तथा कुमारि बहिनिक विवाह–यैह सम्पत्तिक नाम पर भेटैत छैक। फलतः किछु बूढ़-सूढ़क विचारसँ ओ समाधान ताकि लैत छथि। अपन कुमारि, छोटि बएसक बहिनिक विवाह बूढ़ वरसँ कराए दैत छथिन। बूढ़ा बहिनोइक कृपासँ ऋणमुक्त होइत छथि, मुदा अपन बहिनिक प्रति जे अन्याय करए पड़लनि ताहिसँ अत्यन्त क्लेश हुनका भेलनि। लाजेँ वा ग्लानिएँ ओ घूरि कए बहिनिक दुआरि पर पएर नहि रखैत छथि। एम्हर बहिनि अपन सासु, ननदि वा देयादिनीसँ समय-समय पर एकर कौचर्य सुनैत-सुनैत बहुत दुखी भए जाइत छथि जे भाए एक्को बेर पुछारियो ने करैत छथिन, भरदुतियो मे नहि। भ्रातृद्वितीयाक पन्द्रहमे ओ सामा चङेरामे साँ।ठ नैहर बिदा भए जाइत छथि। मुदा बाटमे अतीतक तीत पन्ना हुनकर मोनकेँ झनका दैत छनि आ नदी पार कए जखन नाओसँ उतरैत छथि तँ सामाक पौती तथा भाएक हेतु लेल गेल आन सनेससँ भरल चङेरा हाथसँ छुटि जाइत छनि। ओ, विह्वल भए किछु व्यथित स्वरमे बड़बड़ाए लगैत छथि। ओहि समयमे एक गोटए बाजि उठैत अछि जे आइसँ ठीक पन्द्रह दिन पहिने, एहिना एक गोटए अपन बहिनिक ओतए बिदा भेल रहथि तँ हुनकर हाथक मटकूरी, सनेस एही माटि पर खसि पड़ल रहनि। जगमाया आपस अपन घर घुरि अबैत छथि।

एहि कथामे वस्तु एवं परिस्थितिक करुण ध्वनि एहन मार्मिक रूपेँ मुखर भेल अछि जे मैथिली कथा-क्षेत्रक एकटा कालजयी रचना सिद्ध भेल अछि। भाए-बहिनिक परस्पर स्नेह, सामाजिक स्वरूप एवं तकर बीचमे मानवीय संवेदनाक द्वन्द्वक चित्रण एकर वैशिष्ट्य थिक।

पं. गोविन्द झाक कथा-यात्रा कोनो काल वा 'वाद' क परिधिमे सीमित नहि छनि। लेखक स्वयं एहि तथ्यकेँ *नखदर्पणक* भूमिकामे कोनो आने सन्दर्भमे कहैत छथि–*"हमर शुभचिन्तक एक प्रतिष्ठित साहित्यकार अयाचित सत्परामर्श देलनि-"पण्डित जी, की अहाँ सींघ तोड़िकेँ पड़रूमे मिलैछी–....। वास्तवमे साहित्य-सर्जनामे वयसेँ ने केओ पड़रू होइत अछि, ने केओ पाड़ा। ओकर आयुक निर्धारक होइत छैक ओकर दृष्टि आ सृष्टि। एहि अर्थमे, सत्य कहब जँ अभिमानोक्ति नहि हो तँ हम अपनाकेँ बूढ़ नहि मानलहुँ अछि।....."*

कथाकार एकटा नीक समालोचक बनि अपना प्रति ई वचन कहलनि अछि। लेखक स्वयं रचना नहि, रचनाकार होइत छथि। तेँ ओ कोनो बएस, धर्म, जाति आदिक बन्धनसँ मुक्त, एकटा सर्जकक रूपमे चिन्हल जाइत छथि। पं. श्री झाक लेखकीय इमानदारीक प्रतिबद्धता हुनका उत्तम कोटिक कथाकार सिद्ध करैत अछि।

सत्तरिक दशकक पश्चात् मैथिली-कथा-क्षेत्रमे एकटा विलक्षण क्रान्ति आएल–कथा-शिल्पक विकास। पं. गोविन्द झाक लेखनी 'शिल्प'क एहि विकासक्रमसँ प्रभावित भेल। एकरा ई मानि लेब जे एकटा लेखकीय मुद्रा हुनकामे एकदम परिवर्तित भए गेलनि वा कथा-वस्तुक उपस्थापनक गतिशीलताक प्रति ओ उदासीन भए गेलाह, से उचित नहि हैत। एतबा अवश्य जे 80 क पश्चात्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कथामे हुनकर गल्पात्मक रोचकताक स्थान जीवन-दर्शनक लयात्मक ध्वनि लए लेलक। जेना *''ओधि : बाँस : कोपड़''* मे ओ स्टेशन पर आएल, यात्राक मुद्रा बनौने एकटा परिवारक तीन पीढ़ीक पितामह, पिता आ पुत्रक चित्रण करैत छथि। पितामह घरक बनाओल वा घरसँ आनल वस्तु खाए लेबाक प्रवृत्तिसँ पौत्रक भोजन करबाक रुचि एकदम्मे भिन्न होइत छनि, किछु नोंक-झोंक बीचमे होइत छैक आ अन्ततः समन्वयवादी पिता दुनूक बीचमे मधुर कीनि लैत छथि। तीनू गोटए प्रेमसँ भोजन करैत छथि। एहि कथामे वस्तुसँ अधिक एकटा प्रगतिशील समाजक प्रति, अशावादी ध्वनि अधिक स्पष्टता सँ अभिव्यञ्जित भेल अछि। ई परिवर्तन लेखन-युगक परिवर्तन थिक, जकरा पं. झा ग्रहण कएलनि अछि।

गुणग्राहकताक एहि प्रवृत्तिकेँ लेखक स्वयं स्वीकार करैत *नख-दर्पणक* भूमिकामे कहैत छथि–*''हमरा तँ ईहो कहबा मे सङ्कोच नहि होइत अछि जे वयःश्रेष्ठ वा समवयस्क कथाकार हमरा ततेक प्रेरित-प्रभावित नहि कएलनि अछि जतेक एहि वर्गक जीवकान्त, प्रभासकुमार चौधरी, राजमेहन झा आ रमेश पर्यन्त कएलनि अछि।''*

विधात्मक तोड़-फोड़ करैत गोविन्द झाक कथा-शिल्प

□ डा. श्री देवशंकर नवीन

युग-परिवर्तनक पहिल चोट मानव जीवन पर मुख्यतया दू दिशासँ पड़ैत अछि। पहिल तँ ई, जे देशक राजनीतिक स्थिति बदलि जाइत अछि आ दोसर, जे सामाजिक परिवेश उधेसल चल जाइत अछि। एहि उधेसबाक क्रममे ततेक व्याकुलता रहैत छैक जे लोक आधुनिकताक चकमकमे अपन जमीन बिसरि जाइत अछि, बेचैनीमे कतोक नव-नव पद्धतिक अनुसरण कए लैत अछि। एहि बेचैनीमे बेसी काल इएह होइत अछि जे मनुष्यक अपन थाती हेरा जाइत छैक, दोसर जमीन पर कलमी गाछ जकाँ पल'-बढ़' लगैत अछि, जेना नव धनाढ्यक बालकनीमे गमलाक माटि मे गुलाबक डारि बढ़ैत अछि, फुलाइत अछि। एही क्रममे संयोगवश किछु अपनहुँ धरोहरि ओकरा संग रहि जाइत छैक, मुदा से संयोगवश, सायास नहि। एहि संयोगवशता आ प्रयत्नशीलताक प्रतिफलन मनुष्यकेँ जाहि प्रकारक जीवन दैत छैक,से एकटा खीचा-तानीवला जीवन होइत छैक। गमलाक जीवनक संकुचन जखन-जखन मनुष्यकेँ जीवनक स्वाभाविकता लेल धिक्कारैत छैक, ओकरा अपन परम्परा मोन पड़ैत छैक आ जखन परम्परामे अबैत अछि तँ ओकरा नवयुगक चाकचिक्य आकर्षित करैत छैक। अपन परम्पराक परिष्कार नहि कए सोझे ओहि ताम-झाम दिस पड़ाएब मनुष्यकेँ बेसी आसान बुझाइ छैक। मिथिलांचलमे प्रायः इएह होइत रहल अछि।

युग-परिवर्तनसँ मिथिलाक मानव जीवन पर इएह द्विमुख चोट पड़ल आ एकर अनुषंग आनो कैक तरहक उलट-फेर भेल। एही उलट-फेरक स्थितिमे अपन जमीन तकैत आ गमलाक सुख दिश आकर्षित होइत मानसिक द्वन्द्वक धरातल पर गोविन्द झाक रचना-संसार बसल अछि। संसारक कोनो भाषाक रचना किएक ने हो, ओकर मूल उद्देश्य आइ इएह थिक जे सामान्य जनजीवन केँ ओकर दुर्दशाक दारुण्य ओ देखा देअए, ओकरा ओकर शक्तिक बोध करा देअए। विजय देव नारायण साहीक प्रसिद्ध व्याख्यान *साहित्य आ साहित्यकारक दायित्व* मे एहि विषयपर फैलसँ विचार कएल गेल अछि। भारतक विभिन्न भाषाकेँ समेटैत अपन एकटा वक्तव्यमे *यू. आर. अनन्तमूर्ति* कहैत छथि जे भारत देशक साहित्य बाइस भाषामे एके बात कहि रहल अछि। तमिल उपन्यासकार सु. समुत्तिरम केर *एक घेरे से बाहर* देखी अथवा ललितक *पृथ्वीपुत्र* देखी–अपन उद्देश्यमे ई कतहु अलग नहि अछि। जेना कि ऊपर चर्चा भेल अछि, सामान्य जनजीवनक सर्वांगीण फलक समाजनीति आ राजनीति –एही दुनूसँ प्रभावित, प्रताड़ित आ नियंत्रित होइत रहैत अछि। देरिदा आ हावरमासक चर्चा करैत भारतक विभिन्न भाषाक साहित्यमे उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर-आधुनिकता पर विचार होअए लागल अछि। मैथिल समाजमे एखन धरि ठीकसँ आधुनिकतो नहि आबि सकल अछि। सामाजिक जीवनक आचार-संहिताक निर्मातागण एखनधरि मैथिलकेँ एकटा सुलभ आ मनोनुकूल जीवन जीबए देबय, लेल तैयार नहि छथि। ओ वर्ग जे समाजकेँ अपना नियंत्रणसँ चलब' चाहैत अछि, वास्तविक अर्थमे ओ नियंत्रण प्रताड़ना थिक। एहनामे मैथिल समाज पर उत्तर-आधुनिक दृष्टिक कोन कथा, आधुनिक दृष्टिसँ विचार करब सेहो एखन अपराध थिक। कहबा लेल मिथिलामे आ मैथिलमे बहुतो परिवर्तन आएल अछि। मुदा से परिवर्तनक भ्रम थिक। एहना मे मैथिली साहित्य जतेक आधुनिक भए सकल अछि, से मैथिलीक रचनाकारक तीक्ष्ण प्रतिभा, प्रखर जीवन-दृष्टि आ प्रगतिशीलताक प्रति, जीवनक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गतिकताक प्रति अदम्य साहसक फल थिक। पं. गोविन्द झा अपन बयसक आठम दशकमे आबियो कए ततबा प्रगतिकामी आ आधुनिक छथि जतबा आजुक कोनो युवा रचनाकार छथि।

कोनो रचनाकारक दायित्व चारि स्तरपर बनैत अछि--सामाजिक चेतना, पारिवारिक चेतना, मानवीय चेतना, ब्रह्माण्डव्यापी चेतना। गोविन्द झाक सृजनशीलताक दायित्व एहि चारू स्तर पर बेस साकांक्ष छनि। पूर्वमे जाहि समाजनीति आ राजनीतिक चर्चा कएल अछि, ताहि प्रसंगमे ई स्पष्ट कए देब आवश्यक अछि--केन्द्रीभूत भए कए हिनकर रचना-संसारमे राजनीतिक साकांक्षता नहि छनि। मुदा जे छनि, अर्थात् समाजनीतिक साकांक्षता, से ओही राजनीतिक दबावक अनुषंग थिक अथवा ओकर प्रतिफल थिक। बिहारक वर्तमान राजनीतिक स्थितिक सूत पकड़ने गोविन्द झाक बाल्यकालक राजनीतिक स्थिति धरि चल जाउ, तँ स्पष्ट भए जाएत जे देशक एहि उपेक्षित भूखण्ड, मिथिलाक सामाजिक परिवेश की छल आ की अछि...।

गोविन्द झाक पहिल कथा सन् 1947 मे प्रकाशित भेल। जँ प्रकाशन-वर्षक आधार पर गणना कएल जाए तँ उनचास वर्षक सृजन-यात्रामे हिनकर उपलब्धि पर ध्यान देबय पड़त। मैथिली कविता-धारामे हिन्दीक तर्ज पर अथवा अपन मौलिक दृष्टिसँ प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नव कविता आदि आन्दोलन आएल मुदा मैथिली कथा सहित्यमे एहि तरहक कोनो आन्दोलनक चर्चा नहि अछि। हिन्दीक 'नई कहानी' जकाँ मैथिलीमे कोनो 'नव कथा' अथवा 'नूतन कथा' आदि पदबन्धक प्रचार-प्रसार नहि भेल। प्रो. नामवर सिंह अपन पुस्तक **कहानी, नई कहानी** मे लिखैत छथि :

"रूप आ शिल्पक नवीनता सामान्यतः लोकक ध्यान सबसँ पहिने आकृष्ट करैत अछि...शिल्पकेँ लए नव प्रयोग करबाक प्रवृत्ति आजुक कविए जकाँ कथाकारो मे अछि आ कविता जकाँ किछु कथो मात्र प्रयोगक लेल लिखल गेल।... शैलीक अतिरिक्त कथाक आन्तरिक रूपोमे बहुत परिवर्तन भेल अछि। एहि बीच कथाक रूप एतेक विस्तृत भए गेल अछि जे बहुत रास निबन्ध, स्केच और रिपोर्तजो कथाक सीमामे आबि गेल अछि। कौखन अइ साहित्य-रूपक सीमा एक-दोसराक भीतर एते दूर धरि चलि जाइत अछि जे ओकरा फुटाएब कठिन भए जाइत अछि। एक्के रचना कखनहुँ स्केच थिक आ कखनहुँ निबन्ध।...जे छोट-सन बात पुरान कथाकार लेल अपर्याप्त छल, ओकरे नव कथाकार कथा लेल पर्याप्त मानि लेलनि अछि आ फेर ओकरा भीतरसँ ओ लोकनि कथाक लेल कथानकक विभिन्न दिशाक विकास कएलनि अछि।"

मैथिली कथा-साहित्यमे साहित्य-रूपक ई सीमा हरिमोहने झा तोड़ि देने छलाह। हुनकर गद्य-लेखन पर जँ ध्यान देल जाए तँ सूक्ष्म पठनक दर्शन भए सकैत अछि। हुनकर अनेक एहेन निबन्ध अछि जकरा कथा कहबामे कोनो भाँगठ नहि। एहिना हुनकर कथोक प्रसंग कहल जा सकैत अछि। तात्पर्य ई, जे जँ हिन्दी जकाँ मैथिलीयहुमे कथा-आन्दोलन ताकल जाए तँ शिल्पक स्तर पर आ विषयक स्तर पर 'नई कहानी' क तर्जक कथा हरिमोहन झाक रचना-संसारमे भेटि जाएत। मुदा जँ कि मैथिलीमे एहि सभ प्रकारक आलोचना नहि लिखल गेल अथवा मैथिलीक कथाकार लेखनकार्यक संग-संग झंडा लए लए जुलूस नहि बहार कएलनि तँ मैथिली कथा मात्र मैथिली कथा रहि गेल।

सीमाक ई अतिक्रमण आ विधाक ई तोड़-फोड़ गोविन्दझाक गद्य-लेखनमे बेस जकाँ देखाइत अछि। आइ सभ भाषामे एहन रचनाकारक कमी नहि अछि जे निरन्तर अपन पोथीक संख्या बढ़ब' मे आम तेतरिक कोन कथा गूलरि-कठजामुन लिखि-लिखि ढेरी लगा रहल छथि। पोथीक एहि तरहेँ बढ़ैत कँकोड़बियान देखि कए एकटा विद्वान कहने छथि--पहिने लोक एगाहर गोट पोथी पढ़ि कए एक गोट पोथी लिखैत छल आ आइ लोक एक गोट पोथी पढ़ि कए एगारह गोट पोथी लिखैत अछि। ओना सत्य तँ ई अछि जे आब ओहो एक गोट पोथी पढ़बाक आवश्यकता लोक नहि बुझैत अछि। एक गोट पोथी देखि कए एकैस गोट पोथी लिखए बैसि जाइत अछि। पं. गोविन्द झा मैथिली लेखनक ओहेन रचनाकारमे सँ छथि जे असंख्य पोथी पढ़लाक बाद एक गोट पोथी लिखए सोचैत छथि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा पर समान अधिकार रखनिहार रचनाकार गोविन्द झाक दखल आनो-आन भारतीय भाषाक साहित्य आ लिपि पर छनि। उनचास वर्षक सृजन-संधानमे मात्र दू गोट कथासंग्रह *(सामाक पाती, नखदर्पण)*, तीन गोट नाटक *(बसात, रुक्मिणीहरण, अन्तिम प्रणाम)* एक गोट जीवनी *(उमेश मिश्र)*, एक गोट उप[illegible] *(विद्यातिक आत्मकथा)* तथा एक गोट *मैथिली शब्दकोश* प्रकाशित छनि। अइमे सँ कैकटा पोथी अथवा पोथीक अंश भिन्न-भिन्न भाषामे अनूदितो अछि। ओना लिखबा लेल ई ढेरी रास कविता सेहो लिखलनि। मुदा जँ कि कविता प्रकाशित नहि करौलनि, कविक रूपमे नहि जानल गेलाह। बहुत कम लिखि कए मान्यताक एहि शिखर पर पहुँचि जाएब, गोविन्द झाक रचनाधर्मिताक स्तरकेँ रेखांकित करैत अछि।

विषयक स्तर पर पूर्वहु कहल जा चुकल अछि जे हिनकर रचना-संसार बेसी काल समाज,परिवार आ व्यक्तिक चारू कात घुमैत रहैत अछि। राजनीतिक परिवेश पर हिनकर लेखनी नहिए जकाँ चलल अछि। जँ कतहु चललो अछि तँ नव धनाढ्यक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

फोँक अहंकार आ ओहि वर्गक सांस्कृतिक विकृतिकेँ उघार करए लेल । संक्षेपमे ओकर कुरूपता, ओकर बीभत्सता उजागर कए देने छथि । ई कहब आवश्यक होएत जे एहि कार्यमे हिनका पर्याप्त सफलता भेटलनि अछि आ तकर मूल श्रेय हिनकर कथा-शिल्पकेँ जाइत अछि । हिनकर कथा-लेखनक बेसी विषय मिथिलाक सांस्कृतिक ह्रास, मानव मूल्यक लोप,अमानवीय वातावरणक निरन्तर वृद्धि पर केन्द्रित अछि । एहि क्रम मे हिनका बेसी काल इतिहास, पुराणक नायक मोन पड़ैत रहैत छनि । अपन अति प्राचीन परम्परा आ समकालीन जीवनक विकृतिकेँ मिलाकए कथाकार गोविन्द झा एकटा इमानदार अन्वेषक जकाँ विकृतिक प्रेरणादायी सूत्र तकैत रहैत छथि । हिनकर अधिकांश कथाक अभिव्यक्ति-शिल्प कथावाचनक शिल्पमे अछि जाहिमे वाचक अपन अनुभव सुनबैत रहैत अछि । ई शिल्प, एक्के संग कथाक कथ्य आ शिल्प दुनू पर विचार करए लेल बाध्य करैत अछि । हिनकर कथाक कथावाचक आओर केयो नहि, कथाकार स्वयं छथि जे प्रथम पुरुष एकवचनमे बात कहैत रहैत अछि । कथा मे अपन अनुभूत घटनाक विवरण सुनबैत कथाकार सतत अपना केँ सामान्य लोकक स्थितिमे पेन्ट करैत बुझाइत रहैत छथि । गोविन्द झाक करीब-करीब समस्त कथा हिनकर मित्र, कुटुम्ब आदिक संग घटल हिनकर घटना जकाँ अछि । एहेन कथा कमे अछि जाहिमे स्वयं कथाकारक उपस्थिति नहि हो । जाहि कथामे हिनकर अपन उपस्थिति रहैत छनि, ताहिमे ई अपनाकेँ सतत अकचकाएल, क्षुब्ध, उपेक्षित, पछुआल, आधुनिकताक (?) छूतिसँ दूर, विकृतिक संक्रमणसँ बाँचल, अत्याधुनिक आ सुविधासम्पन्न नहि रहि पएबाक अपन स्थिति पर किंचित् क्षुब्ध मुदा संतुष्ट, तिलिस्मी ढंगेँ व्यवस्थाक यांत्रिकतामे प्रवेश पाबि लेनिहार कुटुम्बादिक चातुर्य पर छगुन्तित मुदा स्वयं तेहन नहि भए पएबाक कनेको मलाल नहि, एहि चमत्कारक संग सुविधासम्पन्न भेल कुटुम्बादिक आँखि पर चढ़ैत चर्बी आ ओकर उड़ाओल जाए बला मखौल पर द्रवित....रूपमे प्रस्तुत कएने छथि । कथामे हिनकर एहि तरहक निजी उपस्थिति कथाकारक जीवन-दृष्टिक चित्रणक अलावा आओर किछु नहि थिक । अभिप्राय ई नहि जे ई आधुनिकताक प्रति कोनो उपेक्षाभाव आ परम्परा तथा पाखण्डक प्रति अपेक्षाभाव रखैत छथि । असल मे आधुनिकताक प्रति देस अनुरक्ति हिनकर सृजन आ जीवनमे बुझाइत अछि । मुदा आधुनिकताक विकृतिक पाछू आँखि मूनि दौड़बामे अपस्याँत नहि रहैत छथ, ओकर विकृत आ विद्रूप आचरण अथवा एप्रोचसँ परहेज रखैत छथि । तहिना पारम्परिक रूढ़ि, पाखण्ड, धर्मान्धतासँ सेहो असंक्रमित रहए चाहैत छथि । किन्तु हिनकर एहनो एप्रोच भेटैत अछि जाहिसँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे ई सर्वथा परम्पराक प्रति नकारबोधसँ आक्रान्त नहि छथि । परम्परामे एखनहुँ एहेन बहुत किछु भरल अछि, जे बहुत उपयोगी आ आजुक जीवनकेँ सहज बनएबामे अत्यावश्यक साबित भए सकैत अछि ।

गोविन्द झाक कथा-लेखनक फलक-विस्तार हरिमोहन झासँ रमेश धरिक कथा-लेखनमे ताकल जा सकैत अछि । कथ्य आ शिल्पक समस्त सीमा-बन्धकेँ तोड़ैत आ विधात्मक बन्हेजकेँ फानैत हिनकर कथासंसार इतिहास, पुराण, गीता सँ ल' कए बम, पिस्टौल, तमंचाक उपयोग धरि पसरल अछि । जादू-टोना, झाड़-फूक, पीढ़ीक संघर्ष, युवा पीढ़ीक प्रगतिकामनाक प्रति सदयता, मानवताक समर्थन, अमानवीयताक प्रति घृणा, धार्मिक पाखण्डक खण्डन, अराहाय वर्गक प्रति सदाशयता, सांस्कृतिक थातीकेँ सुरक्षित राखि सकबाक प्रयास हिनका कथामे अपन सम्पूर्ण शक्तिक संग उपस्थित रहैत अछि । सभसँ पैघ बात जे गोविन्द झाक कथालेखन एकटा सकारात्मक एप्रोचक कथा-संसार थिक जतए अधिकांश कथाक परिणति एकटा सुखद निर्णय पर होइत अछि । सम्पूर्ण कथाक विपरीत परिस्थितिक अछैत कथाक अन्त एकटा निर्णयसँ होइत अछि आ ओहि निर्णयक एकटा तार्किक आधार होइत अछि । ओ निर्णय चाहे आधुनिकतावादी युवावर्गक पक्षमे हो अथवा परम्परावादी बुजुर्गक पक्षमे, ओकर तार्किक आधार सर्वथा मानवीय सरोकार आ मानवाधिकारसँ प्रेरित रहैत अछि । एतए एहि मानवाधिकार शब्दक अर्थग्रहण कोनो राजनीतिक सूत्रसँ नहि कएल जएबाक चाही ।

चर्चा भए चुकल अछि जे गोविन्द झा एकटा सफल कथाकारक संग-संग एकटा सफल भाषाविद् सेहो छथि । आ तकर उदाहरण हिनकर कथाक भाषा-शिल्प भए सकैत अछि । कथाक शिल्प-निर्माणमे गोविन्द झा कतेक चिन्तन कएलनि–से तँ ओएह कहताह मुदा कथा स्वयं जे स्पष्ट करैत अछि ताहिमे शब्द प्रयोग स्तर पर तँ ई साफ देखाइत अछि जे बहुभाषाविद् होएबाक कारणेँ कतोक ठाम संस्कृत, अंग्रेजी अथवा हिन्दीक शब्द आबि टपकल अछि । मुदा शब्दानुशासन ततेक साधल छनि जे ओकर प्रयुक्ति कोनो ठाम अवैध अथवा अनुपयुक्त नहि बुझाइत अछि । कैकटा कथाक प्रतीकात्मकता हिनकर गद्यकेँ काव्यमय बनबैत अछि, जे ओकरा बेर-बेर पढ़बाक लेल बाध्य करैत अछि । सस्पेन्स (''एक दुर्लभ जन्तुक खोज''सन आओरो कैकटा कथा) निरन्तर जिज्ञासा बढ़बैत रहबाक कला, संयोगवशताक तिरस्कार, पंक्ति आ चित्रणक काव्यात्मकता, संवादक नाटकीयता–ई सब मिलिकए कथाकेँ रोचक, प्रभावोत्पादक आ आकर्षक बनबैत अछि । कहल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जा चुकल अछि, जे जाहि विषय पर कतोक रचनाकार निबन्ध लिखय लगताह ओहि विषय पर गोविन्द झा बेस आकर्षक आ मनलग्गू कथा लिखि कए प्रस्तुत कए सकैत छथि ।

भाषाक स्तर पर हिनकर कथासभमे अपूर्व आकर्षण छनि। ओना कहबा लेल किछु पूर्वाग्रही एहनो भेटि जाइत छथि जे कहैत छथि 'गोविन्द झाक कथाक विषय की रहैत छनि जे ओकरा पढ़ल जाए' । ओहेन पाठकक लेल इएह कहल जएबाक चाही जे हुनका अपन सोच विकसित करबाक चाही । आधुनिकता मात्र आगू दौड़ि कए चल जाएब नहि थिक। दौड़ैत काल मन राखक चाही जे हम जाहि जमीनपर दौड़ि रहल छी, से जमीन कतेक ठोस अछि। गोविन्द झा सतत अपन जमीनक निस्सनता मोन रखैत छथि आ निरन्तर आगू लेल डेग उठौने रहैत छथि । एहि क्रममे अपन आँखिओ खोलने रहैत छथि जे अगिला डेग जतए राखब ओतुक्का जमीन कतेक ठोस अछि। ओहि पूर्वाग्रहीकेँ ई मानि कए चलयक चाही जे गोविन्द झा लेस्बियन एटीच्यूड पर आ कि आधुनिकतम सभ्यतामे पत्नी बदलबाक प्रवृत्ति पर तँ कथा नहि लिखताह । जाहि संसारसँ हुनका ने तँ कोनो सरोकार छनि आ ने राखए चाहैत छथि, ताहि पर ओ रचना किएक करथु । समकालीन समयमे बहुत रास वयसाहु लोक एहेन छथि जे किशोर वयसक प्रेमी जकाँ प्रगति-शीलता आ आधुनिकताक कहरिया बनल फिरैत छथि । एक राति लेल पत्नी बदलि कए स्वाद बदलबाक प्रवृत्ति अथवा एहेने बहुत रास आधुनिक (विकृत) प्रवृत्तिकेँ ओहो पसिन नहि करताह । मैथिलीक वर्तमान लेखनमे गोविन्द झा सभसँ जेठ पीढ़ीक रचनाकार छथि । परिष्कृत परम्पराक रक्षा आ उपयोगी आधुनिकताक अनुगमनक आग्रही रचनाकार गोविनन्द झा एहि बातक समर्थक छथि जे ओ सम्पूर्ण आधुनिकता आ सम्पूर्ण परम्परा शिरोधार्य होएबाक चाही जे एकटा स्वस्थ समाजक निर्माण करए आ आबयबला पीढ़ीकेँ एकटा पारदर्शी तथा पवित्र संस्कारक सीख देअए। –ई बात कतहु हिनकर वक्तव्यमे नहि अछि, ई हिनकर रचनाक नवनीत थिक।

अपन परिवार, मित्र, कुटुम्बक संग बिताएल जीवनक एक-एक तन्तुमे गोविन्द झाक ओतए कथाक खजाना संगृहीत अछि। आ एकरा संगहि हिनकर प्रखर भाषा-शिल्प, श्रेष्ठ रचनाकौशल सेहो अछि। नाटकीय प्रस्तुति कथाकारक अभिव्यक्तिकेँ अद्भुत रूपेँ सशक्त आ प्रभावोत्पादक बनौने अछि । शैल्पिक स्तर पर विधात्मक तोड़-फोड़ हिकनर सृजन-संसारक आयामकेँ जतेक विस्तार देने अछि, से सहज रूपेँ ककरहु लेल आकर्षणक विषय भए सकैत अछि । मिथिलांचक सर्ववर्गीय, सर्वदलीय आ सर्वजातीय जनसमुदायमे युग-परिवर्तनक विकृति, सुकृति जाहि-जाहि विधिएँ अपन प्रभाव छोड़लक, आधुनिकताक विकृतिक चोट जतए-जतए पड़ल आ सुकृतिक फूल जतए-जतए फुलाएल, परम्परा आ आधुनिकताक खींचा-तानीमे जे-जे नस जतेक तनाएल, नैतिकताक जाहि सीमा धरि हनन भेल, प्रगतिक नाम पर आ नव-नव योजनाक नाम पर पछिला उनचास वर्षक स्वाधीन भारतमे जतेक बकबासपूर्ण कार्य भेल, मानवीय संवेदनाक ह्रास आ मानवीय सम्बन्धक विगलन जाहि तरहक क्षुद्र तथा तात्कालिक स्वार्थक लेल भेल–से सबटा विलक्षण भाषा-शिल्पमे गोविन्द झाक कथा-संसारमे संचित अछि। हिनकर कथा अनुभूत सत्यक सहज संवादक पिटारा थिक, जतए ने तँ फोँक कल्पनाक कतहु संभावना परिलक्षित होइत अछि आ ने संयोगवशात् कोनो घटनाक अवतरण। चांस उत्पन्न कए कथामे चकाचौंध अनबाक प्रवृत्ति हिनका ओतए कतहु नहि देखाइछ । सामान्य जनजीवन सँ कथाकारक सरोकारकेँ चिह्नित करैत गोविन्द झाक कथा सतत कथा जकाँ आगूक कथा जानि लेबाक जिज्ञासा बढ़बैत रहैत अछि, कविता जकाँ फेर-फेर पढ़बाक हेतु प्रेरित करैत रहैत अछि आ निबन्ध जकाँ ललितगर तथा नाटकक संवाद जकाँ मोनमे भीजैत रहैत अछि ।

●

मातृभारतीक मनीषी काव्यकार पं. गोविन्द झा

□ डा. श्री देवकान्त झा

पं. गोविन्द झाक प्रसंग सुप्रसिद्ध समालोचक रमानाथ झा लिखैत छथि : "मैथिली काव्यसाहित्यमे श्री गोविन्द झाक नाम प्राञ्जल भाषा-शैली, सुस्पष्ट वस्तु-विन्यास एवं नवयुग-प्रवृत्तिग्राहिणी स्पन्दनशील सूक्ष्म कल्पनाक दृष्टिसँ अग्रगण्य अछि। ई जे किछु लिखल अछि से अनुभव कएलाक पश्चात् अपन अनुभूतिक प्रेरणासँ, जाहिमे नहि तँ पाण्डित्य-प्रदर्शनक प्रवृत्ति अछि आओर ने चमत्कार-प्रदर्शनक। विषयक उपस्थापनमे भावानुकूल माधुर्य एवं ओजक सामञ्जस्य एतेक सहजतासँ ई करैत छथि जाहिमे भाषाक प्रसाद कतहु विघटित नहि होइत अछि आओर ने शब्दक मर्यादित स्वरूपहिमे कोनो बाधा उपस्थित होइत अछि । ई प्रगतिशील छथि, युगीन समस्याक ग्रहणक हेतु, प्रयोगशील छथि, भावाभिव्यक्तिक नव-नूतन उक्ति-भङ्गिमाक हेतु ।" 1965

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

इसवीक एहि आलोचकीय टिप्पणी (नवीन गीत) सँ स्पष्ट अछि जे पण्डित झा ताधरि मैथिली काव्य-क्षितिजक एक प्रकाशमान नक्षत्रक रूपमे स्थापित भए गेल छलाह ; किन्तु अद्यावधि हिनक एकोटा काव्य-संग्रह प्रकाशित नहि भए सकल अछि ।

पण्डितजीक सौजन्यसँ हुनक अनामित काव्यसंकलनक पाण्डुलिपि हमरा उपलब्ध भेल अछि । लगभग पचास वर्षक काव्य यात्राक एहि संकलनमे नव्य धाराक 23, प्राचीन धाराक 40, ग्राम्य धाराक 7 ओ बालधाराक 7— कुल 77 गोट रचना अछि । एहि सतहत्तरिमे नौ गोट कृति अनूदित अछि । वर्गीकरणक आधार प्रवृत्ति वा काल नहि, युगधारा थिक । युगीन प्रवाहक अनुरूप रुचिवैचित्र्य आकलित अछि । बहुत संभव जे प्रकाशन धरि एकर रूप अधिक वैज्ञानिक बनि जाए। तेँ ई विवेच्य नहि । बहुवस्तुस्पर्शिनी प्रतिभा, नवोन्मेषिणी दृष्टि, भावानुगामिनी भाषा, लोकधर्मिता आ युगसापेक्षता हिनक विशेषता अछि । प्राचीनताक माटि पर नवताक अभिषेक अछि । नव पुरान एतय तेना ने धुलि-मिलि गेल अछि जे कोनो विभाजक रेखा नहि खिचल जा सकैछ । परम्परामुक्त रहितो ई परम्परासँ संसक्त छथि । कालक नैरन्तर्यमे जे परम्परा नहि भासय, जाहिमे अग्रिम विकासक संभावना बनल रहय, जे युगानुरूप व्यवस्थित होइत जाय तथा जाहिमे ध्वंस नहि निर्माणक इंगिति भरल रहय से परम्परा हिनक दृष्टिमे सर्वथा संग्रहणीय थिक। परम्परा विद्रोह नहि पुनर्व्यवस्थाक प्रश्न थिक । सामाजिक यथार्थकेँ बुझब आ ओकरा काव्यमे सहज रूपसँ प्रतिबिम्बित करबे कविकर्म थिक।

कवि गोविन्द झा बहुमुखी प्रवृत्तिक कवि छथि । सत्यम् शिवम्, सुन्दरम्-हिनक काव्यक मूल स्वर थिक । सौन्दर्य, प्रेम ओ यौवन हिनक काव्यधाराक प्रथम चरण थिक । 'असमंजस' शीर्षक कवितामे गरमीक साँझक मनोरम वर्णन अछि । सन्ध्यासुन्दरी प्रणयक मधुर मौन निमन्त्रण दए रहल अछि । फुलवारीक महमही, चानक चकमकी, विभावरीक उल्लास-विलास, मलयानिलक मदमस्ती, भ्रमर-दलक गुंजन आ कोकिलक मधुमय गायन, प्रेम, सौन्दर्य आओर यौवनक एक अपूर्व रसमय संसार सजा रहल अछि :

छल मधु विभावरी मोद-भरल
छल चन्द्रिकाक नव नृत्य तरल
छल तारक चकमक चमकि रहल
छल शशिमंडल निर्मल अविकल
देखल हँसि-हँसिकेँ रजनीकर
लए लए कर-पीयूषक सीकर
कहि रहल पथिक, स्वागत-स्वागत
विश्राम करू, विश्राम करू।

पथिक अहृदय नहि, सहृदय ('रसिक पथिक') छथि । तेँ असमंजस व्यर्थ । एहन रसमय परिवेशमे कोन 'सरस पथिक' आड़ि-धूर मानत ? जे शुष्क वा नीरस होएत सएह ने अपन जड़ताकेर प्रदर्शन करत, ई व्यंग्य सहृदय हृदयगम्य अछि । नायक नायिका विषयक 'रति' भावक विलक्षणता अछि । कतहु रोमांसक आसव अछि तँ हृदयक द्राक्षासव सेहो । प्रेमक उल्लास औ यौवनक उन्मद देखिते बनैछ :

एक उज्ज्वल हास हो प्रिय
एक उज्ज्वल हास हो
शीर्ण पत्रक वाटिकामे मुकुलमय मधुमास हो
जीवनक भीषण अमामे पूर्णचन्द्र प्रकाश हो
एक उज्ज्वल हास हो ।

छायावादी काव्यमे प्रकृति नारीमय आ नारी प्रकृतिमय रहल अछि । कविवर गोविन्द झामे प्रकृति-सुषमाक साम्राज्य खूब जमल अछि । सहज मानवीकरण, आलंककारिक चित्रण तथा उद्दीपन रूपमे एतय प्रकृति-नटीक रंगमय उल्लास देखिते बनैछ । *'कादम्बिनी'* शीर्षक कविता साहित्य-संसारक एक उत्कृष्ट उपलब्धि थिक :

आउ हे कादम्बिनि सुकुमारि
तप्त गगन तल तप्त भुवन तल
तप्त सकल उरुतल, करु शीतल
जल विनु जीवन जर्जर विह्वल दिअ संजीवन वारि

मानवीकरण विलक्षण छायावादी शैलीमे एतय धरा-गगनक सुन्दर संयोगक आयोजन अछि । जले जीवन थिक आ ग्रीष्मक तापसँ संतप्त धराक लेल श्यामल घटाटोप आ वृष्टिजलक सुखद सुकोमल स्पर्श रोमाञ्चक संजीवनी शक्ति अछि । पावस-सुन्दरी बक-पंक्तिक माला तथा सुषमा-सौरभसँ भरल पुरल डालाक साँठ लए आनन्दमुग्धा धराक आङनमे मानू वैवाहिक यज्ञमण्डपक धूम मचा देलनि अछि । एहन विलक्षण कोबर घरमे मयूरीवृन्दक नाच तथा कोकिल समूहक मधुमय गायनसँ सहृदय-हृदय झूमि रहल अछि । धरा गगन मध्य नववधू मेघ अपन गहनाक खनक, चमक ओ सम्मोहनसँ व्यापक सृष्टि करैत केलि भवनमे रास मचौने अछि । बरखाक रानी मेघ एहन कटगर कारी रंगक नूआ पहिरने छथि जाहिमे रंग बिरंगक गोटा आ कुसुमी पाढ़ि छैक । घोघ हटा हाथ पकड़ि प्रकृतिबाला नवकनिञा बदलीरानीक संग नचतीह । मेघक एहि आवाहन-गीतमे कल्पनाक रंग, भावक उल्लास, रसराजक विलास तथा रूपक उत्प्रेक्षादि अलंकारक छटा तथा कोमलकान्त पदावलीक मधुर विन्यास एकत्र दर्शनीय अछि ।

प्रकृतिमे ईश्वरीय सत्ताक आभास रहस्यवादक गढ़ थिक। छायावादक एहि अगिला सीढ़ी पर सेहो पण्डितजी खूब जमल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

छथि। *आलोक* शीर्षक कवितामे आध्यात्मिक रहस्यक प्रति कविक जिज्ञासा-भाव मुखर अछि :

''कतएसँ आबए ई आलोक ?
चञ्चल-चञ्चल चारु चन्द्रिका करए नृत्य निस्तन्द्र
देखिदेखि से कौतुकपूर्वक हँसथि गगनमे चन्द्र
की संवाद ! कोन नगरीसँ ! लबए ई आलोक ?

निर्मल चन्द्र-ज्योत्स्ना तथा तारामण्डलक रास स¯सीममे असीम सत्ताक स्पष्ट आभास दए रहल अछि जे संसार रहस्यमय थिक। एहि रहस्यमे छिपल जे सत्ता सएह नित्य थिक। यैह आलोक जीवात्मा-परमात्माक आत्मारमण करबैत अछि।

'प्रभाती' शीर्षक कवितामे औपनिषदिक महोच्चार ''जाग्रत उत्तिष्ठत प्राप्य वरान् निबोधत'' स्फुट अछि जे रहस्यवादक ऊर्जास्रोत थिक :

सुनि पड़ल सहसा समुज्ज्वल राग
जाग रे चिर सुप्त चेतन जाग

काव्यधाराक अगिला मोड़ पर कवि प्रगतिवाद दिशि मुड़ि संघर्षशील मनुक्खक व्यथा-कथा कहैत छथि। घोर आर्थिक विषमतासँ संग्रस्त पूंजीवादी जाँततर पिसाइत सर्वहाराकेँ वाणी देब कविक दायित्व बनि जाइत अछि। अतएव, *'अन्न देवता'* शीर्षक कवितामे बुभुक्षासँ पीड़ित मानवताक प्रति कवि व्यंग्यपूर्ण शैलीमे अपन आक्रोश आ रोष व्यक्त करैत छथि :–

अरे मुट्ठी भरि मनुक्खक दास
एकसरे हम खाउ तोहर मांस
सन्निहित छहु जकर कण-कण मध्य
लाख भूखल मानवक अंशांश

अन्ततः रौद्रक पेटसँ करुणाक उद्रेक होइछ, कविक क्रोध घमि करुणाक गंगा बनि जाइत अछि।

आजुक युग विज्ञानक थिक। विज्ञानक चमत्कार हमरा चन्द्रलोक पहुँचा देलक अछि। कदाचित् हम ओतए नगरो बसा दी, खेती-पथारी सेहो कए ली। मुदा मुट्ठी भरि पूंजीवादी शक्तिक कठपुतरी बनि विज्ञान आइ मानवताक ध्वंसमे जुमल अछि, निर्माणमे नहि। तेँ वरदानक बदला अभिशाप बनल वैज्ञानिक शक्तिकेँ ललकारैत कवि कहैत छथि :

''कतए उधने जाइ छह हे युगपुरुष ई
विकट बुद्धिक हऽर
पकड़ने विज्ञान वरदक नाथ
गर्वसँ कएने समुन्नत पर्वताकृति माथ ?
जा रहल छह आइ जोतए लेल नवका चास
जोति चुकलह मगज केर चौमास
जोति चुकलह देश भरि सब चास
जोति चुकलह चीन ओ जापान
रूस, अमरीका, अरब, ईरान
कते उपजओलह एखनधरि धान ?

''विकट बुद्धिक हऽर'' बुद्धिक अतिवादिता पर चोट करैछ। वैषम्य-विरोधमूलक पर्वताकृति माथ/सर्षपाकृति माथ शोषक-शोषितक प्रतीक थिक। विज्ञानक बढ़द कहब वैज्ञानिकताक यथेष्ट उपहास थिक। 'मगज केर चौमास' मे तिक्ख व्यंग्य अछि जे बुद्धिवादक नकेल उधेसि दैत अछि। गगन आ नक्षत्रलोकक बाट जोहनाहर विज्ञान ततेक अक्षम अछि जे सर्वहाराक लेल वा कोटि-कोटि भुक्खड़ जनता लेल भोजनो-वस्त्रक ओरियान नहि कए सकैछ - व्यंग्यक स्वर कतेक अन्तर्वेधी अछि। केहन तीव्र कटाक्ष अछि आजुक पंगु व्यवस्था पर।

सत्य-असत्य शीर्षक कविता यात्रीजीक 'परम सत्य'क तर्ज पर प्रगतिवादक घोषणापत्र थिक। धनक वितरण भगवान् वा भाग्यक देल नहि, मानवीय पुरुषार्थ वा कौशलक उपजा थिक। भाग्य आ भगवान बुढ़िया फुसि अछि। श्रमशील मनुक्खे टा सत्य थिक :

सत्य भूख थिक, सत्य पानि थिक, सत्य परम थिक काम
सत्य भात थिक, सत्य दालि थिक, सत्य मांस ओ चाम
× × × ×
सत्य एक विकराल मूर्ति थिक, सत्य स्वयं थिक काल
जीभ एकर धधरा थिक लह-लह, दृग अङोर दुइ लाल

एहन कविता मे विद्रोहक स्वर आ क्रान्तिक दीपशिखा लहराइत अछि। *'ब्रह्म ओ ब्रह्मा'* शीर्षक कवितामे कविक विद्रोही भ्रूभंग प्रखर अछि :

आब चलत नहि काज
ब्रह्म बनने अओ बाबू !
रहए देत नहि लोक आब निर्लिप्त
लेपिए देत केओ बलजोरी
चानन नहि, लिढ़ियाही पोखरिक थाल !

आज श्रमशील लोक अपन भाग्यक निर्माता स्वयं अछि। तेँ ओ ब्रह्मा (निर्माता) बनत, ब्रह्म (कठपुतरी भगवान) नहि।

सहज प्रकृति-चित्रणक दृश्यावलीमे सेहो उपेक्षित-दलितक प्रति प्रगाढ़ सहानुभूति मुखर अछि। ग्राम्य पृष्ठभूमिमे चित्रित *मिथिलामे अगहन* नामक अपन सुप्रसिद्ध कवितामे कवि कहैत छथि :

कत कोटि प्राण एहि देशक छल आशामे
आवाहन करइत जनिक मूक भाषामे
अएला से अगहन पाहुन प्रकृतिक घरमे
लएला संदेश सोहागक मंगल-कर मे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गेनाक हार पहिराओल धरणिक गरमे
भरि ओल दूबि ओ धान हरित आँचरमे
पुर-पुरमे सुख-सम्पत्तिक लहरी चमकल
उर-उरमे परमानन्दक सौरभ गमकल

चिर प्रतीक्षाक पश्चात् मासोत्तम अगहनक आगमनक रसोल्लास, ऋतुवैभवक सोहाग-भाग तँ अछिए मुदा एगारह मासक आकुल प्रतीक्षाक बाद मासे भरि रहनाहर अगहन राजाकेँ 'पाहुन' आ 'कठिनहृदय परवासी' कहि कवि जे व्यंग्य वक्रोक्तिक बौछार कएलनि अछि, ताहिमे अपूर्व चमत्कार निहित अछि। कहू तऽ ई केहन जड़ आ उसठ छथि जे अपन घरमे पाहुन बनि अएलाह अछि। ई निर्मम प्रवासी थिकाह। चारि दिनुक इजोरिया आ फेर ओएह अन्हारगुज्ज राति– ई व्यंग्यार्थ कतेक चमत्काराधायक अछि। तैयो भारतीय संस्कृतिक प्रति निष्ठावान् कवि मार्क्सवादी झोँकमे अपन तुलसी-चौड़ाकेँ नहि बिसरलाह अछि जतए ग्राम-कन्या अपन मनोरथक दीप लेसि नित्य साँझ देखबैत छथि। कोनो अन्हर-बिहाड़िमे कवि अपन सांस्कृतिक अस्मिताकेँ उधिआए नहि देलनि अछि। पुनः एही कवितामे कविक परिहासप्रियता ओ संवेदनशील द्रावकताक एकत्र दर्शन होइत अछि :

खजनी, खएबेँ जँ पान कने तँ खा ले
कतिकहरक सूखल मुह कने चमका ले
अगहन पाहुन नहि आब अधिक दिन रहता
दिन-दिन तँ फेर गरीब देवता सहता

सरस विनोदी मुद्रामे वेदनाक टीस भरल अछि। गरीबीक कतेक सजीव चित्र अछि। सम्पूर्ण कवितामे त्रासद तत्व (tragic element) भरल अछि। अगहनक आगमनमे जतेक रसोल्लास अछि, ताहिसँ कतहु बेसी एकर बिछोहक कल्पनामे रोमाञ्चक पीड़ा अछि।

कालसर्प शीर्षक कविता प्रबल जनशक्तिक आह्वान करैत अछि जे प्रचण्ड क्रान्तिक बिरड़ो आनि पूजीपतिक बहिरा करैतक विषदन्त तोड़ि देत :

"अरे बाप ! अरे बाप !
सावधान, सावधान !
हे देखू, सामने सुच्चा करैत साप।
युग-सन्धिक सँझुका झलफल इजोतमे
क्रांतिक बाट पर पसरल अछि काल ई।"

ई नवतामूलक जनवादी कविता अछि। एतय चमत्कार अभिधामे अछि, व्यञ्जनामे नहि। प्रतीक-योजना अछि, मुदा संप्रेषणीयताक अकाल नहि। दृष्टि फरीछ अछि। बहिरा करैत पूजीपतिक प्रतीक थिक आ विषदन्त शोषणक। जनशक्ति शोषणक चक्कीकेँ जाम कए देत आ तखन उत्पादनमे पूर्ण सहयोग करत। जनवादी प्रवृत्ति रहितो कवि पूजीवादक विनाशक कामना नहि कए, संशोधनक अपेक्षा रखैत छथि। पूजीपति यदि लोक-कल्याणक साधक होएताह तँ कविक कल्पनाक शिव (निरीह जनता) एहि विषहीन करैत (शोषणमुक्त पूजीपति) केँ अपन कण्ठाभरणक रूपमे (मैत्रीबन्धमे) अङिया लेताह। कविक निष्ठा निर्माणमे अछि, विध्वंसमे नहि। अपन मूल-गोत्रसँ फराक रहितो एकर अपन अस्मिता अछि। बहिरा करैतक विपरीत जनशक्तिकेँ जादूगर वा सँपेरा कहब चमत्कारकारक अछि।

नवता सृष्टिक मूल धर्म थिक। परिवर्तन संसारक सहज प्रकृति अछि। एहि क्षणपरिवर्ती युगमे कोनो वस्तु स्थिर नहि रहि सकैछ। बदलैत दिन, मास, साल, बदलैत लोक, बदलैत देश, बदलैत व्यवहार–सब किछु नवे नव। तेँ प्रयोगशीलता काव्यक आवश्यक गुण। कविवर गोविन्द झा प्रयोगधर्मी छथि। तेँ हुनक काव्यमे जड़ता वा एकरसता नहि, शिल्पक गुणवत्ता आ प्रयोगक अभिनवता अछि। *खढ़पुतरीक सपना* शीर्षक कवितामे कवि आजुक मनुक्खक बड़ यथार्थ व्यंग्यचित्र प्रस्तुत कएलनि अछि :

थिकहुँ नहि मनुख, तैओ दिनमे कौआ-मेना
आ रातिमे गिदर-खिखीर
बुझि लैए मनुख आ
वञ्चित रहि जाइए बेचारा खेतक रस चिखबासँ

खढ़मनुक्ख मनुक्खक अनुकृति मात्र थिक। खेत-पथारमे मानवीय स्पन्दन भरि कवि आजुक लोकक विकृति पर तीव्र कशाघात करैत छथि। हाथ-पैर, आँखि-कान आ माथ-कपारक मनुक्ख आइ कदाचित् खढ़पुतरियोसँ दुर्विवेकी आ हीनतर अछि। ओकर ठकबुद्धितापर खढ़पुतरियोकेँ दया अबैत छैक। कतेक दयनीय आ जुगुप्सित अछि आजुक लोक!

आजुक जिनगी दुर्वह अछि आ लोक अनेरे अपस्याँत। युगक आपाधापी आ घोड़दौड़मे लोककेँ किछु हाथ नहि लगैत छैक। कौखन लोक जीवनकेँ गदहा बूझि ओहि पर अपनाकेँ सवार भेल अनुभव करैत अछि तँ कौखन लोक पर गदहा आ जीवन सवार भए जाइछ। तेँ एहि दौड़बाक प्रवृत्ति पर गंभीर चोट करैत युगचेता कवि कहैत छथि :

कौखन बूझि पड़ैए हम थिकहुँ गदहा
आ जीवन अछि हमरा पीठ पर सबार
मारि रहल अछि एड़ पर एड़
जे हम घोड़ा जकाँ दौड़ी सरपट

'सरपट दौड़बाक व्याकुलता' संवेदनहीन मानवीय जड़ताक दयनीय परिणाम थिक। अर्थतन्त्रक एहि लूट-खसोटमे व्यक्तिक आत्मा दम तोड़ि रहल अछि। जिजीविषा वा सबसँ आगाँ बढ़ि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जएबाक ललक खाहे जिनगीकेँ गदहा बनाबए वा जिनगी उघनिहार आदमी केँ। दुहू स्थितिमे व्यक्तिक प्राणकीट ओहिना औनाइत-बौआइत अछि जेना कि दूनू दिशासँ धधकैत काठक बीच कोनो कीड़ाक प्राण।

एखनुक घोर स्वार्थ-तन्त्र मानवीय संवेदनाकेँ घोरिकए पीबि गेल। नेत-ईमान आ दया-धर्म बिला गेल। आपसी सूझ-बूझक अभावमे सब एक दोसरकेँ बूड़ि बुझैत अछि :

सौँसे दुनियाँ हमरा बुड़िए बूड़ि बूझै अछि
से किएक तँ सौंसे दुनिया हमरा बुड़िए बुड़ि सुझै अछि

× × × ×

हम दुनियाँक गोबरख्तामे सड़ि रहलहुँ अछि
से किएक तँ हम दुनियाँ सँ एहिना दिन-दिन लड़ि रहलहुँ अछि

गामसँ नगर आ नगरसँ महानगर। किरानीसँ अफसरी आ अफसरीसँ मन्त्रीगिरि। एहि चढ़ा-उतरी आ भागदौड़मे हम जतेक आगाँ जाए चाहैत छी तनेक लक्ष्यसँ पछुआएल जा रहल छी। तेँ क्षयग्रस्त व्यवस्था पर कुठाराघात करैत कवि कहैत छथि :

किन्नहु नहि होएत हमरा बूते चढ़ल
नहि होएत, नहि होएत एको डेग बढ़ल
हकमै छी मुह बाबि बुढ़बा कुकूर जकाँ
घामसँ लगैए वस्त्र गोँतभिज्जू तूर जकाँ

आशा-निराशाक बीच हिचकोर खाइत लोक कहिओ सूर्योदय कहाँ देखैत अछि। इजोतक चमकी अन्हरियाक खाधिमे बिला जाइत छैक। अन्हार दुनियाँमे औनाइत लोक आशा-पिशाचीक दुराशामे जीवैत अछि। तीव्र संवेदना आ उत्कट उदासी कविक अन्तर चेतनामे परिव्याप्त अछि। "Tomorrow never comes" सत्यकेँ एतय एक अभिनव आयाम भेटल अछि। पद्यक आखर-आखर ध्वन्यात्मकतासँ ओतप्रोत अछि। संघर्षशील मनुष्यक व्यथा-कथा तलस्पर्शी अछि :

लोक जकरा पबै ले उताहुल एते
मीत तकरा ओ कहिओ पबै छैक नहि

नव कविता पुरान कथ्य-तथ्य, अनुभूति अभिव्यक्ति, शिल्प-शैली आदि पूर्वक सब मान नकारि आगाँ बढ़ि जयबाक लेल अपस्याँत अछि। *हूम फट स्वाहा* गोविन्द बाबूक एक एहने कविता थिक जे परम्पराक नकेल उघारि मन्त्र-तन्त्र आदि पर कर्कश आघात करैत अछि :

शब्दकेँ नहि आइ रहलै अर्थसँ किछु मेल
शब्द केवल ठोर पर रहि गेल
अर्थ पैसल पेटमे अछि
आँतमे बतीस हाथक गेल अछि ओझराए
नहि सकत ओकरा केओ सोझराए
बूड़ि थिक से आम कहने जे बुझै अछि आम
रहै छै मनमे जकर छूरा कहए से राम।

अस्वीकृति, आक्रोश, विद्रोह आ ध्वंसक एहि युगकेँ एहन कविता वाणी अवश्य प्रदान करैछ, मुदा एकर संख्या नगण्य अछि। कवि मूलतः विधिवादी आ निर्माणकामी छथि, निषेधवादी ओ विध्वंसकामी नहि। स्वाधीनता पाबि प्रत्येक भारतवासीक माथ उठि गेल छल। जाहि सत्य अहिंसाक बल पर विजय प्राप्त भेल छलैक, विश्व-समुदाय लेल अभूतपूर्व घटना छल। हिंसा पर अहिंसाक विजय छल। असत्य पर सत्यक विजय छल। सूतल चेतनाकेँ जगएबाक एक सर्वथा नूतन विधान छल। कविक ई काव्य-चेतना 'नूतन स्वर' मे मुखर अछि :

हम नूतर स्वर लए अएलहुँ
छल विश्व तिमिर मे आवृत
चैतन्यहीन छल मानव मृत
कए स्वर्गसृष्टि
दए दिव्यदृष्टि
हम किरण-निकर लए अएलहु।

गोविन्द बाबूमे कथ्य-तथ्यक कतहु अभाव नहि अछि। प्रयोग कतबो जटिल वा सघन रहओ संप्रेषणीयतामे बाधा नहि अछि। ओ पहेली वा बुझौअलि नहि करैत छथि, सहज संवेदनशील कविताक रचना कए पाठककेँ किछु देबए चाहैत छथि। तेँ हुनक कविता ने वाग्विलास थिक आ ने वाग्जाले। ओ ने आकाश-कुसुम तोड़ैत अछि आ ने लोकक चकरीए गुम्म करैत छैक। जखन कवि अपन सहज स्पन्दनशील भावधारामे बहैत छथि तखन ओ सर्वोत्तम लगैत छथि :

जागि ऊषा साजिकेँ निज अंग
भाल पर कए बिन्दु रोहित रंग
पहिरि अरुणप्रभ नवीन पटोर
करए लागलि नृत्य प्राची संग।

एहि उद्बोधन गीतमे जे प्रकृति-वैभव अछि, प्राभातिक सुषमाक सौरभ अछि, रसराजक विलास-कलाप अछि, उषा-प्राचीक रतिभाव अछि, मधुप-मारुतक दृढ़ मैत्री-बन्ध आ मुकुलक संग पारस्परिक रसरंग अछि तथा प्रसाद-माधुर्यक सम्मोहन अछि, से एहि पद्यकेँ उत्तम काव्यक सिंहासन पर अधिष्ठित करैत अछि। संवेदनशील गीतकारक रूपमे सेहो ई कम नहि छथि जे एक स्वतन्त्र अध्ययनक अपेक्षा रखैत अछि। मातृवन्दना तथा राष्ट्रवन्दनामे सेहो ई बड़ ऊर्जस्वित ओ आकर्षक छथि :

आउ करु माताक वन्दन
सरस जलमय सरस फलमय

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शस्यश्यामल सुभग धलमल्थ
जनिक हीतल मलय-सम्भव-पवन-परिशीतल सचन्दन ।

एहि तरहेँ समग्र रूपसँ स्पष्टतः कहल जा सकैछ जे बहुश्रुत एवं बहुप्रथित गोविन्द बाबू मैथिली काव्यसाहित्यक एक अनुपम रत्न छथि । मैथिलीक यावतो विधामे अपन प्रतिभाक छाप छोड़निहार ई एक मनीषी काव्यकार ओ संवेदनशील कवि छथि। व्यंग्य हिनक कविताक केन्द्रीय स्वर थिक। वचोभंगिमा ओ उक्ति वैचित्र्य हिनक कवितामे भरल अछि। सुकोमल मन, संवेदनशील हृदय, विचारशील मस्तिष्क आ विनोदी काव्यप्रकृति हिनक आकर्षण थिक । छायावादक सौन्दर्यप्रियता, रहस्यवादक अलौकिकता, प्रगतिवादक युगचेतना, प्रयोगवादक प्रयोगधर्मिता तथा नव कविता आओर नवगीतक शिल्प-कौशल सब हिनक कविता मे सुलभ अछि। कवि ओ काव्यकारक रूपमे ई हमर एक प्रबल स्तम्भ छथि । शास्त्र ओ सर्जनामे ई कविचूड़ामणि मधुपक प्रतिनिधित्व करैत छथि आ विचार ओ प्रयोगमे आधुनिक काव्यक शिखरपुरुष कविवर यात्रीक। तेँ दुहूक समन्वित स्वरूप हिनकामे देखिते बनैछ। पाण्डित्य ओ सहृदयता, परम्परा तथा युगबोध तथा विचार ओ अनुभूतिक ई मणिकांचन संयोग मैथिली कवितामे एक नव सौरभ भरि देलक अछि ।

●

पण्डित श्री गोविन्द झाक कविताक विषयवस्तु

☐ डा. श्री अमरनाथ झा

पण्डित श्री गोविन्द झाक कविताक प्रसङ्ग चर्चा करबासँ पूर्व एहि बातक उल्लेख कए देब आवश्यक बुझैत छी जे विविध रचनाक परिमाणक अनुपातमे हिनक कविता-रचना अत्यन्त अल्प अछि । एहन प्रतीत होइत अछि जे प्रायः कोनो विशेष अवसर पर स्वानुभूतिक अभिव्यक्तिक संवरण नहि कए सकलहि पर अथवा ककरो द्वारा अत्यन्त आग्रह कएल गेलहि पर कविता रचना दिशि हिनक प्रवृत्ति होइत रहल अछि । ओना सामान्य रूपसँ ई गद्यहिक माध्यमसँ अपन चिन्तन-मनन वा अनुभूति प्रकाशित करैत रहबाक अभ्यासी छथि । तथापि जतबे वा जएह कोनो कविता हिनका द्वारा लिखल गेल अछि से अपन गुणवत्ताक कारण हिनक कीर्तिमान बढ़ाए रहल अछि, आओर तेँ हिनक साहित्यिक मूल्याङ्कन हेतु हिनक कविता-रचना सेहो विचार्य अछि ।

श्री गोविन्द झाक विद्वत्ता, अध्ययनशीलता तथा लेखन-पटुता निर्विवाद अछि, हिनक कवितामे ओहि प्रकारक कोनोटा दोष नहि भेटैत अछि जे वर्तमान समयक बहुतो रास कविक रचनामे रहैत अछि, यथा–निरर्थक शब्दाडम्बर, क्रम-भंग, दूरान्वय, अर्थक्लिष्टता, च्युतसंस्कृति ओ छन्ददोष इत्यादि। छन्द योजनाक प्रति निरर्थक विरोध-भावना सेहो हिनकामे नहि अछि। हिनक कवितामे छन्दक प्रयोग भेटैत अछि, तेँ पढ़वा काल भाषा ओ रचना कौशलसम्बन्धी विषय पर हिनका प्रसंग चर्चा करब हम हेँ अनावश्यक बुझैत छी । तखन हिनक कविताक विषयवस्तु अर्थात् हिनक कथ्यमात्र एहन तत्व थिक जाहि प्रसङ्ग स्पष्टीकरण आवश्यक बुझि पड़ैत अछि ।

श्री गोविन्दजीक कविताक 'कथ्य'क प्रसंग विचार कएला पर हमरा ई आभासित होइत अछि जे वर्तमान समयक अर्थात् स्वतन्त्रता-प्राप्तिक समयसँ लएकेँ अद्यतन समयक वातावरण मे सामान्य मध्यवित्त वर्गक एकटा प्रबुद्ध ओ महत्वाकांक्षी लोक केँ जाहि-जाहि प्रकारक अनुभूति होइत रहलैक अछि, तकर अभिव्यक्ति हिनक कवितामे बड़ स्वाभाविक रूपमे भेल अछि।

भारतवर्षमे स्वतन्त्रता-प्राप्तिक समयमे लोकक हृदयमे विशेषतः मध्यमवर्गक प्रबुद्धवर्गक हृदयमे विविध प्रकारक आशा ओ आकांक्षाक उदय भेल छल । ऐतिहासिक दृष्टिसँ आसन्नभूत कालहिमे रूस देशक समाजवादी क्रान्तिक सफलता तथा विश्व महायुद्धमे फासिस्टवादी शक्तिक पतन भए गेल छल आओर तकर सबहिक सम्मिलित प्रभावसँ प्रबुद्ध वर्गमे एहि भावनाक उदय होअए लागल छल जे अपनहु देशमे आब एकटा एहन जीवन-रीतिक विकास होएत, जाहिमे केओ दुखी नहि रहत, अपन-अपन योग्यतानुसार उन्नति कए सकत । पं. गोविन्द झा ओहि समयमे नवयुवक रहथि आओर ओहि वातावरणमे हिनकहु हृदयमे ओही प्रकारक आशा ओ उत्साहक भाव उद्दीप्त भए उठल छल, जकरा अपन **नूतन स्वर** शीर्षक कविताक माध्यमसँ व्यक्त कएने रहथि । जेना नववर्षक आगमन भेला पर लोकक हृदयमे नवीन आशाक संचार होअए लगैत अछि, जे एहि नववर्ष मे हमर भाग्योदय भए सकैत अछि, आओर ओहि काज सबकेँ पूरा करबे करब जे पछिला वर्ष धरि सम्भव नहि भए सकल छल, तहिना श्री गोविन्द झा एहि कवितामे प्रबुद्ध वर्गक सामूहिक आशा ओ' आकांक्षाक पूर्ति होएबाक कल्पना कएकेँ आह्लादित भए उठल रहथि:

पसरल भीषण हिंसा भवमे
आतंक भरल प्रति मानवमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बहुजन हिताय
कए दान काय
हम शान्तिक वर लए अएलहुँ
हम नूतन स्वर लए अएलहुँ

श्री गोविन्द जीक हृदयमे एहि प्रकारक राष्ट्रीय ओ सामाजिक चेतना भदवारिक धार जकाँ नहि, अमितिं चिरस्थायी स्रोत जकाँ प्रवाहित भेल छल आओर अपन परवर्त्ती जीवनहुमे एहि भावक पोषण करैत रहलाह। 'प्रभाती' शीर्षक कवितामे प्रभातकालमे नवयुगक आविर्भावक प्रतीक मानि समाजक जड़ताग्रस्त लोक सब कें जाहि प्रकारें उद्बोधित कएल गेल अछि,से हिनक एही प्रवृत्तिक द्योतक थिक :

मुक्त मारुत कए मधुपसँ भेल
मुक्त मुकुलक संग करइछ खेल
देख प्रकृतिक मुक्तिपर्व नवीन
देख तृण-तृण मुक्तिमय भए गेल
तदपि तन्त्रा-तन्त्रमे तोँ बद्ध ?
उठ पथिक, उठ, मुक्तिपथमे लाग
जागरे चिर सुप्त-चेतन जाग।

श्री गोविन्द जी मूलतः संस्कृतक विद्वान् थिकाह, ताहि संगहि वर्तमान संसारक राजनीतिक ओ सामाजिक गतिविधि दिशि सेहो रुचि रखैत रहलाह अछि, आओर वर्तमान युगक आवश्यकता वा समस्याक समाधानक हेतु युगानुकूल मार्गक अनुसरण करबाक पक्षधर छथि। आओर तेँ हिनक रचनामे अनेक ठाम एहन भावक अभिव्यक्ति भेटैत अछि जे मार्क्सवादी सामाजिक दर्शनसँ अनुप्राणित बुझि पड़ैत अछि। मार्क्सवाद सामाजिक दर्शन थिक, आओर तेँ यदि गोविन्द जी सेहो एहि सामाजिक दर्शनसँ प्रभावित भेल छथि तँ कोनो अस्वाभाविक नहि। इहो बात सत्य थिक जे हिनक ज्येष्ठ सहोदर भाए प. जीवनाथ झा काव्यसाधना मे वा अपन व्यावहारिक जीवन-रीतिअहुमे मार्क्सवादी दर्शन सँ अप्रभावित रहि संस्कृत विद्वानक परम्पराक अनुयायी बनल रहलाह, किन्तु श्री गोविनद जी काव्य-साधना तथा व्यावहारिक जीवन रीति–एहि दुनू क्षेत्रमे पाश्चात्य प्रभावकें अंगीकार करबा मे तारतम्य नहि कएलैन्हि अछि। *ब्रह्मा ओ ब्रह्मा* शीर्षक कविता मे एहि भावक अभिव्यंजा कएने छथि जे एकान्त ब्रह्म-चिन्तन मे अर्थात् स्वान्तःसुखाय ज्ञानार्जनमे संलग्न रहबाक अपेक्षा जीवन निर्वाहार्थ व्यावहारिक रूपसँ कर्मनिरत होएब अर्थात् शारीरिक श्रम द्वारा भोजन-वस्त्रादि सम्बन्धी उत्पादनकार्य करबामे प्रवृत्त होएब विशेष प्रयोजनीय थिक। किछु एही प्रकारक भाव हिनक *अन्न देवता* शीर्षक कवितामे सेहो ध्वनित भए रहल अछि :

खाउ ने ! कहि उठल ई के फेर
छली गृहलक्ष्मी स्वयं एहि बेर
चलए लागल भात पर झट हाथ
गेल उड़ि सभ कल्पना मन केर
किन्तु गिड़इत काल अनुभव भेल
काँट हो गरमे जेना गड़ि गेल।''

सर्वहारा श्रमिकक अधिकारक प्रसंग जे मार्क्सवादी मान्यता गत शताब्दीसँ विश्वकें आन्दोलित करैत रहल अछि सएह एहि दुनू कविताक मूल प्रेरक तत्व थिक। किन्तु जेँ हेतु ई संस्कृतक विद्वान् छथि, तेँ हिनक रचनामे तकरहु प्रभाव निश्चित रूपसँ परिलक्षित अछि। अपन कथ्यकें अभिव्यक्त करबाक हेतु ब्रह्माक जेहन बिम्ब प्रस्तुत कएने छथि, से हिनक संस्कृत साहित्य ज्ञानहिक द्योतक थिक।

वर्तमान युगमे भारतवर्षक क्षेत्रीय भाषा सबमे एकटा नवीन उत्साह प्रवाहित भेल अछि, आओर मिथिलामे ताहि भाव-प्रवाहक परिणामस्वरूप मैथिली भाषाक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कविलोकनिक, विशेषतः आदिकवि विद्यापतिक स्मरण ओ गुणकथन करबा दिशि प्रबुद्ध वर्गक लोक विशेष आकृष्ट होअए लगलाह अछि। गाम-गाम ओ नगर-नगरमे विद्यापति-स्मृति-समारोह मनाओल जाएब आरम्भ भेल तथा विभिन्न माध्यमसँ विद्यापतिक प्रसंगमे कवि ओ विद्वान् लोकनिक उद्गार व्यक्त कएल जाए लागल। एहि प्रकारक अनुराग मिथिलामे अद्यावधि अनुवर्त्तमान अछि। श्री गोविन्द जी सेहो एहि दिशामे ककरहुसँ पछुआएल नहि रहलाह आओर विविध माध्यमसँ विद्यापतिविषयक रचना करैत रहलाह अछि ! 'कीर्ति सिंह', 'शिवसिंह' (दूनू दृश्यकाव्य) तथा 'विद्यापतिक आत्मकथा' (उपन्यास)क अतिरिक्त बहुतो रास निबन्ध एहि दिशामे हिनक उल्लेखनीय कृति थिक। कविताक क्षेत्र मे सेहो विद्यापति पर हिनक रचना भेल अछि, जाहि मे प्रो रमानाथ झा द्वारा सम्पादित *कविता कुसुम* नामक संकलनमे प्रकाशित 'विद्यापति' शीर्षक कविता एकटा बानगी थिक। विद्यापतिरचित उत्कृष्ट गीतसबहिक प्रसिद्ध वाक्यखण्ड सब कें ई अपन कविताक पंक्ति सबहि मे नगीना जकाँ संयोजित कए कएकें विद्यापतिक समस्त काव्यवस्तुक सूक्ष्म दर्शन जाहि विलक्षणताक संग प्रस्तुत कएने छथि से सामान्य कविक द्वारा कदापि सम्भव नहि अछि। एहि कविता द्वारा ई बात प्रमाणित भए जाइत अछि जे श्री गोविन्द जीकें विद्यापतिक समस्त काव्यरचनाक गूढ़ अध्ययन छैन्हि आओर ताहि संगहि इहो प्रमाणित भए जाइत अछि जे कल्पना-चमत्कार तथा भाषाप्रयोग सम्बन्धी असाधारण क्षमता हिनकामे छैन्हि। संस्कृत परम्पराक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कविलोकनि 'समस्यापूर्ति' प्रकारक कविताक रचना द्वारा जेना अपन कवित्व-प्रतिभा प्रमाणित करैत रहलाह अछि, तांही परम्परा सँ अनुप्राणित भएकेँ श्री गोविन्द जी एहि कविता द्वारा अपन कवित्वप्रतिभा प्रमाणित कए देने छथि से कहल जाए सकैत अछि। एहि कविताक किछु पंक्ति उदाहरण रूपमे प्रस्तुत अछि:–

देल हमजतए जतए अवधान
पड़ल सुनि सुन्दर सुन्दर गान
*बैसि **'नन्दक नन्दन'** एकान्त*
***'कदम्बक तरुतर''** व्याकुल चित्त*
***'समय सङ्केत निकेतन'** मध्य*
बजाबथि मुरली मिलन निमित्त।

× × ×

*अपन सभ **'सुतमित रमनि समाज'***
***बालुका ''वारिविन्दु''** सभ मानि।*
एक जगतारन दीन दयाल
गतिप्रद माधवकेँ उर आनि
पूजि पद अनुखन अनुपम भक्त
कएल के तारण भार प्रदान।'

एहि उद्धरणमे रेखाङ्कित शब्द वा पद सब विद्यापतिक गीत सँ उद्धृत अछि जकरा सब केँ नगीना जकाँ नियोजित कएकेँ श्री गोविन्द जी अपन भावोच्छ्रास व्यक्त कएने छथि। एहि कविता केँ सम्पूर्ण रूपसँ हृदयङ्गम कएला पर ओहि समस्त विषयवस्तुक आभास भेटि जाइत अछि, जाहि सब प्रसङ्गमे विद्यापति गीत-रचना कएने छथि। विद्यापतिवर्णित विविध भाव ओ विविध रसक एक परिचय एतए मात्र चौबीस गोट छोट-छोट पंक्तियुक्त कविताक माध्यमसँ जेहन चमत्कारपूर्वक प्रस्तुत कएल गेल अछि गोविन्द जीक प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास–एहि तीनू गुणक अकाट्य प्रमाण थिक।

श्री गोविन्द जी किछु एहनो कविताक रचना कएने छथि जे पढ़लासँ आभासित होइत अछि जे समय-समय पर हिनकहु कुण्ठाक अनुभव करए पड़ल छैन्हि। *'एक मूर्खक अनुभव'* तथा 'प्रार्थना' शीर्षक कवितामे कवि अपन एहि अनुभवकेँ व्यक्त कएने छथि जे समस्त समाजक चिन्तन ओ कार्य-प्रणाली अनुपयुक्त ओ दोषावह अछि। मुदा यदि हम ठीक रास्ता देखबितहु छिऐक तँ लोक ताहि दिशि कान-बात नहि दैत अछि। उनटे हमरे 'बुड़िबक' बुझैत अछि, आओर प्रताड़ित करैत अछि। जाहि प्रकारक अनुभव सुकरात ओ ईसामसीहकेँ भेल रहैन्हि, किछु ताही प्रकारक अनुभवक आभास हिनकहु होइत छैन्हि, यथा–

हम दुनिआँक बात पर कहिओ नहि पतिअएलहुँ
हम दुनिआँक गोबरखत्तामे सड़ि रहलहुँ अछि
से किएक तँ

हम दुनिआँसँ एहिना दिन-दिन लड़ि रहलहुँ अछि।

हिनक *'प्रार्थना'* शीर्षक कवितामे देखैत छी जे कविकेँ समाजक प्रति मोहभंग भए गेल छैन्हि, ई अनुभव भए रहल छैन्हि जे लोक ऊपरसँ सौहार्द तथा स्नेह प्रदर्शित करैत रहैत अछि जे सबटा वंचनामात्र थिक, ओकर अन्तस्तलमे सहानुभूतिक लेशमात्रहु नहि छैक, आओर तेँ ई पलायनवादी भएकेँ एकान्तवास करए चाहैत छथि आओर एकान्तहिमे मृत्यु प्राप्त करए चाहैत छथि। जे कवि प्रभातकालक सौन्दर्य देखि उल्लसित भएकेँ समस्त समाजकेँ उद्बोधित होएबाक आह्वान कएने छथि, जे कवि नववर्षक आगमनकेँ समस्त समाजक आशाप्रद नवीनीकरणक अग्रदूत मानि उल्लास व्यक्त कएने रहथि, सएह कवि लोकसँ प्रार्थना कए रहल छथि जे हमरा कुशल-क्षेम पुछि पुछि घाओ पर नोन नहि छीटल करू :

बाटघाटमे नमस्कार कए कृपया हमरा लजाउ नहि
हम चुप्पे ससरए चाहै छी, कृपया हमरा बजाउ नहि
नमस्कारमे हमरा होइछ तिरस्कार केर भान रे
कुशल-प्रश्न केर बात चला कए कथि ले बेधब कान रे
सान्त्वनाक समिधा संचित कए चिता अनेर सजाउ नहि।
बाट घाट मे नमस्कार कए कृपया हमरा लजाउ नहि।

× × × ×

हम चाहै ही रहए निरन्तर निश्चेतन निष्पन्द रे
हम चाहै छी पाबए जिविते मृत्युक परमानन्द रे
दूरहि रहू, करू नहि हल्ला,हमर शान्ति केँ खाउ नाहे
हम कलबल सूतए चाहै छी कृपया हमरा जगाउ नहि

एहि कवितामे अभिव्यक्त 'पलायनवाद' बहुत किछु ओहने प्रतीत भए रहल अछि जेहन भाव श्री सुमन जीक 'वनपर्व' शीर्षक कवितामे अभिव्यक्त भेल अछि। सुमन जी ग्राम ओ नगर दूनू ठामक जीवनसँ तंग भए केँ वनवास करबाक इच्छा व्यक्त कएने छथि जाहि ठाम एकान्त चिन्तन ओ शान्त जीवन प्राप्य भए सकैत अछि, आओर श्री गोविन्द जी वनवासक चर्चा यद्यपि नहि कएने छथि मुदा, समाजसँ पूर्णतः अनपेक्षित रहि एकान्त जीवन व्यतीत करबाक आकांक्षी भए गेल छथि, भने एहि प्रकारक एकान्तवास मृत्युतुल्य किएक नहि रहओ। *''धिक जीवन सँ मरणे नीक''* एहि लोकोक्तिकेँ श्री गोविन्द जी अपनहु जीवनक प्रसङ्ग मे सार्थक मानि रहल छथि।

श्री गोविन्द जी तथा श्री सुमन जी क बाह्य विचारधारा मे यद्यपि बहुत अन्तर अछि किन्तु दूनूँ व्यक्ति उपर्युक्त अपन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अपन कवितामे जाहि प्रकारक निवृत्तिमूलक विचार व्यक्त कएने छथि से देखि एहन-सन प्रतीत भए रहल अछि जे आर्य-जीवन पद्धतिक 'वाणप्रस्थ' ओ 'संन्यास' 'व्यवस्था दिशि दुनू कवि समान रूपसँ आकृष्ट छथि आओर ताहिसँ इहो बात संकेतित कएरहल छथि जे ई दूनू व्यवस्था कोनो बाह्यतः आरोपित विधान नहि छल, अपितु संवेदनशील मनुष्यक सहज स्फूर्ति छल। दूनू कवि उपर्युक्त विषयकेँ मार्मिक ढंगसँ व्यक्त कएने छथि।

ओना इहो बात स्पष्ट अछि जे श्री सुमन जीक अन्तःप्रज्ञा जखन अभिव्यञ्जित होएबा लेल शब्दक माध्यम ग्रहण करए लगैत अछि तखन हुनक शास्त्रज्ञान आभूषण रूपमे ततेक बेसी पुंजीभूत भए जाइत अछि जे कविता पढ़निहारकेँ अर्थबोध करबा लेल आयास करए पड़ैत छैक मुदा श्री गोविन्द जीक कविताक अर्थबोध बड़ सुलभ रहैत अछि।

एहिठाम इहो कल्पना कएल जाए सकैत अछि जे स्वाभिमानी ओ महत्वाकांक्षी कवि श्री गोविन्द जीक अवचेतन मस्तिष्कमे ई बात उपजल होइन्हि जे एकटा एहन कविताक रचना करी जे आधुनिक मैथिली साहित्यक विख्यात कविक (श्री सुमन जी क) कविताक संग टक्कर लए सकए 'आओर' से कल्पना असंगत नहि होएत। तहिना हिनक *आलोक* शीर्षक कविता श्री सुमन जी क 'मानव मन' शीर्षक कविताक प्रतिस्पधमे रचल गेल होअए तँ कोनो आश्चर्य नहि। 'आलोक' शीर्षक कवितामे ओहि प्रकाश-पुञ्जक प्रति जिज्ञासा भाव व्यक्त कएल गेल अछि, जकर प्रभाव सँ सृष्टि अपन स्वाभाविक रूपमे सञ्चालित भए रहल अछि जखनकि श्री सुमन जीक 'मानव मन' शीर्षक कवितामे मनक अज्ञेय ओ अपरम्पार गतिक प्रति विस्मय भाव व्यक्त कएल गेल अछि। अस्तु।

एवं प्रकारेँ श्री गोविन्द जीक कविता-रचनाक क्षमता तँ प्रमाणित अछिए आओर ताहि संगहि इहो बात प्रमाणित अछि जे अपन देशक परम्परागत गौरवक ज्ञानक संग-संग वर्तमान विश्वक बहुआयामी गतिधिक प्रति सेहो यथेष्ट सजग रहनिहार छथि। वर्तमान युगक कविताक यथार्थवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्रतीकवाद आओर अन्यान्यवाद सँ ई अपरिचित नहि छथि किन्तु कोनहुँ विशेष वादसँ प्रतिबद्ध नहि भए केवल अपन अन्तः प्रज्ञाक अनुसरण करैत छथि आओर हिनक कवितामे सामान्य रूपसँ तकरहि अभिव्यक्ति भेटैत अछि।

पंडित गोविन्द झाक बाल-कविता

□ श्री कृष्ण मोहन मिश्र

खूजल जन-जन केर कण्ठस्वर फूटल लोकक बोल
बहल लोकसाहित्यक सरिता करइत कल कल्लोल
–विद्यापतये नमः

पंडितजीक उपर्युक्त पाँतीमे मैथिली-काव्य-सरिताक उद्गम दिशि स्पष्ट संकेत छनि। वरेण्य कविक वन्दना करैत एहि साहित्यमनीषीकेर कविताक क्षेत्रमे विशेषतः बाल-कविताक आँगनमे अवदानक थोड़-बहुत चर्चा अपेछित अछि। आजुक जीवनमे बाल-साहित्यक रेखांकन महत्वपूर्ण अछि। संवेदना, भावबोध आओर युगीन संदर्भक लेल एहि नवीन विषय पर रचना कएनिहार किछुए गोटे छथि।

पंडित गोविन्द झा जीक काव्यसंकलन अद्यावधि अप्रकाशित अछि, जाहिसँ भूमिका वा वक्तव्यक माध्यमेँ हुनक काव्य-मान्यता, कविताक रचना दिशि उन्मुख होएबाक कारण आदिक परिचय पाठकवर्ग प्राप्त कए सकए। आकाशवाणी, पटनासँ दिनांक 15.11.1948 केँ प्रायोजित कार्यक्रम 'मैथिली-काव्य-सरिता' मे पंडित जी द्वारा स्वयं पठित कवि-गोष्ठी पूर्व भूमिकासँ ई स्पष्ट भए जाएत जे हिनका अन्दर केहन मौलिक कवि प्रारंभसँ निवास करैत अछि

"शान्तिमयी मिथिला चिरकाल से सत्कविओं की क्रीड़ा स्थली रही है। कविकोकिल विद्यापति की काकली, भक्तवर गोविन्ददास की मधुर पद-ध्वनि तथा महाकवि उमापति उपाध्याय आदि कवियों की कला से यह स्वयं गुञ्जायमान रही और भारत के अधिकांश भागों को गुञ्जित करती रही। इसी मिथिला के मधुर और शान्त अञ्चल में पला हुआ एक अकिञ्चन मैं भी सहसा कविओं के भावलोक में खींच लिया गया और तब से मेरे जीवन में एक नई तरंग उत्पन्न हुई :–

यौवनक हिलकोर मे
भए उठल जीवन तरंगित अरुण रञ्जित भोर मे
सान्द्र जलदक गर्ज्जना सन
तीक्ष्ण तड़ितक तर्ज्जना सन
उठल एक निनाद नूतन यौवनक हिलकोरमे।'

किन्तु हाय। वर्तमान परिस्थिति की अनन्त विषमताएँ तथा जीवन की दुरन्त जटिलताएँ मुझे वह मादक रागिनी गाने नहीं

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

देती । इसलिए मेरी कल्पना कभी-कभी वास्तव जगत् के विषादमय विश्वास की डोर पर झूलने लगती है

कल्पना युग-युग से वास्तविक जगत् के कटु अनुभवों से झुलसे हुए मानवों को बड़ी सहानुभूति के साथ सन्मार्ग प्रदर्शन करती आई है । इसीलिए तो कहा गया है –अपारे खलु संसारे कविरेव प्रजापति : और मैं भी इस उक्ति से अपने में एक अपूर्व शक्ति और कर्तव्य के भार का अनुभव करने लगता और नूतन स्वर लेकर गाने लगता–

हम नूतन स्वर लए अएलहुँ
छल विश्व तिमिर-पट मे आवृत
चैतन्यहीन छल मानव मृत
कए स्वर्ण-सृष्टि दए दिव्य-दृष्टि
हम किरण निकर लए अएलहुँ ।

ई किरण-पथ-गामी कवि अपन एक अनूदित काव्य-रचना 'हमरा-हुनकामे भेद एते' मे कहैत छथि–

'ओ सोचै छथि होएतैक कोना
मैत्री अमेरिका रूस बीच
हम सोचै छी होएतैक कोना
झगड़ा मम्पो जम्पोक बन्द ।
(मम्पो जम्पो कविक दुइ पुत्री थिकीह)

सदिखन, नेना-भुटकाक आपसी कलहक मनोवैज्ञानिक प्रभाव दिशि सहज-दृष्टिएँ कविक चिन्ता सेहो स्वाभाविक छनि। ओ महान व्यक्ति ई साधारण कवि, चिन्ताक धरातल पर दूनू गोटे समान छथि ।

'पानि एलै बुन्नी एलै' मे पंडितजीक गीतकार सजग भए गेल । स्वर, शब्द और लय कविताक तीनू अनिवार्य उपकरण क संग एहि कविताक आखरमे थिरकन अछि, जकरा पढ़ैत आ गुनैत मन-प्राण आन्दोलित भए जाएत । बाल-कविताक श्रेणी मे ई पांक्तेय रचना अछि जाहिमे जीवन-तत्व आ गीतक उपकरण संग-संग सस्वर भए उठल–

कारी-कारी मैघ आएल, बुन्नी पड़S लागल, बाधसँ लोक-सभ पड़ाएल, हर-हरवाह गाम दिशि भेलाह, छाता लगौने मामा एलाह, डाला ओढ़ने मुन्नी एलै, चेङा आ गुरचु चुन्नी एलै, बीआ लेने गुन्नी एलै, भौजी एलै तीरा रोपए–गेना सजमनि खीरा रोपए, बुन्नी पड़ैतहि लोक-वेद कोना व्यस्त भए जाइत अछि, प्रकृति आ प्राणीक बीच केहन रागात्मक संबंध अछि, तकर संश्लिष्ट चित्र एहि कवितामे सहज उपलब्ध अछि ।

नवीन पीढ़ीक शिक्षानुरागी होएबाक सन्देश कवि अपन कविता 'हेकौं-हेकौं' मे दैत छथि । कविताक आरम्भ परिचित बिम्बसँ होइत अछि । वैशाखनन्दनक वन्दना करैत कवि मुख्यतः एहि बातक लेल किशोरसभकेँ सचेत करैत छथि

'सभसँ पैघ बुद्धिकेँ मानह
बुद्धिक बिनु सब गुन हो गोबर
खूब पढ़ह ओ बुद्धि बढ़ाबह
मन लगाए पहिनहुँसँ दोबर
नहि तँ तोहूँ कहएबह गदहा
उघबह मोटा हेंकों-हेंकों
पएबह नित सब ठाम अनादर
खएबह सोटा हेकों-हेंकों ।

अन्य कविता 'पाकल आम' मे आमक सर्वव्यापी प्रभावक चित्र उकेरल अछि । पाकल आमक राजमे दालि, भात तिमनक पुछनिहार छटि जाइत छथि । दही-दूध सेहो महत्वहीन भए जाइत अछि । लड्डू, बरफी आ पचमेर अमिरती सामर्थ्यहीन भए जाइत अछि । जँ रुचिगर लागए आ पाचनशक्ति-सामर्थ्य होमय त आठो याम पाकल-पाकल आम चोभि सकैत छी-

ठोहि पाड़ि कँ चीनी कानए
हा, हमरा कुकुरो नहि मानए
खाजा मुङबा नोर चुआबए
लैछ केओ नहि हमरो नाम
पाकल आम, पाकल आम

बाल-कविता रोचक, उद्बोधक आ ज्ञानवर्धक होएबाक चाही जाहिसँ नवीन पीढ़ी उर्जा आ आदर्श दूनू प्राप्त कए सकए। एहि दृष्टिएँ 'हम बालक छी' मे पंडितजीक मूल उद्देश्य प्राप्त होइत अछि – हम मातृभूमिकेर सेवक, राष्ट्रव्रतक प्रतिपालक, प्रगति-मंत्रकेर साधक, लोकतंत्रक आराधक, बालक छी । वर्तमानक पथचारी आ भविष्यक सारथि सेहो छी । भाव-विभोर पंडित जी कहैत छथि–

नहि बैसल बैसल खाएब हम
नहि छन भरि व्यर्थ गमाएब हम
विश्वास हृदयमे भरने छी
विद्या धन मान कमाएब हम
हम बालक छी,हम बालक छी ।

जीवनमे पढ़नाइ आ खेलनाइ दूनू आवश्यक । संवाद रूपेँ कवि दूनूमे तारतम्य स्थापित कएलनि । एक बटुक खेलनाइक तर्क दैत छथि, दोसर पढ़बा लेल जिद करैत छथि । कवि अध्यापक रूपेँ समाधान प्रस्तुत करैत छथि–

नहि खेलक लेल झमेल करह
हओ मेल करह, हओ मेल करह

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पाठक घंटीमे पढ़ह-लिखह
खेलक घंटीमे खेल करह ।'

सम्पूर्ण मनुक्खकक्क संवेदनासँ इतर बाल-समस्या नहि अछि, मुदा बाल-साहित्य, विशेषतः बाल-कविताक क्षेत्रमे उल्लेखनीय हस्ताक्षर जे उपलब्ध छथि, हुनक साहित्यक समीचीन मूल्यांकनसँ ई तथ्य मुखर होएत जे आजुक काल-खंड मे वर्ण्य-विषयक विविधताक बीच बाल-साहित्य अपन शिखर सेहो निर्मित कएल। साक्षरता मिशन हो किंवा बाल-श्रमिक समस्या, सचतेन विचारक आ कवि अपन रचनाक माध्यमेँ एहि नवीन-विषय पर अपन सुचिंतित विचार समाजक सोझाँमे प्रकट कयलनि ।

पंडित जीक कवितामे भावी पीढ़ीक लेल सन्देशक संग-संग बाल-बोधक अनाघ्रात भाव-बोध सेहो छनि । जाहि आक्रोशक अभिव्यक्ति अन्यत्र उपलब्ध अछि, तकर अभाव होइतहुँ पंडितजीक बाल-साहित्य अपन मूल प्रतिपाद्य (रोचक, उद्‌बोधक, ज्ञानवर्धक) क प्रति सदैव सजग छथि ।

'जगने से सोने तक
नन्हें से हाथों में पानी का गिलास है
पानी दे देकर भी होटों पर प्यास है
- ठाबें की गुलामी' ज्योति पुंज
समकालीन भारतीय साहित्य, अंक-45.

कविक रूपमे पं. गोविन्दझा

□ प्रो० श्री राजकुमार झा

एकटा आधुनिक मत अछि जे कविक प्रलाप काव्य थिक। कारण सृष्टिक सौंदर्यक मर्मज्ञ एवम् उपभोक्ता कवि जखन उन्मत्त भए जाइत छथि तखन हुनक प्रलापस्वरूप हुनक उन्मत्तक किछु प्रसाद सहृदयलोकनिकेँ उपलब्ध होइछ।

कवि शब्दक निर्माण नहि करैछ, शब्दक ललित गुम्फन मात्र करैत अछि । ओएह ललित गुम्फन युक्त पदावली कविक कार्य अर्थात् काव्य कहबैत अछि ।

आब ई देखबाक अछि जे कविमे तीन गुण प्रतिभा, व्युत्पत्ति आओर अभ्यास रहब आवश्यक। ओना तऽ केओ विद्वान् प्रतिभाकेँ काव्यक कारण मानैत छथि तँ केओ व्युत्पत्ति के आओर केओ अभ्यासकेँ । मुदा कोनो कवि तखनहि सफल वा नीक कहाए सकैत छथि वा हुनक रचना तखनहि नीक भए सकैत छैन्हि जखन ओ तीनू गुण सँ युक्त रहथि । एहि हेतु पण्डित राज जगन्नाथक उक्ति अछि–

तस्य काव्यस्य च कारणं प्रतिभा
तस्याश्च हेतु : क्वचिद् देवतामहापुरुषादि प्रसादजन्य मदृष्टम्,
क्वचिच्च विलक्षणव्युत्पत्ति-काव्य करणाभ्यासौ ।

यदि कविमे ई तीन गुणक अभाव रहतैन्हि तऽ ओ कविता कए सामाजिक गणमे हास्यास्पदे होएताह ।

पं.• गोविन्द झाजीकेँ यदि एहि उपर्युक्त कसौटी पर कसैत छियैन्हि तऽ देखबामे अबैत अछि जे कविजी मे तीनू गुण वर्तमान अछि ।

मैथिली कविता जखन प्राचीनताकेँ छाड़ि आधुनिकतामे प्रवेश कए रहल छल, ओहि समयमे मैथिली साहित्याकाशमे प्रखर ज्योति जेकाँ पंडितजी अत्यन्त प्रतिभा लए पहुँचलाह । पंडितजीक समस्त कविताजे पाण्डुलिपि आओर पत्र-पत्रिकामे छिडिआएल छल ओकरा हम लघुशोधनिबन्धमे प्रस्तुत कए अध्ययनक पश्चात् देखल जे हुनक शिक्षाक स्पष्ट प्रभाव बुझना जाइछ । तेँ ई कहब समीचीन नहि होएत जे संस्कृत शब्दक बहुलता रहलासँ ओकर अर्थ लगेबामे दुरूहता होइछ । अपन अभिव्यक्तिकेँ मौलिक प्रवाह दए कविताक सभ सूत्र छन्द, लय गति, यति प्रणालीक निर्वाह करैत लिखलनि अछि । अपन भावकेँ मूल अभिव्यक्ति देबाक लेल सतत प्रयत्नशील रहलाह अछि। सहृदयता हिनक सभ कवितामे भेटत अतएव हिनक कवितासभ आह्लादक होइत अछि। तेँ एहि युगक अग्रणी कवि छथि ।

कविता भावनाक अभिव्यक्ति थिक । कवि समस्त संसारक जड़-चेतनक क्रिया-कलाप देखि ओहि क्रियाकेँ शब्दमे बद्ध कए जनमानस समक्ष रखबाक प्रयास कएल अछि । कविक दृष्टि सृष्टिक विभिन्न पक्ष पर जाइत अछि ओना तँ विभिन्न कविक कविताक विभिन्न पक्ष होइत छैन्हि। केओ प्रकृतिक क्रिया-कलाप देखैत छथि, केओ मानव-जीवनसँ जुड़ल समस्याकेँ अपन कविताक आलम्बन बनबैत छथि ।

गोविन्द बाबूक कवितामे अधिकांशतः मनुष्यक मानव वृत्तिक वर्णन कएल गेल अछि; एहि परिधिमे आबय वला हुनक कविता अछि–**हिलकोर, वंशी, विषम एखन, याचना आशा, एक उज्ज्वल हास हो, विप्रलब्धा** इत्यादि ।

एकर पश्चात्, पंडितजीक कविताक विषय रहल अछि प्रकृतिवर्णन। एहिमे कवि मूलतः प्रकृतिक चित्रण नहि कएल अछि,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ओकर वर्णनमे मनुष्यक भावक वर्णन जुड़ल अछि। एहि परिधिक हुनक कविता अछि–**मिथिलामे अगहन, कादम्बिनी**।

पं. जी कल्पनाशील छथि जे हिनक कविता *'श्रमिक स्वेद'* मे स्पष्ट होइछ। श्रमिकक स्वेदक वर्णन क्रममे ओकरा रंक सँ कोना राजा बना दैत छथि तकर ई कविता द्योतक थिक। *"मिथिला मे अगहन"* शीर्षकक कवितामे अगहन आबयसँ पहिने विभिन्न ऋतु मानव-जीवन पर केहन प्रभाव छड़ि जाइत अछि आ अंतमे जखन अगहन मास अबैत अछि ओकर प्रतीक्षा एहि पृथ्वी पर कतेक जनमानस यलसँ कए रहल अछि एहि सभक वर्णन बड़ मार्मिक ढंगे कएल गेल अछि :

खजनी खएवेँ जँ पान कने तँ खा ले
कतिकरक सूखल मूह फेर चमका ले
अगहन पाहुन नहि आब अधिक दिन रहता
दिन-दिन तँ फेर गरीब देवता सहता।

पंडितजी *"मातृवन्दना"* शीर्षक कवितामे मातृभूमिक गुणगान करैत कहैत छथि, हमर मातृभूमि जाहिठामक धरती नदी, पोखरि सँ भरल हो, सरस फलक अभार लागल हो:

सरस जलमय सरस फलमय
शस्यश्यामल सुभग थलमय

'नूतनस्वर' कविक मूलतः ओजपूर्ण काव्यकृति थिक। एहि कविताक भाव अछि जे जखन-जखन पृथ्वी पर समस्या आएल तखन विभिन्न रूपमे सूर्य राम शंकर शांतिक दूतक आगमन नूतन स्वर लए भेल अछि

चमकल विद्रोहक वह्नि प्रबल
आन्दोलित भेल महीमण्डल
लए निज गण सब
रचइत ताण्डव
नृत्य नचइत हर भए अएलहु
हम नूतन स्वर लए अएलहुँ

नव प्रयोग करबामे सेहो सिद्धहस्त छथि। आधुनिक युगक विचार धाराक अनुरूप कविकर्मकेँ प्रधानता दैत **ब्रह्म आ ब्रह्मा** शीर्षक कविता मे कहि उठैत छथि:

आइ कर्मसँ दूर रहब थिक सभसँ पैघ कुकर्म
निर्गुण बनल रहबसँ बढ़ि नहि दुर्गुन आन।

कविक रहस्यवादी भावनाक प्रस्फुटन **आलोक** शीर्षक कवितामे होइत अछि:

जाए पसरि प्राची-प्रांगणमे नूतन स्वर्णक रंग
देखि-देखि से जागए तरु-तरु खगकुल विस्मय संग
कनिक कान्तिसँ ईदृश सुषमा पाबए ई आलोक

एक मूर्खक अनुभव हिनक महत्वपूर्ण कविता थिक जाहि मे ई समाजक एक वर्ग पर कसि कए चोट कएने छथि। एहि कविताक व्यंग कतेक मर्मभेधी अछि :

सौंसे दुनियाँ हमरा बड़का बूड़ि बुझै अछि
से कियैक तँ
सौंसे दुनियाँ हमरा बुड़िए बूड़ि सुझै अछि।

असमंजस आत्मपरक कविता अछि। कवि स्वयं पथिक बनि दूर देशक यात्रा पर चललाह अछि। ओहि समयमे कोना ओ प्रकृतिक क्रियाकलाप, ओकर हाव-भाव देखि असमंजसमे पड़ि जाइत छथि तकर वर्णन अछि।

मृदु शीतल सुरभित मलय पवन
कए भुज पसारि दृढ़ आलिंगन
कहि रहल पथिक स्वागत-स्वागत
विश्राम करू विश्रम करू।

श्रमिक स्वेद कवितामे कविक दूर दृष्टि, कल्पनाक चमत्कार आ भावक गाम्भीर्य भेटैछ। वस्तुतः कविक ई उत्तम काव्य कृति अछि। सर्वहाराक चित्रण बहुतो कवि अपन काव्यमे कएने छथि मुदा ओकर पसीनाकेँ कविताक आलम्बन बनाए लिखबामे असमर्थ रहल अछि। पंडितजीक ध्यान ओहि उपेक्षित वस्तु पर जाइत छैन्हि आओर ओकर चित्रण करबामे कलाकौशलक जे परिचय देल अछि से वस्तुतः प्रशंसनीय अछि:

बहि रहल श्रमजीवि तनसँ स्वच्छ स्वेदकंधार
वा रुधिर धरि निज शरीरक करथि दान उधार
हो न उपमा कर्ण हिनकर कर्ण तँ अधमर्ण हिनकर
तृषित विश्वक तृप्ति हेतुक चलत तन सँ अर्ण हिनकर

पानि एलै बुन्नी एलै–पं.जी मात्र कल्पनाक उड़ान मे भावक गांभीर्यमे प्रकृतिक वर्णनमे वा शोषकक द्वारा शोषितक चित्रण नहि कएल अछि किछु बालोपयोगी कविता सेहो लिखल। एहि सँ बोध होइत अछि जे समाजक सभ वर्गक व्यक्तिक लेल हिनक कलम चलल अछि :

झहर-झहर पानि पड़ए सभ खुशी जानि पड़ए
देखह कत्ते भावए बेङग कोंका कोंका गाबए बेङ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विद्यापतिक आत्मकथाः चरित्र-चित्रण आ भाषा-शिल्प

□ प्रो. श्री भैरवेश्वर झा

पुस्तकक शीर्षक स्थान लग कोष्ठमे लिखल अछि 'ऐतिहासिक उपन्यास' । लेखकक अपन वक्तव्य अछि :

सोचल जे ठोस इतिहासक भित्तिपर उपन्यासक मोलम्मा दैत एकटा एहन रचना कएल जाए जे एकहि संग इतिहास, उपन्यास आ जीवनी तीनूक पंक्तिमे स्थान पाबए । भेल चौबेक परि, जे लिखाएल से तीनूमे एको नहि भेल । ...नाम राखल 'विद्यापितिक आत्मकथा' । शुद्ध अर्थमे एकरा सेहो नहि कहि सकैत छी ।....कोन सूत तानी आ कोन भरनी से पाठक अपनहि बुझि जएताह । हम एकरा अधिकसँ अधिक ऐतिहासिक बनएबाक प्रयास कएल अछि जाहि हेतु विद्यापति स्वयं प्रचुर सामग्री दए गेल छथि ।'' (पृ. 126). निष्कर्ष ई जे विद्यापति स्वयं अपना विषयमे किछु लिखलन्हि नहि, किंतु हुनक रचना-संसार, ओहिसँ झलकैत अर्थ-तात्पर्य-आभास आदि, बहुतो रास हुनका प्रसंगक किंवदन्ती, अन्यान्य ऐतिहासिक वृत्तान्त–सभकिछु मिलिकेँ हुनका एक देवोपम पुरुष बनाए देलक–शृंगारक भावसँ ओतप्रोत, भक्तिरसमे उगडुब आ व्यवहारमे चतुर-कुशल । जेना कि लेखक स्वयं कहैत छथि जे ई रचना तीनूमे सँ एको नहि थिक तानी आ भरनीक कुशल व्यवस्थापन द्वारा एकरा मात्र 'अधिकसँ अधिक ऐतिहासिक बनएबाक प्रयास' कएल गेल अछि । 'एहिमे विद्यापतिकेँ आलम्बन बनाए तत्कालीन मिथिलाक राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक आ सांस्कृतिक छवि उपन्यासक रजतपट पर प्रक्षेपित कएल गेल अछि ।'

हमर आलोच्य विषय थिक एहि पुस्तकस्थ चरित्र-चित्रण एवं भाषा-शिल्प । चरित्रचित्रणसँ हमर अभिप्रेत मात्र उपन्यासमे आएल छोट-पैघ पात्रे टा नहि, अपितु ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे समकालीन समाजक गतिविधिक चरित्र-चित्रणसँ सेहो अछि । ओहि आलोचकक (श्री रमेशचन्द्र झाक) एहि उक्तिसँ हम पूर्णतः असहमत छी जे ई विद्यापतिक आत्मकथा नहि वरन शिवसिंहक आत्मकथा थिक । अपन मत स्थापना काल ओ कोनो विभ्रमसँ ग्रस्त छलाह प्रायः । कोनहुँ कालखण्ड हो एक प्रधान पुरुष ओ प्रबल विचारधाराक प्रभावकेँ नकारल नहि जा सकैछ । शिवसिंह एक एहने पुरुषसिंह छलाह जनिक अभिरुचि ओ प्रभाव तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक सांस्कृतिक–एहि दू प्रमुख क्षेत्रमे छलन्हि । तहिँ ओहि कालखण्डक इतिहास वा इतिहासपरक ग्रन्थ हुनका उपेक्षा नहि कए सकैत अछि । आ जँ से करत तँ ओ एक श्रमसाध्य दुष्प्रयास मात्र होयत । तत्कालीन मिथिलाक राजनैतिक आ सांस्कृतिक क्षेत्रमे ओहि पुरुषसिंहक पौरुषदीप्त प्रभावक तिरस्कार ने विद्यापति कए सकैत छलाह आ ने पं. श्री गोविन्द बाबू सैह । समीचीन दृष्टि आ वक्तव्य थिक समीक्षा । अनुदारता आ ठप्पाछाप लेखन एकर दूषण थिक ।

अस्तु, आरम्भ करी महाकविएसँ । आत्मकथो तँ हुनके थिकन्हि । गोविन्द बाबू अपनहुँसँ बूढ़ विद्यापतिसँ कहबैत छथि– *''जरए दहक, जरए दहक ! ओ आत्मकथा हमर नहि छल । ओ छल एक लोभी चटुकार ब्राह्मणक मुहसँ कृतज्ञतावश बहराएल मिथ्या प्रशंसाक पुंज ।''* ..(पृ0 2) आदि-आदि । आर्थात् बूढ़ भेने विद्यापति दूरि नहि गेलाह, भसिआएल नहि छलाह, असत्यक ढोल नहि पीटैत छलाह । अपन 'दीर्घजीवनक शीतल संध्यामे पहुँचि' ओ भय, लोभ, व्यथा, दीनता आदि सभसँ मुक्त छलाह । से तथ्य हुनक रचना-संसार सेहो प्रमाणित करैत अछि । ओही विद्यापतिक मुहसँ कहाएब– *''नोनेकेँ हमर अन्तिम वाक्यक चोट लगलैक । ओ चुप्पहि गेल आ झप्पा आनि हमर आगाँ पटकि देलक आ चुप्पे ठाढ़ भए देखए लागल जे हम की करैत छी''* (पृ0 1)– किछु अनसोहाँत लगैत अछि । ओ निश्चय छोटका झप्पा आनि बाबाक समक्ष राखि देने होएत, पटकने कथमपि नहि होएत । गोविन्द बाबूकेँ प्रायः भ्रम भेलन्हि ।

जे किछु सामग्री विद्यापतिक द्वारा स्वयं देल गेल अछि हमरा लोकनिकेँ आ जे किछु अन्य स्रोत सभसँ प्राप्त भेल अछि तकर अपना-अपना ढंगेँ व्याख्या-टीका लोक करैत अछि । सम्प्रति हमरा समक्ष जे विद्यापति छथि से पं. गोविन्द बाबूक दृष्टिएँ । महाकवि एवं ओहि कालक जाहि कोनो महान् व्यक्तित्वक चर्चा एहि रचनामे अछि से सभ न्यूनाधिक ओहने छथि जकर हम कल्पना करैत छी । विद्यापतिं एक 'प्रतिभावान् (पृ. 20) छात्र' छथि भलेँ ओ शास्त्रार्थमे पराजित भए जाथि । समकालीन परिस्थिति सर्वथा अनुकूल, आँखि-कान खोलने, सतर्क, लोकरंजक, लोकप्रिय, करुणार्द्रधी, व्यवहारपटु व्यक्तित्व अछि एहि विद्यापतिक । कमलाकातमे एकान्तमे कुमर वीरसिंह आ कीर्तिसिंहकेँ सतर्क करैत कहब– *''जतेक कानक होहु एतहि कानि लएह । चटिसारमे नोर नहि खसएबाक छहु''* (पृ0-15)-हुनक व्यक्तित्व अपेक्षित गढ़निक अनुकूले थिक । अयाची मिश्र द्वारा फज्झतिक उपरान्त दूनू कुमरक गेलाक पश्चात् एहि भविष्णु बालकक सोचब– *''महामहोपाध्यायक चिंता दूर भेल । गुरु सेहो अपन दायित्वसँ मुक्त भेलाह । परन्तु हम सोचैत ठाढ़ रहलहुँ, कतए शरण भेटतनि प्रिय बालसखाकेँ ? कोन गति होएतैक मिथिला राज्यक ?''*–ओकर अन्तःप्रज्ञाक बानगी प्रस्तुत करैत अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हाल-साल तक प्राचीन परम्पराक नैय्यायिक आ वैय्याकरण लोकनि साहित्यक अध्येता एवं साहित्यक रचना कएनिहारकेँ उपेक्षाक दृष्टिसँ देखैत छलाह। विद्यापति प्रभृतिक कविताकेँ रजनी-सजनीक रचनाकार कहि उपहास होइत छल। सएह प्रवृत्ति राज्याश्रय पएबासँ पूर्व पाठावस्थामे तथा पश्चातो विद्यापतिक प्रति पबैत छी। गुरुक वाकृताइनसँ कवि हताश भए जाइत छथि यद्यपि न्यायशास्त्रक कर्कश तर्कसँ जेना-तेना समय निकालि सहज मानवीय अनुभूतिक रचना कइए लैत छथि। गुरुक आशंका सत्ये छलन्हि जे विद्यापतिक मोहिनी कलाक आगाँ हुनक कर्कश तर्क के सुनत? डरसँ प्रतिभावान् कवि अपूर्णहि शिक्षाक भागिकेँ घर पड़ा जाइत छथि। ककरहु मूल्यांकन तँ यथार्थमे ओकर परोक्षे भेला पर होइत छैक। सएह होइत अछि विद्यापतिक प्रसंग। चौपड़ि, सरिसब गाम आ स्वयं गुरु सेहो हराएल-सन अनुभव करैत छथि। आँखी झाक समक्षहि गुरुक आँखिसँ खसल नोरक एक ठोप (पृ0-24) विद्यापतिक मूल्यक दृष्टांत दैत अछि।

कविक जीवनक दोसर अध्यायक-किशोरावस्थाक कोमल भावनाक भित्तिपर सहजहिँ ठाढ़ भेल एक अनिवार्यताक अध्यायक-आरम्भ होइत अछि ओइनी घुरला पर। एतहिसँ आरम्भ होइत अछि शिवसिंह आ लखिमासँ आजीवनक सम्पर्क। पहिले भेटमे भगोड़ा छात्रक मातृभूमिक प्रति आत्यंतिक लगावक दर्शन होइत अछि। *"मिथिलाकेँ अपन राजा भेटलैक तँ घर-घरमे, जन-जनमे आनन्द लहरएलैक, आशा जगलैक जे आब ओकर धन-सम्पत्तिक, मान-मर्यादाक, धर्म-कर्मक रक्षा होएतैक। कतए गेलैक ओकर आशा-आकांक्षा? राजा तँ भेलाह परन्तु कहाँ देखलन्हि ओ प्रजाक कल्याण? राजा घरहिमे शस्त्र भजैत रहलाह आ पण्डित घरहिमे शास्त्र मथैत रहलाह।.....तोहर प्रजा कानि रहल छहु आ तोँ देखए चाहैत छह सद्यःस्नाता कामिनीक सौन्दर्य आ सुनए चाहैत छह तकर वर्णन हमर कण्ठसँ? क्षमा करह, वर्तमान स्थितिमे ई काज हमरा सक नहि होएत।"* (पृ. 20)

विद्यापतिक सहज कोमल स्वभाव ओइनी आबियोकेँ पुनः रजनी-सजनीमे ओझझा जाइत अछि किन्तु से अन्तर्विवेकक रूपमे कखनहु मन्दाकिनीक व्यंग्यात्मक उपहासमे, कखनहु पिताक अनुशासनमे सुबाट लागि जाइत अछि। मन्दाकिनी एवं कालिन्दीक प्रिय पति, बेटा पण्डित गणपति ठाकुरेक नहि समाजक, मित्र राजा शिवसिंहेक नहि अन्यो कुमर सभक, दीन दुःखीक, पतिता-परित्यक्ताक, लाखो जन-जनक कंठक कोमल आ चेतओनीक स्वर, राजनीतिक ओझराएल कंटकाकीर्ण पथक कुशल पथिक, विश्वासक आश्रयस्थल, महाकविक चरित्र-चित्रणमे रचनाकार कोनो अभाव नहि रखलन्हि अछि। रुक्मिनी (मझौरबाली)क उपकथासँ जोड़ि हुनक चरित्रकेँ आओरो समुन्नत बना दैत छथि। उपन्यासक अन्तमे कविक मुह सँ कहबैत छथि–*"नहि कए सकलहुँ ओहि अकारण पसरल जाइत धारणाक खण्डन। तर्कक ने खंडन हो, धारणाक कतहु खंडन भेलैक अछि?"* एहि उपन्यासक प्रसंग सेहो ई कहल जा सकैछ। विद्यापतिक प्रसंग जे धारणा छैक लोकमानसमे तकर भंजन कतहु नहि भेल अछि। तानी इतिहासक थिक। भरनी आ रंग-टीप देबामे, कसीदा करबामे उपन्यासकारक कौशल देखबामे अबैत अछि।

सहजहि ई अनुमेय थिक जे विद्यापतिक समान अन्य छोट-छिन यद्यपि ओहि कालक महत्तर चरित्रक चित्रणमे ओतेक साम्रगी नहि लागल अछि जतेक कवि विद्यापतिक। जतेक जे विद्वान्, पंडित, राजनायिक, मंत्री, स्त्री वा पुरुषक चर्चा अछि तकरा सभक यथायोग्य निर्वाह भेल अछि। जकरा जाहि रूपमे राखल गेल, उपयोग कएल गेल, तकर निर्वाह कुशलतासँ भेल अछि। सर्वाधिक कौशलक प्रदर्शन महाराज देवसिंहक चरित्र-चित्रणमे कएल गेल अछि। जाहि सूक्ष्मताक संग हुनक आन्तरिक व्यथा, कछमछी, अभिलाषा आ गुरुताक अंकन भेल अछि से सर्वथा स्तुत्य अछि। शिवसिंह तँ काल-पुरुषे छथि। हुनकहु दूनू पक्षक–कोमल आ कठोर, लखिमापति आ तिरहुतपतिक–चित्रण श्लाघ्य अछि। रजनी आ रूपन अपन स्वाभाविकता लेने ओहि कालक दमनचक्रक बानगी दैत छथि।

आँखी झा एवं हुनक बहरघराक उपयोग लेखक, हमरा मतेँ, ओहि कालक सामान्य जनक प्रतिनिधि अभिव्यक्तिक रूपमे कएल अछि। समकालीन घटनाक्रमसँ निरपेक्ष चाहियोकेँ केयो नहि भए सकैछ। आँखी झा वैह लोकदृष्टि थिकाह, बहरघरा ओकर प्रक्षेपण आ आकलन स्थल। तहिना रेणुका देवीक प्रविष्टि सेहो। ओ विद्यापतिक कालजयी लेखनी आ शब्दशिल्पक प्रकट रूप थिकीह। अपना जीवन-कालहिमे महाकविक गीतसभ जन-जनक कंठक शृंगार भए गेल, से रेणुकादेवीक बिम्ब द्वारा प्रस्तुत कएल गेल अछि। पक्षधर झाक एक छोट-छिन उल्लेख अछि पाठावस्थाक, से किछु अखरल। अस्तु सभ पात्रक चरित्र-चित्रणमे उपन्यासकार सफल छथि ओहिना जेना विधाताक सृष्टिमे सेहो गुण आ दोषक समन्वय होइछ। व्यक्तिक बाह्य वा प्रक्षेपित चरित्र आ आन्तरिक एवं एकांतपक्ष दुनूक समन्वय आवश्यक। से निर्वाह भेल अछि।

कालक चरित्र-चित्रणमे लेखक परिश्रम तँ बड़ कएल अछि, सावधानी कम राखल। हमीदा, जे पाछाँ चलिकेँ रुक्मिणी नामे जानल जाइत छथि से ओहि कालक आततायी मुसलमान शासनक विद्रूपताक सद्यः विग्रह थिकीह। कीर्तिलता मे तत्कालीन मिथिलाक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

देशदशाक वर्णनक सजीवताक उपयोग कलात्मक रूपेँ कएल अछि । हाट-बजारक वर्णन, मंगोल सैनिकक वर्णन, महराज देवसिंहक तीर्थयात्राक वर्णन, प्रभृति ओहि कालक राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक दुर्दशाक सजीव चित्र खीचैत अछि । विद्यापतिक अन्य रचनासभसँ सहयोग लए लेखक ओकरासभक रोचक उपयोग कएल अछि । रुक्मिणीकेँ शुद्धिकरण, रूपन मड़रक व्यथा-कथा एवं राजवंशक ओझरौटक प्रस्तुति जाहि सूक्ष्मताक संग कएल गेल अछि से सम्पूर्ण कथाक स्वरूपकेँ आओरो अधिक मानवीय संवेदनासँ भरि दैत अछि। ओहि दुस्सह कालखंडमे विश्वास, आस्था एवं निरन्तरताकेँ परम्पराक स्वच्छ प्रवाहसँ जोड़ि जिआएकेँ रखबाक उपन्यासकारक कौशल प्रशंसनीय अछि। कालक एहन समग्र एवं सूक्ष्म चित्रण सेहो थोड़ जगहमे एक अतिरिक्त आकर्षण आनि दैत अछि रचनामे ।

एक स्थल पर स्खलन परिलक्षित होइत अछि । गुरुक वाग्दंडसँ प्रताड़ित किशोर विद्यापति कमलाकातमे विषादमे डूबल छथि। पक्षधर झा आ तोताइ झा आबिकेँ ई कहि मन हल्लुक करैत छथिन जे गुरुक ताड़ना वास्तवमे वरदाने छल। पण्डित भलेँ ओ नहि भए सकथु कवि होएबाक आशीर्वाद अमरताक वरदान थिक । ओही कालमे पक्षधर झा कहैत छथि –"बालचन्द बिज्जाबइ भासा दुज्ज न लग्गइ दुज्जन हासा ।" ध्यान देबाक थिक जे ओहि कालमे विद्यापति मात्र एक छात्र छथि। चौपाड़िसँभगलाक बाद घर पर माए कहैत छथिन्ह– "बाउ" सोलह वर्षक भेलाह (पृ.-25) । पुनः उपन्यासक अन्त भागमे कुमर कीर्तिसिंहसँ भेट भेला पर विद्यापति कहैत छथि – "लगैत अछि आइ कतेक युगक बाद तोहर मुह देखने होइ। मन छहु ? सरिसओमे जे भेट भेल रहए ? हम पचीस वर्ष पूर्वक स्मरण देअओलिअनि।" (पृ. 87) असलानक पराजयक बाद कीर्तिसिंहक राज्यारोहण होइत अछि । विद्यापति ओतएसँ जएबासँ पूर्व राजाकेँ *कीर्तिलता* लीखि समर्पित करैत छथि । तखन कोना पाठावस्थहिमे *कीर्तिलताक* पंक्ति पक्षधर झाक कंठमे समयसँ पूर्वहि आबि गेल ? ओहिकालमे विद्यापति अवहट्ठमे किछुओ लिखलन्हि तकर जानकारी नहि अछि । गुरुक समक्ष भाखा (मैथिली) आ संस्कृतमे रचना करबाक बात ओ स्वीकार करैत छथि ।

महारानी लखिमाक चर्चा उपर नहि भेल अछि । महाराज शिवसिंहक सामने लखिमा विद्यापतिक महागाथाक केन्द्रस्थलमे छथि । नवकनियाँ लखिमा आ तपोनिरता लखिमा विद्यापतिक दू पृथक् रूप थिक। मान, विरह प्रभृति अन्य शृंगारादिक रचनाक केन्द्र लखिमा विद्यापतिक युवावस्थाक उष्ण भावक प्रतीक छथि तँ तपोनिरता लखिमा वयसक शीतल संध्यामे पहुँचल अनुभवसिक्त रचनाकारक शांत रसक अभिव्यक्ति । विद्यापतिसँ तँ स्पष्टीकरण पूछल नहि जा सकैछ आब । लेखककेँ अनुमानक स्वातंत्र्य छन्हि। युक्तिसंगत अनुमान पर आपत्तियो दोषावह । "पतिक विरहमे तिल-तिल कए गलि प्रेमक प्रज्ज्वलित आगिमे प्राणक आहुति" (पृ0 122) देनिहारि लखिमाक चित्रण रोचके नहि हदयग्राही अछि ।

मैथिलीमे आडुर पर गनले उपन्यास अछि जकर कथा एवं भाषा-शिल्प दूनू समाने रूपसँ रोचक हो। एहि प्रसंगमे **स्व. जयदेव मिश्रक** ओ कथन बेरि-बेरि मोन पड़ैत अछि जे ओ *हमरा लग रहब ?* उपन्यासक चर्चा-समीक्षा आयोजनक अवसर पर कहने रहथि जे सोझ आखरमे सोझ बात कहब सभसँ नीक आ प्रशस्त शिल्प थिक, तकरा आजुक बहुतो रचनाकार नहि ठेकानैत छथि। बलात् लादल कथानक, प्रयाससाध्य गंभीरता, देखाउसक दार्शनिकता कोनो रचनाक प्रवाहकेँ, ओकर सहज गति केँ रुद्ध कए दैत छैक । काल आ पात्रक अनुरूप भाषा, कथोपकथन, विम्ब-विधान, व्यञ्जनाक समावेश आदि भेनहि रचनामे सहजता अबैछ । हमर प्रस्तुत आलेखक दोसर भाग थिक एहि उपन्यासक भाषा-शिल्प । हमरा जनैत उपरोक्त सभ तथ्यक ध्यान लेखक यथासाध्य एहिमे रखलन्हि अछि ।

उपन्यासक आरम्भ नोने आ बाबाक मध्य संवादसँ होइत अछि। जाहि नेनामे प्रश्नसँ पूर्व 'प्रतीक्षा' 'शंका' आ 'धाख' (पृ0-1) छैक ओ अपन स्वनामधन्य पितामहक सद्यः उपस्थितिमे कोनहु अवस्थामे झप्पाकेँ पटकत नहि, अनिच्छेसँ सही आगाँमे राखि देत । जाहि आवेगमे विद्यापति **अप्पकहा केँ** जरबैत छथि से परिस्थितिक अनूकुल । एक छोट-छिन अध्यायमे एक दीर्घजीवनक स्वमूल्यांकनक आस्वाद भेटि जाइत अछि । पहिल अध्याय यथार्थमे कविक जीवनक अंतिम अध्याय थिक । दोसर अध्याय सोझे सात-आठ दशक पूर्वक कालखंडमे लए जाइत अछि। आशंकाक वातावरण, ओही बीचमे आशाक संचार–ई दुू मिलि उपन्यासक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि ।

आरम्भसँ अन्ततक भाषा सोझ, परिष्कृत एवं तहू सभसँ बेसी प्रवाहमय अछि। उपन्यासमे आवेग, उत्साह, नैराश्य, हर्ष, पीड़ा आदि बहुतो तरहक भावक परिस्थिति बनैत अछि तथापि भाषा अपन सोझबटिया धेने लक्ष्य दिस एक प्रवाहमे बढ़ल जाइत अछि । पं. गणपति ठाकुर एवं विद्यापतिक बीचक वार्तालाप एक बानगी प्रस्तुत अछि। विद्यापति चौपाड़िसँ पड़ाएकेँ घर आबि गेल छथि । चौपाड़ियोमे ओइनीक हाल-चाल बुझबाक लेल कनसोह लेबाक क्रममे कतेक बेरि फज्झति भेल रहन्हि । परिस्थितिक गंभीरता, दुख-दैन्य आदि सभ नेनाकेँ प्रौढ़ बना दैत छैक । एहि सभ विषयसँ पिता अवगत छथि तेँ कहैत छथिन्ह पुत्र सँ–

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

"यथार्थ कहलह तोँ । हमरहु मोन होइत अछि जे एतएसँ पड़ाए कमलदह-सन कोनो शांत-शीतल स्थलमे शरण ली । परन्तु एक बात कहह । की ओइनीकेँ अपन लोकवेदकेँ, अपन देशकेँ एहिना गन्हाएल-घिनाएल छोड़ि, अपन प्राण लए कतहु पड़ाए जाइ से उचित होएत ? कोनो उपाय करहि पड़तहु । बाउ, करहि पड़तहु ।" (पृ. 26).

विद्यापतिक चरित्र-व्यक्तित्व निर्माणमे वृद्ध-अनुभवी पिताक ई एकान्तमे देल गेल सम्मति, उपदेश, निर्देशक दिशानिर्देश बड़ मार्मिक अछि । एकहि व्यक्तिक विविध मनोभावक आरोह-अवरोह, ओकरा मोनक औनाहटि, अन्हारसँ प्रकाश दिस रास्ता बनाएकेँ जएबाक आत्मबल, जिजीविषा आदि सभक ध्वनि एहिमे अछि ।

तहिना कुमर शिवसिंहकेँ नवपरिणीता लखिमाक समक्षहि गंजन करबाक भाषामे एकटा अभिप्रेत चुनौतीक स्वर अछि । ओतएसँ घुरबाक काल रुक्मिणीक विलापमे एक दाबल-चापल अबलाक आक्रोश आ वितृष्णाक भाव अछि, व्यथासँ तँ सराबोर अछिए । (पृ0-30).

ओही क्रममे पिता गणपति ठाकुरकेँ कहल गेल वाक्य थोड़बे मे सभ अनकहल कहि दैत अछि–"की कहू ? अभागलि नारी केँ तँ अपन नामो नहि होइत छैक । बेटा रहितैक तँ फलाँक माए कहितिऐक । सासुर बसैत तँ फलाँ गाम बाली कहितिऐक ।" (पृ.-31).

उलहन-उपरागक भाषाक दोगे-सान्हिए प्रयोग बड़ रोचकता आनि दैत अछि । स्नेह, वात्सल्य आ प्रेमक तँ कमिएँ नहि अछि । "घूरि अएलहुँ तँ बड़ी काल धरि नीने नहि आबए । ध्यान आबए मुह जाँति कनैत-कनैत लाल भेल माइक आँखि, विरहक पहिल वेदनासँ छटपटाइत मन्दाकिनी आ कालिन्दी, एकसर अबूह चिन्तामे डूबल युवराज, अज्ञातवासमे उलटल-बिलटल वीरसिंह आ कीर्तिसिंह आओर किदन- कहाँदन ।" (पृ. 60)

ठाम-ठाम वर्णनक विलक्षण समावेश भेल अछि । से सभ *कीर्तिलतासँ* प्राप्त अछि, तथापि उचित स्थल पर उचित वस्तुक समावेश चमत्कारपूर्ण अछि । मंगोल जातिक वर्णन– *"लूटिए एकरा सभक आय आ पेटे व्यय, अन्यायहि वृद्धि आ युद्धहि क्षय । मारबाक काल ने स्त्रीकेँ बकसत ने बाल-वृद्ध केँ । ने दीनक प्रति दया, ने सामर्थ्यवानक भय । ने गोवधसँ डर, ने ब्रह्मवधसँ । ने साधुक काज, ने चोरक डर । ने पापसँ घृणा, ने पुण्यक काज...,(पृ. 69). आगाँ ओही क्रममे "कतहु तमारु देखल तँ कतहु कूजा, कतहु निमाज तँ कतहु पूजा । कतहु व्रत तँ कतहु रोजा, कतहु ओझा तँ कतहु खोजा..."*(पृ0-70).

समग्र उपन्यासमे उपस्थित स्थितिक चित्रण अनुकूल आ सटीक अछि । आसन्न संकटक घड़ीमे महारानी लखिमाक मनोदशाक चित्रण बड़ मार्मिक अछि–

"छिड़िआएल केस, ससरल गहना, खसल आँचर, लाल नयन, सुखएल ठोर, गाल पर काजर-मिलल नोरक करिछाओन रेखा, मनमे सर्वनाशजन्य पीड़ा आ निराशाक भीषण उन्माद–की इएह थिकीह रूपनारायणक अमृतलहरी आ हमर कल्पनाक राधा? हँ, इएह थिकीह । लग अएला पर चिन्हलिअनि आ डराएल जकाँ चुप्पे ठाढ़ भए गेलहुँ । ओ ने बैसए कहलन्हि, ने अपनहुँ बैसलीह, ठाढ़िए-ठाढ़ि पूछि बैसलीह–महाराजकेँ सिंहक मुहमे फेकि देलिअनि आब हमरा बुढ़बा बाघक पिजरामे फेकए चाहैत छी अहाँ ?

" 'ह ऽ ऽ म ?', एके शब्दमे उत्तर दए एक डेग पाछु हटि हुनक मुह तकैत रहलहुँ ।

" 'अहाँ नहि तँ के ? महाराजकेँ छाड़ि अहाँ नहि तँ आन के अछि जे हमर पीड़ाक चोट सहत ? बाजू के अछि ?' बजैत-बजैत सहसा हुनक रूप बदलि गेल । फेर नोर टघरल आ गाल पर एकटा करिछाओन रेखा बनल ।" (पृ. 114)

एहि उद्धरणसँ बहुतो बात स्पष्ट भए जाइत अछि–पूर्वक स्थिति, कविक निकटता, रानीक अटूट विश्वास कवि पर, भीत हरिणी समान राजप्रेयसीक मनोदशा, अनागत दुश्चिन्ता । भीषण परिस्थितिमे विश्वासक एक महीन सूत रानीकेँ कविसँ जोड़ैत अछि । एक कुशल मूर्तिकार समान लेखक सभ रंग, माटि आ मशालाक प्रयोग कएल अछि । अगिला परिच्छेदसभ आओरो कारुणिक भए जाइत अछि ।

आदिसँ अन्त धरि भाषाक प्रवाह परिस्थितिक अनुकूल रहल अछि जतए कहबी, लोकोक्ति, छोटछिन दृष्टांत-कथा, बहुतो अनचिन्हार होइत शब्दसभक कुशल प्रयोग आदि विशेषता चमत्कार आनि दैत अछि । भाषा पंडिताम नहि अछि अपितु सहज अछि, सर्वगाह्य अछि, किन्तु बलजोरी सहज नहि बनाओल गेल अछि । प्रगतिवादी होइतहुँ पण्डितजी नवसिखुआ प्रगतिवादी जकाँ भाषाक कदापि दुर्गति नहि करैत छथि, तेँ साधुवाद !

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विद्यापतिक आत्मकथा

□ डा. श्री तारानन्द वियोगी

लेखक सामान्यतः दू प्रकारक होइत छथि। एकटा ओ जे अपन जीवनक सर्वश्रेष्ठ सुरूहेमे लिखि लैत छथि। एकर बाद जे ओ लिखै छथि, से पछिलुका कयल काजकेँ अगाँ बढ़बय बला नहि होइत छैक। अपनहि बनाओल प्रतिमानक नीचाँ ओ घुरियाइत रहैत छथि। एहन लेखकक एक उदाहरण छथि—ललित। हिन्दीमे एकर बड़ नीक उदाहरण छथि—फणीश्वरनाथ रेणु।

मुदा, दोसर कोटिक लेखक ओ होइत छथि जे लेखन सुरूह करबाक बाद निरन्तर आगाँ बढ़ल जाइत छथि, नव-नव प्रतिमान बनौने जाइत छथि, आ अपन सीमासभकेँ तोड़ने जाइत छथि आ बढ़ल जाइत छथि। एहन लेखकक जीवनक जे अन्तिम रचना होइछ, सैह सर्वश्रेष्ठ होइछ। एकर एक उदाहरण राजकमल छथि। एक उदाहरण प्रेमचन्द छथि। *विद्यापतिक आत्मकथा* क प्रणेता पं. गोविन्द झा एही कोटिक लेखक छथि।

मूलतः भाषावैज्ञानिक आ अनुवादक पं. गोविन्द झा सुरूहेसँ सर्जनात्मक लेखन सेहो करैत रहलाह अछि। मैथिली कथामे जहिया नवीनताक उन्मेष भए रहल छल, तहिया ओ 'सामाक पौती'-सन कथा लिखलनि। ओ समय-समय पर थोड़-बहुत कविता सेहो लिखलनि, गजल धरि लिखलनि। नाटकमे तँ खैर हुनक बोध केर जवाब नहि अछि— आधा दर्जनक करीब हुनक नाटक प्रकाशित छनि। आब, पंडित जी उपन्यासक क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि अछि। पहिल उपन्यास *विद्यापतिक आत्मकथा* आयल अछि।

विद्यापतियेकेँ ओ अपन उपन्यासक विषय किऐक बनौलनि, तकर उत्तर ताकब कठिन नहि अछि। विद्यापति-युग पर हुनक प्रभूत अध्ययन छनि। विद्यापतिक ग्रन्थसभकेँ ओ अनूदित आ संपादित कयलनि अछि। विद्यापतिक गुण पर ओ सर्जनात्मक लेखन (नाटक) पहिनहु कए चुकलाह अछि। स्वाभाविक थिक जे ओ युग हुनका लेल बेस परिचित रहल होयतनि।

एहि ठाम हम गोविन्द बाबूक एक सहज-सामान्य विशेषता दिस ध्यान आकृष्ट करय चाहब। हुनकामे एक खास संस्कार छनि। जाहि विषय पर हुनका गँहीर पकड़ नहि रहतनि, जकर गह-गहसँ ओ परिचित नहि रहताह, ताहि पर कलम नाहे चलौताह। ई हुनक सहज-सामान्य विशेषता थिकनि, मुदा ई विशेषता नबका लेखकसभमे दुर्लभ भेल जाइत अछि। जतय-ततयसँ दकचि-पकचि कए थोड़-बहुत बात जमा कए लेल जाय, आ लिखि मारल जाय। पं. गोविन्द झाक लेखन, एहि अर्थमे एक शिक्षा आ प्रेरणाक लेखन थिक। ई विशेषता प्रायः हुनकामे वैयाकरण होयबाक कारण अयलनि अछि— नामूलं लिख्यते किञ्चित्—जे कि आब हुनक संस्कार बनि गेलनि अछि।

× × × × × ×

'विद्यापतिक आत्मकथा'—जेना कि नामहिसँ स्पष्ट अछि, आत्मकथात्मक शैलीमे विद्यापतिक जीवन-गाथा प्रस्तुत करैत अछि। अपन संयोजनमे ई उपन्यास महाकाव्यात्मक अछि। एहि उपन्यासकेँ पढ़ैत अहाँकेँ अनुभव भए सकैत अछि जे ठीके आब महाकाव्य-रचनाक युग नहि रहलैक, आ गद्यक एहि युगमे एकदम ठीक-ठीक महाकाव्यक स्थान उपन्यास लए लेलकैक अछि।

ई उपन्यास विद्यापतिक जन्म-कालक विवरणसँ प्रारम्भ होइत अछि, आ लखिमाक मृत्यु लग आबि कए ठमकि जाइत अछि, यद्यपि कि समाप्त एकाध पृष्ठक बाद भेलैक अछि। एहि पर कतोक प्रश्न उठायल गेलैक अछि, मुदा से बादमे।

एहि उपन्यासकेँ पढ़ैत हमरा लागल अछि जे ई विद्यापतिक कथा ओतेक नहि अछि, जतेक विद्यापतिक आँखियेँ देखल ओहि युगक कथा। उपन्यासकार बड़ कलात्मकताक संग उपन्यासक सुरूहेमेँ एक छोट अध्याय जोड़ि एहि बातक संकेत दए दैत छथि। अपन जीवनक संग घटल घटनाकेँ स्वयं अपनहि संग कयल गेल प्रयोगसभकेँ विद्यापति 'व्यतीत'क दर्पणमे देखैत छथि आ अपना तरहेँ तकर विश्लेषण करैत छथि। एहि रूपेँ, ई उपन्यास हमरा त्रि-आयामी (थ्री-डाइमेन्शनल) लगैत अछि। विद्यापति अपन व्यतीतकेँ देखि रहल छथि, गोविन्द बाबू विद्यापतिकेँ देखि रहल छथि आ हमरालोकनि एहि तीनू व्यतीत, विद्यापति आ गोविन्द बाबूकेँ एक्कहि संग देखि रहल छी। प्रश्न उठि सकैछ जे ई देखब कतेक प्रामाणिक अछि? एकर उत्तर एहिबात पर निर्भर करैत अछि जे गोविन्द बाबूक दृष्टि (विजन) कतेक स्पष्ट छनि? की ओ इतिहासकेर सर्जनात्मक उपयोगक शक्ति रखैत छथि? की इतिहासमे सँ 'प्रकृत यथार्थ' केँ पकड़बाक कला हुनका साधल छनि? एहि सभटा प्रश्नक जे उत्तर हमरा भेटैत अछि, से गोविन्द बाबूक पक्षमे जाइत छनि।

ब्लॉख कतहु एक ठाम लिखलनि अछि जे इतिहासकार मिथ्या देवदूत (false cherub) नहि होइत अछि। ओकर काज न्याय करब नहि थिक, समुझब-बूझब थिक। ओकरा व्यक्तिपरकता तथा वस्तुपरकताक भयानक सामुद्रिक शिला सभक बीचसँ जहाजकेँ सावधानीपूर्वक आगाँ लए जयबाक रहैत छैक। गोविंद बाबूक ई उपन्यास पढ़ैत ब्लॉखक ई कथन हमरा बेर-बेर मोन पड़ैत रहल अछि। एक इतिहासकारक मादे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जे बात ब्लॉख कहैत छथि, से बात हमरा गोविन्द बाबूमे घटित होइत देखायल अछि। एहि ठाम इतिहासज्ञ आ इतिहासकारक अन्तरकेँ स्मरण राखल जयबाक चाही। इतिहासक प्रति जे नवीन धारणा विकसित भेलैक अछि ताहि अनुसार इतिहास आब सांख्यिकीय विवरणक जटिल जंगल नहि थिक, अपितु ई एक सम्पूर्ण सृष्टि थिक, जकर रचनाकार ने मात्र उपभोक्ता होइत अछि, उपभोक्ता सेहो होइत अछि। मिथ्या देवदूत, जे कि एक काल्पनिक आदर्श संसारक द्रष्टा (यूटोपियन) थिक, होएबासँ गोविन्द बाबू कोना बचलाह अछि, आ व्यक्तिपरकता आ वस्तुपरकताक शिलासँ अपन जहाजकेँ कोना सावधानीपूर्वक ओ बहार निकालि अयलाह अछि, अहाँ फेरसँ एहि उपन्यासकेँ ऐतिहासिक कृति मानि कए पढ़ी तँ झक-झक झलकय लागत। हँ, एक वस्तु धरि ओ बेसी कयलनि अछि—आ से थिक न्याय करब, न्याय करब इतिहासकारक काज नहि थिक, मुदा साहित्यकारक ई आवश्यक कार्य थिक। एहि तरहेँ, गोविन्द बाबूक ई कृति एक विशुद्ध इतिहास-ग्रन्थ नहि भए कए एक 'उपन्यास' होइत अछि— एक एहन उपन्यास, जकरा संग इतिहास होयबाक संपूर्ण संभावना घटित छैक।

उपन्यासकारक काज मात्र 'समुझब-बूझब' नहि थिक, न्याय करब सेहो थिक, एहि तथ्यक थोड़ेक खुलासा जरूरी अछि। विद्यापतिक जीवनक मादे जनबाक लेल हमरासभक लग कोन-कोन प्रमाण अछि ? आन्तरिक प्रमाण, जे कि हुनक विविध-विषयक लेखनमे अनुस्यूत छनि आ हुनका मादे खंड-खंड मे थोड़-बहुत सूचना दैत अछि। दानपत्र-सन किछु बाह्य-प्रमाण अछि। हुनक समकालीन कोनहु व्यक्ति हुनकापर सुव्यवस्थित रूपसँ लिखने होइनि, से प्राप्त नहि अछि। थोड़ बात पंजी कहैत अछि। आ बाकी बातसभ जे अछि, से किंवदन्ती आ दन्तकथासभ थिक। विद्यापति एहन पुरुष भेलाह, जे अपन जीवैत-जीत आ मृत्युक बाद तँ सहजहि, मिथक बनि गेलाह। ई मिथकसभ समुझबा-बुझबा लेल इतिहासकारलोकनि लग उपलब्ध छनि, आ न्याय करबाक लेल साहित्यकारलोकनि लग।

किंवदन्ती अछि जे साक्षात् महादेव विद्यापतिक सेवक बनि हुनका संग रहैत छलाह। तहिना ईहो जे मृत्युकालमे गंगा नदी अपन धार बदलि हुनका लग आबि गेलि छलीह। आब एहन वस्तुक उपयोग कोनो इतिहासकार आ उपन्यासकार कोना करय ? इतिहासकार एकर मिथकीय विश्लेषण कए सकैत अछि, जे कि ओहि व्यक्तित्वकेँ बुझबामे थोड़ेक सहायक होयतैक। मुदा, उपन्यासकारक लेल ई कोन काजक ? मुदा, गोविन्द बाबू तकरो उपयोग कयलनि अछि, आ से खूब तैयारीक संग। आँखी झाक बैसारकेँ मैथिल संस्कृतिक एक अविभाज्य अंग जकाँ (जे कि ओ वस्तुतः अछियो) ओ बड़ सुरुहेसँ भजियबैत अयलाह अछि। आ, एहि किंवदन्ती लग आबि ओ आँखी झा दिस आँगुर देखा दैत छथि। (स्मरणीय जे आँखी झा झूठ-फूस बात लए कए तिलक ताड़ करबाक 'बिजनेस' करैत छथि, जकरा पाछाँ उद्देश्य अछि—विनोदमय समय बितायब।)

किंवदन्ती कहैत अछि जे अपन पति (शिवसिंह)क मृत्युक बाद लखिमा देवी सती भए गेलीह। पं. झा कहैत छथि—नहि, ओ बरखो-बरख धरि वियोगमे तलमलाइत अपन प्राण देलनि। इतिहासकारक दृष्टि देखी। एहि बातक पर्याप्त साक्ष्य अछि जे सोलहम-सतरहम शताब्दी मिथिलाक लेल पतन आ अवनतिक कालिमामय काल छल, जखन एक-सँ—एक कुसंस्कार आ कुरीतिक प्रवेश मैथिल जनताक जीवनमे भेलैक। एही कालमे बाल-विवाह प्रचलित भेलैक। (अनैतिहासिक दृष्टि बला लोक कहैत छथि जे, गौरी अवस्था मे कन्याक विवाह हमरा लोकनिक संस्कृतिक अंग छल। सत्य ई जे ई बात एक सिद्धान्त-ग्रन्थ 'मनुस्मृति' मे लिखल भेटैत अछि, समाजमे ई व्यवहारमे छल, तकर ओनहु प्रमाण कोनहु ग्रन्थ मे प्राप्त नहि अछि।) एही कालमे बहु-विवाह प्रचलनमे अयलैक। एही कालमे परदा-प्रथा जनमलैक। एही कालमे मैथिल ब्राह्मणलोकनिक 'कुलीनता'क अभिमान अपन चरम पर पहुँचलैक। आ, यैह काल छल, जखन सती-प्रथा सेहो चलनमे अयलैक। विद्यापतिक समयमे ई सभ नहि छल, अथवा से पसिन्न नहि हो तँ कही जे अपन बीज-रूपमे छल। इतिहासक यैह 'समझ' गोविन्द बाबूकेँ घटनाक संग न्याय करबाक लेल प्रेरित करैत रहलनि अछि।

आब एही बातकेँ क्षण भरिक लेल उपन्यासकलाक कसौटी पर कसल जाय। लखिमाकेँ विद्यापतिसँ 'मधुर सख्य' (गोविन्द बाबूक शब्दावलीमे) छलनि। ओ दुनू समवयस्क छलाह। एक दोसरक प्रशंसक छलाह। दुनूकेँ एक दोसर नीक लगैत छलनि। लखिमाकेँ जखन अज्ञात स्थल पर चन्द्रकरक संग जयबाक आदेश (नव स्थापना) भेटलनि, तँ तकरा अस्वीकार कए ओ विद्यापतिक संग लगभग भागि पड़ेबाक स्थितिमे चलि निकललीह। बारह बर्ख धरि विद्यापतिक संग एकान्त स्थलमे रहलीह। आ एक दिन ओ सती भए गेलीह। हुनक ई सती होयब बहुत प्रतीकात्मक अछि। एहिसँ अनेक अर्थ बहार होइत छैक। पतिक मृत्यु निश्चित भए जायब—मात्र एतबे टा नहि। सती होयबामे सीधे एक दिन मरि जाय पड़ैत छैक—लोक-लाजक रक्षा लेल। एहि लेल अपन आन्तरिक एकनिष्ठताकेँ सदति बचौने राखब आवश्यक नहियो भए सकैछ। मुदा, वियोगमे तिल-तिल कए गलब—बहुत स्पष्ट एकदम व्याख्या-निरपेक्ष अछि। कल्पनाक आँखि पसारबाक जँ अवकाश भेटय तँ उपन्यासकारकेँ प्रतीकात्मक व्याख्या बला

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

घटनाकेँ पकड़बाक चाही। से पकड़ैमे गोविन्द बाबू माहिर छथि तकर उदाहरण हुनक कथासभ थिक। मुदा, एहि ठाम ओ से नहि करैत छथि तँ निश्चय थिक जे अपन इतिहास-बोधक संग ओ न्याय करैत छथि।

तहिना, एक आओर स्थल देखी। विद्यापतिक जे दोसर विवाह होइत छनि कालिन्दीसँ, ओहि ठामक विवरणमे उत्सव-जन्य रमन-चमन कतहु नहि छैक। छैक की तँ एकटा खौंझ, एकटा अन्यमनस्कता,आ विद्यापति जाहि शब्दें एकर विवरण दैत छथि–'कालिन्दी हमर मन्दाकिनीक सौतिनि भए आबि तुलइलीह'– एकदम स्पष्ट अछि जे ओ एहि दोसर विवाहक पक्षमे नहि छलाह। प्रश्न अछि जे विद्यापतिक एहि कालक आचरण मे गोविन्द बाबू एते संकोच, एते अपराध-बोध किऐक देखबैत छथि? इतिहासक उत्थर बोध रखनिहार लोक कहताह जे विवाह-संस्थाक प्रति गोविन्द बाबूक जे मान्यता आ कुण्ठा छनि (कि दोसर बिवाह नहि करबाक चाही) तकरा ओ विद्यापति पर जबरदस्ती लादि देलनि अछि। जखन कि ऐतिहासिक बात ई थिक जे बिकौआ-प्रथा-सन व्यवसाय तँ तहिया नहिञे प्रचलित रहैक; सख-मौज लेल दोसर विवाह करब गर्हित मानल जाइत छल। दोसर विवाहक जतेक जे उदाहरण ताहि कालमे भेटैत अछि से एक तँ प्रसवकालीन मृत्युदर केर आधिक्यक सूचक थिक, दोसर सन्तान (पुत्र) प्राप्तिक हेतु कयल गेल सांस्कारिक चिन्ताक द्योतक थिक। विद्यापति पुत्र-प्राप्ति हेतु दोसर बियाह कयने छलाह अथवा जेना कि गोविन्द बाबू कहैत छथि हुनका करय पड़ल रहनि।

दोसर बात, हुनक पदसभक आधार पर किछु लोक विद्यापतिक जे चित्र ठाढ़ करैत छथि, ताहि अनुसार तँ ओ रूप-रसक प्रेमी छलाह। दरबारी संस्कृतिक लोक छलाह, जतय बहु-विवाह तहियो प्रचलित छलैक (राजा सभ दिनसँ प्रजासँ भिन्न होइत आयल अछि, से स्मरण राखल जाय), तखन तँ हुनका दोसर विवाहसँ आरो बेसी प्रसन्न होयबाक चाही। उपन्यास ई बात कहि सकैत छल। ई बात कहने रचना थोड़ेक चहटगर बनि सकैत रहैक। मुदा, से कयने, फेर वैह बात, इतिहास-बोधक संग न्याय नहि कयल जा सकैत छलैक। आ, आब हमरा ई कहब बहुत जरूरी लागि रहल अछि जे जकरा हम गोविन्द बाबूक इतिहास-बोध कहलहुँ अछि, तकरा हुनक इतिहास-दृष्टि बूझल जयबाक चाही। ई सामान्य बोध नहि थिक। अपन जटिल प्रक्रिया पूरा कऽकए ई बोध आब पंडित जीक दृष्टि बनि गेलनि अछि।

एहि उपन्यासमे विद्यापतिक जे चित्र आ चरित्र रूपांकित भेल अछि, ताहू दिस एक दृष्टि देल जाय। मैथिलीमे प्रायः ई पहिल रचना थिक, जाहिमे विद्यापतिक एक स्वतंत्र आ वैयक्तिक रूप वर्णित भेल अछि। एहिसँ पूर्वक जे रचनासब विद्यापति-युग पर अथवा स्वयं विद्यापतिये पर लिखल गेल, ताहि सभक नायक प्रायः शिवसिंह भेल करथि आ जेना हुनक मनोविनोदक एक उपकरण लखिमा रहथि, तहिना एक उपकरण विद्यापति सेहो छलाह– यैह छल रचनाकारलोकनिक दृष्टि। एना किऐक होइत छल? सहज उत्तर अछि जे विविध स्रोत सभसँ विद्यापतिक मादे जतेक सूचना रचनाकारलोकनिकेँ प्राप्त छल, ताहिसँ विद्यापतिक मात्र ढाँचा (स्कल्टन) बनैत छल, हाड़-मासुक एक जीवित प्राणी विद्यापति नहि बनि सकैत छल। से बनयबाक लेल प्रचुर श्रमपूर्वक इतिहास-दृष्टिकेँ उर्वर आ द्वन्द्वात्मक बनायब आवश्यक छलैक। बहुत सस्त पड़ैत छल, राजा शिवसिंहक छत्रच्छायामे विद्यापतिकेँ मानवाकृति दए देल जायब। सैह होइत रहल। एहि बेर मुदा विद्यापति स्वतंत्र व्यक्तित्व ल'क'प्रकट भेलाह अछि। स्वतंत्र व्यक्तित्वक माने की? माने ई जे विद्यापतिकेँ सेहो शरीर, अंगोपांग, आँखि-कान-नाक आ मस्तिष्क छल। विद्यापति सोचि सकैत छलाह आ सपनो देखिं सकैत छलाह। हुनकहु परिवार छलनि। माय-बाप- परिजन-पुरजनक राग-विरागक संग ओहो पोसायल रहथि।

अद्‌भुत बात थिक जे जे परम्परा हुनका साक्षात् शिव द्वारा पूजित 'महान् आत्मा' घोषित कयलक, सैह दोसर दिस हुनक एक सुपुष्ट व्यक्तित्व निर्मित नहि होअय देलक–किंवदन्ती आ दन्तकथेमे सही। ई मैथिल मनोवृत्तिक एहि विशेषता दिस इंगित करैत अछि जे ठाम -ठीम भने अयाचियो मिसर प्रतिष्ठित भए जाथु, मुदा प्रतिष्ठा आ व्यक्तित्व लेल प्रभुत्व-सम्पन्न श्रीमान् होयब आवश्यक छल। आ विद्यापति-सन व्यक्ति जँ श्रीमान् होइतहु, एक विराट श्रीमानक छत्रच्छायामे छलाह, तँ निश्चय जे हुनक व्यक्तित्वक प्रतिष्ठापन आ संरक्षणमे भारी व्यवधान अयबाक छलैक।

एहि उपन्यासक विद्यापति बड़ कोमल हृदयक लोक छथि। हुनक संवेदना-शक्ति बहुत तीक्ष्ण छनि, नेनपनहिसँ जे हुनक चित्र ठाढ़ कयल गेल छैक से एहि बातक साक्षी अछि। प्रसिद्धि आ यशक लेल सहज-स्वाभाविक अनुरक्ति तँ हुनकामे छनिहेँ, कतोक ठाम ओ यशक लेल लालायित देखल जाइत छथि। ई बात आइयो कोनहु पुरान संस्कृतज्ञमे देखल जा सकैछ। कतोक ठाम ओ कल्पनाजीवी भावुक-सन लगैत छथि, सेहो स्वाभाविक थिक। एक कवि, आजुक एक कवि सेहो, बनियाँ-सन सोंटल - गतानल दैनन्दिनी आ व्यापारिक सोच मात्र राखि कए जीबि नहि सकैत अछि। कोनहु विराट व्यक्तित्वक मादे ई बात सुनयमे थोड़ेक अधलाह लागि सकैत छैक, मुदा मनोविज्ञान जकरा मैन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ऑफ फीलिंग' कहैत छैक, तकरामे ई बात कल्पनाजीवी भावुकता भेटब सहज-स्वाभाविक थिक ।

एहि उपन्यासमे विद्यापतिक तीन रूप चित्रित भेल अछि, राजपण्डित आ नीतिवेत्ताक रूप, पारिवारिक रूप आ कवि-रूप। बहुत स्पष्ट अछि जे राजपण्डित बला हुनक रूप सर्वाधिक पुष्ट भेल अछि । तकर कारण स्पष्ट अछि, जेना कि हम पहिनहु कहलहुँ, एहि उपन्यासमे विद्यापतिक आँखिसँ हुनक युग देखल गेल अछि । ओहि युगमे ई बात साफ रहैक (जेना कि सभ युगमे रहैत अयलैक अछि) राजनीति करय बला व्यक्ति कविता करय बला व्यक्तिक अपेक्षा अपन युग पर बेसी प्रभाव रखैत अछि । आ, जँ एक्कहि व्यक्तिमे ई दुनू बात फलित भेल होइक तँ ओकर राजनीतिक रूप ओकर कवि-रूपसँ बेसी क्रियाशील आ अपेक्षाकृत बेसी मुखर होयतैक । तकर कारण जे राजनीतिक क्रियाकलाप शीघ्र फलदायी होइत अछि, ओहिसँ प्रसिद्धि आ यश शीघ्र भेटैत छैक आ से व्यक्तिक वर्त्तमानकेँ ओहि दिस बेसी घिचैत छैक ।

पं. गोविन्द झा जेँ कि विद्यापतिक राजपण्डित रूपकेँ थोड़ेक बेसी फरिछयबा पर बल देलनि अछि, तेँ स्वाभाविक रूपसँ ओहि कालक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थितिक महत्वपूर्ण सूचना एहि उपन्यासमे अबैत रहलैक अछि।

विद्यापति सदति न्याय आ जनकल्याणक पक्षधर देखाओल गेलाह अछि । ओ प्रगतिकामी विचारसँ लैस छथि, तकरहु एकाधिक प्रसंग उपन्यासमे आयल अछि । रूढ़िमे गछारल आ 'मिथ्या देवदूत' ओ नहि छथि, जे कि ओहि युगक सन्दर्भमे विद्यापतिकेँ विराट व्यक्तित्व प्रदान करैत छैक ।

विद्यापतिक पारिवारिक रूप सेहो बेस मोहक बनि कए ठाढ़ भेल अछि । ओ सुच्चा-सुच्ची मैथिल गृहस्थ छथि । पारिवारिक शिष्टाचार हो कि परस्पर सख्य-भाव, विद्यापतिमे प्रचुर रूपमे विद्यमान छैक । हुनक जीवन ढेर रास स्त्रिगणसँ घेरायल छल। मझौरवाली, लखिमा, मन्दाकिनी, कालिन्दी, गाँगोदेवी आ मौसी- एक-एक महिलासँ ओ अलग-अलग रूपमे संबद्ध छलाह । मझौरबालीक कथा एक 'प्रासंगिक कथा' थिक, मुदा से विद्यापितक जीवन-शैली आ दृष्टिकोणकेँ चिन्हबाक लेल बहुत आवश्यक अछि । लखिमाक जे चरित्र गढ़ाएल छैक, से प्रायः सभ ठाम चटकदार (चटख) रंग सभसँ । ओ चित्र सभ वासन्ती बसातक कोमल स्पर्श-जकाँ पाठककेँ मृदुल लगैत छैक । ई चटकदार रंग कहियो लखिमा पर सँ नहि उतरैत छैक, ओहू दिन नहि, जहिया ओ मरि जाइत छथि ।

मुदा, एक वस्तु ध्यान देबाक योग्य अछि जे एहिमे सँ कोनहु नारीक व्यक्तित्व स्वतंत्र आ सुपुष्ट नहि छैक, बेर-बेर एहन लगैत रहैत छैक जे ई स्त्रिगणसभ कोनहु एक धूरीक चारू कात तिरपेच्छन करैत रहैत अछि । ई धूरी थिक कोनो पुरुष । माने कि विद्यापति । मुदा, वस्तुतः ई धूरी थिकाह पं. गोविन्द झा, जे अत्यन्त सुगठित रूपसँ नारीलोकनिक एतेक चरित्र प्रायोजित कयलनि अछि । स्वतंत्र व्यक्तित्व बनि जेबाक सर्वाधिक संभावना जाहि नारीमे छैक, से थिकीह मन्दाकिनी, विद्यापतिक पत्नी । मुदा, ई संभावने बनल रहि जाइछ । हमर मोन कहैत अछि जे जँ ई उपन्यास आरो पैघ होइत (जेकि एकरा हेबाके चाहैत छल) तँ मन्दाकिनी तेहन छटाक संग उठि कए ठाढ़ होइतथि जे गोविन्द बाबूक पंकड़ हुनका परसँ जइतनि, आ ई मैथिली कथा-साहित्यक एक अविस्मरणीय चरित्र बनि कए उदित होइतथि ।

विद्यापतिक कविता कोना सर्वत्र प्रचारित भेल, ताहि सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण संकेत एहि उपन्यासमे भेटैत अछि । गोविन्द बाबू देखौलनि अछि जे नैमिषारण्य-यात्राक क्रममे, पश्चिममे हुनक गीतक प्रचार भेल; पूबमे हुनक गीतक प्रचार वैष्णव-भावनाक आधारशिला पर भेल, जेना कि कालीचरण भट्टाचार्य बला प्रसंग सँ स्पष्ट होइछ । आ, मिथिलामे एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ होइत ओ सर्वत्र व्याप्त भए गेल, जेना कि गोविन्द दास सेहो कहैत छथि कण्ठहि कण्ठ पड़ायल बनियाँ । मौसीक द्वारा विद्यापति गीतक बेर-बेरक प्रस्तुति आ तकरा बाद अनेक उत्सव-अवसर पर ई गीत सभ गाओल जायब एही तथ्यक सावधान विवरण थिक।

विद्यापतिक गीत एतेक प्रचारित- प्रसारित किऐक भेल, एहि तथ्य पर कनेकटा विचार करी तँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक एक महत्वपूर्ण विशेषता समक्ष अबैत अछि । विद्यापतिक गीत सभ गहन संवेदनासँ भरल रचना थिक । एहि रचननामे एक 'संक्रामक अपनत्व' छैक । एहि हृदयसँ बहरायत तँ ओहि हृदय धरि पहुँचबे टा करत ई गीतसभ मानव-मन आ हृदयकेँ छूबि देबाक, स्पन्दित कए देबाक क्षमता रखैत अछि । मुदा महत्वपूर्ण बात ई जे ई गीतसभ मैथिल जनताक दैनन्दिन जीवनसँ संबद्ध अछि । मिथिला पाबनि-तिहार, व्रत-उद्यापनक क्षेत्र थिक । प्रतिदिन किछु-ने-किछु उत्सव लागले रहैत अछि । आ सभ अवसर पर गीत गाओल जाइछ । विना गीतक कोनहु उत्सव, कोनहु पर्वक, कोनहु संस्कारक कल्पना नहि कयल जा सकैछ । से, विद्यापतिक गीतसभ एहि अवसरसभ पर गाओल जयबाक लेल उपयुक्त छलैक । ई मैथिलक दैनिक उपयोगक वस्तु छलैक । सहज-स्वाभाविक जीवन जीबयबला लोकक लेल ई रचनासभ उपादेय आ व्यवहार्य छलैक। गोविन्द बाबू एहि दिस संकेत करैत छथि । हम मुदा एक प्रश्न ई उठबय चाहैछी जे ई प्रसंग की एहि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बातकेँ प्रमाणित नहि करैछ जे आबैयोबला जुगमे ओएह कविता, ओएह साहित्य जीवैत रहतैक जे जनताक सामान्य उपयोगमे आबय बला रहतैक। हँ, आबयबला समयमे 'सामान्य उपयोग'क परिभाषा धरि अवश्य बदलि जा सकैत अछि।

अपन तरुणावस्थेमे विद्यापति जे मझौरबालीक उद्धार कयलनि, से पाठककेँ विद्यापतिक प्रति उपन्यासक प्रारम्भेमे आस्थाशील बनबैत छैक। एकर बाद तँ एहन अनेक प्रसंग अयलैक अछि, जखन पाठक अपन एहि नायककेँ जनकल्याणकारी व्यवस्थाक निर्माण लेल व्यस्त देखैत छथि। प्रगतिकामी मूल्यक स्थापना लेल ओ सदति शिवसिंहकेँ प्रेरित-प्रभावित करबाक चेष्टा करैत छथि; दोसर दिस वृद्ध धर्मप्राण महाराजकेँ ई बुझेबाक सफल चेष्टा करैत छथि जे तुलापुरुष-दानक तुलनामे पोखरि खुनायब बेसी श्रेयस्कर आ धार्मिक थिक। मुदा, इएह विद्यापति जखन कविता लिखय लगैत छथि तँ हुनका लग राजा-रानीक मनोरंजन आ जनता द्वारा प्रसिद्धि आ यश टा भेटब उद्देश्य रहि जाइत छनि। की ई गोविन्द बाबूक चूक छियनि ? की विद्यापति समाज-सुधारक महत्वाकांक्षासँ लिखैत छलाह ? की हुनकामे वर्गीय भावना आ सामाजिक चेतनाक विचार स्पष्ट नहि छलनि ? एहि प्रश्नक उत्तर स्वयं पं. गोविन्द झा एहि तरहेँ दैत छथि–

"हम नहि मानैत छी जे विद्यापतिक गीतमे समाज-सुधार (वा आजुक शब्दमे सामाजिक न्याय) मुखरित अछि। हमर दृढ़ धारणा अछि जे विद्यापतिक कालमे गीत (संगीते जकाँ) केवल रसानुभूतिक हेतु लिखल जाइत छल, समाजकेँ बदलबाक उद्देश्य सँ नहि। ओना, आजुक अनुसन्धातालोकनिकेँ वेदमे गणितशास्त्र आ व्याकरणमे राजनीतिशास्त्र देखाइत छनि, आ एहन अनुसंधातालोकनि विद्यापतिक गीतसँ जे चाहथि, निकालि लए सकैत छथि। हँ, सामाजिक आ आर्थिक सुधार राजनीतिक विषय अवश्य होइत छल, आ ताहि बाटेँ हमर विद्यापति मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक आ धार्मिक स्थिति देखैत छथि आ किछु करितहु छथि।"

विद्यापतिक चरित्रकेँ रचैत पं. गोविन्द झा किछुएक ठाम हुसलाह अछि, से धरि अवश्ये कहल जयतैक। जेना, विद्यापति केँ नूआ पहिरेबाक प्रसंग। एहि घटना द्वारा पंडित जी की कहय चाहैत छथि ? इएह कि ने जे विद्यापति राजदरबारमे बइ परवश छलाह अथवा, राजा-रानी दुनूक मनोरंजनक वस्तु छलाह। एहि बातकेँ वर्णित करबाक लेल इएह दृश्य अपरिहार्य नहि रहैक। एहि आशयक कोनो आनो दृश्य-बंध संयोजित कयल जा सकैत छल। अथवा, ओहुना की ई बात प्रमाणित नहि भ' जाइछ ?

तहिना सरिसवक पाठशालामे आचार्य द्वारा युवा विद्यापति पर अबंडपनीक आरोप लगाओल जायब ? एहि प्रकरणक निहितार्थ प्रायः ई रहल होयत जे पंडितलोकनि काव्य-मर्मक बोध मे कतेक पिछड़ल छलाह, अथवा कवि-कर्मकेँ बुझबामे कतेक अक्षम छलाह ! एहि लेल दोसर शब्दावली चुनल जा सकैत छलैक।

एहि उपन्यास पर अनेक व्यक्ति द्वारा ई आरोप लगाओल गेलैक अछि जे विद्यापतिक आत्मकथाकेँ विच्चहिमे छोड़ि देल गेलैक अछि। गोविन्द बाबू देखबैत छथि जे लखिमा रानीक मृत्युक बाद विद्यापति अपन जीवनसँ, आ सौंसे जीव-जगतसँ विरक्त आ अन्यमनस्क भ' गेल छलाह। हुनकामे किछु करबाक कोनहु टा इच्छा आ आवश्यकता नहि रहि गेल छलनि; आ एहि अर्थमे ओ एक सृजेताक रूपमे मरि चुकल छलाह ! ऐतिहासिक रूपसँ ई बात सत्य भ' सकैत अछि, कारण एहि अन्तरालमे विद्यापति जे किछु लिखलनि, से सभटा पूजा-पाठ आ धर्मानुष्ठानसँ संबद्ध अछि (एकर थोड़ेक अपवाद थिक–विभागसार) आ से सभक सभ 'माधव, हम परिनाम निरासा' दिस संकेत क' रहल अछि।

मुदा, एक ऐतिहासिक सत्य होयबाक कारण यैह एक औपन्यासिक सत्य सेहो होइक, ई एकदम्म आवश्यक नहि अछि। लखिमाक मृत्युक बाद विद्यापति प्रायः बाइस बरख जीलाह। एहि बाइस बरखमे हुनक हृदय आ मस्तिष्कमे जे आरोह-अवहोर होइत रहल, जे उठा-पटक चलैत रहल, जाहि तरहेँ ओ अपन व्यतीत केँ विश्लेषित आ खारिज करैत रहलाह, तकर विवरण अद्भुत रोचक होयत। ई काज भने आर क्यो नहि क' सकय, गोविन्द बाबू अवश्ये क' सकैत छलाह।

दोसर बात, लखिमा रानीक मृत्युक बाद विद्यापतिक स्थिति जँ शर-शय्या पर पड़ल भीष्म-सन छलनि, जकर कि थोड़ेक संकेत उपन्यासमे देलो गेल अछि, तँ ई कहब एकदम जरूरी जे विद्यापतिक जे आँखि हमरा सभकेँ ओहि युगक चित्र देखबैत अछि, से शर-शय्या पर चढ़ल कोनहु व्यक्तिक आँखि नहि थिक। ओ आँखि निश्चित रूपसँ एक भोक्ताक आँखि थिक, ओ निर्लिप्त आ निर्वैयक्तिक अथबल आँखि नहि थिक।

एहि उपन्यास-लेखनमे गोविन्द बाबू जे शैली पकड़लनि अछि, से कैमरा द्वारा फिल्मांकन शैली थिक। अलग-अलग दृश्य मे बाँटि क' सम्पूर्ण कथ्य प्रकट होइत छैक। दोसर बात, उपन्यास मे जतय-कतहु जे कोनो वस्तु हमरालोकनि देखैत छी, से सभक सभ प्रायोजित अछि। अनायास वा अनचेष्टित किछुओ टा नहि भेलैक अछि। जेना, कोनहु फिल्मक कोनो दृश्यमे जँ हम देखैत छिऐक जे नायिकाक पलंग तरमे एक जोड़ टुटलका चप्पल पड़ल छैक, तँ एकर मतलब ई किन्नहु नहि थिकैक जे निर्देशकक लापरवाहीसँ ओ चप्पल ओतय पड़ल रहि गेलैक अछि। ओ चप्पलो प्रायोजित अछि, आ अपन बात कहैत अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

समकलीन साहित्य-मूल्यपर निष्ठा रखैत पाठककेँ ई खटकि सकैत छैक जे एहि उपन्यासमे जतय-कतहु आम आदमी आयल अछि, सेहो सभटा प्रायोजिते छैक । मतलब, आम-आदमीकेँ स्वतंत्रता-पूर्वक एहि रचनामे ढूक' सँ रोकल गेलैक अछि । शिवसिंह द्वारा कर-संग्रहमे उदारताक फलस्वरूप पड़ोसी देशक जनताक मिथिलामे आबि बसबाक प्रसंगकेँ देखल जाय । एहि प्रायोजनक दू टा प्रमुख उद्देश्य अछि–शिवसिंहक कल्याणकारी शासनक परिचय, जकर जड़िमे कतहु विद्यापतियो छथि । दोसर, एकर फलस्वरूप जे विस्फोटक वातावरण बनलैक, तकरा पुनः सुधारैमे विद्यापतिक राजनीतिक सूझ-बूझक परिचय देब । तहिना, 'राजा शिवसिंह आर सब छोकड़ा' बला प्रसंगकेँ सेहो देखल जा सकैछ ।

ई संभावना एखनहु बचले छैक जे विद्यापतिकालीन आम आदमीक जीवन पर उपन्यास लिखल जाय । गोविन्द बाबूमे तकर पर्याप्त क्षमता छनि, मुदा से ओ नहि क' सकलाह अछि ।

ई. एच. कार एकठाम लिखलनि अछि ('what is history' मे) जे इतिहासमे घटना महत्त्वपूर्ण नहि होइत छैक, महत्त्वपूर्ण होइत छैक–दृष्टिकोण । महत्त्वपूर्ण होइछ ई जे कोनहु घटनाक उपस्थापन कोन दृष्टिसँ कयल गेलैक अछि । कोनहु टा घटनावली अपन व्याख्या लेल पूर्ण नहि होइछ । व्याख्याकार अपन सुभीतासँ अपन उपयोगक वस्तु छाँटि लैत अछि । से, गोविन्दो बाबू छाँटि लेलनि अछि । मुदा, जाहि दृष्टिसँ ओ छाँटलनि अछि, तकरा अतिरिक्त, दोसरो दृष्टि छाँटबाक लेल अपनाओल जा सकैत छलैक, हम मात्र एहि दिस संकेत कर' चाहैत छी ।

गोविन्द बाबू कथा-रसक मर्मज्ञ छथि । हुनक कथा-रचना मे अद्‌भुत पठनीयता होइत छनि । हुनक जे शैली छनि, से ततेक पारदर्शी आ चित्रात्मक अछि, जे ओ पाठककेँ बान्हि लैत छैक (कही जे चिहुँटि लैत छैक) से शैली एहू उपन्यासमे छैक तेँ ई पठनीयता सेहो एहि उपन्यास मे छैक ।

विद्यापतिक आत्मकथामे नब बोध

□ श्री भवनाथ 'भवन'

"नोने ओम्हर गेल एम्हर हम ओहि तड़िपत सभक थाककेँ एकत्रे दुनू हाथेँ उठाए ओहि धधकैत आगिमे झोँक देल–अग्नये स्वाहा ! जा नोने घूरिकेँ आबए ता ओसभ तड़िपत धह-धह जरि रहल छल । नोने हाँ-हाँ करैत एके झपटमे ओहि जरैत तड़िपतक थाककेँ हाथसँ उटाए लेलक । ओकर एहि आचरण पर हमहु क्रोधान्ध भए ओकरा हाथसँ ओ जरैत तड़िपत छीनि पुनः आगिमे झोंकि देलहुँ । दुहूक हाथमे फोकहि फोका, आ तड़िपत जरि केँ भस्म !"

पं. श्री गोविन्द झाक कृति *विद्यापतिक आत्मकथा* उपन्यासक ई पंक्तिसभ जड़ता, व्यामोह एवं एकर विपरीत भाव नवीनता एहि तीनूक बीच संघर्ष एवं परिणामक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि । संगहि जड़ताकेँ डाहि क' समयानुकूल चलैत आगाँ बढ़बाक प्रेरणा दैत अछि ।

उपन्यासक आरम्भमे विद्यापति अवहठ भाखामे लिखल अपन ओ 'अप्पकहा' क तड़िपत जराए दैत छथि जे लोभवश अथवा भयवश सामन्तवादक संतुष्टि लेल लिखल गेल छल । ओहि 'अप्पकहा' केँ सुरक्षित राखि कालसापेक्षताक उल्लंघन करब जड़ताकेँ परिभाषित करैत अछि, ओहि प्राचीन वस्तुक विनाश पर उत्पन्न दुःख व्यामोह थिक । एहि दुहू भावकेँ डाहि भय, लोभ, दीनताक व्यथा आ दासताक अभिशापक बन्धनसँ मुक्त भए सत्य, पवित्र आ विश्वसनीय बात बाजब आ कार्य करब नब बोध थिक, प्रगतिक लक्षण थिक । एहि परिभाषासभक स्थापनाक संग ई उपन्यास आरम्भ होइछ । एकर प्रथम परिच्छेदक पताकास्थानक समस्त घटना-चक्रक केन्द्रीय भाव एवं उपन्यासकारक नब बोधकेँ संकेतित करैत अछि ।

पन्द्रहम शताब्दीक मिथिलाक राजनैतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लिखल गेल एहि उपन्यासमे कथा प्रवाहकेँ आगाँ बढ़यबाक लेल विद्यापतिके आलम्बन बनाओल गेलाह अछि । मिथिलाक ओ काल दुर्दान्त यवनसँ भयाक्रान्त अछि । दोसर दिस अकालसँ पीड़ित जनता त्राहि-त्राहि क' रहल अछि । मिथिलाक अस्मिता सन्देहास्पद स्थिति मे पहुँचि गेल अछि । राजाकेँ अपन चिन्ता छन्हि, मिथिलाक नहि । उत्तराधिकार लेल अपनामे सभ लड़ि रहल छथि । एहन भीषण स्थितिमे विद्यापति जन्म लैत छथि । ओ चिन्तित छथि मिथिलाक लेल, ओकर सर्वतोभावेन विकास लेल । एहने व्यक्तिक संघर्षमय जीवन एहि मे उपन्यस्त भेल अछि, जकर प्रासङ्गिकता आइयो अछि ।

एहि उपन्यासमे सभ ठाम दू प्रकारक लोकक बीच द्वन्द्व बजरल अछि । एक प्रकारक लोक अपन वर्चस्व स्थिर रखबाक लेल अथवा अन्य प्रकारक कोनो लोभ अथवा संत्रासस ँ जकड़ल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'बाबावाक्यं प्रमाणम्'कें दोहाइ दैत इच्छानुकूल ओकर दोहन करैत छथि। ओलोकनि वैचारिक जड़ताक पोषक छथि। हुनक जड़ताक कारणमे लोभक संग आलस्य आ प्राचीनताक व्यामोह सेहो छनि। ओसभ मिथिलाकें दुर्दान्त तुरुकक हाथें बन्हकी राखि ओकरा सुरक्षित बुझैत छथि। एहि प्रकारक व्यक्तिसभमे मन्त्री चन्द्रकर, पं. दामोदर मिश्र, श्रीदत्त उपाध्याय, म. म. वटेश्वर झा आदिक संगहि अनेक विन्दु पर स्वयं महाराज देवसिंह सेहो छथि।

एकर विपरीत चण्डेश्वर महथा, विद्यापति, शिवसिंह, लखिमा, अमियकर आदि चरित्र मिथिलाक स्वतन्त्र अस्तित्वक रक्षा, ओकर सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक उन्नतिक लेल देश, काल आ पात्रक अनुसार कार्य करैत छथि आ ओहिमे बाधक प्राचीन मान्यताक समयानुकूल व्याख्या करैत छथि; ताहूसँ अभीष्टसिद्धि नहि भेला पर ओकरा नठि देबामे संकोचक अनुभव नहि करैत छथि। हुनका ओहि दाहक लहरिकें शान्त करबाक लेल घी-कुमारिक लेपक काज नहि पड़ैत छनि।

सम्पूर्ण भारतीय समाजक संग मिथिलाक समाज सेहो धर्मशास्त्रमे बन्हायल अछि। एहि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थमे कालसापेक्ष नीतिकें कालनिरपेक्ष बनाक' उधैत रहबाक जड़ताकें ठाम-ठाम उघार क' ओकर गञ्जन-भञ्जन कएल गेल अछि। एहि क्रममे विद्वान् उपन्यासकार शास्त्रार्थ शैलीक प्रयोग कएलनि अछि जाहिमे पूर्वपक्षक स्थापना, ओकर खण्डन, उत्तरपक्षक उपस्थापना, ओकर मण्डन एवं अन्तमे अनुकरणीय सिद्धान्त निष्कर्षक रूपमे कहल गेल अछि।

एहि प्रकारक शास्त्रार्थ सभमे सर्वप्रथम राजाक निर्णय बला प्रसङ्ग आएल अछि। ओत वटेश्वर झा "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वा राजन्यः कृतः" केर चश्मा लगओने ब्रह्मणद्वारा शासित सम्पत्तिकें राज्य नहि मानि सामान्य सम्पत्ति जकाँ ओकर विभाजन चाहैत छथि। मिथिलाकें छिन्न-भिन्न भए जेबाक चिन्ता हुनका नहि छनि। एतहि चण्डेश्वर महथा अपन आदर्शक अनुकूल मिथिलाक रक्षा लेल राजा शब्दक समयानुकूल व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि। जड़ भेल जाइत प्राचीन मान्यताक एहने समयानुकूल विपरिणाम एहि उपन्यासक मुख्य स्वर अछि जे उपन्यासकारक नब बोधक परिचायक थिक।

एहने-सन दोसर प्रश्न मझौरा बालीकें आलम्बन बनाए उठाओल गेल अछि। ई प्रश्न धर्मसँ सम्बद्ध अछि। एतए एकटा एहन पण्डितमण्डलीक दिस संकेत भेल अछि जे मुसलमान द्वारा द्रव्य अथवा बलक प्रयोगसँ बनओल गेल दास-दासी कें हिन्दू धर्म सँ बहिष्कृत करबाक समर्थक छथि, संगहि प्रायश्चित्त कराए पुनः हिन्दु धर्ममे सम्मिलित होमए देबाक विरोधी छथि। तत्कालीन स्थितिमे ई मान्यता मिथिलाक सांस्कृतिक अस्तित्व मेटाए सकैत अछि। एहि भीषण स्थितिमे विद्यापति संघर्ष करैत छथि। कथाक आलम्बन मझौरावाली वस्तुतः महादेव राउतक पत्नी थिक जे अकालक समयमे मुमूर्षु अवस्थामे बापक द्वारा मलिक मुहम्मद साहेबक हाथें पाँच टंकामे बेचि देल जाइत अछि आ रुक्मिणीसँ हमीदा बनि जाइत अछि। अगिलग्गीक हूलि-मालिमे ओकर शारीरिक उद्धार त' भ' जाइत अछि मुदा मिथिलाक सांस्कृतिक उद्धारक आरम्भ ताहि द्रिन होइत छैक जाहि दिन विद्यापति आ शिवसिंह भय एवं व्यामोहसँ ग्रस्त बूढ़ासभसँ त्वञ्चाहञ्च कए मझौराबालीकें प्रायश्चित्त कराए पुनः रुक्मिणी बनाए पति महादेव राउतक संग घर पठाए दैत छथि। धर्म-परिवर्तनक एहि प्रश्न पर गोविन्द बाबूक विद्यापति ओएह काज करैत छथि जे बड़ बादमे आबि क' समाज सुधारक दयानन्द सरस्वती कएलनि।

समाजक आर्थिक व्यवस्थाक प्रसङ्गमे जड़ मान्यताक सेहो खण्डन एहि उपन्यासमे भेल अछि। राज्य करक असूलीक प्रश्न पर महामहत्तक महेश्वर सिंह एवं मन्त्री चन्द्रकर दृढ़ छथि। दूनूक एके स्वर छनि–प्रजासँ कर लेब राजाक धर्म थिकैक। किञ्च, कलियुगमे बैमान प्रजासँ असूलीमे बल-प्रयोग उचित अछि। एतए प्रजाक दयनीयता, अभावग्रस्तता ओकर बैमानी बनि जाइत अछि जड़ व्यक्तिसभक नजरिमे। मुदा शिवसिंह आ विद्यापति मानवताकें सर्वोपरि मानि ओहि निर्दयताक विरोध करैत छथि; क्षतिपूर्ति लेल विलास-व्यय एवं सैनिक-व्ययमे कटौती करबाक संकल्प लैत छथि।

शास्त्र कहैत अछि–दान कएलासँ पैघसँ पैघ पाप कटैत छैक। एहि मान्यतासँ अभिभूत महाराज देवसिंह शोषण, अपहरण, चोरि, लूटि, क्रूरता, नृशंसता, ब्रह्मवध, बन्धुवध आदि जघन्य कार्यसँ सञ्चित स्वर्णशशिसँ शास्त्रोक्त तुलापुरुष दान क' साकार पापकें टारबाक लेल उद्यत छथि। ओ एहि स्वर्णराशि कें व्यक्तिगत सम्पत्ति बुझैत छथि। मुदा शिवसिंहकें चिन्ता छनि मिथिलाक संत्रस्त प्रजावर्गक, तें ओ उन्मुक्त कण्ठें कहैत छथिन–

"ई स्वर्णभण्डार अहाँक नहि थिक। ई थिकैक राज्यक। ई थिकैक प्रजाक। एकरा बोहएबाक अधिकार अहाँकें नहि अछि। एकर रक्षाक भार आब हमरा उपर। एहिसँ बेर विपत्ति मे अहाँक प्रिय प्रजाक रक्षा भए सकैत छैक, राज्यक रक्षा भए सकैत छैक, आ अहाँक सन्तानक रक्षा भए सकैत अछि।"

तीर्थाटन-पर्यटनसँ घुरला पर जखनि महाराजकें फेर तुलादानक उद चढ़ैत छनि त' विद्यापति अकाल आ रिक्त राज कोषक यथार्थ बुझबैत कहैत छथिन–"एहिसँ प्रजाक प्राण बचएबाक हेतु जतेक टंका चाही ततबो राजकोषमे नहि अछि। तखन जँ ओहि टंकासँ तुलादान कएल जाए त' एम्हर दान होइत रहत आ ओम्हर शतशः सहस्रशः प्रजा अन्न बिना मरैत रहत।"

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एहन स्थितिमे विद्यापति पोखरि खुनयबाक सम्मति दैत छथिन जाहिसँ प्रजाकेँ वृत्ति भेटैक, अन्न-वस्त्र भेटैक ।

विद्यापतिक आत्मकथामे एहने एकटा नव बोधसँ अनुप्राणित अछि विद्यापति-लखिमा-प्रसङ्ग । सुल्तान इब्राहीम शाहसँ युद्धक घोषणा भेलाक बाद शिवसिंह लखिमाक सुरक्षाक भार मंत्री चन्द्रकरकेँ दैत छथिन । मुदा लखिमाकेँ सन्देह भए जाइत छनि जे ई लोभी आ संत्रस्त चन्द्रकर विषम परिस्थितिमे हुनका सुलतानक हरम पठाए सकैत छथि । तेँ ओ केवल विद्यापतिकेँ अपन सतीत्वक रक्षक बूझि हुनका संग प्रच्छन्न रूपसँ चलि दैत छथि । एतए लखिमाक प्रत्युत्पन्नमतित्व एवं ओजस्विता संवेद्य अछि । चन्द्रकरक विश्वासघातसँ आशङ्कित भए ओ पति शिवसिंहक आज्ञाकेँ उघैत रहि कए अपना पर कोनो विपत्ति अयबासँ पूर्वहि हुनक आज्ञा तोड़ि विद्यापतिक प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण कए दैत छथि आ हुनक संरक्षणमे शिवसिंहक कृष्णीकरण कए स्वयं राधा बनि "सजनी के कह आओब मधाई" रटैत-रटैत मास-मास क' वर्ष गमाबए लगैत छथि ।

विद्यापतिक सम्बन्धमे प्रचलित अलौकिक किंवदन्ती सभकेँ एहि उपन्यासमे मिथ्यावादक रूपमे स्थान भेटल अछि । लोककेँ जे फुरैत छैक से बजैत अछि, आँखी झा सन-सन गप्पी ओहि सभमे नोन-तेल लगबैत अछि, अमियकर सन-सन कवि फकड़ा बनबैत छथि । लोकक तर्कक ने खण्डन होअए, धारणाक कतहु खण्डन हो । एहि सभ स्थलमे अंधविश्वासकेँ मिथ्या कहब उपन्यासकारक नव बोधक परिचय दैछ ।

एहि उपन्यासक विद्यापति लौकिक धरातल पर रहनिहार संघर्ष-रत मनुष्य थिकाह जे चन्द्रकर गुटक जड़ मण्डली द्वारा बेर बेर अपमानित एवं दूधक माँछी जकाँ तिरस्कृत होइतो फेर-फेर मिथिलाक लेल सोचैत छथि, करैत छथि । आशा-निराशाक उठा-पटक देखैत अन्तमे गाबि उठैछथि–

माधव हमे परिनाम निरासा
तोहे जगतारन दीन दयामय अतए तोहर बिसबा सा

एहि तरहेँ उपन्यासक अन्त निर्वेदसँ होइत अछि ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे नव बोधसँ ओतप्रोत ई ऐतिहासिक उपन्यास विद्यापतिक जीवन-वृत्तान्तक नव व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि जतए प्रस्तोता सामन्तवादी संस्कृतिक भय एवं अहमहमिका क लोभसँ मुक्त छथि । सम्पूर्ण घटना-चक्रक केन्द्रमे ओएह बोध अर सँ बन्हायल स्थिर अछि ।

●

साहित्येतिहासमे पं. गोविन्द झा

प्रस्तुति : प्रो. श्री विनोद कुमार मिश्र

मैथिली साहित्यक अध्येता आ इतिहासकार पं. गोविन्द झाक बहुमुखी साहित्य-साधनाकेँ विभिन्न दृष्टिएँ रेखांकित कएल अछि । हुनकालोकनिक मतेँ पं. गोविन्द झा एक प्रयोगशील एवं भावुक कवि छथि तेँ संवेदनशील सशक्त एवं नवचेतनायुक्त कथाकार, आधुनिक विचारक; नव समस्याक प्रयोगशील नाटककार छथि तेँ सजग एकांकीकार । वास्तविकता ई अछि जे ओ एक सफल साहित्यसाधक छथि, शब्दशास्त्री छथि एवं मैथिली भाषा-साहित्यक एक सफल विचारक छथि । एहिठाम हुनक साहित्यक प्रसंग साहित्येतिहास सभसँ किछु सन्दर्भित अंश प्रस्तुत अछि ।

आचार्य रमानाथ झा; कविताक प्रसंग–ई प्रगतिशील छथि युगीन समस्याक ग्रहणक हेतु; प्रयोगशील छथि भावाभिव्यक्तिक नव-नूतन युक्ति-भंगिमाक हेतु । वस्तुतः हिनक रचनामे प्रगतिशीलताक मणि-कांचन-संयोग एतेक स्वाभाविक रूपेँ भेल अछि जे मैथिली काव्य-परम्परा प्रतिक्रियामे नहि, विकासमे संघटित भेल प्रतीत होइत अछि ।

डा. जयकान्त मिश्र; कविताक प्रसंग–Govind Jha has already surpassed many an old poet in elegance and harmony.

नाटकक प्रसग–It is also like these plays quite a success on the stage and has in it effective conflict in the plot—it represents some amount of sacrifice on the part of its heroine and a desire to reform modern Maithila Womanhood. But it is unrealistic and fails in its effect and has no great literary beauty.

एकांकीक प्रसंग– Among the serious one act plays, I should like to make a special reference to Govinda Jha's able Mithilaka Pratinidhi.

डा. श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' कविताक प्रसंग–एक दिस यदि ओ 'गीतांजलि'क साक्षात् प्रभावमे आबि 'आलोक' ओ 'याचना' सन कविताक रचना कएल तँ दोसर दिस युगबोधकेँ अभिव्यक्त करैत, स्वस्थ प्रयोगशीलता तथा गतिशीलताक परिचय दैत 'ब्रह्मदेवता, 'अन्न देवता' ओ 'एक मूर्खक अनुभव' सन रचना सेहो कएने छथि। हिनकामे नहि तँ पाण्डित्य-प्रदर्शन करबाक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्रवृति अछि आओर ने कल्पनाक चमत्कार उत्पन्न करबाक रूचि। भाषामे प्रसाद ओ माधुर्य सभठाम रहितहिँ टा अछि, मुदा भावानुरूप ओजक सेहो अभाव नहि रहैत अछि। श्री गोविन्द झा बहुविध प्रवृतिक माजल कवि छथि।

कथाक प्रसंग–ओ कथाकार जे कथातत्वकेँ व्याघात नहि पहुँचबैत चरित्र-चित्रणक सूक्ष्मताक संग प्रतिपादन कएल तथा उचित वातावरण ओ परिस्थितिक निर्माण कए चारित्रिक वैशिष्ट्य केँ रसात्मक उत्कर्ष देल। एहि श्रेणीक प्रमुख कथाकार छथि श्री गोविन्द झा। एहि प्रकारक गल्पकार सामाजिक ओ वैयक्तिक पक्ष दुनूक चित्रण करैत छथि, संतुलित रीतिएँ। युगीन समस्याक चित्रण सेहो एहि वर्गक गल्पकार करैत छथि, मुदा हुनका लोकनिक प्रगतिशीलता संवेदनात्मक रहैत अछि,प्रचारात्मक नहि आ ने कटुताविधायके। एहि दृष्टिएँ गोविन्दजी क भूतही पाकड़ि ओ नोकरीक खोज कथा उल्लेखनीय थिक।

नाटकक प्रसंग– बसातमे ओ नाटकक नवीन शिल्प तथा चित्रांकनक नवीन प्रणालीकेँ अपनाओल अछि। एकर सबसँ मुख्य वस्तु अछि अन्तर्द्वन्दक चित्रण। एहि दृष्टिएँ प्रायः मैथिली क इएहटा नाटक सफल भेल अछि परन्तु कथानक एकर ओझराएल अछि। संघटनक दृष्टिएँ एहि नाटकक पूर्व भाग जेहन संतुलित अछि तेहन उत्तर भाग नहि।

नाटकीयता ओ साहित्यिकता दुनू दृष्टिएँ *राजाशिव सिंह* सफल नाटक थिक। एहि मध्य नारी पात्रक सन्निवेश नहि भेल अछि ओ से व्यावहारिक अभिनयोपयोगिताक दृष्टिएँ। मुदा, आदि ओ अन्त मे छाया चित्रक माध्यमसँ लखिमा देवीक विरह व्याकुलताक अवतारण कए नाटककार एहि अभावक पूर्त्ति करैत छथि। मैथिली नाटकक क्षेत्रमे एकटा नवीन शिल्पक प्रयोग करैत छथि संग-संग अभिनव कदित्व सेहो संचार कए देने छथि।

एकांकीक प्रसंग–गोविन्द जी परिस्थितिक यथोचित निर्माण कए कथाकेँ कौशलक संग विकसित करैत मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्दक चित्रण करैत छथि। एहि दृष्टिएँ हिनक *उपहार* तथा *मिथिलाक प्रतिनिधि* कोनो भाषाक उत्कृष्ट एकांकीक समता कए सकैत अछि।

डा. दिनेश कुमार झा–कविताक प्रसंग– आलोच्य कालक मैथिली कविताकेँ आधुनिक भावबोध एवं शिल्प शैलीक प्रसंग प्रस्तुत कएनिहार प्रसिद्ध कविलोकनिमे प्रमुख छथि पंडित गोविन्द झा।

कथा प्रसग–आलोच्य कालमे जाहि कथाकारलोकनिक मौलिक सुचर्चित कृति द्वारा मैथिली कथा साहित्य अभिवृद्धि होएबाक संग नव दृष्टि शैली एवं क्षेत्रकेँ प्राप्त कए सकल अछि ताहिमे उल्लेखनीय छथि गोविन्द झा।

नाटकक प्रसंग–'सामाजिक समस्यामूलक अनेकांकी नाटक सभमे आलोच्यकालक मानव जीवनक कटु यथार्थक चित्रण करैत ओकर विविध समस्याक दिश पाठकक ध्यान आकृष्ट करबाक प्रयास कएल गेल अछि एहि कोटिक नाटक सभमे मुख्यतः मिथिलाञ्चलक वैवाहिक समस्या, नारी लोकनिक अशिक्षाक समस्या, पारिवारिक समस्या, आर्थिक समस्या आदिक चित्रण कए यथासंभव ओकर उचित समाधान प्रस्तुत करबाक प्रयास भेल अछि। एहि समस्या सभकेँ जाहि सफल नाटक सभमे प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहि मे प्रमुख अछि *बसात*।

ऐतिहासिक अनेकांकी नाटक सभ किछु ऐतिहासिक तथ्य, किछु जनश्रुति, किछु नाटककारलोकनिक वैयक्तिक कल्पना शक्तिक समिश्रणसँ रचित भेल अछि। एहि कोटिक सफल नाटक मे उल्लेखनीय अछि *राजा शिवसिंह*।

एकांकी प्रसंग–'समस्या सभक विविध पक्षक उद्घाटन कए युग जीवनकेँ संचालित कएनिहार मूल्यक मीमांसा करैत परम्परावादी मूल्यक खण्डन कएल गेल अछि। एहि कोटिक उल्लेखनीय एकांकी अछि *मिथिलाक प्रतिनिधि*।

डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित'–कविता प्रसंग– प्राञ्जल भाषा शैली, सुस्पष्ट वस्तु विन्यास ओ नवयुग प्रवृतिग्राहिणी स्पन्दनशील सूक्ष्म कल्पनाक दृष्टिएँ गोविन्द झाक नाम मैथिली साहित्यमे अग्रगन्य अछि।

कथा प्रसंग–किन्तु, जे मैथिलीक माजल कथाकार छथि आ हुनक स्थान शीर्ष अछि आ तेहन कथाकार लोकनिमे अग्रणी छथि-गोविन्द झा।

नाटक प्रसंग– बसात नाटकमे गोविन्द झा नवयुगक आदर्शकेँ चित्रित करबाक प्रयास कएलनि। प्रत्येक समाजमे नीक आ अधलाह दुनू प्रकारक लोक अछि। मैथिल समाज सेहो अपवाद नहि। ओना नाटकक कथा शिल्प, भाषा, कथोपकथन आ अन्तर्द्वन्द आदिक दृष्टिसँ सफल अछि।

पं.- गोविन्द झा *महाराज शिवसिंह* 'नाटक मे तत्कालीन गृह कलह आ शिवसिंहक अन्तिम युद्धक वर्णन कएलनि।

एकांकी प्रसंग– पं.- गोविन्द झाक *वीर कीर्तिसिंह, उपहार* आ *मिथिलाक प्रतिनिधि* उत्तम कोटिक एकांकी अछि। चरित्र-चित्रणमे अन्तःसंघर्षक समावेश सेहो ई सफलता पूर्वक करैत छथि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा :

अर्चा ओ चर्चा

साध्य आ अराध्य

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

MITHILA SCHOOL AND LAW OF PRIVACY

□ *Dr. Govind Mishra*

The fashion of dividing Hindu works into schools and assigning them definite territorial limits started with Colebrooke and has been perpetuated by the decisions of the Privy Council and of the Indian High courts.[1] The correctness of the above statement cannot be denied so far Anglo-Hindu Law[2] is concerned. But it may, however, be mentioned that from the remotest time the Vedic Aryans were racially distinct from the non-Aryan inhabitants of India. Yet from the end of the Rigvedic period onwards they seem to have been characterized religiously by particularism, there being different Vedic schools, and the whole body of the Aryans being divided into these different schools. The laws of the individual Vedic branches had originated in and developed upon a basis of common habit and legal convention, though they nevertheless may reveal many variations which under the influence of external circumstances might have attained considerably. According to the old Hindu view, observes Professor Radhabinod Pal,[3] this racial law was not only binding upon the members of the racial branch, but was also determinant of all legal relations that arose within the territory occupied by the branch. Thus, the concepton of territorialaw is not altogather foreign to the Hindu system.

We are told in the *Yājnavalkya Samhitā* that on being asked by the sages, Yājnavakya told them the law prevailing in the country where black deer is to be found :

मिथिलास्थः स योगीन्द्रः क्षणं ध्यात्वाऽ ब्रवीन्मुनीन् ।
यस्मिन् देशे मृगः कृष्णस्तस्मिन् धर्म्मान्निबोधत ॥

Yāj, 1. 2.

Vaśiṣtha again instructed that the laws as well as the usages prevailing in the country which lies to the south of the Himālaya and to the north of the Vindhya range must be everywhere acknowledged :

दक्षिणेन हिमवत् उत्तरेण विन्ध्यस्य ये धर्मा ये
चाचारास्ते सर्व्वे प्रत्येतव्याः ।

Vaśiṣṭha, 1. 8-9.

Professor Pal further observes : "For the South of India and the nations inhabiting it, such as, Kalingas, Dravidas, Āndhras, Kolas and Pāṇḍyas did not play any important role either in the ancient Brahmanical traditions or in the earliest history of India, the centre of both of which lay in the north-west provinces of India or, at least, north of the Vindhya ranges".[4]

The Brahmines whose duty it was to study and recite the Vedas became divided into various *Sakhas* or branches. Owing to the adopton of different readings and interpretations, sects or schools for the different recensions of the same Veda were formed, headed by distinguished teachers who taught from such recensions.[5]

The above authorities clearly support the view that neither the concept of different schools nor the territoriality of law were unknown to the old Hindu legal system followed by Anglo-Hindu law. In fact, Gautam admits of the possibility of conflcting authorities and advises *तुल्यबलविरोधे विकल्पः (Gautama Sutra*, 1.5); if authorities of equal force are conflicting either may be followed at pleasure.[6]

The desirabilty or necessity of moulding or modifying the texts of *Smritis* to suit the prevalent customs and usages of the different parts of the country led the learned men to interpret, explain and reconcile the *Smritis* and in this way arose what constitute the most significant source of Hindu law, namely, the Commentaries. The Commentaries, however, were not the same as the authority of the commentaries differed from province to province. Various schools with different doctrines arose, each school accepting one or another of the commentaries as of paramount authority, holding sway in that part of the country where the author of that commentary lived and propogated his doctrines. This is how we have the Madras, Bombay, Bengal, the Mithila and Benares schools of Hindu law.

However, it is usual to talk of the existence of the above schools of Hindu law, but strictly speaking there are only two schools, the **Dāyabhāga** and the **Mitākharā**, others like the Mithila, the Benares and the Madras schools being really the sub-schools of the **Mitākharā** differing from one another only in a few matters.[7]

In Mithila school, the authority of the **Mitākharā** prevails except in a few matters in respect of which the law of the Mithila school has departed from the

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Mitakshara. *VivādaChintāmaṇi*, written by Vachaspati Mishra under the patronage of King Bhairavendra alias Harinarayan of Mithila, is treated as a work of the highest authority in the Mithila school.[8] An earlier work of authority in the Mithila school is *Vivāda Ratnākar* written by Chandesvar in the beginning of the 14th century. He was the minister of King Harasimhadeva. A third authority in the Mithila school is *Vivāda Chandra* written by Misaru Misra[9] under the order of princess Lakshmi Devi of Mithila about the end of the 14th century.[10] The *Madanapārijata* composed by Viśveśvarabhaṭṭa, under the auspices of king Madan Pal is yet another authority in Mithila. The *Kalpataru* of Lakshmidhara which is frequently referred to in the *Sarasvatī Vilāsa* and the *Vīramitrodaya* is also another authority in Mithila school and was written about the first half of the twelfth century.[11]

Weber maintains that the *Grihya Sūtras* are of much importance in as much as it is in them that we have to look for the dawn of our legal literature.[12] The Materials regarding the origin and the history of Gautamasūtra are indeed scanty. "There are only two points which", says George Buhler, "can be proved satisfactorily viz., the connection of the work with the *Sāmaveda* and a *Gautama Charaṇa*, and its priority to the other four Dharmasūtras which we still possess, To go further appears for the present impossible". As regards its origin Prof. Max Müller says, "Another collection of *Dharmasūtra*, which however, is liable to critical doubts, belongs to the Gautama, a charaṇa of the *Sāmaveda*". This assertion agrees with Kumarila's statement :

(The *Dharamasūtra* of) Gautama and (the *Grihyasūtra* of) Gobhila were (originaly) accepted as authoritative by the chhandogas alone. *"तद्यथा गौतमीयगोभिलीये छन्दोगैरेव पठ्यते"*

It is now generally accepted that *Gautama Sūtra* is prior to the other existing *Dharmasūtras*. Both Baudhayana and Vasistha quote from Gautama, and other Dharmasūtras are clearly posterior to these two. George Buhler has established that the *Gautama-Dharmasutra* may be safely declared to be the oldest of the existing works on the Sacred Law.[13]

Gautama says :

वेदो धर्म्ममूलं तद्विदाञ्च स्मृतिशीले ।

(Gautama Sūtra, 1.1.2.)

"The Veda is the source of the sacred law, and the tradition and practice fo those who know Veda".

Yet he does not discard altogather the fuction of reason in finding out law. *तर्कोऽभ्युपायः (Gautama Sūtra,* XI. 23), he says, and so a king should decide properly after coming to a conclusion through reasoning. Gautama expresses his view as to the mode of discovering law in cases not provided for. He says:

अज्ञाते दशावरै : शिष्टैरूहविद्भिरलुब्धैः प्रशस्तं कार्य्यम् ।
चत्वारश्चतुर्णां पारगा वेदानां प्रागुत्तमात्त्रय आश्रमिणः
पृथग्धर्मविदस्त्रय, एतान् दशावरान् परिषदित्याचक्षते ।
असम्भवे त्वेतेषाम् श्रोत्रियो वेदविच्छिष्टो विप्रतिपत्तौ यदाह ॥

(Gautama Sūtra, XXVIII, 46-48)

"In cases for which no rule has been given, that course must be followed of which at least ten persons, who are well instructed, skilled in reasoning, and free from covetousness, approve. They that an assembly परिषद् shall consist at least of the ten folloving members, viz four men, who have completely studied declare, thefour Vedas, three men belonging to the three orders enumerated first and three men who know three different institutes of law. But on failure of them the decision of one **Shrotriya**, who knows the Veda and is properly instructed shall be followed in doubtful cases".

The three orders referred to in this extract are those of ब्रह्मचारी, गृहस्थ and भिक्षु. So a Vānaprasthin (वानप्रस्थिन्) is not one eligible for a Parishad.

The Sūtra literature is characterised by the reservation on special privileges to the classes, particularly the Brāmaṇas.

षड्भिः परिहार्य्यो राज्ञा अवध्यश्चावन्ध्यश्चा दण्ड्यश्चा-
वहिष्कार्यश्चिा परिवाद्यश्चा परिहार्यश्चिेति ।

(Gautama Sūtra, VIII, 12-13).

Such a Brahmaṇa must be allowed by the king immunity from the following six kinds of opprobrious treatment. He must not be subjected to corporal punishment, he must not be imprisoned, he must not be fined, he must not be exiled, he must not be reviled, nor be excluded".[14] It must be observed that by Brahmaṇa Gautama scarcely intends to mean only a Brāhmaṇa by caste. His Brāhmaṇa is a Brāhmaṇa deeply versed in the Vedas, and it was only for such a Brāhmaṇa that some indulgences, some facilities were to be reserved. Such a Brāhmaṇa would be

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

necessary for the preservation of society. Mahamahopadhyaya Dr. Sir Ganganath Jha has elaborately delt with the contributions of Gautama in different areas of law.[15]

Yājnavalkya belonged to the *Shukla Yajurveda* and is intimately connected with the *Brihadāraṇyaka Upnishad* and his home is stated in the *Smriti* itself as Mithila.[16] The *Śatapatha Brāhamaṇa* in several places alludes to the dialogues of Yājnavalkya and king Janaka of Videha on "agnihotra".[17] In the *Brihadāraṇyaka* Upnishad Yajnavalkya is represented as carrying away the one thousand cows set apart by king Janaka for the most learned Brahman and he is said to have imparted to king Janaka the knowledge of the destiny of the soul after it is released from the bonds of flesh and worldly affections.[18] It is said that the sages approached Yajnavalkya in Mithila and requested him to impart to them the dharmas of the varṇas, aśrams and others.[19] *Yājnavalkya Smriti* is considered by Prof. Stenzler to have been founded on that of Manu. It has been the subject of numerous commentaries, the most celebratad of wich is the *Mitākharā* and it is practically the starting point of Hindu law.[20] Mahamahopadhyaya Kane observes that on account of the paramount importance of the *Mitākharā* in modern Hindu law as administered by the British courts in the whole of India, the Smriti of Yajnavalkya has indirectly become the guiding work for the whole of India and this position it richly deserves by its concise but clear statement of principles, its breadth of vision and its comparative impartiality towards the claims of both sexes and the different varṇas.[21]

The contents of the *Yājnavalka Smriti* include, *inter alia*, members of the hall of justice, judge, definition of vyavahārapada, rules of procedure, plaint, reply, taking security, indicia of a false party or witness, conflict of *dharmaśāstra* and *arthaśāstra*, means of proof, documents, witnesses, possession, title and possession, gradation of courts, force, fraud, minoriy and other grounds of invalidity, finding of goods, treasure-trove, debts, rates of interest, debts of joint family, what debts of father son need not pay, devolution of debts, suretyship of three kinds, pledge, deposit, witnesses, their qualifications and disqualifications, administering oaths, punishment for perjury, ordeals of balance, water, fire, poison, and holywater, partition, time of it, wife's share on partition, partition after father's death, property not liable to partition, joint ownership of father and son, twelve kinds of sons, illegitimate son of śūdra, succession to a sonless man, re-union, exclusion, husband's power over wife's stridhana, boundary disputes, dispute between master and herdsman, sale without ownership, invalidity of gift, rescission of sale, breach of contract of service, slavery by force, violation of convention, non-pay-ment of wages, gambling and prize-fighting, abuse, defamation and slander, assault, hurt, sāhasa, theft, adultery, miscellaneous wrongs and review of judgment.[22]

The post-independence era has witnessed several legislative measures (such as, The Hindu Marriage Act, 1955; The Hindu Succession Act, 1956; The Hindu Minority and Guardianship Act, 1956 and the Hindu Adoptions and Maintenance Act, 1956) which have not only blurred the distinctive characteristics of different schools of Hindu law but also brought about fundamental changes in the jural relations among the Hindus. In view of the above circumstances it was perhaps nothing unusual for Prof. Derrett (of London School of Economics,) to observe, *"To the West, the rules of Manu, Yajnavalkya, Narada, Katyayana, Brihaspati and the rest appear to be anthropology valuable, intriguing, stimulating, admirable (for the most part) but not a system of practical law; and to a great many Indians the law of the shastras belongs to the museum and is not a part of practical life as we know it"*.[23] He has further raised a very pertinent question : what is the status of the Sanskrit texts of the dharmaśāstra in the closing years of the twentieth century ?[24]

With due deference to the erudition of Prof. Derret, it may be observed here that from the point of view of the judge, the law is a rule according to which the judge must decide the legal disputes that are brought before him. According to the definition which is current in juristic science, the law is a rule of human conduct. The rule of human conduct and the rule according to which the judges decide legal disputes may be two quite distinct things; for men do not always act according to the rules that will be applied in settling their disputes. Prof. Derrett appears to have acknowledged the above difference when he observes that the ideals to be found in the *shastras* are abandoned on the surface, but the attitude of mind and the conception of life remain the same. All the

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

great features of the Hindu mind, its aptitudes and its short-comings are voiced in the literature, where customs, usages, ethics, philosophy, superstition, religion, and fantasy meet and combine, to produce a climate of self-expression which the Sanskrit texts individually and collectively serve. The texts have no more authority than the people give them, but they make a perennial claim on the Hindu mind. Whatever may go on upon the surface, and however people may direct their lives, the old laws of duty in thier essence, the old tensions between the desire to be righteous and the temptation to be unrighteous, the pull upwards of the commandment to act without desire and to know and seek absorption in the Self, there remain. The Sanskrit texts express perennial truths active in Hindu society in India and it is here that the continuty of Hindu law lies.[25]

Besides, there are many areas of the Hndu law in which the texts are still the authority which the judges have to consult and if we take the post-independence period in its entirety the number of cases is substantial. In all fields but the most obscure there is a plethora of case law, so that the texts are reconsulted along with books of authority and the judicial decisions. Article 13 of the constitution defines law including customs and usages having force of law.

Apart from the above facts, the relevancy of the texts lies in their everlasting contributions.

In the juristic thought, the conception of law given by the Rigvedic philosophers is perhaps the earliest on the globe. In the 10th Mandal, Sukta 190, verse I, of the *Rigveda* the theory of creation of the universe is given pointing out in what relation law stands to the rest of it. It says

.ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णव : ॥

(Rigveda, X, 190, 1.)

(From Fervour kindled to its highest, Eternal law and Truth were born : Thence was the Night produced, and thence the billowy flood of sea arose).[26]

Dr. Berolzheimer, of whose work Sir John Macdonnell observes that it enables us to ascend to a height from which we can see law as an everpresent part of an everflowing stream, says : " Closely connected with the religious and philosophical views of the Vedic Aryans are certan fundamental positions in regard to the philosophy of law, which in turn became the antecedent of later legal and ethical developments among the Greeks and Romans. Foremost among these philosophical conceptions is *'rita'* which is at once the organized principle of the universe and divine ordering of earthly life. As the latter, it is affiliated with purpose of human benefit. According to Dr. Berolzheimer, the Romans, through the Greeks, derived from vedic *"rita"* their central conception, **"ratum", "ratio", "naturalis ratio"** and Augustine christianized "rita" into "Pax" which is not peace, but that which brings peace, the blissful sacred order.[27] It is signficant to note that the *"rita"* (law) is teamed with truth and it may signify that truth can be known through law only. According to Vedic sages, before there could be any society, before there could be any social ideality, *"rita"* evolved : the ordering principle came into existence even before there was any diversity : the whole existed even prior to its parts.[28] It is admitted by all that reason is the form of law but the material content of law is the need of life, utility and the demands of the species.

Law of privacy may be said as another example of such contributions. Although privacy does not find its mention in any of the *vyavahāra-padas* (topics of litigaton) of ancient texts but it was so firmly rooted in the Hndu view of life that its existence can be traced in the Rigvedic texts, *Grihya-Sūtras, Arthaśāstra* and the epics of the *Rāmāyaṇa* and the *Mahābhārata and* other classical literature.[29] A class of Indian scholars and Jurists[30] without knowing or even caring to know the rich treasure of knowledge our classical literature, in its eternal youth, has to offer, subscribe to the view that privacy is alien to Indian culture and tradition. However, their thesis has been successfully exploded and it has been established that those who maintain that privacy is an alien concept merely manifest their ignorance of the Indian culture and tradition.[31] Ancient Indian theory of knowledge based on the *Upanishads*, aim at the ultimate reality of the universe. Perception deals with objects that come within the range of our senses in which field it is paramount. Inference, which is based on perception, is operative regarding things that are not perceived but are accessible to the mind. But where perception and inference fail to give us definite knowledge, scriptures like the *Upanishads* are our only guide. The methodology suggested in the *Upanishads* is called *"Upāsanā"* or

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

meditation. And its aim is gradually to withdraw the aspirant's mind from external things and direct it inward to make him more and more introspective, so that he may get rid of his dependence on the objective world.[32] Meditation is not possible without concentration and concentration is possible if the person concentrating is not disturbed. Thus, from the very dawn of the Vedic culture, "disturbing a meditating sage" came to be regarded as a sin, a wrong of the highest order in the Indian society.[33] It would, therefore, not amount to carrying the thesis too far to maintan that privacy not only originated in the Indian soil but it has exported it to the west where people meditate in several transcendental meditaion centres all over the world even to-day. No one among the contemporary Indian scholars or jurists appear to have any definition of the term 'privacy'. One of them, of course, initiated the queston regarding the concept of privacy in India but concluded with the following observaions :

> *Our ancient law in Dharmashāstras also recognised the concept of privacy. Really, the law of privacy has been well expounded in the commentaries of old law. Kauṭilya in his Arthashāstra has presented a detailed procedure to ensure right to privacy while ministers were consulted. But neither in the ancient law nor in the present law the term 'privacy' has anywhere been defined, nor any judicial pronouncement has so far come to make the positon clear.*[34]

In ordinary parlence, one tends to use the words 'privacy', 'secrecy' and 'confidentiality' indiscriminately resulting in blurring the distinctive feature among them. Privacy as a human right[35] therefore, has got to be distinguished from 'secrecy' and 'confidentiality'.

Both 'privicy' and 'secrecy' involve information and boundaries affecting its flow. In 'secrecy' disclosure or acquistion of information beyond the boundary is prohibited and the prohibition is attended by sanctions in event of a breach. In 'privacy', disclosure is at the discretion of the possessor and such sanctions as law provides are directed only against coercive acqisition by persons outside the boundary. Secrecy is a means to an end while privacy is an end in itself.[36] The doctrine of confidentiality far from standing on its own feet, is entirely dependent on a notion of privacy ; the very language of confidentiality would not have been intelligible but for a legal policy to keep sensitive private matters firmly unpublished. What is more, confidentiality, at any rate in its present scope, cannot even reach situations where there has been no trusting or confiding of any sort, yet where the demands for privacy appear no less great.[37] Further, confidentiality necessarily involves more than one individual whereas privacy may be one individual only. Thus, confidentiality is reposed, secrecy is maintained and privacy is respected.

The sole purpose of the detailed procedure prescribed in the Kauṭilya's *Arthashāstra* for consulting ministers was to ward off possible leakage or divulgence of the state policies in the statecraft (legacy of which may be found surviving in the provision of the colonal legislation, The Indian Official Secrets Act, 1923, even to-day). This was not to ensure any one's right to privacy. In fact, there are several statutes[38] in the Indian legal system which prohibit divulgence of information acquired in course of one's official capacity. In all such cases, the institutional secrecy is maintained to respect the privacy of persons having business relations with such institutions. Privacy is closely associated with the life-style of the people and people have diferent life-styles in different cultural units. Highlighting the point Chief Justice Edge of the Allahabad High Court observed :

> *In my opinon, the fact that there is no such custom of privacy known to the law of England can have no bearing on the question whether there can be in India an usage or custom of privacy valid in law, The conditions of domestic life in the two countries have from remote times been essentially different, and in my opinion, it is owing to that difference in the conditions of domestic life alone that a custom which appears to me to be a perfectly reasonable one in India should be unknown in England.*[39]

The quintessence of privacy lies in the idea of exclusion. In fact, privacy cannot be thought of without entertaining the idea of exclusion. Exclusion, therefore, is both constitutive as well as regulative component of privacy. In its regulative aspect, it meets the requirement of varying social norms of cultural relativity. Kissing in public place or elevator may not be a matter of shame in one society but it may be treated as shameful act in other society. The idea of exclusion in its regulative aspect cannot be disengaged from the cultural values (of a particular society

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

at a particular time) which identify the areas or acts or information exclusion from which is thought to be proper and desirable.

The functional justifcation of privacy as a human right lies in protecting human beings against emotional disturbances of anxiety, humiliation, embarrassment,[40] disgrace,[41] inconvenience,[42] annoyance,[43] shame and feeling of indignity. It protects morals and ideas of decency.[44] The autonomy that privacy protects is also vital to the development of individuality and consciousness of individual choice in life. Leontine Young has noted that "without privacy there is no individuality. There are only types, who can know what he thinks and feels if he never has the opportunity to be alone with his thoughts and feelings".[45] This development of individuality is particularly important in democratic societies, since qualities of indepen dent thought, diversity of views and non-conformity are considered desirable traits of individuals. Such independence requires time for sheltered experimentation and testing of ideas, for preparation and practice in thought and conduct, without fear of ridicule or penalty and for the opportunity to alter opinions before making them public. The individual's sense that it is he who decides when to "go public" is a crucial aspect of his feeling of autonomy. Studies of creativity show that it is in reflective solitude and even " day dreaming" during moments of reserve that most creative non-verbal thought takes place. At such moments the individual runs ideas and impressions through his mind in a flow of associations, the active presence of others tends to inhibit this process.

Prof. Westin (of Columbia University, N. Y.) observes that privacy functions basically as an instrument for achieving individual goals of self-realization. As such it is only part of the individual's complex and shifting system of social needs, part of the way he adjusts his emotional mechanism to the barrage of personal and social stimuli that he encounters in daily life. Individuals have needs for disclosure and companionship every bit as important as their need for privacy. To be left in privacy when one wants to companionship is as uncomfortable as the inability to have privacy when one craves it. This balance of privacy and disclosure will be powerfully influenced of course by both the society's cultural norms and the particular individual's status and life situation. The basic point is that each individual must, within larger context of his culture, his status and his personal situation make a continuous adjustment between his needs for solitude and companionship; for intimacy and general social intercourse; for anonymity and responsible participation in society; for reserve and disclosure. A free society leaves this choice to the individual, for this is the core of the " right to individual privacy"—the right of the individual to decide for himself with only extra-ordinary exceptions in the interests of the society, when and what terms his acts should be revealed to the general public.[46]

There are various evidences which establish the fact that individuals were not only aware of privacy but there were well defined rules to protect and respect the privacy of individuals in ancient Indian society. The frequent use of the words like *एकान्त (ekānta), निर्जन (nirjan), विविक्त, (vivikta), रह (raha),* रहस्य (rahasya), गुप्त (gupta), तिरस्करणी (tiraskarini) and *अवगुण्ठनवती नारी (avaguṇṭhana-vati nāri)* in the scriptures and classical literature prove the fact that privacy was not alien to the ancient Indan society. The architectural rules found in *Grihya Sūtra* prescribe a bed-room (śayaniya) away from the drawing room (sabhā) and nursery reflect a modicum of privacy in its rudimentary form. Further, the code of conduct prescribed for daily life such as not to disturb while a person is sleeping, studying or meditating amply makes it clear that the autonomy of an individual and his privacy were respected. Enjoyment of sex and food were recommended in a secluded place, away from the sight of others. Even to attend the call of nature was prescribed to be in a secluded place where one may not be observed by others. A male was enjoined not to see, touch or meet other woman in a lonely place. To construct doors and windows facing other's houses and thereby intruding upon their privacy was made punishable. Visits to others's houses without the owner's consent, at odd hours and during nights were prohibited. A female was not supposed to be seen naked or while giving birth to a child by a male. In matters of religious and spiritual pursuits interference or disturbance of any kind was prohibited. So was the case with the study of the Vedas. Prisoners and slaves were also protecetd in their daily avocatons such as sleeping, eating or excreting. Among the Mohammedans as well, high degree of privacy consciousness is found prevalent. The morality of Islām based on the concept of "Hayā" aims at inculcating a feeling of shyness in human nature and tries to develop it as a part of man's mental make-up so that it may serve as a strong moral deterrent aganst all evil inclinations.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

During the colonial period specially when the codification of laws took off, the law of privacy continued its existence in the various provisions thereof. The Indian Penal Code, 1860, makes it a crime to intrude upon the privacy of a woman.[47] It may be observed that it was neither imported from England nor a contribution of the genius of Thomas Babington Macaulay but only a codification of a long established tradition of the Indian people. For almost a century Indian criminal law has embodied some of the modern constitutional safeguards which the other nations did not apply as national standards in safeguarding the right to privacy until 1960s.[48] The correspondence of an individual and the inviolability of mails and messages are well protected in the Indian legal system.[49] There are several statutes which make vexatious and unnecessary entrance into or search of the house or the seizure of the property of any person punishable.[50] This is how the right of an individual to be secured in his house and of his personal effects and other properties against unnecessary and vexatious searches and seizures is well protected in the Indian legal system. There are provisions which ensure inviolability of person by protecting him against any unlawful interference with his mental and physical integrity. He is protected against any form of vexation and annoyance. Sufficient measures are provided to protect one's honour, dignity and reputaton. The inviolability of family life is also protected including provisions for trial in camera. One's religious autonomy is also protected. The information acquired in course of one's profession cannot be divulged without the consent of the client or the patient.

On attaining her independence, India adopted the constitution which ushered in a new society based on values enshrined therein. The preamble to the constitution which perambulates throughout its provisons, resolves to secure to all the citizens, Justice, liberty, equality of opportunity and of status assuring their dignity. It guarantees several fundamental rights to them in part III. These fundamental rights, observes the Supreme Court of India, represent the basic values cherished by the people of this country since the Vedic times and they are calculated to protect the dignity of the individual and create conditions in which every human being can develop his personality to the fullest extent. They weave a pattern of guarantees on the basic structure of human rights and impose negative obligations on the state not to encroach on individual liberty in its various dimensions. It is apparent from the enunciation of these rights that the respect for the individual and his capacity for individual volition which finds expression there is not a self-fulfilling prophecy. Its purpose is to help the individual to find his own viability; to give expression to his creativity and to prevent governmental and other forces from 'alienating' the individual from creative impulses. [51] Similarly, Justice Bhagwati has observed :

> *Now in order to determine what are the prevailing standards of human decency, one cannot ignore the cultural ethos and the spiritual tradition of the country. It is indisputable that the constitution of a nation reflects its culture and ethos and gives expression to its sense of moral and ethical values. It affords the surest indication of the standards of human decency cherished by the people and sets out the socio-cultural objectives and goals towards which the nation aspires to move. There can be no better index of the ideals and aspirations of a nation than its constitution. When we turn to our constitution we find that it is a human document which respects the dignity of the individual and the worth of human person and directs every organ of the state to strive for the fullest development of the personality of every individual...the entire thurst of the constitution is in the direction of development of the full potential of every citizen and the right to life along with basic human dignity is highly prized and cherished and torture and cruel or inhuman treatment or punishment which would be degrading and destructive of human dignity are constitutionally forbidden.*[52]

The above observatons of the Supreme Court of India indicating the social mission of our constitution, respecting the dignity and inviolability of an individual and the policy of the law inescapably establish the 'frontiers' within which men are inviolable.

In 1975, the Supreme Court of India in Govind v. State of M.P.[53], recognised the right to privacy as fundamental right of the citizens of India. Commenting upon the case, Mr. Nariman has observed :

The right to privacy had two rounds in court— first before a bench of 8, then before a bench of 6. In both it had been worsted. It could not have survived a third bout. It was thought that privacy as fundamental right had been buried— a more appropriately, burnt to a cinder. But the ashes of lost freedoms are

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ever smouldering. In Govind the cherished right has risen Phoenix-like from the ashes..Neatly side-stepping the ratio of larger benches, the court has given the right a new lease of life.[54]

He further observes that the decision in Govind case will not go down as a landmark in the development of Indian constitutional law. But it will help to point the way. With dexterous judicial steering and mild understatement the Supreme Court has given to the right of privacy a foot-hold in the fundamental rights chapter. But it has done more. It has set the tone.[55] And if the tone has to be in tune with our constitutional ethos, the right of privacy has to be read in the right to life under article 21 of the constitution. It has been established by the Supreme Court of India that the term 'life' includes one's dignity and all those that go along with it.[56] Among those things stamped with the personality of an individual are his dignity, right to be different, right to be free from psychological and physical compulsion and forced labour[57] and freedom of conscience and the right freely to profess, practice and propogate religion.[58]

In a recent case R. Rajagopal v. State of Tamil Nadu[59], the Supreme Court has held that the right to privacy is implicit in the right to life and liberty guaranteed to the citizens of this country by Art. 21. It is a right to be let alone. A citizen has a right to safeguard the privacy of his own, his family, marriage, procreation, motherhood, child bearing and education among other matters. None can publish any thing concerning the above matters without his consent— whether truthful or otherwise and whether laudatory or critical. If he does so, he would be violating the righ to privacy of the person concerned and would be liable in an acton for damages.

References

1. P.V. Kane, *History of Dharmasastra*, Vol. III, p. 878 (1946). Also, Collector of Madura v. Mootoo, 12 Mad.I.A. 397.
2. Mahamahopadhya Dr. Sir Ganganath Jha used the term 'Anglo-Hindu Law' as early as 1926 in a work published in 1929 (*Manu-Smriti*, Notes III, Calcutta 1929, p. xlvi) as quoted by J. Duncan M. Derrett, *A critique of Modern Hindu Law*, p. 16 (N. M. Tripathi Pvt. Ltd. 1970).
3. Radhabinod Pal, The History of Hindu Law in the Vedic Age and in post Vedic Times down to the Institute of Manu, (*Tagore Law Lectures*, 1930) p. 21-22, University of Calcutta, 1958.
4. Ibid. p. 27.
5. Vide, Max Muller's to Morley, I.M. Dig. Introdn. 196, quoted by N.C. Aiyar, *Mayne's Treatise on Hindu Law and Usage* (11th ed.), p. 21.
6. Radhabinod Pal, *History of Hindu Law*, p. 196.
7. N. R. Raghavachariar, *Hindu Law*, p.7. (The Madras Law Journa Office, 1960).
8. Rutchepathy v. Rajunder, (1839) 2m. I. A. 134, 146; Mt. Thakur Deyhee v. Rai Baluk (1866) M. I. A. 139, 174-75; Baccha Jha v. Jugmon Jha, (1886) 12 Cal. 348, 351, Balwant Singh v. Rani Kishori, (1898) 25 I. A. 54, 69, 20 All. 267, 290; Sourindramohan Sinha V. Harprasad (1926) 52 I. A. 418, 5 Pat., 135, 155; Kamala Prasad v. Murli Manohar (1935) 13 Pat, 550, 570; Bhairab Prasad v. Birendra Pratap (1950) 28 Pat. 123.
9. N. C. Aiyar, *Mayne's Treatise on Hindu Law and Usage*. p. 50.
10. Ibid.
11. Ibid.
12. Weber, *History of Indian Literature*, 16-20.
13. Radhabinod Pal, *History of Hindu Law*, p. 23-24.
14. Ibid., p. 198-200.
15. Ganganath Jha, *Hindu Law in its Sources* (The Indian Press, Allahabad, 1933)
16. N. C. Aiyar, *Mayne's Treatise on Hindu Law Usage*, p. 27.
17. Max Muller, S, B. E. Vol. 44, p. 46.
18. P. V. Kane, *History of Dharmaśāstra*, Vol. I. Part-I, p. 422.
19. Ibd. p. 431.
20. N. C. Aiyar, *Mayne's Treatise on Hindu Law and Usage*, p. 27.
21. P.V. Kane, H.D.S. Vol. 1, Part 1, p. 422.
22. Ibid. p. 432.
23. J. Duncan M. Derrett, *A Critique of Modern Hindu Law*, p. 5 (N. M. Tripathi Pvt. Ltd., Bombay, 1970)
24. Ibid.
25. Ibid. p. 6.
26. Radhabinod Pal, History of Hindu Law, p. (IV & Intro.)
27. Ibid.
28. Ibid. p. 161.
29. Mishra, G., *Right to Privacy in India*, p. 47.
30. Justice Jagannadhdas has maintained that the Indian Constitution does not recognize a fundamental right to privacy and there is no justification to import it by some process of strained construction (M.P. Sharma v. Satish Chandra, AIR 1954 SC 300 at 306-7) Prof. Upendra Baxi (former Vice-chancellor of Delhi University) has taken an extreme stand in subscribing to the view that privacy is alien to Indian culture (K. K. Mathew, *Democracy, Equality AND Freedom*, Intro. LXXIV note 262). For detail, vide , Mishra, G., *Right to Privacy in India*.
31. Mishra, G., Right to Privacy in India.
32. S. Radhakrishnan (ed.), The Cultural Heritage of India, Vol. 1, p. 349-50.
33. Mishra, G., Right to Privacy in India, p. 17-18.
34. Shrinivas Gupta, "Right to Privacy: A Kind of Personal Autonomy". Lex Et Juris 39 (1988).
35. Importance of privacy as a human right and its need for legal protection has been acknowledged in the followng three international documents.—

(1) Article 12 of the Universal Declaration of Human Rights adopted by the General Assembly of the United Nations on Dec. 10, 1948, reads as under:

No one shall be subjected to arbitrary interfence with his privacy, family, home or correspondence, nor to attacks

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

upon his honour and reputation. Every one has the right to the protection of the law against such interference or attacks.

(2) Article 17 of the International Covenant On Civil And Political Rights provides as under.—

No one shall be subjected to arbitray or unlawful interference with his privacy, family, home or correspondence nor to unlawful attacks on his honour and reputation.

(3) Similarly, Article 8 of the European Conventions for the Protection of Human Rights and Fundamental Freedoms, 1950, provides that—

(i) Every one has the right to respect for his private and family life, his home and his correspondence;

(ii) There shall be no interference by a public authoity with the exercise of this right except such as is in accordance with the law and is necessary in a democratic society in the interests of national security, public safety or the economic well-being of the country, for the prevention of disorder or crime, for the protection of health or morals, or for protection of the rights and freedoms of others.

36. For detail, vide, Edward Shils, "Privacy: Its Constitution and Vicissitudes", 31 Law and Contemporary Problems (1966) p. 283.

37. Samuel Stoljar, "A Re-examination of Privacy", Legal Studies 79.

38. Section 44, The State Bank of India Act, 1955; Sections 11 and 15, Census Act, 1948; Section 5, The Banker's Book Evidence Act, 1891; Section 51, The National Bank For Agriculture and Rural Development Act, 1981; Section 20, The National Co-operative Development Corporation Act, 1962; Section 4(5), The International Monetary Fund and Bank Act, 1947; Sections 21 and 30, The Industrial Disputes Act, 1947; Secton 38, The Export-Import Bank of India Act, 1981; Section 35 and 36, The Children Act, 1960; Sections 80 and 81 A, The Estate Duty Act, 1953; Section 39, The Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961; Section 41, The Agricaltural Refinance and Development Corporation Act, 9 1963; Section 13, The Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertaking) Act, 1970; Sections 34A and 34AD, The Banking Regulation Act, 1949 and Section 9, The Capital Issues (Control) Act, 1947.

39. Gokal Prasad v. Radho, ILR 10All (1888) 358 at 388. There are other cases such as Nuth Mull v. Zuka-oollah and Kureem-oollah Beg (S. D. A. N. W. P. Rep. 1855 at 92) where Begbie, Smith and Jaction, JJ., Recognised the right to privacy in India. In Manishankar Hargovan v. Trikam Narsi (1867) 5 Bom. H. C. R. ACJ 42) Tucker and Gibbs, JJ., held that an invasion of prvacy is an infraction of a right for which person injured has remedy at law. This may be relevant here to point out that United States of Amerca started thinking about the legal protection of privacy subsequent to the publication of a seminal article, "The Right to Privacy" in 4 Harvard Law Review (1890) 193, by Charles Warren and Louis Brandeis.

Urging the right to privacy for the British nationals on the basis of the Indian cases, Percy H. Winfield, in 1931, made an appeal to the House of Commons, wherein he observed:

The Indian cases have been referred to not, of course, for the purpose of urging their application to the different particular circumstances which prevail in England, but as an illustration of the pliability of Indian law where the need of protecting privacy has neen felt. It will be seen when we pass to consider personal privacy that our law probably lags behind the needs of a community in which intrusion on privacy is apt to take offensive forms owing to the modern development of instantaneous photography and of method of advertisement which, to say the least of them, are totally indifferent to the feelings of private individuals.

47 Law Quarterly Review (1931) p. 29-30.

40. Julius Stone, Social Dimension of Law and Justice, p. 213.

41. Gokal Prasad v. Radho, ILR 10 All. (1888) 358 at 388.

42. Keshav Harkha v. Ganpat Hirachand, 8 Bom. H. C. ACJ, 87; Srinivas Udpirav v. Reid, 9Bom. H. C. ACJ 266 and Bhagwan Das v. Sheikh Zamurrad Hussain, 119 I. C. 833.

43. Kuvarji Premchand v. Bai Zaver, 6 Bom. H. C. Rep. 143.

44. Kanbi Deva Karsan v. Kanbi Bara Punja, AIR 1953 Sau. 67.

45. Leontine Young, Life Among the Giants (quoted by Westin, Privacy and Freedom, p. 34.)

46. Alan F. Westin, Privacy and Freedom, p. 41-42.

47. Section 509, The Indian Penal Code, 1860.

48. The U. S. Supreme Court decided Miranda v. Arizona, 384 U. S. 436 (1966) which is less stringent in some regard than the Indian Evidence Act, 1872 and the Code of Criminal Procedure, 1898. Compare Miranda case with sectons 25 and 26 of the Indian Evidence Act, 1872, Section 164 (3) of the Code of Criminal Procedure, 1898. The latter prohibits the admissibility of any confession of guilt made to a police officer "unless it be made in the immediate presence of a Magistrate".

49. Sections 49, 53 and 67, The Indian Post Office Act, 1898; Section 24, The Indian Telegraph Act 1885 and the Indian Telegraph Rules, 1951.

50. Section 12, The Glanders and Farcy Act, 1899; Section 13, The Dourine Act, 1910; Section 18, The Opium Act, 1878; Section 62, The Indian Forest Act, 1927; Section 17, The Ancient Monuments Preservation Act, 1904; Section 22, The Central Excise and Salt Act, 1940; Section 17, The Medicinal and Toilet Preparation (Excise Duties) Act, 1955; Section 94, The Gold Control Act, 1968; Section 58, The Foreign Exchange Regulation Act, 1973; and Section 130, The Customs Act, 1962.

51. Maneka Gandhi v. Union of India, AIR 1978 SC 597 at 620.

52. Bachan Singh v. State of Punjab, AIR 1982 SC 1325.

53. AIR 1975 SC 1378.

54. F. S. Nariman, The Right to be let alone-A Fundamental Right, The Indian Advocate, Vol. XVII (1977) 76 at 80-81.

55. Ibid. 82-83.

56. AIR 1981 SC 746.

57. Articles 20 (3) and 23, Constitution of India.

58. Article 25, Constitution of India.

59. AIR 1995 SC 264 at 276.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

CONSTITUENT STRUCTURE IN MAITHILI AND DISCOURSE STRATEGIES

□ *Dr. Yogendra P. Yadava*

1. Basic Constituent structure

1.1 Basic Constituent Order

Tradtionally, linguists have been using the term 'word order' instead of 'constituent order'. Even the recent studies on language typology have retained the use of this term (Cf. Greenferg, 1966; Givo'n 1984; Masica, 1991 and other similar works). We, however, subscribe to Comerie's view in this regard. According to him, "...strictly speaking, we are concerned not so much with the order of words as with the order of constituents; i.e. it would be more correct to speak of constituent order typology (Cf. Greenferg's term 'the order of meaningful elements')" (Comerie, 1981 : 80). Following this assumption, we will be using the term 'constituent order' henceforth.

The constituent order has occupied a significant place in recent linguistic discussions, esp. in relation to configurationality (a major typological factor) and pragmatcs. Consider the monotransitive construction in Maithili (la) and its variants (lb-f) in this regard :

(1)	a.	raam dudh pi -l- ak Ram mild drink-pt-AGR. 'Ram drank milk.'	(SOV)
	b	dudh raam pi-l-ak.	(OSV)
	c	raam pi-l-ak.	(SVO)
	d	dudh pi-l-ak raam.	(OVS)
	e	? pi-l-ak dudh raam.	(VOS)
	f	? pi-l-ak raam dudh.	(VSO)

This obviously shows that all major constituents (S, V, O) may be permuted in Maithili clause, yielding all the six ' logically possible' constructions grammatical.

It may be noted that verb can be moved from the final position as in (lc-f), though its movement to the initial positon (as in (le-f) sounds rather bizarre and appears less acceptable. Obviously then, a Maithili clause does not obey V-final constraint. In this respect, Maithili behaves like Turkish and unlike Japanese except in colloquial speech, as, shown in (2) :

(2) Kita yo, Tarro ga. (Shibatani, 1990:259)
(lit.) 'Come, Tara.'

These instances of unrestricted 'scrambling' apparently leads one to assume that the constituent order in a Maithili clause is fairly free (Jha, 1958:616).

We, however, demonstrate that this conclusion cannot be sustained. Instead we assume that Maithili is a configurational language with fixed underlying structure. To be more specific, SOV (in (la)) is the basic constituent order in a Maithili clause, while the rest of its variants (in (lb-f)) are derived from the basic one (in (la)).

There exist empirical and conceptual motivations for holding this assumption. Some of the major motivations can be presented as follows :

(i) The native speakers intuitively feel that of all the structures in (l), *a*, which has SOV structure, is the preferred order. It is, however, necessary for an optimal grammar of Maithili to capture this naturalness, i. e. native speakes' intuitive judgment about their mother tongue.

(ii) SOV order in (la) has greater frequency than other structures in (1b-f). This fact also suggests that SOV be accepted as the basic structure (Cf. Greenberg, 1966; Givo'n, 1984).[1]

(iii) SOV is pragmatically unmarked, while its other variants (viz. OSV, SVO, OVS, VSO, and VOS) are marked with some sort of added pragmatc functions like topicalization, focussing, definitization, etc[2]. This fact also supports the hypothesis that SOV is the underlying structure of a Maithili clause.

(iv) This assumption is in conformity with other MIA and also OIA and Proto-Indo-European languages (Masica, 1991:333).

(v) Typologically, Maithili shares the following features of a typical SOV language, e.g.

(a) *dependent-head order / left-branching*

(e.g. Adjective + None (*nik kitaab* = ' a nice book'), Genitive + Noun (*raamak kitaab* = 'Ram's book'), Relative clause + Noun (*kursipar baithal aadmi* = 'the man (who is) sitting in the chair'), Main verb + Auxiliary verb (*khaene aech* = 'has/have eaten'), Adverb + Adjective (*bar nik* = 'very nice'),

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Clausal complement + Verb (*o aaot (se) nischit aech* = 'That will come is certain.')

(b) *clause-final Q particle*

(e.g, *u ghar jaa rahal aech ki ?* = 'Is he going home?')

(c) *no Q word movement*

(e.g. *u dokaanpar kakaraa kitaab delak ?* 'Whom did he give the book at the shop ?')

1.2 Configurationality

Let us now examine the viable configurationality of the Maithili sentence structure. In this regard, we can evaluate three approaches : nonconfigurational structure, flat structure and VP-structure.

1.2.1 Nonconfigurational Structure

Hale (1978) suggests the rule in (3) :

(3) $S \rightarrow W^*$

According to this rule, a sentence (S) can be rewritten as any number of words in any order. This nonconfigurational structure is applicable to a free word order language. Obviously then, it is untenable for Maithili, as SOV has been assumed to be the basic constituent structure.

1.2.2 Flat Structure

Given that a Maithili sentence has SOV structure, it cannot have VP-structure either. This stipulation is based on the general constraint proposed by Schwartz (1972) which rules out lowering of phrases (esp. the merger of sister phrases) by transformations, as shown in (4) :

(4)

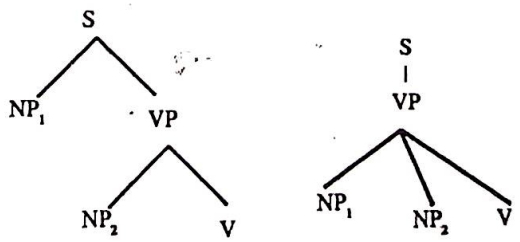

In (4), when NP_1 is moved into VP, it is lowered and results in the merger of sister nodes : NP and VP.

To resolve this issue, Schwartz (1972) suggests that a transitive constructon in such languages be base-generated with a flat structure shown in (5) :

(5)

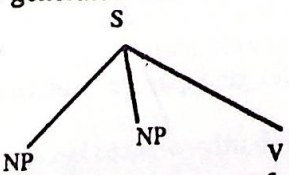

Given our analysis of Maithili sentences elsewhere (Yadava, 1982; 1983), there does not arise any question of lowering of phrases and resultant merging of sister nodes. Accordingly, a clause is base-generated by categorial rules, as in (6a) and then elements from within S are moved to the focussed and topicalized positions by Focussing and Topicalizaton rules, as in (6b) and (6c), respectively.

(6) a. [s" [T e] [s' [F e] [s raam bhaat khaet]]]
Ram rice will eat
'Ram will eat rice.'

b. [s" [T e] [s' [F raam] [s t_i bhaat khaet]]] (Applying Focussing)

c. [s" [T bhat$_j$] [s' [F raam$_i$] [s t_i t_j khaet]]] (Applying Topicalization)

Under this analysis, Schwartz's constraint cannot operate and serve as an argument against a VP node in Maithili.

Like Schwartz (1972), Mohanan (1981) also argues against a VP node in an SVO language like Malayalam. According to him, the postulation of a VP node unnecessarily compicates the generalization that it is only the sister constituent directly dominated by S that are order-free. Maithili data, however, show that even if we do away with a VP node, the generalization is otherwise complicated. In a modification structure, for instance, a noun or adjective is immediately dominated by NP or AP rather than S, and yet it can be scrambled freely in S, as shown in (7) and (8), respectively :

(7) a. [s' [F aaj$_i$] [raam e_i [NP [A nik [N kaaj]] kelak]]
today Ram nice work did
"Today Ram did a nice work."

b. [s' [F] [s nik raam e_i kaaj kelak]]

(8) a. [s' [F ahaak-lel] [s raam e_i [AP [Mod bahut] [A badmaas]] aech]]
you-for Ram very wicked is
'It is for you that Ram is very wicked.'

b. [s' [F ahaak-lel$_i$] [s raam e_i badmaas aech bahut]]

Secondly, Mohanan argues that if Malayalam has a VP node, it would be necessary to postulate a stylistic scrambling rule to derive surface word order. In the EST framework (Chomsky and Lasnik, 1977 and Chomsky, 1980), stylistic rules and rules of 'logical form' (LF) are mutually independent. However, the surface word order in Malayalam, derived by scrambling, would the input to the LF rules, e.g.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

rules of pronominal noncoreference and quantifier scope. Therefore, the kind of stylistic rules proposed in the EST framework cannot determine the surface word order in Malayalam. Hence Mohanan suggests that elements in a sentence should be base-generated as in (9), without a VP node.

(9)

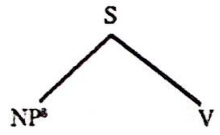

(NP* = any number of NPs can be generated in any order.)

Scrambling in Maithili, however, does not complicate the EST framework. Changes in Maithili word order that have semantic effects and are relevant for representation at LF can be accounted for by transformational rules[3]. Besides, the analysis of the Maithili data shows that the rules of pronominal noncoreference and quantifier scope do not interact with change in word order. We may, therefore, state that there in no motivation in Maithili grammar for postulating flat clause structure like (9).

1.2.3 VP- Structure

Instead, we may postulate the VP -structure for a Maithili monotranstive clause, as shown in (10) :

(10)

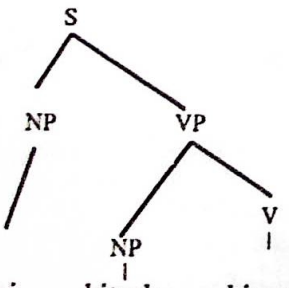

hari kitaab kinat
Hari book will buy
'Hari will buy a book.'

Obviously then, we require the following set of rules to generate a Maithili clause like (10) :

(11) a. $S'' \rightarrow T \quad S''$
b. $S' \rightarrow F \quad S$
c. $S \rightarrow NP \quad VP$
d. $VP \rightarrow NP \quad V$

(T = Topicalization; F = Focussing)

Truly speaking, for postulating VP-structure, Maithili does not have a strong motivation like VP Movement, which Engish has, e.g.

(12) They said that John would win the prize, and win he has. (McCawley, 1988:179)

But there do exist quite a few evidences in the language which support the VP analysis rather than the flat structure hypothesis. These facts are described as follows :

(i) In an unmarked constituent order, O and V are invariably contiguous in a Maithili clause. For example, see the structure in (10).

(ii) In Maithili there is a rule like VP-Substitution which calls for the stipulation of a VP node in the language. This rule requires that all the constituents contained in the VP be replaced by *se karnaai* ("doing/ to do so") in a coordinate structure (and also in the Maithili equivalent of a dialogue like : A : Did you return the book ? B: I did so); in case the entire VP is not replaced, the derived constructon is out, e.g.

(13) a. raam [VP mohan-ke kitaab lautaa delak]
Ram Mohan-to book returned
kintu hari [mohan-ke kitaab nae lautelak]
but Hari not
b. Raam [mohan-ke kitaab lautaa delak]
kintu hari [VP se nea kelak] [SKSI]
c.* raam [VP mohan-ke kitaab lautaa delak]
kintu hari [VP mohan-kese nae kelak]
d.* raam [mohan-ke kitaab lautaa delak] kintu hari [VP se kitaab nae kelak]
e.* raam [mohan-ke kitaab lautaa delak], kintu hari [VP mohan-ke kitaab se nae kelak]

(iii) Besides, Maithili also employs a rule like VP- Ellipsis which deletes all the constituents within a VP in a coordinate structure, e.g.

(14) a. hari-etaa [VP kitaab nae kinlak] balki okar bhaai-yo [VP kitab kinlak]
Hari-only book not bought but his brother-also.
b. Hari-etaa nae, balki okar bhaai-yo kitaab kinlak.
'Not only Hari, but also his brother bought the book.'
c.* hari-etaa kitaab nae,balki okar-bhaaiyo kitaab kinlak.

(15) a. hari ([VP Hamraa-saathe janakpur gel] aur okar bhaai-yo [hamraa-saathe Janakpur gel]
me- with janakpur went and
b. hari hamraa-saathe janakpur gel aur okar bhaai scho.
'Hari as well as his borther went to Janakpur with me.'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

c.* hari hamraa- saathe janakpur gel aur okar bhaai hamraa -saathe seho.

d.* hari hamraa-saathe janakpur gel aur okar bhaai janakpur seho.

e.* Hari hamraa-saathe janakpur gel aur okar bhaai hamraa-saathe seho.

In addition to these empirical evidences, we may also argue on the conceptual ground that it sounds more reasonable to postulate the VP-structure as it is the entire VP which functions as the logical predicate. Similarly, the stipulation of VP-stucture also receives conceptual support from the fact that V and O constitute a natural unit as the latter is subcategorized for the former and is not autonomous.[4]

To recapitulate, we have so far proposed the set of categorial rules in (11) to generate monotransitive constructions in Maithili. Now to accommodate ditransitive and other constructions, it is necessary to modify these rules as follows :

(16) a. VP → NP NP V'
PP PP

b. V' → V Aspect Aux Tns AGR Mood

To ilustrate these modified rules, consider the configuration in (17).[5]

(17) ' Hari used to learn English from Ram.'

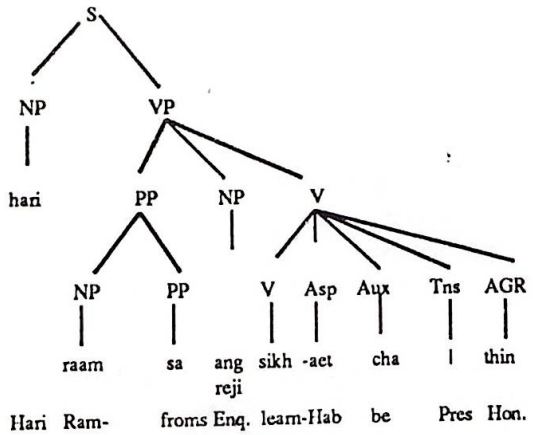

'Hari used to learn English from Ram.'

2. Descourse Strategies

Maithili sentences employ, obligatorily or optionally, the following discourse strategies to express various pragmatic functions, viz. topicalizaton, focussing, definitizing, supplementing, etc :

a. phonological,

b. morphological, and

c. syntactic.

2.1 Phonological Strategy

As in several other languages, change in intonaton contour within a Maithili clause triggers pragmatic effects. These phonological alterations and their concomitant pragmatic roles may be described as follows:

(i) An even middle pitch normally followed by a slight pause = "As for...", "About..." (Topicalization)

(ii) Sentence pattern (i.e. emphatic stress) followed by a high fall = "It is... (and not something else) that...(Focussing).

(iii) Low pitch = no pragmatic role (Basic meaning)

To illustrate these phonological-cum-pragmatic facts (i-iii), consider the examples in (18a-c), respectively :

(18)	*Middle pitch*	*Sentence stress*	*Low pitch*
a.	—	—	hari kalam kinat. (=9) 'Hari will buy a pen.'
b.	—	hari	kalam kinat. 'It is Hari (and not someone else) who will buy a pen'.
c.	hari	—	kalam kinat. 'As for Hari, he will buy a pen.'

2.2 Morphological Strategy

A Maithili clause involves morphological devices as alternative strategies for focussing, topicaliazing and supplementing elements. These devices include the following:

(i) *-e (taa)* (focussing)

(ii) *-ta* (topicalizing)

(iii) *-o/yo* (supplementing)

They can be illustrated in ((19 a-c), respectively :

(19) a. raam dudh-e (taa) pibat.
Ram mike-only will drink.
'Ram will drink only milk (and nothing else).'

b. raam dudh-ta pibat.
'As for *milk, Ram will drink it.*'

c. raam dudh-o pibat.
'Ram will drink milk as well (in addition to other things).'

Besides, in Maithili the accusative markar - *ke* (or *ke)* normally occurs with animate object as shown below:

(20) a. raam hari-ke maarlak.
Ram Hari-to beat
'Ram beat Hari.'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

b. raam kukur-ke maarlak.
dog-to
'Ram beat the dog.'

It is not normally affxed to an inanimate object:

(21) ham barad bechab.
I ox will sell
'I'll sell *an* ox.'

But it does occur in such a case to defintitize (as well as focus) the inanimate object :

(21') ham barad -ke bechab.
'I'll sell *the* ox.'

2.3 Syntactic Strategy

Within Chomskyan framework (Chomsky, 1981; 1982; 1992; 1994) syntactic strategy refers to 'Move α', whereby we mean a movement rule adjoins elements from S to a p sition outside S and leave behind a trace *t*, coindexed with the moved element, as shown below :

(22) a. [S hari ghar bechat]
Hari house will sell
'Hari will sell *a house.*'
b. ghar [hari *t* bechat]

Such a movement of elements from within S bears two pragmatic (or semantic) function: Topicalizaton and Focussing. Thus, the structure in (22b) may mean either (23a) or (23b) :

(23) a. As for the house, Hari will sell it.
b. It is the house (and not anythng else) that Hari will sell.

These meanings in (23a and b) are obviously topicalization and focussing, respectively.

According to this analysis, we may assume that SOV is the underlying structure for Maithili monotransitive constructions, generated by categorial rules. In addition, the Maithili grammar has two transformations: Focussing and Topicalization which move elements leftward from S to the focussed and topicalized positions outside S, respectively. For example, consider the followng structures :

(24) a. $[_S$" $[_{Te}]$ $[_F e]$ $[_S$ hari ghar bechat]]] (=22)
b. $[_S$" $[_T e]$ $[_S$' $[_F$ hari$_i]$ $[_S$ t_i ghar bechat]]] (Applying Focussing)
'It is Hari who will sell the house.'
c. $[_S$" $[_T$ ghar$_j]$ $[_S$' $[_F$ hari$_i]$ $[_S$ t_i t_j bechat]] (Applying Topicalization)
'As for the house, it is Hari who will sell it.'

The focussed and topicalized elements thus moved also receive the same change in their phonological pattern as in the case without movement, noted in subsection 2.1.

In addition to focussing and topicalizaton, the word-order variation in Maithili caused by the transformational rules in question also signals another pragmatic function, viz, definitization. Thus, consider the following :

(25) a. ham kitaab kinab.
I a book will buy
'I'll buy *a* book.'
b. kitaab ham kinab.
'I'll buy *the* book.

This fact conforms to the following typological principle related to definiteness vis-a'-vis word-order variation :

(26) "More indefinite...informaton follows more definite...information." (G:vo'n, 1984:207)

Apart from these local devices, Maithili also involves long-distance focussing/topicalization, whereby a constituent from an embedded clause is moved to its matrix clause. In such a case, if the moved constituent is an NP, it is marked with a clitic-*da*. Consider the following examples in this connection :

(27) a. [S_1 ahaa biswaaas karaet chi [S_2 je ke parikshaa paas ka jaet]]
you hope that who examination will pass
b. kakaraa$_1$-da [$_{S1}$ ahaa biswaas karaet chi [$_{S2}$ je *ti* parikshaa paas ka jaet]]
'Who do you believe will pass the examination?'

Note that the clitic-*da* is obligatory when the moved NP is human; otherwise, it is optional. Compare the following structure with that in (27) :

(28) a. [S_1 ahaa beswaas karaet chi [S_2 je raam ki kinat]]
b. kathi$_1$-da [ahaa biswaas karaet chi [$_{S2}$ je raam t_i kinat]]
c. kathi$_i$ [ahaa biswaas karaet chi [je raam t_i kinat]]
'What do you believe Ram will buy ?'

It is, however, to be noted that word-order variation in a Maithili clause does not always bear pragmatic (and phonological) effects. Such variation takes place within a single domain like S. Thus, consider the structure in (29) :

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

(29) a. [$_S$" [$_F$ ghar$_i$] [$_S$ hari t_i bechat]] (= 22)
b. [$_S$" [$_F$ ghar$_i$] [$_S$ bechat hari t_i]]
'It is the house (and not anything else) the Hari will sell.'

In the EST framework, the rule of scrambling (referred to above) seems to be an appropriate candidate for handling such local permutation of elements within S.

ENDNOTES

[1]This argument has, however, been challenged in some studies (e.g. Brody, 1984; Dryer, 1991).

[2] For a detailed discussion of this topic, see Yadava (1983).

[3] See section 1.2.3 for details.

[4] Also see Hasegawa (1980), who shows how a grammar of Japanese (an SVO language) with a VP is superior to the grammar without VP.

[5] It is, however, to be noted that adverbials, which are peripheral elements, have greater freedom of position in a sentence. Cf Quirk *et al*, 1985: 51.

REFERENCES

Brody, J. 1984 "Some Problems with the Concept of Basic Word Order. "*Linguistics.* 22: 711-36.

Chomsky, N. 1980, "On Binding." *Linguistic Inquiry* 11. 1-45.

Chomsky, N. 1981. *Lectures on Government and Binding*. Dordrecht : Foris.

Chomsky, N. 1982. *Some Concepts and Consequences of the Theory of Government and Binding*. Linguistic Inquiry Monograph 6. Cambridge : MIT.

Chomsky, N and H. Lasnik 1977. "Filters and Control." *Linguistic Inquiry* 8.425-504.

Dryer, M. 1991. "Frequency and Unmarked Word Order". Ms.

Givo'n, T. 1984. *Syntax; a Functional-Typological Introduction*. Vol. 1. Amsterdam/Philadelphia : John Benjamins Pubishing Co.

Greenberg, J. ed. 1966. *Language Universals*. Cambirdge : MIT Press.

Hale, K 1978. "On the Position of Walbiri in a Typology of the Base". Bloomington : IULC.

Hasegawa, N. 1980. "The VP Constituent in Japanese." *Linguistic Analysis*. 6.115-130.

Jha, S. 1958. *The Formation of the Maithili Language*. London : Luzac& Co.

Masica, Colin P. 1991. *The Indo-Aryan Languages*. London : Cambridge University Press.

McCawley, J. D. 1988. *The Syntactic Phenomena of English*. Chicago : University of Chicago Press.

Mohanan, K. P. 1981. "Grammatical Relations and Clause Structure in Malayalam". In Bresnan, J, ed. *The Mental Representation of Grammatical Relations*. Cambirdge, Mass. MIT.

Schwartz, A. 1972. "The VP- Constituent of SVO Language". In Kimball ed. *Syntax and Semantics vol.* 1. New York and London : Seminar Proceedings.

Yadava, Y.P. 1982. "Maithili Sentences : a Transformational Analysis". *Indian Linguistics* 43. 3-4.

Yadava, Y.P. 1983. "Movement Rules in Maithili and English : their Implications for the Theory of Govemment and Binding." CIEFL Ph. D. Dissertation.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Problems of Unscheduled National Languages

□ *Dr. Sureshwar Jha*

India is a multi-racial, multi-religious and multi-lingual nation having its chequerred history of more than five thausand years. Sanskrit had been the main language. There are now about two dozens of major languages here.

The British rulers took little interest in the development of Indian languages. They introduced, popularised and patronised English for the efficient administration of the Indian sub-continent. Inspite of their best efforts English could not reach the masses. They talked in their own dialects. English remained confined to the small fringe of the educated population.

During the freedom struggle our national leaders felt the inportance of Indian languages. After heated deliberations in the Constituent Assembly by the leaders of the different ethnic, socio-economic and regional language groups, 14-national languages were included in the VIIIth schedule under articles 344 (I) and 351 of the constitution. With the inclusion of Sindhi in 1966 and Konkani, Manipuri and Nepali in 1992, the total number of national languages included in the said schedule of the constitution became 18. By the subsequent amendments English is to be retained as official language so long as any of the states of Union desires so. The 18 scheduled languages have special privilege, status and benefits.

Maithili, Dogri and Rajasthani are only three major national languages, though recognised by Sahitya Akademi, are yet to be included in the VIII th schedule of the constitution. So these three national languages can be termed as unscheduled national langueages.

In 1954 the Congress Party advocated states reorganisation on the basis of language. Accordingly a commission was set up and states were reorganised.

But it was sad that the said commission ignored the rightful claim of the people of Mithila and it could not be made a poliical unit on the map of India, due to the conspiracy of the then politicians. Here lies the root of the problems having been faced by Maithili since then.

Problems faced by Maithili—The problems which Maithili language and literature have been facing are varied in nature and character. The educated elite of the Maithili speaking people feel ashamed of using their mother-tongue. This is due to their utter feeling of inferiority complex. There are less number of readers of the daily growing literature of Maithili. Because of the absence of readers, there is practically no publisher of the Maithili books. Writers publish their books at their own cost and suffer losses. Even college and university Maithili teachers do not want to buy Maithili books and periodicals.

Naturally there has been a vicious circle going around. Less number of readers lead to the dearth of publishers and that on its turn had to non-production of good literature in the language. The state Government has become anti-Maithili. They have wrong notion that it is spoken and written only by some particular castes in Mithilanchal. The Maithili Academy has become totally defunct due to the stepmotherly treatment of the Bihar Government. Maithili, as a subject has been excluded from the list of optional and selective subjects of BPSC examinations, which was introduced more than 20 years back. Maithili has also been removed from the syllabus of matriculation and Intermediate examinations. Books for primary students are awaiting publication by the Bihar Text Book Corporation. Thus, the Government is doing every thing to discourage, humiliate and obstruct the reading, writing and cultivaion of mother tongue by the Maithili speaking people. Every thing is done to ignore and by pass the position of Maithili language.

We all know that the problem of Maithili in this regard lies somewhere else. In the whole of Mithilanchal people of all castes, religion and groups speak Maithili as their mother longue. But due to political manoeuverings they are not allowed to get their mother tongue (Maithili) recorded where any type of enumeration of mother tongue is launched. In the like manner, they avert from taking part in large number in any agitation for the cause of the Maithili language and literature.

It is pity that except Karpoori Thakur and to some extent Kedar Pandey no other chief ministers of Bihar did anything for Maithili. During his regime of chief ministership even Dr. Jagannath Mishra did not con-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

sider the rightful claim of Maithili to make it official language of Bihar. The claim of Maithili has been denied by its own persons, whenever opportunity came to do something. Dr. S. K. Chatterji had rightly commented decades ago—

"Everyone here is sympathetic to the cause of Maithili. It is the university of Calcutta which recognised it first of all. I too have made a little contribution in the study of Maithili. Many years ago together with the Maithili scholar Babua Mishra, I edited the great Maithili master piece Varna Ratnakar of Jyotirishwar Thakur but it is a pity that the rank and file of the Maithili scholars are not sympathetic to Maithili. So now it is primarily a domestic problem of Maithilas.

Problems faced by Rajasthani—People residing in different parts of Rajasthan speak different types of Rajasthani language and its dialects. In Bharatpur people speak Braja and Hindi. There is a Braja academy at Bharatpur. In Kota Harosi, a dialect of Rajasthani is spoken. In Jodhpur people speak Dudhari dialect and so on. Rajasthani is spoken in Johpur and Jaisalmer and Mewari is the speech of the people of Udaipur. Rajasthani—Mewari are almost identical in nature and character so there is no uniformity in the spoken language all over Rajasthan. It seems, people of whole state do not have the emotional feeling for a single mother tongue.

Almost all the important poets, story and fiction writers of modern Rajasthani literature, also write in Hindi for their name, fame and money. There are many literary organisations and institutions in different cities of Rajasthan which are bilingual. I have visited one such organisation called *Jug Dhara* at Udaipur which is bilingual and functions for the promotion of both Hindi as well as Rajasthani.

These days poetry and short stories are most popular genres of Rajasthani and they are written and published in abundance. Though the renowned writers and poets get publishers but the problem of sale and distribution hamper the growth of literature in the desired way. The reason for the less number of readers of Rajashani literature is lack of uniformity and standardization and presence of large number of dialects in Rajasthan. But there is a silver lining that the State Government of Rajasthan is not anti-Rajasthani as is the case of Maithili with Bihar Government. The Rajasthani Bhasa Sahitya evam Sanskritik Akademi sponsored and etablished by the State Goverment, is functioning very well at Bikaner.

Not withstanding all these, the Government of India included Rajasthani in the list of Hindi states ignoring the hard fact that in the whole of Rajasthan there is no region where Hindi is the mother-tongue of the people and this is the main reason why Rajasthani has not been given place in the VIIIth schedule of the constitution.

Problems faced by Dogri—There is no doubt that after the recognition in 1969 by Sahitya Akademi and thereafter steps taken by the Govt to promote Dogri language and literature there has been a gradual change in the attitude of a party towards it but what worries the people is the awfully small number of writers and readers in Dogri. There is a very large number of educated Dogras but they are not interested in their mother tongue and there are many among them who do not consider Dogri fit enough for writing and good enough for reading.

The foremost problem of the Dogri language and literature is that there are many dialects spoken in the region. Duggar has about 35 dialects of which Dogri and Kangari are two major ones and the two have very close affinities and very large area of common characteristics.

In some quarters some controversy about nomenclature of the language has arisen. According to this the language spoken in the Dogra region of J & K State is called Dogri and the language spoken by Dogras in H. P. is called Pahari. But the first all India Dogri writers conference resolved that the growth of Dogri-Pahari language should not be inhibited by political, emotional and semantic controversies and where the people of the region call their mother tongue Dogir or Pahari or by any other name, should not come in the way of the growth and enrichement of their language.

Now, it can be said that the probems of these three unscheduled major national languages—Maithili, Rajasthani and Dogri are more or less the same.

In recent years a consensus among the litterateur of this country has grown that either mischievious 8th schedule should be scracpped at all or all the major Indian languages should be included in that. There should not be any condition like its recognition by the concerned State Govt as official language or recognition by the Sahitya Akademi.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिल अस्मिता : किछु विचारणीय बात

□ प्रो. श्री हेतुकर झा

स्वतंत्रता-प्राप्तिक तुरन्त बाद 1950 क दशक मिथिलाक इतिहासमे बहुत महत्वपूर्ण रहल अछि। एहि दशकक आरम्भेसँ मिथिलांचलमे मिथिला राज्य लेल सक्रियता शुरू भए गेल। 27 जुलाइ, 1952 ई. कैं पहिल बेर दरभंगा टाऊन हालक सभामे सर्वसम्मतिसँ प्रस्ताव स्वीकृत भेल जे भारतीय गणतंत्रक अधीन बिहार राज्यसँ अलग मिथिलाराज्य बनय एवं एहि राज्यमे शिक्षाक माध्यम मैथिली होअय। 26 जुलाइ 1953 ई. कैं उक्त प्रस्तावक कार्यान्वयन लेल ओहीठाम (दरभंगा टाऊनमे) सभा भेल। 22 नवम्बर, 1953 ई. कैं "मैथिल संघ", कलकत्ता बहुत पैघ प्रदर्शन कएलक आ गिरीश पार्कमे सभा भेल। एकर प्र चार प्रे सक माध्यमे बहुत भेल जाहिसँ बिहारक तत्कालीन सरकार चिन्तित भए गेल। फलतः मिथिला राज्य लेल सभा, प्रदर्शनक आयोजन लेल कलकत्ता जाइत कांग्रेस पार्टीक कछु वरिष्ठ सदस्य लोकनिक संग आओर किछु व्यक्तिसबकैं आसनसोल स्टेशन पर 22 जनवरी, 1954 ई. कैं गिरफ्तार कए लेल गेल।

एहि सब सक्रियताक संदर्भ छल जे केन्द्रीय सरकार भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठनक सिद्धान्तकैं मान्यता दैत एक कमीशन नियुक्त कएलक आओर सरकारक ई रुखि देखि मिथिलाक कतोको नेतालोकनि उत्साहित भए गेलाह मिथिला राज्यक औचित्य सिद्ध करक लेल। मुदा सफल नहि भए सकलाह। हमरा हिसाबे एहि असफलताक निम्नलिखित कारण छल।

पहिल आ मुख्य तँ ई जे एहि लेल जन-आन्दोलन नहि भए सकल। मिथिलाक गाम-गाममे रहनिहार लोकसबमे मिथिला-मैथिलीक प्रति जागरूकताक अभाव छल (आ अछि)। कलकत्ता, पटना, दिल्ली आ मुम्बइमे रहि विभिन्न पेशा कए जीवन-यापन कएनिहार मैथिललोकनि प्रयास अवश्य कए सकैत छथि, चेतनाक प्रसार कए सकैत छथि, मुदा सफलता एहि प्रसंग तखने भेटि सकैत अछि जखन कि मिथिलांचल जागत। दोसर कारण राष्ट्रीयताक भावनाक इतिहाससँ सम्बद्ध अछि। यूरोपमे पूजीवादक संगहि राष्ट्रीयताक सेहो विकास भेल आओर जर्मनीक राजनीतिक चिन्तकलोकनि भाषाकैं संस्कृतिक सबसँ सशक्त अंग मानि राष्ट्रीयताक सबसँ उपयुक्त आधार मानल। पश्चिमीय राजनीतिक दर्शनक एहि पक्षसँ भारतोक प्रमुख नेतागण अवश्य परिचित रहल होएताह आ तैं ओही दर्शनकैं ओलोकनि एहूठाम प्रतिपादित कएल। मुदा एहि उपनिवेशवादी नकलमे एकटा व्यवधान छल। भारतीय नेतालोकनि भारतक एकताक प्र तिपादन लेल ततेक दृढ़ संकल्पित छलाह जे हुनका लोकनिकैं भारतक विविधताक चर्चासँ आशंका भए जाइत छलनि। भारतक एकताक खंडन ने भए जाए तैं विविधताकैं यथाशक्ति नुकएबा-दबएबाक दिस बेशी प्र यास करैत छलाह। विविधता हमर पूजी थीक, गौरव थीक–से मनोदशा भारतक राजनीतिक elite कैं 1980क दशकसँ प्रारम्भ भेल तैं, 1950क दशक मे मिथिला राज्यक निर्माण लेल हलचल-प्रदर्शनकैं भारतीय एकताक विरुद्ध वा बिहारी एकताक विरुद्ध मानि बिहार सरकारक तत्कलीन भाग्यविधातालोकनि दबाए देल।

ई भूमिका हम एहि द्वारैं उपस्थित कएल जे उक्त दशक मे जे किछु भेल तकर असर एतेक भेल जे मिथिला की थीक ओ मैथिल के थिकाह तकर जे विचार पूर्वमे छल से बदलि गेल। पहिने भौगोलिक आधार मुख्य रूपसँ मान्य छल "मिथिला" एवं "मैथिल"क परिचय लेल। 1960 ई. क बाद ई स्थान मैथिली भाषा ग्रहण कएलक। भाषाकैं सर्वोपरि आधार मिथिला एवं मैथिलक अस्मिता लेल मानबाक क्रम क्रमशः बढ़िते गेल। एकर एक कारण इहो प्रायः भए सकैत अछि जे मिथिला एवं मैथिलीकैं राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक ऐतिहासिक, सामाजिक एवं भाषा-वैज्ञानिक अध्ययनक क्षेत्रमे आनयबाला ग्रियर्सन भेलाह–मुख्य रूपसँ। ग्रियर्सन मिथिलाक सीमा निर्धारण लेल भाषा/बोलीकैं आधार मानल। मिथिला-मैथिली पर कोनो तरहक साहित्यिक, ऐतिहासिक वा समाजवैज्ञानिक दृष्टिसँ काज केनिहार व्यक्ति लेल ग्रियर्सन प्रेरणाक पात्र भए गेलाह-आ तैं ग्रियर्सनक दृष्टि (मिथिला मैथिल अस्मिताक प्रसंग)सँ सब प्रभावित भेल होयताह।

भाषाकैं मिथिला-मैथिलक अस्मिताक आधार मानलासँ एक दिशि उदारता भेल तँ दोसर दिशि किछु संकुचित भावनाक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उदय सेहो भेल। उदारता एहि संदर्भमे भेल जे मैथिल महासभाक आयोजनसबसँ एक भ्रम समाजमे पसरि गेल छल। (एखनो ई भ्रम अछिये)। ई भ्रम छल मैथिल अस्मिताक जातीय आधार। अर्थात् मात्र मैथिल ब्राह्मण ओ मैथिल कायस्थ लोकनि "मैथिल" मानल जाइत छलाह। मिथिलामे युग-युगसँ रहैत अन्य जातिसमूह मैथिल-अस्मितासँ वंचित छलाह। मैथिल महासभाक कागज-पत्र हमरा उपलब्ध नहि भए सकल तेँ ई कहनाइ कठिन जे एहन भ्रामक विचार एहि महासभामे कहिया ना कोना आएल? कारण जे, यदि जातियेकेँ मैथिल-अस्मिताक आधार मानी तँ मैथिल कायस्थक अतिरिक्त अन्यो जाति-समूहमे हरबर्ट रिजले उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्धमे मैथिल शाखाकेँ विद्यमान देखलैन्हि। यथा दुसाधक एक उपजाति मैथिल दुसाध, मुसहरमे तिरहुतिया मुसहर, अमातमे तिरहुतिया अमात, इत्यादि। तेँ अन्य मैथिल जातिसबकेँ हटाए मात्र मैथिल ब्राह्मण ओ मैथिल कर्णकायस्थलोकनिकेँ मैथिलक संज्ञा देब कतेक उचित छल से कहब कठिन। मुदा जखन भाषाकेँ मैथिल अस्मिता लेल जोर देबए जाए लागल तँ जातीय आधारक संकुचित भावनासँ एकर उद्धार भेल, एकर परिधि बहुत व्यापक भेल तथा कोनो भ्रामक आग्रहसँ मुक्त भए गेल।

संगहि एहिसँ किछु हानिक संभावना सेहो भए गेल। एडवर्ड सईद एहि बीच एक महत्वपूर्ण पोथी ओरिएन्टलिज्म लिखल। एहि पोथीमे ओ अपन विचार शास्त्रीय दृष्टिसँ बहुत सशक्त ढंगसँ प्रस्तुत कएल अछि जे युरोपीय देशसब जकर साम्राज्य संसारमे उपनिवेश कालमे पसरल छल, से हमरालोकनि पर मात्र राज्ये टा नहि कएलक अपितु हमरालोकनिक सोचबाक-बुझबाक धारणोकेँ प्रभावित कएलक। एतेतक जे हमरालोकनि हुनके लोकनि द्वारा स्थापित वैचारिक-विधानकेँ धएने छी; अपन इतिहास, परंपरा एवं संस्कृतिक आधार पर अपन धारणा नहि तैयार कए पबैत छी। संस्कृति ककरा कहैत छैक? देश की थिक? राष्ट्रक की परिभाषा भेल? इत्यादि सब लेल हुनकेलोकनि पर निर्भर रहैत छी; हुनकेलोकनिक परिभाषा एवं अवधारणाकेँ मान्यता दैत छी। एडवर्ड सईदसँ पहिनहुँ विद्वान लोकनि एहि दिस सचेत करबाक प्रयास करैत छलाह। मुदा सईद बहुत सांगोपरांग रूपेँ हमरा लोकनिक दशाक विवरण कएल। उक्त संगहि आग्रह कएल जे हमरालोकनि एहन सांस्कृतिक उपनिवेशवादसँ मुक्त होइ।

भाषाकेँ राष्ट्रीयताक मुख्य आधार होएबाक श्रेय यूरोपेमे भेटल। जर्मनीक इतिहास एहि संदर्भमे स्पष्ट अछि। अंग्रेजी तथा फ्रेंचक विकासक संगहि इंगलैंड आ फ्रांसक राष्ट्रियताक वृद्धि भेल। लोकभाषाक महत्व लोकक राष्ट्रीयता लेल मानब यूरोपीय राजनीतिक दर्शनक देन थीक। स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पूर्व भारत मे भाषा लेल बहुत विवाद ठाढ़ भेल रहए। उक्त यूरोपीय दर्शन सँ प्रभावित भए नेतालोकनि भारतीय राष्ट्र लेल एक राष्ट्रीय भाषाक होएब आवश्यक बुझल। एहिसँ भाषाक राजनीति शुरू भए गेल। एहि राजनीतिक प्रभाव मैथिलीयो पर पड़ल। मैथिलीक पक्षमे सेहो किछु गोटे ठाढ़ भेलाह मैथिलीक लड़ाइ लड़बा लेल। मैथिलीक उन्नतिक एक रास्ता हिनकालोकनिकेँ स्पष्ट बुझा पड़ल जे मिथिलाकेँ राजनीतिक ऑटोनोमी भाषाक आधार पर भेटए। मैथिलीक संकटक समाधान लेल ई रास्ता बहुत उत्तम छल वा अछि मुदा एहिसँ मैथिल संस्कृतिक अन्य अंग (भाषाक अतिरिक्त) दिशसँ हमरालोकनिक ध्यान हटि गेल। मैथिल-अस्मिता सँकुचि कए मात्र भाषा धरि रहि गेल। मैथिल संस्कृतिक आओर पक्षसभक महत्व मैथिल अस्मिताक संदर्भमे गौण भए गेल। ई धारा मिथिला एवं मैथिली लेल बहुत लाभदायक नहि अछि। भाषा पर जोर अवश्य देबाक चाही। भाषा संस्कृतिक एक महत्वपूर्ण अंग होइत अछि। मुदा संस्कृतिक अन्यो पक्षसबकेँ मैथिल-अस्मिताक संदर्भमे महत्व देब उचित होएत।

मैथिल संस्कृतिक किछु अन्य पक्षसभक विषयमे चर्चा करब एतए संगत होएत। एहि ठाम संस्कृत विद्याक अक्षुण्ण परंपरा रहल। भारतीय सभ्यताक परंपराकेँ सुदृढ़ करैत एहि ठामक मनीषीलोकनि स्वतंत्र रूपसँ "मिथिलाक धर्मशास्त्र", "मिथिलाक न्याय", "मिथिलाक ज्योतिष", "मिथिलाक संगीत" आदिक परंपरा निर्मित कएल। संस्कृते टा नहि, पर्सियन एवं अरबी शिक्षाक केन्द्र सेहो मिथिलामे छल: जे बात *आईन-ए-तिरहुतक* अवलोकनसँ स्पष्ट होइत अछि। एहिसँ ई निश्चित होइत अछि जे एहिठामक संस्कृतिमे विद्या-व्यवसायक बहुत महत्व रहल। भारतक इतिहासमे मिथिलाक नाम कोनो तरुआरिक बलेँ वा कोनो उद्योग-धन्धाक बलेँ नहि लेल गेल। मात्र विद्येक बलेँ मिथिला अपन स्थान भारतीय सभ्यताक इतिहासमे सुरक्षित कए सकल। ओइनिवार एवं खण्डवला राज्यक उदय विद्येक प्रसादात्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेल । धनोपार्जनक मुख्य आधार विद्या रहल– म. म. सचल मिश्र, मोहन मिश्र गोकुलनाथ प्रभृति कतेको विद्वान् विद्येक बलसँ धनक प्रचुर उपार्जन कएल ।

संस्कृतिक दोसर पक्ष जे हमर दृष्टिसँ एतए पूजित रहल से थीक "व्यक्तित्व" । विद्याक संग व्यक्तित्वो एतय ओतबे महत्वपूर्ण रहल अछि । व्यक्तित्वक आदर एहिठाम प्रचुर भेल । अयाची मिश्र (भवनाथ मिश्र) बहुत पैघ विद्वान् छलाह । मुदा विद्या-व्यवसायक दृष्टिसँ पक्षधर हुनकासँ बहुत आगू छलाह । अभिनव वाचस्पतिक बहुतो पोथी उपलब्ध अछि, गोकुलनाथक कृतिक तँ कथे कोन। मुदा अयाचीसँ मिथिलाक जनमानस एतेक परिचित/प्रभावित अछि जे ओ एखनहुँ पूज्य मानल जाइत छथि, उदाहरणस्वरूप उपस्थित कएल जाइत छथि प्रतिदिन, प्रत्येक गाममे । अयाचीक नाम जतेक लोक जनैत होएताह ततेक पक्षधर वा गोकुलनाथक नहि । अयाची लिजेण्ड बनि गेलाह, किऐक ? एहि हेतु जे ओ व्यक्तित्वक माध्यमे एक विलक्षण आदर्श उपस्थित कएल ।

व्यक्तित्वक मीमांसा हमरा जनैत जेहन मिथिलामे भेल से उद्भुत अछि । विद्यापतिक *पुरुषपरीक्षा* व्यक्तित्वेक विभिन्न आयामक विश्लेषण करैत अछि । पारावार राजाक प्रश्न पर सुबुद्धि नामक ऋषि हुनक कन्या लेल कहल जे 'पुरुष' वर करू। ओ ई नहि कहल जे अमुक वर्णक वर हो, वा अमुक तरहक राजाक बेटा हो, वा अमुक तरहक योद्धा हो वा अमुक तरहक धानिक हो । व्यक्तित्वक एहिठाम स्वतंत्र आदर्श रहल । जनक 'विदेह' छलाह तैँ स्मरणीय रहलाह, कोनो बड़ धनिक राजा छलाह वा बहुत पैघ योद्धा छलाह तकर चर्चा नहि अछि । महाभारतमे मिथिलाक महिमा कोनो योद्धा महारथी लेल नहि अछि। मिथिलाक महिमा एहि लेल अछि जे एहिठामक व्याधसँ जीवन-दर्शनक निर्देश लेल तपस्वी ब्राह्मणलोकनि अबैत छलाह । व्याधक कथा हुनक व्यक्तित्वक अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करैत अछि । व्याध रहितहुँ अपन व्यक्तित्वक बलेँ ओ एतेक यशस्वी भेलाह ।

मिथिलाक संस्कृतिक ई दुइटा मूल्य विद्या एवं व्यक्तित्व सदासँ जीवित रहल अछि आ मैथिलत्वक परिचायक अछि। हमरा जनैत, जेना हमरालोकनि भाषा पर मैथिल अस्मिता लेल जोर दैत छी तहिना प्रयास करी जे विद्या ओ व्यक्तित्व सेहो एही अस्मिताक मुख्य आयाम बनए । कमसँ कम एहि दूनूकेँ हमरा लोकनि बिसरि नहि दी,जकर खतरा बढ़ल जाए रहल अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

क्षेत्रीयता, भाषा आ राजनीति

□ प्रो. श्री शंकर कुमार झा

विकासोन्मुख राज्यसभक सन्दर्भमे भेल अध्ययनसँ ई पता चलैत अछि जे क्षेत्रवादक प्रवृत्ति किछु अवस्थामे अहितकर, राष्ट्रीय एकताक अवरोधक आ विध्वंसकारी होइत छैक तँ किछु अवस्थामे ओ स्वस्थ, लाभकारी सेहो सिद्ध होइत छैक। यदि क्षेत्रवाद राष्ट्रीय सार्वभौमिकता ओ प्रादेशिक अखंडतापर आघात नहि कए मात्र क्षेत्रविशेषक उत्थानक हेतु जन-आन्दोलन हो, जेना सम्प्रति उत्तराखंडमे चलि रहल अछि आ किछु वर्ष पूर्व बंगालमे गोरखालैंडक आन्दोलन चलल छल, तँ ओहि प्रकारक क्षेत्रवाद व्यापक राष्ट्रीय हितक मार्ग प्रशस्त करैत अछि। भारतमे दूनू प्रकारक क्षेत्रवादक उदाहरण भेटत। पंजाब प्रान्तक स्थान पर भारतीय गणराज्यसँ बिलग भए स्वतंत्र सार्वभौम खालिस्तान बनएबाक क्षेत्रवाद खतराक घंटी-रूप अछि, मुदा जाहि प्रकारक क्षेत्रीय आन्दोलनक प्रतिफल आन्ध्र ओ हरियाणा सन प्रगतिपथ पर अग्रसर राज्यसभक उदय भेल, ताहि प्रकारक क्षेत्रवाद सर्वथा स्वीकार्य ओ स्वागतयोग्य अछि।

एहि सैद्धान्तिक व्यावहारिक पृष्ठभूमिमे मिथिलांचलक क्षेत्रवादकेँ देखला उत्तर मिथिला-क्षेत्रवादक तीनटा आयाम प्रमुख रूपेँ परिलक्षित होएत। एकटा ई जे मिथिलामे क्षेत्रवादक स्वरूप प्रत्येक कालखंडमे एक रंग नहि रहल अछि, आ एकर स्वरूप आ शैली भिन्न-भिन्न समयमे भिन्न-भिन्न रहल अछि। दोसर मुख्य आयाम ई रहल अछि जे एतए क्षेत्रवाद अद्यावधि जन-आन्दोलनक रूप नहि लए सकल अछि, जेना झारखंड आन्दोलन किंवा उत्तराखंड आन्दोलनमे देखल जाइछ आ एकर माँग मीडियाक माध्यमे एहन मिश्रित वर्ग द्वारा कएल गेल अछि, जे नैतिक समर्थन मात्र दए क्षेत्रवादमे अगुआ बनल रहबाक इच्छुक रहैत अछि। तेसर आ सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम ई रहल अछि जे एम्हर 1995 ई. आबि क्षेत्रवादक मुद्दा भाषाकेँ समुचित स्थान भेटौक ताहि संग क्षेत्रक सर्वांगीण विकासक मुद्दा सेहो राजनीतिक संस्था आ राजनीतिक सामाजिक संस्थासभ द्वारा बनाओल जा रहल अछि, जाहिमे हिंसाक किछु गन्ध सेहो भेटि रहल अछि। एहिसँ पूर्व एकमात्र सर्वमान्य बिन्दु छल मैथिली भाषाकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिएबाक, जाहि हेतु देशक मिथिलेतर भागसँ आ मिथिलांचलक दर्जनहु सांस्कृतिक-साहित्यिक संस्था द्वारा सरकारक अनुनय-विनय कएल जाइत छल, किछु दबाब सेहो देल जाइत छल। अमरीकावासी बहुतो मैथिली भाषी सेहो एहि दिशामे दबाब-समूह जेकाँ सरकार द्वारा मैथिलीक मान्यता दिएबाक हेतु प्रयत्नशील छथि। मिथिलामे क्षेत्रवादक रूप प्रत्येक कालखंडमे एक रंग नहि रहल अछि। स्वतंत्रता-प्राप्तिक लगले बाद डा. लक्ष्मण झा ओ हुनक सहयोगी स्व. डा. लक्ष्मीनारायण सिंह भारतीय गणराज्यसँ अलग भए मिथिलाक एक एहन सार्वभौम राज्यक माँग उपस्थित कएलनि जाहिमे नेपाल राज्यक तराइ क्षेत्रकेँ मिथिला राज्यमे सम्मिलित करबाक योजना छल। नेपालक वर्तमान क्षेत्रक किछु भागकेँ मिथिला राज्यमे मिलएबाक हेतु ओ विद्वान्द्वय "पाया उखाड़" आन्दोलन चलएबाक कार्यक्रम बनौने छलाह। परंच ई क्षेत्रवाद मात्र बौद्धिक स्तर पर अपन आंशिक प्रभाव छोड़ि सकल। डा. लक्ष्मण झाक पोथी *Mithila a Sovereign Republic* क स्वागत नहि भेल। किछुए दिन पूर्व मधुबनीमे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली मंचसँ पुनः मिथिला राज्यक माँग दोहराओल गेल अछि। डा. लक्ष्मण झाक योजना जकाँ पुनः नेपालक मिथिलाभाषी क्षेत्र जोड़ि सम्प्रभु मिथिला राज्यक माँग कएनिहारलोकनिमे प्रमुख छथि प्रो. जयकांत मिश्र आओर श्री धनाकर ठाकुर।

ओहिसँ भिन्न एक देसी व्यावहारिक मिथिला-क्षेत्रकेँ बिहार राज्यसँ पृथक् कराए एकटा स्वतंत्र प्रान्त भारतीय गणतंत्रक भागक रूपमे बनएबाक आन्दोलन चलल। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ओ प्रमुख कांग्रेसी बाबू जानकीनन्दन सिंहक नेतृत्वमे चलाओल एहि आंदोलनमे श्री राधानन्दन झा सन तत्कालीन युवा नेतालोकनिक सहयोग छल। ई स्वतंत्र मिथिला प्रान्त आर्थिक रूपसँ अपन क्षेत्रक साधन-बलेँ अपन पाएर पर ठाढ़ रहबामे सक्षम अछि, तकर व्यापक आँकड़ायुक्त तर्क कैक लेखसभमे मैथिलीक विद्वान् लोकनि द्वारा देल गेल। मैथिलीक कैकगोट प्रसिद्ध विद्वान यथा, डा. नवीनचन्द्र मिश्र, स्व. उमेश मिश्र (सहरसा), सफल प्रशासक नरेन्द्रनाथ झा, इत्यादि जानकी बाबूकेँ पटना जक्शन पर भव्य समर्थन-स्वागत देने छथि। ई आन्दोलन सेहो व्यापक जन-आन्दोलन नहि बनि सकल, कारण स्वाधीनता प्राप्तिक लगले बाद आ दू दशक धरि स्वतंत्रता-आंदोलनमे उपजल राष्ट्रीय एकता ओ प्रादेशिक अखंडताक भाव काफी प्रबल छल। केन्द्र ओ बिहारक शासन कांग्रेसक हाथमे छलैक आ अधिकांश मैथिली अभिजन ओहि शासनसँ असंतुष्ट नहि छलाह। एम्हर एक वर्षसँ विद्यापति सेवा संस्थान ओ दरभंगा शहरक शिव सेना फेर बिहार राज्यसँ पृथक् मिथिला राज्यक माँग उपस्थित कएने अछि। तथापि हमरा जनैत अद्यावधि एहि माँगकेँ अपेक्षित व्यापक जन-समर्थन नहि प्राप्त भए सकल छैक।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाक क्षेत्रवादमे मैथिली भाषाक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटौक–एहि बिंदु पर मिथिला क्षेत्रक नव-पुरान साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था ओ मिथिलासँ बाहर प्रवासी मैथिल लोकनि द्वारा चलाओल गेल करीब एक सए छोट-पैघ संस्थासभक प्रखर स्वर विगत दू दशकसँ सुनल जा रहल अछि । सुदूर अमरीकामे रहनिहार मैथिलीभाषाभाषी एहि दिशामे पत्र-पत्रिका द्वारा आ सरकारकेँ ज्ञापन पठाए आन्दोलनकेँ ज्वलंत बनौने छथि । ई माँग मैथिलीक प्रत्येक संस्था द्वारा साल भरि उठाओल जा रहल अछि, विशेष कए विद्यापतिपर्वक आयोजनमे । किछु प्रमुख राजनीतिज्ञलोकनि सेहो सार्वजनिक रूपेँ एकर समर्थन कएने छथि । साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यता भेटि गेलासँ एहि माँगमे बल आएल छैक । आशा अछि, केन्द्र सरकार जल्दी एहि माँग पर ध्यान देत ।

मिथिलाक क्षेत्रवादक अध्ययन-क्रमेँ एम्हर दू टा बिंदुपर विभिन्न राजनीतिक दः ओ मिथिला-मैथिलीप्रेमी मीडियाक माध्यमसँ जन-आन्दोलनक पृष्ठभूमि तैयार कए रहल छथि। एकटा मुद्दा अछि केन्द्रीय/प्रान्तीय सरकार द्वारा एहि क्षेत्रक औद्योगिक विकासक अनवरत उपेक्षा ओ तकर अविलम्ब परिमार्जनक माँग । भारतीय जनता पार्टी श्री ताराकान्त झाक नेतृत्वमे एहि वर्ष मिथिला-क्षेत्रक पदयात्रा द्वारा जन-समर्थन प्राप्त करबाक हेतु विशेष सक्रिय देखल गेल अछि,ओना आनो दल एहि सम्बन्धमे पूर्वापेक्षा आब बेसी समर्थन एहि विंदु पर दए रहल अछि। दोसर प्रमुख माँग समस्तीपुरसँ दरभंगा धरि रेलवेक बड़ी लाइन आ कोसीक्षेत्रमे पूर्णिया-अररिया-फारबिसगंजमे बड़ी लाइनक सुविधा प्राप्त करबाक अछि । विगत किछु मास पूर्व समस्तीपुर-दरभंगा बड़ी लाइन अविलम्ब बनएबाक मुद्दापर जाहि तरहेँ साम्यवादी दल, भारतीय जनता पार्टी, ओ जनता दल सभ मिलि कए आन्दोलन कएने छल ओ अभूतपूर्व छल आ मैथिल क्षेत्रवादक हितमे अति स्वस्थ प्रवृत्ति कहल जाएत ।

मिथिलामे क्षेत्रीयताक किछु प्रमुख अवरोधक तत्त्व अछि। जतए बगलक प्रान्त बंगालमे जातीयताक भाव गौण भए गेल अछि आ क्षेत्रीयता प्रमुख, ओतए मिथिलामे जातिवादक विष जन्म घूँटी जकाँ तेना पिया देल जाइत छैक जे क्षेत्रीयताक संघर्ष जातीय दलदलमे फँसि कए रहि जाइत अछि । मैथिली मिथिलांचलमे बसनिहार प्रत्येक जाति ओ सम्प्रदायक भाषा थिक, ई तथ्य राजनीतिक लाभ द्वारे ने सभ मैथिलकेँ बुझबाक योग्य होइत छनि आ ने ग्राह्य । बिहारक वर्त्तमान सरकारक रुखि मैथिली विरोधी अछि। जेना लोक सेवा आयोगसँ मैथिलीक विषय हटा देल गेल,इंटर कौंसिलमे मैथिलीकेँ पाठ्यक्रमसँ हटाए देल गेल इत्यादि । जनगणनामे कार्यरत सरकारी कर्मचारीगण 'उपरका आदेश'क तहत मैथिलीभाषीक मातृभाषा मैथिली नहि दर्ज कए हिन्दी दर्ज करैत छथि । पहिलुक सरकारसभक रुखि सेहो मैथिली-विरोधी रहल । ओकर प्रमाण जे पंडित विनोदानन्द झा, डा. जगन्नाथ मिश्र, कर्पूरी ठाकुर, विन्देश्वरी मंडल, भागवत झा आजादक मंत्रित्वकालमे मैथिली उपेक्षित रहल । तेँ स्वतन्त्रतासँ पूर्व ओ पछाति साहित्यिक ओ प्रशासक गणक ओ कर्म जे मैथिलीक समृद्ध साहित्य, स्वतंत्र लिपि ओ भाषीक बहुल संख्याकेँ पूर्वाग्रहसँ गौण प्रकार्शित करबाक हेतु लागल छल ओ बरोबरि ई षड़यन्त्र करैत रहल जे जनगणनामे मैथिली-भाषीक संख्या वास्तवसँ कम देखाओल जाए । दुर्भाग्यवश कोनो मैथिली संस्था स्वयं प्रयास कए वास्तविक मैथिली भाषाभाषीक सही आँकड़ा सरकारी आँकड़ाक खंडनमे नहि निकालि सकल आ तेँ सरकारी आँकड़ा प्रामाणिक भए जाइत अछि । अशिक्षा, अज्ञानता आ गाम-गाम मैथिलीक सक्रिय समर्थकक अभावमे बहुतो लोक मातृभाषा ककरा कहैत छैक, से बुझितो नहि अछि, आ तेँ गणनाकार जे लिखि देलकैक, तकर प्रतिवाद नहि करैत अछि ।

एम्हर दुर्भाग्यवश शहरीकरण-उद्योगीकरणक बढ़ैत प्रवृत्ति द्वारे मैथिल अभिजन अपन घर-परिवारमे मैथिली बाजब छोड़ि हिन्दीक प्रयोग बेसी करैत अछि । *'महाजनो येन गतः स पन्थाः'* क आधार पर एलिट वर्गक देखा-देखी आनो निम्न श्रेणीक लोक मैथिली बाजब हीनता बुझैछ आ तेँ मैथिलीक क्रमशः ह्रास भए रहल अछि । हम एहि विषय पर 'पूर्वांचल' पत्रिकामे एक लेख पहिनहुँ लिखने छलहुँ ।[1]

एकरा संग आ अंशतः मैथिलीक प्रति उदासीनताक कारणेँ मैथिलीमे पत्र-पत्रिका स्थायीरूपेँ प्रकाशित नहि भए सकल । मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहास 1905 सँ प्रारम्भ होइत अछि, मुदा अद्यावधि कोनो मैथिली समाचारपत्र साप्ताहिक-पाक्षिक-मासिक अनवरत रूपेँ प्रकाशित नहि भए सकल । *वैदेही* टुकदम टुकदम काफी हदतक स्थायी रहल अछि, मुदा तटस्थ, वस्तुपरक पत्रकारिताक अभाव द्वारे ई सर्वमान्य नहि भए सकल अछि । पाठकक अभाव, प्रोत्साहनक अभाव आ बिक्रीक समस्या द्वारे पत्रपत्रिका दीर्घायु नहि भए पबैछ ।

मिथिला क्षेत्रक किछु भागमे यथा पूर्णिया-कटिहार जिलामे अंगिका आ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी जिलामे बज्जिकाक टाटक किछु मैथिलीविरोधी तत्व द्वारा स्वार्थक हेतु तैयार कराओल गेल अछि। दरभंगा आकाशवाणीमे एम्हर क्रमशः मैथिलीक उपेक्षाक विरोधमे जन-आक्रोश व्यापक होमय लागल छल तँ एहि प्रकारक मैथिलीविरोधी भाषागत समाचारक आरिमे आकाशवाणी मैथिलीक स्थान क्रमशः गौण करैत रहल ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली आन्दोलन वास्तवमे जन-आन्दोलनक स्वरूप नहि लए सकल अछि, कारण मैथिली भाषाक प्रति मिथिलाक राजनीतिक वर्ग बरोबरि उपेक्षाभाव रखने रहल !

मिथिलाक समस्या ओ समाधान मात्रकेँ चुनाव बिन्दु राखि अद्यावधि कोनो राजनीतिक दल विधानसभा वा लोकसभाक चुनाव नहि लड़ल अछि। मिथिला-राज्यक आन्दोलनक बिन्दुपर सेहो संगठित राष्ट्रीय राजनीतिक दलक ओहेन प्रकट समर्थन नहि देखबामे अबैछ जेहन उत्तराखण्डक प्रति भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रकट कएल गेल अछि। श्री भोगेन्द्र झा, पं. श्रीहरिनाथ मिश्र आ एक-दू गोट आओर राजनीतिज्ञकेँ अपवाद छोड़ि अधिकांश मैथिलीभाषी राजनीतिज्ञ मिथिलांचलोमे राजनीतिक सभामे मैथिलीमे भाषाण नहि करैत छथि । राजनीतिज्ञलोकनिक राजनीतिक प्रक्रियामे मैथिलीक उपेक्षा कतेक कएल जाइत अछि ओ अध्ययन हमर *'Politics on the walls of Darbhanga'* शीर्षक लेखसँ प्रकट होएत[2]। 1977 क लोकसभाक चुनावमे दरभंगा शहरक देबाल प्रचार-लेखनमे कतहु कोनो ठाम मैथिलीमे चुनाव-प्रचार नहि कएल गेल छल जखन कि दुनू मुख्य प्रत्याशी-कांग्रेसक श्री राधानन्दन झा ओ जनसंघक प्रो. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' सन मिथिला मैथिल मैथिलीक उद्घोष कएनिहार छलाह। संभवतः मैथिलीभाषी राजनीतिज्ञलोकनिक इएह उपेक्षाभाव एकर कारण थिक जे चतुरानन मिश्र सन कर्मठ सांसद ओहि समितिक सदस्य रहितहुँ मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे सम्मिलित होएबाक अनुशंसा समिति द्वारा नहि कएल गेल। एहि राजनीतिक प्रसंगेँ बहुतो ठाम मिथिलांचलमे ई आलोचना सुनल जाइत रहल अछि जे अपन मुख्यमंत्रित्वकालमे डा. जगन्नाथ मिश्र उर्दू केँ बिहारक राजभाषा बनौलनि आ आब प्रायश्चित्तस्वरूप केन्द्रीय मंत्री रूपेँ मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान देअयबाक हेतु अपन वक्तव्य प्रचारित-प्रसारित करा रहल छथि । मैथिली संस्था ओ मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसारमे घृणित स्वार्थजनित राजनीति कतेक प्रवेश कए गेल अछि एकर चर्चा डा. रमानन्द झा रमण[3] अपन पोथीमे कए चुकल छथि तेँ ओहि पर विशेष प्रकाश नहि देल जा रहल अछि।

मिथिला-मैथिलीक आन्दोलन ऐतिहासिक रूपेँ अंशतः एहू कारणेँ प्रबल -प्रखर नहि भए सकल जे दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह देवनागरी लिपि आ हिन्दी भाषाकेँ मैथिलीक अपेक्षा अधिक महत्व देलथिन्ह। दरभंगा राजप्रेसमे मिथिलाक्षरक उपेक्षा कएल गेल ओ दरभंगा महाराजक जमिन्दारीक राजकाज मैथिलीमे नहि, आन भाषामे कएल गेल। मैथिलीक इतिहासकार लोकनिक विचार छन्हि जे ओहि कालखंडमे जखन दरभंगा राजक वर्चस्व छल, मिथिलेश जँ मैथिलीक हितकेँ ध्यानमे राखि ब्रिटिश सरकार पर दबाब देने रहितथि तँ मैथिली बहुत आगू बढ़ि गेल रहैत। ई सत्य जे कविवर चन्दा झा ओ राजपण्डित बलदेव मिश्र सन-सन किछु मैथिलीसेवीकेँ दरभंगा राज आश्रय देने छलनि। परंच जाहि प्रकारक आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक समर्थन भेटबाक चाहियैक तकर अभाव रहल। इण्डियन नेशन, आर्यावर्त्त पुनः चालू भेल अछि, परन्तु मिथिला-मिहिर नहि।

नेतृत्वक प्रसंगमे क्षेत्रीय आन्दोलनसभमे ई देखल गेल अछि जे कि तँ एकटा दबंग क्षेत्रीय नेता हो, यथा गोरखालैण्ड क्षेत्रीय आन्दोलनक सुभाष घिसिंग अथवा फेर किछु सामूहिक नेतृत्व हो, जेना झारखण्ड आन्दोलनमे सामूहिक नेतृत्व रहल। मिथिलांचलमे ने घीसिंग सन मैथिली आन्दोलनक निमित्त एकमात्र मुहगर नेता प्रकट भए सकल आ ने एतय मिथिलांचलक आन्दोलनक दिशा-निर्देशनक हेतु सर्वदलीय सामूहिक नेतृत्व रहल। आन्दोलनक आवाज कखनो राँचीसँ उठैछ तँ कखनो राँटीसँ, कखनो मुम्बैसँ तँ कखनो बोकारोसँ, कखनो दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानसँ तँ कखनहुँ सहरसाक आन कोनो संस्थासँ। समन्वयक सर्वथा अभाव, नेतृत्व-शून्यता, स्पष्ट जनसहयोगक अभाव–एहन परिवेशमे आन्दोलन विफल नहि होएत तँ की सफल होएत ? एहि क्रममे प्रबुद्ध मैथिल वर्गद्वारा बरोबरि खेद प्रकट कएल जा रहल अछि जे विद्यापतिपर्वक आयोजनमे नाच-गान, फूसि-फटक धूम-धड़ाकामे जे राशि खर्च होइत अछि ओकर दशांश मैथिलीक आन्दोलनक कर्मठ सदस्यक खर्चा हेतु भेटैत तँ आन्दोलनक रूप विशेष निखरल रहैत। अस्तु, संक्षेपमे मैथिली आन्दोलनक अपेक्षित सुफलताक अभावक इएह किछु प्रमुख कारण अछि। गप्पक प्रसंग चन्द्रधारी मिथिला कालेजक सहयोगी रूपमे स्वनामधन्य सुमनजी एक बेर एहि प्रसंगमे कहने छलाह जे "कतेक कहब, मिथिलामे अभावे-अभाव अछि, खाली भावक अभाव नहि अछि।" आइयो स्थिति आंशिके रूपेँ सुधरल अछि। मोटा-मोटी स्थिति पूर्ववते अछि। आशा नहि छोड़ल अछि। महाकवि शेलीक कहब छन्हि जे प्रत्येक मेघमे रजतरश्मि समाविष्ट रहैत छैक। महाकवि विद्यापति कहने छथि–*समय पाबि तरुवर फल रे, कतबओ सिंचु नीर'*।

संदर्भ

1. *पूर्वाञ्चल सं.* डा. विश्वेश्वर मिश्र, पूर्णिया कालेज।
2. *Journal of Social Research*, ed. L. P. Vidyarthi, Ranchi, 1978.
3. *मैथिली साहित्य ओ राजनीति* –डा. रमानन्द झा 'रमण'।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाक राजनीतिक शोषण

□ श्री जटाशंकर दास

मिथिला अनादिकालसँ अपन धवल कीर्ति एवं विभन्न क्षेत्रमे विशिष्ट उपलब्धिक हेतु विश्ववन्दनीया रहलि अछि । हिनक यशोगाथाक मधुर वर्णन करैत महान साहित्यकार ओकनि कहियो थकलाह नहि । सभकेँ एकसँ एक नीक प्रसंग भेटलन्हि ताहि पर ओ कलम तोड़ि रचना कएलनि । जगत्-जननी जानकीक जन्मभूमिक रूपमे मिथिलाक पवित्र धरा समादृत रहिते अएलीह अछि, मुदा तकर संग संग एतुक्का संस्कृति, साहित्य एवं लोककला सेहो अपन श्रेष्ठ स्थान रखैत रहल जकर प्रशंसा मुक्त कण्ठसँ विश्वक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंचसँ होइत रहल।

मुदा आइ मिथिला मुरझाएल बुझना जाइत छथि । स्वराज्य आन्दोलनमे एहि क्षेत्रक योगदान वन्दनीय रहलैक । के बिसरि सकैछ एहि क्षेत्रक सन्तान स्वनामधन्य पं. रामनन्दन मिश्र, सूरजनारायण सिंह, धरणीधर प्रसाद, कमलेश्वरी चरण सिन्हा, सत्यनारायण सिंह, शिवनन्दन प्रसाद मण्डल, पं. राजेन्द्र मिश्र, ठाकुर युगल किशोर सिंह, श्री नारायण दास, चतुरानन्द दास, शान्तिनाथ झा, चेतनाथ झा, अबुल अहद मोहम्मद नूर, समी नदर्वी, देवनारायण गुरमैता,कर्पूरी ठाकुर, ललित नारायण मिश्र, नरेन्द्रनाथ दास आदि स्वतंत्रतासेनानी लोकनिकेँ । मगर आजुक राजनेता मिथिलाक वर्चस्व एवं त्यागकेँ बिसरि गेल छथि तथा ई लोकनि एकर शोषणमे अपार आनन्द उठा रहल छथि । फलस्वरूप एकर अवनति दिनानुदिन भए रहल अछि । प्रत्येक क्षेत्रमे एकर अधोगति भए रहल छैक ।

शोषणक प्रथम प्रहार मिथिलाक क्षेत्रीय अस्तित्व पर पड़ि रहल छैक जाहिसँ ओकर क्षेत्रीय एकता छिन्न-भिन्न भए जाइक। के नहि जनैत अछि जे मिथिला-भूभागक लगभग 10,000 वर्गमील क्षेत्र नेपालमे अछि तथा भारतक सीमाभ्यन्तर एकर प्रसार लगभग 30,000 वर्गमीलमे अछि। कविचूड़ामणि मधुपजी 1960 ई. मे लिखने रहथि:–

"उत्तर हिमगिरि, दक्षिण गंगा, पश्चिम गण्डक धार,
पुरुब महानन्दा धरि मिथिला ओ मैथिल विस्तार ॥
एकर मध्यमे जे बसैत अछि सभक मैथिली भाषा ।
केतनो हो सब उपादेय नहि ऐ मे छै उपभाषा ॥

आइ बिहारक 17 जिलामे मिथिलांचल पसरल अछि ओना मैथिलीभाषी जिला बिहार मे 22 टा अछि जाहि ठामक बसनिहार सब धर्म एवं जातिक मातृभाषा मैथिली छै, भले किछु अपवाद होथि।

मिथिलाक राजनैतिक शोषणक क्रूर शिकार हमर मातृभाषा मैथिली अछि। स्वतंत्रताक उपरान्त देशमे राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दी अंगीकार कएल गेल तँ इहो स्वीकार कएल गेल जे समस्त देशमे राष्ट्रभाषाक अतिरिक्त अनेक क्षेत्रीय भाषा अछि जे पूर्ण समृद्ध छैक एवं साहित्यिक निधि विश्ववंदित एवं चर्चित छैक । एहि क्षेत्रीय भाषासभक संवर्धन पर कोनो अवघात नहि होइ तकरा ध्यानमे रखैत भारत सरकार साहित्य अकादेमी गठित कएलक जाहिसँ बंगला, ओड़िया, तेलगू, तमिल, मलयालम आदिकेँ मान्यता देलक । ओहि साहित्यसभक निरंतर विकास होइत रहओ ताहि हेतु योजनाबद्ध रूपसँ कार्य प्रारंभ भेल । उत्तरोत्तर आन क्षेत्रीय भाषासबकेँ मान्यता भेटैत गेलैक। प्रतिवर्ष एहि क्षेत्रीय भाषासबमे उत्तम कोटिक साहित्यक रचना पर लेखककेँ पुरस्कृत कएल जाइछ । साहित्य अकादेमीमे भाषाक रूपमे मैथिली भाषाकेँ मान्यता 1965 ई. मे देल गेल ।

मैथिली भाषाकेँ देशक संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटए तदर्थ प्रयास एवं आन्दोलन होइत रहल अछि मगर राजनेता लोकनिक कान नहि पटपटाइ छनि । राष्ट्रपतिकेँ अनेक खेप स्मारपत्र देल गेल । अनेक क्षेत्रीय भाषाकेँ जनिक बजनिहार मैथिली भाषासँ कम अछि तिनको संविधानमे स्थान भेटि गेल छन्हि । 1963 ई. मे. डा. जयकान्त मिश्रीजी दिल्लीमे मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन कएल । तत्कालीन प्रधान मंत्री पं. नेहरूकेँ अपन मांगपत्र देल। प्रधान मंत्रीजी स्वयं स्वीकार कएल जे मैथिली एक जीवंत भाषा अछि एवं ई प्रोत्साहनयोग्य अछि। पं. नेहरूक आश्वासन रहैन्हि जे आगू जखन संविधानमे आन क्षेत्रीय भाषाकेँ सम्मिलित करबाक प्रश्न पर विचार होएत तँ मैथिली भाषा पर सेहो विचार अवश्य होएत । ताहू अश्वासनक 32 वर्ष बीति चुकल मगर माँग लम्बित अछि । पछिला खेप मणपुरी, कोंकणी एवं नेपाली भाषाकेँ संविधानमे स्थान देल गेल मगर मैथिली तइयो छोड़ि देल गेल जखन कि साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता देलाक 7 वर्ष बाद 1973 मे मणिपुरीकेँ एवं 12 वर्ष बाद कोंकणी एवं नेपालीकेँ 1977 मे मान्यता भेटल रहैक। ज्ञातव्य जे बिहार विधान सभामे स्व. कर्पूरी ठाकुरक मुख्यमंत्रित्व कालमे ई अनुशंसा दोहराओल-तेहराओल गेल। एहि क्षेत्रक बासी विन्देश्वरी प्रसाद मण्डलजी सेहो मुख्यमंत्री पद सुशोभित कए चुकल छथि । मुदा मैथिली भाषा सही अर्थमे उपेक्षित रहलीह ।

केन्द्रक कोन कथा अपनो बिहार राज्यमे मैथिली भाषा सर्वाधिक राजनैतिक शोषणक शिकार अछि जकर फलस्वरूप एकरा राज्यान्तर्गत दोसर राजभाषाक दर्जा नहि भेटलैक अछि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जखन लगभग 3 करोड़ मैथिलीभाषी एहि राज्यमे छथि। 1981 ई. मे उर्दूकेँ विहारमे दोसर राजभाषाक मान्यता भेटलैक मगर कांग्रेसी मंत्रिमण्डल मैथिलीकेँ छोड़ि देलक। वर्त्तमान जनता दलक सरकार फाँड़ बान्हि मैथिलीक विरोधमे ठाढ़ अछि। एहि भाषाक विरुद्ध राजनैतिक दुर्भावना छैक। जनता सरकार क्षेत्रक स्थान पर एकरा जातिविशेष-ब्राह्मण-कर्ण कायस्थक मातृभाषा मानैछ। एहि दलक मुख्यमंत्रीकेँ ई नहि ज्ञात छन्हि जे आन जातिक सेहो महान मैथिलीभाषाविद् प्राध्यापक, व्याख्याता, कवि, साहित्यकार होइत रहलाह अछि। राजनैतिक द्वेषसँ प्रेरित भए जनता सरकार विहार लोक सेवा आयोगक परीक्षासँ मैथिली केँ हटा देलक अछि। एहि निर्णयक विरोधमे राज्यमे आन्दोलन भेल मुदा बहिरा राज्यसरकार पर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत छैक। आगू जेबाक कोन कथा जनता सरकार मैथिलीकेँ पाछू ठेलि रहल अछि। भाषाक विकास नहि होएबाक दुआरे मिथिला क्षेत्रक विकास वांछित गतिसँ नहि भए रहल अछि। मिथिलाक दलित एवं पिछड़ल समाजक एकमात्र मातृ-भाषा मैथिली छै। ओ लोकनि हृदयसँ एहि भाषाक विकास चाहैत छथि। श्री विलट पासवान 'विहंगम', श्री हासिमी प्रभृति एकर ज्वलन्त उदाहरण छथि जे नित्य अपन रचनासँ मैथिली साहित्यक सेवा कए रहल छथि। मैथिली भाषाक प्रतिद्वन्द्वीक रूपमे वज्जिकाक चर्चा कएल जा रहल अछि। ओकर पढ़ाइ भागलपुर विश्वविद्यालयमे शुरू कए देल गेल अछि। आजुक अखरकट्टू नेता ई बुझिते नहि छथिन्ह जे 'वज्जिका एवं अंगिका' मूल मैथिली भाषाक एक रूप छिऐक जहिना तुलसीदास जीक अवधी एवं सूरदासजीक ब्रजभाषा हिन्दीक रूप छिऐक।

मैथिली एक सुसमृद्ध भाषा अछि। एहि भाषामे साहित्य, व्याकरण, कोश, छन्द, अलंकार, यात्रा-विवरण, जीवनी, इतिहास, अर्थशास्त्र एवं वेदान्त पर उच्च कोटिक पुस्तकक धरोहरि उपलब्ध अछि। ई मैथिली भाषा आठम शताब्दीसँ विद्यमान अछि। प्राकृत एवं अपभ्रंशक पतनक पश्चात् उत्तर भारतवर्षक साहित्यक एकमात्र भाषा मैथिली भए गेल एवं एकर बृहत् प्रसार 15 म सँ 17 म शताब्दी धरि भेल। कविकोकिल विद्यापतिक रचना एकर आधारकेँ सम्पुष्ट कएलक। जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, पक्षधर, वाचस्पति, भारती, ज्योतिरीश्वर, गोविन्द, लोचन, गंगेश, उमापति आदि मैथिली साहित्यक संवर्धनमे अजस्र योगदान देलन्हि। गीत एवं नाट्य विधामे मैथिलीक योगदान विशिष्ट रहल। आधुनिक युगमे वरिष्ठ साहित्यकार मैथिली भाषामे रचना कए प्रख्यात भेलाह ताहिमे बहुचर्चित छथि पं. चन्दा झा, पं. लाल दास, हरिमोहन झा, यात्री जी, राजकमल, सीताराम झा, ईशनाथ झा, मुंशी रघुनन्दन दास, धनुषधारी दास आदि। पं. चन्दा झा एवं पं. लाल दास मैथिली भाषामे रामायण महाकाव्य रचना केने छथि।

आजुक राजनेताकेँ बुझल नहि छन्हि अथवा बिसरा गेल छन्हि जे मिथिलाक ज्ञानगरिमाक श्लाघ्य परम्परा रहल अछि। ई ओ पवित्र क्षेत्र थिक जतय सुग्गा सेहो संस्कृतमे श्लोक पढ़ि शंकराचार्य जीकेँ पं. मण्डन मिश्र जीक घर देखौल एवं ओ पं. मण्डन मिश्रक धर्मपत्नी भारतीसँ शास्त्रार्थमे हारि गेलाह।

एहि क्षेत्रमे कलकल वाहिनी धार सभ बहैत अछि जकर समुचित नियंत्रण कए क्षेत्रकेँ धन-धान्यसँ परिपूर्ण कएल जा सकैछ। मिथिलाक प्रमुख नदी अछि कोशी, कमला, बलान, वागमती आदि जाहिमे साल भरि पानि बहैत रहैत अछि। एहि मे सँ एकमात्र कोशी धारक नियंत्रण कए ओकरा दूनू पाट पर बान्ह बान्हल गेल अछि एवं पूर्वी भागमे धारसँ नहरि सेहो निकालल गेल अछि। पश्चिम कोशी नहरि योजना आइ धरि खटाइमे फूलैत अछि। अखनो पण्डौल प्रखण्डान्तर्गत सरहद गाममे लगभग 5 बीघा जमीन पर पश्चिम कोशी नहरक कार्यालय बनि बेकार 10 वर्षसँ पड़ल अछि। ठाम-ठाम ओकर कार्यालय बनि गेल मगर नहरिक काज कागजे पर सीमित अछि। अखनो विभिन्न धारमे बाढ़िक विभीषिकासँ मिथिला पीड़ित अछि मगर क्षेत्रमे नहरि योजना पूरा नहि कएल गेल। सामान्यतः मिथिलामे कृषि पूर्णतः वर्षा पानि पर अवलम्बित अछि। एहि क्षेत्रक अधिकांश भाग सुखाड़ अथवा बाढ़िक चेपटमे अछि। गृहस्थ लोकनिक लागत एवं परिश्रम व्यर्थ चल जाइ छन्हि। आजुक वैज्ञानिक युगमे कोनो क्षेत्रक कृषि एहि रूपेँ प्रकृति पर पूर्णतः आश्रित नहि अछि। एकरा राजनैतिक शोषण नहि कहब तँ आओर की ?

कृषिक दुरवस्था देखि गृहस्थ खेती छोड़ि जीविकोपार्जन हेतु आन ठाम पड़ा रहल छथि। देखादेखी बोनिहार सेहो गामकेँ छोड़ि आन राज्यमे नौकरी करबा पर बाध्य भए रहल अछि। मिथिलाक उर्वरा भूमि एवं तकर केवाल माटि धान, गहूम प्रभृति अन्नक हेतु सर्वाधिक उपयुक्त मानल गेल जछि। एहि क्षेत्रमे आमक सघन गाछी अछि। पोखड़िमे माछक संग मखान होइछ। मगर राजनीतिक शोषणक कारणेँ उपेक्षाक शिकार भए कए ई क्षेत्र दैन्यावस्थामे अछि। आजुक राजनेता लोकनिकेँ 'सर्वोदय' क स्थान पर 'खुदोदय' बेशी पसिन पड़ैत छन्हि। आजुक नेता, विधायक, पार्षद, सांसद, मंत्री, उपमंत्री, राज्यमंत्री, विभिन्न सरकारी समितिक अध्यक्ष, सरकारी निगमक अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष आदिकेँ एतेक आर्थिक सुविधा भटैत छन्हि जे क्षेत्रक गरीबीक कोनो प्रभाव हुनका अपना ऊपर वा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हुनकर संतान एवं सम्बधी पर नहि पड़ैत छन्हि । ओ लोकनि ऐश-मौजसँ जीवन बिताबैत छथि । जनताक दयनीयता राजनेता लोकनिकेँ अपन धाक जमेबाक हेतु बेशी उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होइत छन्हि।

मिथिलाक औद्योगिक विकास पूर्णतः अवरुद्ध अछि। एकर एहन दुर्भाग्य छै जे अंगरेजी शासन कालमे जे चीनी मिल सब छल सेहो आब प्रायः बन्दे रहैछ। पहिने राज दरभंगाक दूटा चीनी मील–लोहट एवं सकरी एवं रैयाम चीनी मील किसानकेँ कुसियार आपूर्ति करबासँ पूर्व दादनी दैत छल जकरा लए कए गृहस्थ मालगुजारी अदाए, विवाह उपनयन आदिक आवश्यक खर्च चलबैत छल। मुदा आइ ई चीनी मील सब अग्रिम दादनीक कोन कथा आपूर्त्तिक उपरान्त कुसियारक दाम वर्षक भीतरो नहि दए पाबैत अछि । राजनैतिक दुर्भावना नहि रहितइ तऽ मिथिलामे प्रचुर मात्रामे उपजैबला आम, लीची, केरा आदिक आधार पर लघु उद्योग चलि सकैत छल। मृत पशुक चामक आधार पर चर्म उद्योग पसरि सकैत छल ।

एहि क्षेत्रमे कोनो पैघ उद्योग नहि अछि। मध्यम उद्योग एक तऽ अछिए कम मगर ओहो दम तोड़ि रहल अछि। अशोक पेपर मिल बड़ उत्साहसँ स्थापित भेल मुदा ओहो बन्द अछि। रामेश्वर जुट मिल्स, मुक्तापुर अखन बिड़लाक प्रबन्धमे टुकदुम-टुकदुम कए रहल अछि । ठाकुर पेपर मिल्स, बैजनाथपुर पेपर मिल, फारबीसगंज, सहर्षा एवं कटिहारक जूट मील आदि बन्द अछि। लघु उद्योगक विकासक उद्देश्यसँ दरभंगामे तीन टा औद्योगिक प्राङ्गण, संगहि झंझारपुर, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, पूर्णियां, कटिहार आदि औद्योगिक प्राङ्गण अधिकांश मृतप्राय अछि । ओकरामे साँझक दीओ नहि बरैत छैक। एहि बन्द कारखाना सबकेँ पुनर्गठित नहि कएल जा रहल अछि। राजनेतालोकनि अनभुआर उद्यमीकेँ ताकि ओकरा बहकाए नव युनिट खोलबाक प्रपंच रचैत रहैत छथि। कारण ओहिमे सद्यः एवं टटका लाभ होइत छन्हि। ओ नव युनिट बैंकसँ वा अन्य वित्तीय संस्थासँ कर्ज लैत अछि तऽ एहू कर्ज राशिमे अगौँक रूपमे क्षेत्रीय राजनेताकेँ लाभ भेटि जाइत छन्हि ।

ई लघु उद्योग सब चलत कोना ? क्षेत्रमे बिजलीक अभाव रहैत छैक। 24 घंटामे प्रतिदिन मुश्किलसँ 2-4 घंटा बिजली भेटैत छैक। फलस्वरूप अधिकांश कारखाना बन्द भऽ जाइछ। कच्चा मालक अभाव एवं उत्पादित मालक बिक्रीक समुचित व्यवस्था नहि रहबाक दुआरे लघु उद्यमी परेशान रहैछ। क्षेत्रक जनसंख्या दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि परंच रोजीक साधन घटल जाइछ।

उद्योग-धंधाक विकास नहि होएबाक एक मुख्य कारण इहो अछि जे एहि क्षेत्रमे रेल लाइन एवं पक्की सड़कक अभाव छैक। समस्तीपुरसँ दरभंगा बड़ी रेल लाइन बनए तकर शुभारम्भ ललित नारायण मिश्र जी केन्द्र सरकारसँ करौलन्हि। ओहि उद्घाटन समारोहमे अपन आहुति दए देलन्हि। मगर 20 वर्ष बाद 1996 मे बड़ी लाइन भेल। कोसीक बाढ़िमे निर्मलीसँ पूब जे रेल लाइन टुटल से अखनि धरि जोड़ल नहि गेल। समस्तीपुरसँ खगड़िया सहर्षा सुपौल आ फारबिगंज धरि बड़ी रेल लाइन नहि बिछाओल गेल अछि। ओहिना पक्की एवं चाकर सड़कक अभावमे एहि क्षेत्र मे यातायातक सुविधाक अभाव अछि। सड़क अछि तऽ कतहु पुल नहि, तऽ कतहु सड़क उभर-खाभर अछि। मुजफ्फरपुरसँ दरभंगा धरि राज्य सरकारक 'हाइवे' 20 वर्ष पूर्व तैयार भेल मगर आइधरि ओकरा दरभंगासँ पूब मुरलीगंज फारबिसगंज होइत गलगलिया तक सीमा-सड़कक रूपमे बनाओल नहि गेल। मधुबनीसँ झंझारपुरक सड़क जर्जर अवस्थामे अछि। झंझारपुरमे अखनो धरि सड़क पर पुल नहि बनल अछि। सड़क यातायात रेले पुल पर चलैछ जाहिमे व्यवधान भए जाइत छैक। आबाजाही बन्द भए जाइत छैक।

संगठित उद्योगक कोन कथा, मिथिलाक गृह उद्योग सेहो राजनैतिक शोषणक शिकार अछि। एहि क्षेत्रमे खादी,हस्तकरघा एवं हस्तशिल्प खूब पनपल आ विकसित छल । हजारो कत्तिन घरमे चर्खा एवं टकुरी पर सूत काटि खादी भण्डारकेँ आपूर्ति कऽ अपन गुजर करैत छल। चर्खा एवं टकुरी पर जेहन मेही सूत तैयार होइत छल तेहन मेही सूत मीलमे नहि बनैत छल। आइ राजनैतिक शोषणसँ खादी एवं हस्तकरघा उद्योग मृतप्राय भए गेल अछि। हस्तकरघा उद्योगकेँ किछुओ मात्रामे सूत स्थानीय स्तर पर भेटि जाइ ताहि उद्देश्यसँ पण्डौलमे सूती मील खुजल मगर ओ बंद अछि। समस्त क्षेत्रमे हस्तकरघा सहयोग समितिक जाल पसरल छल। पहिने राज्यव्यापी एकेटा बुनकर सहयोग संघ पटनामे छल। राजनेता लोकनि क्षेत्रीय बुनकर संघ बना शोषण शुरू कएलन्हि। फलस्वरूप आइ 85% बुनकर सहयोग समिति पूर्णतः बन्द अछि। बुनकर लोकनि अपन पुश्तैनी बुनाइ रोजीकेँ छोड़ि नौकरीक तलाशमे बाहर चल जाइत गेलाह।

मिथिलांचलमे चिरकालसँ हस्तशिल्प पूर्ण विकसित छल। दक्ष कलाकारक निर्मित वस्तुक माँग समस्त विश्वमे होइत छल। हजारो कलाकार लोकनि अपन घरक काजसँ बाँचल समयक उपयोग शिल्पकारीमे करैत छल । मिथिलाक प्रमुख हस्तशिल्प उद्योगमे चित्रकारी, सिक्की, बाँस-वस्तु, सुजनी, वस्त्र-छपाइ, चानी-सोनाक आभूषण निर्माण, पितरिक वर्त्तन, कुम्हारक वर्त्तन आदि । देशक कोन कथा विश्वक प्रमुख प्रदर्शनीमे मिथिलाक शिल्प प्रदर्शित होइत छल । एहू कलासबमे हस्तकला एहि शताब्दीमे बड़ प्रसारित एवं प्रशंसित भेल। चित्रकलामे प्रवीणता

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

होएबाक दुआरे रसीदपुर ग्रामवासिनी गंगा देवी एवं जितवारपुर ग्राम वासिनी जगदम्बा देवी राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' क उपाधि सँ विभूषित भेलीह । अन्य कलाकारमे श्रीमती गोदावरी दत्त, बटोही झा, श्री यमुना देवी, श्रीमती नीलू यादव (मधेपुरा निवासी) आदि प्रख्यात छथि । बरहेतामे काश्यप जीक नेतृत्वमे भारतीय विकास मंचक चित्रकलाक सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीमती शिवा काश्यप, सुश्री शशि, अनीता आदि समस्त देशमे अपन विशिष्ट कलाकृतिक प्रदर्शन कऽ अपार यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित कएने छथि । सरकारी सहायताक अभावमे ई संस्था एव हजारो ग्रामीण कलाकार निपन्न अछि। हस्तकला-वस्तुक समुचित बिक्री व्यवस्थाक अभावमे दक्ष शिल्पी दम तोड़ि रहल अछि । कोनो राजनेताक ध्यान एहि दिस नहि जा रहल छन्हि । एकरा शोषण-उपेक्षा नहि कहब तऽ की कहब ?

राजनैतिक संकटसँ उत्पन्न संकटक दुआरे मिथिलाक वर्त्तमान गरीबी एवं ओकर पश्चात्पदता प्रत्येक बुद्धिजीवीक हेतु चिन्ताक कारण भए गेल छैक । स्थितिक गंभीरताक बोध स्पष्टतया तखन होइत अछि जखन एहि मिथिला-क्षेत्रक प्रतिव्यक्ति आयक अंकावली देखैत अछि। अपन भारत वर्ष मे प्रतिव्यक्ति आय 2400 टाका छैक । पंजाब एवं हरियाणा प्रभृति समृद्ध राज्यक प्रतिव्यक्ति आय 4500 टाका छै। मगर देशमे बिहार राज्य पछुआएल अछि, फलस्वरूप एहि राज्यमे प्रतिव्यक्ति आय देशक प्रतिव्यक्ति आयसँ सेहो न्यून अछि । बिहारमे प्रतिव्यक्ति आय 1200 टाका मात्र अछि आ ताहूमे मिथिलांचलक आय प्रति व्यक्ति 450 टाका अछि । मिथिला क्षेत्रक 90 प्रतिशत व्यक्ति गरीबी रेखाक भीतर जीवन-यापन अति कष्टपूर्ण स्थितिमे करैत अछि। मिथिलावासीक दारुण पीड़ाक कथा अवर्णनीय अछि । पूर्वहुँ मिथिलाकेँ अलग राज्य बनेबाक आन्दोलन पं. जानकीनन्दन सिंहक नेतृत्वमे भेल छल । मिथिलावासी पृथकूता वादी प्रवृत्तिक नहि छथि तेँ ओ एहि आन्दोलनकेँ पूर्ण सहयोग नहि देल। मिथिलावासीकेँ विश्वास छलन्हि जे बिहार राज्यक भीतर रहितहुँ कालान्तरमे मिथिलाक शोषण हटत एवं ओकर विकास होएत । परन्तु ई आशा आब दुराशामे परिणत भए रहल छैक आ मिथिलावासी जोर-शोरसँ पृथक् राज्य बनेबाक पक्षधारी भए गेलाह अछि ।

एहि क्षेत्रक असमानता एवं असंतुलनकेँ हटएबाक चिंत्ता राजनेतालोकनिकेँ नहि छन्हि । पटना एवं दिल्लीक सरकार एहि क्षेत्रक विकाससँ विमुख अछि । प्रयोजन आबि गेल छैक जे मिथिलांचलक शान्तिपूर्ण जनता अपन मौलिक अधिकारक रक्षाक हेतु अपन चिरकालिक शान्तिपूर्ण मनोवृत्तिकेँ परित्याग करए आ संघर्षक बिगुल स्वयं अपना हाथमे लए काज करए । जहिना विदेशी शासनक विरुद्ध बापूकेँ सत्याग्रह, धरना, प्रदर्शन आदि अपनाबए पड़लैन्ह तहिना मिथिलाक नवयुवककेँ सुसंगठित ढंगसँ संघर्ष करऽ पड़तैन्ह तखने मिथिलाक शिथिलता दूर होएत तथा ओ अपन प्राचीन गरिमाकेँ पुनः प्राप्त कए पाओत । आ तखने शोषण हटत एवं एतए शिक्षामे वृद्धि, स्वास्थ्यमे सुधार, आर्थिक उन्नयन, यातायातक साधनमे विकास, ललितकला आदि सभक मार्ग प्रशस्त होएत ।

आधुनिक मिथिलाक किछु मैथिल पंडितक आप्रवासन एवं ओकर परिणाम

□ प्रो. डा. श्री जगदीश चन्द्र झा

जीव मात्रेक ई प्रवृत्ति रहैत छैक जे हरियरी दिस जाइ। अपन परिवेशकेँ नीक बनएबाक इच्छा, प्रायः सबकेँ रहैत छैक। तेँ, प्रत्येक युगमे आप्रवासन होइत रहल अछि। आ एकर राजनीतिक, सामाजिक ओ आर्थिक परिणाम प्रायः विश्वक प्रत्येक देश पर होइत रहल अछि ।

किछु आप्रवासी खराब परिस्थितिसँ धकेलल जाइत छथि तँ किछु लोक नोकरी वा सम्पत्तिसँ आकर्षित होइत छथि ।[1] किछु आप्रवासन किछुए दूरक हेतु होइत अछि, किछु किछुए दिनक वास्ते । प्रथम कोटिमे अछि देहातसँ शहर आएब । मुदा एहूमे किछु लोक कोइलखसँ मधुबनी वा दरभंगा आओत । किछु एहनो लोक अछि जे देहातसँ कलकत्ता, मुम्बई आदि स्थान चल जाइत अछि । दूरवला आप्रवासकेँ उनैसम शताब्दीसँ बीसम शताब्दीक आरम्भ धरिक ओहि जन बोनिहार सभक चर्चा कएल जा सकैछ जे असम वा ओकर लगपास ठीका पर चाह बगानमे पाँच वा दस वर्षक हेतु जाइत छल । किछु लोक समुद्रपार मौरीशस, वेस्ट इंडीज, दक्षिण अफ्रिका आदि स्थान जाइत छल । एखनहुँ पंजाब, हरियाणा आदि प्रान्तमे मजदूरी करए वा उत्तर प्रदेश वा अन्य क्षेत्रमे सतरंजी बिनबाक हेतु अथवा भट्ठामे काज करए मजदूर सभ जाइत अछि । बहुत कम समयक हेतु बोनिहार सभ मोरंग (नेपाल) बहुतो दिनसँ धनकटनी करए जाइत छल । उन्नैसम शताब्दीमे जखन असममे रेलक लाइन बिछाओल जाइत छल, तँ बिहारसँ बेसी लोक ओहिमे बोनि करय जाइत छल ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

दू तरहक लोक मुख्यतः आप्रवासन करैत अछि–कोनो हुनर जननिहार आ बिना कोनो हुनर जननिहार मजदूर। मैथिल पंडित लोकनिकेँ प्रथम श्रेणीमे राखल जा सकैत अछि। एक तँ ओ संस्कृतक विद्वान् छलाह आ दोसर ब्राह्मण जातिक छलाह।

मिथिलाक पंडितलोकनि दू प्रकारक होइत छलाह–पहिल अयाची मिश्र सन, जे तकलीफमे रहि सकैत छलाह, मुदा याचना नहि कए सकैत छलाह। आत्मसम्मानी एहन जे ककरोसँ कर्जो तक नहि लेमए चाहैत छलाह। एहि कोटिमे एहने लोक छलाह जे 'होमसिक' छलाह अथवा डरपोक छलाह। दूर नहि जाए चाहैत छलाह। दोसर ओ छलाह जे साहसी रहथि, खतरा मोल लेनिहार, बाजय-भूकयमे फड़हर छलाह। ओ कोनोठाम जा कए अपन रोआब जमा लैत छलाह, चमत्कारी लोक छलाह, आ नीक-निकूत खएबाक शौकीन छलाह। ओ लोकनि यदि अकाल, महामारी ओ बाढ़ि आदिसँ त्राण पयबाक हेतु बाहर जाइत छलाह वा हुनका महाजनक कर्जा सधयबाक हेतु धन कमयबाक लाचारी छलनि तँ एहनो लोक छलाह जनिका देयादी झगड़ वा जमीनक मोकदमा सँ परेशान भए गाम छोड़य पड़ैत छलनि। किछु गोटयकेँ नेपाल वा भारतक कोनो खुदसर राज्यक दरबारमे जयबाक सिहन्ता छलनि जाहिसँ राजयोगक उदय होनि।

किछु पण्डितलोकनि तँ बंगाल, असाम, नेपाल ओ उत्तर प्रदेश तक गेलाह आ समय-समय पर द्रव्य लएकेँ गाम अबैत रहलाह। आनसभ गोआ, कोंकण, महाराष्ट्र, राजस्थान ओ मध्यप्रदेश तक पहुँचि गेलाह आ आन ठाम बसियो गेलाह।

किछु क्षेत्रमे पण्डितक आप्रवासनक बाढ़ि आबि गेल। जेना बंगालमे मालदह, नेपाल तराइसँ काठमाण्डू धरि, उत्तर बिहारमे बेतिया क्षेत्र ओ दक्षिण बिहारमे संथाल परगनासँ भागलपुरक किछु क्षेत्र।

ओना पण्डितलोकनि बेसी नाम बंगालक नवद्वीप (नदिया) ओ बनारसमे विद्वानक रूपमे कएलनि वा तांत्रिकक रूपमे काठमाण्डू ओ कामरूपमे, हिन्दू कानूनक विशेषज्ञक रूपमे जयपुर, कलकत्ता ओ मिरजापुरमे आ कतेक रियासतमे दरबारक कवि वा मोसाहेबक रूपमे।

नवम शताब्दीसँ पण्डितलोकनि तिब्बत जाय लगलाह। मुसलमानी आक्रमण जखन बिहारमे बढ़ि गेल तँकतेको पंडित पोथी-तोथी लए कए नेपाल आ तिब्बतमे बसियो गेलाह। भारतक आनो भागमे ई आप्रवासन चलैत रहल। अठारहम शताब्दीक अन्त धरि मैथिल पण्डितक आप्रवासन काफी बढ़ि गेल। एकर मुख्य कारण छल ब्रिटिश राजक अधीन खराब आर्थिक परिस्थिति आ प्रकृति-प्रकोप।[2]

एहि कालक एक प्रमुख आप्रवासी मैथिल छलाह पूर्णिया जिलाक धमदाहा गामक चित्रपति उपाध्याय। ओ न्याय, व्याकरण, काव्य आदि पढ़लनि। ओहि समयमे धमदाहा दरभंगा जिलाक भौर राजग्राम, कोइलख तथा मंगरौनी सन विद्याक केन्द्र बूझल जाइत छल। एतय नामी विद्वान् छलाह श्यामसुन्दर ठाकुर।

जखन क्रोलब्रुक साहेब पूर्णियामे पदस्थापित छलाह तँ चित्रपति तँ संस्कृत भाषा पढ़लनि। जखन क्रोलब्रुक कलकत्ता क सदर दीवानी अदालतक मुख्य न्यायाधीश भेलाह तँ हुनका बजौलथिन्ह आ अपन कोर्टक हिन्दू कानूनक व्याख्या कएनिहार पण्डित बहाल कएल। संगहि चित्रपति अपन अनुवादकाजमे क्रोलब्रुककेँ मदति करथिन्ह।[3] एही कालमे चित्रपति *व्यवहार सिद्धान्तपीयूष* नामक पुस्तक लिखल आ एकर अन्तिम भागमे कोलब्रुककेँ धन्यवाद देलथिन्ह। अपन गाम चित्रपति दू गोट शिवमन्दिर बनौलनि कृष्णेश्वर ओ नन्दीश्वर, अपन पिता ओ पितीक नाम पर।

जखन चित्रपति ईस्ट इंडिया कम्पनीक नोकरी धयलनि, हुनकर एक भाय भिन्न भए गेलथिन्ह, कारण ओ 'म्लेच्छ'क द्रव्य क उपयोग नहि करय चाहैत छलाह, मुदा दोसर भाय कोलब्रुक क कृपासँ मिर्जापुरमे कानूनी सलाहकार नियुक्त भेलाह।[4]

दुर्गादत्त झा (1750-1820) दरभंगा (आब मधुबनी) जिलाक प्रसिद्ध विद्वानक सुपुत्र छलाह। दुर्गादत्त बुन्देलखण्डक प्रसिद्ध राजा छत्रसालक प्रपौत्र हिन्दूपतिक राजपण्डित छलाह। अपन *विप्रमुक्तावलीमे* ओ अपन पुरखा लोकनिक संग राजा हिन्दुपति ओ हुनक पुरखाक विवरण सेहो देलनि। दुर्गादत्त झा पाणिनिक व्याकरणक पैघ विद्वान् छलाह।[5]

राघब झा (1750-1825 ई.) दरभंगा जिलाक तरौनी गामक छलाह। नेपालक राजा रणेन्द्र बहादुर शाहदेव (1777-1796) क दरबारमे रहैत छलाह। राघव प्रसिद्ध वैयाकरण ओ तान्त्रिक छलाह। हुनका नेपाल तराइमे एक जागीर भेटल छलनि। ओ भट्टिकाव्य पर टिप्पणी कयने छलाह।[6]

धीरेन्द्र उपाध्याय (1750-1830 ई.) मंगरौनीक म. म. गोकुलनाथ उपाध्यायक संबंधी छलाह। पण्डौल लगक जमसमक निवासी छलाह। पैघ नैयायिक खाँतर मिश्रक नाति छलाह। तेँ मातृक ओ पैतृक दूनू दिससँ नघ्यन्यायक विद्वत्ताक प्रभाव छलनि। ओ द्रव्योपार्जन हेतु पहिने दक्षिण भारत गेलाह आ एक शास्त्रार्थमे एक लाख रुपैया इनाम पाबि घुरलाह। गाममे तुलादान कएल। एक पोखरि खुनाए ओकर चातुश्चरण यज्ञ कएलनि ओ बहुतो पण्डितकेँ बजा कए सत्कार कएल।[7]

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

परमेश्वरीदत्त झा (1754-1830) मधुबनी जिलाक नवानीक मीना झाक पुत्र ओ महेश झाक पौत्र छलाह। न्यायक प्रखर विद्वान् छलाह ओ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र बच्चा झाक गुरु छलाह। परमेश्वर राजस्थानक जयपुर स्टेटक राजा मानसिंहक दरबारमे गेलाह आ ओही स्टेटमे बसि गेलाह। एक जागीर भेटलनि। एखनहुँ हुनक उत्तराधिकारीलोकनि जयपुर जिलाक कल्याणपुरमे रहैत छथि। ओलोकनि मिथिलाक भाषा ओ संस्कृति एखनहुँ अक्षुण्ण रखने छथि।

योगधर झा (1781) मधुबनी जिलाक केओटी लगक एक गामक छलाह। ओ शंकरदत्त झाक भाय छलाह। अपन भायक बदला नेपालक राजा गीर्वाण युद्धविक्रमशाहदेवसँ जागीर प्राप्त कएलनि।

फूल मिश्र (1785-1865) मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही गामक छलाह। बादमे ओ बेतिया चल गेलाह आ बेतियाराजक राजा आनन्द किशोर सिंहसँ एक जागीर प्राप्त कएलनि। हुनकर उत्तराधिकारीलोकनि चम्पारन जिलाक चनपटिया गाममे छथिन्ह।

नेनन (नन्दन) झा (1790-1885 ई.) खौआड़े सुखेला मूलक मधुबनी जिलाक पिलखबाड़ गामक निवासी छलाह। ओ मंगरौनीक अचल उपध्यायक शिष्य छलाह। हुनक दू पुत्र बबुजन ओ भानुदत्त क्रमशः पैघ वैयाकरण ओ ज्योतिषी रहथि। नेनन झाकेँ नेपालक राजासँ महोत्तरी जिलामे 550 बीघाक जागीर भेटल छलनि। प्रायः हुनका दू गोट जागीर प्राप्त भेलनि। भानुदत्त क *व्यवहाररत्नक* भूमिकामे हुनका नेपाल राजा द्वारा प्रदत्त जमीनक मालिक कहल गेल छनि।[8]

जीवनाथ झा (1800—) पटनाक अपन भाय ज्योतिषी नीलाम्बर झा जकाँ ज्योतिषेक विद्वान छलाह। ओ चारिटा पुस्तक लिखने छलाह।

बबुअन झा (1812—1884) मधुबनी जिलाक पिलखबाड़ क खड़ोरे सुखेता मूलक विद्वान छलाह। ओ नदिया तथा बनारस मे व्याकरण ओ न्यायशास्त्रक गहन अध्ययन कएने छलाह। प्रायः जम्मूक महाराजक आग्रह पर दरभंगाक महाराज महेश्वर सिंह हुनका जम्मूक एक पाठशालामे कार्य करबाक हेतु पठौने रहथिन्ह। बादमे ओ अपन गाममे अपन घरे पर पाठशाला चलबय लगलाह जकर खर्चक हेतु दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह हुनका 15 बीघा जमीन दानमे देल। हुनक तीनमे दू पुत्र म. म. दुखमोचन झा आ म. म. चुम्मे झा पैघ विद्वान् छलथिन्ह।[9]

नीलाम्बर झा (1820-1880) क परिवार पटना आबिकेँ बसि गेल छलनि। ओ ओतय राम ओ सीताक मन्दिर बनौलनि। अपन ज्योतिष पर लिखल ग्रंथ *गोलप्रकाश* मे ओ कहने छथि जे हुनकर पिता शंभुनाथ झा पटनामे बसल रहथिन्ह। पं. नीलाम्बर राजस्थानक अलवर स्टेटक महाराज शिवदान सिंह (1857-74) क दरबारी पंडित छलाह। पंडित नीलाम्बर यूरोपक खगोलशास्त्रक अध्ययन कए अपन विद्यार्थीलोकनिकेँ परम्परागत ज्योतिषक संग पश्चिमी देशक ज्योतिष सेहो पढ़बैत छलाह। एहि सम्मिश्रणमे हुनक सहयोगी छलथिन महामहोपाध्याय बापूदेव शास्त्री जे हुनक *गोलप्रकाशकेँ* सम्पादित कए छपाओल।[10]

चुम्बे झा (1830-1900) जम्मू जा कए रघुनाथ पाठशालामे शिक्षक भेलाह। पाणिनीय व्याकरणक ओ उच्च कोटिक विद्वान छलाह। संगहि ओ न्यायशास्त्रक पंड़ित छलाह।

उन्नैसम शतीक ***संगमलाल झा*** मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थाना अन्तर्गत चकौती गामक छलाह। ओ ओही जिलाक सुगौना ड्यौढ़ीसँ संबंधित छलाह। नदियामे नव्य-न्यायक गहन अध्ययन कएने छलाह। उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे ओ बनारसक सरकारी संस्कृत कालेजमे शिक्षक छलाह। नीक शिक्षक रहितहुँ लिखबामे ओ पटु नहि छलाह।[11]

उन्नैसम शताब्दीक ***मित्रकर झा*** मधुबनी जिलाक कोइलख गामक छलाह। तन्त्रक अध्ययन कए साधना करय लगलाह। बादमे मध्यप्रदेश चल गेलाह आ भिण्डक राजा बक्तसिंह भरौरिया क दरबारमे प्रतिष्ठित भेलाह। दू गोट गाम खरोसमे भेटलनि। हुनकर भाय ओ उत्तराधिकारीलोकनि 1952 ई. धरि एहि जमीन्दारीक भोग करैत रहलाह।

प्रायः हुनकर समकालीन छलाह ***मार्कण्डेय झा*** पिण्डारुछक लगक निकासी गामक। ज्योतिषक नीक ज्ञान प्राप्त कए पहिने मध्यप्रदेश आप्रवासन कएलनि आ बादमे राजस्थानक रीवा स्टेट मे ओतुक्का नरेशक संरक्षण भेटलनि। लगमा गाममे 100 बीघा जमीन भेटलनि। हुनकर उत्तराधिकारीलोकनि एखनहुँ एहि सम्पत्तिक भोग कय रहल छथि।

चुम्बे झा (1830-1900) बनारसक महामहोपाध्याय शिव कुमार मिश्रसँ व्याकरण पड़लनि। बादमेँ जम्मू चल गेलाह। आ एक पाठशालामे शिक्षक भेलाह। ओ *क्षौरमीमांसा* नामक पुस्तक लिखल।

हरिहरनाथ झा (1830-1910) बेलौंचे सुदइ मूलक छलाह। ओ बानू छपरा (बेतिया)क निवासी छलाह। बनारसमे व्याकरण, वेदान्त ओ तन्त्र पढ़लनि ओ बादमे बेतियाक महाराजक सदर दीवान छलाह। हुनकर प्रयाससँ बहुतो मैथिल ब्राह्मण परिवार मिथिलासँ चम्पारन क्षेत्रमे जा बसल।

विश्वनाथ झा (1838—) सोदरपुरिये भविया मूलक मधुबनी जिलाक जमसम गामक निवासी छलाह। ठाढ़ीमे मामाक ओहिठाम पढलनि। तत्पश्चात् नदिया जाकए नव्यन्यायक उच्च शिक्षा प्राप्त कयलनि। अपन गाममे अध्यापन शुरू कएल। किन्तु

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गुजर करब कठिन भए गेलनि। तखन राजस्थानक जयपुर दरबार मे पण्डित भेलाह। ओतयसँ बिहार आबि नरहन स्टेटमे दरबारी पंडित भेलाह। तत्पश्चात् हथुआ राजक राजपंडित भेलाह। अन्तमे दरभंगा महाराजक लक्ष्मीश्वर सिंहक पाठशालामे पढ़ौलनि। 1891 ई. मे न्याय पढ़बाक हेतु आठ विद्यार्थी छलथिन। प्रायः मिथिलामे एहि विषयमे एतेक विद्यार्थी आनठाम नहि छलैक।[12]

महामहोपाध्याय **चित्रधर मिश्र** (1844-1920) सोदरपुर दिगौन मूलक छलाह। समस्तीपुर क्षेत्रक टभका गामक ओ निवासी छलाह। उच्च शिक्षा पाबि ओ बनारसक सरकारी संस्कृत कॉलेज मे पढ़ौलनि। व्याकरण, धर्मशास्त्र ओ दर्शनमे पारितोषिक पौलनि। तत्पश्चात् नेपाल जाय मीमांसा पढ़लनि। पहिने बनारसमे जम्मूक पाठशालामे पढ़ौलनि। बादमे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारमे प्रवेश पौलनि आ तत्पश्चात् दरबारकेँ सुशोभित कएलनि। लक्ष्मीश्वर सिंहक राज-सिंहासन पर बैसबाक समय ओ धौतपरीक्षोतीर्ण भेलाह। बादमे ओ दरभंगाक दानाध्यक्ष बनाओल गेलाह आ 1907 ई. मे महारानी रमेश्वरलता संस्कृत कालेजक प्रथम प्रिंसिपल भेलाह। भारतधर्म महामण्डल वाराणसी हुनका मीमांसकशिरोमणिक पदवी देलकनि। ओ कइएक प्रान्तक संस्कृत संबंधी संस्थानसँ संबद्ध रहथि आ हुनकर बहुतो विद्यार्थीसभ काफी नामी भेलाह। हुनक प्रमुख पुस्तक अछि-*मीमांसासंग्रह, मिथिला संस्कृत-कवि नामावली, उपलक्षण-संग्रह* आदि।

जीवन झा (1848-1912) जजुआड़े मूलक छलाह। हुनक नाना काशीनरेशक दानाध्यक्ष छलथिन्ह। बादमे एहि पद पर जीवन झा अपने अएलाह। ई संस्कृते नहि मैथिलीमे सेहो कइएक पुस्तक लिखलनि। ई रामनगरक नरेशक रामलीलासँ सेहो संबद्ध छलाह। मैथिली साहित्यमे हिनक उच्च स्थान अछि।[13]

लोकनाथ झा (1850-1920) दरभंगा जिलाक गंगौली गामक छलाह। ठाढ़ीमे नव्यन्याय पढ़लनि। हुनक कइएक छात्र पैघ विद्वान भेलथिन्ह। पहिने ओ ऋषिकेशक पाठशालामे पढ़ौलनि। तत्पश्चात् काठमांडूक एक विद्यालय धयलनि। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारमे धौतपरीक्षामे ओ न्याय विषयमे प्रथम भेलाह। हुनक कइएक प्रसिद्ध रचना अछि।

महामहोपाध्याय **जयदेव मिश्र** (1854-1925) सोदरपुर रैयाम मूलक मधुबनी जिलाक गजहड़ा गामक वासी छलाह। ओ हरिनगर ओ गन्हबारिमे व्याकरण पढ़लनि आ तकर बाद बनारसमे व्याकरण ओ दर्शनक उच्च शिक्षा प्राप्त कएलनि। तत्पश्चात् वाराणसीक दरभंगा पाठशालामे शिक्षक भेलाह। 1917 ई. मे ओ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक प्राच्यभाषाविभागक विभागाध्यक्ष भेलाह। नीक शिक्षकक अलावा ओ अद्भुत शास्त्रार्थ करैत छलाह। हुनक नामी विद्यार्थीमे छलाह गंगानाथ झा, उमेश मिश्र आदि।[14]

महामहोपाध्याय **परमेश्वर झा** (1856-1924) बलियासे सकुरी मूलक दरभंगा जिलाक तरौनी गामक निवासी छलाह। काशीक क्वीन्स कालेजमे उच्च शिक्षा पौलनि। व्याकरण, मीमांसा, वेदान्त ओ धर्मशास्त्रक उद्भट विद्वान् छलाह। न्यायशास्त्रक सेहो नीक अध्ययन कएने छलाह। बादमे अलवर स्टेटक एक पाठशाला मे शिक्षक भेलाह। ओतएसँ बिहारक बनैली स्टेटक राजा पद्मानन्द सिंहक दरबारमे अएलाह। पाँच सालक बाद आप्रवासन कएलनि गन्धबारि इयौढ़ीमे। जखन ई स्टेट राजदरभंगामे मिलि गेल, ओहो महाराज रमेश्वर सिंहक राजपण्डित भए गेलाह। काशीक भारत धर्ममहामण्डल हुनका **वैयाकरण-केसरी** क उपाधि देलकनि। ओ कतेको पुस्तक लिखलनि वा सम्पादित कएलनि। दसो संस्कार पर पुस्तिका लिखलनि। ओ *मिथिलातत्वविमर्श* मे मिथिलाक इतिहास प्रस्तुत कएलनि।

अपूछ झा (1847-1920) मधुबनी जिलाक कोइलख गामक उद्भट विद्वान् छलाह। वैयाकरण खुद्दी झा[17] हुनकर छोट भाय छलथिन्ह। अपूछ झा काशीमे लगभग दस वर्ष रहलाह। गाम घुमला पर अपन घर पर विद्यार्थीलोकनिकेँ पढ़बैत छलाह ओ छओ गोट पोथी लिखिल जाहिमे प्रमुख अछि कृष्णलीलापञ्चमणिमाला, लुप्ताब्दनिर्णय आदि।

बच्चा झा (1860-1921) गंगौली मूलक मधुबनी जिलाक नवानी गामक छलाह। छोटे वयससँ शास्त्रर्थमे निपुण छलाह। एक बेर मधुबनीमे पोखरिक यज्ञक समय कतेको पण्डितलोकनि जुटल छलाह। शास्त्रार्थमे बच्चा झाक गुरु हारि गेलाह। तकर साल भरि बाद काशीमे एहि जीतल पण्डितकेँ हरा कए बच्चा झा बदला लेलनि। काशीक तत्कालीन अखबार लिखलक जे एक बच्चा एक महान् विद्वान्केँ हरा देलक। बच्चा झा अपन गाममे एक मन्दिर आ विद्यालय बनबौलनि, ओतहि पढ़बय लगलाह। बादमे मुजफ्फरपुरक धर्मसमाज संस्कृत कॉलेजमे प्रधानाध्यापक भेलाह। जेहने उत्तम वक्ता तेहने नामी लेखक। नव्यन्यायक पद्धति पर विश्लेषण कएल हुनक अद्भुत कृतिसभ अछि। ओ कविओ नीक छलाह।[19]

खुद्दी झा (1866-1927) कोइलख गामक खौवाड़े नहास मूलक छलाह। व्याकरण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र ओ साहित्य क विद्वान् छलाह। 1894 सँ 1898 ई. धरि काशीक एक विद्यालयमे पढ़ौलनि। तकर बाद पूर्णिया जिलाक श्रीनगर स्टेट क राज-पण्डित भेलाह। 1912 मे दरभंगा महारानी अधिरानी रमेश्वरलता विद्यालयमे प्रिंसिपल भेलाह। 1920 ई. मे कलकत्ता

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विश्वविद्यायलमे मैथिलीक प्रथम व्याख्याता[20] नियुक्त कएल गेलाह। ओ शास्त्रार्थ हेतु प्रसिद्ध छलाह। आ प्रायः सभठाम जीतैत छलाह। काशीक भारत धर्म समाज हुनका **विद्यानिधिक** उपाधि देलकनि। **नागेशोक्तिप्रकाश, कन्यापरिणय समयनिर्णय** आदि ग्रन्थ विभिन्न विषय पर लिखलनि। **किछु** अप्रकाशित अछि।

विद्यावाचस्पति **मधुसूदन ओझा** (1866-1939) अपन पित्तीक संरक्षणमे जयपुरमे शिक्षित भेलाह। जयपुर महाराजक कृपासँ वेदक नामी विद्वान् होएबाक अवसर प्राप्त भेलनि। व्याकरण, ज्योतिष आदिक सेहो पण्डित भेलाह। बादमे काशीओ मे न्याय, मीमांसा ओ वेदान्त पढ़लनि। जयपुरक राजा अपन महाराजा कालेजक प्रिंसिपल बनौलथिन्ह। तत्पश्चात् स्टेटक पुस्तकालयक श्रीनिरीक्षक, मौज मन्दिर (धर्मसभा)क मुख्य प्रशासक, धर्माधिकारी आदि भेलाह। ओ वेदक विभिन्न पक्षक 77 टा पुस्तक प्रस्तुत कएलनि। इंगलैंडमे वेद पर हुनक भाषणसँ मैक्समूलर, मैकडोनेल, ब्रेडले आदि पाश्चात्य विद्वान् काफी प्रभावित भेलाह। बादमे इलाहाबाद कुम्भमेला तथा अन्य स्थानसभमे हुनक प्रभावशाली भाषाणक खूब प्रशंसा भेल।

मुरलीधर झा (1869-1929) मधुबनी जिलाक करमहे नरुआड़ मूलक भराम गामक विद्वान् छलाह। ओ श्याम सिद्धव गाममे बसि गेलाह। ओ मिथिलाक्षरक अलावा फारसी ओ कैथी सिखलनि। काशीमे ज्योतिष पढ़ि कए एहि विषयमे अध्यापक भेलाह। खगोलशास्त्रक आधुनिक सिद्धान्तसभक परम्परागत ज्योतिष शास्त्रक संग विश्लेषण कएलनि आ छओ गोट नीक पुस्तक लिखलनि। 1922 ई. मे महामहोपाध्याय भेलाह। ओ मैथिलीक प्रबल पक्षधर छलाह। **मिथिला मोदक** सम्पादक प्रकाशक छलाह।

बलदेव मिश्र (1889-1974) सोदरपुर मूलक सहरसा जिलाक बनगामक नामी ज्योतिषी छलाह। 1910 ई. मे काशी जाय अध्ययन शुरू कएलनि। 1920 ई. मे ज्योतिषाचार्य भेलाह। 1922 ई. मे काशी विद्यापीठमे गणितक शिक्षक भेलाह आ दस वर्षतक एहि पद पर रहलाह। 1936क आसपास ओ गया जिलाक खुरसुरा गामक संस्कृत विद्यालयक शिक्षक भेलाह। 1941 ई. मे पुनः काशी आबि सरस्वती भवनमे कैटलोगार भेलाह। 1951 ई. मे पटनाक बिहार रिसर्च सोसाइटी ओ काशी प्रसाद जायसवाल इंस्टीच्यूटसँ सम्बद्ध छलाह। 1933 ई. मे ओ इन्दौरक ज्योतिष सम्मेलनमे भाग लेलनि। 1948 ई. मे विजयवाड़ा पंचांग सम्मेलनक ज्योतिष विभागक सभापतित्व कएलनि। मैथिलीमे ओ कतेको महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक रचना कएल।

महामहोपाध्याय **मुकुन्द झा 'बक्सी'** (1869-1937) करमहे मूलक लोक छलाह। मधुबनी जिलाक ढेँगा हरिपुरक ओ निवासी छलाह। उत्तर प्रदेशक बरेलीमे एक संस्कृत विद्यालयक ओ 1895 मे शिक्षक भेलाह। बादमे ओ ग्वालियर स्टेटक दरबारमे पंडित भेलाह। 1907 ई मे दरभंगाक महारानी लक्ष्मीवतीक दानाध्यक्ष भेलाह। 1919 ई. मे मुजफ्फरपुर संस्कृत कालेजक कर्मकाण्डक प्रोफेसर भेलाह। अवकाश प्राप्तिक बाद ओ पटियाला महाराजक राजपण्डित भेलाह। कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, निरुक्त, व्याकरण ओ दर्शन पर कतेको पुस्तक लिखलनि। संस्कृतमे काव्यरचना कएलनि आ मैथिलीमे मिथिलाक इतिहास लिखलनि।[21]

महामहोपाध्याय **गंगानाथ झा** (1871-1941) पालिवार मूलक मधुबनी जिलाक पाहीटोल सरिसबक निवासी छलाह। दरभंगाक बाद काशी ओ इलाहाबादमे उच्च शिक्षा प्राप्त कएलनि। 1902 ई. मे म्योर कालेज इलाहाबादमे संस्कृतक व्याख्याता भेलाह। 1918 मे काशीक गवर्नमेंट संस्कृत कालेजक प्रिंसिपल आ 1922 ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक वाइस चान्सलर भेलाह। इलाहाबादमे जे घर बनौलनि ओकर नाम 'मिथिला' रखलनि। डा. झा 1907 ई. मे प्रसिद्ध विद्वान् डा. थीबोक संग Indian Thonght नामक पत्रिका चलौलनि। 1909 ई. मे डा. झाकेँ डी. लिटक डिग्री आ 1910 ई. मे महामहोपाध्याय उपाधि भेटलनि। डा. झा चिन्तक छलाह। ओ 34 टा पोथीक अनुवाद अंग्रेजीमे कएल। 21 टा मौलिक ग्रन्थ लिखल। कतेको पुरान पाण्डुलिपिक सम्पादन कएल। दर्शन आ धर्मशास्त्रमे लोकक रुचि जगाओल। स्वतंत्रता संग्रामक दिस लोकक ध्यान आकृष्ट कएल।[22]

पं. गंगाधर मिश्र (1875-1973) सहरसा जिलाक चैनपुर गामक निवासी छलाह। 1905 ई. मे काशीक क्वीन्स कालेजमे प्रवेश कएलनि आ ज्योतिष विषयक आचार्यक परीक्षामे प्रथम अएलाह। जीविकाक खोजमे जयपुर स्टेट गेलाह। बादमे प्रतापगढ़ स्टेटक संस्कृत कालेजमे ज्योतिष विषयक शिक्षक भेलाह।

पं. बबुआजी मिश्र (1878-1959) मधुबनी जिलाक कोइलख गामक प्रसिद्ध ज्योतिषी छलाह। कलकत्ता विश्वविद्यालयक खगोलशास्त्र विभागमे पहिने बहाल भेलाह। एहि ठाम सुनीति कुमार चटर्जी आ पं. खुदी झा आदिक सहयोगसँ ज्योतिषक कतिपय प्राचीन ग्रंथक सम्पादन कएलनि। किछु दिन मैथिलीक व्याख्याता सेहो छलाह। ओ दरभंगा राजक 'धौतपरीक्षोतीर्ण' भेलाह। सुनीति बाबूक संग *वर्णरत्नाकरक* सम्पादन कएल। भास्कराचार्यक *सिद्धान्तशिरोमणिक* आलोचनात्मक टिप्पणी लिखलनि। 'अयनांश' नामक लेख छपौलनि आ 'एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल'क पत्रिकामे श्रीपति भट्टक *सिद्धान्तशेखर* पर टिप्पणी लिखलनि।

गिरिधारी मिश्र (उनैसम शताब्दी) कोइलख ग्राम निवासी दरभंगाक राजा नरेन्द्रसिंह आ राजा प्रताप सिंहक दरबारमे पंडित छलाह। ओ पैघ ज्योतिषी छलाह। बादमे ओ रीवा स्टेटक राजाक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

दरबारमे प्रवेश पौलनि आ ओहिठामक आमदनीसँ अपन गाममे 50 बीघा जमीन किनलनि ।

हरिहरे रतौली मूलक ठाढ़ी गामक **पं. शिवशंकर झा** (1860-1932) 18 वर्षक आयुमे काशी चल गेलाह आ ओतय व्याकरण आ दर्शन पढ़लनि । 1899 ई. मे दरभंगा राजक 'धौतपरीक्षोत्तीर्ण' भेलाह । प्रथम अएलाक कारणेँ पुरस्कृत कएल गेलाह । किछु वर्ष काशीमे अध्यापन कए अमृतसर (पंजाब) चल गेलाह । राम वल्लभ श्यामदास संस्कृत पाठशालामे किछु वर्ष काज कएल । 1918 ई. मे पं. झा लोहनाक महारानी महेश्वरलता विद्यालयक प्रधानाध्यापक भेलाह । 10 वर्षक बाद मुजफ्फरपुरक धर्मसमाज संस्कृत कालेजमे चारि वर्ष धरि अध्यापन कएलनि । ओ शास्त्रार्थ मे खूब नाम कएलनि ।

पं. शिवशंकर झाक भाय **पं. हरिशंकर झा** (1868-1940) लगभग 25 वर्ष उत्तर प्रदेशक बाँस बरेलीक पाठशालामे शिक्षक छलाह । व्याकरण ओ साहित्य पर परीक्षाकेँ ध्यानमे रखैत, *मनोरमा* एवं *शब्देन्दुसुधा* आदि पुस्तक लिखल ।

बालबोध मिश्र (1879-1948) उच्च शिक्षाक हेतु काशी गेलाह । क्वीन्स कालेजमे व्याकरण, साहित्य ओ दर्शन पढ़लनि । नव्यन्याय पढ़लनि । सरकारी संस्कृत कालेजक तर्कशास्त्रक आचार्य परीक्षा पास केनिहार ओ पहिल विद्यार्थी छलाह । तत्पश्चात् ओ आओरो विषयमे आचार्य परीक्षा पास कएलनि । पहिने किछु जैन भिक्षु सभकेँ पढ़ौलनि । अलवर स्टेटक शिक्षा अधीक्षक पं. रामभद्र झाक कृपासँ ओतय गेल छलाह । मुजफ्फरपुर धर्मसमाज कालेजमे वेदान्त ओ मीमांसाक शिक्षक भेलाह । अवकाश प्राप्तिक बाद हिन्दू वि. वि. बनारसमे मीमांसा पढ़ौलनि । ओ प्रशस्ति लिखबामे निपुण छलाह । ओहिमे सँ किछु अछि- मुजफ्फरपुर जिलाक चोरौतक महन्थ, काशीक वैद्यराज व्रज विहारी चतुर्वेदी ओ हुनक पुरखालोकनि आदिक ।

मार्कण्डेय मिश्र (1879-1952) मधुबनी जिलाक सरिसब ग्रामक निवासी छलाह । दरभंगा आ काशीमे अध्ययन कएल। आरम्भमे अपन गामक महारानी लक्ष्मीवती विद्यालयमे व्याकरण पढ़ौलनि। बादमे राजस्थानक उदयपुर स्टेटक दरबारमे नियुक्त भेलाह । किछु दिनक बाद राजपंडित भेलाह । संगहि ओतय महाराणा कालेजक प्रिंसपल भेलाह । न्यायमे शास्त्रार्थ करबाक हेतु नामी छलाह । महाराज जखन टूर पर जाथि हुनका संग लए जाथिन । एक बेर प्रसिद्ध विद्वान करपात्रीजीक भाषाणक कतेको बातकेँ मिश्रजी काटि देलनि । अन्तमे ओ उदयपुरमे बसि गेलाह ।

म. म. बालकृष्ण मिश्र (1888-1942) मधुबनी जिलाक नवटोल (सरिसब-पाही) गामक सोदरपुर दिगौन मूलक छलाह । नव्य न्यायक अद्भुत विद्वान् भेलाह । कतेको शास्त्रार्थमे जितलाह । दरभंगाक एक राजपाठशालामे शिक्षक भेलाह । आठ वर्षक बाद मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत कॉलेजमे वेदान्तक प्रोफेसर भेलाह । एहि पद परसँ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक संस्कृत कालेज चल गेलाह । ओ पाँचगोट पुस्तक लिखलनि । ओहि मे प्रमुख अछि *लक्ष्मीश्वरीचरित चम्पू, तात्पर्यविवृति प्रकाश, विद्यापतिक संगीतक* सम्पादन आदि ।

किछु पंडितलोकनि कार्नवालिसक दबामी बन्दोबस्तक चलैत अपन जमीन गमा बैसल छलाह तेँओ आमदनी बढ़ैत देरी अपन गाम आ आप्रवासनक क्षेत्रमे जमीन कीनैत छलाह । वा कोनो राजा हुनका जागीर देथि तँ सहर्ष स्वीकार करथि । मिथिला क्षेत्रमे कोशी, कमला, बलान, बूढ़ी गंडक, गंगा आदिक प्रकोप ओ नदीसभक धारक बदलाव[23] पंडितलोकनिक जीवन-यापन कठिन कए दैत छलनि । तेँ ओँ प्रवासी भेला पर अधिक काल दूरे बसि जाएब ठीक बूझैत छलाह ।

प्रवासी मैथिललोकनिक ओ हुनकर संबंधी वा परिवारक लोकक मनोवैज्ञानिक स्थिति पर ध्यान देब आवश्यक अछि। प्रवासी मैथिलक आर्थिक स्थिति बदलैत देरी हुनक रहन-सहन, बोलचाल आ पूरा दृष्टिकोण बदलि जाइत छलनि । यदि पहिने ओ गर्दनि पर एक छोट गमछा रखैत छलाह आ गंजियो नहि पहिरैत छलाह तँ आब नीक चादरि राखथि आ मिरजइ ओ नीक जूता पहिरथि, पान-जर्दा ओ किमाम खाथि, भाँग मशाला दए कए पीबथि । आब यजन-याजन कराएब, पोखरि खुनाएब, फूसक घरक स्थान पर पक्का मकान बनाएब प्रायः संभव भए जाइत छलनि ।

गाम घुरला पर हुनक महत्व पहिनेसँ काफी बढ़ि जाइत छलनि । मुदा किछु लोक हुनकासँ ईर्ष्या सेहो करैत छलनि । संभव जे धनिक पंडितक घरमे चोरी, डकैती सेहो भए जाइत होनि। परंच आप्रवासनसँ बेशी फाइदे छल । मिथिला समाज बाहरक पैसा आओर विद्या पाबि सामाजिक ओ आर्थिक क्षेत्रमे परिवर्तित होइछ। एहि हिसाबेँ प्रवासी पंडितलोकनि परिवर्तनक एजेन्ट्स (Agents of change) छलाह । मिथिलाक संस्कृतिक छाप ओ भारतक विभिन्न भाग ओ नेपाल पर छौड़ैत छलाह । आ बाहरसँ कइएक क्षेत्रक संस्कृति ओ अर्थव्यवस्थाक प्रभाव मिथिला पर अनैत छलाह । दक्षिणक कोंकण क्षेत्रमे एखनहुँ मैथिल पंडितलोकनिक धार्मिक रीति-रिवाज, बलिप्रदान ओ तांत्रिक पद्धति आदिक प्रभाव अछि, जेना कामरूप कामाख्यामे अछि ।

इन्डेंचर प्रथाक अधीन जे लाखो लोक बाट धए आसाम क्षेत्रमे गेल आ समुद्रक रस्ते मौरिशस, वेस्ट इण्डीज, आदि गेल ओहिसँ पंडितलोकनिक आप्रवासन भिन्न छल । पंडितलोकनिक संख्या मजदूरक संख्यासँ काफी कम छल । दूनू प्रवासी छलाह ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मुदा इन्डेनचरक मजदूरलोकनि ठीका-पट्टा कए कैँ जाइत छलाह, पंडितलोकनि स्वतंत्र रूपेँ जाइत छलाह। मजदूर लोकनि मुख्यतः छोट जातिक अनपढ़ लोक छलाह जखन कि पंडितलोकनि खूब पढ़ल-लिखल ओ मुहगर-अँखिगर लोक छलाह।

मैथिल पंडितलोकनि मिथिला वा ओकर कात-करोटक राज़दरबारमे रहब पसीन करैत छलह, जेना दरभंगा, बेतियाराज, बनैली, श्रीनगर। किछु लोक राजस्थान, मध्यप्रदेश, नेपाल, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु ओ महाराष्ट्र, किछु बंगाल ओ आसाम तथा उत्तरप्रदेश गेलाह। एखनुका पाकिस्तानमे सिन्ध, मुलतान ओ कराँचीमे किछु पंडित छलाह। आ आधुनिक बंगलादेशमे ढाका धरि गेलाह। दक्षिणमे किछु लोक विजयनगर तक गेलाह। पूब मे पुरी आ पश्चिममे द्वारका धरि गेलाह। उत्तरमे काठमाण्डू आ उत्तर-पश्चिममे श्रीनगर तथा उत्तरपूर्वमे कामरूप धरि। प्रायः प्रवासी विद्वान् लोकनिमे बुद्धि ओ साहस तथा तुरन्त जवाब देबाक क्षमता छलनि। ओ लोकनि चरित्रक पक्का छलाह तथा साहसी छलाह। हुनकामे नाम करक महत्वाकांक्षा छलनि। प्रायः राजा ओ राजकुमारलोकनि हुनक चरणरज लैत छलाह ओ यथेष्ट विदाइ, स्वर्ण ओ नकदी टाकामे करथि। खास कए तांत्रिक ओ ज्योतिषीकेँ गुरू ओ रक्षा कएनिहार कहल जाइन्ह। क्यो-क्यो धन बटोरि आनथि तथा स्वजन-परिजनक संग घी-मलीदा ओ विभिन्न व्यंजनक भोग करथि तँ किछु गोटय अपन बंधुलोकनिकेँ अपन प्रवासक नगरी वा क्षेत्रमे बसाबथि। विशेष सम्पत्ति अर्जित करथि।[25] मध्यप्रदेशक किछु क्षेत्रमे मैथिल टोल एही प्रकारेँ बसल अछि। मिथिलाक किछु भाग ओना 1815 क सुगौली सन्धिक अनुसार नेपालक राज्यमे चल गेल छल, मुदा बहुतोठाम ओहिठाम पंडितलोकनिक अथवा हुनक उत्तराधिकारीक जमाव अछि कारण आधुनिक कालमे पंडितलोकनि ओहि क्षेत्रमे प्रवासी भए कए गेल छलाह वा जागीर पौने छलाह।

प्रतिग्रह वा राजा-रजवाड़ासँ दान लेनाइ शास्त्रक अनुसार विद्वान्-ब्राह्मणक हेतु उचित छल, घरमे बरोबरि रहले पर के दान देत? आधुनिक कालमे पण्डितलोकनि प्रायः सालमे एक बेर धन-प्राप्तिक हेतु बाहर जाइत छलाह ओ घरसँ काफी दूर जाकए बसिओ जाथि। कैक तरहक दान, विशेषतः जमीन जायदादक दान आप्रवासनक जड़िमे छल।[26]

प्रवासीलोकनि अध्यापन एक धार्मिक कर्त्तव्य बूझैत छलाह। गुरु-दक्षिणाक रूपमे द्रव्य वा वस्तु लेब अन्यथा नहि मानल जाइत छल।

ओना तँ आठम शताब्दीक अन्तसँ मैथिल पंडितलोकनिक आप्रवासन आरम्भ भए गेल छल किन्तु उन्नैसम ओ बीसम शताब्दीमे सबसँ बेशी आप्रवासन भेल। एहिमे ज्योतिषी ओ तांत्रिकक पाँचो आँगुर घीमे छलनि। बहुधा पंडित लोकनि परिवार छोड़ि कए जाइत छलाह कारण स्त्री ओ बच्चाकेँ लए जाएब सुरक्षाक दृष्टिसँ ठीक नहि छल। पत्नी बहुधा कैक वर्ष स्वामीक घुरबाक प्रतीक्षा करैत छलीह।[27] बंगाल, आसाम, मध्यप्रदेश, राजपूताना, कश्मीर, उत्तरप्रदेश, नेपाल, चम्पारन आदिमे जे प्रवासी मैथिलक टोल सब अछि से कोनो ने कोनो उच्चाभिलाषी साहसी मैथिल पंडितक द्वारा आरम्भमे बसाओल गेल जकरा पर कोनो राजकीय परिवारक कृपा भए गेल छलैक।[28]

किछु प्रवासी मैथिल यात्रा-वृत्तान्त लिखलनि जेना *कश्मीर यात्रा*। किछु पंडित पत्रकारो भए गेलाह आ पत्रिका सेहो चलौलनि। जयपुरसँ विद्यावाचस्पयति मधुसूदन झा ओ पं. चन्द्रदत्त झा मिलि कए एक मासिक मैथिली पत्रिका *'मैथिल हित साधन'* चलौलनि। वाराणसीक प्रवासी मैथिल मिथिला मोद चलौलनि। प्रवासी मैथिल मिथिला ओ मैथिल पर पुस्तक वा लेख सभ छपबैत रहथि।

मैथिल पण्डितक आप्रवासनक स्पष्ट प्रभाव जनार्दन झा जसीदनक उपन्यास *'निर्देयी सासु'*[29] मे अछि। जोतिषीक द्वारा अपन कन्या शारदाकेँ साक्षर कराएब आ फेर हरिसिंहदेवी व्यवस्थाकेँ तोड़ब, आप्रवासनहिक परिणाम थिक।

ई कहल जा सकैछ जे मिथिला वा भारतक इतिहासमे मैथिल पंडितक आप्रवासन एक महत्वपूर्ण विषय थिक जकर दूरगामी परिणाम दूनू छोर पर, जतयसँ गेलाह आ जतय पँहुचलाह, पड़ल अछि।

संदर्भ

1. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, जिल्द 12, लंदन 1977 ई.।
2. J. C. Jha—*Migration & Achievements of Maithil Pandits*, Patna 1991, Page 14.
3. Bengal Criminal Judicial consultations 18-19, 29.11. 1814.
4. नगेन्द्र कुमार–*पूर्णिया रिपोर्टर्स*, मौखिक।
5. जे. सी. झा–उपरि लिखित पृ. 151.
6. तत्रैव।
7. तत्रैव।
8. एस. एन. सिंह–*हिस्ट्री आफ तिरहुत*, पृ. 126-27.
9. पिलखवाइमे मार्च 1983— हुनक उत्तराधिकारी शंकर कुमार झाक कथन पर आधारित।
10. मेडिकल प्रेस, वाराणसी 1864—12 टा ग्रन्थ प्रकाशित, यथा– प्रश्नाधिकारव्याख्या ओ क्षेत्रपरीक्षा आदि।
11. जे. सी. झा– *एजुकेशन इन बिहार*, पटना 1979, पृ. 8.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

12. न्याये टा नहि, धर्मशास्त्र तथा व्याकरणमे ओ कैकटा पुस्तक लिखल ।
13. *सुन्दर संयोग, पुनर्जन्म, नर्मदा सागर, शृंगार साम्य, प्रभुचरित* इत्यादि । खड़ी बोलीमे सेहो लिखलनि । मि. मो., उद्‌गार 67/1922 ।
14. मिथिला मिहिर, 20 मई 1961 ई. ।
15. *The Autobiographical Notes of Dr. Sir Ganga Nath Jha* P, 34-35.
16. बलदेव उपाध्याय– *काशी की पाण्डित्य परंपरा*, पृ. 513.
17. एहि लेखक रचनाकार एही वंशक छथि ।
18. बलदेव उपाध्याय–*काशीकी पाण्डित्य परंपरा* ।
19. रामलोचन शरण जयन्ती स्मारक ग्रथ, पृ. 146-47.
20. दमनकान्त झा–'पण्डित खुद्‌दी झा', चेतना समिति स्मारिका 1978 ई./भीमनाथ झा, मि. मि., 25 मई 19691 ई.
21. डा. जे. सी. झा–उपरिलिखित, पृ. 181; तथा डा. जे. सी. झा–*The History Books is Maithili*—शान्ति निकेतन ।
22. S. P. Sen (Ed.)—*Directory of National Biography* Calcutta 1973, P. 240.
23. Dr. J. C. Jha— *Aspects of Islander Inland Emmigration to North East India (1859-1918)*, New Delhi, 1996. P. 23.
24. डा. जे. सी. झा– *इंडियन हेरिटेज इन त्रिनिडाड*, 1977.
25. डा. उपेन्द्र ठाकुर–*संस्कृत लर्निंग इन मिथिला अन्डर खंडवला डायनेस्टी*, बिहार रिसर्च सोसाइटी 1962
26. डा. जे. सी. झा–*माइग्रेशन एण्ड अचीभमेंट*, उपरिलिखित
27. भोजपुरी बटोहिया गीत ।
28. Descriptive Catalogue of Mithila Manuscripts.
29. *निर्दयी सासु; पुनर्विवाह*–डा. रमानन्द झा 'रमण' (सम्पा.) ।

मिथिलाक दुइ रामायणमे मौलिक उद्‌भावना

□ डा. श्री रामचन्द्र मिश्र

महाकवि लालदास कृत *'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'* (वि0 सं0 2011) *वाल्मीकिरामायणक* तथा मैथिल कवि चन्दा कृत मैथिली रामायण मिथिला भाषा रामायण, प्रथम संस्करण, ई. 1891-वि0 सं01948) *अध्यात्मरामायणक* कथा-शिल्प आ मूलादर्शक ऋणी अछि । दुनू रस-सिद्‌ध कवि छलाह, जाहिसँ दुनू रामायण मैथिली भाषा -साहित्यमे अपन स्थान सुरक्षित राखल अछि आओर आइ धरि मैथिललोकनिक साहित्यिक, सामाजिक आ आध्यात्मिक भावना आ जिज्ञासाक तृप्ति करैछ ।

आत्माक संकल्पात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्तिए काव्य संज्ञा प्राप्त करैत अछि, जे साधारणीकरणक माध्यमसँ मानवीय सुख, तृप्ति आ आनन्दक साधन छैक । एहि काव्य-शास्त्रमे काव्यानन्द अछि, जे 'ब्रह्मानन्दसहोदर' मानल गेल छैक । कहबाक आवश्यकता नहि जे, दुनू कवि अपन उद्‌दिष्ट रामायणक रचना-धर्मितामे आधारभूत वाल्मीकिरामायण आ अध्यात्मरामायणक कथ्य आओर तथ्यक अतिरिक्त मिथिला भूमिक चित्रण तथा सामान्य आ असामान्य लोक-जीवनमे प्रचलित आचार-विचारक सम्यक् प्रतिबिम्ब प्रस्तुत कयने छथि, जे पाठक अथवा श्रोताक मानसकेँ स्पर्श करैत छैन्हि । फलतः दुनू कविक संकल्पात्मक अनुभूतिक अभिव्यक्ति सार्थक आ सफल अछि । साथहि ओ स्थल सभ मौलिक उद्‌भावनाक परिचायक अछि ।

वाल्मीकिरामायण आ अध्यात्मरामायण दुनू चरितात्मक राम-काव्य थिक, प्रथम चरित्रप्रधान छैक आ द्‌वितीय अध्यात्म प्रधान । मौलिक वाल्मीकिरामायणमे मात्र मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामक चरित्र, जे महर्षि नारद आदिकवि बाल्मीकिकेँ वर्णित कयने छलाह काव्य-रूपमे सुनियोजित भेलैक । प्रसंगतः ई उल्लेखनीय अछि जे, आदि कवि द्‌वारा रामक साथ रामायणक अवशिष्ट पात्रो मर्यादा आओर विशिष्ट मानवीय आदर्शमे संगुम्फिल रहल छथि, परन्तु कालान्तरमे जखन श्रीरामकेँ विष्णुक मानवीय अवतारूपमे मान्यता प्राप्त भेलनि तखन परम्परित रामायणहुमे रामक अवतारी परमात्मरूप चित्रित भेल आओर प्राचीन पाठक अंग बनल । कहबाक आवश्यकता नहि, ई सभ जुड़ल पाठ तथा रामायणक बालकाण्ड आ उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त अछि ।

अध्यात्मरामायण 14 म-15 म ईस्वी शताब्दीक रचना थिक, तखन धरि श्रीरामकेँ विष्णुक अवतारक मान्यता प्राप्त[2] भए गेल छलनि फलतः प्रस्तुत रामायणमे (श्रीरामकारण) अध्यात्मतत्व आरम्भहिसँ अछि । मुदा ई सत्य थिक जे ई दुनू रामायण भारतीय साहित्य आ संस्कृतिक आदर्शात्मक आ ऐतिहासिक काव्य थिक ।

दुनू रामायणमे महाकाव्यक लक्षण परिपुष्ट अछि,[3] परन्तु एकर सन्दर्भमे हम 'महाकाव्यक रूप' संज्ञक शीर्षकक अन्तर्गत विचार करब । सम्प्रति दूनू रामायणक प्रस्तावना-अंश विचारणीय

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

छैक। काव्य-शास्त्रानुसार आरम्भमें आशीर्वाद, नमस्कार आ वर्ण्य विषयक निर्देश होइत अछि।[4] एकर अतिरिक्त तत्कालीन शासकहुक संकेत रहैछ।

चन्दा झा अपन रामायणमे सर्वश्री शारदा, गणेश, शिव, कार्तिकेय, विष्णु आ रामक[5] तथा लालदास अपन रामायणमे सर्व श्री लक्ष्मीरूप सीता, राम, गणेश, हर, गौरि, शारदा, लक्ष्मीक दश रूप, विष्णुक दशावतार, हनुमान, वाल्मीकि आदिक स्तुति-गान कयल अछि।[6] दूनू कवि अपन-अपन श्रद्धेय आलम्बनक समक्ष सभक्ति नत भेल छथि। चन्दा झा आरम्भहिमे आत्मचरितात्मक[7] मिथिला नरेश लक्ष्मीश्वर सिंहक प्रति[8] आ मैथिलीक[9] प्रति अपन सद्भावनापूर्ण आत्मिक भावना व्यक्त कयल अछि।

वाल्मीकि रामायणक बालकाण्डक आरम्भमे कोनो प्रकारक स्तुति नहि अछिं। श्रीराम-चरित्रविषयक नारदोक्तिक अनन्तर, रामायणकाव्यक उपक्रम प्रस्तुत अछि। एहि सन्दर्भमे अध्यात्मरामायणक स्थिति भिन्न अछि, एकर बालकाण्डमे 'राम-हृदय' आ 'राम-स्तुति' समुपस्थित अछि[10]।

चन्दा झा आ लालदास महाकवि होयबाक साथ भक्तो छलाह, फलतः हुनक दुनू स्वरूप अभीप्सित रामायणमे प्रतिफलित भेल छैक। हुनक रामायणक प्रत्येक काण्डक आरम्भमे मंगलाचरण आ ओकर साथहि सम्बन्धित काण्डक वर्ण्य वस्तुक संकेत अछि। एहि प्रकारेँ प्रत्यैक काण्डक अन्तमे संस्कृत नाटकक सदृश शिवत्व-सम्पृक्त भरत वाक्य आ ओकर साथहि अग्रिम काण्डक विषय-वस्तु तथा तद्विषयक प्रतिक्रिया अथवा प्रतिफलन इंगित छैक। हँ, लालदासक मिथिला-रामायणमे अयोध्याकाण्ड, लंकाकाण्ड, उत्तरकाण्ड, आ पुष्करकाण्डमे मंगलाचरण अथवा वन्दना नहि अछि, परन्तु ततय हुनक आस्तिकता अवश्य प्रस्फुटित छैक। इंगित सन्दर्भमे दुनू रामायणक आरण्यकाण्डक उद्धरण द्रष्टव्य छथि :

(क) *भ्रमन्तौ कान्तारे क्षयितदनुजौ त्यक्तनगरौ*
किशोरौ सद्वीरौ जनकतनया- रक्षणपरौ।
जटावन्तौ दान्तौ करकमल-चापाशुगधरौ
सदा पायस्तान्नो दशरथतनूजौ नरवरौ॥

–मैथिली रामायण, आरण्यकाण्ड, आरम्भ।

प्रभु पम्पापुर जाउ, किष्किन्धा सुग्रीव छथि।
सीता वार्ता पाउ, करु चरित्र माया-रचित॥
प्रभुपद-कमल निहारि, महाभक्ति सम्प्राप्त से।
योग-अग्नि तन जारि, भक्तिमती कयलनि तथा॥

–ऐजन, अन्त।

(ख) *मुनीन्द्रचयमानिता पथि विराधभीतिं गता,*
स्वकान्तबलहर्षिता तदनु पंचवट्याश्रिता।
हुताशनमुपागता दनुजवैरिभावावृता,
सती दशमुखाहृता ह्यवतु देवकार्य्यस्थिता॥
विराधवधकारको दशमुखानुजात्रासकः,
खराद्यसुरनाशको मुनिजनार्तिसंच्छेदकः।
हिरण्मयमृगान्तको हिमजटायुषस्तारकः,
सरोवरनिरीक्षकः शवरिकातिथिः पातु माम्॥

–मिथिला रामायण, आरण्यकाण्ड, आरम्भ।

बझला जौं मन मीन, अति दुस्सह भवजालमे।
मन जनु करह मलीन, जल प्रवाह श्रीपद सुमरि॥
चितचातक जनु चिन्त, गलि जायत करका कलिक।
सियाराम पद चिन्त, स्वाती जल निर्मल सुखद॥

–ऐजन, अन्त।

विवेच्य दुनू रामायणक आरण्यकाण्डसँ आदि आ अन्तक काव्यांश उद्धृत कयल गेल अछि, जाहिमे रचनाकारक शास्त्रीय सिद्धान्त पुष्ट छैकाँ संगहि इहो उल्लेखनीय अछि, दुनू मैथिली भाषाक महाकवि थिकाह, परन्तु इंगित कवि-कर्मक हेतु संस्कृत भाषा अपनओलनि।

चन्दा झाक रामायणक उपजीव्य *अध्यात्मरामायण* अछि, जाहिसँ हुनक रामायणमे पग-पग स्तुति आ प्रशस्ति समुपलब्ध अछि। जेना, बालकाण्डमे परशुराम द्वारा रामक स्तुति, अयोध्याकाण्डमे शिवस्तुति तथा स्तुति रूपमे 'राम-सीताक प्रशस्ति' आओर अन्तमे कवि-प्रार्थना *(जय जय रघुनन्दन देव देव.....मां पालय पालय दयागार)*, आरण्यकाण्डमे रामक प्रशस्ति तथा शबरीक स्तुति, कष्किन्धाकाण्डक अन्तमे कवि-प्रार्थना, सुन्दरकाण्डमे हनुमान-प्रशस्ति, लंकाकाण्डमे राम आ शिवक स्तुति, उत्तरकाण्डमे राम-स्तुति आदि-आदि। समग्र स्थल पर हुनक आस्तिकतामे 'प्रपत्ति' भाव पुष्ट अछि, साथहि जागतिक कल्याणक कामना आ भावना सुनियोजित अछि।

चन्दा झाक समान लालदासक रामायणमे स्तुति आ प्रशस्ति - गान अवश्य नहि अछि, मुदा आस्तिक होयबाक कारणे हुनक रामायणमे 'प्रपत्ति' समाहित निष्ठा आ भक्ति आद्यन्त प्रवहमान छैक।

जनकात्मजा सीता मिथिलाक आदर्श दुहिता, आजीवन कष्टमे रहनिहारि (जनकक कथानानुसार : 'पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ', तुलसीदासः रामचरितमानस) सफल गृहिणी, दैवी शक्तिक साथ अवतरित भगवती छलीह। हुनक परिणय-संस्कार मर्यादा पुरुषोत्तम रूप अथवा विष्णु रूप रामक साथ मिथिलाक एक अलौकिक सुयोग आ संयोग छल, जे जन्म

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

देनिहारि अपन मातृभूमिहिक नहि वरन् समग्र देशक सांस्कृतिक आधार बनलीह आओर तत्सम्बन्धी परम्परित आदर्श आइ धरि चिर-अक्षुण्ण अछि।

सीता-स्वयंवरक कारण धनुष-यज्ञमे राम-लक्षणक साथ विश्वामित्र तथा देशक भूपतिलोकनिक आगमन, पुष्पवाटिकामे सीता आओर राम, राम-लक्ष्मणक धनुष-यज्ञ निरीक्षण, सीता-रूप, सीता द्वारा रामकेँ माल्यार्पण, दशरथक जनकपुर आगमन, राम चारू भाइक विवाह, विवाह-संस्कार, सीता तथा भगिनि सभक बिदागरी, समदाउनि, प्रत्यागमन पर अयोध्याक मार्गमे शिवक धनुष-भंग पर परशुरामक क्रोध तथा राम द्वारा हुनक पराजय आदि-आदि सभक सजीव चित्रण दुनू महाकवि मनोयोगसँ कयने छथि।[11] साथहि ई तथ्य उल्लेखनीय अछि, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्मरामायण तथा देशक अन्य रामायणसभमे राजा जनकक राजकीय, दार्शनिक, सांस्कृतिक आदि वैभव आ गरिमाक वर्णन आ विवरण सुनियोजित अछि,[12] परन्तु विवेच्य दुनू रामायणक रचनाकार मिथिलाक छलाह, फलतः एकर अभिव्यक्तिमे हुनक आत्माभिव्यंजन पूर्ण मौलिक अछि।

'स्वर्गादपि गरीयसी' मातृभूमिक आत्माभिव्यंजनक प्रधान चित्रण द्रष्टव्य थिक :

शालि-गोप गीतिकाँ सुप्रीति रीति सूनि-सूनि।
खेत शस्य खाथि ने कुरंग आँखि मूनि-मूनि॥
सत्य तीरहूति यज्ञ-भूमि पुण्य देनिहारि।
शास्त्रकेँ बजैत बेस कीर वैसि डारि-डारि॥

... ...

नदी-मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्यसौँ सम्पन्न।
समय सिर पर होय वर्षा बहुत संचित अन्न॥
दयायुत नर सकल सुन्दर स्वच्छ सभ व्यवहार।
सकल विद्या-उदधि मिथिला विदित भरि संसार॥

–मैथिली रामायण, पृष्ठ 31-32।

मिथिला देश परम अभिराम। सकल लोक पावन सुखधाम॥
चलयित देखल कति असथान। धन धान्ये सम्पन्न महान॥
आम्र सुकानन पनसोद्यान। सुभग सुशीतल छायावान॥

... ...

ई मिथिला सब विधि सुखवास। जतय कयल लक्ष्मी आवास।
ऋद्धि सिद्धि सभ जतय विराज।
बसथि अमित सुरमुनिक समाज॥

–मिथिला रामायण, पृष्ठ 39 आ 43।

भारतीय संस्कृतिक निर्माण आ प्रसारणमे मिथिलाक प्रमुख सहयोग रहल अछि, ई तथ्य तथा ऐतिहासिक विवरण दुनू महाकविकेँ अवगत रहल अछि। फलतः हुनक चित्रणमे आत्मीयता अछि। पंक्तिसभ मे चंचला छन्दमे विरचित *शालि-गोप .....डारि-डारि* मे एक विशेष प्रवहशीलता अछि आ अनुकरणीय लय छैक। एहि प्रकारक कवि चन्दा झाक आत्माभिव्यंजन विशेष स्निग्ध आ मधुर अछि। सीता अप्रतिम सुन्दरी आ स्पृहणीय रूपवती छलीह, हुनक लावण्य आ मनोमोहकताक चित्रण दुनू रामायणमे अभिव्यंजित अछि।

ततय सखी संग बहुत कुमारि। विधुर पूर विधु सुमुख निहारि॥
कमल हरिण खंजन ओ मीन। तनि लोचन जित सोचहि दीन॥
अति कृश कटि करकश कुचभार। सुन्दरता सौँ जित संसार॥
कुटिल सुचिक्कन केश विशाल। अंग अलंकृत शोभित माल॥
जनिकर सुनल पिकी निक गान। गान-मानहत अंग मलान॥
सुनि नूपुर हंसक धुनि सार। उपवन राम नयन संचार॥
लक्ष्मण काँ पूछल छल-हीन। श्रुति मानस भेल धुनिक अधीन॥

–मैथिली रामायण, पृष्ठ 36।

नवयौवन-युत जनककुमारि। युवती सकल सखी वर नारि॥
भूषण-वसन सुभग तन राज। किंकिणि नूपुर अनुपम बाज॥
सीता सखिक संग तेहि ठाम। टहलि-टहलि देखथि आराम॥
गति विलोकि लज्जित गजराज। राजहंस पुनि पावथि लाज॥

–मिथिला रामायण, पृष्ठ 45।

प्रसंगतः ई उल्लेखनीय जे वाल्मीकिरामायण आ अध्यात्मरामायणमे विवाह-संस्कारक समग्र समारोह विस्तारसँ वर्णित नहि अछि, ओकर तुलनामे मैथिली भाषाक दुनू रामायणकार द्वारा अधिक समारोह वर्णित कयल गेल छैक, जे अपन प्रादेशिक समारोहक अनुकरणमे अछि।[13] 'विधिकरी' संस्कार धरि नहि त्यागल गेल अछि, जाहिमे जनकपुरीक नारी समाज आ रामक हास-परिहास अछि *(मिथिला रामायण,* पृष्ठ 65-66)।

चन्दा झा शैव आ लालदास शाक्त छलाह परन्तु राम आ सीताकेँ ओ अपन रामायणमे कखनहुँ विस्मृत नहि कयने छथि। राम भगवान् छथि आ सीता भगवती रूप योगमाया, जे संसारक मूलाधार छथि। हुनक सन्दर्भमे दुनू महाकविक श्रद्धा भावना आ कामना दुनू रामायणमे सर्वतः समुपस्थित छैक।

विवेच्य दुनू रामायणक उपजीव्य चर्चित रामायण रहल अछि, साथहि ओकर कथा-सूत्र आ आदर्शकेँ मैथिली भाषाक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रामायणमे अपनायल गेल अछि, परन्तु चन्दा झा अपन रामायण मे लिखने छथि :

विख्याता श्रुतकीर्ति कुमारि। देल भरतकाँ जनक विचारि॥
माण्डवि प्रस्थित कयल जमाय। श्री शत्रुघ्न समय शुभ पाय॥

–मैथिली रामायण, पृष्ठ 53।

रामायणसभमे ई समर्थित अछि जे जनकक अनुज कुशध्वज क दुइ पुत्री छलीह, ज्येष्ठा माण्डवीक विवाह भरतक साथ आओर हुनक अनुजा श्रुतकीर्तिक विवाह शत्रुघ्नक साथ। लालदासो एहि युग्मकेँ मान्यता देने छथि *(मिथिला रामायण*, पृष्ठ 65)। कवि चन्दा झाक एहि व्यतिक्रमक कारण अनवगत अछि।

लालदास विरचित मिथिला रामायणमे सात काण्डक स्थान पर आठ काण्ड अछि। आठम काण्ड 'अथ जानकी चरित्रम्, पुष्करकाण्डम्' छैक, जे रामायणक उत्तरकाण्डक अनन्तर जुड़ल अछि। प्रस्तुत काण्डमे प्रकृति-स्वरूपा शक्तिक रूपमे सीताक चरित्र उजागर भेल अछि। राम द्वारा दशानन रावणक अग्रज सहस्रानन रावणक वध सम्भव नहि भेल,ओकर संहार जनकात्मजा सीता कयलन्हि। फलस्वरूप हुनक जगज्जननी आ जगद्धात्रीक स्वरूप सार्थक भेल। अपन एहि काण्डक हेतु कवि लालदास अद्भुतरामायणसँ प्रेरित भेल छलाह ओ अपन एहि प्रदेयमे अधिक भावापन्न रहल छथि।

संदर्भ

1. *वाल्मीकि रामायण*, सर्ग 1 (गीता प्रेस, गोरखपुर)।
2. क्षेमेन्द्र–*दशावतारचरित* (ई. 1066)
   जयदेव–*गीतगोविन्द* (बारहवीं शताब्दी);
   श्रीधरदास–सदुक्तिकर्णामृत (फाल्गुन 20, शक 1126/ ई० 1205)।
3. विश्वनाथ–साहित्यदर्पण, 6, 316-324।
4. ओतहि 6-318.
5. *मैथिली रामायण*, बालकाण्ड, पृष्ठ, 1-2.
6. *मिथिला रामायण*, बालकाण्ड, पृष्ठ, 1-3.
7. *श्री मन्महाजन-मही-जनिजानि-गीतिम्*
   वैदेहदेश- वचसा रुचिरां सुरीतिम्।
   रामायणीय–चरितस्य सदर्थचारां
   चन्द्रः प्रगृह्य वितनोति शुभैकसाराम्।
   –मैथिली रामायण, बालकाण्ड, पृष्ठ (?)।
8. *जनुरिह मम जातं जानकी-जन्म-भूमौ*
   बुधसदसि निवासाल्प्राप्तविद्यस्य सौख्यं।
   अनुभवत उदार-श्रीललक्ष्मीश्वरश्शं
   शृणुत शृणुत धीराः श्रीलचन्द्रस्य वाचम्॥
9. *इह जगति यदस्ति स्थावरं जंगमं य-*
   त्तदतिशयनमस्यं ब्रह्मतः नापि भिन्नम्।
   भवति भवतु लोके सत्कथायाः प्रचारो
   जनकनृपति-पुत्री-मातृभांषाञ्चितायाः॥
   ओतहि, पृष्ठ 2.
10. *अध्यात्मरामायण*, बालकाण्ड, सर्ग, राम-हृदय, 1-2.
11. *मैथिली रामायण*, पृष्ठ 36-65.
12. डॉ. राधाकुमुद मुकर्जी–*हिन्दू सिविलीजेश* (भारतीय विद्या भवन, बम्बई -1977) पृष्ठ 92-93, 198,199.,110-111.
13. *योगमाया थिकथि सीता राम विभु भगवान।*
    देव तनिकहि हिनक पति ओ थिकथि सत्य न आन॥
    ई कथा ओ कन्यका गुण कहल नारद मूनि।
    ताहि दिन सैं रमा मानल भेल चरित जे पूनि॥
    –मैथिली रामायण, बालकाण्ड, पृष्ठ 54.
    प्रकृति-स्वरपा-शक्ति प्रधान। जगदम्बा सीता नहि आन॥
    थिकथि स्वतंत्रा विश्वाधार। हिनकहिसौं सृष्टिक व्यापार॥
    धरणी काँ भेल भार अपार। से सीता लेलन्हि अवतार॥
    भक्त-सभक हो परमोद्धार। तेँ सीता लेलन्हि अवतार॥
    जौँ ई नहिं जयतीह विदेश। रहते सुर-नर-मुनिक कलेश॥
    करती जखन रिपुक संहार। छूटत तेहि खन भूमिक भार॥
    सुनु मिथिलापति चुप रहु चूप। ज्ञान-चक्षु सौँ देखि विभु-रूप॥
    से सुनि जनक भेल किछु शान्त। मन-मन कयल विचार एकान्त॥
    –मिथिला रामायण, 'बालकाण्ड', पृष्ठ, 61.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

देवघर परिसरक मैथिली ओ मैथिलीक साहित्यकार

□ डा. श्री मोहनानन्द मिश्र

प्रत्येक बोलीक अपन विशिष्टता रहैत अछि। देवघरक बोली मैथिली अछि। मैथिली प्राचीन भाषा थिक। देवघर एक धार्मिक आ ऐतिहासिक स्थल अछि। एहिठामक प्राचीन नाम वैद्यनाथ क्षेत्र, वनखण्ड, रनखण्ड, हृदयपीठ, चिताभूमि, झारखण्ड आ रावणेश्वर कानन अछि। एहिसभ नामक सम्बन्ध प्राचीन ग्रन्थसँ अछि। एहिसँ एहि स्थानक प्राचीनताक आभास होइत अछि। पूर्वकालसँ एहिठाम जनागमनक परम्परा आबि रहल अछि। वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग मिथिलाक इष्टदेव छथि। एहिठाम बहुसंख्यक मैथिल रहैत छलाह जिनक प्रव्रजन मिथिलासँ बारहम शताब्दीक अन्तिम दशक वा तेरहम शताब्दीक दशकद्वयक समय भेल अछि। मुस्लिम आक्रमण, बाढ़ि वा प्राकृतिक आपदासँ प्रताड़ित भए ई सभ एहिठाम बसल। एहि क्षेत्र पर आदित्य सेन गुप्तक शासनसँ पूर्व बंगालक पाल आ सेनवंशक शासन छल। वैद्यनाथ मंदिरक शिलालेख, हरिलाजोड़ी आ तपोवनक रमापाल देवक अभिलेखसँ एकर पुष्टि होइत अछि।

देवघर क्षेत्रक प्राचीन भाषाक रूपमे मैथिली, हिन्दी, बंगला, सन्थाली, सौरिया, माल पहाड़िया, आ कोराक व्यवहार होइत छैक। वैद्यनाथधामक तीर्थपुरोहितक निरन्तर प्रयाससँ बोलीक रूपमे मैथिली भाषा एहिठाम प्रचलित अछि। मैथिली भाषामे स्थानीय सभ भाषाक मिश्रण भए गेल। एहिठाम बंगला, संथाली आ नागपुरी मैथिलीसँ जुड़ायल अछि। जाहिठाम दू भिन्न संस्कृतिक मिलन होइत अछि ततए एक समुदायक दोसर समुदायसँ मिलन स्वाभाविक अछि। श्री प्रकाश कुर्ल एकरा सीमा - भाषा कहैत छथि। एहि भाषा पर शासक भाषाक पूर्ण प्रभाव रहैत अछि, तथापि एहिपर मातृपरिनिष्ठ होयबाक दोष पड़ैत अछि। एहिमे सभसँ महत्वपूर्ण शब्दावली होइत अछि।

देवघर परिसरक मैथिलीक लेल एखनो अंगिका आ मैथिलीक विवाद चलि रहल अछि। एना मैथिली भाषाक इतिहास एकटा स्वतंत्र भाषाक इतिहास अछि। भाषाशास्त्र आ व्याकरणक दृष्टिसँ एकरा पछुआएल नहि कहल जा सकैत अछि। गोड्डा आ भागलपुरक किछु विचारक एकर अंगकेँ अंगिका कहैत छथि।

ग्रियर्सनक पुस्तक *भारतक भाषा सर्वेक्षण* प्रकाशित भेलाक पछाति मैथिलीभाषी क्षेत्रक सीमा निर्धारित गेल। मैथिली भाषी क्षेत्रकेँ छओ गोट क्षेत्रमे विभाजित कएल गेल–पश्चिमी, पूर्वी, दक्षिणी, उत्तरी, उत्तरपूर्वी आ दक्षिणपूर्वी। ग्रियर्सन मैथिलीक विशिष्टताकेँ पाँच कोस धरि सीमित कएल, किन्तु वर्त्तमानमे एहि मान्यताक मूल्य विवादक विषय भए गेल अछि। गंगाक ओहि पारक भाषा मैथिलीक प्रभाव क्षेत्रक रूपमे स्वीकृत अछि। भागलपुर आ संतालपरगनाक मैथिलीकेँ छिका-छिकी मैथिलीक रूपमे मान्यता अछि। बहुत लोक मैथिलीक पसरल भाषा कहैत छथि। बिहारी बोलीक रूपमे सेहो एकरा जानल जाइत अछि। ओ. मोले, एस. सी. मुखर्जी आ पी. सी. रायचौधरी मैथिलीकेँ बोलीक रूपमे एकरा स्वीकार करैत छथि। देवघर परिसरक मैथिली विभिन्न भाषासँ प्रभावित अछि। ओ. मोले लिखैत छथि जे बिहारवासी एहिठाम मैथिली बजैत छथि आ बंगालवासी बंगला भाषाक व्यवहार करैत छथि–*"दि राजमहल हिल्स सेपॉरेट दि स्पीकर्स आफ दिस डाइलेक्ट फ्रोम दोज हू स्पीक बंगाली, बट इन दि देवघर सबडिभिजन देअर इज ए स्माल ट्रैक, साउथ एण्ड इस्ट आफ दि टाउन आ फ देवघर ह्वेअर दि टू भर्णाकुलार्स ओभरलैप विदाउट कोम्बाइनिंग, मैथिली बिइंग स्पोकेन बाइ पिपुल फ्रोम बिहार एण्ड बेंगाली बाइ दोज आफ बेंगाल।"*

ओ. मोले ग्रियर्सनक भाषासबन्धी मान्यताकेँ स्वीकार करैत छथि। ग्रियर्सनक पछाति सभ भाषाविचारक एहि बातकेँ मानैत छथि जे क्षेत्रगत विभिन्नताक प्रभावक विवेचन नहि कयल गेल अछि। स्वतंत्रताक पछाति क्षेत्रीय भाषाक अस्मिताक महत्व मूल्यांकित होअए लागल। एकर पछाति अंगिका, वज्जिका आ मैथिलीक क्षेत्रक चर्चा बढ़ैत गेल।

देवघर परिसरक मैथिलीक विस्तार वैद्यनाथ मंदिरक तीर्थपुरोहितक देन अछि। एहिठाम आव्रजनक समय हिनक भाषा विशुद्ध मैथिली छल जे बंगलासँ नाममात्रक अन्तर रखैत छैक। आहि समय एहिठाम आदिम जातिक भाषा सेहो प्रचलित छल। पठानक शासनक समय एहिठाम फारसी भाषा सेहो प्रचलित भेल। मुगलक समयमे सेहो सरकारी काजक फारसी भाषा छल। एहिठामक लोक फारसीसँ अनभिज्ञ छल आ एकर स्थानमे मैथिली, बंगला आ संताली भाषाक व्यवहार करैत छल। सोलहम शताब्दीक अन्तिमार्धमे मुगलवंशक अकबर महानक सेनापति मानसिंह बंगाल विजयक क्रममे एहिठाम आयल छलाह। राजीव नयन प्रसाद *मानसिंह आफ आमेर* मे एहि बातक उल्लेख करैत छथि। वैद्यनाथ धामक स्थानीय शासक महाराजा गिद्धौरक पुत्रक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कन्याक विवाह मानसिंहक भ्राता भानसिंहसँ भेल छल। एहि शासकक शासनकालमे एहिठाम मैथिली मुख्य भाषा छल, किन्तु फारसी शब्दक व्यापक लोकप्रियता छल, जेना-दरमाह, हुजूर, तनख्वाह, खिदमत, मुफसिल, मुद्दइ, नेक, खलास, पेशर आदिक व्यवहार प्रचलित छल। मैथिली 1701 ख्रिष्टाब्दसँ बंगला प्रभावित होअए लागल। आइसँ 350 वर्ष पूर्वक दानपत्रमे वर्णित भाषामे जे वाक्यविन्यास अछि से विशुद्ध मैथिलीक रूप छैक–"भाग दखल करू। जोत जोताउ।" ई प्रयोग एकटा भूमिदानक सनदमे कएल गेल अछि जे खिजुरिया जंगलक समीपक भूमिसँ सम्बधित अछि। एकरा विशुद्ध मैथिली मानल जाइत अछि।

स्पष्ट अछि जे देवघर परिसरक मैथिलीक अपन विशिष्टता अछि। भाषा बहता नीर कहल गेल अछि। भाषा-प्रवाह रोकल नहि जा सकैत अछि। मनुषक सुविधानुसार भाषा बदलैत रहैत अछि। देवघर परिसरक मैथिलीकेँ समाज आ संस्कृतिक अनुरूप परिवर्तित होयबाक अवसर भेटैत रहैक। एहि सम्बन्धमे गंगाक पारसँ प्राप्त मिथिलाक्षरक लेखसँ मैथिली भाषाक प्रसारक पूर्व रूप अंकित कयल जा सकैत अछि। प्राक्-अकबर आ अकबरकलीन मिथिलाक्षरमे दुइ अभिलेख सूर्यगढ़ा (मुंगेर) आ गोड्डा (संतालपरगना)सँ भेटल अछि। एहिसँ ई समीकरण बनाओल जा सकैत अछि जे देवघरक समीपवर्ती क्षेत्र मैथिली भाषासँ पूर्वकालहिसँ परिचित छल। देवघर परिसरक मैथिलीमे आजुक मैथिलीक प्राचीन प्रयोग सुरक्षित अछि। एहिठाम मैथिली बजबाक शैली सर्वथा भिन्न छल, जेना– "हिने आबें ने रद्धा।"

धार्मिक यात्रा, व्यापार, सांस्कृतिक समागम आ राजनीतिक सम्बन्धक कारणसँ भाषा एक ठामसँ दोसर ठाम जाइत छैक। औहिठाम जाकय भाषा स्थानीय भाषाक संग मिश्रित होइत छैक। देवघर परिसरक मैथिलीक संग सेहो एहिना भेल अछि। वैद्यनाथधामक तीर्थपुरोहित मिथिलाक संस्कृतिक एकल प्रतिनिधिक रूपमे झारखण्डक एहि धर्मस्थलमे एखनहु एहि जीवन्त भाषाक प्रचार कए रहल छथि।

आजु भागलपुर आ मुंगेरमे मैथिली भाषा बोलल जाइत अछि। किछु लोक 'अंगभाषा परिषद्' आ 'अंगिका समाज' बानकए एकर स्वतंत्र सत्ता मानैत छथि, किन्तु पूर्वध्यकालसँ एहि अंचलमे मैथिली भाषा प्रचलित अछि। छिका-छिकीकेँ मैथिलीक रूप कहल जाए सकैत अछि। एकर भाषावैज्ञानिक विश्लेषणसँ सेहो ई स्पष्ट होइत अछि। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी लिखैत छथि जे एहिठाम ई स्मरण राखैक चाही जे विक्रमशिलाक सिद्धलोकनि मैथिलीक आदिप्रवर्तक छलाह आ तखनसँ मैथिली परम्परा एहि क्षेत्रमे आबि रहल अछि। देवघर सेहो विक्रमशिलासँ निकट अछि। एहिठाम मैथिली भाषाक विस्तार ताहि समयसँ स्वाभाविक अछि। मैथिलीभाषी अपन भाषाकेँ नहि बिसरि सकैत छथि। एखनो मालदह आ दिनाजपुरमे रहनिहार मैथिल अपन व्यवहारमे मैथिलीक प्रयोग करैत छथि। 1700 खीष्टाब्दसँ मैथिलीक कएथी लिपिमे लिखवाक परम्परा एहिठाम प्रारम्भ भेल। 1791 खीष्टाब्दक अनेक दस्तावेजक भाषा मैथिली आ लिपि कएथी छल। 1880 मे ई परम्परा लोकप्रिय भए गेल। अनेक भाषाक संयोगसँ एहिठामक मैथिलीक रूप स्थानीय होअए लागल। एहिठामक मैथिलीमे बंगला आ छोटानागपुरक भाषाक सेहो प्रभाव अछि। बहुभाषासाहचर्य्यसँ एहिठामक मैथिली समृद्ध होइत गेल, किन्तु एकर स्वरूपमे स्थिरता सेहो आबय लागल। किन्तु ई सभ होयबाक पछाति एहिठामक मैथिलीमे ज्योतिरीश्वरक शब्दसौष्ठव विद्यामान अछि जेना गछती, पाकल, हाँड़ि, गोन्ति, खोसब, चोसब, चौका, पीढ़ी, थारी, गडुआ, झारी, तिलिया प्रभृति। देवघर परिसरक वर्तमान मैथिली आ विशुद्ध मैथिलीक किछु उदाहरण एहिठाम अछि :

देवघर परिसरक मैथिली	विशुद्ध मैथिली
हम्में थिकौं	हम थिकाहुँ
तौं थिकैं	तौं थिकेँ
हमरारका	हमरालोकनि
उ सभ	ओलोकनि
रैहैं	रहथि
होते अ	होसब
हम्मे हेवों	हम होइ
हम्मे मारबों	हम मारब

वर्त्तमान समयमे देवघर परिसरक मैथिलीक रूप परिनिष्ठित अछि। किन्तु अनेक भाषासँ मिश्रित होयबाक कारणसँ एकर स्वरूप बदलि रहल अछि। ध्वनि आ वाक्यविन्यास दूनू दृष्टिसँ एहिठाम विशुद्ध मैथिलीक प्रयोग होइत अछि। एहिठाम मैथिली देवनागरी आ कएथी दूनू लिपिमे लिखल जाइत अछि। देवघरक आस-पास ग्रामीण अंचलमे सेहो एकर व्यवहार होइत अछि। देवघरमे सभ मैथिली बजैत छथि। देवघरक मैथिली मे **'ओ', 'इ', 'आ', 'औ'**क ध्वनि प्रधान अछि।

एहिठामक मैथिलीमे मध्यम पुरुषमे आदरवाचक "अहाँ" क व्यवहार होइत अछि आ अत्यादरक लेल "अपने"क प्रयोग

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

होइत अछि। होयबाक अर्थमे प्रथम पुरुष 'छ' ओ 'छे' (छथ) क व्यवहार प्रचलित अछि। देवघर परिसरक मैथिली मे ओ, ए, औ दीर्घ तथा ह्रस्व दूनूक व्यवहार छैक जेना, एकरा–एकर, ओकरा-ओकर, देखेक– देखतलें, पैतोह, पैत लो आदि। सामान्य रूपमे मैथिली मे **अ, इ, उ** क उच्चारण अत्यन्त लघु होइत अछि, किन्तु देवघर परिसरक मैथिलीमे एहन गप्प नहि छैक। किछु अन्त्य ध्वनिक सेहो अव्याहत व्यवहार होइत अछि, जेना देलऽ **मारलऽ, कानलऽ, खसलऽ, कखनि, ओन्हि, जाहिं, तोरो, हमरो ओकरो, बुतरू, बकरू, मारभून, पकड़लून्ह** आदि। देवघर परिसरक मैथिलमे छी आ **अछि** क स्थान पर **रिहि, रैहे, रैहवेकरे** क प्रयोग होइत अछि। देवघर परिसरक मैथिलीक किछु नमूना एहिठाम देल जा सकइत अछि। देवघर परिसरमे **'हकाबे छो'** आ ग्रामीण अंचल मे **'बोलावे छो'** क व्यवहार होइत अछि। एहिठामक किछु प्रयोगकेँ सहरसा आ पूर्णिआक मैथिली सँ सामीप्य अछि। जेना- **गेल रेहे, भैगेले,** (सहरसा मे भैगैलैह, गेल रहै) क प्रयोग होइत अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे पूर्वी मैथिलीक एहिठाम प्रभाव अछि जखन कि दरभंगा-मधुबनीमे **गेल छल, गेल छलैक भए गेल आ भऽ गेल** क प्रचलन अछि। एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे पूर्वी-दक्षिणी आ छिका-छिकी क्षेत्रक भाषाक एहि पर प्रभाव अछि। देवघर परिसरक मैथिलीमे एकटा सर्वव्यापी साम्य अछि जाहिसँ प्रभावित भऽ अपन भाषाक क्षमताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि।

देवघर परिसरक मैथिलीमे साहित्य रचनाक परम्परा 1850 ई. सँ भेटैत अछि। एहिसँ पूर्व एहिठामक मैथिलीमे साहित्य रचनाक प्रसंग नहि भैटेत अछि। सामान्य रूपेँ मैथिली आ बंगला मे एहिठामक लोक साहित्य रचैत छलाह। 1920 ई. धरि बंगला भाषाक साहित्यकारक रचनाक स्वरूप एहिठाम भेटैत अछि। एहिठामक मैथिली साहित्यकारक सूचीमे सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा, श्री उमानन्द ओझा, श्री शिरोमणि ठाकुर प्रमुख छथि। हिनक अतिरिक्त अनेक कवि छथि जनिक स्थानीय महत्व छनि। एहिठामक मैथिली साहित्यकारक संक्षिप्त विवरण एवम् अछि :–

सदुपाध्याय श्री भवप्रीतानन्द ओझा–हिनक जन्म सन् 1886 ई. आश्विन कृष्ण नवमी बुधवार कें भेल छल। हिनक पिताक नाम श्री त्रिपुरानन्द ओझा छल। किशोरावस्थ सँ ई काव्यरचना करैत छलाह। बंगाल आ बिहारक अनेक राजा आ जमीन्दार हिनक काव्यमाधुरीक एकान्त सेवक छलाह। हिनक काव्यभाषा मैथिली आ बंगला छनि।। प्रो. रमानाथ झा हिनका मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ लोककवि रूपमे स्वीकारैत छथि। ओ हिनका अभिनव विद्यापतिक नामसँ सम्बोधित करैत छलाह। वैद्यनाथ मंदिरक प्रधान मठाधीशक पद पर ई आसीन छलाह। हिनक पाँच हजारसँ बेसी कविता अछि। एहिठाम हिनक दुइ गोट कविताक उदाहरण प्रस्तुत अछि।

अंगनामे नन्दरैया देखि-देबि नितरैया
दैया नाचत कन्हैया।
ताली देथिन यशोमति भैया
रे दैया नाचत कन्हैया।
झमकी ठमकी तातक थैया
रे दैया नाचत कन्हैया।
नीलमणि लजवैया लांगटे देहा से मैया
रे दैया नाचत कन्हया।
बैथना के धूलि धुसरैया रे दैया
चूड़ामे मोर रखवैया हाथ बांसुरी बजैया
रे दैया नाचत कन्हैया।
दाइ पैरिक घुँघरू पिन्हैया रे दैया
वेदान्तक निचैरैया नाचे मनु गोसइयाँ
रे दैया नाचत कन्हैया।
भवप्रीताक नैया खेवैया रे दैया।

राष्ट्रिय कविता

तोरामे विदेशी रवि अस्त हो 15 अगस्त
तोरामे विदेशी रवि अस्त।
ऋषि युग ग्रह चाँद ईस्वी सालक प्रमाण
वैह साले पराधीन ध्वस्त हे 15 अगस्त
गाँधीजी के तपपूर्ण दासत्व निगड़चूर्ण
स्वाधीन भेले भारत समस्त हे 15 अगस्त
स्वातंत्र संग्राम रथी विजयी नेता सुमति
विदेशी भागेमे भेल व्यस्त हे 15 अगस्त
पाविके नव सुराज पहरी विविध साज
आनन्दे भारतवासी मस्त हे 15 अगस्त
भवप्रीताक निवेदन धरमे राखअ नारायण
हरिके चरणे चित्त न्यस्त हे 15 अगस्त।

काव्यक विविध पक्ष पर हिनक रचना उपलब्ध होइत अछि। झूमरि आ धैरा संगीतसँ युक्त हिनक काव्य आजु बंगाल, बिहार,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उड़ीसा आ असम पर्यन्त प्रचरित छनि। देवघर परिसरक मैथिलीक ई एकमात्र पुरोधा मानल जाइत छथि। हिनक सात गोट पुस्तक प्रकाशित छैन। 1970 इ. मे हिनक परलोक-गमन भेलनि।

श्री उमानन्द ओझा–हिनक जन्म वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंगक उपासक तंत्रमार्तण्ड परमप्रकाशानन्दक घरमे भेल छलनि। ई हुनक ज्येष्ठ पुत्र छलाह। शैशवास्थामे हिनक काव्य-प्रतिभा प्रस्फुटित भेल छल। हिनक एकगोट मैथिली कविता एखनो लोककण्ठमे प्रशस्त अछि :–

कहाँ से आयलह भउरा कहाँ छलैह रात रे
अरे भउरा अब निसि भेलो परभात रे
भोरे झरलो मधु रौंदे जारअ गात रे
अरे भउरा मोनेहि रहलो मोनक बात रे
अरे भउरा अब निशि भेलो परभात रे
एक्के त फूटलों हम्में झारी के गात रे
अरे भउरा दोसरे निठूर तोर जात रे
उमानन्द कहे भउरा जाहि निपात रे
अरे भउरा के जोड़अ पिरीत तोर साथ रे

उमानन्द ओझा मैथिली साहित्यक विलक्षण प्रतिभाशाली पुरुष छलाह। हिनक काव्यमे चित्र आर ध्वनि काव्यक लक्षण विद्यमान अछि। आजु देवघरक ग्रामीण अंचलमे हिनक मैथिली आ बंगला गीत प्रचलित छैन।

शिरोमणि ठाकुर–वैद्यनाथधामक तीर्थपुरोहित परिवारक ई प्रसिद्ध कवि छलाह। स्थानीय लोकक बीच पितृभक्त कविक नामसँ ई प्रसिद्ध छथि। हिनक झूमरि मानभूम, राँची आ संतालपरगनाक सुदूर पर्वत अंचलमे सेहो गायल जाइत अछि। हिनक दखल संगीतशास्त्र मे सेहो छनि। *'झूमरा'* नामक हिनक काव्य-संकलन प्रकाशित अछि। हिनक एक गोट मैथिली कविता प्रस्तुत अछि :–

देखअ दुनिया बेमान देखअ दुनिया बेमान
देखअ दुनिया बेमान।
उपकार करते गेलें होइत लकसान
कलिक ऐसन रीति आगे ते कराबे प्रीति
सेहो अपमान
गुरुजन बोले आगे हो सावधान
सरलअ के इ गति नह जानल छल प्रीति
हृदय अधान सखा
सभे यमें देखि पाबेकि नहि स्थान
द्विज शिरोमणि कहे पिरीत करैल होवय
समाने समान।
भांगल मन जुटैनहिं जेना लिखल भगवान।

श्री शम्भुनाथ बलियासे "मुकुल"–हिनक जन्म देवघरक निकट कुरुमटाड़ ग्रामक कुलीन मैथिल ब्राह्मणक परिवारमे 15 जनवरी 1925 ई. मे भेल छैनि। छात्रजीवनसँ ई कविता, कहानी, एकांकी, नाटक आ निबन्ध विधाक उपासक बनि गेलाह। हिनक दस गोट पुस्तक प्रकाशित छनि। हिनक प्रसिद्ध उपन्यास *आड़ी तिरछी आकृतियाँ* पर हरियाणा सरकारक एक लाख टाका पुरष्कार भेटल छनि। एहि उपन्यासमे देवघर परिसरक मैथिलीक व्यवहार फणीश्वर नाथ रेणुक *मैला आँचल* आ *परती परिकथाक* स्मरण कराबैत अछि। हिनक मैथिली लेख *मिथिला मिहिर* तथा कलकत्तासँ प्रकाशित *'मैथिली भाषा आ साहित्य'* मे संकलित अछि। सम्प्रति ई फरीदाबाद, हरियाणामे बसि गेल छथि।

श्री रामशंकर मिश्र "पंकज"–हिनक जन्म 1940 ई. मे वैद्यनाथधामक तीर्थपुरोहित परिवारमे भेल छनि। ई शैशवावस्थासँ काव्यरचना करैत छथि। हिनक एक गोट पुस्तक *'गीतकार'* नामसँ छपल छनि। हिनक मैथिली रचनाक उदाहरण प्रस्तुत अछि :–

तोरअ को सम्मान की करतअ।
फूलस गचलअ बाग न तोहों
तोरा पर एकटा फूल की धरतअ।
तोहो स्वयं सम्मान चिक्कैह
तोरअ को सम्मान की करतअ।
तोरअ सम्मानक लिस्सी लैक
अपने सम्मान बढ़ाबअ भेलअ।
तोअ बारे में कुछुए की केहबअ
सूर्यक दीप देखाबअ भेलअ।
कथिअ से तोर उपमा देबअ,
चन्द्रमाक बोरा पिन्हाबअ भेलअ।
निच्छक सोनाके मूर्ति पर
तामा के पानी चढ़ाबअ भेलअ।

उपर्युक्त पाँतिक रचना सदुपाध्याय भवप्रीतानन्दक अभिनन्दन मे लिखल गेल छैक। देवघर परिसरक मैथिलीक अपूर्व काव्यगुण एहि कवितामे भेटैत अछि। हिनक हिन्दी काव्य-गंगाक लोकप्रियता एहिठामक जनमानसक लोककण्ठमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पसरल अछि। देवघर परिसरक मैथिली कविताक ई प्रतिभा-पुरुषक रूपमे प्रसिद्ध छथि।

श्री कार्तिकनाथ ठाकुर– कवि श्री ठाकुर शैशवावस्थासँ काव्य रचनामे लागल छथि। हिनक कविताक प्रकाशन भारतक प्रमुख पत्र-पत्रिकामे होइत रहैत छनि। काव्यक आधुनिक धाराक ई उपासक छथि। मैथिली भाषामे हिनक अनेक कविता प्रकाशित छनि।

पं. श्री उमाकान्त झा–पं. उमाकान्त झाक जन्म मधुबनी जिलाक नागदह-बलाइन ग्राममे भेल अछि। हिनक पिताक नाम अजगैबीनाथ झा छल। शिक्षा आ शिक्षणक महायात्राक क्रममे 23.11.1947 ई. सँ ई बालानन्द संस्कृत महाविद्यालयमे अध्यापक भेलाह। 1952 ई. सँ महाविद्यालयक प्रधानाचर्यक पद पर प्रतिष्ठित भेलाह। एखन ई वैद्यनाथधाममे मैथिली आ संस्कृतक सेवामे लागल छथि। मैथिलीमे लिखल हिनक 14 गोट पुस्तक एखन धरि अप्रकाशित छैन। ई आशुकविक नामसँ प्रसिद्ध छथि।

पं. रामकिशोर झा 'विभाकर'–मधुबनी जिलाक मधुरा ग्रामक ई रहनिहार थिकाह मुदा एखन तीस वर्षसँ वैद्यनाथधामक देवघर महाविद्यालयमे संस्कृत विभागाध्यक्ष पदकेँ अलंकृत कय रहल छथि। मैथिलीमे हिनक तीस गोट पुस्तक छपल छनि। मैथिलीक मूर्धन्य कविक आ लेखकक रूपेँ प्रसिद्ध छथि। हिनक कविताक अंश किछु प्रस्तुत अछि:–

क्यो चलओ रुचिक अनुरूपे नित
हमरा कर्त्तव्य निवाहक अछि।
क्यो बूझओ निर्वलतम हमरा
हमरा वल अगम अथाहक अछि॥
हो ककरो भौमिक वित्त-वलेँ,
द्रव्येक वलेँ क्यो इतराब।
छै छबिये कतकेँ देह-वलेँ,
तै बलेँ भने क्यौ छितराब
हमरा जुनि से सभ किछु चाही,
प्रभु भक्ति हमर सेवा हक अछि॥

देवघर परिसरक मैथिलीक उपर्युक्त साहित्यकारक चर्चाक अतिरिक्त किछु आरू अनामधन्य साहित्यकार छथि, जिनक रचनाक प्रकाशन नहि भए सकल अछि। किन्तु हुनक रचना मैथिलीमे छैनि जेना श्री शंकर दत्त द्वारी, श्री वसन्त मिश्र कीर्तनि, श्री महेश्वर पाण्डेय, श्री गुरूनाथ जजवाड़े, श्री ताराचरण खवाड़े, श्री सत्यधन मिश्र, श्री रामभक्त आ श्री शंकर मोहन झा प्रभृति।

देवघर परिसरमे मैथिलीक समृद्ध रूप होइतहुँ एहिठामक लोक मैथिली भाषाक प्रति उदासीन छथि। मातृभाषाक प्रति उदासीनताक मूलमे मैथिल समाजक अहम्मन्यताक भावना प्रधान कारण अछि। दरभंगा-मधुबनीक मैथिलीभाषी एहिठामक मैथिलीभाषीकेँ कोनो मोजर नहि दैत छथि। जातीय संस्कारमे औपनिवेशिक भावनाक कारणेँ परस्पर छोट-बड़क एहन व्यवस्था कायम अछि जाहिसँ मैथिली भाषाक विकास सेहो प्रभावित अछि। ई सभ होइतहुँ एहिठामक लोक मैथिलीक प्रति सहज स्नेह आ श्रद्धाक भाव रखैत छथि। एहि क्षेत्रक विकासक लेल मैथिलीक विकास आवश्यक अछि। देवघर परिसरक मैथिलीकेँ जीवित रखबाक लेल पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आवश्यक अछि। एहिठामक मैथिलीक साहित्यकारक हेतु समग्र प्रोत्साहन आ सहयोग आवश्यक अछि। देवघर परिसरक मैथिलीकेँ एहिठामक वासी प्रवासी आ अधिवासी एकटा विशिष्टतासँ देशकेँ अवश्य गौरवान्वित करताह, तखने "देसिल वयना सभ जन मिट्ठा" क अमृत-आस्वादनसँ देवघरक मैथिली जनमानसकेँ उद्बोधित कए सकैत अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली जागरण ओ पं. श्री गोविन्द झाक परिसर

□ पं. श्री जितेन्द्र नारायण झा

सरिसब-पाही मधुबनी जिलाक एक प्रतिष्ठित गाम अछि। एहि गामकेँ केन्द्र बनाए एकर पाँच कोसक परिधिक गामकेँ एकर परिसर कहल जाए सकैछ। एही गामक समीप आध कोसक अन्तरालमे पं. श्री गोविन्द झाक निवासस्थान इसहपुर गाम अछि। तेँ एही परिसरकेँ पं. श्री गोविन्द झाजीक परिसर कहल जाएत।

अयाची-शंकरक ई भूमि अदौसँ विद्वान् लोकनिक केन्द्र रहल अछि। स्वनामधन्य कतेको मनीषीलोकनिक गौरव-गाथा एहि परिसरक लोककेँ अनुप्राणित करैत रहल अछि। *सुदर्शनोपाख्यानक* रचयिता पं. हरिनारायण झा (उजान), म. म. हर्षनाथ झा, पं. ऋद्धिनाथ झा (शारदापुर), पं. विन्ध्यनाथ झा (पाहीटोल, पहिल मैथिल ग्रैजुएट), हुनक छोट भाए पं. गणनाथ झा, म. म. डा. सर गंगानाथ झा, अमरनाथ झा, पं. तेजनाथ झा (महरैल), पं. चेतनाथ झा प्रसिद्ध किसुनजी तथा म. म. बालकृष्ण मिश्र (नवटोल), पं. वेणीदत्त झा (हाटी), पं. श्रीवल्लभ झा, पं. महावीर झा (हाटी), पं. चिरंजीव झा, पं. काशीनाथ झा (उजान), पं. श्यामानन्द झा (लालगंज), मुंशी रघुनन्दन दास (सखबार), पं. जीवछ मिश्र (*रामेश्वर* उपन्यासकार, नवटोल), प्रो. ईशनाथ झा आदि मनीषीक नाम तँ चिरस्मरणीय अछिए।

एमहर स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे नवीन जागरण भेला पर सरिसब-पाही सूतल नहि रहल। एहि परिसरमे मैथिलीक अलख जगौनिहार **विद्यापति-गोष्ठी, सरिसब-पाही** शंखनाद कएलक, आ तेँ यथार्थमे विद्यापतिए गोष्ठीक इतिहास एहि परिसरक मैथिली जागरणक इतिहास कहाओत।

डा. कांचीनाथ झा 'किरण' अपन काशीक प्रवासकेँ छोड़ि गाम अएलाह। लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसबमे हिनक नियुक्ति शिक्षकक पद पर भेलनि। ई त मैथिली-जागरणक पताका लए काशीसँ चलले छलाह, एतहु आबि ओहि पताकाकेँ फहराओल। काशीमे ई प्रतिवर्ष कातिक धवल त्रयोदशीकेँ विद्यापति स्मृति दिवस मनबैत छलाह। ताही क्रममे गामहुँमे आयोजन कएल। 1948 ई. क कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीकेँ लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसबक प्रांगणमे सायंकाल किरणजीक अतिरिक्त मैथिलीक अनन्य कथाकार पं. श्री मनमोहन झा, पं. श्री बुद्धिनाथ मिश्र 'भङेर', पं. मोतीनाथ झा तथा स्व. झक्खन झा उपस्थपित भए विद्यापति गोष्ठीक स्थापना कएल आ कविकोकिलकेँ श्रद्धांजलि अर्पित करैत गेलाह।

अगिला वर्ष कविशेखरजी, स्व. जलधर झा प्रसिद्ध ठक्कन बाबू, सरिसब तथा प्रो. श्री आनन्द मिश्र एहि आयोजनमे भाग लेलनि। क्रमशः स्थानीय लोकक संख्या बढ़ए लागल। लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसबक प्रधानाध्यापक स्व. पं. शिवनाथ झा, सहायक प्रधानाध्यापक स्व. अम्बिकानाथ मिश्र, मैथिलीक सुप्रसिद्ध कथाकार ओ उक्त विद्यालयक सहायक शिक्षक श्री मनमोहनझाक संग विद्यालयक अन्य शिक्षकवृन्द तथा शिक्षकेतर कर्मचारीगण ओ छात्रलोकनि एहि कार्यमे हृदयसँ भाग लेब प्रारम्भ कएल।

1951 ई. मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा अपन महामंत्री किरणजीक प्रेरणासँ विद्यापति-स्मृति-पर्व साप्ताहिक रूपमे मनएबाक निर्णय लेलक। दरभंगामे विभिन्न स्थानमे साप्ताहिक कार्यक्रम चलल। तदनुसार विद्यापति गोष्ठी, सरिसब सेहो एहि स्थानीय कार्यक्रमक संपूर्ण भार हमर जेठ भाए स्व. पुष्कर झाक कान्ह पर पड़ल। हैण्डबिल छपल, निमंत्रण-पत्र वितरण भेल। कातिक धवल त्रयोदशीकेँ हितेन्द्र स्मारक पुस्तकालय, राजेमे बरहगोड़ियाक बाबू साहेब ओ फुटबौलक प्रसिद्ध खेलाड़ी तथा रेफरी स्व. चित्तेश्वर सिंहक सभापतित्वमे मनाओल गेल जाहिमे बाबू साहेब अपन अध्यक्षीय भाषणमे मैथिली साहित्य परिषदक गतिरोधकेँ दूर करबाक हेतु कहलनि। तकर उपरान्त आन-आन गाममे ई कार्यक्रम चलए लागल। परन्तु दुर्भाग्यवश ओही समयमे हमर भाए पुष्कर झाक असामयिक निधन भए गेलनि।

अग्रिम वर्षसँ एहि गोष्ठीक कार्य विशद रूपसँ प्रारम्भ भेल। कविशेखर बदरीनाथ झा, स्व. पं. भवनाथ झा, स्व. अम्बिकानाथ मिश्र, श्री मनमोहन झा, सरिसब विद्यालयक शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी तथा छात्रगण, स्व. दिवाकर झा, (तत्कालीन मुखिया, सरिसब-पाही ग्राम पंचायत), प्रो. उमानाथ झा, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, पं. मधुसूदन मिश्र (भटपुरा), पं. गणेश्वर झा (लालगंज), पं. जलधर झा, पं. श्री कुंजनाथ झा (हाटी), श्री कीर्त्यानन्द कुमर, (पुतइ, तत्कालीन चिकित्सा पदाधिकारी, सरिसब), श्री उग्रनारायण मिश्र 'कनक', श्री देवनारायण मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, स्व. कन्टीर झा प्रसिद्ध गान्धीजी (सभ मकरन्दा), श्री कपिलेश्वर झा 'कपिल' (राजे), पं. गंगाधर मिश्र प्रसिद्ध नंगट बाबू (सरिसब), पं. सतीश्वर झा (लालगंज), पं. सतीश्वर झा (पाही), मौ. सईद अहमद हुसैनी (शिक्षक, सरिसब विद्यालय) श्री भोलानाथ ठाकुर (हाटी), प्रो. श्री मुक्तिनाथ झा, पं. श्री चन्द्रमाधव झा (बिट्ठो), पं. भवनाथ झा 'दीपक' (लालगंज), पं. श्री आद्यानाथ झा 'निरंकुश' (नरुआर) आदि कतेको व्यक्ति एहि गोष्ठीमे भाग लए गाम-गाम घूमि मैथिलीक प्रचार प्रारम्भ कए देलनि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बीच-बीचमे पं. जीवनाथ झा, पं. श्री गोविन्द झा, पं. श्री माधव झा (इसहपुर), पं. बदरीनाथ झा (मनोगाछी) तथा गामसँ अन्यत्र रहनिहारलोकनि गाम अएला पर एहि कार्यक्रममे भाग लैत छलाह।

एखन पर्यन्त गोष्ठीक कोनहुँ गठित समिति नहि छल, ने छल कोनहुँ संविधान वा सदस्यताक हेतु वांछित योग्यता। एकटा समितिक गठन कएल गेल जकर आजीवन अध्यक्ष कविशेखर जी, उपाध्यक्ष डा. श्री कुमरजी, महामंत्री पं. श्री कुंजनाथ झा मनोनीत भेलाह।

गोष्ठीक कोनहुँ लिखित संविधान नहि छल। एहि संस्थाक कार्यकलाप मात्र साहित्यिक ओ सांस्कृतिक छल। केओ व्यक्ति मैथिलीसँ स्नेह रखनिहार एकर सदस्य भए सकैत छलाह। कवि-साहित्यकार लोकनिसँ प्रति बैसकमे एकटा नव रचना सुनएबाक अपेक्षा कएल जाइत छल, जकर फलस्वरूप बहुतो व्यक्ति साहित्यकार बनलाह ओ कतोक रचना कएलनि। एही संस्थाक मंचसँ किरणजी *जय-जय भैरवि असुर भयाउनिक* व्याख्या करैत एकरा मिथिलाक राष्ट्रगानक रूपमे स्थापित कएलनि आ' ओही समयसँ कोनहुँ बैसकक आरम्भ एहि गानकेँ ठाढ़ भए गावि कएल जाए लागल। एहि संस्थाक कोनहुँ प्रकारक सदस्यता-शुल्क नहि छल तथा सदस्यलोकनिसँ अपेक्षा कएल जाइत छल जे ओलोकनि अधिक-सँ-अधिक संख्यामे अधिक ठाम उपस्थित होथि। मिथिलाक प्रत्येक वर्गक लोक एहि संस्थाक सदस्य भए सकैत छलाह।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीकेँ मुख्य रूपेँ सरिसब उच्च विद्यालयमे एकर बैसकक आयोजन भेल करैत छल। देवोत्थान एकादशीकेँ अधिकांश व्यक्तिक उपवास रहबाक कारणेँ एकर बैसक गोष्ठीक कार्यालय, जे डा. श्री कुमरजीक ओहिठाम छल, भेल करए। आन मासक त्रयोदशीकेँ आ कोनहुँ ने कोनहुँ गाममे एकर बैसक होअए। प्रारम्भमे तँ साप्ताहिक रूपसँ कातिकमे एकर आयोजन भेल करए, पश्चात् मासव्यापी होअए लागल। आश्विन शुक्ल त्रयोदर्शीकेँ एकर बैसक वार्षिकोत्सवक रूपमे हितेन्द्र स्मारक पुस्तकालय, राजेमे होइत छल जे एखन पर्यन्त चलि रहल अछि। एही बैसकमे अग्रिम वर्षक हेतु गाम-गामसँ निमंत्रण भेटए लगैत छल। एही निमंत्रणक आधार पर एकटा कार्यक्रम प्रस्तुत कएल जाइत छल जकरा साइक्लोस्टाइल कए वितरण कएल जाइत छल।

एही कार्यक्रमक अनुसार तीस-तीस, चालीस-चालीस गोटाक दल साइकिलसँ किरणजी ओ डा. कुमरजीक नेतृत्वमे एहि बैसकसभमे भाग लेबाक हेतु जाइत छल जाहिमे श्रीगोपल बाबू (प्रसिद्ध शिवनन्दन झा, पाहीटोल), श्री विश्वनाथ झा (पाही), श्री भोला बाबू (हाटी), श्री भडेरजी, कवि श्री तरुणजी, मोती बाबू, मोह बाबू (भटपुरा), इन्दुनाथ बाबू (हाटी), कपिलेश्वर झा 'कपिल' (राजे), कनकजी (मकरन्दा), कीर्तिनाथ झा प्रसिद्ध मोहनजी, दयानाथ झा, श्री यशोदानाथ झा, काशीनाथ मिश्र प्रसिद्ध मोहनजी बाबू (पाही), अम्बिकानाथ बाबू, विश्वनाथ बाबू प्रसिद्ध गवैयाजी, सतीश्वर बाबू (लालगंज), लीलाकर बाबू, झखन झा, रामदेव मंडल, तेतर मंडल, सुबुध कामति, विश्वेश्वर ठाकुर, रामेश्वर झा (सरिसब), सतीनाथ बाबू, लूटन बाबू प्रसिद्ध छत्रनाथ मिश्र, रुद्रानन्द मिश्र (पाहीटोल), भोलादत्त झा (सोनपुर), केशीनाथ झा (उजान), बलभद्र झा (धनेरामपुर), नित्यनाथ मिश्र प्रसिद्ध भैरव बाबू (भटपुरा), गंगानाथ झा 'बुझनुक', गंगानाथ झा (गुल्ला बाबू), प्रो. मुक्तिनाथ झा, पं. बदरीनाथ झा (बिट्ठो), पं. नित्यनाथ झा (पाही), सतीनन्दन मिश्र, शशिनाथ झा (सरिसब स्कूल) आदि दूर-दूरक अधिकांश स्थानमे जइतहिँ छलाह। हिनकालोकनिमे किछु व्यक्ति, यथा कुंजन बाबू, सतीनाथ बाबू, मोह बाबू, सतीश्वर बाबू आदि पएरेँ अन्हराठाढ़ी पर्यन्त जाइत छलाह। कविशेखरजी, भवनाथ बाबू (प्रधानाध्यापक), उमानाथ बाबू, मनमोहन बाबू, जगदीश बाबू, लक्ष्मीनाथ बाबू प्रसिद्ध खोखा बाबू, मधुसूदन मिश्र, महावैयाकरणजी आदि वृद्धावस्थाक कारणेँ लगेपासक गाममे जाइत छलाह। एतए जएह नाम स्मरण भए रहल अछि सएह देल अछि। एहिसँ कतोक अधिक व्यक्ति जाइत छलाह जनिक नाम विस्मरण भए रहल अछि।

सरिसब स्कूलमे प्रत्येक मासक शुक्ल त्रयोदशीकेँ विद्यापति गोष्ठीक बैसार होइत छल। एहिमे कतेको एहनो बैसार होइत छल जाहिमे मात्र छात्रलोकनि सभ काज करैत छलाह– सभापतिसँ लए उद्घोषक पर्यन्त ओएह बच्चासभ रहैत छलाह तथा पूर्ण दक्षतापूर्वक सभाक संचालन करैत छलाह। शिक्षकगण मात्र मूक दर्शक रहैत छलाह। विशेष आग्रह पर केओ-केओ अपन रचना सुनबैत छलाह। छात्रलोकनिकेँ पुरस्कारो देल जाइत छल। एही क्रममे डा. श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र', डा. श्री योगकर झा, डा. श्री यशोदानाथ झा, श्री मन्त्रेश्वर झा, श्री शैलेन्द्र आनन्द, प्रो. श्री दयाधर झा, प्रो. श्री मन्त्रनाथ झा, 'हंसराज', प्रो. श्री वासुकीनाथ झा, प्रो. श्री हेतुकर झा, श्री जगदीश मिश्र, श्री शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री राज आदि नेनहिसँ मैथिलीक उन्नयनमे लागि गेलाह आ' एखन प्रख्यात साहित्यकार भए मैथिलीक भण्डारकेँ दिनानुदिन समृद्ध करबामे लागल छथि।

एहि गोष्ठीक कार्यकलाप–अन्हराठाढ़ी, महरैल, मधेपुर, झंझारपुर, कोइलख, रामपट्टी, सनकोर्थु, हाटी, बिट्ठो, लालगंज, उजान, सर्वसीमा, नरुआर, सखबार, ब्रह्मपुरा, राजे, मनीगाछी, चनौर, गंगौली, मकरन्दा, माउबेहट, पुतइ, बहेड़ा,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आसी-सुपौल, नेहरा, नजिरा, भवानीपुर, बिस्फी, बेलाही आदि स्थानमे होअए तथा प्रचुर संख्यामे स्थानीय लोक भाग लेल करथि।

एहि गोष्ठीक माध्यमसँ कतोक व्यक्ति साहित्यकार बनलाह–केओ कवि, केओ कथाकार तथा केओ निबन्धकार। एही क्रममे हितेन्द्र स्मारक पुस्तकालय, राजेसँ *'हितैषी'* तथा कुमारिल कानन, भटपुरासँ *'कुमारिल'* नामक हस्तलिखित पत्र प्रकाशित होबए लागल। डा. धीरेन्द्र, पं. श्री मोहनजी, पं. महावीर झा (महरैल), पिनाकनाथ झा प्रसिद्ध मनोहरजी (सरिसब), तरुणजी, भडेरजी, मोतीबाबू आदि एहि पत्रद्वय द्वारा अपन लेखनीकेँ प्रौढ़ बनौलनि। हितैषीमे मणिपद्म, मधुप तथा सुमनजीक रचना सेहो रहैत छल। हितैषीसँ कतेको रचना लए आचार्य सुमनजी द्वारा तत्कालीन मिथिला मिहिरमे प्रकाशित कएल गेल। एहीसँ उद्धृत कए शरत् बाबूक *चन्द्रनाथ, छवि, बिलासी* तीनू रचनाक अनुवाद, स्व. हरिगोविन्द बाबूक *संगीत-परिचय,* स्व. पुष्कर झाक *बैदक बटुआ,* डा. बी. झाक कतेको कथा तथा अन्य कतिपय रचना मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल।

एही गोष्ठीक सत्प्रयाससँ *मैथिली प्रकाशन समिति, सरिसब* स्थापना भेल। श्रद्धेय श्री मनमोहन बाबू एकर मुख्य प्रवर्त्तक तथा मंत्री भेलाह। स्व. दीनानन्द सिंह झा प्रसिद्ध छीतन बाबू ओ हुनक छोट भाए स्व. मदनानन्द सिंह झा प्रसिद्ध बदरी बाबू (चनौर) एकर क्रमशः सभापति तथा उपसभापति बनलाह। डा. श्री कीर्त्यानन्द कुमर, डा. रमाकान्त चौधरी, महावैयाकरणजी, कविशेखरजी, स्व. नयनमणि झा, सरिसब स्कूलक प्रधानाध्यापक स्व. भवनाथ झा एकर पोषक छलाह। एहिसँ अतिरिक्त बहुतो गोटए एकर सदस्य छलाह। एहि समितिसँ अद्यावधि चारि गोट पोथी प्रकाशित भए चुकल अछि :–

1. *संचयिता* (मौलिक कथा-संग्रह)–सं. श्री मनमोहन झा।
2. *प्रतिविम्ब* (अन्य भाषासभक कथाक अनुवाद)–सं. श्री कीर्त्यानन्द कुमर ओ श्री जितेन्द्र नारायण झा।
3. *कण्ठहार* (नाटक)–ले. मणिपद्म, सं. जितेन्द्र नारायण झा।
4. *जिजीविषा* (कविता संग्रह) सं. डा. श्री जगदीश मिश्र।

संचयिताक प्रायः सभ कथाक अनुवाद मैथिली साहित्येतर भाषा यथा हिन्दी, कन्नड़, तमिल, मलयालम आदिमे प्रकाशित भए चुकल अछि।

एही गोष्ठीक आयोजकत्वमे सरिसब लक्ष्मीश्वर एकेडमीक प्रांगण (लक्ष्मीवती-नगर) मे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक विशाल अधिवेशन 1968 ई. मे भेल जकर मुख्य संचालक छलाह महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालयक प्रधानाचार्य (स्व.) सुशील झाजी तथा हुनक संग स्थानीय स्कूल-कालेजक सभ शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारीगण छलाह। एहि अधिवेशनक तोरणक निर्माण कलाकार स्व. लक्ष्मीनाथ झा प्रसिद्ध खोखा बाबू तथा मंचक निर्माण पं. श्री शिवनन्दन झा प्रसिद्ध गोपाल बाबू द्वारा भेल छल। स्वागताध्यक्ष छलाह डा. विश्वम्भर झा तथा उद्घाटन कएने छलाह तिरहुत प्रमण्डलक तत्कालीन आयुक्त नागेश्वर प्रसाद सिंह। एहि अधिवेशनक प्रसंग स्व. रमानाथ बाबूक उक्ति छल–*"अहाँलोकनि ताहि प्रकारक ने आयोजन कएल अछि जे आब हठात् आन ठामसँ एहि हेतु निमंत्रण नहि आओत।"* एहि अवसर पर एकटा स्मारिकाक सेहो प्रकाशन भेल जकर सम्पादक रहथि प्रो. श्री सदन मिश्र।

एहि गोष्ठीक कार्यकलापसँ आर किछु भेल हो वा नहि, परन्तु एतबा तँ अवश्य भेल जे जनसाधारणमे मैथिलीक प्रति जागरूकता आएल। अपढ़ो लोक मैथिलीकेँ मातृभाषा बुझए लगलाह। साहित्यकारसँ अतिरिक्तो व्यक्ति विद्यापतिक गीत–तिरहुति, नचारी, महेशवानी आदि सभामे सुनबए लगलाह। कोनहुँ बैसारमे दस-बीस साइकिलसँ जाइत लोककेँ देखि ओ लोकनि कहल करथि–*"इएह विद्यापतिसभ जाइत छैक; गोष्ठीवला सँभ जाइत छैक।"* महिसबारो सभ महींस पर चढ़ल विद्यापतिक गीत गाबए लगैत छलाह। एक संग तीस-चालीस गोटाकेँ साइकिल पर गीत गबैत जाइत देखि लोक आश्चर्यचकित भए जाइत छल। एहि दलमे श्री यशोदा बाबू ओ दयाबाबू दुनू भाइ गीत गबैत जाइत छलाह तथा अन्य सहयात्रीलोकनि ओकरा दोहरबैत छलाह।

कतेक की कहल जाए–स्थानीय लोकक अतिरिक्त दूर-दूरसँ मैथिली-सेवीलोकनि एतए आएल करथि। बहेड़ासँ मधुपजी, मणिपद्मजी, अणुजी, बहेड़जी, कृष्णनन्दन बाबू, मित्रम्, महेन्द्र बाबू आदि; दरभंगासँ सुमनजी, अमरजी, विन्देश्वरजी, शेखरजी, रामदेव बाबू; जनकपुरसँ जीवनाथ बाबू, कलकत्तासँ बाबू साहेब चौधरी, इन्द्रगोविन्द बाबू आदि अबैत जाइत छलाह। दू-एक बेरि किसुनजी, राजकमलजी सेहो आएल छलाह। एहि परिसरक प्रत्येक व्यक्ति–हरवाह-चरवाह पर्यन्त एहि गोष्ठीमे उपस्थित होइत छलाह।

एमहर आबि महावैयाकरणजी, कविशेखरजी, भवनाथ बाबू आदिक निधन भए गेलनि। कुंजन बाबू जीविकोपार्जन हेतु अन्यत्र चल गेलाह। कुमरजीक स्थानान्तरण भए गेलनि आ क्रमिक एहि गोष्ठीक पूर्वरूपक कार्यक्रम शिथिल होबए लागल। मात्र पुष्कर-हितेन्द्र स्मारक पुस्तकालय, राजे एकटा एहन संस्था अँछि जे अद्यावधि कार्यक्रमकेँ चला रहल अछि। एतए प्रत्येक वर्ष आश्विन शुक्ल त्रयोदशीकेँ मूर्धन्य कलाकारलोकनि उपस्थित भए कविकोकिलकेँ श्रद्धांजलि अर्पित करैत मैथिलीक उत्थानक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्रयास करैत छथि । ठामठीम एखनहु कहिओ-कहिओ ई पर्व मनोओल जाइत अछि ।

आब गोष्ठी-सम्बन्धी किछु संस्मरण अधोलिखित अछि–यद्यपि वर्ष-तिथि मोन नहि रहलाक कारण उनटा-पुनटा भए गेल अछि :–

एक बेरि हमरालोकनिकेँ आसी गामसँ निमन्त्रण प्राप्त भेल। ओ समय कोशीक बाढ़िक छल । आसी गामक चारूकात बाढ़िसँ डूबल छल । यद्यपि बाढ़ि समाप्त भए चुकल छलैक, समस्त गाम पानिसँ पचपच करैत । किरणजी अपन गाम धर्मपुर (उजान) सँ साइकिलसँ बिदा भेलाह–यद्यपि आधा बाट पएरेँ गेलाह । कतहु डाँड़ भरि पानि, कतहु छाती भरि । कोनहुना अन्हार होइत-होइत ओतए पहुँचलाह । मधुपजी ओतए हुनक स्वागतार्थ उपस्थित रहथि । किरणजीक स्थिति देखि स्तम्भित भए गेलाह ।

सरिसबसँ हम आ' भडेरजी साइकिलसँ बिदा भेलहुँ । साँझ होइत-होइत आरामसँ शिवनगरघाट पहुँचलहुँ । ओतए धारमे पानि रहैक । पार होएबाक कोनहुँ व्यवस्था नहि । परन्तु किछु व्यक्तिकेँ एक स्थान पर नदी पार करैत देखि हमरहु लोकनि ओहि स्थान पर साइकिलकेँ पानिमे हेलाओल । जाँघ भरि पानि छलैक। ओहि पार पहुँचि लोकसभसँ जिज्ञासा करैत बिदा भेलहुँ । आब दुर्घट बाट छल । मुखान्ध भए चुकल छलैक तथापि टहटह इजोरियाक कारण बाट स्पष्ट देखबामे अबैत छल । एकठाम पहुँचि देखल–एकटा नदीक पुलक एक भाग, जाहि दिससँ हमरालोकनि जाए रहल छलहुँ, सोझे ठाढ़, पुल नदारद। 10 हाथ नीचाँ धारमे पानि भरल । हम एकाएक जोरसँ ब्रेक देलिऐक ओ भडेरजीसँ चिकरि कहलिअन्हि–"भडेरजी, मुइलहुँ। रुकि जाउ।" ओहो धरपड़ाए साइकिलसँ उतरलाह । जँ पाँचो सेकेण्डक विलम्ब होइत तँ प्राण गेले छल ।

आब दुनू गोटए किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए गेलहुँ । कतहु कोनहु बाट देखबामे नहि आबए । भडेरजी कहलन्हि–"आब अपटी खेतमे गेल प्राण।" बावत हमरालोकनिक बाजब सुनि एक गोटए चिकरि कहलन्हि–"ठाढ़ रहब, हम आबि रहल छी।" ओ कनेके कालमे अएलाह आ ओतएसँ पाँच-सात लग्गा हटि कए बाट देखाए देलनि । भरि ठेहुन पानि दए हमरालोकनि धार पार कएलहुँ । ओतएसँ गोबर ओ थालसँ भरल बाट धएलहुँ । किछु दूर चली आ साइकिलक पहिआसँ काटी लए माटि छोड़ाबी, पुनः बिदा होइ । एहिना करैत-करैत रतिगर भेला पर आसी पहुँचलहुँ । कतहुसँ प्राण आएल ।

× × ×

एक बेरि हमरा लोकनिकेँ बेलाही गामसँ निमंत्रण भेटल। आयोजक छलाह ओतएक उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक । नियत तिथिकेँ डा. कुमरजी, किरणजी, भडेरजी, गोपाल बाबू आर करीब 15-20 गोटएक संग हमहुँ गेल रही । ओतए पहुँचला पर ज्ञात भेल जे हेडमास्टर साहेब कतहु भोज खएबाक लेल चल गेलाह अछि । सभकेओ क्षुब्ध भए गेलहुँ । किरणजी ओतहि एकटा गाछ तर अपन तौनी बिछाए देलथिन । सब केओ बैसैत गेलहुँ । कोनहुँ तरहेँ ई सूचना ओहिठामक सरकारी अस्पतालक डाक्टरकेँ भेटलनि । ओ तखनहि हमरालोकनिकेँ अपना ओतए बजबाए लेलनि । अपन डेराक ओसारा पर बड़का सतरंजी-जाजिम बिछबाए बैसकक आयोजन कएल । डाक्टर साहेब बड़का घनगर दाढ़ीबला एकटा मुसलमान छलाह । चाह-पानक आयोजन करए लगलाह । कतेको गोटाक कान ठाढ़ भए गेलनि जे आब चाह कोना पीअब । परन्तु कनेके कालमे एक गोट हलुआइक बालक चाह ओ कप तथा दोसर एक गोट ब्राह्मण पान लए आबि गेलाह । हुनका लोकनिक अबितहिँ डाक्टर साहेब स्वयं ओसारा परसँ नीचाँ उतरि गेलाह । किरणजी ओ कुमरजी हुनका ओसारा पर बैसले रहबाक आग्रह कएल, किन्तु ओ अपन सौजन्य देखओलनि । सभ केओ चाह-पान लैत गेलाह ।

किरणजी बजलाह– "आब कहू, एक गोटा निमंत्रण दए स्वयं निमंत्रणमे चल गेलाह ओ दोसर गोटा आग्रह कए स्वयं नीचा उतरि गेलाह । आब अहीँ लोकनि कहू जे दुनूमे के ब्राह्मण छथि–हेटमास्टर साहेब अथवा डाक्टर साहेब ?"

× × × ×

एक बेरि विष्णुपुर गामसँ निमंत्रण आएल । सरिसबसँ किरणजी, भडेरजी, तरुणजी आदिक संग हमहूँ गेल रही । दरभंगासँ सुमनजी, अमरजी लोकनि आएल छलाह । नरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार' मुख्य अतिथि रूपमे बजाओल गेल रहथि । लोहनारोडसँ सवारीक व्यवस्था छल । सवारी अएबामे किछु विलम्ब भेल छलैक । तावत सभ गोटा किछु आगाँ बढ़ैत गेलहुँ । एकटा घोड़ी आएल छलैक जाहि पर नरेन्द्रनाथ दास चढ़ि बिदा भेलाह । एकटा हाथी आएल छलैक जाहि पर सुमनजी लोकनि चढ़लाह । ओही पर तरुणजी सेहो चढ़ि गेलाह । बाँकी हमरा लोकनि पएरेँ बिदा भेलहुँ । किछु आगु गेला पर बाटमे एकटा खोड़ा छलैक, ओहिमे करीब भरि जाँघ पानि । कनकजी खोड़ाकेँ छोड़ि आरि पर दए बिदा भेलाह । तैओ छोट-खाँट रहबाक करणेँ धोती भिजिए गेलनि । बीच खोड़ामे गेला पर तरुणजी हाथी परसँ धब्ब दए पानिमे खसलाह । हम, भड़ेरजी, किरणजी आर किछु गोटए बीचहि दए बिदा भेलहुँ आ' धोतिओ भिजबासँ बाँचि गेल।

ओतए पहुँचला पर बेस स्वागत-सत्कार भेल । हुनका लोकनिक संग्रहालय देखबाक योग्य छल, जकर व्यवस्थापक स्व. जयगोविन्द बाबू छलाह । सायंकाल आपस अएला पर गप्प-सप्प होबए लागल । एही बीचमे नरे बाबू आ किरणजीमे वाग्विदण्डा होअए लागल जे बादमे चिकड़ा-चिकड़ीमे परिवर्त्तित भए गेल ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

किरणजी कहथिन्ह जे सभसँ पहिने हम काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे विद्यापति पर्वक आयोजन कएलहुँ, तँ नरे बाबू कहथिन्ह जे सभसँ पहिने हमहीं हजारीबाग जहलमे एकर आयोजन कएलहुँ। केओ ककरो गप्प मानबाक हेतु सहमत नहि छलाह। जखन वाद-विवाद बड़ीकाल धरि चलल तँ सुमनजी कहलथिन्ह– "आहि रे, दुनू गोटए एना किएक करैत छी। दुनू गोटए तँ सत्ये कहैत छिऐक। एक गोटा काशीमे प्रारम्भ कएल तँ दोसर गोटे हजारीबागमे। एहिमे दू मत कतए अछि।"

ओतएसँ किछु गोटे पएरे बिदा भेलहुँ। सुमनजी ओ अमरजी दूटा घोड़ी पर रहथि। एक गोटा आगाँ लालटेन लेने छल। एकटा गाछीमे आबि घोड़ी बाट छोड़ि गाछक नमरल ठाढ़िक नीचा दए चलनाइ प्रारम्भ कएलक। ओ लोकनि यावत् सम्हरथि तावत् ठाँहि। सुमनजी ओ अमरजी चिकरि उठलाह–"मुइलहुँ"। 'त्राहि कृष्ण' करैत हमरालोकनि उजान आबि गेलहुँ। ओ लोकनि लोहनारोड स्टेशन पहुँचि गाड़ी पकड़लन्हि।

× × × ×

एक बेरि हमरालोकनि बिस्फीक यात्रा पर जाइत गेलहुँ। चालीस गोटए रही। सभसँ आगाँ कुमरजी तथा सभसँ पाछाँ किरणजी छलाह। श्री गोपाल बाबू, श्री दया बाबू, श्री रामेश्वर झा, श्री बच्चा बाबू, श्री रुद्रानन्द मिश्र, श्री रामदेव मंडल आदि साइकिलसँ गेल रही। चौरी, रैयाम कोठी, बसौली हाट, दड़िमा आदि स्थान होइत बिस्फीक लग पहुँचलहुँ। एकटा छोटछीन धार भेटल जकर ओहिपार मुसलमानक बस्ती। धारमे बाँसक चचरीक पुल–एक भाग 10 हाथ ऊँच, दोसर भाग माटिमे भिरल। ओहि परसँ पार भेनाइ दुरूह बुझना जाइत छल। कोनहुना सभकेओ पार भेलहुँ। हमर ओ कुमरजीक साइकिल श्री रुद्रानन्द मिश्र पार कए देलनि। हमरालोकनिकेँ देखि ओहि पारक किछु वृद्ध महिलागण ठाढ़ भए गेलीहि, आ बजलीह-"देखैत जाही, ई सभ पुल परसँ ओँघराए मरि जएतैक।"

अस्तु, पुल पार कएलाक बाद विद्यापतिक डीहक प्रसंग पुछला पर एकटा वृद्धा संग जाए देखाए देलन्हि जे ओतएसँ सटले छल। ओतए एकटा माटिक ढूह छल। ओ कहलक–"इएह हुनक चौपाड़ि थिकन्हि।" हमरालोकनि ओहि चौपड़िक माटि लए माथसँ लगाओल। ओही चौपाड़िक कातमे एकठाम कुसिआर पेड़ल जाइत रहए। रस देखि मोह बाबूक जीभसँ पानि खसए लगलन्हि। ओ एक गिलास रस लए पीलन्हि। हुनक देखादेखी हमरहु लोकनि रस पीबैत गेलहुँ। अन्तमे कुमरजी जेबीसँ मनीबैग बहार कए रसक दाम देबए लगलथिन्ह तँ एकटा बूढ़ बजलाह–"बाबू, अहाँलोकनि एतेक दूरसँ आबि एहि धरतीक माटिकेँ माथसँ लगाओल अछि, आ' हमरालोकनि एतेक नीच होएब जे किछु गिलास रसक दाम लेब। ई हमरासभक सौभाग्य थिक जे अपनालोकनि सन पैघ लोक आबि एहि माटिकेँ सम्मान देलिऐक अछि।" ओ व्यक्ति एक अधबयस मुसलमान छलाह, आ' हुनक सदाशयतापूर्ण विचार देखि हमरालोकनि विमूढ़ भए गेलहुँ।

तखन हमरा लोकनि कविकोकिलक इष्टदेवी विश्वेश्वरीक दर्शन करए गेलहुँ। एकटा छोट-छीन फूसक घरमे एकटा यंत्र बनल छलैक। कहल जाइत छैक जे बाढ़ि अएबासँ किछु दिन पूर्वहिँ ओहि घरमे पानि भरि जाइत छैक यद्यपि चारूभाग सुखाएले रहैत छैक आ' बाढ़ि घटबाक समय अएला पर चारूभाग पानिमे डूबल रहलहुँ सन्ताँ घरक पानि सुखाए जाइत छैक।

× × ×

एक बेरि हमसभ भवानीपुर गेलहुँ। बढ़ियाँ जकाँ कवि-सम्मेलन ओ भाषण-भूषण भेल। बीचमे तरुणजीकेँ पिआस लगलन्हि। ओ एक व्यक्तिसँ पानि मङलथिन्ह। ओ कहलथिन्ह–"देखैत नहि छहक, इनार पर ढेकुल लागल छैक। जाक' पानि पीबि लएह।" तरुणजी चुप्प भए बैसि गेलाह।

कविसम्मेलनक पश्चात् बिदा हेबाक उपक्रम होबए लागल। तावत् ओएह व्यक्ति बाजल– "हौ विद्यापति सभ, एकटा आर गीत कहक ने।"

तरुणजी झटसँ उत्तर देलथिन्ह–"पानि देअए कहलिअह तँ ढेकुल देखाए देलह। जाह, ढेकुलसँ गीत सुनि लिहह।"

एक स्थानमे एकटा बूढ़ मुसलमान सभकेँ रस पिआए स्वागत कएलन्हि आ' दोसर ठाम एक नवयुवक ब्राह्मण पानिक स्थानमे ढेकुल देखा देलन्हि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झाक परिसरक रंगमंचीय क्रियाकलापक क्रम-विकास

□ डा. श्री यशोदानाथ झा

सरिसब-पाहीकेँ केन्द्र मानि यदि वृत्त बनाओल जाए तँ ओहिमे सटले उत्तर इसहपुर गाम भेटत, जे पण्डित श्री गोविन्द झाक अपन गाम थीक। लक्ष्मीवती संस्कृत विद्यालय, सरिसबमे पंण्डितजीक शिक्षो भेलन्हि, तँ यदि सरिसब-पाहीकेँ केन्द्र मानि ओकर परिसरक निर्धा ण करी तँ पूबमे सर्वसीमा ओ पच्छिममे राजे, उत्तरमे राजग्राम (भौर) ओ दक्षिणमे चौनौर धरिकेँ राखब उचित बुझैत छी।

गोविन्द झाक परिसरमे नाट्यमंचनक इतिहास बेस पुरान छैक। एतए पाँच गोट उद्देश्यकेँ राखि रंगमंचीय क्रिया-कलापक प्रस्तुति भेल अछि–(1) स्वान्तः सुखाय नाटकक मंचन; (2) स्वतन्त्रता-संग्रामक क्रममे उद्बोधनात्मक मंचन; (3) व्यवसाय-बुद्धिसँ; (4) जनहितमे –यथा-स्थ ीय महाविद्यालय एवं गंगानाथ वाचनालयक सहायतार्थ, पुण्येश्वर (लालगंज) मन्दिरक जीर्णोद्धार हेतु ओ; (5) कलासम्बर्द्धनाक निमित्त रंगकर्मी लोकनिमे प्रतिस्पर्द्धा जगएबाक उद्देश्यसँ।

1. स्वान्तः सुखाय–

पाहीटोलक झा-परिवार सबसँ पहिने सन् 1920-25क मध्य स्वान्तःसुखाय संस्कृतक *उत्तररामचरित* ओ *वेणीसंहार* नामक नाटकक मंचन कएने छल। *उत्तररामचरित* मे श्री काशीनाथ झा (प्रसिद्ध भैरव बाबू) ऋषिकुमारक भूमिकामे उतरल रहथि। एकर मंचन इष्ट ओ कुलदेवी ताराक मन्दिरक सोझाँमे भेल रहए। *वेणीसंहारक* मंचन सन् 1928 मे फेर भेल, जाहिमे स्व. शिवनाथ झा, विभूतिनाथ झा, आदित्यनाथ झा, आनन्दनाथ झा (प्रसिद्ध शंकर बाबू), केदारनाथ झा, सोमनाथ झा (प्रसिद्ध गिरगिट बाबू) ओ सखबारक नरेन्द्रनाथ दास 'विद्यालंकार' भाग लेने रहथि। एहिमे विभूतिनाथ झाकेँ अश्वत्थामाक भूमिकामे सर्वोत्कृष्ट अभिनेता घोषित कएल गेल छल। सब कलाकार अपन-अपन भूमिकाक अनुकूल परिधान बनाए ओ पहरि फोटो घिचओनो छलाह।

एहि मंचकेँ डा. सर गंगानाथ झाक पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त छलैक। साठा पाग पहिरि बाबू लोकनि 'बंगालीटोल'क नाच-तमाशा देखबाक हेतु आएल रहथि।

सरिसब-पाही सांस्कृतिक गतिविधिक केन्द्र रहैत आएल अछि। परिसरक लोकमे अभिनय दिस रुचि-रस जगओलक पाहीटोलक झा-परिवार। धुरन्धर विद्वान्लोकनि मंच बनाए नाटक करताह–ई खिधांशक विषय बूझल जाइत छल ता', आ तँ "बंगाली टोल"क उपनाम झा-परिवारक संग जोड़ल गेल। ई सोतिपुराक कुचेष्टा छल। अंग्रेजी पढ़ि आधुनिकताक रंग भेटि चुकल छलैक एहि परिवारकेँ। नव चेतना-सम्पन्न एहि परिवारक लोक ओहि समय धरि निधोख भए गेल छल। झा-परिवार द्वारा नाट्य-मंचनक क्रम बनले रहल। सन् 1935-36 मे डी. एल. राय लिखित *भीष्म* नाटकक मंचन भेल रहए जाहिमे स्व. केदारनाथ झा (प्रसिद्ध केदार बाबू) धीवरराजक भूमिकामे उतरल रहथि। सन् 1938 मे तीन राति नाटक भेल रहए। *भयंकर भूत* मे महाराज उग्रसेन बनल रहथि स्व. बाबू शान्ति नाथ झा। केदार बाबू 'जवानी साह' डाकूक भूमिकामे उतर रहथि। *स्वार्थावलम्बक* उत्कृष्टतम भूमिकाक निर्वाह कएने रहथि श्री छत्रनाथ मिश्र (प्रसिद्ध लूटन बाबू, पाहीटोल)। एहिमे हिनका सर्वोत्तम अभिनेताक रूपमे स्व. तन्त्रनाथ झा द्वारा स्वर्णपदक भेटल छल। *वीर अभिमन्यु* मे अर्जुन बनि उतरल रहथि बाबू शान्तिनाथ झा, जयद्रथक भूमिकामे रहथि केदार बाबू कृष्ण बनल छलाह जीवनाथ झा (हाटी), द्रोणाचार्यक भूमिका भेटल रहए डा. श्री गौरीनाथ झाकेँ, एवं अभिमन्युक भूमिकाक सफल निर्वाह कएल श्री काशीनाथ झा (प्रसिद्ध भैरव बाबू)। *दुर्गादास राठौर* मे दुर्गादासक भूमिका केदार बाबूकेँ ओ औरंगजेबक भूमिका स्व. सीतानाथ बाबू (प्रसिद्ध डिप्टी साहेब)केँ देल गेल।

सन् 40क धक्मे "क्लब" विकसित करबाक उद्देश्येँ स्व. सीतानाथ झा, पाहीटोलक अध्यक्षतामे महाराजी पोखरि पर *गरीब की दुनिया* नामक नाटक टिकट पर खेलाएल गेल छल, जाहिमे स्व. जीवनाथ झा (हाटी) मुरादक भूमिकामे ओ स्व. सीतानाथ झा दाउदक भूमिकामे उतरल रहथि। स्व. कुमुदनाथ झा प्रसिद्ध माल बाबू ओहि मंच पर कॉमिक कएने रहथि।

सन् 1943-44 मे **यंग बोआइज ड्रामाटिक क्लबक** स्थापना पाहीटोलमे भेल। एकर अध्यक्ष रहथि श्रीखुरखुर मिश्र। ओहि साल दशमीमे ई क्लब *अभिमन्यु* खेलएबाक निश्चय कएने छल। सुभद्राक भूमिका श्री खुरखुर मिश्रकेँ देल गेलैन्हि। मंच बनएबाक हेतु सब युवक आगाँक पोखरिसँ बाँस घिचि आनि रहल छलाह। ता' खुरखुर मिश्रकेँ अपसियाँत देखि हुनक पिता स्व. रेवतीनाथ मिश्र बाजि उठलाह जे आब एकटा महीस कीनि दैत छी, अहाँ सएह चराएब। डरेँ सब छोड़ि-छाड़ि खुरखुर मिश्र भागि गेलाह ओ अध्यक्षक पदहुसँ त्यागपत्र दए देल तथा सुभद्राक भूमिकहुसँ बाज अएलाह। अन्ततः श्री कामनाथ झाक कान्ह पर अध्यक्षक जूआ पड़ल। पछातिकाल वरीय कलाकार लोकनि एहि क्लबक नीक अभिनेताकेँ संग लए खेलाए लगलाह।

सन् 1945 सँ झा-परिवारक कलाकारलोकनि स्व. तन्त्रनाथ झाक अध्यक्षतामे बाहरी कलाकारक संग मिलि भरैन पर नाटक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

खेलाथि । मास-मास दिन धरि पूर्वाभ्यास चलैक । कलिगाओँ (बेनीपट्टी) क बड़का परमानन्द झा ओ सिरपुर लगमाक छोटका परमानन्द झा आदि आबथि । वस्तुतः एहिठाम चमत्कारी अभिनयक प्रदर्शन होइत छल । गाम-गाम एकर ख्याति पसरल छल । फलतः नाटक देखबाक हेतु जनसमुद्र उमड़ि पड़ए ।

झा-परिवारक नवयुवक कलाकारलोकनि बादमे आबि उग्रतारा नाट्यकला परिषदक स्थापना कएलैन्हि । एहि मंचसँ रवीन्द्रनाथ टैगोरक *विसर्जन, वीरबन्दा बैरागी*, डी. एल. रायक *भारत रमणी, शाहजहाँ, दुर्गादास, नूरजहाँ, सिराजुद्दौला, मीर कासिम, उस पार, वीर अभिमन्यु*, गोविन्द वल्लम पंत लिखित *राजमुकुट, राजतिलक* ओ जयशंकर प्रसाद कृत *राज्यश्री* आदिक मंचन भेल । मैथिली नाटकमे मुन्शी रघुनन्दन दासक *मिथिला नाटक*. प्रो. ईशनाथ झाक *चीनीक लड्डू, उगना*, स्व. आनन्द नाथ झा (प्रसिद्ध शंकर बाबू) क अप्रकाशित नाटक *अपमाता*, पं. गोविन्द झाक *वसात*, सीताराम चौधरीक *सुखाएल डारि नव पल्लव, चोर, कुहेस, घटकैती, इजोत*, सुधांशु 'शेखर' चौधरीक *लेटाइत आँचर, भफाइत चाहक जिनगी, पहिल साँझ*, लल्लनप्रसाद ठाकुरक *नीलो काका*, श्री काशीनाथ झाक *प्रायश्चित्त, महाराणा प्रताप, भीष्म*, हरिश्चन्द्र झा *'हरीश'* क *छींक* आदिक सफल मंचन भेल । अपमाताक 1955 ई. मे श्री कामनाथ झाक कठिन परिश्रमसँ सफलतापूर्वक भेल रहए । एहि नाटकक सरस्वती बनल रहथि श्री मोदनाथ झा ओ गणेश श्री यशोदानाथ झा ।

सन् 1972 मे *पाटलीपुत्र का राजकुमार* खेलाएल गेल । एहिमे अशोक बनल छलाह कामनाथ बाबू । श्री हीरानाथ झा तिष्यरक्षिता बनाओल गेलाह । कुणाल रहथि श्री तारानाथ झा (प्रसिद्ध बच्चाजी) । कालसेनक भूमिकाक निर्वाह कएने रहथि श्री हृदयनाथ झा । एहि मंचनक प्रशंसा अद्यापि कतोक व्यक्ति करैत छथि । एहिना *पृथ्वीराज* मे कामनाथ बाबू पृथ्वीराजक, अजयनाथ झा मुहम्मद गोरीक एवं जीवन मिश्र (बेहट) संयोगिताक भूमिकामे उतरल रहथि । एहिमे श्री अजय बाबू अभिनयक दृष्टिएँ कामनाथ बाबूसँ आगाँ बढ़ि गेल रहथि ।

सन् 1969 मे कमलेश्वरक *कारण, काल, किनारा* कैँ मंचित कएल गेल रहए, जाहिमे हरिश्चन्द्र–श्री कामानथ बाबू, विश्वामित्र–डॉ. गौरीनाथ झा, शैव्या–श्री तारानाथ झा (वच्चाजी), सत्य–श्री उदयनाथ झा (प्रथम), धर्म–श्री अभयनाथ झा, रोहित–श्री चन्द्रनाथ झा (प्रसिद्ध मुन्नू) ओ विष्णु– श्री धर्मनाथ झा (प्रसिद्ध बबलू) बनल रहथि । एहि नाटकक अत्यन्त सफलतापूर्वक मंचन भेल रहए ।

उग्रतारा नाट्यकला परिषदक अतिरिक्त पाहीटोलक तिलौरी च'र मे जगद्धात्री पूजाक अवसर पर सेहो नाटक होअए । पाहीटोलक स्व. गोपीनाथ मिश्रक पत्नी स्व. अपराजिता दाइ एहि पूजाक आरम्भ कएने रहथि । ई 1939-40 ई. क कथा थीक जहियासँ नाटक खेलाएल जाए लागल । अभिनय-पक्षक सब भार श्री छत्रनाथ मिश्रक उपर रहैत छल ओ व्यवस्था-पक्षक भार स्व. भवनाथ मिश्रक उपर । एहिठाम *ईश्वरभक्ति, भयंकर भूत, वीर अभिमन्यु, 'मिथिला नाटक'* एवं अंतमे *उगनाक* मंचन भेल रहए । अभिनयमे संग देथि हाटीक जीवनाथ झा, गोनू बाबू, उग्रतारा नाट्यकाला परिषदक श्री कामनाथ झा, स्व. कीर्तिनाथ झा (प्रसिद्ध मोहनजी बाबू) एवं स्व. दयानाथ झा आदि । सन् 45-46 मे अपराजिता दाइक निधनक संग इहो आयोजन समाप्त भए गेल ।

कालक्रमेँ पं. गोविन्द झाक परिसरक विभिन्न गाममे रंगमंचीय कार्यक्रम दिस रुचि-रस जागल । एकरे शुभ परिणाम भेलैक जे नवटोलमे **विद्वन्नाट्य-परिषद**, राजग्राममे **श्रीकृष्ण नाट्यकला परिषद**, लालगंजमे **कीर्त्तिनाथ कला-परिषद**, सर्वसीमामे **भवनाथ कलाकेन्द्र** एवं पाहीटोलमे **महावीर स्थान नाट्यकला** परिषदक स्थापना भेल ।

विद्वन्नाट्यकला परिषदक स्थापना नवटोलमे सन् 1936 ई. मे भेल छल । एकर संस्थापक-मंडलमे स्व. ईशनाथ झा, स्व. चन्द्रशेखर झा ओ राजेक स्व. हरिगोविन्द झा छलाह । ईशनाथ बाबूक *चीनीक लड्डू* क सर्वप्रथम अभिनय [illegible] भेल रहए । एहिमे बटुआ दास बनल रहथि स्व. तारानन्द झा (ईशनाथ बाबूक जेठ भाए), सुधाकान्त रहथि स्व. दीनानाथ झा, प्रेमकान्त तँ ईशनाथ बाबू स्वयं रहथि तथा ढोलकियाक भूमिका भेटल रहए स्व. कुलानन्द झा (नवटोल)कैँ । सर्वप्रथम एहि परिषदक मंचन गौरीबागमे भेल रहए । पछाति देवीमन्दिरक आगाँ होअए लागल ।

सन् 1936 मे सम्राट् पंचम जॉर्जक रजत-जयंती मनाओल गेल । ओहि अवसर पर एहि परिषद द्वारा नाटकक भव्य मंचन भेल रहए । एहि मंच पर तारानन्द बाबू, ईशनाथ बाबू, कुलानन्द बाबू, दीना बाबू, अम्बिकानाथ बाबू, शिवनन्दन बाबू, सीतानन्दन बाबू, पुष्कर झा एवं रमानाथ झा (प्रसिद्ध नूनू बाबू) आदि मिलि नाटक कएने रहथि । कुशल मंचन ओ निर्देशनक हेतु स्व. हरिगोविन्द झा (राजे) अपन सेवा समर्पित कएने रहथि । ई ध्यान देबाक विषय छैक जे स्व. काशीनाथ मिश्र पहिले पहिल हिन्दीक नाटक *जनक नन्दिनी*मे 'लव'क भूमिकामे उतरल रहथि । कलाक संवर्द्धनामे हरिगोविन्द बाबूक सहयोग-साधना आरम्भ भेल । पूर्वाभ्याससँ लए मंच धरिक भार उठौने रहथि ओहि बेरि । नाटक आरम्भ होएबासँ पूर्व हरिगोविन्द बाबू दर्शक समाजकैँ दू मिनटक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

साक्षात्कारसँ आह्लादित करैत कहने छलाह–"जे समाज कहियो नाटक खेलएबाक खिधांश करैत छल, ओहि समाजक लोक आइ स्वयं एहि मंच पर नचताह आ' हम तबला बजाएब...।" वस्तुतः ओ दिन अभिनय द्वारा जनरुचि निर्माणक दिन छल। निर्माण कोनो प्रकारक हो, सुखकर होइछ।

स्व. ईशनाथ झाक *शकुन्तलाक* मंचन एतहि भेल, तखन प्रकाशन। एहि मंचसँ *मृच्छकटिक* नाटकक मैथिली अनुवादकेँ संक्षिप्त कए सेहो खेलाएल गेल। एहि मंचसँ *भयंकर भूत* नामक नाटक श्री छत्रनाथ मिश्र (पाही) स्वयं देखने छथि। एही मंचसँ *प्रेम की वेदी* नामक नाटक खेलाएल गेल जाहि मे स्व. पुष्कर झाकेँ नायकक भूमिकाक हेतु तीन-तीन बेर पदकसँ पुरस्कृत कएल गेल।

शारदीय नाट्यकला परिषदक स्थापना 1959-60 मे भेल। मैथिली नाटकमे पहिले-पहिल श्री गोपालचन्द्र मिश्र 'मित्रम्' द्वारा रचित *भूख* नामक नाटकक मंचन भेल रहए। पश्चात् *बसात, उगना, आगि धधकि रहल अछि* एवं *शिवसिंह* आदिक मंचन सेहो भेल अछि।

हनुमन् नाट्य परिषद्, हनुमाननगरक स्थापनाकाल नवटोलक विद्वन्नाट्य-परिषदक समकालीन थीक। ई परिषद् प्रत्येक वर्ष हनुमान जयन्तीक अवसर पर नाटक खेलाइत अछि। एहि परिषदक कलाकार लोकनिमे सर्वश्री फेकू मिश्र, गोकुलानन्द खाँ, ताराकान्त झा एवं दिगम्बर झा, शिवाकान्त झा आदि छथि।

श्रीकृष्ण-परिषदक तत्त्वावधानमे राजग्रामहु (भौर) मे दशमीक अवसर पर स्व. पोषनाथ सिंह ठाकुर, अयोध्यानाथ सिंह ठाकुर (प्रसिद्ध बंगाली बाबू), कमलनाथ सिंह ठाकुर, कुमुदनाथ सिंह ठाकुर एवं कृपानाथ सिंह ठाकुर आदि द्वारा कंकाली मंदिर पर रंगमंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत होइत आएल अछि। विशेष-विशेष अवसर पर तारा नाट्य कला परिषदक रंगकर्मीक सहयोग लए सेहो नाटक कएल अछि।

श्यामा नाट्यकला परिषद्, चनौर कालीपूजाक अवसर पर प्रति वर्ष नाटकक मंचन करैत आबि रहल अछि। ओहि ठामक बच्चा-बच्चामे अभिनयक प्रति रस छैक। पुरुष भए स्त्रीपात्रक भूमिकाक सफल अभिनय करब अत्यन्त कठिन होइछ, किन्तु एहि परिषदक अधिकांश कलाकारक हेतु से बामा हाथक खेल थीक। सामाजिक नाटकक मंचनमे जेहन स्वाभाविकताक प्रतीति एतए होएत तेहन अन्यत्र दुर्लभ।

श्रीधर वाचनालय, लोहना–एहि संस्थाक स्थापना 1956-57 ई. मे भेल। संस्थापक अध्यक्ष छलाह डा. नागेन्द्र कुमार झा ओ सचिव छलाह श्री चिरंजीव झा। दू-तीन वर्षक अपन जीवन कालमे कतेको नाटक ओ एकांकीक मंचन भेल। ओहिमे प्रमुख अछि डा. धीरेन्द्रक *नवका बौआ*। ई धियापूताक द्वारा धियापूताक लेल छल।

गोविन्ददास शोध संस्थान, लोहना– एकर स्थापना 1960 मे भेल। अध्यक्ष छलाह डा धीरेन्द्र आ सचिव छलाह कृष्णानन्द झा। एकर प्रस्तुतिमे डा. धीरेन्द्रक *बौआक दोसर बियाह* तथा कृष्णानन्द झाक *विद्यापति* विशेष प्रशंसनीय रहल।

गोविन्ददास साहित्य कला परिषद, लोहना–प्रधानाचार्य प्रो. सुशील झाक अध्यक्षतामे एकर स्थापना 1972-73 मे भेल। चालिसँसँ बेसी नाटकक मंचन भेल। एहि परिसरक कतेको संस्थाक रंगकर्मी एक मंचपर आबि कलाक प्रदर्शन कएल। किन्तु ई सक्रियता दस वर्ष करीब रहल। ई एक लोक प्रिय संस्थाक रूपमे मानल जाइत छल।

भवनाथ कलाकेन्द्रक स्थापना सर्वसीमामे सन् 1967 ई. मे स्व. धर्मनाथ ठाकुरक सत्प्रयाससँ भेल। तहियासँ ई कलाकेन्द्र अनवरत रूपेँ विभिन्न कार्यक्रम द्वारा क्षेत्रीय जन-मानसमे कलाक प्रति रुचि जगएबाक प्रयास करैत आएल अछि। समय-समय पर ई संस्था रंगकर्मी ओ क्षेत्रीय साहित्यकार लोकनिक अवदान पर हुनकासभकेँ ताम्रपत्र ओ शालसँ सम्मानित कएलक अछि। सन् 1986 मे युवा रंगकर्मी एवं नाटककार डा. अरविन्द कुमार 'अक्कू'केँ ओ सन् 87 मे युवा कथाकार, कवि ओ नाटककार श्री शैलेन्द्र आनन्दकेँ सम्मानित कएने छल।

14 अक्टूबर, 1991 ई. मे ई संस्था अपन रजत-जयन्ती मनौने छल। एकर उद्घाटन श्री मन्त्रेश्वर झा कएने छलाह। एहि अवसर पर हुनके लिखल *रिहर्सल* एकांकीक मंचन भेल रहए।

वस्तुतः ई कलाकेन्द्र अभिनय-कौशल ओ निर्देशनक क्षेत्रमे तीव्र वेगेँ आगाँ बढ़ि रहल अछि। सामाजिक नाटकक मंचनमे एहि केन्द्रक कलाकार स्वाभाविकता अनबाक पक्षधर छथि।

कीर्तिनाथ कला परिषद, पैटघाट (लालगंज)–कमलांचलक प्रसिद्ध रंगकर्मी स्व. कीर्तिनाथ मिश्रक स्मृतिमे नाटककार आ रंगशिल्पी पं. काशीनाथ मिश्रक प्रयासेँ एकर स्थापना 1954 ई. मे भेल। पं. अम्बिकानाथ मिश्र (लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसबक प्रधानाध्यापक) संस्थापक अध्यक्ष रहथि। परिषद अपन स्थापना-कालहिसँ नाट्य सक्रियताक अद्भुत परिवेश बनौलक। नाट्य-कर्मक एक विलक्षण स्तरीयता आएल। एहिमे मात्र नाटकेक प्रदर्शन नहि कएल जाइत छलैक, अपितु मिथिलाक कलाक निभिन्न उपादानक उपयोग नाट्य-प्रस्तुतिकेँ विलक्षण बनएबा लेल होइत छल। ई विलक्षणता मिथिलाक कलाक गरिमाकेँ बढ़बैत छल। एहि कला परिषदक प्रथम उद्देश्य रहैत छलैक नाटक लिखाएब आ तकर बाद ओकर मंचन। एही क्रममे काशीनाथ मिश्रक आचायी, दिग्विजय, कौटिल्य आ कृष्णानन्द झाक *विद्यापति* आदि कतेको नाटक लिखल गेल। ऐतिहासिक नाटक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्रस्तुत करबामे कला परिषद बड़ कुशल छल। कीर्तिनाथ कला परिषदक रंगकर्मी मात्र लोहना लालगंजक नहि रहैत छलाह। भटपुरा, गंगौली, चनौर, उजान, महरैल, बिट्ठोक रंगकर्मी सेहो सम्मिलित होइत छलाह। जँ कोनो प्रस्तुतिमे ढोलिया-बजनियाक प्रयोजन होइत छलैक तँ ओ काज ढोलिया-बजनियाँकेँ स्थितिक अनुरूप पूर्वाभ्यास करा करा अभिनय कराओल जाइत छल। एहिना जँ कोनो नाटकमे वृद्ध पात्र होइत छलाह त बेसीसँ बेसी स्वाभाविकता आ विश्वसनीयता अनबा लेल ओहने व्यक्तिकेँ मंच पर उतारल जाइत छल जे नाटकक पात्रक सनवयस्क होथि। काशीनाथ मिश्र, गोलोकनाथ मिश्र (बद बाबू), गोकुलनाथ मिश्र (मुन्नी बाबू), पोषनाथ मिश्र (बुच्ची बाबू), सदानन्द मिश्र (सद बाबू), बौकू बाबू, सूट बाबू, मन्त्रेश्वर झा, जीवनाथ मिश्र, गायनाचार्य पं. विश्वनाथ मिश्र आदि कलापरिषदक साजल कलाकार छलाह। एकर अतिरिक्त व्रजनाथ झा (महरैल), छत्रानन्द सिंह झा (चनौर), गंगेश मिश्र (भट्टपुरा) आदि समानरूपेँ कीर्तिनाथ कलापरिषदसँ संबद्ध छलाह।

महावीर स्थान नाट्य कलापरिषद, पाहीटोलक स्थापना सर्वश्री विनयनाथ मिश्र, जगदीश मिश्र, तारानाथ मिश्र, कामनाथ मिश्र आदिक सत्प्रयासेँ छठिक अवसर पर 1967 ई. मे भेल। ई कला परिषद छठिक अवसर पर नाटक मंचन करैत आएल। एहिमंच सँ *बेमातार* (उत्तमलाल मंडल), *मनोरथ* (भाग्य नारायण झा), *अन्तिम प्रणाम* (गोविन्द झा), *काठक लोक* (महेन्द्र मलंगिया), *एना कते दिन*, आ *रक्त* (अरविन्द कुमार अक्कू), *मिस्टर नीलो काका* (लल्लन प्रसाद ठाकुर) आदि मैथिली नाटकक सफल अभिनय भेल अछि। एकर मंचसँ कतेको हिन्दी नाटकक सफल मंचन सेहो होइत आएल अछि। मंच-सज्जा, प्रकाश-व्यवस्था ओ अभिनय कौशलमे सन्तोषप्रद विकास कए रहल अछि।

मिथिला विकास क्लब, लोहना पाठशालापर, एहि परिसरक स्वतन्त्रता-सेनानी स्व. बाबू शान्तिनाथ झाक आन्दोलनकारी रूपकेँ आधार बनाए 'कर्मवीर' नाटकक मंचन कएने छल। एकर रचनाकार श्री शैलेंद्र आनन्द एहि मंचनक उद्घाट करओने छलाह श्री कामनाथ झा द्वारा। शान्तिनाथक भूमिकामे उतरल रहथि स्व. प्रो. सुशील झा।

आब तँ गाम-गाम कतोक अवसर पर मनोरंजनार्थ नाटकक मंचन होइत रहैत अछि। एहि अन्तरालमे अनेक कला-संस्थाक जन्म भेल अछि, यथा–**तरुण नाट्यकला परिषद, बिट्ठो; उमाकान्त नाट्कला परिषद, बघाँत; नवयुवक नाट्य निकेतन, यमसम; अमरावती सांस्कृतिक संस्था, भट्टपुरा; वैदेही साहित्य कला परिषद, इसहपुर; पुण्यनाथ कला परिषद, नरुआड़; श्री ब्रह्मनाट्यकला परिषद, हाटी** आ **कुमारिल भट्ट कला परिषद, भट्टपुरा**। कला-संस्थाक ई सूची एहि परिसरक कलात्मक प्रवृत्तिकेँ इंगित करैत अछि।

2. स्वतंत्रता-संग्राम–

सन् 1930 मे छओ अप्रीलकेँ महात्मा गाँधीकेँ कांग्रेसी कार्यकर्त्ताक संग ''नमक कानून'' भंग करबाक अपराधमे अंग्रेज सरकार गिरफ्तार कए लेलक। एहिसँ समस्त देश आन्दोलित भए उठल। बिहारमे डा. राजेन्द्र प्रसाद ओ पण्डित जवाहर लाल नेहरू *नमक कानून* केँ भंग कए देबाक हेतु शंखनाद कएने छलाह। **कर्मवीर आश्रम** स्व. बाबू शान्तिनाथ झाक जमीन दावखन्धकमे, जे पाही हाटसँ उत्तर-पश्चिम कोणमे चारि-पाँच बीघाक अछि, अवस्थित छल। 15 अप्रील, 1930 मे ई आश्रम नोन बनाए कानून भंग करबाक योजना बनौलक। ओहि दिन आश्रममे डा. राजेन्द्र प्रसाद आएल रहथि। दस बजैत दिनमे राजेन्द्र बाबूक संग अनिरुद्ध सिंह, सूर्यनारायण सिंह एवं शीतल प्रसाद सिंहक शुभागमन भेल रहए। पं. श्यामानन्द झा (लालगंज) ओहि अवसर पर स्वागतगान लिखने छलाह–

शान्ति कला ऐश्वर्य रत्न का भारत अक्षय केन्द्र बने।
पूज्य आप उसका अभिमानी पदसेवक राजेन्द्र बने॥

हिनकालोकनिक आगमनसँ पूर्वहिँ वानरी सेना द्वारा छिट्टाक-छिट्टा ऊस आश्रम-प्रांगणमे जमा कएल गेल रहए। खूब पैघ कड़ाह आनल गेल ओ चूल्हि खूनल गेल। जारनिक पर्याप्त व्यवस्था छल। दस बजे दिनसँ नोन बनएबाक प्रक्रिया आरम्भ भेल। चूल्हि पजरल आ कड़ाहमे ऊस छानि-छानि देल जाए लागल। डा. राजेन्द्र प्रसाद उपस्थित कांग्रेसीकार्यकर्त्ता लोकनिकेँ सभ विषय बुझाए देल। नोनक पुड़िया तीन दामक बनल–एकन्नी, दुअन्नी ओ चौअन्नी पुड़िआ। ओहि राति मनोरंजनक कार्यक्रम भेल रहए, जाहिमे *भयंकर भूत* नामक नाटकक मंचन आश्रमक प्रांगणहिमे भेल रहए।

मंचनक व्यवस्थापक रहथि सरिसबक स्व. केशवनाथ झा। एहि नाटकमे 'देश'क भूमिकामे उतरल रहथि सरिसबक स्व. जगदीश झा। 'श्रीकृष्ण'क भूमिकाक निर्वाह कएने रहथि पाहीटोलक श्री शिवनन्दन झा (प्रसिद्ध गोपाल बाबू)। कृष्णदेव सिंह (लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसब मिडिल स्कूलक सहायक शिक्षक ओ राजनगर-सिमरीक निवासी) बनल रहथि 'अभिमान'। 'जलबुनियाद'क भूमिकामे उतरल रहथि कछुआक जगदीश मिश्र (प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-सेनानी स्व. चेतनाथ झाक भागिन)।

एहि नाटकक एक-आध स्थलक उद्धरणसँ स्पष्ट भए जाएत जे अंग्रेज सरकारक विस्तारवादी नीतिक केहन विरोध छल ओहिमे। ''देश''क संवादक अंश देखल जाए:–

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

देश पर आघात असमयका भयंकर हो गया ।
आब थी हीरे की जिसमें नाग विषधर हो गया ।।

एहिना अन्तमे श्रीकृष्ण निर्णय सुनाओल :–

हमेशा जीत है उसकी जिसे एक सत्य प्यारा है ।
खुले शब्दों में मैं कहता हूँ कि अभिमान हारा है ।

अन्ततः एहि नाटक पर अंग्रेज सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाए देल गेलैक । किन्तु स्वतन्त्रता संग्रामक झाँकमे के मानैत अछि ।

3. व्यावसायिक मंच –

एहि परिसरमे तेसर प्रकारक रंगमंचीय गतिविधिक कारण भेल व्यावसायिक बुद्धि । एहि प्रकारक मंचक स्थापना सर्वप्रथम स्व. हरिगोविन्द झा (राजे) द्वारा 1917 ई. मे भेल । उत्साही युवक हरिगोविन्दक विचारधारा अपन देशकालक गतिसँ तेज छलनि । एकर कारण हुनक देशाटन भए सकैछ । राजा-रजवाड़ाक सम्पर्कमे आबि विभिन्न नामी कलाकार सबसँ सद्यः परिचय ओ प्रभावकेँ सेहो नहि टारल जाए सकैछ । हरिगोविन्द बाबू आधुनिकताक दिशानुगतिकेँ अपन नजरि पर चढ़ाए चुकल छलाह । किन्तु मिथिलामे आधुनिकताक किरण पसरि नहि सकल छल ता' । फलतः हिनक डेग समाजकेँ पसिन नहि पड़लैक । तदर्थ हिनका कतोक कुगर व्यवहार-बाणकेँ बर्दास्त करए पड़लैन्हि । खिधांश ओ कुचेष्टाक तँ अमारे लागि गेल । "...सोति कतहु नाच करए,..." आ नहि जानि, आर कतेक कोन-कोन कथा । मुदा हिनका लेल धनि-सन । व्यक्तिसँ समूह धरि कलाक प्रचार तँ भइए गेल ।

स्व. हरिगोविन्द झाक व्यावसायिक रंगमंचक विघटन कहिया भेल, से ज्ञात नहि अछि । किन्तु एतबा बूझल अछि जे हरिगोविन्द बाबू अपन रंगमंच पर "सिम्फनी"क सृष्टिमे लागल रहलाह । नाटक वस्तुतः विविध वादकगण द्वारा बजाओल एक "सिम्फनी"–रागिनीसँ गम्भीर प्रभाव उत्पन्न करैछ । एहि रागिनीक सफलतापूर्वक निर्वहण तखनहि सम्भव होइछ, जखन वादकलोकनि सिम्फनीक गति, मति, वृत्ति, प्रभावकेँ आत्मसात् कए सबहिक संग ओ बीचहुमे अपन भूमिकाक प्रति सजग-सचेत रहैत छथि ।

हिनक नाटक कम्पनीक नाम **विद्वन्नाट्य परिषद्** छल । नवटोलमे एहि नाट्य परिषदकेँ पुनर्जीवित कएल गेल सन् 36 मे, सम्राट् पंचम जॉर्जक रजत-जयन्ती समारोहक अवसर पर । एतए स्वान्तःसुखाय नाटकक मंचन होअए लागल ।

एकर पश्चात् सन् 30मे सरिसबक स्व. केशवनाथ झा सेहो एक व्यावसायिक रंगमंचक स्थापना कएलैन्हि । सिरपुर (लगमा) क उमाकान्त झा रामलीला-मण्डली चलबैत छलाह, जकर निर्देशक रहथि रामशरण झा । ओ रामायणक शिक्षा देथि । श्याम बाबू, सरिसबक राम-जानकी मन्दिर पर उमाकान्तक रामलीला-मण्डली 1930 मे, रामलीला देखएबाक हेतु आएल रहथि । केशव बाबू हुनका लोकनिक अभिनयसँ प्रभावित भए उमाकान्त जीसँ वार्त्ता कएल ओ नाटक-कम्पनी खोलबाक अपन योजना सुनाओल । निश्चय भेल जे ओहि मण्डलीक नीक-नीक कलाकारकेँ लए नाटक-कम्पनी खोलल जाए । रामलीला-दलक हारमोनियम मास्टर ओ व्यास लूटन झा (हावी-भौआर-हरिपुर) केँ, कृष्णकान्त झा (पचाढ़ी), द्वितीय हारमोनियम मास्टर ओ अभिनेता) केँ, नर्तक बाबाजी झा (हावीभौआर-हरिपुर) केँ, ओ उमाकान्त झाकेँ नाटक-कम्पनीमे नियुक्त कएल गेल । बादमे पोखरामक महन्थ कल्याण दासक व्यावसायिक नाटक-कम्पनीसँ नीक कलाकार सबकेँ बेसी वेतन दए आनल गेल, जाहिमे विद्या झा, उमा झा (ढंगा हरिपुरक), शोभा झा (नर्त्तक, सिरपुर-लगमाक), सिरपुरक छोटका परमानन्द झा ओ कलिगाँव (बेनीपट्टी)क बड़का परमानन्द झा, कठराक भुवनेश्वर झा ओ युगेश्वर झा, पचाढ़ीक नन्दकुमार झा आदि सरिसबक नाटक-कम्पनीमे आएल रहथि । पण्डौलक इशाक खाँ, सरिसबक स्व. विश्वनाथ झा (स्व. बदरी झाक बालक), एवं श्री जयदत्त कुमर (स्व. शिवदत्त कुमरक बालक) केशव बाबूक नाटक कम्पनीमे योगदान देलैन्हि । कुल मिलाए एहि कम्पनी मे 85 व्यक्ति कार्यरत रहथि ।

एहि रंगमंचक प्रथम निर्देशक छलाह पंजाबक दुल्लीराम । ई पंजाबमे 'थ्येटर' चलबैत छलाह । कोनो मंचन-क्रममे अपन भूमिकाक निर्वाहार्थ आवेशमे अपन अनुजक वध कए देने रहथि । अतः सरकारी मोकदमा चलल । प्राणदण्ड भेटैत-भेटैत बाँचि गेल रहथि, किन्तु आजीवन पंजाब प्रान्तसँ निष्कासित कएल गेल रहथि ।

दुल्लीराम केशवनाथ झाक नाटक-कम्पनीमे वेतनभोगी नहि रहथि । हिनक आवश्यकताक पूर्त्तिक भार केशवनाथ झाक उपर छल । मांस ओ मदिरा हिनक आवश्यक आवश्यकतामे छल ।

हिनका 55-56 गोट नाटक कण्ठस्थ छल । ई एक कुशल निर्देशक छलाह । दुल्लीरामक बाद एहि रंगमंचक निर्देशक भेलाह अकबर मियाँ ।

ई कम्पनी 1935 सँ 38 धरि तीन वर्ष महाराज दरभंगाक ओतए रहि, नाटक देखबैत रहल । पछाति नेपालक राजदरबारमे अभिनय देखओलक । नेपालक राजा केशव बाबूकेँ असालतन रूपेँ रहि जएबाक आग्रह कएने रहथि, किन्तु केशव बाबू राजाक औदार्यक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत अपन असमर्थता व्यक्त करैत क्षमायाचना कएने रहथि ।

सरिसबक ई कम्पनी जयपुर, उदयपुर, आरा, छपरा ओ राज दरभंगाक बबुआन लोकनिक ओतए अपन रंगकर्म एवं रंगचिन्तनक सफल प्रमाण प्रस्तुत कएने छल ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मधेपुरक स्व. तुलापति सिंह, राँटी (मधुबनी) क स्व. चन्द्रधारी सिंह (प्रसिद्ध हेमकर साहेब), बरहगोड़ियाक स्व. कुलेश्वर सिंह (प्रसिद्ध सीतानन्दनजी), राघोपुर डेओढ़ीक ब्रजनन्दन सिंह आदि एहि कम्पनीक रंगमंचीय क्रियाकलाप देखि एवं प्रभावित भए अपन-अपन औदार्य देखओने छलाह।

ई कम्पनी *ईश्वरभक्ति, पंजाब मेल, कृष्ण-सुदामा, सुल्ताना डाकू, वीर सावरकर, सती अनुसूया, महाभारत, स्यौरे का जादू, मुद्राराक्षस, लैला-मजनू, शिरी-फरहाद, विजय, भयंकर भूत, दुर्गादास, शिवाजी* आदि नाटक खेलाए।

किछु वर्षक बाद केशवनाथ झाक समक्ष उमाकान्त झा स्वतन्त्र भए कला-प्रदर्शनक इच्छा व्यक्त कएलैन्हि। केशव बाबू हुनक इच्छानुकूल अनुमति देल, संगहि अपन कम्पनीक तीन गोट छोट पर्दा दए बिदा कएल। ई कृतज्ञता-ज्ञापनक रूप छल। दुल्लीरामक नाट्य निर्देशन पाबि उमाकान्तजी प्रौढ़ कलाकारक रूपमे विकसित भेल छलाह। रामलीलाक पृष्ठभूमि तँ छले। ओ स्वतन्त्र भए नाटक कम्पनी चलबए लगलाह।

राज दरभंगामे इन्द्र-पूजासँ श्यामा-पूजा धरि नाटक होइक। सब व्यवसायी प्रयास करथि जे साइ हमरहि भेटए। एही क्रममे एक बेरि केशव बाबूक नाटक-कम्पनी ओ सिरपुरक उमाकान्तजीक नाट्य-दलमे प्रतिस्पर्द्धा भेल। सिरपुरक नाट्य-दलमे यमुनालाल नामक नीक अभिनेता रहथि, जे *वीर अभिमन्यु*मे अर्जुन बनल रहथि। केशव बाबू ओहि भूमिकाकेँ दूरि कए देबाक हेतु यमुनालालकेँ टाका दए परतारबाक प्रयास कएल, किन्तु टाकाक संग बाजी सेहो हारि गेलाह। उमाकान्तजीक नाट्य-दल जीति गेल। ई व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा छल। एहिसँ प्रसन्न भए राज दरभंगा उमाकान्तजीकेँ बनारससँ पैघ-पैघ पर्दा ओ पोशाक आदि मँगबाए पुरस्कृत कएलक।

सरिसबक केशवनाथ झा कलामर्मी छलाह। ओहि दिस हिनक रुचि-रस कोन कोटिक छल से एहीसँ बूझल जाए सकैछ जे ई प्रथमतः राघोपुरक बाबू साहेब स्व. ब्रजनन्दन सिंहसँ ऋण लए रंगमंचक स्थापना कएने रहथि। ओहि ऋणकेँ अदाए करबाक हेतु पुनः सरिसबक स्व. बलदेव झासँ कर्ज उठाओल। राघोपुरसँ मुक्ति हेतु सरिसबहिमे युक्ति धराओल। पश्चात् बान्हसँ खत्ता ऊँच कए गेल आ अन्ततः 'बाथ' मौजे निलामी पर चढ़ि गेल।

एकर बाद लखनौरक बाबू साहेबक वित्तीय साहाय्यसँ रूपनारायण झाक निर्देशन ओ प्रबन्धनक अन्तर्गत सेहो एक व्यावसायिक रंगमंचक स्थापना भेल, जाहिमे सरिसबक विश्वनाथ झा खेलाइत छलाह। किन्तु एकर गतिविधि कोन रूपक रहल, कतेक दिन चलल, से ज्ञात नहि अछि।

4. जनहितार्थ–

एहि परिसरमे *चारिम प्रकारक रंगमंचक स्थापना* भेल रहए जन-हितार्थ– स्थानीय महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह कालेज ओ गंगानाथ वाचनालयक सहायतार्थ। सन् 1959 मे लक्ष्मीवती संस्कृत विद्यालयक प्रांगणमे महाराजाधिराज डॉ. सर कामेश्वर सिंहक सभापतित्वमे कॉलेजक सहायतार्थ एक सार्वजनिक सभा भेल रहए। राँटी (मधुवनी)क स्व. बाबू चन्द्रधारी सिंह स्थानीय व्यक्तिक सहयोगसँ ओ अपन साहाय्यसँ एक लाख टाका संग्रह कए महाविद्यालयकेँ प्रदान करबाक वाक्-दान देल। सभापतिक भाषणक क्रममे महाराज बजलाह–"जखन दानी कर्ण अपने लोकनिकेँ कहिये देलैन्हि तखन हमर प्रयोजने कोन ?" ई सुनि श्री शिवनन्दन झा (प्रसिद्ध गोपाल बाबू) ओ श्री छत्रनाथ मिश्र (प्रसिद्ध लूटन बाबू) गप्प कएल जे श्रीमान् लोकनिसँ महाविद्यालयकेँ किछुओ नहि प्राप्त होअए जाए रहल अछि। आब आन रास्ता सोचय पड़त। सूत्रधारक रूपमे एही दू व्यक्तिक सत्प्रयाससँ परिसरक सब नाट्यपरिषद् मिलि एक नूतन ओ व्यापक परिषदक स्थापना कएलक, जकर नाम पड़ल–**मिथिला नाट्यकला परिषद्, सरिसब-पाही।**

एहि परिषदक प्रथम मंचन 1959 ई. मे महाराजी पोखरि पर भेल। शीतावकाशक समय रहैक। डी. एल. रायक *शाहजहाँक* मंचन भेल रहए। एहिमे शाहजहा डा. श्री गौरीनाथ झा (पाही), दारा श्री गोकुलनाथ मिश्र (प्रसिद्ध मुन्नी बाबू, लालगंज), मुराद श्री कामनाथ झा (पाही), दिलदार स्व. हरिनाथ झा (प्रसिद्ध हल्लू बाबू, पाही) बनल रहथि। दिलदारक भूमिका एक फारसी दार्शनिकक छल। एहि मंचनक भूरि-भूरि प्रशंसा आइ धरि होइत आएल अछि। एहि मंचनक निर्देशक रहथि स्व. काशीनाथ मिश्र (लालगंज)। हिनक कन-कन करैत कर्मठता ओ निर्देशन-कौशल एहि परिसरक कलाकारकेँ सतत प्रेरित करैत रहत।

एकर पश्चात् हिन्दीमे डी. एल. रायक **उसपार,** चतुर्भुज क *सिराजुददौला,* बाबू कुँवर सिंह, *कृष्णाक कुमारी, मीर कासिम,* स्व. विभूतिनाथ झाक *टीपू सुल्तान,* श्री कामनाथ झाक *प्रतिशोध* आदिक संग मैथिलीक डॉ. कांचीनाथ झा किरणक **विद्यापति,** स्व. काशीनाथ मिश्रक *अयाची,* पं. श्री गोविन्द झाक *बसात,* श्री काशीनाथ झा (प्रसिद्ध भैरव बाबू, पाही) क *प्रायश्चित्त* नाटकक सफल मंचन भेल छल।

सन् 1968 मे मिथिला नाट्यकला परिषद् *'कलिंग विजय', 'मीर कासिम'* ओ *'प्रतिशोध'*क मंचन कएने रहए। कलिंग

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

राजकुमारक भूमिकामे सर्वश्रेष्ठ अभिनय प्रस्तुत कएने छलाह श्री कामनाथ झा। पुनः *मीर कासिम*मे शाम्बर बनल रहथि श्री शिवनन्दन झा (गंगौली) ओ कामनाथ झा रहथि मीर कासिम। एहिमे शाम्बरक अभिनय उत्कृष्ट भेल छल। तेसर राति *प्रतिशोधक* बाजी रहैक। एकर नाटककार श्री कामनाथ झा स्वयं चाणक्यक भूमिकामे ओ स्व. पोषनाथ सिंह ठाकुर नन्दक भूमिकामे उतरल रहथि। दुहू कलाकारक अभिनय उपर्युपरि भेल रहए।

मिथिला नाट्य कला परिषद् अप्रील-मइमे "फ्री-शो" करए ओ दिसम्बरमे टिकट पर खेलाए। "फ्री-शो" मे एक वर्ष *संयोग* नाटक भेल रहए, जाहिमे श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर नायकक भूमिकामे उतरल रहथि। एहिमे छत्रनाथ मिश्र, जयनाथ झा, योगपति झा (हटाढ़) आ– कामनाथ मिश्र भाग लेने रहथि। कमलनाथ सिंह ठाकुरक अभिनय-कौशलसँ इलाकाक लोक विस्मित भए गेल रहए। एही क्रममे एक वर्ष श्री देवीनाथ मिश्र अशोकक भूमिकामे अपन सफल अभिनयक परिचय देने रहथि।

मिथिला नाट्यकला परिषदकेँ जखन नीक मैथिली नाटक नहि भेटैक तँ हिन्दी नाटकक मैथिली रूपान्तर कए खेलाएल जाए। रूपान्तरकारमे स्व. पं. भवनाथ झा "दीपक" (लालगंज) ओ पं. श्री बुद्धिनाथ मिश्र "भङेर" कार्य करथि। एहने रूपान्तरित नाटक छल *विसर्जन* आ *शतरंजक खेलाड़ी*।

सन् 1975 मे गंगानाथ वाचनालयक सहायतार्थ मिथिला नाट्यकला परिषदक तत्त्वावधानमे महाराजी पोखरि पर तीन राति नाटकक आयोजन भेल रहए। पहिल राति *भीष्म प्रतिज्ञा*, दोसर राति द्विजेन्द्र लाल राय कृत *उस पार* ओ तेसर राति हरेकृष्ण प्रेमीक *चाणक्य*। भीष्म बनल रहथि श्री योगानन्द सिंह झा, शान्तनुक भूमिका कएने रहथि श्री लक्ष्मीनाथ झा (प्रसिद्ध बुच्ची बाबू) ओ गंगाक भूमिकामे उतरल रहथि रामपुरक भुलाइ बाबू।

*उसपार*मे भोलानाथ रहथि डॉ. गौरीनाथ झा, सरस्वतीक भूमिकाक निर्वाह कएल श्री नरेन्द्रनाथ झा (प्रसिद्ध लल्लू, पाही) एवं मुन्नी बाइक भूमिकामे श्री केदार झा (बिट्ठो) उतरल रहथि।

तेसर राति *चाणक्यक* मंचन भेल, जाहिमे चाणक्य ओ चन्द्रगुप्तक मुख्य भूमिकाक सफल निर्वाह क्रमशः पाहीटोलक कामनाथ झा ओ चनौरक योगानन्द सिंह कएने रहथि।

मिथिला नाट्यकला परिषदक कलाकारलोकनि संस्कृत महाविद्यालय इसहपुरक सहायतार्थ सन् 1978 मे तीन राति नाटक कएने रहथि। एहिमे चतुर्भुजक लिखल *रावण*, *जहाँगीर* एवं शैलेन्द्र आनन्दक *कर्मवीरक* मंचन भेल रहए। योगानन्द सिंह झा रावण बनल रहथि। तारानाथ झा (बच्चाजी) रामक भूमिकामे उतरल रहथि। सीता बनल रहथि नरेन्द्रनाथ झा (लल्लू, पाही), केदार झा (बिट्ठो) शूर्पनखाक भूमिका कएने रहथि।

कर्मवीर मे शान्तिनाथक भूमिका कएने रहथि कृपानाथ सिंह ठाकुर (प्रसद्ध झोरी बाबू, राजग्राम)। अंग्रेज ऑफीसर अजयनाथ झा रहथि तथा वैद्यनाथ मिश्रक भूमिका कएने रहथि तारानाथ झा (बच्चाजी)। तीनू रातिक मंचन इसहपुरक रंगमंचीय गतिविधिक ऐतिहासिक घटना छल।

1986 ई. मे मिथिला नाट्यकला परिषदक रजत जयन्ती मनाओल गेल। एहि समारोहक आयोजन यद्यपि दू वर्ष विलम्बेँ भेल, किन्तु मंचन जमिकए कएल गेल। निर्देशक रहथि डॉ. श्री गौरीनाथ झा। परिषदक अध्यक्ष रहथि पोषानाथ सिंह ठाकुर ओ सचिव शिवनन्दन झा (गोपाल बाबू)। तेरातिक क्रम एहि परिषदकेँ आरम्भहिसँ लागल रहलैक। पहिल राति डी. एल. रायक *शाहजहाँ* भेल। दोसर राति डॉ. अरविन्द कुमार "अक्कू"क *एना कते दिन* मंचित भेल ओ तेसर राति रंग-रंगक कार्यक्रम रहैक।

शाहजहाँ बनलाह डा. गौरीनाथ झा, औरंजगजेब रहथि हृदयनाथ झा, दाराक भूमिका भेटल रहैन्हि योगानन्द सिंह झाकेँ एवं जहाँनारा रहथि हीरानाथ झा।

एना कते दिन मे भाग लेने रहथि पोषनाथ सिंह ठाकुर, तारानाथ झा, राधानाथ झा, प्रभानाथ मिश्र, केदार झा ओ प्रेमचन्द्र झा।

तीनू रातिक मंचन दर्शनीय भेल छल। रंगकर्मी लोकनि अपन प्रतिभा-क्षमताक प्रदर्शन सोल्लास कएलैन्हि।

मिथिला नाट्यकला परिषदक बैनर क अन्तर्गत कतोक वर्षसँ कोनो कार्यक्रम प्रस्तुत नहि भेल अछि। तथापि नहि कहल जाए सकैछ जे ई सूतल अछि वा मृत भए गेल।

5. कलासंवर्द्धना –

सरिसव-पाहीमे पाँचम प्रकारक रंगमंचक स्थापना भेल कला– संवर्द्धनाक निमित्त रंगकर्मी लोकनिमे प्रतिस्पर्द्धा जगएबाक उद्देश्यँ। 1990 ई. मे दिसम्बर 25 सँ 27 धरि त्रिदिवसीय क्षेत्रीय मैथिली-नाट्य-प्रतियोगिता-समारोह सरिसबक महाराजी पोखरि पर भेल। एहि समारोहक संयोजक-मण्डलमे सर्वश्री भवनाथ मिश्र (सरिसब), हीरानाथ झा, जगदीश मिश्र, तारानाथ झा ओ ज्ञाननाथ मिश्र (पाहीटोल) रहथि।

ग्रामांचलमे मैथिली-नाट्य-प्रतियोगिता-समारोह एक स्वागत-योग्य डेग छल। एहि समारोहक उद्घाटन स्व. अम्बिकानाथ मिश्र (भूतपूर्व प्रधानाध्यापक, लक्ष्मीश्वर एकेडेमी, सरिसब) द्वारा कराओल गेल। स्वागत-भाषण ओ मंच-संचालनक कार्य सम्पादित कएलैन्हि श्री कामनाथ झा।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

25-12-90 कें महाराजी पोखरि पर तीन गोट मंच तैयार छल। ई प्रथम अवसर छल जे परिसरक रंगकर्मीकें संयोजक-मण्डल द्वारा प्रकाश एवं ध्वनिव्यवस्थाक संग मंच उपलब्ध कराओल गेल। एहि दिन दू कला परिषदक नाट्यदल मंचन कएने रहथि। मंचनक समयसीमा प्रत्येक दलक हेतु निर्धारित छल। प्रथम नाटक श्री दुर्गानाट्यकला परिषद्, इसहपुर, श्री नारायणजी चौधरीक निर्देशनमे, हुनके लिखल *नारद व्यायोग* प्रस्तुत कएलक। दोसर, ब्रह्मनाट्यकला परिषद्, हाटी द्वारा श्री सुमनजी पाठकक निर्देशनमे ईशनाथ झाक *उगनाकें* संक्षिप्त कए खेलाएल गेल।

26-12-90 कें भवनाथ कला-केन्द्र, सर्वसीमा द्वारा डॉ. अरविन्द कुमार "अक्कू" क लिखल *पातक मनुक्ख* श्री गंगानन्द ठाकुरक निर्देशनमे अभिनीत भेल। एहि रातुक दोसर नाटक स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुरक *बकलेल*, श्री धर्मनाथ झा (प्रसिद्ध बबलू बाबू) क निर्देशनमे श्री उग्रतारा नाट्यकला परिषद्, पाहीटोलक कलाकार द्वारा प्रस्तुत कएल गेल।

अन्तिम राति, आर्थत् 27-12-90 कें श्री महावीर स्थान नाट्य-कला परिषद् द्वारा श्री इन्द्रनाथ झा (प्रसिद्ध इन्नर बाबू, पाही) लिखित *आतंक* नामक नाटक श्री पद्मनाथ मिश्रक निर्देशमे प्रस्तुत कएल गेल। नाटकक पश्चात् श्री अक्कूजी दर्शक समाजकें चुटकुला ओ अनुकृतिसँ पर्याप्त मनोरंजन कएलन्हि।

निर्णायक-मण्डलक गठन सर्वश्री गोविन्द झा, अम्बिकानाथ मिश्र, कामनाथ झा, पोषनाथ मिश्र ओ जीवनाथ मिश्र द्वारा कएल गेल रहए।

अन्ततः पं. श्री गोविन्द झा द्वारा पारितोषिक वितरण भेल। सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुतिक हेतु भवनाथ कला-केन्द्र क *पातक मनुक्ख* मानल गेल। सर्वोत्तम निर्देशक ओ अभिनेताक रूपमे सन्तोषी मिसरक भूमिकामे आएल श्री गंगानन्द ठाकुरकें पुरस्कृत कएल गेल। सर्वोत्तम अभिनेत्री घोषित भेलीह "लालगंजवाली", अर्थात् श्री प्रदीप कुमार ठाकुर। सर्वोत्तम मंच-सज्जाकारक रूपमे श्री शैलेन्द्र आनन्दकें पुरस्कृत कएल गेल। सर्वोत्तम बाल-कलाकारक पुरस्कार श्री उग्रतारा नाट्यकला परिषदक श्री विकासकें गोनूक बाल्यकालक भूमिकामे देल गेल।

एकर अतिरिक्त पाँच गोट सान्त्वना पुरस्कार सर्वश्री पद्मनाथ मिश्रकें *आतंकक* भूतक भूमिकाक हेतु, नरेन्द्रनाथ झा ओ राजीव कुमार झाकें क्रमशः घटकराज ओ युवा गोनूक भूमिकाक हेतु, श्रीनारायणजी चौधरीकें नारदक भूमिकाक हेतु तथा रतिनाथ झाकें क्रोधक भूमिकाक लेल देल गेल।

सन् 1992 मे क्षेत्रीय मैथिली नाट्य-प्रतियोगिता-समिति द्वारा प्रायोजित मैथिली-नाट्य-प्रतियोगिता-समारोह 25 सँ 29 फरवरी धरि आयोजित कएल गेल। समारोहक उद्घाटन पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र "अमर" कएलैन्हि। स्वागताध्यक्ष रहथि डॉ. श्री जगदीश मिश्र।

पाँच दिनक प्रतियोगिता-समारोहमे आठ गोट नाट्यदल अभिनयक प्रदर्शन कएलैन्हि, जे निम्नांकित अछिः—

1— भारती रंगमंच, दरभंगा—*अन्हार जंगल*, डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'।

2— मिथिला-विकास-क्लब, लोहना—*की फेर बाजत बसुरी*, शैलेन्द्र आनन्द।

3— जमघट सांस्कृतिक संस्था, मधुबनी—*काठक लोक* महेन्द्र मलंगिया।

4— श्रीब्रह्म नाट्यकला परिषद, हाटी—*नोरथ*, भाग्य नारायण झा।

5— वैदेही-साहित्य-कला-परिषद्, सनकोर्थु *मुक्ति*, प्रेमचन्द "पंकज"।

6— मिथिलाविकास परिषद्, कलकत्ता—*जुआएल कनकनी*, महेन्द्र मलंगिया।

7— पुण्यनाथ कला परिषद्, नरुआड़—*आगि धधकि रहल छै*, अरविन्द कुमार अक्कू।

8— अरिपन, पटना—*प्रायश्चित्त*, श्री मन्त्रेश्वर झा।

मुख्य अतिथिक आसन ग्रहण कए वरिष्ठ रंगकर्मी श्री फेकू मिश्र पारितोषिक वितरण कएलैन्हि।

उपर्युक्त तथ्यक अनुशीलनसँ स्पष्ट होइछ जे ई परिसर बहुत पहिनहिँसँ जीवन्त रहैत आएल अछि। नाट्य-रचना ओ मंचन दुहू क्षेत्रमे एहिठामक कलाकार उत्तरोत्तर विकास पबैत गेलाह अछि। जीविकाक हेतु नगरमे गेल लोक ओहिठामक रंगमंच, रूप-सज्जा, प्रकाश-व्यवस्था ओ अभिनय-कौशलकें देखि स्वयंमे बैसल कलाकारक आँखिकें खोललैन्हि अछि।

दिनानुदिन रंगकर्मीगण अपन नाट्य-प्रतिभाक प्रदर्शन करैत रंगमंचहुक विकास दिस ध्यान केन्द्रित कएलैन्हि अछि। वस्तुतः नाटक-अभिनेता रंगशाला, प्रेक्षक ओ रंगशालासँ सम्बद्ध अन्य व्यक्ति ओ साधनक समुचित सहयोग एवं सम्मिश्रण द्वारा अपन प्रभाव उत्पन्न करैछ। एहि दिशामे नव-नव भावोन्मेषसँ युक्त प्रज्ञा लगाओल जाए रहल अछि।

एतेक होइतहुँ, श्री गोविन्दझाक परिसरमे अद्यपर्यन्त कोनो स्थायी एवं पूर्ण विकसित रंगशालाक निर्माण नहि भए सकल अछि। एकर बेत्रेक अभिनय-कलाक सर्वांगीण विकास प्रतिबन्धित होइत रहत।

आलेख-आधारः— सर्वश्री काशीनाथ झा, छत्रनाथ मिश्र, कामनाथ झा, शिवनन्दन झा (प्रसिद्ध गोपाल बाबू), तारानाथ झा, जितेन्द्र नारायण झा ओ जयदत्त कुमरक संग भेँट-वार्त्ता।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे काशीक योगदान

□ डा. श्री भीमनाथ झा

काशीकेँ मुक्ति-नगरी भनहि कहल जाय, मुदा आधुनिक मैथिलीक जीवन जतेक ओतऽ विकसित भेल ततेक आन ठाम नहि। जीवनमे वसन्त आबि गेल मुरलीधरक वंशीध्वनिक गुंजनसँ आ सौंसे समाज सीतारामक नाम लैत सारस्वत गंगामे डुमकी लगबऽ लागल। तकर कारणो छैक। काशी आ मिथिला संस्कृत शिक्षाक दू टा महान् केन्द्र छल तहिया। मिथिलामे पाण्डित्य-परम्परा तँ असंदिग्ध छलैक, दिग्गज विद्वान्गणक शृंखलो छलैक, किंतु भौगोलिक रूपमे तेहन एकान्तमे ई पड़ैत छैक, ताहूमे ताहि दिन छोट-पैघ नदीसभसँ तहस-नहस भेल, आवागमनक घोर असुविधा, पैघ नगरक अभाव, गरीबीक दबाव देशक आन भागक विद्वान् लोकनि एतऽ समूहमे आबिकऽ गोड़ा रोपि नहि सकैत छलाह, एकरा अपन जीविका-भूमि बना नहि सकैत छलाह। एहि दृष्टिएँ काशी अधिक उपयुक्त छलैक। अपन ऐतिहासिक गरिमाक अतिरिक्तो उक्त असुविधासभ ओतऽ नहि छलैक, तेँ देशक आनोआन भागसँ विद्वान् आ विद्यार्थी लोकनि ओतऽ जुटैत छलाह, पढ़ैत-पढ़बैत छलाह, रहैत छलाह आ किछु तँ रहिए जाइत छलाह। मिथिलोक विद्यार्थी जाय लगलाह, पण्डित बनि किछु तँ चलो आबथि, किछु रहियो जाइत छलाह। जतऽ एक समाजक, एक संस्कृतिक, एक विचारधाराक लोकक स्थायी जुटान होयत, ओतऽ किछु सामूहिक समस्यापर सेहो विचार-विमर्श स्वाभाविके थिक। मैथिलो विद्वान् लोकनि आन्तरिक प्रेरणासँ कहू किंवा अन्यदेशीय विद्वानक मातृभाषाक प्रति अनुराग देखि वाह्य प्रेरणासँ कहू, निज मातृभाषाक प्रति चिन्तनशील भेलाह।

मैथिली तँ आरम्भे सँ संस्कृतक वशवर्तिनी रहल। मैथिलीक जतेक पूर्वकालीन साहित्य अछि, तकर सोझहो आना श्रेय, सभ जनिते छी, संस्कृत पण्डितक थिकनि। लेखन-माध्यम मुदा देवभाषाक विद्वान् लोकनि देवाक्षरक बदला मिथिलाक्षरकेँ बनौलनि। फलतः ग्रन्थ संस्कृतक हो किंवा मैथिली पद-नाटक, लिखथि ओराभ, मैथिलीमे तँ अवस्से, मिथिलाक्षरेमे। मिथिलामे जे संस्कृतोक काज भेल तकर लिपि रहल तिरहुते, मुदा मिथिलासँ बाहर जे मैथिलीक काज भेल, ताहिमे लिपिक एकरूपता नहि रहि सकल, बेसी काज नागरे लिपिमे होइत रहल। मिथिलाक्षरक दुर्गतिक अनेक कारण अछि, ताहिमे एक कारण इहो कहल जा सकैछ जे मिथिलासँ बाहर जे मैथिलीक काज भेल, ताहिमे ओहो लोकनि मैथिली लिपिकेँ अनिवार्य नहि बुझलनि, जे लोकनि जँ मिथिलामे रहितथि तँ संस्कृतोक लेल अनिवार्य मैथिलीए लिपिकेँ बुझितथि। सभसँ अधिक काज काशीक मैथिल लोकनि कयलनि। हम ई नहि कहैत छी जे मिथिलाक्षरक ह्रासक कारण ओहोलोकनि थिकाह, मुदा जँ ओलोकनि भाषा-साहित्यक उन्नयने जकाँ लिपिक सुरक्षोपर ध्यान रखितथि तँ, सम्भव छल, ई दुर्गति एकरा एना नहि देखऽ पड़ितैक।

लिपि भनहि ओलोकनि अङेजि लेलनि मुख्य शास्त्रक, देवभाषाक, मुदा साहित्यक हेतु संवेदनशील भेलाह अपन मातृभाषामे, ताहूमे अपन मुख्य व्यवसायक समयकेँ काटिकऽ, अन्यदेशीय छात्रक अनवरत प्रवाहक बीच, अखिल भारतीय पण्डित मण्डलीमे मिथिलाक वर्चस्विताक लेल संघर्षशील रहैत, से अवश्य मैथिलीक सौभाग्य कहक चाही। ताहि लेल हुनका लोकनिक महान् अवदानक आगाँ हमरालोकनिकेँ सर्वदा नतमस्तक रहक चाही।

काशीक अवदान मैथिली भाषा-साहित्यकेँ अनेक रूपेँ भेटलैक। किछु विद्वान् ओतए रहिकऽ मैथिली-लेखन कयलनि तँ किछु गोटे ओतऽ पढ़िकऽ, पण्डित बनि, मातृभाषाभक्तिक प्रेरणा पावि, देश आबि, मैथिली-लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह। किछु गोटे ओतऽ अध्ययन-अवधिएमे मैथिली-रचनारत भेलाह तँ किछु ग्रेटे साहित्येतर जीविका करितो लिखलनि मैथिलीमे। गद्य, पद्य, नाटक सभ विधा ओतए सुपुष्ट भेल, ततबे नहि, पत्रिकाक आन्दोलन सेहो ओतहिसँ जोर पकड़लक। *मिथिला मिहिर*केँ छोड़ि, सेहो दू ठामसँ, जतबा दिन काशीसँ मोद चलल, ततेक दीर्घजीवी कोनो तेसर पत्रिका एखन धरि नहि भेल अछि। साहित्यिक काजक अतिरिक्त संगठनात्मक काज सेहो ओतऽ खूब भेल अछि, भाषाक विकासमे जकर मूल्यवान अवदान रहल अछि ओही संगठनक सभसँ बड़का सुफल ई भेल जे कलकत्ता विश्वविद्यालयक बाद, बिहारसँ पहिनहिँ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालकयमे मैथिली प्रवेश कयलक। दुर्भाग्य अपनालोकनिक जे तकरा बचाकऽ राखि नहि सकलहुँ।

काशीक भूमिपर मैथिलीक जे काज भेल, से तँ सहजहिँ महत्त्वक अछिए, मुदा ओहो ओहिसँ कम महनीय एवं गणनीय नहि अछि जे ओहि ठामक प्रेरणासँ, ओहि माटिक स्पर्श कयलाक बाद प्राप्त स्फूर्तिसँ, अथवा मोद क लेखक वा पाठक बनलाक कारणेँ मैथिलीक प्रति उमड़ल अनुरागसँ एहन व्यक्तित्व द्वारा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलामे वा आनो ठाम काजसभ कयल गेल, से साहित्यक हो, भाषाक विकासक हो, संगठनक हो, आन्दोलनक हो ।

सर्वप्रथम कोन मिथिलावासी काशीमे प्रवासी भेलाह, अथवा पहिल बेर गेलाह, से तँ ज्ञात नहि, किन्तु काशीनरेशक विद्वन्मण्डलीमे मैथिल पण्डितक प्रमुखता अवश्य बहुत पहिनहिसँ रहल छल, ताही परम्पराक एक ज्ञात कड़ी थिकाह पण्डित जीवन झा, जे कविवर जीवनझाक नामे मैथिली साहित्यक गौरवस्तम्भ बनल छथि। पं. जीवनझा (1848-1912), जनिक पूरा नाम जीवनाथझा छलनि आ जे समस्तीपुर जिलाक हरिपुरबाक वासी छलाह, काशिअहिमे अपन जीवनक अधिकांश समय बितौलनि । तत्कालीन काशिराज प्रभुनारायणसिंह हुनका दानाध्यक्षक उच्च पदपर प्रतिष्ठित कयने छलथिन । काशिराजक राजधानी गंगा-पार रामनगरमे अवस्थित छनि । ओतहि जीविकापन्न रहि पं. जीवनझा अपन प्रभुक प्रतिष्ठा-वधर्नक संगहिँ अपन अगाध लेखकीय क्षमताक भरि पोख उपयोग करैत संस्कृत ओ मैथिली दुनू क्षेत्रमे अनमोल काज कयलनि । यज्वालय मूलक रहबाक कारणेँ ओ अपन उपनाम 'यज्वालय' रखने रहथि । प्रत्यक्षतः एतहिसँ मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे काशीक अवदान आरम्भ होइत छैक, परोक्ष रूपमे पूर्वोमे भेल होइक तकर सम्भावना तँ छैके । हुनकासँ पहिनहुँ मैथिलीक कोनो ज्ञात-अज्ञात कवि-लेखक काशीमे रहिकऽ वा काशीसँ भऽ आबि, प्रेरित भऽ, मातृभाषामे रचना कयने होथि, से मिथिला-काशीक प्राचीन सम्बन्धकेँ देखैत सम्भव अछि, ओना हमरा बूझल नहि अछि ।

यज्वालय जीवन झा काशीमे मैथिली साहित्य-मूर्तिमे जीवन दए देलनि, ततबे नहि, सम्पूर्ण मैथिली संसारक, विशेषतः नाटकक तँ कायाकल्पे कऽ देलनि । आधुनिक नाटकक सूत्रधार जीवन झा–काशी, काव्यमे गजल, कजरी प्रभृति भाषान्तरक छन्दक प्रयोगकर्ता जीवन झा–काशी, गद्यकेँ संस्कृतक छान-पगहासँ मुक्त कऽ तितली जकाँ फुदकौनिहार जीवनझा–काशी, स्थानीय समस्त मैथिल पण्डितकेँ एकजुट कऽ मातृभाषा-प्रेमक कान फुकनिहार जीवनझा–काशी, आधुनिक कालक शैशवेमे अजस्र ऊर्जाक स्रोतकेँ भरि प्राण फुकनिहार जीवनझा–काशी ! एहिसँ बाढ़ि श्रीगणेश की भऽ सकैत छैक ?

ओही सुखद, सुन्दर, प्रेरक वातावरणमे पण्डित मुरलीधरझा (1869-1929)क प्रादुर्भाव होइत अछि। श्याम-सिद्धप (मधुबनी जिला)क ओ ज्योतिषीजी पहिने क्विंस कालेजक छात्र, पछाति ओही कालेजक यशस्वी प्राध्यापक भेलाह आ अपन जीवनक प्रायः समस्त कर्मशील समय काशीमे खपा देलनि। महामहोपाध्याय-पदवीसँ विभूषित ओही पण्डितपुंगवक अपन शास्त्र ओ छात्रमे जे ख्याति छलनि, से आनो विद्वानकेँ कदाचित् रहनि, किन्तु हुनक हृदयमे मातृभाषाक जे आगि धधकैत छलनि, ताहिसँ तेहन विशाल मशाल बरि उठलनि, जकर तेज प्रकाश लगले मिथिला धरि पसरि गेल । आइ मुरलीधरझाक पाण्डित्यकेँ मुट्ठी भरि ज्योतिषक अध्येता बुझताह, मुदा मैथिलीमे हुनक हिमालय-सन अवदानपर व्याख्यान देनिहार शत-शत जन युग-युग धरि भेटैत रहताह। लेखकक रूपमे, चिन्तकक रूपमे, संगठनकर्ताक रूपमे, निर्भीक नेताक रूपमे, प्रेरणा-प्रदाताक रूपमे तथा अत्यन्त समार्थ्यवान् नव पीढ़ीक निर्माताक रूपमे हुनक जे अप्रतिम अवदान अछि, से सभक सोझाँ दिनकर-सन भासमान अछि ।

जयपुरसँ प्रकाशित *मैथिल हितसाधन* मैथिलक बड़का हितसाधक तँ सिद्ध भेल अवश्ये, मुदा मैथिलक गढ़ तँ छल काशिए। *हितसाधन* क प्रतिक्रियेमे *मिथिला मोद* भनहिँ शुरू भेल हो, मुदा एहिसँ अपन साहित्य आ समाजक जे सर्वविध सेवा भेल से इतिहासक स्वर्णिम अध्याये बनि गेल अछि । *मोद* क संचालक छल मैथिल विद्वज्जन समिति; समितिक अधिष्ठाता छलाह म. म. मुरलीधरझा । वस्तुतः हुनके कल्पना छलनि समितिक गठन आ पत्रिकाक प्रकाशन। एहि प्रसंग पं. अच्युतानन्द दत्त लिखने छथि जे "महामहोपाध्याय जी अपन परममित्र महिनाथपुरक (निवासी) ख्यातनामा ज्योतिषी, संस्कृत कालेजक द्वितीयाध्यापक पं. दीनानाथ मिश्रक आग्रह, काशीस्थ मैथिल विद्वानक सम्मति एवं अपन सुयोग्य शिष्य पं. कुशेश्वर कुमर (भू. पू. सम्पादक 'मिथिला') क सोत्साह आयोजनसँ मैथिल विद्वज्जन समितिक स्थापना कै 'मिथिला मोद' नामक मासिक पत्रक संचालन आरम्भ कैलन्हि ।"[1]

*मिथिला मोद*क प्रकाशन 1905 मे आरम्भ भेल, अतः मैथिल विद्वज्जन समितियोक स्थापनाक समय वैह रहल होयत। विद्वज्जन समितिमे हुनक मित्र आ शिष्यमण्डली छलथिन, जाहिमे किछु तँ पछाति विख्यात साहित्यकार भेलथिन, किछु अल्पज्ञात लेखक आ किछु तेहनो जे संगठन-आन्दोलनेमे सक्रियता देखबैत रहलथिन।

मोद दू खेप चलल । पहिल खेप 1905 सँ 27, दोसर खेप 1936 सँ 41 । 1905 सँ 27 धरिक प्रकाशन-अवधिमे 1920 धरि तँ महामहोपाध्यायजी स्वयं ओकर सम्पादन करैत रहलाह, यद्यपि सम्पादकमे अपन नाम ओ दैत नहि छलथिन, 1921 सँ अपन दू सुयोग्य शिष्यकेँ ओकर सम्पादक बना देलथिन–पं.

1. उद्धरण– *मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण*, लेखक श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', प्रकाशक वैदेही समिति, दरभंगा–1962 ई., पृ. सं.–393.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अनूपमिश्र ओ कविवर सीतारामझा। 1927 मे मोद अस्तंगत भऽ गेल आ '29 मे ओ स्वयं दिवंगत भऽ गेलाह। 1936 मे हुनक भातिज पं. उपेन्द्रनाथ झा दोसर खेप मोदक किरण छिटकौलनि जे 41 धरि चमकि सर्वदाक लेल लुप्त भऽ गेल। पहिल खेप मोद क जीवनावधि बाइस वर्षक छल, पुनर्जीवित 'मोद'क पाँच वर्षक रहल, कुल सत्ताइस वर्षक चलल। ओहि सत्ताइस वर्षक मैथिली साहित्यक विकास, मिथिलाक सामाजिक इतिहास आ मैथिलक आन्दोलन–तीन प्रयास ओकर पन्नामे अंकित अछि। निम्नांकित पद मोदक संगहि ओकर अधिष्ठाता ओ काशीक प्रतिष्ठाकेँ इंगित करैछ–

मिथिला मोद गोद लय बैसलि काशी भेली नमस्या।
मुरलीधर जीवन शुभचिन्तक पत्रक परम तपस्या॥

काशीस्थ आ काशीसँ बाहरक शताधिक लेखककेँ ओ तैआर कयलक, गोट चालिसेक पोथीक धारावाही प्रकाशन कयलक, जकर विवरण श्री चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' रचित *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*मे देल गेल अछि। किछु उल्लेखनीय पोथी थिक *कश्मीरयात्रा* (म. म. मुरलीधरझा), *सीमन्तिनी आख्यायिका* (म. म. परमेश्वर झा), *जानकी परिणय* (काव्य, पं. जनार्दनझा, ठाढ़ी), *भारतवर्षक इतिहास* (मूल हरिमंगल मिश्र, अनु. शिवानन्द चौधरि), *मिथिलाक इतिहास* (बाबू इन्द्रपतिसिंह, पचही), *मुद्राराक्षस* (अनु. पं. चेतनाथ झा), *गौरी-परिणय* (प्रबन्ध, गुणवन्तलालदास), *उत्तररामचरित* (अनु. मुंशी रघुनन्दनदास), *सांख्यखद्योतिका* (बाबू क्षेमधारीसिंह), *सीता-स्वयंवर* एवं *प्रबोध चन्द्रोदय* (दुनू पं. आनन्दझा न्यायाचार्य)। तहिना, अनेक लेखक लोकनि मोदक माध्यमसँ चमकलाह। पहिल खेपक, उपलब्ध अंकक आधारपर, एक सए उनचास लेखकक सूची, जाहिमे हैमवती देवी, चन्द्रमुखी देवी एवं श्यामा देवी–ई तीन गोट लोखिकाक नाम सेहो अछि, तथा दोसर खेपक बासठि गोट लेखकक सूची, जाहिमे किछु पूर्वोक्त सूचीमे सेहो छथि, तदतिरिक्त दुनू खेपक किछु छद्मनामधारी लेखकक नाम सेहो *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*मे देल गेल अछि।[2] ओहिमे अनेक व्यक्ति स्वनामधन्य भऽ मैथिली साहित्योकेँ धन्य कयलनि। एतऽ परिचित-अपरिचित किछु मात्र लेखकक नाम लेल जा रहल अछि–जीवनझा यज्वालय, यदुनाथझा मुरहो, त्रिलोचनझा बेतिया, म. म. परमेश्वर झा, म. म. गंगानाथझा, डा. अमरनाथझा, बबुआजी मिश्र, जनार्दनझा बाजितपुर, जीवछमिश्र नवटोल, बदरीनाथ उपाध्याय बरारी, काशीनाथ झा, वेदानन्दझा, रमानाथझा–तीनू कोइलख, शशिनाथझा राँटी, महावीरमिश्र पहीटोल, ऋद्धिनाथझा, ज्यो. बलदेवमिश्र, छेंदीझा मधेपुरा, कुशेश्वर कुमर, सीतारामझा, रघुनन्दनदास, शशिनाथ चौधरी दरभंगा, डा. सुभद्रझा, हरिनन्दन झा सरोज, वैद्यनाथमिश्र वैदेह (यात्री), उग्रान्दझा ककरौड़, श्रीनन्दनझा ठाढ़ी, मधुकान्तझा बेनीपट्टी, काशीनाथ ठाकुर कलेश, कांचीनाथझा किरण, उपेद्रठाकुर मोहन, बाबू लक्ष्मीपतिसिंह आदि-आदि।

एहिमे किछु व्यक्ति काशीमे रहि मैथिलीक सेवा कयलनि तँ किछु बाहरो रहि लिखलनि।

कशीमे दीर्घकाल धरि रहिकऽ मैथिली रचना कयनिहारमे अग्रगण्य छथि कविवर सीतारामझा, पं. बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य, पं. आनन्दझा न्यायाचार्य प्रभृति।

ओहि ठाम अपन जीविकाक क्रममे अथवा अध्ययन-निमित्तेँ रहैत मैथिली-लेखन कयनिहारमे प्रमुख थिकाह पं. त्रिलोचनझा, ज्यो. कुशेश्वर कुमर, कांचीनाथ झा 'किरण', उमाकान्तझा, वैद्यनाथमिश्र 'यात्री', पं. श्यामानन्द झा, प्रबोध नारायण चौधरी, पं. काशीनाथ ठाकुर 'कलेश', कुलानन्द नन्दन, डा. सुधाकान्तमिश्र एवं डा. बुद्धिनाथमिश्र प्रभृति।

मैथिलीक किछु ओहनो विख्यात लेखक छथि, जे काशी-प्रवासमे मैथिलीमे लिखलनि कि नहि, से तँ ज्ञात नहि, किन्तु ओतऽ रहल अवश्य छथि, से जीविकार्थ वा शिक्षार्थ वा जाहि रूपमे रहल होथि, मैथिली-भक्तिक प्रेरणा तँ ओतऽसँ प्राप्त कयनहिँ होयताह। संस्कृतक विद्वान् जे मैथिली-लेखक भेलाह, ताहिमे प्रायः सभ एहि श्रेणीमे आबि जयताह, कारण ओलोकनि कम कि बेसी दिन लेल काशीमे रहि आयल होयताहे। दृष्टान्त लेल दू-चारि गोटे मात्रक नाम हम लेब यथा–म. म. डा. सर गंगानाथ झा, पं. बबुआजीमिश्र, म. म. डॉ. उमेशमिश्र, महावैयाकरण पं. दीनबन्धुझा, डा. श्रीकृष्णमिश्र, डा. सुभद्रझा प्रभृति। एहिमे बादक दू गोटे पढ़लनि तँ अंगरेजी, मुदा संस्कृतोमे निष्णात भेलाह।

मैथिली साहित्यकार-रूपेँ तँ नहि, किन्तु मैथिलीक उन्नयनमे सतत निरत रहनिहार विद्वान्लोकनिमे मैथिलीक आद्य प्राध्यापक पं. खुदीझा, पं. दिनेशदत्त झा (आज-सम्पादक), पं. श्रीनाथमिश्र (तारामन्दिरक व्यवस्थापक) एवं मैथिल कर्मकाण्डक सुप्रसिद्ध लेखक पं. रामचन्द्रझा (तरौनी) काशीमे पढ़ल-रहल छलाह।

म. म. मुरलीधर झाक बाद हुनके शिष्य कविवर सीताराम झा (1891-1975) आधुनिक मैथिली काव्यक कीर्तिस्तभ भऽ गेल छथि, जनिक साधना-भूमि सम्पूर्णतः काशिए रहलनि।

2. *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*, –श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना–1981 ई., पृ. 64 सँ 66 एवं 84

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

महाकाव्यसँ लऽ-कऽ मुक्तक दोहा धरि एहि आशुकविक हृदयसँ ताहि तरहेँ उमड़ल जे बुझि पड़ैछ, गिरि-शिखरसँ कलकल करैत झरना झहरल हो ! कविवर काशिएमे लिखलनि आ काशिएसँ अपन सभ कृति प्रकाशितो करौलनि । हुनक समस्त मैथिली कृतिक प्रकाशक कचौड़ी गलीक मास्टर खेलाड़ी लाल एंड सन्स थिकनि। मैथिलीक उत्थानमे काशीस्थ एहू अमैथिल किन्तु मैथिलीभक्त प्रकाशन-संस्थाक योगदान चिर-स्मरणीय रहत । ई प्रकाशक जँ हुनक मैथिली पोथी छपबा लेल तैयार नहि होइत तँ कविवरक प्रचुर काव्यसँ मैथिली संसार वंचित रहि जा सकैत छल । जाहि विरल संस्थाक योगदान मैथिली पोथीक प्रकाशनमे रहलैक अछि, ताहिमे एकर गणना, हमरा विचारेँ, बहुत सम्मानपूर्वक होयबाक चाही ।

डा. कांचीनाथझा 'किरण' (1906-89) छात्रावस्थेमे काशी गेलाह, ओतहि आयुर्वेद पढ़लनि आ ओही ठाम श्यामा मन्दिरमे चिकित्सक बनि गेलाह । ओही भूमिसँ हुनक लेखन आ आन्दोलन समान वेगेँ बहुत दिन धरि चलैत रहल। *चन्द्रग्रहण* (1932) क प्रकाशन काशिएसँ करौलनि तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिली-प्रवेशक प्रयासमे बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लेलनि । ओहि ठाम तत्कालीन मैथिलक प्रतिपत्ति एहूसँ सिद्ध अछि जे 1933 मे काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे एक विषयक रूपमे मैथिली गृहीत भेल । मैथिलीक लेल ई महान् गौरवक क्षण छल जे पूर्वोत्तर भारतक दू सर्वप्रधान शिक्षा-केन्द्र कलकत्ता आ काशी विश्वविद्यालयमे ई अपन आसन सुरक्षित करा लेलक । महामना मदन मोहन मालवीय मैथिलीक महत्त्वकेँ मानलनि आ एकरा समुचित सम्मान देलनि ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति भेटलाक बाद म. म. बालकृष्णमिश्र प्रथमतः अध्यापक-पदकेँ अलंकृत कयलनि । पहिल मैथिल वैह थिकाह जे विद्यापति-पदावलीक सम्पादन कऽ 1937 मे मैथिली साहित्य समिति विश्वविद्यालय काशीसँ प्रकाशित करौलनि । हुनकासँ पूर्व केवल बंगाली विद्वान् एहि पर कार्य कयने छलाह । एहि तरहेँ, मैथिल सम्पादक द्वारा प्रथम विद्यापति-पदावलीक प्रकाशनक श्रेय काशीकेँ प्राप्त छैक ।

पं. त्रिलोचनझा (बेतिया) कतेक दिन काशीमे रहलाह से तँ ज्ञात नहि, किन्तु *मिथिला मोदक* ओ प्रसिद्ध लेखक छलाह एवं म. म. मुरलीधरझाक देहान्तक बाद काशियहुमे जीवन्त मैथिल संगठनक लेल उद्योगशील रहथि, तकर प्रमाण भेटैत अछि । हमरा लग तैस पृष्ठक एक पुस्तिका अछि, जकर नाम थिकैक **मैथिल संघक आवश्यकता** । एहिमे 'काशी भारती निकेतनक प्रस्ताव' छैक, जकर प्रस्तावक छथि श्री त्रिलोचनझा । प्रकाशक–भारती निकेतन, काशी । मंत्री–मैथिल श्रोत्रिय श्री सीतानाथ झा । आरम्भ मे एक पृष्ठक त्रिलोचनझाक 'प्रस्तावना' छनि, जाहिमे तिथि अंकित अछि–माघी पूर्णिमा सं. 1987, ता. 2-2-31 । प्रस्तावनासँ ई ध्वनित होइत अछि जे विद्वज्जन समितिमे हुनक प्रस्तावकेँ उपस्थित नहि कयल गेलाक कारणेँ 'भारती निकेतन' नामक समान विचारधारावला लोककेँ लऽ ओ नवीन संस्था कायम कयलनि । सात पृष्ठक 'भूमिका' मे पं. दिनेशदत्तझा विस्तारसँ मैथिलक श्रेष्ठता, मिथिलेशक दानशीलता, काशीक महत्ता, अपन संगठनक अनिवार्यता आ अन्तमे पं. त्रिलोचनझाक प्रशंसा करैत सकल मैथिल समाजसँ एहि संघकेँ सुशक्त बनयबाक आह्वान कयने छथि ।

तदनन्तर 'नव निवेदन'क रूपमे प्रस्ताव अछि । विस्तृत प्रस्तावक एक पाराग्राफ मात्र एतऽ देल जा रहल अछि, जाहिमे पं. त्रिलोचनझा काशीसँ अपन लागिक सूचनाक संगहिँ जातीय एकताक ह्रासपर खेद प्रकट कयने छथि–

"ई तुच्छ जन नेनपनमे पिताक संग 2/3 बेरि एतय आयल छल तकर बाद सन् 1905 क अन्त तथा छैके प्रारम्भमे जे एतय कांग्रेस तथा भारत धर्म महामंडल ओ सनातन धर्म महासभाक अधिवेशन भेल छल ताहिमे आयल छल ओ मासेक रहल छल। तकर बादसँ बराबर अबैत जाइत रहल अछि । एतेक दिनुक अनुभवसँ एकरा धारणा भेल छै जे मैथि[illegible] जातिमे आचार विचारक तँ क्रमशः ह्रास मुदा कुलाभिमानक वृद्धि भै रहल अछि। पूर्वमे पैघ छोटक विचार अपने खैबामे छल, खुऐबामे नहि । पैघ पैघ सोतिओलोकनि साधारणो मैथिलकेँ साक्षर खुआबै छलाह। आब खुऐबहु मे तारतम्य अछि । अतः स्पष्ट बुझना जाइछ जे जातीयता क्षीण भै रहल अछि । जतबा अंश मे जे जे सहमत छी ततबा अंशमे एहि सभक प्रतिकार केवल समवेत भेनहि [illegible]। एकताक सूत्रपात भेने क्रमशः एकताक वृद्धि ओ द्वैधक ह्रास हैत । अन्यथा अनैक्याधिक्यक प्रबलता बढ़ैत -बढ़ैत जातिकेँ चूर्ण विचूर्ण कै सत्यानाश कै देत ।"

एकर फलाफल की भेल आ भारती निकेतन कतेक गतिशील भऽ सकल, तकर सूचना तँ हमरा नहि अछि, किन्तु एहिसँ एतबा तँ सिद्ध अवश्य होइछ जे पं. त्रिलोचनझा, म. म. मुरलीधरझाक बाद, काशीमे मैथिलक खुट्टाकेँ मजगूत करबाक प्रयास कयने छलाह ।

सभसँ सबल खुट्टा निर्विवाद *मिथिला मोद* छल । ओकर अतरिक्तो कम-सँ-कम दू गोट आर पत्रिका काशीसँ प्रकाशित भेल— एक हस्तलिखित चलल तथा एक टा एखनहुँ नाम ले'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चलैत अछि । 1933-34 मे *विदेह* नामक पत्रिका प्रकाशनक सूचना अछि, यद्यपि ओकर एको अंक ने हम देखने छी आ ने तकर चर्चा *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास* मे भेटैत अछि । 1943 मे प्रकाशित *सत्य सन्देशक* एक अंक हमरा लग अछि । प्रायः एके अंक ओ प्रकाशिते भऽ सकल । सम्पादक कांचीनाथझा 'किरण' छलाह । किरणजी अपन हस्तलिखित 'मैथिली सुधाकर' (1931)क अनेक ठाम चर्चा कयने छथि । डा. सुधाकान्त मिश्र काशीमे स्थापित भेलाक बाद *बटुक* कें प्रयागसँ ओतहि स्थानान्तरित कऽ लेलनि आ हुनक अनुसार एखनो ओ छपैत छनि ।

पं. त्रिलोचनझा जहिया मैथिल संघक लेल प्रयत्नशील छलाह, ताही समयमे श्री वैद्यनाथमिश्र (तहिया वैदेह, आब यात्री) सेहो काशीमे लिखैत-पढ़ैत छलाह । कविवर सीतारामझा एवं पं. बलदेवमिश्र ज्योतिषाचार्यसँ घनिष्ठ सम्पर्कक कारणें ओ मैथिली दिस प्रवृत्त भेलाह, फलतः *माँ मिथिले, अन्तिम प्रणाम, कविक स्वप्न, देश-दशाष्टक* एवं *परम सत्य* सन कालजयी कविताक रचना-भूमि काशी बनल । किछु पूर्वहिसँ मुंशी रघुनन्दन दास (1860-1945) बरहगोरिया (मधुबनी) क बबुआन जनेश्वर सिंहक पत्नी जयेश्वरी देवीक संग काशीमे रहैत छलाह । ओतऽ साहित्य साधना चलितहि रहल होएतनि । म. म. मुरलीधरझाक सहयोगें काशिएमे हुनक सुप्रसिद्ध *मिथिला नाटक* (1932) प्रकाशित भेलनि ।

विशिष्ट गद्य-लेखक पं. बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य (1890-1975) क दीर्घ प्रवास ओतऽ रहल आ हुनक अधिक कृतिक जन्म ओतहि भेल । तहिना, पण्डित कवि ओ नाटककार आनन्दझा न्यायाचार्य (1914-88) सेहो अपन जीवनक आधासँ बेसी समय काशियहि बितौलनि आ हुनक जे प्रसिद्ध कृतिसभ छनि, से ओतहिक लिखल थिकनि, *रसनिर्झरिणी* एवं आनो पोथी मुद्रितो-प्रकाशित ओही ठामसँ भेल छनि ।

पं. श्यामानन्दझा (1906-49) काशीमे विद्याध्ययन तँ करबे कयलनि, पछातियो ओतहुसँ हुनक सम्पर्क बनले रहलनि । फलतः हुनक *मैथिली गीतचन्द्रिका* ओतहिसँ मुद्रित भऽ प्रकाशित भेलनि । नवयुवक कविलोकनिक उद्‌बोधनात्मक गीतक संग्रह *मैथिली सन्देश* क सम्पादन पं. श्यामानन्द झा ओतहि कएलनि । श्री प्रबोध नारायण चौधरी किरणजीक संगहि काशीमे रहल छलाह आ काशी विश्व-विद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति-लेल आन्दोलनमे सक्रिय छलाह, ततबे नहि, काशियहिसँ 1940 मे अपन कथा-संग्रह *विछल फूल* प्रकाशित करौलनि, जकर महत्त्व मैथिलीक आरम्भिक संग्रहक कारणें ऐतिहासिक अछि ।

ऐतिहासिक महत्त्व एकरो अछि जे उक्त समयसँ बहुत पूर्वहि म. म. गंगानाथझा अनेक वर्ष धरि काशीमे अध्ययन कयने छलाह आ म. म. उमेशमिश्र अध्ययन कयंने छलाह तथा ओहि सँ पूर्वहि महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झा 1893 सँ 1900 धरि लगातार सात वर्ष काशीमे रहि अपन शास्त्रमे पारंगत भेल छलाह, जकर सुफल बादमे *मिथिलाभाषाविद्योतन* रूपमे मैथिलीकें भेटलैक ।

मैथिलीक विकासमे महत्त्व ओहि ठामक किछु मन्दिर तथा कोठाक सेहो छैक, जे मैथिल छात्र ओ विद्वान्‌कें निःशुल्क आवासक सुविधा प्रदान करैत छलैक, यथा—काली-मन्दिर, तारा-मन्दिर, श्यामा-मन्दिर, राम-मन्दिर, नीलकंठ, रानी कोठा, मनभरनझाक कोठा आदि । किछु मन्दिरमे सदावर्त चलैक तँ किछुमे मैथिल छात्रगणक भोजनक व्यवस्था छलैक । मैथिलक गढ़ ओतहि छलैक, तेँ भाषा-साहित्यक उत्थानक केन्द्रो वैह रहैक ।

मैथिलक गढ़ तँ आबो छैके, मुदा कविवर सीतारामझाक 1975 मे देहान्तक बाद ओहि ठामक मैथिलीक गढ़ खंडहर भऽ गेलैक । ओहि खंडहरपर डा. बुद्धिनाथमिश्र मैथिलीक राग अलापिते छलाह कि कलकत्ताक उद्यानमे जाकऽ वसन्तक बाँहि पकड़ि लेलनि । तदनन्तर काशी निरुत्तर भऽ गेल । मैथिली ओतऽ जाड़मे ठिठुरि गेलीह आ गर्मी मे जरि गेलीह, वर्षा मे बहि गेलीह आ वसन्तमे झड़ि गेलीह ।

मैथिलीसँ सम्बद्ध बादक केवल दुइए टा घटना हमर जानकारीमे अछि । पहिल थिक 1981 मे मिथिला शिष्ट परिषदक प्रथम वार्षिक अधिवेशन, जाहि अवसरपर स्मारिका छपल छल । दोसर थिक 1992 मे श्री प्रभास कुमार चौधरीक संयोजकत्वमे आयोजित विशाल कथागोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' । ओकर बाद, ओतऽ कोनो दीप जरल अछि कि नहि, से नहि जनैत छी, किन्तु एतबा तँ सभ जनैत छी जे ओहि ठाम जे मशाल बरल अछि से मैथिली साहित्यकें सभ दिन जगमगौने राखत । से तँ सत्ते, मुदा ताहिसँ नव-नव दीपक बेगरता कम कोना हो ?

जीवन, मुरलीधर, कविवर, 'बल', किरणालोकित
मिथिला मोद-महत्तेँ रहथि मैथिली पुलकित
यात्री कयल जतहिसँ यात्रारम्भ, बुद्धिधर
रहितो आइ कतेक लगै अछि काशी मन्थर
पुनः ज्योति जागौ ततऽ, उठथु मैथिली भक्तगण
आन्दोलन, प्रणयन दुनू दिशा प्रयाणक करथु प्रण ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

धेमुराञ्चलमे पल्लवित मैथिली साहित्य

□ श्री केदार कानन

पूर्वकथन

अपन एहि लेखमे हम मात्र तीन जिलाकेँ केन्द्रमे राखि मूलतः मैथिलीक साहित्यिक आकलन करबाक चेष्टा कयल अछि। ओ जिला थिक–सहरसा, मधेपुरा आ सुपौल। समय, सूचना-संसाधनक अभाव आ अपन अज्ञानक कारणेँ अनेक नाम छूटि गेल होयत, से संभव थिक। ओहि छूटल नाम सभक प्रति हम अपन श्रद्धा व्यक्त करैत छी।

सहरसा

सहरसा जिलाक इतिहास विलक्षण अछि। पहिने एहिठाम भेल जिला, तखन अनुमण्डल, तखन प्रखण्ड आ तकरा बाद भेल थाना। सबकिछु उनटे। 1 अप्रैल 1954 क दिन सहरसा लेल अविस्मरणीय छल, जहिया एकरा पूर्ण आ स्वतंत्र जिलाक रूपमे घोषित कयल गेल।

विलक्षण अछि सहरसाक अतीत। सहरसाक प्राचीन इतिहास आ सांस्कृतिक परम्परा अत्यन्त महत्वपूर्ण आ गौरवशाली रहल अछि। प्राचीन विश्व आ प्राचीन भारतक मूलधाराकेँ प्रभावित करबाक श्रेय एकरा प्राप्त छैक। विश्वक प्रथम गणतंत्र उत्तरी बिहारक वैशालीक 'अंगुत्तरप' राज्यक 'आपाना' जनपदक अभिन्न भाग रहलाक कारणेँ सहरसाकेँ भगवान महावीर आ महात्मा बुद्धक अखिल विश्व मानवता कल्याण हेतु परम पावन उपदेशक प्रचार अभियानक पावन-स्थल बनबाक अभूतपूर्व श्रेय भेटल छल।

छठम शताब्दी बी. सी. मे मगध साम्राज्यक राजनीतिक गतिविधिसँ सुपौलक सम्बद्ध होयब, मौर्यकालीन पंचपार्क शिव महिसी लग गोरहो घाट एवं सहरसा लग पटुआहामे प्राप्त होयब, आठम शताब्दी ए. डी. मे पालवंशक राजा विग्रहपाल तृतीयकालीन ताम्रपत्र बनगाममे प्राप्त होयब, एगारंहम शताब्दी ए. डी. मे सुपौलसँ सटल मलहद गामकेँ राजा मल्लदेवक नामसँ सम्बद्ध होयब, मिथिलाक राजा शिवसिंहक समय उदित भारतक महान् कवि एवं भक्त महाकवि विद्यापतिक पुत्रीक पाणिग्रहण-परिपाटी महिसीक प्रतिष्ठित ब्राह्मण-परिवारमे होयब, राजा नरसिंहदेव अभिलेख कन्दाहाक प्राचीन सूर्य-मंदिरमे होयब, सुरक्षा लेल कन्दाहा गामकेँ राजा नरसिंहदेवक अस्थायी राजधानी होयब, मुगल साम्राज्यक राजनीतिक गतिविधि सँ सम्बद्ध होयब, भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे अग्रणी भूमिकाक निर्वाह करबाक श्रेय प्राप्त होयब आदि एहन तथ्य थिक, जे एहि जिलाक इतिहास केँ गौरवशाली, प्रतिष्ठित आ मर्यादित करैत अछि।

वशिष्ठाराधिता उग्रताराक पीठ एवं जगद्गुरु शंकराचार्य सँ गँहन शास्त्रार्थ करयबला उद्भट विद्वान् एवं कर्मयोगी परमपूज्य मंडनमिश्र तथा महान् विद्वान् कुमारिल भट्टक परम विदुषी बहिनि भारतीक पावन धाम महिसी एखनो अपन गौरवशाली संस्कृति आ धार्मिक परम्परा लेल विश्व-चर्चित अछि। वर्त्तमानमे बनगाममे सुप्रसिद्ध सिद्धयोगी आ भक्तकवि लक्ष्मीनाथ गोसाइँक साधना-स्थल, नवहट्टासँ सटल पश्चिम कौशिक मुनिद्वारा स्थापित पौराणिक देवन शिव-मंदिर, सोनबरसाक विराटपुर गामक प्रसिद्ध चंडीस्थान आदि श्रद्धालु भक्तलोकनिक प्रमुख आकर्षण-स्थल थिक। सहरसा जिलाक इतिहासकेँ जँ साक्ष्य-भावसँ अवलोकन कयल जाय तँ एकर सम्पन्न संस्कृति आ परम्परा जिज्ञासुकेँ सद्कार्य करबाक लेल आमंत्रित आ उद्वेलित करैत अछि।[1]

साहित्यिक आ सांस्कृतिक सक्रियताक महत्वपूर्ण केन्द्रस्थल सहरसा एखनो अपन जीवन्त गतिविधि हेतु मिथिलाक केन्द्र बनल अछि। कोशीक विभीषिकासँ ई क्षेत्र निरन्तर ध्वस्त होइत रहल मुदा एहिठामक साहित्य-सृजन आ चिन्तन, थोड़-बहुत अवरोधक अछैतहु निरन्तर कोशीक प्रवाह जकाँ आगाँ बढ़ैत रहल आ अपन प्रांजल साहित्यिक अभिव्यक्तिसँ, जीवनक बहुविध यथार्थ-चित्रणसँ मैथिली साहित्यक निरन्तर अभिवृद्धि करैत रहल अछि। ई अभिवृद्धि कोनो सामान्य अभिवृद्धि नहि थिक। साहित्य लेल एकटा उन्नत ध्वज जकाँ एहिठामक पताका लहरइत रहल अछि आ नवपीढ़ीक रचनाकारकेँ एहिठामक एखनो सहरसाक उन्नत आ गौरवशाली साहित्यिक अतीत जीवनीशक्ति प्रदान करैत छैक।

सहरसाक साहित्यिक परिदृश्यक पहिल अध्यायक पहिल नाम थिक पंडित छत्रनाथ झा, जे बनमाममे आबि कए बसि गेल

---

1. जिला योजा, सहरसा, वर्ष 1988-89.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

छलाह। हिनक पिताक नाम मनोहर झा छलनि। हिनक जन्मकाल मे मतैक्य नहि अछि। पंडित छेदी झा 'द्विजवर' हिनक जन्म 1756 ई. मानैत छथि। सहरसा गजेटियरक अनुसारेँ हिनक काल 1775 सँ 1840 ई. थिक। क्यो-क्यो हिनका लक्ष्मीनाथ गोसाइँक समकालीन सेहो मानैत छथि।

हिनकाद्वारा रचित अनेक गीत, महेशवाणी, पिहानी, तिरहुति, भजन, भगवती-वन्दना आदि उपलब्ध मुदा अप्रकाशित अछि। 1934 ई. मे द्विजवर कवीश्वर छत्रनाथ झाक एकटा लघु काव्य-कृति *हनुमान-रावण-संवाद* क संपादन कए 'बनग्राम साहित्य समाज' द्वारा प्रकाशित करौने छलाह, जकर भूमिका रूपमे डेढ़ पृष्ठक जीवनी सेहो प्राप्त अछि। हिनका द्वारा रचित कवित्त-संग्रहक नाम थिक–*हनुमान नाटक, सुदामा चरित, द्रौपदी पुकार, वनग्राम विरुदावली*, फुटकर कवित्त आदि। प्रत्येक संग्रह आ फुटकर कविता छंदमय आ रागतालल्याश्रित अछि। संगीतक प्रति हिनका विशेष रुचि छलनि। हिनक 'पिहानी'क एकटा उदाहरण देखल जाय–

'तीन अक्षर विधि लिखल सनेश
आदिक मेटने चढ़य नरेश
अंतक मेटने सगुण जनाउ
मध्यक मेटने सब मन भाउ
'छत्रनाथ' भन कहत पिहानी
जे बुझय से बड़ ज्ञानी।'

कवीश्वर छत्रनाथ झा अपन कवित्त रचना मध्य कतहु कवीश्वर, कविनाथ, नाथ, छत्रनाथ, कवीश्वर दत्त आदिक प्रयोग भनिताक रूपमे कयलनि अछि।

1890 ई. मे पंडित भूपलाल खाँक जन्म बनगाम मे भेलनि, जे भूपलाल शर्माक नामेँ विख्यात भेलाह। हिनक पिता कुजौली परिवारक, पंडित थारू खाँ छलाह। ई भक्तकवि छलाह आ 'सरमा राम' क नामसँ रचना करैत छलाह। हिनक लिखल अनेक गीत आ भजन उपलब्ध अछि। भजनक एकटा संग्रह *हनुमान माला* नामसँ प्रकाशित अछि।

हिनक अप्रकाशित रचनाक सूची अत्यन्त विस्तृत अछि, जाहिमे मौलिक रचनाक संग-संग अनेक अनुवाद सेहो सम्मिलित अछि–जेना *श्रीमद्भागवत, मिथिला-मनुस्मृति, दुर्गासप्तशती, एकादशी-माहात्म्य, सत्यनारायण-कथाक* ई मैथिलीमे अनुवाद कयलनि आ *सरमाराम यात्रा-गान, कीर्त्तन-व्याख्यान, मिथिला सुधार, तिरहुत तान, मिथिला नाटक, मिथिला संगीत, वनग्राम प्रकाश, मिथिला भक्तमाल* आदि अनेक पोथीक प्रणयन ई कयलनि।

कहल जाइत अछि जे हिनका अपन मृत्युक पूर्वाभास भऽ गेल रहनि, तेँ ओही दिन भोरहिसँ ओ गीतापाठ, रामायणपाठ आ भजन-कीर्त्तनक आयोजन करौने छलाह। पचपन वर्षक अल्पायुमे हिनक निधन 1945 ई. मे भऽ गेलनि।

पंडित छेदी झा 'द्विजवर' एहि जिलाक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्तम्भ भेलाह, जे अपन बहुमुखी प्रतिभासँ साहित्यक प्रायः प्रत्येक प्रमुख विधाकेँ पुष्ट कयलनि। अनेक भाषाक विद्वान्, कवि, गवेषक, सम्पादक, स्वतंत्रता-संग्रामक अन्यतम प्रहरी आ राष्ट्रभक्त द्विजवरक जन्म 1893 ई. केँ बनगाममे भेलनि। युवाकालहि सँ ओ भारतीय स्वतंत्रता-संग्राममे अपन जीवनकेँ समर्पित कए देलनि आ ताहि क्रममे अनेक खेप जेल गेलाह। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद ओ कांग्रेसक थानाध्यक्ष एवं भागलपुर जिलाध्यक्षक रूपमे सेहो जन-सेवा कयलनि। दू बेर चुनाओमे सेहो ठाढ़ भेलाह आ पराजित भेलाह। राजनीति केर दिनानुदिन होइत ह्रास आ अपवित्र वातावरण हिनका नहि रुचलनि आ ओ अन्ततः राजनीतिसँ संन्यास लए लेलनि आ जीवनक शेष समय साहित्य-सेवामे बितौलनि।

द्विजवर आधुनिक मैथिली काव्यधाराक एकटा विलक्षण कवि-व्यक्तित्व भेलाह। ई अपन कवितामे एकगोट नव चेतना, नव आयाम आ सर्वथा नवीन प्रवृत्तिक सूत्रपात कयलनि जे आगाँ जा कए अत्यन्त पल्लवित-पुष्पित भेल। राष्ट्रीय चेतनाक प्रथम पंक्तिक प्रखर कविक रूपमे हिनका सदैव स्मरण कयल जायत। ई मैथिलीक संग-संग संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आ अंग्रेजीमे सेहो रचना कयने छथि।

मैथिलीमे हिनक प्रकाशित रचना छनि–*कोइली दूती, द्विजवर सप्तशती*। ई दुनू काव्य थिक। हिनक अप्रकाशित रचना छनि–*सीतायन (महाकाव्य), स्वानुभूति, साहित्य शतदल, मैथिली गीत कुसुम, नरसिंह-पदावली, बंदी विनोद, अमर संगीत*–ई सभ पद्य-ग्रंथ थिक, तथा *उर्मिला* (उपन्यास) आ *मैथिली व्याकरण* आदि पोथी अप्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त संस्कृतसँ ओ निम्नलिखित पोथी अनुवाद मैथिलीमे कयने छथि–*गोवर्धनाचार्यक आर्यासप्तशती, गीतगोविन्द, ईशोपनिषद्, वैशेषिक दर्शन, पातञ्जल योगसूत्र, दुर्गा-सप्तशती* एवं *सत्यनारायण-कथा*। हिन्दी मे ओ अनेक ग्रंथक प्रणयन आ सम्पादन कयने छथि। बंगलाक दू गोट पोथीक अनुवाद ओ कयने छथि। उर्दूमे कातिल उपनाम

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सँ हुनक एकटा पोथी अप्रकाशित अछि– *'चमनिस्ताने युवक'*, जाहिमे राष्ट्रीय भावनाक पद्य संकलित अछि। अंग्रेजीमे हुनक लिखल *हिस्ट्री आफ सहरसा डिस्ट्रिक्ट* अप्रकाशित इतिहास-ग्रंथ अछि।

अनेक शैक्षणिक एवं बौद्धिक-सांस्कृतिक संस्थाक संस्थापक द्विजवरक मृत्यु 30 अगस्त 1972 ई. कें भऽ गेलनि।

1893 ई. मे पंडित **गोधियाँजीक** जन्म बनगाममे भेलनि। हिनको अनेक गीत, भजन, नचारी आदि उपलब्ध होइछ। हिनक अप्रकाशित कृति थिक– *'प्रेम-पूर्णिमा'*, जाहिमे 1621 टा पद संकलित छनि। एकरा अतिरिक्त हिनक *शिवविवाह-संकीर्तन, ध्रुव-चरित* (अपूर्ण) क संग एकटा नाटक सेहो अप्रकाशित छनि। हिनक मृत्यु 14 सितम्बर 1972 कें भऽ गेलनि।

ज्योतिषी पंडित **बलदेव मिश्र** मैथिली साहित्यक सुविख्यात हस्ताक्षर भेलाह, जनिक जन्म 1890 ई. मे बनगाममे भेलनि। हिनक लिखल कतिपय शोध-निबंध अनेक दृष्टियेँ महत्वपूर्ण अछि। ओ अपन जीवनक लक्ष्य अध्ययन आ खोज चुनलनि आ ताहि लक्ष्य पर जीवनपर्यन्त यात्रारत रहलाह। काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्था, पटाना मे ओ किछु वर्ष धरि अनेक भाषा मे शोध-कार्य करैत रहलाह आ जीवनक अधिकांश भाग ओ काशीमे बितौलनि।

मैथिलीमे हुनक प्रकाशित कृति छनि–*समाज, गपशप विवेक, रामायण-शिक्षा, संस्कृति,* तथा *चन्दा झा;* एवं अप्रकाशित कृति छनि–संस्कृतमे *मैथिल विद्वानक कृतित्व,* मैथिली साहित्य सेवी-लोकनिक संस्मरण, विद्यापतिक समालोचना आदि। हिनक अनेक रचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल ओछि। *मिथिला मोद*मे 1911 सँ 1941 धरि हिनक रचना प्रकाशित होइत रहल। ओहि मनीषी साहित्यकारक देहावसान 1975 ई. मे भए गेलनि।

पटौरीक **महादेव लाल 'विशारद'** क जन्म 1900 ई. मे भेल। ओ मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत आ हिन्दीमे अनेक पद्य-रचना कयने छलाह। हुनक अनेक पद उपलब्ध अछि। हुनक मृत्यु 1991 ई. मे भए गेलनि।

पटौरीक प्राचीन कालक कविलोकनिमे मुख्य छथि **सूचर दास, नूनूजी, ईश्वरदत्त दास** एवं गुरुजीक नामेँ विख्यात **सुन्दर लाल दास**। हुनकासभक रचना कोनो उल्लेखनीय पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित तँ नहि भए सकल मुदा ओ लोकनि स्वान्तःसुखाय गीत, कवित्त, भजन आदिक रचना करैत रहलाह।

चैनपुर निवासी पंडित **गंगाधर मिश्र** *मिथिला मोद* क नियमित लेखक छलाह। **मिथिला मोद** क माध्यमसँ हिनक *सत्यव्रतोपाख्यान* नामक पुस्तकक प्रकाशन भेल छल। पंडित मिश्रक आन प्रकाशित पोथी थिक–*सुदामा चरित* आ *सुकन्योपाख्यान*। खजुरीक **अच्युतानन्द** झा, बनगामक **बदरीनाथ झा,** बिहराक **राजधारी सिंह,** पचगछियाक **रुद्रनारायण** सिंहक मैथिली सेवा स्तुत्य रहल अछि। ई लोकनि अपन बहुविध रचनासँ मैथिली साहित्यक सेवा कयलनि मुदा हिनकालोकनिक संकलन प्रकाशित नहि भए सकल। पँचगछियाक **श्रीधर झा,** बनगामक **रामकृष्ण खाँक** अनेक रचना *मिथिला मोद* मे एवं नवहट्टाक **अनुग्रह लाल ठाकुरक** अनेक रचना *श्रीमैथिली* पत्रिकामे प्रकाशित अछि।

प्रख्यात मैथिली-सेवी आ मैथिलीक अनेक पत्रिकाक सम्पादक डा. **प्रबोधनारायण सिंहक** जन्म सहौरा गाममे भेलनि। हिनक अनेक शोध-निबंध प्रकाशित छनि। हिनका संग-संग हिनक पत्नी डा. **अणिमा सिंह** सेहो मैथिलीक उन्नायक छथि। हिनक **मैथिली लोकगीत** नामक शोधग्रंथ प्रकाशित छनि। एकरा अतिरिक्त हिनक अनेक निबंध सभ पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि।

पंचगछियाक पंडित **यागेश्वर झाक** मैथिलीमे अनेक पद्य-ग्रंथ प्रकाशित छनि। हिनक **आर्या** नामक पोथी आर्या छन्दमे लिखल प्रायः मैथिलीक पहिल पोथी थिक। एकरा अतिरिक्त *कमरथुआ पाथेय, छाल्ही आ नोर हिनक* प्रकाशित पद्य-कृति थिक। हिनक किछु पद अप्रकाशितो छनि।

कासिमपुरक **भवनन्दन लाल** प्रसिद्ध 'कुमरजी' सेहो यदा-कदा मैथिलीमे लिखैत रहलाह अछि। हिनक एक निबंध 'श्रीधर ठक्कुर' प्रकाशित छनि।

बिहराक **नन्दकिशोर लाल 'नंदन'** क जन्म 1 फरवरी 1917 ई. मे भेलनि। स्वर्णपदक एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त नन्दन जी मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे रचनाशील छथि। हिनक **सत्यनारायण कथाक** मैथिली अनुवाद, *श्रीसिंहेश्वर माहात्म्य, नन्दन-निकुंजक* अतिरिक्त अनेक पोथी प्रकाशित छनि।

डा. **कृष्णदत्त झा 'प्रमत्त'**क जन्म 1921 ई. मे जौँकी महिनाथपुर, मधुबनीमे भेलनि, मुदा हिनक कार्यक्षेत्र सहरसे रहलनि। संस्कृतक विद्वान् होइत ई मैथिलीमे कविता, कथा तथा किछु एकांकीक सृजन कयने छथि।

राजकमल चौधरीक जन्म 13 दिसम्बर 1929 कें अपन मातृक रामपुरमे भेलनि। हुनक पैतृक महिसी छलनि। राजकमल चौधरी मैथिली साहित्यमे आधुनिक कालक सर्वाधिक प्रतिभाशाली आ वैविध्यपूर्ण रचनाकार भेलाह। हुनक साहित्य मिथिलांचलमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बसल निम्न-मध्यमवर्गीय समाज आ तकर जीवनक अप्रतिम दस्तावेज थिक ।

अपन रचनासँ राजकमल मैथिलीमे सर्वथा नव दृष्टिकोण देलनि । मैथिली कविता आ कथाकेँ समक्ष भविष्यक अनेक संभावनाक द्वारि खुजल । ओ पहिल मैथिलीक लेखक भेलाह जे सामाजिक सत्यकेँ बिना कोनो आवरण देने अपन शताधिक रचनामे प्रकट कयलनि । ओ मैथिलीक कविताकेँ नव दिशा देलनि । मैथिली कथा आ उपन्यासमे नव प्रयोग कयलनि आ एहि नवताक कारणेँ, सत्यक सहज उद्घाटनक कारणेँ ओ सर्वाधिक चर्चित आ विवादास्पद रचनाकार भेलाह । एहि प्रतिभाशाली रचनाकारक मैथिलीमे प्रकाशित कृति अछि–*आदिकथा, पाथर-फूल आ आन्दोलन* (उपन्यास), *ललका पाग, कृति राजकमलक, एकटा चंपा-कली एकटा विषधर, निरमोही बालम हमर, एक अनार एक रोगाह* (कथा-संग्रह) एवं *स्वरगंधा* आ *कविता राजकमलक* (कविता सग्रह) । हुनक अनेक कृति हुनक मृत्युक पश्चात् प्रकाशित भए सकल ।

सामाजिक यथार्थक अभिव्यक्ति राजकमलक साहित्यक मूल प्रयोजन थिक आ एहि प्रयोजन-सिद्धि लेल ओ जीवनपर्यन्त संघर्षरत रहलाह । मैथिलीक अतिरिक्त ओ हिन्दी आ अंग्रजीमे प्रचुर मात्रामे साहित्य-सृजन कयलनि । ओ अनेक महत्वपूर्ण बंगला कृतिक अनुवाद हिन्दीमे कयलनि । हुनक मृत्यु अल्पायुमे कोरोनरी ऑक्लूजसँ 19 जून 1967 केँ पटनामे भए गेलनि ।

मैथिलीक कवि राजनपुर महिसीक निवासी आचार्य **योगेश्वर** अपन रचना आ पत्रकारितासँ निरन्तर चर्चामे रहलाह अछि । ई मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे लिखैत रहलाह अछि । मैथिलीमे हिनक **इत्यादि** कविता-संकलन प्रकाशित अछि ।

कृष्णचन्द्र झा 'मस्ताना' अपन कतिपय कविता आ निर्भीक पत्रकारितासँ सहरसाक साहित्यिक धरतीकेँ जीवन्त रखबामे अपन सारस्वत सहयोग दैत रहलाह अछि ।

लगमा निवासी डा. **विष्णु कुमार झा 'बेचन'** मैथिली आ हिन्दीक परिचित हस्ताक्षर छथि । मैथिलीमे हुनक *स्वातंत्र्योत्तर मैथिली निबंध* नामक एकटा पुस्तक 1967 मे प्रकाशित भेल । हुनक कतिपय निबंध मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।

दिनेश्वर लाल 'आनन्द'क जन्म महिसीमे भेलनि । ओ अपन आरंभिक कालमे मैथिली साहित्यकेँ अनेक कविता आ चर्चित कथा देलनि । मुदा आब ओ लिखब बन्न कयने छथि । हुनक लिखल किछु संस्मरण आ निबन्धादि सेहो प्रकाशित अछि ।

शाहीडीहक **रामशरण सिंह** अपन आंरभिक कालमे मैथिली मे लिखैत रहलाह । हिनक एक उपन्यास *श्यामा* नामसँ मैथिली मे प्रकाशित अछि ।

चैनपुरक **हरेकृष्ण चैनपुरी**, बनगामक **हरेकृष्ण झा**, पँचगछियक **कामानन्द सिंह 'सुमन'**, **जितेन्द्र नारायण झा**, **रामनन्दन सिंह**, बिहराक **अमरेन्द्र देव** आदि सेहो मैथिलीमे यदा-कदा लिखैत रहलाह अछि ।

पटोरीक डा. **रमेशचन्द्र वर्मा**क जन्म 31 जनवरी 1930 ई. मे भेलनि । मैथिलीमे हिनक कतिपय निबंध आ कविता प्रकाशित छनि । हिनक प्रमुख प्रकाशित निबंध छनि 'अच्युतानन्द दत्तक प्रबंध-कौशल', 'अमृतकर : एक परिचय', 'विद्यावाचस्पति धनुषधारी दासक मैथिलीमे बिहारी : एक सर्वेक्षण', 'विद्यापति ओ दशावधान', 'ललितेश्वर मल्लिकक साहित्यिक मूल्यांकन एवं चिट्ठी एक स्वतंत्रता सैनिकक सम्बन्धमे' आदि । मैथिलीक अतिरिक्त ई हिन्दीमे सेहो निरन्तर लिखैत रहलाह रछि ।

चैनपुरक **मधुकान्त झा 'मधुकर'**क जन्म 1930 ई. मे भेलनि मधुकर जी मूलतः भक्तकवि छथि । *मधुकर-माधुरी* नामक हिनक मैथिलीमे भजन-संग्रह प्रकाशित छनि, जाहिमे नचारी, देवी-स्तुति, महावीर-वन्दना, मिथिला-वर्णन आदि संकलित अछि ।

पड़री निवासी **तिलकधारी खाँ** द्वारा सम्पादित *पद्य-रत्नाकार* नामक संकलन मैथिलीमे उपलब्ध अछि । हिनक किछु निबंध मैथिली आ हिन्दीमे प्रकाशित छनि ।

प्रो. **उमेश मिश्रक** जन्म बनगाममे भेलनि । ओ सहरसा कालेजक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह । ओहि कालमे हुनका द्वारा सम्पादित एकटा पद्य आ गद्यक संकलन प्रकाशित भेल छल । अन्यत्रो हुनक किछु निबन्ध प्रकाशित भेल छनि ।

पंडित **सदानन्द झा 'शास्त्री'** धबौलीक निवासी छलाह । संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी तीनू भाषामे ओ जीवनपर्यन्त लिखैत रहलाह । मैथिलीमे हुनक *'पिपासा'* आ *'विपंचिका'* दुनू काव्य संग्रह प्रकाशित छनि ।

मार्कण्डेय झा मैथिलीक सुपरिचित कथाकार छथि । ई एखन सहरसा कालेजक अर्थशास्त्र-विभागमे प्राध्यापक छथि । हिनक अनेक चर्चित कथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे, मुख्यतः मिथिला मिहिरमे प्रकाशित छनि । ई कविता सेहो लिखैत छथि ।

उपेन्द्र झाक जन्म तँ भेलनि मधुबनी जिलाक महरैल मे मुदा ओ सहरसा कालेजमे अर्थशास्त्र-विभागाध्यक्ष छथि । मैथिलीमे हुनक प्रायः बीस गोट कथा मिथिला-मिहिरमे प्रकाशित छनि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कथाक अतिरिक्त हुनक किछु एकांकी सेहो प्रकाशित छनि। ओ यदा-कदा एखनहु लिखैत रहैत छथि।

मुरादपुरक **जयानन्द झा** राजकमलक समकालीन आ मित्र छथि। मैथिली आ हिन्दीमे हुनक अनेक कथा, निबंध, संस्मरण आ एकांकी प्रकाशित छनि। सहरसासँ प्रकाशित मैथिली पत्रिका 'चाँगुर'क एक सम्पादक इहो छलाह।

पटोरीक प्रकाशलाल दासक जन्म 7 जनवरी 1933 मे भेलनि। मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे ओ रचनाशील रहलाह अछि। हुनक कतिपय कविता विभिन्न पत्रिकादिमे प्रकाशित छनि। हालमे मैथिलीमे हुनक एकटा प्रबंध काव्य *युद्धान्तिका* प्रकाशित भेल छनि। मैथिलीमे हुनक दू गोट महाकाव्य अप्रकाशित छनि–*प्रज्ञापुरुष श्रीराम* आ *मिथिलांचला*। ओ एखनो सृजनशील छथि।

नवहट्टाक साकेतानन्द मैथिलीक सुपरिचित आ चर्चित हस्ताक्षर छथि। हिनक लिखल अनेकानेक कथा, कविता, निबंध आ यात्रा-संस्मरण मैथिलीमे प्रकाशित अछि। मैथिलीमे हिनक कोनो स्वतंत्र संकलन नहि आबि सकल छनि। हिन्दीमे सेहो ई निर्बाध गतियेँ लिखैत रहलाह अछि। ई एखन आकाशवाणी मे वरिष्ठ पदाधिकारी छथि।

बनगामक **भवेश मिश्रक** जन्म 6 फरवरी 1935 मे भेलनि। ओ मूलतः पत्रकार छलाह। मैथिलीमे हुनक *लक्ष्मीनाथ गोसाईं* नामक पोथी प्रकाशित छनि, जाहिमे गोसाइँ जीक जीवनी आ हुनक साहित्यक यथासाध्य विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि। हिन्दीमे हुनक कतिपय पोथी प्रकाशित छनि।

बनगामक **अभिमन्यु खाँक** जन्म 4 मइ 1933 केँ भेलनि। ई हिन्दी, मैथिली आ अंग्रेजीमे रचना करैत रहलाह अछि। 'मिथिला मिहिर' आ 'सन्निपात'मे हिनक किछु रचना प्रकाशित छनि। हिनक रचनाक क्षेत्र मूलतः विचारपरक निबंध आ काव्य थिक।

पँचगछियाक **वैद्यनाथ झाक** किछु कथा, कविता आ निबंध मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि। मैथिलीमे हुनक एकटा कथासंग्रह *एक परित्याग* नामसँ प्रकाशित छनि। ओ एखनो सृजनरत छथि आ गंभीर विषय पर शोध कऽ रहल छथि।

कासिमपुरक डा. **शांति सुमनक** जन्म 15 सितम्बर 1942 केँ भेलनि। शांति सुमन मैथिली आ हिन्दीक नवगीतकेँ नव स्वर आ नव आयाम देबामे अत्यन्त सफल भेलीह अछि। मैथिलीक नवगीतकेँ विभिन्न समारोहक मंचसँ लोकप्रियता प्रदान करयबामे हिनक सेवा स्तुत्य छनि। मैथिलीमे हिनक गीतक एकटा संग्रह *मेघ इन्द्रनील* नामसँ प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त हिनक अनेक गीत पत्रिकादिमे प्रकाशित छनि।

डुमरा निवासी डा. **शेफालिका वर्माक** जन्म 9 अगस्त 1944 केँ भेलनि। शेफालिका वर्मा मैथिलीक सुपरिचित कवयित्री आ कथाकार छथि। कोमल भावक कविता लिखबामे ई सिद्धहस्त छथि। हिनक कथाक प्राण थिक भावक सुकुमारता। मैथिली आ हिन्दीमे समान रूपेँ लिखनिहारि हिनक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि- *विप्रलब्धा* (कविता), *एकटा आकाश* (कथा) एवं *स्मृति रेखा* (संस्मरण)। ई एखनो सृजनरत छथि।

सहमौराक डा. **इलारानी सिंहक** जन्म 1 जुलाइ 1945 केँ भेलनि। मैथिली ओ हिन्दीमे समान रूपेँ लिखनिहारि इलारानी सिंहक अनेक निबंध आ कवितासभ पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल अछि। 'मिथिला दर्शन' नामक मैथिली मासिकक सम्पादन ओ अनेक बर्ख धरि करैत रहलीह। मैथिलीमे हुनक प्रकाशित कृति थिक *विन्दन्ती* (काव्य), *सलोमा, प्रेम एक कविता* (अनूदित नाटक) आ *विप्रलब्धा* (अनूदित उपन्यास)। हुनक अनेक पोथी अप्रकाशित अछि। 13 जून 1995 केँ हुनक असामयिक मृत्यु सँ मैथिलीकेँ अपूरणीय क्षति भेल अछि।

माधुरी झाक जन्म 15 जुलाइ 1945 केँ नेहरा (दरभंगा) मे भेलनि मुदा हिनक कार्यक्षेत्र सहरसा थिकनि। मैथिलीमे हिनक किछु कथा आ किछु निबन्ध प्रकाशित भेल छनि। युग-युगसँ पीड़ित, दमन-चक्रमे पिसाइत नारी-जीवनक व्यथा-कथा हिनक कथाक मुख्य स्वर रहल अछि।

कर्णपुर निवासी **अम्बिका मिश्रक** कार्यक्षेत्र सहरसा रहल छनि। *'कोसी-कुसुम'* नामक चर्चित मैथिली पत्रिकाक सम्पादन ओ अनेक बर्ख धरि कयलनि। हुनक किछु कविता आ सामयिक लेख मैथिलीक पत्रिकादिमे प्रकाशित छनि।

सहरसाक **मीरा झा** एवं **लालपरी देवीक** किछु कविता आ कथा प्रकाशित छनि।

बनगामक **रमेशचन्द्र खाँ 'किशोर'** क जन्म 21 अक्तूबर 1946 केँ भेलनि। ई अंग्रेजीक प्राध्यापक छथि मुदा मैथिलीमे हिनक कतिपय कविता आ कथा प्रकाशित अछि।

मुरादपुरक डा. **मनोरंजन झाक** जन्म 14 नवम्बर 1947 केँ भेलनि। ओ मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे रचना करैत रहलाह अछि। मैथिलीमे हिनक एक खंडकाव्य इँटउघनी' नामसँ प्रकाशित छनि। हिनक कतिपय कविता आ निबंध समय-समय पर पत्रिकादिमे प्रकाशित होइत रहल अछि।

बनगामक **नागेश्वर खाँ 'नीलम'** क जन्म 3 फरबरी 1950 केँ भेलनि। हिनक कतिपय रचना मिथिला मिहिरमे प्रकाशित

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

होइत रहल अछि। ई मूलतः कवि छथि। हिनक मैथिलीमे एकटा महाकाव्य *योगिराज* अप्रकाशित अछि, जे लक्ष्मीनाथ गोसाइँक जीवन पर आधारित अछि। मैथिलीक अतिरिक्त ई यदा-कदा हिन्दीमे सेहो लिखैत छथि।

मैथिलीमे **महाप्रकाश** नामेँ ख्यात जयप्रकाश वर्माक जन्म बनगाममे जुलाइ 1950 केँ भेलनि। 1967 सँ अपन लेखन आरंभ कयनिहार महाप्रकाश आधुनिक मैथिली साहित्यक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि। हिनक शताधिक कविता आ कथा मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि। हिनक लिखल किछु विलक्षण संस्मरण, ललित निबंध आ लेखादि सेहो प्रकाशित छनि। *कविता संभवा* नामक एकटा-कविता संग्रह 1972 ई. मे प्रकाशित भेलनि। ललितक प्रसिद्ध उपन्यास *पृथ्वीपुत्र* क हिन्दी अनुवाद ई कयने छथि। ई अनूदित उपन्यास 'विपक्ष', (हिन्दीक अनियतकालीन पत्रिका) मे प्रकाशित अछि। अत्यन्त सवंदनशीलता, दृष्टिक तीक्ष्णता आ यथार्थ बोधक प्रखर धार हिनक कविताक विशेषता थिक। मैथिलीमे हिनक एक उपन्यास **एकटा अन्हार सुरंग**, एक कविता संग्रह **संग समय के** तथा एकटा कथा-संग्रह अप्रकाशित छनि। ई निरन्तर सृजनशील छथि।

सहमौराक डा. **उदयनारायण सिंह 'नचिकेता'क** जन्म 23 नवम्बर 1951 केँ कलकत्तामे भेलनि। ओ एखन हैदराबाद विश्वविद्यालयमे भाषाविज्ञानक प्राध्यापक आ अनुवाद अध्ययनक निदेशक छथि। ओ अनेक भाषाक ज्ञाता छथि। मैथिली आ बंगला दुनू हुनक मातृभाषा थिक। एखनधरि मैथिलीमे हिनक एगारह गोट पोथी आबि चुकल अछि, जाहिमे कविता संग्रह थिक *कवयो वदन्ति, अमृतस्य पुत्राः, अनुत्तरण* एवं नाटकक पोथी थिक–*नायक नाम जीवन, एक छल राजा, नाटकक लेल, प्रत्यावर्त्तन, आन्दोलन, रामलीला, जनक एवं अन्य एकांकी* तथा *प्रियंवदा*। कविताक हुनक एकटा पोथी प्रेसस्थ अछि– *मध्यमपुरुष एकवचन*। एहि सभक अतिरिक्त ओ बंगलामे अनेक पुस्तक लिखने छथि, अनेक पुस्तकक सम्पादन कयने छथि, भाषावैज्ञानिकक हैसियतसँ ओ अनेक देशक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयमे व्याख्यान देबाक निमित्त गेल छथि। मैथिलीमे 'मैथिली कविता' नामक कविता-त्रैमासिकक संपादन कयने छथि, जकर छओ अंक प्रकाशित भऽ सकल। ई निरन्तर सृजनरत छथि।

ललितेश मिश्रक जन्म 23 जून 1952 केँ बनगाममे भेलनि। ललितेश मिश्र आठम दशकक चर्चित कवि-कथाकार छथि। हिनक कतिपय शोध-निबंध आ आलोचना सेहो प्रकाशित अछि। 1967 सँ अपन लेखन आरंभ कयलनि ललितेश मुदा एखन धरि कोनो संग्रह नहि आबि सकल छनि। हिनक संग्रहक प्रतीक्षा मैथिलीक पाठककेँ छनि। हिनक अनेक कविता, अनेक कथा प्रकाशित-प्रशंसित भेल अछि। सम्प्रति सहरसा कालेजमे अंग्रेजीक प्राध्यापक छथि आ पत्रकारिता करैत छथि।

डा. **कुमार ज्योतिवर्द्धन** क जन्म 13 नवम्बर 1955 केँ लहेरियासरायमे भेलनि मुदा हिनक कार्यक्षेत्र थिक सहरसा। एखन ओ स्नातकोत्तर केन्द्रक हिन्दी विभाग, सहरसामे अध्यापन करैत छथि। ई 1973 सँ अपन लेखन आरंभ कयलनि। हुनक लेखक मूल विधा कविता थिक। शोषित जनताक पक्षधरता आ वर्ग-संघर्ष हिनक कविताक मूलराग थिक। ई थोड़ेक दिन तँ अत्यन्त सक्रिय लेखनसँ जुड़ल रहलाह, एम्हर लेखनमे थोड़ेक शिथिलता आयल छनि। दुखद प्रसंग थिक जे एखनधरि हिनक कोनो संग्रह मैथिलीकेँ नहि प्राप्त भए सकल अछि।

डा. **राजाराम प्रसादक** जन्म 8 फरवीर 1954 केँ बसली, सुपौलमे भेलनि मुदा हिनक कार्यक्षेत्र सहरसा थिक। ई एखन सहरसा कालेजमे मैथिलीक अध्यापनसँ जुड़ल छथि। ई 1980 सँ अपन लेखन आरंभ कयलनि। हिनक कतिपय कविता आ कथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। ई निरन्तर सृजनरत छथि।

अरविन्द मिश्र 'नीरज' क जन्म 3 फरबरी 1958 केँ नोनोती में भेलनि। नीरज मूलतः गीतकार छथि। हिनक कछु गीत प्रकाशित छनि। नीरज मैथिलीमे मंचोपयोगी गीत लिखैत छथि आ मैथिलीक मंच पर हिनक गीत लोकप्रिय भेल अछि।

वंशीकान्त अमलतासक जन्म 2 फरबरी 1956 केँ महिसी मे भेलनि। ओ अध्यापन आ पत्रकारितासँ जुड़ल छथि। हुनक पहिल कथा 1973 मे प्रकाशित भेल, महाविद्यालय-पत्रिकामे। हुनक कविता, गीत आ गजल मैथिलीक पत्रिकादिमे प्रकाशित होइत रहल अछि। हुनक किछु कथा सेहो प्रकाशित भेल अछि।

डा. **देवशंकर नवीन** क जन्म 2 अगस्त 1962 केँ मोहनपुर मे भेलनि। नवीन नव पीड़ीक कवि-कथाकार-समीक्षकमे एकटा परिचित हस्ताक्षर थिकाह। हिनक कविता सामान्य लोकक विवशता आ कुंठाकेँ, नगर-जीवनक यांत्रिकताकेँ व्यक्त करैत अछि। ऐतिहासिक आ पौराणिक मिथक ई अपन अनेक कविता मे सफलतापूर्वक प्रयोग कयलनि अछि। हिनक अनेक कविता, गजल, कथा आ आलोचनात्मक लेख मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल अछि। राजकमल चौधरी पर हिनक कयल शोध प्रशंसनीय थिक। देवशंकर नवीन हिन्दीमे सेहो निरन्तर लिखैत रहलाह अछि। हिनक कोनो संग्रह एखनधरि नहि आबि सकल अछि। सम्प्रति ओ नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्लीक सम्पादन विभागसँ जुड़ल छथि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

डा. तारानन्द वियोगीक जन्म 12 मइ 1966 कैँ महिसीमे भेलनि। अत्यन्त प्रतिभाशाली रचनाकार तारानन्द मूलतः संस्कृत साहित्यक छात्र रहलाह अछि। ओ मैथिलीक संग-संग हिन्दीमे सेहो निरन्तर लिखैत रहलाह अछि। मैथिलीमे 1979 सँ अपन लेखन आरंभ कयनेहार तारानन्दक शताधिक कविता, गजल, कथा आ निबंध प्रकाशित छनि। ओ अनेक पोथी आ पत्रिकाक सम्पादन कयने छथि, जाहिमे प्रमुख अछि राजकमलक कथा संग्रह *एकटा चम्पाकली एकटा विषधर*, मैथिलीक चर्चित कथा-संग्रह *श्वेतपत्र* आ मैथिलीक कविता संग्रह संकल्प। हिन्दीमे सेहो ओ किछु पोथी आ पत्रिकाक सम्पादनसँ जुड़ल रहलाह। मैथिलीमे हुनक गजलक एकटा संग्रह *अपन युद्धक साक्ष्य* 1991 मे प्रकाशित भेलनि। मैथिलीमे गजल आ लघुकथाकेँ स्थापित करबाक हुनक प्रयास स्तुत्य अछि। हुनक कतिपय रचनाक अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषामे भेल अछि। सम्प्रति बिहार प्रशासनिक सेवासँ सम्बद्ध छथि।

आनन्दनाथ झाक जन्म मधुबनीमे भेलनि मुदा हिनक कार्यक्षेत्र सहरसा थिकनि। मैथिलीमे ई 'आनन्द शील' नामसँ लिखैत रहलाह अछि। हिनक किछु कविता आ कथा मैथिलीमे प्रकाशित अछि। सम्प्रति ई मैथिलीक अध्यापनसँ जुड़ल छथि।

रंजीत कुमार सिंहक जन्म दरभंगा जिलाक जोगियारामे भेलनि मुदा हिनक कार्यक्षेत्र सहरसा थिकनि। हिनक किछु कविता मिथिला मिहिरमे प्रकाशित अछि। सम्प्रति ई मैथिलीक अध्यापन सँ जुड़ल छथि।

बनगामक **नवल** मूलतः गीतकार छथि। मैथिलीक मंचक अत्यन्त लोकप्रिय गायकक रूपमे स्थापित हिनक एकटा गीत-संग्रह **असमंजसमे** प्रकाशित अछि।

पटुआहाक **संजीव तमन्नाक** जन्म 19 फरवरी 1966 कैँ भेलनि। हिनक कतिपय कविता, कथा आ लघुकथा मैथिलीमे प्रकाशित-प्रशंसित छनि। ई एखन मैथिली आ हिन्दीक पत्रकारितासँ गंभीर रूपेँ जुड़ल छथि।

मैथिलीक कथाकार **सज्जनक** जन्म पँचगछियामे भेलनि। सज्जन मैथिलीमे कविता आ कथा दुनू विधामे लिखैत छथि। मैथिलीमे हिनक एकटा कथा-संग्रह 'नवरत्न' नामसँ 1983 मे प्रकाशित भेलनि।

बरहसेर, पँचगछियाक **विनय भूषण** मैथिलीक नव पीढ़ीक प्रतिभाशाली रचनाकार छथि। हिनक लिखल किछु कविता आ लघुकथा मैथिलीक पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि। हिनक अनेक कविता, कथा आ आलोचनात्मक निबंध अप्रकाशित अछि।

गणेश जनगण क जन्म 1969 मे बनगाममे भेलनि। ओ मैथिलीमे कविता, गीत एवं भजन लिखैत छथि आ सम्प्रति लक्ष्मीनाथ कालेज, बनगाममे व्याख्याता छथि।

मैथिलीक चर्चित कथाकार आ कवि, आ अपन समीक्षात्मक आ आलोचनात्मक निबन्धक बलेँ सर्वथा नव दृष्टि रखनिहार **रमेश** (मेहथ, मधुबनी) सहरसामे पदाधिकारीक रूपमे पदस्थापित छथि। रमेश मैथिलीक सुपरिचित हस्ताक्षर छथि आ मैथिलीमे हिनक *सङोर* (कविता), *नागफेनी* (गजल) आ *समाङ* (कथा) प्रकाशित छनि। ओ मैथिलीक कथा-संग्रह 'श्वेतपत्र'क सम्पादन सेहो कयने छथि। रमेशक सहरसा-आगमसँ सहरसाक साहित्यिक गतिविधिमे सक्रियता अवश्य आओत, तकर विश्वास कयल जा सकैत अछि।

महिसीक **रजी अहमद तन्हा, मयंक** आ सहरसाक **आशा राय, शालिनी, संजय नीरज, राजेश कमल, रामकुमार सिंह** आदि एखन मैथिलीक क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि अछि। हिनकालोकनिक किछु रचना प्रकाशित-प्रशंसित भेल अछि। ईलोकनि निरन्तर सृजनरत छथि। ईलोकनि कविता, कथा, चित्रकला आ पत्रकारिता सँ सम्बद्ध छथि आ अनेक संभावनाक बाट जोहि रहल छथि। मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे उपर्युक्त रचनाकारलोकनि प्रयासरत छथि।

× × ×

साहित्य-लेखनक अतिरिक्त सहरसामे 1952 ई. सँ मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक उन्नयन हेतु अनेक विशाल समारोह आयोजित होइत रहल अछि। एहि समारोहसभक प्रेरणा-पुरुष रामकृष्ण झा 'किसुन' छलाह। 1953 मे जिला मैथिली साहित्य परिषद द्वारा विद्यापति-समारोहक आयोजन अवसर पर डा. कांचीनाथ झा 'किरण' आ 1964 मे विद्यापति समारोहक अवसर पर आचार्य रमानाथ झा आयल छलाह। सहरसामे एक बेर ऐतिहासिक कवि-सम्मेलन भेल छल जाहिमे प्रो. हरिमोहन झा, महाकवि काशीकान्त मिश्र 'मधुप', महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन', डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म; महाकवि यात्री, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, सोमदेव, राघवाचार्य शास्त्री आदि आयल छलाह। एहि तरहक आयोजन सहरसामे निरन्तर होइत रहल अछि। एहि ठामक कवि-सम्मेलन, स्मृति-समारोह, गोष्ठी-सेमिनारमे मैथिलीक विद्वान् अक्षर-पुरुष सभ सम्मिलित होइत रहलाह अछि, जाहिमे किछु नाम थिक डा. सुभद्र झा, डा. आनन्द मिश्र, डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित', डा. अमरेश पाठक, डा. शैलेन्द्र मोहन झा, डा. रामदेव झा, डा. भीमनाथ झा आदि। किछु दिन धरि सहरसामे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

डा. शिवशंकर झा 'कान्त' आ डा. नवीनचन्द्र मिश्र सेहो रहलाह। ई सभ समय सहरसा लेल निःसन्देह अविस्मरणीय थिक। एहन ऐतिहासिक आयोजनसभक मूलमे प्रो. मायानन्द मिश्र, डा. महेन्द्र आ डा. मनोरंजन झाक योगदान कें किन्नहु नहि बिसरल जा सकैत अछि।

× × ×

मैथिली आ हिन्दीक अनेक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन सहरसा सँ होइत रहल अछि। मैथिलीक किछु चर्चित पत्रिकाक जन्मस्थल सहरसा थिक, यथा प्रो. मायानन्द मिश्र द्वारा सम्पादित 'अभिव्यंजना', जटायु द्वारा सम्पादित 'चाँगुर', अम्बिका मिश्र द्वारा सम्पादित 'कोसी कुसुम', सच्चिदानन्द सौरभ आ विनय भूषण द्वारा सम्पादित 'जागृति' आ 'कोसी' तथा डा. महेन्द्र द्वारा सम्पादित 'सह-रसा' आदि।

कहियो मैथिली चेतना परिषद एतय अत्यन्त सक्रिय छल, कहियो महिसीक राजकमल साहित्य परिषद एतय सक्रिय छल, कहियो अमरेन्द्र मिश्र (राजनीतिज्ञ) एतय साहित्यिक आयोजन, प्रकाशनमे सक्रिय रहैत छलाह, कहियो प्रखर समाजवादी आ राजनीतिज्ञ परमेश्वर कुमर अपन सक्रियतासँ सहरसाकें आन्दोलित कयने रहैत छलाह, कहियो राजकमल चौधरी, शालिग्राम अपन महनीय उपस्थितिसँ सहरसाकें गरिमामय बनौने रहैत छलाह, कहियो प्रो. मायानन्द मिश्रक सुमधुर ललित स्वरसँ सहरसाक धरती अनुगुञ्जित रहैत छल, कहियो 'जटायु' होइत छलाह जयानन्द झा, मन्त्रेश्वर झा, मार्कण्डेय झा, डा. महेन्द्र आ महाप्रकाश, कहियो डा. मनोरंजन झा अपन सक्रियतासँ सहरसाकें जीवन्त बनौने रहैत छलाह, कहियो 'अनवरत' आ 'मुक्तांगन'क सक्रियतासँ सहरसा जागल आ चौचंक रहैत छल...।

आब लगैत अछि, सहरसाक साहित्यिक स्पन्दनकें मनोयोगपूर्वक फेरसँ जगयबाक चेष्टा सहरसामे केन्द्रित महत्वपूर्ण साहित्यिक-व्यक्तित्व मायानन्द मिश्र, महेन्द्र, सुभाषचन्द्र यादव, महाप्रकाश, मनोरंजन झा, ललितेश मिश्र आदिकें निश्चये करय पड़तनि, जाहिसँ भविष्यक रचनाशीलताक न्याँ सुरक्षित रहि सकय, सुरक्षित रहि सकय कोशीक उर्वरा माटिसँ उत्पन्न साहित्यक सुवास, ओहि सुवासक क्रमशः पसरैत गंध-ध्वनि, ओहि ध्वनिक प्रचार-प्रसार, प्रचार-प्रसारक एकटा साहित्यिक आलोकपुंज, ओहि आलोकपुंजसँ प्रकाशित सम्पूर्ण मिथिलांचल, मिथिलांचलसँ सम्पूर्ण भारतक कोन-कोन...! एकर सुरक्षा ठीके आवश्यक आ अपरिहार्य अछि।

मधेपुरा

कोसीक झमारल विस्तृत भूभाग। दोखरा बालु, कास-पटेर आ झौआक चिर-परिचित विस्तार। मुदा एहि बालु, एहि कास-पटेर आ झौआसँ उगैत, अदम्य जिजीविषा आ पौरुषक संग नव किसलय-दलक गुच्छ। यैह गुच्छ, यैह नव प्रस्फुटन मधेपुरा माने कोसीक साहित्य, संस्कृति आ इतिहासकें एकटा नव आ आस्वादपूर्ण रससँ सराबोर कयलक।

अत्यन्त प्राचीनकालसँ ई विस्तृत भूभाग मिथिलाक केन्द्र-स्थल रहल अछि। एहिठामक सभ्यता आ संस्कृतिक गौरवपूर्व इतिहास रहल अछि। एकटा ओहन इतिहास, जकर अनेक-अनेक साक्ष्य एहि विस्तृत भूभागमे उपलब्ध अछि।

कहल जाइछ जे मर्यादापुरुषोत्तम रामक जन्मक निमित्त शृंगी ऋषि द्वारा महाराज दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञक लेल एही महान् भूमिकें चुनलनि आ कालान्तरमे शृंगेश्वर (प्रसिद्ध सिंहेश्वर स्थान) क स्थापना भेल। सिंहेश्वर स्थानक सतोखर (सप्त पुष्कर) गाम यज्ञक सात टा कुंड छल।

कहल जाइछ जे मधेपुरा महाभारतकालीन अंग देशक मध्यपुरी छल। कालान्तरमे यैह मध्यपुरी मधेपुरा भए गेल। राजा विराटद्वारा स्थापित विराटपुरमे चंडीस्थान आ ओतयसँ खोदाइमे प्राप्त लगाम, राजाक डीह आदि परिसरक ऐतिहासिकताक अद्भुत प्रमाण उपस्थित करैत अछि। गढ़स्थानक बुद्धकालीन अवशेष आ खोदाइसँ प्राप्त प्रतिमादिसँ ज्ञात होइछ जे गुप्तकालीन आ बौद्धयुगीन कालमे सेहो ई परिसर अपन अस्तित्वकें मर्यादित ढंगेँ बना कऽ रखने छल। एहि परिसरक साहुगढ़, खजुरी, मुरहो आदिक सम्बन्ध मुगलकालीन साम्राज्यसँ सेहो छल।

एहि सभक अतिरिक्त वैदिक कालसँ एखनधरि एहि क्षेत्रमे साहित्यक गौरवमयी परम्परा रहल अछि। मानल जाइछ जे नवम शताब्दीमे द्वादश-दर्शनक टीकाकार प्रसिद्ध वृद्ध वाचस्पति मिश्र एहि परिसरक छलाह। 'मिथिलातत्वविमर्श'मे एकर उल्लेख भेटैत अछि। एहि तरहेँ ई परिसर अनेक ऐतिहासिक साक्ष्यक अतिरिक्त न्याय, मीमांसा, दर्शन आ साहित्यक निष्णात मनीषीक विलक्षण कर्मस्थली रहल अछि।

1912 सँ मधेपुरा पूर्वी बंगालक एकटा अंश छल, जे बादमे आबिकऽ बिहारमे सम्मिलित भेल। भागलपुर जिलाक प्राचीनतम अनुमण्डल; माने 1845 मे मधेपुरा अनुमण्डल बनि गेल छल। एक सय छियालिस बर्ख धरि मधेपुरा अनुमण्डले रहि गेल। एम्हर

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आबि कऽ 9 मइ 1981 केँ मधेपुराक आविर्भाव स्वतंत्र जिलाक रूपमे भेल । एहि परिसरक जनताक चिर-मनोरथ पूर्ण भेल ।

⊠ ⊠ ⊠

अधुनिक मैथिली साहित्यक महाकवि, मिथिलाक पहिल गवेषक, आधुनिक साहित्यक निर्माता कवीश्वर **चन्दा झाक** मातृक एहि परिसरक एकटा गाम बड़गाम छलनि, जतय हुनक शिक्षा-दीक्षा पूर्ण भेलनि । ओ गाम आ ओहि लग-पासक परिसर ओही समय मिथिलामध्य प्रतिष्ठित समृद्धिशाली विद्वन्मण्डलमंडित गामक रूपमे परिगणित छल । महाकवि अनेक पदक रचना बड़गाममे कयने होएताह तकर अनुमान सहजहि कयल जा सकैत अछि ।

एहि परिसरक दोसर महत्वपूर्ण मैथिलीक कवि भेलाह **यदुनाथ झा 'यदुवर'** । यदुवरक जन्म मुरहो नामक गाममे 1888 केँ भेलनि आ निधन 1935 मे । यदुवर कविक संग-संग प्रखर स्वतंत्रता-सेनानी छलाह । तेँ हिनक उपलब्ध साहित्यमे तद्विषयक अनेक रचना भेटैत अछि ।

मैथिलीक दुर्भाग्यजे यदुवर अत्यन्त अल्पायुमे दिवंगत गेलाह, नहि तँ ओहि युगक साहित्यक स्थिति आइ निश्चये दोसर स्थितिमे रहैत । अत्यन्त अल्प समयमे, मैथिली लेल यदुवर जतेक काज कयलनि, से अविस्मरणीय थिक । कविता हुनक जीवनक अंग छलनि । ओ मैथिलीक अनन्य उपासक तथा भाषाक सर्वविध उन्नति ओ विकास, प्रचार ओ प्रसारमे जीवनपर्यन्त लागल रहलाह । कविताकेँ ओ एक एहन साधन मानैत छलाह, जकरा द्वारा लोककेँ प्रेरणा प्राप्त होअय आ ओ अपन चारूकात पसरल विसंगति, विकृति आ सामाजिक जड़ता-निष्क्रियताकेँ तोड़बामे समर्थ होअय । *मैथिली गीतांजलि* क भूमिकामे ओ लिखैत छथि–'भक्ति, ज्ञान, शृंगारादि सम्बन्धी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेल अछि आ राष्ट्रीय विषयक कविताक प्रकाशन होयब परमावश्यक अछि ।' मैथिली कवितामे राष्ट्रीय भावनाक श्रीगणेश करबाक श्रेय निस्संदेह 'यदुवर'केँ छनि । ओ कविता केँ क्षेत्रीय समस्याक संग-संग बृहत्तर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यक समानान्तर ठाढ़ करबामे सफल भेलाह । 'मैथिली गीतांजति'क भूमिका यदुवर आ हुनक काव्य आ काव्य- भावनाकेँ बुझबाक सर्वश्रेष्ठ माध्यम थिक । हिनक प्रकाशित कृति थिक *मैथिली गीतांजलि, मैथिली साहित्य दिग्दर्शन आ वासन्ती विलास* तथा अप्रकाशित कृति थिक–*यदुवर विनोद, अन्योक्तिशतक, मिथिला संगीत, संगीत रत्नमाला, संकीर्त्तन सार-संग्रह* आदि ।

मैथिली साहित्य दिग्दर्शन क प्रकाशन 'मिथिला मोद' क माध्यमसँ भेल छल, जाहिमे तत्कालीन मैथिलीक विभिन्न विधाक उपलब्ध पुस्तकसभक परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि । यदुवर 'मिथिला मोद' मे नियमित लेखनक संग-संग तत्कालीन पत्रिका 'मैथिल प्रभा', 'मैथिल प्रभाकर' 'श्री मैथिली', 'मिथिला' मे सेहो निरन्तर लिखैत रहलाह । यदुवर ओहि युगक अत्यन्त प्रतिभाशाली आ सक्रिय लेखक छलाह । ओ हिन्दीमे सेहो लिखैत छलाह ।

यदुवरक पश्चात् आ हुनक समकालीन कवि भेलाह **पुलकित लाल दास 'मधुर'** । हिनक जन्म 1893 मे रजनी-बभनगामा नामक गाममे भेलनि आ निधन 1843 मे भए गेलनि । 'मधुर' सेहो अल्पवयसक कवि भेलाह । कविक अतिरिक्त ई प्रखर स्वतंत्रता सेनानी छलाह । अनेक तत्कालीन क्रियाकलापमे संलग्न रहैत छलाह, समर्पित रहैत छलाह । माथ पर टोपी, खद्धरक कुरता आ कनहा पर चादरि राखि स्वतंत्रता आन्दोलनक सुराजीलोकनिक भीड़मे अपन कवि-व्यक्तित्वक कारणेँ बेछप आ महत्वपूर्ण मानल जायबला 'मधुर' वास्तवमे अत्यन्त लोकप्रिय कवि छलाह ।

'मधुर' गद्य आ पद्य प्रचुर मात्रामे लिखलनि । हिनक कतिपय रचना विविध संकलनसभमे आ तत्कालीन मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे निरन्तर संकलित-प्रकाशित होइत रहल । मिथिलाक समाज, साहित्य आ संस्कृतिक उन्नतिक ई प्रबल पक्षधर छलाह । हिनक लिखल निबन्ध 'समाचारपत्र', भारतमे समाचारपत्रक विकास तथा मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहास विषयक ई प्रथमे निबन्ध थिक ।[1] तत्कालीन पत्र-पत्रिका 'मिथिला मोद', 'मैथिल प्रभा','मैथिल प्रभाकर', 'श्री मैथिली', 'भारती' आ 'विभूति' आदिमे हिनक अनेक गद्य-पद्य रचना प्रकाशित होइत रहल । 'मिथिला मोद' मे ई नियमित लिखैत छलाह ।

'मधुर' क मैथिली-सेवा स्तुत्य अछि । लेखनक अतिरिक्त ई जन-जागरण आ सांस्कृतिक जागरणक काजमे गंभीरतासँ लागल रहैत छलाह । दुर्गापुर लग 'भद्दी' नामक गाममे ई समाज सेवक समिति नामक संस्थाक गठन कयने छलाह । ओही गाममे 'मधुर पुस्तकालय' एखनो विद्यमान अछि । अपन गाममे मधुर नाट्य परिषद, आ मधुर सेवाश्रम नामक संस्था सेहो अछि, जाहिमे भारतक पहिल राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद सेहो आयल रहथि ।

डा. जयकान्त मिश्र 'केतकी' आ 'रंभा-शुक-संवाद' केँ हिनक अनूदित काव्य मानैत छथि आ *लोपामुद्रा* केँ उपन्यास ।

1. डा. रमानन्द झा 'रमण' : कोशी-कमला जनवरी 1994.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली साहित्य परिषद प्रकाशन द्वारा हिनक *गद्य-कुसुम-माला* नामक पुस्तक प्रकाशित भेल । हिनक शताधिक गद्य-पद्य तत्कालीन मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।

'मधुर' मिथिला आ मैथिली विषयक उद्‌बोधनात्मक रचना लेल, प्रखर स्वतंत्रता सेनी आ समर्पित कार्यकर्त्ता लेल सदैव स्मरणीय रहताह । ओ जीवनपर्यन्त अत्यन्त सक्रियताक संग लेखनसँ जुड़ल रहलाह आ अपन रचनाक माध्यमेँ मैथिलीक भंडारकेँ भरैत रहलाह । मैथिलीक अतिरिक्त ओ हिन्दीमे सेहो रचनाशील रहलाह ।

'यदुवर' आ 'मधुर' क समकालीन एहि क्षेत्रक किछु अचर्चित मुदा महत्वपूर्ण लेखक भेलाह जे ओहि समयमे अपन सक्रिय लेखनसँ एहि परिसरक संग-संग सम्पूर्ण मिथिलांचलसँ गंभीर रूपेँ जुड़ल छलाह, ताहिमे महत्वपूर्ण छथि बसनहीक **बुद्धिनाथ झा** आ शिवकुमार झा, मधेपुराक **अवधलाल झा मुख्तार, देवेन्द्र नाथ झा** आ रजनी-बभनगामाक **नित्यानन्द दास** ।

ललितेश्वर मल्लिक क जन्म 1920 मे बड़गाममे भेलनि । ओ मैथिली आ हिन्दीमे समान रूपेँ लिखैत रहलाह । हिनक **डायन,** जकरा ओ 'स्केच' आ हुनक किछु मित्र 'शब्दचित्र' कहने छथि, 1946-47 क मध्य लिखल गेल छल। एही कृतिक संग ओ मैथिलीक साहित्य-संसारमे प्रवेश कयने रहथि । एकर प्रकाशन जन सहयोग प्रेस, सुपौलसँ भेल छल, जतयसँ हुनक हिन्दीक आन कृति यथा, *कोसी आ सप्तकोसी* क प्रकाशन भेल छल । ओ **कोसी लोकगीत** क प्रकाशन सेहो कयने छलाह । हिनक तमाम उपलब्ध साहित्य कोशीसँ सम्बन्धित अछि ।

डा. **हरिमोहन मिश्र** (1919-1986) क जन्म शाह आलमनगर मे भेल छलनि । ई मूलतः वैदिक साहित्य, संस्कृत व्याकरण आ भाषाविज्ञानक विद्वान् छलाह मुदा अपन मातृभाषा मैथिलीमे सेहो समय-समय पर लिखैत छलाह । हिनक किछु स्फुट निबन्ध मैथिलीमे प्रकाशित अछि । *आधुनिक मैथिली कविता* नामक एकटा आलोचनात्मक कृति मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित छनि । ई हिन्दीमे सेहो अनेक कृतिक जन्म देलनि, जे प्रकाशित अछि । ई प्रतिभाशाली रचनाकार छलाह आ अपन लेखनसँ मैथिली, हिन्दी आ संस्कृतक साहित्य-भंडारकेँ भरलनि ।

प्रो. **राधाकृष्ण चौधरी** केँ जन्म देबाक श्रेय एही क्षेत्रकेँ अछि । हिनक जन्म मधेपुरामे 15 फरवरी 1921 केँ भेल छलनि । रामपट्टी हिनक पैतृक छलनि । 15 मार्च 1985केँ हिनक मृत्यु भऽ गेलनि ।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरी विख्यात इतिहासकार भेलाह । तकरा संगहि आधुनिक मैथिली साहित्यक महत्वपूर्ण गद्य-लेखक, निबंधकार, गवेषक आ साहित्य-समीक्षक भेलाह । ई मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक ओ साहित्यिक इतिहासक विशेषज्ञ छलाह । प्राचीन भारतीय इतिहास एवं बौद्ध-जैन संस्कृत वाङ्मयक उद्‌भट विद्वान् छलाह । अपन परिश्रमपूर्ण अध्ययनशीलता आ एकान्त निष्ठा ओ समर्पणक कारणेँ ई मात्र व्यक्ति नहि, एकटा संस्था बनि गेल छलाह ।

मैथिलीमे हिनक पहिल रचना संभवतः 1941 क मिथिला मिहिरमे प्रो. हरिमोहन झा कृत *कन्यादान* पर टिप्पणीक रूपमे प्रकाशित भेल छल । मैथिलीमे हिनक निम्नांकित पोथी प्रकाशित भेल– *मैथिली साहित्यिक निबन्धावली, मिथिलाक संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास, मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास, शारान्तिधा, धम्मपदक* मैथिली अनुवाद, *महाकवि लाल दास* आदि । *ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर* नामसँ हिनक मैथिली साहित्यक इतिहास सेहो प्रकाशित अछि ।

एहि सभक अतिरिक्त हिनक प्रायः शताधिक निबन्ध मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित अंग्रेजी आ मैथिली भाषामे विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि । आइ आवश्यकता अछि जँ ओहि तमाम निबन्धकेँ पुस्तकमे संकलित कयल जाय, तखने हिनक वास्तविक मूल्यांकन संभव भए सकत ।

शाह आलमनगरक साहित्यिक आ प्रखर राजनीतिज्ञ **विद्याकर कविक** किछु रचना मैथिलीमे प्रकाशित छनि । हुनक पिता मनमोहन कवि ब्रजभाषाक प्रख्यात कवि छलाह ।

धनेश्वर झा 'किशोर'क जन्म बड़गाममे 1 मइ 1919 केँ भेल छलनि । मैथिलीमे हिनक पहिल प्रवेश 'पियासलि' (कविता) सँ भेल, जे प्रकाशित अछि । किशोर स्वान्तः सुखाय मैथिली गद्य आ पद्यमे रचना करैत रहलाह । हिनक कतिपय रचना अप्रकाशित छनि ।

सुखासनक **पुरुषोत्तम लाल दास**क जन्म 30 जनवरी 1921 केँ भेल छलनि । ई रामायण एवं अन्यान्य धर्मशास्त्रक ज्ञाता आ सुकवि छलाह । हिन्दी आ मैथिलीमे लिखनिहार पुरुषोत्तम लाल दासक एकटा पोथी, जाहिमे बियालीस गोट पद्य-रचना संकलित छनि, *पारिजात पुष्पांजलि* क नामसँ प्रकाशित अछि । एहि संग्रहमे मैथिलीक संग-संग हिन्दीक पद सेहो संकलित अछि ।

मधेपुराक प्रो. **जगदीश प्रसाद यादव** मैथिलीक उन्नायक छथि । हिनक एकटा निबन्ध 'राजगिरिक सांस्कृतिक महत्व आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्राकृतिक सुषमा' अपन विषय-वस्तुक ऐतिहासिकताक कारणेँ चर्चित भेल। एकरा अतिरिक्त ई समय-समय पर मैथिलीमे निबन्ध लिखैत रहलाह अछि।

सुरेश सिंह 'स्नेही' क जन्म सुखासन गाममे भेलनि। मैथिली मे हिनक एकटा कविता-संग्रह *स्पन्दन* आ एकटा उपन्यास *अन्हार* प्रकाशित छनि। एहि सभक अतिरिक्त हिनक अनेक कविता आ कथा अप्रकाशित छनि। ई अखन बिहार प्रशासनिक सेवाक वरिष्ठ पदाधिकारी छथि आ सहरसामे पदस्थापित छथि।

प्रो. **रामनरेश सिंहक** जन्म 31 जनवरी 1957 मे मोहनपुर गाममे भेलनि। मैथिलीमे हिनक एकटा कथा-संग्रह *अपन-अपन साँच* नामसँ प्रकाशित भेल, जाहिमे हिनक दस गोट कथा संकलित अछि। एहि संग्रहक अतिरिक्त हिनक कतिपय कथा आ वैचारिक निबन्ध मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। ई एखन सहरसामे मैथिलीक अध्यापनसँ जुड़ल छथि।

अशोक सिंह 'तोमर' क जन्म अपन मातृक बारामे जनवरी 1959 केँ भेलनि। हिनक पैतृक पूर्णिया जिला थिक। 1991 मे हिनक पहिल कविता 'पाँखि कटल पड़बा' वैदेहीमे प्रकाशित भेल। हिनक कतिपय रचना अप्रकाशित अछि। मधेपुराक **निरंजन यादवक** किछु निबंध प्रकाशित अछि। हिनक चर्चित निबंध थिक 'मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणेतर वर्गक योगदान', जे वैदेहीमे प्रकाशित अछि।

जीतपुरक **कृष्णमोहन झाक** जन्म 1968 मे भेलनि। ई हिन्दी आ मैथिलीमे बहुत कम कविता लिखि दुनू साहित्य लेल परिचित भए चुकल छथि। हिनक किछु कथा मिथिला मिहिरमे सेहो प्रकाशित अछि। हिनक कतिपय कविता अप्रकशित छनि।

अर्राहाक **अरुण कुमार सिंह** क जन्म 23 जनवरी 1967 मे भेलनि। हिनक मैथिलीमे 'प्रवृत्तिक संदर्भमे स्वातंत्र्योत्तर मैथिली नाटक' नामक समीक्षाकृति प्रकाशित अछि। नाटक आ एकांकीसँ सम्बन्धित हिनक कतिपय निबन्ध अप्रकाशित अछि। एहि सभक अतिरिक्त, मुरली-चंदवाक **अनिल कुमार झा**, वसंतपुरक **नारायण कुमार झा**, अर्राहाक **अजय कुमार सिंह** मैथिलीमे लिखैत छथि।

× × ×

मैथिलीक प्रसिद्ध उन्नायक प्रो. **हितनारायण झाक** चर्चा सुपौलक अन्तर्गत भेल अछि मुदा हुनक कार्यक्षेत्र मधेपुरे रहल। मधेपुरामे एखन अपर समाहर्त्ताक पद पर पदस्थापित डा. **प्रभुनारायण विद्यार्थी** मगहीभाषी छथि मुदा हिनक मैथिली-प्रेम कोनो मैथिली-प्रेमीसँ न्यून नहि अछि। बहुभाषाविद् डा. विद्यार्थी लेखन-कार्यसँ गंभीर रूपेँ जुड़ल छथि आ मैथिलीक प्रति समर्पित छथि।

मधेपुरा बंगला आ हिन्दी साहित्यक उर्वर क्षेत्र रहल अछि। बंगलाक अनेक महत्वपूर्ण लेखक एहि परिसरसँ कोनो ने कोनो रूपेँ जुड़ल रहलाह अछि, जाहिमे श्रीशचन्द्र मजुमदार, केदारनाथ वंद्योपाध्याय, द्विजेन्द्र लाल राय, विभूतिभूषण मुखोपाध्याय, सतीनाथ भादुड़ी, आशुतोष मुखर्जी आ सुरेन्द्राथ मुखर्जी महत्वपूर्ण छथि।

हिन्दीक कतिपय ख्यात-अल्पख्यात साहित्यिक सेहो एहि भूमिकेँ अपन पावन रचना-स्पर्शसँ चमत्कृत कयलनि अछि, जाहिमे महर्षि मेही दास, राष्ट्रकवि दिनकर (जे किछु दिन एतय सब-रजिस्ट्री आफिसमे छलाह), पंडित युगल शास्त्री प्रेम, जलधर झा 'जलदेव', सत्यनाराय पौद्दार 'सत्य', हरिशंकर श्री वास्तव 'शलभ', श्यामसुन्दर घोष, भगवानचन्द्र विनोद, रासबिहारी लाल मंडल, नागेन्द्रनाथ पाठक, नरसिंह प्रसाद, हरिवल्लभ लाल दास, डा. रमेन्द्र कुमार यादव 'रवि', परमेश्वरी प्रसाद मंडल, प्रो. कुसुमलाल यादव, विश्वम्भर झा 'मधुर', गारीशंकर लाल दास, शिवनेश्वरी प्रसाद, देवनारायण पासवान 'देव', अधिक लाल दास, नवरंग जयसवाल, बटेश्वर झा 'बटेश', प्रो. जटेश्वर झा 'जटिल', डा. चन्देश्वरी प्रसाद सिंह, डा. भूपेन्द्र नारायण यादव, वसन्त, कुमार इन्दुभूषण, मणिकान्त वर्मा, चन्द्रकिशोर जयसवाल, मनोहन सिंह (पंजाबी एवं हिन्दी कवि), प्रो. अनिल कुमार सिंह, विनय कुमार चौधरी एवं सुश्री पूनम रस्तोगी आदि प्रमुख छथि।

स्मरणीय जे 1954 मे मधेपुरामे पहिल बेर रामकृष्ण झा 'किसुन' क प्रेरणासँ कवि-सम्मेलन आरंभ कयल गेल छल आ तकरा बाद ओतय निरन्तर अनेक साहित्यिक आयोजन होइत रहल अछि, जाहिमे देशक विभिन्न भागसँ कवि-लेखक आबि मधेपुराक जीवन्त आ तेजोद्दीप्त धरतीकेँ अपन रचना-रसमे डुबा विभोर कऽ दैत छथि।

सुपौल

मनुक्ख अपन पर्यावरणक अनुरूपे जीवनक विविध आयाममे, अपन क्रियाकलापमे अपन छाप छोड़ि पओलक अछि। कोनो समय गंगाक तट, विशेषतः त्रिवेणीक तट संस्कृत आ हिन्दीक अत्यन्त उर्वर क्षेत्र छल। ओहू समयमे कोसीक दीन-हीन आ उपेक्षित प्रान्तर साहित्यक अनेक विधामे अपन कौशल आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चमत्कारक संग अपन एक स्वरूप ग्रहं रहल छल । उत्कृष्ट साहित्यिक सृजन होइत रहल, किन्तु कोसीक बाढ़ि तकरा नष्ट करैत रहल । मात्र संत-साहित्य, जे घर-घर अपन गेयधर्मिताक कारणेँ पसरि गेल छल, अपन मूल वा अंशतः परिवर्त्तित स्वरूपमे बचि गेल । मुद्रण-यंत्रक आविष्कार भेलाक बादो एहि अत्यन्त पछुआएल परिसरक रचना प्रकाशनक मुह सामान्यतः नहि देखि सकल। परिणामस्वरूप अनेक उत्कृष्ट रचनाकार अनचिन्हारे भेल, स्वान्तःसुखाय सृजन करैत पृथ्वी नामक एहि ग्रहसँ बिदा होइत रहलाह आ हुनक श्रेष्ठ आ अविस्मरणीय प्रमाणित भऽ सकबा योग्य रचना आइ उपलब्ध धरि नहि अछि ।

मुदा कोसीक अपार बालुका-राशि निस्सन्देह एहि परिसरकेँ अनेक अनमोल रत्न देलक । एहन रत्न, जे इतिहास आ अध्यात्म मे, साहित्य आ संस्कृतिमे, संगीत आ कलामे संगहि राजनीतिक क्षेत्रमे अपन मानक स्तम्भ स्थापित कयलक ।

भागलपुर जिलाक अन्तर्गत 1870 मे सुपौलकेँ अनुमंडलक दरजा देल गेल । तकरा बाद प्रशासनिक सुविधाक दृष्टियेँ सहरसा केँ 1944 मे उप-जिला आ 1 अप्रैल 1954 केँ पूर्ण एवं स्वतंत्र जिला घोषित कयल गेल । एक सय एक्कैस बर्ख धरि सुपौल मात्र अनुमंडल बनल रहल । 18 मार्च 1991 केँ सुपौल स्वतंत्र जिलाक रूपमे घोषित भेल ।

एहि जिलाक पहिल साहित्य-साधक भेलाह परमहंस **लक्ष्मीनाथ गोसाईँ** । परसरमाक पंडित बच्चा झाक पुत्र लक्ष्मीनाथक जन्म 1873 ई. मे भेलनि । गोसाइँजी परम तेजस्वी, परम योगी, ज्योतिष, वेदान्तक प्रकांड विद्वान् आ साहित्य-साधक भेलाह । ब्रजभाषामिश्रित हिन्दीमे हुनक अनेक रचना उपलब्ध अछि । मैथिलीमे ओ कतिपय भक्ति-गीतक रचना कयलनि । हुनक प्रमुख उपलब्ध कृति थिक *श्रीकृष्णरत्नावली, रामगीतावली, श्रीकृष्णगीतावली, भाषा-तत्ववोध, प्रश्नोत्तरी, राम-रत्नावली, गुरुपचीसी, अक्षर चौंतीसा, विवेक पंचरत्न, गीतावली* आदि ।

परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाइँक पश्चात् प्रायः सए वर्ष धरि कोनो अविस्मरणीय साहित्यिक गतिविधिक सम्प्रति प्रमाण उपलब्ध नहि अछि ।

बमनगामाक **धनुक्षेत्र झाक** जन्म 1897 मे भेल रहनि । हुनक मैथिलीमे प्रकाशित कृति थिक **मिथिला-मैथिली** । हुनक किछु कृति अप्रकाशिते रहि गेल—*गद्य-प्रबंध, ऋतुराज वसन्त, वैदिक ऋषि* आदि ताहिमे प्रमुख अछि ।

जनार्दनपुर-भलुआही गामक बाबू **अच्युतानन्द दत्तक** जन्म 1902 ई. मे भेल रहनि । ई अत्यन्त प्रतिभाशाली रचनाकार भेलाह । कालिदास कृत **रघुवंशक** अनुवाद ओ मैथिलीमे कयलनि । हिनक कतिपय पद्य तत्कालीन हिन्दी-मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल । 'मिथिला' मे हिनका द्वारा अनूदित *महाभारत* क कतिपय अंश प्रकाशित भेल छल । ई संस्कृत, हिन्दी आ मैथिलीक यशस्वी विद्वान् भेलाह । *रघुवंश* आ *महाभारत* क अनुवादक अतिरिक्त हिनक किछु खंडकाव्य थिक *हरिश्चन्द्र, पातिव्रत्य-महिमा, द्रोण आ कर्ण* ।

हिनके अनुज बाबू **परमानन्द दत्त 'परमार्थी'** सेहो अपन मैथिलीक रचनासँ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाकेँ समृद्ध बनौलनि । ओ *मेघदूतक* अनुवाद मैथिलीमे कयलनि । हुनक किछु अन्य अप्रकाशित कृति थिक *श्रीकृष्णजन्म* आ *कंसवध* नामक खण्डकाव्य ।

गोसपुरक पंडित **त्रिलोकनाथ मिश्र** (1900-1960) संस्कृत साहित्यक विश्रुत आ यशस्वी विद्वान् भेलाह । हिनक अनेक कृति प्रकाशित अछि । संस्कृतक संग-संग ई मैथिलीमे सेहो प्रचुर मात्रामे लिखलनि । तत्कालीन मैथिली पत्रिका 'भारती' मे हिनक कतिपय रचना प्रकाशित अछि । मैथिलीमे हिनक दू गोट नाटक *जीमूतवाहन* आ *नागानन्द* प्रकाशित अछि । *रागतरंगिणी* क परम्परामे **सरस्वती** नामक पुस्तक 1927 ई. मे प्रकाशित भेल, जाहिमे संस्कृत, हिन्दी आ मैथिलीक सत्तरि गोट पद संकलित छनि ।

सोल्हनीक **जगदीश कवि** अपन भावप्रवण रचनाक लेल विख्यात छथि । दरभंगा महाराजक अतिरिक्त राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार हिनका 1958 मे 'वयोवृद्ध साहित्यकार पुरस्कार' सँ सम्मानित कयलक । हिनक मैथिलीमे कतिपय रचना प्रकाशित अछि ।

छायावाद आ रहस्यवादक कविता लेल विख्यात कवि *जयनारायण मल्लिक* क जन्म 23.1.1913 केँ गणपतिगंजमे भेलनि । हिन्दी, मैथिलीक अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे सेहो रचनाशील रहलाह । *'मिथिला' एवं 'भारती'* पत्रिकामे हिनक कतिपय रचना प्रकाशित अछि । हिनक 'मैथिलीक गल्पमाला' प्रकाशित कृति थिक । मैथिलीक अनेक संकलनमे हिनक रचना संकलित छनि । सम्प्रति ई स्वतंत्र लेखन आ पत्रकारितासँ जुड़ल छथि ।

डुमरीक **रासबिहारी लाल दासक** मैथिलीमे अनेक रचना प्रकाशित छनि । हिनक एक काव्यकृति *पवनदूत* प्रकाशित भेल छनि । हिनक किछु पद्य-कृति अप्रकाशितो छनि ।

सोल्हनीक कवि **योगेन्द्रनाथ झाक** किछु मैथिलीक रचना उपलब्ध अछि । हिनक रचना एकाध टा मात्र प्रकाशित भऽ सकल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बमनगामाक प्रो. **हितनारायण झाक** जन्म 1914 ई. मे भेलनि । ओ मैथिलीक विश्रुत साहित्य-सेवी भेलाह । हुनक कार्यक्षेत्र मधेपुरा रहलनि । हुनक मौलिक तथा सम्पादित प्रकाशित कृति थिक *दिग्दर्शन, गद्य-पारिजात, मैथिली गद्य-पुष्पांजलि, परिमल, साहित्यिक निबन्धावली* आ *गद्य-सौरभ* आदि ।

डा. **भुवनेश्वर गुरमैताक** जन्म भपटियाहीमे भेलनि । ओ हिन्दी आ मैथिलीक यशस्वी विद्वान छथि । हुनक अनेक शोध निबंध प्रकाशित छनि, जे ऐतिहासिक आ पुरातात्विक खोजसँ सम्बन्धित अछि ।

पंडित **राजेश्वर झाक** जन्म 25 अप्रैल 1923 ई. कैँ रसुआर मे भेलनि । राजेश्वर झा मैथिलीक पैघ उन्नायक आ विश्रुत साहित्य-सेवी भेलाह । ओ जीवनपर्यन्त बिहार रिसर्च सोसायटी सँ सम्बद्ध रहलाह । हुनक गवेषणात्मक पुस्तक 'अवहट्ठ : उद्भव ओ विकास' कैँ 1977 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल । ओ जीवनभरि साहित्य, शोध आ अनुसंधानमे लागल रहलाह । मैथिलीक श्रीवृद्धि लेल, मैथिलीक प्रचार-प्रसार लेल, संगठन लेल हुनक कयल गेल प्रयासकैँ बिसरल नहि जा सकैत अछि । हुनक अन्य चर्चित अनुसन्धानात्मक कृति थिक *मिथिलाक्षरक,उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य* । एकरा अतिरिक्त हुनक सर्जनात्मक साहित्य थिक *अपरिणीता* (उपन्यास), *दुखिया बाबाक खटरास* (हास्य), *एकादशी* (कहानी संग्रह), *शास्त्रार्थ, कन्दर्पी घाट, महाकवि विद्यापति* (नाटक) । ओ ऐतिहासिक आ पौराणिक लोकगाथा पर महत्वपूर्ण काज कयलनि आ एहि विषय पर आधारित हुनक कृति थिक *विद्याधर कथा, उर्वशी, मेनका, धर्मव्याध-कथा, जट-जटिन, श्यामा-चकेबा, लोकगाथा-विवेचन* आदि । एहि पुस्तक सभक अतिरिक्त मैथिली-हिन्दीक पत्र-पत्रिकामे हुनक कतिपय निबंध प्रकाशित अछि । मृदुभाषी, विलक्षण संघटक, एकनिष्ठ आ जीवनपर्यन्त साहित्य लेल समर्पित रहनिहार राजेश्वर झा अल्पायुमे 23 अप्रैल 1977 कैँ दिवंगत भऽ गेलाह ।

बलुआ बजारक **कामानन्द झा 'कानन'** मैथिलीमे अनेक पद्य-रचना कयलनि, जाहिमे अधिकांश अप्रकाशित अछि । जगतपुरक **कृष्णवल्लभ लाल दास** श्रीमद्भगवद्गीताक मैथिली अनुवाद कयलनि । हिनक कतिपय पद्य-रचना अप्रकाशित छनि ।

आधुनिक कालमे, एहि जिलामे साहित्यिक चेतनाक शंखनाद रामकृष्ण झा 'किसुन' कयलनि । हुनक जन्म 1 जनवरी 1923 कैँ सुपौलमे भेलनि । ओ एहि परिसरमे साहित्यिक ऊर्जा-क्षेत्र निर्माण कए महान् काज कयलनि । एहि क्षेत्रकैँ साहित्यिक रस मे सराबोर करयबला ओ इतिहास-पुरुष भेलाह । 1940 सँ ओ लेखन आरंभ-कयलनि आ 1970 मे अपन देहावसान धरि निरन्तर सृजनरत रहलाह ।

साहित्य-सृजनक अतिरिक्त ओ कतिपय संस्थाक जनक भेलाह । 1943मे सुपौलमे मिथिला पुस्तकालयक स्थापना कयलाक पश्चात् गाम-गाम घुमि गोष्ठी आयोजित कऽ आ जनसामान्यमे शिक्षा तथा पुस्तकालयक चेतना जागृत कऽ ओ एहि क्षेत्रमे एकटा अत्यन्त सफल पुस्तकालय-आन्दोलनक संचालन कयलनि, ओ भारतीय साहित्यकार संघ आ श्री मैथिली समितिक स्थापना सेहो कएलनि जाहिमे हिन्दी, मैथिली आ उर्दूक रचनाकारक नियमित बैसार होइत छल । एहि क्षेत्रक बौद्धिकक संग मिलि ओ तुलसी स्मारक समिति, नागेश्वर कला मंदिर आदिक स्थापना सेहो कयलनि, जे तत्कालीन साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे सक्रिय रहैत छल । स्मरणीय जे नागेश्वर कला मंदिरसँ किसुनक हिन्दी कविता संग्रह *आओ गायें, इन्द्रधनुष* आ प्रो. मायानन्द मिश्रक पहिल कृति *भांगक लोटा* क प्रकाशन भेल ।

किसुनक मैथिलीमे *आत्मनेपद, क्रमशः* (कविता-संग्रह), **स्वयंवर** (कथा-संग्रह) एवं *वैचारिकी* (निबंध-संग्रह) क अतिरिक्त हुनका द्वारा सम्पादित मैथिली नवकविताक पहिल पुस्तक *मैथिलीक नवकविता* अछि । संस्कृत छात्र रहितो ओ अद्भुत रूपसँ प्रगतिशीलताक पक्षधर छलाह । हुनक उदारता. कर्त्तव्यनिष्ठा, कर्मठता आ घोर परिश्रमी व्यक्तित्व एहि परिसरक साहित्यिक गरिमाकैँ स्पृहणीय उँचाइ देलक । ओ लेखकक अतिरिक्त साहित्यकारक अद्वितीय निर्माता भेलाह । हुनके संगठनक्षमता, एकान्त निष्ठा, साहित्यक प्रति सम्पूर्ण समर्पणक भावनासँ आइयो साहित्य-जगत्मे सुपौलक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि ।

सुपौलक **राजेन्द्र लाल 'विशारद'** अपन लेखनक आरंभिक कालमे मैथिलीमे पर्याप्त मात्रामे पद्य-रचना कयलनि । विद्यापतिक गीतक व्याख्या ओ कयने छलाह, जे छपि कऽ एकटा पुस्तकक रूपमे आबि सकैत छल । मुदा ओ एखनधरि अप्रकाशिते अछि ।

कर्णपुरक **निशिकान्त मिश्र 'राजदिव्य'** मैथिली आ हिन्दीमे समान रूपेँ लिखलनि । मैथिलीमे ओ शेक्सपीयर कृत द रेप *आफ ल्यूक्रेसियाक* अनुवाद 'बरजोरी' नामसँ कयलनि । ई पुस्तक प्रकाशित भेल । हुनक मैथिलीमे अप्रकाशित कृति थिक **गीतांजलि** क अनुवाद, *स्वदेश-वन्दना* (उनचास गोट गीतक संग्रह) एवं युगधर्म (नओ गोट कथाक संग्रह) । हिन्दीमे हुनक दू गोट कृति प्रकाशित अछि एवं तीन गोट कृति अंप्रकाशित अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कर्णपुरक **रुद्रानन्द झाक** *शिवविवाह* नामक पोथी प्रकाशित अछि। एहि पोथीक अतिरिक्त हुनक अनेक नचारी, भजन आ अन्य भक्तिविषयक पद अप्रकाशित अछि।

कर्णपुरक **शैलेश कुमार पाठक** हिन्दी एवं मैथिलीमे समान रूपेँ लिखलनि। राजकमल चौधरीक प्रसंग हुनक संस्मरण 'आखर' मे प्रकाशित भेल छल आ ओ खूब चर्चित भेल। एकरा अतिरिक्त हिन्दीमे हुनक अनेक लेखादि अप्रकाशित अछि।

बरैलक सुप्रसिद्ध कवि-व्यक्तित्व सूर्यनारायण सिंह 'भानु' क सुपुत्र **महेश्वरनारायण भारतीभक्तक** जन्म 1926 मे भेलनि। बारहे बर्खक अवस्थासँ हुनक साहित्यिक रुचि जागि गेल। 1948 मे हुनक सम्पर्क राहुल सांकृत्यायनसँ भेल जे बादोक जीवनमे बनल रहलनि। ओ पटनासँ 'सोनामाटि' नामक मैथिलीक पहिल डाइजेस्ट पत्रिका बहार कयलनि जे बेस चर्चित भेल। सम्प्रति ओ स्वतंत्र पत्रकारितासँ सम्बद्ध छथि।

बभनगामाक **बदरीनारायण झा 'विप्र'** क कतिपय रचना मैथिलीमे उपलब्ध अछि।

जगतपुरक **रघुनन्दन लाल दासक** जन्म 1926 मे भेलनि। ओ सुखपुरक उच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापक छलाह। हुनक कतिपय रचना संस्कृत, मैथिली, आ हिन्दीमे उपलब्ध अछि। मूलतः ओ कविता एवं निबंध लिखलनि।

बसावनपट्टीक **जितेन्द्र मिश्र 'जीवन'**क कविता एवं निबंध, जगतपुरक **रमेश वर्माक** कथा, परसरमाक **नरेश्वर प्रसाद सिंह**क किछु रचना, सुपौलक डा. **परमानन्द पाठकक** किछु निबंध, सुपौलक **शिशिर कुमार दासक** किछु नाटक, बरैलक डा. **दिनेश्वर प्रसाद सिंह**क कतिपय निबन्ध मैथिलीमे प्रकाशित अछि।

बनैनियाँक प्रो. **मायानन्द मिश्रक** जन्म 17 अगस्त 1934 केँ भेलनि। ओ मैथिली आ हिन्दीक साहित्यिक-जगतक चर्चित, बहुपठित आ यशस्वी रचनाकार छथि। अपन जीवनक आरम्भिक कालमे ओ पटना आकाशवाणीक चौपालसँ जुड़ल छलाह आ तकरा बाद ओ सहरसा स्नातकोत्तर मैथिली विभागाध्यक्षक पद सँ हालहिमे अवकाश प्राप्त कयलनि अछि।

ओ मैथिली आ हिन्दीमे जमि कए लेखन कयलनि। 1988 मे हुनक उपन्यास *मंत्रपुत्र* केँ साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल। मैथिलीक आधुनिक कथाकारमे हुनक नाम आदरक संग लेल जाइत अछि। मैथिलीमे हुनक प्रकाशित कृति अछि *दिशान्तर* एवं *अवान्तर* (कविता-संग्रह), *आगि मोम आ पाथर, चन्द्रविन्दु* (कथा-संग्रह), *बिहाड़ि पात पाथर, खोंता आ चिड़ै, मंत्रपुत्र* (उपन्यास)।

बिहाड़ि पात पाथर उपन्यास 1960 मे प्रकाशित भेल। ई उपन्यास काटर प्रथाक समस्या पर आधारित अछि। एहिमे समस्याक निरन्तर ओझरौट आ वात्याचक्रमे पड़ल नायिकाक धैर्य आ शीलक द्वारा जाहि आदर्शकेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि से सर्वथा मैथिल विशेषतः भारतीय ललनाक गौरवक अनुकूल अछि। 1964 मे प्रकाशित लघु उपन्यास *खोंता आ चिड़ै* स्वाधीनताक पश्चात् समाजक निम्नवर्गमे आयल चेतनाक लहरि, स्त्री-जीवनक उच्च नारी-मूल्य आदिक जीवन्त दस्तावेज थिक। *मंत्रपुत्र* भारतीय इतिहास एवं संस्कृतिक एकटा एहन कालखंडकेँ चित्रित करैत अछि, जखन द्रविड़ आ आर्यसंस्कृति आपसमे टकरा रहल छल आ एहि टकराहटिसँ एकटा नव संस्कृतिक निर्माण भऽ रहल छल। उपन्यासकारक विशेषता एहि तथ्यमे अछि जे ओ दुनू संस्कृतिक मध्य चलि रहल संघर्षक मूल स्वरूपकेँ चिन्हलनि आ दुनूमे जे किछु श्रेष्ठ, मानवीय आ प्रगतिशील छल, तकरा नव संस्कृतिक निर्माणक आधार बनौलनि।

मैथिलीमे हुनक अप्रकाशित कृति थिक *पतरसेख* (कथा संग्रह), *प्रथमं शैलपुत्री च, पुरोहित, स्त्रीधन, सूर्यास्त आ ठकनी* (उपन्यास)। हुनक कतिपय ऐतिहासिक शोधनिबंध अप्रकाशित अछि। 'अभिव्यंजना' नामक मैथिली पत्रिकाक ओ यशस्वी सम्पादक भेलाह। अभिव्यंजना मे प्रो. मिश्रक किछु रेडियो नाटक प्रकाशित भेल आ प्रायः दस गोट रेडियो नाटक आकाशवाणीसँ समय-समय पर प्रसारित भेल। हुनक कतिपय साहित्यिक निबंध पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि, जकरा संकलित कयल जाय तँ प्रायः दू गोट पोथी निबंध-साहित्यक होयत। मैथिली आन्दोलनसँ, मैथिलीक सघन प्रचार-प्रसारसँ ओ जीवनक आरंभिके कालसँ जुड़ल रहलाह। मैथिलीक मंचक ऐतिहासिक आ विलक्षण उद्घोषक रूपमे, अत्यन्त कोमल-कंठी गायकक रूपमे सेहो ओ प्रसिद्ध छथि। ओ निरन्तर सृजनरत छथि।

मैथिलीक अतिरिक्त हुनक कतिपय रचना हिन्दीमे सेहो प्रकाशित-प्रशंसित छनि। हुनक तीन गोट उपयास *माटी के लोग, सेने की नैया, मंत्रपुत्र तथा प्रथमं शैलपुत्री* च प्रकाशित अछि।

डा. **बालगोविन्द झा 'व्यथित'** (बलिया, मधुबनी) क अधिकांश साहित्यिक जीवन सुपौलमे बितलनि। अपन सुपौल-प्रवासक मध्य ओ मैथिलीमे अनेक गद्य-पद्यक संग्रहक सम्पादन कयलनि, कतिपय शोध-निबंध लिखलनि तथा बहुचर्चित *मैथिली साहित्यक इतिहास* लिखलनि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सुपौलक भारत सेवक समाज कॉलेजक प्राचार्य डा. **परमेश्वर झा** गणित आ ज्योतिषमे राष्ट्रीय स्तरक सम्मानित विद्वान् छथि। मृदुभाषी, सतत गंभीर चिन्तनमे व्यस्त डा. झाक गणित एवं ज्योतिष विषयक अनेक शोध-निबन्ध मैथिलीक पत्रिकामे प्रकाशित-प्रशंसित अछि। एहि परिसरमे ज्योतिषशास्त्रक परम्परा पर हुनक महत्वपूर्ण लेख अत्यन्त प्रशंसित आ चर्चित भेल अछि।

उछटी (दरभंगा) क **कलानन्द भट्टक** जन्म 15 मइ 1941 कें भेलनि। हुनक जीवनक अधिकांश समय सुपौलमे बीतल। अपन साहित्यिक उत्कर्ष-कालमे ओ एहिठाम सक्रिय छलाह। मैथिलीमे हुनक प्रकाशित पोथी थिक *कान्ह पर लहास हमर* (गजल संग्रह)। हुनक तीन गोट संग्रह अप्रकाशित छनि–*जय भारत जय भारती* (खंडकाव्य), *हिलकोर* (रुबाइ संग्रह) एवं एकटा गजल संग्रह। एकर अतिरिक्त हुनक किछु कथा, समीक्षा आ रिपोर्ताज मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि, तकरो एकटा संकलन आबि सकैत-अछि। मैथिली लेल समर्पित, अत्यन्त उत्साही ओ मिलनसार कलानन्द भट्टक देहावसान 5 अक्तूबर 1994 कें लहेरियासरायमे भए गेलनि। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे सेहो ओ लिखैत छलाह आ 1974 मे हुनक कृति चिंगारी (काव्य) प्रकाशित भेल छल।

रामपुर कोरिगामा (दरभंगा)क मूल निवासी **उपेन्द्र दोषीक** जन्म 3 अप्रैल 1943 कें भेलनि। हुनको आरंभिक साहित्यिक जीवन सुपौलमे बितलनि। हुनक मैथिली कविता, कथा आ किछु ललित निबन्ध अत्यन्त चर्चित-प्रशंसित भेल अछि। सहजता हुनक रचनाक मूल तत्व थिक। दैनिक जीवनक छोट-छोट घटनाकें माध्यम बना मध्यवर्गीय जीवनक कतिपय बिडम्बनाकें ओ अपन कथा-साहित्यमे अभिव्यक्त करैत रहलाह अछि। सहयोगी प्रकाशनमे **धुरी** (कविता-संग्रह) आ हुनका द्वारा सम्पादित *प्रचोदयात्* (कथा-संग्रह) हुनक प्रकाशित कृति थिक। मैथिलीमे हुनक प्रकाशनाधीन कृति थिक *औनाइत मोन* (कथा-संग्रह) तथा *यंत्रणाक क्षणमे* एकटा कविता-संग्रह।

घोघरडीहा (मधुबनी) क मूल निवासी डा. **धीरेन्द्र नारायण झा 'धीर'** आब एहिठामक स्थायी निवासी छथि। मैथिलीमे 'धीर' क कतिपय गीत एवं कथाक एक संग्रह *लतमारा* नामसँ प्रकाशित अछि। मैथिली मंच-जगतक एकटा परिचत हस्ताक्षर छथि 'धीर', जे अपन सुकोमल आ मेंही कंठ-स्वर लेल चर्चित-प्रशंसित छथि। हुनक किछु निबन्ध सेहो प्रकाशित अछि आ सम्प्रति ओ लेखनक संग-संग पत्रकारितासँ जुड़ल छथि। अत्यन्त मिलनसार ओ स्नेही 'धीर' सुपौलक अनेक सांस्कृतिक आयोजनमे सक्रिय रहैत छथि।

डा. **महेन्द्रक** जन्म 1 जून 1947 कें भेलाहीमे भेलनि। मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हुनक शताधिक कविता, संस्मरण आ साहित्यिक निबंध प्रकाशित छनि। ओ मैथिलीक गीति-साहित्यकें अपन प्राञ्जल भाषा आ नव कथ्यक कारणें सर्वथा नव आयाम देलनि अछि। मैथिलीक आधुनिक कवितामे अपन विलक्षण आ सर्वथा फराक शिल्पक कारणें ओ अत्यन्त चर्चित भेलाह अछि। निरन्तर सृजनरत डा. महेन्द्रक कोनो स्वतंत्र संकलन एखनधरि मैथिलीमे नहि आबि सकल अछि, जकर प्रतीक्षा मैथिलीक पाठक कए रहल छथि। एहि सभक अतिरिक्त मैथिली-मंचक उद्घोषक आ कोमल-गायकक रूपमे ओ देस.चर्चित छथि।

डा. **सुभाषचन्द्र यादवक** जन्म 5 मार्च 1948 कें अपन मातृक दीवानगंजमे भेलनि। हुनक पैतृक बलवा (मेनाही) नामक गाम थिक जे मध्य कोसीमे अवस्थित अछि। 1967 सँ मैथिली कथा 'गजखेर आ मजपुङर' सँ साहित्यमे प्रवेश कयनिहार सुभाषक एक कथा-संग्रह *घरदेखिया* नामसँ प्रकाशित अछि। मैथिलीक आधुनिक पीढ़ीक एक प्रगतिशील एवं प्रतिभावान् रचनाकार सुभाषक कतिपय कथा, साहित्यिक निबन्ध आ समीक्षा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। समाजक निम्नवर्गीय लोक-जीवनक विभिन्न रूप, जे आइ धरि मैथिलीमे विरल आ उपेक्षित छल, हुनक अनेक कथाक माध्यमें व्यक्त भेल। कोसीक मध्यभागमे, नदीक धाराक संग जीवन जीबैत, बाढ़िक प्रकोप भोगैत अधिकांश जनसमूहक विरल-विलक्षण चित्रण यथार्थ ढँगें हिनक कथामे व्यक्त भेल अछि।

छातापुर अंचलक महादेवपट्टी गाममे श्रीमती **शांति कर्णक** जन्म 21 सितम्बर 1951कें भेलनि। हिनक कतिपय कविता आ कथा मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि। हिनक एकटा उपन्यास प्रकाशनक बाट जोहि रहल अछि।

1968 सँ अपन लेखन आरंभ कयनिहार **महीनारायण झा** कर्णपुरक मूल निवासी छथि। 'आखर' आ 'मिथिला मिहिर' मे हिनक किछु कवितादि प्रकाशित भेल छल। तकरा बाद ई कविता लेखन छोड़ि मैथिल-जीवनक प्राचीन परम्परा आ संस्कृति पर कतिपय शोध-निबंध लिखलनि आ एखनो यदा-कदा लिखैत रहैत छथि।

दुमका कालेजमे मैथिलीक प्राध्यापक, सुपौल निवासी डा. **ब्रजकिशोर मिश्रक** *मैथिली उपन्यासक पृष्ठभूमि* नामक एक आलोचनात्मक पुस्तक 1984 मे प्रकाशित भेलनि। हुनक कतिपय कविता आ कथा अप्रकाशित अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सुपौलक **अरविन्द कुमार दास** अपन आरंभिक कालमे मैथिलीमे कतिपय साहित्यिक निबंध लिखलनि। राजकमल चौधरी पर लिखल हिनक शोध-कृति अप्रकाशित अछि। स्व. **सुशील कुमार वर्मा**क कतिपय कविता आ साहित्यिक निबन्ध मैथिलीमे प्रकाशित अछि। डा. **महेश्वरनाथ मल्लिक**क किछु कथा आ स्वास्थ्यसम्बन्धी आलेख मैथिलीमे प्रकाशित अछि। **रजनीकान्त लाल** क किछु वैज्ञानिक लेख मैथिलीमे प्रकाशित अछि। ई सभ सुपौलक निवासी छथि।

तारानन्द झा 'तरुण' क जन्म 2 जुलाइ 1952 कैँ मलाढ़ मे भेलनि। 1967 सँ अपन लेखन आरंभ करयबला तरुणक कतिपय कविता, गीत आ कथा मैथिली मे प्रकाशित अछि। तरुण मूलतः गीतकार छथि। अपन गीतक माध्यमेँ तरुण मिथिलाक सामाथ लोक-जीवनक विड़म्बना आ विद्रूपताकेँ अभिव्यक्त करैत रहलाह अछि। अत्यन्त उत्साही आ कर्मठ तरुण मैथिलीक विकास लेल, उन्नयन लेल समर्पित रचनाकार छथि। हिनकहि प्रयासेँ 'भारती मंडन' नामक बहुआयामी लेखनक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन सुपौलसँ आरंभ भेल अछि। 1980 मे ई 'कामाख्या-झिंगुर साहित्य कला परिषद' क स्थापना कयलनि जे अत्यन्त सक्रिय संस्था थिक।

सुपौलक **बदरी बैरागी** मैथिलीमे 1973 सँ लेखनरत रहलाह अछि। हुनक कतिपय कविता आ कथा मैथिलीमे प्रकाशित अछि आ अनेक रचना एखनो अप्रकाशित अछि।

साठिक दशकमे मिथिला-मिहिरक अनेक अंकमे सुपौलक श्रीमती **निर्माया देवी** आ श्रीमती **सुनीता झाक** स्त्री-समस्या सम्बन्धी, पाककलासम्बन्धी, सामान्य रोग आ तकर उपचार सम्बन्धी लेख सभ प्रकाशित होइत रहल। ई लेख सभ ज्ञानवर्द्धक आ उपयोगी रहैत छल।

कर्णपुरक श्रीमती **रामकाशी मिश्रक** प्रायः चलीस गोट मैथिली पद्य डा. बालगोविन्द झा 'व्यथित' संकलित कयने छलाह। बभनगामाक श्रीमती प्रभा झा सेहो मैथिलीमे रचनाशील छलीह।

डा. **शिवेन्द्र दासक** जन्म 26 दिसम्बर 1953 कैँ अपन मातृक शिवनगर (मधुबनी)मे भेलनि। हुनक पैतृक घोघसम (सहरसा) थिक। आब ओ सुपौलक स्थायी निवासी छथि। 1980 सँ अप लेखन आरंभ कयनिहार डा. शिवेन्द्र दास मूलतः कवि छथि।

डा. **नवीन कुमार दासक** जन्म 12 मार्च 1958 कैँ भद्रेश्वर (अररिया) मे भेलनि। 1969 मे हुनक पहिल कविता हिन्दीमे प्रकाशित भेल। ओ 1980 सँ मैथिलीमे लिखब आरंभ कयलनि। बहुत दिन धरि प्रकाशन-विमुख रहि पुनः 1990 क पश्चात् ओ मैथिलीमे सक्रिय लेखन आ प्रकाशनसँ जुड़लाह।

अरविन्द ठाकुरक जन्म 14 फरवरी 1957 कैँ सुपौलमे भेलनि। 1981 क 'मिथिला मिहिर' मे हिनक मैथिलीमे पहिल रचना लघुकथा प्रकाशित भेल। 1992 सँ ई सक्रिय मैथिली लेखनसँ जुड़लाह आ मैथिलीमे एकटा कविता-संग्रह **परती टूटि रहल अछि** प्रकाशित छनि। हिनक किछु कथा मैथिलीमे प्रकाशित अछि। ई निरन्तर सृजनरत छथि।

केदार कानन क जन्म 10 जुलाइ 1959 कैँ सुपौलमे भेलनि। 1976 सँ अपन लेखन आरंभ कयनिहार केदार काननक पहिल रचना 1979 मे 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेलनि। मैथिली मे हुनक एकटा कविता-संग्रह *आकार लैत शब्द* प्रकाशित अछि। हुनक मैथिलीमे कतिपय कविता, कथा, साहित्यिक निबन्ध, व्यंग्य आ संस्मरण प्रकाशित अछि। मूल लेखनक अतिरिक्त ओ 1985 सँ मैथिलीक प्रायः शताधिक कविता आ कथाक हिन्दीमे अनुवाद कयलनि आ तकरा प्रकाशित करबौलनि। हुनके प्रयाससँ 1988 मे 'पहल' (सम्पादक : ज्ञानरंजन) द्वारा 'मैथिली कविता' पर एकटा पुस्तिका प्रकाशित भेल छल। हिन्दीक प्रायः पनरह गोट प्रतिष्ठित पत्रिकामे हुनक अनुवाद प्रकाशित भेल।

1994 मे श्री मन्त्रेश्वर झाक नाटक 'प्रायश्चित' क हिन्दी अनुवाद आ 1995 मे सौम्येन्द्रनाथ टैगोरक कृति *राजा राममोहन रॉयक* मैथिली अनुवाद प्रकाशित भेल। साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत हिन्दी कविता-संग्रह *मगध* (श्रीकान्त वर्मा) आ *अकाल मे सारस* (केदारनाथ सिंह) क मैथिलीमे अनुवाद कयलनि, जे साहित्य अकादेमीमे प्रकाशनाधीन अछि। बंगला कवि कालीपद कोङरक कविता संग्रह *आय झर,* हिन्दीमे अनुवाद कयलनि, जे प्रकाशनाधीन अछि। अुवादक अतिरिक्त केदार कानन कतिपय हिन्दी-मैथिली पत्रिका आ पुस्तकक सम्पादनसँ संबद्ध छथि, जाहिमे प्रमुख अछि 'संवाद', 'विपक्ष' (हिन्दी पत्रिका), 'आरंभ', 'संगल्प', 'भारती मंडन' (मैथिली पत्रिका), *किसुन रचनावली* (तीन खंड) एवं *प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रंथ* आदि। केदार काननक कतिपय कविताक अनुवाद बंगला, पंजाबी ओ अंग्रेजी भाषामे भेल अछि। ओ 1980 मे 'किसुन संकल्प लोक' क स्थापना कयलनि, जे एखनधरि मैथिलीमे अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन कयलक अछि आ प्रायः दस गोट मैथिली-हिन्दीक श्रेष्ठ पुस्तकक प्रकाशन कयलक अछि। ओ निरन्तर सृजनरत छथि।

सुपौलक **सुस्मिता पाठकक** जन्म 25 जवरी 2962 कैँ भेलनि। 1980 सँ अपन लेखन आरंभ कयनिहारि सुस्मिताक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कतिपय कविता आ कथा मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि । ओ मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीमे समान रूपेँ लिखैत छथि ।मैथिलीमे एखनधरि हुनक कोनो स्वतंत्र संकलन नहि आयल छनि । हुनक अनेक कविताक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी आ कन्नड़मे भेल अछि। साहित्य-सृजंनक अतिरिक्त पेंटिंग आ स्केचमे हुनक गंभीर रुचि छनि। ओ निरन्तर सक्रिय लेखनसँ जुड़ल छथि ।

डगमाराक नारायण मिश्र, सुखपुरक केशवेन्द्र नारायण सिंह, डा. कन्हैया प्रसाद सिंह, सच्चिदानन्द सौरभ एवं श्रीमती किरण सिंह, कर्णपुरक निर्भय, सुपौलक लाल अरुणाली, प्रकाश, संतोष विपुल, बभनगामाक चन्द्रशेखर, सुखपुरक रत्नेश्वर झा, कर्णपुरक प्रो. कुलानन्द झा, सुपौलक उग्रमोह झा, विश्वनाथ प्रसाद गुप्त, बिसनपुर लाउढ़क श्रीनिवास सिंह, रमण कुमार सिंह, कलिकापुरक गौरीनाथ, कर्णपुरक मुकुल कुमार पाठक, मलाढ़क श्रीमती कौमुदी कुमुद, सुपौलक श्रीमती प्रमिला मल्लिक, श्रीमती नूतन बाला, श्रीमती पुनीता देवी, सुश्री अनुप्रिया एवं सुश्री रोमिशा वत्स निरन्तर मैथिलीमे लिखि रहल छथि ।

एहिमे सच्चिदानन्द सौरभ एवं निर्भय मैथिलीमे निरन्तर छपैत रहलाह अछि। लाल अरुणालीक किछु लघुकथा, प्रकाशक किछु कविता, संतोष विपुल आ चन्द्रशेखरक कविता, कुलानन्द मिश्रक किछु निबन्ध, उग्रमोहन झाक कविता आ निबन्ध, रमण कुमार सिंहक कविता, टिप्पणी, गौरीनाथक अनेक कविता आ कथा; कौमुदी कुमुद, प्रमिला मल्लिक एवं नूतन बालाक पाककला, गृहसज्जा, स्त्रीजनित वत्सक कवितादि मैथिलीमे प्रकाशित होइत रहल अछि। सुपौलक विश्वनाथ प्रसाद गुप्ताक किछु कथा मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल छल, ओ एखनो साहित्य-सृजन कऽ रहल छथि ।

धिबड़ा-छातापुरक जवाहर पाठक, जे शिक्षक छथि, मिथिला मिहिर मे हुनक निबंध प्रकाशित छनि। सुखानगर (चिलौनी) क प्रकाश ग्राम मैथिलीमे लिखैत रहलाह अछि। भेलाहीक विद्यालय में पदस्थापित शंभू पासवानक कतिपय कविता अप्रकाशित अछि। बरुआरीक श्रीमती शीला झा मैथिली म यदा-कदा लिखैत रहलीह अछि । सुपौलक श्रीमती इन्दु सपनाक अपन आरंभिक लेखन-कालमे कतिपय कविता आ कथा मिथिला मिहिर मे प्रकाशित भेल । अभुआरक सुमन भारती कविता आ लघुकथा लिखैत छथि। डुमरीक मणीन्द्रनाथ दास मैथिलीमे निरन्तर लिखि रहलाह अछि। सुपौाक अशोक अंशु मूलतः हिन्दी आ भोजपुरीक लेखक छथि हुनक किछु रचना मैथिलीमे सेहो प्रकाशित अछि ।

सपौलसँ मैथिलीक अनेक पत्रिकाक प्रकाशन होइत रहल अछि, जाहिमे प्रमुख थिक 'सौरभ', 'संकल्प', 'धार' आ 'भारती मंडन' । एहि पत्रिका सभक विषयसँ मैथिलीक पाठक छथि ।

अपन एहि लेखमे हम मूलतः मैथिली साहित्य आ साहित्यकारक विषयमे चर्चा कयल अछि, जखन कि संस्कृत, हिन्दी आ उर्दू साहित्यमे सेहो परिसरक अन्यतम योगदानकेँ किन्हु नहि बिसराओल जा सकैत अछि । कोसी-तिलयुगा-ख़ैरदाहा-चिलौनी आ धर्ममूला नदी-धारसँ घेरल-बेढ़ल एहि अपार बालुकाराशिकेँ साहित्यक उर्वराशक्ति प्रदान करबाक श्रेय जाहि महापुरुषलोकनिकेँ जाइत अछि, हुनका सभक प्रति एहि परिसरक तमाम भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक साहित्यकार सदैव नतशिर रहताह-ओ लोकदे लोरिक, लोकदेव दीना-भद्री, लोककवि डाक आ मिथिलाक महान संतकवि सहेब रामदास एहि छोट लेखमे समेटल नहि जा सकैत छथि, अतएव हिनका सभक प्रति हम मात्र अपन श्रद्धांजलि व्यक्त करैत छी ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर'क योगदान

□ डा. श्री सत्य नारायण मेहता

संसारक कोनहुँ भाषा-साहित्यक विकासमे ओहि भाषाक पत्र-पत्रिकाक सर्वाधिक योगदान होइत छैक । पत्र-पत्रिका तत्कालीन समयक साहित्यिक गतिविधि एवं जन-चेतनाक संवाहक होइत अछि। ओहिसँ तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्थितिक सूचना भेटि जाइत छैक । वर्त्तमान समयमे ज्ञान-विज्ञानक प्रचार-प्रसार, राजनैतिक चेतना एवं जन-सामान्यक मनोरंजनमे पत्र-पत्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान स्वतः सिद्ध अछि ।

मैथिलीमे पत्रिकाक इतिहास बीसम शताब्दीक वस्तु थिक। एहि शताब्दीक प्रारम्भेसँ एहि क्षेत्रमे कार्य भए रहल अछि । साहित्यक अभ्युन्नतिमे पत्रिका विशेषतः साहित्यिक पत्रिका मंचक कार्य करैत अछि । समयक परिवर्त्तनक संगहि विचारमे नवीनताक आगमन होइत अछि। ई नवीनता साहित्यक क्षेत्रमे सेहो अबैत अछि । एहि नवीनताक प्रवेशक हेतु पत्रिका माध्यम बनैत अछि। .

मैथिली भाषा एवं साहित्यकेँ समृद्ध करबामे विभिन्न मैथिली पत्र-पत्रिका अपन योगदान देलक अछि। मैथिली भाषा-साहित्यकेँ आधुनिक परिमार्जित रूप प्रदान करबामे सभसँ बेसी योगदान 'मिथिला मिहिर'क रहलैक अछि। 'मिथिला मिहिर' पहिने मासिक पत्रिकाक रूपमे दरभंगासँ प्रकाशित भेल । एकर प्रकाशन वर्षक संबंधमे विभिन्न इतिहासकार विभिन्न मत रखैत छथि । डा. जयकान्त मिश्र एकर प्रारम्भ 1908 ई. सँ मानैत छथि । डा. दुर्गानाथ झा *'श्रीश'*क सेहो इएह मत अछि ।[1] डा. दिनेश कुमार झा 1907 ई. मानैत छथि ।[2] स्व. लक्ष्मीपति सिंह 1908 ई. कहैत छथि ।[3] किन्तु पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकर प्रारम्भ 1909 ई. मानैत छथि । एहिमे 'अमर' जी प्रथम अंकक मुख पृष्ठक प्रति सेहो देखबैत छथि । अतः अधिक प्रमाण पुष्ट रहबाक कारणेँ हिनक मत अधिक युक्तिपूर्ण बुझि पड़ैत अछि । ओ लिखैत छथि– *''वस्तुतः मिथिला मिहिर 1909 ई. क मकर संक्रान्तिसँ मासिक पत्रिकाक रूपमे मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे दरभंगासँ प्रकाशित होमए लागल । एकर प्रथम सम्पादक भेलाह पं. विष्णुकान्त झा 'शास्त्री' ।...एहि मे प्रमुखता हिन्दीक छलैक। अतः प्रारंभिक कालमे एकरा हिन्दीएक पत्र कहब विशेष युक्ति संगत प्रतीत होइत अछि...।*[4]

एहि प्रकारेँ 1909 ई. मे दरभंगासँ मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जे मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे एकटा आधार-स्तम्भक काज कएलक।

सन 1909 ई. सँ सन 1954 ई. धरि दरभंगासँ एकर प्रकाशन भेल जाहिमे प्रायः तीन वर्ष मासिक आ पश्चात साप्ताहिक रूपेँ होइत रहल । एहि कालावधिमे क्रमशः पं. विष्णु कान्त झा 'शास्त्री', पं. योगानन्द कुमार, पं. जनार्दन झा, पं. कपिलेश्वर झा 'शास्त्री' एवं पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' सम्पादनक कार्य कएलनि। दरभंगासँ प्रकाशित 'मिहिर'क माध्यमे मुन्शी रघुनन्दन दास, भोलालाल दास, नरेन्द्रनाथ दास, अच्युतानन्द दत्त, कालीकुमार दास, म. म. गंगानाथ झा, म. म. उमेश मिश्र, डा. अमरनाथ झा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', हरिमोहन झा, लक्ष्मीपति सिंह, शशिनाथ चौधरी, आरसी प्रसाद सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह, पं. बलदेब मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, ज्यो. बलदेव मिश्र, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', प्रो. राधाकृष्ण चौधरी आदि रचनाकार मैथिली भाषा-साहित्यक क्षितिज पर अवतरित भेलाह जनिक अवदानसँ मैथिली भाषा-साहित्य परिपूर्ण भेल अछि ।

सर्वप्रथम बाबू तुलापति सिंहक *'मदनराज चरित उपन्यास'*, लाल दासक *'सावित्री-सत्यवान'* नाटक तथा पं. परमेश्वर झा कृत *'मिथिलातत्व-विमर्श'* इएह पत्रिका धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित कएलक ।

पं. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पादकत्वमे 1935 ई. मे 'मिथिलांक' नामसँ विशेषांक प्रकाशित भेल । ओहिमे यद्यपि अधिकांश हिन्दीमे अछि किन्तु साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व अछि । एहि विशेषांकमे विविध क्षेत्रक तत्कालीन गण्यमान्य व्यक्ति लोकनिक तथा विभिन्न स्थानक चित्र सेहो प्रकाशित भेल। एकर अतिरिक्त अनेक मौलिक ओ अनूदित रचना धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित होइत रहल। उदाहरणार्थ– मुन्शी रघुनन्दन दासक *'सुभद्राहरण'*, सीताराम झाक *'अम्बचरित'*, मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' क *'कानन-कन्या,* डा. सुभद्र झाक *'हमर विदेश-यात्रा'*, डा. श्रीकृष्ण मिश्रक *'कन्यादनक समीक्षा'*, जनसीदन जीक *'निर्दयी सासु'*, *'द्विरागमनक रहस्य'*, मणिपद्मक *'अनलपथ'* आदि मौलिक रचना तथा सुमनजीक *'बड़की दाइ'*, व्यास जीक *'बाभनक बेटी'* आदि अनूदित रचना ।

सन 1954 ई. मे 13 नवम्बरक अंक प्रकाशित भेलाक पश्चात् एकाएक एकर प्रकाशन बन्द भए गेल। तकर छओ वर्षक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पश्चात् साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन पटनासँ आरम्भ भेल । 10 सितम्बर, 1960 ई. मे इंडियन नेशन प्रेस पटनासँ एकर पुनः प्रकाशन आरम्भ भेल, जे 5 फरवरी, 1984 धरि श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरीक सम्पादकत्वमे साप्ताहिक रूपमे बहराइत रहल । श्री शेखर जीक अतिरिक्त पं. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', श्री मंत्रनाथ झा 'हंसराज', श्री भीमनाथ झा, श्री गोकुलनाथ झा, श्री दिलीप कुमार सिंह झा एवं श्री शरदिन्दु कुमार चौधरी आदि एकर सम्पादन विभागसँ संबद्ध रहलाह । सन 1984 मे गजेन्द्र नारायण चौधरीक सम्पादकत्वमे दैनिक रूपमे एकर प्रकाशन प्रारम्भ भेल जे दीर्घजीवी नहि भए सकल ।

साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधामे बहुविध योगदान कएलक अछि। मैथिली कविताक क्षेत्रमे 'मिहिर' विभिन्न प्रकारक कविता प्रकाशित कएलक अछि । यथा गीत, गजल, लोकगीत, वन्दना, तदर्थ कविता, मुक्तक, नचारी, लगनी, पैरोडी, रुबाई, कजरी, कौआली, क्षणिका, शैर, गीतिरूपक, संगीतरूपक, अकविता, हास्यकविता, हास्य-व्यंग्य कविता, व्यंग्य रूपक, पत्रात्मक कविता, अनूदित कविता आदि। अनुवादक क्रममे अनेक भाषासँ एहिमे साहित्य-सामग्री संकलित भेल अछि; यथा– बंगाली, गुजराती, उर्दू, नीग्रो, कोरियाई, नेपाली, पुर्त्तगाली, अंग्रेजी आदि । शीर्षक-वैविध्य तथा भाषा वैविध्यसँ प्रमाणित होइत अछि जे मिहिरक माध्यमसँ मैथिली भाषा साहित्य प्रचुर रूपसँ लाभान्वित भेल अछि ।

'मिहिर' मे प्रायः सभ विषयक कविता स्थान पबैत रहल। प्रमुख रूपसँ प्रकृतिसम्बन्धी, राष्ट्रीय भावनासँ ओत-प्रोत चीन एवं पाकिस्तान युद्धक पृष्ठभूमिमे, प्रेम सम्बन्धी, हास्य व्यंग्यपरक, सामयिक परिस्थितिसँ संबंधित, भोगल याथार्थपरक, सामाजिक विषमताकेँ उजागर करैत, वर्गसंघर्षकेँ रूपायित करैत, शोषक एवं शोषितक संघर्षकेँ उजागर करैत, उद्बोधनात्मक तथा नव्यतम शैलीक प्रयोगात्मक कविता प्रकाशित होइत रहल ।

'मिहिर' नियमित रूपसँ नव-पुरान कविक रचना तँ प्रकाशित करितहिँ रहल एकाध कविता विशेषांक प्रकाशित कए एहि क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित करबाक प्रयास कएलक। स्थापित कविक अतिरिक्त सन 1960 क पश्चात् अनेक प्रसिद्ध नव कविकेँ ई पत्रिका स्थापित करबामे पूर्णतः समर्थ रहल ।

एहि अवधिमे प्रायः 707 (सात सए सात) टा कविक प्रायः 4745 (चारि हजार सात सए पैंतालिस) कविता प्रकाशित भेल। एहिमे 41 (एकतालिस) टा महिला रचनाकार छथि । शैली, विम्ब-विधान, प्रयोगधर्मिता, विषय-विविधता, भाषा आन्दोलन आदि मे होइत परिवर्त्तन एवं नवोन्मेषसँ प्रेरित कविता एकर बहुआयामी स्वरूपकेँ रूपायित करैत अछि ।

मैथिली कथा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर' क योगदान स्तुत्य अछि । एक साहित्यिक पत्रिकाक रूपमे ई प्रायः सभ विधामे सामग्री प्रस्तुत करबाक गौरवक अधिकारी अछि, तथापि यदि कोनो एकटा विधाक नाम लेल जाय जकर योगदान सर्वाधिक अछि तँ ओ थिक कथा । प्रत्येक वर्ष अपन स्थापना दिवस पर ई एकटा विशेषांक बहार करैत रहल । ई विशेषांक होइत छल कथा-विशेषांक । एकरा माध्यमसँ नव-पुरान स्थापित कथाकारक संग-संग नवीन कथाकारक रचना सेहो लोकक दृष्टिपथ पर अबैत रहल । कतेको कथाकारक प्रथम कथाक प्रकाशनसँ लए कए हुनक स्थापन धरिक श्रेय एकरा छैक ।

'मिहिर' मे विभिन्न प्रकारक कथा स्थान पओलक अछि; यथा, लघु कथा, हास्य-व्यंग्य कथा, सत्य कथा, व्यंग्य कथा, धार्मिक कथा, गल्प कथा, नवतुर कथा, पद्य-कथा, पत्र-कथा, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि । एकर अतिरिक्त अनूदित कथासँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरबाक सफल प्रयास भेल अछि । दस गोट विदेशी भाषा तथा आठ गोट भारतीय भाषाक कुल 118 (एक सए अठारह) अनूदित कथा मैथिलीमे एहि पत्रिकाक माध्यमसँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएल गेल । यथा, चीनी भाषासँ 1, अमेरिकी भाषासँ 3, जापानी भाषासँ 2, मिस्र भाषासँ 1, अंग्रेजी भाषासँ 4, रूसी भाषासँ 10, फ्रेंच भाषासँ 4, आयरिश भाषासँ 1, इटालियन भाषासँ 2, जर्मन भाषासँ 1, तथा भारतीय भाषा, यथा-गुजरातीसँ 2, तेलगूसँ 5, उड़ियासँ 1, हिन्दीसँ 1, बंगलासँ 24, मराठीसँ 1, उर्दूसँ 1, राजास्थानीसँ 1. ।

एहि प्रकारेँ दस विदेशी तथा आठ देशी भाषाक अतिरिक्त बिना मूल भाषाक नामोल्लेख कएने सेहो अनेक अनूदित कथा प्रकाशित भेल अछि जकर संख्या 53 (तिरपन) अछि। एहि प्रकारेँ अनूदित कथाक माध्यमसँ अन्य भाषा-साहित्यक गरिमाक परिचय मैथिलीक कथा-साहित्यकेँ सेहो भेटलैक ।

'मिहिर' अपन साढ़े तइस वर्षक अवधिमे लगभग 1200 अंकमे प्रायः 626 (छओ सए छब्बीस) कथाकारक प्रायः 3187 (तीन हजार एक सए रातासी) कथा प्रकाशित कए एक विशिष्ट कीर्त्तिमान स्थापित कएलक अछि। एहिमे 48 (अड़तालिस) टा महिला कथाकार सेहो छथि । संख्या अथवा परिणामक दृष्टिसँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर'क योगदान

□ डा. श्री सत्य नारायण मेहता

संसारक कोनहुँ भाषा-साहित्यक विकासमे ओहि भाषाक पत्र-पत्रिकाक सर्वाधिक योगदान होइत छैक । पत्र-पत्रिका तत्कालीन समयक साहित्यिक गतिविधि एवं जन-चेतनाक संवाहक होइत अछि। ओहिसँ तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्थितिक सूचना भेटि जाइत छैक । वर्त्तमान समयमे ज्ञान-विज्ञानक प्रचार-प्रसार, राजनैतिक चेतना एवं जन-सामान्यक मनोरंजनमे पत्र-पत्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान स्वतः सिद्ध अछि ।

मैथिलीमे पत्रिकाक इतिहास बीसम शताब्दीक वस्तु थिक। एहि शताब्दीक प्रारम्भेसँ एहि क्षेत्रमे कार्य भए रहल अछि । साहित्यक अभ्युन्नतिमे पत्रिका विशेषतः साहित्यिक पत्रिका मंचक कार्य करैत अछि । समयक परिवर्त्तनक संगहि विचारमे नवीनताक आगमन होइत अछि। ई नवीनता साहित्यक क्षेत्रमे सेहो अबैत अछि । एहि नवीनताक प्रवेशक हेतु पत्रिका माध्यम बनैत अछि।

मैथिली भाषा एवं साहित्यकेँ समृद्ध करबामे विभिन्न मैथिली पत्र-पत्रिका अपन योगदान देलक अछि। मैथिली भाषा-साहित्यकेँ आधुनिक परिमार्जित रूप प्रदान करबामे सभसँ बेसी योगदान 'मिथिला मिहिर'क रहलैक अछि। 'मिथिला मिहिर' पहिने मासिक पत्रिकाक रूपमे दरभंगासँ प्रकाशित भेल । एकर प्रकाशन वर्षक संबंधमे विभिन्न इतिहासकार विभिन्न मत रखैत छथि । डा. जयकान्त मिश्र एकर प्रारम्भ 1908 ई. सँ मानैत छथि । डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क सेहो इएह मत अछि ।[1] डा. दिनेश कुमार झा 1907 ई. मानैत छथि ।[2] स्व. लक्ष्मीपति सिंह 1908 ई. कहैत छथि ।[3] किन्तु पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकर प्रारम्भ 1909 ई. मानैत छथि । एहिमे 'अमर' जी प्रथम अंकक मुख पृष्ठक प्रति सेहो देखबैत छथि । अतः अधिक प्रमाण पुष्ट रहबाक कारणेँ हिनक मत अधिक युक्तिपूर्ण बुझि पड़ैत अछि । ओ लिखैत छथि– *''वस्तुतः मिथिला मिहिर 1909 ई. क मकर संक्रान्तिसँ मासिक पत्रिकाक रूपमे मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे दरभंगासँ प्रकाशित होमए लागल । एकर प्रथम सम्पादक भेलाह पं. विष्णुकान्त झा 'शास्त्री' ।...एहि मे प्रमुखता हिन्दीक छलैक। अतः प्रारंभिक कालमे एकरा हिन्दीएक पत्र कहब विशेष युक्ति संगत प्रतीत होइत अछि...।*[4]

एहि प्रकारेँ 1909 ई. मे दरभंगासँ मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जे मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे एकटा आधार-स्तम्भक काज कएलक।

सन 1909 ई. सँ सन 1954 ई. धरि दरभंगासँ एकर प्रकाशन भेल जाहिमे प्रायः तीन वर्ष मासिक आ पश्चात साप्ताहिक रूपेँ होइत रहल । एहि कालावधिमे क्रमशः पं. विष्णु कान्त झा 'शास्त्री', पं. योगानन्द कुमार, पं. जनार्दन झा, पं. कपिलेश्वर झा 'शास्त्री' एवं पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' सम्पादनक कार्य कएलनि। दरभंगासँ प्रकाशित 'मिहिर'क माध्यमे मुन्शी रघुनन्दन दास, भोलालाल दास, नरेन्द्रनाथ दास, अच्युतानन्द दत्त, कालीकुमार दास, म. म. गंगानाथ झा, म. म. उमेश मिश्र, डा. अमरनाथ झा, भुवनेश्वर सिंह'भुवन', हरिमोहन झा, लक्ष्मीपति सिंह, शशिनाथ चौधरी, आरसी प्रसाद सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह, पं. बलदेब मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, ज्यो. बलदेव मिश्र, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', प्रो. राधाकृष्ण चौधरी आदि रचनाकार मैथिली भाषा-साहित्यक क्षितिज पर अवतरित भेलाह जनिक अवदानसँ मैथिली भाषा-साहित्य परिपूर्ण भेल अछि ।

सर्वप्रथम बाबू तुलापति सिंहक *'मदनराज चरित उपन्यास'*, लाल दासक *'सावित्री-सत्यवान'* नाटक तथा पं. परमेश्वर झा कृत *'मिथिलातत्व-विमर्श'* इएह पत्रिका धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित कएलक ।

पं. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पादकत्वमे 1935 ई. मे 'मिथिलांक' नामसँ विशेषांक प्रकाशित भेल । ओहिमे यद्यपि अधिकांश हिन्दीमे अछि किन्तु साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व अछि । एहि विशेषांकमे विविध क्षेत्रक तत्कालीन गण्यमान्य व्यक्ति लोकनिक तथा विभिन्न स्थानक चित्र सेहो प्रकाशित भेल। एकर अतिरिक्त अनेक मौलिक ओ अनूदित रचना धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित होइत रहल। उदाहरणार्थ– मुन्शी रघुनन्दन दासक *'सुभद्राहरण'*, सीताराम झाक *'अम्बचरित'*, मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' क *'कानन-कन्या,* डा. सुभद्र झाक *'हमर विदेश-यात्रा'*, डा. श्रीकृष्ण मिश्रक *'कन्यादनक समीक्षा'*, जनसीदन जीक *'निर्दयी सासु'*, *'द्विरागमनक रहस्य'*, मणिपद्मक *'अनलपथ'* आदि मौलिक रचना तथा सुमनजीक *'बड़की दाइ'*, व्यास जीक *'बाभनक बेटी'* आदि अनूदित रचना ।

सन 1954 ई. मे 13 नवम्बरक अंक प्रकाशित भेलाक पश्चात् एकाएक एकर प्रकाशन बन्द भए गेल। तकर छओ वर्षक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पश्चात् साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन पटनासँ आरम्भ भेल । 10 सितम्बर, 1960 ई. मे इंडियन नेशन प्रेस पटनासँ एकर पुनः प्रकाशन आरम्भ भेल, जे 5 फरवरी, 1984 धरि श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरीक सम्पादकत्वमे साप्ताहिक रूपमे बहराइत रहल । श्री शेखर जीक अतिरिक्त पं. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', श्री मंत्रनाथ झा 'हंसराज', श्री भीमनाथ झा, श्री गोकुलनाथ झा, श्री दिलीपं कुमार सिंह झा एवं श्री शरदिन्दु कुमार चौधरी आदि एकर सम्पादन विभागसँ संबद्ध रहलाह । सन 1984 मे गजेन्द्र नारायण चौधरीक सम्पादकत्वमे दैनिक रूपमे एकर पकाशन प्रारम्भ भेल जे दीर्घजीवी नहि भए सकल ।

साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधामे बहुविध योगदान कएलक अछि। मैथिली कविताक क्षेत्रमे 'मिहिर' विभिन्न प्रकारक कविता प्रकाशित कएलक अछि । यथा गीत, गजल, लोकगीत, वन्दना, तदर्थ कविता, मुक्तक, नचारी, लगनी, पैरोडी, रुबाई, कजरी, कौआली, क्षणिका, शैर, गीतिरूपक, संगीतरूपक, अकविता, हास्यकविता, हास्य-व्यंग्य कविता, व्यंग्य रूपक, पत्रात्मक कविता, अनूदित कविता आदि। अनुवादक क्रममे अनेक भाषासँ एहिमे साहित्य-सामग्री संकलित भेल अछि: यथा– बंगाली, गुजराती, उर्दू, नीग्रो, कोरियाई, नेपाली, पुर्त्तगाली, अंग्रेजी आदि । शीर्षक-वैविध्य तथा भाषा वैविध्यसँ प्रमाणित होइत अछि जे मिहिरक माध्यमसँ मैथिली भाषा साहित्य प्रचुर रूपसँ लाभान्वित भेल अछि ।

'मिहिर' मे प्रायः सभ विषयक कविता स्थान पबैत रहल। प्रमुख रूपसँ प्रकृतिसम्बन्धी, राष्ट्रीय भावनासँ ओत-प्रोत चीन एवं पाकिस्तान युद्धक पृष्ठभूमिमे, प्रेम सम्बन्धी, हास्य व्यंग्यपरक, सामयिक परिस्थितिसँ संबंधित, भोगल याथार्थपरक, सामाजिक विषमताकेँ उजागर करैत, वर्गसंघर्षकेँ रूपायित करैत, शोषक एवं शोषितक संघर्षकेँ उजागर करैत, उद्बोधनात्मक तथा नव्यतम शैलीक प्रयोगात्मक कविता प्रकाशित होइत रहल ।

'मिहिर' नियमित रूपसँ नव-पुरान कविक रचना तँ प्रकाशित करितहिँ रहल एकाध कविता विशेषांक प्रकाशित कए एहि क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित करबाक प्रयास कएलक। स्थापित कविक अतिरिक्त सन 1960 क पश्चात् अनेक प्रसिद्ध नव कविकेँ ई पत्रिका स्थापित करबामे पूर्णतः समर्थ रहल ।

एहि अवधिमे प्रायः 707 (सात सए सात) टा कविक प्रायः 4745 (चारि हजार सात सए पैंतालिस) कविता प्रकाशित भेल। एहिमे 41 (एकतालिस) टा महिला रचनाकार छथि । शैली, विम्ब-विधान, प्रयोगधर्मिता, विषय-विविधता, भाषा आन्दोलन आदि मे होइत परिवर्त्तन एवं नवोन्मेषसँ प्रेरित कविता एकर बहुआयामी स्वरूपकेँ रूपायित करैत अछि ।

मैथिली कथा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर' क योगदान स्तुत्य अछि । एक साहित्यिक पत्रिकाक रूपमे ई प्रायः सभ विधामे सामग्री प्रस्तुत करबाक गौरवक अधिकारी अछि, तथापि यदि कोनो एकटा विधाक नाम लेल जाय जकर योगदान सर्वाधिक अछि तँ ओ थिक कथा । प्रत्येक वर्ष अपन स्थापना दिवस पर ई एकटा विशेषांक बहार करैत रहल । ई विशेषांक होइत छल कथा-विशेषांक । एकरा माध्यमसँ नव-पुरान स्थापित कथाकारक संग-संग नवीन कथाकारक रचना सेहो लोकक दृष्टिपथ पर अबैत रहल । कतेको कथाकारक प्रथम कथाक प्रकाशनसँ लए कए हुनक स्थापन धरिक श्रेय एकरा छैक ।

'मिहिर' मे विभिन्न प्रकारक कथा स्थान पओलक अछि: यथा, लघु कथा, हास्य-व्यंग्य कथा, सत्य कथा, व्यंग्य कथा, धार्मिक कथा, गल्प कथा, नवतुर कथा, पद्य-कथा, पत्र-कथा, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि । एकर अतिरिक्त अनूदित कथासँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरबाक सफल प्रयास भेल अछि । दस गोट विदेशी भाषा तथा आठ गोट भारतीय भाषाक कुल 118 (एक सए अठारह) अनूदित कथा मैथिलीमे एहि पत्रिकाक माध्यमसँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएल गेल । यथा, चीनी भाषासँ 1, अमेरिकी भाषासँ 3, जापानी भाषासँ 2, मिस्र भाषासँ 1, अंग्रेजी भाषासँ 4, रूसी भाषासँ 10, फ्रेंच भाषासँ 4, आयरिश भाषासँ 1, इटालियन भाषासँ 2, जर्मन भाषासँ 1, तथा भारतीय भाषा, यथा-गुजरातीसँ 2, तेलगूसँ 5, उड़ियासँ 1, हिन्दीसँ 1, बंगलासँ 24, मराठीसँ 1, उर्दूसँ 1, राजास्थानीसँ 1. [

एहि प्रकारेँ दस विदेशी तथा आठ देशी भाषाक अतिरिक्त बिना मूल भाषाक नामोल्लेख कएने सेहो अनेक अनूदित कथा प्रकाशित भेल अछि जकर संख्या 53 (तिरपन) अछि। एहि प्रकारेँ अनूदित कथाक माध्यमसँ अन्य भाषा-साहित्यक गरिमाक परिचय मैथिलीक कथा-साहित्यकेँ सेहो भेटलैक ।

'मिहिर' अपन साढ़े तइस वर्षक अवधिमे लगभग 1200 अंकमे प्रायः 626 (छओ सए छब्बीस) कथाकारक प्रायः 3187 (तीन हजार एक सए रातासी) कथा प्रकाशित कए एक विशिष्ट कीर्त्तिमान स्थापित कएलक अछि। एहिमे 48 (अड़तालिस) टा महिला कथाकार सेहो छथि । संख्या अथवा परिणामक दृष्टिसँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर'क योगदान

□ डा. श्री सत्य नारायण मेहता

संसारक कोनहुँ भाषा-साहित्यक विकासमे ओहि भाषाक पत्र-पत्रिकाक सर्वाधिक योगदान होइत छैक । पत्र-पत्रिका तत्कालीन समयक साहित्यिक गतिविधि एवं जन-चेतनाक संवाहक होइत अछि। ओहिसँ तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्थितिक सूचना भेटि जाइत छैक। वर्त्तमान समयमे ज्ञान-विज्ञानक प्रचार-प्रसार, राजनैतिक चेतना एवं जन-सामान्यक मनोरंजनमे पत्र-पत्रिकाक महत्वपूर्ण योगदान स्वतः सिद्ध अछि ।

मैथिलीमे पत्रिकाक इतिहास बीसम शताब्दीक वस्तु थिक। एहि शताब्दीक प्रारम्भेसँ एहि क्षेत्रमे कार्य भए रहल अछि । साहित्यक अभ्युन्नतिमे पत्रिका विशेषतः साहित्यिक पत्रिका मंचक कार्य करैत अछि । समयक परिवर्त्तनक संगहि विचारमे नवीनताक आगमन होइत अछि। ई नवीनता साहित्यक क्षेत्रमे सेहो अबैत अछि । एहि नवीनताक प्रवेशक हेतु पत्रिका माध्यम बनैत अछि।

मैथिली भाषा एवं साहित्यकेँ समृद्ध करबामे विभिन्न मैथिली पत्र-पत्रिका अपन योगदान देलक अछि। मैथिली भाषा-साहित्यकेँ आधुनिक परिमार्जित रूप प्रदान करबामे सभसँ बेसी योगदान 'मिथिला मिहिर'क रहलैक अछि। 'मिथिला मिहिर' पहिने मासिक पत्रिकाक रूपमे दरभंगासँ प्रकाशित भेल । एकर प्रकाशन वर्षक संबंधमे विभिन्न इतिहासकार विभिन्न मत रखैत छथि । डा. जयकान्त मिश्र एकर प्रारम्भ 1908 ई. सँ मानैत छथि । डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क सेहो इएह मत अछि ।[1] डा. दिनेश कुमार झा 1907 ई. मानैत छथि ।[2] स्व. लक्ष्मीपति सिंह 1908 ई. कहैत छथि ।[3] किन्तु पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एकर प्रारम्भ 1909 ई. मानैत छथि । एहिमे 'अमर' जी प्रथम अंकक मुख पृष्ठक प्रति सेहो देखबैत छथि । अतः अधिक प्रमाण पुष्ट रहबाक कारणेँ हिनक मत अधिक युक्तिपूर्ण बुझि पड़ैत अछि । ओ लिखैत छथि– *''वस्तुतः मिथिला मिहिर 1909 ई. क मकर संक्रान्तिसँ मासिक पत्रिकाक रूपमे मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे दरभंगासँ प्रकाशित होमए लागल । एकर प्रथम सम्पादक भेलाह पं. विष्णुकान्त झा 'शास्त्री' ।...एहि मे प्रमुखता हिन्दीक छलैक। अतः प्रारंभिक कालमे एकरा हिन्दीएक पत्र कहब विशेष युक्ति संगत प्रतीत होइत अछि...।*[4]

एहि प्रकारेँ 1909 ई. मे दरभंगासँ मिथिलेश रमेश्वर सिंहक संरक्षणमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन प्रारम्भ भेल जे मैथिली भाषा-साहित्यक विकासमे एकटा आधार-स्तम्भक काज कएलक।

सन 1909 ई. सँ सन 1954 ई. धरि दरभंगासँ एकर प्रकाशन भेल जाहिमे प्रायः तीन वर्ष मासिक आ पश्चात साप्ताहिक रूपेँ होइत रहल । एहि कालावधिमे क्रमशः पं. विष्णु कान्त झा 'शास्त्री', पं. योगानन्द कुमार, पं. जनार्दन झा, पं. कपिलेश्वर झा 'शास्त्री' एवं पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' सम्पादनक कार्य कएलनि। दरभंगासँ प्रकाशित 'मिहिर'क माध्यमे मुन्शी रघुनन्दन दास, भोलालाल दास, नरेन्द्रनाथ दास, अच्युतानन्द दत्त, कालीकुमार दास, म. म. गंगानाथ झा, म. म. उमेश मिश्र, डा. अमरनाथ झा, भुवनेश्वर सिंह'भुवन', हरिमोहन झा, लक्ष्मीपति सिंह, शशिनाथ चौधरी, आरसी प्रसाद सिंह, कुमार गंगानन्द सिंह, पं. बलदेब मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, ज्यो. बलदेव मिश्र, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपूदम', प्रो. राधाकृष्ण चौधरी आदि रचनाकार मैथिली भाषा-साहित्यक क्षितिज पर अवतरित भेलाह जनिक अवदानसँ मैथिली भाषा-साहित्य परिपूर्ण भेल अछि ।

सर्वप्रथम बाबू तुलापति सिंहक *'मदनराज चरित उपन्यास'*, लाल दासक *'सावित्री-सत्यवान'* नाटक तथा पं. परमेश्वर झा कृत 'मिथिलातत्व-विमर्श' इएह पत्रिका धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित कएलक ।

पं. श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पादकत्वमे 1935 ई. मे 'मिथिलांक' नामसँ विशेषांक प्रकाशित भेल । ओहिमे यद्यपि अधिकांश हिन्दीमे अछि किन्तु साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व अछि । एहि विशेषांकमे विविध क्षेत्रक तत्कालीन गण्यमान्य व्यक्ति लोकनिक तथा विभिन्न स्थानक चित्र सेहो प्रकाशित भेल। एकर अतिरिक्त अनेक मौलिक ओ अनूदित रचना धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित होइत रहल। उदाहरणार्थ– मुन्शी रघुनन्दन दासक *'सुभद्राहरण'*, सीताराम झाक *'अम्बचरित'*, मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' क *'कानन-कन्या,* डा. सुभद्र झाक *'हमर विदेश-यात्रा'*, डा. श्रीकृष्ण मिश्रक *'कन्यादनक समीक्षा'*, जनसीदन जीक *'निर्दयी सासु'*, *'द्विरागमनक रहस्य'*, मणिपद्मक *'अनलपथ'* आदि मौलिक रचना तथा सुमनजीक *'बड़की दाइ'*, व्यास जीक *'बाभनक बेटी'* आदि अनूदित रचना ।

सन 1954 ई. मे 13 नवम्बरक अंक प्रकाशित भेलाक पश्चात् एकाएक एकर प्रकाशन बन्द भए गेल। तकर छओ वर्षक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पश्चात् साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' क प्रकाशन पटनासँ आरम्भ भेल । 10 सितम्बर, 1960 ई. मे इंडियन नेशन प्रेस पटनासँ एकर पुनः प्रकाशन आरम्भ भेल, जे 5 फरवरी, 1984 धरि श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरीक सम्पादकत्वमे साप्ताहिक रूपमे बहराइत रहल । श्री शेखर जीक अतिरिक्त पं. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', श्री मंत्रनाथ झा 'हंसराज', श्री भीमनाथ झा, श्री गोकुलनाथ झा, श्री दिलीपं कुमार सिंह झा एवं श्री शरदिन्दु कुमार चौधरी आदि एकर सम्पादन विभागसँ संबद्ध रहलाह । सन 1984 मे गजेन्द्र नारायण चौधरीक सम्पादकत्वमे दैनिक रूपमे एकर पकाशन प्रारम्भ भेल जे दीर्घजीवी नहि भए सकल ।

साप्ताहिक रूपमे 'मिथिला मिहिर' कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधामे बहुविध योगदान कएलक अछि। मैथिली कविताक क्षेत्रमे 'मिहिर' विभिन्न प्रकारक कविता प्रकाशित कएलक अछि । यथा गीत, गजल, लोकगीत, वन्दना, तदर्थ कविता, मुक्तक, नचारी, लगनी, पैरोडी, रुबाई, कजरी, कौआली, क्षणिका, शैर, गीतिरूपक, संगीतरूपक, अकविता, हास्यकविता, हास्य-व्यंग्य कविता, व्यंग्य रूपक, पत्रात्मक कविता, अनूदित कविता आदि। अनुवादक क्रममे अनेक भाषासँ एहिमे साहित्य-सामग्री संकलित भेल अछि: यथा– बंगाली, गुजराती, उर्दू, नीग्रो, कोरियाई, नेपाली, पुर्त्तगाली, अंग्रेजी आदि । शीर्षक-वैविध्य तथा भाषा वैविध्यसँ प्रमाणित होइत अछि जे मिहिरक माध्यमसँ मैथिली भाषा साहित्य प्रचुर रूपसँ लाभान्वित भेल अछि ।

'मिहिर' मे प्रायः सभ विषयक कविता स्थान पबैत रहल। प्रमुख रूपसँ प्रकृतिसम्बन्धी, राष्ट्रीय भावनासँ ओत-प्रोत चीन एवं पाकिस्तान युद्धक पृष्ठभूमिमे, प्रेम सम्बन्धी, हास्य व्यंग्यपरक, सामयिक परिस्थितिसँ संबंधित, भोगल याथार्थपरक, सामाजिक विषमताकेँ उजागर करैत, वर्गसंघर्षकेँ रूपायित करैत, शोषक एवं शोषितक संघर्षकेँ उजागर करैत, उद्बोधनात्मक तथा नव्यतम शैलीक प्रयोगात्मक कविता प्रकाशित होइत रहल ।

'मिहिर' नियमित रूपसँ नव-पुरान कविक रचना तँ प्रकाशित करितहिँ रहल एकाध कविता विशेषांक प्रकाशित कए एहि क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित करबाक प्रयास कएलक। स्थापित कविक अतिरिक्त सन 1960 क पश्चात् अनेक प्रसिद्ध नव कविकेँ ई पत्रिका स्थापित करबामे पूर्णतः समर्थ रहल ।

एहि अवधिमे प्रायः 707 (सात सए सात) टा कविक प्रायः 4745 (चारि हजार सात सए पैंतालिस) कविता प्रकाशित भेल। एहिमे 41 (एकतालिस) टा महिला रचनाकार छथि । शैली, विम्ब-विधान, प्रयोगधर्मिता, विषय-विविधता, भाषा आन्दोलन आदि मे होइत परिवर्त्तन एवं नवोन्मेषसँ प्रेरित कविता एकर बहुआयामी स्वरूपकेँ रूपायित करैत अछि ।

मैथिली कथा-साहित्यक विकासमे 'मिथिला मिहिर' क योगदान स्तुत्य अछि । एक साहित्यिक पत्रिकाक रूपमे ई प्रायः सभ विधामे सामग्री प्रस्तुत करबाक गौरवक अधिकारी अछि, तथापि यदि कोनो एकटा विधाक नाम लेल जाय जकर योगदान सर्वाधिक अछि तँ ओ थिक कथा । प्रत्येक वर्ष अपन स्थापना दिवस पर ई एकटा विशेषांक बहार करैत रहल । ई विशेषांक होइत छल कथा-विशेषांक । एकरा माध्यमसँ नव-पुरान स्थापित कथाकारक संग-संग नवीन कथाकारक रचना सेहो लोकक दृष्टिपथ पर अबैत रहल । कतेको कथाकारक प्रथम कथाक प्रकाशनसँ लए कए हुनक स्थापन धरिक श्रेय एकरा छैक ।

'मिहिर' मे विभिन्न प्रकारक कथा स्थान पओलक अछि: यथा, लघु कथा, हास्य-व्यंग्य कथा, सत्य कथा, व्यंग्य कथा, धार्मिक कथा, गल्प कथा, नवतुर कथा, पद्य-कथा, पत्र-कथा, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, शब्दचित्र आदि । एकर अतिरिक्त अनूदित कथासँ मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरबाक सफल प्रयास भेल अछि । दस गोट विदेशी भाषा तथा आठ गोट भारतीय भाषाक कुल 118 (एक सए अठारह) अनूदित कथा मैथिलीमे एहि पत्रिकाक माध्यमसँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएल गेल । यथा, चीनी भाषासँ 1, अमेरिकी भाषासँ 3, जापानी भाषासँ 2, मिस्र भाषासँ 1, अंग्रेजी भाषासँ 4, रूसी भाषासँ 10, फ्रेंच भाषासँ 4, आयरिश भाषासँ 1, इटालियन भाषासँ 2, जर्मन भाषासँ 1, तथा भारतीय भाषा, यथा-गुजरातीसँ 2, तेलगूसँ 5, उड़ियासँ 1, हिन्दीसँ 1, बंगलासँ 24, मराठीसँ 1, उर्दूसँ 1, राजास्थानीसँ 1. ।

एहि प्रकारेँ दस विदेशी तथा आठ देशी भाषाक अतिरिक्त बिना मूल भाषाक नामोल्लेख कएने सेहो अनेक अनूदित कथा प्रकाशित भेल अछि जकर संख्या 53 (तिरपन) अछि। एहि प्रकारेँ अनूदित कथाक माध्यमसँ अन्य भाषा-साहित्यक गरिमाक परिचय मैथिलीक कथा-साहित्यकेँ सेहो भेटलैक ।

'मिहिर' अपन साढ़े तइस वर्षक अवधिमे लगभग 1200 अंकमे प्रायः 626 (छओ सए छब्बीस) कथाकारक प्रायः 3187 (तीन हजार एक सए रातासी) कथा प्रकाशित कए एक विशिष्ट कीर्त्तिमान स्थापित कएलक अछि। एहिमे 48 (अड़तालिस) टा महिला कथाकार सेहो छथि । संख्या अथवा परिणामक दृष्टिसँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हो अथवा विषय-वस्तु एवं आयामक दृष्टिसँ हो, मैथिली कथा जगतकेँ 'मिथिला मिहिर' क आभारी रहए पड़तैक ।

शैली तथा विषयवैविध्यक दृष्टिसँ 'मिहिर' मे प्रकाशित कथासभ अपन विशिष्ट महत्व रखैत अछि । मनोवैज्ञानिक, यथार्थवादी, समाजवादी, भावुकता प्रधान, यौनमुक्ति सम्बन्धी, हास्य-व्यंग्यप्रधान, ऐतिहासिक, राजनीतिक, पत्रात्मक, प्रतीकात्मक, लोक कथात्मक आदि विविध रीतिक कथा सभ एहिमे स्थान पाबि चुकल अछि । 1973 ई. मे प्रकाशित 'सत्य कथा' विशेषांक स्थायी महत्वक वस्तु थिक ।

मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे 'मिथिला मिहिर' क भूमिका बहुमुखी होएबाक संग-संग अत्यधिक प्रभावपूर्ण रहल अछि । साहित्यक विभिन्न क्षेत्रमे एकर योगदान अविस्मरणीय रहत । मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे सेहो एकर अवदान महत्वपूर्ण रहल अछि । 1960 ई. सँ 1984 धरिक साप्ताहिक अंकसभक माध्यमसँ कुल 31 (एकतीस) गोट उपन्यास मैथिलीकेँ भेटलैक । यथा–तर *पट्टा उपर पट्टा* (शेफालिकाक नाम सँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी), *भोरुकबा* (धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'), *पृथ्वीपुत्र* (ललित), *ब्रह्मपिशाच* (सोमदेव), *खोंता ओ चिड़ै* (मायानन्द मिश्र), *अर्द्धनारीश्वर* (मणिपद्म), *पनिपत* (जीवकान्त), *नयनमणि* (विनोद), *ओ* (विद्यानाथ झा 'विदित'), *अगिनबान* (जीवकान्त), *कादो आ कोइला* (धीरेन्द्र), *राजा सलहेस* (मणिपद्म), *चिनगी* (श्रीमती गौरी मिश्र), *अभिशप्त* (प्रभास कुमार चौधरी), *नहि कतहु नहि* (जीवकान्त), *युगपुरुष* (प्रभास कुमार चौधरी), *गिरहकट्ट* (शशिकान्त), *पहिल लोक* (गंगेश गुंजन), *दरिद्र छिम्मड़ि* (पराशरक उपनामसँ शेखर जी), *भारतीक बिलाड़ि* (मणिपद्म), *पटाक्षेप* (श्रीमती लीली रे), *अभियान* (मार्कण्डेय प्रवासी), *सुनगैत एक टा गामक कथा* (विभूति आनन्द), *पराजित अपराजित* (विभूति आनन्द), *हम कालिदास* (मार्कण्डेय प्रवासी), *गुमकी आ बिहाड़ि* (प्रदीप बिहारी), *नीचा मुहेँ* (श्यामानन्द ठाकुर), *जिन्दावाद-जिन्दावाद* (रविकान्त नीरज), *चन्द्रग्रहण* (कांचीनाथ झा 'किरण') *निवेदिता* (सुधाशु 'शेखर' चौधरी), *लोहक कंगना* (अपूर्ण, श्रीदेव)

विषयवस्तुक संगहि शैलीक दृष्टिसँ सेहो 'मिथिला मिहिर' विविध प्रकारक उपन्यास प्रकाशित कए साहित्यिक योगदान कएलक अछि । एहिमे प्रकाशित सम्पूर्ण उपन्यास पर दृष्टिपात कएलासँ स्पष्ट अछि जे रचनाकारलोकनि अपन प्रतिभाकेँ एकरा माध्यमसँ प्रदर्शित करैत रहलाह अछि । एहिसँ प्रेरणा ग्रहण कए अनेक उपन्यासरचना एहि अवधिमे भेल अछि । नव-नव रचनाकारकेँ प्रोत्साहन तथा स्थापित रचनाकारकेँ आत्म-विश्वास भेटैत रहलन्हि अछि । सामान्य पाठकवर्ग एहिसँ लाभान्वित होइत रहल अछि, साहित्यक प्रति अभिरुचि बढ़ैत रहल ।

दृश्यकाव्यक अन्तर्गत नाटक, एकांकी, रेडियो रूपक आदि अबैत अछि । कोनो साहित्यिक पत्रिकासँ एहि दिशामे बेशी आशा नहि कएल जा सकैछ, तथापि 'मिथिला मिहिर'क प्रयास स्तुत्य रहल अछि । एहिमे आठ गोट रचनाकारक एगारह गोट मौलिक आ दू गोट अनूदित नाटक मिला कए तेरह गोट नाटक प्रकाशित भेल । यथा–मौलिक रचनामे राधाकृष्ण चौधरीक *'राज्याभिषेक'*, योगिराजक *'एकटा अनचिन्हार'*, प्रो. मनमोहन झाक, 'खोज', प्रो. गणेश बिहारी शर्माक *'स्वर्ग-मर्त्य'*, गंगेश गुंजनक *'चौबटिया'*, *'लोक नटकिया'*, *'नबका सिलेबस'*, *'आइ भोर'*, महेन्द्र मलंगियाक *'ओकरा आंगनक बारहमासा'*, एवं *'कमलाकातक राम,लक्ष्मण आ सीता'*, तथा अनिल चन्द्र ठाकुरक *'एकटा राम'*, । अनूदित रचनामे प्रो. दामोदर झाक *'कंजूस'* (मूल–मोलियर) एवं *'शक्तिशालिनी के ?'* (मूल स्ट्रींडवर्ग) ।

'मिथिला मिहिर'क माध्यमसँ नाटकक क्षेत्रमे नव-नव प्रयोग संभव भए सकल अछि । *'ओकरा आंगनक बारहमासा'* तथा *'चौबटिया'* एकर उदाहरण अछि जाहिमे लोकक जीवनक परिवर्त्तित होइत स्वरूपकेँ अंकित करबाक प्रभावकारी प्रयास भेल अछि ।

एहिना एकांकीक क्षेत्रमे सेहो पत्रिका स्तुत्य कार्य कएलक अछि । प्रायः कुल 58 (अठाबन) टा एकांकीकारक प्रायः 97 (सनतानवे) टा एकांकी प्रकाशित अछि जाहिमे हास्य-व्यंग्य, प्रहसन, रेडियो रूपक, एकल, काव्य रूपक आदि विविध प्रकारक रचना संनिहित अछि । विषय-वस्तुक दृष्टिसँ सामाजिक, राष्ट्रीय, देश-प्रेमसंबंधी, राजनीतिक, आर्थिक जीवन संबंधी, पौराणिक, ऐतिहासिक, समस्यामूलक, व्यंग्यपूर्ण आदि विविधता समेटने अछि । शैलीक दृष्टिसँ सेहो एहिमे विविधता विद्यमान [illegible]

मैथिली गद्य साहित्यमे विशेषतः निबन्धक क्षेत्रमे 'मिहिर' क योगदान अत्यधिक महत्व रखैत अछि । गद्येक माध्यमसँ आइ समाजक अधिकांश मनोभाव व्यक्त कएल जाइत अछि । जनसाधारणक क्रिया-कलाप अथवा विचारधारा एकरहि माध्यम सँ अभिव्यक्ति पबैत अछि । सर्जनात्मक साहित्य यथा उपन्यास, नाटक, कथा आदि, विचारात्मक साहित्य तथा विविध प्रकारक निबंधक प्रकाशन 'मिहिर' क माध्यमसँ भेल अछि ।

एहिमे प्रकाशित लगभग दू हजार साहित्यिक निबंध मैथिली भाषा साहित्यक गरिमाक परिचय प्रस्तुत करैत अछि । साहित्यक विविध अंग पर विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक निबंध द्वारा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आलोचना साहित्यक भंडारकेँ भरलक अछि। इएह कारण अछि जे ई पत्रिका समालोचनात्मक निबंध प्रकाशनक मंचक कार्य करैत रहल अछि।

साहित्यिक निबंधक अतिरिक्त आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, संवैधानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, गवेषणात्मक, दार्शनिक, वैचारिक आदि प्रकारक निबंध तथा भाषा आन्दोलन सम्बधी निबंध एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि जे 'मिहिर' जीवनोपयोगी प्रायः सभ प्रकारक निबंध प्रकाशनक मंच बनल रहल।

एहिमे प्रकाशित सभ विषयक निबंधक कुल संख्या प्रायः 5786 (पाँच हजार सात सए छियासी) अछि तथा रचनाकारक संख्या 1080 (एक हजार अस्सी) अछि जाहिमे महिला रचनाकारक संख्या 57 (सतावन) अछि। एहि प्रकारेँ स्पष्ट अछि जे रचना एवं रचनाकारक संख्या द्वारा 'मिहिर' जे मैथिली भाषा साहित्यक सेवा कएलक अछि तकर गणना श्रेष्ठ योगदानक कोटिमे अवश्य आओत।

उपर्युक्त विधाक अतिरिक्त स्थायी स्तम्भक रूपमे बाल-साहित्य, पुस्तक समीक्षा, स्त्रीगण समाज, सम्पादकीय, क्रीड़ा जगत, पाठकीय प्रतिक्रिया, सिनेमा, साक्षात्कार आदि सेहो साहित्यिकताक दृष्टिएँ 'मिहिर' क देन मैथिली साहित्यकेँ अपूर्व अछि। स्थायी स्तम्भक सम्बन्धमे पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखैत छथि–*''एहिमे अनेक स्तम्भ निर्धारित अछि। यथा सहमति-असहमति, धार्मिक कथा, स्त्रीगण समाज, नेना भुटकाक चौपाड़ि, फिल्मलोक, देश-देशान्तर, देस-कोस, क्रीड़ा जगत, साप्ताहिक राशिफल, विचारमंच, पाठकीय प्रतिक्रिया, हास्य स्तम्भक रूपमे समय-समय पर गोनू झाक चटिसार, धर्मधकेलानन्दक बलधिंगरो, बहिरा नाचय अपने ताले, अजगुत अनटोटल, रुचय तँ सत ने तँ फूसि। आरम्भिक कालमे स्तम्भक रूप मे बहुतो दिन धरि अंग्रेजी फूलक चिट्ठी, सहजो पीसीक चर्खा आदि आदि अनेक स्तम्भ चलैत रहल।''*

'मिथिला मिहिर' मे नेना-भुटकाक चौपाड़ि एक स्थायी स्तम्भ रहल अछि। एहि स्तम्भक माध्यमसँ बाल-साहित्यमे श्रीवृद्धि भेल अछि। एकरा अन्तर्गत बालक ओ किशोर वयक उपयोगी सामग्री प्रस्तुत होइत रहल। एहिसँ बाल्यावस्थहिसँ मैथिलीक प्रति प्रेम ओ जिज्ञासा जागृत करबाक प्रयास भेल। एहि स्तम्भक माध्यमसँ 263 निबंध, 2096 कथा, 704 कविता, 3 एकांकी, 3 प्रहसन, 1 उपन्यास, तथा अन्याय 56 सामग्री साहित्य जगतकेँ भेटलैक। विशेष प्रकारक साहित्य-सर्जनाक लाभक संगहि नव वयक पाठक मैथिलीकेँ भेटलैक जे भविष्यक लेल सेहो उपयोगी मानल गेल। एहि स्तम्भसँ मैथिली साहित्यक विकासमे योगदान भेटल अछि।

मैथिली साहित्य जगत्मे स्त्रीगणकेँ लेखन दिशामे प्रवृत्त करबामे 'मिथिला मिहिर' महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कएलक अछि। एकर प्रमाण थिक स्त्रीगण समाज स्तम्भ। एकरा अर्न्तगत सांस्कृतिक ओ सामाजिक जीवनक चित्रण भेल अछि। जीवनोपयोगी विविध पाबनि-तिहारक चर्चा, कथा आदि, विविध प्रकारक पाक-विन्यास किंवा व्यंजन विन्यासक परिचय एहि स्तम्भ सँ भेटैत रहल अछि। एहिमे नारीवर्गक सहभाग सेहो भेटल। अर्थात् एहि स्तम्भक माध्यमसँ नारीवर्ग सेहो मैथिली लेखन दिस अभिरुचि प्रदर्शित कएलन्हि। एहिसँ एक दिस यदि पाठकक क्षेत्रमे व्यापकता आएल तँ दोसर दिस नारीवर्ग लिखबाक प्रेरणा प्राप्त कएलनि। एहि स्तम्भक माध्यमसँ 820 निबन्ध, 829 कथा, 154 कविता, 1 गोट एकांकी तथा अन्यान्य 41 साहित्यिक सामग्री मैथिली भाषा साहित्यकेँ उपलब्ध भेलैक।

'मिथिला मिहिर' पुस्तक समीक्षा स्तम्भक अन्तर्गत अनेक गुण-दोषसँ परिचय करबैत अछि। एहि पुस्तक समीक्षाकेँ विशुद्ध समालोचना नहि कहल जा सकैत अछि। एहि समीक्षा किंवा पुस्तकपरिचयसँ दोहरा लाभ पाठककेँ भेटैत रहलैक। पहिल तँ ई जे पोथीक प्रकाशन तथा अन्य सूचना भेटलैक आ दोसर ई जे ओहि पोथीमे निहित गुण अर्थात् विषयवस्तुक ज्ञान सेहो भेटैत रहलैक। 'मिहिर' मे प्रकाशित पुस्तक-समीक्षा (परिचय)क अन्तर्गत 236 पोथीक समीक्षा प्रस्तुत भेल अछि। आलोचनाक विकासमे पुस्तक समीक्षाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। अन्य भारतीय भाषाक सदृशे मैथिलीमे सेहो पुस्तक-समीक्षा द्वारा आलोचना साहित्यमे श्रीवृद्धि कएल गेल अछि। एहि हेतु 'मिहिर' क मंच प्रशंसनीय भूमिकाक निर्वाह कएलक।

कोनहु पत्रिकाक हेतु ओकर सम्पादकीय महत्वपूर्ण मानल जाइत अछि। प्रायः प्रत्येक पत्रिकाक अपन नीति होइत छैक, अपन विचार होइत छैक, अपन चिन्तन होइत छैक। ई नीति, ई विचार आ ई चिन्तन ओकर सम्पादकीय स्तम्भक माध्यमसँ अभिव्यक्ति पबैत अछि।

'मिहिर' क प्रत्येक अंक एहि अग्रलेखसँ समन्वित रहल अछि जाहिमे नीति ओ नियमसंबंधी बातसँ लए वर्त्तमान युगक ज्वलन्त समस्या सभक प्रति विचार व्यक्त होइत रहल अछि। भाषा आन्दोलन वा मिथिलांचलक अभ्युन्नतिक समस्या, राष्ट्रीय किंवा अन्तर्राष्ट्रिय समस्या सभ पर विचार व्यक्त कएल जाइत रहल। ई अग्रलेख साहित्यिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवनक प्रति लोककेँ साकांक्ष रखबाक प्रयास करैत रहल। एहि प्रकारेँ व्यावहारिक जीवनक प्रति साहित्यक क्षेत्रमे जागरूकता अनबामे ई योगदान देलक अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नि:संकोच भावेँ स्वीकार करए पड़त जे 'मिथिला मिहिर' मे नियमित रूपसँ प्रकाशित भेनिहार सम्पादकीय जन-सामान्यक गतिविधिक सूचक तथा प्रेरक होएबाक अतिरिक्त विशिष्ट रूप सँ मैथिली भाषाक विकासमे यथानुकूल योगदान देलक अछि।

मानव जीवनमे खेलक एक महत्वपूर्ण स्थान अछि। सर्व प्रथम खेलसँ विश्वास, साहस एवं कौशल उत्पन्न होइत छैक। खेलमे जाहि कौशलक प्रदर्शन उत्पन्न होइत अछि ओएह जीवनक समस्यासँ बचबाक हेतु प्रेरक होइत अछि। खेल-कूदसँ शारीरिक लाभ, चारित्रिक विकासक संगहि सामूहिक सम्मिलनक भावना, क्रीड़ा-भावना, मित्रतापूर्ण व्यवहारक भावनाक विकास होइत छैक।

'मिथिला मिहिर' मे नियमित रूपसँ 'क्रीड़ा-जगत्' स्तम्भक अन्तर्गत खेल-कूद सम्बन्धी समाचार-विश्लेषण, सूचना, रिपोर्ताज तथा समाचार प्रकाशित होइत रहल अछि। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रिय खेल-कूद प्रतियोगिताक वर्णन-विश्लेषण एहिमे होइत रहल अछि। एहिसँ सम्बन्ध रखनिहार पाठकवर्गमे ई बेस लोकप्रियता प्राप्त कएलक। पाठकक चेतना जागृत करबाक अतिरिक्त एहिसँ संबंधित साहित्यक निर्माणमे सेहो ई योगदान कएलक अछि।

साहित्यिक पत्रिकाक हेतु सर्वसाधारणक रुचिक सामग्री प्रस्तुत करब अत्यन्त कठिन कार्य मानल जाइत अछि। तथापि लोकप्रियताक लोभसँ 'मिहिर' सेहो एहि दिशामे डेग उठओलक तथा व्यंग्यक हेतु स्थायी स्तम्भ प्रारम्भ कएलक। यद्यपि समय-समय पर एहि स्तम्भक नामकरणमे परिवर्त्तन होइत रहल तथापि कोनो-ने-कोनो नामसँ ई अवश्य विद्यमान रहल अछि। यथा–रुचय तँ सत्त ने तँ फूसि, बहिरा नाचय अपने तालेँ, झामलालक झामा, धर्मधकेलानन्द जीक बलधिंगरो, गोनू झाक चटिसार, अजगुत अनटोटल आदि।

हास्य-व्यंग्यक एहि स्तम्भ द्वारा समाजमे व्याप्त दुर्गुण पर प्रहार करबाक चेष्टा होइत रहल अछि, सेहो अत्यन्त मृदुल भाषा मे। एहिसँ पाठकीय अभिरुचिक संग-संग लोकप्रियता एवं साहित्यक प्रति जनरुचि बढ़ल।

'पाठकीय प्रतिक्रिया' स्तम्भक अन्तर्गत पाठकलोकनिक रुचि-वैचित्र्य तथा सुझाव आदिक समावेश होइत रहल। एहि स्तम्भसँ पाठक, रचनाकार एवं सम्पादकगण साकांक्ष रहि साहित्यिक गतिविधिमे योगदान करैत रहलाह। समस्त मैथिली साहित्य एहि स्तम्भसँ लाभान्वित होइत रहल। 'मिहिर'क एहि स्तम्भ द्वारा पाठकक संख्यामे वृद्धिक संग-संग ओकरामे सहभागी होएबाक भावना भरलक। आ तेँ मैथिली-भाषी साहित्यक विकासमे एकर प्रमुख भूमिका मानल जएबाक चाही।

'मिहिर' यद्यपि विशुद्ध साहित्यिक पत्रिका रहल तथापि ई मैथिलीक बहुविध सेवा कएलक। एहिमे समाचारक हेतु स्तम्भ चलैत रहल। एकरा अन्तर्गत घटनाचक्र, देश-कोश, राष्ट्रीय समाचार, अन्तर्राष्ट्रीय, मिथिलांचल, साप्ताहिक समाचार दर्पण, समाचार समीक्षा आदि शीर्षकसँ स्तम्भ चलैत रहल आ मैथिली-भाषी जन-समुदाय महत्वपूर्ण समाचार किंवा घटनाचक्रसँ अवगत होइत रहल। देश-विदेशक समसामयिक घटनाक अतिरिक्त मैथिली भाषा-साहित्य सम्बन्धी विविध गतिविधिक समाचार सेहो छपैत रहल। विद्यापति पर्व समारोह, भाषा-आन्दोलन, साहित्य-सृजन सम्बन्धी सूचना आदि स्थान पबैत रहल। मिथिलांचल तथा ओहिसँ बाहरक लोक मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति कतेक सजग अछि, ओकर उत्थानक हेतु की चेष्टा करैत अछि आदि समाचार एहिमे प्रकाशित होइत रहल अछि।

'मिथिला मिहिर' सिनेमा स्तम्भक अतर्गत नव-नव सिनेमा सभक परिचय, ओकर समीक्षा आदिक संग-संग ओहिमे भाग लेनिहार कलाकार, हुनकालोकनिक कलाक विश्लेषण सेहो विविध आलेखमे करैत रहल अछि। कथा, निर्देशन, संगीत, गीत, रूप-सज्जा, प्रस्तुति आदि विविध आयामक संबंध मे समय-समय पर विश्लेषण-विवेचन प्रकाशित होइत रहल जाहिसँ प्रौढ़ व्यक्तिक अतिरिक्त युवावर्ग विशेष रूपसँ आकृष्ट होइत रहलाह अछि। 'मिहिर' मे 'फिल्मलोक' शीर्षक (स्तम्भ) प्रचुर लोकप्रिय भेल। एहि स्तम्भक माध्यमसँ प्रदर्शित होइत तथा प्रदर्शित भेनिहार फिल्मक अतिरिक्त निर्माणाधीन फिल्म सभक सूचना सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि। ओकर कलात्मक तथा भावनात्मक महत्वसँ लोक अवगत होइत रहल अछि। दृश्य जगतक क्षेत्रमे नव-नव प्रयोगक ज्ञान लोककेँ भेटैत रहलैक अछि। निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे 'मिहिर' एहि स्तम्भक माध्यमसँ लोकमे चेतना जगबैत रहल तथा तत्संबंधी साहित्य-सृजनक प्रेरणा दैत रहल।

कोनो भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वक लेल स्वतंत्र लिपिक आवश्यकता होइत छैक। मुदा मैथिली भाषाक लिपि 'मिथिलाक्षर' जननिहार बहुत कम गोटे छथि। मिथिलाक्षरक प्रति जन-अभिरुचि बढ़यबाक दृष्टिकोणसँ 'मिहिर' वर्णमाला आ संयुक्ताक्षर ओ मात्रा प्रकाशित करैत रहल। एहि सम्बन्ध मे पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखैत छथि–

"मिथिलाक्षरकेँ पुनरुज्जीवित करबाक दिशामे सेहो एकर योगदान श्लाध्य रहलैक अछि। विश्वविद्यालयीय परीक्षामे मिथिलाक्षरक हेतु जहियासँ 10 अंक निर्धारित कयल गेलैक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

तहियासँ कमसँ कम ई 10 अंक प्राप्त करबाक हेतु बहुतो छात्र थोड़बे सही, परन्तु मिथिलाक्षर सिखबाक हेतु प्रेरित होइत छथि। हुनकालोकनिकेँ सुविधापूर्वक मिथिलाक्षरक ज्ञान प्राप्त करयबाक दृष्टिसँ बहुतो दिन धरि वर्णमाला, तदुत्तर संयुक्ताक्षर ओ मात्रा, तदुत्तर छोट-छोट बात सभक ब्लाक बनबा-बनबा 'मिहिर' बहुत दिन धरि छपैत रहल।''[6] ई काज ओ पं. श्री गोविन्द झासँ लिखाकए, ब्लौक बनबाए तथा ओकरा प्रत्येक अंकमे छापि-छापि कएलक।

मैथिली साहित्यक विविध क्षेत्रमे 'मिहिर'क योगदानक संख्यात्मक विवरण निम्न तालिकासँ स्पष्ट भए जाइत अछि–

निबन्ध	— 5786	निबंधकार	—1080
कविता	— 4745	कवि	—707
कथा	—3187	कथाकार	—626
उपन्यास	— 31	उपन्यासकार	— 22
नाटक	— 13	नाटककार	— 8
एकांकी	— 97	एकांकीकार	— 59
कुल	13859		2502

दोसर शब्द मे कहि सकैत छी जे 2502 साहित्यकारक 13859 सर्जनात्मक रचना 'मिहिर'क माध्यमसँ प्रकाशित भेल।

मैथिलीमे अनेक महिला रचनाकार सेहो अवतरित ओ समाहूत भेलीह। महिला रचनाकारक विधागत विवरण अछि–

कविताक क्षेत्रमे	41,	उपन्यासक क्षेत्रमे	03,
निबंधक क्षेत्रमे	57,	नाटकाएकांकीमे	02
कथाक क्षेत्रमे	49,	कुल	— 152

बाल-साहित्यक विवरण : —

निबंध	263,	उपन्यास	01,
कविता	704,	प्रहसन	03,
कथा	2096,	अन्यान्य	56
एकांकी	03,	कुल	— 3126

स्त्रीगण समाजक अन्तर्गत : —

निबंध	820,	एकांकी	01,
कथा	829,	अन्यान्य	41;
कविता	154,	कुल	_ 184

स्त्रीगण समाज, बाल-साहित्य ओ सामान्य सर्जनात्मक साहित्यक प्रकाशित सामग्रीक कुल संख्या 18830 (अठारह हजार आठ सए तीस) अछि। सर्जनात्मक साहित्यक उपर्युक्त संख्यात्मक विवरणीसँ स्पष्ट अछि जे 'मिहिर' विभिन्न विधामे बहुआयामी योगदान कएलक अछि।

एकर अतिरिक्त 'मिहिर' ह्रस्व पत्र-साहित्य किंवा पत्रात्मक साहित्यक सेहो प्रचलन करएबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कएलक अछि। प्रकाशित एहि प्रकारक अनेक रचना एकर प्रमाण अछि। संगहि जीवनी-साहित्य सेहो एकरा माध्यमसँ गति पओलक। अनेक परिचित साहित्यकारक जीवनीक संग-संग कतिपय अज्ञात किंवा बिसरल साहित्यकारक जीवनी सेहो प्रकाश मे आएल। एतबए नहि, जीवनी-साहित्य लिखबाक परम्पराक प्रचलनक अतिरिक्त तत्संबंधी रचना-विधान पर सेहो प्रकाश पड़ल अछि।

एही क्रममे ई साक्षात्कार-साहित्यक सर्जनामे सेहो गति अनलक। अनेक विषय पर यथा सिनेमा, क्रीड़ा, साहित्य रचना, साहित्यकारक समस्या, भाषा-आन्दोलन, राजनीतिक गतिविधि आदि विभिन्न व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत एवं साक्षात्कारक माध्यमसँ सामग्री आकर्षक एवं प्रभावकारी रूपमे प्रस्तुत कएल गेल।

साहित्यक क्षेत्रमे मार्क्स, फ्रायड आदि मनीषीक विचारधारा जे प्रभाव अनलक तकरा 'मिहिर' पाठकक सम्मुख तटस्थ रूपमे प्रस्तुत करैत रहल। एहि विचारधारासभसँ प्रभावित साहित्यक बिना कोनो भेद-भावक प्रकाशन करैत रहल। एहिसँ नवतावादी साहित्यकार प्रोत्साहन पबैत रहलाह।

तात्पर्य ई जे सर्जनात्मक साहित्यक अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक सामग्रीसँ सेहो मैथिली-साहित्यक भंडारकेँ ई पत्रिका भरैत रहल। आधुनिक जन-जीवनसँ सम्बद्ध परम्परा-प्रचलित एवं नवान्तुक सामग्री मैथिलीकेँ भेटैत रहलैक। स्थापित साहित्यकारकेँ आदर ओ नव रचनाकारकेँ प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन प्रदान करैत रहल।

मैथिली भाषा-साहित्यमे 'मिहिर'क योगदानकेँ मुख्य रूपसँ दू कोटिमे बाँटि सकैत छी–(1) साहित्य-क्षेत्रमे, (2) शैलीक क्षेत्रमे। साहित्यक क्षेत्रमे विभिन्न परम्परित विधा– यथा उपन्यास, कथा, कविता, नाटक, एकांकी, निबंध आदि तथा नवावतीर्ण विधा, यथा पत्र-साहित्य, साक्षात्कार-साहित्य, जीवनी-साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य आदिकेँ यथेष्ट रूपसँ प्रकाशित कएलक।

शैलीक क्षेत्रमे सेहो एकर योगदान अविस्मरणीय रहल। पटनासँ प्रकाशित 'मिहिर' प्रारम्भहिमे वर्त्तनीक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

संबंधमे अपन नीति निर्धारित कएलक तथा ओकर अनुपालन निष्पक्ष रूपसँ करैत रहल। इएह वर्त्तनी किंवा भाषाशैली आइ प्रायः सम्पूर्ण समाज द्वारा स्वीकृत परिगृहीत भए गेल अछि।

निष्कर्ष रूपमे कहि सकैत छी जे 'मिथिला मिहिर' शैलीक विवादकेँ समाप्त कए बहुसंख्यक स्वीकृत शैलीक प्रचलन करएबामे सफल रहल, सर्जनात्मक साहित्यक विपुल राशि प्रस्तुत कएलक, मिथिलाक्षरक बारंबार अभ्यास करओलक, व्यंग्य-रचनाकेँ प्रोत्साहन देलक, महिला रचनाकारकेँ संतोषप्रद संख्यामे प्रस्तुत कएलक, कथाकेँ अभूतपूर्व ढंगसँ परिष्कृत एवं समृद्ध कएलक तथा वैज्ञानिक आलेखादि द्वारा पाठकक अभिरुचिमे वृद्धि कएलक।

संदर्भ

1. *डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'—मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. 123 124.*
2. *डा. दिनेश कुमार झा—मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ 128.*
3. *मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड (प्र. सं. डा. बासुकीनाथ झा, चेतना-समिति, पृष्ठ 82.*
4. *मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृ. 268.*
5. *ओतहि पृ. 307.*
6. *ओतहि पृ. 307-308.*

मिथिलाक सांस्कृतिक लोक-चित्रकला

□ श्री मनोज कुमार मिश्र 'मनु'

प्राचीन भारतक सभ्यता आर संस्कृतिकेँ जीवन्त बना कए रखबामे भारतक लोक-कला अपन महत्वपूर्ण योगदान दैत चलि आबि रहल अछि। एहूमे लोक-चित्रकलाकेँ प्रमुख स्थान छैक। एहि चित्रकलाक संदर्भ आ आधार अलग-अलग भए सकैत छैक। एहिसँ हम मात्र भू आओर भित्ति-चित्र-कलाक चर्चा करब।

वैदिक साहित्यमे अरिपन (भू-चित्रकला)क कोनो निश्चित संदर्भ नहि भेटैत छैक। किन्तु, किछु संदर्भसँ ई अवश्य लगैत छैक जे ताहि समयक लोक एहि कलासँ अपरिचित नहि छल। कतौ ने कतौ ई वैदिकयुगीन ऋषि आर ज्ञानी जनक विलक्षण प्रतिभा आर कलात्मक सृजनात्मकतासँ जुड़ल छल। प्राचीन कालसँ आइ धरि निरंतर चलि आबि रहल वैदिक रेखाकृतिमे मिथिलाक लोक-सांस्कृतिक चेतना आर चिन्तनक रहस्यमय तथ्य संभकेँ चित्र रूपमे स्पष्ट देखल जा सकैत अछि। क्रमशः ई कला शक्ति-संबंधित तन्त्र-शास्त्रसँ जुड़ल आर एहि समय तक ई पूर्ण विकसित भए एकटा निश्चित रूपाकारमे प्रत्यक्ष भए चुकल छल। ईसा-पूर्व तक ई कला अपन पूर्ण विकास पर छल परंतु ओकर बादो लौकिक भेलाक कारण ई स्पष्ट रूपसँ समाजमे अस्तित्वमे रहल। ओना मिथिला-चित्रकला मात्र भू वा भित्ति-चित्रकला तक सीमित नहि छैक। मिथिलाक विभिन्न अनुष्ठान, संस्कार आर अन्य उत्सवमे चित्र-कलाक विभिन्न रूप देखल जा सकैत छैक चाहे ओ पुरहरि-पातिल पर बनल चित्र हो अथवा स्त्रीगणक कपार पर बनल चित्र (जकरा पसाहनि कहल जाइत छैक), सब अपना तरहसँ विशिष्ट होइत छैक।

भित्ति-चित्रक द्वारा घरक सज्जाक परम्परा अत्यंत प्राचीन अछि। आइ जतेक तरहक चित्रकलाक विकास भेल छैक, लगभग ओ सभ टा देवारेसँ कागज, कपड़ा वा धातु पर उतरल छैक। प्रारंभमे राजकीय प्रश्रय प्राप्त ई कला सब कालक्रमेँ व्यावसायिक होइत गेलैक आर उपयोगितावादक घेरामे फँसि गेलैक। दोसर दिस विभिन्न आदिवासीसभक कलाकेँ यदि देखल जाय त' ओकर कलाक परंपरागत स्वरूप यथावत् देखाय दैत छैक। एकर कारण संभवतः ओहि कलाकेँ कोनो एकेटा समाज-विशेषमे प्रचलन वा बिना राज्याश्रयक स्वतः विकास करब थिकैक। आइ मिथिला-चित्रकलाकेँ व्यावसायिक होएबाक पाछु यैह राज्याश्रय क्रियाशील अछि।

मिथिलाक चित्रकला लोक आ शास्त्र दूनूसँ संदर्भित अछि। आब पहिने लोक आ शास्त्रकेँ बूझब उचित होयत। साधारणतया ज्ञान दू प्रकारक होइत छैक। पहिल तँ' लौकिक वा सांसारिक जगत्सँ सम्बद्ध आर दोसर अलौकिक वा दिव्य जगत् सँ सम्बद्ध। वैदिक साहित्य दिव्य जगत्सँ सम्बद्ध ज्ञानक भण्डार थिकैक किएक त एकर कोनो लौकिक रचयिता नहि छैक। बादमे ऋषि, ज्ञानी सभ वेदक व्याख्या कएल, जे शास्त्र अर्थात् जकरा द्वारा शासित कयल जाय, कहौलक। एहि शास्त्र संभक रचना लौकिक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जगत्कें अलौकिक जगतसँ जोड़बाक लेल कयल गेल। एहि प्रकारसँ एहि तीनूक स्थान क्रमशः वैदिक साहित्य, शास्त्र ओ लोक अछि। शास्त्रक आधार आ संदर्भ दूनू लोके अछि। एहि प्रकारेँ लौकिक आ शास्त्रीयमे तात्विक रूपसँ कोनो भेद नहि छैक।

मिथिलाक संस्कृति जतेक प्राचीन अछि चित्रकला सेहो ओकरासँ कम प्राचीन नहि छैक किएक तँ एकर आधार मिथिलाक संस्कृतिये थिकैक। एकर प्रारंभक संबंधमे किंवदन्ती छैक जे मिथिलाक राजा जनक अपन कन्या सीताक विवाहक उपलक्ष्यमे अरिपन चित्र-कलाक एहि वर्तमान परिपाटीकेँ चलौने छलाह। अनुमानतः भित्ति-चित्रकलाक प्रचलन सेहो एतहिसँ भेल होयत। अतः एकर अंतर्वस्तु पौराणिक अछि। अधिकांश विषय रामायण तथा किछु महाभारतसँ लेल जाइत छैक। मिथिलामे शक्तिक उपासना प्राचीन कालसँ चलि आबि रहल अछि। अतः शक्ति सेहो चित्रक विषय होइत छथि। मिथिला-चित्रकलामे प्रत्येक रेखा, बिन्दु आर रंगक कोनो-ने-कोनो महत्त्व अवश्य होइत छैक। मिथिला चित्रकलामे यथार्थ, संस्कृति, कला, जीवन आर समाजक अद्भुत मेल छैक। एतए भू-चित्रकला तंत्रसँ आर भित्ति-चित्रकला अधिकांशतः पौराणिक खिस्सा सभसँ सम्बद्ध छैक।

पुराणसभमे वर्णित चौंसठि कलासभमे अरिपन भू-चित्रकलाक एकटा विशिष्ट रूप थिक। ई गृह्य-सूत्र, शास्त्र तथा निबंधसभमे 'मंडल' संज्ञासँ अभिहित अछि। अरिपनक संदर्भ सबसँ पहिने ब्रह्म-पुराण मे भेटैत छैक। किछु विद्वान एकरा चित्रे मात्र नहि अपितु सम्प्रेषणक साधन मानैत छथि। कहल जाइत छैक जे प्राचीन कालमे विभिन्न दुःख आ कठिनाह स्थिति सभसँ रक्षाक निमित्त एहि चित्रक द्वारा पृथ्वीक आराधना कए शक्तिकेँ जगाओल जाइत छलैन्हि।

कर्मकांडीय शुभ अनुष्ठान सभमे सर्वतोभद्र, स्वस्तिक, षोडशदल, अष्टदल आदि अरिपन एकरे प्रभेद अछि। सर्वतोभद्र आर स्वस्तिकक प्रथा तँ यागादि क्रियासभमे वैदिके कालसँ प्रसिद्ध अछि। मिथिलांचलक स्त्रीगण विभिन्न संस्कार आ पर्वक अवसर पर चित्रित कयल जायवाला अरिपनक पृथक्-पृथक् आकारसँ परिचित छथि। ई चिरंतन संस्कृतिक प्रभावक साक्षात् रूप थिक। एहि कारणसँ एकरा सीखै लेल कोनो विधिवत् दीक्षाक प्रावधान नहि छैक। पुरुखकेँ एहि कलासँ कोनो संबंध नहि होइत छैक जखन कि स्त्रीगण एहि कार्यमे कुशल होइत छथि। अरिपनक आकारमे भिन्नता विभिन्न पर्वसँ संबंधित ओ प्रचलित कथा ओ तथ्यसभसँ संबंध रखैत छैक। जेना पृथ्वी-पूजामे त्रिकोणयन्त्राकार, सत्यनारायण-पूजा मे चतुर्वर्ग साधक, शरदपूर्णिमा-कोजागरामे अष्टदल वा शतदल, छठि पूजामे कमलाकार आदि अरिपन विशिष्ट संकेतसभक कलात्मक वाहक होइत छैक। एहि मे स्थूल जीवनक क्रियाकलाप आ पदार्थसभक संग जीवनक सूक्ष्म अनुभूति एवं आध्यात्मिक धारा प्रदर्शित कएल जाइत छैक।

प्राचीन भारतीय सभ्यता आ संस्कृतिक नेतृत्व करैवाला देवात्माक यन्त्र स्वरूप एहि भू-चित्रकलाक लिखैक परिपाटी कोनो-ने-कोनो रूप मे भारतक प्रायः सब प्रदेशमे चलि आबि रहल छैक। भारतीय लोक-चित्रकलामे अधिकांश जाति चित्रकेँ लेखने कार्य मानैत चलि आबि रहल छैक अर्थात् 'Painting is writing'। एकरा बंगालमे 'अल्पना', महाराष्ट्रमे 'रंगोइ', गुजरातमे 'साथिया', राजस्थानमे 'नन्दना' आ हिन्दी क्षेत्रमे 'रंगोली' आदि नामसँ जानल जाइत छै। एहि सब क्षेत्रमे ई हरदि, कुंकुम आ केसरिक द्वारा बनाओल जाइत अछि जखनकि मिथिलामे पिठारसँ चित्रित रेखा पर सिन्दूर बिन्दु लगा कए ई बनाओल जाइत अछि। ई रेखा दोहराओल वा तेहराओल होइत छैक। तीन वा दू रेखा वाला चित्र शुभ संस्कारक समय आ एक आँगुरक सहायतासँ चित्र (एकल रेखा) अशुभ वा शोकसंस्कारक समय होइत छैक। ककरो मृत्युक द्वादशाह दिन आँगनक दक्षिण भागमे बामाँ हाथक मात्र एक आँगुरक सहायतासँ एकटा वृत्त बनाओल जाइत छैक। ई वृत्त परब्रह्मक सूचक छैक। एहीमे सृष्टि तथा विनाश होइत छैक। अंतिम लक्ष्य एही शून्यकेँ प्राप्त करब थिक। एहि प्रकारसँ ई चित्र सब गूढ़ तात्विक चिंतनसँ सम्बद्ध छैक।

वैज्ञानिक तत्व पर आधारित मिथिलाक प्रत्येक व्यावहारिक कार्यमे सामाजिकताक संग धर्मक रूपमे आध्यात्मिक भाव अन्तर्निहित छैक। अनुष्ठान सम्पन्न भेला पर एकरा मेटाए देल जाइत छैक जे संभवतः सृष्टि आ विनाशक सूचक छैक। ई सब चित्र स्थान आ काल (space and time) सँ संचालित होइत छैक। कोनो आकृति कोनो दिशामे कोनो स्थान पर, कोनो समय मे नहि बनाओल जा सकैत छैक, ओकरा लेल दिशा, समय आ स्थान निर्धारित छैक।

भित्ति-चित्रक इतिहास सेहो अत्यंत प्राचीन छैक। संभवतः मानव जखन समाज बनौनाइ प्रारंभ केने होयत, तखनहिसँ गुफा सभक देवार आ शिला सब पर चित्र लिखबाक परिपारीक प्रारंभ भेल होयतैक। भारतमे भीमबेडकाक शिला-चित्र आ आस्ट्रेलियाई आदिम जातिसभक द्वारा पूजित पवित्र गुफा-चित्रक इतिहास हजारो वर्ष पुरान अछि। भारतमे अजंता आ चीनमे तुंगहानक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गुफा-चित्र एहि चित्रकलाक चरम विकासक बिन्दु थिक। एही क्रममे परम्परागत रूपसँ चलि आबि रहल मिथिला-चित्रकला कखन अस्तित्वमे आएल ई ठीक-ठीक कहब तँ असंभव अछि, परंतु जाहि प्रकारक किंवदंती अरिपनक संबंधमे छैक, संभव अछि एहि चित्रकलाक प्रारंभ सेहो ओही कालसँ भेल होअए आर्थात् राजा जनक अपन पुत्री सीताक विवाहक उपलक्ष्यमे कोहबरमे वर-कनियाक सुरक्षा आ कल्याणक निमित्त ई चित्र बनबौने होएताह। आइयो एहि चित्रकलाक महत्त्व विवाहक अवसर पर सर्वाधिक होइत छैक। एहिमे सांकेतिक रूपसँ सूर्य, चन्द्रमा, नवग्रह, बाँस, कुमुदिनीक पात, सुग्गा, मोर, कछुआ, पटिया, वर-कनिया आ कोबरक चारू दिशामे रक्षाक निमित्त बनल नयना-योगिनीक अपन विशिष्ट अर्थ आ महत्व छैक।

एहि प्रकारसँ नागपंचमीमे विभिन्न प्रकारक साँप वा देवोत्थान एकादशीमे शंख, चक्र, गदा, पद्म, हरबाह, संदूक, सूप, बखारी, खड़ाओँ, बाढ़नि इत्यादि बहुत चित्र सब बनाओल जाइत छैक। एखन धरि एहि कला पर स्त्रीगणक एकाधिकार छल। परंतु व्यावसायिक भेलाक कारणेँ पुरुष चित्रकारसब सेहो तूलिका पकड़ि लेल अछि। मिथिलाक घरसबक साज-सज्जामे सेहो एहि चित्रकलाक योगदान रहल छैक। देवार हो कि तुलसी चौरा, देहरि हो कि आँगन सब जगह पर लाल, हरियर, लाल, पीयर आदि चटक-मटक रंग सभसँ भरल ई चित्रसब दर्शनीय लगैत छैक।

मिथिला-चित्रकला, जे मधुबनी चित्रकलाक नामसँ प्रचलित भेल अछि, ओकर आधुनिक इतिहास सत्तरिक दशकसँ प्रारंभ होइत छैक। स्वर्गीय बाबू ललित नारायण मिश्र एहि चित्रकलाक विकासक लेल महत्वपूर्ण काज कयल। मधुबनी आ दरभंगा स्टेशनपर एहि चित्रकलाक उत्कृष्ट रूप देखल जा सकइत अछि। ओहिना कतेको व्यक्तिकेँ मोन होएतनि, स्वतंत्रताक रजत जयन्तीक अवसर पर समस्तीपुरसँ खूजल जयन्ती-जनता एक्सप्रेस गाड़ीक डिब्बासभमे मधुबनी चित्रकला लगाओल गेल। मधुबनी बिहारक एकटा पिछड़ल इलाका थिक। सन् 1965-66 मे मधुबनीकेँ राहत क्षेत्र घोषित कयल गेल। एही संदर्भमे हैन्डलूम हैन्डीक्राफ्ट एक्सपोर्ट कार्पोरेशनक अध्यक्षा पुपुल जयकर मधुबनी आर ओकर आस-पासक गाम सबमे घुमली आर ओहिठामक चित्रकलाकेँ देखलैन्ह। निछक्क सादगी, भोलापन आर रंगक सुंदर संयोजन वाला एहि कलासँ ओ बहुत प्रभावित भेलीह। वस्तुतः ओही समयसँ एहि कलाक विकास-यात्रा प्रारंभ भेल। ई कला आब देबाल, तुलसीचौरा, देहरि आ आँगन तक सीमित नहि रहि गेल, ई कागज आ कपड़ा पर उतरि आयल। 1985 मे फ्रांसमे 'भारत महोत्सव' भेलाक बाद ई कला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति पएबाक विशेष अवसर पओलक। एहिसँ पूर्वहुँ विदेशी कलाप्रेमी सबकेँ एहि चित्रकलासँ पर्याप्त सम्पर्क रहैन्हि। एहि प्रसिद्धिक बादो एहिमे मिथिलांचलक गाम अपन माटि-पानि सहित जीवित अछि। ग्रामीण तत्त्वक संग मिथिलाक चिन्तन, रहस्य आ ज्ञाने एहि चित्रकलाक पूजी थिकैक। अपन एही पूजीक बल पर ई पाँच पद्मश्री प्राप्त कए क' चित्रकलाक क्षेत्रमे अपन गौरवपूर्ण इतिहास बना लेलक अछि। मधुबनी चित्रकला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आइ फैशन बनि गेल अछि। ड्राइंग रूम कल्चरक एक सहयोगी उपादान बनि गेल अछि।

प्रारंभमे एहि चित्र-लेखनमे प्रयोग कयल जाय वाला रंग निर्माण मिथिलांचलक स्त्रीगण स्वयं करैत छलीह। ई रंग प्राकृतिक होइत छलैक जे अनेक तरहक गाछक छाल, फल-फलहरी, पात, जड़ि आदिकेँ मिला कए प्राप्त रंगकेँ बकरीक दूधमे घोरि कए तूरक फाहासँ अथवा कटकी पर कपड़ा लपेटि कए ओकर तूलिकासँ घरक देवाल पर लिखल जाइत छलैक। आब कृत्रिम रंगक चलनसँ प्राकृतिक रंगक प्रयोग बहुत कम भए गेल छैक। वास्तवमे ई अधिकाधिक धन कमएबाक इच्छाक परिणाम थिक।

मधुबनी मिथिलांचलक हृदय-क्षेत्र थिक। ओकर लग-पास जितवारपुर, राँटी, मँगरौनी, पिलखवाड़, सौराठ, सरिसो-पाही, कोइलख आदि प्रसिद्ध गाम सभक अतिरिक्त औरो गाम सभमे एहि कला सँ संबंधित कलाकार दिन-राति एकरे सेवामे लागल छथि। जितवारपुर जे एहि कलाक गढ़ मानल जाइत अछि ओत' 'सेवा मिथिला' नामक एकटा संस्था छैक। ओहि संस्थाक मुख्यालय आब मधुबनीमे छैक। एहिमे लग-पासक गामक स्त्रीगण विशेष कए विधवा निराश्रित प्रशिक्षणक नाम पर दिन-भरि चित्र-लेखनक कार्य करैत छथि। एहि कलामे नवीनीकरणक प्रक्रिया एतहिसँ प्रारंभ भए जाइत छैक, किएक तँ एकर विधिवत् प्रशिक्षणक व्यवस्था नहि रहैक। 'सेवा मिथिला' मे कार्यरत महिला सबकेँ अत्यंत न्यून वेतन देल जाइत छन्हि। ई सब कमे पारिश्रमिक पर कार्य करबाक लेल विवश छथि किएक तँ एहिमे अधिकांश विधवा लोकनि छथि जिनका एकर अतिरिक्त आन कोनो सहारा नहि छनि तथा प्रशिक्षणक कोनो अवधि निर्धारित नहि छैक। 'सेवा मिथिला'क अतिरिक्त बहुतो आन संस्था सब एहि कलाक व्यवसायीकरणमे अग्रसर अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिला-चित्रकलामे किछु विशिष्ट चित्रकार सब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपन परिचय बनौले अछि । जेना कि कहल अछि, मिथिला-चित्रकला मुख्यतः स्त्रीगणसब बनबैत छलीह, परंतु व्यावसायिक भए गेलाक पश्चात् किछु पुरुष कलाकार सेहो एहि दिशामे आगू बढ़लाह अछि । अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला कलाकार सभमे सीता देवी, शांति देवी, गंगा देवी, महासुंदरी देवी, जमुना देवी, बौआ देवी, जगदम्बा देवी, गोदावरी देवी आदिक नाम श्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित अछि ।

पद्मश्री तथा विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारसँ सम्मानित वयोवृद्धा सीता देवी कतेको बेर अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि देशक यात्रा कए चुकलि छथि । 1972 मे पहिल बेर ओ राष्ट्रीय हस्तशिल्प प्रदर्शनीक संदर्भमे जखन दिल्ली आइलि छलीह त हुनक कलाकेँ देखि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी हुनकासँ अत्यंत प्रभावित भए सम्मानित कएल । ओहिना 1986 मे बर्लिन (तत्कालीन पूर्व जर्मनीक राजधानी) मे ओहिठामक तत्कालीन चांसलर एरिक होनेकर तन्मयतापूर्वक चित्र बनबैत सीता देवीसँ बहुत प्रभावित भेलाह आओर व्यक्तिगत रूपेँ हिनका सम्मानित कयलथिन्ह । वास्तविकता ई अछि जे सीता देवी मिथिला-चित्रकलामे सम्प्रति सबसँ प्रसिद्ध नाम अछि ।

एही गामक बौआ देवी, चंद्रकला देवी, शांति देवी, जमुना देवी, जगदम्बा देवी सब विदेशमे जा कए अपन कलाक प्रदर्शन कए चुकलि छथि । शिवन पासवान आ शांति देवी भारत सरकारक दिस सँ पहिल बेर 1987 मे इटली आर अमेरिका यात्रा कएल । ओकर बाद विदेशी व्यापारी सब स्वतः आबए लागल आर बिचौलियाक द्वारा कलाकृतिक बिक्री होअय लागल । 1983 मे शांति देवीकेँ सोनिया गाँधी एहि कलाक विकासमे योगदानक वास्ते 25 हजार टाका पारितोषिक स्वरूप भेँट कएने छलीह ।

वयोवृद्धा महासुंदरी देवीक ओहिठाम आइ तक पच्चीस देशक लोक आबि चुकल अछि । 1960 मे पहिल बेर हुनक चित्र अखिल भारतीय हस्तशिल्प प्रदर्शनीमे प्रदर्शित भेल छल । हिनक अनेक चित्र जापानक तोकामाकी शहर मे 1980 मे बनल 'मिथिला संग्रहालय' मे सुरक्षित अछि । 1981 मे हिनका तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार भेटलनि । अनेक बेर जापान आर मॉरिशस आदि देशक यात्रा कए चुकलि महासुंदरी देवीकेँ जापान सरकार जापानी नागरिकता देबाक प्रस्ताव कएने छल, परंतु जननी जन्मभूमिक प्रति समर्पित महासुंदरी देवी एहि प्रस्तावकेँ स्वीकार नहि कएल ।

मिथिलाक ई सम्मानित चित्रकार, कलाकारसब आर्थिक दृष्टिसँ अत्यंत लटल छथि आ उपरसँ शोषण होइत छनि । प्राप्त सम्मानहुकेँ रखैक लेल उचित साधन नहि छनि । एहिमे केओ पढ़ल-लिखल नहि छथि, मात्र किछु गोटेकेँ अक्षर ज्ञान अवश्य छनि ।

कलाक व्यावसायिक भए गेलापर परम्परागत कलाकारिता मे जेँ त्रुटि आब' लगैत छैक, तेँ मिथिला-चित्रकलाक विषय पौराणिके नहि रहि गेल छैक, अपितु आधुनिक विषय पर सेहो तूलिका उठय लागल छैक । कोनो तरहक नव चिन्तनकेँ विचारपूर्वक ग्रहण करब उत्तम होइत छैक परंतु एहिसँ परम्परागत चित्रक वैशिष्ट्यक समाप्तिक भय अवश्य बनल रहैत छैक । प्राकृतिक रंगक निर्माणक कला हो कि तूरक फाहासँ कुच्ची (तूलिका) बनेबाक कला, सबटा लुप्त भए रहल छैक । प्राकृतिक रंगक स्थान आब कृत्रिम रंग आ तूरक फाहाक स्थान आब कृत्रिम तूलिका लए लेलक अछि । कलामे आधुनिक तत्वकेँ अपनेलासँ इएह होयत जे लोक-कलारूपी गाछक मात्र ढूँठ भरि रहि जायत । चित्र-निर्माणक संदर्भक सेहो क्षय भए रहल छैक । एकर शास्त्रीय स्वरूपसँ सेहो बहुत कमे लोक परिचित छथि । पश्चिमी सभ्यतासँ प्रभावित लोक अपन परंपरा आ संस्कृति विस्मृत कएने जा रहल छथि ।

कला जखन फैशन बनि जाइत छैक तँ ओकर परिणामो ओही तरहक होइत छैक अर्थात् किछु समयक बाद ओ पुरान पड़ि जाइत छैक आ लोक ओकरा त्यागय लगैत छैक । सबसँ गम्भीर बात त' ई अछि जे आधुनिताक प्रभावसँ कलाक मूल रूपक सुरक्षाक खतरा बनल रहैत छैक ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाक ऐतिहासिक स्थल बलिराजगढ़

□ डा. श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मिथिलांचल भारतक एकटा विशिष्ट सांस्कृतिक जनपद अछि । पौराणिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक साक्ष्यसभक अनुसारेँ प्राचीन विदेह जनपदक उत्तरमे नेपाल, पूर्वमे कौशिकी, दक्षिणमे गंगा एवं पश्चिममे गंडक प्रवाहित अछि । मिथिला एहि विदेह जनपदक राजधानी नगर छल । बौद्ध जातक-साहित्यक अनुसारेँ विदेहक विस्तार तीन सए योजन एवं मिथिलाक सात योजन धरि छल । छठम-सातम शताब्दी धरि एहि मिथिला (राजधानी) नगरक भौतिक अस्तित्व प्रायः बाँचल छल । आइ ओकर कोनो भौतिक साक्ष्य अवशिष्ट नहि अछि । संभवतः ओ कोसी, कमला, तिलजुगा आदि नदीसभक प्रवाहमे भसिया गेल हो, भथि गेल हो अथवा अन्यत्र भूगर्भस्थ हो जकर निदान आजुक मिथिलांचलक व्यापक पुरातात्विक सर्वेक्षण ओ उत्खन्नसँ भए सकैछ । प्राचीन साहित्यसभमे मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवक जतेक अंतःसाक्ष्यसभ उपलब्ध छैक ओकर सत्यापन पुरावशेषसभसँ सहजेँ भए सकैछ ।

कवीश्वर चन्दा झा, एल. एस. ओ' मैली, डी. आर. पाटिल, प्रो. आर. के. चौधरी आदि विद्वान्लोकनि एहि भूभागक सांस्कृतिक पुरास्थल सभक विस्तृत उल्लेख कएने छथि। यथासमय किछु ऐतिहासिक महत्वक स्थलसभक प्रारंभिक उत्खनन कए मिथिलांचलक सांस्कृतिक वैभवकेँ अभिप्रमाणित करबाक प्रयास कयल गेल, जाहिसँ नीक संकेतसभ प्राप्त भेल छैक । एहि क्रमेँ वज्जी-विदेह जनपदक सांस्कृतिक केन्द्र वैशाली तँ सत्यापित भए प्रकाशमे आबि गेल मुदा ओहिसँ प्राचीन विदेह जनपदक सांस्कृतिक केन्द्र मिथिला एखनो धरि प्रकाशसँ वंचिते अछि । उपेन्द्र झा अपन बौद्धिक सामर्थ्य धरि मिथिलापुरीक अभिज्ञानक लेल लौरिया-नन्दनगढ़, कटरा, जनकपुर आदिक सर्वेक्षण कयलनि। पुरातत्व-विभाग दिससँ बलिराजगढ़ ओ कटराक प्रारंभिक उत्खनन सेहो कयल गेल । मुदा मिथिलांपुरीक अभिज्ञान बाँचले अछि । पुरातात्विक सर्वेक्षण. उत्खनन एवं ओहिसँ प्राप्त साक्ष्यसभक अभावेँ मिथिलांचलक प्राचीन इतिहासक कैकटा अध्याय एखनो खँड़हरसभमेँ भौतिआएल अछि आर इतिहासकारलोकनि भटकि रहल छथि । एहि स्थितिमे हमर ध्यान स्वतः बलिराजगढ़, माधोपुरगढ़ आदि दिस चलि जाइछ । प्रारंभिक सर्वेक्षणक अनुसारेँ प्रथम दृष्ट्या बलिराजगढ़ निःसंदेह सांस्कृतिक मिथिलांचलक एक भव्य ओ विशाल राजधानी नगर छल ।

बौद्ध जातकमे विदेह जनपदक राजधानी-नगर मिथिलाक भव्य अंकन भेल अछि । *महाजनक जातक, महाउम्मग्ग जातक* आदिक अनुसारेँ राजधानी-नगर मिथिला तीनटा जलपूरित गढ़खाइ एवं बेस मजगूत परिखासभसँ घेराएल छल । एहि राजनगरक गगनचुम्बी महल, अटारी, चौरस राजपथ. चौकसी बुर्ज, दीर्घद्वार, उद्यान ,भवन, नयनाभिराम पोखरि. वन-उपवन आदिसँ सुशोभित छल । मुदा पुराविद् लोकनि एहि तथ्यसभकेँ गंभीरतासँ नहि लेलनि । एहि संदर्भमे माधोपुरक गढ़ एवं बलिराजगढ़क विशाल क्षेत्रक सर्वेक्षण ओ पुरातात्विक उत्खनन आवश्यक भए गेल अछि । वैदिक, बौद्ध ओ जैन साहित्यमे एहि भूभागक सांस्कृतिक वैभवक विस्तृत उल्लेख भेल अछि ।

माधोपुरक गढ़ तिलजुगा नदीक किछेरमे लगभग पचास एकड़मे पसरल अछि । नदीक कटानसँ एहि गढ़क सुदृढ़ परिखा, दीर्घद्वार, भवन आदिक अवशेषसभक अतिरिक्त ई. पू. छठम शताब्दक आहत मुद्रा, पात्रखंड आदि प्राप्त भेल छैक । बलिराजगढ़ मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमंडलक अंतर्गत पड़ैत अछि । एहि गढ़क क्षेत्र लगभग साइे तीन सए बीघामे पसरल अछि । पुरातत्वक दृष्टिएँ किछु अतिक्रमणकेँ छोड़ि अधिकांश सुरक्षित अछि । एहि गढ़क अंतसमे मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवक अवशेषसभ एखनो संरक्षित अछि । आवश्यकता अछि ओकरा उद्धार कए प्रकाशमे आनब । ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिएँ मिथिलांचल जतबे गरिमामय ओ समृद्ध अछि, पुरातात्विक सर्वेक्षण ओ उत्खननक दृष्टिएँ ओतबे उपेक्षितो ।

विदेह माधवसँ लए कए दाशरथि राम धरिक पूर्वाभिमुखी अभियानसँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे आर्यलोकनि एहि जनपदमे पश्चिमसँ गंडक पार कए पूब दिस आयल छलाह । गंडक क्षेत्रक लौरिया नंदनगढ़ (पश्चिम चंपारण) क्षेत्र आर्यलोकनिक पूर्वामुखी वैदिक संस्कृतिक प्रस्थान-बिन्दु छल । पूर्वी चंपारणक वेदीवन, सीताकुंड ओ सारणक चिरानसँ लए कए वैशालीक चेचर धरि एहि तरहक पुरावशेषसभ प्राप्त भेल छैक । पुरातात्विक अन्वेषणसँ सेहो एहि तथ्यसभक पुष्टि भए गेल छैक । माधोपुर ओ बलिराजगढ़सँ सेहो एखन धरि मौर्य, शुंग ओ कुषाण काल धरिक पुरावशेषसभ आरंभिके प्रयाससँ भेटि गेल अछि । तदनुसार बलिराजगढ़ आधुनिक मिथिलांचलक सांस्कृतिक वैभवसँ सम्पन्न एकटा अति महत्वपूर्ण राजनगर छल, ई संभावना नकारल नहि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जा सकैछ । *महाजनक* ओ *महाउम्मग्ग* जातकमे मिथिलाक सुनियोजित नगर-योजना एवं भव्य स्थापत्यक तथ्यसभ प्राप्य अछि। *महाउम्मग्ग जातकक* अनुसारेँ मिथिलापुरी तीनटा जलपूरित गढ़खाइसभसँ आवेष्टित छल । बलिराजगढ़ सेहो एहि तरहेँ आवेष्ठित अछि, मुदा माधोपुरक गढ़ नहिं। आर ओकर आकार सेहो छोट छैक । यद्यपि दुनू गढ़क संरचना ओ प्राप्त पुरावशेष सभ समकालीने अछि । आधुनिक मिथिलांचलक माधोपुर, बलिराजगढ़ एवं मंगलगढ़ तीनू समकालीने मानल जाइछ, जाहिमे बलिराजगढ़क महत्व सर्वाधिक अछि । बलिराजगढ़ झंझारपुर रेलवे स्टेशनसँ तीस किलोमीटर उत्तरमे अवस्थित अछि ।

महाकवि चंदा झा विद्यापतिकृत *पुरुषपरीक्षाक* भाषांतरक क्रमेँ बलिराजगढ़क परिचय ओ इतिहास विषय सभक प्रसंगवश संकलन कयने छथि। सन 1907 मे एल. एस. ओ,. मैले दरभंगा जिला गजेटियरमे बलिराजगढ़क एक चर्च कयने छथि। पश्चात् डी. आर. पाटिल महोदय बिहारक पुरास्थल सभक सर्वेक्षणात्मक अध्ययनक क्रमकेँ प्रो. आर. के. चौधरी, बी. एस. झा, पं. सहदेव झा, डा. शिव कुमार मिश्र, आदि आगाँ बढ़ौलनि। मुदा ललित नारायण मिश्र मिथिला विश्वविद्यालय बलिराजढ़ विषयक प्रस्तावित सेमिनारक आयोजनकेँ क्रियान्वित नहि कए सकल। बलिराजगढ़क उत्खनन, सांस्कृतिक उन्नयन, ऐतिहासिक विवेचन एवं सौन्दर्यीकृत विकासक लेल सर्वश्री हरिकांत झा, रामलखन झा बेस उत्साही छथि ।

चंदा झा बलिराजगढ़क सम्बन्ध महाभारत-कालसँ मानैत छथि । स्कंदपुराणक चंद्रवंशक कन्या पद्मावती ओ सौवल्य मुनिसँ उत्पन्न वंशज यदुसँ लए कए बलिराज धरि बीसटा राजा लोकनिक वंशावली प्राप्त होइछ। चंदा झा एहि गढ़क सम्बन्ध स्कंद पुराणक एहि बलिराजसँ मानैत छथि। एहि गढ़ सम्बन्धी कैकटा जनश्रुति सेहो प्रचलित छैक। एकटा जनश्रुतिक अनुसार एहि गढ़क राजा बलि विरोचनक पुत्र छलाह जनिकासँ भगवान विष्णु वामनक रूपेँ तीन डेग पृथ्वीक याचना कयने छलाह।

दरभंगा जगेटियरक अनुसार एहि शताब्दक प्रथम दशकमे बलिराजगढ़क देवाल ढहलो अवस्थामे दस फिट ऊँच बाँचल छलैक। गढ़क चारू कोन पर एक-एकटा बुर्जक अवशेष छलैक, जे चालीस फीट ऊँच छल। मुदा आजुक स्थिति ओहन नहि छैक। गढ़क परिखा प्रायः बारह फीट चाकर छैक। नवीन सर्वेक अनुसार गढ़क रकबा एक सए पैंतालिस एकइ निर्धारित कयल गेल अछि। गढ़क कोन पर आब बुर्ज नहि छैक ।

एहि गढ़क ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक महत्वकेँ देखैत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं राज्य सरकारक पुरातत्व विभाग दिससँ यथासमय आंशिक रूपेँ पुरातात्विक उत्खनन कयल गेल छल, जाहिसँ प्राप्त पुरावशेषसभ मौर्य, शुंग ओ कुषाण कालक छलैक। गढ़क परिखाक आधारनाप पाँच मीटर पन्द्रह सेंटीमीटर चाकर छैक। पजेबा सभसँ बनल एहि परिखाक दुनू कात पजेबा ओ बीचमे माटि भरल छैक। उत्खननसँ रेडवेयर एवं एन. वी. पी. क रंग-विरंगक पात्रखंडसभक अतिरिक्त शुंग कालक सर्वांग सुन्दर मृण्मूर्ति सभ प्राप्त भेल अछि (किछु मूर्ति सभक चित्र 'वैदेही' दिस. 1989 मे प्रकाशित) जाहिसँ प्राचीन विदेह जनपदक सामाजिक, सांस्कृतिक ओ आर्थिक जीवन पर नीक प्रकाश पड़ैत अछि। माटि ओ पाथरक मनका, छठम शती ई. पू. क ताम्रमुद्रा, हड्डीक बनल कलावशेष, माटिक गोली आदि सभ सेहो प्राप्त भेल अछि । गढ़क परिसरमे भवन-स्थापत्यक अलावे एकटा प्राचीन मंदिरक वास्तु अवशेष सेहो पाओल जाइछ जकर अस्तित्व पालयुग धरि निसंदेह बाँचल छलैक। मिथिलाक पंजी-प्रबंधमे हरियम्बे बलिराजपुर मूलक ब्राह्मणक वंश-परंपराक उल्लेख सेहो भेटैत अछि । गढ़क लगपासमे बलिराजपुर, मिसरौलिया, रमनीपट्टी, फुलवरिया, खोजपुर आदि गामसभ सेहो ऐतिहासिक महत्वक छैक।

अतः आइ मिथिलांचलक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक ओ पुरातात्विक गरिमासँ सम्पन्न बलिराजगढ़क पुरातात्विक उत्खनन ऐतिहासिक मूल्यांकनक अतिरिक्त पर्यटनक दृष्टिसँ सौन्दर्यीकृत विकास आवश्यक छैक ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिलीक व्रतकथा : सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति

□ डा. श्री ताराकान्त मिश्र

व्रतमस्ति महापुण्यं स्वर्गे भुवि च दुर्लभम्,
तव स्नेहान् मया विप्र ! प्रकाशीक्रियतेऽधुना ।
सत्यनारायणस्येदं व्रतं सम्यग् विधानतः,
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमालभेत् ।

–स्कन्दपुराण, रेवा खंड ।

एक समय देवर्षि नारद विष्णुलोक गेलाह । ओहिठाम ओ शंख-चक्रधारी, वनमाला-विभूषित, शुक्लवर्ण चतुर्भुजी भगवान् नारायणकेँ देखि हुनक स्तुति करए लगला आ' तत्पश्चात् जिज्ञासा कएल–हे भगवन् ! मृत्युभुवनमे सब लोक अपन पापकर्मक फलस्वरूप अत्यन्त कष्ट भोगि रहल अछि । हुनका लोकनिक कष्ट कोना दूर होएतनि से हम अपनेक मुखसँ सुनए चाहैत छी ।

देवर्षि नारदक प्रश्न सुनि भगवान् प्रसन्न होइत बजलाह– हे महामुने ! एकटा एहन महापुण्यप्रद व्रत अछि जे प्रायः स्वर्ग आ मृत्युलोकमे दुर्लभ अछि । हे ब्राह्मण ! अहाँक स्नेहवश हम ओकरा प्रकाशित कए रहल छी । ओ महापुण्यप्रद व्रत थिक 'सत्यनारायणव्रत', जकरा सविधि कएलासँ मनुष्य एहि लोकमे सुख भोगि परलोकमे मोक्ष प्राप्त करैत अछि ।

उपरिलिखित श्लोकक अनुशीलन-विश्लेषण कएलासँ व्रतक महात्म्य स्वतः परिलक्षित भए जाइछ । षष्ठीव्रतसँ संबंधित एक श्लोकमे कहल गेल अछि–

षष्ठीव्रतं च केचित् करिष्यन्ति समाहिताः ।
दुःखदारिद्र्यकुष्ठादिरोगनाशो भविष्यति ॥

–सूर्यषष्ठीव्रतकथा, श्लोक 22.

श्लोककारक तात्पर्य ई जे षष्ठीव्रत जँ समुचित ढंगसँ कएल जाय तँ दुःख-दारिद्र्य तथा कुष्ठ आदि रोगसँ मनुष्यकेँ मुक्ति भेटि जाइछ ।

ई तथ्य प्रायः सर्वविदित एवं सर्वमान्य अछि जे समस्त भारत देशक सदृश मिथिलांचल एक धर्मप्राण क्षेत्र थिक । तेँ एहिठामक बहुत रास लोककथा, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ आओर आराधना उपासना केर पुनीत भावनासँ ओतप्रोत अछि । विवेचन-सौकर्य केँ दृष्टिपथमे राखि मैथिली व्रतकथाकेँ सामान्यतः धर्मकथा, नीतिकथा, चमत्कारकथा, हास्य-विनोदकथा, प्रेमकथा, सामाजिककथा, बुझौअलिकथा, लघुछन्दकथा आदि विभिन्न कोटि मे विभिक्त कएल जा सकैछ ।

धर्मकथाक अंतर्गत ओहि लोककथाकेँ समाविष्ट कएल जाइछ जकर कथन आ' श्रवण कोनो धार्मिक अभिप्रायसँ कएल जाइछ । व्रत एवं पाबनि-तिहारक कथा, माहात्म्यकथा, पौराणिक कथा आदि केर अंतर्भाव एहि कोटिमे कएल जा सकैछ । एहि दृष्टिसँ छठि व्रतकथा, जितिया व्रतकथा, सत्यनारायण व्रतकथा, शिवरात्रिव्रतकथा, कृष्णजन्माष्टमी व्रतकथा आदि एहि वर्गक प्रमुख एवं लोकप्रिय व्रतकथा थिक ।

ओना तँ मिथिलामे विभिन्न प्रकारक लोककथाक अपरिमित सागर उद्वेलित होइत दृष्टिगोचर होइछ परंच व्रतक कथाक संख्या सेहो अल्प नहि । स्थानविस्तारक भयसँ सम्पूर्ण व्रतकथाक विवेचना एहि लघु निबंधमे संभव नहि तेँ किछु प्रधान आओर लोकप्रिय व्रतकथा मात्रक मीमांसासँ संतोष करए पड़त । एहि वर्गक व्रतकथाक सामान्य विलक्षणता ई जे एकरा माध्यमसँ आबालवृद्धवनिताक मनोरंजनक अतिरिक्त जनसमुदायक धार्मिक एवं आस्तिक विचारधाराक ज्ञान होइछ । संगहि संग एहि भूखंडक पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आओर कलात्मक अभिरुचिक अवधारणाक अवगति सेहो होइछ ।

'व्रत' अनेकार्थक शब्द थिक । एहि शब्दक प्रयोग एक दिस उपवास अथवा निराहार रहि अभीष्ट आराध्यदेवक समीप अवस्थित भए हुनक अर्चन-वंदन करबाक भावक द्योतक थिक तँ दोसर दिस प्रण, प्रतिक्षा एवं निज आराध्य द्वारा प्रदिर्शित पथ पर चलबाक संकल्पक परिचायक । संक्षेपमे कहल जा सकैछ जे व्रत-उपवासक प्रमुख उद्देश्य शारीरिक/आत्मिक शुद्धि आओर आध्यात्मिक शक्तिक उपलब्धि थिक ।

सर्वविदित अछि जे छठि मिथिलाक एक प्रमुख पाबनि थिक । एकर प्रारंभ कार्तिक शुक्ल षष्ठी तिथिसँ होइछ । तेँ ई 'छठि' कहल जाइछ । ई बड़ नियमनिष्ठाक भावनि होइछ । सामान्यतः एकाध मास पूर्वहिसँ लोक एकर तैयारीमे लागि जाइछ । छठि कएनिहारि महिला निर्धारित छठि (षष्ठी) तिथिसँ तीन दिन पहिनहिसँ नियमानुसार आनुष्ठानिक कर्मक श्रीगणेश कए दैछ । चौठि तिथिकेँ माछ-मड़ुआ आदिक त्याग करैछ, पंचमीक तिथि खरना केँ दिन भरि उपवास राखि रातिमे पायस बना प्रसाद रूपमे ओकरा ग्रहण करैछ । षष्ठी तिथिकेँ सायंकालीन अस्ताचलगामी सूर्यकेँ अर्घ प्रदान करैछ; पुनः सप्तमी तिथिकेँ प्रातःकाल उदयाचलासीन सूर्यकेँ अर्ध दए एहि पावनिक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

विसर्जन करैछ। सूर्यकेँ अर्घ कोनो जलाशय अथवा नदीक जलमे स्नान कएलाक पश्चात् अर्घ देनिहारि महिला समर्पित करैछ।

पारणा अथवा सप्तमी दिन दीनानाथ दिनकरकेँ अर्घ देलाक उपरान्त अर्घ देनिहारि सब स्त्रीगण एक ठाम एकत्र होइछ। ओही बीचसँ कोनो महिला सबकेँ छठि परमेश्वरीक कथा कहैछ। कथा सुनलाक उपरान्तहि सब स्त्रीगण अपना-अपना घर प्रस्थान करैत छथि।

षष्ठीव्रत केर कथा सासु-पुतहुक कथा थिक। भगवान् भास्करकेँ अर्घ प्रदान करबाक निमित्त याचना कएलहु पर सासु ककरहु कुसियार केर एको टोनी नहि दैत छथि, परिणामस्वरूप सासु कुष्ठरोगसँ ग्रस्त भए जाइछ; ठीक एकर विपरीत सूर्यकेँ अर्घ प्रदान करबाक लेल पुतहु सबकेँ कुसियार दैत छथिन, फलस्वरूप हुनक घर स्वर्ण-सम्पदासँ परिपूर्ण भए जाइत छनि। अतएव कथा कहनाहरि महिला कथाक अंतमे कहैत छथि :–

"जेहन सासुकेँ भेलैक तेहन ककरो जुनि होइक,
जेहन पुतहुकेँ भेलनि, तेहन सबकेँ होइक।"

षष्ठीव्रतक उपर्युक्त कथाक विश्लेषणसँ ज्ञात होइछ जे एहि कथामे आस्तिकता, आस्था, श्रद्धा, विश्वास एवं शुचिताक भाव कोंचि-कोंचि कए भरल अछि। विशिष्टता ई जे स्त्रीगण आ पुरुष केओ एकर अपवाद नहि। आजुक तथाकथित बुद्धिवाद, अनास्थावाद आओर पाखंडवादक युगमे मिथिलावासी एतेक आस्थावादी, आशावादी एव अध्यात्मवादी छथि से निश्चय हुनका लोकनिक परम्परागत संभ्रान्त संस्कारक अतिरिक्त हुनक सुचिन्तित, सुरुचिसम्पन्न, भव्य आ' दिव्य मानसिकताक परिचायक थिक। ई कथा एकहि परिवारक सासु आ' पुतहु केर विचार भिन्नता, पारिवारिक मत-मतान्तर तथा पारस्परिक कलह केर द्योतक सेहो थिक।

नीक कएलासँ नीक होइछ (जेना पुतहुकेँ भेलनि) एवं अधलाह कएलासँ अधलाह (जेहन सासुकेँ भेलनि)– कथाकार कुशलतापूर्वक एहि कथाक माध्यमसँ एक सुखद संदेश संप्रेषित कए देलनि अछि, जे तत्कालीन सामाजिक चिन्तनक एक उज्ज्वल पक्ष कहल जा सकैछ।

छठि पाबनि नारीप्रधान पाबनि मानल जा सकैछ। अर्घ सामग्रीक संचय आ ओरिओनमे, अर्घ प्रदान करएमे, कथा सुनाबएमे सर्वत्र स्त्रीगणक प्राधान्य देखना जाइछ। यथार्थ तँ ई थिक जे व्रत, पावनि-तिहार आदिक आयोजन स्त्रीगणक सहयोगक अभाव मे प्रायः अकल्पनीय। एहिसँ स्पष्ट होइछ जे मिथिलामे स्त्रीगणक स्थान पुरुषसँ कम नहि। स्त्रीगणकेँ सम्मान अओर प्रतिष्ठाक दृष्टिसँ देखल जाइछ। नारी-जागरण, नारी-सम्मान. नारी-स्वातंत्र्य एवं नारी-अभ्युत्थान आदि केर नामपर आजुक आधुनिका विभिन्न प्रकारक आन्दोलन चलएबाक उपक्रम कए रहल छथि किन्तु एहि प्रकारक आन्दोलन पर पाश्चात्य प्रभाव अधिक भारतीय प्रभाव कम देखना जाइछ। जतय धरि मिथिलांचलक प्रश्न अछि एहिठामक लोक-चेतना अपन पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक आओर सांस्कृतिक धरातल पर नारी-उत्थान एवं नारी-सम्मान केर अर्हणीय अवधारणाक सुन्दर स्वप्नकेँ साकार करबाक, ओकरा स्फीत स्वरूप प्रदान करबाक बात बहुत पहिनहि अंगीकार कए लेने अछि। हँ, समय-समय पर ओकर स्मरण, परिष्कार-परिमार्जन तँ आवश्यक होइछ।

छठिव्रतक विवेचनाक क्रममे एक बातक जिज्ञासा स्वभावतः होइछ जे एकर श्रीगणेश कहिया आ' ककरा द्वारा कएल गेल।

एक विचारधारानुसार सर्वप्रथम महामुनि अत्रिक पत्नी अनसूया सौभाग्य एवं पति-प्रेमक प्राप्तिक हेतु ई व्रत कएलनिः–

कृतानुसूयया ह्येषा अत्रिपत्न्या विधानतः।
सौभाग्यं च पतिप्रेम तया लब्धं यथेच्छया॥

–सूर्यषष्ठीव्रतकथा, श्लोक 21.

एक दोसर मत एहिसँ ज्ञात अछि जे छठिव्रतमे प्रातःकालीन आओर सांध्य-कालीन सूर्यकेँ अर्घ प्रदान कएल जाइत छनि। भगवान् भास्कर आदिकालीन पंचदेवताक अंतर्गत परिगणत होइत छथि,

आदित्यं गणनाथं च देवीं रुद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्॥

तँ एक संभावना व्यक्त कएल जाइछ जे संभवतः प्राग्वैदिक कालहिसँ, जखन मानव असभ्यावस्थामे वन्य जीवन व्यतीत करैत छल होएत तँ सुविधा आ' सुरक्षाक भावनासँ उत्प्रेरित भए लोकमानसमे पूजा-उपासनाक भाव प्रादुर्भूत भेल होएतैक। एतदर्थ जनजीवनक रंजनार्थ, प्रीत्यर्थ एवं मंगलकामनार्थ सूर्योपासनाक श्रीगणेश भेल होएत।

साधारणतः छठिव्रतक संबंध दीनानाथ दिनकरसँ मानल जाइछ किन्तु किछु विद्वान् एहि परम्परागत मान्यताकेँ अमान्य बूझि एकर योग-शास्त्रीय व्याख्या करैत छथि। हठयोगमे कुंडलिनी जागरण केर द्वारा षट्चक्रभेदन कए सहस्रारमे सहस्रदल कमल पर विराजमान सदाशिव केर दर्शन कए साधक परमानन्द अथवा मोक्ष प्राप्त करैछ। षट्चक्रक स्वामिनी होएबाक कारणेँ मा कुंडलिनीकेँ षष्ठी माइ अथवा छठिमाइ कहल जाइछ। मिथिला मे छठिकेँ छठि परमेश्वरी कहिकए सेहो संबोधित कएल जाइछ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

तँ किछु विद्वान् छठि पर्वक संबंध सूर्यसँ नहि मानि योग अथवा हठयोगसँ मानैत छथि ।

छठिव्रतक व्याख्या चाहे जाहि प्रकारेँ कएल जाय किन्तु ई बात परम सत्य जे छठिव्रतकथा अमरलत्ती जकाँ मिथिलाक लोक जीवनरूपी वृक्षकेँ चारू कातसँ तेना सकबेधने अछि जे एकरा ओहि वृक्षसँ दूर केनाइ असंभव नहि तँ दुष्कर अवश्य थिक ।

जितियाव्रत मिथिलाक एक प्रमुख आ' लोकप्रिय व्रत थिक। आश्विन कृष्ण पक्षक अष्टमी तिथिमे प्रायः सब पुत्रवती स्त्री पुत्रक दीर्घायु एवं सौभाग्यक निमित्त ई व्रत करैत छथि । ई व्रत मात्र स्त्रीगण द्वारा कएल जाइछ ।

कथा संक्षेपमे ई थिक । नर्मदा नदीक पश्चिम मरुस्थलमे एक पाकड़िक गाछ छलैक । ओकरा धोधड़िमे एक गिदरनी आ' डारि पर एक चिल्होड़िन रहैत छलि । जितिया व्रत केनहारि स्त्रीगणसबकेँ पूजा-पाठ करैत देखि ओहो दूनु व्रत कएलक । व्रतोपरान्त चिल्होड़िन तँ विधिवत् नवमीमे पारण कएलक किन्तु गिदरनी पारणसँ पहिनहि चुपचाप मुर्दाक मांस खा लेलक । अगिला जन्ममे चिल्होड़िन बुद्धिसेनक रानी शीला भेलि आ' गिदरनी राजा मलयकेतुक रानी कर्पूरावती । जितिया व्रत केर प्रभावसँ शीलाकेँ सात पुत्र भेलनि आओर सब जीवित रहलनि परंच व्रतभंगक दुष्प्रभावसँ कर्पूराक सातो पुत्र नष्ट भए गेलनि। ईर्ष्यावश कर्पूरा पारणक दिन शीलाक सातो पुत्रक मूड़ी कटबाकए एक डालामे राखि ओकरा कपड़ासँ झाँपि शीलाक सातो पुतहुकेँ पारणाक हेतु पठा देल । मुदा जीमूतवाहनक कृपासँ शीलाक सातो पुत्र पुनः जीवित भए दीर्घजीवी भेल । इएह हेतु जे कथाक अन्त मे कहल जाइछ:

"जेहन चिल्होड़िनकेँ भेलनि तेहन सबकेँ होउक,
जेहन गिदरनी केँ भेलनि तेहन ककरो जुनि होउक ।"

जितियाव्रतक एहि कथामे मिथिलांचलक अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितिक उद्घाटन सहज आ सुकर बनि गेल अछि।

कथाक विश्लेषणोपरांत जे सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगत होइछ से थिक समाजमे नारी-समुदायक महत्ता एवं मर्यादाक प्रतिष्ठापना । वास्तविकता तँ ई थिक जे एहि कथाक अंतस्थलमे प्रविष्ट भेलासँ नारी-समाजक अनेक मार्मिक मनोदशाक ज्ञान अति सुलभ बनि जाइछ । नारी-समाजक बहु आयामी व्यक्तित्व एवं ओकर विविध विलक्षणताक आधार पर ई अनुमान्य होइछ जे जितियाव्रत करबाक परिपाटी संभवतः अति प्राचीन कालमे छल आ' एकर सूत्रपात प्रायः तखनहिसँ भेल जखन समाजमे पुरुषकेर अपेक्षा नारीक प्रधानता छलैक, एना पुत्रक कल्याणार्थ माताक द्वारा व्रत, पूजा, पाठ आदिकेर आयोजन सहज स्वाभाविक आ' मनोवैज्ञानिक थिक ।

पुण्यवती स्त्री पुत्रवती होइछ आ पुण्यविहीना पुत्रविहीना एहि कथामे एकर संकेत भेटैछ । शीला पूर्व जन्ममे विधिवत् जितियाक व्रत कएलनि तँ ओ सात पुत्रक माता भेलीह आ' हुनक सातो पुत्र दीर्घजीवी भेलनि परन्तु कर्पूरा पूर्वजन्ममे विधिवत् जितियाकेँ व्रत नहि कएल आ' चोरा कए कए मांस-भक्षण कएल, फलस्वरूप सात पुत्रक माए भेलाक उपरान्तो ओ पुत्रविहीना भए गेलीह । पूर्व जन्मक पुण्य एवं पापक फल अगिला जन्ममे भेटैछ से बात स्पष्ट ।

एहि संदर्भमे एक महत्त्वपूर्ण तथ्य ई जे एहि कथाक माध्यम सँ पुनर्जन्म अथवा जन्मजन्मान्तरवादक सिद्धान्त प्रतिपादित होइछ ।

भगवान् श्रीकृष्ण गीतामे अर्जुनकेँ पुनर्जन्मक वर्णन करैत कहलथिन्ह–हे परंतप, हमर आओर अहाँक अनेक जन्म भए चुकल आछि किन्तु अहाकेँ ओकर ज्ञान नहि अछि, हमरा अछि :–

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ।।

–गीता, चतुर्थ अध्याय, श्लोक 5.

पुनर्जन्म एवं विभिन्न योनिमे जन्म लेबाक सिद्धांतक प्रतिपादन करैत मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार कवीश्वर 'मिथिला भाषा रामायण'मे लिखैत छथि:—

पूर्वजन्म मन पड़लय ताप,
देखल विविध माय ओ बाप ।.....
नाना योनि विविध व्यवहार,
कयल न मन भल कतहु विचार ।

–किष्किन्धा काण्ड, पृ. 209.

जितियाव्रतक उपरिलिखित कथासँ ज्ञात होइछ जे आत्मा विभिन्न जन्ममे विभिन्न प्रकारक योनिमे शरीर धारण करैछ । पछिला जन्मक एक पशु (गिदरनी) आ एक पक्षी (चिल्होड़िन) अगिला जन्ममे रानीक रूपमे मनुष्यक शरीर धारण कएलक । संभवतः ई ओकरालोकनिक पुण्याचरणक प्रभाव छलैक ।

जितिया व्रतक उपर्युक्त कथाक अवलोकन समीक्षात्मक दृष्टि सँ कएलाक उपरान्त नारी-जीवनक ओहि भावलोकमे पदार्पण होइछ जतए अनेक मनःस्थिति अथवा मानसिक अवस्थासँ साक्षात्कार होइछ । यथार्थ तँ ई थिक जे ओहि ठाम

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नारीसुलभ चारित्रिक दुर्बलताक एकाधिक रूप अनायासे प्रकट भए जाइछ।

पापपूर्ण एवं प्रपंचपूर्ण आचारण कएला संताँ जहन कर्पूराक सातो पुत्रक देहान्त भए गेलनि तँ ओ क्रोध आओर ईर्ष्याक्ष शीलाक सातो पुत्रकेँ मरबा देल। ओं अपन आत्मनिरीक्षण एवं आत्मपरीक्षण नहि कएलनि, अपना दुराचारक लेल हुनका ने ग्लानि भेलनि आ ने पश्चात्ताप, अपितु एकर विपरीत हुनका हृदयमे अकारण शीलाक प्रति शत्रुत्वक भाव उत्पन्न भए गेलनि। एहि प्रकारक क्रूर, जघन्य एवं अविवेकपूर्ण कर्म करबाक दृष्प्रवृत्ति कर्पूरा सदृशक नारीक तामसी हृदयमे प्रादर्भूत होइछ, जे कतिपय नारी चरित्रक स्खलित पक्षक द्योतक थिक।

पशु-पक्षी द्वारा व्रत करबाक बात किछु असंगत, विचित्र आ कौतूहलपूर्ण बुझना जाइछ किन्तु पुनर्जन्मक सिद्धान्तकेँ स्वीकार कएलासँ एहि प्रकारक जिज्ञासा सहजहि शांत भए जाइछ। जखन एक जन्मक संस्कार अगिला जन्ममे संचित भए फलीभूत होइछ तँ संभव जे ओहि चिल्होड़िन आओर गिदरनीक पछिला जन्मक आस्तिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक पुनीत संस्कार ओकरा लोकनिकेँ व्रत करबाक प्रेरणा देने होइक। पुण्यक फलस्वरूप इन्द्रलोकक प्राप्ति आ पुण्यक क्षीण भेलापर पुनः मृत्युलोकक प्राप्ति होइत छैक से स्वयं मधुसूदन अर्जुनकेँ कहने छथिन :–

ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति॥

–गीता, अध्याय 9, श्लोक 20-29.

स्पष्ट अछि जे पूर्व जन्मक पुण्य एवं पाप संबंधी संस्कार अगिला जीवनकेँ बहुत दूरतक प्रभावित करैत छैक।

भगवान् सत्यनारायणक व्रत आ तत्संबंधी कथा मिथिलामे बड़ लोकप्रिय एवं प्रचलित अछि। कतेको निष्ठावान् व्यक्ति प्रनिमास व्रत आ पूजा करैत छथि। प्रसाद ग्रहण कए अपन जीवनकेँ सार्थक बुझैत छथि। हिनकालोकनिवेँ दू कोटिमे राखि सकैत छी। किछु गोटे भक्तिभावसँ ओतप्रोत भए प्रायः निष्काम भावसँ व्रत आखि पूजा करैत छथि। परंच किछु व्रतीक समक्ष मनौती रहैत छनि। अभीप्सित उद्देश्यक पूर्ति भेला पर उत्साह एवं उल्लासपूर्वक आ खूब धूमधामसँ पूजा-अर्जना करैत छथि। नानाविधि प्रसाद वितरित करैत छथि।

सत्यनारायण व्रत कथाक विश्लेषण कएलासँ ज्ञात होइछ जे ई कथा ओहि सामाजिक स्थितिक परिचायक थिक जाहि काल मे मानव समाज अपना आदिम स्थितिसँ विकसित भए कृषिकार्य मे लागि गेल छले। जीवन-यापन लेल लोक पशुपालनक अतिरिक्त कदली फल, गहूम, कुसिमार आदि केर खेती करैत छल। ततबे नहि, कृषिकार्यक अतिरिक्त काठक विक्रय आ व्यापार सेहो जीविकोपार्जनक प्रमुख साधन छलैक।

साधु वणिक् अपना जमायक संग व्यापार करैत छल आ' ओहि माध्यमसँ पर्याप्त धन-सम्पत्ति अर्जित कएलक।

एहि प्रसंगमे एक महत्वपूर्ण उल्लेखनीय तथ्य ई जे आवागमनक प्रमुख साधन जलमार्ग छलैक। नावमे सामान लए नदी-मार्गसँ व्यापारी व्यापारक निमित्त जाइत छल। रत्नसारपुर शहरमे समुद्रक कछहेरि पर नाओ लगा स्वतः बजार केर निर्माण कएलक आ' व्यापार करए लागल।

रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिन्धुसमीपतः।
वाणिज्यं कुरुते साधुर्जामात्रा श्रीमता सह॥
पुरीन्निर्माय नगरे चन्दकेतो र्नृपस्य च।

दुहू श्वशुर-जमाय मिलिकए जाहि बजारमे अपना सामानक विक्रय करत छल से स्थान चन्द्रकेतु नामक राजाक राज्यकेर अंतर्गत छलैक। सत्यनारायण भगवानक एहि कथामे वंशध्वज नामक राजाक सेहो उल्लेख आंछे। ताहिसँ ई ज्ञात होइछ जे समाजमे राजाक स्थान सर्वोपरि छलैक। राजतंत्रप्रधान समाज छलैक। शासनव्यवस्था राजाक हाथमे छलैक। संगहि एहि बातक सूचना भेटैछ जे समाजमे निर्धनता, विपन्नता कम नहि छलैक। दरिद्रता संताँचोर सेहो होइत छलैक।

राजा चन्द्रकेतुक महलमे चोरि भेलैक आ' दुर्भाग्यवश ओहि चोरिक आरोपमे ससुर-जमायकेँ राजाक कारागारमे बन्द कए देल गेलनि।

कथामे आगाँ एहि बातक उल्लेख अछि जे वणिक् केर पत्नी लीलावती जखन सत्यनारायण भगवानक व्रत कयलनि तँ व्रतक प्रभावसँ भगवान् संतुष्ट भए रातिमे राजा चन्द्रकेतुकेँ दुहू व्यापारीकेँ कारागारसँ मुक्त करबाक स्वप्न देलथिन आ' तदनुसार राजा भगवानक आदेशकेँ शिरोधार्य कए दुहू ससुर-जमायकेँ धन दए ओतयसँ बिदाह कएलनि।

एतय हमरा राजा आ प्रजा-सभक मनःस्थितिक परिज्ञान होइछ। स्वप्नक बातकेँ सत्य बूझि तदनुसार आचरण करबाक प्रवृत्ति एक सात्विक एवं आस्तिक प्रवृत्ति थिक जे जन्म-जन्मक संचित पुनीत संस्कारक परिणाम होइछ। आजुक अनास्थावादी, अस्त-व्यस्त आ' विघटनकारी समाजक लेल एहि प्रकारक आशा-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आस्था एवं विश्वाससँ भरल आचरण निश्चित रूपसँ एक सृजनात्मक, सकारात्मक एवं विकासात्मक दिशा-निर्देश सिद्ध होएत। संगहि संग समस्त भारतीय आ' मैथिल संस्कृतिक अनुकूल सेहो।

व्रतकथाक प्रसंगमे हरिशयनी एकादशी व्रतकथा आ' देवोत्थान एकादशी व्रतकथाक विस्मरण नहि कएल जा सकैछ। आषाढ़ शुक्ल एकादशीकेँ हरिशयनी व्रत आओर कार्तिक शुक्ल एकादशीकेँ देवोत्थानक व्रत कएल जाइछ।

आषाढ़ शुक्ल एकादशीसँ कार्तिक शुक्ल एकादशीक धरिक अवधि चतुर्मास कहल जाइछ। जनश्रुति ई छैक जे एहि चारि मासक अवधिमे भगवान शयन करैत छथि आ' तेँ हुनका कार्तिक शुक्ल एकादशीमे जगाओल जाइत छनि।

ई तथ्य सर्वज्ञात अछि जे पावस केर पश्चात् आकाश निरभ्र निर्मल एवं स्वच्छ भए जाइछ। कार्तिक शुक्ल पक्षमे चतुर्दिक शुभ्र ज्योत्स्नास्नात रात्रि अतिशय शीतलताप्रदायिनी भए जाइछ, आओर शरत्कालीन सुन्दर पुष्प सर्वत्र प्रस्फुटित दृष्टिगोचर होइछ। एहन मधुर-मनोहारी-मंगलकारी वेलामे ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र आदि देवता एवं ऋषिगण द्वारा अभिवादित लोकनाथकेँ निद्राक परित्याग कए जगबाक प्रार्थना कएल जाइछ।

ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो
भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः।
प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या
जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ॥
मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र
शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि।
अहं ददानीति च पुण्यहेतो
जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ॥
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द, त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्॥

वस्तुतः शरदकालीन नैसर्गिक सौन्दर्यक एहन भव्य, स्फीत एवं मृदुल-मोहन काव्यात्मक चित्रण प्रायः दुर्लभ। आलंबनकेर रूपमे प्राकृतिक सुषमाक एहन सुष्ठु वर्णन गद्यकाव्यक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करैछ। ईहो बात स्पष्ट जे जाहि प्राचीनकालमे एहि सरस गद्यकाव्यक प्रणयन भेल होएत ओहिकाल एकर प्रणेताक मानसिक धरातल अत्यन्त समृद्ध-सुसंस्कृत, सुरुचिसम्पन्न, सृजनात्मक प्रतिभासँ परिपूर्ण, सुविकसित एवं उर्वर भए गेल छल होएत। एहन काव्य निश्चित रूपसँ शिष्ट मानसकेर कृति होइछ। तात्पय ई जे एहिकाल तक अबैत-अबैत सामाजिक चेतना अति प्रबुद्ध आ संवेदनशील भए गेल छल।

'त्वया चोत्थीयमानेन उत्थितं भुवनत्रयम्' मे जनजागरणक विराट् भावना प्रतिमूर्त देखना जाइछ।

देवशयनी एकादशी व्रत कथाक संबंध एक धर्मात्मा राजा मान्धातासँ छैक। दुर्भाग्यवश हुनका राज्यमे अकाल पड़ि गेलनि। गुरुक आदेश पर राजा समस्त राज्यमे इनार, पोखरि, नहरि आदिक व्यवस्था केलनि। राजाक संग प्रजा सेहो निष्ठापूर्वक अपन कर्त्तव्यक पालन करए लागल। अधर्मक परित्याग कए सब धर्माचरण करए लागल। राजासमेत प्रजासब देवशयनी एकदाशीव्रत कएलक। फलतः स्थितिमे प्रचुर सुधार भेलैक। लोक सुखपूर्वक रहए लागल आ' अन्तमे सब स्वर्गकेँ प्राप्त कएलक।

उपरिलिखित कथाक सिंहावलोकन कएलासँ ज्ञात होइछ जे प्राचीनकालमे सेहो अकाल पड़ैत छलैक, जकर प्रधान कारण लोकक आलस्य आ' अकर्मण्यता छलैक, किन्तु सामूहिक प्रयास आ' सक्रियतासँ भीषण अकालकेँ सुखद सुकालमे परिवर्तित कए दैत जाइत छलैक।

मिथिलामे प्रचलित शिवरात्रि व्रतकथा, अनन्त चतुर्दशी व्रतकथा, कृष्णाष्टमी व्रतकथा आदि अपन महत्वपूर्ण स्थान रखैछ आ एहि व्रतकथाक विश्लेषण कएलासँ एहि क्षेत्रक अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक विशिष्टताक ज्ञान प्राप्त होइछ।

एहि संदर्भमे ई बात उल्लेखनीय जे मिथिलामे प्रचलित अनेक व्रतकथाक आधार पौराणिक कथा थिक, जे लोकमानसक नहि अपितु शिष्ट मानसक उपज थिक किन्तु एहि क्षेत्रक पारिवारिक आ' सामाजिक जीवनसँ ओ ततेक सम्पृक्त आ' हिलि मिलि गेल अछि जे अपन वैयक्तिक रूपकेँ छाड़ि सामूहिक रूप ग्रहण कए लोककथावत् बनि गेल अछि। संभवतः एहि कथाक लोकप्रियताक एवं लोकग्राह्यताक एक प्रधान कारण इएह छैक।

निष्कर्षतः हम कहि सकैत छी जे मिथिला एक एहन उत्तम कोटिक उद्यान थिक जाहिमे लोककथाक अनेक सुमन निरन्तर मुकुलित एवं प्रस्फुटित होइत रहैछ। ओहि विविध प्रसूनक मध्य व्रतकथारूपी फूल केर अपन विलक्षण सौन्दर्य आओर सौरभ होइछ जाहिसँ एहि वाटिकाक संग-संग सम्पूर्ण देश ओ विश्व सतत सुशोभित, सुरभित, सुवासित एवं समादृत होइत रहत।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली कथाक भाषा-शैली

□ डा. श्री फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

गल्प वा कथाक निर्माण-तत्त्वमे भाषा-शैली सेहो अबैत अछि, भलेँ ओ प्रारम्भिक छह तत्त्वक संग रहय अथवा आधुनिक कथ्य एवं संदृष्टिक अंग। किएक तँ, भाषा भावक अभिव्यक्तिक माध्यम होइछ आ' अभिव्यक्तिक ढंग वा ढर्रा शैली। रचना-शैली आ' प्रतिपादनक दृष्टिसँ भाषाक महत्त्व बढ़ि जाइत अछि। तेँ कथाक सफलतामे ओकर भाषाक प्रमुख स्थान रहैत अछि आ' ओ भाषा जेहन सरल, प्रांजल, भावाभिव्यंजक ओ बोधगम्य रहल, ओहने ओ प्रभावोत्पादको होइत अछि।

कथा सामान्य मानव-जीवनक वस्तु थिक आ' भाषा मानवीय साहचर्यक उपभोगी उपकरण। एहिलेल प्रत्येक शब्द, शब्द-समूह आ वाक्यकेँ कथाक वस्तु, पात्र ओ वातावरणसँ जुटल रहब आवश्यक अछि। सेहो एहन जुटल जे कथा पढ़ला पर पाठककेँ बुझबामे कोनो भाङठ नञि होइ, जतय अनभुआर शब्दक सोङरमे ठेसय नहि पड़ै, मनकेँ उबियाबैवला चेफरी लागल वाक्य नञि रहै। प्रत्युत्, एहन प्रतीत होइ जे जँ कतौ एको पाँती छूटि जाइक तँ कथे झुझुआन लगैक। तखनहि भाषाक सजीवता ओ व्यावहारिकता गुणीभूत रूपमे व्यंजित होइत अछि।

मैथिली भाषाक दुइ रूप प्रचलित अछि– (i) शिष्टभाषा, अर्थात् तत्समयुक्त वा तत्सम रहित परिष्कृत भाषा, (ii) लोकभाषा, माने आमबोलचालक भाषा। कथावस्तुक प्रकार भेदक अनुसार कथामे एही दुनू भाषा-शैलीक फूट-फूट वा मिश्रित रूपमे चलनसारि अछि। ओना, कथाकार अपन अनिवार्य आवश्यकताक दृष्टिएँ एहि प्रचलित भाषाकेँ प्रसंगवश सहज-संस्कार दैत अछि जे साहित्यिक भाषा भए जाइछ।

शिष्ट वा बोलचालक भाषा रहरहाँ भेटत अर्थात् यथिकाल-सभठाम, मुदा साहित्यिक भाषा हरसट्ठे नञि भेटत। किएक तँ साहित्य मात्र संवादे नञि, वैचारिको संवाद थिक, सोझे संवादलेल तँ कोनो बोली-बानीक उपयोग कखनहुँ कयल जा सकैछ, किन्तु जखन विचार-तत्त्वकेँ आनतक पहुँचेबाक बेर अबैत अछि तँ ओकर भाषा ढनमनैल फिरैत नञि भेटत। ओहि भाषाक खोज कथाकार करैत अछि, सेहो एहन भाषा जे ओकर कथ्यांकेँ आन धरि पहुँचेबामे समर्थ होइत ओना, प्रचलित भाषामे अधिकांश शब्द वैह रहैत अछि जे कथाकार लिखैत अछि, मुदा ओ ओही शब्दमेँ किछुआर वेशी ध्वनित करबय चाहैत अछि, जकर अर्थ-सन्दर्भ सेहो बदलि जाइछ, से आमबोलचालमे नहि भए पबैछ।

कथाक भाषामे लोकोक्ति, मुहावरा, कहबी आ सूक्तिक फुदना सेहो लगौल जाइछ, जे प्रसंगकेँ आर अधिक सोनगर तँ बना दैते अछि जे प्रस्तावित वक्तव्योकेँ सेहन्तगर बनेबामे सहायक भए जाइछ। मैथिली कथामे एकर खूब प्रयोग भेलए।

मैथिलीमे तेसर दशकसँ मौलिक कथा लेखनक शुभारम्भ भेल, से पल्लवित भेल चारिम दशकमे आ पुष्पित पाँचम दशकमे। एहि अवधिक कथाकारक उद्देश्य मुख्यतः दूटा परिलक्षित होइछ। पहिल-समाजसुधार, अर्थात् तथाकथित शिष्ट (उच्च) वर्गमे अम्बार लागल कुरीतिक यथातथ्य चित्रण कए सामाजिककेँ सचेष्ट करब, तथा उच्चवर्ग ओ उपेक्षित (पिछड़ा) वर्गक बीच बनल लौकिक दूरीकेँ घटयबाक आदर्श देखायब। दोसर-भाषा-सुधार, माने आमलोकक बीच उच्चरित मैथिली ध्वनिक अनुकूल लेखनशैलीक स्वरूप देब। यद्यपि एहि स्वरूपमे शिष्टवर्गक प्रतिनिधित्व केनिहार भाषाविद्लोकनि द्वारा निर्धारित मानक रूप सेहो सोन्हिआएल रहल, जे प्रायः अबैत–अबैत सातम दशक सँ मृतप्राय भए गेल।

एकर कारणो छल। मिथिलांचलक शिष्ट समाज, जकरालग ने संचित ज्ञानक कमी छल आ' ने ओ ज्ञान जीवन्त अनुभव आ' संवेदनाक बदलैत मान-मूल्यसँ परिपोषित होयबाक अवसरेसँ वंचित छल, तैओ परंपरागत संस्कृति-सभ्यता, आचार-विचार ओ रहन-सहन मे तेना ने जिदियाह (रूढ़िग्रस्त) भएगेल छल जे गाम एक रहितो गौआँ एक नञि रहल, समाज एक रहितो सामाजिकता एकनञि रहल आ' धर्म एक रहितो कर्म एक नञि रहल। छिन्न-भिन्न भेल दिशाहीन समाज कट्टरताक चपेटमे बुझू भूतलग्गू भएगेल छल। जकर प्रत्यक्ष प्रभाव भाषा पर सेहो पड़ल (ओहि मनरोगसँ औरखनधरि मैथिली भाषा पूर्णतः मुक्त नञि भेलए)। फलस्वरूप, भाषाक मतिर्भिन्नताक चलते, पंडितक संस्कृतानुरागक चलते, अंगरेजियाबाबूक पण्डितामक चलते आ' राजा-महराजाक उर्दू-हिन्दी-अंग्रेजी-प्रेमक चलते मैथिली भाषा-साहित्यक उचित समय पर समुचित विकास नञि भए सकल। यद्यपि स्वतंत्रतासँ पूर्व एकरा जीवन्त करबामे पण्डित वर्गेक मुख्य हाथ रहलए। एहिलेल कथाकार लोकनिक ई दायित्व भए जाइत छल जे ओ अपन कथाक माध्यमसँ पहिने एहि दुनू ज्वलंत समस्याकेँ क्रमशः परिवर्तनक स्वर आ स्वरूप देथि।

एहिमे प्रमुख रूपसँ कुमार गंगानन्दसिंह, कांचीनाथ झा 'किरण' ओ भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'क प्रयास स्वागत-योग्य अछि तँ प्रो. हरिमोहन झाक उल्लेखनीय।

कुमार सिंह कथाक भाषा बोलचालक होइतो परिमार्जित अछि आ शैली सरल, किन्तु गत्यात्मक। किरणक कथामे भाव-सौन्दर्यक अभिवृद्धि लेल चमत्कृत शैलीक आवेश अछि, मुदा ओ जतए तत्समक लटाढ़मसँ मुक्त अछि, ततहि ओकर सहजता विकसित भेलैक। भुवनक कथामे कथा-वस्तुक संगहि भाषामे नवीनता ओ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गतिमयता अछि। प्रो. हरिमोहनझाक भाषा-शैली हुनक व्यक्तित्वक प्रतीक अछि। ओहिमे संस्कृतक पूर्ण वैभव, मैथिलीक सम्पूर्ण शक्ति आ' वर्गीय लोक-जीवनक सरस व्यंजना एक संग घुलल-मिलल अछि। *'प्रणम्य देवता'* सँ ई अपन कथा-यात्रा आरम्भ कए *रंगशाला, चर्चरीक* संग *एकादशी* मे अन्त करै छथि। कुमार सिंह जँ शांतरस आ किरण करुणरसक अवलम्बन कएने छलाहतँ प्रो. झा मैथिल-प्रकृतिक अनुकूल हास्यरस अपनौलनि। हास्य आनन्दक संचार करबाक संगहि भावनाक विकासो करैत अछि आ व्यंग्य छिलमिली छौड़वैत लोककेँ अपन टेटरो सुझबैत अछि। युगक विसंगति आ लोकक मनोवृत्ति पर व्यंग्य करब हिनक कथाक मुख्य स्वर रहल। हास्य, व्यंग्य वक्रोक्ति आ वाक्छल आदिक घुरझाड़ व्यंजनासँ भाषाक मधुरता तथा शैलीक रोचकता ततैक आकर्षक भेल जे कथातत्त्वमे दुर्बल रहितो *(एकादशी* केँ छोड़ि) हिनक कथा सभ जनमानसकेँ गुदगुदा देलक। हिनक कथाक प्रति लोकक तेहन आसक्ति भेल जे मैथिली साहित्यमे कथा-विधा अपन अस्तित्व बना लेलक। सेहो एहन समयमे, जखन कि मैथिली कथाक ने कोनो थितगर परंपरा छल, ने साहित्यिक रूपे भेटल छलै, आ ने शैली विषयक कोनो आदर्श उपस्थित कएल गेल छल। एहि अभाव पूर्त्तिमे प्रो. झाक प्रयास-प्रशंसनीय ओ उल्लेखनीय अछि।

हिनक समकालीन कथाकार मनोवैज्ञानिकताकेँ कथाक प्रमुख विशेषता मानलनि। किएकतँ, मनोवैज्ञानिक विश्लेषणसँ कथाक चरित्र ओ कथानक प्रभावशाली होइत आ ओहिमे स्वाभाविकता अबैत छैक। कथाक स्वरूप अधिक उपादेय भए जाइत, जे पाठक पर अपन विशेष प्रभाव जमबैत अछि। एहि आधार पर चर्चित कथाकार श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', श्री मनमोहन झा तथा योगानन्दझाक कथामे शिष्ट भाषा अपन विशिष्टता रखितो सरल, सुबोध अछि तँ प्रो. उमानाथझाक भाषा गम्भीर ओ परिष्कृत अछि, समर्थ अछि।

मुदा, एहि दशकक कोनो कथाकारक भाषामे ओ लटछटी नहि अछि जे प्रो. हरिमोहन झाक भाषामे अछि। ओना एहि पीढ़ीक कथाकार आनो भाषाक प्रचलित शब्दकेँ नीक जका पचौलनिए। कतौ-कतौ भावुकतामे हिंदीक सम्पूर्ण वाक्यो ढारि देने छथि।

छठम दशकक कथाकारमे पं. गोविन्दझा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी ओ शैलेन्द्रमोहन झाक भाषा परिष्कृत रहितो भावुक अछि, नवीनताक सूचक अछि। हिनकालोकनिक भाषामे जतबा तत्समक संयोग अछि ताहू सँ अधिक मैथिलीक अपन शब्द स्थान पौलकए। ताहिमे पं. झाक भाषा, भावक प्रांजलता ओ करुण संवेदनाक संगहि अतिशय रुचिकर ओ गत्यात्मक अछि।

मणिपद्म, बहेड़ ओ किसुनक कथाक भाषा लोकभाषाक सन्निकट अछि। किन्तु मणिपद्मक भाषा जेना अगड़ाइत चलैये, से चमत्कार एहि पीढ़ीक आन कथाकारक भाषामे नहि अछि।

ई तँ अवस्से, जे प्रत्येक कथाकारक अपन भाषा-शैली होइछ, जाहिमे ओकर व्यक्तित्वक छाप सन्निहित रहै छै। तेँ कथाक भाषाकेँ औचित्यक दृष्टिसँ देखबाकाल कथाकारक व्यक्तित्व दिस सेहो नजरि दौड़ायब आवश्यक होइछ। ओना, प्रत्येक कथाकार अपन भाषाक खोज करैत अछि अथवा अपना समयक भाषा तकैत अछि। अपना समयक भाषासँ तात्पर्य अछि—पूर्ववर्ती वा समकालीन कथाकारक भाषाक अनुकरण अथवा समाजमे प्रचलित भाषाक अनुसरण। अपना समयक भाषामे कथाकार अपनो भाषाकेँ समाहित कए दैत अछि। कुमार गंगानन्द सिंह ओ प्रो. हरिमोहन झा समाजमे प्रचलित शिष्ट भाषाक अनुसरण कएने छथितँ मणिपद्म यात्री जकाँ जनभाषाक। प्रो. उमानाथझा शिष्ट भाषामे अपन भाषाकेँ पचौलनिए तँ पं. गोविन्दझा साहित्यिक भाषाकेँ समयक भाषा बनेबाक प्रयास कएने छथि।

एहि खोजबीनमे भाषाक कृत्रिमता सेहो बढ़ल, ओ शब्द आ भावखंड, जकरकोनो ध्वनि-बिम्ब लोक-मानस पर नहि रहि गेल छल, दैनन्दिनी जीवनक देखार स्थलो जखंन कथामे अबैत छल तँ भाषाओ भावक रूढ़ताक करणेँ जीवनहीन आ बनौआ बुझाइ छल। तखन ललित-राज-कमल-मायानन्द अपन भाषा तकैत छथि। व्यक्तिगत भाषाकेँ साहित्यिक भाषा बनबैत छथि। जनभाषाक संस्कार-सूत्रकेँ ग्रहण कए अपन-अपन वक्तव्यकेँ नवभाषा दैत छथि। जाहिसँ मैथिली कथाक शिल्प, कथ्य, भाव ओ भाषा बनबैत छथि। जनभाषाक संस्कार-सूत्रकेँ ग्रहण कए अपन-अपन वक्तव्यकेँ नव भाषा दैत छथि। जाहिसँ मैथिली कथाक शिल्प, कथ्य, भाव ओ भाषा अपन उच्चताकेँ प्राप्त करैत अछि। पूर्वक कथाकार जकाँ कथाकेँ रोचक बनेबाक लेल ई सभ भावुकताक लेप लगाएब आवश्यक नहि मानि रागात्मक तत्त्वकेँ बुद्धितत्त्व द्वारा परिपुष्ट करब आवश्यक बुझलनि। तेँ, स्थायीभावकेँ कतौ ठेस नहि लागय देलनि। विभिन्न दृश्यक चित्रणमे सजीवता, घटनाक आयोजनमे स्वाभाविकता तथा शैलीक रोचकता अक्षुण्ण रखलनि। ओना, राजकमलक भाषामे विद्रोहक स्वरो अछि तँ स्खलन आ चंचलता अछि, मायानन्दक भाषामे लालित्यक आवेश अछि तँ काव्यात्मक मिठासो अछि, किन्तु ललितक भाषामे अभिजात-संस्कारसँ मुक्त लोकभाषाक विलक्षण प्रौढ़ता अछि। सोमदेव, धीरेन्द्र, रेणु, हंसराज, रामदेवझा, राजमोहन झा, धूमकेतु, लिली रे आदि कथाकारोक भाषिक प्रयोगमे गरिमायुक्त स्थान अछि। सातम दशकक कथाकारमे प्रभास, गुंजन ओ जीवकान्तक अभ्युदय वेशी माने रखैत अछि। कारणजे, एहि दशकक राष्ट्रीय ओ प्रादेशिक राजनीतिक तिकड़मी उथल-पुथलसँ गामो-घरक लोक भीतरे-भीतरे टूटि रहल छल। खेतिहर मजदूर आ मालिकक सम्बन्धमे दरारि पड़ि गेल। पुरना बोली बदलि रहल छल। जीवनमे ध्वनि आ आन्दोलन प्रदर्शनक नाराबाजीक शब्द तेना ने अपनामे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ओझरा गेल जे शिष्टभाषा केओ सुनिए नहि पाबि रहल छल पारिवारिक ओ सामाजिक आदर्श दरकि गेल। नैतिकताक कोनो अर्थ नञि रहल। जाति-पाति ठनमना गेल। पिता आदरणीय अथवा अनुभवी व्यक्तिक प्रतीक नञि रहलाह। परम्परा गौरवक वस्तु नञि रहल, धर्म ओ भगवानक भरोस उठि गेल। देश-विदेशक घटना सभसँ लोकक विचार सीमित क्षेत्रमे बान्हल नञि रहल। दीन-क्लेशित उठानीमे ई समय भरपूर सहयोग देलक, जे अपन जीवनके लेल नव मान-मूल्यक स्थापना चाहैत छल। अपन भौतिक दुनिया चाहैत छल। अपन भाषा ओ आस्था चाहैत छल। एहन संक्रमणकालमे, जीवनक गति ततेक तीव्र आ संवेदना ततेक क्षणिक भए गेल जे कथाकारक लेल समस्या उत्पन्न छल जे ओ कोन भाषामे बात करय। निश्चित रूपसँ, लोक-जीवनक यथार्थक कथा कहबाक लेल ओकरहि भाषाक एनमेन प्रयोग करब, परिवेश ओ समयक मांग छल। तकर पूर्ति मे एहि तीनू कथाकारक महत्त्वपूर्ण योगदान अछि।

हिनका लोकनिक कथा जीवनक समानान्तर चलबाक लेल कथ्य आ' संदृष्टिकेँ ग्रहण कएलक, जे कथाकेँ समग्रताम प्रस्तुत करैत अछि। जतए आरम्भिक कथाक यात्रा साहित्यसँ जीवनदिस भेल छल, ततए एहि पीढ़ीक कथा-यात्रा जीवनसँ साहित्य दिस अग्रसर भेल। प्रभासक भाषामे सहजता ओ प्रांजलता अछि तँ शैली मे रोचकता, गुंजनक भाषामे भावाभिव्यंजकता ओ दार्शनिकता अछि तँ शैलीमे गम्भीरता तथा जीवकान्तक भाषामे सरलता ओ प्रतीकात्मकता अछि तँ शैली मे प्रभावोत्पादकता। ओना, जीवकान्त ठेठ शब्दक संग गुंजने जकाँ अनभुआरो शब्दक प्रयोग कएलनिए, जे हिनकालोनिक भाषाक प्रवाहमे कने रोक टोकक स्थिति उत्पन्न कए दैछ, मुदा प्रभासक ओहेन शब्द ग्रामीण चरित्र-चित्रणमे अपन परिचितिक संग रहैछ। तैओ जतयधरि प्रवाहक सवाल अछि, से एहि तीनूमे जीवकान्तेक भाषा बीस पड़ैत अछि।

आठम दशक सँ उदीयमान कथाकारक वृहत् नामावली अछि हुनका लोकनिक कथाक भाषा जँ पूर्ववर्तीयुगक संग अछि नँ निस्सन्देह अत्याधुनिक अस्तित्वक सेहो अछि। जकरा विकछायब अयत्रे सम्भव अछि।

कथाक भाषाक बदलैत रूपक दिग्दर्शन हेतु निम्न अंश उद्धृत अछि-

रड़टोली मे भेल स्वजातिक ब्रैसारक प्रसंग थिक रौदीकामति कँ हिन्दी मे बजला पर भोलइ कहै छै–*''हौजी, ई अंगरेजी-फारसी हम सबनै बुझै छियहु। जे कहबाक छहुसे अपनेबोलीमे बुझाक' कह। रौदीकामति विरक्त भ' कहलथिन–'तँ आपुनै सब बाजै जाउ.....। घोंघाउज होइत-होइत पसर खोलबाक बेर भेलैक, सभाविसर्जित भेल।''* (कुमार गंगानन्दसिंह–'बिहाड़ि')

बजारमे जमाय पर ससुर फनकैत छथि–*हिनका कुल-खूँट मे केओ दोसरो कहियो इंगलिंशकोट बनबौलकैन्ह अछि कि यैह आइ पहिलेपहिल बनबौताह ? बाप-पितामह मिर्जइ पहिरै छथिन्ह और ई फारसी कोट सियौताह। बापक गर घोंघा, पूतक गर रुद्राक्ष। पढ़ल-लिखल साढ़े बाइस, कोट धरिभेल चाहय अंगरेजिए। साहेबवला कोट पहिरि कए गाममे महींस चरौताह गऽ। अपना गामसँ आयल छलाह से कोन कोट पहिरि कऽ ? धन दरभंगा जे दोहरी अंगा। एखन जे लालेलाल छथि से ककरदेल ?* (प्रो० हरिमोहन झा–आदर्श कुटुम्ब) हिनक कथाक पात्र-सभ जेहने पकठोस तेहने नर्टाकया। तँ, कतहु उंचित सँ बेशीबाजि गेल तँ कतहु फाजिल बजबे उचित बुझलक। मुदा जे बाजल से हितकर आ मनोहारी।

प्रसंग खादी भंडारक थिक। एकटा कत्तिन बुढ़िया आबि संझाकेँ डाँटै छै–*'तोँ अइठाँ की करैत छिही।' संझा हँसि दैत छैक–'तोहरकोन आद-बाँग चोरौलियौ अछि जे तोँ एना गहुमन साँपजका फँच काढ़ै आयलेँ अछि ?....गाम पर एकरा अनसेन बितै छैक। सासुरसँ चिट्ठी अयलै जे एकर घरबला आव नै छै।''.... ऐ लेल हमरा पर किए ठनका जनकाँ कड़कै छेँ गय बुढ़िया ? ओ सरल भावें कहैत छैक-ई तँ हमरा सिनुरदानेक रातिसँ बुझल छल। पैंसठि बरिसक रोगी आ ठड्डर, दस बरिसक....कय दिन चलितै ? बुझले छल। नीक जकाँ ला, तोरो सूत तौलबादियौ।* (मणिपद्म–'बुझलेछल')

–*''ताहू पर ई महगी, आ देह.....आमदनी हुनकर जाड़कालाक ओहि छोटकिनमी सीरक जकाँ रहनि, जाहिसँ एन्हर झाँपू तँ ओन्हर उघार, ओन्हर झाँपू तँ एन्हर उघार...।''* (ललित–'ओवरलोड')

–*''अहाँ बुतें असकरे गाड़ी बन्न कयल होयत, धिरजू बाबू ? गामक बीसो समाङ एत' महजूद रहैत तँ दोसर बात छलैक।'–ककर बात करैत छह गड़ेस ? गाममे माउगि–मेहरि कें बान्ह पर अनबह ?–गनेसी गुम्म भ' गेल।* (जीवकात–'इनकिलाब')

एहि उद्धरणसँ ई तँ स्पष्ट भए जाइछ जे कुमारसाहेबसँ जीवकान्त धरि क्रमशः भाषाक स्वरूपमे परिवर्तन होइत आयल अछि। शिष्ट-भाषाक, जाहिमे शब्दओ क्रियापदक लिखाबट ओ उच्चारणमे जीतोड़ प्रयास करय पड़ै छल, ताहि संस्कारसँ क्रमशः दूर होइत कथाकार लोकभाषाकेँ अपन कथाक भाषा बनौलनि। कहब जे ओहिना एनमेन उच्चारण योग्य, सेहो नहि। तखन, लोकभाषाकेँ परिष्कृत करैत परिवेश ओ समयक अनुकूल अपन कथाक भाषा बनौलनिए, जाहिमे कथ्यक जीवित जीवन-खंडक संग सामान्य लोकक बोलचालक भाषा स्वतः आबि रहलए।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्प

□ डा. श्री नरनारायण राय

साहित्येतिहासक परंपरामे 1900 ई. क बादक समय अथवा बीसम शताब्दीक कालखण्ड आधुनिक काल कहबैत अछि । अतएव आधुनिक मैथिली नाटकक प्रारंभ जीवन झाक संग मानल जयबाक चाही । परन्तु महेन्द्र मलंगिया, अरविन्द अक्कू, लल्लन ठाकुर, उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' तथा सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा सनक समकालीन स्थापित ओ नवोदित नाटककार लोकनिक रचनाक संग जीवन झा ओ हुनकर परवर्ती (अथवा 1970-80 क दशकक पूर्वक) नाटक सभक तुलना कय ई बात स्पष्ट कएल जा सकैत अछि जे कोन रचना आधुनिक अछि ओ कोन पुरान । 1910 ई. सँ 1920 ई. क बीचक कालखण्डमे निश्चितरूपेण जीवन झाक नाटकसभक महत्व छल किएक त ओहि समयमे जीवन झासँ अधिक नवीनता लेने कोनो नाटककार समक्ष नहि आबि सकलाह । परन्तु सएह गप आइयो करब भरिसक उचित नहि किएक त 1904 मे लिखल गेल जीवन झाक नाटक *सुंदर संयोग* आइसँ 90 बरिष पूर्वक अर्थात् लगभग एक शताब्दी पूर्वक रचना सिद्ध होइत अछि आओर आजुक नाटकसभक शैली, शिल्प ओ कथ्यसँ ओकर कोनो तुलना नहि भए सकैत अछि । अतएव 'आधुनिक मैथिली नाटक'क संदर्भमे 'आधुनिक' शब्दक अर्थ 'समकालीन' लेल जएबाक चाही । समकालीन शब्दक अर्थ सेहो खूब स्थिर नहि अछि । एक दिन सँ बीस-पचीस वर्षक साहित्य समकालीन कहल जाइत अछि । अतएव विचारक सुविधा लेल हमसब मानि सकैत छी जे आजुक समयमे जे रचनाकार छथि हुनकर रचनासभकेँ समकालीन सृजन मानि लेल जाय चाहे ओ रचना अरविन्द अक्कूक होएन्हि चाहे गोविन्द झाक । एहि दृष्टिसँ महेन्द्र मंलगिया, अरविन्द अक्कू गंगेश गुंजन, गौरीकान्त चौधरी 'कान्त', सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा, शंभुनाथ झा, सोमदेव, शिवाकान्त ठाकुर, लल्लन ठाकुर, शशिनाथ झा, रामदेव झा, रोहिणी रमण झा ओ सदन मिश्र आदि नाटककारक नाट्यकृतिसभकेँ आधुनिक मैथिली नाटक कहल जएबाक चाही किएक तँ 1980 ई. सँ आइ धरि हिनका सभक नाटकसभ समक्ष अबैत रहल अछि । प्रयत्न कएला सँ एहि सूचीकेँ किछु आओर नमहर कएल जा सकैत अछि परन्तु ओहिसँ किछु अतिरिक्त उपलब्धि संभव नहि बुझाइत अछि । एहि अवधिक अन्तरालमे रचना कएनिहार जे किछु नाटककार क नाम छूटि रहल अछि, ओ प्राचीन नाटककार नहि सिद्ध होइत छथि, ने ओ अति साधारण नाटककार सिद्ध भेलाह अछि आओर ने लेखक द्वारा हुनकर उपेक्षा अभीष्ट रहल अछि । जिनकर रचना सभ सुलभ रहल अछि हुनकर नामोल्लेख कएल गेल अछि, बस एतबैक टा बात बुझल जाय । अस्तु, स्पष्ट भेल जे आइ जेक्यो नाटककार सक्रिय छथि हुनकर रचनासभकेँ आधुनिक मैथिली नाटकक सीमामे परिगणित कएल जाय । एकर बादक विचारणीय विषय अछि एहि आधुनिक नाटकसभक रंगशिल्प । अतएव आवश्यक अछि जे रंगशिल्पविषयक हमरसभक अवधारणा सेहो स्पष्ट रहए ।

रंगशिल्पक प्रारंभिक स्वरूप रंगनिर्देश रहल । लगभग दू दशक पूर्वक ई गप अछि जखन अभिनय, अभिनेय, क्रिया-व्यापार, संवाद-भाषण, वेशभूषा, दृश्य-विधान, अभिनय-मुद्रा, आदि विषयक निर्देश देब नाटकक रंगनिर्देशमे सम्मिलित छल । एकदम प्रारंभिक मैथिली नाटकसभमे रंगनिर्देशक स्वरूप व्यापक नहि छल, अधिकसँ अधिक त कतहु दृश्यक सूचना दए देब अथवा कतहु क्रिया-व्यापारक संकेत दए देब पर्याप्त बूझल जाइत छल । मुदा आठम दशकक नाटकसभसँ छोटसँ छोट व्यवस्थाक निर्देश नाटककार द्वारा देल जाय लागल । आइ-काल्हि त ध्वनि, प्रकाश, समूहन, गति, रंगोपकरण, रंग-प्रतीक आदि नाना विषयक स्पष्ट निर्देश नाटककार द्वारा देल जाइत अछि । एहि रंग-निर्देशक उपयोगिता मूल रूपेण ई बुझल गेल अछि जे नाटककारक कल्पना मे ओकर नाटकक मंचित रूप की भऽ सकैत अछि से रंगनिर्देशे टा स्पष्ट करत । अतएव नाटकक मूल रूपक रक्षाक हेतु रंगनिर्देशक पालन आवश्यक होइत छैक । अतः रंगशिल्प वस्तुतः नाट्यालेखक मंचीय अवतारणाक एकटा व्यावहारिक रूपसँ सहायक पक्ष अछि ओ रंगशिल्प नाट्यरचनाक मूल आकृतिक रूपरेखा प्रस्तुत करए बाला गुण थिक । रंगशिल्पक एतबैक महत्व बहुत विशेष नहि कहल जाएत किएक त ई त नाटककारक कर्तव्य छैक जे ओ अपन रचनाक स्वरूप अधिक सँ अधिक स्पष्ट करथि । मुदा जहिना जहिना रंगनिर्देश अपन एहि स्वाभाविक धर्मसँ आगाँ बढ़ि कए, पारंपरिक ढाँचाकेँ तोड़ि कए, कोनो एहन नवीन प्रयास करैत अछि जाहिसँ नाटकक रंगधर्मितामे, नाटकक अर्थवत्तामे, नाटकक सौन्दर्यबोधमे, नाटकक प्रस्तुतिकरणक शिल्पमे, नवीनता आवय अथवा अभिवृद्धि होअय, अथवा गुणात्मकता बढ़ए, त ओसभ रंगशिल्प प्रयोगक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

दृष्टिसँ महत्वपूर्ण कहल जायत । जेना, देखल जा सकैत अछि जे प्राचीन काल सँ लऽ कऽ किछु दिन पूर्व तक नाटकक प्रदर्शन लेल प्रकाश व्यवस्थाक उपयोग मात्र एतबैक छल जे मंचीय क्रिया-व्यापार दर्शकवृन्द स्पष्ट रूपेण ओ सुगमतासँ देखि सकथि । मुदा जँ प्रकाश-व्यवस्थाक उपयोग नाटककार एहि दृष्टिसँ करैत छथि जाहिसँ दृश्य-परिवर्तनक सूचना भेटय, परिस्थितिविशेषक विशेष भावक संकेत भेटय, अथवा दृश्य-रचनाक आकर्षण ओ सौन्दर्यमे अभिवृद्धि संभव होय त एहन सभ गुणात्मक रंगशिल्प विशेषरूपेण महत्वपूर्ण कहल जायत । जीवन झा द्वारा प्रयुक्त दृश्य-विधानक रंगनिर्देश ओहि समयक लेल नवीन आकर्षणक वस्तु छल । आइ ओकरा स्थानमे सेटक निर्माणक निर्देश भेटैत अछि जे नव गप मानल गेल । किंवा चौबट्टी नाटक सभक रंगशिल्प सेहो एकदम नवीन वस्तु थिक जकरामे दृश्यक कोनो स्थिर स्वरूप अधिकांशतः नहि भेटत । एहि तरहेँ कहल जा सकैत अछि जे रंगनिर्देशक रूपमे प्रयुक्त रंगशिल्पक प्रारंभिक स्वरूप किछु आओर छल तथा आइ ओकर स्वरूप अत्यधिक व्यापक भेल अछि । संगहि इहो बात जे रंगशिल्पक प्रयोग नवीन प्रकारक आकर्षण उत्पन्न करबाक लेल, पारंपरिक रंगविधानमे नवीन सौन्दर्यक सृष्टि करबाक लेल, नाटकक नवीन अर्थ खोलबाक लेल सेहो कएल जा रहल अछि । एकरा आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्पक उपलब्धि सेहो कहल जा सकैत अछि किएक त आधुनिक मैथिली नाटकसभमे रंगशिल्पक आंतरिक क्षमताक विस्तार अभिव्यक्त भए रहल अछि ओ नवीन संभावनासभ रूपाकार लए रहल अछि ।

रचना-कौशलक दोसर नाम अछि शिल्प । एहि अर्थमे रंगशिल्प रंगमंचीय कौशलकेँ कहल जाएत । कुशलताक फलस्वरूप रचनाक सौन्दर्यमे वृद्धि होइत छैक । रंगशिल्प एहन रंगमंचीय कौशल भेल जाहिसँ नाटकक मंचीय अथवा मंचित स्वरूप सौन्दर्यमे वृद्धि संभव होय । एहन कोनो रचना-कौशल 1960 ई. तक त प्रायः मैथिली नाटकमे नहि भेटल अछि मुदा साठिक बादक नाटक सभमे रंगशिल्पक अभिव्यक्ति होअय लागल आओर ओकर अर्थ मात्र रंगनिर्देशे टा नहि रहि गेल । रंगनिर्देशोक स्वरूप ओ नहि रहि गेल जे साठिक पूर्व छल । अभिनय-निर्देश, क्रिया-व्यापार निर्देश, संवाद भाषणक निर्देशक परंपरा त उमापतिसँ चलैत आबि रहल अछि । *हरगौरी विवाह* नाटक तथा *स्यमन्तक हरण* नाटकमे वेशभूषा-निर्देशक नवीनता सेहो आयल, *आनन्दविजय* ओ *रुक्मिणीपरिणय* नाटकमे अभिनयक निर्देशक नवीनता सेहो आएल । मुदा एहि सब निर्देशक भीतर कोनो एहन कौशलक दर्शन नहि होइत अछि जे सोझ कए रंगशिल्प कहल जा सकय । एहन किछु प्रयास जँ संभवो भेल अछि त विशेष कऽ कऽ 1980 ई. क आसपास सँ । संयोग अछि जे 1980 ई. क आसपाससँ आइ धरिक मैथिली नाटक सभ एहि आलेखक विषय बनाओल गेल अछि। एहन जे किछु नवीनता प्रत्यक्ष भेल अछि ओकर चर्चा करब एहि आलेखक मुख्य विषय अछि । अर्थात् आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्प ।

स्पष्ट कएल गेल अछि जे रंगशिल्पक प्रारंभिक रूप रंगनिर्देश छल जाहिमे दृश्यविधान, अभिनय, क्रिया-व्यापार ओ संवाद-भाषणक निर्देश मुख्य रहल । दृश्य-विधानक निर्देश एहि कारण आवश्यक बूझल गेल जे परदा सभ पर तदनुकूल चित्रादि कएल जा सकय आओर दर्शकलोकनिककेँ ई आभास रहन्हि जे घटना स्थल कोन अछि । आधुनिक नाटकसभमे एहनो देखल जा रहल अछि जे आब एक नाटकमे एकेटा दृश्यविधान रहैत अछि जकर अनुरूप सेट अथवा कहू जे दृश्यबंध निर्मित कए लेल जाइत छैक; पहिलुका नाटकसभजकाँ प्रत्येक अंकक प्रत्येक दृश्यक भिन्न भिन्न दृश्य नहि राखल जाइत अछि । रंगशिल्प-विधानक ई एकटा नवीन परिकल्पना थिक । दोसर दिस आइ-काल्हि एहनो सभ नाटक लिखल गेल अछि जकरामे कोनो प्रकारक दृश्य-विधानक निर्देश नाटककार द्वारा देले नहि गेल अछि । नाटकक वस्तु-विधान केँ ध्यानमे राखि निर्देशकलोकनि चाहथि त वस्तु-विधानक अनुकूल कोनो प्रकारक दृश्यबंधक निर्माण कए लेथि अथवा चाहथि त बिना कोनो सेटक निर्माण कयने, मंचक पाछू दिस सादा परदा टाँगि नाटक प्रस्तुत कए लेथि । एकटा तेसर संभावना इहो जे दृश्यनिर्देशविहीन चौबट्टी नाटकसभ जकाँ ओकरा प्रस्तुत कए लेल जाय । दृश्यविधानक रंगनिर्देश-विहीन एहि प्रकारक नाटक वस्तुतः निर्देशकलोकनिकेँ एक प्रकारक स्वतंत्रता दैत अछि जे ओलोकनि नाट्य-प्रस्तुतिक शैलीगत स्वरूपक निर्धारण अपन युक्तिसँ करथि । सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक *लेटाइत आँचर* एहि प्रकारक नाटकक एकटा नीक उदाहरण अछि त दोसर दिसि एही प्रकारक मुक्त प्रस्तुति-शैलीक अथवा कहू जे चौबट्टी शैलीक नाटक गंगेश गुंजनक *बुधिबधिया* अछि, जकर प्रस्तुतिगत शैली मे रंगशिल्पक चमत्कार देखल जा सकैत अछि।

आधुनिक नाटकसभक रचनाशिल्प आब दृश्यबंध दिसि अग्रसर भेल अछि । फलस्वरूप नाटकक रंगशिल्प प्रभावित भेल अछि । मंचीय कौशलकेँ ध्यानमे राखि आबक नाटकसभक घटनास्थल कोनो एक स्थानविशेष राखल जाय लागल अछि । एकर प्रभाव रंगशिल्प पर पड़ल जे दृश्य-विधानक निर्देशक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अन्तर्गत आब दृश्यबंधक निर्देश देल जाय लागल अछि । दृश्यबंधक अंतर्गत ओहि कार्य-स्थलक एकटा यथार्थवादी दृश्य, एकटा स्थिर दृश्यक आभास देल जाइत अछि, जेना कोनो कक्षक दृश्यबंध, कार्यालयक दृश्य, अथवा बाट-घाटक दृश्य आदि । दृश्यबंध स्थिर होइत अछि आओर संपूर्ण नाटकक एकमात्र घटना-स्थलक संकेत करयवाला होइत अछि । पहिलुका नाटकसबमे (तथा आइयो ओहि परंपरामे लिखल जा रहल कतोक नाटक सभमे) एके नाटकक भीतर अनेको कार्यस्थल होइत छल। विभिन्न दृश्यक भिन्न-भिन्न कार्यस्थल संकेत देबऽवाला चित्र परदा पर बना कए टाँगल जाइत छल । एके कार्यस्थल विधान भेलाक उपरांत परदावाला मंच-व्यवस्थाक कोनो आवश्यकता आब नहि रहि गेल अछि। पुरान पीढ़ीक नाटककारलोकनि जे आइयो नाटक लिखि रहलाह अछि। हुनका लेल एहि प्रकारक नव रंगशिवपकेँ स्वीकार करब कठिन भए रहल छैन्हि जेना गोविन्द झाक नवीनतम यद्यपि प्रयोगधर्मी नाटक रुक्मिणीहरण केँ देखल जाय । छ दृश्यक एहि नाटकमे चारि दृश्यक विधान अछि जकरा अधिक संभव जे परदेक मदतिसँ खेलल जा सकत। दोसर दिसि अरविन्द अक्कूक कएक गोट नाटकक दृश्यविधान दृश्यबंधे वाला अछि—आगि धधकि रहल छै, ताल मुट्ठी, एना कत्ते दिन, तथा रक्त। लल्लन प्रसाद ठाकुर नवका पीढ़का नाटककार भेलो उत्तर अपन अधिकांश नाटकक दृश्य-रचना करऽ मे रंगशिल्पक कोनो विशेष रचनात्मक अथवा आकर्षक उपयोग नहि कए सकलाह अछि, जकर उदाहरणक रूपमे *लोंगिया मिरचाइ* तथा *बकलेल* नाटक देखल जा सकैत अछि जकर दृश्य-विधान छिडियाएल सन लगैत छैक। यद्यपि मन्त्रेश्वर झाक कएक गोट नाटकसभ समक्ष अछि मुदा रंगशिल्पक सार्थक प्रयोग कोनो रचनामे नहि भेटल अछि । *प्रायश्चित्तक* दृश्यसभ लल्लने ठाकुरक नाटक जकाँ छिड़ियाएल सन अछि जकर एकहि टा समाधान अछि : परदावाला मंच-व्यवस्था। *चक्रवात* नाटकक दृश्य संख्या चारिसँ सातकेँ त मिला-जुला कए एकरूपता देल गेल अछि मुदा प्रथम दृश्यक ग्रामीण परिवेश, दोसर दृश्यक दरिद्रक घर ओ तेसर दृश्यक मोहन बाबूक पटनिया ड्राइंग रूमक आधुनिक परिवेश परस्पर ततेक विरोधी छैक जे दृश्य चारिसँ सातक संग कोनो संगति नहि रखैत अछि। अतएव एकरो नियति परदेवाला मंच अछि । *चक्रव्यूह* नाटकक दृश्य-विधानमे वस्तुविधानक थोड़ बहुत परिवर्तनसँ एकरूपता आनि सेटक रूप देल जा सकैत छल मुदा से नहि भए सकल अछि। किशोरी यादवक नाटक *आँखिक बीझ* सेहो परदेवाला रंगशिल्प लेने अछि मुदा रोहिणी रमण झाक नाटक ***अन्तिम गहना*** मे दृश्यबंधक संभावना अछि । एहि नाटकमे दू दृश्य अछि, चुनचुनक दलान आओर अवधेशक डेरा। दूनू केँ एक दृश्यबंधक सहारा लऽ कऽ मिलाओल जा सकैत अछि। अशोक कुमार झाक नाटक ***जीवैत लाश*** मे प्रथम दृश्य जे मेडिकल कालेज़क छात्रावासक अछि, ओकरा छोड़ि शेष प्रायः सभ दृश्य, आनन्दक घरक दृश्यबंध बना कए प्रस्तुत कएल जा करैत अछि। काशीनाथ मिश्र रचित ***दिग्विजय,*** सदन मिश्रक ***राजनर्तकी,*** शंभुनाथ झाक *पुत्रदान,* शशिनाथ झाक *मदालसा* नाटक आदि समकालीन आधुनिक मैथिली नाटकसभ परदेवाला मंचबंधक रंगशिल्पक अनुगामी अछि । अतएव धारणा त इएह बनैत अछि जे किछु नवतुरिया नाटककारलोकनिकेँ छोड़ि सामान्यतः आधुनिक मैथिली नाटक अधिकांशमे एखनहुँ परंपराक अनुगामी अछि अथवा रंगशिल्पक वास्तविक प्रयोजन एवम् प्रयोगसँ अनभिज्ञ अछि।

आधुनिक मैथिली नाटकसभक अवलोकनसँ एकटा इहो गप स्पष्ट होइत अछि जे रंगशिल्पक दृष्टिसँ एकटा नवीन संभावना मुक्तशिल्प अथवा कहू जे लचकदार शिल्प अपनाकए किछु एहन नाटकसभ लिखल गेल अछि जकरा निर्देशक चाहथि त वस्तु-विधानक अनुरूप एकटा सेट (दृश्यबंध) बना कए प्रस्तुत करथि अथवा चाहथि त मंच पर पाछाँ दिसि एकटा सादा अथवा एकरंगा कपड़ा टाँगि कए प्रस्तुत कएथि । एही कारणेँ एकरा मुक्त रंगशिल्प किंवा लचकदार रंगशिल्प कहल गेल अछि किएक त एहि प्रकारक नाटकसभमे नाटककार दिसिसँ कोनो प्रकारक बंधन नहि होइत छैक जे नाटक एही तरहेँ प्रस्तुत करए पड़त। गंगेश गुंजनक चौबट्टी नाटक *बुधिबधिया,* लल्लन ठाकुरक नाटक *बड़का साहब,* अरविन्द अक्कूक नाटक *एना कत्ते दिन* लगभग एही रंगशिल्पक रचना अछि । दर्शकलोकनिक ध्यान कोनो विशेष घटनास्थल अथवा दृश्य पर केन्द्रित करबाक लेल रंगशिल्पक अंतर्गत स्थिरीकरण अथवा फ्रीजिंग तकनीकक प्रयोग आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्पक एकटा विशेषता कहल जाएत । कमसँ कम चारि गोट नाटकमे एहि रंगशिल्पक प्रयोग हमरा देखबामे आयल अछि। गोविन्द झाक नाटक *रुक्मिणीहरण* मे पाँचम दृश्यक अंतमे (पृ0 44) देल गेल निर्देश मंचस्थ पात्र सभकेँ ठाढ़ भय नारा लगबैत स्तब्ध भय जयबाक निर्देश देल गेल अछि। ई स्तब्धता स्थिरीकरण किंवा फ्रीजिंग थिक। अरविन्द अक्कू अपन नाटक *अन्हार जंगलक* अंतिम दृश्यमे स्पष्ट निर्देश दैत छथि जे **"एतबा कहैत सब पात्र फ्रीज भए जाइत छथि"** (पृ0 46) । लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटक *बकलेलक* अंतिम दृश्यक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अंतिम संवाद बजैत-बजैत दयाबाबू उपर सीढ़ी दिसि बढ़ैत स्थिर भय जाइत छथि (पृ0 56)। हिनके दोसर नाटक *लौंगिया मिरचाइ* मे सेहो नाटकक अंतमे पात्र सभकेँ अपन-अपन अभिनय-स्थितिमे स्थिर भय जयबाक निर्देश देल गेल अछि। एहि रंगशिल्पक प्रयोगसँ नाटकक अंत प्रभावशाली ढंगसँ सामने अबैत अछि, नाटकक आकर्षण ओ चमत्कारमे अभिवृद्धि होइत अछि तथा पारंपरिक नाटकक दर्शक सभ लेल एकटा नवीन प्रकारक अनुभव सिद्ध होइत अछि।

ध्वनि ओ प्रकाश व्यवस्थाक रंगशिल्प आधुनिक मैथिली नाटकसभमे आब व्यवहारमे आबए लागल अछि। प्रकाशक उपयोग मंचकेँ आलोकित राखबाक अतिरिक्त आब दृश्य-समाप्तिक संकेत देबाक लेल, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व ओ भावक उतार-चढ़ाव देखएबाक लेल, स्वल्प प्रकाश, केन्द्रित प्रकाश, रंगीन रोशनी आदिक प्रयोग देश, काल ओ परिस्थितिक अनुरूप कएल जाय लागल अछि। बिजलौका चमकब, उल्कापात, दिवा-रात्रिभेद आदि सभ देखाबक लेल सेहो आब प्रकाशक उपयोग होइत अछि। ओही तरहेँ ध्वनि-संयोजनक तकनीकी प्रयोग सभसँ सेहो आजुक नाटकसभ लाभान्वित भय रहल अछि। ध्वनि ओ प्रकाश-व्यवस्थाक रंगशिल्पक एकटा सार्थक ओ उल्लेखनीय प्रयोग उदय नारायण सिंह "नचिकेता" क नाटक *एक छल राजा* मे देखल जा सकैत अछि आओर भरिसक आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्पमे ई पहिल प्रयोग सिद्ध होअए त कोनो अचरज नहि। नाटकक पृ0 72 पर रंगनिर्देश सहित राजाक एक टा संवाद अछि :

"राजा : (निषेध करैत) नहि डाक्टर नहि (ठमैत, बड़बड़ाइत) जहाज....जहाज डूबि गेल रानी। ओ कंकाल सभ लिखलक.....जे, एक छल राजा। (तखनहि ढाकक स्वर धीरे-धीरे बढ़ि क तीव्रतर भए पुनः मंद भए जाइत अछि। सर्वत्र अंधकार। केवल अगिला कोन पर ठाढ़ घोषक पर प्रकाश पड़ैत अछि।)"

एहि ठाम जीवनक परम क्षण मृत्युक स्थिति ढाकक बढ़ैत चरम स्वर ओ पुनः ओकर अवसान द्वारा तथा सर्वत्र अंधकार (अर्थात् प्रकाशरूपी जीवनक अनुपस्थिति) द्वारा व्यंजित कएल गेल अछि। एहि तरहेँ नाटकमे घटित घटनाक अर्थक समर्थन रंगशिल्पक प्रयुक्त माध्यम ध्वनि (ढाकक स्वर) ओ प्रकाशक योजना द्वारा कएल गेल अछि। आधुनिक मैथिली नाटक सभक एहि प्रकारक गुणवत्ता ओकरा कोनो भारतीय भाषाक नाटक ओ रंगमंचक सकक्ष सिद्ध करबामे सक्षम अछि।

लोकनाट्यक रंगशिल्प आओर कलात्मक नाटकक रंगशिल्प मे अन्तर होइत छैक। लोकनाट्यसभक मंच निर्मित नहि होइत छैक, ओ स्वतः उत्पन्न होइत छैक जखनि कि कला-नाटकक मंच निर्मित होइत छैक। लोकनाट्यसभमे दृश्य-परिवर्तनक अतिरिक्त व्यवस्था नहि होइत छैक। साहित्यिक ओ कलात्मक नाटकसभमे होइत छैक। लोकनाट्य नाट्यधर्मी होइत छैक। लोकनाट्य ओ कलात्मक नाटकसभक रंगशिल्पमे छोट-मोट आओर अंतर अछि। एहि ठाम ई प्रसंग एहि कारणेँ उठाओल गेल अछि जे आधुनिक नाटकसभमे आब लोकनाट्यक शिल्प सेहो अपनाओल जाय लागल अछि। अपन सभक मैथिली भाषाक प्राचीन लोकनाट्य किर्तनिआ नाटक सेहो अछि। एकर विशेषता इएह जे किर्तनिआ नाटकक आलेख सेहो तैयार कएल गेल छल जखन कि सामान्यतः अन्य भाषाक लोकनाट्यसभक आलेख नहि होइत छल। अस्तु, लोकनाट्यक रंगशिल्प ल' क' गोविंद झा एकटा नाटक लिखने छथि *रुक्मिणीहरण*। एहि नाटकमे दू टा कथा समानान्तरभावेन चलैत अछि, एक टा कथा अछि पूर्व प्रचलित रुक्मिणीहरण नाटकक किर्तनिआ अभिनय ओ दोसर कथाक विषय थिक निलहा अंग्रेज साहब द्वारा रुक्मिणी नामक एकटा ग्रामीण युवतीक शीलहरणक प्रयास ओ ओकर संगठित विरोध। बिंब-प्रतिबिंब भावसँ दूनू कथाक कथ्यमे समानता राखल गेल अछि मुदा एक कथाक अभिनय किर्तनिआ लोकनाट्यक शैलीमे तथा दोसर कथाक अभिनय यथार्थवादी रंगशैलीमे होइत अछि। दूनूकेँ मिलाओल नहि गेल अछि, राखल गेल अछि दूनू कथाकेँ भिन्न-भिन्न आओर दूनू कथाक अभिनयो भिन्न-भिन्न शैलीमे चलैत अछि, मुदा एकहि नाटकमे लोकनाट्य ओ कला-नाट्यक रंगशिल्पकेँ निभाओल गेल अछि। आधुनिक मैथिली नाटकक रंगशिल्पक ई एकटा नव दृष्टि अछि जकर उल्लेख होएबाक चाही। नाटकक आधा भाग किर्तनिआ शैलीमे, आधा भाग यथार्थवादी शैलीमे, ई आधा-आधा भाग मिलि कऽ एकटा नवीन ओ आकर्षक रंग-रूपक रचना करैत अछि। लोकनाट्यक शैलीमे नाटक लिखब एकटा गप भेल मुदा विभिन्न लोकतत्वक मददि लऽ कऽ कलात्मक ओ साहित्यिक नाटकक सृजन करब एकदम दोसर गप अछि। महेन्द्र मलंगियाक नाटक लिअऽ *ओकरा आंगनक बारहमासा*। एहि नाटकमे नाटककार द्वारा प्रत्येक दृश्यक प्रारंभमे लोकगीतक प्रयोगसँ नाटकमे एकटा अपन ढंगक नवीनता आएल अछि एहि विषयमे मतभेद भरिसके होएत मुदा लोकगीतक अंशकेँ निकालिओ देलासँ नाटकक मूल स्थापत्य ओ प्रभावमे कोनो बाधा नहि पड़ैत अछि। अर्थात्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रंगशिल्पक ई पक्ष एहि ठाम आरोपित अछि, अन्यथा गीतसभकेँ निकालि देलासँ नाटक खाण्डत, अपूर्ण ओ कटल-कटल लगबाक चाहै छल, ओकर प्रभावो घटि जएबाक चाहै छल, मुदा होइत अछि एकर विपरीत। तथापि रंगशिल्पक एकटा नवीन भंगिमा त एहि सँ प्रकट जरूरे भेल अछि। एहिसभ तरहक तत्वकेँ जँ नीक जकाँ पचा कए नाटक लिखल जाय, मूल रचनाक अविभाज्य अंग बना कए प्रस्तुत कएल जाय त ओहि सब रंगशिल्पक मौलिकता असंदिग्ध रहत। एही तरहक प्रयास विभूति आनन्दक रचना *समय संकेत* (भंगिमा, अगस्त 87) मे देखल जा सकैत अछि जकरामे लोकनाट्य कीर्तन शैली रचनाक अंगक रूपमे आयल अछि, ओकरा मूल रचनासँ अलग नहि कएल जा सकैत अछि, महेन्द्र मलंगियाक *ओकरा आंगनक बारहमासाक* गीत सभ जकाँ। एहि रंगशिल्पक अपन एकटा अलगे सौन्दर्य देखाय दैत छैक।

रंगोपकरण ओ रंग-प्रतीक रंगशिल्पक एकटा अन्य महत्वपूर्ण पक्ष अछि। उपकरणक प्रयोग नाटकक मंचन-कालमे होइत छैक जेना कुर्सी, टेबुल, चौकी, बिछाओन, तकिया आदि, आदि। प्रतीकक विधान नाटकक अर्थ खोलए लेल कएल जाइत छैक। सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक अछि *लेटाइत आंचर*। एहि नाटकमे एकटा सार्थक ओ विशेष रंगोपकरणक प्रयोग देखल जा सकैत अछि जे जकर महत्व कुर्सी-टेबुल सभसँ किछु विलक्षण अछि, किएक त ई उपकरण उपकरणक उपयोगितासँ आगू बढ़ि कए प्रतीकात्मकता सेहो लए लैत अछि। नाटकक प्रथम दृश्यमे ममता एक गोट पुतरा लेने ओ ओकरा सजीव बालक मानि ओकर तरह-तरहसँ मनरंजन करैत अछि। गुड़िया एकटा निर्जीव उपकरण अछि, मुदा ओ एहूसँ आगाँ बढ़ि कए ममताक अतृप्त मातृत्वक प्रतीक सेहो भए जाइत अछि। ई गुड़िया ममताक जीवनक प्रतीक सेहो अछि जकर जीवनक मोल एकटा साइकिल, रेडियोसँ तुच्छ आँकि कए पति छोड़ि देने अछि, जकर विवाह पिता ओहिना करौलनि जेना कनिआँ-पुतराक विवाह होइत छैक—एकदम उत्तरदायित्वविहीन भावसँ। नाटकक अंतिम दृश्यमे ओही पुतराक माध्यमसँ नाटककार (ममता सेहो) ई संदेश दैत अछि जे नारी-जीवनक मोल आइयो दहेजसँ कतेक न्यून अछि। एहि तरहक अर्थगर्भित ओ प्रतीकात्मक रंगोपकरणक प्रयोग मैथिली नाटकमे आधुनिके कालमे संभव भेल अछि। लल्लन प्रसाद ठाकुरक नाटक *बकलेलक* अंतिम दृश्यमे मंच पर एकटा सीढ़ीक उपयोग उपर चढ़ऽ अथवा नीचाँ उतरऽलेल कएल जाइत अछि। मुदा एहि नाटकमे सीढ़ी मात्र एकटा उपकरणे नहि रहि गेल अछि। दृश्य-विधानक अनुसार नाटकक एहि अंतिम दृश्यमे दयाबाबू स्त्रीक संग उपर जाएबाला सीढ़ी चढ़ैत स्थिर भय जाइत छथि। दया बाबू मुरारीक स्वार्थी पुत्रसभसँ उपर उठल लोक छथि तेँ हुनका धरतीसँ किछु उपर उठल देखाओल गेल अछि। दृश्यकेँ फ्रीज करैक मूल अभीष्ट इएह जे दर्शकलोकनि दृश्यकेँ एहि अर्थ केँ आत्मसात् कय सकथि। फ्रीजिंग तकनीकक मूल उद्देश्य होइत छैक इएह जे ओहि क्षणविशेषक दृश्य रचना दिस दर्शकक ध्यान विशेष रूपसँ आकर्षित कएल जाय। विस्तारमे गेलासँ एहि तरहक आओरो कतोक उदाहरण संकलित कएल जा सकैत अछि जाहिसँ आधुनिक मैथिली नाटकक रंगधर्मिता स्पष्ट करएवाला रंगशिल्पक विस्तृत ज्ञान प्राप्त कएल जा सकैए। मुदा जतबेक चर्चा कएल गेल अछि ततबेसँ दू टा गप त एकदम सोझ कऽ कऽ बूझल जा सकैत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक रंगशिल्पक दृष्टिसँ प्रयोगधर्मी सिद्ध होइत अछि आओर दोसर गप ई जे आइ-काल्हिक मैथिली नाटकसभ आब ओतबेक शक्तिशाली ओ संभावनापूर्ण अछि जतबा कोनो दोसर भारतीय भाषाक नाटकसभ बताओल जाइत अछि। मैथिली नाटक ओ रंगमंचकेँ आब अपना ऊपर गर्व करैक अधिकार अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली प्रसार प्रभाव : सन्दर्भ उड़ीसा

□ डा. श्री बदरीनारायण झा

मिथिलाक प्राकृत भाषाक नाम अवहट्ट छल। प्राकृतक बाद सबसँ पहिने मिथिलेमे एहि भाषामे रचना भेल। जैन, बौद्ध तथा वैष्णव पंथक प्रचार-माध्यमसँ एहि भाषामे रचना आनो-आनो ठाम होअय लागल। अनेक भाषाक आदिरचना प्राय: मैथिलीमे अछि। अस्तु,' शब्दसाम्य स्वाभाविके।

एक केनिया (अफ्रिका) क मुसलमान सज्जनसँ भेट भेल। पुछला पर कहलनि–'हम पाकिस्तानी नहि, गुजराती-हिन्दुस्तानी मुसलमान छी। हमर भाषा केनियोमे गुजरातिये थिक।' पुछलनि–'अहाँक भाषा कोन थिक?' हम कहलियनि–'मैथिली।' पुछलनि-'केहन होइछै मैथिली ?' कहलियनि-'गुजराती जेहेन तेहने। अहाँ बजैछी– **''आमे करिये छीये।''** आ हम बजैछी– **''हम करइ छियइ''**। ओ कहलनि–'आब हमसब स्वल्प रूपेँ बजैछी– **'अमे करे छी।'** हम कहलियनि– आब हमहूँ सब बजैछी– **'हम करइ छी।'** अतः, हमरासबकेँ सामंजस्य बढ़ेबाक चाही।

गोविन्ददासक सन्दर्भमे राय रामानन्द तथा राय चम्पतिक पुछारिमे कटक विश्वविद्यालय गेलहुँ। ओड़िया विभागक प्रधान सँ भेट कएलिअनि। ओनि कहलनि-'हमरासबकेँ हिनका सभक कोनो परिचय नहि अछि। हमरा ओहिठाम दामोदर चम्पति, वृद्ध चम्पतिक रचना अछि जे हमसब बुझै नहि छिअइ।' गीत देखय देलनि, कहलियनि जे मैथिली थीक। पुछलनि-'अहाँ एकर अर्थ हमरा विद्यार्थीसबकेँ बुझाय दबै की ?' ओ एक-एक उड़ियाक विद्यार्थी सबकेँ बजौलनि। हम अर्थ कहलिअनि तँ ओ सब बड़ प्रसन्न भेलाह। रिसर्चक क्रममे एक गोटे भेट करै लेल मुम्बइयो अएलाह। आगू की भेल से पता नहि।

पता चलल जे आदिकालक रचनाक संदर्भमे अति वल्लभ मोहंती उपयोगी होएताह। हुनकासँ गप भेला पर बहुत किछु प्राप्त भेल। ओ पहिनहि कहलनि जे बंगालीलोकनि ब्रजबुली-वादक निरर्थक वितंडा उठौने छथि, हमसब एकरा नहि मानैछी। उड़ीसाक प्रमुखमे ओ माधवेन्द्रपुरी तथा विष्णुपुरीक नाम कहलनि। विष्णुपुरी तरौनी गामसँ आएल छलाह। माधवेन्द्रपुरीक भातीज चैतन्यक उपनयनक आचार्य गुरु छलथिन्ह। चैतन्यक उपनयनक गीत मैथिलीमे अछि। उड़ीसाक राजा बड़ पैघ यज्ञ कएलनि, जकरा संपादन लेल चैतन्यक पूर्वज नाहर-भगवतीपुर सँ बजाओल गेलाह। ओ एतेक पैघ यज्ञ छलैक जे ओहि स्थानक नाम यजन ग्रम–जानग्रम पड़ि गेल। चैतन्यक पूर्वज एतहु बसाओल गेलाह।

ओइनिबारलोकनिमे पारिवारिक मतांतरमे छोट भाइक संतान नवद्वीप लग अपन स्वतंत्र सत्तां स्थापित कएलनि। छोट भेने ओलोकनि कुमार कहाबै लगलाह। चैतन्यक पूर्वज हिनका लोकनि द्वारा नवद्वीप बजाओल गेलाह जतय चैतन्यक जन्म भेलनि। चैतन्यक शिष्य बंगालक हुसेन शाह आ उड़ीसाक प्रताप रुद्रदेव दूनू छलथिन्ह। हुसेन शाह प्रतापरुद्र पर चढ़ाइ कए देल तँ चैतन्य बीच सेनामे आबि कए दूनूकेँ घुमाओल। चैतन्यक प्रभावसँ प्रतापरुद्रक समयमे उड़ीसामे मैथिलीमे रचना भेल।

गोविन्द दासक रिसर्चक सदर्भमे कलकत्तामे बंगीय साहित्य परिषद गेलहुँ तँ पता लागल जे एहि विषयमे केवल विमान विहारी मजूमदार कहि सकैत छथि। ओ पाटवारी मठमे छलाह। ओतय गेलहुँ तँ ओ बड़ मनोयोगसँ विद्यापतिक पदावलीक संग्रहमे लागल छलाह। मैथिलमे ओहन उत्साहक अभाव अछि। पुछलियनि 'चैतन्यक परिचय पर अहाँक मार्गदर्शन चाही। बंगालक पुस्तकसबमे भेटैये जे ओ पाश्चात्य वैदिक ब्रह्मण छलाह। पाश्चत्य शब्दक विशेषता निश्चिते यूरोपीय नहि। बंगालसँ पश्चिम मिथिला नहि की?' ओ तुनकि कहलनि- 'महाराज, अहाँसबकेँ जनक, याज्ञवल्क्यसँ अमरनाथ झा तक कोन कमी अछि। हमरा सबकेँ तँ एकटा चैतन्य छथि, ताहूपर अहाँ सब चैन नहि रहय देबए चाहैत छी।'

आब मैथिललोकनिकेँ विशेष परिश्रमी होएबाक चाही। कृत्तिवास झाक रामायण बंगला रामायण कहबैतअछि। ओकरो भाषाक अध्ययन अपेक्षित अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नेपाली : नेवारी : मैथिली अन्तःसंबंध

□ डा. धीरेन्द्र

नेपाली, नेवारी आ' मैथिलीक अन्तःसंबंधकेँ देखाएब एकगोट कठिन कार्य अछि। सर्वप्रथम नेपाली आ' मैथिलीक अन्तःसंबंधकेँ देखएबाक चेष्टा करब।

मैथिली नेपाली एके भाषा-परिवारक दू भाषा थिक; आ' तएँ एहि दुनूमे अन्तःसम्बन्ध अछि। दुनू संस्कृतसँ प्रभावित अछि आ' दुनूक पचास प्रतिशत शब्द संस्कृतक थिक। दुनूक व्याकरण संस्कृतपर आधारित अछि। कतेको शब्द एहेन अछि जे मात्र एहि दू भाषामे अछि, आन भाषामे नहि। यथा मैथिलीमे जकरा चिन्हार-परिचय कहैत छियै, नेपालीमे ओकरा **'चिनापर्ची'** कहल जाइछ। मैथिलीमे कहैत छियै'–**'एतऽ आउ'**, नेपालीमे कहल जाइछ **'एता आउ'**। बड़ थोड़ अन्तर अछि। मैथिली आ' नेपालीक लोकोक्ति धरिमे समानता अछि। यथा नेपालीमे कहल जाइछ–**''सिध्राको व्यापार र पशुपतिको दर्शन''**। मैथिलीमे कहल जाइछ–**''सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन।''** मैथिली जेकाँ नेपालियोमे विभक्ति शब्दक संग मिलाकेँ लिखल जाइछ। तहिना यदि नपालीमे होइछ–**''म जान्छु, म पढ्छु, म सुत्छु''** तँ मैथिलीमे होइछ **''हम जाइत छी, हम पढ़ैत छी, हम सुतैत छी''**। ई समानता हिन्दी वा आन भाषामे नहि देखल जाइछ। बहुतो एहेन शब्द अछि जे कि तँ एके रंगक अछि वा जाहिमे कनेके अन्तर छैक। यथा ***गुदी, गुलाम, छाती, छाँट, छानबीन, जवाफ (मै. जबाब), जातकर्म, जाँत (ने. जाँतो),*** जादू, झुलना, टाप, टहल, टिकट, डगडग, गोबर, टामटुम, टोटल, टेर, ढकिया, ताप, तामदान, ताल, थपड़ी (मै. थोपड़ी), तोशखाना (ने. तोशाखाना) तौलिया, थुक, थैयाथैया, दङ्गा, दागबत्ती, धामी (मै. धामि), धुनियाँ, नतीजा, नक्कली (मै. नकली), नदी, निराधार, निर्गुण, निरर्थक, नीच, नोकसानी, पक्की, पकौड़ी, पखाल (मै. पखार), पचमेल (मै. पचमेर), पञ्चायत, पसेरी, पाहुन (ने. पाहुन्), पीकदानी, पूजा, प्रदक्षिणा, फरक, फागु (मै. फगुआ), फुलेल, बड़हर, बटुवा, बढ़िया (मै. बढ़ियाँ), बतिया, बरामद, बर्त (मै. व्रत), बहाना, बह्रमासे (मै. बारहमासा), बिदाइ,भँरार, भनभँन, भाड, भोज, मञ्जूरनामा, मण्डली, मन, मयूर, महगी (ने. महँगी), मारकीन, पुरोहित, बट्टा, बहस, बागडोर, बेगार, बखाड़ी (नेपाली भकारी), भँड़ार, मरमसाला, मर्दाना, मल्ल, महन्त (मै. महन्थ), मुठभेर (मै. मुठभेर), मुताबिक (मै. मोताबिक), मोटामोटी, रमणीय, रहस्य, अमल, असम्भव, अहङ्कार, आङ्गन, आचमनी, अलमारी, उपेक्षा, उमेर, एकतर्फी, पर्दा, परीक्षा, परिपक्व, पर्यन्त आदि शब्द एके वा एकरङ्गाहे अछि।

नेवारी दोसर भाषा-परिवारक भाषा थिक। एकर व्याकरण मैथिलीसँ पूर्णतया भिन्न अछि। मुदा बहुतो दिन धरि मल्ल राजा लोकनिक समयमे ई दुनू भाषा संग-संग रहल। परिणामतः दुनूमे सम्बन्ध स्थापित भए गेल। मैथिलीक बहुतो नाटकमे निर्देशन नेवारीमे लिखल अछि तँ नेवारीक बहुतोमे गीत मैथिलीमे अछि। एतबए नहि, शब्दो सभमे बड़ साम्य अछि। नेवारी भाषापर विद्यापतिक पूर्ण छाप अछि। एखनहु पाटी-पौवामे गाओल जाइबला गीतमे 'भनहि विद्यापति' चलैछ।

नेवारीक एकगोट विशेषता अछि जे एके शब्द उच्चरणक उतार-चढ़ाओ द्वारा भिन्न अर्थ दैछ। यथा– 'मोखला।' ई मोखला यदि प्रश्नवाचक मुद्रामे पूछल जाए तँ एकर अर्थ होइछ ''बुझलियै?'' आ' यदि स्वीकारक मुद्रामे कहल जाय तँ एकर अर्थ होइछ ''बुझि गेलियै''। मैथिलियोमे एहेन स्थिति अछि। एहूमे ''बुझलियै'' यदि प्रश्नवाचक मुद्रामे कहल जाए तँ ओकर अर्थ होइछ ''बुझलियै कि नहि?'' आ' यदि स्वीकारक मुद्रामे कहल जाए तँ ओकर अर्थ होइछ ''बुझि गेलियै''।

एही प्रकारेँ नेवारी नाटकमे सेहो 'प्रथम दिवसे' 'द्वितीय दिवसे' चलैछ जेना नेपालक मैथिली नाटकमे। एहिना नाटकक प्रारम्भमे शिवक स्तुति रहैछ जे मैथिलियो नाटकमे रहैछ। गीतमे 'ओरे' क भास दुनू भाषामे चलैछ। 'पट' शब्दक अर्थ पर्दा दूनू भाषामे होइछ।

कहल जाइछ जे मूल मल्ल मिथिलासँ आएल छलाह आ' हिनकालोकनिक मातृभाषा मैथिली छल। ओना ईसभ स्थानीय भाषा नेवारीमे सेहो दक्ष भए गेलाह। परिणाम ई भेल जे मल्ल राजालोकनिक दरबारमे मैथिलीक संग-संग नेवारी सेहो आदर पओलक। मिथिलाक्षरक संग-संग रंजनालिपि सेहो चलए लागल। मिथिलाक विद्वान् वंशमणि झा सन-सन प्रतिभावान् विद्वान् सम्मानित भेलाह।

जखनि जयस्थिति मल्लक पश्चात् भाइसभमे राज्यक बटबारा भेल तँ ओकर तीन खण्ड भेल। कान्तिपुर वा काठमाण्डू, तलितपुर वा पाटन तथा भक्तपुर वा भातगाँव। तीनू ठाम नाटक एवं गीतक रचना भेल। प्रधानता मैथिलीक रहल। ओना नेवारी सेहो संग रहल। स्थिति ई भेल जे कथोपकथन यदि मैथिलीमे रहल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

तँ रंग-निर्देशन नेवारीमे। कथोपकथन यदि नेवारीमें रहल तँ गीत मैथिलीमे। परिणामतः मैथिली आ' नेवारीकेँ बहुतो दिन धरि हत्थाजोड़ी कएकेँ रहबाक अवसर भेटलै'। दुनू ओना दू परिवारक भाषा छल, मुदा शब्दक आदान-प्रदान खूब चलल। नेवारी पर मैथिलीक प्रभाव पड़लै' तँ मैथिलियो नेवारीक प्रभावसँ बाँचल नहि रहल।

सिद्धि नरसिंह मल्ल यदि मैथिलीमे पदक रचना कएलन्हि तँ ओ नेवारियोमे पद रचलन्हि। परिणामतः नेवारीक शब्द मैथिली मे तँ मैथिलीक शब्द नेवारीमे आबि गेल।

एहि प्रकारेँ एक ठाम रहबाक कारणेँ मैथिली, नेपाली आ' नेवारीमे अन्तःसम्बन्ध अछि। एखनहुँ ई क्रम छुटल नहि अछि। मैथिलीक 'खेसारी' नेपालीमे 'खेसरी' भए जाइछ।

नेपालक मैथिली पत्र-पत्रिका

□ डा. श्री रेवती रमण लाल

नेपालमे राणा शासन धरि पत्र-पत्रिका एवं साहित्यक प्रकाशन एकगोट अपराध मानल जाइत छल। चोरा-नुका कए केओ किछु प्रकाशित करैत छल त ओकरा प्रशासनक कोपभाजन बनक पड़ैत छलैक। इएह सब कारण अछि जे नेपाली भाषाक पहिल पत्र *गोरखा भारत जीवन* आ *'गोरखें खबर कागज'* नेपाल सँ बाहर भारतसँ प्रकाशित भेल छल। कहल जाइछ जे जखन *गोरखा पत्रक* प्रकाशन प्रारंभ भेल आ क्रमशः ओकर संख्या बढ़ए लागल तँ राणा शासन चौंकि उठल छल आ कड़ा चेतौनी सेहो देने छलै।

सन् 1951 ई. मे राणा शासनक अंत भेल आ समय करोट फेरलक। शताब्दीसँ दबाएल जन-मानसकेँ उसास भेलैक। जनमानस उनमुनाए लागल। राजा द्वारा प्रजातंत्रक घोषणा भेल, आम निर्वाचन कराओल गेल, जनताक सरकार बनल। एहि नवयुगक आरंभ संग कतेको ठाम स्कूल, पुस्तकालय आदिक स्थापना भेल। पुस्तक एवं पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन आरंभ भेल। मुदा मुद्रण यंत्रक अभावक कारणेँ ठाम-ठाम हस्तलिखित पत्र-पत्रिकासभ बहरायल जाहिमे जनकपुर क्षेत्रक एहि पंक्तिक लेखकक संपादनमे *किशलय* आ निर्भय शंकर लालक संपादनमे *बालशाखाक* नाम विशेष उल्लेख्य अछि। मुदा अत्यल्प संख्याक कारणेँ समयक प्रवाहक संग ओहि पत्रिकासभक प्रति आब उपलब्ध नहि अछि। एकर पश्चात सन् 1957 ई. मे जनकपुरसँ एकगोट मुद्रित त्रैभाषिक पत्रिका **नवजागरण** बहराएल, जाहिमे मैथिली भाषाक रचना सेहो प्रकाशित भेल छल। एकर दोसर अंक नहि देखल गेल।

1951 ई. मे राजा द्वारा प्रजातंत्रक घोषणा भेल छल मुदा ओकर दसम वर्षमे जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधिक सरकार भंग कए देल गेल, संसद भंग भए-गेल आ जन-प्रतिनिधि लोकनि केँ बंदी बना देल गेल। निरंकुश पंचायती व्यवस्थाक स्थापना कएल गेल आ देशमे अनिश्चितताक वातावरण पसरि गेल। एहन अवस्थामे देशक कोनो प्रकाशनक हेतु सेन्सर आवश्यक कए देल गेलै। मैथिली भाषा सन क्षेत्रीय भाषाक प्रकाशनो पर सेन्सर अनिवार्य भए गेलै। जँ प्रकाशनक भाषा सम्बन्धित स्थानीय प्रशासन कार्यालयमे बुझबाजोकर नहि भेल तँ प्रकाशक. संपादाककेँ तारिख ढोइत-ढोइत आजिज। एहनो अवस्थामे नेपालमे मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल। सर्वप्रथम विक्रम संवत् 2025 सालमे पं. सुन्दर झा शास्त्रीक संपादनमे काठमाण्डूसँ *फूलपात* क प्रकाशन भेल। तत्पश्चात् डा. हरिदेव मिश्रक संपादनमे काठमाण्डूयेसँ *इजोत* प्रकाशित भेल आ लगले विराटनगरसँ प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, प्रो. गणेश लाल आ प्रो. लक्ष्मण शास्त्रीक संपादनमे *मैथिली* नामक पत्रिका प्रकाशित भेल। ई तीनू पत्रिकासभ साहित्यिक पत्रिका छल आ फूलपात मात्र काठमाण्डू सँ पंजिकृत भेल छल। 'फूलपात' किछु वर्ष काठमाण्डू सँ प्रकाशित भए किछु वर्षसँ जनकपुरसँ प्रकाशित भए रहल अछि। मुदा इजोतक दोसर अंक नहि बहरा सकल। मैथिली आठ-नौ अंक धरि प्रकाशित भेल मुदा प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक नेपालसँ प्रस्थान करितहि ओकर प्रकाशन बंद भए गेल।

फूलपात जावत काठमाण्डूसँ प्रकाशित होइत रहल अनेक उत्कृष्ट अंकसभ बहराएल, जाहिमे विद्यापति विशेषांक, जगत्प्रकाश मल्लकृत नानार्थ देव देवी गीत संग्रह विशेषांक विशेष उल्लेखनीय अछि। ई पत्रिका नेपालस्थित प्राचीन साहित्य एवं तत्सबन्धी निबन्ध आदि प्रकाशित करैत रहल जे एकर महत्वपूर्ण उपलब्धि रहलैक। मुदा जनकपुर आबि ई पत्रिका दिन-दिन कृशकाय होइत गेल। विराटनगरसँ मैथिलीमे *नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास एवं* प्रो. लक्ष्मण शास्त्री द्वारा प्रणीत *धर्मराज युधिष्ठिर* मीनी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

महाकाव्यक प्रकाशनक अतिरिक्त एहि क्षेत्रक लोक-साहित्यक प्रकाशन एकर मुख्य उपलब्धि रहलैक। एकर अतिरिक्त स्थानीय प्रतिभासभकेँ सतत उजागर करैत रहल।

विक्रम संवत् 2030 सालमे डा. धीरेन्द्रक निर्देशन एवं श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमरक संपादनमे जनकपुरसँ *अर्चना* सामयिक संकलन प्रकाशित होमय लागल। इहो एक गोट साहित्यिक पत्रिका छल जे स्थानीय प्रतिभासभकेँ समक्ष लएबाक अतिरिक्त अनेक विशेषांक सभ प्रकाशित कए मैथिली साहित्यक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान करैत रहल। एकर मुख्य विशेषांकसभ छल विद्यापति विशेषांक, कविता विशेषांक एवं अतिथि रचना विशेषांक आदि। एहिमे नेपाली आ मैथिली साहित्यक तेहन संयोग रहलैक जे डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन एकरा सांस्कृतिक सेतु कहि बैसल छलाह। मुदा इहो पत्रिका साठि-पैंसठि अंक धरि प्रकाशित भए बंद भए गेल। जनकपुरसँ वि0 सं. 2039 सालसँ **गामघर** नेपालक पहिल पंजीकृत साप्ताहिक समाचारपत्र आ तकर पाँच वर्षक पश्चात् *आँजुर* साहित्यिक मासिक श्री राम्भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क सम्पादन मे प्रकाशित होमए लागल। 'गामघर' समाचारपत्र रहितो एहिमे साहित्यिक रचनाक अभाव नहि रहल। एहिमे समाचार-विचारक अतिरिक्त साहित्यिक रचनासभ पर्याप्त मात्रामे प्रकाशित होइत रहल। एहि दुनू पत्रिकासभमे स्थानीय प्रतिभासभकेँ आगू लएबाक संगहि महत्वपूर्ण अंक-विशेषांकसभ प्रकाशित होइत रहल अछि। *गामघरक* जनकपुर विशेषांक, जनकपुरक शैक्षिक विशेषांक, संस्कृति विशेषांक, पत्रकारिता विशेषांक, नेपालक राजारानीक जन्मोत्सव विशेषांक बहराएल। संगहि *आंजुर* जन-कविता विशेषांक आदिक प्रकाशन कए नेपालक पत्रकारिताक क्षेत्रमे महत्वपूर्ण योगदान देलक अछि। **गामघर** एखनो जनकपुरक पत्र-पत्रिका केन्द्रसभमे भेटि जा सकैत अछि। एहि बाबन वर्षसँ साहित्यकार रामभरोस कापड़िजीक मैथिली पत्रकारिताक प्रति योगदानकेँ नकारल नहि जा सकैछ। ई हुनक अनवरत मैथिली प्रति संबद्धता, लगनशीलता आ मेहनतिक द्योतक अछि। विक्रम संवत् 2040 सालमे उदयकान्त ठाकुरक संपादन एवं प्रकाशनमे जनकपुरसँ *जनक* 'कविता-द्वैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल छल। ई एकगोट कविता प्रधान पत्रिका छल जे नेपालमे प्रजातंत्रक पुनःस्थापनासँ पहिने अर्थात् सन् 1990 ई. सँ पहिने बंद भए गेल। एहि पत्रिकामे एहि क्षेत्रक सेकड़ो कवितासभ प्रकाशित भेल छल।

सन् 1990 ई. धरि नेपालक राजनीतिक व्यवस्था पंचायती प्रणालीक विरुद्ध जन-चेतना जागि उठल छल आ जन-आन्दोलनक आगि पजरि उठल छल। एही वर्षसँ किछु मैथिली पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भेल। एहिमे 1990 ई. मे जीतेन्द्र जीतक संपादनमे फोल्डर पत्रिका *कमला;*, जीतेन्द्रजीत, विनोद चन्द्र आ रा. ना. सुधाकरक संपादनमे (वि. सं. 2047 मे) **प्रभात** साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका दुनू विराटनगरसँ प्रकाशित भेल। एकर अतिरिक्त *मिथिला टाइम्स* समाचार पाक्षिक प्रो. राम रीझन यादवक संपादनमे विराटनगरसँ प्रकाशित भेल छल। एहि पत्रिकासभमे **कमला**क दोसर अंक नहि प्रकाशित भेल आ **मिथिला टाइम्स** एक-दू अंक बहार भए बंद भए गेल। **प्रभात** चारि-पाँच अंक धरि प्रकाशित भए बंद भए गेल। ओहिमे ओकर कथा अंक विशेष महत्वपूर्ण रहल।

जनकपुरसँ *धधरा* पोष्टर पत्रिका प्रो. सुरेन्द्र लाभक संपादनमे प्रकाशित भेल जे भाषा एवं विषय-वस्तुक दृष्टिएँ एकगोट आन्दोलनक रूपमे सोझाँ आएल छल। मुदा ओहो दोसर वर्षमे प्रवेश नहि कए सकल आ कालकवलित भए गेल। एम्हर काठमाण्डूसँ 'पल्लव' धीरेन्द्र प्रेमर्षिक संपादनमे आ नेपाल मैथिल समाजक मुखपत्र **नेपाल मैथिल समाज** पत्रिका सेहो काठमाण्डूसँ बहराएल। *पल्लव* एखनधरि अपन साहित्यिक स्वरूपमे बहार भए रहल अछि। मुदा नेपाल मैथिली समाजक पत्रिका एक वर्षसँ बेसी समयावधिसँ नजरि पर नहि पड़ल अछि।

एहि बीच जनकपुर मिथिला नाट्य कला परिषदक मुख-पत्रक रूपमे *मिथिला वाणी* साहित्यिक त्रैमासिक प्रकाशित भए रहल अछि। एहि पत्रिकाक साहित्यिक अवदान महत्वपूर्ण रहलैक अछि। जनकपुरसँ उपेन्द्र लाभक संपादनमे *मिथिलांचल* साहित्यिक पत्रिकाक प्रकाशन सेहो प्रारभ भेल अछि ओ एखन धरि दू अंक प्रकाशित भए चुकल अछि।

सन् 1995 ई. मे नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान काठमाण्डू सं डा. योगेन्द्र प्रसाद यादवक संपादनमे **सयपत्री** नामक एक बहुभाषी पत्रिका प्रकाशित भेल अछि जाहिमे मैथिलीक रचना सेहो प्रकाशित भए रहल अछि। एखन धरि दू अंक मात्र प्रकाशित भए सकल अछि। एहिमे मैथिलीकेँ बहुत कम स्थान देल गेल अछि आ ओहो स्थान मुख्यतः काठमाण्डू रहनिहार द्वारा मात्र छेकल गेल अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उपरोक्त पत्रिकाक अतिरिक्त नेपालसँ एहनो पत्र-पत्रिका सभ प्रकाशित भेल जे एकसँ दू अंक धरि प्रकाशित यए बंद भए गेल। ओहनमे वि. सं. 2039 मे प्रदीप कुमारक संपादनमे भद्रपुरसँ प्रकाशित *हिलकोरसँ* लोककेँ नीक आशा छलैक मुदा संपादककेँ नेपाल त्यागक कारणेँ ओहो साहित्यिक पत्रिका दू अंकसँ आगू नहि बढ़ि सकल । एकर अतिरिक्त *वाणी* (राजविराज), *दूभिधान* (साहित्यिक त्रैमासिक, झापा) एक-एक अंक प्रकाशित भेल।

पत्र-पत्रिका प्रकाशन बड़ नीक गप्प मुदा इतिहासमे अपन नाम संपादक रूपमे देखबाक हेतु पत्र-पत्रिका प्रकाशन करबाक प्रवृत्ति नीक नहि कहल जा सकैछ। एहन पत्र-पत्रिका बेसी दिन नहि चलि सकैछ आ ओ बंद भए जाइत अछि। कतेक पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनमे एही तरहक प्रवृत्तिक अनुभव होइत अछि। संपादक-प्रकाशककेँ इमान्दार एवं निष्पक्ष होएब स्वास्थ एवं चिरस्थायी पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनक पहिल शर्त होइछ।

उपर लिखि चुकल छी जे नेपालमे पत्र-पत्रिका प्रकाशनक हेतु ततेक उन्मुक्त वातावरण नहि रहलैक। एकर प्रमुख कारण छलैक राजनीतिक, मुदा एमहर सन् 1991 ई. सँ नेपालमे प्रजातंत्रक पुनर्बहालीक पश्चात् एहि क्षेत्रक काज किछु सुविधगर भेलैक अछि। मुदा मैथिली पत्र-पत्रिका अनेक समस्याक पाँकमे धसैत रहल अछि। ओकर प्रमुख समस्या पाठकक अछि। आर्थिक लाभक त गपो नहि वास्तविक खर्च धरि बहार नहि होइत अछि। मैथिलीभाषीक मैथिली प्रेम भाषाण वा लेखनमे जतेक भेटत, मैथिली पत्र-पत्रिका वा पुस्तक किनबामे ततबे पाछू रहैछथि। विज्ञापनक युग रहितो मैथिली क्षेत्र विज्ञापनक हेतु उर्बर नहि, ई बाँझ सन रहल अछि। कारण ई जे जँ पाठके नहि त विज्ञापन ककरा लेल ? हमरालोकनिकेँ आश्चर्य तखन होइये तखन एहिठाम किछु दू-चारिगोटे बंगाली सज्जन छथि जिनका हेतु मात्र बंगाली पत्र अबैत अछि मुदा मैथिलीभाषी लाखोमे छी मुदा साल भरिमे कोनो मैथिली पत्र-पत्रिकाक एको सए प्रति नहि बिका पबैत अछि। नेपालमे पूर्व सीमान्त मेची सँ पश्चिम बागमती धरि दस-एगारह जिलामे मैथिलीभाषी पसरल छी मुदा पाठकक संख्या एहन नगण्य किएक ? ई बहुत गंभीर समस्या अछि। मैथिलीमे त जे लेखक होइछ सएह पाठक सेहो। एहना स्थितिमे पत्रिकाक प्रकाशक सम्पादक किछुए अंकक बाद थस्स लए लैत छथि।

पाठककेँ सेहो अपन शिकयत रहलैक अछि : पाठक हिन्दी नेपाली अंग्रेजी पत्र-पत्रिका पर कतबो खर्च करत मुदा मैथिली पत्र-पत्रिका पर एको पाइ नहि। पाठकक कहब छैक जे ओकरा अपन रुचिक वस्तु मैथिली पत्र-पत्रिकमे नहि भटैत छैक। किछु दिन पहिने नेपाली पत्र-पत्रिकासभ हल्ला कएलक जे नेपालमे हिन्दी पत्र-पत्रिकाक पथार लागल रहैये मुदा नेपाली पत्र-पत्रिका सभ नेपालमे खास कए तराइ क्षेत्रमे ओतेक नहि पहुँचैत अछि। एहि हल्लासँ नेपाली पत्र-पत्रिकाक वितरणमे गति सुनियोजित भेल। फल ई भेलेक जे बहुत हिन्दी पत्र-पत्रिकासभक संख्या घटि गेलै। मुदा मैथिलीक हेतु ई संभव नहि छैक। मैथिलीमे साधनक अभाव छैक। ओ सभवस्तु पत्र-पत्रिकामे समावेश करब बड़ कठिन छैक जे पाठक चाहैत छैक। कोनो एहन साधन-संपन्न व्यक्ति वा संस्था नहि छैक जे पत्र-पत्रिका प्रकाशित कए पाठककेँ अपन रुचिक वस्तु दए सकए अर्थात् मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ व्यवसायी स्वरूपमे आनब बड़ कठिन छैक। प्रयास जारी रहबाक चाही। स्थितिमे सुधारक हेतु मैथिलकेँ अपन स्वभावमे सेहो परिवर्तन आनए पड़तनि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नेपाल सरकारक मैथिली नीति आ लोकक संलग्नता

□ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि

एक वाक्यमे जँ कहबाक हो तँ कहि सकैत छी नेपाल सरकारक मैथिलीक सम्बन्धमे कोनो नीति नहि छैक। विभिन्न भाषासभक समूहमे सरकारी सुविधा आ राशि दूर्वाक्षत जकाँ कहिओ काल छिटि देल जाइत छैक। ओहीमे सँ किछु अक्षत मैथिलीक आँजुरमे पड़ि जाइत छैक, तकरे सरकारी सुदृष्टि मानि लेल जाइत अछि। इएह मैथिलीक सम्बन्धमे नेपाल सरकारक नीति कहेबाक सौभाग्य पाबि जाइत अछि।

नेपालमे विक्रम संवत् 2046 सालमे प्रजातन्त्र प्राप्त होएबासँ पूर्व पञ्चायती व्यवस्थामे राष्ट्रभाषा नेपालीकेँ छोड़ि कोनो भाषाकेँ संवैधानिक मान्यता प्राप्त नहि छलैक। मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे किछु ऊर्जावान् व्यक्तित्व क्रियाशील छल आ. जनगणनाक अनुसार नेपालीक बाद सबसँ बेसी संख्या मैथिलीए बजनिहारक रहलाक कारणेँ यदा-कदा नेतासभक भाषणमे तथा आनो गोटेक-आधेक ठाम मैथिली (नेपालक द्वितीय भाषा)केँ सम्बन्धित भाषाभाषी सेहो 'भाषा' बुझनाइ प्रायः छोड़ि देने छल। तत्तद् भाषाभाषीक संलग्नता आ सक्रियता अपन भाषाक संरक्षण तथा उत्थान करबाक दिशामे विशेष रूपेँ नेवारी आ लिम्बू भाषाक मामलामे देखल जाइत छल। ओहन संक्रमणकालीन अवस्थामे मैथिलीयोक प्रति मैथिलसभक सक्रियता बेजाय नहि छल। अपितु उपलब्धिक दृष्टिएँ कहल जाए तँ वर्तमान प्रजातान्त्रिक परिवेशमे मैथिलसभक अपन भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक सम्बन्धमे जे उत्साह (?) देखल जा रहल अछि, ताहिसँ सन्तोषजनक छल। तेँ संख्यात्मक रूपसँ देशक दोसर भाषा होएबाक आ मैथिलसभक किछु संलग्नताक कारणेँ मैथिली, तथा भाषाभाषीक संख्या कम रहितो लोकक विशेष सक्रियता आ नेपालक राजधानी काठमाण्डू उपत्यकामे व्यापक रहलाक कारणेँ नेवारी भाषा, संगहि आंशिक रूपेँ लिम्बूसहित किछु भाषा मात्र अस्तित्वमे छल पञ्चायती कालमे।

तत्कालीन समयमे मैथिलीक स्थिति भगजोगनी जकाँ रहितो जेँ कि व्यवस्थे अन्हारक छल नेपालमे, तेँ बेस चमकैत सन बुझना जाइत छल। प्रजातन्त्र-प्राप्तिक बाद बहुत अधिक अपेक्षा रखनिहार मैथिलसब जखन मैथिलीक लेल सरकारक विशेष ध्यान नहि देखलनि त इहो कहैत सुनल गेलाह जे अइसँ बेसी सम्मान त मैथिलीकेँ पञ्चायती व्यवस्थामे छलैक। मुदा यथार्थ ई छल जे हमरासभक मनःस्थिति एहि समयमे 'किछु' भए सकैत छैक ताहि पर विश्वास नहि कए पाबि रहल छल। मुदा स्वयं मैथिलेसभक संलग्नतासँ थोड़-बहुत काज भए जाइत छलैक। कहियो कालक समाचारोमे 'नेपालक द्वितीय भाषा' कहि मैथिलीसम्बन्धी सामाचार छपि जाइत छलैक। तेँ लोककेँ बुझाइत रहैक जे तहिया एखनसँ बेसी काज होइत छलैक। हँ, एतबा अवश्य छल जे तहिया मैथिली-विकासक ढोल नहि पीटल जाइत छल, जतबे होइ छलै काजे होइ छलै।

प्रजातन्त्रक स्थापनाक संगहि देशमे अन्यान्य क्षेत्रक अतिरिक्त भाषा, साहित्यक क्षेत्रमे सेहो सरकारसँ विशेष अपेक्षा कएल जाए लगलैक। एहि अवस्थामे पञ्चायत कालभरि अस्तित्व जोगौने रहबामे सफल भाषासब अपन उचित सम्मान तथा स्थान भेटबाक बात पर विश्वस्त रहल सन बुझाएल। तेँ ओहि भाषासबसँ सम्बद्ध व्यक्तिमे नव संविधानमे की कोना-व्यवस्था हो, ओहि सम्बन्धमे कोनो खास सुगबुगी नहि देखल गेल। हँ, किछु जातीय भाषाभाषीसबकेँ तथा लोप होब' लागल किछु भाषा बजनिहारसबकेँ बेसी कूदफान करैत पाओल गेल। प्रजातन्त्रसँ भाषाक सम्बन्धमे लोकक अपेक्षाकेँ दृष्टिगत करैत अन्तरिम कालमे बनल नेपाल अधिराज्यक संविधान 2046 मे देशमे बाजल जाएबला सम्पूर्ण भाषाकेँ मान्यता दए देल गेलैक (मुदा भाषाक साहित्यिक स्तर वा बजनिहारक संख्या पर कोनो ध्यान नहि दए ''खस्सी बकरी, एक्के छोकरी'' कए देल गेलैक। भाषाक स्तर-निर्धारण करबाक फेरमे नहि पड़ि) देशमे बाजल जाएबला सम्पूर्ण भाषाकेँ एकमुष्ट राष्ट्रिय भाषाक नाम दए देल गेलैक।

देशक प्रजातान्त्रिक संविधानक अनुरूप कुल करीब दू करोड़ जनतामे सँ लगभग तीस लाख व्यक्तिक मातृभाषा तथा देशक सबसँ प्राचीन आ गरिमामय साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्परायुक्त भाषा मैथिली एवं सए-डेढ़ सए गोटेक बोलीकेँ बराबरिक आसन भेटल छैक। काल्हि जँ कोनो एक फ्रेञ्च परिवार नेपालमे आबि कए रहि जाए आ ओ अपन भाषाकेँ बजैत रहए तँ नव संविधानक अन्तर्गत फ्रेञ्च सेहो नेपालक राष्ट्रीय भाषा बनि जाएत। सरकारक ई गञ्जागोल भाषा-नीतिक कारणेँ मैथिलीसन सम्पन्न भाषासब आर विखण्डित होइत जा रहल अछि। हेतु जे स्वतन्त्र अस्तित्व देखेबाक लेल जाति, स्थान, सम्प्रदाय, धर्म आदिक आधार पर भाषासभक निर्माण होबय लागल अछि। मूलतः मिथिलाक्षेत्रमे रहनिहार सब जाति, सब धर्मक लोक बजैत अछि मैथिलीए, मुदा जाति, धर्म, स्थान आदिक आधार पर मातृभाषाक रूपमे मैथिलीक स्थान पर थारू, उर्दू आदि लिखाओल जा रहल अछि। एकटा राजनीतिक दल अपन कार्यकर्तासबकेँ निर्देशने दए रहल अछि जे ओसब अपन मातृभाषा हिन्दी लिखाबथि। आ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कतोक व्यक्ति सभ्य कहेबाक उद्देश्यसँ सेहो हिन्दी, नेपाली, अंग्रेजी मातृभाषी बनि रहल छथि। आखिर चिन्ताक बाते कोन, जखन सब भाषाकेँ राष्ट्रीय भाषाक मान्यता प्राप्त छैके !

नेपाल सरकारक भाषा-नीतिकेँ एक तरहेँ बिहारक वर्तमान शिक्षा-पद्धतिए जकाँ देखल जा सकैत अछि। एहि नीतिक कारणेँ नेपालमे मैथिलीक पठन-पाठन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ि रहल अछि।

संविधानमे एकटा खास व्यवस्था इहो कएल गेल छैक जे प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थी सबकेँ मातृभाषमे देल जा सकैत अछि। देशक पचासो राष्ट्रीय भाषा (मातृभाषा) मध्य मैथिलीयो एक भेलाक कारणेँ एकर लाभ मैथिलीकेँ सेहो भेटि सकैत छैक। मुदा पी. एच. डी. धरिक डिग्री मैथिलीमे प्राप्त करबाक व्यवस्था पञ्चायतिए कालसँ रहितो लोक सेवा आयोगमे तकर मान्यता नहि छैक। आब जँ रोजगारसँ शिक्षा जुड़बे नहि करए त एहन शिक्षाक औचित्ये की रहि जाएत ? तेँ सरकारक नीति भाँज पुरौअलि-सन मात्र बुझाइत अछि।

विभिन्न भाषाभाषीमे प्रजातन्त्रक सुखानुभूति परसबाक बहन्ने सरकारी निकायसबसँ विभिन्न भाषाक ग्रन्थ छापल जेबाक घोषणा, विभिन्न साहित्यकेँ नेपालीमे अनुवादक सरकारी पत्रिकासबमे प्रकाशन, रेडियो नेपालसँ किछु भाषामे समाचार प्रसारण, नेपाल टेलिभिजनसँ टेलिफिल्मक निर्माण तथा प्रदर्शन आदि किछु काज कएल जा रहल अछि। मुदा ई काजसब धीया-पूताकेँ बतासा बाँटि परतारबसँ बेसी किछु नहि प्रमाणित भए रहल अछि। सरकारी निकायक कार्यप्रक्रियासँ खास कए मैथिली भाषाक सम्बन्धमे सकारात्मकसँ नकारात्मक असर अधिक पड़ि रहल छैक। एहि हेतु जे नेतृत्ववर्गमे मैथिलीक ज्ञाता प्रायः क्यो नहि अछि।

एहि स्थितिक मूल कारण अछि जे नेपालक नेतृत्ववर्गमे सब दिनसँ नेपालीभाषीसभक एकछत्र अधिकार छनि। ओ सब एहि तथ्यसँ अपरिचित नहि अछि जे नेपालमे एकटा एहनो भाषा छैक, जकरा समुचित खोराकी भेटलापर ओकरा आगाँ काल्हुक जन्मल नेपाली भाषा बन्ठ बुझाए लगतैक। दोसर बात, जाहि चीजक ओसब पूर्णरूपेण उपभोग करैत आएल अछि, ताहिमे सँ अनावश्यक रूपेँ ककरहु हिस्सा किएक देतैक ? एकरे परिणाम छैक जे एकटा दू सए पृष्ठक पत्रिकामे एक सए नब्बे पृष्ठ नेपालीक लेल रहैत छैक तऽ दश पृष्ठ राष्ट्रीय (अन्य) भाषा सभक लेल सेहो छोड़ि देल जाइत छैक। कोनो सरकारी प्रकाशन संस्थामे पाँच सए पोथी नेपालीक छपैत छैक त पाँच टा आनो भाषाक छापि लेल जाइत छैक। नेपाल टेलिभिजनसँ दू सए टेलिफिल्म नेपालीमे बनैत छैक त पाँच टा देशक आन विभिन्न भाषाक सेहो बनेबाक स्वीकृति दए देल जाइत छैक। रेडियो नेपालक पाँच घण्टा नेपाली समाचारक लेल रहैत छैक त आधा घंटा आन सब भाषाकेँ सेहो भेटि गेल छैक।

आन सम्पूर्ण भाषा अथात् राष्ट्रीय भाषा बीचक एहि धक्कामुक्कीमे कहियो काल मैथिलीयोकेँ लहि जाइत छैक सैहटा, अन्यथा नेपाल सरकार मैथिलीक लेल कोनो नीति नहि बनौलक अछि। आ जँ कि मैथिल जनप्रतिनिधिसब सेहो कहुना कुर्सीएटा हथिएबाक जोगाइमे व्यस्त देखल जाइत छथि, तेँ सरकार मैथिलीक सम्बन्धमे गम्भीर होएबाक आवश्यकतो नहि बुझैत अछि।

देशक आन भाषासबमे सबसँ सबल आ सक्षम स्थितिमे रहल मैथिलीक समुचित विकास नहि होबय देबाक लेल सरकार उन्टे विभिन्न कुचालि चलि रहल अछि। मैथिलीए भाषी थारूसभ द्वारा जन्माओल गेल थारू भाषाकेँ प्रोत्साहन देब, समय-समय पर हिन्दीकेँ तराइ क्षेत्रक भाषा कहि देब, मैथिलीक नाम पर निम्न स्तरक कार्य आ कार्यकर्ताकेँ प्रश्रय देब आदि सरकारक एहि तरहक गतिविधिसँ स्वतः स्पष्ट भए जाइत अछि जे ओ मैथिलीकेँ वक्रदृष्टिसँ देखैत अछि। एतबा होइतो नेपालमे मैथिलीक स्थिति नीक अछि। एकर स्थान सम्मानजनक अछि। एकर मूल कारण थिक जे नेपालक मैथिलसभमे अपन मौलिकतासँ पलयान करबाक प्रवृत्तिक विकास नहि भेलैक अछि। मात्र नाम-दाम लेल अथवा आन भाषामे मान्यता आ प्रतिष्ठा नहि भेटलाक कारणेँ एहि ठामक लोक मैथिलीमे नहि लिखैत छथि। ओहिना नेपालमे मैथिलीक काजमे सामान्य लोकक संलग्नता बड़ उत्साहप्रद आ प्रेरणादायी अछि। मैथिलक बाहुल्य रहल जनकपुरधाम, राजविराज, लहान, सिरहा, मलंगवार, विराटनगर आदि शहरमे बहुसंख्यक लोक आपसी बातचीत मैथिलीएमे करैत अछि। राजधानी काठमाण्डुओमे मैथिली जननिहार नेतालोकनिक लेल मैथिलीएमे भाषण करब बाध्यता छैक। कुल मिला कए जँ कोनो आदमी नेपालक मिथिलामे आबि जाए त ओ बुझि सकैछ जे ई मैथिलसभक रहय बला जगह छैक, तकर आधारसब पर्याप्त मात्रामे भेटि जाइत छैक एतय।

ई सन्तोषजनक स्थिति बनौने रहबामे बहुत हद धरि सम्पूर्ण मैथिलक अपन भाषा संस्कृतिक प्रति सहज सिनेहक महत्वपूर्ण भूमिका छैक। एकरा अतिरिक्त किछु विशिष्ट मैथिल सभक क्रियाकलापक सेहो बड़ पैघ हाथ छैक, जे अपन जिनगीएकेँ मैथिलीमय बना लेने छलथि आ छथि।

पचासक दशकमे स्व. पं. जीवनाथ झा अध्यापनक क्रम मे जनकपुर अएलाह। ओ अपन शिक्षण पेशाक संगहि साहित्य

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सृजनमे सेहो सक्रिय भए गेलाह । अपनेटा नहि, जनकपुर क्षेत्रक अन्य प्रतिभावान् लोकसभकेँ सेहो भाषा, साहित्य, कलाक क्षेत्रमे काज करबाक लेल प्रोत्साहित करैत रहलाह । एहिसँ कविता लिखबाक सुप्त प्रवृत्ति जागि उटल । आ यैह समूह नेपालमे आधुनिक कालक मैथिली साहित्यक नेओ बनल । एहि हिसाबेँ पं. जीवनाथ झाकेँ नेपालक आधुनिक-कालीन मैथिली साहित्यक संस्थापक कहल जा सकैत अछि । मल्ल कालक वाद मैथिली लेल क्रमशः बनैत प्रतिकूल स्थितिकेँ पं. जीवनाथ झा अपन व्यक्तित्वसँ अनुकूल बनाओल । साहित्यक सर्जना लेल प्रेरित कएल ।

एकरा बाद 1960 ई. मे जनकपुर धाम स्थित रा0 रा0 व0 कैम्पसमे प्राध्यापनक लेल अएलाह डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' । इहो पूर्वहिसँ मैथिली आ साहित्यक रंगमे रँगल छलाह । ओ स्वयं खूब साहित्यिक सर्जना कएल । साहित्यकारोक निर्माण भरपूर मात्रामे कएल । अपन प्रभावमे आएल प्रत्येक व्यक्तिकेँ जे एहि क्षेत्रमे रुचि रखैत अछि, तकरा ताहि क्षेत्रसँ मैथिलीक सेवा करबाक लेल प्रेरित करय लगलाह । पं. जीवनाथ झा द्वारा बनाओल गेल मैथिली साहित्यक खुरपैड़ियाकेँ राजपथ बना देल डा. धीरेन्द्र ।

पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' मैथिलीमे मौलिक रचना आ अन्यान्य भाषासँ अनुवाद करैत मैथिलीक विकासमे जुटल रहलाह । *फूलपात* नामक एक पत्रिकाकेँ जन्म देलनि, जे नेपालक अग्रज मैथिली पत्रिका बनि गेल ।

मैथिली साहित्यकेँ अपन कृतिसब दए कए समृद्ध बनौनिहार पं. रमाकान्त झा, पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर', पं. लक्ष्मण शास्त्री आदि साहित्यकारलोकनिक संलग्नता सेहो उल्लेखनीय रहल ।

नाटक प्रति अपन अभिरुचिकेँ डा. धीरेन्द्रक प्रेरणासँ मैथिलीक सेवामे बदलि लेनिहार स्व. योगेन्द्र साह 'नेपाली' क नेपालमे मैथिलीक झंडा फहरवैत रहबामे बड़ महत्वपूर्ण योगदान रहलनि । नेपालमे सम्प्रति सर्वाधिक आ उल्लेखनीय मैथिलीक काजसब केनिहार संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक जन्म आ लालन-पालनक सबसँ बेसी श्रेय हुनके जाइत छनि । अपन व्यापारिक प्रतिष्ठान जानकी पुस्तक भंडारसँ मैथिलीक पोथी सब छापि कए सेहो बड़ उपकार कए गेल छथि योगेन्द्रजी मैथिलीक लेल ।

नाटक लेखन आ निर्देशनक माध्यमेँ नेपालक मैथिली नाटककेँ सम्पूर्ण नेपाल आ भारतमे परिचित तथा प्रतिष्ठित करौनिहार महेन्द्र मलंगियाक संलग्नता मैथिली विकासमे विशेष महत्व रखैत अछि । वस्तुतः सर्वसाधारण जनताकेँ अपन पां्वेश सँ बन्हने रहबामे हिनक सर्वाधिक योगदान छनि । आइ भारतक विभिन्न ख्यातिप्राप्त आर्केष्ट्रा ग्रूपक कार्यक्रमसभमे सेहो हुलिमालि उठा देनिहार जनकपुरक दर्शकसब जे चारि-चारि घंटा मैथिली मञ्चसँ बन्हाएल रहि जाइए, से हिनके लेखन आ निर्देशनक प्रतिफल थिक ।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' वर्तमानमे नेपालक मैथिली साहित्यक सर्वाधिक सक्रिय कार्यकर्ता थिकाह । विविध विधामे रचना कए एक दिस ई मैथिली सहित्यक भण्डारकेँ भरि रहल छथि त' दोसर दिस नेपाली पत्रकारिताक, जे हिनक मूल पेशा थिक, माध्यमसँ सेहो मिथिला आ मैथिलीक उन्नतिमे सहायक होबयबला काजसब करैत रहलाह अछि । श्री भ्रमरक सबसँ महत्वपूर्ण भूमिका मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे छनि । *गामघर*, *आँजुर* आ *अर्चना* पत्रिकाक माध्यमसँ नेपालमे मैथिली पत्रकारिताक हुकहुकी बचौने रहबामे हिनक अग्रणी भूमिका छनि । मैथिलीयो पत्रिकाकेँ उत्पादनशील बना पौनिहार संभवतः ई एकमात्र व्यक्ति हेताह ।

स्वर्गीय कवि भुवनेश्वर पाथेयक योगदान सेहो नेपालक मैथिली हेतु उल्लेखनीय छनि । खूब लिखलनि मुदा छपलनि कम । जतबे छपलनि, मैथिली साहित्यक लेल ठोस उपलब्धि साबित भेल । पत्रकारिता क्षेत्रमे थोड़बे दिन रहि सकलाह मुदा स्वच्छ पत्रकारिता ककरा कहल जाइत छैक लोक हुनका द्वारा सम्पादित पत्रिकासबसँ बुझि सकैत अछि । स्व. पाथेयक अप्रकाशित कृतिसब जँ छपि जाए त मैथली साहित्यक अमूल्य निधि भए सकैत अछि ।

मिथिला वा नेपाल तथा भारतक लोक प्रायः मैथिलीसँ परिचित होएत मुदा मैथिलीक सूक्ष्मता आ गहनतासँ विश्व समुदायकेँ परिचित करेबाक काज करैत एलाह अछि डा. रामावतार यादव । अंग्रेजी, जर्मन आदि भाषामे हुनक मैथिली सँ सम्बन्धित कतोक बहुमूल्य पोथीसब छपि चुकल छनि ।

भावनाक अतल तल डुबा देब' बला अपन रचनासबसँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध बनौनिहार डा. राजेन्द्र विमल एवं रा. ना. सुधाकर तथा यात्रा, संस्मरण, साक्षात्कार सन विधाक माध्यमेँ नेपालक मैथिली साहित्यमे अलग तरहक साहित्यिक खोराकी परसनिहार रेवती रमण लालक संलग्नतासँ मैथिलीक विकासकेँ गति भेटैत रहलैक अछि ।

साहित्यकार तथा कलाकार श्यामसुन्दर शशि, कवि तथा पत्रकार धर्मेन्द्र विह्वल, रोशन जनकपुरी, हिमांशु चौधरी, अभिनेता मदन ठाकुर, सुनील मिश्र, गायक सुनील मल्लिक,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अनुकृतिकार रामनारायण ठाकुर, साहित्यकार पत्रकार तथा अभिनेता रमेश रंजन आदि युवा-वर्गक संलग्नता बड़ महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि मैथिलीक विकासमे। पत्रकार कुलराज धिमिरे द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित **सिंहावलोकन** पाक्षिकक नेपालीय मैथिली विशेषांक हुनक संलग्नताकेँ महत्वपूर्ण बना देलकनि अछि अइ क्षेत्रमे।

जँ एहि बातकेँ दृष्टता नहि मानल जाए त विभिन्न माध्यमे एहि लेखकक संलग्नताकेँ सेहो लोक मैथिली विकासक दिशामे सार्थक रूपसँ लैत बुझना गेल अछि।

महिलासभक संलग्नता अत्यन्त न्यून देखल जाइत अछि जे शुभ संकेत नहि थिक। ओना मिथिला पेन्टिंग्समे किछु स्त्रीगण संलग्न छथि। साहित्य, संगीतमे सेहो संलग्नता शून्य कमसँ कम नहि अछि।

एहि ठाम किछु नामक उल्लेख कएल अछि से सभ हमरा दृष्टिएँ विशेष महत्वपूर्ण योगदान केनिहार छथि। परंच तकर तात्पर्य ई नहि थिक जे आन लोक हाथ पर हाथ धए बैसल छथि। पुरानसँ लए नव साहित्यकार, कलाकारसभ अपन-अपन क्षेत्रसँ मैथिलीक सेवा कए रहल छथि। सामान्य मैथिलसब सेहो मैथिलीकेँ जीवनक अभिन्न अंग बनौने छथि। तेँ नेपालमे मैथिलीक स्थिति सम्मानजनक आ संतोषजनक अछि। एहि सन्तोषजनक स्थितिक कारण सरकारी नीति नहि थिक, अपितु नेपालक मैथिल जनक अपन मातृभाषाक प्रति सकारात्मक संलग्नता थिक–मैथिलीक प्रेम थिक।

मैथिली आ बंगला रंगमंच : अन्तःसम्बन्ध

□ श्री राम लोचन ठाकुर

मिथिला आ बंगालक सम्बन्ध जेहने प्राचीन तेहने घनिष्ठ। बात भूगोलक हो वा इतिहासक, भाषा-साहित्यक वा आचार-व्यवहारक– सभठाम ई साम्य-सम्बन्ध देखल-पाओल जाइछ।

मिथिलाक पूर्वमे बंगाल अवस्थित अछि। वास्तवमे जँ मानव-निर्मित एहि सीमारेखाकेँ बिसरा देल जाय तँ दुनू देशक प्राकृतिक परिचितिमे पार्थक्य कए पाएब असंभव-सन प्रतीत होइछ। दुनू नदीमातृक देश। सुजला सुफला सस्य श्यामला धरती। धान पान माछक प्राचुर्य। जेँ हेतु कोनो अंचल लोकक खान-पान-परिधान पर ओकर भौगोलिक अवस्थानक प्रभाव पड़िते छैक, अथवा एना कही जे एकरे द्वारा निर्धारित-निरूपित होइत छैक–स्वभावतः मैथिल आ बंगालीक खान-पान-परिधानमे साम्य आ तेँ दैहिक-मानसिक गठन-चिन्तनमे सेहो साम्य।

मिथिला विद्याध्ययनक केन्द्र रहल अछि। दर्शनक पीठस्थान। एहिठाम विभिन्न अंचलसँ लोक अध्ययन हेतु अबैत छलाह आ स्वाभविक कारणेँ बंगालीक संख्या बेसीए रहलैक। अध्ययनोपरान्त ओलोकनि जखन अपन देश घुरैत छलाह त एहिठामक सभ्यता-संस्कृतिकेँ सेहो अँगेजने जाइत छलाह आ तकर प्रचार -प्रसार अपना-अपना क्षेत्रमे करैत छलाह। मिथिलाक पश्चात् नवद्वीपमे नव्यन्याय अध्ययनक केन्द्र बनल जकर प्रतिष्ठाता पक्षधर मिश्रक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि छलाह। बंगाल पर मिथिलाक तेहन प्रभाव पड़ल जे डॉ. दीनेश चन्द्र सेन अपन History of Bengali Language and Literature मे स्पष्ट लिखैत छथि– The civilization of Bengal, the new learnings specially that of logic, which made the Tols of Nadia famous throughout India, came from Mithila.

जतय धरि भाषाक प्रश्न छैक, मैथिली आ बंगला दुनूक उत्स थिक मागधी प्राकृत। स्वाभाविके छैक जे दुनूक लिपि, शब्द संरचना, वाचन शैलीमे प्रचुर साम्य छैक। वर्तमानमे एहि साम्यक अभाव आ पार्थक्य परिलक्षित भेनाइ निश्चिते मिथिलाक्षरक अवहेलना थिक। देवनागरी लिपिक संगहि विजातीय शब्द-संस्कृतिक दापट मैथिलीकेँ अपन पूर्वांचलीय भाषा-गोष्ठीसँ पृथक् कए केँ एकर स्वतंत्रता आ विशिष्ट परिचिति पर प्रश्न चिह्न ठाढ़ कए देने अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई मैथिलीक भविष्यक लेल घातक प्रमाणित भए रहल अछि।

साहित्यक क्षेत्रमे *चर्यापद* केँ मैथिलीक प्रथम उपलब्ध पोथी मानल जाइछ आ बंगलाक सेहो। विद्यापति हेमनि धरि बंगलाक कवि मानल जाइत छलाह बंगालमे, आ पदावली-शृंखलाक शेष पोथी 'भानुसिंहेर पदावली' बंगालेमे कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा विरचित भेल। कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर कृत *धूर्तसमागम* आ कविपति विद्यापति कृत *गोरक्ष-विजय* छोड़ि प्रायः समस्त मैथिलीक प्राचीन नाटक पर आइयो बंगलाभाषीलोकनि अपन दावी रखनहि छथि आ से निश्चिते निराधार नहि कहल जा सकैछ। ओना वास्तविकतो इएह छैक जे प्राचीन मैथिली साहित्यपर जतेक काज बंगालमे बंगालीलोकनि द्वारा भेलए मिथिलामे मैथिललोकनि द्वारा नहि। मैथिलीक किर्तनिआ नाटक, आसामक अंकिया आ बंगलाक यात्रामे वस्तुतः कोनो पार्थक्य

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नहि। बंगलाक कृत्तिवासी रामायण (कृत्तिवास ओझा रचित) आ काशीदासी महाभारत (काशीराम दास विरचित) सँ मिथिला नीक जकाँ परिचित छल–जाधरि ओ अपन लिपि नहि छोड़ने छल।

महाभारतेर कथा अमृत समान
काशीराम दास कहे सुने पुण्यबान

उपरोक्त पद जँ बंगलाक निकट त मात्र 'एर' विभक्तिक कारणेँ, जँ ओहि स्थानपर 'क' बैसा दिऔ त विशुद्ध मैथिली।

कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिली आ बंगला रंगमंचक अन्तः सम्बन्धक पृष्ठभूमिमे इएह सभ साम्य-सम्बन्ध रहल अछि जकरा कोनो स्थितिमे बिसरल नहि जा सकैछ।

मैथिली नाटक आ रंगमंचक अतीत जतबे समृद्ध आ गौरवशाली वर्तमान ततबे दयनीय आ चिन्तनीय। वास्तवमे मल्लयुग मैथिली नाटक आ मंचक हेतु स्वर्णयुग छल। यद्यपि *सुन्दर-संयोग* (1904)क लेखक पं. जीवन झाकेँ आधुनिक नाटकक जन्मदाता कहल जाइछ परंच आधुनिक रंगमंचक जँ बात करी त तकर जन्म निश्चिते कलकत्तामे भेल आ सेहो एही शतकक उत्तरार्द्धमे। मिथिलामे त हिन्दी नाटकक वर्चस्व छलैक आ प्रायः एखनो छैक–ई भिन्न बात जे कोनो सुनिश्चित मंच वा परंपरा नहि।

नाटक पाँचम वेद कहल गेलए। ई दृश्य-काव्य थिक आ तेँ एकर सार्थकता तखनहि जखन एकरा रंगमंचपर प्रस्तुत कएल जाय। स्वभावतः रंगमंच ओ स्थल थिक जतय नाटक प्रस्तुत कयल जाइछ–मंचित वा अभिनीत होइछ। तेँ रंगमंचक लेल पहिल प्रयोजनीय वस्तु थिक नाटक। नाटककेँ जेलोकनि प्रस्तुत करताह–विभिन्न पात्रक भूमिकाक निर्वाह करताह, ओलोकनि भेलाह अभिनेता आ तेँ ई रंगमंचक दोसर प्रयोजन। तेसरमे निर्देशकक नाम अबैछ। निर्देशक नाटकक कथावस्तु पर प्रकाश दैत अभिनेता-अभिनेत्रीलोकनिकेँ हुनकालोकनिक चरित्रसँ परिचित करबैत छथि, ओकरा सटीक चित्रण लेल आंगिक वाचिक कलाक निर्देश दैत छथि। चारिम स्थान थिक साज-सज्जा ओ रूप-सज्जाक। पात्रानुकूल भेष-भूषा ओ वस्तु थिक जे प्रथमे दर्शनमे दर्शककेँ आकर्षित-प्रभावित करैत अछि। पाँचममे आवह संगीत आ छठममे आलोक-सम्पात। वास्तवमे रंगमंचक सर्वांगीण सफलता एहि समस्त वस्तुपर निर्भर करैछ। कोनो एकक अभाव मे वा कमजोर पड़ने रंगमंचक सफलता बाधित होइछ। ओना आइ-काल्हि मुक्त-मंच, पथ-नाटिका आदि जे दिवालोकमे मंचित होइछ निश्चिते आलोक-सम्पातक ओहिमे कोनो भूमिका नहि।

कलकत्तामे मैथिली रंगमंचक शुभारंभ 'मिथिला कलाकेन्द्र' क स्थापना (30 दिसम्बर 1959) सँ होइछ। ओना एहिसँ पूर्व 1954 मे 'छीक' प्रहसन आ 'उगना' नाटक मंचित भए चुकल छल। पश्चात् 1966 मे किछु कलाकारलोकनि 'कलाकेन्द्र' सँ फराक भए 'मैथिली रंगमंच' नामक संस्था बनौलनि आ 1960 मे 'मिथि-यात्रिक' बनल। 'मिथिला कला केन्द्र' इतिहासक पन्नापर चलि गेल। कलकत्ताक मैथिली रंगमंच पर कतेको निबन्ध लिखल गेल अछि, पोथी लिखल गेल अछि, परंच कोनोटा सत्यापित नहि अछि। लेखक कलकत्ताक रहल होथि वा बाहरक–दुनू एके रंग। एहि विद्वान् लेखकलोकनिक पूर्वाग्रहक कारणेँ कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक विकास जे बाधित भेल अछि ताहिमे कनिओ सन्देह नहि। स्पष्ट छैक जे कलकत्तामे 'मिथिक' कम्पनी कहियो ने रहल आ ने 'मिथिला लोकमंच' नामक कोनो नाट्य-संख्या–जेना कि डॉ. जयकान्त मिश्र आ डॉ. बासुकी नाथ झा अपन-अपन निबन्धमे लिखैत छथि *(पूर्वाञ्चलीय नाटक ओ रंगमंच*, प्रथम भाग, चेतना समिति, पटना)। वास्तवमे *'लोकमंच'* एकटा नाट्य-विषयक पत्रिका छल जे 'मिथेयात्रिक' द्वारा गुणनाथ झाक सम्पादनमे प्रकाशित भेल जेना कि 'मैथिली रंगमंच' द्वारा *'रंगमंच'* नामक पत्रिका राम लोचन ठाकुरक सम्पादनमे प्रकाशित भेल छल।

एहि तरहेँ रंगमंचक स्थापना त भेल परंच ओहिमे गतिरोध नहि अबैक ओकर उन्नति-विकासक लेल जाहि-जाहि वस्तुक प्रयोजन तकर नितान्त अभाव। सांस्कृतिक शहर कलकत्ताक नाट्यान्दोलनसँ प्रेरणा लए मैथिली रंगमंच बनल धरि अबस्स परंच अभिनेता छोड़ि आर किछु त छलैक नहि। सर्वप्रथम मंचोपयोगी नाटक चाही। *'उगना'*, *'बसात'* वा *'चीनीक लड्डू'* कते दिन। एहि अभावक पूर्तिक एकमात्र साधन छल अनुवाद। परंच अनुवाद त जे कोनो पोथीक कए लेने हो नहि। अपन दर्शक, ओकर सामाजिक, शैक्षणिक अवस्थानकेँ ध्यानमे राखब परमावश्यक। आ एहि लेल बंगला नाटकसँ बेसी उपयुक्त दोसर भइए की पबैत। एही क्रममे छवि बन्द्योपाध्याय कृत **चोर** डॉ. प्रबोध ना. सिंह द्वारा, डी. एल. रायक *चन्द्रगुप्त* (*चाणक्य* नामे प्रकाशित) बाबू साहेब चौधरी द्वारा, शंभु मित्र/तृप्ति मित्रक *कांचन रंग* सीताराम चौधरी द्वारा, किरण मैत्रक *चारि पहर* (बारह घंटा), श्यामलतनु दासगुप्तक *जादूगर*, शैलेश गुहनियोगीक *रिहर्सल*, रामलोचक ठाकुर द्वारा, नारायण गंगोपाध्यायक *आगन्तुक* दीनानाथ झा द्वारा, प्रवीर मुखोपाध्यायक *प्रेम एक कविता* डॉ. इलारानी सिंह द्वारा, आदि कतेको नाटक अनूदित भेल। सीताराम

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चौधरीक *सुखायल डारि : नव पल्लव* आ *बेमातर* क्रमशः बंगलाक *पथेर शेषे* आ *बैकुंठेर वील* पर आधारित अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे उपरोक्त नाटकसभक मंचन मैथिली रंगमंच हेतु संजीवनीक काज कएलक, मैथिली रंगमंचक विकासमे 'भित्तिप्रस्तर'क रूपमे स्मरण कएल जायत। ओना एहि संदर्भमे डॉ. जयकान्त मिश्र अपन पूर्वोक्त निबन्धमे लिखैछथि– ''कलकत्तामे मैथिली नाटकक उदय 1960क बाद भेल। मुख्यतः छविनाथ बन्द्योपाध्याय ओं नारायण गंगोपाध्याय कृत *सान्तो, शेष नज़ि, चोर, बारह घंटा, चन्द्रगुप्त, सुखाचल डारि : नब पल्लव, आगन्तुक* आदि केर नाम लेल जा सकैछ। एहि नाटकसभक लेखकमे श्री सीताराम चौधरी, डॉ. श्री प्रबोध नारायण सिंह एवं श्री राजनन्दन लालदासक नाम मुख्य कहल जा सकैछ।'' एहिठाम विद्वान् लेखक की कहय चाहै छथि से त ओएह जानथि, मुदा जे सत्य छैक हम से लिखबा लेल बाध्य छी - *'सन्तो'* क लेखक छथि राजनन्दन लाल दास आ *'शेष नज़ि'*क गुणनाथ झा।

कोनो नाट्य संस्था केवल अनुवादक बलपर चलि नहि सकैछ आ विशेष कए मैथिलीमे जतय एकसँ दू गोट नाट्य-संस्था हो। बंगलामे सैकड़ो नाट्य संस्था छैक आ ताहिठाम 'नान्दीकार' सन संस्था जँ केवल अनुवाद पर निर्भर करैछ त से विशेष कारणेँ। सत्तरि दशक राजनैतिक उथल-पुथलक दशक छल। बंगलाक साहित्ये नहि नाट्य-मंचक हेतु सेहो उत्कर्षक दशक। एहिठाम एक सँ एक ग्रुप थियेटर छल जे अपन नव-नव नाटक नव-नव ढंगसँ प्रस्तुत करैत छल। ग्रुप थियेटरक विशेषता छलैक जे एकरा मात्र अपन कला-कुशलीएटा नहि, अपन नाट्यकारो रहैत छलैक। शंभु मित्र, उत्पल दत्त, बादल सरकार, मनोज मित्र, तरुण राय सन-सन नाट्यकारसभकेँ अपन-अपन ग्रुप छलनि। ई लोकनि नाट्यकारक संगहि कुशल अभिनेता ओ निर्देशक सेहो छलाह। नाटक लिखलाक बाद पूर्वाभ्यास आ ओहिमे नाट्यकारक उपस्थिति अनिवार्य। नाट्यकारक ध्यान रहैत छलनि जे हुनक कोनो वार्ता अभिनेता-अभिनेत्रीकेँ बजबामे असुविधा त ने होइत छैक। ओ जे बात कह' चाहैत छथि से दर्शक-श्रोता बूझि पबैत अछि वा नहि। एहि क्रममे नाटकक कथोपकथनमे योग-वियोग होइत रहैत छलैक आ मंचनक प्रश्चाते पोथीकेँ अन्तिम रूप देल जाइत छल। कहियो काल त प्रथम मंचनक पश्चातो परिवर्त्तन कएल जाइत छलैक आ दोसर मंचनक पश्चाते अन्तिम रूप देल जाइत छलैक आ पोथी प्रकाशित होइत छलैक। कलकताक मैथिली नाट्यकार, विशेष कए सीताराम चौधरी, गुणनाथ झा, नचिकेता आदि एहि बातसँ नीक जकाँ परिचित छलाह। परिचित छलाह अभिनेता, निर्देशक। ओलोकनि कोनो नव प्रस्तुति देखबा लेल सदा प्रस्तुत रहैत छलाह। स्वाभाविक छैक जे एकर प्रभाव मैथिली नाट्य-मंच पर पड़लैक। संयोगसँ 'मैथिली रंगमंच'केँ सीताराम चौधरी आ नचिकेता तथा 'मिथि-यात्रिक' केँ गुणनाथ झा सन नाट्यकार भेटल छलैक आ नव-नव नाटक लिखाइत रहल। कहबाक प्रयोजन नहि जे एही पृष्ठभूमिमे रचित होएबाक कारणेँ कलकत्ताक नाटकसभ अन्यत्रो सफलतापूर्वक मंचित भेल आ भ' रहल अछि। एहि तरहेँ एक दिस बंगलासँ अनूदित नाटक आ दोसर दिस बंगला मंचक प्रत्यक्ष अनुभव मैथिलीमे नव-नव आधुनिक नाटक लिखबाक, मंचन करबाक प्रेरणा जोगओलक।

नाटकक पश्चात् अबैछ कलाकारक बात। जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, मैथिली रंगमंचकेँ जँ अपन किछु छलैक त से छलैक अभिनेता। एकसँ एक कलाकार– शुकदेव ठाकुर, बाबू साहेब चौधरी, फेकू मिश्र, मोहन चौधरी, श्रीकान्त मंडल, उत्तम लाल मंडल, दयानाथ झा, राम लोचन ठाकुर, जनार्दन झा, इन्द्रनारायण मिश्र, गौतम भारती (यद्यपि मातृभाषा भोजपुरी), कालीकान्त ठाकुर, राजेन्द्र मल्लिक, विश्वम्भर ठाकुर, नचिकेता, कुणाल, शंकर झा आदि। तथापि आरंभमे आधुनिक रंगमंचक अनुभवक अभाव तथा विभिन्न संस्थामे बटि जएबाक कारणेँ बंगला रंगमंचक कलाकारलोकनिक सहयोग आवश्यक छलैक। स्वाभाविक छैक जे बंगला रंगमंचक दक्ष कलाकारलोकनिक संग अभिनयक क्रममे मैथिली रंगमंचक कलाकार लोकनि बहुत किछु सिखने छथि–नाट्य-मंचन जे उच्चकोटिक भेल से त भेबे कएल 'मैथिली रंगमंच' केँ ई सुविधा छलैक जे ओकरे कार्यालयमे बंगलाक 'राजा-साजा'क सेहो पूर्वाभ्यास चलैत छलैक आ हमरालोकनिकेँ देखबाक अवसर भेटैत छल। तहिना हमरो लोकनिक पूर्वाभ्यासमे ओलोकनि उपस्थित रहैत छलाह आ प्रयोजनानुसार सहयोग-सलाह दैत छलाह। मैथिली रंगमंचक विभिन्न प्रस्तुतिमे बंगला मंचक जे कलाकारलोकनि अभिनय केने छथि ताहिमे शिशिर दास, विलीन दास, गोपाल दास, प्रभात चक्रवर्ती, परिमल सेनगुप्त, पंकज बनर्जी आदि प्रमुख छथि। अभिनेत्रीक लेल तँ पूर्णतः बंगला मंचपर निर्भरशील रहल मैथिली रंगमंच। सत्तो देवी, वीणा राय, कृष्णा सरकार, बूला सेनगुप्त, भारती संन्याल सन-सन अभिनेत्रीक अभावमे मैथिली रंगमंचक स्थिति केहन रहैत कहनाइ कठिन। चन्द्रकला किरण आ उमा शर्माक आगम्न पश्चात् भेल। मैथिलानीक त चर्चे नहि। एहि दिशामे पटना निर्विवाद कलकत्तासँ आगू रहल जे प्रेमलता जी सन अभिनेत्री मैथिली मंचकेँ देलक।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एकर बाद अबैछ निर्देशनक बात। मैथिलीमे कमल नारायण कर्ण निर्देशन करैत छलाह आ रंगमंचक प्रति हुनक प्रेम आ त्याग निश्चिते प्रशंसनीय अछि। मुदा ओ आधुनिक रंगमंच, ओकर तकनीकसँ पूर्णतः अनभिज्ञ छलाह। वास्तवमे एहि अभावक पूर्ति संभव भेल प्रवीर मुखर्जीक आगमनसँ। सही अर्थमे आधुनिक रंगमंचक प्रथम निर्देशक छथि प्रवीर मुखर्जी। हमर त ओ गुरु छथिए, हमर अग्रज श्रीकान्त मंडल जे अभिनय आ निर्देशनक क्षेत्रमे एते नाम-जश अर्जित कएल ताहिमे प्रवीर बाबूक अवदान बिसरल नहि जा सकैछ। प्रवीर बाबू निर्देशकक संगहि नीक अभिनेता आ नाट्यकार छथि, जनिक *प्रेम एक कविता* आ *निष्प्रदीप* क मैथिली अनुवाद हमरालोकनि हुनके देखरेखमे मंचित कएने छी। ओ 'राजा-साजा'क निर्देशक-कलाकार छथि। अद्‌भुत अछि हुनक बुझएबाक ढंग। ओना तैयो जँ कोनो अभिनेताकेँ बुझैमे असुविधा होइ त ओ बड़ सहज-स्नेहे बेर-बेर बुझाबथि–स्वयं अभिनय क' क' देखा देथि। 'मैथिली रंगमंच'क घूर्णायमान मंचक प्रस्तुति वा प्रकाश-क्षेत्रक प्रयोग–सभ हुनके कुशल निर्देशनक प्रतिफल थिक। 'बेमातर'क निर्देशन ओना गोपाल दास कएने छलाह आ सेहो पूर्ण सफल रहल छल। एहि ठाम ई लिखनाइ भरिसक अनुचित नहि जे **पाथेय** नाटक 'राजा-साजा' सेहो मंचित केने छल आ निश्चिते प्रवीर बाबूक निर्देशनमे।

साज ओ रूप-सज्जा, आलोक-सम्पात तथा आवह संगीत–सभक ओरियान भाड़ापर करब मैथिली रंगमंचक नियति छल आ एहि लेल बंगला रंगमंचक शिल्पीपर निर्भरशील। भाषामे अन्तर रहितो बंगाल आ मिथिलाक आचार-व्यवहार क साम्य बंगलाक दक्ष शिल्पी लेल ई सहज कए देने छल आ वास्तवमे हमरा लोकनिक प्रिय रूपकार अजय दास आ आलोकशिल्पी सुशील दास त हमरालोकनिक संग तेना मिलि गेल छलाह जे पार्थक्य केनाइ कठिन। कल्पना करू जे अपन आलोकशिल्पीक अभाव मे भाषाक व्यवधान रहैत मंचकेँ 'प्रकाश-क्षेत्र' मे विभक्त कए ताहिपर अभिनयक नूतन प्रयोग। सुशील दासक अवदान मैथिली रंगमंच कोना बिसरि सकत।

संक्षेपमे इएह थिक मैथिली आ बंगला रंगमंचक अन्तः सम्बन्धक कथा जे वास्तवमे कलकत्ताक मैथिली रंगमंचक, आधुनिक मैथिली रंगमंचक उद्‌भव आ विकासक कथा थिक।

मिथिलांचलमे कृषि-उद्योगक संभावना

□ डा. श्री मदन मोहन मिश्र

मिथिलांचल अपन मधुर भाषा, विद्या, बुद्धि, संस्कृति, दर्शन एवं कला, उद्योग, माटि-पानि आदि लेल बिहारेमे नहि परंच देश-विदेशोमे प्रसिद्ध अछि। अपन सारस्वत साधना, विद्वानक भंडार तथा संस्कृति, आगत-स्वागत लेल स्पूर्ण विश्वमे प्रसिद्ध ई क्षेत्र औद्योगिक दौड़मे पछुआ गेल अछि से कोना ?

ई कतेक दुखद बात अछि जे जतय देशक औसतन प्रति व्यक्ति आय 2400 रु. हो, पंजाब, हरियाणा, गुजरात आदि क 4000 रु. हो ओतय बिहार क 1200 रु. तथा ओहूमे मिथिलांचलक प्रतिव्यक्ति आय मात्र 450 रु. हो। आब एहिसँ बेशी ठोस प्रमाण गरीबीक की भए सकैत अछि ?

अशोक पेपर मिलक बंद होएब; सकरी, लोहट, रैयाम सन चीनी मिलक आधुनिकीकरणक अभावमे जर्जर होएब, पंडौल सन सूत मिलक बंद पड़ल खंडहर भेल असहाय रहब एहि बातक सूचक अछि जे मिथिलांचलक विकास लेल केओ कमौआ लोक नहि देखबामे अबैत छथि। आओर कतेक दिन तक उपेक्षा कएल जायत, आ लोक चुपचाप सहैत रहत से नहि जानि।

अतः आवश्यक अछि उचित विश्लेषण कए समाधान ताकब। बिहार राज्य मुख्यतः भौगोलिक स्तर पर तीन भागमे बाँटल जा सकैत अछि :–(I) उत्तरी बिहार; (II) मध्य बिहार एवं; (III) दक्षिणी बिहार वा पठारी अंचल।

ओना तँ मैथिल, मिथिलांचल एवं मैथिली भाषाक प्रयोग केनिहारकेँ सीमाबद्ध करब अत्यन्त कठिन अछि मुदा हम विश्लेषण हेतु मिथिलांचलकेँ मुख्यतः उत्तर बिहार मानल अछि जाहिमे निम्नलिखित जिला पड़ैत अछि : (1) मधुवनी, (2) दरभंगा, (3) सीतामढ़ी, (4) शिवहर, (5) समस्तीपुर, (6) मुजफ्फरपुर, (7) सहरसा, (8) पूर्णियाँ, (9) अररिया, (10) मधेपुरा, (11) किशनगंज, (12) कटिहार, (13) भागलपुर, (14) गोड्डा, (15) देवघर, (16) बाँका, (17) मुंगेर, (18) सुपौल, (19) बेगूसराय, (20) जमुई, (21) खगड़िया, (22) लक्खीसराय, आ (23) शेखपुरा।

अतः कुल मिला 55 जिलामे सँ 23 जिला एहन अछि, जतय मैथिली भाषाक प्रयोग अपन मायक भाषा बुझि होइत अछि। अतः एतेक जिलाक लोकक रहन-सहन एवं सर्वाङ्गीण विकास मिथिलांचलक विकास सँ जुड़ल छैक।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ई मानबामे कनिको संकोच नहि जे अपन गौरवपूर्ण इतिहास आओर तेजस्वी लोकक अछैतो अपन मिथिलांचल बिहार/भारतक आर्थिक सारणीमे सबसँ पाछाँ अछि तथा राष्ट्रीय विनियोगक वितरणक पाँतिमे सेहो अपन मिथिलांचल पाछू अछि।

पाछु रहब कोनो लाजक बात नहि, किएक तँ लज्जा मात्र एक भावना थिक मनक। यदि आइ मन पूर्णरूपसँ कर्ममे लागि जाय एवं गीताक संदेश पर मिथिलावासी चली त कोनो भारी बात नहि जे एक दिन मिथिलांचल देशक सबसँ प्रगतिशील क्षेत्र बनि जाए। मात्र जरूरत अछि संकल्प लेबाक।

मिथिलांचलक विकासक संभावनासँ हम सब नीक तरहेँ परिचित छी, कारण एहिठामक उपजाहु भूमि एवं जल-स्रोत, प्राकृतिक खनिज संपदा तथा प्रबुद्ध जनसमुदाय सर्वविदित अछि।

बहुतो विद्वान् औद्योगिक विकासमे मिथिलांचलक पछुआएल रहबाक कारण पर अपन-अपन विचार प्रकट केलन्हि अछि जाहिमे प्रमुख अछि, बाढ़ि पीड़ित क्षेत्र, खनिज संपदाक शोषण, राज्य सरकारक शिथिलता, प्रभावशाली नेतृत्वक अभाव, बुद्धिजीवी वर्गक उदासीनता, शिक्षा-क्षेत्रमे अराजकता, अशान्त वातावरण तथा अन्य आधारभूत संरचनाक अभाव आदि।

मुदा उपर जतेक कारण परिगणित अछि, ताहिमे कोनो एहन नहि अछि जकर निदान संभव नहि हो। आब प्रश्न उठैत अछि जे एहि विषय पर कोन एहन रामबाण छोड़ल जाए, जाहिसँ कार्य सुचारु रूपसँ निष्पादन होइक एवं सबलोक आनंदसँ समय व्यतीत करय। एहि लेल आवश्यक अछिः–

(1) सबसँ पहने हमसब व्यक्तिगत रूपसँ अपन समीक्षा करी जे हम कतय छी तथा कोन कार्य करी जाहिसँ अपन सहित समाजक कल्याण होइक। अपन स्थिति बुझि गेला पर सुधारक यथासंभव प्रयास करी।

(2) टोल स्तर, गाम स्तर, पंचायत स्तरपर आर्थिक कार्यक्रमक समीक्षा करी तथा जे व्यक्ति जाहि लुरिक छथि हुनका लेल ओहि तरहक कार्य ताकि रोजगार बढ़ाबी। एतय आवश्यक अछि जे कुटीर तथा छोट-छोट उद्योग पर विशेष रूपसँ ध्यान देल जाए।

(3) विकासक लेल ई आवश्यक अछि जे जनता-जनार्दन क मानस पटलमे परिवर्तन होय। मनोबल, आत्मविश्वास एवं सही नेतृत्वक आधार पर कोनो कार्य असंभव नहि छैक। दोसर पर दोषारोपण कए स्वयंकेँ बचाबयवला प्रवृत्ति बदलय पड़त। आत्मनिरीक्षण कए अपन अंतःकरणकेँ झकझोरय पड़त तथा अकर्मण्यताकेँ दूर करय पड़त।

क्षेत्रविशेष सामग्री

आब ई चर्चा आवश्यक जे मिथिलांचलक अंतर्गत कोन-कोन आर्थिक क्रियाकलाप उपलब्ध अछि तथा उपलब्ध संसाधनक हम कोन रूपेँ उपयोग करी जाहिसँ अधिकसँ अधिक लोक केँ लाभ हो। देशक विकास होइक। आवश्यकता अछि गहन रूपसँ समीक्षा, संभावित अवसर पर मनन तथा सघन रूपसँ उपलब्ध संसाधन आ अवसरक उपयोग कए अपन, समाजक, राज्यक तथा देश-विदेशक विकासमे योगदान करबाक।

गंगा नदीक उतरबरिया क्षेत्र सामान्यतः उत्तर बिहार मानल जाइत अछि। ई मैदानी भाग गंगा नदीक उत्तरसँ लए कए नेपालक तराइ तक पसरल अछि। एकर कुल क्षेत्रफल 50, 980 वर्गकिलोमीटर अछि जे राज्यक 32. 77 प्रतिशत क्षेत्र पर व्याप्त अछि। एहि क्षेत्रक माटि बड़ उपजाहु अछि। एहिमे सामान्यतः दू सँ तीन फसल उपजाओल जा सकैत अछि। धान, गहुम. कुसियार, मकइ, जौ, तेलहन, तमाकू, जूट, केरा, मखान, माछ. पान, हरदि, मरचाइ, लहसुन पेआजु, आलू इत्यादि फसिल मुख्यतः होइत अछि। एहि क्षेत्रक सबसँ विशेषता छैक जे कोनो एहन फसिल नहि अछि जे एहि माटि-पानिमे नहि उपजाओल जा सकैत अछि। आम, लीची तथा रंग-विरंगक तरकारी उपजबा लेल ई क्षेत्र भारतवर्षमे प्रसिद्ध अछि।

एतेक सम्पदा रहितो मिथिलांचलक नवयुवकगण, वृद्ध एवं बच्चा सबकेँ दोसर राज्यमे मजदूरी, कुली, साधारण दुकानदारी इत्यादि कार्य लेल जाय पड़ैत छैक— आखिर किएक ? तथा एना कतेक दिन ?

ई प्रश्न एतयकेर योजनाकार, लेखाकार, बुद्धिजीवी, शासनकर्ता, समाजसुधारक, आदि सबसँ जबाव मगैत छनि। आब हमरासबकेँ एकर विश्लेषण करय पड़त तथा उपयोगी, लाभकारी तथा दीर्घकालीन उपाय ताकय पड़त।

अतः आवश्यक अछि जे कृषि एवं कृषिसँ सम्बन्धित उद्योगकेँ प्रोत्साहन देल जाय। अपन दस्तकारी, कला आओर शिल्प उद्योग प्रत्येक गाम एवं घरमे पुनः अपनाबय पड़त। कृषिक अलावा, लोहार, कमार, कुम्हार, मोची, इत्यादिक कार्यमे लागए पड़त।

एहि क्षेत्रमे कृषि पर आधारित उद्योग जेना चीनी उद्योग, वस्त्र उद्योग, रेशमी वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, तमाकू उद्योग, चाउर दालि मिल, आँटा चक्की मिल, तेल मिल, आलू चिप्स, आम आ लीची पर आधारित उद्योग, काठ उद्योग, कागज उद्योग, आयुर्वेदिक औषधक कारखाना, डेयरी उद्योग, मखान उद्योग,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

केरा पर आधारित उद्योग इत्यादि अछि जाहिमे तन-मन-धनसँ नवयुवककेँ लागि जेबाक चाही ।

बिहार सरकारक औद्योगिक नीति 1995 सँ एतय औद्योगिक विकासक प्रबल संभावना विद्यमान भेल अछि तथा एहि दिशामे वित्तीय संस्थासभ सेहो आगू आबि हाथ बढ़ा रहल अछि । आब आवश्यकता छैक मिथिलांचलक नवयुवक, नवयुवती, वृद्ध तथा अन्य कार्य करयबला लोकक जे एहि सुविधाक अधिक सँ अधिक उपयोग कऽ अपन आर्थिक स्थितिक सुधार करय ।

एहि दिशामे निम्नलिखित जिलावार संभावित कृषि आधारित उद्योगक सूची देल अछि जकर मदति इच्छुक उद्यमी व्यक्ति कए सकैत छथि । इहो प्रयत्न कएल गेल अछि जे एहि संदर्भमे आओर कोन-कोन एजेन्सीसँ मदति भेटबाक संभावना अछि तथा बंक सँ कोन प्रकारक ऋण देल जा सकैत अछि ।

मिथिलांचल लेल निमनांकित उद्योग/व्यवासय उपयोगी अछि जे थ्रस्त (Thrust) उद्योग मानल गेल अछि :

(I) **कृषि आधारित उद्योग— (क)** चीनी; (ख) अल्कोहल एवं छोआ; (ग) पशुचारा; (घ) चाहक खेती, प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग; (ङ) जूट; (च) कागज; तथा (छ) पुष्पोत्पादन;

(II) **खाद्य एवं खाद्य प्रसंस्करण–**

दूध/गव्य प्रोद्योगिकी; फल तथा तरकारीक प्रसंस्करण; तथा मखान, माछ ।

(III) **पशुधन आधारित उद्योग**

(IV) **प्लास्टिक उद्योग**

एहि क्षेत्रमे हस्तकरघा एक श्रम-गहन कुटीर उद्योग अछि । हस्तशिल्पक माध्यमसँ कमजोर वर्गक लेल प्रचुर संभावना अछि । खादी एवं ग्रामद्योग लेल सेहो मिथिलांचल विख्यात अछि ।

एहि वस्तु सभ पर नाबार्ड (राष्ट्रीय कृषि आर ग्रामीण विकास बैंक) द्वारा किछु स्कीम अनुमोदित कए बैंक सभकेँ निर्देश देल गेलैक अछि जे एहि स्कीम सभकेँ ग्रमीण क्षेत्रक उद्यमी सभक बीच प्रचार कए अधिक सँ अधिक दीर्घकालिक रोजगारक अवसर सृजित करवामे सहायता करय । आब आवश्यकता अछि जे जागरूक उद्यमी अपन क्षेत्र/जिलाक उद्योग केन्द्र, अग्रणी बैंक प्रबंधक, जिला विकास आयुक्त तथा विभिन्न बैंकक अधिकारीगणसँ सम्पर्क स्थापित करथि आ यदि कोनो प्रकारक परेशानी/ दिक्कति होनि तँ बिहार सरकारक सचिव, सांख्यिक वित्त एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन, पुरना सचिवालय, पटनाकेँ अवश्य सूचित करथि । उद्यमीलोकनिकेँ मदति करबा लेल भारतीय रिजर्व बैंक, नाबार्ड एवं अन्य शीर्ष संस्था सब प्रयासरत अछि । हम सब पूरा प्रयास करी जे उपलब्ध सुविधा तथा संसाधनक सदुपयोग कए अपन रहन-सहनक स्तरकेँ उठाबी तथा मिथिलांचलक विकासक कड़ीकेँ अन्य विकासशील क्षेत्र/राज्य/देशक संग जोड़ी । आवश्कता अछि अपन क्षमता बढ़ा कऽ श्रमशक्तिक सही उपयोग करबाक तथा उपलब्ध सुविधा आ संसाधनक अपन हितमे दोहन करबाक ।

बिहारमे कृषिभिन्न क्षेत्रक परिदृश्य

1. **औरंगाबाद**— (क) गुड़ एवं खाँड़सारी; (ख) आलू पर आधारित उद्योग; (ग) कालीन (कारपेट) एवं कम्बल बुनाइ; तथा (घ) माडर्न राइस मिल ।
2. **बेगूसराय**— (क) गुड़ एवं खाँड़सारी; (ख) खाद्य तेल मिल; (ग) माडर्न राइस मिल; तथा (घ) रेशमी उत्पादन ।
3. **भागलपुर**— (क) फल एवं सब्जी परिरक्षण तथा अभिसंस्करण; (ख) गुड़ एवं खाँड़सारी; (ग) मकैक रस (मेज स्टार्च); (घ) माडर्न राइस मिल; तथा (ङ) बेकरी ।
4. **भोजपुर**— (क) गेहूम / चाउर / दालि / तेलहन अभिसस्करण ।
5. **चाइबासा**— (क)वन आधारित उद्योग; तथा (ख) खनिज अभिसंस्करण एकक।
6. **पूर्वी चम्पारण**— (क) गुड़ आ खाँड़सारी; (ख) माडर्न राइस मिल; (ग) स्ट्रा बोर्ड; तथा (घ) बुनाइ कार्यकलाप ।
7. **पश्चिम चम्पारण**-- (क) माडर्न राइस मिल; (ख) वनस्पति अभिसंस्करण; (ग) बुनाइ कार्यकलाप; (घ) बेँत फर्नीचर; (ङ) पशु आहार; तथा (च) कार्डबोर्डक संदूक (बाक्सेज) ।
8. **दरभंगा**— (क) माडर्न राइस/दालि मिल; (ख)मत्स्य एवं फल परिरक्षण; (ग) खाद्यतेल; (घ) पशु आहार; (ङ) चटाइ एवं डोरी बाँटब ।
9. **धनबाद**— (क) बाँस एवं बेँतक फर्नीचर; (ख) खाद्येतर तेल; (ग) काष्ठनिर्मित विद्युतीय सहायक उपकरण; तथा (घ) काष्ठनिर्मित खेल-कूद सामग्री ।
10. **दुमका**— (क) धान एवं आटा मिल; (ख) तेल मिल; (ग) गुड़ एवं खाँड़सारी; (घ) खुखोँत; (ङ) मधु प्रसंस्करण एवं पैकिंग; (च) काष्ठ फर्नीचर; (छ) बाँस एवं बेँत फर्नीचर; (ज) तसर रीलिंग एवं स्पिनिंग ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

11. **गया**— (क) पाषाण नक्काशी एवं मूर्तिशिल्प; (ख) आयुर्वेदिक औषधि; (ग) स्वचालित वाहनक मरम्मती; (घ) काष्ठनिर्मित; (ङ) गुड़ एवं खाँड़सारी; तथा (च) स्त्राबोर्ड ।
12. **गिरिडीह**— (क) खाद्य तेल; (ख) साल्वेंट एक्स्ट्रेक्शन प्लांट (अखाद्य बीज एवं साल बीज); (ग) काष्ठनिर्मित संदूक।
13. **गोपालगंज**— (क) माडर्न राइस मिल; (ख) तेल मिल; तथा (ग) कार्ड बोर्ड पैकिंग बाक्सेज ।
14. **हजारीबाग**— (क) तेल एवं दालि मिल; (ख) फर्नीचर निर्माण; (ग) खाएर-परिस्करण; तथा (घ) बेकरी ।
15. **कटिहार**— (क) स्त्राबोर्ड; (ख) काष्ठनिर्मित फर्नीचर; तथा (ग) पशुआहार ।
16. **मधुबनी**— (क) धान-भूसीक तेल; (ख) फल परिरक्षण; (ग) काष्ठनिर्मित फर्नीचर; तथा (घ) आयुर्वेदिक औषधि ।
17. **मुंगेर**— (क) माडर्न राइस मिल; (ख) स्त्राबार्ड; (ग) गुड़ एवं खाँड़सारी; (घ) पशु आहार; (ङ) फल परिरक्षण; (च) काठक फर्नीचर; तथा (छ) गोंद एवं खएर
18. **मुजफ्फरपुर**— (क) तेल मिल; (ख) फल परिरक्षण; तथा (ग) पशु आहार ।
19. **नालन्दा**— (क) आलू एवं पेआजु पर आधारित; (ख) पशु आहार; तथा (ग) तेल मिल ।
20. **नवादा**— (क) धान एवं दालि मिल; (ख) कमसारि-शिल्प; तथा (ग) बिस्कुट एवं केक ।
21. **पलामू**— (क) खनिज आधारित उद्योग; (ख) लाह उद्योग; (ग) काठक खेलौना; तथा (घ) फल परिरक्षण ।
22. **पटना**— (क) बेँत एवं बाँस निर्मित वस्तु; (ख) भवन सामग्री; (ग) आयुर्वेदिक औषधि; तथा (घ) धान एवं तेल मिल ।
23. **पूर्णिया**— (क) पटुआ; (ख) धान मिल; (ग) धान-भूसी मिल; तथा (घ) बेकरी ।
24. **रोहतास**— (क) गुड़ एवं खाँड़सारी; (ख) धान एंव दालि मिल; (ग) आयुर्वेदिक औषधि;
25. **राँची**— (क) पथरकुट्टी;(ख) लह एवं चपड़ा; (ग) ईंट भट्ठी; तथा (घ) फल एवं शाक प्रसंस्करण ।
26. **सहरसा**— (क) काष्ठनिर्मित फर्नीचर; (ख)फल परिरक्षण; तथा (ग)कृषि उपकरण;
27. **समस्तीपुर**— (क) मकैक रस; (ख) पशु आहार; तथा (ग) काष्ठनिर्मित बिजली उपकरण ।
28. **सारण**— (क) मुर्गी एवं पशु आहार (ख) कार्न फ्लेक्स; तथा (ग) तेल मिल ।
29. **सीतामढ़ी**— (क) पशु एवं मुर्गी आहार; (ख) घानी तेल; तथा (ग) फल परिरक्षण ।
30. **सीवान**— (क) कार्न फ्लेक्स; (ख) फल-परिक्षण; (ग) चर्म-उद्योग; (घ) होजरी; (ङ) जूत; (च) वास्तुलौह; (च) वास्तुलोह उपकरण ।

मैथिली फोल्डर पत्रिका : स्थिति आ संभावना

□ श्री राय

फोल्डर पत्रिका ओ भेल जकरा फोल्ड कए सकी अर्थात् तह पर तह मोड़ि सकी । तह खोलैत जाए आ पढ़ैत जाए । मैथिलीमे फोल्डर पत्रिका मुद्रित अछि आ हाथसँ लिखल रेहो । हस्तलिखित फोल्डर पत्रिका सुरुचिपूर्ण ढंगसँ तैयार कएल जाइछ आ तकर फोटो कापी कए प्रचार एवं प्रसार होइछ ।

मैथिलीमे हस्तलिखित पत्रिकाक फूट आ स्वर्णिम इतिहास छैक । साधनहीन किन्तु मातृभाषाक अनन्य सेवक किछु ऊर्जा-सम्पन्न नवयुवक विभिन्न रचनाकारक रचनाकेँ एक पत्रिकाक आकारक कागत पर उतारि एक दोसराकेँ पढ़बैत अएलाह अछि । जेँ कि पूर्व मे फोटो कापीक सुविधा नहि छलैक एकहि प्रति बेरा-बेरी विभिन्न पाठकक समक्ष जाइत छल । साहित्यिक रसास्वादन सहृदय करैत छलाह ।

मैथिली रचनाकार आइओ ओहिना अभावग्रस्त अछि । मातृ भाषाक माध्यमे अपन रचनात्मक सक्रियताक अभिव्यक्ति करबाक ओहिना व्यग्रता छैक यद्यपि यांत्रिक सुविधामे पूर्वक अपेक्षा कतेको गुणा अधिक वृद्धि भए गेलैक अछि ।

फोल्डर पत्रिकाक अवधारणा हस्तलिखित पत्र-पत्रिकासँ विकसित नहि भेल अछि । एकर अवधारणा आयातित अछि । चीनक क्रान्तिक समयमे छापामारसभ अपन विचारक प्रचार-प्रसारकरबाक लेल तथा अपन संगठनक गतिविधि ओ कार्यक्रमक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सूचना अपन कार्यकर्ता धरि पहुँचेबा लेल दू प्रकारक प्रचार माध्यमक प्रयोग कएने छल। व्ययसाध्य दैनिक वा साप्ताहिक ओकर आयस्रोतक सीमामे नहि छलैक। संगहि तात्कालिक व्यवस्थाक कोपसँ गुप्त सन्देश अपन कार्यकर्ता आ शुभेच्छुक धरि पहुँचेबाक सेहो छलैक। तेँ एक एहन प्रचार-माध्यम अपनौलक जे कम खर्चसाध्य हो। एहि क्रममे फोल्डर पत्रिका आकारक लघुता आ खर्चक स्वल्पताक कारणेँ प्रभावक प्रचार माध्यम भेलैक। दोसर माध्यम भेल देबाल लेखन। देबाल पर अपन नारा, विचार आ कार्यक्रमकेँ जतय-ततय लिखि देब। ई प्रचार माध्यम विशेष सार्वजनिक छल। एहि प्रकारक आन्दोलन आ ओकर कार्यक्रमसँ जे साक्षात सम्पर्कित नहिओ रहैत छलाह गतिविधिक परिचय भए जाइत छलनि।

मैथिलीमे फोल्डर पत्रिकाक प्रकाशन यद्यपि कोनो क्रान्ति प्रेरणासँ नहि भेल अछि किन्तु परिवर्तनकामी चेतनाक संग आन्दोलनी माहौलमे अवश्य भेल अछि। एकर प्रकाशनक दूटा तात्कालिक कारण छल, चीनमे सशस्त्र आन्दोलनक सफलतासँ प्रेरित भए बंगालक नकसलबाड़ी स्थानमे रक्तरंजित क्रान्तिक शुरू होएब। एहिसँ सम्पूर्ण बंगमल दलमला उठल छल। भारतक सामाजिक आ राजनीतिक इतिहासमे ई अप्रत्याशित घटना होएबाक कारणेँ देशक सम्पूर्ण संवेदनशील आ शोषित प्रताड़ित वर्गक प्रति सहानुभूति रखनिहार चेतनासम्पन्न व्यक्ति ओहि दिस आकृष्ट भए गेल छल। नवयुवकवर्गकेँ ई विचारधारा विशेष प्रभावित-आकर्षित कएलक। एहि प्रकारक सक्रियताक क्षेत्र बंगाल छल। केन्द्र छल कलकत्ता। कलकत्तामे रहि रहल अथवा पढ़ि रहल मैथिल युवकवर्ग सेहो अपन बंगाली संगतुरियाक सम्पर्कसँ एहि दिस उन्मुख भेलाह। ओहि विचारधाराकेँ मैथिलीक माध्यमे प्रचार-प्रसारक हेतु सक्रिय होएबाक निर्णय कएल। निर्णयक कार्यान्वयनक अर्थ छल पत्रिकाक प्रकाशन। ओहि समयमे मात्र 'मिथिला मिहिर' एक नियमित साप्ताहिक छल। 'मिथिला मिहिर' क स्वरूप आ प्रकृति ओहि विचारधाराक अनुकूल नहि छलैक। ई नवतुरिया वर्ग 'मिथिला मिहिर' केँ शत्रुवर्गक पत्रिका मानैत छल आ ओकर प्रकाशन-संस्थाकेँ सामन्तवर्गक हितक रक्षक आ प्रचारक कहैत छल। एहि कारणेँ किछु कलकत्ता स्थित मैथिलीक नवतुरिया लेखकक संग मिथिलांचलक किछु नवतुरिया लेखक 'मिथिला मिहिर' मे नहि लिखबाक शपथ लेल। ई भिन्न बात जे ओहि मंडलीक एक सदस्य कालान्तरमे ओही सामन्तक हितरक्षक संस्थामे आजीविकापन्न होएबामे सफलता पाओल। कहबाक तात्पर्य जे बंगालक नक्सलबाड़ी आ तेलांगनाक किसान आन्दोलनक पृष्ठभूमि आ विचारधाराक प्रचार-प्रसार लेल एक अपन पत्रिका होएब आवश्यक छलैक। अपन सीमाक कारणेँ फोल्डर पत्रिकाक प्रकाशनक अतिरिक्त आन किछु छपबाक साधन परिवर्तनकामी नवतुरिया वर्ग लग नहि छलैक। फोल्डर पत्रिकाक प्रकाशनक निआर भेल।

मैथिलीमे पहिल फोल्डर पत्रिका *शिखा* थिक जे 1974 ई. मे कलकत्तासँ कुणाल आ अग्निपुष्पक सम्पादनमे प्रकाशित भेल। 'शिखा'क चारिम अंकमे सम्पादकद्वय लिखल अछि–'जखन आन्दोलनकेँ दबयबाक लेल ओभरड्राफ्ट पर चल' वाली सरकार बी. एस. सी. आर. पी. आ सेनाक परेड करबैत अइ। रास्ता आ गलीमे डाँरसँ उपर निशाना लैत अइ, गोलीसँ मारि देलाक बाद, कारसँ पीचि देलाक बाद क्षतिपूर्तिक रूपमे रुपैया देल जाइत छैक आ तखनो आन्दोलनकारीकेँ आतंकवादी कहैत अइ ओ सरकार ओकर पोसुआ लोक आ ओकर हाथ अपन दिमाग बेचनिहार पत्रकार आ सम्पादक तखन अहिंसा सत्याग्रहक बात वैह क' सकैत अइ जे दिमाग पर बर्फक सिल्ल आ छाती पर पाथर रखने हो।'

कुणाल 'रक्ततिलक' कवितामे लिखने छथि–

हम देख चाहैत छी
धरतीकेँ रक्तरंजित

दोसर सम्पादक अग्निपुष्प (कामरेडक नाम) अपन विचार निम्न पाँतीमे प्रकट कएल अछि–

अपन नवतुरियाक शोणितमे बोड़ल लत्ता
अपन माथमे कसि क' बान्हि ले
प्रत्येक राजपथ पर
लाल गंगा बहा दही।

चारि-पाँच अंकक बाद 'शिखा'क स्वरूप फोल्डरसँ लघुमासिक पत्रिका भए गेल।

शिखाक अतिरिक्त एही नवतुरिया लेखकक लहेरियासराय स्थित सदस्य द्वारा 'भूर' (सम्पादक–नूतन राकेश) आ भुम्हूर (सं. दयानन्द मिश्र)क किछु अंक प्रकाशित भेल। 'भूर' मे स्व. गंधराज, राज, नूतन राकेश, विभूति आनन्द, कुमार ज्योतिवर्द्धन, शैलेन्द्र आनन्द, धीरेन्द्र सिंह, अग्निपुष्प, शम्भुनाथ, कुणाल, नागेन्द्र भास्कर, रलाकार, रामचन्द्र सिंह 'वियोगी', उदयशंकर सिंह, नरेन्द्र आनन्द आदिक रचना प्रकाशित भेल।

ओहिना 'भुम्हूर (1975/कार्तिक 1897 शाके) मे कुमार ज्योतिवर्द्धन, नूतन राकेश, धीरेन्द्र सिंह, वाणीदत्त, अग्निपुष्प,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रामलोचन ठाकुर, कुणाल, राज, शैलेन्द्र आनन्द, काञ्चीनाथ, विनोद भारती, दयानन्द मिश्र, विभूति आनन्द, पुरातन शशि, सुधीर कुमार चौधरी, रामचन्द्र सिंह 'वियोगी', वैद्यनाथ भास्कर, शम्भुनाथ, नरेन्द्र आनन्द, दयाशंकर सिंहक रचना अछि ।

'भूर' (1975- आषाढ़ 1897 शाके) मे प्रकाशित कवितामे विभूति आनन्द लिखल अछि–

सद्यः दृष्टिगोचर होइछ एम्हर किछु दिनसँ
श्वेतवसना भारतमाताक नूआँ पर लाल लालक प्रिंट ।

शैलेन्द्र आनन्द 'खुजल डायरीक एकटा पन्ना' शीर्षक कवितामे लिखल–

कवि, हम डायरीक एकटा फूजल पन्ना छी,
मुदा तकर अर्थ ई नहि जे अहाँ
हमरा उप्पर किछु-किछु भकचि दी ।

'भुम्हूर' (27 कार्तिक 1897 शाके) मे राज लिखल–

पिता अहाँ हमर दोख देब
पड़ौआ परचट जनि कहब
हम्मर सबूरक बान्ह टूटि गेल पिता !
जहनि कि मायक दूधक बदला
छोटका बौआक मुँहमे शोणित भरि गेल छे ।

ओहिना रामलोचन ठाकुर अपन विचार व्यक्त कएल–

आ संगठित शक्तिये हैत कुंडल कवच
आर विलम्ब नहि बन्धु !
बिगुल बाजि गेल अछि
विषपान बड़ कैल
अमृतपानक समय आबि गेल अछि ।

'शिखा'क कायान्तरण आ फेर तिरोहण तथा 'भूर', 'भुम्हूर' क एक-आध अंक छपलाक प्रायः 15-16 वर्षसँ अधिक समय धरि एकोटा फोल्डर पत्रिका नहि छपल । एकर किछु कारण भेल । एहि तीनू पत्रिकाक लेखकलोकनि प्रायः एक विचारधाराक छलाह, एकतुरिया छलाह । क्रमशः सांसारिक दायित्व बढ़ैत गेलनि आ छिड़िआइत गेलाह । जाहि विचारधारासँ ओलोकनि प्रभावित प्रेरित छलाह, क्रियाकलाप क्रमशः शिथिल होइत गेलैक । आपात कालक बाद सत्तामे आएल सरकारक खसब, दलसभक टूटब, एवं राजनीतिक सिद्धान्तक अपेक्षा नेताक महत्वाकांक्षाक नग्न नाच देखि नवयुवक वर्ग मे राजनीतिक व्यवस्था आ शासनक प्रति मोहभंग भेलैक । कोनो विचारधारा ओकरा संगठित होएबा लेल आकर्षित नहि कएलक । ओना नवम दशक मैथिली पत्र-पत्रिकाक इतिहासमे प्रायः सभसँ बेशी अंधकार युग मानल जाएत । सरकारी आश्रय आ प्रकाशन पर मैथिलीक साहित्यकार ततेक ओङठि गेलाह जे ओ समाप्त होइतहि ककरो किछु अक-बक नहि फूरैत छलैक ।

फोल्डर पत्रिका प्रकाशनक एहि गतिरोधकेँ तोड़ल श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सम्पादनमे आ मिथिला विकास मंच, काठमाण्डू सँ प्रकाशित हवाइ पत्रिका (फोल्डर) *'पल्लव'* । एकर प्रवेशांक आषाढ़ 2050 (1993) मे आएल । एकर बाद जनकपुरसँ अनिल विश्वबिन्धुक सम्पादनमे *'पर्यग्नि'* (साअेन भादव 2052) आ प्रोल्लास सिन्धुलीक सम्पादनमे *'प्रतिबिम्ब'* (वैशाख 2051), विराटनगरसँ जितेन्द्र जीतक सम्पादनमे 'कमला'क अंक आएल । एम्हर दरभंगासँ *'समय सन्दर्भ'* (सं. नरेन्द्र) आ *'ऋचा'* (सं. कन्हैया झा 'प्रेमिल), सनकोर्थु सँ *'दिशा'* (सं. प्रेमचन्द्र पंकज), सरिसब-पाहीसँ *'साहित्यिकी'*, *'प्रतीक'* (सं. गंगानाथ मिश्र), मुंगेरसँ *'अंग मैथिली'*, लोहनासँ *'सहभगी'* (सं. विजयानन्द हीरा) आ *नेना भुटका'*, सहरसासँ *'सह-रसा'* (सं. डा. महेद्र) आदि फोल्डर पत्रिका आएल । एहि क्रममे 'मोनामिका' (सं. सारस्वत) सेहो प्रकाशित भेल जे हस्तलिखितक फोटो कापीक रूपमे वितरित होइत छल । ई अपन विषयवस्तुसँ खूब चर्चाक पात्र बनल । 'साहित्यिकी' मे मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी आ संस्कृत सेहो अछि ।

प्रथम विकास कालक तीनू फोल्डर पत्रिका एक वय आ विचार वर्गक नवतुरिया रचनाकारक छल । किन्तु बादक फोल्डर पत्रिकाक रचनाकार एकहि वयवर्ग आ विचारधारा धरि सीमित नहि रहल । ओकर लक्ष्य भेल मैथिली आ रचनात्मक सक्रियता । एहि रचनात्मक सक्रियताक अभिव्यक्तिक स्वरूप दू प्रकारक अछि । किछु मुद्रित अछि आ अधिकांश हस्तलिखित ।

पूर्व मे महानगर आ नगरसँ मुद्रित भए प्रकाशित भेल छल किंतु आब ग्रामांचलसँ हस्तलिखित आबि रहल अछि । किछु केवल टटका पीढीक तँ, किछु सभ पीढ़ीक रचनाक संग । एहि बीच जतेक फोल्डर पत्रिका आएल अछि ओहिमे *'पल्लव'* (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) क सभसँ बेशी आ नियमित विविधताक संग आएल अछि ।

*'पल्लव'*क प्रवेशांक (2050 आषाढ़ 1993 ई0) मे घोषित कएल जाइछ–"मिथिला विकास मञ्च, काठमाण्डू अर्थ संकलन दिस कहियो केन्द्रित नहि भेल । कारण अर्थ संग्रहक अर्थ थिक दूषित राजनीतिक जड़ि रोपव, आ से प्रपञ्च कोनहु रूपेँ स्वीकारबाक पक्षमे नहि छी हम सभ । फलतः मञ्चक सम्पूर्ण काजमे तामझाम कम आ प्रभावकारिता अधिक रहलैक । ताही तरहक एकटा उदाहरणक रूपमे प्रस्तुत भए रहल अछि पल्लव ।"

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'पल्लव' अपन छोट आकारमे सम्पूर्ण मैथिली साहित्यिक जगतकेँ बिना देश, क्षेत्र, आयुवर्ग आ विचारधाराक भेदभाव कएने, प्रस्तुत करबाक प्रयास कएलक अछि। एकर प्रवेशांक मे मार्कण्डेय प्रवासीक व्यंग्य रचना 'विपर्यय' शीर्षक अछि–

चोरो पबैए साधुक प्रमाण
श्रीराम जय राम जय जय राम ।
नामी लुटेरा रखवार अछि
बटमार डाकू घटवार अछि ।
सगरो लगैए विश्वास वाम ।
व्यभिचार बनि गेल आचार अछि
व्यवसाय सेवाक संसार अछि
उजड़ल लगैए निष्ठाक गाम ।
बदलल लगैए कविता कथा
पसरल लगैए अगबे व्यथा
झूठो बिकैए साँचेक दाम ।।

व्यवस्थाक प्रति असन्तोष आ अविश्वास परिस्थितिक विकरालता आ भयावहताक बीच जीबैक इच्छा कोनो एक देशक राजनीतिक प्राकृतिक सीमा धरि सीमित नहि अछि । नेपालक मैथिलीक युवाकवि धर्मेन्द्र विह्वल प्रवेशांकमे लिखल अछि–

हमर अतीत
जकरा जरा क' हम ओत
साझ बना देने छलियैक
आ घेरि देने छलियैक
वर्तमानक काँटसँ
ओहि काँटक मध्य साझ पर
एकटा गुलाब फुलाएल अछि
आ ओ खौझा रहल अछि
हमर तृष्णाकेँ ।

'पल्लव' अपन लघु कायाक माध्यमसँ कविताक अतिरिक्त कथा, समाचार आ गतिविधि छपैत अछि ओ एक गजल अंक सेहो प्रकाशित भेल अछि ।

विभिन्न आकार, प्रकारक, नाम-गोत्रक फोल्डर पत्रिकामे आएल रचनाक अवलोकन सर्वप्रथम ई प्रमाणित करैछ जे मैथिलीक सभ वर्गक आ सभ क्षेत्रक रचनाकार अपन अनुभूति केँ स्वर देबा लेल साकांक्ष छथि । कोनो नियमित अथवा अनियमित पत्रिकाक अभाव फोल्डर पत्रिकाक बढ़ैत जएबाक मूल कारण थिक ।

मैथिलीमे फोल्डर पत्रिकाक संभावने नहि, प्रयोजनो छैक। संभावना एहि हेतु जे कम खर्च पर तैयार भए सकैत अछि आ प्रयोजन एहि लेल जे मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक अभाव आ मैथिलीक हेतु प्रतिकूल परिस्थितिक प्रभाव रहलो पर निरन्तर रचना भए रहल अछि । रचना होइत रहय ।

ग्रामीण रंगमंच : बाधा आ संभावना

□ श्री शैलेन्द्र आनन्द

पं. श्री गोविन्द झा ग्रामांचलमे मैथिली रंगमंचक स्थिति आ परम्पराक प्रसंग लिखल अछि– *"हमरा ई कहबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे जहिआ हम नेना रही, तहिआ ग्रामांचल वा नागरांचल–कतहु मैथिली रंगमंच नहि छल । मिथिलाक हेतु उनैसम शताब्दी सांस्कृतिक दासताक युग छल। मूर्खता ओ दरिद्रता चरम सीमा पर छल । मिथिलाक लोक अनकर ऊँच अवस्था देखि सिहाइत छल। ओकर नकल करबामे अपन उत्कर्ष बुझैत छल । अनकर प्रत्येक वस्तु ओकरा नीक लगैत छलैक । दूरक ढोल सोहाओन लगैत छलैक । ओ अपन परम्पराप्राप्त सांस्कृतिक-सह-साहित्यिक अवदानकेँ विकसित करबाक कथा कोन, जोगाकेँ राखिओ नहि सकल । पश्चिमसँ बाढ़ि अबैत गेल आ मिथिलाक पारम्परिक सांस्कृतिक तत्त्व ओहिमे डूबि-डूबि समाप्त होइत गेल। आइ तँ ओकर ध्वंसावशेषो नहि भेटि रहल अछि, जाहिसँ ई आभास पाओल जाए जे मैथिलीक रंगमंच अतीतमे केहन छल, नाच कोना होइत छल, नाटक कोना होइत छल, गीतनाद कोन राग ओ तालमे गाओल जाइत छल।"* 'ग्रामांचलक मैथिली रंगमंच' **अरिपन**, पटना स्मारिका,-1984) । पं. झाक ई विचार मैथिलीक आभिजात्य वर्गक मंचक प्रसंग अछि जकर पुनरुत्थान बीसम शताब्दीक आरम्भमे शुरू भेल। मुदा मिथिलामे मैथिलीक रंगमंचक एक आर धारा प्रवाहित रहल अछि जे अभिजात्य वर्गक मनोरंजनक मंच नहि, निम्न वर्गक मंच थिक। ग्राम्यता बेसी रहलाक कारणे उच्चवर्ग दर्शककेँ रूचै-पचैत नहि छनि । ओकर जे दर्शक होइछ तकरा बीच जा कए बैसि नाटक देखब अपन सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रतिकूल मानैत छथि ।

मिथिलांचलक ग्रामीण रंगमंचकेँ रुचिभिन्नताक आधार पर दू कोटिमे राखि सकैत छी–**आभिजात्यवर्गक मंच आ निम्नवर्गक**

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मंच। दूनू मंचमे तात्विक अन्तर अछि। नाटकक चयनसँ अभिनय धरि। आभिजात्य वर्गक लोक नृत्यकेँ छोट लोककं कार्य बुझैत छलाह, आ तेँ नृत्यकेँ छाड़ि गद्यात्मक शैलीकेँ अपनाओल। समाजक विभिन्न समस्याकेँ नाटकक कथोपकथनमे आनि रंगमंच पर प्रस्तुत करय लगलाह। मुदा ओहिसँ भिन्न वर्गक लोकक रुचि एहि प्रकारक प्रस्तुतिमे नहि छलैक। एहि शुद्ध साहित्यिक मैथिली मंचसँ भिन्न मैथिलीक लोक मंच अछि। ई लोक मंचमंडली विशुद्ध मैथिलीमे प्रचलित लोककथाक आधार पर गद्य-पद्यमिश्रित शैलीमे नाटक करैत अछि। एकर मुद्रा साहित्यिक नाटकक मंचनसँ भिन्न होइछ। तेँ अपन दर्शक वर्गमे प्रर्याप्त लोकप्रिय अछि। जतय नाटक दू वा तीन घंटामे समाप्त भए जाइत अछि आ कनियो समय बेशी लागि गेलापर लोक अगुता जाइत अछि, ओतय लोकनाट्य भरि-भरि राति देखाओल जाइत अछि। दर्शक उबिआ कए उठि नहि जाइछ।

आभिजात्यवर्गक मंच आ निम्नवर्गक मंचमे संगठनात्मक स्तरपर सेहो पर्याप्त अन्तर अछि। लोकनाट्य मंडलीक स्वरूप व्यावसायिक अछि तँ आभिजात्यवर्गक मंच सौखक वस्तु थिक। एहिमे दर्शककेँ मनोरंजनक संग युगजीवनक यथार्थक ज्ञान करा ओल जाइछ, ओकर विचारधाराकेँ प्रभावित करबाक प्रयास होइछ। मानसिक धरातलकेँ उठेबाक चिन्ता रहैछ। मुदा लोकनाट्यमंडलीमे मनोरंजनक लक्ष्य प्रधान रहैछ। तेँ जतेक समस्या आभिजात्यवर्गक मंचक समक्ष छैक ततेक लोकनाट्य मंडलीक समक्ष नहि।

ग्रामीण रंगमंचक समक्ष अबैत बाधाकेँ एहि प्रकारेँ खतिआ ओल जा सकैछ–(1) प्रेक्षागृहक असुविधा, (2) कोषक अभाव, (3) महिलापात्रक संकट, (4) समर्पित कलाकारक अभाव, (5) लोकग्राह्य नाटकक कमी, (6) जन-समर्थनक अभाव आदि।

प्रेक्षागृह– स्थायी प्रेक्षागृहक अभावेँ मंच-निर्माणक हेतु खर्च आ सामग्री जुटेबामे अभिनयसँ पूर्वहि अभिनेता थाकि जएबाक स्थितिमे आबि जाइत अछि। मंचनिर्माण ओही कलाकारलोकनि द्वारा होइछ जे नाटकमे अभिनय करताह। ओएह अर्थसंचय करथु, नाट्य सामग्री जुटाबथु, दर्शककेँ बैसेबाक ओरिओन करथु। अर्थात् सभटा छारभार कलाकारे पर। साउण्ड आ लाइट उपलब्ध नहि रहला पर शहरसँ सम्पर्क कएल जाइछ, जाहि लेल अतिरिक्त धनक प्रयोजन भए जाइत छनि। स्थायी प्रेक्षागृह नहि रहलासँ सभ ऋतुमे नाटक करब संभव नहि होइछ। ई सभ प्रस्तुतिकेँ प्रभावित करैत अछि। एक प्रस्तुतिसँ झमारल कलाकार दोसर प्रस्तुति लेल सहजहि तैयार नहि होइत अछि।

कोष–ग्रामीण रंगमंच हो अथवा शहरी रंगमंच, विना अर्थक एक डेग ससरि नहि सकैछ। नाट्य प्रस्तुति लेल चाही कोष, से आबय कतयसँ। शहरक संस्था स्मारिका छापि विज्ञापन लए कोषक निर्माण कए लैत अछि। गामक अपेक्षा कतेको गुण शहरी लोकमे अर्थव्ययक क्षमता छैक। सरकारी अनुदान सेहो भेटि जाइछ। ई रूप ग्रामीण मंच लेल दुर्लभ अछि। तखन एक मात्र आयक स्रोत बेहरी कए कोष निर्माण करब रहैछ। ग्रामीण क्षेत्रक जाहि व्यक्तिसभक क्षमता बेहरी देबाक रहैत छनि, से नाटककेँ व्यर्थ मानैत छथि। अपना लेल अनुपयोगी बुझैत छथि। बेहरी सँ कतेक आ कतेक बेर कोष बनत। आ बिना अर्थक आजुक युगमे नाटक कोना आ केहन होएत।

समर्पित कलाकार– ग्रामीण रंगमंचक कलाकार होइत छथि स्कूल/कालेजक छात्र अथवा बेरोजगार युवक। ओसब अवसर पबितहि गामसँ बाहर चल जाइत छथि। केओ पढ़बाक हेतु तँ केओ रोजी-रोटीक खोजमे। तेँ, नियमित आ स्थायी कलाकार रहैत नहि छथि। किछु वर्ष धरि छुट्टीक अवसर पर गाम आबि-आबि नाटक खेलेबाक उत्साह बनल रहैत छनि, मुदा पारिवारिक उत्तरदायित्व क्रमशः बढ़ल जाइत रहबाक कारणेँ बड़ सोचि-बिचारि टिकट कटाएब हुनक विवशता भए जाइत छनि। एहिसँ ग्रामीण रंगमंच पर समर्पित आ अनुभवी कलाकारक अभाव भए जाइछ। गाममे अथवा लग-पासक स्थानमे जे आजिविकापन्न रहैत छथि, से रंगमंचक प्रति कम, ग्रामीण छिटकी आ दावपेँचक बेसी प्रयोग करैत छथि। एहिसँ सफल आ समर्पित नेतृत्वक अभाव सेहो भए जाइछ।

महिला पात्र– जीवन आ सृष्टिक चलैत रहबा लेल जेना महिलाक अनिवार्यता अछि, ओहिना नाट्य प्रस्तुतिक सफलता महिला पात्रक उपलब्धता पर निर्भर अछि। एकर मूल कारण अछि जे हमरालोकनिक समाज महिलाकेँ मंचपर अभिनय अथवा कला प्रदर्शन करैत देखबाक लेल प्रस्तुत नहि अछि। शहरमे यद्यपि एतेक कठिन नहि अछि, मुदा ग्रामीण समाज एहि विन्दु पर पूर्णतः असहमत अछि। प्रतिष्ठाक प्रतिकूल मानैत अछि। जे केओ एहि दिशामे सक्रिय होइत छथि, धमकी भेटैत छनि। एहनहि विरोधक स्थितिमे मैथिलीक सफल रंगकर्मी श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'केँ मेकअप कए स्कूलक पछुआड़ बाटे पड़ाए पड़ल छलनि। ग्रामाञ्चलमे नाट्य-प्रदर्शनक बाधक तत्वमे नारी पात्रक अभावक चर्चा करैत (स्व.) काशीनाथ मिश्र लिखैत छथि-*''ओना तँ समयकेर परिवर्तनक संग एहि दिशामे किछु परिवर्तन आएल अछि किन्तु ई शहरी स्कूल, कालेजे धरि सीमित अछि; ग्रामांचलमे एखनो स्त्रीगण लोकनिक रंगमंच पर उतरब सामाजिक दृष्टिसँ हेय मानल जाइछ।.....किन्तु बिना एहिमे परिवर्तन अनने ग्रामीण रंगमंच पर स्वाभाविकता आनब कठिन अछि।''* 'ग्रामांचलमे नाट्य प्रदर्शन : बाधक तत्व', **अरिपन** स्मारिका 1984)।

लोकग्राह्य नाटक –यद्यपि नाटकक शहरी दर्शक जकाँ नाटकक ग्रमीण दर्शक दूरदर्शनक विभिन्न चैनेलसँ आक्रान्त नहि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेल अछि मुदा प्रभावित अवश्य होअए लागल अछि। एहना स्थितिमे नाटकक दर्शनीयताक रक्षा मैथिलीएक नहि, आनो भाषाक रंगकर्मीक हेतु चिन्ताक विषय भए गेल अछि। नाटक लिखैत काल नाटककारक समक्ष एक प्रकारक दर्शक होइछ, ओ दर्शक गामक अथवा शहरक भए सकैछ, ओ अभिनयकलाकर्मज्ञ अथवा मात्र मनोरंजनक हेतु आएल भए सकैछ। तैँ, आवश्यक नहि जे अभिनयकला आ ग्रमीण जीवनसँ फराक परिवेशक तथा विषयवस्तुक आधार पर शहरी दर्शक लेल लिखल नाटक ग्रामीण रंगमंच पर सफल भए सकय। अतएव ग्रमीण रंगमंच पर सफलता लेल आवश्यक जे ओहिमे ग्रमीण दर्शकक समस्या हो। ओकर प्रस्तुतिमे लोकधर्मिता गूहल रहैक। लोकधर्मिता दू स्तर पर आनल जा सकैछ। पहिल थिक नाटकक कथ्य आ प्रस्तुतिक स्तर पर, आ दोसर थिक मंच-सज्जाक माध्यमसँ। जेना नवचेतना, लोहना द्वारा आङन मंचक प्रयोग, भवनाथ कला केन्द्र, सर्वसीमा द्वारा दृश्यविहीन नाटकक प्रयोग, महावीर नाट्यकला परिषद, पाहीटोल द्वारा स्वनिर्मित लाइटक प्रयोग, कीर्तिनाथ कला परिषद, लालगंज द्वारा घासफूससँ निर्मित मंचक प्रयोग आदि ग्रामीण रंगमंचकेँ बेसी स्वाभाविक बनबैत अछि।

जन-समर्थन – नाटक समूहक वस्तु थिक। समूहक वस्तुक प्रचार-प्रसार लेल समाजक सहयोग आवश्यक छैक। समाजक सहयोगक अनिवार्य प्रयोजनक हेतुएँ नाटकक दर्शककेँ सामाजिक कहल गेल होएत। से आब ग्रमीण रंगमंचकेँ जन-समर्थनक अभाव भेल जाइत छैक। एकर मूल कारण अछि जे नाटक खेलाएब कालक्रमे सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठाक वस्तु नहि रहल। एकर कलकारकेँ उपेक्षाक दृष्टिएँ देखल जाए लागल। समाजक जाहि वर्गमे सामाजिक सत्ता केन्द्रित छल तकरासँ उपेक्षित होइत देखि समाजक अन्यो वर्ग एहि कलाक प्रति उदास होअए लागल। दोसर ई जे नाटकमे जाहि जीवनक मंचन होइत छल, समाजक अधिकांश वर्ग अपन छवि नहि देखैत छल। अपन रुचिक अभिव्यक्ति नहि पबैत छल। तखन ओ वर्ग नाटकमे रुचि कोना लेत ? किएक लेत ? नाटकक कलाकारकेँ औखन ओही आँखिए देखल जाइछ। रंगकर्मक प्रति समर्पित भावनासँ जखनहि कोनो रंगकर्मी नाटकक आयोजन करैत अछि, चारूकातसँ व्यंग्यबाण छूटैछ–'ई सभ निफिकरा थिक। कोनो काज-धंधा नहि छैक। चाहपानक हेतु ई सभ एकटा गोरखधंधा सीखि लेलक अछि। नाटकक अढ़मे गुलछर्रा उड़ेबाक बढ़िया ढंग छैक। एहिसँ कलाकारक मनोबल टूटैत छैक आ रंगमंच प्रभावित होइत अछि।

पं. काशीनाथ मिश्र ग्रामांचलमे नाट्य प्रदर्शनक मार्गमे एक आओर बाधक तत्त्व मानैत छथि-ओ थिक अनुशासनक अभाव। अनुशासनसँ जिम्मेदारीक भावना होइत छैक। जँ सभ कलाकार अपनाकेँ नायके रूपमे प्रस्तुत करय चाहय तँ से कोना होएतैक। छोटसँ छोट पार्टसँ कलाकार दर्शककेँ प्रभावित कए सकैछ। एकर बोध नहि रखने नाटकक सफल मंचन संभव नहि अछि। प. मिश्र ग्रामांचलमे अनुभवी आसुयोग्य निर्देशकक अभाव सेहो अनुभव कएने छथि। एकर एक कारण थिक ग्रामीण क्षेत्रमे आजीविकाक अभाव। जे केओ कोनो कारणेँ गाममे रहि जाइत छथि, दैनिक कार्य पर्याप्त समय नहि दए पबैत छथि, आ जे शहरमे रहैत छथि, आयोजन तिथिकेँ ठेका कए अबैत छथि। ओहन स्थितिमे रिहर्सल आ अभिनयकेँ मजबाक कम समय रहि जाइछ। तखन जेना-तेना अगिला अवसरक हेतु छोड़ि नाटक कए लेल जाइछ।

ग्रामीण रंगमंचक समक्ष बाधा पैघ-पैघ अछि। मुदा एहि बाधाक अछैतो मिथिलांचलक ग्रामीण रंगमंच सक्रिय अछि आ सम्प्रति विभिन्न शहरमे जे कोनो रंगमंचीय सक्रियता अछि तकर पृष्ठभूमि एही ग्रामीण रगंमंच पर तैयार भेल अछि। एकर मूल कारण अछि जे मैथिल सदासँ साहित्य आ कला प्रेमी रहल अछि। अनुकरण-कला एकर स्वभावमे छैक। ई ओकर सहज गुण थिकैक। एहि हेतु कनिको अनुकूल स्थिति भेटैत छैक, चमकि उठैत अछि। तैँ कहि सकैत छी, ग्रामीण रंगमंचक विकासक संभावना पर्याप्त छैक।

संभावनाक गतिकेँ तीव्र कारबा लेल आवश्यक अछि जे बाधाक यथासंभव निराकरण हो। प्रस्तुतिकेँ ग्रामीण दर्शकक मनोनुकूल अर्थात् एहन तत्त्वसँ भरल जाए जाहिसँ रोचकता अबैक। जेना चर्चित रंगकर्मी कुणाल किर्तनियाँ शैली, पारसी शैली, एवं नाचशैली–तीनूकेँ मिलाकए एकटा एहन नाट्यशैली प्रस्तुत कएल अछि जे लोक पसीन करैत अछि। ग्रामीण रंगमंचकेँ ध्यानमे राखि नाटकक प्रकाशन भेलासँ बेशी नाटक सुलभ होएतैक। ग्रामीण क्षेत्रमे नाट्य प्रतियोगिता, शहरी क्षेत्रक नाटकक समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रमे प्रदर्शन, ग्रामीण क्षेत्रक कलाकार लेल कार्यशालाक आयोजन, आदिक माध्यमे प्रदर्शनक स्तरकेँ उठाओल जा सकैछ। ग्रामींण क्षेत्रक समुचित विकासक लेल रंगकर्मी पं. काशीनाथ मिश्र एक केन्द्रीय रंगमंचक स्थापना आवश्यक मानैत छथि तँ पं. गोविन्द झा लोकमंच आ शिष्ट मंचकेँ महामंच पर उतारब आवश्यक मानल अछि। एतावता ई निश्चित रूपेँ कहि सकैत छी जे ग्रामीण रंगमंचकेँ जँ कनि सह भेटि जाए, प्रश्रय भेटय तँ ओ अपन पूर्वगौरव पुनः प्राप्त करबामे पछुआएल नहि रहत।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिली रङ्गमंच आ नाटक

□ डा. श्री शिवशंकर श्रीनिवास

मैथिलीमे दूतरहक रङ्गमंच अछि–(1) शहरी रङ्गमंच का (2) ग्रामीण रङ्गमंच ।

1. **शहरी रङ्गमंच**–एहन रङ्गमंच जकर उद्गम ओ कार्यस्थल शहर अछि । एहन रङ्गमंचसँ मतलब मात्र नाटकमंचे नहि अपितु नाट्यसंस्थासँ अछि जकर मुख्य लक्ष्य नाटकक विकास अछि आ नाट्य-प्रस्तुति ओकर व्यावहारिक मुख्य पक्ष थिक । मिथिला वा मिथिलासँ बाहर विभिन्न नाट्य-संस्था अछि जे नाटकक विकासमे लागल अछि । मिथिलाक शहरमे जे नाट्य-संस्था अछि नीकसँ नीक प्रस्तुतिक आकांक्षा लेने जीबि रहल अछि तकर मूल उद्देश्य मैथिली नाटकक विकास नहि, नाट्य-कलाक विकास थिक, जाहि प्रस्तुतिमे अन्य भाषाक नाटकक सङ मैथिली नाटक सेहो होइत अछि । मिथिलासँ बाहर शहर वा नगरक संस्थाक मूल उद्देश्य मैथिली नाटकक विकास थिक । यैह कारण अछि जे जखन मिथिलासँ बाहर पटना वा कलकत्तामे मैथिली नाटक होबय लागल तखनहिसँ नाटकक दिन नीक होबय लगलैक, जकर चर्चा आगू नाटकक विकासक क्रममे करब । एखन एहि बातकेँ विश्लेषित करय चाहब जे रङ्गमंच कोन रूपेँ आइ-काल्हि नाटककेँ विकसित कए रहल अछि । कोना रङ्गमंच आइ अपन भूमिसँ जोड़बाक हेतु नव रूप लए रहल अछि : कोना मैथिली नाटक रङ्गमंचक विकासक सङ विकसित भेल ।

मिथिलासँ बाहरक शहरमे जनमल संस्था नाट्य-विकासक इच्छाक तीव्र प्रतिफलन थिक । एहन शहर यथा पटना वा कलकत्ता जतय विभिन्न भाषाक नाटक होइत छल हमरो भाषामे एहने नाटक हो,इएह आकांक्षा मैथिलीभाषीलोकनिकेँ नाट्यक्रियामे गतिशील कएल । आरंभिक कालमे, जखन आधुनिक मैथिली नाटकक विकासक तेसर चरण छल, कलकत्ता महानगरीक भूमिसँ नाटकक श्रीवृद्धि तीव्र भेल। बहुतो नाटककार प्रेरित भेलाह, रङ्गकर्मसँ जुड़लाह । नाटक अपन नव विषयवस्तु सङ नव प्रक्रिया कयलक । उक्त नव प्रक्रिया विभिन्न भाषासँ गृहीत भेल वा प्रक्रिया-ग्रहणक क्रियामे नव ढङ उत्प्रेरित भेल । एहिसँ पहिने नाटक विकास(आधुनिक नाटक)क दोसर चरणमे मैथिली नाटक लिखायल जकर संख्या बहुत अल्प छल से ग्रामीणे क्षेत्रमे मंचित भेल । ओहि नाटकमे सँ दू-तीन टा यथा *चीनीक लड्डू*, *बसात* बहुत लोकप्रिय भेल किन्तु एहन नाटककारलोकनि रङ्गमंचसँ रङ्गकर्मीक रूपमे जुड़ल नहि छलाह । जे नाटक जेना वा जाहि दृश्य-विधानमे रचल छल ओही अनुसार ओकर प्रदर्शन होइत छल। ओहि समयमे अभिनेताक कलापटुता अवलोकनीय होइत छल । निर्देशकक मुख्य विशेषता अभिनेताकेँ कुशल बनायब छल। रङ्गमंच नाटकेक अभिभावकत्वमे संचालित होइत छल । एहि कालमे अर्थात् आधुनिक नाटकक तेसर चरणक प्रवेशसँ स्थिति बदलि गेल। शहरमे स्थापित रङ्गमंचसँ नाटके प्रेरित होबय लागल, जकर चर्चा उपर कयल अछि । रङ्गमंच अपन ऊँचाइ एतेक कए लेलक जे नाटक-रचनाक हेतु नाटककारकेँ रङ्गमंचसँ जुड़ब आवश्यक बुझाय लगलन्हि आ बहुतो नाटककार रङ्गमंचसँ जुड़लाह । कहि सकैत छी जे नाटक ओ रङ्गमंचक संबंध अन्योन्याश्रित भए गेल । डा. प्रबोध नारायण सिंहक *हाथीक दाँत* वा *प्रेम एक रोग* रङ्गमंचक प्रेरणाक प्रतिफल थिक । पं. गोविन्द झा *अंतिम प्रणाम*, *मोछ संहार* ओ *मिथिलाक प्रतिनिधि* रङ्गमंचक नव रूपकेँ ध्यानमे रखैत लिखलन्हि । उपर्युक्त दुनू नाटककार स्वयं रङ्गकर्ममे नहि जुटलाह किन्तु प्रेक्षक रूपमे रङ्गमंचक विकासकेँ अखियासलन्हि आ सफल भेलाह । सुधांशु'शेखर चौधरीक *भफाइत चाहक जिनगी*, *पहिल साँझ*, *लेटाइल आँचर* आदि महत्वपूर्ण नाटक आयल । शेखरजी पूर्वमे नाटक-मंचसँ जुड़ल छलाह तकर अनुभव हुनका छलन्हि । बादमे रङ्गमंचक विकासक अनुभव कए, अपन नाटककेँ आधुनिक रूप देलनि। हिनक नाटक प्रस्तुत कए कतेको रङ्गमंच आगू बढ़ल । किन्तु इहो सत्य थिक जे हिनकासँ रङ्गमंचे नाटक लिखबौलक । श्री गुणनाथ झा रङ्गमंचसँ जुड़ल छलाह तकरे प्रतिफल थिक हुनक विभिन्न नाटक,यथा *कनिया पुतरा*, *पाथेय*, *आजुक लोक*, *शेष नञि* आदि अनेक नाटक । श्री महेन्द्र मलंगिया, डा. अरविन्द अक्कू, स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर मैथिलीक श्रेष्ठ नाटककार रूपमे आदर पौलन्हि। इहोलोकनि अपनाकेँ रङ्गमंचसँ जोड़ने रहलाह । श्री मलंगिया तँ बादमे आबि क' निर्देशनमे सेहो अपनाकेँ उतारि लेल अछि । लल्लन प्रसाद ठाकुर नाटककार, अभिनेता आ निर्देशक तीनू रूपमे अपनाकेँ उतारि श्रेष्ठ नाटकसभ लिखल । श्री छत्रानन्द सिंह झा, विभूति आनन्द, कुणाल रङ्गमंचसँ जुड़ल नाटककार छथि । अशोक रङ्गमंचेक प्रेरणासँ नाटक-क्षेत्रमे प्रवेश कयलन्हि आ हुनक *डेग* (अप्रकाशित) सन श्रेष्ठ नाटक आयल ।

एहि तरहेँ रङ्गमंचक विकाससँ नाटकक विकास भेल । आ सङहि इहो कहि सकैत छी जे नाटकक नव रूप कतेको मंचकेँ प्रतिष्ठित कयलक । कलकत्ता, पटना, जमशेदपुर आ नेपालमे जनकपुरसँ नाटक-क्षेत्रमे विभिन्न कार्य भेल । उपर्युक्त विभिन्न शहरमे कतेको नाट्य-संस्था द्वारा स्तुत्य कार्य भेल । कलकत्तामे 1957 ई. मे मैथिली रङ्गमंच, 1970 मे मिथिला कला केन्द्र आदि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नाट्य संस्था भेल जाहिसँ जुड़ल नाटककार द्वारा मौलिक रचना, अन्य भाषासँ नाटकक अनुवाद आदि प्रकाशित भेल। पटनामे 1951 ई. सँ नाटक होब' लागल। 1958 मे पहिल बेर श्रीमती सुभद्रा झा आ श्रीमती अहिल्या चौधरी (मैथिलानी महिलाद्वय) मंच पर उतरलीह। बादमे चेतना समितिमे प्रतिवर्ष विद्यापति जयन्तीक अवसर पर नाटक होअए लागल। श्री मंत्रेश्वर झाक अध्यक्षतामे 1982 मे 'अरिपन' नाट्यसंस्थाक स्थापना भेल। 'अरिपन' नाटक क्षेत्रमे बहुत प्रशंसनीय कार्य कयलक। ई संस्था कतेको राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-समारोहक आयोजन कयलक। नाट्य-लेखन प्रतियोगिता ओकर एक पक्ष छल। नाटककारलोकनिमे सँ कतेकोकेँ पाण्डुलिपिक श्रेष्ठताक आधार पर प्रथम आ द्वितीय पुरस्कारसँ सम्मानित कयलक। एहिना कलाकारकेँ, रङ्गमंचकेँ, निर्देशक आदिकेँ विभिन्न रूपेँ सम्मानित कयलक। तहिना 1984 मे स्थापित 'भंगिमा' नाट्य-संस्था द्वारा नाट्य-क्षेत्रमे कार्य भेल। 'भंगिया' द्वारा बहुतो नाटकक प्रकाशन भेल जाहिमे किछु मौलिक छल किछु अनुवाद। पटनामे कएकटा नाट्य-संस्थाक स्थापना भेल यथा 'आङन' आदि, जाहि संस्थाक माध्यमेँ कएक नाटककार प्रेरित भेलाह। 'भंगिमा' द्वारा संस्थेक नामसँ नाट्य-पत्रिका बहार होइत रहलए जे नाटकक क्षेत्रमे उल्लेखनीय कार्य कयलक। जमशेदपुरक 'मिथिलाक्षर' ओ नेपाल मे जनकपुरक 'मिथिला नाट्यकला परिषद' तथा विराटनगरक 'भानुकला केन्द्र'क भूमिका सराहनीय अछि। उक्त दूनू संस्थासँ जुड़ल रङ्गकर्मी द्वारा जहिना नाट्य-रचना सम्पदाक वृद्धि भेल तहिना रङ्गकर्म विकसित भेल अछि।

1989 ई. क बादसँ स्थिति दोसर रङ लेब' लागल। रङ्गमंच अन्य भाषाक प्रतियोगितामे सेहो अपन पायर रोपय लागल। तखन आवश्यक भए गेलैक प्रत्येक रंगमंच हेतु स्व-परीक्षण। एहि परीक्षणमे रङ्गकर्मीलोकनि अनुभव कयलन्हि जे हुनकालोकनि द्वारा जे नाटक होइत अछि ओकर कथा-वस्तु आ भाषा मात्र मैथिली रहैत अछि बाँकी नाटकक शिल्प अन्य भाषासँ प्रभावित वा प्रभाव-ग्रहण-प्रक्रियामे उत्प्रेरित। प्राचीन कालमे जे मैथिली नाटक मिथिला, नेपाल वा आसाममे लिखल गेल जकर प्राण गीत छल वा अन्य कएकटा निजत्व छल से छूटि गेल। आधुनिक मैथिली नाटकक विकास प्रशंसनीय तँ अछि, किन्तु अपन निजत्व स्थापित करक हेतु अपन जड़िकेँ स्मरण करैत नव पृष्ठभूमि पर आबय पड़तैक, अखिल भारतीय स्तर पर अपन खास परिचय बनैक जे ओ अन्य भाषाक बीच खास मैथिलीत्वसँ चीन्हल जा सकय। ई चिन्तन रङ्गकर्मकेँ अपन इतिहासक भूमिसँ बहरा कए आगू बढ़बाक प्रेरणा देलकैक। ई प्रेरणा नाटककारो अपन उक्त चिन्तनसँ ग्रहण कयलन्हि आ तेकरे प्रतिफल थिक महेन्द्र मलंगियाक *ओकरा आङनक बारहमासा; बादमे गोविन्द झाक रुक्मिणी हरण* आदि। गीतकेँ पकड़ि रोहिणी रमण झाक कतेको नाटक आयल। किन्तु महेन्द्र मलंगियाक *ओकरा आङनक बारहमासा* आ गोविन्द झाक *रुक्मिणीहरण* बहुतो अंशमे मैथिली नाटकक रूपमे रचित नाटक थिक। *ओकरा आङनक बारमासा* क रचना 1979 ई. मे भेल जहिया रङ्गकर्म अपन निजत्व स्थापित करबाक हेतु एकाग्र नहि भेल छल। आब 1989 क बादसँ जखन नाटककार आ रङ्गकर्मी दूनू अपन निजत्वकेँ स्थापित करबामे लागल छथि तखनसँ स्थिति अपन फूट रूप लए लेलक अछि। रङ्गकर्मी नाटककेँ जोखि-तौलि कए उठबै छथि। जे नाटक हुनकालोकनिक पसिन्नमे आबि जाइत अछि ओकर ओ प्रदर्शन पर प्रदर्शनमे लागल रहैत छथि। प्रत्येक प्रदर्शन पर प्रयोग करैत ओहि नाटककेँ बूझू धातु जकाँ अपन प्रयोगाग्नि मे गला ओकरा अपन साँच मे गाढ़ि कए प्रस्तुत करैत छथि। रङ्गमंचक ई सक्रियता कखनो-कखनो अतिरिक्त विश्वाससँ भरल बुझाइत अछि। एहना स्थितिमे नाटक पर रङ्गमंच अभिभावकत्व करैत बुझाइत अछि, जे नाटककार स्वीकार कयने छथि, किन्तु ई स्वीकारात्मक स्थिति नाटकक दशाकेँ कोन रूपेँ प्रभावित कए रहल अछि विचारणीय अछि।

शहरमे दू तरहक रङ्गमंच अछि। एकटा एहन रङ्गमंच जकर निर्देशक नाटककार स्वयं छथि वा नाटककार निर्देशककेँ अपन विचारमे बान्हि राखि पबैत छथि। दोसर, जत' निर्देशक ओ नाटककार फूट-फूट छथि। जाहि ठाम निर्देशक दोसर छथि ओहि ठाम नाटकमे किछु रहैत अछि आ ओकर प्रस्तुति किछु भए जाइत अछि। जेना हमर आलोच्य नाटककार गोविन्द झाक नाटक *रुक्मिणीहरण* क मूल नाटक आ 'भंगिमा' द्वारा प्रस्तुत होइत नाटक देखलासँ स्पष्ट होएत जे दूनूमे कतेक भिन्नता अछि। ई भिन्नता स्वयं 'भंगिमा' क प्रारम्भिक प्रदर्शन ओ बादक प्रदर्शनक बीच सेहो अछि। एहना स्थितिमे *रुक्मिणीहरण* क मंचन जतेक मंच करत ततेक अंतर होएत। पी. सी. बरुआ द्वारा निर्देशित *देवदास* आ विमल राय द्वारा निर्देशत *देवदास* फिल्म बला स्थिति नाटकोमे भए जाएत आ से मात्र कलाकारक विशष्टतेक अर्थमे नहि, नाट्य कथ्योक अर्थमे होयत। नाट्य-रचना फिल्म स्क्रिप्ट जकाँ भए जाएत। एहन रचना साहित्यिक उद्देश्यकेँ कतेक पूरा कए सकत, एहि बातक अनुमान फिल्म स्क्रिप्टकेँ ध्यानमे राखि कएल जा सकैत अछि। सङहि इहो स्पष्टे अछि जे फिल्म आ साहित्य दूनूक संसार फूट-फूट अछि। साहित्य लिखनिहार नाटककार अपन नाटककेँ दोसर रूपेँ मंच पर देखि ओकरा अपन कतेक कहि सकताह से चिन्तनीय थिक। एहिसँ नाटक कतेक लिखा सकत सेहो विचारणीय थिक। निर्देशक जाहि ठाम स्वयं

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नाटककार छथि ओतहु मंच धरि ओहिना नाटक पहुँचत तकर कोनो ठीक नहि अछि किएक तँ विकास करैत कखनो प्रस्तुति परिवर्तित भए जा सकैत अछि। ओहि नाटककेँ दोसर रङ्गमंच जखन प्रस्तुत करए लागत, ओकर कथ्य दोसरे भए जएतैक। एहन स्थिति विचारणीय। अतिरिक्त आत्म-विश्वासमे रङ्गमंच नाटककेँ साहित्यिक धारासँ काटि ने लेअय से सोचबाक थिक। संघर्षक एहि युगमे नाटककारकेँ अपन रचनाक स्तर पर एहन जोरगर बनय पड़तनि जे रङ्गमंच ओकरा कात नहि कए सकय।

2. ग्रामीण रंगमंच– ई गाममे रहैत उत्साही युवकद्वारा बनाओल संस्था थिक। किछु संस्था स्थायी जकाँ स्वरूप लए नेने अछि आ किछु कोनो विशेष उत्सव पर जगैत अछि। थोड़ेक संस्था थोड़ दिन बड़ सक्रिय रहैत अछि पुनः सूति रहैत अछि। पूर्वमे तँ गाममे एहन युवक द्वारा नाट्य-संस्था स्थापित होइत छल जे गामसँ बाहर पढ़ैत छलाह आ छुट्टीमे गाम अबैत छलाह वा बेरोजगार भेल गाममे किछु दिन रहैत छलाह अथवा नोकरियोमे रहैत गामसँ मतलब रखैत छलाह। एम्हर आबि कए जखन कि गामोक लग-पासमे रोजगारक अवसर अयलैक तखन किछु लोक स्थायी जकाँ गाममे रहय लगलाह एहन लोकद्वारा स्थापित संस्था नाट्यक्षेत्रकेँ बहुत सबल बनओलक। गाममे चलैत संस्थाक मूल उद्देश्य मैथिली जँ रहितो छैक तँ ओकरा हिन्दीसँ परहेज नहि छैक जखनि कि दर्शकक स्थिति भिन्न छैक। पहिने जखन पारसी शैलीमे हिन्दी नाटक होइत छल जनताकेँ मैथिली नाटक अपन बीचक खेरहा बुझाइत छलैक आ ओ अपन बीचक बातसँ किछु भिन्न तरहक चीज देखबाक अभ्यासी छल। ई अभ्यास पारसी थियेटर द्वारा लगाओल छलैक। एम्हर आबि कए जखन हिन्दी नाटक अपन स्वरूप ग्रहण कयलक अछि मिथिलाक जनताकेँ जे विशेषतः गाममे रहैत अछि हिन्दी नाटक बेसी पसिन्न नहि पड़ैत छैक। आब ओकर मानसिकता अपन बीचक बातकेँ नाटक रूपमे देखबाक भए गेलैक अछि। ओकरा अपने शब्द-संस्कारमे नाटक प्रिय लगैत छैक। मैथिली नाटक एहि हेतु आइ गाममे अधिक प्रिय अछि। ओहूसँ प्रिय छैक सलहेस, कुमर बृजभानक नाच आदि। उपर्युक्त बात हम एकटा सर्वेक्षणक आधार पर कहैत छी। एहन लोक जे मैथिली लेल कोनो आन्दोलन करैत अछि से कोनो क्षेत्रमे नहि, तँ नाटको क्षेत्रमे नहि, किन्तु ओकरा मैथिली नाटक एहि हेतु पसिन छैक जे ओ ओहिमे आनंद लए पबैछ। किन्तु जे नाटकक खेलाइत छथि भाषाक प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध नहि छथि। यद्यपि ग्रामीण रङ्गमंच द्वारा मैथिली नाटक क्षेत्रमे उल्लेखनीय कार्य भेल अछि यथा नाटकक प्रकाशन, प्रतियोगिताक आयोजन आदि।

एहि ठाम ई कहब आवश्यक जे सभसँ पहिने मैथिलीमे ग्रामीणे रङ्गमंचक स्थापना भेल। मैथिलीक एहन सभसँ प्राचीन रङ्गमंच अछि–'तारा नाट्य कला परिषद' पाही टोल जकर स्थापना 1915 ई. मे भेल। मैथिली नाटकक प्रस्तुतिकेँ मिथिलाम बनेबाक प्रयास सेहो सभसँ पहिने मैथिली ग्रामीणे मंच कीर्तिनाथ कला परिषद पैटघाट (लालगंज) द्वारा 1954 ई. मे भेल। ओना ग्रामीण मंच लग आइ कएकटा समस्या छैक–पहिल समस्या छैक जे नाटक गाममे रहैत खेतीसँ जुड़ल लोकनि द्वारा नहि भए पबैछ जे नाटककेँ भूमिसँ जोड़बामे बेसी बल देत। दोसर गाममे एखनो नारीपात्रक भूमिका नारी द्वारा नहि भए पबैत अछि एहनामे कतेको संस्था द्वारा एहि लेल नाटक नहि भए पबैत अछि जे नारीक भूमिका लेबा लेल केओ तैयारे नहि भए पबैत अछि।

उपर्युक्त समस्यासभ रहितो ग्रामीण रङ्गमंच शहरी रङ्गमंचसँ बड़ पाछू नहि अछि। 'अरिपन' द्वारा मैथिली नाट्य-समारोहमे कएक बेर ग्रमीणो रङ्गमंचक नाटककार वा मंचक प्रस्तुति पुरस्कृत भेल अछि। जेना पंचम अन्तरराष्ट्रीय मैथिली नाट्य समारोहक तत्वाधानमे आयोजित 'अरिपन'क नाटकक पाण्डुलिपिक श्रेष्ठताक पुरस्कारमे श्री शैलेन्द्र आनन्दक नाटक डाक बाबूकेँ द्वितीय पुरस्कार भेटल वा तारा नाट्य कला परिषद, पाही टोलक संयोजनमे क्षेत्रीय मैथिली नाट्य प्रतियोगिता समारोह द्वारा प्रायोजित मैथिली नाट्य प्रतियोगिता भेल जाहिमे ग्रामीणो रङ्गमंचसँ जुड़ल कलाकारलोकनि पुरस्कृत भेलाह।

ग्रामीण रङ्गमंचसँ जुड़ल नाटककारक नाटक तँ लिखाइत अछि किन्तु ओकर प्रकाशन नहि भए पबैत अछि। शहर जकाँ ग्रामीण रङ्गमंच ने सक्रिय अछि ने संगठित। से सभ रहितो मैथिली नाटक अपन ग्रामीणे रङ्गमंच द्वारा अपन भूमिपर कार्य करबाक उद्देश्यकेँ पूर्ति कए पबैए।

ई तँ हम पहिनहि कहल जे नाटककेँ मिथिलाक ढङ देबाक कार्य ग्रामीणे रङ्गमंचसँ शुरू भेल किन्तु ओ बादमे अपन विकसित रूपकेँ आगू नहि देखा सकल। आब शहरी रङ्गमंचक प्रभाव गामहुक मंच पर पड़ि रहल अछि किन्तु गाममे एखन धरि मंच अपन अभिभावकत्व लेबाक लेल आगू नहि आयल अछि।

ग्रामीण रङ्गमंचक काल बहुत दीर्घ अछि आ क्षेत्र बहुत व्यापक, तँ ओहि सभक एतय चर्चा नहि कए आगू नाटकक विकासक खण्डमे आ परिसर खण्डमे जे किछु चर्चा करब से सभ ग्रामीण रङ्गमंचक परिचय देबामे सेहो सफल होएत।

उपर्युक्त रूपेँ रङ्गमंचक परिचय ई स्पष्ट करैत अछि जे रङ्गमंचक विकाससँ नाटकक विकास भेल आ नाटकसँ रङ्गमंचक। मैथिली नाटकक विकाससँ रङ्गमंचक विकास

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बुझक थिक आ रङ्गमंचसँ नाटकक । मैथिली रंगमंच आ नाटकक विकासकेँ आरो स्पष्ट करक हेतु ओकरा दू काल-भागमे बँटैत छी :

(1) प्राचीन काल–1900 ई. सँ पूर्व रचित समस्त नाटक।

(2) आधुनिक काल– 1900 ई. सँ अद्यतन ।

आधुनिक कालकेँ प्रथम, द्वितीय आ तृतीय चरणमे बँटैत छी।

1. **प्राचीन काल**–प्राचीन नाटकसँ तात्पर्य बीसम शताब्दीसँ पूर्व ओहि समस्त नाटकसँ अछि जे मिथिला, नेपाल आ आसाममे लिखल गेल । एकर अवधि बहुत दीर्घ अछि । समय ओ स्थानक अनुसार भिन्न-भिन्न विशिष्टता अछि । ओ सभ विशिष्टता अपन व्याख्या लेल पर्याप्त समय ओ अक्षर मङैत अछि ।

प्राचीन कालक नाटकक कलापक्ष बहुत ध्यातव्य अछि । ओहि सभ नाटकक प्रस्तुति ओहने दक्ष कलाकार द्वारा कयल जाइत छल होयत जे गायन ओ नृत्यमे पटु छल होयताह । नाट्य-साहित्यक दृष्टिसँ ई काल सम्पूर्ण भारतीय परिप्रेक्ष्यमे गौरवपूर्ण अछि ।

2. **आधुनिक काल: (क) प्रथम चरण (1900 ई. सँ 1922 ई. धरि)**— आधुनिक कालक प्रथम चरणमे पहिल नाटक भेटैत अछि जीवन झाक *सुन्दर संयोग* (1904 ई.) । तकर बाद हुनके *नर्मदा सट्टक* (1906 ई.); तथा *सामवती पुनर्जन्म* (1920 ई.), लालदासक *सावित्री सत्यवान* (1909 ई.) आदि । एहन नाटक जे भाषाक स्तर पर, रचना-प्रक्रियाक स्तर पर नव तँ छल किन्तु ओहि सभ नाटकक मंचन कहियो नहि भेल । ओहन नाटक ओना बादोमे लिखल गेल यथा आनन्द झाक *सीता स्वयंवर*, मुं. रघुनन्दन दासक *सुदर्शन नाटक* (1932) आदि, किन्तु तावत मैथिलीक आधुनिक नाटकमे स्वयं रघुनन्दन दासक *मिथिला नाटक* क मंचन प्रारम्भ भए गेल छल । जीवन झा *सुन्दर संयोग* क रचना मात्र नाट्य विधाक रूपमे कयल । संस्कृत नाट्य साहित्यक प्रभावमे रचित भेल । गजल पारसी नाटकेक प्रभावसँ रचल गेल किन्तु दृश्य-विधान पारसी नाटकसँ अप्रभावित रहल । पारसी नाटकक प्रथम ध्येय मंच पर आकर्षण उत्पन्न करब छल ओ पारसी थियेटर ओकरा हल्लुक स्तर तक ल' जाइत छल । तकर प्रभाव जीवन झाक नाटकमे नहि दृष्ट होइत अछि । आनो नाटककारक रचना मंचोपयोगी नहि अछि ।

एही चरणमे पं. तेजनाथ झाक *सुरराज विजय* नामक नाटक 1919 ई. मे रचल गेल जकर प्रकाशन डा. रमानन्द झा 'रमण' क सम्पादनमे 1995 ई. मे भेल अछि । उक्त नाटक प्राचीन नाटकक शैलीमे अछि किन्तु नाटक सम्पूर्ण रूपसँ मैथिलीमे अछि । नाटक आरम्भ होइत अछि सूत्रधारक नान्दी पाठसँ आ समाप्त होइत अछि आशीर्वादी गीतसँ । एकर भूमिकामे डा. आनन्द मिश्र कहैत छथि– *''एहि नाटकक रचनामे कीर्तनिञा शैली एवं पारसी शैली दुनूक मिश्रण देखबामे अबैत अछि । कारण स्पष्टे अछि । एहि समय धरि कीर्तनिञा नाच-शैलीमे मिश्रण होएब स्वाभाविक छल ।''*

हमरा उक्त नाटकमे पारसी नाटकक प्रभाव नहि लगैत अछि। एहिमे कथोपकथन पद्यसन तुकान्त संयोजनमे पारसी नाटक जकाँ नहि अछि । तार्त्पय जे जेना पारसी नाटकमे कोनो पात्र पद्यात्मक लयमे बजैत अछि आ ओकरा पूरा करैत दोसर पात्र अपन संवादमे पहिल वाक्यक तुकमे तुक मिलबैत अछि से एहि नाटक मे नहि अछि । दोसर सस्त मनोरंजनमे जेहन वाक्य-प्रयोग पारसी नाटकमे रहैत अछि सेहो एतय नहि देखैत छी । *सुरराज विजय नाटकक* गीत सेहो मिथिले संगीतक रागमे अछि । तैँ हम उक्त नाटककेँ मैथिली प्राचीन नाटकक विकसित रूप मानैत छी । इएह रूप जँ आइ अपन धारामे बहैत आधुनिक युगक नव तेवर ग्रहण करैत तँ आइ मैथिली भाषाक नाटककारकेँ अपन रचनाक हेतु मैथिल ढङ तकबामे परिश्रम नहि करय पड़ितनि । खेद जे से नहि भए सकल । प्रायः तकर कारण भेल नाटक अपन रचनाकालमे प्रकाशित नहि भए सकल ।

(ख) द्वितीय चरण (1923-1960 ई.)–एहि कालसँ मैथिली नाटकक मंचन होमय लागल; से जहिया धरि रङ्गमंच अपन स्वतन्त्र स्थिति नहि बना लेलक, एकहि रूपमे होइत रहल । पं. गोविन्द झा अपन *मैथिली नाटकः अधुनातन सन्दर्भ* मे कहैत छथि–*''वास्तविक अर्थमे आधुनिक मैथिली नाटकक आरम्भ मुंशी रघुनन्दन दासक 'मिथिला नाटक' सँ होइत अछि जे प्रकाशित होइतहिँ खूब ख्याति पओलक । अनेक ठाम बुहत दिन धरि वारंवार अभिनीत होइत रहल ।''* पं. झा जखनि नाटककेँ रंगमंचसँ जोड़ि क' देखैत छथि तखन हुनक उक्त वाक्य व्यक्त होइत अछि । किन्तु *मिथिला नाटक* अपन रचना-प्रक्रियामे सामवती पुनर्जन्मसँ वेसी मंचोपयोगी अछि से हमरा नहि बुझाइत अछि। हँ, एकटा संयोगक विषय भेल जे उमाकान्त झाक व्यावसायिक नाटक कम्पनी ओहि नाटकक मंचन कयलक, तकर बाद कएकटा ग्रामीण मंच द्वारा एकर अभिनय भेल । ई अवश्य जे आधुनिक कालमे मैथिली नाटक एकर माध्यमेँ जनताक बीच गेल । दृश्य-काव्यक संज्ञाकेँ सार्थक कयलक ।

द्वितीय चरणक भूमिका मैथिली नाटककेँ लोकप्रिय बनेबामे अछि । आधुनिक कालक एहि चरणमे ई धारणा भेल जे मैथिली नाटकक मंचन भए सकैत अछि । एहि कालमे बहुत नाटक नहि लिखल गेल मुदा जतबे लिखायल अपन प्रस्तुतिसँ बहुत लोकप्रिय

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेल । यथा, ईशनाथ झाक *चीनीक लड्डू* (1940), *उगना* (1956), पं. गोविन्द झाक *बसात* (1954), शारदानन्द झाक *'फेरार'* (1950) आदि ।

चीनीक लड्डू सर्वप्रथम विद्वन्नाट्यकला परिषद, नवटोल (मनीगाछी) द्वारा 1937 ई. मे अभिनीत भेल छल जाहि समयमे नाटक पाण्डुलिपिए स्थितिमे छल। बादमे 1940 मे प्रकाशित भेल। प्रकाशित होइतहि एहि नाटकक धूम मचि गेल । मिथिलाक विभिन्न भागमे खेलायल गेल। उक्त नाटकक प्रसङ्ग डा. जयकान्त मिश्र कहैत छथि–*''प्रायः ईशनाथ झा द्वारा सर्वश्रेष्ठ नाटक लिखल गेल ।''* [मै. सा. इ., द्वितीय भाग, पृ. 121]। डा. श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन *मैथिली साहित्यक इतिहास* मे लिखैत छथि– *''वस्तुतः की उपयोगिताक दृष्टिएँ ओ की नाटकीयताक दृष्टिएँ, की कथनोपकथनक सरलता-स्वाभाविकताक दृष्टिएँ आ कि भाषाक अकृत्रिम प्रयोगक दृष्टिएँ चीनीक लड्डू प्रायः आबहु मैथिली नाटकक आ कि भाषाक अकृत्रिम प्रयोग दृष्टिएँ मैथिली साहित्यमे श्रेष्ठ अछि ।''* डा. 'श्रीश'क 'आबहु' सँ तात्पर्य प्रायः छनि जे जखन कि मैथिली नटकक विकास बहुत आगाँ तक बढ़ि गेलए। किन्तु कोनो विधाक आगू विकाससँ कोनो कृति नापल-तौलल नहि जायत, ओकर श्रेष्ठताक आधार अपन काल रहैत छैक आ जे रचना श्रेष्ठ रहैत अछि से सभ कालमे श्रेष्ठ रहैत अछि, विधाक विकास ओकर श्रेष्ठताकेँ नहि भङैत छैक ।

चीनीक लड्डू क लोकप्रियताक आधार ओकर विषयवस्तु अछि । ईर्ष्या-द्वेषक चरम स्थिति एहिमे देखाओल गेल । स्वार्थी लोक कोना अपनहि पापक जालमे फँसि जाइत अछि से देखाओल गेल अछि । एहि नाटकक धूर्त पात्र बटुआ दास आ ढोलकिया अद्भुते मनोरंजन करैत छैक । ढोलकिया तँ बहुत दिन तक समाजमे एकटा चरित्र रूपमे मोन राखल जाइत रहल ।

चीनीक लड्डू क बाद सभसँ लोकप्रिय नाटक भेल गोविन्द झाक *बसात*। कमलांचलक एहन कोनो गाम नहि छल जतय *बसात* नाटकक मंचन नहि भेल । स्वतंत्रताक बाद स्त्री-पुरुषकेँ कान्ह मे-कान्ह मिलाकए आगू बढ़बाक बात अयलैक, किन्तु पुरुष नारीकेँ अबला बुझैत छल । विशेषतः मिथिलाक ओहन युवक जे आधुनिक शिक्षामे शिक्षित भए रहल छल ओकरा आरो भ्रान्ति छलैक जे मिथिलाक नारी अयोग्य होइत अछि। नाटककार अपन *बसात* नाटकमे एहि बातकेँ खण्डित करैत; नारीक सामर्थ्यसँ पुरुषकेँ परिचित करबैत छथि । परिचिते नहि पुरुषक अहं केँ चूरि दैत छथि। पुरुष नारीक शरणापन्न भए जाइत अछि । नाटककार जाति-पाँजि पर सेहो चोट करैत छथि । एहि नाटकमे विभिन्न ठाम कौतूहल जगायल गेल अछि, हास्यक पुट अछि आ सभसँ विशेष बात अछि जे पहिल बेर मैथिलीमे एहन नाटक आयल जे समाजवादी चिन्तनसँ कथाक माध्यमेँ समाजकेँ प्रेरित करबाक प्रयास कयलक। पुष्पा द्वारा खोलल गेल सेवाश्रम ओहि चिन्तनक एकटा मार्ग थिक । डा. श्रीश अपन इतिहासमे कहैत छथि–*''हिनक नाटकक मुख्य उद्देश्य अछि नारी-जगरणक चित्रण कए मैथिल ललनाक गौरवक महत्वांकन करब । एहि प्रकार एहि नाटकसँ हुनक आदर्शवादी युगबोधक ज्ञान होइत अछि ।''*

ओहि कालमे मैथिली नाटक माने छल *चीनीक लड्डू* वा *बसात* । उक्त दूनू नाटकसँ मैथिली रङ्गमंचक महत्व स्थापित भेलैक । वा कहू उक्त दूनू नाटकसँ रङ्गमंच अपन पैर माटि पर रोपलक । एहि तरहक नाटकक रचना बादोमे भेल किन्तु ओहि नाटकक विषयवस्तु संग ओकर स्वर बदलि गेल छलैक। मिथिला वा मिथिलासँ बाहरक विभिन्न रङ्गमंच अपन नव रूप पर आबि गेल छल ।

(ग) **तृतीय चरण**–1954 ई. सँ 'कीर्तिनाथ कला परिषद' (पैटघाट) लालगंज, 1959 ई. सँ 'मिथिला-कला-केन्द्र' कलकत्ता वा 1951 सँ पटनामे मैथिली नाटक होबय लागल । तहिया मैथिली साहित्यमे विभिन्न विधा अपन रंगमे आबि गेल छल । स्वतंत्रतासँ पहिने जे लोक कल्पना कयने छल से निष्फल होबय लगलैक । राजनीतिक बैमानी भारतीय नेता द्वारा होबय लगलैक। राजनीतिक सामन्तवादो पनप' लगलैक। देशकेँ भ्रष्टाचार, भाइ भतीजावाद तहस-नहस कर' लगलैक । बेरोजगारी बढ़' लगलैक। एहि सभसँ जनतामे आक्रोश, निराशा पसर' लगलैक । उपर्युक्त विसंगतिक अतिरिक्त समाजकेँ जातीय-विभेद, नारीक शोषण ओ आर्थिक विसंगति निर्बल क' रहल छल । एहिसभकेँ साहित्यकारलोकनि अपन विधामे उठौलनि जे साहित्यक विभिन्न विधाकेँ नव नव शिल्प सङ नव स्वर देलक । नाटकमे ओना गोविन्द झा अपन नाटक *बसात* मे जातीय अहं पर, नारी-शोषणक खिलाफ पुरुषक अहं पर चोट देलनि किन्तु उक्त नाटकमे नारी पुरुषक खिलाप लड़ै नहि छथि अपितु अपन सामर्थ्यकेँ अपन सद्गुण क्रिया द्वारा देखार कए लैत छथि । अपनाकेँ ओतेक विकसित कए लैत छथि जाहिसँ पुरुषक अहं पराजित भए जाइत अछि । आगूक नाटकमे अपन जीवन-समस्यासँ लड़ैत उबरबाक बाट ताकल गेल अछि किंतु ई बात जे अन्य विधामे आयल, से नाटकमे बादमे आयल । नाटक पहिने रचनाप्रक्रियाक नव ढङ तकलक, तकर बाद समस्यासँ निदानक ढङ ।

'कीर्तिनाथ कला परिषद' (पैटघाट) लालगंज मैथिली रङ्गमंचकेँ मिथिलाक कलासँ जेना सिक्की-मौनी, सूप आदिसँ सजाकेँ रङ्गमंचकेँ आकर्षक बनौलक। मैथिलीक विभिन्न नाटक ओहि मंचकेँ पाबि लोकप्रिय भेल। रङ्गकर्मी द्वारा सेहो नाटकक रचना भेल जकर मंचन सबसँ पहिने पाण्डुलिपिएक स्थितिमे ओएह मंच कयलक, श्री कृष्णानन्द झाक *विद्यापति* (अप्रकाशित), काशीनाथ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिश्रक *अयाची* (1962) बादमे प्रकाशित *दिग्विजय, कौटिल्य* (अप्रकाशित) ओही मंच पर भेल। उक्त मंच टिकट पर सेहो नाटक कयलक। मिथिलाक भूमि पर मैथिली नाटककेँ लोकप्रिय बनएबामे एहि मंचक महत्वपूर्ण योगदान अछि।

'मिथिला कला केन्द्र' तथा 'मिथियात्रिक' कलकत्ता स्थापनाक सङ मैथिली नाटक बंगला नाटकक प्रभावमे आयल। फलतः मैथिली नाटक बंगला द्वारा वा बंगलासँ नव-नव शैली प्राप्त कयलक। विभिन्न भाषासँ नाटकक अनुवाद सेहो भेल। नाटक नव ढङ, नव स्वर ल' आगू आबि निखर' लागल। किछु नाटक पुरानो समस्या पर लिखल गेल जेना दहेज प्रथा पर लिखित नाटक *कनियाँ-पुतरा* (गुणनाथ झा) *लौंगिया मिरचाइ* (लल्लन प्रसाद ठाकुर), *लेटाइत आँचर* (सुधांशु शेखर चौधरी) आदि, किन्तु एकर उपस्थापन नवीन छल। एकर अतिरिक्त विभिन्न नाटक आयल जे विभिन्न विसंगतिकेँ दूर करक लेल मुखरित भेल। महेन्द्र मलंगियाक नाटक नारी-शोषण, निम्नवर्गीय समाजक समस्याकेँ उठौलक। मलंगियाक नाटक श्रमिक जीवनक औनाहटिसँ समाजकेँ चेतौलक। हुनक नाटकमे *कमलाकातक राम लक्ष्मण आ सीता, ओकरा आङनक बारहमासा* आदि प्रसिद्ध अछि। अपन नाटकमे समस्याकेँ ओ तेना ठाढ़ करैत छथि जे समाधान करैत तँ नहि बुझाइत अछि किन्तु यथास्थितिक प्रति विरोधक जन्म दैत नव स्थितिक संरचनाक प्रेरणा दैत अछि। ओना आगूक नाटकमे ओ समस्याक सङ निदानक पृष्ठभूमि सेहो तैयार कयलन्हि अछि। जेना कठरी बाबाक मिथक पर आधारित हुनक नाटक *काठक लोक*, हुनक अप्रकाशित नाटक *ओरिजिनल काम* आदि। *काठक लोकमे सफेदपोशी* लोककेँ देखार कए नव समाज स्थापनाक संकेत कयल गेल अछि। मलंगियाक नाटकक विशेषता ओकर भाषा, सहज संवाद ओ हिनक नाटक जाहिमे मिथिलाक सौरभ लए उपस्थित होइत अछि, सम्पूर्ण मैथिली नाटककेँ गौरवान्वित करैत अछि। नचिकेताक नाटक *आन्दोलन, एक छल राजा, नायकक नाम जीवन, प्रत्यावर्तन, नाटकक लेल* आदि, डा. अरविन्द अक्कूक *तालमुट्ठी, आगि धधकि रहल छै, अन्हार इजोत, रक्त, आतंक* आदि, सुधांशु शेखर चौधरीक *भफाइत चाहक जिनगी, लेटाइत आँचर, पहिल साँझ; गुणनाथ झाक; पाथेय, शेष नञि;* लल्लन प्रसाद ठाकुरक *बकलेल, लौंगिया मिरचाई;* गोविन्द झाक *अन्तिम प्रणाम, रुक्मिणीहरण,* विभूति आनन्दक *समय संकेत,* उषाकिरण खानक *फागुन,* गंगेश गुंजनक *आइ भोर, छत्रानन्दक सीताहरण,* उदयचन्द्र झा विनोदक *उदास गाछक वसन्त,* सुशीलक *भामती,* अशोकक *डेग,* शैलेन्द्र आनन्दक *डाक बाबू,* बुद्धिनाथ झाक *अहिबातक पातिल* क अतिरिक्त एक दर्जन नाटक (सभटा अप्रकशित); मन्त्रेश्वर झाक *प्रायश्चित्त* आदि विभिन्न विषय आ रंग-शिल्पक नाटक थिक जे मंचक खगताकेँ देखि लिखल गेल अछि।

मंचनक हेतु किछु प्रसिद्ध उपन्यास आ कथाक नाट्य रूपान्तरण सेहो भेल अछि। एहिमे प्रमुख अछि ललितक *पृथ्वीपुत्र,* यात्रीक *नबतुरिया,* गोविन्द झाक *पातक मनुक्ख,* हरिमोहन झाक *बौआक दाम, साझी आश्रम,* धूमकेतुक *अगुरबान,* प्रभास कुमार चौधरीक *टुस्सा* आदि। ई नाट्य रूपान्तरण रंगमंचसँ संबद्ध व्यक्तिए यथा-कुणाल, अशोक, अक्कू, कुमार शैलेन्द्र, रोहिणी रमण झा आदि कएल अछि। एहि प्रकारेँ कहि सकैत छी मैथिली रंगमंचक बढ़ैत सक्रियतासँ खगताक पूर्तिक हेतु मैथिली नाट्य लेखनक गति बढ़ल अछि। मैथिलीक नाटक साहित्य समृद्ध भए रहल अछि।

मिथिलांचलक औद्योगिक वर्चस्व

□ डा. श्री शैलेन्द्र कुमार झा

आधुनिक संदर्भमे मिथिलांचल भारतवर्षक निर्धनतम राज्यक निर्धनतम क्षेत्र अछि। प्रशासनिक स्तर पर मिथिलांचल कोनो मान्यताप्राप्त वा अधिकृत क्षेत्र नहि। निकट भूतोमे मिथिला राज्य कहि कए कोनो राज्य नहि छल। **मिथिला** बहुत प्राचीन नाम अछि जकर राजकीय व्यवस्था आ परम्परा तहिया शुरू भेल मानल जाइत अछि जहिया आर्य विदेघ माथव अपन आर्य-समुदायकेँ लए एहि क्षेत्रमे आबि कए बसलाह तथा कालक्रमे ओतए एकटा अति समृद्ध तथा गौरवशाली साम्राज्यक स्थापना कएलनि। प्रारम्भिक चरणमे मिथिला कोनो राज्य नहि भए मात्र एकटा नगर छल, राजधानी छल। बादमे ई नाम समस्त राज्यक लेल प्रयुक्त होअए लागल। कालांतरमे ई क्षेत्र आओरो कएकटा नामसँ जानल गेल, जाहिमे तत्कालीन **विदेह** आ उत्तरकालीन **तीरभुक्ति** (वा आओरो बादमे **तिरहुत**) बेशी प्रसिद्ध भेल। यद्यपि आधुनिक वा पूर्वाधुनिक संदर्भमे **मिथिला** नाम प्रशासनिक प्रयोजनक लेल व्यवहृत नहि भेल अछि तथापि एम्हर किछु दिनसँ ई महिमामण्डित नाम पुनः लोकप्रिय भए गेल अछि आ' सम्पूर्ण उत्तर-बिहारक क्षेत्र लेल पर्यायक रूपमे व्यवहार कएल जा रहल अछि।

जेना कहलहुँ आधुनिक संदर्भमे "मिथिलांचल भारतवर्षक निर्धनतम राज्यक निर्धनतम क्षेत्र बनि गेल अछि।"[1] ई देशक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एकटा एहेन विरल क्षेत्र अछि जे स्वतंत्रता-प्राप्तिक पचास वर्षक बादो प्रायः ओतहि अछि जतए स्वतंत्रताक पूर्वसंध्यामे छल। बल्कि तुलनात्मक रूपेँ किछु पाछुए घुसकल अछि। आर्थिक स्तर पर देखल जाए त' ई राष्ट्रक सर्वाधिक पछुआएल प्रांतक सर्वाधिक पिछड़ल क्षेत्र अछि। ओना विश्वक कतेको देशमे एहन क्षेत्र अछि जे एकरोसँ बेशी निम्न स्तर पर अछि। मुदा, मिथिलांचलक-संदर्भ मे ई तथ्य ऐतिहासिक रूपेँ अविश्वसनीय लगैत छैक। बहुतो एहेन क्षेत्र जे आर्थिक विकासक क्रममे पिछड़ल अछि जे पहिनहुँ पिछड़ले छल किंवा कहियो विकसित भेले नहि छल, आर्थिक रूपसँ प्रगति कएनहि नहि छल। किछु एहनो क्षेत्र अछि जतए ऐतिहासिक दृष्टिसँ विकासक्रम बहुत कालांतरमे शुरू भेलैक। एहनो कतेको क्षेत्र छल जतए ऐतिहासिक कालमे यद्यपि सभ्यताक विकास भेल छलैक मुदा से कालांतरमे कालक गर्त्तमे विलीन भए गेल। मुदा एहेन क्षेत्र जतए मानवीय सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक समृद्धि आ सामाजिक संरचनाक अखण्ड परम्परा रहल होइक से क्षेत्र आइ एहेन दुरवस्थामे पड़ल हो, तकर दोसर उदाहरण भेटब कठिन।

भौगोलिक आधार पर गंगाक उत्तरवर्त्ती क्षेत्र जे हिमालयक तराइ-क्षेत्र तक विस्तृत आ पूर्वमे कोशी तथा पश्चिममे गण्डक नदीसँ कोष्ठित अछि से मिथिलांचल मानवीय सभ्यता आ संस्कृतिक उद्गमस्थल अछि। प्राचीन वैदिक-साहित्य, दर्शन, न्याय, मीमांसा, धर्मसूत्र, तर्कशास्त्र, व्याकरण, साहित्य तथा राजनीति-शास्त्र, आ' अर्थशास्त्र इत्यादिमे मिथिलाक शीर्षस्थ स्थान छलैक। हजारो वर्ष धरि मिथिला एहि मर्यादाक निर्वाह करैत रहल आ एकरा उच्चस्तरीय शिक्षा तथा ज्ञान-प्राप्तिक केन्द्र मानल जाइत रहलैक। ''मिथिलाक अपन एकटा अलग आकर्षण छलैक! ओ प्रांत जे एहि नामसँ जानल जाइत छल तकर भारतीय सांस्कृतिक इतिहासमे वैदिक कालसँ लए अठारहम शताब्दी तक उद्भाषित परम्परा रहलैक अछि।''[2] असलमे अध्यात्म, दर्शन आ साहित्य इत्यादिमे मिथिला ततेक उच्चता प्राप्त कएने छल जे तकर चकचोन्हमे परवर्ती इतिहासकार वा साहित्यकारलोकनिकेँ बहुतरास एहन तथ्यपर ध्याने नहि जा सकलन्हि जे मिथिलांचलक सम्बन्धमे अति महत्वपूर्ण रहल अछि। वस्तुतः सामान्य धारणाक विपरीत मिथिला मात्र अध्यात्म, कर्मकाण्ड, दर्शन आ साहित्ये आदिक प्रवक्ता नहि छल, अपितु ओकर आर्थिक चिंतन आ आर्थिक अनुशीलनो अद्वितीय छलैक। प्राचीन कालसँ मिथिला पूर्ण रूपसँ आर्थिक समृद्धता प्राप्त कएने छल वा वाणिज्य तथा व्यापारमे राष्ट्रीय नहि, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपन वर्चस्व रखैत छल। हालेमे कराओल गेल पुरातात्विक उत्खनन एहि तथ्यकेँ निस्संदेह प्रमाणित करैत अछि जे ई क्षेत्र पूर्व-ऐतिहासिक कालमे महान् सांस्कृतिक उच्चता प्राप्त कएने छल आ नव-पाषाण युगक अन्य सांस्कृतिक केन्द्रसभमे एकर स्थान अति सम्मानित छलैक।''[3]

मिथिलांचल क्षेत्रकेँ 'अन्नक बखारी' कहल जाइत रहलैक अछि। एकर पर्याप्त कारणो छैक आ एहि कथनमे सत्यता सेहो छैक किएक त अत्यन्त उर्वर विस्तृत भू-क्षेत्र जे क्रमशः उत्तरसँ दक्षिण दिश अत्यल्प ढलानक (स्लोप) संग पसरल अछि, कृषिकार्यक लेल देशक आदर्शतम क्षेत्रमे सँ एक अछि। एहि क्षेत्रक समतल प्रसार (एकदम उत्तर-पश्चिमी धार पर सोमेश्वर पर्वत-शृंखलाकेँ छोड़िकेँ) समुद्र-तलसँ औसतन 250 फीट उपर अछि। एतुक्का जलवायु, छोट-पैघ नदी, धार एवं प्राकृतिक नहरि सभहिक जाल तथा प्राकृतिक जलवृष्टि (ल. भ. 1320 .14 कि. मी.) सभटा एहि क्षेत्रकेँ प्रकृति-प्रदत्त वरदान जकाँ भेटल छैक। तेँ एहि क्षेत्रकेँ जँ कृषि-प्रधान क्षेत्र मानल जाइत रहलैक अछि एहिमे कोनो आपत्ति नहि, कोनो संदेहो नहि। मुदा जहिना प्राकृतिक सम्पन्नता आ पर्याप्तता कोनो क्षेत्रकेँ विकासक प्रथम चरणमे उत्साहित आ संवर्धित करैत छैक, तहिना अतिरेक उत्पादनक सहज उपलब्धता आ' अतिरिक्त प्रयासक अवांछनीयता ओतुक्का मानवीय आ सामाजिक संस्कारकेँ निष्क्रिय बनएबामे उत्तरदायी भए जाइत छैक। मिथिलांचलकेँ अपन आवश्यकताक आपूर्ति ततेक सहजतासँ भए जाइत छलैक जे ओ सदिखन पर्याप्तता प्राप्त कएने रहैत छल आ पूर्णतया स्वावलम्बी बनल रहैत छल। इएह पर्याप्तता आ सहज उपलब्धता कालांतरमे एहि क्षेत्रक लेल घातक सिद्ध भेलैक, हेतु जे एतए लोककेँ कहियो भौतिक आधिक्यक लेल अतिरिक्त श्रम आ तकनीक विकसित करबाक प्रयोजने नहि पड़लैक। आधुनिक संदर्भमे जखन एकर गम्भीर प्रयोजन छैक, तखन एकर अभाव विकासक्रमकेँ बाधित करएबला एकटा प्रमुख कारण बनि गेल अछि। एतबे नहि, एहि क्षेत्रक इएह भौगोलिक विशेषता जे एकरा कृषिक्षेत्रमे विशिष्टता प्रदान कयने छैक, सएह एकर दुर्भाग्यक कारणो बनि गेल छैक। किएक त' एहि क्षेत्रक लेल कृषि आ कृषिसँ सम्बंधित विकास मॉडेल वा विकासक रूपरेखाक अतिरिक्त आर कोनो दिशामे सोचबाक लेल केओ तैयार नहि अछि। स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद आठ गोट पंचवर्षीय आ तीन टा वार्षिक योजनाक क्रममे मिथिलांचलक विकासक संदर्भमे एक त' गम्भीरतापूर्वक कहियो सोचले नहि गेलैक आ यदि सोचलो गेलैक त' ओहि सोचक पसार कृषिक परिमिति तक सीमित रहि गेलैक, जखन कि हमरा जनितेँ एहि क्षेत्रक संदर्भमे व्यष्टिपरक क्षेत्रीय विकास-चिंतनक अवधारणे मूल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रूपसँ अशुद्ध आ दिग्भ्रमित रहलैक अछि । ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे देखलासँ स्पष्ट भए जाएत जे मिथिलांचलक आर्थिक विकासक मूल आधार यदि कृषि छल तँ ओकर मूल उत्प्रेरक उद्योग आ व्यापार छलैक । आ' वस्तुतः मिथिलांचलक आर्थिक समृद्धि आ उच्चता ओकर विभिन्न उद्योगेसभहिक कारण छलैक जाहिमे राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापारोक पर्याप्त योगदान छलैक। प्राचीन कालसँ वर्तमान शताब्दीक पहिल दू-तीन दशक धरि मिथिलांचल अपन उद्योगसभहिक कारण विश्व भरिमे जानल जाइत छल । मुदा दुर्भाग्यक जे वर्तमान शताब्दीक पूर्वार्धक मध्यसँ ई क्षेत्र अनवरत आर्थिक अवनतिक मार्ग पर स्खलित भए रहल अछि । दुर्भाग्यक बात ई जे एहि स्खलनकेँ रोकबाक कोनो गम्भीर प्रयास नहि कएल गेल अछि । जे क्षेत्र 'भारतक अन्न भण्डार' कहल जाइत छल आ' जे विश्वक आर्थिक मानचित्र पर कएकटा उद्योगक क्षेत्रमे अपन एकाधिकारात्मक वर्चस्वक लेल जानल जाइत छल तकर ई दुर्दशा भए गेल होइक से आश्चर्य । शृंखलाबद्ध कालखंडमे कएकटा उद्योगक क्षेत्रमे विश्व-बजारक एकाधिकारात्मक नेतृत्व करए बला मिथिलांचलक एहेन आर्थिक दुरवस्था एकटा अजगुत-सन बात लगैत छैक ।

यद्यपि मिथिलांचल आर्थिक विकासक प्रत्येक क्षेत्रमे तुलनात्मक रूपेँ पछुआ गेल अछि तथापि एहि आलेखमे हम मात्र उद्योग तथा तत्संबंधित क्षेत्र तक सीमित रहबाक चेष्टा करब आ औद्योगिक क्षेत्रमे मिथिलांचलक उत्कर्षक पुनरवलोकन करबाक प्रयास करब । द्रष्टव्य जे आधुनिक कालमे मिथिलांचलसँ यदि बेगूसराय (बरौनी) क्षेत्रके हटा देल जाए त' औद्योगिक केन्द्रक नाम पर शून्य भेटत, जखन कि एक समयमे एतुक्का उद्योग आ' व्यापार ततेक विकसित छल जे एतुक्का व्यापारीसभ विदेशमे व्यावसायिक उपनिवेश स्थापित कएने छलाह आ' **मिथिला** तथा **विदेह** नाम पर कतेको नगर आ जनपद आदिक नाम रखने छलाह ।[4] विकासक औद्योगिक परम्परा मिथिलामे प्राचीन कालसँ लए बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक चरण तक बनल रहल। स्वाभाविक रूपेँ एहिमे उत्थान-पतन, उत्कर्ष-अपकर्षक चक्र चलैत रहल । मिथिलाक अपन आर्थिक व्यवस्था सदिखन स्वावलम्बी रहलैक आ' उत्पादन-अतिरेक देश-विदेशमे व्यापारित होइत रहलैक । आधुनिक संदर्भमे, विशिष्टीकरण आ कार्य-आवंटन प्रक्रिया धारणाक जे विकास औद्योगिक क्रांतिक बाद भेल अछि, तकर विकास मिथिलांचलमे प्राचीने कालमे भए गेल छलैक। सामाजिक अवधारणा आ वर्ण-व्यवस्थाक अधीन विभिन्न वर्गक लोक विभिन्न प्रकारक कार्यमे सिद्धहस्त भए गेल छल । ताहिमे विशिष्टता प्राप्त कयने छल । मुदा कालक्रमेँ ब्रिटिश व्यावसायिक उपनिवेशवादी व्यवस्थाक कारण एतुक्का पैघ-छोट, परम्परागत आ हस्तशिल्प उद्योग सभहिक अवनति होबए लागल। स्वाभाविक रूपसँ ब्रिटिश साम्राज्य अपन औद्योगिक क्रांतिजन्य अतिरेक उत्पादनकेँ भारतमे ठेलबाक प्रयास करए लागल, जतए ओकरा बृहत्तर बजार उपलब्ध छलैक । क्रमहिँ समस्त भारतीय बजार ब्रिटिश उत्पादनसँ भरि देल गेल । परम्परागत भारतीय उद्योग पर एकर गम्भीर प्रभाव पड़लैक । एहनो विपरीत परिस्थिति मे मिथिलांचलक किछु उद्योग विश्व-बजारमे अपन वर्चस्व बनाक' रखने छल–ई एकटा अद्भुत आ' अकल्पनीय-सन बात लगैत छैक। मुदा सत्य इएह छैक । एहेन जबर्दस्त आर्थिक संक्रमणक आघात सहियो कए मिथिलांचलक जे उद्योगसभ अपन अस्तित्वक रक्षा करैत रहल, अंततः स्वदेशी आंदोलन आ स्वराज्यक राजनीतिक दुश्चक्रमे पड़ि कए नष्ट भए गेल । स्थानीय हस्तशिल्प आ परम्परागत उद्योगक पतनक प्रक्रिया प्रारम्भ करबाक लेल ब्रिटिश साम्राज्यकेँ उत्तरदायी मानैत ओकर भर्त्सना कएल जा सकैत छैक मुदा स्वतंत्र आ पूर्ण प्रभुसत्ता प्राप्त भारत सरकारक आर्थिक व्यवस्थाकेँ की कहल जा सकैत छैक जकर नीतिसँ ई समस्त उद्योग प्रायः समूल नष्टे भए गेल ।.एकरा बचएबाक कोनो सार्थक प्रयास नहि कएल गेलैक । 1951 क जनगणना तक एहि क्षेत्रक कुल जनसंख्याक 2% लोक उद्योगसँ आत्मनिर्भर छल आ एहि आत्मनिर्भर लोक पर निर्भर लोकक संख्या कुल जनसंख्याक 1.6% छल । कुल मिला कए जतबा लोक उद्योगसँ जुड़ल छल से तत्कालीन दृष्टिसँ बेजाए नहि छल।

मिथिलाक उद्योगसभकेँ सुविधाक दृष्टिएँ दू भागमे बाँटल जा सकैत अछि– (1) परम्परागत उद्योग, आ (2) अर्वाचीन उद्योग। पहिल ब्रिटिश शासनकालमे उत्कर्ष पर छल। परम्परागत उद्योग सभहिक सूची बड़ पैघ भए जाएत, यदि सभटाक चर्चा कएल जाए। किछु मुख्य उद्योग जे बहुत महत्वपूर्ण छल आ जकर सुदीर्घ परम्परा रहल छैक वा छलैक से निम्न अछि ।

1. **नाओ निर्माण उद्योग–** ई मिथिलाक बहुत पुरान उद्योग छल । *युक्तिकल्पतरु* तथा *वर्णरत्नाकार* मे विस्तारसँ एकर चर्चा भेटैत छैक । मिथिलामे नदी-नाला आ' प्राकृतिक धार सभहिक जाल-सन छैक । एकरासभहिक प्राचीने कालसँ, जलमार्गक रूपमे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारक लेल व्यवहार कएल जाइत छल । मिथिलामे कतेको प्रकारक छोट-पैघ नाओ बनैत छल आ एतुक्का नाओ-निर्माण-कलाक सर्वत्र प्रशंसा होइत छलैक। व्यापार आ व्यवसायक दृष्टिएँ ई बहुत महत्वपूर्ण उद्योग छल ।

2. **धातु उद्योग–** मिथिलामे धातु उद्योगक प्राचीन इतिहास रहलैक अछि । एतए प्रायः प्रत्येक जानल-बूझल धातुक आ'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

धातुक विभिन्न वस्तुक निर्माण आ' विपणन होइत छलैक। एहिमे कड़ा आ कोमल दूनू प्रकारक धातु अबैत छल। *कीर्तिलता* आ *वर्णरत्नाकार* मे एकर विशेष चर्चा भेटैत छैक। एहि उद्योगक व्यापक विकास विशेष रूपसँ एहू कारणेँ भेलैक जे ई आभूषण आ कृषि कार्यक संग सैन्य-प्रयोजनोक निमित्त प्रयोग कएल जाइत छल। मिथिलामे 36 प्रकारक अस्त्र-शस्त्र निर्माणक उल्लेख भेटैत छैक। एतए अलग अलग धातुक वस्तु निर्माणमे अलग अलग उपजातिक लोक विशिष्टता प्राप्त कएने छल। यथा लोहार, सोनार, कँसेरी इत्यादि। कँसेरी सभ लौह धातुक वस्तु निर्माण करैत छल। किशनगंज, अररिया आ' झंझारपुर अलौह धातुक वस्तु-निर्माणक लेल विख्यात छल। प्रारम्भमे फूल-काँस, ताम (अष्टधातु) इत्यादिक वस्तु बनएबाक गूढ़ तकनीक जानए बला कारीगरसभकेँ मिर्जापुरसँ ऊँच मजूरी पर आनल जाइत छल। मुदा चतुर मैथिल कारीगरसभ जल्दिये ई तकनीक सीखि लेलक। धातुक सुन्दर मूर्ति आ' कलाकृति बनएबाक लेल मिथिला विख्यात छल। एहि उद्योगमे बहुत लोक कार्यरत छल। लवपुर (हाजीपुर) मे उत्तम कोटिक लौह शस्त्र बनैत छलैक। राजनगर तथा खजौली सेहो उत्कृष्ट लौह उत्पादक लेल प्रसिद्ध छल।[6] सरिसब पाही आ पण्डौल कलात्मक सरौताक लेल प्रसिद्ध छल।

3. **बासन उद्योग**– इहो उद्योग एक तरहेँ धातु-उद्योगक संग जुड़ल छल। अंतर एतबे जे एहिमे धातुक अतिरिक्त आओरो किछु सम्मिलित छैक। ई एकटा विशिष्ट प्रकारक उद्योग छल जाहिमे गृह कार्यक लेल विशेष प्रकारक बर्तन-बासन आ' अन्य उपयोगिता तथा सजावटक वस्तु बनाओल जाइत छलैक। मिथिलामे एकटा विशेष रूपसँ निर्मित धातु 'बिदरी' सँ बनाओल जाइत छलैक। ई धातु जस्ताक संग ताम आ कएकटा अन्य स्थानीय पदार्थसभकेँ मिला कए तैयार कएल जाइत छल। एहि मिश्रधातुसँ अद्‌भुत सुन्दर आ कलात्मक वस्तुसभ बनाओल जाइत छलैक। एहिमे 'छिलुआ' आ 'पच्चीकारी' काज रहैत छलैक। ई सामान्यतया दू प्रकारक होइत छल– 'गरखी' आ 'करना'। 'गरखी' मे उत्कृष्ट पच्चीकारी होइत छलैक, 'करना' मे सामान्य। 'गरखी' बड़ महग होइत छलैक आ राजा-महाराज कि पैघ-पैघ जमिंदारे एकर ग्राहक भए सकैत छलाह। ई उद्योग 'कसेरा' उपजातिक लोकक आजीविका छल। ओना पच्चीकारी आ पालिशक काज धानुक, सुनरी, आ' मुसलमानो कारीगर करैत छल। 19 म शताब्दीक मध्य धरि उद्योग खूब उन्नत अवस्थामे चलि रहल छल, मुदा हठात् बिना कोनो विशेष कारणक, अलक्षिते समाप्त भए गेल। एहि शताब्दीक प्रारम्भमे एहि कला आ' शिल्पकेँ जानए बला मात्र तीन गोटय बाँचल छल जाहिमे दू गोटा बेलारी (पूर्णियाँ) आ एक गोटा कटिहारक निवासी छल। 1950 क दशकमे कटिहारक एकमात्र व्यक्ति एहि कला-शिल्पकेँ जानए बला बाँचि गेल छल। ओकरा बाद एकर जानकार केओ नहि बाँचल। ई उद्योग लुप्त भए गेल।[7] मिथिलामे बहुत हाल तक माटिक बासनक उपयोग व्यापक स्तर पर होइत छल आ एहि उद्योगमे हजारो लोक विशेषतः कुम्हार जातिक लोक लागल छल। संगहि माटिक सुन्दर मूर्ति आ' कलाकृति इत्यादि बनएबाक लेल मिथिलांचल विख्यात छल। एतावता जे खाली एही उद्योगमे 1901 मे दरभंगामे 7000, मुंगेरमे 7000, भागलपुरमे 11000 आ पूर्णियाँ जिलामे 4000 कारीगर संलग्न छल।[8]

4. **वस्त्र उद्योग**– मिथिला अपन वस्त्र उद्योगक लेल विख्यात छल। एहिमे सूती आ' रेशमी वस्त्र त' अत्युत्कृष्ट स्तरक होइत छलैक। ऊनी वस्त्रक सेहो बेश व्यापक स्तर पर उत्पादन होइत छलैक, परन्तु से कने साधारण आ' निम्न स्तरक। यद्यपि मिथिलामे कच्चा रेशमक उत्पादन बहुत बेशी नहि होइत छलैक मुदा एकर भारी मात्रामे आयात चीन आ बंगालसँ कएल जाइत छलैक आ' एतए एकर परिशोधन कए वस्त्र निर्माण कएल जाइत छल। मिथिला रेशमी उत्पादनक अति प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र छल। मिथिलाक रेशमी उत्पादन निश्चित रूपसँ उच्चतम कोटिक होइत छल आ' सामान्यतया उच्च वर्गक लोक द्वारा व्यवहार कएल जाइत छल।[9] भागलपुरक रेशमी उद्योग एखनहुँ प्रतिष्ठा आ' सम्मानक दृष्टिसँ देखल जाइत अछि। एहि क्षेत्रक शुद्ध आ उच्चस्तरीय रेशमी उत्पादन अपन गुणवत्ता आ सुन्दरताक कारण भारतवर्षमे नहि विदेशोमे विख्यात छल। प्राचीने कालसँ रेशमी वस्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारमे, मिथिलाक प्रमुख निर्यात-सामग्री रहल अछि।

कपास वा बाँगक उत्पादन तथा ओहिसँ सूत बनएबाक प्रक्रिया मिथिलांचलमे अति प्राचीन कालसँ चलि आबि रहल अछि। कालक्रममे एहि क्षेत्रमे विशिष्टता प्राप्त कएल गेल आ क्रमहिँ एतुक्का सूती वस्त्र विश्वक सर्वश्रेष्ठ वस्त्र मानल जाए लागल। **वर्णरत्नाकरो** मे कतेको प्रकारक वस्त्रक वर्णन कएल गेल अछि,[10] जाहिमे 'पट्टवस्त्र' आ 'निर्भूषण वस्त्र' दूनू सम्मिलित अछि।

5. **रंगरेजी आ रंग-छपाइ उद्योग**– इहो मिथिलाक प्राचीन उद्योग अछि आ वस्त्र-उद्योगसँ कनिये कम पुरान अछि। प्राचीन ग्रंथसभमे रंगीन वस्त्रक उल्लेख भेटैत छैक। प्राचीनतम महाकाव्य रामायण तथा महाभारत इत्यादिमे एकर पर्याप्त चर्चा छैक। भगवान-भगवतीक मूर्त रूपक अवधारणाक काल धरि ई उद्योग पूर्णतया विकसित भए चुकल छल किएक त'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कतेको भगवान-भगवतीक वस्त्रक निर्धारित रंगक मान्यता अपना ओहि ठाम रहल अछि। प्राकृतिक रंगक मान्यता अपना ओहि ठाम रहल अछि। प्राकृतिक रंग एहि क्षेत्रक पर्यावरणसँ पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध छलैक। अंग्रजी शासनकालमे आ ओहि सँ पूर्वहुँ ई उद्योग खूब विकसित छल। मिथिलांचलक गृह-उद्योग मे दस टा रंगक बहुल प्रयोगक चर्चा बुकानन करैत छथि।[11] ई उद्योग समस्त मिथिला क्षेत्रमे पसरल छल आ कतेको ठाम अलग अलग वा संयुक्तो रूपसँ रेशमी, सूती आ ऊनी वस्त्रसभकेँ रंगल जाइत छल। दक्ष कारीगरसभ रंगरेज कहबैत छल। मिथिलामे किछु खास तरहक रंग तैयार कएल जाइत छलैक जेना लाही, पेरी आदि। पेरी रंग गाइक गोंत सँ तैयार कएल जाइत छल। एहि प्रयोजनक लेल गायकेँ एक पात-विशेष खोआओल जाइत छलैक तखन ओकर गोँतसँ बढ़िया पक्का रंग तैयार होइत छलैक। ई मैथिल संस्कार आ भावनाक प्रतिकूल छल तएँ एकर विरोध कएल जाइक।[12]

वस्त्र-उद्योगक सहयोगेँ ई खूब समुन्नत उद्योग बनल रहल। मुदा जखन सस्त कृत्रिम रंग बेल्जियमसँ आबए लगलैक तखन ई उद्योग कठिन आ असमान प्रतियोगिताक कारण पछुआए लागल। अंततः एहि शताब्दीक प्रारम्भ धरि ई पूर्णतया समाप्त भए गेल। ओना स्वातंत्र्योत्तर सूती वस्त्र उद्योगक अधोगामी स्थिति केँ देखि क' महाजन कहैत छथि जे मिथिलाक सूती वस्त्र उद्योग बहुत बेशी सफल होइत यदि ओकरा मिथिलाक परम्परागत कलात्मक रङसँ सजाओल जाइत।[13]

6. **कटाइ, सिआइ तथा बुनाइ उद्योग–** ई मिथिलांचलक प्राचीन उद्योग अछि आ' सम्पूर्ण वस्त्र-उद्योगक प्रारम्भहिसँ आधार रहल अछि। मात्र किछु दशक पूर्व धरि मिथिलाक अधिकांश महिलासभ टकुरी आ चर्खा पर सूत कटैत छलीह आ ताहिमे अपन गौरव बुझैत छलीह। सूत कटनाइ 'ततमा' उपजातिक लोकक प्रमुख पेशा छलैक। 'जोलहा' उपजातिक लोक सेहो इएह कटाइ-बुनाइक काज करैत छल। मिथिलाक ई गृह-उद्योग बड़ नियोजित आ खूब विकसित छल। मिथिलामे तैयार कएल गेल रेशमी, सूती, मलमल आ मोटिया वस्त्र विख्यात छल। ऊनी वस्त्र सेहो तैयार होइत छल मुदा ओ मद्धिम आ निम्न स्तरक। पूर्णियाँ आ भागलपुर रेशमी वस्त्रक केन्द्र छल। एतए कच्चा रेशम पर्याप्त मात्रामे महानन्दा नदीक कछेर पर तैयार कएल जाइत छल। मात्र 1809-10 ई. मे बुकाननक अनुसार ई क्षेत्र 593000 रुपैयाक कच्चा रेशम उत्पादन कएने छल। एहिमे सँ 34000 रु. क रेशम वस्त्र बनबएमे व्यवहार कएल गेल आ' बाँकी कशीदाकारी, गोटा-किनारी आ मिश्रित रेशमी वस्त्र बनएबामे प्रयुक्त भेल। एक सए पचीससँ बेशी परिवार शुद्ध रूपसँ रैशमी वस्त्र बुनबामे लागल रहैत छल आ लगभग 200 करघाक उपयोग होइत छल। एकरा अतिरिक्त एतए फूटल 'कोवा'क रेशम सँ 'चिकटा' रेशमी वस्त्र तैयार होइत छल जे अत्युत्तम होइत छल। खाली पूर्णिया जिलामे लगभग 10,80,000 रु. मूल्यक मिश्र रेशमी वस्त्र तैयार होइत छल। रेशमी आ बाँगक सूतसँ तैयार एहि मिश्रित सूतकेँ 'मालदेही' सूत कहल जाइत छलैक। खाली इंगलिश बजारक लग-पासमे करीब 7000 करघा एहि काजक लेल चलैत छल। भारी मात्रामे ई सूती वस्त्रसभ पश्चिमी भारत, मुर्शिदाबाद तथा कलकत्ता निर्यात कएल जाइत छल। 11000 गाँठ रेशमी वस्त्र त' खाली पश्चिमी भारतमे पठाओल जाइत छल।[14]

विश्वविख्यात मलमलक मुख्य केन्द्र मधुबनी छल। एतुक्का भूमि आ' जलवायु उत्कृष्ट कोटिक बाँग, विशेषतः कोकटी बाँगक लेल उपयुक्त छलैक। एतुक्का कोकटी मलमल एकदम 'तसर' सन लगैत छलैक। ई खूब टिकाउ, खूब मोलायम आ खूब चमकदार होइत छल। एकर उत्कृष्टताक मोकाबिला विश्वक कोनो वस्त्र नहि कए सकैत छल।[15] ई कोकटी मलमल भारी मात्रामे नेपाल जाइत छल जकर मूल्य प्रति थान (40 गज) करीब 100 रु. तक होइत छलैक। भौरा, कपसिया तथा पण्डौल एकर केन्द्र छल। एकरा अतिरिक्त पूर्णियाँ जिलाक खरबा, नेहनगर, डंगरखोटा आ गोरगुरीवाहमे नीक स्तरक उज्जर मलमल बुनल जाइत छल जे 'खस' कहाबैत छल। 19 म शताब्दीक मध्य धरि ई उद्योग अपन पूर्ण उद्दाम पर छल। ईस्ट इण्डिया कम्पनी एकर व्यापारसँ भारी लाभ कमायल। एहि इलाकामे 1910 ई. क लग-पास तक करीब 3500 करघा पर 'खस' तैयार होइत छल आ करीब 50,600 रूपैयाक 'खस' तैयार कएल जाइत छल। मध्यम आ निम्न श्रेणीक कपड़ाक बुनाइ दरभंगा, मुजफ्फरपुर, चम्पारन, मुंगेर तथा पूर्णियाँ जिलामे खूब होइत छल। सन 1809-10 मे खाली पूर्णियाँ जिलामे एकर 10,000 करघा कार्यरत छलैक आ अनुमानतः 10,89,500 रु. कपड़ा बीनल जाइत छलैक। काराटोया एवं महानन्दाक उपरी इलाकमे 'चपल' उपजातिक लोकक करीब अस्सी-पचासी परिवार एकटा विशेष प्रकारक कपड़ा बुनैत छल जकरा 'चेक' कहल जाइत छलैक।[16] मुदा समाजक मध्यम आ निम्नवर्गीय लोक 'मोटिया' वस्त्रक बेशी प्रयोग करैत छल। पूर्णियाँमे नेवार नरसभ नेवार आ पूर्वोत्तरीय पूर्णियामे मौगी सभ पाटक कपड़ा तैयार करैत छल। 20 म शताब्दीक प्रारम्भ धरि ई उद्योग खूब उन्नति पर छल। मुदा सस्त विदेशी कपड़ा तथा पावरलूमक कारण एहि महान उद्योगकेँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गम्भीर आघात लगलैक । ब्रिटिश सरकारक साम्राज्यवादी नीति एहि प्रक्रियाकेँ गति प्रदान कयलक । हजारक हजार दक्ष आ विलक्षण कारीगर, बुनकर, मुखमरीक स्थितिमे आबि गेल आ' ओकरासभकेँ अपन परम्परागत आ' कलात्मक दक्षताकेँ छोड़िकेँ अन्यत्र पेट पोसए पड़लैक । पूर्वी भारत किछु अन्य क्षेत्रक संग मिथिलांचलक ओ विशिष्ट उद्योग जे विश्वमे एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखैत छल आ' जकर गुणवत्ताक कोनो जोड़ नहि छलैक, देखिते-देखिते समाप्त भए गेल । एहि उद्योगक व्यापकताक अनुमान एही बातसँ लगाओल जा सकैत अछि जे बहुत समाप्त भेलाक बादो 1901 ई. मे एहि उद्यागेमे 45,000 सँ बेशी कारीगर संलग्न छल । एहिमे चम्पारनमे 6,000 दरभंगा 9,000 मुंगेरमे 8000, पूर्णियां मे 7,000 आ भागपुर तथा मुजफ्फरपुर मे 15,000 कारीगर छल ।[17]

यद्यपि स्वदेशी आ चरखा आंदोलनक क्रममे किछु सक्रियता आएल आ स्वतंत्रताप्राप्तिक बाद खादी-ग्रामोद्योगक माध्यमसँ कोनहुना थोड़-बहुत काज सरकारी स्तर पर कएल गेलैक मुदा स्पष्टतः आ प्रत्यक्षतः भारत सरकारक नीति बम्बइ, सूरत आ अहमदाबाद इत्यादिक वस्त्र-उद्योगकेँ प्रोत्साहित करबाक छलैक आ तकर मूल्य पर मिथिलाक वस्त्र उद्योगकेँ ने त' प्रोत्साहिते कएल गेलैक आ ने एकर विनाशकेँ रोकबाक कोनो प्रयासे भेल, यद्यपि एखनहुँ कतेको विशेषज्ञ ई मानैत छथि जे मिथिलांचलक भूमि आ जलवायु बाँग आ रेशमी उत्पादनक लेल उपयुक्त अछि आ एकरा बहुत कम प्रयाससँ वस्त्र-उद्योगक केन्द्र बनाओल जा सकैत अछि ।

7. **सतरंजी आ' कम्बल उद्योग**– कम्बल आ सतरंगी उद्योग एहि क्षेत्रक बहुत पुरान आ महत्वपूर्ण उद्योग छैक । मिथिलाक सतरंजी अपन परम्परागत विशिष्टताक लेल देश भरिमे प्रसिद्ध छल । ओकर सौन्दर्य तथा कलात्मकता देखनुक होइत छलैक। चम्पारन जिलान्तर्गत महेसी आ गोविन्दगंज कलात्मक सतरंजीक लेल जानल जाइत छल । मुजफ्फरपुर जिलाक सुरसण्डक सतरंजी अपन मजबूतीक लेल प्रसिद्ध छल। ओना पूर्णियाँ खासोमे सामान्य सतरंजी बीनल जाइत छल । कम्बल बिनबाक काज परम्परागत रूपसँ 'गरेड़ी' सभ करैत छल । मुजफ्फरपुर, दरभंगा, चम्पारन आ विशेष कए कटिहारक कम्बल पहिने खूब प्रसिद्ध छल।

8. **सिन्दूर उद्योग**– मैथिल महिलाक सोहागक प्रतीक सिंदूर होइत छैक । पुरुषोवर्ग एकर व्यवहार करैत अछि आ पूजा-पाठमे त' एकर अनिवार्यता रहिते छैक । मिथिलामे गृह-उद्योगक स्तर पर सिन्दूर बहुत पहिनहिसँ बनाओल जा रहल छल । पूर्णियाँ जिलामे 19 म शताब्दी तक पर्याप्त सिन्दूर बनैत छल । मिथिलांचल मे दू प्रकारक सिंदूर बनैत छल, एकटा पूर्णियाँमे आ' दोसर धमदाहा क्षेत्रमे । सामान्यतया ई सिंदूर मिथिलेक आन-आन क्षेत्र मे पठाओल जाइत छल, खास क' तिरहुत आ भागलपुर ।[18] बादमे यूरोपीय व्यापारीसभ बाहरसँ सिंदूर मँगबए लागल आ' स्थानीय सिंदूर-उद्योग एहि प्रतियोगितामे नहि टिकि सकल : क्रमशः नष्ट भए गेल । ओना 19 म शताब्दीक अंतधरि पूर्णियामे निम्नस्तरीय सिंदूर बनैत छलैक । ओ मुख्यतः घैल तथा सुराही आदि रंगबामे काज अबैत छल । [19]

9. **सन-पटुआ : बोड़ा उद्योग**– मिथिलांचल जूट-पाटक महत्वपूर्ण उत्पादक छल । संगहि एतए बोड़ा बनएबाक उद्योग खूब विकसित छल । सम्पूर्ण पूर्णियाँ जिला आ विशेषतः कटिहार, किशनगंजक इलाकामे एकर उत्पादन बड़ पैघ पैमाना पर होइत छलैक । हजारो व्यक्ति एहि व्यवसायमे लागल रहैत छल । 19 म शताब्दीक अंत धरि ई उद्योग अपन पूर्ण वर्चस्व बना कए रखने छल । बादमे ई उद्योग लघु स्तर आ कुटीर उद्योगक स्तरसँ उपर उठिक' वृहत् उद्योगक स्तर पर चलि गेल । मुदा मिथिलांचल तथा संलग्न क्षेत्र विश्व-बजारमे एक तरहसँ एकाधिकारात्मक वर्चस्व बनौनहि रहल । हाथसँ आ छोट-छोट फर्मा पर बोड़ा दीनबामे एहि क्षेत्रक महिलासभ बेशी पटु छलीह । विशेषक' राजवंशी, पालिया, भीम आ कच जातिक स्त्रीगणसभ पूर्णियाँ जिलाक किशनगंज इलाकामे बोड़ा बिनबामे सिद्धहस्त छलीह । सामान्यतया ई बोड़ा पाँच फीट नाम आ' साढ़े तीन फीट चारि फीट चाकर होइत छलैक । बोड़ासभ महानन्दा तटस्थित कुटी, रुपहा तथा दुलालगंज मण्डी आ' किशनगंज बजारमे खूब बिकाइत छल । ओतएसँ ई सभ देशभरिमे पठाओल जाइत छल । एकर विशेष प्रयोग अन्न, तमाकू, शोरा इत्यादिक लदौनीमे कएल जाइत छल । कलकत्ता, पटना, पचगर (पू. बं.). नदिया, ढाका इत्यादि एकर मुख्य आयातक छल । 19 म सदीक प्रारम्भमे करीब 25,000 रु. क बोड़ा कलकत्ता, 12000 रु. क पटना, तथा पचगरक लगपासमे लगभग 35000 रु. क बोड़ा निर्यात होइत छल ।[(20)] सन 1377 मे मात्र किशनगंजसँ 50 लाख रुपैयाक बोड़ा निर्यात भेल छल ।[21]

10. **कागज उद्योग**– कागजक उत्पादन आ उपयोगमे वृद्धि शैक्षणिक विकासक द्योतक होइत छैक । मिथिलांचलमे एहि गृह-उद्योगक प्राचीन परम्परा रहलैक अछि । 'कगदिया' नामक वर्ग-विशेष जे किशगंजक इलाकामे रहैत छल, से सुन्दर आ उत्कृष्ट कागज बनएबाक लेल विख्यात छल । सामान्यतथा ई पाटक लुगदी आ अन्य स्थानीय वस्तुसभहिक मिश्रणसँ बनाओल जाइत छल।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

ई दू प्रकारक होइत छल। एकटा 'मुनयासी' आ दोसर 'कोशता' जे पाटसँ बनैत छल। दुनूमे व्यवहारक दृष्टिएँ कानो अंतर नहि होइत छलैक। मूल आयातक गुणवत्ताक अंतर होइत छलैक। ई उद्योग अपना जमानाक अति सम्मानित उद्योग छल। एकर विक्रय स्थानीय बजारमे त' होइते छलैक, ई बहुत दूर-दूर धरि निर्यातो कएल जाइत छल। मात्र किशनगंजमे 1877 मे एहि उद्योगसँ करीब 30,000 परिवार जुड़ल छल।[22]

11. **लकड़ी वा काठक वस्तुक उद्योग** :– मिथिलामे कमर सारिक प्राचीन परम्परा रहलैक अछि। काठक वस्तु बनबएमे मिथिला देश-विदेशमे जानल जाइत छल। कमार जातिक लोक एहि काजमे विशिष्टता प्राप्त कएने छल। यद्यपि ई गृह-उद्योग सम्पूर्ण मिथिलांचलमे पसरल छल, मुदा खास-खास जगह खास-खास वस्तुक लेल विख्यात छल। जेना मुजफ्फरपुर पालकी आ' खड़खड़ियाक लेल आ चकलाग्राम (किशनगंज) अपन बैलगाड़ीक पहियाक लेल प्रसिद्ध छल। एतुक्का उक्खरि-समाठ आ ढेकी सेहो प्रसिद्ध छल। मधुबनीक पलंगड़ी आ बच्चाक झुलुआ नामी छल। तहिना सीतामढ़ीक छड़ी नामी छल।

12. **बाँस आ प्राकृतिक घासक वस्तुक उद्योग**:– मिथिलांचल मे बाँस आ घास यथा सिकी, मोथी, नरकट, साबे, मूँज इत्यादिक कतेको प्रकारक सुन्दर आ' कलात्मक वस्तुसभ बनैत छल आ ई गृह-उद्योग खूब विकसित छल। मिथिलांचलमे बँसबिट्टी वा बाँसक बन खूब छलैक। आबो छैक मुदा ओकर कलात्मक उपयोग अत्यल्प भए गेलैक अछि। जँ मिथिलांचलमे बाढ़ि आ भूकम्पक प्रकोप लागले रहैत छैक तँ एतुक्का लोक बेशी काल बाँसे आ माटिक भीतेबला घर बनबैत छल। ई सस्तो होइत छलैक आ सुविधगर सेहो। एकरा अतिरिक्त बाँसक आओरो अनेक उपयोगी वस्तुसभ बनैत छल। एक तरहेँ बाँस मिथिलांचलक गृह कार्यक अपरिहार्य अंग छल। ढाकी, पथिया, सूप, सुपती, कोनियाँ, चालनि, चँगेरा, डाला, पौती, बीअनि, बिटझब्बा इत्यादि सभटा बाँसेक बनैत छलैक आ खेत-खरिहानसँ लएक' घर-आँगन तक उपयोगमे अबैत छलैक। प्रायः एहि कार्यमे डोम जातिक लोक संलग्न रहैत छल। सीतामड़ी बाँसक चालनि, ढाकी तथा चँगेराक लेल प्रसिद्ध छल। अररिया सेहो बाँसक सुंदर आ गृह-उपयोगी वस्तुसभहिक लेल प्रसिद्ध छल। बाँसक अनेक वस्तु सभ गोँढ़ि जातिक लोक माछ पकड़बाक आ मारबाक लेल तैयार करैत छल–जेना सिरकी, सरैला, पही, टिहुकी, गाँज इत्यादि। आब ई सभ दुर्लभ।

एकरा अतिरिक्त मिथिलामे खूब पैघ-पैघ, सुन्दर आ' मोलायम, लोचपूर्ण, घास सभ भेटैत छलैक जाहिसँ पटिया, सितलपाटी, सोफ आदि विभिन्न रंगक मेलसँ बनाओल जाइत छलैक। ई समस्त मिथिलांचलमे बनाओल जाइत छल मुदा खास कए 'तिवार' आ 'गंगोट' जातिक लोक एहिमे विशिष्टता प्राप्त कएने छल। नाओ पर पटिया ओछाए ओहि पर अपन अन्न वा अन्य कोनो वस्तु सभ राखि व्यापारक निमित्त बाहर पठएबाक मिथिलामे बहुत प्राचीन परम्परा छलैक।[23] 1901 क जन गणनाक अनुसार एहि उद्योगसँ जुड़ल लोकक संख्या क्रमशः चम्पारनमे 4000, दरभंगामे 8000, मुंगेरमे 4000, पूर्णियाँमे 8000 आ भागलपुर मे करीब 7000 छल।

13. **लहठी आ चूड़ी उद्योग**– सिन्दूरे जकाँ मिथिलांचलीय सधवा स्त्रीक लेल लहठी आ चूड़ी सोहागक प्रतीक होइत छैक। तेँ परम्परागत रूपसँ ई उद्योग एतए बहुत पहिनहिँसँ विकसित भेल अछि। एहि कुटीर-उद्योगक मुख्य केन्द्र छल दरभंगा, लहेरियासराय, समस्तीपुर, कटिहार तथा भागलपुर। किछु पैघ गामसभ जेना सरिसो, पंडासराय, मंगरौनी, सौराठ आदि सेहो एकर खूब उत्पादन करैत छल। लहेरियागंज तथा नरहन (दुनू दरभंगा) उत्तम आ कलात्मक लहठीक लेल नामी छल। सामान्यतया लाह राँचीसँ आयात कएल जाइत छल। चूड़ीक उत्पादनक प्रक्रिया बड़ जटिल आ लम्बा होइत छलैक मुदा अंतिम उत्पादक सुन्दरता देखितहि बनैत छलैक। एहि उद्योगमे लागल लोकसभ बहुधा 'नाहेरि' कहबैत छल। बादमे मुसलमानो जातिक लोक एहिमे आबि गेल छल। एहि उत्पादक क्षेत्रीय आ बाह्य बजार खूब गहन आ अति विस्तृत छलैक। ई उद्योग सतत माँगमे बनल रहैत छल मुदा एहिमे उत्कृष्टता कम्मे लोककेँ भेटैत छलैक, किएक त' एकरा लेल उच्च-स्तरीय कला-कौशल आ दक्षताक आवश्यकता होइत छलैक। सौन्दर्यबोधक संग सिद्धहस्तता अनिवार्य छलैक जे एक्के संग भेटब कठिन। 1809-10 ई. क लगपासमे पूर्णियाँ जिलाक धमदाहामे चूड़ीगरक तीन टा परिवार रहैत छल जे ऊस माटी (अपरिष्कृत सोडा) सँ चूड़ि बनबैत छल।[24]

14. **चर्म उद्योग**:–गृह उद्योगक रूपमे समस्त मिथिलामे चामक कमाइ आ वस्तु निर्माण कएल जाइत छल।[(25)] ई एहि क्षेत्रक बहुत पुरान उद्योग अछि। पुरना समयमे ई उद्योग प्राथमिक तकनीक पर आधारित छल आ उत्पाद अनुत्कृष्ट होइत छलैक। जूता तँ ओहुना एहि क्षेत्रमे लोक कम्मे पहिरैत छल, पहिरैत छल बेशी खराम। मुदा चमड़ाक अन्य कतेको प्रयोग होइत छलैक। विशेष क' संगीतक उपकरण इत्यादिमे, यथा ढोल, मृदंग, पखाओज, नगाड़ा, डमरू, नाल, ढफ आ बादमे तबला आ ड्रम इत्यादि। चमड़ाक काज मुख्यतः चमार जातिक लोक करैत छल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आ सामान्यतया मरले पशु सभहिक खालक प्रयोग कएल जाइत छलैक। मध्यकालीन युगक बाद एहिमे किछु मुसलमान (दफाली आदि) तथा 'कुरल' जातिक लोक सेहो लागि गेल।(26) एकटा आओर जाति-विशेषक लोक जे 'देबगार' कहबैत छल, से विशेष रूपसँ चामक कुप्पा बनबैत छल। ई कुप्पा तेल, घी वा राब इत्यादि रखबाक लेल बड़ उपयुक्त होइत छलैक। एहिमे राखल वस्तु बहुत दिन धरि सुरक्षित रहैत छलैक। वस्तुतः ई बनाओल जाइत छल बड़दक चामसँ मुदा ई कहियो प्रत्यक्षतः कहल नहि जाइत छलैक किएक त' एहिसँ हिन्दूक धार्मिक भावनाकेँ ठेस लगितैक। कहल इएह जाइत छलैक जे ई महीसक चामसँ बनैत छैक। ई उद्योग स्वतंत्रताक बहुत पहिनहिँ समाप्त भए चुकल।

चाम सुखा-झरका कए तैयार करबाक काजमे सागरपुर (सकरी लग) ग्रामक कारीगर सभ बड़ कुशल मानल जाइत छल। द्वितीय विश्वयुद्ध तक ई उद्योग काफी विकसित छल। पूर्णियाँ, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, दलसिंगसराय आ पण्डौल इत्यादि एकर प्रमुख केन्द्र छल।

15. **बीड़ी उद्योग**– इहो मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आ पुरान उद्योग अछि। ई गरिबहाक सिगरेट थिक। ई उद्योग एहि क्षेत्रक हजारो लोककेँ आजीविका प्रदान करैत अछि। बीड़ी पूर्णतया मानवीय श्रमसँ बनैत अछि। एकटा तार-भट्ठी आ मिजराब सन अँगुर-चमची मात्र एकर उपकरण। बीड़ीक उत्कृष्टता कच्चा माल अर्थात् तमाकू, केन्दू-पत्ता आ मजदूरक निपुणता पर निर्भर करैत छैक। उत्पादनक मात्रा सेहो मजदूरक दक्षता पर निर्भर करैत छैक। एक टा दक्ष मजदूर दिन भरिमे 1000 तक बीड़ी बना सकैत अछि। यद्यपि मिथिलांचलमे स्वयं तमाकू खूब होइत छैक मुदा से मध्यम आ निम्न कोटिक। बेशी बीड़ी-उत्पादक तमाकू गुजरातसँ आ' केन्दू-पत्ता पलामू तथा सिंहभूमसँ मँगबैत छल। एहि उत्पादक बजार समस्त भारतमे छलैक आ' एखनो छैक। समस्तीपुरक बीड़ी-कारखाना तँ सभ दृष्टिएँ बहुत पैघ छलैक। ओहिमे चारि सएसँ बेशी लोक काज करैत छल।

16. **खाद्यान्न तैयारी उद्योग**– एहि उद्योगक अंतर्गत खाद्यान्न तथा तेलहन सेहो अबैत अछि। चाउर, दालि, मकइ, गहूम, चूड़ा आ सरिसो, तोड़ी, तीसी, तिल आदि तैयार करबाक एकाइ एहि उद्योगमे आबि जाइत छैक। जानल बात अछि जे धान मिथिलांचलक प्रमुख आ आधार अन्न अछि। स्वाभाविक रूपसँ एतए चाउर तैयार करबाक उद्योग परम्परागत ढंगसँ चलैत आबि रहलक अछि। प्रति पाँच गाम पर गाटेक छोट-पैघ चाउर मिल भेटिये जाएत। ई नेपालक सीमाक काते-कात बेसी सघन छल किएक त' नेपालोमे भारी मात्रामे धान होइत छलैक जे चोरा-नुका कए भारत पहुँचि जाइत छलैक। पुरना दरभंगा जिलामे ई छद्म-- व्यापार सामान्य आ अभ्यस्त रूपसँ कएल जाइत छल किएक त' ई जानि कए आश्चर्य होइत छैक जे यद्यपि दरभंगाक मुख्य खद्यान्न-उत्पादन सभ दिनसँ धाने रहलैक अछि तैयो निकट भूतमे कहियो ओ अपन जनसंख्याक आवश्यकताक जोअर धान उत्पादित नहि कए सकल अछि।[27] धानसँ चाउर तैयार करबाक 'ढेकी' सभ पहिने पूर्णतया शारीरिक श्रम पर निर्भर करैत छल जे व्यापक स्तर पर समस्त मिथिलांचलमे पसरल छल। बादमे ई बिजली आ डीजलसँ चलए लागल। तहिना पहिने आटा पिसबाक प्रयोजन होइत छलैक त' जाँत पर घरेमे पिसा जाइत छलैक। फेर छोट स्तर पर आटा चक्कीसभ गामे-गाम पसरल आ तकरा बाद लघु-स्तरीय उद्योग बनि गेल; कतेको आटा मिलसभहिक स्थापना भए गेल। एहि क्षेत्रमे तेल पेरबाक परम्परा सेहो बहुत दिनसँ चलि आबि रहल छैक। सरिसो तीसी तिल अण्डी इत्यादि एहि ठाम पर्याप्त मात्रामे उपजैत छलैक। तँ प्रायः प्रत्येक चाउर-मिलक संग वा आटा-चक्कीक संग तेल पेरबाक कोल्हु सेहो रहैत छलैक। पहिने परम्परागत रूपसँ ई काज तेलीसभ करैत छल। बादमे शक्तिक प्रयोगसँ सुविधा बढ़ि गेलैक आ बेशी काज मशीने करए लागल। 1901 ई. मे जनगणनाक अनुसार एहि व्यवसायमे लागल लोकक संख्या क्रमशः मुजफ्फपुरमे 15000, दरभंगामे 3000, पूर्णियाँमे 12000 आ भागलपुरमे करीब 3600 छलैक। एहि उत्पादक भारी मांग सतत बनल रहैत छैक–तहिँ एहि उद्योगक व्यापक विस्तार कएल जा सकैत छैक।

17. **घी, मक्खन आ खोआ इत्यादि दुग्धाधार उद्योग**– सर्वज्ञात अछि जे मैथिल भोजनभट्ट होइत अछि। जीहक पातर भेनाइ एतुक्का लोकक चारित्रिक विशेषता छैक। भोजनमे घी रहए, दूध, खोआ, छाल्ही, मलाइ इत्यादि रहए। दही त' अनिवार्ये आ सम्भव त' मधुर सेहो। घी, दही, मधुरक बिना त' मैथिलक भोजक कल्पने नहि कएल जा सकैत अछि। लोक काँहि काटि क' करत, करत धरि अवस्से। परम्पराक स्खलन एतहु भेलैक अछि मुदा भोजनक बेरमे ई एखनहु धरि बहुत किछु बाँचल छैक। यद्यपि आब पहिने जकाँ दुग्ध-उत्पादनक प्रचुरता नहि रहलैक अछि तैयो ई उद्योग एखन धरि बाँचल अछि आ नव परिवेशमे चलाओल जा रहल अछि। पहिने मिथिलांचलक प्रत्येक गाममे ई उद्योग गृह-एकाइ स्तर पर चलैत छल, भने ओकर व्यावसायिक प्रसार देखबामे नहि अबैत होइक।

18. **ताड़ आ' खजूर गुड़ उद्योग**– ताड़-खजूर गुड़ उद्योग मिथिलाक कुटीर उद्योगमे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छल। ताड़-गुड़ मध्यम आ' निम्नवर्गीय लोकमे खूब प्रचलित छल। समस्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलांचलमे हजारो गृह आ' कुटीर एकाइ एकर उत्पादनमे लागल रहैत छल। खाली दरभंगे जिल्ला सैकड़ो एकाइ छल जे ताइ-गुड़ उत्पादित करैत छल।[28] चीनी एहि उत्पादकेँ तेजी सँ प्रतिस्थापित कए देलक। 1950 क दशकसँ ई उद्योग तेजी सँ समाप्त भए रहल अछि। आब तँ मात्र स्वाद बदलबाक इच्छा सँ लोक एकर उपभोग करैत अछि।

19. **गुड़-खण्डसारी उद्योग**– ई मिथिलाक परम्परागत आ प्राचीन उद्योग अछि। कतेको लोक एखनहुँ चीनीक अपेक्षा एकरा पसिन्न करैत अछि। गुड़ खण्डसारीक उत्पादन समस्त मिथिलांचलमे भारी मात्रामे होइत छल। मधुबनी, दरभंगा, रहिका, लोहा, औंसी, झंझारपुर पूर्णियाँ, बनमनखी, कटिहार, धमदाहा इत्यादिमे एकर केन्द्र छलैक। अन्य कतेको उत्पाद जकाँ एकरो विनिमय वस्तु-विनिमय-प्रणालीक आधार पर होइत छलैक तेँ एकर व्यावसायिक लेखांकन कठिन, मुदा एतबा धरि अवस्से जे चीनीक आगमनसँ पूर्व एकर मिष्टान्न भोजन पर एकाधिकार छलैक। एखनहु एकर उत्पादन आ उपभोग पर्याप्त मात्रामे होइत छैक।

20. **मधु उद्योग**– मधुमाछी पोसबाक आ' मधु तैयार करबाक उद्योग मिथिलाक प्राचीनतम खाद्य आ' औषधि उद्योग अछि। प्राचीन आयुर्वेदमे मधुक कतेको गुण देखाओल गेल अछि आ' एहिमे प्रबल औषधीय गुण प्रमाणित कएल गेल अछि। अनिवार्यतः प्रत्येक वैदिक कर्मकाण्डमे एकर उपयोग होइते छल। बादमे एकर मुख्य केन्द्र दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, पूर्णियाँ, बनमनखी, रानीपतरा, कटिहार, भागलपुर, नाथनगर, रोसरा, सहरसा, मधेपुरा, दलसिंगसराय, राजनगर आदि बनि गेल। एहि उद्योगक विस्तार मिथिलांचलमे आधुनिक तकनीकक आधार पर कएल जा सकैत छैक, जकर बहुत सम्भावना छैक।

21. **टाली आ खपड़ा उद्योग**– मिथिलांचलमे एहि उद्योगक इतिहास बड़ प्राचीन छैक। माटिक बासन आ' अन्य उपकरणक संग खपड़ा नाम वस्तुक प्रयोग प्राचीनो कालमे होइत छलैक से आब मानल जा रहलैक अछि। ओना आधुनिको संदर्भमे एहि उद्योगक इतिहास कमसँ कम 400 वर्षक अवस्से छैक।[29] एहि इलाकाक बेशी घर बाँस आ' माटिक भीतबला होइत छलैक तेँ एहि पर खपड़े आ' टालीक प्रयोग होइत छलैक। पक्को मकान पर बेशी गोटा खपड़े कि टाली दैत छल। कंक्रीटक आगमनसँ एहि उद्योगकेँ आघात लगलैक–मुदा ब्रिटिश शासन कालमे टालीक व्यापक आ' कलात्मक प्रयोग कएल गेलासँ एहि उद्योग केँ पुनः सम्बल भेटलैक। एम्हर फेर किछु वर्षसँ सुन्दर घर सभ मे टालीक प्रयोग कएल जा रहलैक अछि। गृह-निर्माण-कलामे ई फेरसँ महत्वपूर्ण बनि गेल अछि। अस्तु, एहि उद्योगक महत्व एखनहु बनल छैक।

उपरोक्त उद्योगसभहिक अतिरिक्त आओरो कएकटा उद्योग छल जे कुटीर आ' लघु स्तर पर चलैत छल। किछु पैघ, किछु छोट, किछु महत्वपूर्ण, कछु सामान्य मुदा से सभ संक्षिप्त कालखण्डमे उठल आ' खसल या फेर बहुत निकट भूतमे प्रारम्भ भेल। सभटाक उल्लेख करब एतए सम्भव नहि।

आब बृहत् उद्योगक चर्चा आवश्यक। मिथिलांचलक ई पैघ उद्योगसभ एहि भ्रामक अवधारणाकेँ तोड़बक लेल पर्याप्त होएत जाहिसँ स्वतंत्र भारतक आर्थिक-नीति-निर्धारकलोकनि आ नियोजनकर्त्तासभ ग्रसित छथि। मिथिलांचल वा उत्तर बिहार सन औद्योगिक विकासक आ वर्चस्वितिाक कल्पनो कतेको विकसित क्षेत्र नहि कए सकैत अछि। एतए मात्र चारिटा बृहत् उद्योगक चर्चा उपरोक्त तथ्यकेँ प्रमाणित करबा लेल पर्याप्त होएत–(1) शोरा आ नोन उद्योग; (2) नील उद्योग; (3) जूट उद्योग आ (4) चीनी उद्योग। ई चारू उद्योग अपना-अपना समयमे अति महत्वपूर्ण उद्योग छल आ' एहि चारूमे मिथिलांचल अग्रणी छल। वस्त्रो उद्योगक क्षेत्रमे (विशेषतः सूती आ रेशमी) मिथिलांचल विश्व-बजार पर एकाधिकारात्मक वर्चस्व रखैत छल। चीनी तथा जूट उद्योगमे सेहो मिथिलाक स्थान अधिकारिक छलैक।

(1) **शोरा आ नोन उद्योग**– शोरा आ नील, ई दुनू एहि क्षेत्रक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग छल। एही क्षेत्रक नहि, तत्कालीन समस्त भारतवर्षक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग छल। मोटा-मोटी सम्पूर्ण उत्तर-बिहारक भू-खण्डे ओ प्रयोगशाला छल जतए ई शोरा तैयार होइत छल।[30] चिलीमे सोडियम नाइट्रेटक विशाल भण्डारक पता लगबाक पहिने एकर आपूर्त्ति पर एहि क्षेत्रक एकाधिकार-सन छलैक, जाहि पर यूरोप बारूदक (गन पाउडरक) लेल पूर्णतया निर्भर करैत छल।[31] तत्कालीन तकनीकमे बारूद वा गन पाउडर बनएबाक लेल शोरा अनिवार्य तत्व छलैक आ' एकर महत्व विश्व मानचित्र पर औपनिवेशिक-आधिपत्यक संदर्भमे बहुत बेशी छलैक, विशेषतः तखन जखन एकरा एहि राजनैतिक वर्चस्वक लेल आंग्लो-फ्रांसक दीर्घ-अवधीय युद्धक परिप्रेक्ष्यमे देखल जाए। "शोराक उत्पादन दीर्घ अवधीय आंग्लो-फ्रांस युद्धक परिप्रेक्ष्यमे अति-विशेष महत्वक छल आ संगहि एकर मूल्यमे भारी परिवर्त्तन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक जटिलताक अवधिमे व्यापक स्तर पर अनिश्चितता आ' अस्थिरता उत्पन्न कए देने छल।[32] लार्ड क्लाइव आ हेस्टिंग्स एहन व्यवस्था लागू कएलन्हि जकरा बादसँ एकर निर्माण आ विक्रय पर कम्पनीक सर्वाधिकार भए गेलैक। मुदा तकरा बहुत पहिनहिसँ कतेको यूरोपीय व्यवसायी एहि क्षेत्रमे अपन कारखाना बैसा चुकल छल आ एतुक्का स्थानीय उत्पादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'नोनियाँ' सभसँ कच्चा शोरा कीनि क' परिशोधित करबैत छल आ' विदेश निर्यात करैत छल। ओना विधिवत् रूपसँ ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी (डच) आ ईस्ट इण्डिया कम्पनी (ब्रिटिश) 'सिंघिया' मे एकर फैक्ट्री बनओलक।[33]

ई उद्योग 19म शताब्दीक प्रारम्भिक चरण धरि पूर्ण उठान पर छल। मुदा बादमे एकर ह्रास होबए लगलैक। एतावता जे 1897 मे आबि समस्त तिरहुतमे चारि टा यूरोपीय कारखाना बचि गेलैक। यूरोपक बजार सभमे शोराक मूल्यमे भारी कमीक कारण एकरा उघनाइ भार भए गेल छलैक। ताहि लेल यूरोपीय उद्यमी सभ फेरसँ एहि उद्योगकेँ 'नोनियाँ'' सभहिक हाथमे छोड़ि देलक। लगातार खराब मौसम आ कलकत्ता बजारक भयानक मंदीक कारण बहुत रास परिशोधक कारखाना बंद भए गेल। उत्पादनमे भयंकर कमी भए गेलैक–एते तक जे 1895-96 मे जे 64700 मोन छलैक से घटि क' 1904-05 मे 38000 मोन भए गलैक।[34] स्मरणीय जे सन 1792 मे कम्पनीकेँ एहि उत्पादसँ 178000 रुपैयाक शुद्ध लाभ भेल छलैक।[35] बिहारक समस्त (उत्तरे बिहारमे उपलब्ध) शोरा उत्पाद नवम्बर 1798 सँ अक्टूबर 1799 तक करीब 150000 मोन छलैक, जकर तत्कालीन मूल्य करीब 3,28000 रु. छलैक।[36] 1869-73 क बीच खाली चम्पारन जिलामे 4887 शोरा-गृह छल जाहिमे कुल 87961 मोन शोरा आ 27489 मोन नोन तैयार कएल जाइत छल। खाली चम्पारनमे 591 गोदाममे परिशोधित शोरा जमा कएल जाइत छल। तिरहुतमे कुल 6560 'नानफर' (शोरा-फक्ट्री) छलैक जाहिमे 22528 फिल्टर आ भट्ठी कार्यरत छलैक। 305 टा परिशोधक छलैक।[37] 1895-96 मे जखन कि ई उद्योग मरणासन्न छल, तखनो निम्न आँकड़ासभसँ पता चलैत छैक जे ई कत्तेक पैघ स्तरक उद्योग छल।

(1895-96)

क्र. सं.	जिला	शोराक उत्पादन (मोनमे)	नोनक उत्पादन (मोनमे)
1.	चम्पारण	70500	4000
2.	मुजफ्फरपुर	110000	5600
3.	दरभंगा	64700	2760
			(1904-05)
1.	चम्पारन	25000	2600
2.	मुजफ्फरपुर	69000	4500
3.	दरभंगा	38000	2910

पथरनोन तथा पारसी नोन एहि उत्पादक नीक आ सस्त स्थानापन्न बनि गेल छल आ प्रथम विश्वयुद्ध समय तक मिथिलांचलक ई अग्रणी उद्योग पूर्णतया समाप्त भए चुकल छल। गरीब आ' अति मेहनती नोनियाँ सभ जे एकर मूल उत्पादक छल से बिना कहियो एहि तथ्यकेँ बुझने जे ओ सभ ब्रिटिश साम्राज्यकेँ विश्व भरिमे अपन पताका फहरएबामे कतेक महत्वपूर्ण सहयोग कएने छल, एकदम बेरोजगार आ निरुपाय भए क' अन्यत्र आश्रय तकबाक लेल बाध्य भए गेल।

2. **नील उद्योग**– इहो उद्योग विश्व बजारमे मिथिलांचलक एकाधिकारात्मक प्रभुत्वक इतिहास कहैत अछि। मिथिलामे एकर प्रयोग आ' उत्पादनक जानकारी बहुत प्राचीन कालसँ रहलैक अछि। ओना एकर जानकारी प्राचीन ग्रीक वा रोमनसभकेँ सेहो छलैक (इण्डिगो-इण्डिकोन)। उत्तर बिहारमे पहिने एकर प्रयोग परम्परागत विधिसँ कएल जाइत छलैक। अंग्रेज सभ एकर उत्पादन-प्रणालीकेँ परिवर्त्तित केलक। 1785 ई. मे फ्रांसिस ग्रेण्डि नव प्रणालीसँ नील उत्पादन अपना खर्च पर शुरू कएलक।[38] 18म सदीक अंत धरि ई उद्योग जोर पकड़ि चुकल छल। दलसिंगसराय, तिवारा, जितवारपुर, आ कमतौलमे नील उत्पादन केन्द्र बनि चुकल छल। 4 फरबरी 1788क रिपोर्टमे कलक्टर कम्पनी बहादुरकेँ तिरहुतमे रहएबला बारह टा यूरोपियन व्यक्तिक सूची देने रहैक जाहिमे दस गोटा नीलक काज करैत छल।[39] 1793 मे नील-फैक्ट्रीक संख्या 9 छलैक आ 1803 मे 25 टा फैक्ट्री काज शुरू कए देने छल।[40] 1802 मे एकरा स्वतंत्र उद्योग घोषित कए देल गेलैक। यूरोपीय उद्यम जे चीनी आ' रेशमी उद्योगमे असफल भए चुकल छल से एहि उद्योगमे चमत्कारिक रूपसँ लाभ कमौलक। तत्कालीन समस्त औद्योगिक व्यवस्थे जेना नील उद्योग पर केन्द्रित भए गेल आ 19 म शताब्दीक प्रथम दशक धरि ई उद्योग विश्वक अग्रणी कृषि आधार उद्योगक रूपमे जानल जाए लागल छल।[41] अठारहम सदीक अंतिम चतुर्थांशमे एतए वेस्ट इण्डियन तरीकासँ नीलक उत्पादन शुरू कएल गेल आ देखतहिँ-देखितहिँ ई समस्त औद्योगिक जगत् केँ छापि लेलक। 1794 मे एकर खेती सम्पूर्ण तिरहुतमे मात्र 767 बीघा आ' 14 कट्ठा माने करीब 670 एकड़ भूमि पर होइत छलैक। 1804 मे कमसँ कम 33988 एकड़ पर एकर खेती होबए लागल छल।

एकर बहुत पहिने ईस्ट-इण्डिया कम्पनी आगरा, लाहौर, आ' अहमदाबादसँ नील मँगबत छल, उत्तर बिहार वा संलग्न बंगालसँ नहि। 1727 मे त' ई कम्पनीक व्यावसायिक सूचियो मे सँ हटा देल गेल छल।[42] मुदा 1727 क लग-पासमे ब्रिटिश उपनिवेश सभ वेस्ट इण्डीजमे नीलक उत्पादन छोड़ि क' बांग आ चीनीक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उत्पादन करए लागल छल । संगहि कम्पनीक नील आयात अमेरिकासँ होबए लागल छलैक ।[43] अमरीकी स्वतंत्रता संग्रामक कारण भारतीय नील उद्योगक भाग्योदय भेलैक । प्रयोगक स्तर पर कएक टा नील-केन्द्र खोलल गेल । नील-निर्यातक पहिल अनुबन्ध एकटा मिस्टर प्रिंसेपक संग सन 1779 मे कएल गेल छल ।[44] तकरा बाद ई उद्योग पाछाँ घूमि क' नहि तकलक । 1810 मे तिरहुतक कलक्टरक रिपोर्टक अनुसार "एक वर्षसँ दोसर वर्ष लगातार, जिला अकस्माते कहियो 10000 मोनसँ कम नील यूरोपमे निर्यात लेल कलकत्ता पठओलक अछि । .....इहो जे 30000 सँ 50000 लोक एहि फैक्ट्रीसभसँ आजीविका पबैत अछि आ' औसतन प्रत्येक फैक्ट्री करीब 25000 रु. सँ 30000 रु. प्रतिवर्ष मजूरीक रूपमे बँटैत अछि ।[45] ओहि रिपोर्टमे कहल गेल अछि जे नीलक खेतीमे प्रतिवर्ष कमसँ कम 6 सँ 7 लाख रुपैया खाली तिरहुतमे लगाओल जाइत छल । मुदा पहिल बेर 1828 ई. मे एहि उद्योगकेँ आपसी प्रतिस्पर्धाक कारण संकटक सामना करए पड़लैक ।

1850क अंत धरि मात्र तिरहुतमे 86 टा नील-फैक्ट्री कार्यरत छल आ चीनी उद्योगक प्रभुत्व अंततः समाप्त भए गेल छलैक। 1874 धरि 126 टा फैक्ट्री आ ओकर कृषिकार्य-क्षेत्र सक्रिय भए चुकल छल । कुल क्षेत्र करीब 100,000 एकड़ तक पहुँचि गेल छल । पण्डौलमे विश्वक सभसँ पैघ नील-प्रतिष्ठान छल जकर क्षेत्र 300 वर्ग माइलसँ बेशी छलैक । बादमे एकरा बाँटि देल गेलैक आ' एकर उत्तरी भाग दरभंगा-राज द्वारा कीनल गेल जाहिमे 19म सदीक अंत धरि नीलक खेती पूर्णरूपेण बन्द कए देल गेल ।[46] मुदा तावत धरि रैय्यत आ मालिकक बीच संघर्ष प्रारम्भ भए चुकल छल । ओना तँ सिपाही-क्रांतिक प्रभाव एहि इलाकामे यूरोपीय-व्यवसायीसमुदायक कर्मठता आ संगठनात्मक क्षमताक कारण विशेष नहि पड़ल मुदा तकरा बाद ई उद्योग क्रमशः विखण्डित होबए लागल । 19म शताब्दीक अंत धरि यद्यपि तिरहुतक प्रत्येक थानामे नील उद्योग सन्हिया गेल छल मुदा तकरा पहिनहिसँ एकर संक्रमण-काल शुरू भए गेल छलैक । कृत्रिम रंगक आगमनसँ गम्भीर आ असंतुलित प्रतियोगिता, खाद्यान्नक लगातार बढ़ैत दाम आ तद्जन्य भूमिक दाममे अभूतपूर्व वृद्धिक कारण एहि उद्योगकेँ गम्भीर आघात लगलैक । एहि प्राकृतिक रंगक मूल्यमे भारी कमी आबए लगलैक । बहुतो फैक्ट्रीकेँ अपन उत्पादन बंद करए पड़लैक वा अत्यल्प करए पड़लक । 'अंतिम-व्यवस्था'क समय एतए 52136 एकड़ वा कुल कृषिभूमिक 3% क्षेत्र नीलसँ जुड़ल छल। 28 टा मुख्य फैक्ट्री आ 36 टा कार्य-क्षेत्र छलैक। 1904 मे ई घटिक' 34000 एकड़ रहि गेल । 1906 मे ई क्षेत्र 28400 एकड़ बचि गेल छल ।[47]

1874-75 सँ 19 सदीक अंत धरि पण्डौल भारतक त' निश्चिते प्रायः विश्वक सभसँ पैघ नीलोत्पादक केन्द्र छल । तहिना पूर्णिया, चम्पारन, उत्तरी-भागलपुर, उत्तरी-मुंगेर (बेगूसराय) इत्यादिमे सेहो नील पूरा जोर पकड़ने छल । 1810 ई. धरि पूर्णियामे 77 टा नील फैक्ट्री खुलि चुकल छल जतए कुल 4019 मोन वार्षिक उत्पादन होइत छल । 1876 मे एतए 59 फैक्ट्री छल आ' 4667 सँ 4767 मोन धरि नील उत्पादन होइत छलैक । 81,077 बीघामे नीलक खेती होइत छलैक ।[48] उत्तर भागलपुर मे 10000 एकड़मे एकर खेती होइत छलैक आ इनामपट्टी मुख्य फैक्ट्री छल खाली बेगूसराय सबडिभीजनमे 1869 मे नीलक पाँच टा कोठी छलैक जतए 6400 सँ 8400 मजूर काज करैत छल तथा 1590 मोन नील तैयार भेल छलैक । 20500 बीघामे एकर खेती होइत छल आ 54500 पाउण्ड व्यय भेल छलैक । ज्ञातव्य जे 1869 नीलक दृष्टियेँ न्यूनवर्ष छल । 1875 मे मुंगेरक कलक्टरक रिपोर्टक अनुसार साधारण वर्षमे नील उत्पादन मँझौलमे 1800 मोन, बेगूसरायमे 300 मोन, भागलपुरमे 1000 मोन तथा बेगूसरायमे 600 मोन होइत छल ।

आर्थिक दृष्टिसँ ई मिथिलांचलक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्योग छल । 19म शताब्दीक अंत धरि समस्त मिथिलांचलक 300,000 एकड़ भूमिमे एकर खेती होइत छल आ मजूरी पर 60,00000 टाका व्यय कएल जाइत छल । नील उत्पादक व्यवसायीवर्ग समस्त क्षेत्र पर राजकुमार आ नवाब जकाँ शासन करैत छल ।[49] मुदा 19म सदीक अंतिम चरणसँ एहि महान उद्योगक अवनति प्रारम्भ भए गेल । आपसी कलह, खाद्यान्न तथा भूमिक बढ़ैत दाम आ' अंततः 1896 मे जर्मनीमे सस्त रंगक आविष्कार एहि उद्योगकेँ तोड़ि देलक। यद्यपि 1914 मे एहि उद्योगकेँ क्षणिक युद्धजन्य प्रोत्साहन भेटलैक मुदा से एकर अंतिम ऊर्ध्व-श्वास सिद्ध भेल। मिथिलांचलक ई महान् उद्योग चम्पारन-सत्याग्रहक प्रसव वेदना संग समाप्त भए गेल ।

3. **चीनी उद्योग**—भारतक एक प्राचीनतम उत्पाद चीनी 18म शताब्दीक प्रथमार्ध नक उत्तर बिहारक प्रमुख निर्यात-सामग्री रहल । 1756 ई. क बादो तक एकर वार्षिक निर्यात 50,000 मोन छलैक जे करीब 50% लाभ दैत छलैक ।[50] मुदा तकरा बादक तीन दशकमे उद्योगक तीव्र गतिसँ ह्रास भेलैक । बंगाल (बिहार, बंगाल, उड़ीसा) केँ चीनसँ, मनीला आ' जावासँ चीनी आयात करए पड़लैक । एहि समस्याक समाधानक लेल वेस्ट इण्डियन तरीकासँ चीनी उद्योगकेँ चलएबाक प्रयास कएल गेल। मुदा प्रायोगिके कालमे दुर्भाग्यसँ तत्त ने दिबाड़ लागि गेलैक जे सभटा प्रयोग छोड़ए पड़लैक ।[51] 1790 क आस-पास फेरसँ विचार

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भेलैक जे अन्य पूर्वीय, ब्रिटिश क्षेत्रमे निर्यातक लेल एहि पर सँ शुल्क हटा देल जाए। सएह कएल गेल। ताबत 1787-88 सँ पुनः चीनीक उत्पादनो बढ़ि गेल छलैक। चीनी फेरसँ विदेशी बजारमे प्रमुख निर्यात सामग्री बनि गेल। स्मरणीय जे बंगाल (संयुक्त)क उत्पादनकेँ मिथिलांचल व्यापक आ मुख्य रूपेँ समृद्ध करैत छल।''[52] एतए एकटा बात बहुत महत्वपूर्ण आ' ध्यान देबाजोग छैक जे लगभग एही समयमे अर्थात् 18म शताब्दीक अंतिम समयमे युनइटेड-किंगडममे चीनीक मूल्यमे अप्रत्याशित वृद्धि भेलैक। एकर मूल कारण छलैक चाहक उपभोगमे होबए बला अकल्पनीय वृद्धि। 1785 सँ ई समस्त बजारकेँ छापि लेने छल। भारतीय चीनीक मूल्यमे वृद्धिक दोसर कारण छलैक फ्रांसक उपनिवेश सेन्ट-डॉयनिगोसँ चीनी-निर्यातमे भारी कमी। 1784 मे इंगलैंडमे कम्पनीक कुल विक्रयमे चाहक मात्रा छलैक 99,37,243 पाउण्ड जे हटात् 1785मे बढ़ि क' 1,49,21,893 पाउण्ड भए गेलैक आ तकरा बाद प्रति वर्ष बढ़ितहिँ चलि गेलैक। संगहि बढ़ल चीनीक उपभोग आ' से प्रतिपूरित भेल बंगालक चीनीक आयातसँ। एहि संदर्भमे ई क्षेत्र विश्व बजारमे अग्रणी बनि गेल।

मिथिलांचल एखनहुँ अपन कुसियार उत्पादनक लेल प्रसिद्ध अछि। एतुक्का भूमि आ जलवायु कुसियार उत्पादनक हेतु उपयुक्त छैक। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, पूर्णियाँ सभ ठाम एकर उत्पादन व्यापक स्तर पर होइत छलैक। पहिने एहि क्षेत्रमे गुड़ खाण्डसारीक प्रसिद्ध उद्योग छलैक जे बादमे बहुत हद तक चीनी उद्योगमे परिवर्तित भए गेल। वस्तुतः एहि क्षेत्रमे चीनी उत्पादनक श्रेय डच लोकनिकेँ जाइत अछि। 19म शताब्दीक प्रथमार्धमे ई उद्योग खूब पल्लवित भेल छल, मुदा तकरा बाद नील उद्योगक उन्मत्त-प्रवाहमे दहा गेल। चीनियो उद्योग एकर अपवाद नहि। बहुत रास चीनी मिल की त' बन्द भए गेल वा फेर नील फैक्ट्रीमे बदलि गेल। ई प्रवृत्ति वर्तमान शताब्दीक प्रथम दशक तक बनल रहल जखन पुनः एक बेर चीनी उद्योग महत्व प्राप्त कएलक। नीलक खेती छोड़ि लोक फेर कुसियारक खेती करए लागल। नीलक फैक्ट्रीसभ जे पहिने कहियो चिनियेँक फैक्ट्री रहल छल आब फेर चीनी फैक्ट्रीमे बदलल जाए लागल। एहि सम्पूर्ण अवधिमे चीनी उद्योगकेँ बड़ खराब समय देखए पड़ल छलैक। चम्पारन जिलामे एकर केन्द्र बेतिया छलैक जतए छओ टा रिफाइनरी (परिशोधक) छलैक आ चौबीस टा गोला छलैक मुदा उत्पादन मात्र 14,000 मोन तक सीमित भए गेल छलैक जखन कि एही अवधि 1895-96 मे दरभंगा जिलाक मधुबनी सब-डिभिजनमे जतए ई उद्योग बेशी केंद्रित छल मात्र 32 टा रिफाइनरी बाँचल छलैक आ कुल उपादन 43000 मोन मात्र भेल छलैक जरक मूल्य करीब 430,000 रु. छलैक।[53] एही सब-डिवीजनमे भारतक सभसँ पैघ चीनी-मिल राघोपुर लग छलैक जे मिस्टर कास्टरक छल आ' जतए चीनीक संग खाद आ शराबो बनैत छल।[54]

वस्तुतः मिथिलांचलमे चीनी उद्योगकेँ पुनर्जीवित करबाक श्रेय इण्डिया डेवेलपमेन्ट कम्पनीकेँ जएबाक चाही जे 1900-01 मे ओटोर (वा अतहर) मे जे मुजफ्फरपुर जिलामे अछि आ' अगरैल नील फैक्ट्रीकेँ कुसियारक खेती आ चीनी उत्पदनक लेल किनलक। ई एकटा अत्यन्त जोखिम बला काज छल किएक त' तखन नील-युग छलैक आ' नील-धारासँ हठि क' चलनाइ स्वयं एकटा ऐतिहासिक घटना छल। एहि कम्पनीक प्रधान फैक्ट्री ओट्टोरमे खुजल आ दू टा शाखा क्रमशः सिरह (चम्पारन) आ बरहोगा (सारन) मे खोलल गेल। 1904-05 मे ओट्टोर फैक्ट्री 21,550 टन कुसियार पेड़ि क' 1812 टन चीनी आ' 588 टन राब तैयार कएलक। एहि कंपनीक सफलतासँ आशान्वित भए आनो कतेको उद्यमी आगू बढ़ल आ मिथिलाक चीनी उद्योग पुनः प्रगतिक पथ पर अग्रसर भेल। 1950 मे एहि क्षेत्रमे 15टा पैघ चीनी मिल छल। मिथिलाक चीनी उद्योगमे कुल 2,23,95,075 रु. क पूजी निवेशित छलैक आ 20,000 सँ बेशी लोककेँ रोजगार भेटल छलैक। मात्र कुसियारक विक्रयसँ एतुक्का कृषक सभकेँ लगभग 3,75,00,000 रु. भेटैत छलैक। खाली वर्ष 1949-53 मे 'सेस' क रूपमे बिहार सरकार बिहार फैक्ट्री सभ सँ 6 करोड़ रु. प्राप्त केने छल जाहि मे 46 लाख रु. प्रतिवर्ष खाली मिथिलाक फैक्ट्री सभसँ प्राप्त भेल छलैक। एहिमे विक्रय कर सम्मिलित नहि छलैक मुदा दुर्भाग्य जे तकरा बादो स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद एहि दिशामे सरकार कोनो ध्यान नहि देलक जखन कि मात्र दरभंगा जिलामे 1961-62 मे 40,000 सँ बेशी कुसियार उत्पादक परिवार छल।[55] सरकारी स्तर पर कुल आमदनीक मात्र 11% एहि उद्योग पर व्यय कएल गेल। एहि मूर्खता कि दुर्भावनाक की स्पष्टीकरण देल जा सकैत अछि ? उचित प्रोत्साहन, सुविधा तथा शीघ्र भुगतानक अभाव आ' कुव्यवस्थाक कारण कुसियारक उत्पादन क्रमहिँ कम होबए लागल आ' कुव्यवस्थाक कारण कुसियारक उत्पादन क्रमहिँ कम होबए लागल आ विश्वव्यापी माँगमे उत्तरोत्तर वृद्धिक बादो मिथिलांचलक ई महत्वपूर्ण उद्योग लगातार पतनोन्मुख भेल गेल। वर्तमान व्यवस्थामे मिथिलांचलीय चीनी उद्योग रुग्ण भेल मृत्युशय्या पर पड़ल अंतिम साँस गनबाक लेल बाध्य अछि। यद्यपि एकरा पुनजीर्वित आ संवर्धित करबा लेल बहुत व्यय आ' बहुत कठिन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

श्रमक प्रयोजन नहि, तथापि राजनैतिक इच्छाशक्तिक प्रयोजन त अछिये जकर स्वतंत्र भारतमे मिथिलांचलक संदर्भमे सर्वथा अभाव रहलैक अछि ।

4. **जूट उद्योग**– ई मिथिलांचलक एकटा महान् उद्योग छल जे विश्व भरिमे अपन डंका बजओने छल । 18म सदीक उत्तरार्ध आ 19म सदीक प्रारम्भिक चरणमे जूटं आ' जूट निर्मित वस्त्र आ' बोझ बंगालक (संयुक्त) प्रमुख उद्योग छल ।[56] प्रारम्भमे जूटकेँ हेम्प (सनपटुआ) बूझल जाइत छलैक । मुदा कलकत्ता बोटेनिकल गार्डेनक अधीक्षक मि. रौक्सवर्ग एहि दुनूमे भेद स्थापित कएलन्हि आ 23 जनवरी 1794 क' अपन पत्रमे गवर्नर जेनरलकेँ सूचित कएलन्हि ।[57] तत्काल एहि पर ध्यान देल गेल आ' ई उद्योग लगले समस्त पूर्वी भारतमे पल्लवित भए गेल । उत्तर बिहार एहिमे अग्रणी छल–विशेषतः पूर्णियाँ, कटिहार, सहरसा, किशनगंज वा कही त' कोशी महानन्दाक इलाका । एहि समस्त क्षेत्रमे भारी मात्रामे जूटक उत्पादन कएल जाए लागल । दरभंगोमे एकर पर्याप्त उत्पादन होबए लागल । ई उद्योग लगभग डेढ़ सए वर्ष धरि पूर्ण उधाम पर रहल आ' मिथिलांचल तथा पूर्वी बंगाल संयुक्त रूपसँ एकर उत्पादन पर एकाधिकारात्मक वर्चस्व बनओने रहल । विश्वयुद्धक कालमे ई उद्योग प्रत्यक्षतः आक्राश छूबि रहल छल । मिथिलांचलक भूमि आ जलवायु एकर उत्पादनक लेल सर्वथा उपयुक्त छल आ' एतुक्का जलकर, पोखरि, चभच्चा आ' धार सभ एकर तैयारीक लेल पर्याप्त व्यवस्था कए दैत छलैक । मिथिलांचलमे छोट-मोट त' सैकड़ो जूट मिल छल मुदा सही मानेमे विशाल मिल तीन टा छल– (i) कटिहार जूट मिल्स लि., कटिहार; (ii) मोतीलाल चमरिया जूट मिल्स, कटिहार; आ' (iii) रामेश्वर जूट मिल्स क. लि., मुक्तापुर । तेसर दरभंगामे छल आ' 1926 मे स्थापित कएल गेल छल आ' 1935 मे लिमिटेड कम्पनी बनि गेल छल । एहि मिलमे 1800 सँ बेशी मजूंर काज करैत छल । उपरोक्त मिलसभकेँ फारबिसगंज, अररिया, कटिहार, पूर्णियाँ, सहरसा, गुलाबबाग, किशनगंज, गोपालगंज, मधेपुरा इत्यादि सभ ठामसँ जूटक आपूर्ति होइत छलैक । एहि तीनू मिलमे संयुक्त रूपसँ करीब 10 लाख मोनसँ बेशी जूटक काज होइत छलैक । कटिहारक दुनू मिलमे करीब 11728 श्रमिक काज करैत छल ।[58] उपरोक्त तीन मिलमे करीब 1000 करघा छलैक । 1956 मे मात्र पूर्णियाँ जिलामे उपरोक्त दुनू मिलकेँ छोड़ि क' 28 टा मिल छलैक । विभाजनक बाद एहि उद्योगक खराब दिन प्रारम्भ भए गेलैक । मुदा एहि रुग्णावस्थाक बादो मिथिलांचलमे पर्याप्त जूट उत्पादन कएल जाइत छैक । 1985-86 मे जिलाक जूट उत्पादक क्षेत्रक विवरण निम्न अछि–

क्र. सं.	जिला (पुरना मान्य)	भूमि प्रयोग (एकड़मे)
1.	चम्पारन	2000 ,,
2.	मुजफ्फरपुर	2000 ,,
3.	दरभंगा	5000 ,,
4.	सहरसा	96000 ,,
5.	पूर्णियाँ	302000 ,,
6.	अन्यान्य क्षेत्र	18000 ,,
	कुल मिथिलांचलीय क्षेत्र	425000 एकड़

मिथिलामे जूटक वस्त्र बहुत प्राचीने कालसँ बनैत छल । पहिलुका समयमे जूटसँ खूब नीक कपड़ा बुनल जाइत छल, मुदा जँ ई वस्त्र खूब रंगीन नहि भ' पबैत छलैक, ई सूती वस्त्रसँ प्रतिस्थापित कए देल गेल । ओना जूटक दरी, कालीन लगातार मांगमे बनल रहल । बहुत हाल तक ई जूट उद्योग खूब नीक जकाँ चलैत रहल, मुदा देशक विभाजनसँ एकरा गम्भीर आघात लगलैक, किएक त' जूट उत्पादक भूमिक अधिकांश भाग पाकिस्तान (बांग्लादेश) मे चल गेलैक आ' फैक्ट्री सभ भारतमे रहि गेल । तकरा बाद आएल कृत्रिम वा पोलियेस्टर सिंथेटिक फाइबर जे एहि उद्योगक एक तरहेँ डाँड़े तोड़ि देलकैक । आब कलात्मक, सजावट आ सौन्दर्यबोधक वस्तुसभ छोड़ि क' (जे बृहत् उद्योगक स्तर पर सम्भव नहि अछि) एहि उत्पादक कोनो विशेष व्यापक उपादेयता नहि रहि गेलैक अछि । जूट मिलक उद्धारक बात मात्र एक टा राजनैतिक बतोड़ाबाजी बुझना जाइत छैक ।

उपरोक्त तथ्य सभसँ स्पष्ट होइत अछि जे वर्तमान शताब्दीक मध्य पूर्वार्ध धरि लाख पछुअएलाक बादो मिथिलांचल समृद्ध छल । लोककेँ रोजगार उपलब्ध छलैक । कृषिक त' बाते नहि, विश्व औद्योगिक मानचित्रमे एकर महत्वपूर्ण आ गौरवमय स्थान छलैक । विश्वक औद्योगिक इतिहासक विभिन्न मुदा शृंखलाबद्ध कालखंडमे मिथिलांचलक उद्योग सभ अपन प्रभुत्व आ मर्यादा कएक शताब्दी तक बना क' रखने छल । घोर आश्चर्य आ दुर्भाग्यक बात जे ओएह मिथिलांचल आइ एहन दुरवस्थामे पड़ल अछि, जे बरौनीक औद्योगिक केन्द्रकेँ छोड़ि समस्त मिथिलांचलमे उद्योगक नाम पर किछु टा नहि अछि । एहि दुरवस्थाक केतको कारण भए सकैत छैक । मुदा संगहि एहूमे कोनो संदेह नहि जे मिथिलांचलमे एखनुहँ अति द्रुत गतिसँ औद्योगिक विकास करबाक लेल यथेष्ट संसाधन उपलब्ध छैक आ' आर्थिक उच्चता-सुसम्पन्न होएबाक अतिरेक योग्यता प्राप्त

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

छैक, यद्यपि एहि दुनू बिन्दु पर चर्चा करब एतए अभीष्ट नहि । एखन त' एतबे जे विश्वक आर्थिक मानचित्रपर कोनो क्षेत्र-विशेषक संबंधमे एहन दुर्भाग्यपूर्ण विडम्बना प्राय: कतहु नहि भेटत।

संदर्भ

1. प्रबोध कु. झा–दी *इकॉनॉमिक्स ऑफ नार्थ बिहार–ए केस स्टडी;* भूमिका पृ. II.
2. के. एस. कारंथ–*फारवार्ड, कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला,* वी. के. मिश्र, पृष्ठ 5.
3. राधा कृष्ण चौधरी–*कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला,* ललित नारायण मिश्र कमेमोरेशन भॉल्यूम, बि. रि. सो. पृ. 469.
4. लक्ष्मण झा–*मिथिला विल राइज,* पृष्ठ 13 : तथा *हिस्ट्री ऑफ मिथिला,* जे. मिश्र, पृ. 83–84.
5. पी. सी. राय चौधरी–*दरभंगा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,* पृ. 8.2
6. इण्डस्ट्रियल इस्टेट रिपोर्ट, 1967. पृ. 119.
7. वि. सिंह–*मिथिलांचलक उद्योग ओ व्यापार,* पृ. 30, 31.
8. ओत्तहि, पृ. 45.
9. के. सी. अरोड़ा–*बंगाल हिस्ट्री ऑफ टेक्नीकल डेवेलपमेन्ट,* पृ. 68.
10. ज्योतिरीश्वर ठाकुर–*वर्णरत्नाकर,* पृ. 21.
11. बुकानन हैमिल्टन-*भागलपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,* पृ. 127.
12. वि. सिंह–पू. उ., पृ. 32.
13. पी. सी. महाजन–*डाइंग टेक्नीकल ऑफ रूरल इण्डिया,* पृ. 361.
14. बुकानन–*पूर्णियाँ रिपोर्ट,* पृ. 540.
15. पी. सी. आर. सी.–*द. डि. ग.,* पृ. 93.
16. बुकानन–*पूर्णिया रिपोर्ट,* पृ. 543,544.
17. वि. सिंह–पू. उ., पृ. 40.
18. बुकानन–*पूर्णिया रिपोर्ट,* पृ. 521,522.
19. हंटर–*एकाउण्ट ऑफ बंगाल,* XV, पृ. 354.
20. बुकानन–*पूर्णियाँ रिपोर्ट,* पृ. 545.
21. हंटर–पू. उ., पृ. 358.
22. ओतहि पृ. 358,359.
23. बुकानन–पू. *रि.,* पृ. 523,524.
24. ओतहि, पृ. 523.
25. *टेक्नो इकानामिक सर्वे ऑफ नार्थ बिहार,* पृ. 273.
26. बुकानन–पू. रि., (पू. उ.), पृ. 524.
27. पी. सी. आर. सी.–पू. उ., पृ. 246-247.
28. इण्डस्ट्रियल सर्वे रिपोर्ट, बिहार सरकार, 1961, पृ. 286.
29. हंटर–पू. उ., XV, पृ. 216.
30. ओ' मैली–*दरभंगा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,* 1907 दे.
31. पी. सी. आर. सी.–पू. उ., पृ. 220.
32. ओतहि, पृ. 220.
33. वि. सिंह–पू. उ., पृ. 53.
34. ओ' मैली–पू. उ., दे. पी. सी. आर. सी., पृ. 220.
35. रिपोर्ट, *बंगाल बोर्ड ऑफ ट्रेड एण्ड कामर्स,* मइ 1793.
36. ओतहि.
37. हंटर–पू. उ., पृ. 129.
38. ओ' मैली–मुजफ्फरपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ. ?
39. हंटर–पू. उ., भा. XIII, पृ. 96.
40. ओ' मैली–पू. उ., पृ. 238-39.
41. एस. एन. सिंह–*हिस्ट्री ऑफ तिरहुत,* पृ. 238-39.
42. जे. सी. सिन्हा–*इकॉनॉमिक एनेल्स ऑफ बंगाल,* पृ. 178.
43. ओतहि, पृ. 179.
44. विल्सन मिण्डेन–*हिस्ट्री ऑफ़ बिहार,* पृ. 311.
45. दे. पी. सी. आर. सी., पू. उ., आ' ओ' मैली–पू. उ., पृ. 759.
46. एस. एन. सिंह–पू. उ., पृ. 240.
47. ओ' मैली–दे. पी. सी. आर. सी., पृ. 761.
48. ओतहि, पृ. 127-30.
49. आर. के. चौधरी–*हिस्ट्री ऑफ बिहार,* पृ. 264.
50. मिलबुएन–ओरियेन्टल कॉमर्स II, पृ. 270.
51. ओतहि, पृ. 271.
52. पृ. 277.
53. ओ' मैली–पू. उ., पृ. 93.
54. परमेश्वर झा–*मिथिला तत्व विमर्श* (1949), पृ. 164.
55. पी. सी. आर. सी.–पू. उ., पृ. 229.
56. दत्त, के. के.–*स्टडीज इन द हिस्ट्री ऑफ बंगाल सूबा,* पृ. 460.
57. जे. सी. सिन्हा–शो. नि., 'जूट इन बंगाल', जे. ए. बी. एस. सिरीज, होम डि. पं. न. दि., XXVII, पृ. 152-53.
58. पी. सी. आर. सी.–पू. उ., पृ.-227.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उच्चतर शिक्षामे मैथिलीक प्रवेश ओ वर्त्तमान स्थिति

□ डा. श्री जगदीश मिश्र

हमरासँ जखन 'उच्चतर शिक्षामे मैथिलीक प्रवेश ओ वर्त्तमान स्थिति' पर लिखबाक लेल कहल गेल तँ स्मरण भए आएल पूर्णियाँक कला-भवनमे आयोजित विद्यापति-पर्व-समारोह। प्रायः ओ 1970 ई. छलैक। तत्कालीन केन्द्रीय मन्त्री स्व. ललित नारायण मिश्र दिल्लीसँ पूर्णियाँ आएल छलाह मात्र ओहि समारोहक उद्घाटन करबाक लेल। मैथिलीक प्रायः सभ साहित्यकार आमन्त्रित छलाह। तीन दिनक एहि समारोहकेँ अनेक सत्रमे आयोजत कएल गेल छल। तेसर दिनक पहिल सत्रमे विद्वान वक्तालोकनि मैथिलीक विकासक लेल अपन-अपन मन्तव्य उपस्थापित करैत गेलाह। एही क्रममे पूर्णियाँ जिलाक एक वृद्ध पण्डितजी ओही मंचसँ अपन यशोगान करैत कहलथिन्ह जे हुनके सत्प्रयासेँ 1917 ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश सम्भव भए सकल। सभास्थ उपस्थित सकल विद्वद्जन पण्डितजीक हार्दिक अभिनन्दन कएलैन्हि। समारोह पूर्ण सफल रहलैक।

किछु दिनक बाद विद्यापति-गोष्ठी, पूर्णियाँ एक गोट स्मारिकाक प्रकाशनक योजना बनओलक। विद्वान् लेखक लोकनिसँ आलेख माङल गेल। एही बीचमे एक वृद्ध अधिवक्ता महोदय हमरा अपन डेरा पर बजओलैन्हि। हम जखन हुनक डेरा पर गेलहुँ आ अपन परिचय देलिऐन्हि तँ ओ गद्-गद कण्ठेँ हमर स्वागत कएल। हुनक नाम छलैन्हि पं. ब्रजमोहन ठाकुर। छलाह तँ ओ अधिकक्ता किन्तु वार्द्धक्यक कारणेँ कचहरी नहि जाए सकैत छलाह। ओ कहलैन्हि जे शारीरिक अस्वस्थताक कारणेँ ओ विद्यापति-पर्व-समारोहमे सम्मिलित नहि भए सकलाह। ओ पुनः कहलैन्हि, "सुनल जे अमुक व्यक्ति कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक प्रसङ्ग भ्रामक कथासब कहि बाहबाही लुटलैन्हि। किन्तु हुनक गप्प नितान्त मिथ्या छैन्हि।" हम ठाकुरजीसँ अनुरोध कएलिऐन्हि "अपनेक जे मन्तव्य अछि से लिखिकए दए देल जाए जकरा हमरालोकनि स्मारिकामे प्रकाशित करबाए दैत छी जाहिसँ सत्यक उद्घाटन होएत ओ समस्त मैथिलीभाषी व्यक्ति जानि सकत जे सर्वप्रथम मिथिलामे नहि, विहारमे नहि, सुदूर बंगालक कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश कोना सम्भव भए सकल। पछाति पं. ब्रजमोहन ठाकुर महोदय एहि प्रसङ्ग विस्तारसँ लिखि आलेख हमरा लोकनिकेँ देलैन्हि जे विद्यापति-गोष्ठी, पूर्णियाँ द्वारा प्रकाशित 'कौशिकी' मे प्रकाशित भेल। ओ तखनहिँ हमरालोकनिकेँ यथार्थक ज्ञान भेल।

संक्षेपमे ओहि आलेखक सारांश इएह छल जे पं. ब्रजमोहन ठाकुरजीक भगीरथ-प्रयत्न, बनैली-नरेशक आर्थिक उदारता ओ सर आशुतोष मुखर्जीक भारतीय भाषाक विशेषतः मैथिलीक प्रति अनन्य अनुरागक कारणेँ कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश सम्भव भए सकल। ठाकुर जी लिखल अछि जे जखन ओ एहि कार्यक निमित्त समस्त मिथिलामे भ्रमण कए रहल छलाह तँ साधारण जनक तँ कथे कोन जे मिथिलेश पर्यन्त हुनका सहयोग नहि कएलथिन्ह। असहयोगक ई कथा सुनि सर आशुतोष मुखर्जी मिथिलेश पर जे व्यङ्ग्य कएने छथिन्ह से बड़ मार्मिक अछि। अस्तु, 1917 ई. मे सर्वप्रथम मैथिली भाषाकेँ ई सौभाग्य भेलैक जे ओ कोनहुँ विश्वविद्यालयक पाठ्य-क्रममे सम्मिलित कएल गेल। मैथिली स्वीकृत तँ भेल 1917 ई.मे, किन्तु पहिल बेरि छात्र लोकनि परीक्षा देलैन्हि 1919 ई. मे। कोइलख ग्राम निवासी पं. बबुआजी मिश्र एतहि मैथिलीक प्राध्यापक छलाह।

काशीस्थ मैथिल विद्वान्लोकनि हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक चेष्टा बहुतो दिनसँ कए रहल छलाह। ध्यातव्य थिक जे 'मिथिला मोद' एतहिसँ प्रकाशित होइत छल तथा मिथिला-मैथिल-मैथिलीक अभ्युत्थानक लेल सतत प्रयत्नशील छल। यद्यपि 'मोद' बीचमे बन्द भए गेल किन्तु मैथिलीक विकासक लेल उचित वातावरणक सृष्टि ओ कए चुकल छल। डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' 1930 ई. मे काशी पहुँचलाह तथा मैथिलीक उत्थानक लेल संघर्ष करए लगलाह। यद्यपि ओ छलाह छात्र किन्तु संगठनक अपूर्व दक्षता तथा संघर्षक अद्भुत क्षमता ओहू समयमे हुनकामे छलैन्हि। किरणजी तहिएसँ हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक लेल कृत उद्योगी बनलाह।

हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक प्रसङ्ग आचार्य आनन्द झा [अवकाशप्राप्त प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय] लिखैत छथि, "घटना तहियाक थीक जहिया पटना विश्वविद्यालहुँ मे मैथिलीक अध्ययन-अध्यापनक व्यवस्था नहि छल, महामना पं. मदनमोहन मालवीय जीवित छलाह, एक प्रतिष्ठित मैथिल शिष्ट-मंडल, जकर प्रवर्त्तक छलाह मिथिलाक प्रतिष्ठित वकील स्व. विद्यानन्द ठाकुर, उक्त महामनासँ एतदर्थ भेँट कएने छलाह जे हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पठन-पाठनक व्यवस्था हो। मालवीयजी केहन सप्रतिभ प्रत्युत्पन्नमति व्यक्ति छलाह ई कहबाक काज नहि। शिष्ट-मंडलक निवेदनक उत्तरमे झट द' अपन कथनक पुष्ट्यर्थ मैथिल कवि चन्दाझाक मैथिली

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रामायणक दू-एक पद्य सुनबैत कहलथिन्ह जे हमरा जनैत मैथिली हिन्दीहिक एक शैली मात्र थीक। कारण हिन्दीक ज्ञातोकेँ मैथिली बुझबामे असौकर्य नहि देखना जाइछ। तखन हुनक एहि कथनक प्रतिवाद मे उक्त शिष्ट मंडलक एक सदस्य तत्कालीन 'मिथिला मोद' मासिक पत्रक सम्पादक पं. श्री उपेन्द्रनाथ झा, एम. ए. ई पद्य पढ़ि सुनौलथिन्ह जे–

ई नेना अछि केहन उकाठी
उचकि पड़ाएल हमर फराठी।

ई सूनि महामना चुप्प भए गेलाह। रूपान्तरेँ उत्तर ई देलथिन्ह जे ई कार्य प्रचुर अर्थसाध्य अछि, अहाँलोकनि महाराज दरभंगासँ निवेदन करिऔन्ह। अर्थ-व्यवस्था भेने ई कार्य सम्भव हैत।''

डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' पं. प्रबोध नारायण चौधरी लिखित *बिछल फूलक* भूमिकामे लिखैत छथि–*''1930 ई. धरि हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलक कोनो संस्था नहि छल, ने मैथिलीएक कोनो चर्चा। 1930 ई. मे हम और प्रबोध बाबू ओतए पहुँचलहुँ। हम संगठनक सूत्रपात कैल अवश्य; परन्तु बिना हिनक सक्रिय सहयोगक सफल होयब कथमपि सम्भव नहि छल। मैथिलीक स्वीकृति तँ हिनके परिश्रमक परिणत फल बुझक चाही।...ओहि समयमे यदि ई नहि रहितथि वा तत्पर नहि होइतथि तँ मैथिलीक स्वीकृति कथमपि नहि होइत''।*

हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक ई प्रयत्न 1931 ई. मे प्रारम्भ भेल तथा 1933 ई. मे विश्वविद्यालयक पाठ्य-क्रममे मैथिलीकेँ एक स्वतन्त्र भाषाक रूपमे स्वीकृति भेटि गेलैक। 1935 ई. मे पहिले-पहिल हिन्दू विश्वविद्यालयक छात्रलोकनि मैथिलीमे परीक्षा दैत गेलाह। किरणजी पुनः लिखैत छथि *''1933 ई. मे सिनेटमे मैथिलीक स्वीकृतिक हेतु बहुत कोसिस कैने छलहुँ। परन्तु प्रस्ताव करबे म. म. श्री बालकृष्ण मिश्र आखिर समयमे अस्वीकार कए देलैन्हि।''* किन्तु डॉ. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' कहैत छथि जे जखन हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति भेटलैक तँ मैथिलीक प्रथम प्राध्यापक म. म. बालकृष्ण मिश्रे भेलाह। एहि प्रसङ्गक साक्ष्य हमरहु महामहोपाध्यायक पौत्रलोकनिक गृहसँ प्राप्त भेल अछि। महामना मालवीयजोक अनुरोधेँ महामहोपाध्याय जी विश्वविद्यालयमे मैथिली पढ़ाएब स्वीकार कए लेने छलथिन्ह।

कलकत्ता एवं हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक पश्चाते पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक आन्दोलन तीव्रतर होअए लागल। मुजफ्फरपुरक छात्र-संघ, मैथिली साहित्य-परिषद ओ अन्यो संस्था एवं व्यक्ति सभ एहि आन्दोलनक अग्रणी छलाह। किन्तु ध्यातव्य थिक जे मैथिली-आन्दोलन कहिओ जन-आन्दोलन नहि बनि सकल। एहि प्रसङ्ग महाकवि प्रो. तन्त्रनाथ झा लिखैत छथि *''तदर्थ प्रथम प्रयास एही छात्र-समितिक [मुजफ्फरपुरक छात्र-समिति] सदुद्योगेँ ओ श्री कविशेखरजी प्रभृति प्रभावशाली व्यक्तिक अनुरोधेँ स्व. प्रो. सुरेन्द्रनाथ मजुमदार शास्त्री कएने छलाह। यद्यपि हुनक प्रस्ताव अस्वीकृत भए गेल, तथापि पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृतिक इतिहासमे ई प्रयास स्मरणीय थिक।''*

यद्यपि मैथिल महासभाक कुप्रभावेँ मैथिलक परिधि अत्यधिक संकुचित भए गेल छल किन्तु तथापि किछु मातृभाषानुरागी उदारचेता विद्वान्लोकनि समय-समय पर मैथिलीक उन्नति-अभ्युत्थानक लेल सचेष्ट रहलाह। एहने एक शिक्षाविद् मुजफ्फरपुर ट्रेनिङ स्कूलक प्रधानाध्यापक ठाकुर सूर्यनारायण सिंह बाबू भोला लाल दास द्वारा सम्पादित ओ दरभंगासँ प्रकाशित *'भारती'* नामक पत्रिकामे *'मैथिलीक माँग'* शीर्षकसँ अपन मन्तव्य प्रकाशित करओने छलाह। मिथिलेश ओ प्रान्तीय शिक्षा-विभाग सँ निबन्धकार अनुरोध कएने छलथिन्ह जे एहन प्रयत्न कएल जएगबाक चाही जाहिसँ पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश सम्भव भए सकए।

एहि आन्दोलनक सफलताक लेल मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकासभ उचित वातावरणक निर्माण करबामे बड़ सहायक सिद्ध भेल। एहि क्रममे *मिथिला* तथा *भारतीक* नाम आदरपुरस्सर लेल जाइछ। मैथिली साहित्य परिषद सेहो एहि दिशामे प्रयत्नशील छल। बाबू भोला लाल दास एहि परिषदक मंत्री छलाह तथा पटना विश्वविदयालयमे मैथिलीक प्रवेशक लेल आन्दोलन चलाए रहल छलाह। किंतु पटना विश्वविद्यालयक सिनेटमे मैथिलीविरोधीक संख्या अधिक रहबाक कारणेँ हुनक ई प्रयत्न सफल नहि भए पबैत छल।

1924-25 ई. सँ जे आन्दोलन चलाओल जाइत छल ताहिमे आंशिक सफलता भेटलैक 1938 ई. मे। मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक सत्प्रयासेँ मैथिलीकेँ मैट्रिकमे ऐच्छिक विषयक रूपमे स्वीकृति भेटलैक। महाराजोक विरोध कम नहि भेलैन्हि, एतेक धरि जे हिनक प्रस्तावक अनुमोदनो कएनिहार केओ नहि भेटैत छलैन्हि। एहि प्रसङ्ग *मिथिला मोदक* नव उदगारमे प्रकाशित सम्पादकीय देखल जाए – *''सिनेटक गत अधिवेशनमे श्री 5 मान् मिथिलेश स्वयं एकर प्रस्ताव उपस्थित कैलन्हि।.....हम मोद परिवार दिशि सँ श्री 5मान् मिथिलेशकेँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छिऐन्ह कारण केवल हुनक व्यक्तित्वैक प्रभावसँ मैथिलीक स्वीकृति भेल अछि। **मैथिल जातिक उद्योगसँ नहि।**''*

साध्य आ आराध्य

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एही प्रसङ्ग डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' लिखैत छथि "संयोगवश कुमार गंगानन्द सिंह महाराज कामेश्वर सिंहक सचिवक पद पर पहुँचलाह। जनिका द्वारा भोला लाल दास महाराजकेँ पकड़ि सकलाह और पटना विश्वविद्यालय द्वारा 'मैथिली'केँ स्वतन्त्र साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वीकृत करबौलैन्हि।"

किन्तु महाराजाधिराजक ओहि प्रस्तावकेँ, जाहि द्वारा आइ. ए. सँलए एम. ए. धरिक कक्षामे मैथिलीक प्रवेश सम्भव होइत, विचारार्थ कला-संकाय ओ हिन्दी-समितिमे राखि सिनेट मैथिलीक प्रगतिगामी चरणकेँ अवरुद्ध करबाक प्रयत्न कएलक।

1841 ई. मे मधुवनीमे मैथिल महासभा आयोजित छलैक। ओही अवसर पर मैथिली साहित्य-परिषदक सेहो एकटा बैसार आयोजित कएल गेल। एही बैसारमे बाबू भोला लाल दास परिषदक मंत्रित्वक पद त्याग कएल तथा प्रो. तंत्रनाथ झा सर्वसम्मतिसँ परिषदक मंत्री बनाओल गेलाह। पटना विश्वविद्यालयक सिनेटमे मैथिलीक समर्थकक संख्या बढ़ए ताहि लेल प्रो. तन्त्रनाथ झा योजनासभ बनबए लगलाह। हिनक एहि अभियानमे प्रमुख सहयोगी छलथिन्ह डॉ. सुभद्र झा। ई लोकनि स्नातकसभक पंजीकरणक कार्य प्रारम्भ कएल। एहि प्रयासमे मिथिलेश सेहो सहयोग देलथिन्ह। राज दरभंगाक प्रत्येक स्नातक कर्मचारीक पंजीकरणक व्यय-भार मिथिलेश उठाओल। सर्व-प्रथम गंगाधर मिश्र मैथिली साहित्य-परिषदक समर्थनपर सिनेटक सदस्यताक लेल ठाढ़ भेलाह तँ विजयी नहि भए सकलाह। किन्तु 1944 ई. मे जखन मैथिल स्नातकक संख्या बढ़ि चुकल छल तखन मैथिली साहित्य परिषदक समर्थन पर अवध विहारी झा ओ कुमार तारानन्द सिंह सुगमतासँ सिनेटक सदस्य निर्वाचित भए गेलाह। ओही साल कुमार गंगानन्द सिंह, डॉ. सुभद्र झा ओ प्रो. तंत्रनाथ झा सेहो सिनेटक सदस्य निर्वाचित भेलाह। एही अवधिमे लक्ष्मीकान्त झाक प्रस्तावसँ आइ. ए. कक्षामे मैथिली सम्मिलित कए लेल गेल। ठीक एकर दुइ वर्षक अनन्तर डॉ. सुभद्र झाक प्रस्तावसँ बी. ए. कक्षा धरि मैथिलीक प्रवेश सम्भव भए सकल। 1947 ई. मे हिनकेलोकनिक सत्प्रयासेँ मैथिलीकेँ मातृभाषाक रूपमे स्वीकृति भेटि सकलैक।

रोचक अछि पटना विश्वविद्यालयक एम. ए. कक्षामे मैथिलीक प्रवेशक कथा। प्रो. तंत्रनाथ झा एहि हेतु सिनेटमे प्रस्ताव राखल। किन्तु हिन्दीक समर्थकलोकनि डेग-डेग पर मैथिलीक विकासक मार्गकेँ पूर्वहि जकाँ अवरुद्ध करैत रहलाह। प्रो. तत्रनाथ झाक एहि प्रस्तावकेँ पारित होएबासँ रोकबाक निमित्तेँ एहि प्रस्ताव पर विचार करबाक लेल एक समितिक गठन कए देल गेल। किन्तु ओहि समितिक बैसार होइतहिँ नहि छलैक। एहि समितिक सदस्य मनोनीत कएल गेल छलाह डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, कुमार गङ्गानन्द सिंह, राय ब्रजराज तथा डॉ. सुधाकर झा आदि। एवं प्रकारेँ ई प्रस्ताव त्रिशंकुवत् लटकल रहल। समय बितैत रहल। अन्ततः सिनेटक एक बैसारमे प्रो. तन्त्रनाथ झा विश्वविद्यालयक अधिकारीलोकनिपर मैथिलीक विरोधी ओ निष्क्रिय होएबाक आरोप बड़ सशक्त शब्देँ लगाओल। प्रो. तन्त्रनाथ झा सिण्डिकेटक सदस्य सेहो छलाह। फलस्वरूप सिनेटक अगिला बैसारमे हिनके प्रस्तावकेँ सिण्डिकेटक प्रस्ताव मानि ओ पारित कए देल गेल तथा पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश एम. ए. कक्षा धरिमे सम्भव भेल।

इतिहास साझी अछि जे मिथिलाक एक विस्तृत भूभाग सुगौली सन्धिक द्वारा नेपालकेँ अंगरेजलोकनि दए देने छलथिन्ह। फलतः मिथिलाक विभाजन भए गेल। मिथिलाक जे भूभाग नेपालकेँ देल गेल से नेपालक तराइ केर क्षेत्र थिक। फलतः पुराणकालीन मिथिलाक राजधानी जनकपुर पर्यन्त नेपालमे चल गेल। तराइवासी नेपालीलोकनिक मातृभाषा एखनहुँ मैथिली छैन्हि तथा मैथिलत्वक गरिमाकेँ ओलोकनि अक्षुण्ण रखने छथि। प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' लिखैत छथि- *"नेपालक मैथिली जगत्मे नवजागरणक आरम्भ काठमाण्डूक विद्यापति पर्वसँ मानल जाएत। एहि नवजागरणक विकास अ. ने. मैथिली साहित्य परिषदक स्थापनासँ भेल, जाहिसँ प्रेरणा ग्रहण कऽ राजविराजमे मैथिली साहित्य संस्थान, विराटनगरमे मैथिली साहित्य परिषद आदिक जन्म भेल। एहि सन्दर्भमे त्रिभुवन विश्वविद्यालयक किछु कॉलेजसभमे मैथिलीक पठन-पाठन, रेडिओ नेपालसँ मैथिली गीतक प्रसारण, ठाम-ठाम विद्यापति-पर्वक आयोजन, मैथिली पत्र-पत्रिका-पुस्तकादिक प्रकाशन नेपालक मैथिली जगतक साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतना ओ उपलब्धिक रूपमे स्मरणीय अछि, जकर उत्तरोत्तर विकासक सम्भावना बुझना जाइछ।"* डॉ. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' कहैत छथि जे त्रिभुवन विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेश 1958 ई. मे भेल। जहिना हिन्दू विश्वविद्यालयमे म. म. बालकृष्ण मिश्र मैथिली पढ़निहार छात्रकेँ पढ़ाए दैत छलथिन्ह तहिना एतए महाकवि पं. जीवनाथ झा मैथिलीक छात्रकेँ ताधरि पढ़बैत रहलाह जाधरि डॉ. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' क नियुक्ति नहि भए गेल।

विहारमे जखन अनेक नव-नव विश्वविद्यालयक स्थापना भेल तँ ओतए मैथिलीक प्रवेशमे कोनो विशेष कठिनता नहि भेलैक। सम्प्रति विहारक सात-आठ गोट विश्वविद्यालयमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिलीक पठन-पाठन चलि रहल अछि। एहि बीचमे विहारक लोक सेवा आयोगक प्रतियोगिता-परीक्षामे सेहो मैथिलीकेँ एक ऐच्छिक विषयक रूपमे मान्यता भेटलैक। साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रवेश भेल तथा मैथिली अकादमीक स्थापना कएल गेल।

किन्तु आइ स्थिति भिन्न अछि। किछुए वर्ष पूर्व मैट्रिकमे मातृभाषाक पदसँ मैथिली हटाए देल गेल ओ हमरालोकनि स्पन्दनहीन बनल रहलहुँ। विहार इन्टरमीटिएट कौन्सिलमे भाषाक अनिवार्य विषयक रूपमे मैथिलीक मन्यता छलैक। किन्तु खेदक विषय जे अनिवार्य भाषाक समूहसँ मैथिली निकालि देल गेल। हमरालोकनि एक दोसराक छिद्रान्वेषण करैत निष्क्रिय बनल रहलहुँ। विहार लोक सेवा आयोगक प्रतियोगिता परीक्षासँ मैथिली हटाओल गेल ओ हमरालोकनि कानमे तेल-तूर दए सुतले रहि गेलहुँ। मैथिली अकादमी शरशय्या पर पड़ल बाण-गंगाक प्रतीक्षा कए रहल अछि। हमरालोकनि मात्र अपन गोटीकेँ लाल करबामे अपस्याँत छी। गत तेरह-चौदह वर्षमे विहारक कोछुए विश्वविद्यालकमे मैथिलीक शिक्षकक नियुक्ति कएल गेल अछि। एहना स्थितिमे उपयोगितावादी एहि **युग**मे मैथिली पढ़निहार छात्रक संख्या जँ दिनानुदिन घटल जाए रहल अछि तँ स्वाभाविके।

एहि विषम परिस्थितिक जँ विश्लेषण करैत छी तँ सर्वप्रथम ध्यान केन्द्रित होइछ मैथिल महासभा पर। मैथिल ओ मैथिलीक जतेक अहित ई एक गोट संस्था कएलक प्रायः साम्राज्यवादी हिन्दीओक कोनो संस्था ओतेक अपकार नहि कएलक। मैथिली आन्दोलनकेँ जन-समर्थन कहिओ नहि भेटि सकलैक एही मैथिल महासभाक कारणेँ। मिथिलाक बहुसंख्यक लोक मिथिला मैथिलीसँ उदासीन भए गेल। एही कारणेँ मैथिलीकेँ जे कोनो उपलब्धि प्राप्त भेलैक तकर पाछाँ जनाधार नहि छलैक। व्यक्ति विशेष वा संस्थाविशेषक उद्योगेँ ओ उपलब्धिसभ भेटैत रहलैक। आइ मैथिलीकेँ डेग-डेग पर जखन अपमानित कएल जाए रहल अछि तँ बहुसंख्यक मैथिल निरपेक्ष बनल रहलाह अछि। तेँ हमरा जनैत सम्प्रति मैथिली-आन्दोलनक लेल जनाधार जुटाएब पहिल कर्तव्य होएबाक चाही।

मैथिल विद्वानक चमत्कार

□ डा. श्री उमारमण झा

मिथिलाक ई परम्परा रहल अछि जे एतुका विद्वान्लोकनि अपन शास्त्रचिन्तनक चमत्कारसँ जगत्केँ चकित करैत रहलाह। साहित्योक चिन्तनमे मैथिल विद्वान्लोकनि अग्रणी रहलाह अछि। एहि निबन्धमे संस्कृतक किछु श्लोकक चर्चा कए रहल छी जकर चमत्कार अदभुत अछि। यथा

वरीवरामास भातमक्षरी तिलपापरा।
एकरोटिकरमहीनग्रीवमगदारिका ॥१॥

ई श्लोक स्व. कविशेखरजीक मुखसँ सुनने रही। एकर अर्थ ओ एहि प्रकारसँ कहने रहथि :

अगदारिका = पर्वतपुत्री पार्वती
वरीवरामास= वरण कएलन्हि
भातम्= तेजकेँ (शिवरूप तेजकेँ)
अक्षरी = क्षयरहिता पार्वती
तिलपा = क्लेशसँ रक्षा करैवाली
परा = भगवती
ए= हे ! हे मित्र !
करोटिकरम् = हाथमे जनिका करोटि=कपालिका छन्हि।
अहीनग्रीवम् = गर्दनिमे जनिका सर्प छन्हि।

अर्थात् हे मित्र, पर्वतपुत्री पार्वती ओहि तेजकेँ प्राप्त केलन्हि। ओ पार्वती क्षयरहिता छथि, पाप तथा क्लेशसँ रक्षा करैत छथि। शिवजी केहेन छथि? जनिका हाथमे कपालिका छन्हि, जनिक गर्दनिमे सर्प छन्हि। ओहि शिवजीकेँ परा भगवती पार्वती वरण कएलन्हि।

सारमान ! वरारोहा नगेभागमनाहि या।
याहि नामगभागेन हारोरा वनमारसा ॥२॥

ई श्लोक यदि उल्टा पढ़ल जाइत अछि तँ ठीक वैह श्लोक बनि जाइत अछि। ई मिथिलेक चमत्कार थिक जे एहेन अदभुत श्लोकक रचना भेल अछि। एकर अर्थो विलक्षण अछि। कोनो दूती राधाकेँ गुप्त स्थान पर राखि श्रीकृष्णसँ कहैत अछि–हे **सारमान** ! (सार अर्थात् श्रेष्ठ चारू वेद जनिक प्रमाण अछि अर्थात् हे वेदप्रमाण !) हे **अगभाग** ! हे पर्वतसन भाग्यवला ! हे **इन** ! हे पते ! **वरारोहा**= उत्तमा सर्वोत्कृष्टा राधा, **वनम्**= वनमे, **आर**=आबि गेलि छथि। आब अहूँ **याहि**= जाउ। **अम्**= शीघ्रम्। शीघ्र जाउ विलम्ब नहि करू। केहेन राधा छथि तकर वर्णन एहि प्रकारसँ अछि– **नगेभागमना**= पर्वतसदृश विशाल हाथीक सन गमनवाली, गजगामिनी छथि। **अहिया** = अहिवत् याति अर्थात्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सर्पक समान चोरा कें चलैवाली **हारोरा**= हार उरसि यस्या =जनिक छाती पर हार छन्हि । हे कृष्ण **अहाँना** = पुरुष छी । अतएव शीघ्र जाउ । डर नहि करू।

अतएव एहि श्लोकक अर्थ भेल– हे सारमान ! हे भाग्यशाली कृष्ण ! गजगामिनी साँप सन चलनिहारि सर्वोत्कृष्टा राधा वनमे आबि गेलि छथि । अहाँ पुरुष छी तँ अहाँ आब जेबामे डर नहि करू । शीघ्र जाउ ।

एहि श्लोकक दोसरो प्रकारसँ अर्थ कएल गेल अछि। हे **अगभागे** ! हे अचल भाग्ययुक्ते राधे ! ओ पुरुष वनमे चल गेला। अहाँ **सारमा**= विहारशालिनी छी, **अनवरारोहा**= स्थूल नितम्बवाली छी। गजगामिनी साँपजकाँ चलि कें **अनहारोरा**= छाती पर माला पहिरि शीघ्र जाउ। एकर व्याख्या संस्कृतमे बड़ बढिया भए जाइत अछि । तथापि मैथिलीमे सेहो स्पष्ट कए देल अछि ।

तेसर एक अदभुत श्लोक पर विचार करू–

टानी टुकमुकशब्दं कृत्वा टानीटेन वटेन-वटा ।
हे वट हे वट सर्पट सर्पट कर्णविकर्ण वटे नवटा ॥३॥

एकरा पहिने तोड़ि कें पदच्छेद करैत छी–**टानि ईटुकम् उ क शब्दं कृत्वा, अटानि, इटा, इनवटे, अनवटा, हेवटहे, अवट् सर्पट सर्पट कर्ण विकर्ण वटे नवटा ॥**

हे **टानि** ! = हे राधे ! नवटा = स्वतन्त्रा, **ऊ** = (निश्चयेन), निश्चितरूपसँ **कशब्दं**= हम जाइत छी से कहि, **ईटुकम्**= लक्ष्मीकें प्राप्त केनिहार श्रीकृष्णक लग जेबाक इच्छा कएलन्हि । **वटे**–वटवृक्षक समीपमे, वटवृक्षक वनमे, **इटा**= जाइवाली, **सर्पट**= सापक पायर जकाँ चल अर्थात् पैर मारि वटक गाछ लग जाह। हे **वटहे** ! त्वं सर्पट = तोँ साँपक समान भयकारक जनसँ दूरे भए चुप्पेचाप ओतय जाह। फेर केओ सखी बजैत छथि–**कर्ण** = जलमिव आचार अर्थात् जल जकाँ आचरण करह। जेना जल उच्च नीच मार्गमे चलैत अछि तहिना तोँहू चोराइत उच्च नीच रास्ता बाटे चल जाह। फेर केओ बजलीह-हे **इनवटे** = पतिरुद्धे, पतिक लेल रोकल गेलि तोँ **विकर्ण**= कान रहित बहीर भए ककरो बात ने सून आ ने ककरो जवावे दैह ! सखी अपन कर्त्तव्य कहैत छथि **अनवटा**= सभक द्वारा रोकलो उत्तर हम **अटानि** = जाएब।

अर्थात् हे राधे ! लक्ष्मीपति कृष्णक लग जाय ओ स्वतन्त्रा आबि गेलि अछि। अहाँ वटवृक्षक समीप पैर मारि साप जकाँ चुप्पे चाप जाउ। अहाँ जल जकाँ ऊच्च नीच रास्ता लटे जाउ। हे सखि ! अहाँ ककरो बात पर ध्यान नहि दिअ। बहीर जकाँ जाउ। ताहि पर राधा बजलीह जे हम दोसराक द्वारा रोकलो उत्तर जाएब ।

एक अन्य मैथिल रचित श्लोक पर ध्यान दिऔक ।

किंवा बाला काञ्चनमाला
कस्याः पुत्री काञ्चनवत्याः ।
कस्मिन् लिखती ताड़ितपत्रे
किंवा लिखती क ख ग घ ॥४॥

एकर अर्थ एहि प्रकारसँ अछि । श्रीकृष्णसँ केओ कहैत अछि। हे क = हे कृष्ण ! **स्याः** = अहाँ प्रादुर्भूत होउ। किएक ? अहाँक संयोगक योग्या काञ्चनमाला नामक स्त्री जे काञ्चनवतीक पुत्री अछि ओ तोड़ल पत्र पर लिखैत अछि क ख ग घ ।

क = सूर्य, **ख** = शून्य अर्थात् सूर्यसँ शून्य प्रदोषकालमे, **ग** = गमन केनिहार अर्थात् साँझकें गेनिहार अहाँ **घ** = घंटा जकाँ शब्द कए दूरेसँ ओकरा बजाय लिऔक ।

एक अन्य श्लोक पर ध्यान देल जाय–

सा ते भवतु सुप्रीता मधुवाता ऋतायते ।
पुत्रप्र योऽ जनाभार्या तस्याद्यज्ञे वधोऽवधः ॥५॥

एतय ब्रह्माजीक उक्ति दक्षप्रजापतिक प्रति एहि प्रकारसँ अछि– हे **पुत्रप्र** = अर्थात् हे पुत्रप्रपूरक दक्ष प्रजापति ! हे **अज्जाभ** ! = हे शिवविद्वेषक ! ओ जे अवध्य (योऽवधः) शिव छथि हुनकासँ अहाँक यज्ञमे हिंसा (वध) होएत। आर्या (सती) शिवपत्नी, **आयते** = आबि रहलि छथि। ओ **मधुवाता**= मद्यमत्ता छथि। ओ शिवक भाग यज्ञमे नहि देखि प्रज्वलित भए गेलीह। ओ अहाँपर प्रसन्न होथु (सते भवतु सुप्रीता) ।

एहि श्लोकक आर चारि प्रकारसँ अर्थ कएल जाइत छैक।

एक व्याकरणक समस्या पण्डित आँखी झाक समक्ष राखल गेल छल–

असमस्य समस्यापि–भी-ह-मा-नू-ख्य-म-स्य-तः ।
कः काकोऽ कः सतो ब्रूहि–

एकर अर्थ एहि प्रकारसँ कएल गेल अछि– **असम**–1, 3, 5, 6 । भीमाख्यस्य = भीमक । **सम**-2, 4, 6, 8। **हनूमतः** = हनुमानक । पिता के छलाह ? कः काकोऽकः सतो ब्रूहि = ककार= रहितः काकः= आ अः, तकारसहितः तातः । तकार सहित आ अ : तातः बनैत अछि । एकर उत्तर वैयाकरण आँखी झा (कोइलखग्रामवासी) देने छलथिन्ह– **स्पर्शहीनो मुदा बिदुः** । स्पर्शवर्ण क सँ म तक होइत अछि। म द व द हटा देलासँ उ + आ +

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

इ + उः = वायुः बनैत अछि। अर्थात् भीम तथा हनुमान् क पिता वायु छलाह।

एक ज्यौतिषशास्त्रक चमत्कार एहि साहित्यिक श्लोकमे देखल जाय–

सन्तप्ता दशमध्वजातिगतिना संमूर्च्छिता निर्जले
तूर्य द्वादशवत् द्वितीय मतिमन् एकादशाभस्तनी।
सा षष्ठी कटिपञ्चमी च नवमी भ्रू सप्तमी वर्जिता,
प्राप्नोत्यष्टमवेदनां प्रथम हे तूर्णं तृतीयं कुरु॥

एहि श्लोकमे 12 राशिक उल्लेख करैत केओ अपन मित्र कें सम्बोधन करैत कहैत छथि–हे द्वितीय मतिमन्! अर्थात् दोसर राशि सन बुद्धिबाला! (वृष वरद सन बुद्धिवला), ओ स्त्री दशमध्वज मकरध्वज (दशम राशि मकर होइत अछि) अर्थात् कामदेवक गतिसँ सन्तप्ता अछि अर्थात् ओ कामविह्वला अछि। पुनः चतुर्थ राशि कर्क तथा द्वादश राशि मीन जकाँ विनु जलेँ यथा काँकोर तथा माछ छटपटाइत अछि तहिना छटपटाय रहल अछि। ओ षष्ठी कन्या थीक। कोनो वृद्धा नहि। ओकर कटि पंचम अर्थात् सिंह जकाँ छैक अर्थात् सिंह सन क्षीण कटिबाली ओ नायिका अछि। ओकर भ्रू नवम जकाँ अर्थात् धनुष जकाँ छैक। जकरा देखैत छैक तकरा हृदयमे छेद कए दैत छैक। सप्तमी ओकर वर्जित छैक। ओकरा (तुला) तुलना नहि कए सकैत छिऐक। अर्थात् ओ अतुलनीया अछि। ओकर आठम राशिक (वृश्चिकक) विच्छूक डंक जकाँ वेदना भए रहल छैक। अतएव हे प्रथम= मेष! मूर्ख! तोँ शीघ्र तेसर राशि मिथुनकेँ सफल कर अर्थात् ओहि काम विह्वलाक संग संभोग कर।

एहि प्रकारसँ हरेक शास्त्रक नीक-नीक चमत्कारपूर्ण संस्कृत श्लोकसब उपलब्ध होइत अछि। मैथिलक लिखल मिथिलाक्षर मे एकटा श्लोक हमरा प्राप्त भेल जे एहि प्रकारसँ अछि–

चैतन्यं सुमनं मनं मनमनं मानं मनं वामनम्,
विश्वासत्यसरं सरसरं सारं सरं वासरम्।
मायाजालधवं धवं धवधवं धावं धवं माधवम्,
वैकुण्ठाक्षभवं भवं भवभवं भावं भवं शाम्भवम्॥

मैथिल जीवनमे कुश

□ श्री सतीश चन्द्र झा

मिथिला नदीमातृक थिक। ओहि नदीसभक तीर-तीर पर हवन भेल अछि। एहिसँ ओ तीरभुक्ति कहौलक। प्रयललाघवसँ तीरभुक्ति आब तिरहुत भए गेल अछि। ओहि प्रदेशक भाषाक लिपि भेल तिरहुता जे मिथिलाक्षर कहल जाइछ।

मिथिलामे नदीक अतिरिक्त पोखरि, डबरा, खत्ता आदि विभिन्न प्रकारक छोट-पैघ जलाशय औखन अपेक्षाकृत पर्याप्त संख्यामे अछि। जलाशयक प्रचुरताक कारणेँ मिथिलाक भूमि शुष्क नहि, आर्द्र अछि। आर्द्र भूमिमे अनेक प्रकारक वनस्पति जनमैत आ बढ़ैत अछि। ओहि वनस्पतिमे एकटा अछि 'कुश'। कुशक दोसर नाम थिक दर्भ। मैथिलक जीवनमे एहि कुशक पर्याप्त महत्व अछि। एकोटा अनुष्ठान, यज्ञादि एहन नहि अछि जे बिना कुशक अनुष्ठित होइत हो। एहिसँ कुशक उपयोगिता प्रमाणित होइत अछि।

आयुर्वेदक अनुसार जन्मभूमिअहिमे उपजल ओषधि रोग निवारणमे विशेष क्षम होइत अछि। कुश मिथिलामे पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध अछि। तेँ मैथिलक हेतु रोग-निवारणक ई प्रचलित प्रभावकारी ओषधिक रूपमे व्यवहृत अछि। कुशक औषधीय उपयोगिताक प्रसंग ख्यात अछि– **दर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते** *बध्नामि आयुषे*। कुश तत्काल फल देबयवला महौषधि थिक। आयुवृद्धिक हेतु एकरा धारण करबाक चाही। अथर्ववेद (19/32/10) कुशक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करैत लिखैत अछि– *दर्भः परिपातु विश्वतः*। दर्भ चारू दिस पसरल वातावरणसँ सुरक्षित रखैत अछि। ओहिना जे बिना टूटल/खोटल अर्थात् अच्छिन्नपर्ण दर्भ पहिरि, कल्याणवित् होइत अछि, ओकर केश नहि झड़ैत छैक आ ने ओकर छातीमे आघात पहुँचैत छैक–

नास्य केशान् प्रवयन्ति नोरसिता ऽमाध्नते।
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दर्भेण शर्म्म यच्छति।

ऋग्वेदमे एक पवित्र घासक रूपमे दर्भक उल्लेख अछि। कुशमे ब्रह्मा, विष्णु आ महेशक वास होएबाक उल्लेख अछि। ओ दैवी गुणहिसँ जन्मैत अछि तथा दैविक वातावरणक लेल संरक्षणाक काज करैत अछि–दर्भेण देवजातेन दिविष्टम्भेन। देवी भागवत (11/20) मे कुशक उपयोग हेतु विधिक उल्लेख अछि–

द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते वामे त्रीन् आसने सकृत्।
उष्णीते शिखायाञ्च पादमूले सकृत् सकृत्॥

कुशक महत्ताक प्रतिपादन औषधशास्त्रेमे नहि महाकवि लोकनि सेहो कएने छथि। आदिकवि वाल्मीकि एक मुट्ठी कुश

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आ ओकर लवसँ ओहि दुनू नेनाक लेल भूतबाधा निवारणक रक्षाविधिक उपदेश देल–

कुशमुष्टिमुपादाय लवं चैव तु स द्विजः ।
वाल्मीकि : प्रददौ ताभ्यां रक्षां भूतविनाशिनीम् ।

बूढ़-पुरानलोकनिकेँ मन्त्राओल आ संस्कारित कुशसँ मार्जनक अनुरोध कएल । एहि प्रकारेँ जेठ नेनाकेँ नाम कुश आ छोट नेनाक नाम लव पड़ल । ओहिना जखन हरिणक खुरमे कुश भेसा ज़ाइत छैक आ कुश खयलासँ गलफर चँछा जाइत छैक तँ महाकवि कालिदासक शकुन्तला इंगुदीक तेलसँ ओकर सेवा करैत छथि ।

एतावता भारतीय वाङ्मयमे आदि कालहिसँ कुशक महत्व प्रतिपादित अछि । आब कनेक आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिसँ कुशक महत्वक समीक्षा कएल जाए । अथर्ववेद कहैत अछि–*दर्भः परियातु विश्वतः*–चारू दिस पसरल वातावरणकेँ दर्भ सुरक्षित रखैत अछि । कुश सिराह घास थिक । सिराह घास माटिकेँ पकड़ैत अछि । मिथिलामे निश्चिते बाढ़िक प्रकोप रहल होएत आ ई घास माटिकेँ रेतमे भासबासँ रोकैत होएत । दोसर ई जे कुशक अंग वस्त्र आ पर्णकुटी सेहो बनौल जाइत रहल होएत जे कुशक आसनक प्रयोग देखि अनुमान कए सकैत छी । एहि प्रकारेँ कुश चास-वासक रक्षके नहि शरीरोक कवचक काज करैत छल होएत ।

वैज्ञानिकलोकनिक भाषामे मनुष्यक देह (पिण्ड Mass) अन्तरिक्षमे व्याप्त विद्युत् प्रवाह क्षेत्र (Electrical Transmisson Zone) सँ आवेष्टित अछि । एकरा ईथर सेहो कहल जाइछ । देहक पाँच टा भाग, दूनू हाथ, टाँग आ माथ पर एकर प्रभाव पहिने आ बेसी होइत छैक । कुश विद्युत्प्रवाहक सुचालक नहि थिक । एहि हेतु एकर प्रयोगसँ विद्युत् प्रवाह बाधित भए जाइत छैक । तेँ हाथक आँगुरमे कुशक प्रयोग, गोबरक ठाओँ पर कुशक आसन पर पल्थी मारि बैसब, जाहिसँ शरीरक अंग पार्थिव विद्युत्-प्रवाहसँ प्रभावित नहि हो, आदि परंपरा अछि । देवीभागवतक पूर्वोक्त पाँती एही वैज्ञानिकताक द्योतक थिक । तेज बुद्धिक लोककेँ कुशाग्र मानव अथवा चाणक्य द्वारा कुश उपाड़बा लेल नियत तिथिकेँ छोड़ि आन तिथिकेँ कुशोत्पाटन करब कुशक महत्त्वेक परिचायक थिक । मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे कुशक महत्त्वकेँ देखिए कए कुश उपाड़ब एक पर्व भए गेल अछि । जेँ कि आन दिन अथवा समयमे कुशकेँ समूल उपाड़ब कठिन अछि तेँ भादवमे कुशोत्पाटन होइछ जखन माटि गील रहैत अछि । स्थानक नामकरणक सामान्यतः दू आधार होइछ । पहिल थिक प्रसिद्ध व्यक्तिक स्मृतिमे स्थानक नामकरण दोसर आ स्थानविशेषक आधार पर नामकरण । मिथिलाक जन-जीवन मे दर्भ (कुश) क सांस्कृतिक महत्व अछि । पर्याप्त मात्रामे दर्भ भेटैत अछि । तेँ ओहन स्थान जतय दर्भक महत्त्व अछि आ पर्याप्त मात्रामे उपजैत अछि, ओहि स्थानक नामकरण दरभंगा (दर्भ + अंग) कए देल गेल हो तँ असंभव नहि, युक्तिपूर्ण आ व्यावहारिक प्रतीत होइत अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा :

अर्चा ओ चर्चा

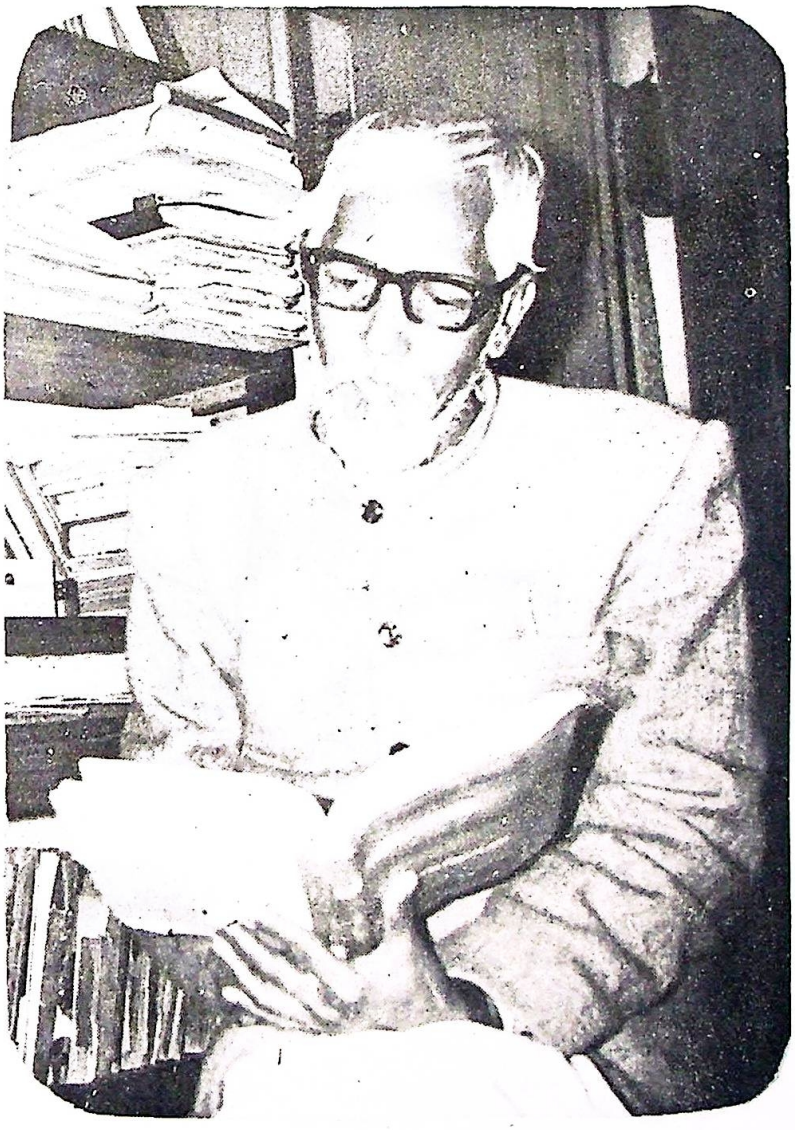

लोढ़ल फूल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

महावैयाकरण दीनबन्धु झा कृत

मिथिलाभाषाक प्रसङ्ग परामर्श

सम्पादक

डा. पण्डित श्री शशिनाथ झा

भूमिका

'मिथिला-भाषाक प्रसंग परामर्श' (1931 ई.) ओहि कालक निबन्ध थिक, जखन मैथिलीक मानक (परिनिष्ठित, सर्वमान्य एकरूपात्मक) स्वरूपक विचार-विमर्श प्रारम्भ भए गेल छल । ई समय 1930 ई. छल । 1926 ई. कें दरिभङ्गामे मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना भेल जाहिमे राजपण्डित बलदेव मिश्र ओ बाबू भोलालाल दास अग्रणी छलाह । एकर तेसर अधिवेशन तीनि वर्षक बाद घोघरडीहामे भेल, जकर अध्यक्षता म. म. उमेश मिश्र कएलनि (द्रष्टव्य-भाषणत्रयी, मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित) । परिषदक चतुर्थ अधिवेशन मुजफ्फरपुरमे भेल (1930 ई.), जाहिमे म. म. उमेश मिश्रहिक अध्यक्षतामे मैथिलीक शैलीनिर्धारणसमिति बनल । एहि समितिक सदस्य बाबू भोलालाल दास ओ पण्डित जीवनाथ राय आदि छलाह । एहिमे मिश्रजीक *'मैथिलीक लेखशैली'* ओ रायजीक *'शैलीनिर्धारण'* बादमे प्रकाशितो भेल । एकर छओ वर्षक बाद सर्वमान्य शैलीमे दरिभङ्गासँ प्रो. रमानाथ झाक सम्पादकत्वमे 'साहित्यपत्र' प्रकाशित भेल ।

पं. दीनबन्धु झा 1915 ई. सँ मैथिली व्याकरण (*विद्योतन*) बनाए रहल छलाह आ एकर प्रथम खण्ड 1925 ई. मे विजय प्रेस, मुजफ्फरपुरसँ छपओने छलाह जकर संशोधन पं० मुकुन्द झा कएने छलथिन्ह । चिरकालसँ मैथिलीक प्राचीन लेख, साहित्य ओ नवीन साहित्य तथा प्रचलित परिमार्जित रूपक अनुशीलन करैत अपन भाषाक एक-एक शब्दक प्रति हिनक विशिष्ट चिन्तन छल (द्रष्टव्य-*मिथिलाभाषाविद्योतनक* भूमिका) । परन्तु शैलीनिर्धारण-समितिमे अपन उपेक्षा देखि 'मिथिला-मिहिर' मे प्रकाशनार्थ प्रस्तुत निबन्ध लिखने छलाह, सम्भव थिक ओहिमे छपलो हो । बादमे समितिक प्रथम उपवेशन (दरिभङ्गा)-मे ई सदस्यक रूपमे बजाओल गेलाह ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत निबन्धक उपयोगिता मैथिली भाषाक हेतु एक ऐतिहासिक ओ स्वरूपरक्षात्मक होएत । ई निबन्धकारक तृतीय पुत्र पं. श्री माधव झासँ प्राप्त भेल । एहिसँ भाषातत्वान्वेषीजन परम लाभान्वित होएताह, तें प्रकाशमे अनबाक यत्न कएल अछि ।

– सम्पादक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाभाषाक प्रसङ्ग परामर्श

मिथिलाभाषाक प्रसङ्ग अनेक विषय विचारणीय अछि–

1. मिथिलाभाषा संस्कृतादिमूलक थिक किंवा स्वतन्त्र?
2. संस्कृतक एकक शब्दक स्थानमे जे-जे शब्द मिथिला मे व्यवहृत अछि से सकल शब्द शुद्ध मानल जाय वा नहि ? तात्पर्य ई जे ''याति'' एहि संस्कृत शब्दक स्थानमे 'जाइछ, जाइत अछ, जाइत अछि, जाइ अछि, जाइए', ''कर्त्तव्यम्'' एकरा स्थानमे 'करबाक चाही, करैक चाही, करक चाही', एवं अन्यान्य जे अनेक रूपेँ स्थानभेदेँ तथा उत्तम-मध्य-माधम-प्रयोक्तृपुरुष-भेदेँ व्यवहृत भय रहल अछि से सकल परिशुद्धतया ग्राह्य थीक, किं वा नहि ? यदि नहि तँ ओहि सबहि मध्य यत्- किञ्चित्केँ परिशुद्ध मानबामे की आधार ?
3. 'तखना' इत्यादि जे पूर्वकालमे व्यवहृत होइत छल से सब सम्प्रति ग्राह्य वा नहि ?
4. मिथिलाभाषामध्य बाजब तथा लेखमे कतहु भेद पड़बाक की कारण ? ओहि भेदकेँ दूर करबाक प्रयत्न कयल जाय वा नहि ?
5. मिथिलाभाषामे प्राचीन कविक व्यवहारानुसार पद्यानुरोधेँ किछु व्यत्यास सह्य करबाक थीक वा नहि ?
6. मिथिला भाषाक यथावद् विज्ञानार्थ मैथिली व्याकरण तथा कोषक आवश्यकता वा नहि ?
7. मिथिला भाषाक उन्नतिक कोन उपाय ?

एहि सातहु विषय पर क्रमशः हम अपन विचारपूर्वक सिद्धान्त प्रकट करैत छी । मैथिलमहोदयलोकनि कृपादृष्टिसँ पवित्र करथि । एहि मध्य जे असमञ्जस बुझना जाय से 'मिथिला-मिहिर' द्वारा अथवा स्वकीय पत्रद्वारा हमरा विदित कराओल जाय, जे विदित भेला पर ओहि सिद्धान्तक परिवर्त्तन करब अथवा युक्तिकदम्बसँ समर्थन करब ।

परामर्श 1

मिथिलाभाषा संस्कृतवत् स्वतन्त्र नहि थीक, किन्तु संस्कृतसँ बनाओल गेल । 'ग्राम', 'चक्र', 'पानीय' इत्यादि संस्कृत शब्दसँ 'गाम', 'चाक', 'पानि', इत्यादि मैथिल अपभ्रंश भेल; 'गाँव', 'चाक', 'पानी' प्रभृति हिन्दी भाषा सँ भेल हो से नहि, कारण जे हिन्दिओं भाषा स्वतन्त्र नहि थीक, ओहो संस्कृतहिसँ सिद्ध भेल अछि तेँ तन्मूल-मूलकत्व-सम्भवदशामे तन्मूलकत्व-कल्पना समुचित नहि । आओर प्राकृतादि अभठ तथा हिन्दी, बंगला, ब्रजभाषा प्रभृति बहुत भाषाक मूल संस्कृत थीक, तेँ एहू भाषाकेँ संस्कृतमूलकत्व-कल्पने उचित, अन्यथा भाषासबहि मध्य किञ्चित्सादृश्यवश यत्किञ्चिन्मूलतामे विनिगमनाविरह। प्राचीनत्व हेतु हिन्दीमे मूलता कही तँ मिथिलाभाषाक अप्राचीनताक निर्णय कथीसँ ? व्यापकता हेतु हिन्दीमे मूलता सेहो नहि, हेतु जे अपरकालमे हिन्दीकेँ राष्ट्रभाषा मानबाक कारण प्रसरण भेलहु उत्तर भारतवर्षमे बहुत देशमध्य हिन्दी भाषासँ आपामर व्यवहार नहि होइत अछि, अतएव व्यापकताभङ्ग । तस्मात् देशक भेदसँ भाषा भिन्न अवश्य होइत अछि ।

सर्वप्रथम देवसृष्टि भेल । ततःपर मानवक सृष्टि। देवतालोकनिक संस्कृते भाषा थिक, अतएव संस्कृत देववाणी कहबैत अछि । प्रथमतः सर्वत्र ओही भाषामे व्यवहार होइत छल । तत्तद्देशविभाग भेला पर तत्तद्देशक राजा तथा अन्यान्य प्रधानपुरुषलोकनिक इच्छानुसार संस्कृत भाषासँ तत्तद्देशभाषा विलक्षण बनाओल गेल, ते मिथिलाभाषाकेँ संस्कृतमूलकत्व उपपन्न होइछ । भारतवर्षहुमे कोनो एहन स्थान छल जाहि स्थानक निवासी जनसभाकेँ स्वभावतः अनायास 'त थ द ध' क स्थान 'ट ठ ड ढ' एहन उच्चारण भय जाइक, जेना सम्प्रति यूरोपमे, एवं नकारक स्थानमे णकारक, जेना मारवाड़मे । एवं प्रकार उच्चारणमे भेद बुझि तथा संस्कृतक व्यवहारमे अक्षमता देखि, संस्कृतसँ किछु वचन-विभक्त्यादिकेँ संक्षेप कय तदनुकूल प्राकृतभाषाक निवन्धन कएल गेल । एवंप्रकारेँ तन्मूलक मागध्यादि भाषा बनल देखि, जाहि-जाहि देशमे उच्चारणमे अक्षमता नहिओ छलैक, किन्तु ओकर अनुकरणक कुतूहल तथा अपना देशक भाषा अन्यान्य राष्ट्रसँ गुप्त करब तथा संक्षेप करब, इत्यादि अनेक भावनासँ प्रत्येक देशमे संस्कृतहिक आधार पर भाषासब बनाओल गेल ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

लङ्कामे हनुमानजी सीतासँ मानुषी भाषामे वार्तालाप कयलैन्हि । संस्कृतमे वार्तालाप कएने रावणक सन्देह सीताकेँ होइतैन्हि । एहि सुन्दरकाण्ड वाल्मीकीय रामायण सँ त्रेतहुमे संस्कृतान्य मानुषी भाषा छल, तकर निश्चय होइछ। परन्तु एकहु देशमध्य चिरकाल पाबि किछु परिवृत्त होइत भाषा रूपान्तरकेँ धारण करैत अछि। तेँ सत्ययुगादि मे एतादृश तत्तद्देशमे मातृभाषा नहिओ छल होयत, किन्तु युगान्तरहु मध्य तत्तद्देशीय संस्कृतान्य भाषा अवश्य छल। तस्मात् प्रचलित देशभाषा प्राय: समकक्ष थिक ।

जाहि समयमे मिथिलाभाषाक निर्माण होअय लागल ओहि समय प्राकृतादि सिद्ध छल, तेँ मिथिलाभाषानिर्माता अपभ्रंशरूपेँ संस्कृतहिकेँ गृहीत कय प्राकृतादि कतोक शब्द गृहीत कयलैन्हि । हेतु जे कतोक शब्दमे संस्कृत-प्राकृत मैथिली एहि तीनू भाषामे उत्तरोत्तर अनुच्छाया देखल जाइत अछि । यथा:–

सं. 'क्षण', प्रा. 'क्खण', मै. 'खन' । सं. 'मातृ', प्रा. 'माए' मै. 'माय' । इत्यादि एवं कतोक प्राकृतक शब्द 'घर' 'धी' इत्यादि अनुरूप मैथिलीमे गृहीत अछि । प्राकृतादि भाषा आधुनिक देशभाषापेक्षया गौरवान्वित अवश्य मन्तव्य थीक, हेतु जे ओहिमे स्वरूपेँ किंवा रूपान्तरेँ संस्कृतक सकल धातु ओ निखिल नाम तथा समस्त प्रत्यय परिगृहीत कयल अछि । इत्यादि अनेक कारणेँ ओ आधारयोग्य थीक, किन्तु ओकर छाया थोड़ शब्दमे देखल जाइत अछि, संस्कृतक अत्यधिकमे । तेँ प्रधानत: संस्कृते मैथिलीक मूल थीक । मिथिलाभाषाक प्रवर्त्तयिता जानि-बूझिकेँ विभक्ति (सुप्तिङ्) मे संस्कृतसँ सर्वथा भेद कय प्रकृति-भागमे क्वचित् तद्रूपता, क्वचित् छाया ओ क्वचित् सर्वथा विभिन्नरूपता मैथिलीमे गृहीत कयलैन्हि, ई अनुभवपथारूढ़ होइत अछि ।

एहि ठाम ककरो एहन मत अछि जे प्रयोग कयनिहार मे बुद्धिकृत अथवा उच्चारणकृत वैगुण्यक होयबाक कारणेँ संस्कृत भाषा नानारूपक धारण कय अपभ्रंश भेल, जानि-बूझिकेँ बनाओल गेल से नहि। एहिमे साधक–

दैवी वाग्व्यवकीर्णेयमशक्तैरभिधातृभि:।

एहि भर्तृहरि-कारिकाक ई अर्थ जे संस्कृत भाषाक यथावत् प्रयोगमे अशक्त जनता संस्कृत भाषाकेँ नानारूपेँ बाजय लागल, ताहिसँ अपभ्रंश सिद्ध भेल । तथा महाभाष्यकार कहलैन्हि जे *"अल्पीयांस: शब्दा:, बहवोऽपशब्दा:, एकैकस्य शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशा: तद्यथा गौरित्यस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशा:"।* अर्थात् संस्कृत शब्द थोड़ अछि, अपभ्रंश शब्द बहुत अछि, हेतु जे संस्कृतक एकक शब्दक अपभ्रंश बहुत अछि, यथा–'गौ:' एकर अपभ्रंश 'गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका' एवं प्रकार अनेक अछि । एहूसँ सिद्ध होइत अछि जे संस्कृत शब्द वक्तृभेदसँ नानारूपतापन्न भेल अछि । अतएव 'अपभ्रंश' (अभठ) कहबैत अछि । अभठ शब्द अपभ्रष्ट शब्दक अपभ्रंश थीक ।

एहि पर वक्तव्य ई जे प्रकृत्यंशमे कृत्रिम नानारूपता हमर सम्मते अछि, तेँ उक्त भाष्यसँ विरोध नहि, प्रत्युत ई भाष्य अशक्तिकृत नानारूपता नहि किन्तु ज्ञानकृत, एहिमे प्रमाण होइत अछि । कारण जे 'गो' शब्दक उच्चारणमे अशक्त जनता 'गोणी, गोपोतलिका' कोना बाजत ? तेँ प्रकृतिभागमे गोशब्दक किञ्चिदंशानुगत 'गावी गोणी गोता गोपोतलिका गौ गाय' ई सभ यदृच्छया समाविष्ट कयल गेल, अशक्तिसँ नहि, ई स्पष्ट होइत अछि । तखन अवशिष्ट रहल 'दैवीवाग्' इत्यादि हरिकारिकासँ विरोध, तकर परिहार ई जे एत्तद्देशीय-विलक्षणभाषाप्रवर्त्तकै र्व्यवकारिता दैवीवाक् साधुभिर्यथावद् व्यवहर्तुमक्षमैर्व्यवकीर्णा-नानारूपेणोच्चारिता उक्त कारिकाक ई अर्थ थीक । तात्पर्य ई जे राजादि प्रधानपुरुष जनताकेँ संस्कृत शब्देँ अनभिज्ञता-प्रयुक्त यथावद् व्यवहार करबामे अशक्त जानि, अन्यान्य सुगम रूपेँ शिक्षाक प्रचार कयलैन्हि, तेँ यथावत् संस्कृतमे अशक्त व्यवहर्त्ता संस्कृतकेँ नाना रूपेँ बाजय लागल । यथाश्रुतार्थपरत्वमे असम्भव देखल जाइछ, यथा मिथिलामे 'हरे:' एकरा उच्चारणमे अशक्त्या 'हरिक' ई कोना बाजय लागल ? बङ्गलामे 'हरिर' नागरमे 'हरिका', 'हरिकी', 'हरिके', देशान्तरमे 'हरिदी', 'हरिच्या' इत्यादि। ई सर्वथा असम्भव । तथा 'रामस्य' एकरा स्थानमे अशक्त्या 'रामस्' नहि बाजि 'रामक' ई बाजब कथमपि सम्भूत नहि । एवं 'रमाया:, हरे:, भानो:, मातु:' इत्यादिमे अशक्त्या 'क' शब्दहिक उच्चारण नितान्त अनुभवपथातीत। तेँ भाषामे मन्तव्य जे प्रत्ययांश नवीन कृत्रिम जोड़ल गेल, मैथिलीमे सर्वत्र षष्ठीक स्थानमे 'क', हिन्दीमे 'का, के, की', बंगलामे 'र' इत्यादि स्पष्ट बुझल जाइत अछि । एवं

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'जहास', 'अहसीत्', 'अहसत्' एहिमे सर्वत्र विभक्तिक स्थानमे 'अलाह', यथा 'बस' धातुक रूप 'बसलाह' ई अशक्त्या कोना भेल ?

तेँ मैथिलीमे सुगमताक अनुरोधेँ सर्वविध भूतकालमे तिङ् विभक्तिक स्थान अकर्मक धातुसँ 'अलाह' प्रत्यय ओ गमधातुभिन्न सकर्मक धातुसँ 'अलन्हि' वा 'अलैन्हि' प्रत्यय कृत्रिम योजित कयल गेल 'हँसलाह, बसलाह, देखलन्हि, देखलैन्हि, कहलन्हि, कहलैन्हि' इत्यादि । एवं विध अनेक प्रत्ययक उल्लेख हमर बनाओल *'मिथिला-भाषा-विद्योतन'* नामक मैथिली व्याकरणमे स्पष्ट अछि। तस्मात् ई हमर निर्णय जे मिथिलाभाषा संस्कृतक आधार पर बनाओल गेल; ताहिमे प्रकृतिभाग चारि प्रकारक:-

1. अनुरूप संस्कृत, यथा:– 'देह, वानर' इत्यादि ।
2. संस्कृतक छायापन्न, यथा:– 'आँग, माथ' इत्यादि ।
3. प्राकृतादिसिद्ध, यथा:– 'घर, धी' प्रभृति ।
4. प्राकृतादि छायापन्न, यथा:– 'खन, ओझा' इत्यादि ।

किन्तु प्रत्ययभाग सर्वथा नवीन:– 'केँ, सँ, क, मे' इत्यादि तथा 'अलाह, अलैन्हि' आदि योजित कयल गेल।

यदि प्राकृतादि भाषहुकेँ प्राचीनत्व नहि मानि मैथिली भाषाकेँ समकालारब्ध वा प्राचीन मानी तँ जेना प्राकृतभाषा संस्कृतसँ तहिना संस्कृत मात्रसँ मैथिलीक प्रवृत्तिमे उपपन्नता भय सकैछ । किन्तु हमर पक्ष जे सर्वप्रथम संस्कृते आर्यभाषा छल, तत:पश्चात् प्राकृतादि अवहठ भेल, तदनन्तर मैथिली प्रभृति भाषा सिद्ध भेल ।

संस्कृतभिन्न मानुषी भाषा प्राचीन थीक से रामायण सँ सिद्ध भेल । किन्तु ओहिसँ मिथिलाभाषा प्रभृति देशभाषाक सिद्धि नहि । कियेक तँ ओहि समय प्राकृते भाषा मानुषी छल होयत, प्राकृतभाषहिसँ हनुमान सीतासँ सम्भाषण कयने होथि सेहो सम्भव, तेँ देशभाषाकेँ प्राचीनत्व साधक प्रमाणान्तर उपन्यस्त करैत शिवधर्म मे गुरुक लक्षण अछि

संस्कृतैः प्राकृतैर्वाक्यैर्यः शिष्यमनुरूपतः ।
देशभाषाद्युपायैश्च बोधयेत्स गुरुः स्मृतः ॥

एकर अर्थ–संस्कृतभाषासँ तथा प्राकृतभाषासँ एवं देशभाषासँ ओ ग्रन्थनिर्माणद्वारा जे शिष्यकेँ धर्मादि बुझाबथि से गुरु थिकाह । मिथिला, मगध, वङ्ग तथा कलिङ्ग आदि देश थिक, तेँ मैथिली प्रभृति देशभाषा प्राचीन थीक, से एहिसँ प्रमाणित होइत अछि । एहिसँ इहो ध्वनित भेल जे सर्वोपरि संस्कृत, तदवर प्राकृत, ताहूसँ अवर मैथिली प्रभृति देशभाषा ।

परामर्श 2

आब द्वितीय विषयक विचार आरम्भ करैत छी । मातृभाषाक प्राय: एहन स्थिति अछि जे स्थानक अन्तर, वक्ताक भेद, ओ देशान्तरसम्बन्धसँ कतोक अंशमे भेद होइत अछि । तेँ मिथिलाभाषहु मध्य दक्षिणपश्चिमादि स्थानक भेदेँ किछु भेद आपतित अछि तथा उत्तममध्यमाधम प्रयोक्ताक भेदहुसँ कतोक शब्दमे भेद देखल जाइछ। एवं कोनो कारणवश मातृभूमिकेँ त्यागि देशान्तरमे निवास प्रयुक्तो भेद भय गेल अछि । यथा 'पठओलैन्हि', 'देखओलैन्हि' इत्यादिक स्थानमे 'पठयलैन्हि देखयलैन्हि' इत्यादिओ मिथिलाभाषाक कोनो भागमे व्यवहृत होइत अछि । 'एहिठाम' एकरा अवसर पर 'एहिठिमा', 'एहिठमा' एहनो बाजल जाइत अछि । 'जाइत अछि', 'देखैत अछि' इत्यादि बजबाक अवसर पर 'जाइ अछि', 'देखै अछि', 'जाइए', 'देखैए' इत्यादिओ बाजल जाइत अछि । 'जनैत अछि', 'बजैत अछि' इत्यादिक स्थानमे 'जानैत अछि', 'बाजैत अछि' इत्यादिओ क्वचित् स्थान मध्य व्यवहृत अछि । एवं प्रकार विभिन्नताप्राप्त जे जे शब्द अछि से निखिल शब्द शुद्धतया ग्राह्य करबाक चाही वा नहि, एहि प्रसंग प्रथम ई निर्णय कय लेबाक होयत जे मिथिलाभाषामे शुद्धता की थीक ? व्याकरणसँ सिद्धत्व रूप शुद्धता कही तँ से सम्प्रति सम्भव नहि । कारण जे मैथिलीक एतादृश व्याकरण ओ कोष प्रकाशित नहि भेल अछि, वा व्याकरणक अङ्गीकारसँ पूर्वहि एकर निर्णय होयब आवश्यक जे तदनुकूले व्याकरण तथा कोश ग्राह्य कयल जाय । आओर जाहि शब्दसँ सकल मैथिल सभ्य समाजकाँ अर्थज्ञान हो से शुद्ध थीक ? सेहो नहि । हेतु जे, से मानने 'बेरसपति', 'चौरचन' इत्यादि तोड़ल शब्दसँ सकलकेँ अर्थज्ञान होयबाक कारण व्यवहृत निखिल शब्दमे शुद्धताक आपत्ति । तेँ जाहि शब्दक सुनलाक उत्तर ककरहु अनौचित्य भान ओ वक्तृवैगुण्यक भावना नहि हो से शुद्ध थीक । अर्थात् अनौचित्यप्रयुक्त-वक्तृवैगुण्य-भावनानुद्भावकत्व रूप भाषाशब्दमे शुद्धता थीक । 'बेरसपति दिन चौरचन हैत'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

एहि शब्दक श्रवणोत्तर वा लेखदर्शनोत्तर सभ्य मैथिलवृन्दकाँ एहन भावना होइत अछि जे ई अनुचित थीक, एकर व्यवहर्त्ता मैथिलीमे निपुण नहि छथि । तस्मात् ओ वाक्य सर्वथा अशुद्ध थीक । 'वृहस्पति दिन चौठिचन्द्र होयत' एतादृशे शुद्ध थीक, हेतु जे मिथिलाभाषामे कतोक नाम संस्कृतक अनुरूप गृहीत भेल अछि, तेँ 'बृहस्पति' ऋकारयुक्ते संस्कृतानुरूप मैथिलीमे गृहीत थीक । 'ऋण देबामे वृत्त छथि' इत्यादि प्रयोग देखलासँ बुझल जाइत अछि जे ऋकारघटित संस्कृत नाम अविकृत ऋकारविशिष्टे मैथिलीमे प्रविष्ट अछि, तेँ 'बेरसपति' ई शब्द अधम ग्रंव्यवहततया त्याज्यहोयत । आओर चतुर्थीक अपभ्रंश प्राकृत द्वारा 'चौठि' थीक, 'चौर' नहि, अतः 'चौरचन' शब्द अनभिज्ञव्यवहततया कोषमे अदेय थीक । एवं 'भू' धातुक 'हो' ई रूप प्राकृतसँ गृहीत कयल गेल अछि । अतएव 'हैत' ई अशुद्ध बोध होइछ । उत्तमव्यक्तिसँ व्यवहृत 'होयत' अछि, जे वाक्य परिशुद्धतया देखाय चुकल छी ।

आब विचारणीय जे 'चाही' इत्यादिक योगमे 'करबाक', 'करैक', 'करक' इत्यादि व्यवहृत त्रिविधो शब्द शुद्ध थीक वा प्रथमे टा ? एहिमे ध्यान देबाक चाही जे करबाक चाही', 'जयबाक चाही' इत्यादिमे कोनहु मैथिल महाशयकाँ अनौचित्यक भान नहि होइत अछि । परन्तु 'करैक', 'करक' इत्यादमे कतोक मैथिलकाँ असामञ्जस्य बुझना जाइछ, तेँ उक्त साधुत्वलक्षणानुसार जे साधु होइत अछि सेह शुद्धतया ग्राह्य, द्वितीय, तृतीय त्याज्य थीक । हम ***भाषाविद्योतनहुँ*** मध्य एही अनुसार साधना देखाओल अछि, हेतु जे 'करै' वा 'कर' ई कतहु भाव बोधकत्वेन इष्ट नहि अछि । 'अब' प्रत्यय सर्वत्र 'करब', 'देखब' इत्यादि स्थानमे दृष्ट अछि । 'अब' प्रत्ययान्तकेँ विभक्तिसँ पूर्व वैकल्पिक दीर्घ होइत अछि, षष्ठीसँ पूर्व नित्य । अतएव 'करबासँ', 'करबसँ', 'करबामे,' 'करबमे' इत्यादि द्विविध रूप 'करबाक' ई एकविध रूप होइत अछि । अन्यथा 'करबक' इहो भय जाइत । हेत्वादि शब्दक योगमे षष्ठी विभक्ति मैथिलीमे होइत अछि, तथा 'अस्, भू, चाह' धातुक योगहुमे । तेँ 'करबाक हेतु', 'करबाक अछि', 'करबाक हो', 'करबाक चाही' इत्यादि सिद्ध भेल। 'करक', 'देखक' इत्यादि बजनिहारकाँ धातुक विषयमे अगत्या अबप्रत्ययान्त 'लेब', 'देब' सएह प्रयोक्तव्य होयतैन्हि, यथा 'देबक चाही', 'देबक चाही' । एहिठाम भेद एतबय जे ओ अकारक दीर्घोच्चारण नहि कय गुरूच्चारण मानताह । से एतादृश क्लेश निर्हेतु तथा सर्वसम्मत नहि । तस्मात् सर्वत्र 'करबाक', 'देखबाक', 'लेबाक', 'देबाक', इत्यादि शुद्ध थीक, 'करक', 'देखक', 'लेबक' इत्यादि नहि ।

आग्रहवश अत्यधिक परामर्श कयने 'करैक चाही' इत्यादि कदाच ग्राह्य भैओ सकत, किन्तु 'करक' इत्यादि त्याज्य होयत । एवं उक्त लक्षणानुसार 'जाइत अछि' इत्यादि शुद्ध थीक, 'जाइ अछि', 'जाइए' इत्यादि नहि । हेतु जे एहिमे अनौचित्यसँ कतोक मैथिलक मन खटकैत अछि।बजबामे शीघ्रताप्रयुक्त तकाररहितो कदाचित् उच्चरित भय जाइत अछि । किन्तु शनैः स्पष्टोच्चारणमे तकार-सहिते चाही । एतत्प्रसंग जे विचारणीय अछि तकर "बाजब ओ लेखमे भेद किंप्रयुक्त" ताहि विचारक अवसरमे विशेष रूपेँ वर्णन करब । प्रकृत वक्तव्य ई जे संस्कृत-मे 'हसति', 'हसन् अस्ति' एवं प्रकार द्विविध प्रयोग होइत अछि । मिथिलाभाषामे लाघवक अनुरोधेँ द्वितीयक अपभ्रंश रूप 'हँसैत अछि' एतादृश एकविधे ग्राह्य कयल गेल अछि । 'हसत्' एकर अपभ्रंश 'हँसैत', 'अस्ति' क 'अछि' । अतएव 'हँसैत अछि' एकरा शुद्धत्वमे केओ प्रतिपक्ष नहि । तखन 'हसत्' एकर 'हँसै' अपभ्रंश मानब साहस कहाओत । एहि प्रसङ्ग आओर देखू द्विरुक्तिमे 'हँसैत-हँसैत अयलाह' इत्यादि तकारसहिते सर्वसम्मत, तस्मात् 'हँसैत अछि', 'हँसैत रहत', 'हँसैत छल' इत्यादिअहुमे तकारसहिते रूप होयबाक चाही ।

एवं 'पठओलैन्हि' इत्यादि निर्विवाद शुद्ध थीक, 'पठएलैन्हि', 'सुनएलैन्हि', इत्यादि नहि । तथा 'भय', 'लय' 'जाय' इत्यादि शुद्ध थीक, 'भ', 'ल', 'ज' इत्यादि अशुद्ध , हेतु जे कतोक मैथिलक मन एहिमे खटकैत अछि । द्वितीय हेतु ई जे संस्कृतमे 'क्त्वा' प्रत्यय क्वचित् 'त्वा' रूपमे,क्वचित् 'य' रूपमे रहैत अछि, किन्तु प्रथम रूपमे क्लिष्टता जानि मिथिलाभाषामे कतहु द्वितीय रूपक आश्रयण कयल गेल, क्वचित् ओकरा स्थानमे इकारक, तेँ 'कय', 'जाय', 'पठाय' इत्यादि 'य' शब्दान्ते शुद्ध मन्तव्य। तथा 'जानैत छी, बाजैत छी' इत्यादि अशुद्ध थीक,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'जनैत छी, बजैत छी' इत्यादि शुद्ध । विचारणीय जे एहिमे क्वचित् विवाद पड़बाक सम्भव, तखन निर्णय कोना कयल जाय? एहि पर वक्तव्य जे एहि हेतु मिथिलामध्य एक भाग प्रधान केन्द्र मानल जाय, ओहि स्थानमे जे व्यवहार हो तकरा सबहि मैथिल शुद्ध मानैत जाइ । ताहि मे सर्वोत्कृष्ट श्रीमान् मिथिलेशक राजधानी तथा राजपरिवार लोकनिक आवासस्थान ओ हुनकालोकनिक जमाय, भागिन प्रभृति सम्बन्धिवर्गक निवास-भूमि ई स्थानसब मिथिलामध्य प्रधानस्थानत्वेन सबहुँकाँ मन्तव्य होयत । तें तत्रत्य विशिष्ट व्यक्तिकेँ आधार मानि विवाद दूर कर्त्तव्य अर्थात् तादृशस्थानस्थित विशिष्ट व्यक्तिसमूह जे बजैत होथि तकरा शुद्ध मानि विवाद तोड़ि लैत जाइ ।

परामर्श 3

मिथिला भाषाक प्रसङ्ग तृतीय विषय विचारणीय जे 'तखना' इत्यादि प्राचीन शब्द सम्प्रति ग्राह्य किंवा नहि ? अर्थात् 'तखना', 'पोत', 'बहि', 'बरि' इत्यादि शब्द जे सय वर्ष पूर्व बाजल जाइत छल से सम्प्रति मैथिलीकोषमे प्रवेशित कयल जाय वा नहि ? 'तत्क्षण' एकर अपभ्रंश 'तखन' शब्द, 'तत्क्षणात्' एकर अपभ्रंश 'तखना' शब्द, तें दूहु शब्द संगत । अतएव ओ दूनू शब्द व्यवहारमे आनल जाय अथवा पूर्वव्यवहृतक त्याग कयल जाय, ई विचारयोग्य थीक । एवं 'आज', 'आओब' 'पठाओब' इत्यादिक स्थान पर 'आइ', 'आय(ए)ब', 'पठाय(ए)ब' प्रचलित भय गेल अछि । ताहिमे प्राचीन शब्द शुद्ध मानल जाय वा आधुनिक, अथवा दूहू ? तथा राजमध्य देय द्रव्यक व्यवहार 'पोत' शब्दें होइत छल, एम्हर आबि 'माल' शब्दें ओकर व्यवहार प्रवृत्त भेल । तथा पूर्वव्यवहृत चारक आधारकाष्ठबोधक 'बरि' सम्प्रति 'बरी' रूपें प्रचलित भय गेल अछि, एवं पूर्वकालमे कोनो शब्द 'बहि' कहबैत छल जे सम्प्रति 'बहिया' प्रसिद्ध भय गेल । एवंविध प्राचीन शब्द मैथिलीकोषमे संग्राह्य वा नहि ?

एहि प्रसङ्ग हमर मत जे जाहि प्राचीन शब्दक प्रयोग उत्तम लोकसमाज वा लेखक मे व्यवहारमे अबैत अछि से ग्राह्य कयल जाय । किन्तु आइ-काल्हि जाहि शब्दक व्यवहार उठि गेल से अग्राह्य थीक । यथा 'तखना' शब्दक व्यवहार सम्प्रति सर्वत्र हटि गेल, तें ओ त्याज्य थीक । 'आज', 'आओब', 'पठाओब' इत्यादि प्राचीन शब्द श्रोत्रियसमाजमध्य निमन्त्रणादिपत्रमे सम्प्रतिओ व्यवहृत भय रहल अछि, तें ई सब संगृहीत कयल जाय ओ 'आय(ए)ब' इत्यादि जकर व्यवहार सम्प्रति सर्वत्र भय रहल अछि से रहबे करय । एवं 'पोत' शब्दक प्रयोग क्वचित् वृद्धलोकनि तथा प्रतिष्ठित स्त्रीगण कय रहल छथि, तें ओहो संग्रहीतव्य होयत । हेत्वन्तर, ओकरा स्थान पर जे पर्याय प्रचलित भेल अछि से अग्राह्य, कारण जे ओ भाषान्तर थीक, 'बहि', 'बरि', 'डोरि' इत्यादि शब्द योग्य व्यक्तिक व्यवहारसँ च्युत होयबाक कारण अग्राह्य थीक। ओकर स्थानमे 'बही', 'बरी', 'डोरी' इत्यादि जे व्यवहृत भय गेल अछि सएह ग्राह्य । केवल स्त्रीकेशबन्धक सूत्रमात्रमे 'डोरि' शब्द प्रचलित अछि, से तादृश विशेष बोधकतया ग्राह्य रहओ । 'जैसन', 'तैसन' इत्यादि आधुनिक शिष्ट-वर्गक व्यवहारसँ हटि जयबाक कारण त्याज्य थीक। एहि प्रकारें अन्यान्यो पूर्वकालिक पत्रमे ओ गीतादिमे उपलब्ध अछि, ताहि प्रसङ्ग निर्णय कय लेबाक होयत ।

एहिठाम ककरो एहन मत अछि जे जतेक शब्द मिलि जाय, ततेक उत्तम, ई भाषाक विकास थीक, तें जहाँ धरि भय सकय शब्दक संग्रहे करबाक चाही, त्याग नहि। एहि पर वक्तव्य जे विना व्यवस्थें भाषा छिन्न-भिन्न भय जायत । बन्धन नहि रहने 'एनी', 'ओनी' आदि तथा हिन्दीमात्रव्यवस्थित 'भेज, निकाल, खोना, चुनना' इत्यादि धातु सेहो ग्राह्य होयत । इष्टापत्ति कयने 'बैठब' इत्यादि मैथिलीमे शुद्ध मानय पड़त । तकरा इष्ट मानने 'ढोइत छी' इत्यादियो शुद्ध मानय पड़त । तकरे नाम भाषाकेँ छिन्न-भिन्न करब थीक । तस्मात् भाषाकेँ परस्पर शब्दक मेल कय संकर करब नहि उचित । स्वकीय मूलभूत संस्कृत शब्दक पुञ्जसँ प्रसिद्ध शब्दवृन्दकेँ मैथिलीमे गृहीत कयले जाइत अछि । ताहीसँ मिथिलाभाषाक विकास करब उचित । ओ भाषाक उन्नतिरूप विकासक अन्यान्यो कारणसभ अछि । यथा, ओहि भाषामे उत्तम काव्य, नाटक, उपन्यासादिक बाहुल्य, तथा पत्र-पत्रिकाक प्रचार ओ राजकीय परीक्षामे ग्रहण, उपयुक्त ग्रन्थक मुद्रणक हेतु श्रीमान्लोकनिसँ द्रव्यसाहाय्य, विशिष्ट ग्रन्थनिर्माताकेँ पुरस्कार देब इत्यादि । एहि प्रसंगमे हम आगाँ विशेष रूपें वर्णन करब । प्रकृतमे वक्तव्य जे पूर्व यवनराज्य समयमे यावनी भाषाक व्यासंगसँ ओकर बहुत शब्द मिथिला-भाषामे मिश्रित भय चुकल अछि जे दोष थीक । ततःपर इंगलिश भाषाक आग्रेड़नवश ओकरो कतोक शब्द आबि रहल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अछि तथा हिन्दी भाषाक वासनासँ कतोक हिन्दिओ शब्द लेखमे प्रवेशित भय रहल अछि । हमरा विचारेँ एहिसँ ई भाषा व्यवस्थाच्युत भय अधःपतित होयत । तस्मात् हमरा लोकनिकाँ उचित होयत जे नीरक्षीरविवेकमे हंसवत् भाषाक विवेकमे सामर्थ्य राखी । पण्डित अम्बिकादत्त व्यास शुद्ध हिन्दीमे आदर्शरूप रामायण बनाय प्रकाशित कयलैन्हि, जाहिमे एकोटा शब्द भाषान्तरक नहि देल गेलैक । 'इस तरह' इत्यादिक स्थानमे 'इस भाँति' इत्यादिए प्रयुक्त कयल गेल । ओ ग्रन्थ पटनामे परीक्षा काल छात्रसबहिकाँ शुद्ध हिन्दी परिपाटी ज्ञानार्थ बटबारा कएल गेल । एक प्रति हमरहु भेटल । हमरा अत्यन्त आनन्द होयत जे तत्सदृश ग्रन्थ मैथिलीमे बनाय प्रकाशित कयल जाय, जकरा देखि अन्यान्यो मैथिलवृन्द तदनुसारे लेख करैत जाथि जाहिसँ ओ लेख सर्वथा परिशुद्ध मैथिली कहएबाक पात्र हो ।

हिन्दीमेँ 'पूछ' धातुक प्रयोगमे तृतीया 'से' विभक्ति अबैत अछि, यथा 'राम से पूछो' मे। किन्तु मिथिलाभाषामे संस्कृतवत् द्वितीये विभक्ति 'केँ' अबैत अछि– 'रामकेँ पुछिऔन्हि। एहना स्थितिमे मिथिलाभाषाक शुद्धि पर ध्यान नहि दय हिन्दी भाषाक वासनासँ कतोक मैथिल हिन्दी जेकाँ तृतीयहिक प्रयोग करय लागल छथि यथा– 'रामसँ पुछिऔन्हि। एहि प्रकारेँ आनो जे मैथिलीमे हिन्दी दृष्टिसँ आनल जाय रहल अछि तकरा संशोधनार्थ किछु मात्र उल्लेख करैत छी:

शुद्ध मैथिली	हिन्दीवासनासिद्ध	हिन्दी
जे	जे की	जो कि
नहि	नहि कि	न कि
वा	या	या
नव	नया	नया
सय	सौ	सौ
पठायब	भेजब	भेजना
ताकब	खोजब	खोजना

एहन शब्द बहुत थोड़ समयसँ मैथिलक लेखमे ओ बाजबमे क्वचित्-क्वचित् आबि रहल अछि । एहिसँ शुद्ध मिथिलाभाषाक अपरिज्ञान वा जानिकेँ तादृश प्रवृत्ति दूहू अनुचिते । तेँ हमर विचार ओ अनुरोध जे शुद्ध-शुद्ध तत्तत् भाषाक विवेक राखि परिशुद्ध भाषाकेँ चलयबाक यत्न करैत जाइ । अतःपर अनुपजीव्य भाषान्तरक शब्द नहि मिलबैत जाइ । भाषान्तरक जे शब्द प्रविष्ट भय चुकल अछि, ताहि प्रसङ्ग विचार कय निर्णय कय लैत जाइ । अति प्राचीन शब्द जकर सम्प्रति क्वचिदपि व्यवहार नहि रहल, तकरा लेखहुमे व्यवहार नहि करी ।

परामर्श 4

मिथिला-भाषाक प्रसङ्ग चतुर्थ विचारणीय जे लेखापेक्षया बाजबमे कतोक वैषम्य देखल जाइत अछि । उदाहरण:–

लेखमे	भाषणमे	लेखमे	भाषणमे
कियेक	किये	मानताह	मान्ता
देखैत छथि	देखै छथि	कतहु	कतौ
कहलहीक	कहलही	जयबहुमे	जयबौमे
पठाय देलैन्हि	पठा देलैनि	देखलहुँ	देखलौँ
एतहि छथि	एतै छथि	एहि खन	ऐखन
नहि	नै	केओ	क्यो

इत्यादि । एतादृश भेद पड़बाक की कारण ? एहि पर वक्तव्य जे अपभ्रंशमे त्वरित वक्ता शीघ्रोच्चारण करैत छथि । यथा–'कियेक कहलहीक' इत्यादिमे 'क्' अक्षरक अनुच्चारण, 'देखैत छथि', 'जाइत छथि' इत्यादिमे 'त' अक्षरक, 'ओतय', 'जाय', 'पठा' इत्यादिमे 'य' अक्षरक। शीघ्रतावश अन्यथा उच्चारण, यथा 'कतहु', 'जयबहु', 'देखलहुँ', इत्यादिमे 'अहु' क स्थानमे औकारक उच्चारण 'एतहि छथि', 'रामहिकेँ', 'नहि' इत्यादिमे 'अहि'क स्थानमे ऐकारक एवं 'एही'क स्थानमे 'ऐ', 'केओ' क स्थानमे 'क्यो', 'मानताह' इत्यादिक स्थान पर 'मान्ता' इत्यादि शीघ्रोच्चारणमे उच्चरित भय जाइत अछि । आओर भेद पड़बाक दोसर कारण ई जे उक्त रीत्या व्यवहर्त्ताक शीघ्रोच्चरित तत्तदक्षरविकल 'किये' इत्यादि शब्दक श्रवणसँ कतेक बालक तथाविधहिकेँ वाचकत्वेन अवगत कय, स्पष्ट उच्चारणहुमे तादृशे प्रयोग करैत छथि ओ परिशुद्ध लेखशिक्षा नहि पओलासँ लेखो तादृशे करय लगैत छथि। मातृभाषा व्यवहारहिसँ गृहीत होयबाक कारणेँ किछु विभेदापन्न भय जाइत अछि । संस्कृत शिक्षा गुरु द्वारा ओ ग्रन्थद्वारा होयबाक कारणेँ तथा व्याकरणसँ ओ कोशसँ शब्दकेँ नियमित रहबाक कारण तत्तद्देशीयवक्तृभेदेँ उच्चारणमेँ किछु भेद रहलहु पर पठन-पाठन ओ लेखमेँ एकविधे रहैत अछि । मातृभाषामे से नहि होयबाक कारणेँ क्वचित् भेद आपतित भय जाइत अछि । तादृश वक्तृभेदहुसँ कतोक शब्दमे भेद पड़ैत अछि । यथा, उत्तम वक्ता बजैत छथि जे 'एमहर जाइत अछि', मध्यम वक्ता बजैत छथि जे 'एनय जाइत अछि', अधम बजैत अछि जे 'एनी जाइए'। एवं प्रकारक आनो-आनो शब्द वक्तृभेदसँ भिन्न रूपक अछि ।

एहिमे हमर विचार जे उत्तम वक्ताक विलम्बित वृत्ति सँ उच्चार्यमाण शब्द लेखमे शुद्ध मानल जाय । बजबामे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नियन्त्रण कठिन, तथापि यथासाध्य अधम शब्दक परित्याग अवश्य कयल जाय । कोषमेँ उत्तम शब्द संगृहीत कयल जाय। हम लगभग एगारह हजार शुद्ध मैथिलीशब्दक संग्रह कयल अछि, ताहूमे मध्यम ओ अधम शब्दक त्याग कय केवल उत्तमे शब्द समुल्लिखित कयलहुँ अछि । ओ मि. व्याकरण*(मि. भाषाविद्योतन)* हुमे उत्तम शब्द साधनप्रक्रियापूर्वक शुद्धतया प्रदर्शित कयल अछि । ओहि दूनूसँ प्राय: यावतो मैथिली शब्दक परिचय भय सकत ।

परामर्श 5

मिथिलाभाषाक प्रसंग पञ्चम विषय विचारणीय जे प्राचीन कविक व्यवहारानुसार गीत-कवित्ताद्यनुरोधे भाषणापेक्षया किछु व्यत्यास सह्य करबाक थीक वा नहि ?

एहिमे बिचारबाक जे कविशिरोमणि विद्यापति, उमापति प्रभृति तथा हिन्दी क कविप्रवर पद्माकर, मतिराम प्रभृति क्वचित्-किञ्चिद् व्यत्यासपूर्वक गीत कवित्तादिक निर्माण कयलैन्हि, से की हुनकालोकनिकाँ शुद्ध भाषामे बनयबाक सामर्थ्य नहि छलैन्हि, तेँ अगत्या व्यतिक्रमोपेत काव्य बनबैत गेलाह ? अथवा ओहि समय ओहने बनयबाक चालि छलैक, तदनुरोधेँ ओही प्रकारक निर्माण कयलैन्हि? परन्तु ई दुहू कहब अनर्गल । हेतु जे दिनानुदिन विद्याक ह्रास अछि, पूर्वपूर्व आधिक्य छल, से प्राचीन ग्रन्थ ओ प्राचीन शिल्पादि देखि निर्णय होइत अछि । तेँ आधुनिक कविकेँ अन्यथाकृत शुद्ध भाषामे काव्यनिर्माणक शक्ति भेल अछि, पूर्वक कविमे ई शक्ति नहि छलैन्हि, से कहब साहस तथा अभिमान कहाओत । तस्मात् हुनकालोकनि यदि चाहितथि तँ आधुनिक कविक अनुसार बनयबे करितथि। तथा एतदनुसार नहि बनाय किछु व्यत्यासपूर्वक बनबैत गेलाह एहिमे ओहि समयक चालिकेँ कारण मानी सेहो नहि युक्त, हेतु जे बिना फलेँ ओहन चालिये कियेक भेल? तस्मात् एहिमे ई तत्त्व जे काव्यक फल रसोदय थीक, से कोमल शब्दहिसँ प्राय: भय सकैछ तेँ शब्दकेँ कोमल करबाक हेतु किञ्चिद् व्यत्यास आवश्यक। यथा, 'भाँगय चाह' एहिठाम 'चाहैत हो' एकरा मधुर करबाक हेतु 'चाह' एतादृश प्रयोग कयल गेल । एवम्,*'पन्नग की मनि, किन्ही तुमे, तुम पन्नग की कचुरी करि चाहत* एहिठाम 'चाहते हो' एकरा कोमल करबाक हेतु 'चाहत' एतादृश शब्द देल गेल ।

संस्कृतमे कोमलता-निर्माण साधुशब्दान्तरहुसँ भय सकैछ, हेतु जे ओहिमे निष्ठुर, कोमल, अतिकोमल सभ प्रकारक साधुओ शब्द यथेष्ट अछि, तेँ ओहिमे व्यत्यास करबाक प्रयोजन नहि । प्रत्युत व्यत्यास कयने च्युतसंस्कृति रूप दोषे । किन्तु भाषाशब्दमे क्रियापदादि प्राय: एकविध रहबाक कारण कोमलताक अन्यथाऽनुपपत्तिसँ च्युतसंस्कारत्वकेँ दोषत्व नहि । कविसम्प्रदायक एतादृश आदर अछि, जकरा अवलम्बने कीर्त्तिमे स्वच्छता, अकीर्त्तिमे कृष्णता इत्यादि असद्भूतो वस्तु वर्णनीय होइत अछि, तखन भाषाकविसम्प्रदायमे दोषारोपणपूर्वक द्वेष कियेक ? भाषाकविशिरोमणिलोकनिक सम्प्रदायद्वेषी कविमहोदयलोकनि क्षमा करथि । प्राय: विद्यापति, पद्माकरादि प्राचीन कविक निर्मित सदृश सुमधुर-रससमर्पक काव्य बनयबामे असमर्थ छथि, वा ओहि मार्गे तेहन काव्य नहि बनाय सकताह जाहिसँ हुनकालोकनिक समानो गौरव लाभ करथि । इच्छा अधिक गौरवक, तेँ सहृदय-हृदयाह्लादजनक हो वा नहि, भाषाशुद्धिमात्रक अवलम्बन कय, तावता प्राचीन काव्यसँ विलक्षण काव्यक निर्माणमे यत्नशील भय रहल छथि जे विद्यापति, पद्माकरादिसँ उत्कृष्ट कवि कहयबाक सौभाग्य हो । खेदक बात थीक जे प्राचीन कवि-सम्प्रदायानुकूल काव्य बनयबाक क्षमता रहलहु पर, ओहिमे अवहेलनाबुद्ध्या तदनुसार शिक्षा ओ अभ्याससँ वञ्चित रहबाक कारण तादृश योग्यताक, जे योग्यता कवि अम्बिकादत्त व्यासमे दृष्ट छल, से सर्वथा अभाव उपस्थित अछि । उपसंहारमे वक्तव्य जे प्राचीन कविक अनुसार शब्दक किछु परिवर्त्तन गीत-कवित्तादिमे ग्राह्य करबाक थीक । यदि आवेश हो तँ शुद्ध भाषामे काव्य बनओ ! हेतु जे काव्य उत्तम, मध्यम, अधम तीन प्रकारक होइत अछि । से चित्रकाव्यमे यथा शब्दमात्रक लालित्यसँ अधमकाव्यता, तद्वत् भाषाशुद्धिमात्रसँ काव्यता रहत । परन्तु प्राचीन काव्यमे वा तदनुसारी नवीन काव्यमे दोषारोपण नहि कयल जाय । हम मैथिली व्याकरण *(मिथिलाभाषाविद्योतन)* मे छान्दस प्रक्रिया देलैक अछि जे एतादृश-एतादृश व्यत्यास काव्यमे शुद्ध थीक ।

परामर्श 6

आब मिथिलाभाषासम्बन्धी छठम विचार जे एहि भाषाक व्याकरणक आवश्यकता वा नहि । एहि प्रसंग कथ्य ई जे कोनहु वस्तुक आवश्यकता प्रयोजनवशात् होइत अछि । व्याकरणक प्रयोजन शब्दज्ञान थीक, तेँ मैथिल समाजकाँ मिथिलाभाषाक ज्ञानार्थ व्याकरणक काज नहि, व्यवहारहिसँ मैथिलकाँ से ज्ञान परम्परासिद्ध अछि । ई कथा संगत, परन्तु अन्यदेशीयकाँ अवगतिक हेतु मिथिलाभाषाव्याकरणक आवश्यकता । बहुत अन्यदेशीय महोदय अनेक भाषाक वेत्ता छथि । हुनकालोकनिकेँ मैथिली भाषाक परिज्ञानक इच्छुक भेलहु पर व्याकरणक अभावसँ विमुख होइक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पड़ैत छैन्हि । तत्त्वविचार कयलासँ मैथिलहुकेँ मिथिलाभाषाव्याकरणक आवश्यकता अछि। हेतु जे व्यवहारसँ बहुत दिने यावतो शब्दक ज्ञानक सम्भव, ओ व्याकरणसँ अतिशीघ्र । कियक तेँ व्याकरणमे निखिल क्रियाबोधक धातु तथा अखिल प्रत्ययसमूहक उल्लेखसँ शीघ्रे सभ शब्दक परिचय भेनिहार थीक । आओर व्याकरणसँ केवल शब्दमात्रे परिचेय नहि, किन्तु अर्थो । तँ यथावत् अर्थज्ञाननिमित्त मैथिलहुकाँ व्याकरणक आवश्यकता । यद्यपि मैथिलगण प्रयोग उचिते करैत छथि, तथापि कतोक शब्दक अर्थ पुछला पर चुप होइक पड़तैन्हि । 'उजर फूल लाउ', 'उजरा फूल लाउ' एहि दूहूमे की अर्थ-भेद ? एवं 'हमरा पुस्तक अछि', 'हमर पुस्तक अछि' एहि दूहू वाक्यमे की अर्थक भेद ? तथा 'ई विद्वान छथि', 'ई विद्वान् थिक।ह' एहि दूनूमे की भेद , इत्यादि पुछला पर उत्तर कहबामे मैथिलहुकाँ अधिक विचारक अपेक्षा होयतैन्हि । व्याकरण बनओनिहार अत्यधिक भावना लगाय सुचिर कालेँ अपना मोनमे निर्णय कय व्याकरणक द्वारा अर्थनिर्देश करैत छथि। तदुत्तर पढ़निहारकेँ ओकर ज्ञान अतिसुकर।केँ तेँ मैथिल समाजहुकाँ यथावत् अर्थक अवगतिक हेतु मिथिलाभाषाव्याकरणक आवश्यकता । ओ बिना व्याकरणेँ मैथिली भाषाक शुद्धि-अशुद्धिक निर्णय असम्भव, तेँ व्याकरणाभावप्रयुक्त भाषासंशोधनक असम्भव दशामे गवर्णमेन्टसम्बन्धी परीक्षा मध्य गृहीत कोना भय सकत ? कथञ्चित् गृहीत करओलहु पर छात्रसबहिक एहि प्रकारक ऐच्छिक शब्दक प्रयोग पर परीक्षककेँ संशोधन मध्य कठिनता होयतैन्हि, जाहिसँ छात्रसमूहकेँ हानि पड़बाक योग्यता । तस्मात् हिन्दीभाषा प्रभृतिवत् परीक्षामे उपयुक्त होयबाक कारणहुँ मिथिलाभाषामे व्याकरण आवश्यक ।

आओर एहिमे कारणान्तर जे नानाभाषाक सञ्चारसँ व्याकरणबेत्रेक भाषाकेँ संकर भय जयबाक सम्भव, जे पूर्व देखाय चुकल छी । ओ एहि प्रसंग अवसर पर एक दृष्टान्त उपन्यस्त करैत छी । प्रत्येक भाषामे लिङ्गक मर्यादा स्वतन्त्र अछि, यथा- संस्कृतक अन्यलिंगको अग्नि, नक्षत्र, पुस्तकादि शब्द हिन्दीमे स्त्रीलिङ्ग मानल जाइत अछि एवं संस्कृतक स्त्रीलिंगो शब्द व्यवस्था, मर्यादा, सभा प्रभृति लौकिक स्त्रीत्वशून्यक बोधकतया मिथिलाभाषामे पुँल्लिङ्गे मानल जाइत अछि । अतएव 'व्यवस्था भेलीह,' 'मर्यादा रहतीह', इत्यादि प्रयोग नहि होइत अछि, किन्तु 'व्यवस्था भेल', 'मर्यादा रहत', इत्यादिये शुद्ध मानल जाइत अछि । एवंविध लिङ्गमर्यादाक ध्यान नहि कय हिन्दीक संस्कारसँ 'सभा भेलि' एहन लेख परिनिष्ठितो व्यक्ति भ्रममे पड़ि करैत छथि । तस्मात् मिथिलाभाषामे व्याकरण बनब आवश्यक । एहि पर हम *मिथिलाभाषा विद्योतन* बनयबामे लगलहुँ । प्रथमतः अनुभव भेल जे ई अपन भाषा थीक तेँ तत्सम्बन्धी व्याकरण-निर्माणमे परिश्रम नहि लागत ओ समय से अल्पे लागत । किन्तु प्रवृत्त भेला पर उत्तरोत्तर अधिक भावना ओ थोड़-थोड़ समय देबाक हेतु पन्द्रह वर्ष समय लगओलासँ सम्पन्न भेल । ओ संग-संग कोषहुक आवश्यकता बिचारि शुद्ध मैथिली शब्दक संग्रहो करब आरम्भ कयल । तदुत्तर सर्वतोभावेँ सम्पूर्ण ओहि व्याकरणक स्वत्वसंरक्षणपूर्वक किंवा पारितोषिकलाभपूर्वक प्रकाश करयबाक हेतु अनेक श्रीमान्लोकनिक ओतय निवेदन कयल, परन्तु सफल नहि भेलहुँ । तत्पश्चात् साहस कय स्वयं छपयबामे प्रवृत्त भेलहुँ, परन्तु ओहि समय छपाइक तथा कागजक महार्घता छलैक ताहि हेतु एके खण्ड छपाय सकलहुँ, सेहो बहुत अशुद्ध रहलाक कारण सन्तोषजनक नहि भेल । ततःपर अपन असामर्थ्य ओ धनवानलोकनिक वैमुख्यसँ हम हतोत्साह भेलहुँ । एहि प्रकारक व्याकरण यदि हिन्दीमे बनओने रहितहुँ तँ पूर्ण पारितोषिकभागी भेल रहितहुँ, इत्यादि बहुधाभावना कय संस्कृत ग्रन्थक निर्माण दिस लगलहुँ । अस्तु, प्रकृतमे वक्तव्य जे पूर्वोक्त अनेक कारणेँ तथा भाषामे गौरवप्राप्तिक हेतु आवश्यकता सिद्ध भेल।

एही रीति मैथिली कोष सेहो आवश्यंक । कोष नहि रहबाक कारण मिथिलाक बहुत शब्द लुप्त भेल जाइत अछि । यथा-'खिलान' वा 'मेहराव' इत्यादि शब्द अपन नहि थीक । एकरा स्थानमे पूर्व आने शब्द व्यवहृत छल, किन्तु भाषान्तरक शब्द आबि ओहि सभकेँ लुप्त कय देलक तेँ आबहु कोष बनि जाय जे बचलो शब्द सुरक्षित हो ।

परामर्श 7

आब अवशिष्ट सातम विषय रहल जे मि.भाषाक उन्नतिक कोन उपाय ? एतत्प्रसंग प्रथमतः निर्णय करबाक जे भाषाक उन्नति की थीक । धर्मादि चारि पुरुषार्थ जे शास्त्रमे कहल अछि से भाषा तत्स्वरूप वा तत्साधक नहि । तखन की ओकर उन्नति वा कियेक ओकर उपायक चिन्ता ? एहि पर उत्तर जे प्रथमतः शब्दक प्रयोजन अर्थज्ञान थीक, से यदि धर्मादिविषयक हो तँ धर्मादिसाधक भय सकैत अछि । तस्मात् शब्दकेँ जेहन उपयुक्त बनाय सकी, तादृश उपयोग-सम्पादक होयत ओ उत्कृष्टाधिकोपयोगसम्पादकत्वेँ भगवद्गुणानुवादक शब्द

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित, मूर्ख, स्त्री, बाल सकल-साधारणकेँ धर्मप्रयोजक होयत । नीतिकृष्यादिसम्बन्धी शब्दसन्दर्भ द्वारा अर्थप्रतिपादक भय सकत । एवं रसाभिव्यञ्जक यदि बनाओल जाय तँ आनन्दरूप कामसमर्पक होयत । तस्मात् विशिष्टनानोपयोगित्वे ओकर वाञ्छनीय औन्नत्य थीक । एवं तादृश उपयोगक सिद्ध्यर्थ ग्रन्थसबहिक निर्माण, मुद्रण द्वारा प्रकाश, पत्र-पत्रिका-सञ्चार ओ गवर्णमेण्ट परीक्षामे ग्रहण आदि उन्नति थीक ।

एतादृश उन्नति कोना होयत ? एतत्प्रसंग कथ्य जे व्यापक उन्नति परिश्रम ओ द्रव्य एतदुभयसँ होयत, 'होयबाक चाही' एतादृश विचारमात्रसँ नहि । तेँ हमरा जनैत उन्नति तखनहि होयत यदि विद्वान्लोकनि परिश्रम उठाबथि। हेतु जे ओसबहि प्रायः दासताक स्वीकार कय वा गार्हस्थ्यक अवलम्बन कय निमहैत धनतः क्षीणे छथि। तेँ ओलोकनि परिश्रम उठाय उपादेय नानाप्रकारक ग्रन्थ मिथिलाभाषामे बनबैत जाथि । धनवान्लोकनि धनव्ययक उत्साह करथि, तखन मैथिलीक उन्नति होयत । एहि दूनूमे एतदर्थ पहिने धनसञ्चये आवश्यक । हेतु जे धनसञ्चयाभावप्रयुक्त बनलहु ग्रन्थक प्रकाशनक असम्भव दशामे अन्यान्य ग्रन्थक निर्माण-प्रवृत्तियो विकले । परन्तु धनसञ्चय रहलासँ मानल जाय जे मैथिलीमे उपयुक्त ग्रन्थक अभावे अछि, तथापि उत्कृष्ट ग्रन्थक निर्माताक हेतु निर्धारित पारितोषिक-लाभक सम्भावनासँ विद्वानलोकनिकाँ उपयुक्त ग्रन्थ बनयबामे प्रवृत्ति होयतैन्हि । तखन यथेष्ट ग्रन्थ निर्मित भय जायत ओ सञ्चित धनसँ प्रकाशितो होइत जायत । कालेँ पुस्तकक विक्रीक कार्य स्वतन्त्र रूपेँ चलत । धनवानलोकनि चाहथि जे मातृभाषाक उन्नतिक हेतु धनसञ्चय आवश्यक हो तँ अवनत होइत मैथिलीकेँ अपना हाथसँ अवलम्बन दय उन्नत कय सकैत छथि । यदि सम्पन्नलोकनि मनमे ध्यान करथि जे मातृभाषाक कतेकटा अपमान भय रहल अछि, एहि पर दया करथि तँ बहुत शीघ्र उद्धार भय सकत । विचार करू जे मातृभाषा जाहि बालकसँ जन्मतः आदृत होइत अछि, ओ जाहि बालककेँ व्यवहारक्षम बनबैत अछि, किछु ज्ञान भेला पर अध्ययनक समयमे ओही बालकसबहिसँ तिरस्कृत होइत ओकरा सबहिकेँ हिन्दी भाषामे लागल देखय पड़ैत अछि, ई मातृभाषाक कतेकटा दुःखक विषय थीक ? यदि सर्वतोभावेन उपादेय मैथिलीव्याकरण बनि प्रकाशित भेल रहैत, यदि सकल मैथिलीशब्दक कोष बनल रहैत, यदि काव्य,नाटक,छन्दोग्रन्थ, नीत्यादिग्रन्थक समूहसँ मैथिली भाषा उपबृंहित भेल रहैत, तँ मैथिली भाषाकेँ आइ एतादृश अपमान सहबाक अवसर नहि होइत । हमरा बहुत दुःख भय रहल अछि, तेँ कहैक पड़ैत अछि । यदि धनवान् लोकनिक मन मे एहन ध्यान अबैन्हि जे हमरालोकनि कोनो-कोनो कार्य करयबाक हेतु कतेक दीन-दरिद्रक भरण करैत छी ओ सकल कार्य करयबाक समयमे हाजिर जे मैथिली भाषा तकर भरण-पोषण कियेक नहि करब, तँ अतिशीघ्र मिथिला भाषा संभृत भय पुष्ट भय जायत ।

प्राचीन विद्वान्लोकनि जाहि मैथिलीक उन्नतिक हेतु नवरससमर्पक तथा भक्तिपक्षक ओ तत्तत् शुभावसरक सहस्राधिक गीतक मैथिलीमे निर्माण कय समस्त मिथिला मे प्रचार कराय घर-घर प्रत्येक सुअवसरमे बिना खर्चक माङ्गलिक उत्सव सिद्ध कयलैन्हि ओ संस्कृतानभिज्ञो भगवद्भक्तकेँ भगवानक आराधनामे लीन कयलैन्हि, खेदपुरस्कर कहैक पड़ैत अछि जे ओहि अपना भाषाकेँ किछु बढ़यबाक तात्पर्य हमरालोकनिकाँ नहि रहल । प्रत्युत ओकर रक्षामात्रहुसँ हमरालोकनि विमुखे छी । ओ प्राचीन विद्वानलोकनि मिथिलाभाषामे संस्कृत नाटकक समान नाटक बनओलैन्हि, प्राकृतादिक स्थानमे मिथिलाभाषाक समावेश कयल, जे सौभाग्य आन कोनो देशभाषाकेँ नहि भेल, एतादृश पूर्वक महोदयसँ सम्बर्धित अपना भाषाकेँ आओर अधिक गौरवान्वित करबामे किंवा सुरक्षितो रखबामे दत्तचित्त नहि छी, ई विशेष खेदक विषय थीक । अथ च शोचनीय जे भूतपूर्व विद्वान्लोकनिक द्वारा अतियत्नसँ सम्पादित ओ गाम-गाममे प्रवर्त्तित मिथिलाभाषासँ उपनिबद्ध *पारिजातहरणादिक* अभिनय लुप्त भय गेल । हमरालोकनि ओकर अवहेलना कयल । यदि ओकर उन्नतिक दिश आधुनिक मैथिललोकनिकाँ ध्यान रहैत तँ ओ आओर अधिक उत्तमता प्राप्त रहैत । यदि प्राचीन विद्वानक प्रवृत्ति देखि ओहूसँ उत्कृष्ट रूपक बनबैत जैतहुँ वा ओकर अभिनय मध्य उत्कृष्ट सामग्रीक सम्पादन पर सम्पन्नलोकनिक कृपादृष्टि रहैत तँ अधिक औन्नत्य भेल रहैत । से नहि भय ओकर स्वरूपे लीन भय गेल । अतःपर मैथिलीक प्रसंग शोचनीय की ?

एहना स्थितिमे उन्नतिक हेतु सभानिर्माणादिओ विफलप्राय ! कारण जे अभिनिवेशपूर्वक जे समारोह सएह कार्यसाधक होइत अछि । अन्यथा यत्किञ्चिद्व्यक्तिक नामविख्यातिमात्र कय मुख्य उद्देश्यक साधनसँ वञ्चित होइत अछि । तेँ हमर मत जे मिथिलाभाषोन्नति हेतुक सभामे सर्वप्रथम द्रव्यसञ्चयक प्रस्ताव होयबाक चाही । अतएव द्रव्यसञ्चयारम्भ भय जयबाक प्रबन्ध धराय देल जाय । मिथिलाभाषाक एक प्रकारक उन्नत्यर्थ श्रीमान्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलेश 1,20,000 (एक लाख बीस हजार) रुपैया प्रदान कयलैन्हि, जे दान अनेक धन्यवादार्ह ओ औदार्यगुणवादास्पद थीक ।

मैथिलीक प्रसंग श्रीमान् मिथिलाधीशक एतादृश महत्वपूर्ण अनुदान देखि यदि आनो सम्पन्नमहोदयलोकनि मैथिलीक उन्नतिक हेतुक तदनुसार द्रव्य-प्रदानक उत्साह करथि तँ पचीस हजार किंवा लाखावधि रुपैया जमा होयब कोनो चित्र नहि ! ओ एतादृश उदारताक स्वीकारे यथार्थ उन्नतिक उपाय थीक ।

हमरा अभिलाषा जे मिथिलाभाषाक उन्नत्यर्थ एक एतादृश कोष बनबाक चाही जाहिमे अकारादि क्रमेँ अखिल शुद्ध मैथिली शब्द सञ्चित रहय । मिश्रित विदेशीय शब्दक यथासम्भव परित्याग कयल रहय । यदि रखबहिक आग्रह हो तँ ओहि हेतु दोसर खण्ड रहओ । अर्थ यथासम्भव संस्कृत, मैथिली, हिन्दी तीनू शब्दसँ कयल जाय ओ विशेष शब्दमे क्वचित्-क्वचित् लौकिक प्रयोगो देखाओल रहैक जाहिसँ यथावत् अर्थक बोध हो। तथा जे वस्तु जाहि गुणेँ उपादेय होइत अछि, तकर परिचय देल जाय । यथा- कोनो कोनो पक्षी प्रिय बजबाक हेतु ग्राह्य होइत अछि, कोनो लड़बाक हेतु, कोनो तत्तज्जातीयकेँ भक्ष्यताक हेतु, कोनो सुन्दरताक हेतु। एवं प्रकार प्राधान्येन जाहि गुणेँ जे वस्तु अपेक्षित होइछ से देखाओल रहय । एवं फूल मे जे जाहि गुणेँ अपेक्षित होइत अछि, जाहि मासमे फुलाइत अछि, जेना लगैत अछि, जतबा टा गाछ होइत अछि से सभ परिचय देल जाय । भक्षणार्थ सम्पादित अन्न, व्यञ्जन, मिष्टान्न आदिक नामार्थनिर्देश एहि रूपेँ कयल जाय जे एवं प्रकारेँ सम्पादित वस्तुक अमुक नाम थीक । तथा तत्तत्क्रीड़ाबोधक मैथिली शब्दक अर्थप्रदर्शन तत्तत्प्रकारनिर्देशपूर्वक कयल जाय, जाहिसँ ओकर स्वरूपक बोध हो । सजातीय वस्तुक नामोल्लेख वर्गक्रमेँ फूटो देल जाय यथा पक्षिवर्ग, पुष्पवर्ग, धान्यवर्ग, गृहवर्ग इत्यादि, जाहिसँ एतबा पक्षी, एतेक फूल, एतेक गृहावयव, एतबा अलङ्करण, इहो ज्ञात भय सकय । एतादृश मैथिलीकोष निर्मित भय प्रकाशित भेलासँ महान् उपकार होयत । तादृश कोषसँ व्यवहार-विषय अमुक-अमुक वस्तुक नाम संस्कृतमे अमुक-अमुक थीक, सेहो अंकित भय जयबाक कारण संस्कृतव्यवहारहुमे अत्यन्त उपकार पहुँचत । तथा ओहि कोषसँ वस्तुक उपादेयताप्रयोजक प्रधान गुण ज्ञानपूर्वक ओ निर्माण प्रकारादि ज्ञानपूर्वक तत्तद्बोधक मैथिली शब्दक अवगम भेलासँ संग्रहेच्छु व्यवहर्त्ताकेँ अत्यन्त उपकार होयत। मिथिलाभाषाक जे शब्द लुप्त भय रहल अछि से सुरक्षित रहत । इत्यादि बहुत नियत उपकार होयत । तेँ एतादृश कोष अवश्य बनबाक चाही ।

हमरा अनुभवेँ 13/14 हजार शुद्ध मैथिली शब्द होयत, जाहिमे लगभग 11 हजार शब्दक संग्रह हम कय चुकल छी । अवशिष्ट आओर 2/3 हजार होयबाक सम्भव ।

एवंविध कोष बहुत प्रयत्नेँ निर्मित भय सकत । एतदर्थ कमसँ कम अन्ततः यदि एक हजार रुपैया पारितोषिक नियत कयल जाय तँ दरिद्र विद्वान् काँ विशेष लाभप्रयुक्त श्रममे औत्साहिक प्रवृत्ति भेलासँ पूर्वोक्त गुणविशिष्ट उत्कृष्ट तादृश कोषरत्न सम्पन्न भय सकत ।

हम अद्यावधि समाचारपत्रमे कोनो प्रकारक लेख प्रकाशित नहि कयल, परन्तु हमरा मैथिलीमे चिरसञ्चित स्नेह अछि। ओहि स्नेहक परवश भय अपन हृद्गत परामर्शक प्रकाश करैक पड़ल । एहि उपक्रममे जे एमहर आबि अनेक मैथिललोकनिक कृपादृष्टि मैथिलीक ऊपर पहुँचल अछि, तत्प्रयुक्त ताहि प्रसंग विचारक सम्प्रचार भय रहल अछि जे विना फलेँ विश्रान्त नहि भय सकत । आब मैथिलीक ऊपर विशेष रूपेँ दत्तचित्त भय मैथिली समालोचनालेखकेँ 'मिहिर'मे स्थान देबामे महान् उत्साह देखबैत छथि । अतएव जाहि मैथिलकाँ मैथिली भाषा विषयक समालोचना वा युक्तियुक्त सिद्धान्त जे बुद्धिस्थ होइन्ह से एहि अवसरमे अवश्य प्रकाशित करथि । अन्यथा भ्रष्टावसरक योग्यता । अतएव हम अपन निर्णय लेख द्वारा प्रकाशित कय रहल छी जे तीरभुक्तिभाषानुरागी मैथिलमहोदयलोकनिक श्रद्धास्पद होयत। यदि वा अश्रेद्धेये होयत तथापि क्षति नहि, हेतु जे उत्तम रीत्या परामर्शक हेतु परिनिष्ठित मैथिललोकनिकाँ भार देल गेल अछि । एहि प्रसंग हम अपन उत्कंठा प्रकाश करैत छी जे भारापन्न व्यक्तिलोकनि जाहि काल एकत्र भय मैथिली लेखशैलीक विचार ओ निर्णय करय लागथि, ओहि समय हमरहु अपन सिद्धान्त सुनयबाक हेतु, ओ उत्थित संदेहनिराकरणक हेतु बजबाक अवसर कृपया अवश्य देल जाय ।

मैथिली शैली-निर्धारणक पर्यवसान जे लेखमे कीदृश शब्द मैथिलीमे शुद्ध थीक, तकर निर्णय करब । तस्मात् शुद्धिनिर्धारणे शैलीनिर्धारण भेल । तँ "मैथिली-शुद्धि-निर्धारणपरिषत्" ओकर नाम राखल जाइत तँ सभकेँ अर्थ बुझबाक योग्य होइत । अस्तु, मैथिलीक समालोचना जे प्रकाशित भय चुकल अछि, से हम देखल । ओहिमे बहुधा हमर सिद्धान्तानुकूले अछि । किन्तु कतोक अंशमे वक्तव्य अछि । तकर विचार साक्षात् कयलासँ एकतर कोटि उभयसम्मत भय सकत । तेँ ओकर लेखसँ हम विरत होइत छी।

लोढ़ल फूल

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अर्थ आओर अर्थ-विकार

❑ प्रो. श्री उमानाथ झा

1

वैज्ञानिक आधार पर भाषाक अध्ययन ओ विश्लेषण पश्चिमक हेतु अपेक्षाकृत नबं वस्तु थिक । अमरीकी भाषाशास्त्री ब्लूमफिल्डक अनुसार यद्यपि यूरोप सोलहम तथा सत्रहम शताब्दीमे धर्मप्रचारकसभद्वारा संस्कृतभाषा एवं पाणिनिक व्याकरणक अस्तित्वसँ अवगत भए चुकल छल, तथापि पाश्चात्य विद्वान् लोकनिकेँ संस्कृतक सम्यक् ज्ञान उनैसम शताब्दीक आरम्भमे भेलैन्ह । पाणिनिक प्रभावकं विषयमे ब्लूमफिल्ड लिखैत छथि:

The Indian grammar presented to European eyes. for the first time. a complete and accurate description of a language. based not upon theory but upon observation.[1]

The Hindu grammar taught Europeans to analyze speech-forms: when one compared the constituent parts. the resemblances. which hitherto had. been vaguely recognized; could be set forth with certainty and precision.[2]

विल्सन, जोन्स तथा अन्य प्राच्यविद्याविशारद लोकनिक कारण उनैसम शताब्दीमे पाश्चात्य भाषाशास्त्री भाषासभक तुलनात्मक अध्ययन पर विशेष ध्यान देलैन्ह परंच भाषाक वैज्ञानिक विश्लेषण तथा भाषाविज्ञानक सिद्धान्तक उपपादन सीमित रहल । एकर अतिरिक्त कतोक गौण विषयकेँ (यथा भाषाक उत्पत्ति) अधिक प्राधान्य देल गेल। भाषाक अध्ययनकेँ (भाषा शब्दक प्रयोग भाषाविशेषक अर्थमे नहि कएल अछि) वैज्ञानिक रूप देबाक श्रेय समकालीन पाश्चात्य शाब्दिक लोकनिकेँ छैन्ह। एहि कारणेँ कतोक अर्वाचीन विद्वान् लोकनि भाषाविज्ञानक हेतु philology क स्थान पर linguistics शब्दक प्रयोग करए लगलाह अछि । ईलोकनि philology शब्दक व्यवहार व्यापक अर्थमे अर्थात् भाषा-साहित्य-संस्कृतिक अध्ययनक हेतु करैत छथि। भाषाक अध्ययन आइकालिह विभिन्न स्तर पर ओ विभिन्न दृष्टिकोणसँ कएल जाइत अछि । फलस्वरूप भाषाविज्ञानक अनेक भेद दृष्टिगोचर होइछ ।

एक विद्वानक[3] मतेँ भाषाविज्ञानक दश प्रभेद कएल जा सकैछ । मानसचित्र (engram[4]) क स्तर पर भाषाक तीन चरमावयव (unit) अछि जकर सम्बन्ध ओहि प्रकारक व्यापारसँ छैक जकरा द्वारा ओ भाषाप्रवाहसँ पृथक्कृत (अवच्छिन्न, abstracted) होइत अछि । तीनू चरमावयवक अपन-अपन कार्य छैक तथा ओकर अध्ययनक हेतु पृथक-पृथक शास्त्र, यथा

	व्यापार	*चरमावयव*	*कार्य(धर्म)*	*शास्त्र*
(क)	भौतिक विश्लेषण	ध्वनितत्व (phoneme)	परिच्छेद (discri-mination)	ध्वनि-विज्ञान (phonology)
(ख)	अर्थ-विश्लेषण	शब्द	संकेतन	कोष-विज्ञान
(ग)	संबंध - विश्लेषण	वाक्यतत्व (syntagma)	संबंध-ज्ञापन	वाक्य-विन्यास विचार (वा कारक) (syntax)

भाषाप्रतीक द्विरूपी होइत अछि । एक भेल ओकर बाह्य रूप जकरा फरदिनाँ द सोसिर[5] signifiant (संकेतक) संज्ञा देल अछि। दोसर छैक ओकर आभ्यन्तरिक वा अर्थसम्बन्धी रूप जकरा ओ signife (अभिप्राय) कहलैन्ह अछि । एहि दूनूक सम्बन्ध शरीर ओ आत्माक समान बुझबाक चाही। स्थूल रूपेँ एकरा उक्ति एवं अर्थक संज्ञा दए सकैत छिऐक। प्रतीकक एहि द्वन्द्वक कारणेँ कोषविज्ञान तथा कारकक दू प्रभेद होइछ । शब्दक रूप तथा अर्थक अन्वेषणक (गवेषणक, मीमांसाक) दृष्टिएँ कोषविज्ञानक दू प्रकार भेल-रूढ़ आकारिकी (lexical morphology) ओ रूढ़ अर्थविज्ञान (lexical semantics)। एहिना वाक्यमूलक आकारिकी (syntactic morphology), ध्वनि उच्चावचन (intonation), शब्दक्रम आदि भाषा द्वारा व्यवहृत सम्बन्धद्योतनक उपकरणसभक अध्ययन करैत अछि, तथा एहि उपकरणक कार्यक मीमांसा वाक्यमूलक अर्थविज्ञान (syntactic semantics) मे होइत अछि ।

द सेसिरक मतेँ भाषाक पर्यवलोकन मूलत: दू भिन्न प्रकारेँ भए सकैछ । एकरा ओ एककालिक (synchronistic) अथवा वर्णनात्मक (descriptive) तथा पारकालिक (diachronistic) अथवा ऐतिहासिक भाषा विज्ञानक संज्ञा देलैन्ह अछि । भाषाक अध्ययनमे कालक एहि दृष्टिकोणकेँ अनलासँ उपर्युक्त पाँचो प्रभेद दू-दू

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

खंडमे विभक्त भए जाइछ । एहि प्रकारेँ भाषाविज्ञानक दश भेद भेल । स्टीवेन उलमान[6] निम्नलिखित चित्र द्वारा एकरा स्पष्ट कएलैन्ह अछि:

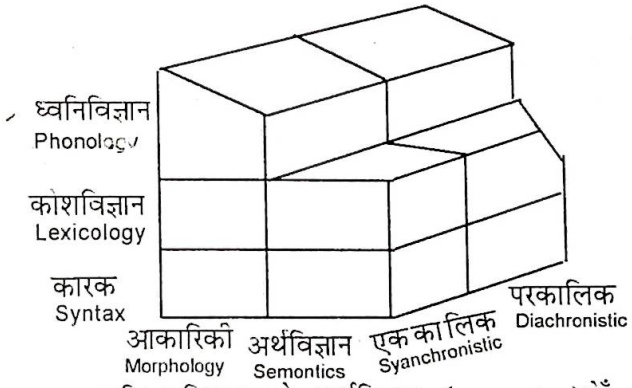

एहि परिकल्पनामे अर्थविज्ञान (semantics)केँ महत्वपूर्ण स्थान देल गेलैक अछि । परंच एहनो कतेक विद्वान् छथि जनिक विचारेँ भाषाक वर्णनात्मक विश्लेषणक हेतु अर्थक मीमांसा आवश्यक नहि । अर्थात् ओ अर्थ-विज्ञानकेँ वर्णनात्मक भाषाविज्ञानक अभिन्न अंग नहि मानैत छथि । प्रस्तुत निबंधमे एहि दृष्टिकोणक त्याग कएल गेल अछि ।

सनातन कालसँ शब्द ओ अर्थ भाषाक मुख्य अवयव मानल गेल अछि । परंच एहि दुनूमे कोन सम्बन्ध छैक, अर्थक की परिभाषा आदि प्रश्नक सर्वमान्य उत्तर नहि भेटैत अछि । अर्थक अध्ययन प्रधानत: तर्कशास्त्र अथवा मनोविज्ञानक आधार पर भेल अछि । वर्तमान कालमे तार्किक प्रत्यक्षवादी, (logical positivist) तथा व्यवहारवादी, (behaviourist) मनोवैज्ञानिक लोकनि एहि विषय पर विशेष ध्यान देलैन्ह अछि । व्यवहारवादी दृष्टिकोणसँ अर्थक विचारक प्रसंगमे ओगडेन ओ रिचार्ड्स[7] कृत 'अर्थक अर्थ' सभसँ अधिक उल्लेखनीय ।[7] एहि पुस्तकमे अर्थक परिभाषा मौलिक त्रिभुज (basic triangle) द्वारा कएल गेल अछि, जकर निम्नलिखित रूप छैक ।

विचार अथवा निर्देश
(Thought or reference)

यथार्थ प्रतीयमान (कार्यकारण सम्बन्ध)

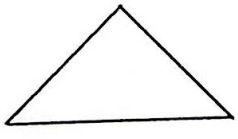

समुचित निर्देशित (अन्य कार्यकारण सम्बन्ध)

प्रतीक (symbol) — निर्देश्य (referent)

स्थानापन्न (आरोपित सम्बन्ध) सत्य

ओगडेन ओ रिचर्ड्सक मतेँ प्रतीक एवं भाव (वा विचार)मे कार्य-कारणंक सम्बन्ध छैक । अर्थात् प्रतीक विचारक उद्बोधन करैछ (तथा विचार प्रतीकक) । विचार तथा निर्देश्यमे (निर्दिष्ट वस्तुमे) सेहो कार्यकारणक सम्बन्ध छैक । परंच प्रतीक तथा निर्देश्यमे आरोपित अथवा अप्रत्यक्ष सम्बन्ध छैक । एहिसँ ई बोध होइछ जे अर्थक व्यापार-निर्भर परिभाषा ऊपर अंकित त्रिभुजक वाम भागसँ सम्बद्ध अछि । परंच भाव (विचार) तथा निर्दिष्ट वस्तुक सम्बन्ध मनोविज्ञानक क्षेत्रमे पड़ैत अछि ।

द सासिर[8] प्रतीक शब्दकेँ सन्तोषजनक नहि बुझैत छथि, कारण प्रतीक कखनहु पूर्ण रूपेण स्वेच्छ (arbitrary) नहि होइत अछि (उदाहरणस्वरूप हमरालोकनि तराजूकेँ न्यायक प्रतीक मानैत छी, आन वस्तुकेँ किएक नहि?) । एही कारणेँ हिनक तथा आगडेन-रिचर्ड्सक मत परस्पर विरोधी बुझल जाइत अछि । परंच उलमानकेँ एहिमे विरोध आभास नहि बुझना जाइत छैन्ह[9] ।

शब्दार्थक सम्बन्धक विवेचना करैत द सोसिर लिखैत छथि[10]

'भाषाचिन्ह वस्तु एवं नामकेँ नहि अपितु अवधारणा ओ ध्वनिप्रतिमाकेँ मिलबैत अछि । ध्वनिप्रतिमा भौतिक ध्वनि नहि थिक, शुद्ध भौतिक वस्तु, परंच मानस पटल पर ध्वनिक छाप, जे छाप ई हमरालोकनिक संवेद पर दैत अछि ।

तेँ भाषाचिन्ह द्विमुखी मानसिक सत्ता (entity) अछि जकरा अधोलिखित रेखा-चित्र द्वारा निरूपित कए सकैत छी ।

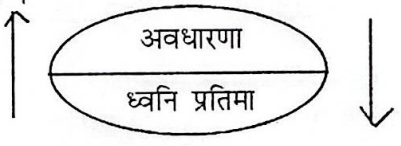

दूनू तत्वमे घनिष्ठ सम्बन्ध छैक, तथा एक दोसरक उद्बोधन करैछ । यथा,

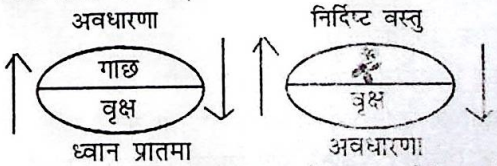

द्विधार्थकता-निवारणक हेतु द सोसिर तीनिटा पारिभाषिक शब्दक एहि प्रसङ्गमे व्यवहार करैत छथि । अवधारण (concept)क हेतु ओ संकेतित (signifie) तथा ध्वनिप्रतिमा (sound-image) क हेतु संकेतिक (signifiant) शब्दक प्रयोग करैत छथि एवं सम्पूर्णक हेतु चिन्ह वा संकेत (signe) क प्रयोग करैत छथि । एहि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

परिभाषाक उपरान्त ओ दू मुख्य नियमक स्थापना करैत छथि :

1. संकेतक स्वेच्छ स्वरूप

संकेतक तथा संकेतितक सम्बन्ध स्वेच्छ होइछ... अर्थात् भाषा-संकेत स्वेच्छ होइछ । 'सहोदरा'क भावकें /s/ /oe:/ /r/ ध्वनिक शृंखलासँ जे फ्रान्सीसी भाषामे ओकर संकेतक कार्य करैछ आन्तरिक सम्बन्ध नहि छैक।

2. संकेतकक रेखाकार स्वरूप

श्रावणिक (auditory) रहबाक कारणें संकेत केवल मात्र कालमे व्यक्त होइत अछि जाहिसँ एहिमे निम्नलिखित लक्षण होइत छैक- (a) ई एक गोट विस्तारक निरूपण करैत अछि आओर (b) ई विस्तार केवल एक परिमाण (dimension) मे नापल जा सकैछ, ई रेखाकार होइत अछि ।

शब्दार्थक सम्बन्धमे एक आओर मतक उल्लेख आवश्यक । इहो व्यवहारवादी मनोविज्ञान पर आधारित अछि । एकर प्रतिपादक छथि लेओनार्ड ब्लूमफील्ड[11] । हुनक मतें कोनो उक्ति पर भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ विचार करबाक काल ओकर पूर्व ओ परक व्यावहारिक घटनाकें ध्यानमे राखए पड़त । एहि प्रकारें देखलासँ ज्ञात होएत जे कोनो उक्तिक कारण वक्ताक परिस्थिति होइत छैक, तथा ओकर परिणाम संवादग्रहण कएलाक बाद श्रोताक स्थिति वा कार्य । एहि विचारकें स्पष्ट करबाक हेतु ब्लूमफील्ड निम्नलिखित चित्रक प्रयोग कएलैन्ह अछि :

s_____r S_____R

एहिमे S = व्यावहारिक उद्दीपन, r = भाषा स्वरूप स्थानापन्न प्रतिक्रिया, s = भाषा स्वरूप स्थानापन्न उद्दीपन, R = व्यावहारिक प्रतिक्रिया ।

कोनो व्यक्ति परिस्थितिविशेषमे व्यावहारिक उद्दीपन S सँ प्रभावित भेलासँ जँ कोनो कार्य करत, तँ ओकर व्यावहारिक प्रतिक्रिया R रूप लेतैक । एहि घटनाकें S → R द्वारा निरूपित कए सकैत छी, परंच इहो संभव छैक जे व्यावहारिक उद्दीपन 'S' क प्रतिक्रिया कोनो नहि भए, उक्तिक रूप लैक (अर्थात्) भाषास्वरूप स्थानापन्न प्रतिक्रिया r होइक । ई उक्ति ध्वनि-तरङ्गक रूपमे श्रोता धरि पहुँचतैक तथा श्रोताक हेतु भाषा स्वरूपस्थानापन्न उद्दीपनक कार्य करत । एहि उद्दीपनक अनुक्रिया श्रोता द्वारा कार्यक रूप लेत तथा एवं प्रकारें श्रोताक परिस्थिति मे परिवर्तन करत । अतएव श्रोताक दृष्टिसँ देखला पर उक्तिरूप घटनाक एहि अंशकें S → R द्वारा प्रकट कए सकैत छी । ''उक्ति-रूप'' घटना, S r, एक साधन थीक जाहि द्वारा S तथा R दूव्यक्तिसँ सम्बद्ध भए सकैत अछि। तें ई कहि सकैत छी जे उक्ति-घटना स्वयं तुच्छ ओ महत्वपूर्ण भए जाइछ कारण जे एहिमे अर्थ निहित छैक–पूर्व तथा परक जाहि व्यावहारिक घटनामे उक्ति सम्बद्ध अछि सएह भेलैक ओकर अर्थ । भाषा पृ. 26, 37.

ऊपर उल्लिखित भाषातत्वज्ञलोकनिक मतक विवेचन कएलाक बाद उलमान अर्थक ई व्यापारात्मक परिभाषा (functional definition) करैत छथि :

''अर्थ अभिधान ओ भावक ताहि पारस्परिक सम्बन्ध कें कही जकरा द्वारा ई दुनू एक दोसरक उद्बोधनमे समथ होइत अछि ।''[12]

2

भाषासंकेत स्वेच्छ होइछ, भाषाक निर्माणक हेतु संकेतक बाहुल्य आवश्यक, भाषा अत्यन्य जटिल विधि समुच्चय (System) थीक तथा नवीनताक प्रति समुदायक निश्चलता (intertia) रहैछ । एहि सभ कारणें भाषामे अपरिवर्तनशीलता अबैत छैक, परंच एक दिसि यदि काल भाषाक सातत्यमे (Continuity) सहायक होइछ तँ एकर ठीक, विपरीत ओ भाषासंकेतकें परिवर्तनशील सेहो बनबैत अछि ।[13] एहि परिवर्तनक रूप कोनो होउक, किन्तु ओकर परिणामस्वरूप संकेतित ओ संकेतक (अथवा अभिधेय अभिधान) सम्बन्धमे परिवर्तन होइत छैक । उलमानक शब्दमे *'अर्थ-विकार तखन होइछ जखन कोनो भावसँ नव नाम सम्बद्ध भए जाइछ तथा/अथवा नव भाव कोनो नामसँ सम्बद्ध भए जाइछ ।'*[14]

उपर्युक्त कथनसँ ई निष्कर्ष बहराइत अछि जे भाषापरिवर्तनक अध्ययन पारकालिक भाषा–विज्ञान (diachronistic linguistics) क अङ्ग होएत । वर्णनात्मक भाषाविज्ञान स्वभावत: एककालिक (synchronistic) होइत अछि तथा ओ भाषाक विश्लेषण ओकरा अपरिवर्तनीय मानि कए करैत अछि । दोसर निष्कर्ष ई जे भाषामे परिवर्तन क्रमिक होइत अछि, ओ कखनहुँ क्रान्तिक रूप नहि धारण करैछ ।

भाषाक परिवर्तनक अध्ययन ध्वनि, शब्द तथा वाक्यक स्तर पर भए सकैछ । परंच ध्वनिक स्तर पर अर्थक अस्तित्व नहि छैक । तें अर्थ-विकारक अध्ययन केवल शब्द तथा वाक्यक स्तर पर भए सकैछ । प्रस्तुत निबंधमे शब्दक स्तर पर अर्थ-विकारक प्रसङ्ग सर्वमान्य सिद्धान्तक उल्लेख करैत छी ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अर्थ-विकारक प्राय: सभसँ प्राचीन वर्गीकरण तर्क एवं अलंकार पर आधारित अछि तेँ एकरा तर्कालंकारिक (logicorhetorical) वर्गीकरण कहल जा सकैछ । एकर मूल अरस्तू द्वारा रूपकक विश्लेषणमे भेटैत अछि । ओ अर्थक चारि प्रकारक स्थानान्तरण मानैत छथि-जातिसँ प्रकार, प्रकारसँ जाति, प्रकारसँ प्रकार, तथा सादृश्यमूलक। (रोमन अलंकारशास्त्रीलोकनि आओर अनेक प्रभेद मानलैन्ह। खृष्टाब्दक प्रथम शताब्दीक रोमन अलंकारशास्त्री क्विन्टीलियन (Quintilian) अपन ग्रन्थ (De Institution Oratoria) मे चौदहसँ अधिक प्रकारक उल्लेख कएने छथि । अठारहम शताब्दीमे इतालीय दार्शनिक जाम्बतिस्ता भीको (Giambattista Vico) अपन पुस्तक Principal di un Scienza Nuova (एक नवीन विज्ञानक सिद्धांत) मे अलंकारक संख्याकेँ घटाकए चारि मानलैन्ह – रूपक (metaphor), अजहल्लक्षण (metonymy), उपलक्षण (syncedoche), व्याजोक्ति (irony)। एहि सभकेँ तर्कक आधार पर स्थापित तीनि श्रेणीक अन्तर्गते राखल जा सकैछ । कोनो शब्दक (अर्थात् भाषा-संकेतक) अर्थविकारसँ पूर्व ओ पश्चात्क अर्थ-क्षेत्रक (semantic field) अथवा (area of meaning) तुलना कएल सन्ता तीनि प्रकारक सम्भावनाक कल्पना कएल जाए सकैत अछि । नव भाव (अर्थ) पूर्वक भाव (अर्थ) सँ संकुचित हो वा विस्तृत हो किंवा समान हो । एहि विधिएँ अर्थविकारक तीनि वर्ग होइछ :-

1 **(अर्थ) सङ्कोच**– अंग्रेजीक meat शब्दक प्राचीन अर्थ छल खाद्यपदार्थ । ई अर्थ एखनहु sweetmeat मे दृष्टिगोचर होइछ । परंच meat क वर्त्तामान अर्थ अछि 'मांस' (अर्थात् भोज्यविशेष) । अंग्रेजीक hound (शिकारी कुकुर) प्राचीन अंग्रेजीमे hund छल । एकर अर्थ अपन सजातीय (cognate) शब्द जर्मन hund, लैटिन canis, ग्रीक कुओन ओ संस्कृत 'श्वन्' जकाँ 'कुकुर' छलैक । फलत: वर्त्तमान अंग्रेजीमे एहि शब्दक अर्थसंकोच भेलैक अछि । प्राचीन आर्यभाषाक 'पेकु' संस्कृतमे 'पशु', लौटिनमे fecu, प्राचीन जर्मन में 'fehu' रूप लैत अछि । एहि सभ शब्दक प्रयोग आरम्भमे प्राय: सभ जानवरक हेतु होइत छलैक, तदनन्तर एकर अर्थ भेलैक 'मालजाल' । मनुस्मृतमे 'पशु' क प्रयोग 'माल-जाल' क अर्थमे भेल छैक । पशुपक्षीमे एखनहु मूल अर्थ देखि पड़ैछ । परंच भणित मैथिलीक 'पौस' गर्भाधानक योग्य पारीक हेतु व्यवहृत होइत अछि । 'उत्तरीय' संस्कृतमे ऊर्ध्ववस्त्रकेँ कहैत छैक, परंच तद्भव 'उतरी' कर्त्ता द्वारा यज्ञोपवीत जकाँ पहिरल वस्त्र-खण्डक हेतु होइछ । मैथिलीमे 'कर्त्ता श्राद्धकर्त्ताकेँ कहैत छिऐक, पूर्ववंगक बोलीमे परिवारक प्रमुखकेँ, यद्यपि संस्कृत मे कोनो काज कएनिहार कर्त्ता कहबैछ । 'धौतवस्त्र' सँ निर्मित तद्भव 'धोती' कोनो साफ धोआओल वस्त्रक हेतु व्यवहृत होइत छल होएत । ई शब्द मैथिलीमे पुरुषक परिधानविशेषक अर्थ लए चुकल अछि, यद्यपि एखनहु अन्य भाषामे धोती तथा साड़ी दुनू वस्तुक निर्देश करैछ । नेपाली 'लुगा'क अर्थ होइछ पहिरनाक कोनो वस्तु, परंच सजातीय मैथिली 'नुआ'क अर्थ एक क्षेत्रमे साड़ी होइछ, तथा अन्य क्षेत्रमे धोती-साड़ी दुनूक निर्देश करैछ ।

2. **(अर्थ) विस्तार**–एहि परिवर्त्तनकेँ अनेक विद्वान् साधारणीकरणक संज्ञा दैत छथि । अंग्रेजीक arrive' फ्रांन्सीसी भाषासँ उद्धृत अछि जकर सजातीय पश्चात्कालीन लैटिन arribare, पूर्वकालीन लैटिन adripare सँ व्युत्पन्न भेल । adripare ad (अव्यय)- ripa 'नदी' सँ बनैत अछि, जकर अर्थ भेल adripam appellere 'जलमार्ग सँ पहुचब'। परंच अंग्रेजी arrive क अर्थ व्यापक भए गेल छैक । जल, स्थल वा वायुमार्गसँ पहुँचबाक अर्थमे एकर प्रयोग होइत छैक । 'तेल' तैलक भाषा रूप थीक जकर व्युत्पत्तिमूलक अर्थ भेल 'तिलसँ प्राप्त स्निग्ध पदार्थ' । परंच ई शब्द व्यवहृत होइछ सभ प्रकारक स्निग्ध पदार्थ हेतु तथा ओकर यथार्थ अभिप्राय प्रसङ्ग पर निर्भर करैछ। भनसाघरमे तेलसँ सरिसवक तेल बुझल जाएत (भारत वर्षक कतेक भागमे नारिकेरिक तेलसँ पाक होएबाक कारण तकरे बोध होएत) शृङ्गारक स्थानमे नारिकेर, तिल वा अन्य वस्तुसँ बनल केश-विन्यासक तेल, लालटेनक प्रसङ्गमे मटिया तेल आदि । मैथिलीक 'तमघैल' संस्कृतक ताम्रघटसँ सम्बद्ध अछि तथा आदिमे ओही अर्थमे व्यवहृत होइत छल होएत । छोट तमघैलकेँ 'तमिया' कहल गेलैक। मुदा कालक्रमे पितरि वा चानीक बनल घैलक हेतु एही शब्दक व्यवहार होअए लागल । किछु दिनक बाद तँ प्राय: ताम ओ चानीक बनल घैल संग्रहालयहिमे दृष्टिगोचर होएत । स्पष्ट अछि जे आरम्भमे लोहिया लौहनिर्मित होइत छल मुदा आब लोकक भनसाघरमे पित्तरि वा अलुमुनियमहिक लोहिया देखना जाएत ।

3 **स्थानान्तरण**- अंग्रेजीक tongue भाषाक अर्थमे प्रयुक्त होइछ, तथा ओही भाषामे सुइयाक छेदकेँ eye कहल जाइछ । फाउन्टेनपेनक feeder केँ मैथिलीमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जिभिया कहैत छिऐक, हिन्दीमे 'जीभीक अर्थ करैत छथि 'कलम के आगे लगनेवाला धातु का टुकड़ा जिससे लिखा जाता है' [प्रमाणिक हिन्दी कोश]। एहि दूनू शब्दक अर्थ जिह्वा साफ करैक उपकरण सेहो होइत छैक। ककबाकेँ 'दाँत' होइत दैक सुराहीकेँ गरदनि, पुस्तक वा पत्रकेँ 'पीठ'। संयोगवशेँ स्थानान्तरणक उपर्युक्त सभ उदाहरण अवयवसम्बन्धी अछि। परंच आनो प्रकारक उदाहरणक प्राचुर्य भेटैछ, यथा–संकोच 'सिकुड़न' > 'लाज', दल 'पात' [तुलसी दल] > दञल 'निमन्त्रण' [दञल पुरब], पात्र 'वर्त्तन' > योग्य। स्थानान्तरणक निम्नलिखित उदाहरणमे अन्य प्रकारक तार्किक सम्बन्ध देखि पड़त :

(i) जाहिमे दुनू अर्थ देश वा कालमे परस्पर निकट होइक, यथा– संस्कृत कपाल 'माथ' > मैथिली कपार 'ललाट'।

(ii) जाहिमे दुनू अर्थमे पूर्ण ओ खण्डक सम्बन्ध हो। यथा– प्राक्.आंग्ल स्टोबो 'गर्म कोठली' > stove, संस्कृत– उपवाह्य 'राजाक चढ़बाक हाथी' > राजाक कोनो वाहन। सानु 'वृक्षक शाखा' > 'जंगल'।

(iii) अबलसँ सबल भावमे परिवर्त्तन। यथा, 'उद्धार' –व्युत्पत्यर्थ 'बाहर करब', बादमे– 'मुक्ति' 'उबारब'।

(iv) सबलसँ अबल भावमे परिवर्त्तन यथा प्राक् फ्रान्सीसी एक्स-तोनारे 'वज्राघात करब' > फ्रांसीसी itonner, 'आश्चर्यित करब' > अंग्रेजी astonish.

(v) नीक अर्थसँ अधलाह अर्थ। यथा, प्राचीन अंग्रेजी cnafa 'बालक' > knave 'दुष्ट व्यक्ति'। महक 'गन्ध', 'सुगंधि' > महक 'दुर्गन्ध'। कृपण 'दीन, दुखी' > कंजूस।

(vi) अधलाह अर्थसँ नीक अर्थ। यथा, प्राचीन अंग्रेजी cniht 'बालक भृत्य' > knight 'मध्ययुगीन बोद्धा, संस्कृत मात्सर्य 'ईर्ष्या, डाह' > मैथिली मात्सर्य 'दया'।

ब्रेआल *(M. Breal : 'Essai de Semantique. Science does Significations.)* तथा पौल *(H. Paul: Prinzipien des sprachges chichte)* आदि विद्वानक सिद्धान्तकेँ अलङ्कारक आडम्बरसँ मुक्त कएला पर ओहि सभक इएह तार्किक आधार देखि पड़त। उलमान तर्क अलङ्कार पर आधारित सिद्धान्तक समीक्षा करैत लिखलैन्ह अछि :–

In theory at least it is both homagencous and complete, although the intermingling of rhetorical and logical angles has jeopardised both qualities. Moreover, it is of help to etymologist by showing him what changes are likely to occur' by giving him 'some measure of probability by which he can judge of etymologic comparisons (Bloomfield, *Language*. p.p. 427 & 430). It has also undeniable didactic advantages in that it introduces clarity and order into the chaotic realm of semantic processes and offers a technique which any student can easily grasp.[15]

These benefits, however, are bought at an exorbitant cost. The logico-rhetorical scheme is purely formal, it confines itself to the quantitative aspects of semantic changes and leaves their more vital features, their causes, back ground, historical, psychological and social, significance, entirely unexplained.[16]

तर्क एवं अलङ्कार पर आधारित अर्थविकारक सिद्धान्त भावपरिवर्त्तनक परिणामकेँ अपन लक्ष्य बुझैत छल, परंच उत्पत्तिमूलक वर्गीकरण कएनिहार अर्थविकारक उत्पत्तिकेँ अध्ययनविषय मानलैन्ह।

बेलाण्डर [Wellander] अपन पुस्तकमे अर्थ विकारक चारि भेद मानलैन्ह अछि।

1. निर्देश्य (referent) मे परिवर्त्तन। यथा रामायणक 'विमान'।

2. अर्थक उधार (semantic borrowing)- to take steps (अंग्रेजी), कदम उठाना (हिन्दी)।

3. स्थानान्तरण द्वारा संज्ञा देब (नामकरण)। एहि श्रेणीमे अलंकार पर आधारित सभ परिवर्त्तनकेँ रखैत छथि।

4. अर्थविकार यथा– रैलीवाइसिकिलक स्थल मे रैली। ओहिना एम्बैसेडर (गाड़ी), लाम्ब्रेटा (स्कूटर) आदि।

वेलाण्डर रूपकक चर्चा नहि करैत छथि परंच एक अन्य अधिकारी विद्वानक मतेँ अर्थविकारक अध्ययन कएनिहार भाषाशास्त्रीकेँ रूपक मात्रसँ सरोकार राखब आवश्यक।

व्यवहारात्मक वर्गीकरण [Functional classification] क समीक्षा करबासँ पूर्वहि उलमान ई विचार प्रकट करैत छथि जे निम्नलिखित दू प्रकारक अर्थ-विकारकेँ पृथक् राखब आवश्यक। (क) भाषात्मक रूढ़िवादक (Linguistic conservatism) कारण अर्थ विकार तथा (ख) भाषात्मक नवाचारस्थापनक (linguistic

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

innovation) कारण अर्थविकार–

गुस्ताफ स्टर्न[17] भाषाक रूढ़िवादसँ उत्पन्न अर्थ-विकारक तीन प्रकार मानैत छथि–

1 निर्देश्यमे वास्तविक परिवर्त्तन । यथा 'पत्र' [तालपत्र, भूर्ज, बसहा कागत, कोनो कागत] ।

2 निर्देश्यक विषयमे अवगममे परिवर्त्तन, यथा Atom जकर व्युत्पत्तिमूलक अर्थ 'अविभाज्य' होइत छैक, परमाणुक अर्थमे एखनहु व्यवहृत होइत अछि, यद्यपि आब सभ वैज्ञानिक जनैत छथि जे परमाणु अविभाज्य नहि होइत अछि ।

3 निर्देश्यक प्रति भावनात्मक परिवर्त्तन, यथा, 'वाममार्गी' ।

वुण्ड्ट (Wundt), शुखार्त्त (Schuchardt), रूदे (Roubet), गोम्बोच (Gombocz)क मतक संक्षिप्त व्याख्या करैत अन्तमे उलमान अर्थविकारक व्यवहारात्मक वर्गीकरण एहि प्रकारेँ करैत छथि[18] :

क. भाषात्मक रूढ़िवादक कारण अर्थ-विकार ।

ख. भाषात्मक नवाचारस्थापनक कारण अर्थ-विकार ।

I संज्ञा (अभिधान)क स्थानान्तरण–

[i] भावसादृश्यक द्वारा ।

[ii] भावसामीप्यक द्वारा ।

II भावक स्थानान्तरण–

[i] संज्ञाक सादृश्यक द्वारा ।

[ii] संज्ञाक सामीप्यक द्वारा ।

III मिश्रित परिवर्त्तन ।

स्थानाभावक कारणेँ अर्थविकारक व्यवहारात्मक वर्गीकरण पर विचार करब संभव नहि । तेँ एकर उल्लेख मात्र कएल ।

एहि निबन्धक अन्तमे अर्थविज्ञानक क्षेत्रमे अधिकारी सैद्धान्तिक गुसाफ स्टर्नक वर्गीकरणक संक्षेपमे उल्लेख करैत, एहि दुनू मतक सादृश्यक दिशि पाठकक ध्यान आकर्षित करब । स्टर्नक वर्गीकरणकेँ उलमान प्रायोगिक वर्गीकरणक (empirical classification) नाम देलैन्ह अछि । स्टर्न महोदय अर्थविकारक निम्नलिखित सात श्रेणी करैत छथि–

(क) वाह्य कारण–वर्ग I आदेश (substitution)

(ख) भाषात्मक कारण–

[I] शब्दक सम्बन्धमे परिवर्त्तन–

(i) वर्ग (ii) उपमान (उपमिति)

(ii) वर्ग (iii) लाघव

[II] निर्देश्यक सम्बन्धमे परिवर्त्तन

(i) वर्ग 'vi', नामकरण

(ii) वर्ग 'v', स्थानान्तरण

[III] आत्मगत सम्बन्धमे परिवर्त्तन–

(i) वर्ग 'vi' परिवृत्ति 'Permutation'

(ii) वर्ग 'vii' अनुरूपीकरण (adequation)

व्यवहारात्मक वर्गीकरण	*स्टर्नक वर्गीकरण*
I (i) भावसादृश्य	II उपमान
I (ii) भावसामीप्य	(a) संयोजनीय
II (i) संज्ञासादृश्य	(b) परस्पर संबन्धिक
	(c) ध्वन्यात्मक
II (ii) संज्ञासामीप्य	आनुषंगिक समाघात
	III लाघव
	IV नामकरण
III मिश्रितस्थानान्तरण	V स्थानान्तरण
	VI परिवृत्ति

ग्रन्थ-निर्देश :

1. L. Bloomfield : *Language.* reprinted London 1957. पृ० 11.
2. Ibid. पृ० 12.
3. Stephen Ullmann : *The Principles of Semantics.* 2nd edn: Oxford 1957.
4. C. K. Ogden and I. A. Richards : *Meaning of Meaning.* 4th ed. London 1936.
5. Ferdinaud de Saussure : *Course in General Linguistics.* Tr. Wade Baskin. पृ० 67.
6. Ullmann op. cit. पृ० 39.
7. Ogden & Richards. op. cit.
8. De saussure. op cit. पृ० 68.
9. Ullmann. op. cit पृ० 72.
10. de Saussure. op. cit. पृ० 66-67.
11. Bloomfield. op. cit. पृ० 25-26.
12. Ullmann. op. cit. पृ० 70.
13. de Saussure. op. cit. पृ० 73-74.
14. Ullmann. op cit पृ० 177.
15. Ullmann. op. cit पृ० 203-204.
16. Ullmann. op. cit. पृ० 205.
17. Gustaf Stern : *Meaning and Change of Meaning with special reference to the English Language.* Goeteborgs Hoegs kolas Arsskrift, XXX Viii, 1932.
18. Ullmann, Op. cit. पृ० 220.

निबन्धक सामग्रीक उद्गम उपर्युक्त ग्रन्थ सभ, परंच उदाहरण यथासंभव संस्कृत एवं मैथिलीसँ देल गेल अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नञ्व घर खसय पुरान घर उठय

□ *प्रो. श्री बैद्यनाथ सरस्वती*

अपनासँ पैघकेँ सम्मान दी, हुनक बात मानी, पैर छूबि प्रणाम करी, हुनक सोझामे उच्चासन पर नहि बैसी, जोरसँ नहि हँसी आदिक निर्देश बाल्यावस्थामे देल जाइत छलै। इतरजातिक एवं अपनासँ न्यून वर्णक बूढ़केँ सम्मानजनक शब्दसँ सम्बोधित करबाक शिष्टाचार रहै। अखनो भलमानुसक गाममे ई व्यवहार छैक, परन्तु अधिकांश लोक आब ई सब बात बिसरि रहल अछि। नञ्ब युगक नञ्ब लोक, नञ्ब विचार नञ्ब व्यवहारमे एहि सभक मान्यता नहि रहि गेलैक अछि। पुरान घर ढनमना रहल अछि और एक एहन नञ्ब घर ठाढ़ भए रहल अछि जाहिमे माय-बाप, सासु-ससुर ओ बूढ़लोकनिक लेल कोनो स्थान नहि छैन्ह। जेठ-छोटक विचार रहिये नहि गेल। सम्बन्धक मर्यादा टूटि गेल। नञ्ब घरमे नञ्ब संस्कार देल जा रहल छैक। परन्तु ई प्रत्यक्ष अछि जे नञ्ब वस्तुक आकांक्षी भोगविलासी संस्कृतिक बसातसँ सभक जीवन अस्त-व्यस्त भए रहल छैक। ईहो सत्य थिक जे आधुनिक नकलची समाजमे आब जनक सन विदेह, जानकी सन नारी, याज्ञवल्क्य सन ऋषि, विद्यापति सन भक्त, वाचस्पति मिश्र सन विद्याप्रेमी, अयाची मिश्र सन गरीबी ओढ़यवला निर्लोभी और गोनू झा सन विनोदी ने केयो अछि और ने केयो होएत। नञ्ब पीढ़ीक लेल ओ लोकसब अविकसित, अग्राह्य, अनिष्टकारी एवं अंधविश्वासी छलाह। नञ्ब-पुरानक भेद सब दिनसँ रहलैक अछि। परन्तु आइ नञ्ब एवं पुरान पीढ़ीक बीच जाहि तरहक टकराव भए रहल अछि से पूर्वमे प्रायः कहियो कतहु नहि भेल छल। टकराव अछि दू प्रतिमुख विश्वबोधक। नञ्ब घरक नव विश्वबोधमे पश्चिमी संस्कृति श्रेष्ठ अछि। पूज्यनीय अछि। मूलतंत्र छैक-यंत्रकेन्द्रित पश्चिमी संस्कृतिक अनुकरणसँ आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति, एवं आधुनिकीकरणसँ आधुनिक साधन, आधुनिक साधनसँ आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति, एवं आधुनिक उपभोक्ता संस्कृतिक विकाससँ परम मोक्षक प्राप्ति। किन्तु सोचू, जाहि नकली संस्कृतिक हम नकल कए रहल छी ऐस्वयं साप-छुछुन्दरिक गति प्राप्त कए लेने अछि।

सात वर्ष पूर्व यूनेस्को अपन सदस्य देशसभक *"प्राचीन लोक संस्कृति रक्षा"* विषय पर पेरिसमे एकटा महागोष्ठीक आयोजन केने रहय। एहिमे भारतक प्रतिनिधित्व करबाक लेल हमरा पठाओल गेल छल। परिस्थितिवशात् प्रथमहि दिन हम अध्यक्ष महोदयकेँ सम्बोधित करैत कहलियैन्ह – *"सबसँ पहिने तऽ एहि बातक फरिछौट भए जाए जे जाहि पुरान संस्कृतिक कारणेँ हमसब अविकसित कहबैत छी, ओकर रक्षा कियैक करी ? हमरोसबकेँ विकसित देश जकाँ नञ्ब घर चाही, नञ्ब साज-बाज चाही। आओर यदि पुरान संस्कृतिमे किछु दम छै तँ विकसित देश किएक नहि ओ अनुकरण करय ? हमसब पुरान संस्कृति पकड़ने रही मात्र एही लेल जे, विकसित देश अपनाकेँ संसारमे श्रेष्ठ देखाबथि ?"* अध्यक्षमहोदय एहि प्रश्नसँ विचलित भए उठलाह। कहलैन्ह जे यूनेस्कोमे एहि तरहक शास्त्रार्थ नहि होइत छैक। (हुनका लेल) कुसंयोगसँ हम किछुये क्षण पूर्व, गोष्ठीक उपाध्यक्ष चुनल गेल रही। धर्मसंकट तऽ छल किन्तु कहलियैन्ह जे ई प्रश्न उठबैमे हम अपन अधिकारक प्रयोग कए रहल छी। वाद-विवाद बहुत भेलैक। बुढ़बा साहेब सब तँ बड़ खउँझायल। किन्तु यूनेस्कोमे कार्यरत किछु युवा-युवती हमरा ओही साझमे नोत देलक। खयबा काल रंग-बिरंग गपशप भेलै। हम जिज्ञासा केलियै जे *'ई कहइ जाउ जे एही फ्रांस देशमे दू सए वर्ष पूर्व औद्योगिक क्रांति भेल छल जाहिमे राजा-रानी सभक धड़-मूड़ी अलग कए देलकैन्ह। नञ्ब तरहक राज-पाट बनल, नञ्ब घर उठल, पुरान वस्तु सभकेँ समुद्रमे फेकि देल गेल। आब ओही पुरान संस्कृतिक रक्षामे पश्चिमी देशक विकसित लोक एतेक व्यग्र कियेक छथि?* युवा मित्र सब कहलैन्ह जे–*'हमरासभक नञ्ब घर अशान्त आओर अन्हार अछि। सभामे अहाँक प्रश्न उचित छल परन्तु नञ्ब लोककेँ एकर कोनो उत्तर नहि अछि।'*

ओहि गोष्ठीमे उक्रेन (ओहि समयक संयुक्त सोवियत रूस भा' आइ एकटा स्वतंत्र देश)सँ एक विद्वान आयल छलाह। अंतिम दिन ओ टूटल-फूटल अंग्रेजीमे हमरा कहलैन्ह जे *'अहाँ हमर मित्र छी आओर अहाँक प्रश्नसँ हम बहुत प्रसन्न छी।'* एक वर्ष बाद ओ हमरा 'लोक संस्कृति' विषय पर यूरोपीय देशक महासम्मेलनमे बजओलैन्ह। मैथिल भऽ कऽ एहि तरहक ब्राह्मण-भोजनमे पाछू कोना रहितहुँ, दौड़ले गेलहुँ। ओहि समय उक्रेनमे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

स्वतंत्रता आंदोलनक तेजी छलैक । एक दिन नवतुरिया वर्गक विशाल जुलूस हमर धोती-कुर्त्ता देखि बिच्चे सड़क पर रुकल । किछु काल धरि खूब नाराबाजी चललै, तखन एक युवक कहलक जे '*हमर सभक स्वतंत्रताक शुभकामना करू ।*' हम आशीर्वाद दैत पुछलियै जे '*अहाँ सब स्वतंत्र भेला पर कोन तरहक व्यवस्था करबै तऽ ओ सब कहलक जे अपन भाषा आर पुरान संस्कृतिकेँ फेरसँ जियायब, ढहल-ढनमुनायल गिरजाघरसभक जीर्णोद्धार करब ।*' ओ सब हमर कुर्त्तामे एकटा पदक खोसि नारा लगबैत आगू बढ़ि गेल । दोसर दिन भेने यूरोपीय देशक लोकनृत्य, गान-बजान, पुरान खेल-तमाशाक बड़का मेला देखलहुँ। ओहि ठाम एकटा नकली गामक अजायबघर सेहो देखलहुँ। फूसक घरमे माटिक बर्तन, चरखा, करघा, प्रभृति पुरान वस्तु सजाओल छल । छोट-छिन गिरजाघर सेहो रहैक । अजायबघर बनौनिहारसबसँ गामक जीवन्त रूप बुझि पड़ल । नार-पोआर पसरल ओ सिपाही सबकेँ घोड़ा दौड़ाबैत देखि चमत्कृत भेलहुँ ।

घुरतीमे रुकबाक छल । मास्कोवाक गिरजाघर देखलहुँ चिक्कन-चुनमुन, मोमबत्तीक प्रकाशसँ जगमगाइत आ प्रार्थना करैबाला सबहक बेसी भीड़ । दुभषियाकेँ पुछलियैन्ह जे '*अहासंभक धर्मविरोधी साम्यवादमे गिरिजाघर कोना ठाढ़ अछि ?*' तऽ कहलन्हि जे '*हमरासब बाहरक दुनिया लेल बड़का देश छी किन्तु छी यथार्थमे युद्धक हथियार बनबैवाला एकटा गरीब लोहार देश, जाहिमे साम्यवादसँ दलित एवं भूखसँ पीड़ित लोकसब गिरजाघर वापस आबि रहल अछि ।*'

पहिल बेर जखन पेरिस गेल रही तखनहुँ देखने छलहुँ जे रूसी गिरजाघरमे ठसमठस भीड़ और फ्रांसीसी सभक गिरजाघरसब उजाड़ अन्हार । पुछलिये तऽ स्थानीय लोकसब कहलक जे गिरजाघरमे भूत बास करैत छैक। सदति काल ईसामसीह सूली पर लटकल देखाइत छथि । पादरीसब पीठ घुमओने प्रार्थना करैत अछि। ओहि ठाम युवा वर्गकेँ भारतीय नृत्य-संगीत, योग-तंत्र तथा *हरे राम हरे कृष्णक* रंगमे रंगल देखलहुँ । चीन गेलहुँ तँ ओहि ठाम गिरजाघर आ बौद्ध मंदिरमे खयबा-पियबाक वस्तु बिकाइत देखलहुँ । देशक धनसँ मजिस्दक रंग-टीप निखरल रहैक । एक ठाम मस्जिदक भीतरमे दोकान, जाहिमे जानवरक हड्डी पर कुरान शरीफक आयत लिखल, ट्रांजिस्टर आर बड़का-बड़का पेटी सब बिकाइत छलैक । चीनी विद्यार्थीसब कहलक जे *हमसब धर्मक विषयमे किछु नहि जनैत छी । दर्शनोंसँ अपरिचित छी। कॉनफ्यूसियस केर नामो नहि लऽ सकैत छी ।*' परन्तु प्राचीन लोकगीतक कैसेटसब बाजारमे बिकाइत देखलहुँ। लोकसब बहुत नीक-अपन मैथिलसब जकाँ । ठूसि-ठूसि कऽ अतिथिकेँ खोआनाइ आर रेलवे स्टेशन तथा विमान-पत्तन पर सर-सम्बन्धीकेँ छोड़ै काल भोकारि पारि कए कानब, आदि ।

आस्ट्रेलियामे आदिवासीसभक स्वप्नकालक प्राचीन चित्रसँ सउँसे हाट-बाजार चमकैत देखलहुँ । केरेन्स शहर मे रतुका हाट लगैत छैक । राति दस बजेसँ भोर पाँच बजे तक । अपनो देशक पुरान वस्तुसब ओहि हाटमे बिकाइत देखलहुँ । विदेश-भदेशमे एक मैथिल शाकाहारी जे पियाजुओ नहि खाथि, तिनक दशा स्वयं भगवान व्यासो नहि पूर्ण रूपसँ वर्णन कऽ सकैत छथि । खाद्य वस्तुक अनुसंधानमे एक दिन एकटा दोकान पर ठाढ़ रही । सत्रह-अठारह वर्षक कन्या आबिकए कहलक जे '*हम शकाहारी छी आर वृन्दावनमे कए मास धरि रही । हम अहाँक लेल खेनाइ बनबा देब ।*' बुझू साक्षात् अन्नपूर्णाक दर्शन भेल । प्रात भेने सिडनी गेलहुँ । ओहिठाम एकटा यूरोपीय मूलक आस्ट्रेलियन मित्रक घर पर रुकलहुँ । खयबा-पिबाक तऽ खूब सुविधा रहैक किन्तु जखन ओ अपन दु:ख कहलैन्ह तँ क्षुब्ध भऽ उठलहुँ । हुनकर तीनू धीया-पुतासब तीन ठाम आनक घरमे रहैत छैन्ह आर ओ बूढ़ा-बूढ़ी असकरे कहुना जीवन खेपि रहल छथि । जाहि दिन हम हुनका ओहिठाम पहुँचलहुँ ओहि साँझमे हुनकर एकलौता बेटा एक युवतीक संग हमरासँ भेट करबाक हेतु पहुँचल । हमर मित्रक पत्नी ओहि युवतीसँ परिचय करबैत कहलैन्ह जे '*ई हमर पुतोहु थिकीह* । एतबा सुनैत देरी ओ युवती प्रतिवाद करैत हुनका एहन चपेटलक जे बेचारी बूढ़ी सटक सीताराम । युवतीकेँ पुतोहि शब्दसँ सम्बोधित होएबामे हीनताक बोध भेलैक। मित्र कहलैन्ह जे *आस्ट्रेलियामे चालिस प्रतिशत युवा-युवतीसब बिना विवाहेक अपन प्रेमी संग रहि रहल अछि और माय-बाप सर-सम्बन्धीसँ कोनो मतलब नहि। एहिठामक युवावर्गकेँ आदिवासी जीवनसँ बहुत लगाव छैक आओर ओकरे सभक 'स्वकालक' चित्र सजाबैत आ ओकरे गीत गबैत रहैत अछि ।*

एहि संस्मरणमे संसारक एक विचित्र मेला देखि रहल छी । एक दिस तऽ आधुनिक विश्वकर्मासब मायावी यंत्रसँ आकाशीय संस्कृति बना रहल छथि, बड़का-बड़का देश-सब आकाशमे सीमा-सरहद बान्हि रहल छथि, खुट्टा-खुट्टी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गाड़ि रहल छथि आर सुनैं छी जे पैघलोकसब तऽ ओहिठामक सबटा स्थान खरीदि लेने अछि । आब प्राय: एको धूर नहि बचल छैक । दोसर दिस देखि रहल छी कारुणिक दृश्य । नऽब पीढ़ीक किछु लोक कहि रहल छथि *जे नऽब घर अशान्त आ अन्हार अछि ।* किछु लोक विक्षिप्त भेल कखनो हिप्पी, कखनो हरे राम - हरे कृष्ण, कखनो पुरान वस्तु, पुरान नाच-गान, कखनो योग-तंत्रक चमत्कार त कखनो 'स्वप्नकालक' जीवन जीवैत । किछु विद्रोही आतंकवादी बनल नाना प्रकारक जघन्य हिंसा पर नऽब घरकेँ ध्वस्त करबा लेल मंदिर, मस्जिद आओर गुरुद्वारा मे नुकायल अछि । किछु विशिष्ट लोक प्राचीन ज्ञान आ प्राचीन संस्कृतिक पुरान घरमे-शान्ति आ प्रकाशक अनुभव कय रहल छथि । आइजनवर्ग, कपेरा, प्रिगोजीन, डेविस, गिविन सबसन वैज्ञानिक यूनेस्को सन अन्तरराष्ट्रीय संगठन पुरान घरक महिमा गाबि रहल छथि ।

कलियुगक वर्णन गोस्वामी श्री तुलसीदासजीसँ बढिकऽ अओर के कऽ सकैत अछि ? ओ तँ द्रष्टा छलाह । परन्तु सर्वसाधारणोकेँ एतेक बात स्पष्ट छैक जे 'यांत्रिक भस्मासुर' मनुष्यकेँ खिहाड़ि रहल अछि । आधुनिक विश्वकर्मासब ई बात बिसरि गेल छथि जे पंचमहाभूतमे आकाशो एकटा महाभूत थिक । तेँ ओतहु जाए क्यो अमर नहि रहत । अमरत्वक अभिलाषा ओहूठाम गेलासँ पूरा नहि होयत । त्रिशंकु भेल मनुष्य कखनो नऽब घर दिस देखइत अछि आओर कखनो पुरान घर दिस । यदि मनुष्य ब्रह्माक सृष्टिकर्त्ता नहि तऽ नऽब घरक एतेक गुमान की? यदि ओकर आदि अन्त परमेश्वरमे छैक तखन तऽ यैह कामना जे 'नऽब घर खसय पुरान घर उठय ।'

उत्तरभारतीय शास्त्रीय गायन

पक्का गायन

□ *पं. श्री रामाश्रय झा*

ओ प्राचीन शास्त्रीय संगीत कहन छल, जकरा सुनि कऽ पशु-पक्षिओ मोहित भए जाइत छल ओ पाथरो पिघलि जाइत छल । की एखनुका हमर श्रोतागण ओहि पशु-पक्षी ओ पाथरहुसँ गेल-गुजरल छथि जे हुनकासभ पर आजुक शास्त्रीय संगीतक प्रभाव नहि पड़ैत अछि ? पक्का गायनक नामहिसँ किछु लोक भड़कि उठैत छथि। उदाहरणक लेल यदि कोनो संगीत-सम्मेलनमे नृत्यक कार्यक्रमक बाद शास्त्रीय गायनक व्यवस्था होइत अछि तखन सम्पूर्ण भवनक दृश्य ओहिना भए जाइत अछि जेना कन्याक विवाहमे बरियातीक बिदाइ भेलाक बाद जनवासाक। अर्थात् जतए केवल प्रबन्ध कर्त्ता, बिजुरीक सामग्री ओ दरी-चादरि समेटनिहारहिटा दृष्टिगोचर होइत अछि । एहितरहेँ नृत्यक उपरान्त संगीत-सम्मेलनक दृश्य भए जाइत अछि, जतए किछु संगीत-मर्मज्ञ ओ शास्त्रीय संगीतक किछु अल्पज्ञ श्रोतालोकनि ओ संगीत-सम्मेलनक आयोजनकर्त्ता विवश भए बैसल रहि जाइत छथि । कतए ओ प्राचीन शास्त्रीय गायन-पद्धति, जकरा सुनिकए हरिण आदि पशु मन्त्रमुग्ध भए आकृष्ट होइत छल ओ पाथर पिघलि जाइत छल आओर कतए आजुक शास्त्रीय गायन-पद्धति, जकरा सुनब तँ दूरि रहल, प्रदर्शनक नामहिसँ लोक पलायमान भए जाइत छथि । पं. विष्णु दिगम्बर जीक गुरु संगीताचार्य श्री इञ्चलकरजीक संगीतसँ सम्बन्धित एकटा मराठी लेखकेँ पं. देवधरजी हिन्दी रूपान्तर कए 'संगीत कला विहार' नामक पत्रिकामे छपबौने छलाह जाहिमे संगीताचार्य श्री इञ्चलकरजी लिखने छलाह जे एक बेर ग्वालियर संगीत-सम्मेलनमे रामपुरक प्रसिद्ध ध्रुवपद-गायक उस्ताद वजीर खाँ राग बिलावलमे ताहि तरहेँ आलाप कएलन्हि जे ओतए बैसल सभ श्रोतागण आत्मविभोर ओ विह्वल भए गेलाह । लोकसभाकेँ आनन्दसँ अश्रुपात होमए लगलैन्हि। ई छल संगीत ओ गायनक साधना आ ओ प्रदर्शनक चमत्कार, जकरा सुनि कए श्रोतागण आत्मविभोर ओ विह्वल भए जाइत छलाह । मुदा आजुक संगीत-सम्मेलन शास्त्रीय गायनमे एतबहु आकर्षण ओ चमत्कार नहि रहि गेल अछि जे ओतए बैसल श्रोतागणक मुङफली फोड़ब ओ पान-सुपारी चिबाएब, महिलाक स्वेटर बुनब ओ स्वेटरक बुनाइक सम्बन्धमे गपसप करब बन्द कए सकए । संगीत-सम्राट तानसेनक गायन सुनि कए सन्तकवि सूरदासजी कहने छलाह–

विधिना अस जिय जानिकै, शेषहिं दई न कान ।
धरा मेरु सब डोलते, तानसेन की तान ।।

हमर हिन्दू धर्मक ग्रन्थक अनुसार ई पृथ्वी शेषनागक सहस्रफण पर टिकल अछि अर्थात् शेषनाग अपन सहस्रफण

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पर पृथ्वीकेँ धारण कएने छथि । आओर ई सर्वविदित अछि जे सर्पकेँ कान नहि होइत अछि । एहि प्राकृतिक तथ्यकेँ ध्यानमे राखि कए कवि सूरदासजी उपर्युक्त दोहा मे कहलन्हि अछि जे ब्रह्माजी मनमे बिचारि कए ओ जानि-बूझिकए शेषनागकेँ कान नहि देलन्हि, अन्यथा संगीतसम्राट तानसेनक 'तान' सुनिकए शेषनाग डोलए-झूमए लगताह, जाहिसँ ई धरा (पृथिवी) ओ मेरु (पहाड़) हिलए-डोलए लगैत अर्थात् सदिखन भूकम्प होमए लगैत। ई छल शास्त्रीय गायनक (पक्का गायनक) चमत्कार ! मुदा आइ तँ हमरा कलामे क्षयरोगक कीटाणु पैसि गेल अछि । ओहि कीटाणुक दिशि ध्यान नहि दए श्रोतालोकनिकेँ दोष देब कलाकारक लेल साधारण बात भए गेल अछि । कहल जाइत अछि जे श्रोतागण संगीत बुझितहि नहि छथि। ई कहनिहार कलाकार की एहि प्रश्नक उत्तर दए सकताह जे आजुक हमर श्रोतागण ओहि हरिण, पक्षी ओ पाथरहुँसँ अधिक ज्ञानहीन, चेतनाशून्य भए गेल छथि, जाहिसँ आजुक शास्त्रीय गायन हुनका लोकनिकेँ प्रभावित नहि कएं पबैत अछि ?

यद्यपि कोनो कला ओ विद्याक उत्थान वा पतन तत्कालीन राजाश्रय पर निर्भर करैत अछि । किएक तऽ साधना ओ अध्ययनक लेल स्वतन्त्रता ओ निश्चिन्तता अत्यन्त आवश्यक छैक; जे आजुक कलाकारकेँ प्राप्त नहि छैक । ध्रुवपदक स्वर्णयुगमे कलाकारलोनिकेँ राजाश्रय प्राप्त होएबाक कारणेँ साधनामे निश्चिन्तता छलैन्हि । ताहि कारणेँ ओसभ अपन कलामे चमत्कार उत्पन्न करबामे समर्थ छलाह । मुदा एखनुका संगीत-कलाकार लोकनि राजाश्रयसँ वंचित होएबाक कारणेँ मात्र धनोपार्जनक लेल व्यवसायक उद्देश्यसँ संगीत-साधना करैत छथि । परिणामत: संस्कारहीनो लोक एहि क्षेत्रमे आबि जाइत छथि । एहि विषयमे किछु विद्वानक कथन छन्हि जे संगीत तँ सभक सुनबाक वास्ते अछि मुदा सभक साधना करबाक वास्ते नहि अछि । यथा–

नाद-ब्रह्म महिमा है अनन्त ।
की जाने राजा की जाने सन्त ।।

मुदा आइकाल्हि तँ सभ लोक संगीत-प्रवीण, संगीत-विशारद, संगीत-मार्तण्ड भए जाइत छथि । एकटा कहबी अछि जे

रहने को घर नहीं नाम पृथ्वीपति ।
घरमे दाना नहीं नाम लक्ष्मीपति ।।

बिल्कुल इएह स्थिति अछि आजुक संगीतज्ञक, जे मात्र धनोपार्जनक लेल संगीत-साधना करैत छथि । ई तँ नाद-ब्रह्मक तिरस्कार ओ अपमान थिक । संगीतक साधना मात्र स्वान्त: सुखाय, भगवदुपासना ओ अर्चन-वन्दनादिक वास्ते कएल जाए तखने संगीतमे ओ चमत्कार दृष्टिगोचर होएत, जे चमत्कार प्राचीन संगीतज्ञलोकनिक गायन-विद्यामे छल ।

आइकाल्हि तँ संगीतक आयोजन ओ प्रदर्शन दुनू धनोपार्जनक साधनमात्र बनि कए रहि गेल अछि । आइ संगीतक श्रेष्ठ कलाकारलोकनि चालीस हजार, पचास हजार टाका पर अपन संगीत-प्रदर्शन करैत छथि, जखन कि संगीतक श्रेष्ठ कलाकारलोकनिक ई लक्षण अछि जे ओ अपन संगीत ककरो सुनएबे नहि करताह, यदि सुनएबो करताह तँ नि:शुल्क । मुदा आजुक युगमे तँ

निराचार जो श्रुति-पथ त्यागी ।
कलियुग सो योगी सो विरागी ।।

ई तँ भेल प्रदर्शन कएनिहार कलाकारक लक्षण । एकर अतिरिक्त आयोजक ई सोचैत छथि जे एहि आयोजनसँ हम कतबा धनराशि बचाए ली जाहिसँ हमर एकटा बिल्डिंग बनि जाए । जखन कि एहि प्रकारक आयोजन केवल जनकल्याणक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि । मुदा आइ तँ

गुरु सिख अन्ध-बनधिर कर लेखा ।
एक न सुनए एक नहि देखा ।।

उपर्युक्त चर्चामे संगीत-सम्मेलनक आयोजनक चर्चा तँ प्रसंगवश कएल गेल अछि । मुदा वास्तविकता ई अछि जे कोनो कला ओ विद्याक ह्रास ओ प्रगति ताहिसँ सम्बन्धितलोकनि पर निर्भर करैत अछि । अर्थात् शास्त्रीय संगीतक ह्रासक मुख्य दोषी संगीतक कलाकारलोकनि छथि, जे संगीतक देवतत्वकेँ बुझबाक लेल साधना ओ चेष्टा नहि करैत छथि । केवल स्वर, राग ओ तालक ज्ञानहिटा संगीतशास्त्र नहि थिक अपितु ओकर अनेकानेक अंग ओ उपाङ्ग होइत अछि, जकर ज्ञान शास्त्रीय-संगीतगायनक वास्ते अत्यन्त आवश्यक अछि । जेना शुद्ध खान-पान, शुद्ध, शान्त चित्त ओ आत्म-संयम। व्यक्तित्वमे आकर्षण, वेश-भूषामे सादगी। सीमित धनोपार्जन तथा सन्त-स्वभाव ।

एकर संगहि गायन-सम्बन्धी किछु अन्य आवश्यक तत्वहुँ पर ध्यान देबाक चाही । जेना–

1. बन्दिशक कविता सार्थक ओ भावपूर्ण हो, यथा–

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अनाथनाथ तू हो तेराही नाम अनन्त जगदाधार, एहि शब्दालापक काल शब्दक उलट-फेरमे अर्थक अनर्थ नहि होएबाक ध्यान रखबाक चाही । यथा– 'अनाथ नाथ तू ही' ओ 'तूही अनाथनाथ' किंवा 'तेरो ही नाम अनाथनाथ' ओ 'तेरो ही नाम अनन्त जगदाधार' वा 'अनन्त नाम तेरो ही तू ही जगदाधार' एही प्रकारक शब्दक उलट-फेर सार्थक ओ भावपूर्ण अछि । मुदा एकर विपरीत 'तू ही अनाथ तेरो ही नाम अनाथ' किंवा 'नाम अनाथ तेरो ही' ओ तेरो ही नाम अनन्त अनाथ' एहि तरहेँ शब्दालापमे जाहि अर्थक अनर्थ होइछ ताहिसँ बचबाक लेल पूर्ण ध्यान देबाक चाही ।

2. शुद्ध मुद्रा ओ शुद्ध वाणीक ध्यान ।
3. रागक विस्तारमे पुनरावृत्तिक ध्यान ।
4. व्यर्थ तान ओ अलंकारादिक बोझसँ भावक हत्या नहि होमए, तकर ध्यान ।
5. स्थान, श्रोता ओ समयक परिज्ञान ।

पूर्वपरिगणित तथ्य स्वर, राग ओ तालसँ पृथक् अछि, जे शास्त्रीय संगीतक कलाकारक वास्ते अत्यावश्यक थिक ।

यदि हमसभ गम्भीरतापूर्ण विचारपुरस्सर अपन शास्त्रीय संगीतक गायन-पद्धतिकेँ पुनः देवत्व प्रदान करबाक प्रयास नहि करब, तखन मात्र बाह्य उपचार (सरकारक माथे एहि कार्यमे अपार धनराशिक अपव्यय ओ आकाशवाणीक प्रसारणमे शास्त्रीय संगीतक प्रचारक नाटकीयता किंवा संगीत-सम्मेलनहुँमे मनोरंजनक उद्देश्येमात्र) सँ शास्त्रीय संगीत गायन-विद्या लोकप्रिय ओ हृदयग्राही नहि भए सकत । कलाकारक अतिरिक्त आजुक श्रोतालोकनि, संगीत-सम्मेलनक आयोजकलोकनि, आकाशवाणी ओ समालोचकोलोकनि संगहि संग यदि निष्पक्ष ओ उदार भावसँ अपन-अपन कार्यक्षेत्रमे तत्पर भए जाथि तँ ई ध्रुवसत्य अछि जे एहि दिशामे गुणात्मक सुधार अवश्य होएत जाहिसँ ई शास्त्रीय-संगीतगायन (पक्का गायन) विद्यामे पुनः देवत्व प्रतिष्ठित होएत । इति शम् ।

जो नहि जाने गीतरस, फिरि नहि देखा देश ।
मैं पूछौं तो सों सखी, पशु ते कवन विशेष ।।

●

कीर्तिलताक प्रासंगिकता

□ डा. श्री बदरीनारायण झा

कीर्तिलताक अध्ययन प्रायः चारि सए वर्षसँ होइत आवि रहल अछि । समयक प्रभावसँ शब्दसभक अर्थ बदलैत रहैत छैक । अतः एकर अर्थ दुरूह होअय लागल । कीर्तिलता पर सर्वप्रथम टीका 1615 ई० मे जहाँगीरक समयमे संस्कृत भाषामे गुजरातक खंभात क्षेत्र मे भेल। कालक्रमेँ सन्दर्भ बदललासँ शब्दसबं और दुरूह होइत गेल । ज्योतिरीश्वरक समयमे शब्दक रूप छल 'देखुअह'। विद्यापतिक समयमे भेल 'देखुअ'। तकर बाद 'देखु' ओ एखन अछि 'देखू'। अस्तु ओक पाठान्तरमेसँ शब्दक उपयोगी रूप स्थिर करैक लेल सन्दर्भ, परिप्रेक्ष्य दिश ध्यान देबं आवश्यक । 'बनियानि' सभक वर्णनक्रममे आएल अछि -

सब्बहु केरा रिजुनयन, तरुणी हेरथि बंक ।
चोरी पेम पियारिओ, अपुने देखि संसक ।

एहि 'रिजु'क पाठान्तरमे अछि 'रिज', 'रिअ'ई तीनू पाठान्तर संभव। अर्थ सभक एके । 'रिज' सँ अवहट्ट मे 'रिअ' बनबे करत । किन्तु रमानाथ झाक कीर्तिलतामे एकटा विलक्षण पाठान्तर अछि, से विचारणीय । ओहिमे अछि 'सब्बहुके वारिजनयन' । एहिठाम 'सब्बहु' शब्द जनसमूह लेल आएल अछि । बाजारमे किननिहार पुरुष केँ आँखिक सुन्दरतासँ बेचनिहारि बनियानि सबकेँ कोनो आकर्षण तँ छलनि नहि, हुनका सबकेँ बेचनाइसँ मतलब छलनि। ओना मैथिलीक 'व' तथा बंगलाक 'र' प्रायः समाने अछि। अतः पाठान्तर संभव । अगिला पाँतीसबसँ ई साफ अछि जे 'सब्बहु' शब्द जनसमूह लेल आएल अछि। पाँती सब अछि–

संभाषणे किच्छु बेआज कइ,
ता सओं कहिणी सब्बे कह ।
बिक्कणइ वेसाहइ अप्पुरसे,
दिट्ठि कुतूहल लाभ रह ।।

भाषाविज्ञानक दृष्टिमे कीर्तिलताक उपयोगिता विशेष अछि । एकर शब्द एवं उच्चारण-प्रवृत्ति अनेक भाषामे भेटत । 'केर' शब्दक प्रयोग अनेक भाषामे भिन्न-भिन्न रूपेँ अछि । विद्यासागर लिखित एक किताब अछि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भूगोलकेर परिक्रमा । एही 'केर' क रूप अछि मैथिलीमे 'के' 'क', तथा 'र' । भागलपुर पूर्णियाँ क्षेत्रमे बाजल जाइत अछि 'बूटर दाल' । 'सुन लो राजार झी'– ई ओड़ियामे अछि । ओड़ियामे 'झी' क अर्थ भेल बेटी । समस्तीपुर क्षेत्रमे 'राउर' 'रउरा' अछि । राजस्थानमे 'रावर' बंगलामे 'रामेर भाइ' अछि । 'राजा' शब्दसँ अवहट्ठमे राए 'राअ', 'राय', 'राव', 'राइ' आदि शब्द बनैत अछि । फ्रेंच अंग्रेरिजयो मे राजाकेँ 'राई' तथा रानीकेँ 'राइन' कहल जाइछैक चौधराइन जकाँ । अत: अवहट्ठ भाषाक महत्व व्यापक अछि । बृहस्पतिसँ 'बेहप्पय' बनैत अछि, अवहट्ठमे । तहिना बृहत्तरसँ वेहत्तर- वेहतर बनत आ अही वेहत्तरसँ अंगरेजीमे बनत 'Better' (r प्राय: अनुच्चरित) अत: Good better best मे better सेहो समीचीन। तहिना 'नक्त' शब्द प्राय: अर्बुद क्षेत्रमे 'नघ्त' जकाँ उच्चरित अछि, अस्तु। 'नक्त' रात्रि लेल Night- एहिठाम gh सार्थके।

अहिना अवहट्टक अनेक प्रवृत्ति एवं शब्द अनेक भाषामे अछि ।

स्पिनोजा यहूदी छलाह। लैटिनमे हुनक दर्शनक ग्रन्थ अछि । ब्रह्मसूत्रक 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' जकाँ हुनक एक अध्याय अछि Amor dei आ निष्कर्ष अछि Devas sive natterae, ई 'अमर देई' तथा देव: शिव नटराएक रूप थिक से कहबामे अनौचित्य नहि ।

ओइनबारक इतिहास समुचित रूपेँ लिखल जएबाक चाही । शिवसिंह पंच गौड़ेश्वर छलाह । घाघरा नदीसँ आ-समुद्र राज्य छलनि । पाछू आबि परिवारमे विभाजन भेलनि। पूब दिशमे बबुआन लोकनि अपन स्वतंत्र वर्चस्व नवद्वीपमे स्थापित कएलिन ।ओलोकनि कुमार कहबय लगलाह । प्राय: कुमार सन्तोष एहिमे प्रमुख छलाह । कलकत्तामे एकटा राजा संतोष सड़क अछि । एकर ऊहापोह चाही । एहि परिवारमे आ किछु सदस्य कुमर रायचौधरी कहबैत छथि । सेवानिवृत्त थलसेनाध्यक्ष से हो राय चौधरी थिकाह । परिचय जानैक प्रयास होएबाक चाही।नवद्वीपसँ ई लोकनि कोना [illegible]ह, तकर जिज्ञासा। बुझि पड़ैये मराठा इतिहासक 'मुंड कटाइ' सन्दर्भ हो ।

●

तरौनी ग्रामक परमहंस श्री विष्णुपुरी

□ डा. श्री रामचन्द्र मिश्र

श्री विष्णुपुरी एक संन्यासी वैष्णव संत छलाह, जे भगवान् विष्णुक प्रति अपन अद्वैत आओर अनन्य भक्ति भावनाक कारणेँ बंगालसँ गुजरात धरि लोकविश्रुत भेलाह। *भक्तिरत्नावली, भागवतामृत, हरिभक्तिकल्पलता* आ *वाक्यविवरण* संज्ञक लब्धप्रतिष्ठ हुनक कृतिसभ छल ।[1]

भक्तिरत्नावली मे ओ श्रीमद्भागवतक भक्तिपरक सरस श्लोककेँ चुनि आ संगृहीत कए 'भक्ति'क 'रत्नावली' प्रस्तुत कयने छलाह, जे वैष्णव भक्तसभक कण्ठहार बनल । ततबे नहि, देशक 'गौडीय सम्प्रदाय' क प्रवर्तक आ मधुरा भक्तिक विरक्त तथा निस्पृह वैष्णव श्री चैतन्यमहाप्रभु ओकर भूरि-भूरि प्रशंसा कयने छलाह ।[2] हुनक एहि अप्रतिम प्रदेयक नाभादास अपन *भक्तमाल* आ ओकर टीकाकार प्रियादास, राघवदास अपन *भक्तमाल* आ ओकर टीकाकार चतुरदास, तथा प्रतापसिंह अपन *भक्तमाल* अर्थात् *भक्तकल्पद्रुम* मे प्रशंसा कयने छथि।[3]

अन्त:साक्ष्यक आधार पर मात्र ई उल्लेखनीय थिक, *भक्तिरत्नावली* क अपन प्रत्येक विरचन (भक्तितत्व सम्बन्धी श्लोक-संग्रह) क समाप्ति पर 'पुष्पिका' मे ओ अपनाकेँ 'तैरभुक्त परमहंस' इंगित कयने छथि, जाहिसँ ई सिद्ध अछि जे ओ मिथिलाक छलाह । हुनक ई कथन मिथिला-संस्कृतिसँ अवश्य जुड़ल अछि, परन्तु तथ्य ई थिक जे शकाब्द 1200 सँ पूर्व मिथिलावासी 'मैथिल', 'तैरभुक्त' आदि बाजि अथवा लिखि अपन परिचय देबाक पद्धतिकेँ नहि अपनाओल अछि, मात्र अपन नामक सङ्ग 'मूलग्राम' क प्रयोगक परम्परा छल ।[4] प्रदेशक सम्बद्धताक सङ्ग परिचय देबाक परम्परा उक्त समयक अनन्तर प्रचलित भेल । फलत: एहिसँ ई अवश्य प्रमाणित होइछ, परमहंस विष्णुपुरीक जीवन आओर कार्य-काल उक्त काल- सीमाक अनन्तर पड़ैछ जे देशक 'मध्यकाल' छल, जाहिमे मुसलमानी शासनक दमननीतिक कारणेँ देशमे हा हाकार आ त्राहि-त्राहि छलैक। जेँ ओसभ इस्लामक प्रचार आ प्रसार हेतु दृढ़ संकल्प छल, तेँ प्रबुद्ध हिन्दू ओकर अन्तरालमे हिन्दुत्व आ भारतीयताक संरक्षण हेतु अग्रसर रहलाह ।

मध्यकाल (वि० सं० 1375 सँ 1700 धरि) एक विशेष युग छलैक, जाहिमे सामाजिक, सांस्कृतिक आओर आध्यात्मिक स्तरसँ पद-दलित उत्तर भारतकेँ दक्षिण भारतक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आचार्यसभ शंकर (निर्विशेषाद्वैत), रामानुज (विशिष्टाद्वैत), निम्बार्क (द्वैताद्वैत), माध्व (द्वैत), वल्लभ (शुद्धाद्वैत) आदि द्वारा वेदान्तसँ अनुस्यूत ब्रहमसूत्र, उपनिषद्, गीता आदिक भाष्य द्वारा नवीन प्रेरणा आ बल भेटल आओर वैदिक संस्कृतिकेँ नवीन स्फूर्ति प्राप्त भेल। साथहि मिथिक भूमि, जे बौद्ध आ जैन धर्मक अवैदिक सिद्धान्त प्रतिपादनक कारणेँ जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, मण्डन आदिकेँ विस्मृत कएने छलैक, ओकरहु एक दिशा भेटल। कहबाक आवश्यकता नहि, विष्णुपुरी अपन देश आ मातृभूमिक सांस्कृतिक भित्तिक निर्माणक एक मूल्यवान् आ अविस्मरणीय 'प्रस्तर' सिद्ध भेलाह।

मिथिलाक तरौनी ग्राममे विष्णुपुरीक डीह अछि, जे विष्णुपुरीक नाम पर प्रसिद्ध छैक। साथहि पंजी-प्रबन्ध सँ ई प्रमाणित अछि जे हुनक मूलग्राम कर्महा तरौनी, पिताक नाम रतिधर, माताक नाम मीरा, पितामहक नाम श्रीधर आओर हुनक अपन नाम रमापति छल। अपन संन्यस्त जीवनमे ओ 'विष्णुपुरी' नामसँ लोकविश्रुत भेलाह आओर एहि नाम पर तरौनी ग्रामक डीह प्रख्यात भेल।[5]

विदित अछिजे वाराणसीमे श्री विश्वनाथक शिवालयक समीप विष्णु-मंदिरमे हुनका द्वारा शकाब्द 1555 (ई० 1633), फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि आ शुभ दिन मंगलवारकेँ *भक्तिरत्नावली* तथा ओकर टीका *कान्तिमाला* क रचना-कार्य पूर्ण भेलैक।[6] संगहि इहो सर्वस्वीकृत अछि जे, जखन चैतन्य महाप्रभु हुनक एहि लोक-विश्रुत रचनाक सन्दर्भमे सुनल, ओ ओकरा प्राप्त करबाक हुनकासँ अभ्यर्थना कयल, जे हुनका जगन्नाथपुरीमे प्राप्त भेल। ई सन्दर्भ आ सम्पर्क सत्य अछि, अविश्वसनीय नहि।[7]

भक्तिरत्नावलीक रचनाकाल शक 1555 (ई० 1633) क साथ किछु अपेक्षित तथ्य इंगित कयल गेल छैक, जे वहि:साक्ष्य होयबाक कारणेँ विचारणीय अछि। रचना-कालक श्लोक द्रष्टव्य अछि :

महायज्ञ - शर- प्राण - शशांकगणिते शके।
फाल्गुने शुक्लपक्षस्य द्वितीयायां सुमंगले॥

भक्तिरत्नावली, विरचन 13-16

(महायज्ञ-5, शर-5, प्राण-5, शशांक-1 = शकाब्द 1555)

भक्तिरत्नावलीक प्रस्तुत रचनाकाल पुष्ट नहि होइत छैक, से चिन्तनीय आओर अनुसंधानक विषय अछि। मुदा एतत्सम्बन्धी बहि:साक्ष्य पर दृष्टिपात आवश्यक अछि।

तथ्य तँ ई अछि जे विष्णुपुरीक इंगित ई रचनाकाल ने चैतन्य महाप्रभुक जीवनकालसँ मेल खाइत अछि आओर ने कृष्णदास लोरियाक 'भक्तिरत्नावली' क ई० 1487 मे बंगला छन्द आ बंगला भाषामे कयल अनुवादसँ। श्री लोरियाक एहि अनुवादक सम्बन्धमे दिनेशचन्द्र सेनक कथन अछि जे ई अनुवाद 15मे शताब्दीक आरम्भमे कयल गेल छलैक।[8] इहोसमय विष्णुपुरी द्वारा इंगित समयसँ बहुत पूर्व पड़ैछ।

एहि प्रकारक समग्र भ्रांतिक कारण बंगालमे *भक्तिरत्नावली* आ ओकर रचनाकारक प्रसिद्धि छैक। बंगालमे एहि ग्रंथ-द्वारा वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसारमे विशेष योगदान रहल अछि। एतय ई प्रसिद्ध अछिजे विष्णुपुरी माध्वाचार्यक वैष्णव सम्प्रदायमे जयवर्द्धनक शिष्य आओर सम्प्रदायक दशम गुरु छलाह, जे 13म शताब्दीमे *भक्तिरत्नावलीक* रचना कयल आ 15म शताब्दीक मध्यमे कृष्णदास लोरिया एकर अनुवाद कयल।[9] वस्तुत: भ्रांति-उन्मूलनमे दिनेश चन्द्र सेनक मन्तव्य अधिक समीचीन आ औचित्यपूर्ण अछि।

सम्प्रति एहि सन्दर्भमे तरौनी ग्रामसँ उपलब्ध तथ्य अधिक समीचीन आ प्रामाणिक अछि। तदनुसार विष्णुपुरी ई० 1425-1500 मध्य जीवित रहल छथि।[10] चैतन्य महाप्रभुक जन्म तथा हुनक जीवनक आध्यात्मिक क्रिया कलापसभक समय ई. 1485-1533 मध्य उल्लिखित प्राप्त अछि। एहि कालावधिमे दुनू संतक पारस्परिक सम्पर्क आ चैतन्यमहाप्रभु द्वारा हुनक 'भक्तिरत्नावली' क प्रतिप्राप्ति सम्भावित अछि।

विष्णुपुरी आ हुनक भक्तिरत्नावलीक प्रसंगमे एहि स्थल पर डॉ० सुभद्र झा उल्लेखनीय छथि। हुनक मान्यता आ धारणा छनि जे विद्यापति (ई० 1352-1448) सँ पूर्व मिथिलामे वैष्णव भक्ति-परम्पराक अभाव रहल अछि, परन्तु हुनक समकालीन *कृष्णार्चनचन्द्रिका* क रचयिता रत्नपाणि आओर *भक्तिरत्नावली* क रचयिता विष्णुपुरी दुइ वैष्णव संत भेल छथि। सङ्ग.हि डा० झा द्वारा इहो घटना उल्लिखित अछि जे 314 लक्ष्मणाब्दमे विद्यापतिक *दानवाक्यावली* रत्नपाणिकेँ भेँट कयल गेल छलैन्ह। ई घटना श्री मनमोहन चक्रवर्ती द्वारा जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (न्यू सीरीज) खण्ड 11, पृष्ठ 422 सँ समर्थित अछि।[11]

लक्ष्मणाब्दक सन्दर्भमे सर्व श्री जायवाल[12] आ रायचौधरी[13] क ई मान्यता अछि जे ई संवत् आ ईस्वी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

संवत् मध्य 1119 वा 1120 वर्षक अन्तर अछि । लक्ष्मणाब्द सेन वंशीय राजा लक्ष्मणसेनक राजसिंहासनारोहणक समयसँ परिगणित अछि । फलस्वरूप एहि अन्तर कें 341 लक्ष्मणाब्द मे जोड़ला पर ई. 1460 वा ई. 1461 प्राप्त होइत छैक । ई ओ समय अछि, जखन रत्नपाणि आ विष्णुपुरी अपन-अपन भक्ति-भावना तथा रचनाक करणें लोक-विश्रुत भेलाह। प्रस्तुत काल - निर्णयक अनुसार 'भक्तिरत्नावली' क रचनाकाल ई० 1460 सँ पूर्व सम्भावित अछि। फलत: स्पष्ट थिक, विष्णुपुरी आ हुनक रचनाक प्रसिद्धिक कारणें कृष्णदास लोरियाक ई० 1487 मे बंगला भाषा आ बंगला छन्द मे *भक्तिरत्नावली*क कयल अनुवाद समयक दृष्टिसँ विश्वस्त छैक । *भक्तिरत्नावली*क सन्दर्भमे रचनाकारक अपन अभिमत अछि :

इत्येषा बहुयत्नत: खलु कृता श्रीभक्तिरत्नावली
तत्प्रीत्यैव तथैव सत्प्रकटिता तत्कान्तिमाला मया ।
अत्र श्रीधरसत्तमोक्तिलिखने न्यूनाधिकं यत्त्वभूत् ।
तत्क्षन्तुं सुधियोऽर्हत स्वरचनालुब्धस्य मे चापलम् ।।

[विरचन : 13 - 14]

अन्त:साक्ष्यक आधार पर स्पष्ट अछि जे विष्णुपुरी अपन रचनाधर्मितामे श्रीधरक विचार आ मान्यताक अनुसरण आ अनुकरण कयने छथि । संगहि हुनक ई कथन जे यदि तत्सम्बन्धमे कोनो प्रकारक न्यूनाधिक हो तँ सुधीवर्ग हुनक चपलताकें क्षमा करताह, एहि प्रकार ओ श्रीधरक परम्परामे छलाह ।

श्रीधर भागवतटीकार छलाह, जनिक समय 11 मे शताब्दी मानल जाइत छैक । हुनक भागवतक टीकाक संज्ञा *भावार्थदीपिका* अछि जे भागवतक टीकासभमे प्राचीनतम अछि ।[14] भावार्थदीपिकाक मंगलश्लोकसँ ई प्रमणित अछिजे ओ भागवान् विष्णुक नृसिंहावतारक उपासक छलाह ।[15]

श्रीधरक टीका चैतन्य महाप्रभुकें बड़ प्रिय छल, जे काशीमे स्थित श्री विन्दुमाधवक मन्दिरमे सर्वोत्कृष्ट सिद्ध भेल छल । श्रीधरक गुरुक नाम परमानन्द छल, जे कृष्णक प्रति गोपीभावक उपासक छलाह ।[16] प्रस्तुत तथ्यसभसँ ई असन्दिग्धरूपेण प्रमाणित अछिजे श्रीधर[17] आ परमानन्द[18] मधुरोपासनाक लोकप्रिय संत छलाह।

विवेचित विगत तथ्यसभक सन्दर्भसँ ई प्रमाणित होइछ जे विष्णुपुरीकें अपन पृष्ठभूमिमे भागवतप्रसूत मधुरा भक्तिक परम्परा भेटल छल, फलत: ओ भक्तिपरक 419 श्लोक 13 विरचन[19] मे संगृहीत कयल । एहि संख्यामे विरचन-1 मे 6 सँ 9 धरि चारि श्लोक तथा विरचन -13 मे 11 सँ 16 धरि छओ श्लोक स्वयं हुनक विरचित थिक। एहि गणनासँ स्पष्ट अछि, जे *'भक्तिरत्नावली'* मे 409 श्लोक भागवतसँ उद्धृत अछि जे मुदा प्रथम विरचनक श्लोक भक्तिरत्नावलीक उद्देश्यस्वरूप 'भूमिका' आ अन्तिम विरचनक श्लोक 'उपसंहार' मानव जीवनक निष्कृति आओर आध्यात्मिक साफल्यक सात्विक भावना अभिव्यंजित करैत अछि ।

प्रथम विरचनक श्लोकमे भागवतक प्रदेयसँ अभिभूत विष्णुपुरीक भक्त मानस भक्तिरत्नावली सन ग्रंथ संगृहीत करबा लेल उद्वेलित भेल छल ।[20] साथहि ईहो प्रमाणित अछि जे परमानन्द आ श्रीधरक समान हुनकहु साधनाक्षेत्र काशी छल, बंगाल नहि । फलत: बंगालक वैष्णव सम्प्रदायमे जयवर्द्धनक शिष्य होयबाक कथनक यशोगाथा अविश्वस्त अछि । विष्णुपुरीक यशोगाथाक कारणें कृष्णदास लोरिया द्वारा ई. 1487 मे *भक्तिरत्नावली*क बंगला भाषामे कयल अनुवाद सम्भावित अछि ।

विष्णुपुरी विद्यापतिक समकालीन छलाह आओर हुनक समानहि ओहो मिथिलाक परम्परासभ प्राप्त कएने छलाह । फलत: ओ अपन मानसिक क्षमता आ कविसुलभ प्रतिभा आ ओकर पोषण आ पल्लवनमे उन्मुख रहलाह।[21] ओ शिवपरक पदहु विरचित कयने छथि, जकर उपयोग नेपालक जगज्ज्योतिर्मल्ल (ई. 1613 - 1637) *हरगौरी विवाह* संज्ञक अपन नाटकमे कयने छथि ।[22] हुनक एहि सन्दर्भमे लिखल पदसभक ललित आ मधुर अभिव्यक्ति विद्यापतिक शैव पदावलीक स्मरण प्रस्तुत करैछ, जे लोक-भाषा मैथिलीमे हुनक गरिमा आ वैशिष्ट्य सिद्ध करैत अछि ।

विष्णुपुरी जन्मजात अपन विरक्ति-भावना, उदात्त संस्कार, आ भागवतक परम्परित मधुरोपासनासँ दीक्षित आ प्रेरित भए 'ब्रह्म सत्यम्' क अनुभूति हेतु 'प्रपत्ति' कें उजागर कयलन्हि, जनिक प्रदेयसँ जन्मभूमि मिथिला कृतकृत्य आओर देश उपकृत अछि । ओ अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ चिर-स्मरणीय छथि ।

[परमहंस श्रीविष्णपुरीकृत 'भक्तिरत्नावली' संज्ञक अप्रकाशित हिन्दी पाण्डुलिपिक परिशिष्ट]

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

संदर्भ

1. कल्याण भक्तिचरितांक (जनवरी, 1952), 'भक्त विष्णुपुरी जी' पृष्ठ-, 503 (गीता प्रेस, गोरखपुर, उ०प्र०)
2. ओएह ।
3. *भागवत धर्म उतंग ज्ञानधर्म अनन देखा ।*
   पीतरपटतर विगत निकष ज्यों कुन्दनरेखा ॥
   कृष्ण कृपा कहि वेल फलित सतसंग दिखायो ।
   कोटि ग्रंथ को अर्थ तेरह विरचन में गायो ॥
   महासमुद्र भागवत ते भक्तिरत्न राजी रची ।
   कलिजीव जंजाली कारणे विष्णुपुरी बड़ि निधि सची॥
   नाभादास-भक्तमाल, छप्पय-47 (हरिप्रसाद भगीरथ जी, बम्बई, वि० सं० 1980) प्रियादासक टीका छन्द - 177 (ऐजन) ।

(आ)*भक्ति धर्म कहि मुखि, आन धर्म गवन बताया।*
कहाँ पीतर कहाँ हेम निकष परि कस जब आया ॥
सुमन प्रेम फल संग, बेलि हरि कृपा दिखाई ।
सकल ग्रंथ करि मथन, रतन अवली बनाई ॥
राचौं तेरह विरचनमें, द्वादस स्कन्ह दिखावीआ
भागवत अध्व के रतन, जे विष्णुपुरी संग्रह कीआ ॥
राघवदास-*भक्तमाल*, छप्पय 270 (राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 'विक्रमाब्द 2021)'चतुरदासक टीका, छप्पय 272

(इ) प्रतापसिंह - *भक्तमाल अर्थात् भक्तकल्पद्रुम, 'कथा श्री विष्णुपुरी जी'* (नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, उ० प्र०, ई० 1926)

4. श्री रमानाथ झा- 'मैथिल ब्राह्मणक पंजी-व्यवस्था, मिथिला-भारती, पटना ,कुमार गंगानन्द सिंह स्मारक अंक, पृष्ठ 112, जनवरी-दिसम्बर 1970)
5. म० म० परमेश्वर झा- *मिथिला तत्व विमर्श*, पूर्वार्द्ध, पृष्ठ 165; श्री रमानाथ झा 'परमहंस विष्णुपुरी, हिज आइडेण्टिटी एण्ड इरा ' (जर्नल आव, पटना यूनिवर्सिटी, जिल्द-1, जनवरी, 1945, पृष्ठ, 7-20 । श्री रामदेव झा- 'परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिव गीत', मिथिला भारती, पटना, 1970 सँ उद्धृत) ।
6. भक्तिरत्नावली, विरचन 13, श्लोक 13 आ 16 ।
7. भक्तमालक उद्धृत सन्दर्भ मुख्यतया 'प्रियादास', 'चतुरदास' आ प्रतापसिंह Sri Chaitnya Mahaprabhu was a proficient professor of Nadia at the age of sixteen.
   Dr. Sirish Kumar Ghoshal, Bhawan Journal August 20, 1977, Page-70.
8. राय साहिब दिनेशचन्द्र सेन- 'चैतन्य एण्ड हिज कम्पेनियन्स', पृष्ठ 208-209 (कलकत्ता यूनिवर्सिटी ई० 1917)
9. ओतहि, पृष्ठ 217-310
10. श्री रमानाथ झा- 'परमहंस विष्णुपुरी : हिज आइडेन्टिटी एण्ड इरा, (जर्नल ऑव पटना यूनिवर्सिटी, जिल्द 1 जनवरी, 1945, पृष्ठ 7-20)
11. डॉ० सुभद्र झा- *द सॉंग्स ऑव विद्यापति*, पृष्ठ 9-10 (मोतीलाल बनारसीदास, बनारस, ई० 1954).
12. ओतहि, पृष्ठ 30.
13. डा० हेमचन्द्र रायचौधरी- द लक्ष्मणसेन इरा 'स्टडीज इन इण्डियन एण्टिक्विटीज,' पृष्ठ 160-166 (कलकत्ता यूनिवर्सिटी, 1958)
14. बलदेव उपाध्याय-भागवत सम्प्रदाय (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, वि सं० २०१०)पृष्ट 155-157.
15. *व्यासो वेत्ति शुको वेत्ति राजा वेत्ति न वेत्ति वा*
    श्रीधरः सकलं वेत्ति श्रीनृसिंहप्रसादतः ॥
16. बलदेव उपाध्याय - भागवत सम्प्रदाय पूर्वो ।
17. (अ) *तीनि कांड एकत्व सानि कोउ अन्त बखानत।*
    कर्म ज्ञानी ऐंचि अर्थ को अनरथ ठानत ॥
    परम हंस संहिता विदित टीका विस्तारयो ।
    षट शास्त्र अविरुद्ध वेद संमतहि विचार्‌यो ॥
    परमानन्द प्रसाद ते माधौ सुकर सुधारि दि यो ।
    श्रीधर श्रीभागवतमें परम धरम निरनै कियो ॥
    नाभादास - भक्तमाल, छप्पय 45. प्रियादासक टीका, श्रीधर जू का वर्णन, छन्द -167.
    (आ) *अज्ञानी तृय कांड मिले, सब कोई भाखै ।*
    ज्ञानी अर करमिष्ट, अरथ को अनरथ दाखै ।
    राखी भक्ति प्रधान, करी टीका बिसतीरन ।
    अगम निगम अबिरूद्ध, बहुरि भारत की सीरन।
    किरपा परमानद की माधौजी ऊपर धर्‌यो।
    उत्कृष्ट-धरम भागवत में, श्रीधरने बरनन कर्‌यो
    राघवदास - *भक्तमाल*, छप्पय - 270.
    चतुरदासक टीका, श्रीधर जू छन्द 417.
18. प्रताप सिंह-*भक्तमाल अर्थात भक्तकल्पद्रुम, 'कथा परमानन्द जी की'*, पृ. 116.
19. विरचन 1. सामान्य भक्ति-तत्व श्लो-116/ विरचन 2 साधु-संग, श्लोक 64; 3. नवधाभक्ति ,श्लोक 32; 4. श्रवण श्लोक 45; 5. कीर्तन श्लोक 56; 6. स्मरण श्लोक-26; 7. पद सेवा-श्लोक 35; 8. अर्चन, श्लोक - 16; 9. वन्दन, श्लोक - 4; 10. दास्य, श्लोक-4; 11. सख्य, श्लोक-2; 12. आत्मसमर्पण, श्लोक -2; 13. शरणागति, श्लोक-16;
20. *कंठे कृता कुलमशेषमलंकरोति*
    वेश्मस्थिता निखिलमेव तमोऽपहन्ति ।
    तामुज्ज्वलां गुणवतीं जगदीश भक्ति-
    रत्नावलीं सुकृतिनः परिशीलयन्तु ॥
    निखिलभागवतश्रवणालया बहुकथाभिरथानवकाश. ः ।
    अयमयं ननु तानु सार्थको भवतु विष्णुपुरीग्रथनग्रहः ॥
    भक्तिरत्नावली, विरचन 1, श्लोक 8 आ 9.
21. डॉ० सुभद्र झा- *द सॉंग्स ऑफ विद्यापति*, एपेण्डिक्स-ए - 4 'मालव रागे'
22. डॉ० रामदेव झा- 'परमहंस विष्णुपुरी ओ हुनक शिवगीत' पृष्ठ 141 - 144 मिथिला भारती, पटना, ई० 1970 ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंडित रमानाथ झा

❑ डा. श्री दामोदर ठाकुर

पंडित गोविन्द झाक पचहत्तरिम जन्मदिवसक शुभ अवसर पर हुनकर विद्या आ जिज्ञासाक प्रति समर्पणक हम अभिनन्दन करैत छी । यद्यपि ओ कालक्रमे वृद्धमे गनैता, हुनक अनवरत परिश्रम देखि अनेको युवक लजा सकइ छथि, जौं आइकाल्हि काज नहि करबाक लाजक प्रचलन होइ।

हुनकासँ वयसमे पाछू रहितहुँ, साहित्यिक प्रेममे ओ जाहि साहस ओ आत्मविस्मरणक उदाहरण उपस्थित करैत छथि हमरा नहि बुझि पड़ैत अछि जे ओकर अनुकरणक चेष्टो हमरा बुते होयत । सरस्वतीसँ प्रार्थना जे ओ पंडित जी केँ दीर्घ जीवन, स्वास्थ्य आओर ऊर्जाक प्रसाद देथुन।

एक पंडितक अभिनन्दनक अवसर पर दोसर पंडितक स्मरण भए आयब स्वाभाविक। आइ हमरा पंडित रमानाथ झा क जीवन ओ समालोचना पर दू शब्द लिखबाक अवसर लागल ।

हुनकर परिवारक कैक गोटासँ मित्रता रहलाक कारण हुनका विषयमे पचपन वर्षसँ सुनइत आयल छी। डा. अमरनाथ झाक विद्यार्थी रहलाक बाद रमानाथ बाबूक सम्बन्धमे आओर बहुत किछु जानयमे आयल । हुनकासँ अनेक बेर भेटो भेल आ सुपौलमे हुनकर भाषण सुनलहुँ आ एके संगे ठहरलहु ।

रमानाथ बाबू प्रोफेसर कलीमुद्दीन अहमदक सहपाठी छलाह आ अंगरेजी साहित्यक मेधावी छात्र छलाह । ई एकटा सुखद संयोग जे अंगरेजीक छात्र आ अध्यापक रहितहु, रमानाथ बाबू आ कलीम साहेब दूनू गोटे अपन मातृभाषा आ साहित्यक अद्वितीय सेवा कैलन्हि। इं अवश्यजे कलीम साहेबकेँ जे सुयोग रहनि आ उर्दू क्षेत्रक जते अखिल भारतीय विस्तार रहइ तेकर तुलनामे रमानाथ बाबू अधिक विघ्नबाधाक सामना ओ परिश्रम करितहुँ ओते प्रकाशमे नहि अएलाह। सम्भवत: मैथिली आलोचनासँ कम परिचय रहलाक कारण हमरा ई भ्रान्त धारणा भेल हो किन्तु किछु देरेसँ सही, आधुनिक मैथिली साहित्यसँ परिचय अछि। प्रोफेसर उमानाथ झा आ स्व. योगानन्द झासँ सम्पर्कद्वारे पठिता कालमे साहित्य पढ़ने रही तँ बुझैत छी। रमानाथ बाबू जते गम्भीरता वा मनोयोग सँ समालोचना क काज कैलन्हि से आइ कैकटा विद्वान करइ छथि ?

विद्याक साधना आ सुख-सुविधाक पाछू दौड़ब दू चीज थिक । शिक्षा-जगतमे रमानाथ बाबू ओहि युगक लोक छलाह जहिया शिक्षकवर्ग अपन भौतिक उत्कर्ष लेल संघर्षरत नहिं भेल छलाह । मधेपुरमे शिक्षकक जीवन, पारिवारिक भार, दरभंगा राजक पुस्तकालयमे पुस्तकाध्यक्ष, चन्द्रधारी मिथिला कौलेजमे प्राध्यापक ई सब तँ समयक परिच्छेद छल । वास्तविक अन्तर्धारा छल अपन साहित्यिक गूढ़ प्रेम, ओकर गहन ज्ञानक अन्वेषण।

आइयो जखन रमानाथ बाबूक विद्यापतिक कोनो कठिन रचना पर टिप्पणी देखैत छी त हुनकर ज्ञान आ ओहूसँ बेसी हुनकर रसमर्मज्ञतासँ चकित भए जाइत छी।

शुष्क शास्त्रज्ञान आ साहित्यक अध्ययनमे भेद रमानाथ बाबूक लेखसब पढ़लासँ स्पष्ट भए जाइत छैक।

शाक्त आगममे कामकलातत्व

❑ डा. श्री.किशोरनाथ झा

उपासनाक दूगोट प्रमुख धारा दीर्घकालसँ चल आबि रहल अछि । एकटा थिक वैदिक धारा, जे 'अहंग्रहोपासना' क नामसँ परिचित अछि आ' दोसर थिक आगमिक धारा, जे 'विग्रहोपासना' कहबैत अछि । यद्यपि उपासनाक एकटा तेसरो धारा अछि जे पौराणिक थिक, किन्तु एहिमे उपर्युक्त उपासना युगलक सम्मिश्रण देखैत छी । तेँ ई दूनू धाराक संगम जकाँ मानबाक थिक। एहि धारामे वैदिक मन्त्रसँ प्रतिमामे देवताक प्राणप्रतिष्ठा कएल जाइत अछि आओर आगमक पद्धतिसँ पूजा, प्रसाद ओ आरती आदि होइत अछि । शारदीय दुर्गापूजाक पद्धतिमे एहि तरहक विधान नन्दिकेश्वरपुराण आर आधारित देखैत छी।

'अहंग्रह' पदक 'अहं' पद आत्माक आओर 'ग्रह' पद ज्ञानक वाचक थिक, अत: वैदिक उपासना 'आत्मज्ञान' मे मर्यादित अछि। *आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:* आदि उपनिषद्वाक्यो एतए प्रमाण होइत अछि। विग्रहसँ मूर्ति अभिप्रेत अछि, तँ मूर्तिपूजा भेल आगमिक उपासना। प्रथम यदि श्रवण, मनन ओ निदिध्यासन मात्रसँ गम्यप्रधान उपासना अछि तँ दोसर भक्तिमूलक शरणागतिजन्य आचारण-प्रधान अछि। उपास्यक प्रति उपासकक चित्तवृत्तिक निरन्तरता उभयत्र अपेक्षित अछि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आओर सैह तँ उपासना थिक।

यद्यपि 'ओंकारमनुध्यायीत' इत्यादि उपनिषद् वाक्य वैदिक उपासनहुँमे प्रतीक वा विग्रहक ध्यानक कथा कहैत अछि। अतएव निराकार ब्रह्मक प्रतीक 'ओंकार' मानल जाइत अछि। एहिना आगमहुमे उपास्यक परम अवधिक रूपमे 'चित् शक्ति' स्वीकृत अछि, जे ज्ञान स्वरूप रहने निराकारे अछि। आचार्य उदयन ज्ञानक निराकारताक प्रतिपादन न्यायकुसुमाञ्जलिमे स्पष्टत: कएने छथि

अर्थेनैव विशेषो हि निराकारतया धियाम्

तथापि एतए प्रधानताक दृष्टिएँ अहंग्रह ओ विग्रहक उपासनाकेँ यथाक्रम वैदिक ओ आगमिक कहलहुँ अछि। आपातत: दूनूमे भेदक प्रतीति भेलहु पर यथार्थत: अभेदे बुझबाक थिक।

साधकसँ क्षमताक तारतम्येसँ निराकार ब्रह्मक उपासनामे ओंकारस्वरूप प्रतीक परिगृहीत होइत अछि। शास्त्रीय दृष्टिमे शाखाअरुन्धती न्यायसँ एकर उपपत्ति होइत अछि। वाक्यपदीयमे स्पष्ट कहल अछि जे असत्य पथ पर चलिए कए सत्यक अनुसन्धान कएल जाइत अछि:

असत्ये वर्त्मनि स्थित्वा तत: सत्यं समीहते ।

उत्कृष्ट साधकक समक्ष चित्शक्तिक प्रकाशरूपता प्रसिद्धे अछि। किन्तु साधारण साधकक दुर्बल मनोवृत्ति विग्रह, प्रतीक वा संकेतक अवलम्बन कए ओहि चित्शक्ति धरि पहुँचबाक प्रयास करैत अछि । फलत: उक्त उपासना-युगलमे कोनो प्रकारक अनुपपत्ति वा असामञ्जस्य नहि बूझि पड़ैत अछि।

उपासना वैदिक हो वा आगमिक, ओ उपजल धरि अछि भारतवर्षहिक माटि-पानिसँ। अतएव पद्धति वा प्रक्रियामे अन्तर रहलहु पर उद्देश्यमे भेद नहि छैक। एके परम सत्ता उभयत्र उपास्य रूपमे विद्यमान अछि आओर ई उपासना पुरुषार्थचतुष्टयक (धर्म, अर्थ, काम ओ मोक्षक) साधिका अछि।

एके परम सत्ता दृष्टिक भेदसँ ब्रह्मन्, ईश्वर, शिव, विष्णु, राम, कृष्ण, सूर्य, गणेश, गौरी, दश महाविद्याक आद्या, द्वितीया तथा हनुमान् आदि नामसँ अनादिकालसँ पूजित होइत आबि रहल छथि। साधकक प्राक्तन संस्कारक अनुरूप ओ स्वयं विविध स्वरूपक धारण कए हुनक इष्ट सिद्धि करैत छथि।

या यस्याभिरता पुंस: सा हि तस्यैव देवता

कूर्मपुराणक ई वचन एकर साक्षी अछि। देवताक वैविध्यक नियामिका उपासकक प्रकृति ओ प्रवृत्तिए थिक। हमरा जनैत साधकक योग्यता-क्षमताक तारतम्य ओ लोकरुचिक वैविध्यसँ उपास्यक विविध रूप ओ उपासना-पथक विभिन्नता देखल जाइत अछि। आचार्य भर्तृहरि वाक्यपदीयमे कहने छथि जे लक्ष्यक-अभीष्टक-प्राप्ति हेतु अनेक उपायक अवलम्बन कएल जाइत अछि-

उपेयप्रतिपत्त्यर्था उपाया अव्यवस्थिता: '

महिम्नस्तोत्रक निम्न पद्यहुसँ एकर पुष्टि होइत अछि जे वेद, सांख्य, योग, पाशुपत दर्शन तथा वैष्णवमत आदि विविध प्रस्थानक रहलहु पर सभक उद्देश्य एकेटा मोक्षक लाभ मानल गेल अछि। मार्ग सरल रहओ वा कुटिल उद्देश्य तँ लक्ष्यक प्राप्तिए रहैत अछि। कतहुसँ टेढ़ो-टूढ़ बहैत नदीसभ अन्तमे समुद्रहिमे मिलि कृतार्थ होइत अछि-

त्रयी सांख्यं योग: पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमद: पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्य स्त्वमसि पयसामर्णव इव ।

फलत: लोकरुचिक विभिन्नतासँ उपसनाक ओ सम्प्रदायक विविधता दृष्टिगोचर होइत अछि ।

प्रस्तुत प्रसङ्गमे कामकलातत्वक परिचयहुमे ई गप्प अक्षरश: घटैत अछि । उपनिषद्क ब्रह्म, 'भर्त्तृहरिक शब्दतत्व आ शाक्त आगमक 'कामकला' एके पदार्थ थिक, नाम मात्रक भेद अछि । इएह कामकला काली, तारा तथा त्रिपुरसुन्दरी आदि दश महाविद्याक रूपमे भक्तलोकनि द्वारा श्रद्धा ओ विश्वासपूर्वक पूजित होइत आएल अछि। महाकालसंहिताक एकटा स्तोत्रपद्य एकर स्पष्ट प्रतिपादन करैत अछि :

धातुर्या सृष्टिशक्तिर्जगदवनविधौ स्थैर्यशक्तिश्च विष्णो:
शम्भो: संहारशक्तिर्युवतिजनहृदुन्माथशक्ति: स्मरस्य ।
ज्ञानेच्छाकर्मशक्तिस्त्रिपुरविजयिन: सर्वगा सर्वशक्ति:
सर्वेषामादिशक्तिर्मम हृदि वसतां गुह्यकाली हि शक्ति:।।

ब्रह्मक सर्जनाशक्ति, विष्णुक पालनशक्ति, शम्भुक संहारशक्ति, कामदेवक हृदयक मथनी शक्ति, त्रिपुरविजयीक ज्ञान, इच्छा ओ क्रिया शक्ति, सभ ठाम व्याप्त गुह्यकालीरूपा आदिशक्ति हमर हृदयमे वास करथि । एहिठाम बिचारलापर वेदान्तक ब्रह्महिक स्वरूपक उद्घाटन भेल अछि, जे आदिशक्ति वा गुह्यकाली नामसँ कहल गेल अछि ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

*कामकलाविलास*मे पुण्यानन्दनाथ कामकलातत्वक परिचय एना देल अछि :

बिन्दुरहंकारात्मा रविरेतन्मिथुनसमरसाकारः ।
कामः कमनीयतया कला च दहनेन्दुविग्रहौ बिन्दू।।

प्रकाशमात्रस्वरूपा 'चित्शक्ति' जखन नाम ओ रूपक परिग्रह करैत अछि तँ ओ 'बिन्दु' कहबैत अछि । ई अहङ्कारस्वरूप अछि तथा 'रवि' पद एकर वाचक होइत अछि किएक तँ प्रकाशरूप अछि । प्रकाश ओ विमर्शक यथाक्रम वाचक अकार ओ हकारक पारस्परिक सम्मेलने एतए 'अहं' पदमे दृष्टिगोचर होइत अछि आओर नामात्मक जगत्क आदि कारण वर्णमाला 'अ' सँ आरम्भ भए 'ह' पर समाप्त होइछ तेँ प्रत्याहारक क्रमसँ सम्पूर्ण संसारे एहि 'अहं' मे समाष्टि भए जाइत अछि । उक्त ग्रन्थक चिद्वल्ली व्याख्यामे नटनानन्दनाथ ई कथा स्पष्ट कहलैन्हि अछि– *एतयोरकारहकारवाच्ययोः प्रकाशविमर्शयोः मिथुन द्वन्द्वं, तस्य दिव्यदम्पतीरूपस्य समरसः परस्परानुप्रवेशरूपमानुकूल्यं तदेवाकारः स्वरूपं यस्यैवं भूतो रविः ।*

इएह प्रधानबिन्दु जे अहंकारात्मक अछि आगममे उक्त रीतिएँ कामाख्य रवि पदेँ परिचित अछि । कमनीयताक कारणेँ काम कहल जाइत अछि । दू तरहेँ एहि कामक कमनीयता बुझबाक थिक- स्वरूपसँ आओर कार्यसँ । उपनिषद्मे सुन्दरतम रूप ब्रह्मक परिकल्पित अछि, जे 'सुवर्ण' पदसँ अभिव्यक्त होइछ । ई ब्रह्म एहन सुन्दर छथि जे हिनक दाढ़ी, मोछ, केश तथा नह सभटा सुवर्णहि सँ निर्मित छैन्हि–

हिरण्यश्मश्रुर्हिरण्यकेश आप्रणखात् सर्व एव सुवर्ण :

ईशावास्य उपनिषद्मे कहल अछि–'यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि' ।

उपनिषद्मे जेना हिनक सुन्दर स्वरूपक वर्णन अछि तहिना आगममे हिनक कार्यक सुन्दरता वर्णित अछि । उक्त चिद्वल्ली व्याख्यामे कहल अछि जे परमार्थक ज्ञाता योगीलोकनि आत्माक रूपमे हिनके जनबाक इच्छा करैत छथि, तेँ ई अवश्य सुन्दर छथि- *काम्यतेऽभिलष्यतं स्वात्मत्वेन परमार्थविद्भिर्योगिभिर्यतो ह्यस्मिन् कमनीयतातः कामः ।* असलमे अपुनर्भवरूप मुक्तिक साधक जे ई अछि, तेँ योगीलोकनि एकर कामना करैत छथि ।

दोसर गप्प ई जे वैदिक दर्शन मोक्षक आगू ऐहिक सुखकेँ तुच्छ मानि ओकरा आपेक्षिक उपेक्षाक दृष्टिसँ देखैत अछि आओर शाक्त आगम दूनूकेँ – ऐहिक सुख ओ मोक्षकेँ– एके दृष्टिसँ देखैत अछि । कोनो भक्त कहैत छथि जतए मोक्ष छैक ततए भोग नहि छैक, मुदा देवीक चरणकमलक उपासकक हेतु भोग आ मोक्ष संगसंग उपलब्ध छैक जेना तरहत्थी पर धात्री राखल हो ।

यत्रास्ति भोगो न हि तत्र मोक्षः
यत्रास्ति मोक्षो न हि तत्र भोगः ।
देवीपदाम्भोजयुगार्चकानां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।।

एहि तरहेँ कामाख्य रविक सुन्दर स्वरूप तथा कल्याणकर कार्यक पृष्ठभूमिमे वर्णमालाक रहबाक कारणेँ वर्णमाला 'मातृका' पदेँ अर्थात् सृष्टिक मूलकारण रूपमे उक्त जागतिक विषयक जननी मानल गेल अछि । ज्योतिः स्वरूपा परमसत्ता मातृकास्वरूपा होएबाक कारणेँ बहुत रूपमे प्रकाशित होइत अछि । वर्ण अक्षर कहबैत अछि। शाक्त आगमक मातृका वैयाकरणक शब्दब्रह्म ओ वेदान्तीक अक्षरब्रह्म मानल गेल छथि । एहि मातृकाक प्रशंसा प्राचीन आगममे परावाक् रूपमे कएल गेल अछि। नादब्रह्मसँ सृष्टिक आरम्भ मानबाक तात्पर्यो इएह अछि। आचार्य दण्डी एकर समर्थन एना करैत छथि–

इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् ।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते ।।

सम्पूर्ण संसारे मे अन्हार रहितैक जँ शब्दरूप ज्योति प्रकाश नहि करैत ।

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः ।।

वाक्यपदीयमे भर्तृहरिक ई कारिका शब्दब्रह्मसँ सांसारिक प्रक्रियाक उद्भव मानैत अछि ।

उक्त कामाख्य रविक दू गोट विमर्शात्मक कला मानल गेल अछि जे अग्नि ओ सोमक नामेँ प्रसिद्ध अछि तथा ग्रहण-त्याग, आदान-विसर्ग वा सृष्टि-संहारमे सतत संलग्न रहैत अछि । अग्न्यात्मक कला शोणवर्णक होइत अछि जे संहारक प्रतीक थिक आओर सोमात्मक कला उज्ज्वल वर्णक होइत अछि जे सृष्टिक प्रतीक थिक । यद्यपि सृष्टि वा संहार एहि दू कलाक सम्मिलित प्रयासहिसँ संभव छैक तथापि प्रधानताक दृष्टिसँ एक-एक कार्यक हेतु एक-एक कलाक यथाक्रम आगममे निर्देश भेल अछि । एहि दूनू कलाक गतायात अहङ्कारस्वरूप बिन्दुमे अर्थात् कामाख्यरविमे होइत रहैत छैक । फलतः मूल बिन्दु

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कामाख्य रवि सित-शोणात्मक अर्थात् मिश्ररूपमे प्रसिद्ध अछि । अत: एकवाक्यमे ई कहब संगत होएत जे विमर्शविशिष्ट चित् शक्तिए 'कामकला' पदार्थ थिक, जे सृष्टिक ओ अपुनर्भव मोक्षक निदान थिक ।

शाक्त तन्त्रक परमलक्ष्य अछि अद्वैतक प्राप्ति । किन्तु शिव ओ शक्तिक यामल सत्तो एतए मान्ये अछि।संसारमे विविधता रहलहु पर मूलमे एकता छैक आओर एकसँ अनेक होएबा लेल दूक आवश्यकता होइत छैक । *एकाकी न रमते, स द्वितीयमैच्छत् । एकोऽहं बहु स्याम् प्रजायेय* आदि उपनिषद्वाक्य एतए साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि ।

ई द्वितीय सत्ता शाक्त आगमक दृष्टिसँ दू रूपमे प्रकाशित होइत अछि– एकक संग भिन्नताकेँ रखैत तिल चाउर जकाँ आओर एकक संग अभिन्नताकेँ रखैत दूध पानि जकाँ । एहि यामल रूप वा मैथुनक पहिल प्रकार भेदमय प्रपञ्चक (संसारक) सृष्टि करैत अछि । आओर एकरे दोसर प्रकार मोक्षक साधक होइत अछि । शिव-शक्तिक सामरस्य मोक्षक आ हुनक पारंस्परिक संश्लेष संसारक निदान होइत अछि । इएह सामरस्य ओ संश्लेष क्रमश: अन्तरङ्ग ओ बहिरङ्ग शक्तिक नामसँ आगममे प्रसिद्ध अछि । शिवपुराणमे एकर स्पष्ट प्रतिपादन देखैत छी–

प्रकाशश्चिच्च मिथुनं जगत्कारणतां गतम् ।
एकत्रैव शिव: शक्तिरिति भावो विधीयते ।।
एवं शिवत्वं शक्तित्वं परमात्मनि दर्शितम् ।
शिवशक्त्योस्तु संयोगादानन्द: सततोदित: । [1]।।

एतए 'प्रकाश' पद असत् केर निवर्तक ओ सत् केर वाचक थिक। चित् पद यद्यपि ज्ञानक हेतु प्रसिद्ध अछि मुदा एहिठाम विमर्शक पर्याय रूपमे मान्य अछि । ई दूनू सत् चित् जतए पृथक् रूपमे रहैत अछि ततए एहि यामल सत्तासँ भेदमय-प्रपञ्चात्मक-एहि संसारक सृष्टि होइत अछि आओर जखन इएहदूनू अभिन्न रूपमे रहैत अछि तखन ओतए परम अद्वैत सत्ताक प्रकाश होइत अछि जाहिसँ मोक्ष होइत अछि । फलत: शिव ओ शक्तिक मैथुनीभाव संसारक आदिकारण आओर तादात्म्य अर्थात् सामरस्य मोक्षक साधक होइत अछि । कारिकामे उक्त 'आनन्द' पद मोक्षहिक हेतु प्रयुक्त अछि ।

महाकालसंहिता एहि कामाख्य रविकेँ लक्ष्य कए कहैत अछि जे पुंलिङ्ग बिन्दु, नपुंसकलिङ्ग ब्रह्म आओर स्त्रीलिङ्ग गुह्यकाली परस्पर पर्याय थिक । गुह्यकाली पद आदिशक्तिक संकेत करैत अछि । अतएव काली तथा तारा आदि महाविद्या तथा अन्य विद्या सेहो परिगृहीत होइत छथि ।

बिन्दु: पुंल्लिङ्ग उदितो ब्रह्म चैव नपुंसकम्।
स्त्रीलिङ्ग गुह्यकाली च त्रयमेतत्समं मतम् [2]।।

एहि संहिताक सुधाधारा स्तोत्रहुसँ एकर पुष्टि होइत अछि–

अचिन्त्यामिताकारशक्तिस्वरूपा
प्रतिव्यक्त्यधिष्ठानसत्तैकमूर्ति: ।
गुणातीतनिर्द्वन्द्वबोधैकगम्या
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा [3]।।

अन्यत्र शाक्त अगमहुमे कामलकलाक एहि स्वरूपक स्पष्ट परिचय भेटैत अछि–

मिहिरमिन्दुमुखीं तदधोल्लसत्
शशिहुताशनबिन्दुयुगस्तनीम् ।
हसपरार्धकला-रशनास्पदां
भंजति नित्यमिमां परदेवताम् ।।

× × × × ×

अग्रबिन्दुपरिकल्पिताननामंन्यबिन्दुरचितस्तनद्वयीम् ।
नादबिन्दुरशना-गुणास्पदां नौमि ते परशिवे परां कलाम् ।।

× × × × ×

एकारोर्ध्वगतो बिन्दुर्मुखं भानुरधोगतौ ।
स्तनौ दहनशीतांशू योनिर्हार्धकला भवेत् [4] ।।

मूलत: बिन्दु एक अछि जे कामाख्य रवि कहबैत अछि। ओएह सृष्टिक इच्छा जखन करैत अछि तखन तीन बिन्दुक त्रिकोण रूपमे अपनाकेँ प्रकाशित करैत अछि। अग्नि आओर सोमरूप ओकर दूनू कलाक सार्थकता एहीमे छैक । प्रधानताक कारणेँ कामख्य रविक स्थान ऊँच होइत छैक तेँ ओ ऊपरमे विराजमान रहैत अछि। आओर अग्नि सोमात्मक कला-युगल नीचामे वाम-दहिन क्रमसँ रहैत अछि, जाहिसँ त्रिकोण अर्थात् सृष्टिक मूल 'योनि' बनैत अछि । *'योने: शरीरम्'* वेदान्तक सूत्रसँ एकर समर्थन देखैत छी । योनिक आश्रय बिना लेने शरीर उत्पन्न नहि भए सकैत अछि । तेँ योनिक माहात्म्य सर्वथा मान्ये अछि । ओकरे संकेत ई त्रिकोण वा तीन बिन्दु करैत अछि, जे कामकलाक स्थूल रूप थिक । एही दृष्टिसँ सौन्दर्यलहरीमे आचार्य शङ्कर भगवत्पाद मुखकेँ प्रधान बिन्दु आओर दूनू स्तनकेँ ओकर कलाक रूपमे स्वीकार कए शिव-त्रिकोणक तथा एकर नीचामे हरार्धकलारूप योनिक शक्ति-त्रिकोणक रूपमे परिचय देलैन्हि अछि–

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो ।
हरार्धं ध्यायेद् यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम्।।

एहि कलैक कारणेँ आदिशक्ति त्रिपुरसुन्दरी षोडशी कहबैत छथि । सूर्यमे जहिना चन्द्रमाक एक-एक कला क्रमशः प्रवेश करैत अछि तँ कृष्णपक्ष आओर बहार होइत अछि तँ शुक्लपक्ष प्रत्येक मासमे होइत अछि तहिना कामाख्य रविमे सोमात्मक बिन्दुक प्रवेश एवं निर्गम होइत रहैत अछि । पन्द्रहेटा कलाक ई गतायात होइत अछि । अन्तिम षोडशी कलामे ने ह्रास होइत छैक ने वृद्धि तेँ उक्त कलाक रूपमे भगवती आदिशक्ति परिकल्पिता भए 'षोडशी' कहवैत छथि ।

अभिप्राय ई जे कामाख्य रवि अर्थात् प्रधान बिन्दु अपन इच्छासँ अनेकमे अवतरित होमए चाहैत अ... स्वयं दू रूपमे प्रकट होइत अछि, जे अग्नि-सोमात्मक दृ कलाक रूपमे परिचित अछि । इएह दूनू कला शिवशक्ति पदसँ, प्रकृतिपुरुष पदसँ, ब्रह्ममाया पदसँ, वाच्य-वाचक पद सँ, महाकवि कालिदासक शब्दमे पार्वती-परमेश्वर पदसँ तथा महाकवि नीलकण्ठक शब्दमे शब्द-अर्थ पदसँ जानल जाइत छथि ।

पुरुषस्त्वं प्रकृतिरहं वाच्याहं वाचको भवान् ।
त्वं प्रेयान् प्रेयसी चाहमहं शक्तिर्भवाञ्छिवः [5]।।

× × × ×

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ [6]।।

× × × ×

सव्यं वपुः शब्दमयं पुरारे-
रर्थात्मकं दक्षिणमामनन्ति [7]।।

ऊर्ध्व बिन्दु स्थितिस्वरूप भए यदि विष्णुक प्रतीक थिक जगत्पालक रूपमे तँ अधोदेशक बिन्दु-युगल क्रमशः सृष्टि ओ संहाररूप ब्रह्मा आओर शिवक प्रतीक थिक । एक यदि सत्वगुणात्मक अछि तँ अपर दूनू रजस्तमसरूप अछि। एक यदि ओङ्कारक अकाररूप अछि तँ आन उकार मकार स्वरूप अछि । सांख्यकारिका एवं उपनिषद्केर 'अजा' पद कामकलैक बोधक थिक,जे लोहित, शुक्ल ओ कृष्ण वर्णा अछि । ई तीनू वर्ण क्रमशः उपर्युक्त तीनू बिन्दुक प्रतीक रूपमे मान्य अछि । ई अजा जेँ सृष्टिकर्त्री थिक तेँ प्रणम्य होइत अछि ।

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां
बह्वीः प्रजाः सृजमानां नमामः [8]।।

सौन्दर्यलहरीक पहिल पद्यमे एही कामकलाकेँ ध्यान मे राखि कए शङ्कराचार्य कहलैन्हि जे प्रकाशपुञ्ज रूप शिव विमर्शात्मिका शक्तिसँ युक्त भेलहि पर सर्जनामे समर्थ होइत छथि अन्यथा (शक्तिक बिना) हुनकामे गतिए संभव नहि छैक–

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।

अपराधक्षमापनस्तोत्रक निम्न पद्य व्यञ्जनासँ एहि बातक समर्थन करैत अछि–

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि ! त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ।

फलितार्थ ई भेल जे शिव आओर शक्तिक यामल सत्ता सृष्टिक आदि कारण थिक । आस्तिक दर्शनसभक व्याख्याकार वाचस्पति मिश्र ईश्वर ओ आदिशक्तिक तादात्म्य केँ स्वीकार कए कहैत छथि–,

'ईशनाशक्तियोगादीश्वरः। ईशना चान्यनिरपेक्षा ज्ञानेच्छा क्रियाशक्तिः [9]।।

ऊर्ध्वमुख रूप शक्ति त्रिकोण आओर अधोमुख रूप शिव त्रिकोणक संमिश्रणसँ उद्भूत श्रीयन्त्रो एही यामल सत्ताक प्रतीक थिक ।

'सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः । कासि त्वं महादेवीति ? साऽ ब्रबीत् अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मक जगदित्यादि' देव्यथर्वशीर्षक ई वाक्य उपर्युक्त कामकलातत्त्वहिक स्पष्ट प्रतिपादन करैत अछि । कामाख्य रविए ब्रह्म रूपमे एतए उक्त छथि आओर प्रकृति-पुरुष अग्निषोमात्मक कलायुगलक प्रतिरूप । ब्रह्मसूत्रक शाङ्कर भाष्यहुमे एहि आदिशक्तिक विवरण सिद्धान्त रूपमे भेटैत अछि । संसारक प्रागवस्था हमरासभ परमेश्वरक अधीन मानैत छी । ओ अर्थवती अछि, अतएव ओकर बिना परमेश्वर सृष्टि नहि कए पबैत छथि । हेतु जे शक्तिसँ रहित भए परमेश्वरक सृष्टिक हेतु प्रवृत्तिए सम्भव नहि छैन्हि ।

परमेश्वराधीना त्वियमस्माभिः प्रागवस्था जगतोऽभ्युपगम्यते। ..... अर्थवती हि सा । न तया विना परमेश्वरस्य स्रष्टृत्व सिद्ध्यति । शक्तिरहितस्य तस्य प्रवृत्त्यनुपपत्तेः [10]।।

श्वेताश्वतर उपनिषद् मायाकेँ प्रकृति आओर महेश्वर केँ मायी कहि उक्त कामकलाक समर्थन करैत अछि–

'मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्' ।

शाक्त-तन्त्रक शिव-शक्ति तथा उपनिषद्केर ब्रह्म-माया

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वस्तुतः एके थिक ।

कामकलाविलास मे पुण्यानन्दनाथ कामकलातत्त्वसँ सृष्टिक प्रक्रियाकेँ बुझबैत आगाँ कहैत छथि जे प्रस्फुटित विमर्शसम्पन्न बिन्दुसँ नादब्रह्मक आविर्भाव होइत अछि जे आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पृथिवी रूप पाँच महाभूतक संग वर्णसमाम्नायकेँ आविर्भूत करैत अछि ।

स्फुटितादरुणाद् बिन्दोर्नादब्रह्माङ्कुरो रवो व्यक्तः ।
तस्माद् गगन समीरण दहनोदक भूमिवर्ण सम्भूतिः॥[11]॥

एहि पद्यक व्याख्यामे उक्त ग्रन्थक चिद्वल्ली व्याख्याकार नटनानन्दनाथ कहैत छथि–*स्फुटिताद् उच्छूनात् बिन्दोः नादब्रह्माङ्कुरः नादः सर्वशब्दोत्पत्तिहेतुर्वर्णः, स एव ब्रह्म अङ्कुर उत्पादिकं यस्य सः, रवः शब्दः पश्यन्त्यादिरूपः व्यक्तः आविर्भूतस्तस्मात् शब्दात् गगनादीनां पञ्च महाभूताना मादिक्षान्ताक्षराणाञ्च सम्भूतिरुत्पत्तिराम्नाता । तस्मात् शब्दात्मक परं ब्रह्म नादबिन्दुस्तस्मादेव सर्वप्रपञ्चनिष्पत्तिः ।*

आचार्य मण्डनमिश्र ब्रह्मसिद्धिक मङ्गलपद्यमे 'अक्षर' पदक निवेश कए ब्रह्मक शब्दात्मकत्व ओ अपरिणामित्व सिद्ध कएलैन्हि अछि । *'न क्षरति विनश्यति अंशतोऽपि* एहि व्युत्पत्तिक अनुसार ओ अपरिणामी होइत अछि आओर अक्षर पद वर्णात्मक शब्दविशेषक हेतु प्रयुक्त भइओ कए शब्दसामान्यक उपलक्षक होइत अछि। शब्दसामान्य सूक्ष्म रूपसँ वर्णसमाम्नाय रूप शब्द-विशेषमे विराजमाने रहैत अछि । स्थूल शब्दविशेष-वैखरी ध्वनिक उत्पादविनाशशाली भेलहु पर परा स्वरूप शब्द-सामान्य सर्वदा नित्ये रहैत अछि । अतएव ओकर ब्रह्मस्वरूपता उत्पन्न होइत अछि–*अक्षरमिति शब्दात्मतामाह..... अपरिणामित्वं वा* [12]

एतए उपसंहारमे एतबे कहबाक अछि जे शिव ओ शक्तिक तादात्म्य संसार ओ अपवर्गक आदिकारण थिक। दूनूक दू प्रकारक स्थितिसँ यथाक्रम संसार ओ अपवर्ग होइत अछि । कामकलातत्त्व ब्रह्मसँ भिन्न पदार्थ नहि थिक। ब्रह्मक प्रतिपादनहिसँ कामकलातत्त्व ओ कामकलाक प्रतिपादनहिसँ ब्रह्म प्रतिपादित भए जाइत छथि । वेदान्त ओ आगमक तुलनासँ समन्वये हाथ लगैत अछि ।

सन्दर्भ

1. *शिवपुराण*, 398/25-26 ,
2. *महाकालसंहिता* (गुह्यकाली खण्ड) 101-536 ।
3. तत्रैव ।
4. उपर्युक्त तीनू पद्य *कामकलाविलासक* 'चिद्वल्ली' व्याख्यामे उद्धृत अछि ।
5. *महाकालसंहिता* (गुह्यकाली खण्ड) 9/1090-91.
6. *रघुवंश 1.1*
7. *शिवलीलार्णव*, आरम्भक पद्य।
8. *सांख्यकारिका*, मंगलपद्य।
9. न्यायतात्पर्यटीका, 4/1/19
10. *ब्रह्मसूत्र*, शाङ्करभाष्य,1/4/3.
11. कामकलाविलास ।
12. *ब्रह्मसिद्धि*, पृ. 16 (मद्रास प्रकाशन)।

●

आर्य-संस्कृति और बिहार

□ **विद्यावाचस्पति डा. श्री रंजन सूरिदेव**

श्रमण और ब्राह्मण-संस्कृतियों की विवेचना करने वाले ग्रन्थों में बिहार-प्रदेश का व्यापक वर्णन उपलब्ध होता है। आर्य-संस्कृति के उद्घोषक पौराणिक-ऐतिहासिक महत्त्व के राज्यों में बिहार का पांक्तेय स्थान है । ब्राह्मणों और श्रमणों के दृष्टिकोण से, प्राचीन भारतीय संस्कृति के विकास में बिहार की भूमिका का जो अध्ययन उपन्यस्त किया गया है, उसका सान्दर्भिक मूल्य तो है ही, वह अतिशय रुचिर और रोचक भी है ।

'सभ्यता' से हमें किसी भी सामाजिक व्यवस्था की राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक एवं साहित्यिक समृद्धि का ज्ञान होता है । जो समाज जितना ही अधिक सभ्य होता है, उसमें उतनी ही अधिक विकासमूलक सुव्यवस्था, निःशंकता और सुरक्षा की सम्भावना सुनिश्चित होती है । 'संस्कृति' इसी सभ्यता के आन्तरिक प्रभाव की विकास परम्परा से सम्बद्ध है और सभ्यता के आन्तरिक प्रभाव के विकास-क्रम की दृष्टि से भारतवर्ष में बिहार-राज्य का स्थान निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है ।

हिमालय से चली गंगा, अनेक प्रदेशों की संस्कृतियों का संवहन करती हुई जब बिहार में आई, तब इसे उत्तर और दक्षिण के बीचोंबीच बाँटती हुई आगे बढ़ी । उत्तर का

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भाग 'मिथिला' और दक्षिण का भाग 'मगध' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । पौराणिक कथा के अनुसार, मिथिला (गंगा का उत्तरतटीय क्षेत्र : उत्तर बिहार) में विदेह जनक का राज्य था ।

महाराज निमि विदेह-वंश के प्रथम राजा और उस वंश की प्रतिष्ठा के विस्तारक हुए । निमि के पुत्र 'मिथि' हुए, जिनके नाम पर 'मिथिला' प्रदेश प्रतिष्ठित हुआ । 'मिथि' जनक का ही उपनाम था । मिथिला के राजर्षि जनक की राजसभा में देश-देशान्तर के जिज्ञासु विद्वानों का समागम होता था । ऐतिहासिकों के मत में सन् 1097 से 1325 ई० तक कर्णाट-क्षत्रिय नान्यदेव या नान्यदेव के वंशज राजाओं ने मिथिला में राज्य किया । इसके बाद लगातार चौंतीस वर्षों तक मिथिला में कोई राजा न था । फिर, तदुपरान्त ब्राह्मण-कुल के ओइनवार मैथिल राजा हुए । तदनन्तर खण्डवलाकुल-कमलदिवाकर नैयायिक महामहोपाध्याय महेश ठक्कुर (ठाकुर) ने अकबर बादशाह के हाथ से मिथिला-राज्य पाया । इस वंश के राजा परम्परागत रूप से अभी तक मिथिला (दरभंगा)-राज में प्रतिष्ठित हैं ।

दक्षिण बिहार में भी बहुत पुराने समय में, जरासन्ध नाम का प्रतापी राजा राजगृह (वर्त्तमान राजगीर) में राज्य करता था । महाराज जरासन्ध के बाद उसके वंश के तेईस राजा मगध के सिंहासन पर बैठे । जरासन्ध के प्रताप के बारे में प्राकृत-बृहत्कथा *वसुदेवहिण्डी* (तीसरी-चौथी सदी) में लिखा है कि उसका पादपीठ विनत सामन्तों के मुकुटों की मणि-किरणों से अनुरंजित रहता था (*'सामंत पत्थिव पणय मउडमणिकराऽऽरंजिय पायवीढो'*: द्र० लेखक द्वारा सम्पादित अनूदित संस्करण, पृ० 769)। जरासन्ध-वंश के तेईसवें राजा का नाम रिपुंजय था । इसी रिपुंजय का संहार उसके मन्त्री शनक ने किया । परन्तु शनक ने स्वयं राज्य न भोगकर अपने पुत्र को दे दिया । उसके बाद उसके पाँच वंशधरों ने क्रमशः 138 वर्षों तक मगध का शासन किया ।

तदनन्तर मगध पर शिशुनागवंशीय राजाओं का आधिपत्य स्थापित हुआ । इस वंश का पाँचवाँ राजा बिम्बिसार हुआ । बिम्बिसार का पुत्र अज्ञातशत्रु हुआ । जैन साहित्य में बिम्बिसार 'श्रेणिक' नाम से और अज्ञातशत्रु 'कूणिक' नाम से प्रसिद्ध था । शिशुनागों के समय (ईसा के छह सौ वर्ष पहले) बिहार में बौद्ध धर्म और जैनधर्म, अर्थात् श्रमण-संस्कृति का सूत्रपात हुआ । वैशाली भारतीय गणतन्त्र की उद्गम-भूमि बनी और बोध गया बुद्ध की सम्बोधि-प्राप्ति का उद्गम-स्थल बना ।

वैशाली के लिच्छवियों को शिशुनागों के अधीनस्थ होना पड़ा था । लिच्छवि-कुल में ही श्रमण-संस्कृति के अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का आविर्भाव हुआ था । शिशुनाग-वंश के बाद नन्दवंश (शूद्रवंश) का राज्य मगध (बिहार) में प्रतिष्ठित हुआ । इसके बाद यहाँ मौर्यवंश का सिक्का जमा । मौर्यवंश का संस्थापक भारत सम्राट चन्द्रगुप्त और उसके पौत्र सम्राट अशोक का स्थान बिहार की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की दृष्टि से चिरस्मरणीय है । सम्राट चन्द्रगुप्त के समय में ही चाणक्य ने अपनी राजनयिक कूटनीति के द्वारा बिहार की संस्कृति को शास्त्रीय गरिमा से संवलित किया । चाणक्य का ही अपरनाम कौटिल्य था, जिनका *अर्थशास्त्र* ग्रन्थ आज भी प्रासंगिक और कालोत्तीर्ण है ।

हिन्दू-राज्यों के बाद मुसलमानी सलतनत का दौरदौरा बिहार में शुरू हुआ । फलतः, बिहार की सांस्कृतिक सरिता में एक और धारा आ मिली और वह पहले की अपेक्षा अधिक वेग से प्रवाहित हो चली । इस प्रवाह की ततोऽधिक प्रखरता अँगरेजी काल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई । इस प्रकार, अनेक सभ्यताओं के उत्थान-पतन के बीच बिहार की संस्कृति निरन्तर अपनी परम्परा को पुष्ट करती हुई बहुजनहित की भावना को प्रशस्तता प्रदान करती रही ।

बिहार की सांस्कृतिक उपलब्धियों या विशेषताओं की दृष्टि से यदि कहा जाय, तो यह अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा, भारत में सबसे पहले आर्य-सभ्यता और संस्कृति का सूत्रपात बिहार में ही हुआ ।

वेदान्त-शिक्षा में बिहार की अग्रगण्यता सर्वविदित है। मिथिलेश्वर महाराज जनक ईश्वर-तत्त्व के विशेषज्ञ थे । उनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यासदेव के पुत्र मुनि शुकदेवजी भक्तिभावपूर्वक नौ दिनों तक उनके द्वार पर खड़े रह गये थे । प्रतिदिन सैकड़ों महर्षि उनसे वेदान्त-तत्त्व सीखने आते थे ।

न्यायशास्त्र के आविष्कार का श्रेय बिहार को है । बिहार की मिथिला से ही न्यायशास्त्र नवद्वीप गया । और फिर, मगध से काशी जाकर 'बनारसी' बन जानेवाले

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'मगही' पान की तरह नवद्वीप (नदिया : बंगाल) न्याय का गढ़ बन गया। नवद्वीप के संस्कृत-विद्यापीठ की जब कल्पना भी नहीं थी, तब मुख्यत: बंगाल के और गौणत: अन्य प्रान्तों के भी अधिकतर विद्यार्थी संस्कृत-शिक्षा, विशेषत: दर्शनशास्त्र की शिक्षा के लिए मिथिला ही आते थे।

नव्यन्याय के ग्रह-ग्रन्थिल सूत्रों की अवतारणा और विवेचना भी बिहार में ही हुई। कपिल के सांख्यसूत्र का प्रचार भी इसी बिहार में सर्वप्रथम हुआ। न्यायदर्शन के अवतारक गौतम मुनि तथा सांख्यदर्शन के प्रतिपादक कपिल मुनि जैसे अविर्णनीय महिमा वाले महापुरुषों को जन्म देने का गौरव मिथिला की पुण्यभूमि को ही प्राप्त है।

बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि अनीश्वरवादी दार्शनिक सिद्धांतों के प्रतिपक्षियों में कुमारिलभट्ट मीमांसा के वार्त्तिककार के रूप में जगद्विख्यात हैं। कहते हैं, मिथिला के महाराज भैरवसिंह के समय में एक बार मैथिल विद्वानों की गणना की गई, तो उनमें तेरह सौ केवल मीमांसक निकले। 'बृहत्कथा' के अनुसार, व्याकरण के शलाकापुरुष एवं विश्वविश्रुत आचार्य पाणिनि की शिक्षा पाटलिपुत्र में ही हुई थी। प्रसिद्ध भाष्यकार महावैयाकरण कात्यायन पाणिनि के सहाध्यायी थे। भाष्यकार कात्यायन और वार्त्तिककार वररुचि मनेर (पटना) के ही निवासी थे। याज्ञवल्क्य, और *दण्डविवेक* के प्रणेता प्रसिद्ध विधिवेत्ता वर्द्धमान उपाध्याय मिथिला के ही सारस्वत रत्न थे।

प्रसिद्ध ज्यौतिषाचार्य आर्यभट्ट भी पाटलिपुत्र-निवासी थे। विष्णुशर्मा अपने पिता चाणक्य की तरह ही नीतिशास्त्र के मर्मज्ञ थे। उन्होंने पाटलिपुत्र के राजा सुदर्शन के उन्मार्गी पुत्रों को सन्मार्गी बनाने क लिए *'पंचतन्त्र'* जैसे कालजयी नीतिग्रन्थ की रचना की थी। (कुछ विद्वान कौटिल्य और विष्णु शर्मा को चाणक्य के ही उपनाम मानते हैं।- ले.) विष्णु शर्मा के शिष्य कामन्दक के 'कामन्दकीय नीतिसार' की बिहार की संस्कृति के समुन्नयन तथा बिहार में नैतिकता की लहर फैलाने के कार्य में ऐतिहासिक भूमिका रही है।

महाकवि वाणभट्ट इसी बिहार (शाहाबाद : भोजपुर) की धरती पर अवतीर्ण हुए और उन्होंने *हर्षचरित* और *कादम्बरी* जैसी अपूर्व गद्यकथा-कृतियों की अवतारणा की। अशोकपुत्र महेन्द्र को शान्तिदूत बनाकर भारतीय संस्कृति का प्रचार करने के निमित्त श्रीलंका भेजने का श्रेय बिहार को ही है। अशोकपुत्री संघमित्रा, जो संगीत की भी आचार्या थी, भारतीय आर्य-संस्कृति का प्रचार करने पटना से ही सिंहल नौका द्वारा गई थी। पटना का वर्तमान महेन्द्रूघाट आज भी इन दोनों बिहारी सांस्कृतिक यात्रियों की ऐतिहासिक स्मृति को आवर्त्तित करता है। दूसरे-शब्दों में कहें, महेन्द्र के नाम पर प्रसिद्ध पटना के गंगातट का वर्त्तमान 'महेन्द्रूघाट' और 'महेन्द्रू' मुहल्ला आज भी बिहार की सांस्कृतिक गौरव-गाथा से मुखर बना हुआ है।

सम्पूर्ण भारतीय आर्य-संस्कृति के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम राम की पत्नी जगज्जननी सीता को जन्म देने का गौरव बिहार की भूमि मिथिला को ही है। वैशाली की अम्बपाली जैसी विख्यात कलानर्तकी और मगध की महागणिका कोशा बिहार की ही विभूतियाँ थीं। मिथिला की सारस्वत विभूति, नारी-संस्कृति की अग्रदूतिका एवं विदुषी स्त्रियों में धुरिकीर्त्तनीया प्रसिद्ध नैयायिक पण्डित मण्डनमिश्र की शास्त्रार्थकुशला पत्नी भारती को कौन नहीं जानता? मण्डनमिश्र और आचार्य शंकर के मध्य सम्पन्न शास्त्रार्थ की सफल मध्यस्थता का श्रेय भारती देवी को ही है। [कुछ विद्वान मानते हैं कि यह शास्त्रार्थ-भूमि नर्मदा-तटवर्ती माहिष्मती थी, मिथिला की 'महिषी' नहीं-ले]

महाराज शिवसिंह मिथिला के महामहिम महीपों में प्रथम पंक्ति के अधिकारी थे। उन्होंने गजनी के शासकों का घमण्ड चूर किया था। मैथिलकोकिल कवि विद्यापति इन्हीं शिवसिंह के सभापण्डित थे। शिवसिंह की रानी लखिमा देवी ठकुराइन मिथिला की अपांसुला स्त्रियों में अलंकारस्वरूपा थीं। इस प्रकार, बिहार ने बहुत प्राचीन समय से ही विद्या और कला के माध्यम से अपनी समुज्ज्वल आर्य-संस्कृति का स्वर्णिम और क्रोशशिलात्मक मानदण्ड युग-युगान्त के लिए स्थिर कर दिया है।

प्राचीन समय का, साहित्य और संस्कृति का संरक्षक, विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय 'नालन्दा महाबिहार' (नालन्दा : पटना) बिहार के ही सांस्कृतिक वैभव का अमर साक्षी है। इसमें दस हजार छात्र और लगभग डेढ़ हजार महाध्यापक थे। यहाँ सभी शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी। चीन, स्याम, सिंहल (श्रीलंका), आदि देशों के विद्यार्थी शिक्षा पाने तथा अपनी सारस्वत शंकाओं के निवारण के लिए यहां आते थे। इस विश्वविद्यालय में एक विशाल ग्रन्थागार था, जिसकी महार्घ पुस्तकों को तत्कालीन

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अविवेकी मुस्लिम शासक बख्तियार बिन खिलजी ने भस्मसात् कर दिया। कहते हैं, कई महीनों तक लगातार दिन-रात पुस्तकें जलती रहीं । आधुनिक काल में भी 'नवनालन्दा महाविहार' (पालि-शोधप्रतिष्ठान) में प्राचीन बृहत्तर भारत के प्राय: सभी बौद्ध देशों के छात्र सौगत दर्शन का अध्ययन करते हैं ।

ईसा का भारत में आगमन पुस्तक से पता चलता है कि ईसा बिहार के राजगृह की भूमि पर पधारे थे और उन्होंने वहाँ बौद्धों से पालि सीखकर धार्मिक शिक्षा ग्रहण की थी। सिक्खों के अन्तिम दसवें गुरु श्रीगुरु गोविन्द सिंह का जन्म पाटलिपुत्र की धरती पर ही हुआ और आज उनकी जन्मभूमि पटनासिटी (वर्त्तमान नाम 'पटना साहेब') सिक्ख-संस्कृति का अन्यतम भारत प्रसिद्ध धर्मतीर्थ है।

इस प्रकार, बिहार की पुण्यभूमि पर अनेक महान धर्म-प्रवर्त्तक तथा साहित्य और कला के माध्यम से आर्य-सभ्यता और संस्कृति के समुद्भावक आविर्भूत हुए हैं । फलत:, सांस्कृतिक समृद्धि से समलंकृत भारतीय राज्यों में बिहार सर्वाधिक ख्याति और प्रतिष्ठा का मेरुशिखर बना हुआ है ।

ज्ञातव्य है कि सम्पूर्ण बिहार की ही भूमि पुरातात्त्विक महत्त्व की सम्पदाओं से खचित है । बिहार के पूर्वचर्चित ऐतिहासिक-सांस्कृतिक केन्द्रों के अतिरिक्त और भी अनेक ऐसे उल्लेख्य स्थान हैं, जो अपनी प्राचीन ऐतिहासिक पुरातात्त्विक और सांस्कृतिक आरोह-अवरोह की कहानी कहते हैं । ऐसे स्थानों में मुख्यतया पाटलिपुत्र (कुम्हरार), बिहार शरीफ (उदन्तपुरी) राजगृह, बराबर पहाड़ (गया), आरा (आलवी), कारीसाथ, मसाढ़ सासाराम (सहस्राराम), रोहतासगढ़, भोजपुर, सुलतानगंज, कहलगाँव (विक्रमशिला महाविहार), मनेर शरीफ, रमपुरवा (चम्पारण), चम्पानगर (भागलपुर), मन्दारपर्वत (बाँसी), चेचर (श्वेतपुर), कोल्हुआ वसाढ़ (वैशाली) आदि के नाम परिगणनीय हैं।

ईसा की तृतीय-चतुर्थ शती के जैन कथाकार आचार्या संघदासगणी ने अपनी, बृहत्कथा (महाकवि गुणाढय) की जैनप्राकृत रूपान्तरित कथाकृति *वसुदेवहिण्डी* में बिहार के दो जनपदों–अंग और मगध की राजधानियों, चम्पानगर ओर राजगृह की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का पुष्कल वर्णन उपन्यस्त किया है । तदनुसार, तत्कालीन अंग और मगध जनपद भारत के षोडश महाजनपदों में कूटस्थ थे और ललित कलाओं के महान केन्द्र के रूप में उनकी विश्वजनीन प्रख्याति थी ।

मगध जनपद और उसकी राजधानी राजगृहनगर की तो बड़ी ही भव्य परिकल्पना संघदासगणी ने की है :

''अत्थि मगहाजणवओ धणधन्नसमिद्धदाणसद्धिय-गहवइकुलबहलगामसत:सन्निमहिओ, छायापुप्फफल-भोज्जतरुगणसमग्गवणसंडमंडिओ, कमलकुमुदकुवलय सोहिततलागपुक्खरिणिवप्पसाहीण कमलानिलओ ।

''तत्थ मगहाजणवए, रायगिहं नाम नयर दूरावगाढवित्थय- सलिलखातोवगूढदढतरतुंग पराणीयभयदपागारपरिग, बहुविहनयणाभिरामजलभारगरुय-जलहरगमण विघातकर-भवणभरियं, अणंगवाह-परिमाणपव्वयं, दिव्वाचारपभवं, भडसंगहविणिओखमं, सुसीलमाहणसमणसुसयणअतिहि पूयनिरयवाणियजणोववेयं, रहतुरयजगोघणोणियरेणुगं, मयगलमातंगदाणपाणिय पसम्मि वित्थिन्नरायमग्गं ।''

(तथोक्त संस्करण, पृ० 3) ।

अर्थात्, ''धन-धान्य से समृद्ध तथा दान में श्रद्धा रखनेवाले गृहपति-कुलों से सम्पन्न सैंकड़ों गाँवों से सुशोभित, उपयोग के योग्य फूलों और फलों से लदे छायादार पेड़ों से युक्त वनखण्ड से मण्डित तथा विविध प्रकार के कमलों से शोभित तडागों, पुष्करिणियों और क्यारियों से परिपूर्ण, लक्ष्मी का निवासभूत मगध नाम का जनपद है ।

''उसी मगध-जनपद में जल से भरी विशाल खाइयों और शत्रुओं के लिए भयजनक ऊँचे-ऊँचे परकोटों से आवेष्टित, गगनचुम्बी महलों से विमण्डित, अतिशय उन्नत पर्वतों से परिवेष्टित, दिव्य आचारों की उद्गम-भूमि, वाणिज्य-व्यापार का केन्द्रस्थल, ब्राह्मणों, श्रमणों, अतिथियों और स्वजनों का सम्मान करने वाले वणिग्जनों से परिपूर्ण, रथ के घोड़ों और जनसमूह के चलने से उड़नेवाली धूलि से धूसर, मतवाले हाथियों के मदजल से सिंचित और अतिविस्तृत राजमार्गों से सुशोभित राजगृह नाम का नगर है ।''

उस महान कथाकार ने राजा कपिल की राजधानी चम्पानगर को संगीत और पत्रच्छेद्य की कला में अभिरुचि रखनेवाले तथा नृत्य, गीत आदि से मुखरित ललित गोष्ठी के प्रेमी नौजवानों और नवयुवतियों का केन्द्र कहा है ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वाणिज्य-व्यापार की दृष्टि से चम्पानगर से कामरूप (असम) तक की भूमि एकमेक बनी रहती थी । सचमुच, संस्कृति के सुरभि-सलिल से प्रक्षालित तत्कालीन बिहार के अंग और मगध-जनपद की भूमि धर्म, अर्थ और काम की कमनीयता से समुद्भासित थी ।

वसुदेवहिण्डी में बिहार के अनेक पहाड़, जंगल, नदियाँ, आदि भी वर्णित हैं, जिनमें यहाँ की सांस्कृतिक गरिमा की विविध मधुर मौन कथाएँ निनादित हैं । निश्चय ही, बिहार के जनसामान्य, जातियाँ, धर्म-कर्म, आचार-व्यवहार, बोल-चाल, वाणिज्य-व्यवसाय सबकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक परम्परा है, जो पुराकाल से चली आती आर्य-सभ्यता के विकास की शृंखला में महत्वपूर्ण कड़ी की तरह स्वत: जुड़ती चली गई है । *वसुदेवहिण्डी* के परवर्ती जैनकथा-वाङ्मय में तो अंग और मगध-जनपद का भूरिश: उल्लेख सुलभ है ।

वैदिक काल में भी, वेदों में बिहार का जो चित्र अंकित हुआ है, उससे भी विहार की ऊँची सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का संकेत मिलता है । यजुर्वेद में, मगध के लोगों को परहितैषणा में रत बताया गया है । सांस्कृतिक उन्नयन की दृष्टि से बिहार के अंग, मगध, विदेह आदि प्रान्तों में विदेह का नाम सांस्कृतिक गतिविधि के अध्येताओं की जिह्वा पर प्रथमत: आता है । आर्य-संस्कृति को अत्यन्त शीघ्रता से अपनाकर आर्य-सभ्यता का प्रधान केन्द्र बननेवाले जनपदों में विदेह का स्थान सर्वाग्रणी है ।

ऐतरेयब्राह्मण (8.4) में जहाँ आर्यदेशों की चर्चा है, वहाँ विदेह-जनपद की गणना प्राच्य देशों के अन्तर्गत की गई है । विदेहों का उल्लेख सर्वप्रथम *शतपथब्राह्मण* (1.4.1.10) में मिलता है । जैसा पहले संकेत किया गया है, विदेहों के राजा जनक अपने समय के ब्रह्म-विज्ञानियों में अग्रगण्य थे । संघदासगणी ने भी 'वसुदेवहिण्डी' में मिथिला के राजा जनक को एक यज्ञकर्ता राजा के रूप में उपस्थित किया है। केवल राजर्षि ही नहीं, अपितु उनके सभागुरु महर्षि याज्ञवल्क्य के कारण भी विदेह की प्रतिष्ठा समस्त आर्यावर्त में व्याप्त है ।

वैदिक साहित्य में विदेह के दूसरे-दूसरे राजाओं और ऋषियों का भी उल्लेख है, किन्तु विदेह के यथार्थ गौरव के प्रतीक याज्ञवल्क्य और जनक ही हैं । राजा जनक के ब्रह्मज्ञान के लिए *तैत्तिरीय ब्राह्मण* (30.10.99) में अनेक अनुशंसात्मक वाक्य आये हैं । इस प्रकार, स्पष्ट है कि ब्रह्मज्ञान आर्य-संस्कृति का चरम उत्कर्ष है, जिससे आर्य-सभ्यता का महत्त्व आज भी सम्पूर्ण विश्व में अप्रतिहत है और जिसका विकास उस वैदिक युग में प्रमुखतया बिहार के उल्लेखनीय प्राचीन जनपद विदेह अथवा मिथिला में ही हुआ ।

●

विमानकाव्य : बीसवीं शती की नवीन संस्कृत काव्य-विधा

□ डा. श्री राजेन्द्र मिश्र

भारतीय-वाङ्मय एवं संस्कृति में विमान का प्रकरण अत्यन्त प्राचीन है । रामायण में *पुष्पक* का, श्रीमद्भागवत में *सौभ* तथा अन्यान्य पुराणों में ऋषियों-महर्षियों की तपश्शक्ति से निर्मित अनेक विलक्षण विमानों का हृदयग्राही वर्णन उपलब्ध होता है जिनकी विस्तृत चर्चा यथावसर की जायेगी । विमान शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में भी अनेकश: हुआ है, परन्तु वहाँ अर्थभेद है । द्वितीय मण्डल के 40वें सूक्त में महर्षि गृत्समद, सोम एवं पूषा का स्तवन करते हुए कहते हैं:-

मापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम्।
षूवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम्।।

इसी प्रकार तृतीय मण्डल, तृतीय सूक्त के चौथे मंत्र में भी अग्नि की प्रशंसा करते हुए विश्वामित्र कहते हैं- पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम्। आ विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो मन्दते धामभि: कवि:॥

प्रथम मंत्र में प्रयुक्त 'विमान' शब्द की व्याख्या करते हुए आचार्य सायण लिखते हैं- *विमानं परिच्छेदक सर्वमानमित्यर्थ: ।*

दूसरे मंत्र के सन्दर्भ में सायण पुन: लिखते हैं- *विमान विमीयतेऽनेन फलमिति विमानं यज्ञादिकर्मसाधनम् ।*

उपर्युक्त मंत्रों में विमान शब्द क्रमश: रथ एवं अग्नि

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

के विशेषण रूप में प्रयुक्त हुआ है परन्तु उसका अभिप्राय विमान अथवा वायुयान के ही वैशिष्ट्य की ओर इङ्गित करता है । *रजसो विमानं* का अर्थ है–लोकों को नापने वाला (सातवलेकर) *वाघतां वयुनं विमानं* का भी अर्थ है–स्तोताओं के मार्ग को नापने वाला (सातवलेकर)।

इस प्रकार वेदप्रयुक्त विमान शब्द का मूल तात्पर्य वही सिद्ध होता है, जो आज लोकप्रचलित है अर्थात् मार्ग को नापने वाला । अध्यात्म एवं कर्मकाण्डपरक अर्थ तो भाष्यकारों द्वारा स्वमतपोषण के लिये भी निकाले जा सकते हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि विमानन प्रक्रिया ऋग्वेदकालमें भी भारत में विद्यमान थी ।

कोष की दृष्टि से यह शब्द अनेकार्थक तथा उभय लिङ्गी (पुं., क्लीब) है । *व्योमयान, देवयान* तथा *देवरथ* शब्द विमान के पर्याय हैं । सार्वभौमगृह अथवा सप्तभूमिक गृह को भी विमान [2] कहते हैं । कालिदास दोनों अर्थों में विमान शब्द का अनेकशः प्रयोग करते हैं–

नेत्रा नीताः सततगतिना यद्विमानाग्रभूमी-
रालेख्यानां सलिलकणिकादोषमुत्पाद्य सद्यः ।।

–उत्तरमेघ

भुवनालोकनप्रीतिः स्वर्गिभिर्नानुभूयते ।
खिलीभूते विमानानां तदापातभयात्पथि ।।

–कुमार 02.45.

अभिज्ञानशाकुन्तल के सप्तम अंक में, स्वर्ग से हेमकूट पर्वत की ओर लौटते, महाराज दुष्यन्त के रथ का वर्णन भी शत-प्रतिशत विमानावतरण के समान ही है । प्रकट होते पर्वत-शिखरों से पृथ्वी का नीचे उतरना, पत्रजाल से वृक्षशाखाओं का प्रकट होना, नदियों का विस्तार तथा पृथ्वी का क्रमशः ऊपर उठना- ये अनुभूतियाँ विमान के अवतरण की ही हैं ।[3] कालिदास की ही तरह बाणभट्ट भी *कादम्बरी* के शूद्रकवर्णन में *विमानीकृतराजहंसमण्डल* शब्दावली द्वारा अपना विमान-परिचय प्रकट करते हैं ।

परन्तु विमान-सम्बन्धी ये समस्त उल्लेख रामायण एवं पुराणसन्दर्भों की अनुवृत्ति मात्र हैं । आदिकवि वाल्मीकि-प्रणीत रामायण में पुष्पक विमान का सांगोपांग-वर्णन सम्भवतः इस प्रकरण का मूलस्रोत है । रामायण के साक्ष्यानुसार पुष्पक पर्वत के समान (विशाल) तथा 'कामग' (automatic) था । उसका आकार-प्रकार देख कर राम एवं लक्ष्मण भी विस्मित हो उठे थे–

तत्पुष्पकं कामगमं विमानम् उपस्थितं भूधरसंनिकाशम्।
दृष्ट्वा तदा विस्मयमाजगाम रामः ससौमित्रिरुदारसत्त्व।।

–युद्धकाण्ड 121.30

पुष्पक विमान में सूर्य के समान चमक थी । उसकी गति मन जैसी थी । उसकी वेदिकाएँ (Seats) वैदूर्य मणि से गुँथी तथा स्वर्णनिर्मित थीं । उसमें कूटागार (रहस्यमय कक्ष) बने थे । विमान श्वेत पताकाओं तथा ध्वजों से समलंकृत था । उसमें सुवर्णकमल-मण्डित स्वर्ण-हर्म्य बने थे । उसके गवाक्षों में मोती तथा माणिक पिरोए गए थे तथा उनपर क्षुद्रघण्टिकाएँ लटक रही थीं । उसमें विशाल घण्टे भी लटक रहे थे, जिनकी टंकार मिठासभरी थी । विश्वकर्मा ने उसे सुमेरु पर्वत के शिखर की आकृति में ढाला था । विमान की फर्श पर स्फटिक जड़े थे तथा चित्र-विचित्र वैदूर्यों से निर्मित श्रेष्ठ आसन स्थापित थे । उसकी फर्श पर बहुमूल्य आस्तरण (बिछौना) बिछा था । वह विमान सर्वथा 'अनाधृष्य' अर्थात् दुर्घटना के संकट से मुक्त था।[4]

पुष्पक अधिष्ठाता की इच्छा का अनुवर्तन करता था। उड़ान भरते समय वह 'महानाद' उत्पन्न करता था ।[5] पुष्पक में प्रवेशद्वार आगे की ओर था। [6] विमान में राजहंसों की आकृतियाँ थीं । वह जनशून्य होते हुए भी, स्वामी के आदेशमात्र से कहीं भी जाने में समर्थ था–

अब्रतीत्तु तदा रामस्तद् विमानमनुत्तमम् ।
वह वैश्रवणं देवमनुजानामि गम्यताम् ।।
ततो रामाभ्यनुज्ञातं तद् विमानमनुत्तमम् ।
उत्तरां दिशमुद्दिश्य जगाम धनदालयम् ।।

पृथ्वी पर उतरते समय विमान की गति मन्द हो उठती थी–

क्रोशार्धं प्रकृतिपुरःसरेण गत्वा
काकुत्स्थः स्तिमितजवेन पुष्पकेण ।

–रघुवंश 23.79.

कृष्णद्वैपायन प्रणीत *श्रीमद्भागवतपुराण* में महर्षि कर्दम-निर्मित *मायाविमान* तथा भूतभावन शिव की कृपा से प्राप्त शाल्व के विध्वंसक *सौभविमान* का विलक्षण वर्णन प्राप्त होता है । इन सन्दर्भों को मात्र संयोग कह कर टाला नहीं जा सकता क्योंकि पुराणोक्त विमानों का यह सन्दर्भ आधुनिक वैमानिक तकनीक से, आश्चर्यजनक रूप से जुड़ा प्रतीत होता है । विमानों के वे सन्दर्भ काल्पनिक नहीं हो सकते ।

महर्षि कर्दम ने देवी देवहूति को सुख देने के लिये सर्वरत्नसमन्वित, मणिस्तम्भों तथा दिव्य उपकरणों युक्त, पट्टिकाओं पताकाओं, चित्र-विचित्र मालाओं, दुकूल-क्षौम-कौशेय वस्त्रों से शोभित था । उसमें पृथक्

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सौवर्ण कक्ष थे जो कि पर्यङ्क (पलंग), व्यजन (पंखे) तथा आसनों से श्रीमण्डित थे । यत्र-तत्र उसमें विद्रुम (मूँगे) से बनी वेदिकाएँ तथा महामरकत से बने स्थण्डिल (चबूतरे) थे । उसमें विहारस्थान, विश्राम, संवेश (शयनकक्ष) प्राङ्गण, अजिर आदि की व्यवस्था थी । विमान में स्थापित कृत्रिम हंस एवं पारावत इतने सजीव थे कि उन्हें जीवित समझ कर बाहरी हंस एवं पारावत, उनसे घुलमिल कर कलरव कर रहे थे ।

महर्षि कर्दम ने इस विलक्षण विमान में सौ वर्षों तक विहार किया तथा समस्त वैमानिक (देवों) को विमानसुख में पीछे छोड़ दिया। [8] इस कथन से स्पष्ट है कि अन्यान्य लोगों के पास भी विमान हुआ करते थे ।

श्रीमद्भागवत[9] के ही दशम स्कन्ध (अ. 76) में शाल्व के *सौभ* नामक लौहनिर्मित युद्धक विमान का अद्भुत वर्णन मिलता है । भगवान् आशुतोष के निर्देश से यह विमान मय दानव ने शाल्व के लिये निर्मित किया था । यह विमान देव, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, नाग एवं राक्षस सबके लिये अभेद्य तथा कामग था । यह विमान पूरा का पूरा लौहमय था ।

सौभ नामक वह संहारक विमान इच्छाचारी (कामग) होने के साथ ही साथ *'तमोधाम'* तथा *'दुरासद'* भी था। ये दोनों शब्द आधुनिक विमानतंत्र की दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं । *तमोधाम* का तात्पर्य संभवत: यह है कि विमान धुएँ के गुबार में स्वयं भी अदृश्य हो उठता था । *दुरासद* का अर्थ है पहुँच से बाहर । आज भी ऐसे सुपरसानिक युद्धक विमान बन रहे हैं जो 'रडार' की पहुँच से बाहर हों ।

सौभ विमान शिला, द्रुम, अशनि (वज्र), सर्प, धारासार, पाषाणखण्ड, धूल एवं प्रचण्ड आँधी उत्पन्न करने में समर्थ था ![10] वह विमान कभी भूमि पर तो कभी आकाश में, कभी पर्वत-शिखर पर तो कभी जल में दीखता था-

क्वचिद् भूमौ क्वचिद् व्योम्नि गिरिमूर्ध्नि जले क्वचित्।
अलातचक्रवद् भ्राम्यत् सौभं तद् दुरवस्थितम् ।।

उपर्युक्त सन्दर्भों द्वारा, भारतवर्ष में विमानविद्या के अस्तित्व का सप्रमाण विवेचन किया गया है । यह इस देश का दुर्भाग्य है कि संस्कृतज्ञान से विरहित तथाकथित वैज्ञानिक एवं इतिहासज्ञ प्रत्येक आविष्कार का श्रेय पाश्चात्यों को देते हैं तथा प्राचीन भारतीय वाङ्मय में उपलब्ध साक्ष्यों को कोरी कल्पना मान लेते हैं । परन्तु कल्पना सर्वथा निर्मूल नहीं होती है । उसका भी कहीं न कहीं, ठोस आधार होता है । यदि प्राचीन भारत में विमानविद्या नहीं थी, विमान नहीं थे तो यह शब्द कोष में आया ही क्यों ? कोष का एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो व्यवहार सिद्ध न हो ।

11वीं शती ई. में धारानरेश भोज ने भी *समराङ्गण सूत्रधार* में विमानविषयक पुष्कल जानकारी प्रस्तुत की है। धर्मयुग में प्रकाशित एक आलेख में महाराष्ट्र के तलपदे-बन्धुओं द्वारा, राइट-बन्धुओं से पूर्व ही विमान बना लेने का सप्रमाण विवेचन प्रस्तुत किया जा चुका है।[11] तलपदे-बन्धुओं ने, बम्बई नगर के सागरतट (चौपाटी) पर अपना विमान उड़ा कर दिखाया भी था । परन्तु ब्रिटिश हुकूमत में जैसे जगदीशचन्द्र बसु का प्राप्तव्य श्रेय मार्कोनी को मिल गया, ठीक उसी प्रकार तलपदे-बन्धु भी राइट-बन्धुओं से पीछे रह गये विमान-निर्माण का श्रेय प्राप्त करने में ।

आज विमानतंत्र विकास की पराकाष्ठा पर है । युद्ध, संकट, नागरिक यातयात सभी क्षेत्रों में विमान आज की विश्वसंस्कृति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है। विभिन्न देशों की विमान-निर्माता यंत्रशालाओं द्वारा अधिकाधिक सुविधासम्पन्न यात्री विमान बनाए जा रहे हैं जिनपर बैठकर यात्रा करना स्वयं में एक कल्पनातीत विलक्षण अनुभव है । यही कारण है कि विमानयात्रा भी आधुनिक भारतीय वाङ्मय का एक विशिष्ट पहलू बन गया है ।

स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत कविता में भी विमानकाव्य एक नई एवं विशिष्ट विधा बन कर उभरा है । जैसे खण्डकाव्य, अपनी विशिष्ट प्रकृति के ही कारण दूतकाव्य, सन्देशकाव्य, स्तोत्रकाव्य, अन्योक्तिकाव्य, तथा शतककाव्य कहा जाता है ठीक उसी प्रकार उसे 'विमानकाव्य' भी कहा जा सकता है । स्वतंत्रता-प्राप्ति के अनन्तर अनेक संस्कृत विद्वानों एवं मनीषियों ने विभिन्न सन्दर्भों में, विमान द्वारा विदेशयात्राएँ की हैं । इन्हीं संस्कृत-मनीषियों में से कुछ सहृदय कवियों ने, विमानयात्रा के अनुभवों को सरस कविता में निबद्ध किया है । कुछ कवियों ने विमान यात्रानुभव को लेकर मुक्तक कविताएँ लिखी हैं[12] तो कुछ ने सम्पूर्ण (खण्ड) काव्य ! प्रस्तुत आलेख में ऐसे तीन विमानकाव्यों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है—डा. प्रभाकरनारायण कवठेकर-प्रणीत[13] *भूलोकविलोकनम्*, डा . राधावल्लभत्रिपाठि-प्रणीत[14] *धरित्रीदर्शनम्* तथा अभिराज डा. राजेन्द्र मिश्र-प्रणीत[15] *विमानयात्राशतकम्* ।

भूलोकविलोकनम् को हम एक लम्बी कविता कह सकते हैं । परन्तु डा० राधावल्लभत्रिपाटी-प्रणीत धरित्रीदर्शनम् (अथवा *धरित्री दर्शन लहरी*) पाँच उन्मेषों में विभक्त एक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

'पञ्चाशिकाकोटिक' खण्डकाव्य हैं । प्रत्येक उन्मेष में ग्यारह मन्दाक्रान्ताएँ हैं जिससे यह काव्य 'मेघदूतसहोदर' प्रतीत होता है । रोचक बात तो यह है कि काव्य का प्रारंभ भी कवि मेघदूत की ही शैली में करता है–

कश्चिद् यात्रापरिगतरुचिर्भारते पान्थ आसीद्
विश्वस्मिन् यो भ्रमणरसिको द्रष्टुमुत्को धरित्रीम्।
प्राच्याधीतौ कलितरुचितो दिष्टयोगं नियोगं
लेभे गन्तुं प्रथितसुभगं प्राच्यशर्मण्यदेशम् ।।

धरित्रीदर्शनम् के प्रथम उन्मेष में कवि का विमानदर्शन, विमानारोहण तथा विमानप्रस्थान-वर्णन, द्वितीय में विमान से धरित्री दर्शन विषयक रोचक उत्प्रेक्षाएँ, तृतीय में रात्रि-आगमन तथा विमान- यात्राओं के अशनपानादि का वर्णन, चतुर्थ में विमान से प्रभातोदय-दर्शन, प्रभातविषयक हृद्यानवद्य उत्प्रेक्षाएँ तथा पंचम उन्मेष में विमान का पूर्वी जर्मनी के हवाई अड्डे पर अवतरण वर्णित है ।

विमानयात्राशतकम् में कवि नई दिल्ली (भारत) से बालीद्वीप की राजधानी डेनपसार तक अपनी विमानयात्रा का विवरण प्रस्तुत करता है । यह यात्रा तीन खण्डों में विभक्त है– 1. एयर इण्डिया विमान से दिल्ली सिंगापुर; 2. सिंगापुर के विमान से सिंगापुर-जकार्ता; तथा 3. गरुड इण्डोनेशिया विमान से जकार्ता-डेनपसार । यह काव्य विमानों की आन्तरिक साज-सज्जा, विमान-गवाक्ष से दीखते मेघाच्छादित आकाश, सूर्योदय, सागर एवं प्रकृति के विलक्षण वर्णनों से ओतप्रोत है । काव्य की समाप्ति बालीवसुन्धरा एवं डेनपसार नगर के वर्णनों से होती है ।

प्रयाणवेला में विमान, हवाईपट्टी पर वृत्ताकार घूमता हुआ अचानक ही जमीन से ऊपर उठता है । प्रभूत ऊँचाई पर पहुँचते ही विमान सर्वथा गतिहीन एवं निःस्तब्ध सा लगने लगता है मानो विश्वामित्र द्वारा प्रेरित एवं देवराज इन्द्र द्वारा धर्षित (अतएव कुण्ठितगति) त्रिशंकु हो ।

रिङ्गन् रिङ्गन् वलयपरिधौ भूमिभागे विमानः
स्थानात्तस्मादुपरि सहसैवोत्थितश्चान्तरिक्षे ।
क्रान्त्वा भूमिं प्रगुणितरयो भूय एवोन्मुखः खे
श्यामः पादो बलिनियमनाभ्युद्यतस्येव विष्णोः ।।
गत्वा चोर्ध्वं वियति विपुलेऽसौ विमानो ललम्बे
निःस्तब्धत्वं गत इव यथा विस्मृतश्वास आसीत् ।
नो संसर्पन् नियतगमनः पृष्ठतश्चाग्रतो वा
विश्वामित्रप्रतिहतरयः सम्पतन् वा त्रिशङ्कुः ।।

–*धरित्रीदर्शनम्*:, प्रथमोन्मेष 7. 8.

मध्येयानं कृतस्थाने घोषयत्येव चालके ।
युगान्तघर्घरारावोऽकस्मादेव समुत्थितः ।।
ततस्तूर्णतमैर्वेगैर्धावमानं महाजवम् ।
विमानं वसुधां हित्वा नभोमण्डलमाययौ ।।
ऊर्ध्वस्कन्धं स्फुरद्गत्या निमेषैरेव कैश्चन ।
चन्द्रतारकमध्यस्थं विमानं तद् बभौ ततः ।।

.....

एवमादिषु पूर्णेषु विमानं तन्निराकुलम् ।
निश्चलं तन्नु निष्कम्पं जातं शमितघर्घरम् ।।

–विमानयात्राशतकम् 13–17.

प्राभातिक प्रकाश में बादलों की पीठ पर उड़ते विमान का दृश्य कुछ और ही होता है । डॉ त्रिपाठी को हजारों दूध की नदियाँ बहती सी दीखती हैं । विमानयात्राशतककार को नीले आकाश में कट-छँटकर संचरण करते बादल हरित दूर्वास्थली में घास चरते मेषशावक प्रतीत होते हैं–

किं सञ्जातस्सघनतिमिरं पूर्णिमायाः प्रकाशः
स्फीतं किं वा प्रवहति तथा दुग्धकुल्यासहस्रम् ।
नीचैरेषा धवलधवला लक्ष्यते मेघमाला
राशीभूतः प्रसृत इव किं त्र्यम्बकस्याट्टहासः ।।

–*धरित्रीदर्शनम्*, चतुर्थोन्मेषः, 4.

विमानाधस्तले कीर्णा असंख्या श्वेतवारिदाः ।
दूर्वास्थल्यामभासन्त चरन्तां मेषशावकाः ।।
कदाचित्कीर्णमेघालीं संविदार्य सरत्पुनः ।
यानं बभौ शरत्काले कासकान्तारगारगम् ।।
विमाने सम्मुखीने वै मेघखण्डाः पलायिताः ।
यथा जाङ्गलिकं दृष्ट्वा पलायन्ते भियाऽर्भकाः ।।
उपरिष्टादधस्ताद्वा वामदक्षिणपार्श्वतः ।
अक्षता जर्जरा मेघा यानमाहत्य विद्रुताः ।।
क्वचित्पुनर्घनीभूतमेघसन्दोहमध्यगम् ।
नालुलोके यदा यानं मुक्ततारापथं चिरम् ।।
तदा हिन्दोलनभ्रान्त्या विमानं चालयन् कृती ।
मेघपाशविमुक्त्यर्थं प्रयासान् कृतवान् स्वयम् ।।

– *विमानयात्राशतकम्*, 52–58.

विमान के उड़ने तथा उतरने के क्रम में पृथ्वी का जो दृश्य दीखता है वह विलक्षण होता है । वह 'गूँगे का गुड़' है, सर्वथा अनाख्येय तथा अनुभवमात्र-संवेद्य ! उन अनुभवों को *विमानयात्राशतक* में विश्वसनीय ढंग से व्यक्त किया गया है–

विमानेऽवनतीभूते स्फुटं जातं महीतलम् ।
चित्रकृत्तूलिकाऽऽकृष्टालेख्यसाधनिकोपमम् ।।
यथाऽऽलेख्यं क्वचिद् गाढैर्वर्णयोगैर्महीधरम् ।
वर्णविस्तारणैर्वीथीं मालभूमिञ्च गह्वरम् ।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

रेखया सरितं वक्रां विहगं हर्म्यमन्दिरम् ।
चित्रकारो विनिर्माति वस्तुना कल्पनेन च ।।
विमानादेवमाभाति नीचैः स्थितमहीतलम् ।
वैधातृकं महच्चित्रं न भूतं भावि नोऽथवा !!

विमान के आरोहावरोह-भ्रम में यात्रियों को पेटी बाँध ने तथा सावधान रहने का निर्देश दिया जाता है । परिचारिकाएँ रक्षाकवच का प्रयोग भी प्रदर्शित करती हैं । बीच-बीच में भी पृथ्वी से विमान की ऊँचाई तथा अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाती हैं । यात्रियों के नाश्ते, भोजन एवं मनोरञ्जन का पूर्ण प्रबन्ध विमान में रहता है । दोनों ही रचनाकार इन तथ्यों का संकेत करते हैं–

आरूढश्च प्रमुदितमनाः प्रेर्यमाणो विमानं
स्थानं नीतः श्रमविगमकं यानबालाप्रदिष्टम् ।
यानाध्यक्षो गमनसमयं चाथ संघोष्य यातॄन्
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ।।

x x x

एतं प्राप्ता ननु वसुमतीं सावधाना भवन्तः
सन्तिष्ठेरन् भवतु भवतां मङ्गला चैव यात्रा ।
यानाध्यक्षो मुदितमनसा घोषयामास चेत्थं
प्रह्वीकुर्वन् सपदि वसुधां नीयमानं विमानम् ।।
–धरित्रीदर्शनम् प्रथमपञ्चमोन्मेष ।
अथोवाच गिरा मृद्व्या चालकान्यतमो युवा ।
प्रमादो नैव कर्तव्यो यानमुद्याति साम्प्रतम् ।।।1
बन्ध आसन्दिकालग्नो नियन्तव्य प्रयत्नतः ।
वातायनं पिधातव्यं लोकनीयं न वा बहिः ।।।2

x x x

निमेषैरेव पश्यामः कुवालालम्पुरं वयम् ।
जुघोषेति लसद्वाचा वायुयानप्रबन्धकः ।।30
– विमानयात्राशतकम् ।

कवि, विशेष कर संस्कृत का कवि अनलंकृत भाषा का प्रयोग नहीं ही करता है । अलंकार, बिम्ब, कल्पना, स्वभावोक्ति एवं वक्रोक्ति के बिना उसे अपनी अभिव्यक्ति अधूरी प्रतीत होती है । इन दोनों विमानकाव्यों में, इस दृष्टि से, आलंकारिक-समृद्धि पराकाष्ठा पर पहुँची दीखती है । डा. त्रिपाठी ने मेघदूत की पंक्तियों को, यथोचित भावपरिवर्तन के साथ प्रभूत मात्रा में आहृत किया है,[16] जो कि जैन दूतकाव्यकारों की परम्परा रही है । नये परिप्रेक्ष्य में मेघ की वे पंक्तियाँ सुन्दर प्रतीत होती हैं । कहीं-कहीं शंकराचार्य, भवभूति एवं अथर्ववेद के भावों की भी छाया, कवि ने प्रतिभाशिल्प के साथ ग्रहण की है–

माता वा स्यात् कुतनयजने किं कदाचित्कुमाता ।। 3.9.
स्थित्वा यानेऽनिमिषमनिशं रात्रिरेव व्यरंसीत् ।। 3.10.
माता भूमिर्विनततनयः सोऽस्मि चास्या धरित्र्याः।। 5.10

मेघपटल को चीर कर आगे बढ़ते विमान के सन्दर्भ में *धरित्रीदर्शन* के कवि ने अद्भुत उत्प्रेक्षाएँ सँजोई हैं । बादलों पर चलता विमान क्षीरसागर पर तिरती नाव-सा अथवा यश की पताका-सा प्रतीत होता है–

किं क्षीराब्धेरुपरि च शनैः स्यन्दमानैव नौका
राशेराहो ह्युपरि यशसां धूयमाना पताका ?
मेघानां स क्षितिजपुलिनादास्तृतायां विमानो
मध्ये गच्छन् खविरहितो लक्ष्यते कृष्यमाणः ।।4.5

विमानयात्राशतककार को विमान रुई के ढेर में फुदकती तितली-सा, हिमराशि पर उड़ता पुष्पक-सा अथवा कैलाशशिखर पर अठखेलियाँ खेलता नन्दी वृषभ-सा प्रतीत हुआ–

तूलराशौ यथा काचित्तित्तली प्लवते सुखम् ।
तादृशी सुषमा नूनं वायुयानस्य संबभौ ।।1।।
हिमराशौ यथोड्डीनं भवताद् देवपुष्पकम् ।
तादृशी ननु विच्छित्तिर्वायुयानस्य संबभौ ।।62।।
यथा वा शुभ्रकैलाशे वल्गते शम्भुवाहनः ।
तादृशं ननु सौन्दर्यं वायुयानस्य संबभौ ।।63।।

विमानयात्राशतक के कवि ने एक विलक्षण अनुभव को रेखांकित किया है और वह है–निरभ्र आकाश में सागर के ऊपर से विमान का आगे बढ़ना । आकाश एवं प्रशान्त महासागर का रंग एक होने के कारण कवि को एक विचित्र अनुभव हुआ–

नीलाम्भोधिरधोभागे नीलाकाशश्च शीर्षके ।
ज्ञातुं नाशाकि यत्नैर्भोः कियद् व्योम कियज्जलम्।।50।।
उच्चैर्नीचैश्च सर्वत्र नीलाम्बरमभासत ।
एकरुपं जलं व्योम हन्त सर्वं विलक्षणम् ।।51।।

यह प्रसंग अब यहीं समाप्त होता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'विमानकाव्य' की यह विधा संस्कृत काव्यशास्त्रियों को भी मान्य होगी–अपनी नवीनता एवं विलक्षणता के कारण । भविष्य में संस्कृत कविता, अन्यान्य विमानकाव्यों से समृद्ध हो, यही मेरी आशंसा है।

सन्दर्भ

1. व्योमयानं विमानोऽस्त्रीत्यमर । 1. 1. 48.
   व्योम्नि यान्त्यनेन । करणेल्युट् । कृष्णमित्र ।
2. विमान्ति वर्तन्तेऽस्मिन् देवा विमानम् । अधिकरणे ल्युट् । कृष्णमित्र ।
3. शैलानामवरोहतीव शिखरादुन्मज्जतां मेदिनी
   पर्णाभ्यन्तरलीनतां विजहति स्कन्धोदयात् पादपाः।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सन्तानेस्तनुभावनष्टसलिला व्यक्तिं भजन्त्यापगा
केनाऽप्युत्क्षिपतेव पश्य भुवनं मत्पार्श्वमानीयते।।
—शाकु० 7. 8.

4. सविस्तर द्रष्टव्य: रामायण, युद्धकाण्ड 121. 23-30.
5. राघवेणाभ्यनुज्ञातमुत्पपात विहायसम् ।
अनुज्ञातं तु रामेण तद् विमानमनुत्तमम् ।
हंसयुक्तं महानादमुत्पपात विहायसम् ।। युद्ध०123।.
6. अवतीर्य विमानाग्रादवतस्थे महीतलम्।। युद्ध127.60
7. प्रियाया: प्रियमन्विच्छन् कर्दमो योगमास्थित: ।
विमानं कामगं क्षत्तस्तर्ह्येवाविरचीकरत् ।।
सर्वकामदुघं दिव्यं सर्वरत्नसमन्वितम्
सर्वर्द्धुयुपचयोदर्कं मणिस्तम्भैरुपस्कृतम् ।।
ग्निभिर्विचित्रमाल्याभिर्मञ्जुशिञ्जत्षडङ्घ्रिभि: ।
दुकूलक्षौमकौशेयैर्नानावस्त्रैर्विराजितम् ।।
x x x
हंसपारावतव्रातैस्तत्र तत्र निकूजितम् ।
कृत्रिमान्मन्यमानै: स्वानधिरुह्याधिरुह्य च ।।
विहारस्थानविश्रामसंवेशप्राङ्गणाजिरै: ।
यथोपजोषं रचितैर्विस्मापनमिवात्मन: ।।
श्रीमद्भागवत 3.23.12-21
8. भ्राजिष्णुना विमानेन कामगेन महीयसा ।
वैमानिकानत्यशेत चरँल्लोकान् यथानिल: ।।
वही, 41
9. देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
अमेद्यं कामगं वव्रे स यानं वृष्णिभीषणम् ।।
श्रीमद्भागवत 10.76.6.
10. स लब्ध्वा कामगं यानं तमोधाम दुरासदम् ।
यथौ द्वारावतीं शल्वो वैरं वृष्णिकृतं स्मरन् ।। 8।।
शिलाद्रुमाश्चाशनय:सर्पा आसारशर्करा: ।
प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूद्रजसाऽऽच्छादिता दिश:।। 11.
श्रीमद्भागवत 10.76
11. यह निबन्ध धर्मयुग में, छठें दशक के किसी अंक में प्रकाशित हुआ है। मैने स्वयं इसे पढ़ा है।
—लेखक ।
12. डॉ० रमाकान्त शुक्ल (*वैमानिकम्*), डॉ० हरिदत्त शर्मा (*चल चल विमानराज रे !*) तथा डॉ० चन्द्रभानु त्रिपाठी (*उर्वशी* नाटिका में)
13. दूर्वा, म० प्र० संस्कृत अकादमी, भोपाल ।
14. दूर्वा, तथा सन्धानम् (संस्कृत परिषद्, सागर वि० वि० 1989.)
15. ***अर्वाचीनसंस्कृतम्***, जुलाई 87 अंक तथा *पञ्चकुल्या* (वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद) में संकलित ।
16. सम्मुखीनं विमानं वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श। 1.5
यातृन् प्रीत: प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।1.6

भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे धरित्र्या: । 2.1

एषा.....धरित्री..... जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम् । 2.3

पश्याम्येनां धरित्रीं साभ्रेऽह्नीव स्थलकमलिनीं न प्रबुद्धां न सुप्ताम् । 2.4

स्वेष्टे वस्तुन्युपचितरसा प्रेमराशीभवन्ति । 2.11

●

असम तथा मिथिला का सांस्कृतिक समागम

❑ डा. श्री ताराकान्त झा

असम तथा मिथिला का सांस्कृतिक समागम अति प्राचीन काल से सुखद रहा है । अनेक उदाहरणों के द्वारा दर्शाया जा सकता है कि दोनों क्षेत्र एक दूसरे से सम्बन्धित रहे और दोनों में सामीप्य का सम्बन्ध था । *कालिका पुराण* के अनुसार नरकासुर का पालन-पोषण मिथिला के राजा जनक (विदेह) के द्वारा हुआ । वह बहुत बड़ा योद्धा था । उसने प्राग्ज्योतिषपुर के किरात राजा घटक को वीरतापूर्वक हटाकर यहाँ का शासक बना । चूँकि वह बहुत प्रतापी तथा वीर था, अत: युद्ध में उसने यहाँ के तत्कालीन किरात एवं अन्य मंगोलवंशीय जातियों को दूर भगाकर यहाँ आर्यो को वसाया[1] । प्राग्ज्योतिषपुर में आर्यो की यह पहली व्यवस्था थी । गोहाटी के "*दिजपुर*' (वर्त्तमान असम की राजधानी) के समीप छोटी पहाड़ियों से घिरा एक गाँव है जो "नरकासुर गाँव" के नाम से जाना जाता है । इस गाँव से दो मील दूर एक आधुनिक दिजपुर ग्राम है, जो प्राग्ज्योतिषपुर का छोटा-सा रूप माना जाता है। इस प्रकार पौराणिक आधार पर यह कहा जा सकता है कि मिथिला के नरकासुर के द्वारा असम और मिथिला का अटूट सम्बन्ध कायम हुआ । नरकासुर यहाँ भगवान् विष्णु तथा जनक के समर्थन से लोकोपकारी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शासन करने आया था, लेकिन बाद में चलकर दुर्जन हो गया और लोगों को सताकर उसने अत्याचार का वातावरण तैयार कर दिया । लोग उसके दुर्व्यवहार से प्रताड़ित होकर जब त्राहि-त्राहि करने लगे तो कृष्ण ने स्वयं उसका संहार किया और उसके पुत्र भगदत्त को गद्दी पर बैठाया[2] । *महाभारत* में भगदत्त का वर्णन एक शक्तिशाली राजा के रूप में किया गया है ।

राय बहादुर कनक लाल बरुआ ने अनेक प्रकार से सिद्ध किया है कि बिहार के पूर्णियाँ जिला के पूर्वभाग जो कोशी नदी से घिरा है, मिथिला का एक भाग है । अत: मिथिला का एक भाग कामरूप के अन्तर्गत था । (क्योंकि इनके अनुसार कामरूप की (पश्चिमी) सीमा पहले कोशी नदी थी तथा पूर्णियाँ का कुछ भाग भी इसमें सम्मिलित था ।) कम से कम महाभूत वर्मन् के शासन से सुस्थितवर्मन् के शासन तक और पुन: भास्करवर्मन् के समय से पाल राज्य के उदय तक कामरूप का प्रभुत्व मिथिला के कुछ अंश पर था ।[3] छठी एवं आठवीं शताब्दी के मध्य में सम्पूर्ण मिथिला कामरूप के अन्तर्गत थी और उसके बाद भी 16वीं शताब्दी तक मिथिला के एक हिस्से पूर्णियाँ पर कामरूप का आधिपत्य था । इस प्रकार दोनों क्षेत्रों के बीच जातीय, भाषा और सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ था ।[4] यद्यपि डॉ. भंडारकर[5] के अनुसार भूतिवर्मन् मुश्किल से अपने राज्य की सीमा पूर्णियाँ जिला तक बड़ाई होगी, क्योंकि उनके समय में गुप्त सम्राट बंगाल के उत्तर भाग के राजा थे जो क्षेत्र पूर्णियाँ तथा कामरूप के बीच पड़ता है । अर्थात् इस क्षेत्र के जीते बिना पूर्णियाँ तक अपनी सीमा निर्धारित करना कठिन था। किन्तु डॉ. महेश्वर नियोग[6] ने नक्शा के सहारे यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि बंगाल के उक्त भाग को बिना जीते मिथिला के पूर्व भाग (पूर्णियाँ) को कब्जा में किया जा सकता था । उनके अनुसार तो महाभूतिवर्मन् ने करतोया को पार कर पूर्व मिथिला के एक भाग तथा मोरंग (जो अब नेपाल में है) को जीत लिया था और अपनी विजय के स्मरणार्थ उन्होंने विजय की गई भूमि ब्राह्मणों को दी होगी । सत्यता जो भी हो, लेकिन उपर्युक्त विवरणों से यह सोचना उचित ही होगा कि कामरूप और मिथिला दोनों क्षेत्र प्राचीन समय में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से आपस में बंधे हुए थे। उन्होंने स्वीकार किया है कि कामरूप में आर्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मिथिला का भी महत्वपूर्ण योगदान हैं : There are good reasons to suppose that the Aryan wave spread to Kamarupa on the east to Varendra and Vanga towars the south and the south through Mithila.

मिथिला तथा असम में सन्निकट सम्बन्ध रहने के कारण ही असम में आज भी बहुत से ब्राह्मण तथा कायस्थ अपने को मिथिला के निवासी मानते हैं । ये ब्राह्मण अधिकतर "मिश्र", कहलाते हैं । यही बात सिलहट के साथ भी है । कनक लाल बरुआ के अनुसार प्राचीन कामरूप में आर्य संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार मिथिला के द्वारा ही हुआ-

"During historic times it was through Mithila that Aryan culture and civilization spread into the rest of Kamrupa"

अब दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक प्रगाढ़ता का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है । दोनों स्थानों ने एक दूसरे को खूब प्रभावित किया । प्राचीन काल से दोनों क्षेत्रों में विद्वानों एवं अन्य लोगों का आगमन था । अत: यदि मिथिला ने असम को सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रेरणा दी तो असम ने भी इसे सामाजिक रीति-रिवाज में तांत्रिक पद्धति से प्रभावित किया, जिसका असर आज भी दिखाई पड़ता है । अद्यतन युग में भी मिथिला के घर-घर में "कामर-कमच्छा" की दुहाई बड़े गौरव के साथ दी जाती है । उसी प्रकार साहित्य और कला के संबंध में भी बहुत कुछ समानता देखी जा सकती है । कीर्त्तन-भजन, नाटक आदि क्षेत्रों में भी दोनों एक दूसरे से बहुत नजदीक हैं । विशेषत: 14वीं तथा 15वीं शताब्दी में तो दोनों का सांस्कृतिक आयाम बहुत कुछ मिलता-जुलता मालूम पड़ता है । कामाख्या के कारण तो दोनों स्थानों का सामीप्य-सूत्र और भी बहुत मजबूत हुआ । दोनों जगहों में सांस्कृतिक समागम का एक बहुत बड़ा परिचायक यह भी है कि श्रीमंत शंकरदेव जैसे महापुरुष को प्रारम्भ में भागवत की ओर प्रेरित करने में तिरहुत के पं० जगदीश मिश्र का प्रशंसनीय प्रयास है । यह भी कहा जाता है कि मिथिला के वे पंडित (जगदीश मिश्र) यहाँ आये और उन्होंने शंकरदेव के समक्ष भागवत का सम्पूर्ण पाठ किया तथा उसकी व्याख्या भी की, उसके बाद वे मर गये ।[7] शंकरदेव उनके भागवतसंबंधी संभाषण को सुनकर प्रभावित हुए और कृष्ण को आराध्य मानकर वैष्णव धर्म की ओर उन्मुख हुए[8] तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हुए । इस प्रकार हम देखते हैं कि असम के लोकनायक एवं

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मनीषी साहित्यकार शंकरदेव के प्रारम्भिक जीवन के वट-वृक्ष को पल्लवित करने में मैथिल विद्वान् का भी सहयोग है ।

मिथिला प्राचीन समय में दर्शन तथा अन्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए प्रसिद्ध थी, और लोग दूर-दूर से यहाँ विद्याध्ययन करने के लिए आते थे । कामरूप के भास्कर विप्र वेदान्त के अध्ययन के लिए मिथिला आये थे।[9] स्वयं शंकरदेव के विषय में भी यह कहा जाता है कि वे अपनी तीर्थ-यात्रा के दौरान यहाँ भी आये थे । इसके सम्बन्ध में निश्चित कुछ भी नहीं कहा जा सकता । लेकिन शंकरदेव द्वारा प्रयुक्त "ब्रजावली" (ब्रजबुलि) भाषा से यह द्योतित होता है कि असम और मिथिला का सांस्कृतिक सम्पर्क दृढ़ था । इस सन्दर्भ में डॉ. विरंचिकुमार बरुआ का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है । उनके अनुसार मध्य युग में मिथिला नवीन वैष्णव धर्म का बहुत बड़ा केन्द्र थी । मिथिला की भाषा मैथिली शीघ्र ही एक निश्चित साहित्य की भाषा बनी । विद्यापति अपने भावना-प्रवण गेय गीत के कारण वैष्णव कवियों में अग्रगण्य हुए । . . .शीघ्र ही भारत के विभिन्न भागों से सुप्रसिद्ध कवि, विद्वान, प्रचारक उनके समीप जाने लगे । इनमें से कुछ नेपाल तथा तिब्बत से भी लोग आये । कामरूप भी पीछे नहीं रहा । अतिशय साहित्यिक एवं ऐतिहासिक प्रमाणों के द्वारा दिखलाया जा सकता है कि कामरूप के विद्वान् भी मिथिला अथवा बिहार गये एवं वहाँ की भाषा सीखी । पुनर्जागरण की सम्पूर्ण चेतना विद्यापति के अनुकूल में एकत्र हो गई । घर लौटने पर ये विद्वान् विद्यापति के अनुकरण पर तथा अपनी भाषा में कविता सृजन करने लगे, किन्तु उसमें मैथिली भाषा के शब्द प्रचुरता के साथ मिश्रित थे ।[10]

इससे यह झलकता है कि प्राचीन समय में मिथिला विद्या का केन्द्र थी और वहाँ अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त कामरूप से भी विद्वान् जाकर विद्याध्ययन करते थे और वहाँ की सांस्कृतिक सम्पदा से लाभान्वित होते थे । मौखिक विचार विमर्श के क्रम में डॉ. सत्येन्द्र नाथ शर्मा जी ने भी इस मत की पुष्टि की कि दोनों क्षेत्रों के लोग आवागमन के द्वारा सांस्कृतिक सूत्र में बँधे थे । उन्होंने स्पष्टत: स्वीकार किया कि विशेषत: मिथिला, कनौज आदि स्थानों के लोगों ने ही यहाँ आर्य संस्कृति का प्रचार किया । इसमें ब्राह्मण तथा उच्च वर्ण के हिन्दू का योगदान प्रशंसनीय है । इस पुनीत कार्य में मिथिला के ब्राह्मण तथा कायस्थ अग्रगामी थे । डॉ. महेश्वर नियोग भी इस मत से सहमत हैं ।[11] मिथिला तथा उत्तर भारत के लोगों की सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने के लिए एवं आर्य संस्कृति के दीपक जलाने के लिए, उन्हें आदर के साथ बुलाया जाता था तथा स्थायी रूप से बसाया जाता था । ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि यद्यपि राजा अनार्य या मंगोल वंश के या अन्य दूसरे वंश के होते थे, फिर भी उनमें से अधिकांश राजाओं का झुकाव आर्य संस्कृति के प्रसार के पक्ष में था । यही कारण है कि वे मिथिला, कन्नौज आदि स्थानों के ब्राह्मणों, कायस्थों तथा अन्य उच्च हिन्दूसम्भ्रांत एवं पण्डित परिवारों को अपने यहाँ बसाते थे । असम के इतिहास में कई जगह ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं । राजा नरनारायण का नाम इस सन्दर्भ में विवेचनीय है, जिन्होंने मिथिला तथा गौड़ (बंगाल) से पंडितों को लाकर अपने राज्य में बसाया था। शंकरदेव के पूर्वज स्वयं बाहर से (प्राय: कन्नौज से) ही यहाँ आये थे । यह बात विशेष पश्चिमी असम के सम्बन्ध में अधिक आधिकारिक रूप से कही जा सकती है ।

असम तथा मिथिला के सांस्कृतिक समागम के परिप्रेक्ष्य में विचार-विमर्श के मध्य डा० सत्येन्द्र नाथ शर्मा जी ने इन पंक्तियों के लेखक को यह भी जानकारी दी कि मिथिला से प्रकाशित *पारिजातहरण महाकाव्य* में (जिसके कुछ अंश लुप्त या नष्ट हैं) कामरूप के अनेक स्थानों के रमणीय वर्णन हैं, जिनमें हाजो, उमानन्द महादेव आदि के वर्णन तो अति मनोरम हैं । अनुमान किया जाता है कि यह ग्रन्थ शंकरदेव से बहुत पहले की रचना है । सचमुच, असम तथा मिथिला के सांस्कृतिक समन्वय का यह दृष्टान्त साहित्यकारों की दृष्टि में सराहनीय कहा जा सकता है ।

दोनों स्थानों के पारस्परिक आदान-प्रदान का एक सुन्दर उदाहरण हस्तमुक्तावली ग्रन्थ भी है । यह ग्रन्थ हिन्दू नृत्य-पद्धति पर प्रकाश डालता है । इसमें उनचालिस प्रकार के विभिन्न नृत्यों का वर्णन किया गया है । इसके रचयिता शुभंकर कवि हैं । इसकी पाण्डुलिपि असम में, दरभंगा (मिथिला) में तथा नेपाल के दरबार पुस्तकालय में (नेपाल में पं० हर प्रसाद शास्त्री द्वारा) पायी गयी है।[12] डा. जयकान्त मिश्र ने शुभंकर कवि को मिथिला का माना है । असम के कुछ विद्वानों का अनुमान है कि वे असम के ही थे । किन्तु डॉ. महेश्वर नियोग[13] ने *श्री*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शासन करने आया था, लेकिन बाद में चलकर दुर्जन हो गया और लोगों को सताकर उसने अत्याचार का वातावरण तैयार कर दिया । लोग उसके दुर्व्यवहार से प्रताड़ित होकर जब त्राहि-त्राहि करने लगे तो कृष्ण ने स्वयं उसका संहार किया और उसके पुत्र भगदत्त को गद्दी पर बैठाया[2] । *महाभारत* में भगदत्त का वर्णन एक शक्तिशाली राजा के रूप में किया गया है ।

राय बहादुर कनक लाल बरुआ ने अनेक प्रकार से सिद्ध किया है कि बिहार के पूर्णियाँ जिला के पूर्वभाग जो कोशी नदी से घिरा है, मिथिला का एक भाग है । अत: मिथिला का एक भाग कामरूप के अन्तर्गत था । (क्योंकि इनके अनुसार कामरूप की (पश्चिमी) सीमा पहले कोशी नदी थी तथा पूर्णियाँ का कुछ भाग भी इसमें सम्मिलित था ।) कम से कम महाभूत वर्मन् के शासन से सुस्थितवर्मन् के शासन तक और पुन: भास्करवर्मन् के समय से पाल राज्य के उदय तक कामरूप का प्रभुत्व मिथिला के कुछ अंश पर था ।[3] छठी एवं आठवीं शताब्दी के मध्य में सम्पूर्ण मिथिला कामरूप के अन्तर्गत थी और उसके बाद भी 16वीं शताब्दी तक मिथिला के एक हिस्से पूर्णियाँ पर कामरूप का आधिपत्य था । इस प्रकार दोनों क्षेत्रों के बीच जातीय, भाषा और सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ था ।[4] यद्यपि डॉ. भंडारकर[5] के अनुसार भूतिवर्मन् मुश्किल से अपने राज्य की सीमा पूर्णियाँ जिला तक बढ़ाई होगी, क्योंकि उनके समय में गुप्त सम्राट बंगाल के उत्तर भाग के राजा थे जो क्षेत्र पूर्णियाँ तथा कामरूप के बीच पड़ता है । अर्थात् इस क्षेत्र के जीते बिना पूर्णियाँ तक अपनी सीमा निर्धारित करना कठिन था। किन्तु डॉ. महेश्वर नियोग[6] ने नक्शा के सहारे यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि बंगाल के उक्त भाग को बिना जीते मिथिला के पूर्व भाग (पूर्णियाँ) को कब्जा में किया जा सकता था । उनके अनुसार तो महाभूतिवर्मन् ने करतोया को पार कर पूर्व मिथिला के एक भाग तथा मोरंग (जो अब नेपाल में है) को जीत लिया था और अपनी विजय के स्मरणार्थ उन्होंने विजय की गई भूमि ब्राह्मणों को दी होगी । सत्यता जो भी हो, लेकिन उपर्युक्त विवरणों से यह सोचना उचित ही होगा कि कामरूप और मिथिला दोनों क्षेत्र प्राचीन समय में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से आपस में बंधे हुए थे। उन्होंने स्वीकार किया है कि कामरूप में आर्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मिथिला का भी महत्वपूर्ण योगदान है : There are good reasons to suppose that the Aryan wave spread to Kamarupa on the east to Varendra and Vanga towars the south and the south through Mithila.

मिथिला तथा असम में सन्निकट सम्बन्ध रहने के कारण ही असम में आज भी बहुत से ब्राह्मण तथा कायस्थ अपने को मिथिला के निवासी मानते हैं । ये ब्राह्मण अधिकतर "मिश्र", कहलाते हैं । यही बात सिलहट के साथ भी है । कनक लाल बरुआ के अनुसार प्राचीन कामरूप में आर्य संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार मिथिला के द्वारा ही हुआ-

"During historic times it was through Mithila that Aryan culture and civilization spread in to the rest of Kamrupa"

अब दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक प्रगाढ़ता का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है । दोनों स्थानों ने एक दूसरे को खूब प्रभावित किया । प्राचीन काल से दोनों क्षेत्रों में विद्वानों एवं अन्य लोगों का आगमन था । अत: यदि मिथिला ने असम को सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रेरणा दी तो असम ने भी इसे सामाजिक रीति-रिवाज में तांत्रिक पद्धति से प्रभावित किया, जिसका असर आज भी दिखाई पड़ता है । अद्यतन युग में भी मिथिला के घर-घर में "कामर-कमच्छा" की दुहाई बड़े गौरव के साथ दी जाती है । उसी प्रकार साहित्य और कला के संबंध में भी बहुत कुछ समानता देखी जा सकती है । कीर्त्तन-भजन, नाटक आदि क्षेत्रों में भी दोनों एक दूसरे से बहुत नजदीक हैं । विशेषत: 14वीं तथा 15वीं शताब्दी में तो दोनों का सांस्कृतिक आयाम बहुत कुछ मिलता-जुलता मालूम पड़ता है । कामाख्या के कारण तो दोनों स्थानों का सामीप्य-सूत्र और भी बहुत मजबूत हुआ । दोनों जगहों में सांस्कृतिक समागम का एक बहुत बड़ा परिचायक यह भी है कि श्रीमंत शंकरदेव जैसे महापुरुष को प्रारम्भ में भागवत की ओर प्रेरित करने में तिरहुत के पं० जगदीश मिश्र का प्रशंसनीय प्रयास है । यह भी कहा जाता है कि मिथिला के वे पंडित (जगदीश मिश्र) यहाँ आये और उन्होंने शंकरदेव के समक्ष भागवत का सम्पूर्ण पाठ किया तथा उसकी व्याख्या भी की, उसके बाद वे मर गये ।[7] शंकरदेव उनके भागवतसंबंधी संभाषण को सुनकर प्रभावित हुए और कृष्ण को आराध्य मानकर वैष्णव धर्म की ओर उन्मुख हुए[8] तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल हुए । इस प्रकार हम देखते हैं कि असम के लोकनायक एवं

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मनीषी साहित्यकार शंकरदेव के प्रारम्भिक जीवन के वट-वृक्ष को पल्लवित करने में मैथिल विद्वान् का भी सहयोग है ।

मिथिला प्राचीन समय में दर्शन तथा अन्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए प्रसिद्ध थी, और लोग दूर-दूर से यहाँ विद्याध्ययन करने के लिए आते थे । कामरूप के भास्कर विप्र वेदान्त के अध्ययन के लिए मिथिला आये थे।[9] स्वयं शंकरदेव के विषय में भी यह कहा जाता है कि वे अपनी तीर्थ-यात्रा के दौरान यहाँ भी आये थे । इसके सम्बन्ध में निश्चित कुछ भी नहीं कहा जा सकता । लेकिन शंकरदेव द्वारा प्रयुक्त "ब्रजावली" (ब्रजबुलि) भाषा से यह द्योतित होता है कि असम और मिथिला का सांस्कृतिक सम्पर्क दृढ़ था । इस सन्दर्भ में डॉ. विरंचिकुमार बरुआ का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है । उनके अनुसार मध्य युग में मिथिला नवीन वैष्णव धर्म का बहुत बड़ा केन्द्र थी । मिथिला की भाषा मैथिली शीघ्र ही एक निश्चित साहित्य की भाषा बनी । विद्यापति अपने भावना-प्रवण गेय गीत के कारण वैष्णव कवियों में अग्रगण्य हुए । . . .शीघ्र ही भारत के विभिन्न भागों से सुप्रसिद्ध कवि, विद्वान, प्रचारक उनके समीप जाने लगे । इनमें से कुछ नेपाल तथा तिब्बत से भी लोग आये । कामरूप भी पीछे नहीं रहा । अतिशय साहित्यिक एवं ऐतिहासिक प्रमाणों के द्वारा दिखलाया जा सकता है कि कामरूप के विद्वान् भी मिथिला अथवा बिहार गये एवं वहाँ की भाषा सीखी । पुनर्जागरण की सम्पूर्ण चेतना विद्यापति के अनुकूल में एकत्र हो गई । घर लौटने पर ये विद्वान् विद्यापति के अनुकरण पर तथा अपनी भाषा में कविता सृजन करने लगे, किन्तु उसमें मैथिली भाषा के शब्द प्रचुरता के साथ मिश्रित थे ।[10]

इससे यह झलकता है कि प्राचीन समय में मिथिला विद्या का केन्द्र थी और वहाँ अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त कामरूप से भी विद्वान् जाकर विद्याध्ययन करते थे और वहाँ की सांस्कृतिक सम्पदा से लाभान्वित होते थे । मौखिक विचार विमर्श के क्रम में डॉ. सत्येन्द्र नाथ शर्मा जी ने भी इस मत की पुष्टि की कि दोनों क्षेत्रों के लोग आवागमन के द्वारा सांस्कृतिक सूत्र में बँधे थे । उन्होंने स्पष्टत: स्वीकार किया कि विशेषत: मिथिला, कनौज आदि स्थानों के लोगों ने ही यहाँ आर्य संस्कृति का प्रचार किया । इसमें ब्राह्मण तथा उच्च वर्ण के हिन्दू का योगदान प्रशंसनीय है । इस पुनीत कार्य में मिथिला के ब्राह्मण तथा कायस्थ अग्रगामी थे । डॉ. महेश्वर नियोग भी इस मत से सहमत हैं ।[11] मिथिला तथा उत्तर भारत के लोगों की सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने के लिए एवं आर्य संस्कृति के दीपक जलाने के लिए, उन्हें आदर के साथ बुलाया जाता था तथा स्थायी रूप से बसाया जाता था । ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि यद्यपि राजा अनार्य या मंगोल वंश के या अन्य दूसरे वंश के होते थे, फिर भी उनमें से अधिकांश राजाओं का झुकाव आर्य संस्कृति के प्रसार के पक्ष में था । यही कारण है कि वे मिथिला, कन्नौज आदि स्थानों के ब्राह्मणों, कायस्थों तथा अन्य उच्च हिन्दूसम्भ्रांत एवं पण्डित परिवारों को अपने यहाँ बसाते थे । असम के इतिहास में कई जगह ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं । राजा नरनारायण का नाम इस सन्दर्भ में विवेचनीय है, जिन्होंने मिथिला तथा गौड़ (बंगाल) से पंडितों को लाकर अपने राज्य में बसाया था। शंकरदेव के पूर्वज स्वयं बाहर से (प्राय: कन्नौज से) ही यहाँ आये थे । यह बात विशेष पश्चिमी असम के सम्बन्ध में अधिक आधिकारिक रूप से कही जा सकती है ।

असम तथा मिथिला के सांस्कृतिक समागम के परिप्रेक्ष्य में विचार-विमर्श के मध्य डा० सत्येन्द्र नाथ शर्मा जी ने इन पंक्तियों के लेखक को यह भी जानकारी दी कि मिथिला से प्रकाशित *पारिजातहरण महाकाव्य* में (जिसके कुछ अंश लुप्त या नष्ट हैं) कामरूप के अनेक स्थानों के रमणीय वर्णन हैं, जिनमें हाजो, उमानन्द महादेव आदि के वर्णन तो अति मनोरम हैं । अनुमान किया जाता है कि यह ग्रन्थ शंकरदेव से बहुत पहले की रचना है । सचमुच, असम तथा मिथिला के सांस्कृतिक समन्वय का यह दृष्टान्त साहित्यकारों की दृष्टि में सराहनीय कहा जा सकता है ।

दोनों स्थानों के पारस्परिक आदान-प्रदान का एक सुन्दर उदाहरण हस्तमुक्तावली ग्रन्थ भी है । यह ग्रन्थ हिन्दू नृत्य-पद्धति पर प्रकाश डालता है । इसमें उनचालिस प्रकार के विभिन्न नृत्यों का वर्णन किया गया है । इसके रचयिता शुभंकर कवि हैं । इसकी पाण्डुलिपि असम में, दरभंगा (मिथिला) में तथा नेपाल के दरबार पुस्तकालय में (नेपाल में पं० हर प्रसाद शास्त्री द्वारा) पायी गयी है।[12] डा. जयकान्त मिश्र ने शुभंकर कवि को मिथिला का माना है । असम के कुछ विद्वानों का अनुमान है कि वे असम के ही थे । किन्तु डॉ. महेश्वर नियोग[13] ने *श्री*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हस्तमुक्तावली के वर्णन से निष्कर्ष निकाला है कि शुभंकर कवि मिथिला के थे । क्योंकि उक्त पुस्तक का कुछ वर्णन बुद्ध के जन्मस्थान कुशीनगर (कुशिनारा) का है । उनके अनुसार यह रचना 18वीं शताब्दी की देन हो सकती है । इस कृति से हमें यह परिचय अच्छी तरह मिलता है कि मिथिला, असम और नेपाल में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सुदृढ़ कड़ी विद्यमान थी ।[14]

देवनाथ मिथिला के एक प्रसिद्ध विद्वान् थे । यहाँ ओइनिवारवंश के पतन के बाद प्राय: वे तत्कालीन असम के कोचबिहार राजा मल्लदेव नारायण के दरबार में अपनी प्रतिभा दिखाने में सफल सिद्ध हुए । वे *तंत्रकौमुदी* के अन्त में स्पष्ट घोषणा करते हैं :–

मीमांसास्मृतितर्कतन्त्रकविताल्कारकोषागम-
ज्योतिर्वेदपुराणभारतमतिर्यस्तर्कपंचानन: ।
देवोऽसो कमतेश्वर: क्षितिपतिस्तं देवनाथं चिरात्
संप्राप्य स्वयमादरेण विदधे विद्वन्मुदे कोमुदीम्।।[15]

यहाँ "कमतेश्वर" से कूचविहार के राजा का ही बोध होता है । उक्त ग्रन्थ राजा मल्लदेव नारायण के अनुरोध से ही लिखा गया, जिन्होंने 1555 ई० से 1577 ई० तक राज्य किया । *तंत्रकौमुदी* का यह अंश उपर्युक्त मत की पुष्टि करता है:–

इति समस्तप्रक्रियाविराजमानमहाराजाधिराजश्री मल्लदेवनारायणकारितायां महामहोपाध्यायतर्कपंचानन श्रीदेवनाथकृतायां तन्त्रकौमुद्यां पद्धतिपरिच्छेद: समाप्त: ।[16] *शक० 1486 ।।*

मैथिल ब्राह्मण सम्बन्धी एक मनोरंजक तथ्य यह है कि त्रिपुरा के पंचखंड नामक स्थान के कुछ ब्राह्मण अपना मूल स्थान मिथिला बतलाते हैं।[17] सम्भव है कि मिथिला के पूर्व भाग के कुछ लोग *सिलहट* जाकर बस गये हों । *श्रीहट्टर इतिवृत्त* के प्रणेता से पता चलता है कि पंचखंड के ब्राह्मण अभी तक मिथिला के वाचस्पति मिश्र के स्मृति-ग्रन्थ का अनुसरण करते हैं । पंचखंड नाम की सार्थकता के विषय में कहा गया है कि प्राचीन त्रिपुरा में मिथिला के पाँच ब्राह्मण परिवारों को कुछ जमीन दी गई, इसीलिए वह स्थान *पंचखण्ड* के नाम से जाना जाता है । यह घटना सातवीं शताब्दी की बतायी जाती है । *वैदिक सम्वादिनी* में इस घटना का स्पष्ट उल्लेख है[18]–

"त्रिपुरापर्व्वताधीश: श्रीश्रीयुक्तादिधर्म्मपा: ।
समाज्ञा दत्ता पत्रंच मैथिलेषु तपस्विषु ।।
वात्स्य-वत्स-भरद्वाज-कृष्णात्रेय-पराशरा: ।
श्रींनन्दानन्द-गोविन्द-श्रीपति-पुरुषोत्तमा: ।
प्रतीच्यामुत्तरस्यां च वक्रगा कोशिरा नदी ।।
दक्षिणस्यां च पूर्व्वस्यां हाकाला कोकिकापुरी।
एतन्मध्यां सरभाश्च टेंगरो कुकि कर्षिता ।
प्रलभ्य दत्तां तदा भूमिं तेषु पंच तपस्विषु ।।
मकरेन्दुरवौ शुक्लपक्षे पंचदशी दिने ।
त्रिपुरा चन्द्रबाणाब्दे प्रदत्ता दत्त-पत्रिका ।।"

डा. जगदीश चन्द्र माथुर के अनुसार मिथिला तथा नेपाल की रंगशालाओं का प्रभाव अंकिया नाट के 'भाओनाघर' पर पड़ा होगा ।[19] उसी तरह असम के अंकिया नाटों की भी कुछ छाप यहाँ देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए पूर्णियाँ जिले में हरिजनों द्वारा प्रस्तुत विद्यापत नाच देखा जा सकता है, जिसमें कीर्तिनियाँ नाटक तथा अंकिया नाट की समन्वित शैली विद्यमान है।[20] इन सबसे यही द्योतित होता है, कि असम और मिथिला के बीच बड़ा ही निकट का सम्बन्ध रहा है । राष्ट्रीय तथा साहित्यिक एकता की दृष्टि से यह सम्बन्ध वरदान तुल्य कहा जा सकता है । आज यदि हम इसे और सुदृढ़ एवं प्रगाढ़ करें तो सोने में सुगन्धि आ जाय ।

देशभाषा-साहित्य के विकास के उस युग में जब नियमित नाटक का क्षेत्र वीरान सा दिखाई पड़ता है, उत्तर पूर्व भारत के दो प्रदेशों में नाट्य-विद्या का उद्भव और विकास अनायास ही इन दो भूखंडों को एक सांस्कृतिक सूत्र में पिरो देता है । ऐतिहासिक क्रम में मिथिला में विद्या का उदय असम से लगभग दो शताब्दी पूर्व ही हो गया था । अत: ह्रासोन्मुखी संस्कृत नाट्य-परम्परा के गुण-दोषों को कीर्तिनियाँ नाटकों ने अधिक सहजता एवं पूर्णता से ग्रहण किया । चौदहवीं शताब्दी तक मैथिली में नाटकोचित ग्रंथ का विकास नहीं हो सका था। ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर का गद्य कवियों के लिए भले ही उपयोगी हो नाटककार अथवा कथाकार के लिए वह अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सका ।

इन दो शताब्दियों के मध्यान्तर में विद्यापति के पदों की लोकप्रियता ने मिथिला में कम, किन्तु इसके आस-पास के क्षेत्रों यथा नेपाल और असम में गद्य की सम्भावनाओं को अधिक उजाकर कर दिया । मिथिला में संस्कृत की लोकप्रियता और पंडित समाज की हठधर्मिता के कारण मैथिली गद्य को विकसित करने का सुनहला अवसर गँवा दिया गया । अत: एक बात इन नाटकों के पाठकों को जो सर्वप्रथम आकृष्ट करती है वह है मिथिला के कीर्त्तनियाँ

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

नाटकों की अपेक्षा असम और नेपाल के नाटकों में मैथिली भाषा का सुव्यवस्थित, सुरूचिपूर्ण और सुनियोजित प्रयोग । ऐसा लगता है, इन तीनों भूभागों की सांस्कृतिक मृत्तिका में कुछ ऐसे समान तत्व अवश्य मौजूद हैं जिनके कारण एक क्षेत्र की भाषा-लता दूसरे क्षेत्रों में अनायास हरित, पल्लवित, पुष्पित एवं फलित हो जाती है ।

सन्दर्भ

1. *कालिकापुराण प्रथम* खण्ड, पृ. 498-504.
2. वही, द्वितीय खण्ड, नरकासुर उपाख्यान, पृ. 47.
3. *Early History of Kamrup*. K.L. Barua. p-61
4. *Studies in the Early History of Assam*, Dr. M.Neog. p. 5.
5. *Indian Culture*. Vol.1, No.3, 1935 A.D., p. 425.
6. *Studies is the Early History of Assam*- Dr. M. Neog. p. 72
7. *शंकरदेव*, नियोग, पृ. 107.
8. वही.
9. वही.
10. *Ankiya Nat*. Dr. B.K. Barua. Page.-XIX
11. *Studies is the Early History of Assam* p- 26 .
12. Do. Page 204.
13. *श्रीहस्तमुक्तावली* सं. डा. नियोग, पृ. 33-34.
14. *Studies in the Early History of Assam*. p. 74 .

कहानी जो मैंने जानी

□ *डा. श्री गुलाबदास ब्रोकर*

यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मुझे लेखकों तथा कथा-प्रेमियों के प्रतिष्ठित समूह के सामने यह बताने का अवसर मिला है कि मैंने कहानी लिखना क्यों शुरू किया और कहानी को मैं साहित्यिक कला विद्या के रूप में किस प्रकार देखता हूँ, आज के इस प्रगति के युग में, जहां कहानी लेखक की कला में आमूल परिवर्तन आ चुका है, आज लिखी जाने वाली कहानी को मैं किस रूप में देखता हूँ ।

शुरू से ही शुरू करूँ तो मैं कहना चाहूँगा कि साहित्य का प्रेमी तो मैं अपने छात्र जीवन से ही रहा हूँ पर खुद को लेखक के रूप में मैंने कभी नहीं देखा, मुझे हमेशा लगा कि इस मामले में मैं नीरस हूँ । उन दिनों मेरी भाषा में कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, धूमकेतु, झवेरचंद मेघाणी तथा अन्य कई लेखक उत्कृष्ट कहानियां लिख रहे थे । वे बहुत ही रूमानी लेखक थे और बहुत ही सुंदर और कवित्वमयी भाषा में लिख रहे थे। जिन चरित्रों को वे निरूपित करते थे, विशेष रूप से महिलाओं को, वे बहुत ही सुंदर, संवेदनशील तथा भाव प्रवण होती थीं। इन महिलाओं का रूप रंग बहुत सलोना होता था, उनके दाँत अनार के दानों की तरह होते थे, उनकी आंखें प्रेमिल हिरणी सरीखी होती थीं ।

और मैं ? अपनी कुमारावस्था और युवावस्था भर में मैंने ऐसी महिलाएँ कभी नहीं देखी थीं । महिलाओं को मैंने अलबत्ता जरूर देखा था । वे मेरे आस-पास हर जगह थीं-मेरे शहर में, मेरे घर में, मेरे कॉलेज में, मेरे सत्याग्रह आंदोलन में, पर वे मेरी ही तरह थीं-सामान्य, सचमुच के मानव सरीखी। उनमें से कुछ सुंदरी होने का दावा भी कर सकती थीं, और कुछ अपनी युवावस्था में सुंदर रही होंगी ।

और पुरुष भी इतने बहादुर नहीं थे, न इतने विराट थे जितने मुंशी तथा अन्य लेखक आम तौर पर चित्रित किया करते थे । वे तो सामान्य आदमियों जैसे आदमी थे जो अपने सामान्य दैनंदिन के काम करते रहते थे । हालांकि कभी-कभी वे अपने दैनिक कार्यों से हटकर भी काम करते थे जैसे आवेश में आकर वे जेल चले जाते थे या दमन का शिकार होते थे या इसी प्रकार की दूसरी आपत्तियों में फंस जाते थे पर आम तौर पर वे सामान्य आदमी थे जो अपना सामान्य जीवन जीते थे ।

जैसा मैं था, उस रूप में मैं लेखक बनने की आशा कैसे कर सकता था ? अपनी सीमाएं जानते हुए मेरे भीतर लेखक बनने की इच्छा भी नहीं थी । स्वभाव से ही मैं आलसी था जो अपना अधिकतर समय गप्पों और बहसों में ही बरबाद कर देता था । यदि बात करने के लिए कोई न मिलता तो मैं पढ़ने लगता । हे भगवान, पेज

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

दर पेज नयी सामग्री भरना कितनी मेहनत का काम होता होगा । मेरे लिए लिखना तो रहा दूर, एक छोटी सी चिट्ठी लिखने में भी मुझे संकोच होता था और मैं भरसक उसे लिखने को टालने की कोशिश करता । तब फिर मैं ऐसी मोटी किताबें लिखने की बात कैसे सोचता, जैसी किताबें एक-के-बाद-एक ये लेखक लिख रहे थे ।

फिर भी, मैं एक आत्मसंतुष्ट व्यक्ति था । पढ़ने में मुझे मजा आता था । यह मैं जानता था कि क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए क्योंकि ऐसे अध्यापकों का मार्गदर्शन मुझे मिला था जिन्होंने कॉलेज में मुझे अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत साहित्य पढ़ाया था । उनके जरिये मैंने यह सीखा कि कोई कहानी जब साहित्य बन जाती है तो वह केवल कहानी नहीं रह जाती बल्कि जीवन का एक टुकड़ा बन जाती है । यद्यपि यह कुछ चरित्रों के जीवन की घटनाओं के विवरण के रूप में रहती है पर यह केवल उन घटनाओं की होकर ही नहीं रहती और न उन चरित्रों की, बल्कि उन दिनों हम इसके लिए जो शब्द इस्तेमाल करते थे वह था—यह जीवन की एक फांक बन जाती है । यह फांक भी केवल एक फांक भर नहीं होती बल्कि पूरे जीवन का एक लघुरूप होती है । यह जो बाहर से दिखती है, वास्तव में उसका भीतरी अर्थ होती है । यह मानव की स्थिति को प्रतिबिम्बित करती है और उसका चित्रण करती है, जो इसमें से केवल एक कहानी की तलाश करते हैं, उन्हें इसमें कहानी भी मिल जाती है, पर उसका कोई मतलब नहीं होता । इसमें से जो असली चीज निकाली जानी चाहिए, वह तो जीवन है, और ये बेचारे लोग उसे ही पूरी तरह से खो बैठते हैं ।

इस प्रकार रचनात्मक साहित्य की जो भी कृति मैं पढ़ता मेरे लिए जीवन उसकी प्रत्येक भव्यता और प्रतिष्ठा, दयनीयता और अश्लीलता, सौंदर्य और बदसूरती में से झलकता । मैं ऐसा इसलिए कर सकता था क्योंकि मैं जानता था कि कहानी का असली सार तो सूक्ष्म रूप से इसमें छिपा हुआ है । उस रूप का अपना ही एक सौंदर्य है । यही सौंदर्य आदमी को आगे और आगे ले जाता है जहाँ सारे अभिप्राय और भावनाएँ, या कहें कि मानव जीवन की अनुप्रगणित हो जाता है ।

1932 के सत्याग्रह आंदोलन में जब मैं जेल में था तब मैंने साहित्यिक साधनों और सांस्कृतिक रुचियों के संबंध में यह सब महसूस किया था । तब मैं जवान था, तेईस साल का । उत्साह मेरे अंदर कूट-कूट कर भरा था। इतने ही उत्साह से भरे मेरे साथी वहाँ मेरे साथ थे। पूरे दिन की कड़ी मेहनत के बाद शाम को हम राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक मसलों पर जोर-शोर से बहसें किया करते थे । इससे लोग जरूर सोचने लगे होंगे कि हम लोग राजनीति, संस्कृति और साहित्य के अच्छे अध्येता थे क्योंकि एक शाम को जेल में हमारे साथ ही बंदी एक बुजुर्ग साथी मेरे पास आये कि मैं उनकी लिखी कहानी पढ़कर उस पर अपनी अमूल्य राय दूँ । उनकी इस बात ने मुझे उलझन में डाल दिया । मैंने उनसे कहा कि मैं साहित्य का विशेषज्ञ नहीं हूँ और किसी भी साहित्यिक कृति के गुण-दोषों को परखने में सक्षम नहीं हूँ । उन्हें लगा कि मैंने धृष्टता की है और वे नाराज हो गये । बाध्य होकर मुझे वह काम करना पड़ा ।

जब मैंने वे कहानियाँ पढ़ीं तो मैं विस्मित रह गया। यह तो साहित्य नहीं था । ज्यादा से ज्यादा नकल कह सकते हैं । कहानी कहने का यह बहुत खराब तरीका था। मैंने यों ही कुछ निरर्थक सी बातें कहकर उनकी कहानियों की पोथी उन्हें वापस कर दी ।

मैं अभी इस सब से उबरा भी न था कि एक और बुजुर्ग मित्र इसी प्रकार का निवेदन लेकर मेरे पास आ गये । उनकी सामग्री भी इसी स्तर की थी ।

इस सब से मैं सोच में पड़ गया । अगर लोग ऐसी चीजें लिखकर सोचते हैं कि यह साहित्य है तो फिर जिसे मैं साहित्य समझता हूँ वैसा मैं क्यों नहीं लिख सकता ? मैं किसी की राय लेने के लिए उसे दिखाऊँगा नहीं, पर लेखन का आनंद लेने के लिए मैं खुद क्यों नहीं लिख सकता ?

पर मैं लिखूँगा क्या ? मैंने न तो खूबसूरत सौंदर्यमयी महिलाएं देखी थी और न विराट पुरुष । पर स्त्री-पुरुष मैंने जरूर देखे थे । पर वे बिल्कुल सामान्य स्त्री-पुरुष थे और जीवन में वे जो कार्य करते थे, वे भी सामान्य ही थे, पर वे अपने काम तो करते ही थे—वे प्यार करते थे, नफरत करते थे, आनंद लेते थे, और पीड़ा भी भोगते थे । तो फिर क्यों नहीं इन सामान्य आदमियों को किन्हीं खास परिस्थितियों में चित्रित किया जाये जहाँ उनके कार्यों तथा व्यवहारों की सामान्यता में से उनके जीवन की शक्ति चमक सके और सामान्य चरित्रों के सामान्य

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

जीवन के भीतर से मानव की दशा ओर दुर्दशा का उद्‌घाटन हो सके ।

बिना किसी व्यक्ति को आभास दिये मैं अपने जीवन के सामान्य कार्यों में लगे सामान्य लोगों के बारे में लिखने लगा । उनका वर्णन करने में मैंने किसी भी प्रकार का मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश नहीं की । मेरी कहानियों की महिलाएँ सुंदर तो कही जा सकती थीं पर अति सुंदर या भड़कीली नहीं । पुरुष भी सामान्य थे या सामान्य से भी लघु । पर विराट नहीं थे । जिस भाषा का प्रयोग मैं करता था वह भी इन सामान्य लोगों की सामान्यता को ही परावर्तित करती थी । पर मैंने इसका भरसक प्रयास किया कि इन स्त्री-पुरुषों के द्वारा जीवन अपना खेल खेल सके और खुद को व्यक्त कर सके।

मैंने अपनी इन रचनाओं पर किसी से भी राय नहीं मांगी, चाहे वे मेरे कितने ही घनिष्ठ और जानकार मित्र ही क्यों न थे, जिनसे मैं साहित्य पर चर्चा करता था ।

इस प्रकार जेल में मैंने और फिर जेल से बाहर आने के दो-तीन सालों तक मैं उन्हें पूरी तरह से भूला रहा । फिर एक ऐसा अवसर आया कि प्रख्यात कथाकार, आलोचक और साहित्यिक हस्ती आर. वी. पाठक ने मुझे प्रोत्साहित किया कि मैं उन्हें जेल में लिखी अपनी कहानियाँ दिखाऊँ । उनकी कहानियाँ भी बिना किसी तड़क-भड़क की, सामान्य होती थीं जैसी मेरी कहानियाँ थीं । यह देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि उन कहानियों को पढ़कर वे खुश हो गये । इतने खुश कि उनमें से एक कहानी उन्होंने अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका ''प्रस्थान'' में भी छाप दी ।

मुझसे व्यक्तिगत रूप से और गुजरात के साहित्य प्रेमी लोगों को लिखकर उन्होंने बताया कि ये भी कहानियाँ होती हैं जो नयी धारा की हैं जहाँ सामान्य घटनाओं के भीतर से एक मनोवैज्ञानिक अंतर्धारा बहती है और घटनाएं उन्हें उनकी शक्ति प्रदान करती हैं । साहित्य के क्षेत्र में मेरे आगमन का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि यह अपने एक नये स्वर वाले एक नये व्यक्ति का आगमन है । उनकी इस बात से मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला और मैं आत्मविश्वास तथा उत्साह के साथ लिखने में जूट गया । तब से आज तक मैं लगातार लिखता चला आ रहा हूँ ।

यह सब कहने का मतलब यह नहीं है कि एक अच्छी कहानी लिखने का केवल यही एक तरीका है जिस तरीके से मैं लिख रहा था । अच्छी कहानी लिखने के एक हजार एक तरीके हैं और इन तरीकों से दुनिया भर में तथा सभी भारतीय भाषाओं में कहानियाँ लिखी भी जा रही हैं । असली बात केवल इतनी है कि कहानी के कथातत्व का काम केवल पाठक में रुचि पैदा करना और उसका ध्यान बनाये रखना है, लेकिन जरूरी चीज है कि वह कहानी जीवन के भीतरी सत्य से कितनी जुड़ी हुई है और उसे कितना उद्‌घाटित करती है। इस सत्य के असंख्य पहलू हैं और इसे कई रूपों में तथा कई तरीकों से समेटा जा सकता है, पर कुल मिलाकर महत्व इसी सत्य तथा इसके उद्‌घाटन का है क्योंकि यह सत्य किसी तथ्य का नहीं बल्कि स्वयं जीवन का सत्य है । यदि कोई कहानी इसे प्रकट कर सकती है तो वह साहित्यिक कृति बन जाती है, अन्यथा वह एक लिखी हुई सामग्री मात्र है।

मेरी युवावस्था के उन प्रारंम्भिक दिनों और आज के बीच के अंतराल में बहुत कुछ ऐसा गुजर गया है जिसने कहानी लिखने की कला को बदल दिया है । इन वर्षो के अंतराल में दुनिया ने द्वितीय विश्वयुद्ध की भयावहता को झेला है । उन मूल्यों का पतन देखा है जो पिछली पीढ़ी को अत्यंत प्रिय थे । अब दुनिया को साधारण, आदर्शवादी तरीके से देखा या महसूस नहीं किया जा सकता जो पहले किया जा सकता था । किसी व्यक्ति के अपने ''स्व' को मनोविश्लेषण के जरिये विश्लेषित कर वहाँ छिपी हुई शक्तियों की खोज ने पिछले कुछ वर्षो में लेखक के तलाश करने और व्यंजित करने के लिए एक पूरी नयी दुनिया का रास्ता खोल दिया है। वाह्य यथार्थ के व्यंजित करने की जगह अब आंतरिक यथार्थ की व्यंजना ने ले ली है ।

इस परिवर्तन के कारण कहानी के रूपविधान, तकनीक तथा तरीकों में भी परिवर्तन आना जरूरी था । अवचेतन और उपचेतन को प्रभावित करने वाली शक्तियों को पहले की तरह एक के बाद दूसरी घटना का विवरण देते चलने से तो व्यक्त नहीं किया जा सकता । वे शक्तियाँ अधिक सूक्ष्म हैं और इन्हें उसी ढंग के लेखन से व्यक्त किया जा सकता है । उन्हें प्रतीकों, बिम्बों और समुचित मिथकों के जरिये ही अभिव्यक्त कर सकते हैं। पुराने जमाने की भाषा भी आंतरिक मनोविज्ञान को अभिव्यक्ति देने में सक्षम नहीं है । इसमें संक्षिप्तता, सारगर्भिता और

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कवित्वमयी अभिव्यंजना होनी चाहिए । इस नयी दुनिया में सामाजिक, राजनीतिक तथा वाह्य जगत के प्रति अधिक आकर्षण नहीं है क्योंकि यह आधुनिक लेखक की वह दुनिया है जो आभ्यंतरिक है, सहज ही समझ में आने वाली नहीं है और इतनी राजनीति उन्मुख नहीं है ।

इसलिए आज की कहानी पहले की कहानियों की अपेक्षा छोटी हो गयी है । चूँकि यह पुराने जमाने की कहानियों की अपेक्षा अवचेतन और उपचेतन की भीतरी दुनिया से अधिक संबंध रखती है इसलिए यह समझने में कठिन तो जरूर होती है पर दुरूह नहीं और चूँकि यह संकेंद्रित होती है इसलिए इसमें गहरे तक भेद सकने की शक्ति आ जाती है ।

चूँकि यह नयी कहानी पुरानी कहानी की अपेक्षा एक दूसरे ही धरातल पर है, इसलिए इसके अनुयायी इसमें ऐंद्रजालिक और मिथकीय गुण भरकर यह दावा करते हैं कि पहले के कहानीकारों ने जो कुछ लिखा है उसमें न तो उतनी गहराई है और न उतनी सारगर्भिता जितनी इनके लेखन में है । इन्हीं दावों ने पुरानी और नयी पीढ़ी के लेखकों के बीच एक दरार पैदा कर दी है ।

इन सारे संघर्षों और विवादों को छोड़कर आदमी को यह देखना चाहिए कि कहानी साहित्य और कला की एक कृति बनी रहे । वह तभी बनी रह सकती है जब उसके कथातत्व का महत्व कम रहे, क्योंकि आम तौर पर यह कहानी के आगे बढ़ने के साथ-साथ जीवन के भीतरी सत्यों को निरूपित करने वाला एक आवरण मात्र ही तो है । पुराने समय की कहानी ठीक यही करती थी चाहे वह प्रेमचंद की कहानी हो, जैनेन्द्र की हो या अज्ञेय की शुरू की । चूँकि, यह दूसरे सुर में लिखी गयी हैं इसलिए इनमें दूसरी ही तकनीकों, रूप-विधानों और मुहावरों का प्रयोग किया गया है ।

आज की श्रेष्ठ कहानियाँ भी तो यही कर रही हैं । वे जीवन के सत्यों को निरूपित करती हैं, वे मनुष्य की विभिन्न परिस्थितियों, गरीबी आदि का वैसे ही चित्रण कर रही हैं जैसे पहले की कहानियाँ करती थीं ।

इसका मतलब यह नहीं है कि नयी कहानियों ने वैसी कोई उत्कृष्ट कृतियाँ दी ही नहीं हैं जैसी पुरानी कहानियों ने दी हैं । साहित्य के प्रेमी और छात्र होने के नाते अच्छी कृति का आनंद लेना चाहिए और इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए कि यह नयी है या पुरानी ।

परिवर्तन जगत का नियम है । जगत हमेशा बदलता रहता है । हम अपने परिधानों में, व्यवहारों में, जीवन के ढंग में निरंतर परिवर्तन देखते हैं । आज हम उस दुनिया में नहीं रह रहे हैं जिसमें पचास साल पहले रहते थे । साहित्य भी अपनी शैली, तकनीक और अभिव्यक्ति के तरीकों में परिवर्तन से गुजरता है । पर सारे परिवर्तनों के बावजूद जीवन का मर्म कभी नहीं बदलता । इसी प्रकार रूप-विधान, तकनीक तथा विषयवस्तु के तमाम परिवर्तनों के बावजूद साहित्य एक अपरिवर्तनीय वस्तु से ही संबंध रखता है और वह है मनुष्य।

लेखक को यही करना होता है कि मनुष्य को उसके विविध पहलुओं में [आँके]। यही सब तो व्यास और बाल्मीकि ने किया, होमर और दाँते ने किया और कालिदास या शेक्सपीयर जैसे दुनिया के महान लेखकों ने किया ।

हम लोग–पुरानी और नयी पीढ़ियों के लेखक–न तो व्यास या बाल्मीकि हैं, न होमर या दांते और न कालिदास या शेक्सपीयर । पर निश्चित रूप से जो कुछ उनमें था वह हममें भी है । उनमें यह गुण बहुत ही तेजपूर्ण और सम्मोहित कर देने वाला था । हममें यह हल्का हो सकता है, इतना सम्मोहनकारी नहीं हो सकता, पर दोनों मामलों में सार एक ही है, भले ही वह अनुपात की दृष्टि से उनमें सागर जितना अधिक हो और हममें एक बूंद जितना कम ।

मेरी पीढ़ी और मेरे बाद तत्काल आने वाली पीढ़ी को जो लिखना था वे लिख चुके हैं । उनसे अब अधिक की उम्मीद नहीं की जा सकती । पर युवा पीढ़ी के लोगों में रचनात्मकता की धड़कन अभी है। उनकी आँखों में हजारों-हजार सपने तैर रहे हैं, जो साकार होने की प्रतीक्षा में हैं । इस पीढ़ी को मेरी विनम्र राय यह है कि:

समुद्र की जो बूंद तुम्हारे भीतर है कभी उससे बेईमानी न करना । अपनी क्षमता भर ईमानदारी से इसे संजोये रखना और विकसित करना । जिस दिन यह बूंद सागर की विराटता ले लेगी उस दिन सारी दुनिया तुम्हें ही देखेगी । ईश्वर करे वह दिन जल्दी आये ।

अंत में मैं आयोजकों, भारतीय ज्ञानपीठ को धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने मुझे आपके बीच आने और जिस चीज में हम सबकी बराबर दिलचस्पी है, उसके बारे में अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिया है ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

काव्यानुवाद की मूल मनोवैज्ञानिक समस्या

आस्वाद और अनुवाद में कशमकश

□ डा. श्री रणवीर रांग्रा

साहित्य के अनुवाद में पेश आने वाली समस्या को समझने के लिए ज्ञान-विज्ञान के साहित्य और सर्जनात्मक साहित्य के प्रवृत्तिगत अन्तर को जानना होगा ।

ज्ञान-विज्ञान का साहित्य अभिधात्मक अत: एकार्थक होता है, जबकि सर्जनात्मक साहित्य, विशेषत: काव्य, व्यंजनात्मक अत: अनेकार्थक होता है । एकार्थकता वैज्ञानिक साहित्य का गुण मानी जाती है और काव्य का दोष । इसी तरह अनेकार्थकता काव्य का गुण मनी जाती है और वैज्ञानिक साहित्य का दोष ।

प्रत्येक कृति अपने पाठकों तक भिन्न-भिन्न रूपों में पहुँचती है और हर पाठक पर अपने रचयिता का नया रूप खोलती है । कहा जाता है कि शेक्सपीयर के जितने पाठक हैं उनके निकट शेक्सपीयर के उतने ही रूप हैं । (There are as many Shakespeares as there are Shakespear's readers.) यह बात न्यूनाधिक रूप से हर साहित्यकार पर लागू होती है ।

साहित्य के अनुवादक को पाठक और रचयिता, बल्कि सहृदय और सर्जक, दोनों की भूमिका में उतरना होता है । पहले पाठक के रूप में रचना को ग्रहण करना होता है और फिर गृहीत रचना की लक्ष्य भाषा में पुन: सर्जना करनी होती है । रचना को पूरी तरह पाने के प्रयास में उसे सही अर्थ में पाठक बनना होता है, सहृदय होना होता है–रचना के प्रति पूर्णत: उन्मुक्त होकर, उसके प्रति अपने को पूरी तरह खुला छोड़कर ।

कविता को ही लें । उसके माध्यम से पाठक तक जो पहुँचना चाहता है और उसके भीतर जो पहले से ही होता है, उन दोनों का मिलन सहज नहीं हो जाता । कृति में से जो पाठक की ओर आता है उसे पाने और पचाने में कई बार तो पाठक को समूचा जूझ जाना पड़ता है । यह प्रक्रिया रचना पढ़कर अलग कर देने पर भी समाप्त नहीं होती, बल्कि बहुधा पाठक के चेतन-अवचेतन में वर्षों चलती रहती है । किसी काव्य की परिणति पुस्तक के पन्नों में नहीं, बल्कि पाठक के मनोजगत में होती है और उसके जीवनानुभवों के अनुसार नये-नये मोड़ भी लेती रहती है ।

इस तरह, मानना होगा कि साहित्यकार ही सर्जक नहीं होता, पाठक भी सर्जक होता है और रचना को ग्रहण करते समय वह उसे अपने रंग में भी रँगता जाता है ।

ग्रहण या आस्वाद की इस प्रक्रिया में ही यह निहित है कि मूल रचना का कुछ न कुछ ग्रहण होने से रह जाए और उसमें ग्रहीता का अपना कुछ जुड़ जाए । फिर लक्ष्य-भाषा में उसका अनुवाद करते समय भी यह सम्भव नहीं कि उसका गृहीत रूप उसमें पूर्ण अभिव्यक्ति पा सके । उस गृहीत में से कुछ छूट सकता है और इतर कुछ जुड़ भी सकता है । इस तरह मूल का कुछ छूटना और कुछ मूलेतर का जुड़ना बहुगुणित होता जाता है ।

जिस प्रक्रिया में मूल का कुछ न कुछ छूट जाए और मूलेतर कुछ न कुछ जुड़ जाए, चाहे यह अजाने में ही हो, उसे 'अनुवाद' की संज्ञा देना कहाँ तक उचित होगा ? जबकि अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल में से न कुछ छोड़े और उसमें न कुछ जोड़े ही ।

लाख चेष्टा करने पर भी काव्यानुवाद में छोड़ने-जोड़ने से, लोप और वृद्धि से, बच पाना लगभग असम्भव मानते हुए ही यह मत जोर पकड़ने लगा है कि काव्य का अनुवाद असम्भव है : The very idea of translating poetry is something absurd and impossible. (V. Hugho).

अनुवाद की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए यह मान लिया गया कि सर्जनात्मक कृति का अनुवाद मात्र अनुवाद नहीं, उससे कुछ अधिक है; लक्ष्यभाषा में मूल की एक प्रकार से पुन:सर्जना है । पर इस स्वीकारोक्ति से भी समस्या सुलझती नहीं, बल्कि और उलझ जाती है । अनुवाद में पुन:सर्जना की अनिवार्यता स्वीकार कर लेने से अनुवादक को छोड़ने-जोड़ने की छूट मिल जाती है । इस निर्बन्ध छूट के कभी-कभी तो विचित्र परिणाम सामने आते हैं । उदाहरण के लिए, हम यहाँ उमर खैयाम की एक रूबाई और फिट्जजेराल्ड, हरिवंशराय बच्चन और सुमित्रानन्दन पंत द्वारा किए गए उसके अनुवाद प्रस्तुत करते हैं । ये तीनों अनुवाद एक ही रूबाई को अलग-अलग तीन आरोपित आयाम प्रदान करते हैं ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

उमर खैयाम की रुबाई

(मूल)

आमद सहरे निदा ज़े मयखाना-ए-मा ।
के रिन्द खरावाती व दीवान-ए-मा ।
बरखेज कि पुरकुनेम पैमाना ज़े मय,
ज़ा पेश कि पुरकुनंद पैमान-ए-मा ।

[सुबह होते ही मदिरालय से आवाज आई कि ऐ पीने वाले व मेरे दीवाने ! उठ और शराब से अपने प्याले को भर ले । कब्ल इसके कि हमारे शरीर की मिट्टी से बने प्याले भर जाएँ ।] —उमर खैयाम

(अनुवाद)

Dreaming when Dawn's left hand was in the sky
I heard a voice within the tavern cry.
'Awake. my little ones. and fill the cup
Before Life's Liquor in its cup be dry.

—Fitzgerald (Rubaiyat of Omar Khayyam, 2.

उषा ने लें अँगड़ाई, हाथ
दिए जब नभ की ओर पसार,
स्वप्न में मदिरालय के बीच.
सुनी तब मैंने एक पुकार–
'उठो, मेरे शिशुओ नादान,
बुझा लो पी-पी मदिरा भूख,
नहीं तो तन-प्याली की शीघ्र
जायगी जीवन-मदिरा सूख ।'

—बच्चन (खैयाम की मधुशाला, 2)

खोलकर मदिरालय का द्वार
प्रात ही कोई उठा पुकार
मुग्ध श्रवणों में मधु रव घोल,
जाग उन्मद मदिरा के छात्र ।
ढुलक कर यौवन मधु अनमोल
शेष रह जाय नहीं मृदु मात्र,
ढाल जीवन मदिरा जी खोल
लबालब भर ले उर का पात्र ।

—सुमित्रानन्दन पंत (मधुज्वाल, 2)

किसी ने ठीक ही कहा है कि मन के पुष्पण-क्षणों की आधी पंखुड़ियाँ तो भाषाभिव्यक्ति में गिर जाती हैं और तीन-चौथाई अनुवाद के दौरान (The flowering moments of the mind drop half their petals in speech and three fourth in translation) । काव्योन्मेष (poetry) का अभिलिखित रूप है कविता (poem) । कवि के भीतर की गहराइयों में से, उसके अवचेतन-अचेतन की विभिन्न पर्तों को फोड़कर, जो अभिव्यक्ति पाने के लिए मचल रहा होता है वह पूरे का पूरा कभी उसकी कल्पना की, उसके चेतन की पकड़ में नहीं आता, उसकी अभिलिखित कविता में नहीं ढल पाता । बहुत-कुछ अनभिव्यक्त रह जाता है, छूट जाता है और उसका स्थान 'कुछ और' ले लेता है जो चेतन की उपज होती है और कविता को एक तारतम्य, एक अन्विति प्रदान करने की चेष्टा करता है । यह अन्विति प्राय: आरोपित होती है । Poetry किसी बाहरी अन्विति की मोहताज नहीं होती—वह न जाने कितने व्यष्टि-सत्यों और समष्टि-सत्यों को एक साथ व्यक्त करने को मचल रही होती है, पर कवि का चेतन उसे अपनी ही तरह से ग्रहण कर, रिकार्ड कर, उसे एक ऊपरी व्यवस्था भी प्रदान कर देता है। यह आरोपित अन्विति, सतही व्यवस्था, बड़ी भ्रामक हो सकती है; मूल कविता को कृत्रिम मोड़ दे सकती है ।

काव्योन्मेष (poetry) का जो अंश कविता (poem) में आने से रह जाता है, छूट जाता है, और उसके अभाव में कविता को जो क्षति पहुँचती है, उससे कई गुणा अधिक क्षति 'कुछ और' के जुड़ जाने से होती है जो काव्योन्मेष पर एक प्रकार का आरोपण होता है, पर उसका ही अभिन्न अंग होने की प्रतीति उत्पन्न करता है ।

इसी प्रकार साहित्यानुवाद की प्रक्रिया में मूल का जो अंश अनुवाद में ढलने से रह जाता है, छूट जाता है, और उसके अभाव में अनुवाद को जितनी क्षति पहुँचती है, उससे कई गुणा अधिक क्षति उसमें उस 'कुछ और' के जुड़ जाने से होती है जो मूल लेखक या उसकी रचना का नहीं, बल्कि अनुवादक का अपना होता है, पर मूल के होने की प्रतीति उत्पन्न करता है । मूल रचना को सबसे बड़ा खतरा इसी से है । लोप और वृद्धि के योग से अनुवाद में एक विचित्र विकृति का समावेश हो जाता है।

बहुधा यह मान लिया जाता है कि साहित्यकार द्वारा अपनी रचना का स्वयं किया गया अनुवाद प्रामाणिक होता है। अनुवाद के क्षेत्र में इससे बड़ा भ्रम भला और क्या होगा ?

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

गया वक्त फिर हाथ नहीं आता । कोई भी सृजन-क्षण और उसकी सर्जक मानसिकता सर्जक के लाख चाहने पर भी नहीं लौट सकती । मूल रचना और उसके रचयिता द्वारा स्वयं किया गया अनुवाद, या कहें पुनःसर्जना, दो विभिन्न मानसिकताओं की उपज होती है-चाहे एक ही व्यक्ति की दो मानसिकताओं की । यदि मूल रचनाकार अपनी रचना के प्रति सहृदय हुए बिना, अपने को उसके प्रति पूरी तरह खुला छोड़े बिना, उसका स्रष्टा होने का दम भरते हुए उसका अनुवाद अथवा पुनःसृजन करता है तो किसी भी अन्य अनुवादक की तरह वह भी मूल रचना से भटक सकता है । अपनी मूल रचना में पूरी तरह डूबकर उसका अनुवाद करे तो भी वह लक्ष्य-भाषा में मूल को अविकल रूप में नहीं ला सकता ।

मूल लेखक द्वारा अपनी रचना का स्वयं अनुवाद करने में एक और खतरा भी है । स्वयं स्रष्टा होने के दम्भ में वह मूल के प्रति प्रायः छूट ले लेता है, जबकि अन्य अनुवादक पुनःसर्जना की लाख उड़ानों के बावजूद अनुवादक के नाते अपने को मूल रचना की डोर से बँध ा पाता है, उसके सर्जक-अनुवादक की भाँति वह उससे छेड़छाड़ करने की हिम्मत नहीं कर सकता । परिणामस्वरूप अनुवादक के रूप में मूल लेखक पुनःसृजन के बहाने प्रायः एक भिन्न रचना की सृष्टि कर डालता है जो मूल से घटिया भी हो सकती है और बढ़िया भी, पर हू-ब-हू मूल के समान नहीं हो सकती ।

पूछा जा सकता है कि पश्चिम की मानसिकता को ध्यान में रखकर गीतांजलि की कविताओं का अंग्रेजी-अनुवाद करने वाला टैगोर क्या हू-ब-हू वही टैगोर था जिसने वर्षों पहले भीतरी प्रेरणा के वशीभूत होकर बाँग्ला में मूल गीतांजलि की रचना की थी ? क्या उस अंग्रेजी-अनुवाद को केवल इसीलिए प्रामाणिक अनुवाद मान लिया जाए कि वह स्वयं कवि ने किया है ? क्या गीतांजलि का मूल रचनाकार टैगोर और अनुवादक टैगोर दोनों अपने सृजन-क्षणों में शत-प्रतिशत एक समान थे ?

यहाँ हम अज्ञेय की एक मूल हिन्दी-कविता 'एक बूँद सहसा उछली' दे रहे हैं और साथ ही स्वयं उनके द्वारा किया गया उसका अंग्रेजी-अनुवाद भी । जरा गौर से देखिए कि कवि का अपना अनुवाद मूल कविता की गहनता को कितना अक्षुण्ण रख पाया है–

मैंने देखा, एक बूँद	I saw a drop
मैंने देखा	I saw
एक बूंद सहसा	A drop suddenly
उछली सागर के झाग से :	Fly from the scum of the sea.
रँग गई क्षण-भर	Flare for a second
ढलते सूरज की आग से ।	Fire from the mellowing sun alight
मुझको दीख गया :	So there, I thought
सूने विराट के सम्मुख	Against the wall of emptiness
हर आलोक-छुआ अपनापन	This light-shot one
है उन्मोचन	Has found release
नश्वरता के दाग से ।	From being blurred to nothing

अब अज्ञेय के अपने अंग्रेजी-अनुवाद की तुलना कीजिए अजित खुल्लर के इस अंग्रेजी-अनुवाद से–

A Droplet Suddenly Sprang

I saw :
A droplet suddenly
Sprang off the sea surf
And was flushed
In the fire of the setting sun.
It became evident to me :
Each enlightened identity
Is deliverance
From the blemish of morality.

और बताइए कि क्या अज्ञेय के सम्पूर्ण अनुवाद को केवल इसलिए प्रामाणिक मान लिया जाए कि यह स्वयं कवि ने किया है और अजित खुल्लर के सम्पूर्ण अनुवाद को सिर्फ इसलिए कमतर मान लिया जाए कि यह किसी और का अनुवाद है ? मेरा बल सम्पूर्ण अनुवाद पर है । जो भी हो, इन दोनों अनुवादों की तुलना से इस बात का अन्दाजा तो लग ही जाता है कि किसी सर्जनात्मक कृति के अनुवाद में आस्वाद की कितनी सूक्ष्म और जटिल प्रक्रिया रहती है ।

●

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पुनर्जन्म : शोध के नये आयाम

भारतीय ज्योतिष के आलोक में

□ डा. श्री उमेश दत्त भट्ट

यद्यपि इस व्याख्या में मैं जो कुछ भी व्याख्यायित करने चल रहा हूँ वह कतिपय विद्वानों द्वारा हास्यास्पद हो सकता है परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आगे उठाये जाने वाले प्रश्न ज्योतिष के निष्णातों को झक झोरने वाला अवश्य है । साथ ही इनमें से कुछ ऐसे भी मनीषी हो सकते हैं जो इन प्रश्नों का समाधान पाने हेतु ज्योतिष के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध के लिए आगे बढ़ें । इन प्रश्नों से जुड़े कुछ अपने भी अनुभव हैं जिनको मैंने सुझावों के रूप में इस लेख में आवश्यकतानुसार प्रस्तुत किया है। ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी भी थोड़ी रुचि होने के कारण आगे उठाये जा रहे बिन्दुओं पर मैंने भी कुछ करने का प्रयास किया था तथा अनुभूत समस्याओं की चर्चा भी विद्वान पाठकों के समक्ष करूँगा जिससे संभव है आगे आने वाले युग को मनीषीगण कुछ अपने ज्योतिषीय शोध ों की थाती थम्हा सकें, साथ ही भारतीय ज्योतिष के चिन्तन के नवीन आयाम का सूत्रपात हो सके ।

जन्मपत्री के बारह भावों से हम व्यक्ति के जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी करते हैं । जन्म, कर्म, स्वास्थ्य, आयु, स्वरूप, संस्कार, विद्या, बुद्धि, माता-पिता, भाई-बहन आदि-आदि । यहाँ तक कि मोक्ष व धार्मिक आस्था की भी ।

जीव के विभिन्न योनियों में जन्म पाने के एक नियामक तत्त्व 'संस्कार' को मनीषियों ने स्वीकृति प्रदान की है । इसी संस्कार के कारण ही यह जीवन विभिन्न योनियों में जन्म ग्रहण करता है । संस्कार का संबंध विशेष रूप से मानव जीवन के मूल्यों को लौकिक से पारलौकिक परिधि तक प्रकाशित करने हेतु विशिष्ट है । इसीलिए इन मनीषियों द्वारा मनुष्य पर बराबर यह दबाव बनाया जाता रहा है कि व्यक्ति को अपना संस्कार सुधारना चाहिए; यही परलोक तक संरक्षण देता है ।

जातकों की जन्मपत्रियों से उनके जीवन व संस्कारों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है और यही संस्कार व्यक्ति के आगे के जीवन को भी सुदृढ़ करने के नियामक आधार होते हैं । शायद विभिन्न मापदण्डों व मानदण्डों में यह भी एक अपरिहार्य मापक-दण्ड है जिसके आधार पर भृगुसंहिता में जातक के पूर्व जन्म व अग्रेतर जन्मों के विषय में पर्याप्त कुछ बताया जाता है । यद्यपि यह लेखक अभी तक किसी भी भृगुसंहितावाचक से प्रत्यक्षत: प्रत्यक्ष नहीं हुआ है परन्तु इन वाचकों के विषय में व इनके द्वारा वाचित विभिन्न वाचनों से परिज्ञापित अवश्य है । इसी परिप्रेक्ष्य में यह भी उल्लेख करना कुछ अप्रासांगिक न होगा कि लेखक ज्योतिष का विद्वान होने का दावा तो नहीं कर सकता परन्तु उसकी पर्याप्त रुचि ज्योतिष में है जो कि विज्ञान भी है व शास्त्र भी । इसी रुझान के कारण इस लेखक के समक्ष उसके एक वयोवृद्ध व विद्वान मित्र ने ज्योतिषविषयक एक गूढ़ प्रश्न चुनौती के रूप में खड़ा कर दिया । प्रश्न कुछ सामान्य पृच्छाओं से भिन्न था । उनका कथन था कि इस जीवन-यात्रा को तो मैं लगभग तय कर आया, अब आप यह बताइए कि मेरा अगला जन्म 'कब' (मृत्यु के उपरान्त कितने दिनों बाद), कहाँ (मृत्यु स्थल से किस दिशा को व लगभग कितनी दूर) तथा किस योनि में (मनुष्य अथवा पशु) होगा ? इससे जुड़ा एक उपप्रश्न भी उन्होनें उभारा । वह यह था कि यदि मेरा जन्म मनुष्य योनि में होता है तो वह किस वर्ण में होगा तथा क्या मुझे अपने पूर्व जन्म की स्मृति रहेगी; क्योंकि पुनर्जन्म के पश्चात मुझे यह कैसे मालूम होगा कि मैं पूर्व में अमुक ही था । बिना स्मृति के तो सब 'बेकार' है । मेरे इन वयोवृद्ध मित्र का नाम डा. जमुना प्रसाद है जो एक राजपत्रित अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं और अपने परामनोवैज्ञानिक भाषणों के कारण भारत की अपेक्षा विदेशों में अधिक सुविख्यात हैं और जब भारत में दूरदर्शन चैनल का कहीं अता-पता नहीं था तब इनके भाषणों का प्रसारण स्पेन व इटली दूरदर्शन पर अनेकश: हो चुका है । डॉक्टर जमुना प्रसाद जी के उपुर्यक्त प्रश्नों ने मुझे झकझोर कर रख दिया और मेरे पास सिवा यह कहने के कि 'डा. साहब, बहुसंख्यक लोग तो केवल इसी जन्म व जीवन की जिज्ञासा करते हैं । अस्तु अगले जन्म विषयक चिन्तन तो मैंने कभी ज्योतिषीय आधारों पर किया ही नहीं है । अभी इस विषय में तो 'मौन' रहने के

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है ।' इसी क्षण डा. जमुना प्रसाद जी ने अपनी जन्मपत्री का ज्योतिषीय विश्लेषण मेरे सामने रख दिया जिसमें उनके द्वारा किए गए इन तमाम प्रश्नों का उत्तर था । इस सातत्य में यह भी उल्लेखनीय है कि आद्यत: उनकी जन्मपत्री में इन प्रश्नों से संबंधित विश्लेषण नहीं थे । उन्होंने जैसे मेरे समक्ष अपने प्रश्न रक्खे थे वैसे ही उन दैवज्ञ के समक्ष भी जिज्ञासा रक्खी थी जिसके उपरान्त उन्हें वह विश्लेषण मिला था । यह दैवज्ञ भी पर्याप्त वृद्ध व ज्योतिष के क्षेत्र में अत्यन्त अनुभवप्रौढ़ हैं ।

प्रश्नों का उत्तर तो दैवज्ञ जी ने दिया था परन्तु उत्तर वैज्ञानिक विश्लेषणों सहित न था । प्रत्येक उत्तर के साथ सैद्धान्तिक तर्क व पक्ष का अभाव ही इसका कारण था। डॉ० जमुना प्रसाद जी ने एक भृगु-संहिता वाचक का भी वाचन दिखाया परन्तु उससे भी मेरी जिज्ञासा का समाधान न हुआ। उनके प्रश्न मुझे कचोटते ही रहे । तब से मैं निरन्तर इन विषयों के चिन्तन व शोध में दत्तचित्त हूँ । मार्ग में कुछ दूर तक चलने के उपरान्त रास्ते का अस्तित्व कुछ घुंघलाने लगता है परन्तु ऐसा नहीं है । ज्योतिष के सिद्धान्त निश्चितत: इस कोने को प्रकाशित कर सकते हैं। यह विषय दैवज्ञता को चुनौती के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए । यद्यपि मैंने कई एक दैवज्ञों से इस विषय पर चर्चा की परन्तु अधिकांश किसी तरह से अपना पल्ला झाड़ कर निकल गए और दुबारा मिलने से भी कतराने लगे । शायद मेरी ये जिज्ञासायें अर्थसाधक न थीं इसलिए। अर्थ का लिप्सु इन सवालों का स्पर्श भी न करेगा, स्वाभाविक है । इन सवालों का स्पर्श तो स्वान्त: सुखाय का विषय है ।

कुछ बिन्दु हैं जिनके आधार पर मैंने अपने चिन्तन को आयाम देने का प्रयास किया है । इन बिन्दुओं में आनेवाले बाधक तत्वों का भी उल्लेख करूँगा जिससे बाधा का बांध आगे के विचारक समतल कर सकें । प्रश्न का एक-एक बिन्दु ही क्रमश: उठाना समीचीन प्रतीत होता है ।

अगला जन्म कब होगा– जातक के वर्तमान जन्म व उसकी जन्मपत्रिका के आधार पर उसका जन्म कब होगा यह एक विचारणीय विषय है । वस्तुत: जातक की जन्मपत्रिका विंशोत्तरी मान के अनुसार अधिकतम 120 वर्ष का ही आगणन प्रस्तुत करती है–दूसरे शब्दों में मनुष्य के केवल लौकिक जीवन का विवरण । लेकिन इस 120 वर्ष तक हर जातक अपनी जीवन यात्रा का सफर पूरा करे यह आवश्यक नहीं । करता भी नहीं । अस्तु उसके आयुर्दाय साधन का विधान मनीषियों ने प्रस्तुत किया। अयुर्दाय किसी जातक के भौतिक जीवन की सीमा है जब कि उस जातक की जन्म-पत्री से सम्बन्धित उसकी सम्पूर्ण विंशोत्तरी दशा उसके पार-भौतिक सफर की कहानी का भण्डार है, बस अन्तर यह है कि जातक की मृत्यु के पश्चात् लोगों की जिज्ञासा ही वहीं से समाप्त हो जाती है । जीवात्मा की अमरता की बात ही परिजन भूल जाते हैं । अन्यथा इससे संबंधित सवाल उठा कर वह अपने जन को ढूँढने की जिज्ञासा निश्चित करते । वह तो केवल इतना ही जानकर संतुष्ट हो लेते हैं कि कहीं मरने वाला जातक पञ्चक आदि में तो नहीं मरा है । बस, आयुर्दाय के आगे की कहानी विंशोत्तरी दशाक्रम के अनुसार इस जीवन के संस्कारों के आधार पर खोजा जाना चाहिए । किस मुहूर्त में किस महादशा व अन्तर्दशा में, किस काल में आदि आदि बिन्दुओं पर विभिन्न कोणों से उस जातक की मृत्युकालीन पत्रिका व उसकी स्थिति पर विचार किया जाना इनके निराकरणार्थ अपेक्षित है । क्योंकि एक स्थान पर ख़ड़े व्यक्ति की दृष्टि में सूर्य ओझल हो जाने का अर्थ यह कदापि नहीं लगाया जा सकता कि सूर्य है ही नहीं । सूर्य एक स्थान पर जब व्यक्ति की दृष्टि से ओझल होता रहता है (अस्तकाल) तो दूसरे स्थान पर खड़े व्यक्ति के समक्ष वह अपनी अरुण-आभा भी विखेरता रहता (उदयकालीन) है। भौतिक शरीर के नष्ट होने से उस शरीर की जीवात्मा थोड़ी न नष्ट हो जाती है । उसका सफर तो उसकी जन्म पत्रिका के विंशोत्तरी मान में आगे जारी ही रहता है । उदाहरणार्थ–यदि किसी जातक की जहाँ एक ओर उसकी मृत्यु किसी महादशा या अन्तर्दशा में हो रही है दूसरी ओर उसका जन्म भी तो कहीं, किसी योनि में व किसी दिशा में तो निश्चित रूपेण ही हो रहा होगा। ऐसी परिस्थिति में उसके पुनर्जन्म को निश्चित रूप से उसके पूर्व विंशोत्तरी मानक से संबंध अवश्य रहना चाहिए । यह तो एक झलक मैंने विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत की । शोध को आयाम देने हेतु शेष इसकी विशद व्याख्या प्रस्तुत किया जाना यहाँ सम्भव नहीं है । अपनी इन्हीं मान्यताओं व परिकल्पनाओं के मद्देनजर गवेषणा की दृष्टि में विगत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

दिनों दिवङ्गत हुए भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० ज्ञानी जैल सिंह व भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व. मुरारजी देसाई की मृत्युकालीन पत्रियों को बना कर मैंने उनके पुनर्जन्म के विषय में पता लगाने हेतु अपने शोध को गति देना चाहा था परन्तु उनकी जन्मपत्री व उससे संबंधित विंशोत्तरी दशा या संबंधित अन्य दशाओं के उपलब्ध न होने के कारण यह कार्य अभी बाधित है । इस पर सतत प्रयास जारी है । इस परिप्रेक्ष्य में यह चर्चा करना कदाचित अप्रासङ्गिक न होगा कि भृगुसंहिता एक फलित ग्रंथ है और उसके वाचन भी निश्चित रूप से किन्ही सिद्धान्तों के ही आधार पर हुए हैं जिनके कारण उसमें पूर्व व अग्रेतर जन्मों का वृत्त विवृत्त होता है ।

जन्म कहाँ होगा–यह सवाल भी शोध की परिधि में है क्योंकि अपनी आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार जब हम उत्तरायण और दक्षिणायन की मृत्यु से जीव की गति का पता पाते व कहते हैं तो निश्चित रूप से जीवन के अन्य गन्तव्यों का पता भी पाया जा सकता है । कारण यह कि सारे के सारे जीव एक साथ न तो मोक्ष पाते हैं और न स्वर्ग व नरक ही। मोक्ष की स्थिति तो विरली ही होती है । ऐसी परिस्थिति में अधिकांशत: तो जीव को पुनर्जन्म की ही प्रक्रिया से गुजरना होता है । अतएव जिस प्रकार से हम उत्तरायण व दक्षिणायन के प्रमाण से जीव की गति का वाचन करते हैं तो फिर और आगे भी जीव की यात्रा विषयक बातों का कथन किया जा सकता है क्योंकि उत्तरायण अथवा दक्षिणायन में छ: छ: माह का संयोग भी होता है । और इन छ: छ: महीनों में भी विभिन्न प्रकार के मुहूर्त्त जीव के विषय में अपनी कुछ विशिष्ट भाषा अवश्य रखते होंगे । और स्वाभाविक है, इन मुहूर्त्तों की गणना का विज्ञानसिद्ध आधार है । साथ ही वैज्ञानिक आकलन का परिणाम अधिकांशत: सकारात्मक ही होता है । अस्तु पहले हमें उस वैज्ञानिक आधार को पाना व निर्धारित करना होगा जिसके आधार पर हम जीव की उपस्थिति की दिशा का पता पा सकें । यह बात भिन्न है कि अमुक जीवन किस रूप में है । उसके स्वरूप (योनि) को पाने के लिए भी हमें क्रमश: शोध की ही प्रक्रिया से गुजरना होगा । खगोल वैज्ञानिक तो अपनी शोध प्रक्रिया की समुन्नति से भाचक्र के विभिन्न पिण्डों पर पहुँच गए परन्तु हमारे दैवज्ञ संरचनात्मक शोधों से दूर भाग रहे हैं । इस विदया को केवल जीविका के साधन के रूप में ग्रहण किए हुए हैं ।

पुनर्जन्म की योनि– इस प्रकरण का सम्बन्ध मात्र मनुष्य से मनुष्य योनि में जन्म लेने वाले जातकों की शोध व शोध के सिद्धान्तों की समीक्षा है । जीव के द्वारा मनुष्येतर योनि में भी जन्म लिया जा सकता है परन्तु मनुष्येतर योनि में जन्म लेने वाली जीवात्मा विषयक जिज्ञासा वहीं से समाप्त हो जाती है । मनुष्य द्वारा मनुष्य योनि में पुनर्जन्म पाने की बात को पता लगाने विषयक बातों में 'संस्कार' प्रमुख नियामक तत्त्व सिद्ध होता है क्योंकि कर्मविपाक जो पूर्व जन्म व अगले जन्म की गाथा कहता है वह संस्काराश्रित ही होता है। और यही सच भी है । गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी विभिन्न प्रकार की अवस्थाओं को संस्कारों से ही जोड़ा है ।

मनुष्य के वर्तमान जीवन की जन्मपत्रिका उसके संस्कारों को तो बताती ही है तो फिर इन संस्कारों के आधार पर पूर्व जन्मकालीन व पुनर्जन्मकालीन (अगले जन्म विषयक) बातों की खोज व वाचन दैवज्ञों द्वारा वैज्ञानिक आधारों पर क्यों नहीं किया जाता या करने का प्रयास किया जाता और उनका यह प्रयास दीर्घकालीन व लम्बवत शोध प्रक्रियाओं का द्वार भी इनकी पुष्टि हेतु खोल देगा ।

हाँ । शोध का परिणाम यह बहुत आवश्यक भी नहीं है कि सकारात्मक ही निकले । नकारात्मक भी हो सकता है। परन्तु कतिपय वैज्ञानिक आधारों पर की गयी इन गवेषणाओं द्वारा कुछ नवीन सिद्धान्तों व अवधारणाओं का जन्म तो अवश्य ही होगा ।

यदि इन प्रमुख प्रश्नों को दैवज्ञ व ज्योतिषी वैज्ञानिक तरीकों द्वारा हल करने में सफल हो लेते हैं तो निश्चित रूप से जो उपप्रश्न हैं उनका भी समाधान हो सकेगा । हाँ, उपप्रश्नों में स्मृति का जहाँ सवाल है उस क्षेत्र में मैंने कुछ व्यावहारिक साथ-साथ वैज्ञानिक कठिनाइयाँ भी पाई हैं जो शोध की दृष्टि से कुछ बाधक प्रतीत होती हैं परन्तु उनका समाधान भी जातक की जन्म-पत्रिका द्वारा किया जा सकता है। यह वस्तु भी दुरुह तो नहीं प्रतीत हुई ।

स्मृति के ऐसे बाधक तत्त्व जिनका निराकरण जन्म-पत्रिका के आधार पर विचारणीय है–अभी तक कई उन जातकों का शोधात्मक वृत्तान्त *[New*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Dimensions in Reincarnation researches, 1993, by Dr. Jamuna Prasad] पढ़ने को मिला है जिन्हें अपने पूर्वजन्म की बात याद रही । ऐसे जातकों के विवरण के अनुसार यह समीक्षा उभार कर आती है कि 90% लोग तो ऐसे हैं जो अल्पायु या कम आयु में किसी भी कारण से मृत्यु का शिकार हो गए हैं। 10% ऐसे लोग भी हैं जो अपना पूरा जीवन जीने के उपरान्त मरे और उन्हें पूर्व जन्म की बात याद है । इन आंकड़ों में दो बातें जीववैज्ञानिक दृष्टि से समझ में आती हैं जिनके कारण स्मृति का होना या न होना निर्भर करता है । प्रथम तो व्यक्ति की अवस्था तथा दूसरी व्यक्ति के दाँतों, आँखों व श्रवणेन्द्रिय की पुष्टता । इन अङ्गों का उसके मूलाधार से होकर मस्तिष्क तक जाने वाली नसों का स्मृति से पर्याप्त सम्बन्ध होता है । ऐसा स्वास्थ्य-चिकित्सकों का कथन है । दाँत की कमजोरी के साथ स्मृति भी इसीलिए हल्की होने लगती है । स्मृति की यह बात उपर्युक्त अन्य अङ्गों से भी ऐसा ही सम्बन्ध रखती है । उन वृद्धों की स्मृति भी इसी कारण अवस्था के अनुरूप क्षीण व क्षणिक हो जाती है जिनके दाँत रोगग्रस्त होकर उखड़ जाते हैं। दाँतों या इन चर्चित अङ्गों की रोगग्रस्तता इसलिए है कि रोग के जीवाणु इन अङ्गों के साथ लगी उन तमाम नसों को भी प्रभावित कर खराब कर देते हैं जो इनको स्पर्श करती मस्तिष्क तक पहुँचती हैं ! यही नसें मस्तिष्क को स्मृति की तीव्रता प्रदान करती हैं । अस्तु इन अङ्गों की रोग जनित स्थिति से जो कुप्रभाव स्मृति पर पड़ता है वह व्यक्ति का साथ बहुत दूर तक नहीं निभा पाती ।

अल्पायु में जो लोग मृत्यु के शिकार होते हैं उनके दाँत चूँकि पूर्ण स्वस्थ होते हैं उनकी स्मृति इसीलिए दूर तक उनका साथ देती है ।

ऐसे लोग जो अत्यन्त वृद्ध हैं साथ ही उनके दाँत भी पर्याप्त स्वस्थ हैं उनकी स्मृति भी प्रबल देखी जाती है। अत: ऐसे लोगों को भी मृत्यु के उपरान्त अपने पूर्व जन्म की बात स्मृत रहना कुछ आश्चर्यजनक नहीं है ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में ही यहाँ पञ्चेन लामा के अवतार की चर्चा करना कुछ अप्रासङ्गिक न होगा जो अभी विगत में चीन सरकार व तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा के मध्य विवाद का विषय बना था । पञ्चेन लामा ने किसी न किसी आधार पर ही तो अपने अवतार की घोषणा की होगी, जिनके आधार पर उनके अनुयायियों ने उनके पुनर्जन्म पर उनकी पहचान व खोज की होगी। ऐसा सुनने में आया है कि ये लामा अपने अवतार की पहचान व दिशा तथा क्षेत्र अपने अनुयायियों को बता देते हैं । आखिर ये मानदण्ड कौन से हैं। इन्हीं के आधार पर क्या अन्य मनुष्यों के पुनर्जन्म व अवतार की पहचान सम्भव है ?

मृत्यु के उपरान्त मनुष्य के पुनर्जन्म को व उसकी योनि को जानने की एक लोक विश्रुत विधा भी प्रचलित है । मृत्यु के दसवें दिन (शुद्ध या त्रयोदशाह के दिन) रात्रि में स्त्रियाँ कण्डी की शुद्ध राख चलनी से चाल कर खुले स्थान में ढक कर रख देती हैं । उनकी मान्यता होती है कि मृत्यु के उपरान्त व्यक्ति का पुनर्जन्म जिस योनि में होता है या होना होता है उसकी आकृति रात में उस राख पर उभर आती है । महिलाओं को यह युक्ति कहाँ से मिली है ज्ञात नहीं हो पाया ।

एवमेव *बृहत्पाराशर होराशास्त्र* में 'पूर्वजन्म शापद्योतकाध्याय' है । इसमें कतिपय पूर्वजन्म विषयक योग हैं परन्तु जब इस प्रकार के विभिन्न प्रकार की परिस्थितिजन्य जन्म और मृत्यु का विवरण इसमें है तो शेष विवरणों का उल्लेख भी होना चाहिए यथा-जातक की मृत्यु के कितने अन्तराल पर व किस योनि में जन्म हो सकता है, किस दिशा व वर्ण में हो सकता है । इन सभी विषयों की खोज अपेक्षित है । यह कार्य अर्थपरक दैवज्ञ नहीं कर सकेंगे। इसके दायित्व का जिज्ञासुओं को निर्वहण करना है ।

उपर्युक्त समस्याओं के समाधानार्थ जन्मपत्रिका के द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम व द्वादश भावों का शोधात्मक चिन्तन नितान्त आवश्यक है, क्योंकि पूर्व पृष्ठों में चर्चित बातों का इन भावों से पूर्ण सम्बन्ध है । कारण यह कि जन्मपत्रिका जातक के जीवन के अच्छे व बुरे पक्षों पर जो भी अपना मन्तव्य देती है वह प्रकारान्तर से जातक के संस्कार ही होते हैं और यही संस्कार उसका भविष्य निर्धारित करते हैं ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मिथिलाया नैयायिको गोविन्दठक्कुर :

□ डा. श्री रामजी ठाकुर

प्राचीनकालादेव जानकीजन्मभूमेर्मिथिलाया आध्यात्मिक- साधनोत्कर्ष-कथा लोकविश्रुता वरीवर्त्तते । मैथिलनरपतीनां कीर्तिलता युद्धोत्साहेन विजयश्रिया च न खलु पल्लविता पुष्पिता वा बभूव, परमेषां निर्मलया मनीषया वेदशास्त्रमननानुध्यानाभ्यां ब्रह्मविदां वादसमायोजनेन अनुपमेन त्यागेन तपसा च संवर्धिता समजायत । भारते पावनतया प्रथितानि कतिपयानि नामानि सन्ति अयोध्या-मथुरा-प्रभृतीनि रामकृष्णादीनि च यानि श्रुतिपुटप्रविष्टान्येव मनस्यपूर्वां भक्तिभावनां जागरयन्ति, श्रद्धासौरभञ्च प्रसारयन्ति । एष्वेव पावनतमेषु नामसु मिथिलेति नामापि श्रुतमुच्चरितं वा चेतसि पावनीं भावनामभिव्यनक्ति ।

निष्कामकर्मयोगिनामग्रगण्यो मिथिलाधिपो जनकः गीतोपदेशकेन भगवता श्रीकृष्णेनापि सादरमुदाहृतो वर्त्तते –कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः इति । मैथिलो याज्ञवल्क्यः भारते प्रथमः संन्यासी बभूव । जनक-याज्ञवल्क्य-संवादे जनकाष्टावक्रसंवादे च गभीरमाध्यात्मिकं रहस्यमुद्घाटितमभवत्। वस्तुतः महाराजजनकस्य राजपरिषद् ब्रह्मविदां मनीषिणां विचारगोष्ठीरूपेणैव प्रसिद्धिमगमत् ।

मैथिला राजानः युद्धे विजयश्रियं नावाप्तवन्तो भवेयुः । किन्तु वैदिकधर्मरक्षायै बद्धपरिकरा मैथिला मनस्विनो विद्वांसः उदयन-गंगेश-वाचस्पति-प्रभृतयः सद्युक्तिसहकृताभिः तर्ककर्कशाभिः गीर्भिः बौद्धादिनास्तिकपक्षान् खण्डयन्तः आध्यात्मिकजगति विजयदुन्दुभीमुच्चैर्नादयितुं नूनं प्राभवन्। आचार्योदयनस्य गर्वोक्तिरियं विदुषां सुविदितचरैव–

वयमिह पदविद्यां वाक्यमान्वीक्षिकीं वा
यदि पथि विपथे वा वर्त्तयामः स पन्थाः ।
उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सैव पूर्वा
नहि तरणिरुदीते दिक्पराधीनवृत्तिः ।।

अथ च

ऐश्वर्यमदमत्तोऽसि मामवज्ञाय तिष्ठसि ।
समायाते पुनर्बौद्धे मदधीना तव स्थितिः ।।

एकत्र वेदं प्रत्यास्थां जनयितुं न्यायमीमांसानुशीलनम् अपरत्र च वेदोक्तकर्मसु लोकान् प्रवर्त्तयितुं स्मार्त्तप्रबन्धप्रणयनञ्च कृत्वा मैथिलाः विद्वांसः सर्वथैव स्वप्रयत्ने साफल्यमवाप्नुवन्। भारतीयास्तिकदर्शनेष्वपि न्यायमीमांसयो र्विशेषतोऽभिरुचिरासीन्मैथिलानां विदुषाम् । सत्यं 'मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डितेयं मही'। नात्र कश्चनानधीत्यन्यायशास्त्रं पण्डितमध्ये गणनां लभते स्म । प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय इत्युच्यते । प्रमाणविद्येयं सर्वशास्त्रोपकारकतया प्रसिद्धास्ति। उक्तञ्च कौटिल्येन–

आदर्शः सर्वशास्त्राणामुपायः सर्वकर्मणाम् ।
आश्रयः सर्वभूतानां शश्वदान्वीक्षिकी मता ।। इति ।।

म. म. सिद्धगोविन्दोऽपि आगमोक्तसाधनापरायणे न्यायमीमांसादिदर्शनपारगे पञ्जीप्रबन्धप्रसिद्धे धुसोतनगवाड़मूलके वत्सगोत्रीये श्रोत्रियब्राह्मणसदन्वये खैस्ते पञ्चदशशतके लब्धजन्मा सारस्वतसेवया सदाचारेण श्रीमन्नारायणचरणयोरतुलया भक्त्या सहजलब्ध या सिद्ध्या च मिथिलायामन्यत्र च सुविख्यातनामा बभूव । अस्यालौकिकसिद्धिविषये मिथिलायामनेकाः जनश्रुतयः श्रूयन्ते। अयं रविकरस्य प्रपौत्रः बुद्धिकरस्य पौत्रः केशवस्य पुत्रः आसीदिति गोविन्दपञ्चमसुतेन देवनाथेनोदलेखि–

योऽभूत् पुरा रविकरः सकलागमज्ञः
तस्यात्मजो बुधिकरोऽस्य च केशवस्तु ।
तस्यात्मजः सकलतन्त्रसरोजभास्वान्
गोविन्द एष भुवने विदितश्चकास्ति ।।

अयं हयग्रीवोपासको वैष्णवश्चासीदिति प्रसिद्धमस्ति। वैष्णवत्वमस्य स्वप्रणीतग्रन्थादौ माङ्गलिकपद्यदर्शनेनापि सुस्पष्टं जायते । स्वयमयं काव्यप्रदीपस्यान्ते स्वकृतान् चतुरो ग्रन्थानेवोल्लिखन् आह स्म–

दीपिकाद्वितयं कन्ये प्रदीपद्वितयं सुतौ ।
स्वमतौ सम्यगुत्पाद्य गोविन्दः शर्म विन्दति ।।[2]

पूजाविधेरागमशास्त्रसम्बद्धतया तदुचितां देवतां शिवं संस्तुत्य स्वेष्टदेवस्य श्रीकृष्णस्य वंशीरवं स्वान्ते शृण्वन् पूजाप्रदीप मारब्धवान्–*स्वान्ते सन्ततमस्तु मे यदुकुलोत्तंसीयवंशीरवः*। स्वमेव काव्यप्रदीपारम्भेऽपि गोविन्दः 'श्रीमन्नारायणचरणयोः सम्यक् चित्तमाधायैव' शास्त्रीयविवेचनोचिताया: सरस्वत्या अपि महसो नमनं विधत्ते स्म–*नत्वा सारस्वतमपि महः काव्यतत्त्वं व्यनक्ति।*[3] तत्र काव्यप्रदीपोऽन्तिमा कृतिर्गोविन्दस्येति परिलक्ष्यते। दीपिकाद्वयमपि प्रदीपद्वयस्य परिशिष्टरूपमेव । तत्रैकोदाहरणदीपिका यस्यां काव्यप्रकाशोदाहृतानां पदयानां काव्यशास्त्रीयव्याख्या आसीत् ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अपरा च पूजाप्रदीपपरिशिष्टभूतमन्त्रदीपिका मन्त्रार्थदीपिका वा । उभे अप्यद्यावधि न प्रकाशमागते स्तः । काव्यप्रदीपस्य प्रभाख्यटीकाकृतस्तत्सदुपाख्यवैद्यनाथस्योदाहरण-चन्द्रिकायामुदाहरणदीपिकाया उल्लेखो दृश्यते । संभवतो गोविन्दस्योदाहरणदीपिकां दृष्ट्वैव तेनोदाहरणचन्द्रिका प्रकाशिता। एवमेव पूजाप्रदीपस्यापि परिशिष्टभूताया दीपिकायाः उल्लेखं गोविन्दपञ्चमसुतो देवनाथः स्वकीयमन्त्रकौमुद्या अवसाने सहायकग्रन्थानां नामनिर्देशं कुर्वन् कृतवानस्ति–

यत्नेन दीपिकां दृष्ट्वा तथा च लघुदीपिकाम् ।
तथा पूजाप्रदीपञ्च पुरश्चरणचन्द्रिकाम् ।।[४]

इति । मन्ये प्रदीपद्वयं सपरिशिष्टं विरच्य गोविन्दो गोविन्द चरणारविन्दसमाराधनमेव चकार । भक्ताश्च कवयः क... काव्यालोचनं वा भगवन्नारायणचरणारविन्दसमाराधनमेव मन्यन्ते।

स्वयमनेनान्येन वा एतदीयस्य न्यायशास्त्रीयस्य कस्यापि ग्रन्थस्योल्लेखः कृतः इति तु न श्रूयते, परमस्य काव्यप्रदीपग्रन्थस्य पर्यालोचनया पदे-पदे गोविन्दस्य न्यायशास्त्रीयस्य प्रौढपाण्डित्यस्य परिचयः सञ्जायते । नह्यनधीतन्यायविद्यः कश्चित् काव्यप्रकाशस्याशय-प्रकाशनक्षमां प्रदीपसदृशीं व्याख्यां कर्तुमीष्टे। न चानुमाननिरूपणानभिज्ञः नैयायिकप्रवरेण महिमभट्टेन अनुमानेऽन्तर्भाविताया व्यञ्जनायाः वाचोयुक्त्या समर्थनं कर्तुं पारयेत् । ग्रन्थान्ते काव्यप्रदीपगौरवं गायन् तट्टीकाकारो वैद्यनाथः कथयति–

काव्यप्रकाशगम्भीरभावबोधो न चान्यतः ।
इति प्रदीप गम्भीरभावार्थद्योतनं कृतम् ।।

न्यायविद्यानुशीलनमन्तरेण न कस्यापि वस्तुनः अतिव्याप्त्यव्याप्त्यसंभवलक्षणैर्दोषैः शून्यं परिष्कृतं च लक्षणं कर्तुं शक्यते । मम्मटस्य काव्यदोषसामान्यनिरूपणावसरे तार्किकगोविन्दस्य वाचोयुक्तेर्विलासस्तावदवलोकनीयोऽत्र । मम्मटेन काव्यप्रकाशस्य सप्तमोल्लासे काव्यदोषसामान्यं लक्षयतोच्यते–

मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यस्तदाश्रयाद् वाच्यः ।
उभयोपयोगिनः स्युः शब्दाद्यास्तेन तेष्वपि सः ।।[५]

अत्र प्रदीपकारकृताऽऽलोचना द्रष्टव्या– *"हतिर्विनाशः, नच दोषेण रसो नाश्यते । तस्मादलक्षणमेतत् । मैवम् हतिशब्दस्य अपकर्षवाचित्वात् । नन्वेवं रसानुत्पत्ति-प्रयोजकेष्वतिव्याप्तिः । अथानुत्पत्तिरेव हतिशब्दार्थः तर्हि यत्र रस उत्पद्यत एव परन्तु अपकृष्यते तत्रातिव्याप्तिः । तदेल्लक्षणम् अतिदरिद्रदम्पत्योः कृशतरनिशावगुण्ठनीय वसनमिव एकेन अपकृष्यमाणमपरं परिहरति।"*[६]

इत्थं प्रदीपकृता गोविन्देन काव्यप्रकाशीयलक्षणमालोच्य स्वकीयं परिष्कृतं लक्षणमुपस्थाप्यत– *"अत्र ब्रूमः, उद्देश्यप्रतीतिविघातलक्षणोऽपकर्षो हतिशब्दार्थः । उद्देश्या च प्रतीतिः रसवति अविलम्बिता अनपकृष्टरसविषया च, नीरसे त्वविलम्बिता चमत्कारिणी-चार्थविषया, तथा च तादृशप्रतीतिविघातकत्वं सर्वेषामविशिष्टम् ।"*[७]

सिद्धगोविन्दोऽयम् उपर्युक्तोद्धरणे स्वकीयतार्किकताया: स्फुटं परिचयं प्रादात् ।

अयं भगवद्भक्ततया निरहङ्कारः सन् स्वमुखेन क्वचिदपि स्वकीयपाण्डित्यप्रकाशनं नाकार्षीत् । किन्त्वस्य पञ्चमसुतः 'तर्काटवीसरणिसम्भ्रमसाहसिक्यपञ्चाननो' देवनाथः मन्त्रकौमुद्याः प्रारम्भे स्वपितुर्विविधशास्त्रीयवैदुषीं वर्णयन् प्राह स्म–

मीमांसामवतार्य यः सरसतामद्धा विवेके गुरु
र्योवेदान्तविचारचारुचरितं सिद्धान्तवाचस्पतिः ।
आचार्योऽपि विचारयंतं यदवधिर्नैयायिको वा नवा
गोविन्दोऽयमखण्डमण्डलयशश्चन्द्रो जगत्प्राप्तवान् ।।

अत्र गोविन्दः उदयनाचार्यसमकक्षो नैयायिकः प्रतिपादितोऽस्ति । पुनस्तस्यैव ग्रन्थस्यान्ते तेनायं तर्कतन्त्र रमणीकमनीयकान्तश्च व्याहृतोऽस्ति–

यस्तर्कतन्त्ररमणीकमनीयकान्तो
गोविन्द एष भुवने विदितश्चकास्ति ।

अनयोरुपर्युक्तपद्ययोः 'अयम् एषः' इति पदोपादानात् मन्त्रकौमुदीरचनाकालेऽयं विद्यमान आसीदिति प्रतीयते ।

मिथिलाया महान् नैयायिको जयदेवः पक्षधरापरनामा यस्य च शास्त्रार्थावसरे न कोऽपि प्रतिपक्षी लक्षीभूतः श्रूयते, गङ्गेशोपाध्यायस्य चिन्तामणेः आलोकनाम्नीं टीकामेकां प्राणैसीत् । तत्र च वङ्गीयनैयायिकप्रवरैः शिरोमणिभिः युक्त्या भूयांसि दूषणकण्टकानि समुद्भावितानि । तेषां दूषणकण्टकानामपाकरणाय गोविन्दस्य सप्तमः सुतो महामहोपाध्यायः मधुसूदनठक्कुरः आलोककण्टकोद्धारनामानं टीकाग्रन्थं व्यरीरचयत् । खैस्तषोडशशतकस्यायं मिथिलाया दुर्धर्षो नैयायिको बभूव । अयं ग्रन्थः १९३९तमे खैस्तेऽब्दे चिन्तामणिटीकया सह प्रकाशमागतोऽस्ति । ग्रन्थादौ तृतीये प्रास्ताविके पद्ये साभिमानमनेनोच्यते यन्मया सद्युक्तिभिः आलोके चिन्तामणौ च परैर्द्वेषाक्षिप्तानि सर्वाण्येव दूषणकण्टकानि निराकृतानि इति । स्वकीयवैदुष्याभिमानं प्रकाशयताऽनेनोच्यते–

वादीन्द्रमानमातङ्ग-सूदने मधुसूदने ।
वादिन्यादीयतान्नैव मुधा पक्षान्तरं बुधाः ।।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

आंशिकतयापि प्रकाशितेऽस्मिन् ग्रन्थरत्ने भूयसां विदुषां मतान्युपन्यस्तानि सन्ति । अत्र श्रीदत्तवीरेश्वरयोर्मतोल्लेखेन सह न्यायप्रकाश-महाभाष्य-द्रव्यप्रकाशोद्योत प्रभृतिभ्यश्चोद्धरणानि उपस्थापितानि सन्ति । एभिरुद्धरणैः सह ग्रन्थकृत् स्वपितुः गोविन्दस्यापि यत्र-तत्र मतान्युपन्यस्तवान् ।[10]

श्रीदत्तस्य समयप्रदीपनाम्नः स्मृतिग्रन्थस्य जीर्णोद्धारनामके टीकाग्रन्थेऽपि मधुसूदनः गोविन्दस्य मतमुल्लिलेख ।

गोविन्दस्य पञ्चमसुतो देवनाथोऽपि पक्षधरस्यालोकमधिकृत्य आलोकपरिशिष्टनामकं नव्यन्यायग्रन्थं प्रणीतवान् । तत्रादौ स गोविन्दचरणाम्बुजं स्मृत्वैव ग्रन्थमारभते–

देवनाथेन गोविन्दचरणाम्बुजसेविना ।
चिन्तामणौ यदालोके परिशिष्टं तदुच्यते ।[11]

मिथिलायामन्यत्र वा देवस्तुतेरनन्तरं गुरुचरणाम्बुजस्तुतिः शिष्टाचारपरिगृहीता दृश्यते । अतः स्पष्टमनुमातुं शक्यते यद् देवनाथो मधुसूदनश्च स्वपितुर्गोविन्दस्य मुखादेव न्यायागमादिविद्याः शुश्रुवतुः । मन्ये, सकलशास्त्रपारंगोऽपि सिद्धगोविन्दः भगवच्चरणकमलयोः पूजनाय द्वावेव प्रदीपौ प्रज्वाल्य आत्मानं कृतार्थममन्यत ।

गोविन्दस्य द्वितीयः सुतो विद्यापतिठक्कुरः आगमद्वैतनिर्णयाख्ये तन्त्रग्रन्थे गोविन्दचरणौ नत्वा ग्रन्थमारभ्य तत्र बहुत्र "इत्यस्मत्संप्रदायः", "इत्यस्माकं पैत्रिकः पन्थाः" इत्याह स्म ।[12]

अतोऽसंशयमिदं वक्तुं शक्यते यद् गोविन्दस्य सर्वेऽपि पुत्राः स्वपितुरेव मुखात् सर्वाः विद्याः समधिगम्य वैदुष्यप्रकर्षमवाप्नुवन् इति ।

पुरा सर्वेऽपि विद्वांसः ग्रन्थलेखका एव न भवन्ति स्म। शङ्करमिश्रस्य पिता भवनाथो महान् दार्शनिको भूत्वापि कमपिग्रन्थमलिखन्नेव केवलमध्ययनाध्यापनाभ्यामेव आत्मानं कृतकृत्यं मन्यमान आह स्म–*अधीतमध्यापितमर्जितं यशो न शोचनीयं किमपीह भूतले* इति ।

गोविन्दः स्वानुजस्य श्रीहर्षस्यापि पद्यमेकं विरोधालङ्कारोदाहरणावसरे समुद्धृतवानस्ति–

सर्वतः पुरत एव दृश्यते
पात्रतां न पुनरेति चक्षुषोः ।
हृद्गतोऽपि भुजयोर्न भाजनं
कोऽयमालि ! वनमालिनः क्रमः!!

अथ चायं स्वपूजाप्रदीपस्य प्रमाणपरिच्छेदान्ते स्ववैमात्रेयाग्रजस्य रुचिनाथस्य मन्त्रशास्त्रे गुरुत्वं स्वीचकार–

भ्रातुः श्रीरुचिनाथस्य प्रसादेन महीयसा ।
श्रीगोविन्देन विज्ञाय मन्त्रशास्त्रमनंकशः ।[13]

आचार्यशङ्करमिश्रोऽपि स्वपितुर्भवनाथादेव सर्वाणि दर्शनशास्त्राणि समधिगतवानासीत् । तेन दार्शनिक ग्रन्थव्याख्यानावसरे स्पष्टमुक्तमस्ति–

स्वभ्रातुर्जीवनाथस्य व्याख्यामाख्यातवान् यतः ।
मत्पिता भवनाथो यां तामिहालिखमुज्ज्वलाम् ।।

किन्तु भवनाथनिर्मितो नैकोऽपि दार्शनिकग्रन्थः श्रूयते ।

एवमेव मधुसूदनकृतकण्टकोद्धारे गोविन्दमतोल्लेखात् "आचार्योऽपि विचार्यते यदवधिर्नैयायिको वा नवेति" देवनाथचनात् गुरुत्वात् ग्रन्थादौ तदीयचरणाम्बुज-स्तुति-दर्शनाच्च स्पष्टमनुमातुं शक्यते यत् सिद्धगोविन्दः मिथिलायां महान् नैयायिको बभूव, यस्य न्यायशास्त्रीयो विचारः तदीय शिष्यकृतिष्वेव अन्वेष्टुं शक्यते । अथवा दैवदुर्विपाकात् तदीयन्यायशास्त्रीयो विचारसंग्रहः कालकवलितोऽभवत् । प्रतिपादितञ्चास्ति मिथिलापञ्जीप्रबन्ध विशेषज्ञेन प्राध्यापकेन रमानाथझाशर्मणा देवनाथकृताया मन्त्रकौमुद्याः भूमिकायाम् घुसोतवंशीयविदुषां वैदुष्यमभिलक्ष्य– 'रविकरः पञ्ज्यां महोपाध्याय इत्युपाधि ना विभूषितः । पञ्ज्यां महोपाध्यायः नैयायिकानामुपाधिः । अतो रविकरो नैयायिकः। ...तदा प्रभृत्येवास्मिन् वंशे न्यायशास्त्रस्य व्यवसायः साधना चागमशास्त्रोक्ताङ्गीकृता"।।[15]

अतो गोविन्दकृतस्य कस्यापि न्यायशास्त्रीयस्य ग्रन्थस्याभावेऽपि गोविन्दस्य नैयायिकत्वे सन्देहलेशोऽपि नावशिष्यते।

स्रोत-निर्देशः

1. मन्त्रकौमुदी, श्लोक 3 ।
2. काव्यप्रदीपः अन्तिमः श्लोकः ।
2. (क) पूजाप्रदीपः, श्लोकः 2 ।
3. अस्यैव मङ्गलश्लोकः ।
4. मन्त्रकौमुदी, 2/188 ।
5. काव्यप्रकाशः, 7/1 ।
6. काव्यप्रदीपः, 7/1, पृ० 169 ।
7. तत्रैव ।
8. मन्त्रकौमुदी, श्लोक 4 ।
9. दीनेशचन्द्रभट्टाचार्य–History of Navyanyaya in Mithila, पृ० 178 ।
10. कण्टकोद्धारः, पृ० 34, 36, 76, 183 ।
11. पूर्वोक्तः History of Navyanyaya, पृ० 190 ।
12. प्रो० रमानाथ झा, मन्त्रकौमुद्या भूमिकायाम् ।
13. पूजाप्रदीपः, पृ० 42 ।
14. खण्डनटीका, भागवताचार्येण संस्कृता, पृ० 632 ।
15. मन्त्रकौमुदीव्याख्या, पृ० 2 ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

भागवती मिथिलामितिः

□ डा. श्री बटोही झा

सृष्टिप्रवाहे धरण्यां नाना नगराणि पुराणि कालेन जायन्ते कालेन च विलीयन्ते । कतिपयकालं यावद् रूपेण तदनन्तरं नाम्ना च स्वसंस्कृतिसभ्यताबलेन शास्त्रे लोके चेतिहासे चर्चायां भवन्ति तानि । तथाऽस्ति मिथिला नामं नगरी, यस्याः श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासदर्शनादिशास्त्र- रामायण महाभारतादिग्रन्थेषु लौकिकसाहित्यकाव्यनाटकादिषु च नामोल्लेखस्तत्संस्कृतिव्याख्यानं तद्गौरवनिरूपणं बहुशोऽस्ति। अष्टादशपुराणेषु भागवतपुराणस्य यत्स्थानं तत्तु विद्यावतां भागवते परीक्षेति वचनात् संसिद्धं लोकविश्रुतमेव । अत्र विद्यावतां-विदुषामपि भागवते-भगवत्तत्त्व-विषये भगवतो भगवत्याः वा स्वरूपगौरवप्रभावमहिम्नां विषये परीक्षा-कोटिद्वयान्यतरनिश्चये गुरुकृपा भगवत्प्रसाद-रूपपरमापेक्षा, यतो भागवतनाम्ना श्रीदेवीभागवतं श्रीमद्भागवतञ्चेति महापुराणद्वयं लोकार्पितमस्ति। अस्माकमुभयमपि मान्यम् । निबन्धेऽत्र तदुभयगतमिथिला-माहात्म्यं दर्शनीयमस्ति ।

योगाग्निशुद्धवैदेही-वैदेही-विदेहनन्दिनी सीता, अग्नि समशुद्धाऽपि अग्निना शोधनविषयीकृता परीक्षिता तथा वैदेही-विदेहानांपुरी मिथिला कदाचित् योगाग्निना शोधिता। तत्राधिष्ठानशोधनमाध्यमेनाधिष्ठातृपरीक्षणमासीत् ।

श्रूयते-कदाचिन्महर्षिर्व्यासो मिथिलाधिपतेर्विदेहराजस्य स्थैर्यात्म-निष्ठापरीक्षणार्थं मिथिला-नगर्यां योगविद्ययाऽग्नि-प्रयोगञ्चकार । तेनाग्निना दह्यमानायां मिथिलानगर्यां क्रमशोऽग्निप्रवेशो राजधान्यां प्रसृतः । अग्निप्रकोपं दूतमुखात् श्रुत्वापि विदेहराजो निश्चलनिष्पन्दस्तिष्ठति । ततो राजभवने राजप्रकोष्ठे चाग्निज्वाला प्रसृतेति श्रुत्वा रहूगणनृपेण भूयोभूयो वाग्बाणोत्तेजितजडभरतसदृशो विदेहः 'स्मयमान इव विगतस्मय इदमाह 'मिथिलायां दह्यमानायां न मे दह्यति किञ्चनेति'।[1]

अत्र मिथिला-प्रकृतिः, प्रकृतौ दह्यमानायां सत्यां निर्लेपाक्रियासङ्गपुरुषस्य कथं दाहसंसर्गः । 'देहेन जातस्य हि मे न सन्तीति[2] जड़भरतवचनेन विदेहवचनं संगच्छते । गीतायां श्रीकृष्णवचनम् 'एवं परम्पराप्राप्तमिमं (योगं) राजर्षयो विदुरि' त्यनुसारं राजर्षिः कर्मयोगी जनकस्तथाऽस्तीति न वेति ज्ञानावतारेण श्रीकृष्णप्रतिनिधिभूतेन श्रीव्यासेन पुरुषप्रतिनिधिभूतस्य कर्मयोगिनो विदेहमुक्तस्य जनकस्य प्रकृतिप्रतिनिधिभूताया मिथिलायाः प्रकृतिपुरुषविवेकख्यातिः परीक्षिता । एवं प्रकृतिस्थानीयमिथिलापदप्रयोगो विदेह-मुक्ताधिष्ठानत्वेन चकास्ति। एतेन च क्षेत्रीयगौरवं राजर्षिजनकमाहात्म्यं सुतरां प्रकाशत एव ।

पुंराणी मिथिलाश्रुतिः- मिथिला न क्षेत्रविशेषः किन्तु प्रकृतिरूपा, तथा योगेश्वरेण याज्ञवल्क्येन सम्बद्धा च ।

अत्रापि वैदिकमुपाख्यानमुदाहरणीयम् । अत्र शुक्लयजुर्वेदसंहिता प्रचलति । यजुर्वेदस्य कृष्णशुक्ल विभागोपाख्यानमतिविचित्रं प्रसिद्धञ्च । अधीतसकलवेदज्ञानं दक्षिणारूपेण गुरवे निवेद्याभूतपूर्वशिष्यो याज्ञवल्क्यो विवस्वन्तं प्रसाद्य तस्मात् लोकोत्तरगुरोर्वाजिरूपात् विवस्वतो लोकप्रकटितेतरानन्तवेदराशेः यं वेदमन्त्रनिधिमवाप स शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः वाजसनेयी शाखोच्यते । याज्ञवल्क्योद्वमितमन्त्राणां तित्तिररूपधारिभिः सहपाठिभिः ग्रहणात् कृष्णयजुर्वेदसंहितायास्तैत्तिरीयशाखा प्रसिद्धा । यज्ञानां वल्को वक्ता यज्ञवल्कस्तस्यापत्यं याज्ञवल्क्यस्तदर्जिता वाजसनेयी शाखा मिथिलाक्षेत्रे याज्ञवल्क्यस्मृतिश्च प्रसृता। एवमार्यावर्तेतरश्रुतिधरित्री मिथिला लोकविलक्षणश्रुतिः । अस्याः पुराणत्वं प्राचीनत्वं च पुराणेषु बहुशः सङ्गीतत्वात् पौराणिकत्वमस्त्येव। किञ्चास्या नामकरणमपि पौराणिकाख्यानेन विस्मयावहम्। अत्र ब्रह्मर्षिराजर्षिपरस्परकोप प्रसङ्गोऽद्भुतः । समाधानमत्रेदम्-यथारणिद्वयसंघर्षाद् यज्ञाग्निर्जायते तथैव वशिष्ठनिमिशापप्रसङ्गतो यज्ञभूमिर्मिथिला सा भूमिका, यत्र कालान्तरेऽग्निसमशुद्धा विदेहात्मजा सीता (मैथिली) समजनि।[4] अराजकभयाद् वशिष्ठशापमृत-निमिदेहमथनाद् यः कुमारः सञ्जातः स 'आत्मा वै जायते' एतेन पुनर्जन्मग्रहणाज्जनकः, निष्प्राणदेहमथनजनिताद् विदेहजो वैदेहो विदेहो वा, मिथिः-मथनं तल्लानेनादानेन प्रकटितो मिथिलस्तेन मिथिलेन कुमारेण राजपदारूढेन संघटिता नगरी मिथिलेति विख्याता-

जन्मना जनकः सोऽभूद् वैदहस्तु विदेहजः ।
मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता ।।

निमिरिक्ष्वाकुतनयः, अव्ययो योगो भगवता विवस्वते, तेन मनवे, तेन चेक्ष्वाकवे प्रोक्तः।[6] वंशो द्विधा-जन्मना विद्यया चेति । विवस्वान्-मनुः-इक्ष्वाकुः एतेषां जन्मना विद्यया च पितृगुरुपरम्परा । अत्र विवस्वत्कुले पुरोहितो

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वशिष्ठः । तत्रेक्ष्वाकुतनयस्य निभेः वशिष्ठशापवृत्तान्तो मिथिलामैथिलीसमुत्पत्तिबीजम्। अन्यथा विवस्वद्वंशोद्भवस्य श्रीरामस्य तद्वंशानुगतदेहजातया कन्यया कथं विवाहः ? अतो निष्प्राणनिमिदेहमथनाद् विदेहोत्पत्तिस्तथा विदेहजनकपालितायाः धरणीगर्भसमुद्गतायाः सीताया विवस्वद्वंशोद्भवेन श्रीरामेण विवाहौचित्यं लोकशास्त्रमर्यादितम् । अहो मिथिलायाः मैथिलत्वम्-पालकस्य सीरध्वजस्य पूर्वजो विदेहः, पालितायाः कन्यायाः माता च धरणी विदेही । एवं निमितनयो विदेहादुत्यपन्नो वैदेहो, विदेहो, जनको, मिथिलश्चेति नाम्ना ख्यातः, ततस्तद्वंशजाः सर्वे विदेहजनकेति पदैर्विख्याता मैथिलाः।[7] अतः सीरध्वजोऽपि विदेहो जनकश्चेति–

.....यज्ञार्थं कर्षतो महीम् ।
सीता सीराग्रतो जाता तस्मात् सीरध्वजः स्मृतः।।[8]

एतेन विदेहात् सीरध्वजादुत्पादिता पालिता च सीतानाम्नी कन्या नैव वैदेही, किन्तु महीजातत्वादयोनिजा सा वैदेहीति। एतत्सर्वं मिथिलायाः लोकोत्तरत्वम् ।

साधनभूमिरन्याऽसौ सिद्धानां साध्यभूमिका–
व्यवहारविशुद्ध्यर्थं प्रतिभासविभज्जने ।
परमार्थप्रकाशाय विद्या लोकस्य सिद्धिदा ।।
योगक्षेमकरी विद्या श्रेयःप्रीतिविधायिनी ।
जननीव प्रभुस्तातः प्रसूते शास्ति रक्षति ।।
मानवजीवनोद्देश्यं पुरुषार्थचतुष्टयम् ।
× × × ×
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिर्यथाक्रमम् ।
मोक्षं धर्मं तथा काममर्थं योजयते जने ।।[9]

धार्थकाममोक्षाश्चत्वारः पुरुषार्थाः । स्वधर्मपालनादर्थप्राप्तिरर्थेन कामोपभोगः कामे चोपभुक्ते निष्कामस्य चित्तशुद्धिः, शुद्धे चित्ते स्वरूपदर्शनादात्मनिष्ठा, सैव विदेहमुक्तिर्जीवन्मुक्तिः । वस्तुतो धर्मो मोक्षसाधनं न चार्थसाधनम्। एवमर्थो धर्मसाधनं न तु कामसाधनं, कामलाभो नेन्द्रियप्रीतिरपितु जीवनरक्षा, जीवनोद्देश्यञ्च तत्त्वजिज्ञासा, तत्त्वञ्चाद्वयज्ञानम् । तद् ज्ञानिनो ब्रह्म, कर्मयोगिनः परमात्मा, भक्तस्य भगवानिति[10] एवं धर्मादयो मोक्षसाधनं साध्यो मोक्षः, स एव परमपुरुषार्थः । तत्र मिथिला धर्मनिर्णयः- *धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतःइति* वचनात् । रामचरितमानसे समागतानां नगरीणां मध्ये धर्मप्रतिनिधिभूता-अयोध्या, किष्किन्धालङ्कयोः कामार्थाभ्यां यथा तथा योजना, किन्तु मिथिला-मोक्षस्थानीया । एतेन मिथिला मानसी मुक्तिरिति । योगेश्वर-प्रसादान्मैथिलास्तथाऽऽत्मविद्याविशारदा, येन गृहे (देहे) वर्तन्तोऽपि ते द्वन्द्वातीता जीवन्मुक्ता विदेहमुक्ताः प्रोक्ताः । तत्र योगेश्वराः- याज्ञवल्क्यादयः।[11] तथा *कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः*[12] इत्यादिभिः श्रुतिस्मृतिपुराणगीताप्रकीर्तितो योगेन योगेश्वरेण च मिथिलामैथिलानां सिद्धसम्बन्धः ।

अत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यभाविष्कृतम्[13] *अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते*-अविद्या-कर्म, *नहि श्चित् क्षण पि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्*। कर्मबन्धप्रहानिरेव[14] मोक्षः युक्त्या कृतं कर्म नहि बन्धाय। *योगः कर्मसु कौशलम्*[15] ततः कर्मयोगी स्वकर्मफलं संसाराय त्यजति, अनासक्तियोगेन, ज्ञानयोगी प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि[16] कृतकर्मफलं प्रकृतौ जहाति, आत्मनिष्ठया, भक्तियोगी प्रेमभावफलं भगवते चार्पयति तत्सुखसुखित्वानुरत्या । एवं योगबलात् कर्मलोके ज्ञानविरागभक्तिभिः संन्यासेन (कर्मफलत्यागेन) नैष्कर्म्यसिद्धिः-*नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति।*[17] एवमादि भागवतानुरोधान्मिथिला- प्रसङ्गतोऽवधेयम् ।

गुरूणां मिथिला गुरुः–महर्षिर्व्यासः स्वपुत्रमधीतभागवतमपि शुकमशान्तं गृहाद् विरक्तं गृहे योजयितुकामः कर्मयोगिनो मिथिलाधिपतेर्जनकान्नैष्कर्म्यसिद्धिप्राप्त्यै तदुपदेशग्रहणाय मिथिलां विसर्जयति

गच्छ त्वं मिथिलां पुत्र पालितां जनकेन ह ।
स ते मोहं महाभाग नाशयिष्यति भूपतिः ।
जनको नाम धर्मात्मा विदेहः सत्यसागरः ।[18]

देवीभागवते शुकस्य मिथिलागमनवृत्तान्तस्तत्र तस्य प्रतिहारिणा संवादश्चान्ते मिथिलाधिपतेर्जनकात् तर्ककुतर्कपूर्वकं सदुपदेशतोषो बहु विस्तरेण वर्णितः । जनकोपदेशात्प्रीतमनाः पुनस्तं गुरुमापृच्छ्य व्यासाश्रममाजगाम। श्रीजनकोपदेशसारः–

न बद्धोऽस्मीति बुद्ध्याहं सर्वदैव सुखी मुने ।
त्वं तु दुःखी सदैवासि बद्धोऽहमिति शङ्कया ।
देहोऽयं मम बन्धोऽस्ति न ममेति च मुक्तता ।[19]

एवं महाभागवतः श्रीशुको मिथिलाधिपतेः कर्मयोगिनो गृहस्थस्य जनकस्योपदेशात् प्रीणाति । वस्तुतः शुकस्य प्रीणने मिथिलाभ्रमणं तत्रातिथ्योपभोगो विदेहाचारदर्शनञ्च मुख्यं कारणम् । एवं मिथिलायाः कर्मयोगिनः सकाशाद् ज्ञानप्राप्तिः ।

अवधूतदत्तात्रेयस्य चतुर्विंशतिर्गुरवो भागवते संख्याताः।[20] तत्र मिथिलावासिनी पिङ्गलाऽप्येको गुरुः । पिङ्गला-

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वेश्याख्यानमतीव रुचिकरं शिक्षणं भागवते निरूपितम्।[21] यथा सा कान्ताशां संछिद्य सुखं सुष्वाप, ततः परमं दुःखमाशा, परमं सुखं नैराश्यमिति निश्चित्य तच्छिक्षणं मत्वाऽवधूतस्तां पिङ्गलां गुरुं स्वीचकार, यथा परमसुखनैराश्यस्योप शिक्षणमवधूतस्य पिङ्गलासकाशात्तथा पिङ्गलाया नैराश्योद्गमः कथं जात इति तद्गीतेनैव स्पुटम्- *विदेहानां पुरं ह्यस्मिन्नहमेकैव मूढ धीरिति।*अत्र विदेहानां कर्मफलानासक्तचेतसामसङ्गिनां कर्मयोगिनां देहिनामस्मिन् पुरे-शरीरे[22] जीवात्माऽहं कथं मूढधीः- आशाव्यासक्तमतिः? एवं विदेहपुराधिष्ठानप्रभावादेव मूढधियो नैराश्योद्गमविरागशिक्षणम्। तथाऽवतारिणः परमसंन्यासिनः परमाचार्यस्य दत्तात्रेयस्यावधूतस्य गुरुक्षेत्रं विदेहपुरं मिथिला।

श्रुतदेवमयी भक्तिर्मिथिला कृष्णयात्रिणी-कर्मयोगो वैराग्योदयश्चातीव दुष्करौ सामान्यजनानाम्। अतो यथा भक्तियोगः सर्वजनसुलभस्तथा तस्यापि निधिक्षेत्रं कथं मिथिलेत्यत्र भागवतप्रमाणम्–भक्ता भगवन्तं भजन्ति तथा कांश्चित् भक्तान् भगवानपि भजति, तेषु कर्मयोगी विदेहराजो भक्तः श्रुतदेवनामा मैथिलविप्रश्च। यस्य भजनात् भगवतोऽपूर्व नाम जातं–*भगवान् भक्तभक्तिमान्।*[23]।

श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायां कंसकारावासे, ततो वसुदेवः कंसभयाद् गोकुले नन्दगृहे बालं निनाय, नानोपद्रवैर्भीता नन्दादयो गोपा रामकृष्णौ नीत्वा वृन्दावने वासं चक्रुः। कंसप्रेरितोऽक्रूरः कृष्णरामौ मथुरामानयति। तत्र कंसं हत्वा रामकृष्णौ विद्याग्रहणायावन्तीपुरं गच्छतः। गुरुदक्षिणायां गुरोर्नष्टबालं संयमनीपुरादानीय तस्मै दत्वा मथुरामामतौ। जरासन्धभयात् समुद्रमध्ये द्वारकापुरीं निर्माय तत्र यादवान् योगप्रभावेण कृष्णो निनाय। रुक्मिणीसंदेशमवाप्य विदर्भनगरीं गत्वा तां जहार। कदाचित् पाण्डवान् द्रष्टुमिन्द्रप्रस्थं गच्छति। भौमासुरवधाय प्राग्ज्योतिषपुरं जगाम। कदाचित सत्यभामासहितः सुरेन्द्रभवनं जगाम। अनिरुद्धमोचनाय शोणितपुरं जगाम। पौण्ड्रकवधाय काशीं जगाम। कदाचित भीमार्जुनसहितः कृष्णो जरासन्धवधप्रसङ्गे मगधं जगाम। सूर्योपरागावसरे यादवैः सह कृष्णः कुरुक्षेत्रं गच्छति। मृतान् देवकीपुत्रान् चानेतुं सुतललोकं गच्छति। मृतान् विप्रपुत्रान् चानेतुं पार्थ लोकालोकमतीत्य देवदेवं भूमानं नयति। एवं लौकिकालौकिकप्रयोजनैः श्रीकृष्णो नानास्थलं नानानगरं जगाम। उत्तमश्लोकं श्रीकृष्णं द्रष्टुं देवर्षिर्नारदो विद्यासखा सुदामा स्वयं द्वारवतीमाजगाम। एकदा विदेहान् द्रष्टुं बलरामश्चैकाकी मिथिलां जगाम।[24] किन्तु भागवतस्य निरोधाख्ये कृष्णचरितनाममहाकाव्याभिधायिनि[25] दशमस्कन्धे सविशेषतोऽध्यायविशेषे भक्तानुकम्पिनः कृष्णस्य मिथिलागमनाख्यानं निहितं महाकविना व्यासेन, महाभागवतेन श्रीशुकेन परीक्षित्कर्णकुहरे चार्पितम्।[26] तत्र गृहस्थं स्वभक्तं श्रुतदेवं च मिथिलाधिपतिं बहुलाश्वनामानं विदेहराजं स्वदर्शनेनानुगृहीतुं स्वयं मुनिभिः साकं मिथिलानगरीं जगाम श्रीकृष्णः। उभयो राजविप्रयोः प्रियचिकीर्षयाऽलक्षितो गेहमाविशत्। राजगृहे राज्ञा सत्कृतः कतिचिद् दिनानि न्यवसत्। श्रुतदेवो विप्रः स्वगृहप्राप्तमच्युतं विलोक्य प्रमुदा वासो धुन्वन्ननर्त। यथाऽद्वैततत्त्वस्य श्रीकृष्णस्य राजविप्रयोर्भेदबुद्धिर्नास्ति तथा मिथिलायां भक्तियोगाधिकारितायां राजप्रजयोर्धनिकनिर्धनयोर्भिन्नता नास्ति। एवं स मैथिलः श्रुतदेवो द्विजोत्तमैः सहितं श्रीकृष्णमेकात्मभावेनाराध्य सद्गतिमाप।

भागवतमध्ये श्रीकृष्णस्य मिथिलागमनेऽस्ति महद्बीजम्। श्रीकृष्णसन्देशहारकमुद्धवं गोप्य ऊचुः–*परं सौख्यं हि नैराश्य स्वैरिण्यप्याह पिङ्गला*।[27] पिङ्गला–मिथिलाप्रजा। पञ्चमपुरुषार्थप्रेमपथनिरूढा गोपीः प्रति सन्देशे यां पिङ्गलामुदाहरन्ति, तस्या वासस्थानं मिथिलानगरमवश्यं निरीक्षणीयमिति कृत्वा प्रेमपथः प्रेष्ठः प्रेमास्पदः श्रीकृष्णः श्रुतदेवानुग्रहव्याजेन मिथिलायात्रां तत्र कतिपयदिनानि च वासञ्चकार–*उवास कुर्वन् कल्याणं मिथिलानरयोषितामिति*। एवं स्वभक्तयोः सन्मार्गादेशव्याजेन मैथिलयोर्भक्त्या–*ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्*[28] इति स्ववचनानुसारं भक्तभक्तिमत्पदवीं लब्ध्वा द्वारवतीं प्रत्याजगाम भगवान्। ततो मिथिलाया भगवतोऽपि भक्तियोगोपलब्धिः। इयमस्ति 'भागवती मिथिलामितिः'।

परमपूज्यानां मैथिलविदुषां श्रीगोविन्द बाबू महाभागानामभिनन्दने प्रस्तुतनिबन्धकर्ता प्रस्तुतपण्डितानां चिरायुष्यकामनया देवदेवं पुरुषोत्तमं गोविन्दं प्रार्थयन् प्रस्तौति–

योगाग्निशुद्धवैदेही पुराणी मिथिलाश्रुतिः।
मिथिला मानसी मुक्तिर्मिथिला धर्मनिर्णयः॥
साधनभूमिरन्याऽसौ सिद्धानां साध्यभूमिका।
श्रुतदेवमयी भक्तिर्मिथिला कृष्णयात्रिणी॥
श्रीकृष्णशुकदत्तानां देवविदेहपिङ्गलाः।
भक्तिज्ञानविरागाणां गुरूणां मिथिला गुरुः॥
मिथिलामैथिलान् वन्दे दूरतोऽप्यविदूरतः।
ये मैथिलीमुपासन्ते भाषासाहित्यगुम्फनात्॥

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

संदर्भ-निर्देशः

1. भागवतम् 5.10.8
2. तदेव 5.10.10
3. भगवद्गीता 5.10
4. भागवतम् 9.13.1-18
5. तदेव 9.13.13
6. भगवद्गीता 4.1
7. देवीभागवतम् 1.9.18.20
8. भागवतम् 9.13.18
9. पञ्चमीसाहित्यविद्या 12.13,46-47
10. भागवतम् 9.13.18
11. भागवते श्रीधरी 9.13.26
12. भगवद् गीता 3.20
13. भागवतम् 12.13.18
14. भगवद् गीता 3.5
15. तदेव 2.50
16. तदेव 3.26
17. तदेव 18.49
18. देवीभागवतम् 1.6, 45-46
19. तदेव 1.19, 33-35
20. भागवतम् 11.7, 33-35
21. तदेव 11.8, 22-44
22. भगवद् गीता 5.13
23. भागवतम् 10.86.49
24. तदेव 10.57.24
25. तदेव 10.1.14
26. तदेव 10.46.13-59
27. तदेव 10.47.47
28. भगवद् गीता 4.11

महाकविमङ्खकदृष्ट्या कवेस्तत्काव्यस्य च स्वरूप-विमर्शः

□ डा. श्री राम किशोरे झा

प्राय एतदवलोक्यतेऽस्माभिर्यद् विविधैरालङ्कारिकाचार्य वर्यैस्स्वकीयेषु लक्षणग्रन्थेषु काव्यनिर्माणस्य मानदण्डभूताः सिद्धान्ताः सूक्ष्मतया विवेचिताः, ये खलु साहित्य-जगति विविध-सम्प्रदायत्वेन प्रथिताः बभूवुः । किन्तु लक्ष्यग्रन्थेष्वपि काव्यसम्बन्धिनोऽनुभवसिद्धाः सिद्धान्ताः पल्लवितास्सन्तस्साहित्यजगति युक्तिसिद्धतया मान्यतां भजन्ते इति नाविदितं मतिमतां सुधियाम् ।

तत्परम्परायां द्वादशशताब्द्यां लब्धजन्मनो महाकवेर्मङ्खकस्य 'श्रीकण्ठचरिता'ख्ये महाकाव्ये काव्योपकरणभूताः प्रायशस्सर्वे सिद्धान्ताः सुललितायां सर्वजनसंवेद्यशैल्यामत्र सुजन-दुर्जनवर्णननाम्नि द्वितीये सर्गे पञ्चविंशतितमे सर्गे च सुविशदं वर्णितास्सन्ति। नैतावत्येवापि तु काव्यरचनायां प्रवृत्तैः कविभिः कीदृशैर्भाव्यम्? समालोचनायाः प्रकारः कतिविधः ? कवेस्तत्काव्यस्य च किं स्वरूपम् ? काव्यस्य किं कारणम् ? किं प्रयोजनम् ? किञ्च तन्महत्त्वमित्यादयः काव्यौपयिकास्सर्वे विषया अत्र सुनिपुणं सुविशदञ्च निरूपिताः सन्ति । पूर्वोक्तेषु कविकर्मसम्बद्धेषु विविधविषयेष्वत्र स्थालीपुलाकन्यायेन महाकवेर्मङ्खकस्य दृष्ट्या कवेस्तत्काव्यस्य च स्वरूपविमर्शस्तावत् प्रस्तूयते ।

कवेः स्वरूपम् –

कविमधिकृत्य सर्वप्रथमं महाकविमङ्खकोऽभिधत्ते–

परश्लोकांस्तोकाननुदिवसमभ्यस्य ननु ये
चतुष्पादीं कुर्युर्वहव इह ते सन्ति कवयः ।
अविच्छिन्नोद्गच्छज्जलधिलहरीरीतिसुहृदः
सुहृद्या वैशद्यं दधति किल केषाञ्चन गिरः।।

अर्थात् अपरेषां महाकवीनां पद्यान्यनुदिनं यथाकथञ्चिद भ्यस्य चतुर्भिश्चरणैर्युक्तानां कतिपयपद्यानां निर्मातारः कवयस्तु बहवः वर्तन्ते जगतीतलेऽस्मिन् । अभिसन्धिरयं यद् यत्नपूर्वकं मितं काव्यं कर्तुं बहवः समर्थाः ± भवन्ति किन्तु यथा अम्भोनिधिलहर्योऽनवरतं तरङ्गायमानाः समुच्छलन्ते तद्वन्निरन्तरमुद्गच्छन्त्यस्समुच्छलन्त्यश्च शृङ्गारादिरसलहर्यः कतिपयेषां विरलानामेव प्राक्तनपुण्यशालिनां प्रतिभाजुषां कवीनां काव्येषु चकासन्ते नितराम् ।

तदनन्तरं कविमधिकृत्य भूयोऽपि पद्यमेकं लिखति महाकविरयम्

मधुकणमुचो वाचो विसारि रसं कम-
प्युरुतरपरीपाकोद्रेका पिका इव बिभ्रति ।
त इह कवयो मन्ये नान्ये पुनर्दुरतिक्रम-
क्रमकठिनतायोगाद्येषां विमुह्यति शेमुषी ।।[2]

तदयमाशयः–येषां वाणी कविकर्मणि कोकिलानामिव

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मधु स्रावयन्ती कमपि लोकोत्तराह्लादजनकं शृङ्गारादिकं रसमभिव्यञ्जयति, वस्तुतस्त एव कवयः। मधुतरेतरवाचस्तु कवयो न भवन्तीति महाकविर्मङ्खकोऽभिप्रैति । विषयममुमधिकृत्य पुनश्च पद्यमेकं महाकविरयं प्रस्तौतिः-

निष्पीडिता बहुमुखं सुवते बहूनां
गावश्चिरान्मितसुभाषितदुग्धधाराः ।
कश्चित्त्वगाधरसशुद्धनवप्रबन्ध-
क्षीरोददानपतिरेति कवीश्वरत्वम् ।।[3]

तदयमभिसन्धिः—साधारणकवीनां काव्य-गावोऽत्यधिकं निष्पीडितास्सत्यः स्वल्पमेव सुभाषितदुग्धं स्रावति । परन्त्वायासं विनैव क्षीरसमुद्रसदृशममन्दानन्दसन्दोहजनकैः साहित्यसुधासलिलसम्पातक्षमैर्नवप्रबन्धनिर्माणजनितैर्यशोराशिभिः कश्चिद् विरल एव कविः कवीश्वरत्वम। विषयेऽस्मिन् एतन्महाकाव्यस्य टीकामारचयता द्वितीयराजतरङ्गिणीकारेण श्रीमता राजानकजोनराजेन विदुषा सुस्पष्टीकृतं यत् पद्यमात्रकर्त्तारस्तु कवयः बहवः सन्ति, प्रबन्धकर्त्ता तु दुर्लभ इत्यादिना ।

राजानकजोनराजस्य प्रकृतव्याख्यायां पद्यमात्रकर्त्ता प्रबन्धकर्त्तेति पदद्वयं पारिभाषिकमिवात्र प्रतिभाति । तदयम्भावः—काव्यस्य नीरसत्वाद् अमौलिकत्वाद् विच्छिन्नत्वाच्चात्र तत्कवेः पद्यमात्रकर्तृत्वं साधारणकवित्वमभिप्रेतम्। तथा च काव्यस्य सरसत्वान्मौलिकत्वादविच्छिन्नत्वाच्च तत्कवेः प्रबन्धकर्तृत्वमिति सुतरां स्पष्टम्। तच्च प्रकारान्तरेणैवं कथयितुं शक्यते यद् ये खलु कवयः सर्वथा परकविभिरुल्लिखितमर्थजातमनुसृत्य तच्छब्दानवचित्य च काव्यरचनायां प्रवर्तन्ते, तेषां काव्यम् अलौलिकं, नीरसं विच्छिन्नं च जायते । अत एव तादृशाः कवयः महाकविमङ्खकदृष्ट्या कवेः सामान्यकोटावाटीकन्ते। किन्तु ये खलु अनुदिनं स्वकीयप्रतिभाधनं संवर्द्धयन्तः मौलिकं, सरसम् अविच्छिन्नं च प्रबन्धकाव्यं निर्माय अविनश्वरीमक्षुण्णां च प्रतिष्ठामर्जयन्ति त एव कवयः कवेः असाधारणकोटवाटीकन्ते । तद्रचितेनैव प्रबन्धसेतुना परवर्तिनोऽपि बहवः कवयः सारस्वतस्रोतांसि निःशङ्कं तरन्ति। एतादृशा एव कवयः महाकविपदभाजो भवन्ति, ये खलु कांश्चिदन्यान् कवीन् नानुसरन्ति अपितु वाग्देवतायाः गहने मन्दिरे प्रवेशाय स्वयमेव वर्त्म कर्षन्तोग्रेसराः भवन्ति । तथा च मानदण्डभूतं रसभावगर्भितं काव्यरत्नं निर्माय सारस्वतं शाश्वतं यशश्चयं विन्दन्ति । पुनरितरे साधारणकवयश्च तानेवानुसरन्ति । तत्पद्यं यथा—

सर्वः सञ्चरते यथा परकविग्रामस्य कश्चित्तु स
श्लाध्यः स्वप्रतिभाधनस्य महतः प्रकान्तदिव्यव्ययः।
यद्विश्राणितनव्यवाङ्मयबृहत्सेतुप्रतिष्ठाजुषो
विश्रम्भाद् बहवस्तरन्ति गहने सारस्वतस्रोतसि ।।

एतादृशां कविचक्रवर्तिनामिच्छामात्रेणैव सैन्यस्थानीया आज्ञाकारिणः वाच्य-वाचकमयाः शब्दार्थास्तदग्रे कैङ्कर्यं भजन्ते। यतो हि लोकेऽपि प्रायोऽवलोक्यते यत् चक्रवर्तिनो राज्ञः सङ्केतमात्रेणैव तत्सैनिकाः युद्धाय त्वरितमायान्ति । अत्र रसानुकूलाः सुललिताः शब्दार्थाः कविचक्रवर्तिनां सैन्यस्थानीयाः, काव्यनिर्माणजनितधवलकीर्त्तयश्च तेषां श्वेतच्छत्रस्थानीयाः परिकल्पिताः सन्ति । एतादृशाः सरसकाव्यनिर्मातारः महाकवयः सुतरां स्तुत्याः श्लाघनीयाश्चेति महाकवेर्मङ्खकस्याभिसन्धिः । तत्पद्यं यथा—

शब्दार्थानां परिषदखिला नित्यमाज्ञाविधेया
दास्यं यस्य श्रयति पुरतो भ्रूलतास्पन्दनेन ।
स श्लाघ्यश्रीर्जयति कथितश्चक्रवर्ती कवीनां
श्वेतच्छत्रच्छविरुपचिता किं च तस्यैव कीर्तिः।।[5]

अन्यच्चः—

अभ्रङ्कषोन्मिषितकीर्त्तिसितातपत्रः
स्तुत्यः स एव कविमण्डल-चक्रवर्ती ।
यस्येच्छयैव पुरतः स्वयमुज्जिहीते
द्राग् वाच्य-वाचकमयः पृतनानिवेशः ।।[6]

रसध्वनेः सर्वथा समर्थकोऽयं महाकविः सरसकाव्यप्रणयनस्य हेतुं निर्दिशन् वाग्देवतायाः प्रसाद एव काव्यस्फूर्तेर्मूलमित्यन्वय-व्यतिरेकाभ्याम् अधस्तनेन पद्यद्वयेन विशादीकुर्वन् कवेः कोटिद्वयमपि निर्धारयति । तद्यथाः—

बद्धोद्यमापि सतृणाभ्यवहारि वृत्तौ
धन्यस्य कस्यचन हन्त ! वशंवदा गौः ।
सूते तमद्भुतरसं बहुधा सुधाया
योऽन्यः प्रकार इव विश्वमिदं पुनीते ।।

अन्यच्च—

ये नो पदस्थितिजुषः कवयः कथञ्चि
न्नार्थप्रथाप्रणयिनः प्रतिभा-दरिद्राः ।
काव्यग्रहेण किमरोचकिनोऽपि तेऽन्य-
दल्पीयसो मितरसाच्च बताप्नुवन्ति ।।[8]

एतत्पद्यद्वयविवेचनार्थमत्र प्रथमं तावदन्वयव्यतिरेकयोः स्वरूपं प्रस्तूयते—'तत्सत्वे तत्सत्ता इत्यन्वयः। तदभावे तदभाव इति व्यतिरेकः।

एवमेव वाग्देवता-प्रसादसत्वे यत्किञ्चिल्लिखति कविस्तदेव काव्यं जायत इति पारिभाषिकेण सतृणाभ्यवहारिपदेनाभिप्रैति महाकविर्मङ्खकः । अपि च

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

वाग्देवताया: प्रसादाभावे प्रयत्नविशेषकृतमपि काव्यं रसं न जनयति अतएव मानार्हं न भवतीत्यपि पारिभाषिकेणैवारोचकिन इति कविविशेषणेनेहाभिप्रेतं वरीवर्ति।

तदयमाशय:–सतृणमभ्यवहरति अत्तीति सतृणाभ्यवहारी । अथात् यथा हि खाद्याखाद्यविवेकशून्या तृणसामान्याशिनी वशवर्तिनी गौ: कस्यचिद् धन्यस्य जनस्य भवति, या हि गौ: अविचिकित्सं सर्वं शस्यजातमत्ति, अमृतोपमं पुष्कलं दुग्धं च प्रस्रवति, जगदिदं पुनाति परिपुष्णाति च । तथैव तत्तन्निखिलवाङ्मयवर्तिशब्दसामान्येषु शब्दविशेषेषु च विहिताधिकारात्लब्धनैपुण्यस्य सुन्दरतमशब्दगुम्फनप्रवीणस्य कस्यचिद् धन्यस्य कवे: सतृणाभ्यवहारिणी गौरिव वशवर्तिनी वाणी भवति, या हि अमृतस्यापर: प्रकार इव ब्रह्मानन्द सहोदरं शृङ्गारादिकमद्भुततरं रसं स्रवति जगदिदं पवित्रयति च । अस्तु ।

पूर्वोक्तेऽन्यस्मिन् पद्ये महाकविना **'अरोचकिन्'** इति कविविशेषणस्य निवेश: कृत: । तदयमभिसन्धि:–ये खलु कवय: सुप्तिङ्रूपाणां पदानामवस्थानमपि न जानन्ति, न वा वाच्य-लक्ष्य-व्यङ्ग्यादिकेभ्योऽर्थविशेषेभ्यस्सुपरिचिता: भवन्ति, तथाविधप्रज्ञाहीना: शास्त्रज्ञानविमुखा अरोचकिन: कवयोऽविवेकपूर्वकं कविकर्मणि प्रवर्तन्ते तथा च स्वकाव्ये स्वल्पमेव सुभाषितरसमभिव्यञ्जयति। ताभ्यामन्वय-व्यतिरेकाभ्यां सरस्वती-प्रसाद एव काव्यस्फुरणमूलमिति महाकविनानेन प्रतिपादितम् ।

तदनन्तरं काव्यस्वरूपं विवेचयताऽनेन महाकविना पद्यमिदं व्यलेखि–

अर्थोऽस्ति चेन्न पदशुद्धिरथास्ति सापि
नो रीतिरस्ति यदि सा घटना कुतस्त्या ।
साप्यस्ति चेन्न नववक्रगतिस्तदेतद्
व्यर्थं विना रसमहो गहनं कवित्वम् ।।[9]

तदयं सारांश:–यत्र काव्ये यथाकथञ्चित् ललितार्थस्य प्रतीतावपि पदसंस्कारो व्याकरणदृष्ट्या तन्निर्दुष्टत्वं नास्ति तत्काव्यं मानार्हं सर्वजनसमादृतं न भवति । एवं यत्रार्थलालित्यं पदसंस्कारश्चास्ति किन्त्वालङ्कारिकाचार्यवर्यैर्निर्धारिताया: पदसंघटनानुकूलाया: रीते: अभाव:, तदपि काव्यं न शोभते। फलत: यत्रार्थलालित्यं काव्यदोषाभाव:, पदसंस्कारादि:, रीतेर्नियमानुरूपो वक्रोक्तिमूलको वाग्विन्यास:, रससन्निवेशश्च सुनिपुणं कविना निवेशितास्तदेव कविकर्म काव्यत्वं भजते।

महाकविना मङ्खकेन काव्यस्याङ्गिनो रसस्य महत्त्वं द्योतयताऽत:पर समुपवर्णितम्–

तैस्तैरलङ्कृतिशतैरवतंसितोऽपि
रूढो महत्यपि पदे धृतसौष्ठवोऽपि ।
नूनं विना घनरसप्रसराभिषेकं
काव्याधिराजपदमर्हति न प्रबन्ध: ।।[10]

तदयं पिण्डितार्थ:–उपमादिभिरलङ्कारशतैर्भूषितोऽपि साडम्बरै: शब्दगुम्फनैर्युक्तोऽपि कश्चित् प्रबन्ध: शृङ्गाराद्यनवरतसुधा-सलिलाभिषेकं विना काव्येषु मूर्धाभिषिक्तं पदं नाधिरोढुं शक्नोति । यथा हि हाराद्यलङ्कारशतैर्भूषितोऽपि सिंहासनाधिरोहाधिकारसम्पन्नोऽपि कश्चिद् राजकुमारो राज्याभिषेकं विना नृपत्वं न लभते, तथैव सरसमेव काव्य महाकाव्यम् । एतादृश-सरसकाव्यनिर्माणं सरस्वती-प्रसाद विना प्रयत्नाल्लब्धव्युत्पत्तिभि: कविभिरपि सर्वथा दुष्करमेव।

निष्कर्षतयैतत्कथयितुं शक्यते यन्महावेर्मङ्खकस्य मतेन अतिगम्भीर-पदसंरचनाभि: सहृदयसामाजिकाननुरञ्जचितुं न प्रभवति कोऽपि कवि: । यत: केवल: शब्दाडम्बरोऽङ्गिनो रसस्य व्याघातको भवति । फलतस्त्काव्यं वैरस्यमातनुते । काव्येषु ओजो-माधुर्य-प्रसादाख्या: काव्यगुणा: उपमादयोऽलङ्कारा: वैदर्भीप्रभृतयोऽनुकूला: रीतयश्चापि नितरामपेक्ष्यन्ते । यतो रसाख्यं काव्यात्मतत्त्वं तत्तदुपायभूतैरवान्तरैस्तत्त्वै: परिपुष्टं सत् सहृदयसामाजिकान् रसास्वादकाले विगलितवेद्यान्तरान् विधाय अमन्दानन्दसन्दोहे तानुन्मज्जयति सर्वाकारं निमज्जयति च । किं बहुना योगजप्रत्यक्ष इव तच्चेतस्सु कमप्यनिर्वचनीयं ब्रह्मास्वादजन्यं तोषमाविष्कुरुते । तत्पद्यं यथा–

आटोपेन पटीयसी यदपि सा वाणी कवेरामुखे
खेलन्ती प्रथतं तथापि कुरुते नो सन्मनोरञ्जनम्।
न स्याद्यावदमन्दसुन्दरगुणालङ्कारझङ्कारित:
स प्रस्यन्दिलसद्रसायनरसासारानुसारी रस: ।।

तस्मात् कविकर्मणि दोषाभाव:, गुणाधानं, रीतिनिवेशोऽलङ्कारादिनियोजनमङ्गिनो रसस्य च नैरन्तर्येणावस्थानं नितरामपेक्षितं भवतीति महाकवेर्मङ्ख कस्याभिसन्धि: ।

[अखिलभारतीयप्राच्यविद्यासम्मेलनस्य रोहतक अधिवेशने पण्डितपरिषदि पठितोऽयं निबन्ध: ।]

ग्रन्थ-सन्दर्भ:

1. श्रीकण्ठचरितम्, 2. 51.
2. तदेव, 2. 50.
3. तदेव, 2. 40.
4. तदेव, 2. 43.
5. तदेव, 2. 55.
6. तदेव, 2. 39.
7. तदेव, 2. 28.
8. तदेव, 2. 29.
9. तदेव, 2. 32.
10. तदेव, 2. 49.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

My concern for art

❑ Dr. K. Shiva Ram Karanth.

As a boy I was interested myself in theatre arts. This impetus in my early life was due to the impact I had from local village open-air plays like *Yakshagana* and travelling theatrical companies during my boyhood i. e., during the 2nd decade of this century. They were of two different types – one local theatrical form was a type of dance - drama conducted by a musician narrator *Bhagavath*. It was an open-air all night play. The themes were written down songs, sung in a musical style called '*Yakshagana*' (It was old time *Gandharagramas* as different from *Madhyamagrama* and *Shatjagrama* which were later on called classical Hindustani and karnataki misic forms). The themes were from *Bhagavatha, Mahabharatha* and *Ramayana*. They were written-down song-plays, in a high-pitched style called *Yakshagana*. The characters were divinities like Rama, Krishna, Shiva, Parashurama etc. as opposed to demons like Ravana, Surpanakha etc. These characters were depicted in very fanciful costumes, decor, make-up etc. The *Bhagavath,* the director, sang them out to the accompaniment of cymbals, a long drum (maddall), drone (shruti), song after song. The actors came in colourful costumes. They danced to various phrases of the drum beats, and cymbal chimes. Language of the songs is kannada. We have nearly 200 such written-down scripts on plam-leaf, dating from 1520 A.D.

The musicians led by the *Bhagavath* introduced them to the open-air stage, lit by oilfed lamps. They danced and at times carried on dialogue (extempore) in prose. At present more than 100 plays are available in print. A good *Bhagavath* would sing one of 30 such plays at a few hours' notice. These plays were well patronised. They were free of charge to the onlookers. They were paid for by the local donors and the troupes were sponsored by a few temples of the area. We get in their text the use of 120 *ragas* or more.

These song-cum-dance-cum-prose dramas were a great attraction in the West-Coast of Karnataka. They stimulated my theatrical interest.

From the last dacades of 19th century, Karnataka had prose theatrical type Commercial drama Troupes. They had closed theatres, lit by gas lamps. The stage had modern curtains, wrings etc. The communication was, through by-heart learnt prose, interspersed with songs composed in Hindustani or Karnataki music. There were glamorous Pauranic themes too. Their theatre was a spectacular type. The characters were less gorgeous, but more realistic costumes. Pauranical themes like Prahlad, *Lanka dahana* etc. were played. Most of them were legendary. A few themes were from Shakespeare (Othello, Romeo & Juliet etc). From the early years of this century, these theatrical pertormances became very popular both in Maharastra and Karnataka. Olden day's gas lights were replaced by electric lights.

There were more than 8 travelling troupes in Karnataka. In my twenties, I used to write plays for some of the troupes also and even accompanied them as a tutor and even as a director. From those days onwards till today i. e., from 1920 till date, I have been experimenting on various aspects of drama. I had to think out what prose can do, music does and dance can depicf. So, I tried many individual media -dance, pure prose, ballet, opera, shadow play, mime, farce, burlesque etc. I have tried to know what each media can do and what it cannot do. My total experimental themes cross 100 plays of different types. Since three decades, I have devoted myself to the 'ballet' form, where language becomes less important. Dance, costume, orchestra like music takes prominence. In operas, I used full length folk music as well as classical both for tragedies, comedies and farces too. My ballets were displayed in various parts of the world like Japan, Europe, United Kingdom, U.S.S.R., U.A.E., Peru, Brazil etc. In this venture, my sole motive that concerned me very much was 'Form to Content'. Grammer of Technic ceased to attract me. *Shastra* or grammer is only a medium to me. Technical display of skill is not at all art for me.

Whatever you want to display, to your audience, you must answer the question 'what is the relevance of a chosen medium to the content, it seeks to communicate to the audience?

My genuine feeling is - the media I chose should be able to convey to an audience, my **purpose**. Then only art becomes great. The greatness of an artist, his skills and his eloquence are all secondary elements to me.

●

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Democracy in the Mahabharata

❐ Prof. Anant Lal Thakur.

Of the several systems of Government witnessed in the vast expanse of Indian history, that of benevolent autocracy has been best suited to the genius of the country. It has been guided by the best brains and has been based upon a code of conduct evolved through the age old national experience during the different phases of our culture. The *Mahābhārata* offers elaborate account of all its relevant aspects and advocates its safe adoption to the exclusion of others in the *Rājadharma* section of the *Śāntiparvan* in particular. It deals with the origin and development of kingship, its drawbacks and virtues along with popular control on it by a council of ministers with proper education and devotion to the cause of the nation.

It is to be noted that *Daṇḍanīti,* the science of Government has been eulogised as the mother of the world. It formed an important aspect of our *Dharmashāstra* upto the advent of Islam in India. It is attested by the *Dharmasaṁhitās* and *Nibandha* works. It flourished in the regions where native culture prevailed even during the Mahomedan period. The *Arthashāstra* of Kautilya occupies an outstanding position in our ancient political literature. Supposed to be the work of an Ācāyra, whose theoretical proficiency very largely contributed to the establishment and guidance of the Great Morian empire. A study of the epics, *Purāṇas, Dharmashātra* works and later digests including the *Arthashāstra* and epigraphical evidences offers invaluable materials for the reconstruction of a connected history of the science of government in India spread over several centuries.

Side by side with consitutional monarchy there existed numerous democratic goverments as is attested by the epic, the *Arthashāstra,* the *Aṣṭādhyāyī* of Pāṇini and the accounts of Alexandar's historians.

The Vedas, epics and Purāṇas had their origin under monarchies. But they praise the virtues of republics and evince sympathy at their weakness. A deep study convinces one about the mutual give-and-take between the two schools of political thought. We find Sri Krishna, a republican, espousing the cause of the monarchical Pandavas in the kuruksetra war. Similauly Mahavira and the Buddha both born and brought up in republics had very close relations with contemporary monarchies.

But a complete picture of ancient republics cannot be had today due to their gradual disappearance after the Morian age. Whatever we get, come through the supporters of monarchy. But it presents a picture of an important aspect of Indian genesis. The Vedas and the Vedic literature offer pups in the republican institutions, some of which survived and flourished till the invasion of Alexander the Great. He came across a good number of city states with republic consisting of educated war-like rich and proud citizens. They offered stiff resistance to the Macedonians whose historians eulogised their virtues.

The *Aṣṭādhyāyī* of Pāṇini mentions republic institutions called *Pūgas*, *Vrātas* and Sanghas differing from one another mainly in respect of the means of livelihood of the citizens. Among the republican states invaded by Alexander we find unions on caste basis. The Unions of the Brāhmaṇas (Brachmanoi), Kṣatriyas (Xathroi), Ambaṣṭhas (Abastanoi) and Kṣudrakas (Oxydrakoi) deserve special mention. The last one seems to predominantly consisted of the śūdras.

The *Arthaśāstra* of Kautilya, professedly a monarchical work, refers to the republics in the eleventh *Adhikaraṇa* in connection with their relation with the princes. According to Kautilya, a republic as an ally can be of much help in respect of military and economic spheres, and a prince desirous of prosperity should, therefore keep the republics on his own side through pacification (*sāma*) and gratification *(dāna)*. When antagonistic, they should be subdued by creating dissension *(bheda)* and by force *(daṇḍa)*. Kautilya mentions the republics of

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Kamboja and Surastra where people lived on agriculture and warfare. He further mentions the republics of the Licchavis, the Vajjikas, the Mallas, Madrakas, Kukuras, Kurus and Panchalas.This Kukuras were a branch of the Yadavas while the Kurus and Pancalas seem to be the successors of the two main monarchies destroyed at Kuruksetra. Kautilya's advice to the heads of the republics that they should be just in their dealings, look after the welfare of the citizens, be popular, benevolent, self restrained and in constant touch with the citizens and serve to fulfill their aspiractions.

संघमुख्यश्च संघेषु न्यायवृत्तिहितः प्रियः ।
दान्तो युक्तजनस्तिष्ठेत् सर्वचित्तानुवर्तकः ।।

The Mahabharata along with the khila Harivamsa offers highly valuable information about the republican tenets (XII. 108; critical edn.).In a conversation between Bhisma and Yudhisthira both the advantages and disadvantages of the republics have been recounted. Yudhisthira wants to know from the grand old historian how the *gaṇas* can flourish, remain united, conquer enemies and acquire allies when they are usually confronted with two great disadvantages: (i) They fell easy victim to internal dissenstion and (ii) It is very difficult for them to keep the state policies a close secret.

भेदमूलो विनाशो हि गणानामुपलक्षये ।
मन्त्रसंवरणं दुःखं बहूनामिति मे मतिः ।।

It may be noted here that these disadvantages confront the present day republics also including our own. Now let us hear what Bhismadeva has to say on these problems. He says that greed and intolerance among the citizens are the two enemies in the republican state and republican society just as those on the part of a prince in a princely state.

गणानां च कुलानां च राज्ञां भरतसत्तम ।
वैरसंदीपनावेतौ लोभामर्षौ नराधिप ।।

Greed leads to intolerance. They together bring abont financial loss and loss of life on both sides and consequently result becomes destructive on the part of both.

लोभमेको हि वृणुते ततोऽमर्षमनन्तरम् ।
तौ क्षयव्ययसंयुक्तावन्योऽन्यं च विनाशिनौ ।।

Pacification, gratification and disintegration through espionage, secret planning, use of force and grabbing of property on the part of one create loss of men, money and raises fear of the other. Thus perpetual estrangement between them becomes the inevitable result.

चारमन्त्रबलादानैः सामदानविभेदनैः ।
क्षयव्ययभयोपायैः प्रकर्षन्तीतरेतरम् ।।

Now the members of a split up *gaṇa* of which concord is the mainstay, when separated from the rest through losses, become depressed in mind and fill an easy prey to the outside enemy through fear.

तत्रादानेन भिद्यन्ते गणाः संघातवृत्तयः ।
भिन्ना विमनसः सर्वे गच्छन्त्यरिवशं भयात्।।

A discord in a *gaṇa* causes its destruction. Hence mutual concord should be accepted as their aid to prosperity.

भेदे गणा विनश्युर्हि भिन्नास्तु सुजयाः परैः ।
तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणाः सदा।।

When the *gaṇas* live in concord, they attain riches through the prowess of their united force. Outside enemies also befriend those in concord.

अर्थाश्चैवाभिगम्यन्ते संघातबलपौरुषैः ।
बाह्याश्च मैत्रीं कुर्वन्ति तेषु संघातवृत्तिषु ।।

The wise are eloquent in praise of the *gaṇa* of which the citizens respectfully hear one another's view. They attain all round happiness when bereft of deception.

ज्ञानवृद्धाः प्रशंसन्ति शुश्रूषन्तः परस्परम् ।
विनिवृत्ताभिसन्धाना सुखमेधन्ति सर्वशः ।।

The heads of the *gaṇas* (the elders) who establish just and equitable conventions according to the scriptures and zealously guard their observance attain all prosperity.The ideal democrats should restrain their sons, brothers and other relatives and should always impart proper education to them. They should entrust state responsibility to them when they become fit for the same through (moral and general) education. This contributes to their prosperity.

पुत्रान् भ्रातॄन् निगृहणन्तं विनयन्तश्च तान् सदा।
विनीतांश्च प्रगृह्णन्तो विवर्धन्ते गणोत्तमाः ।।

The *gaṇas*, the citizens of which as a whole are always attentive to matters of espionage,

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

secret counsel and those of replenishing the public exchequer attain all round prosperity.

चारमन्त्रविधानेषु कोशसन्निचयेषु च ।
नित्ययुक्ता महाबाहो वर्धन्ते सर्वतो गणाः ।।

The *gaṇas* are destined to prosper when they are always attentive honouring with employment the people who are wise, valient, of great prowess and of abiding manliness in the discharge of duties.

प्राज्ञान् शूरान् महोत्साहान् कर्मसु स्थिरपौरुषान् ।
मानयन्तः सदा युक्ता विवर्धन्ते गणा नृप ।।

People who are wealthy, brave, expert warriors and well-versed in the scriptures, protect the *gaṇas* when they become highly perplexed by serious adversities.

द्रव्यवन्तश्च शूराश्च शस्त्रज्ञाः शास्त्रपारगाः ।
कृच्छ्रास्वापत्सु संमूढान् गणान् संतारयन्ति ते ।।

Any one among anger, split, fear, punishment, dragging, imprisonment and murder instantaneously puts a *gaṇa* under the control of the enemy.

क्रोधो भेदो भयं दण्डः कर्षणं निग्रहो वधः ।
नयत्यरिवशं सद्यो गणान् भरतसत्तम ।।

Therefore, the elders should primarily be respected by the people of the republic as the worldly affairs largely depend on them.

तस्मान् मानयितव्यास्ते गणमुख्याः प्रधानतः ।
लोकयात्रा समायत्ता भूयसी तेषु पार्थिव ।।

Secret counsel and espionage are in charge of the elders and the entire body of citizens have no access to such counsel. As such the elders in a body should decide the welfare of the *gaṇa*.

मन्त्रगुप्तिः प्रधानेषु चारश्चामित्रकर्षणः।
न गणाः कृत्स्नशो मन्त्रं श्रोतुमर्हन्ति भारत।।
गणमुख्यैस्तु संभूय कार्यं गणहितं नृप: ।।

When the *gaṇa* is divided and its members are scattered here and there, its best intersets suffer and disasters make their appearance.

पृथग्गणस्य भिन्नस्य विततस्य ततोऽन्यथा ।
अर्थाः प्रत्यवसीदन्ति तथानर्था भवन्ति च ।।

When the citizens of a *Gaṇa* are split up and try to perform the state duties according to personal or group interests, the main duty of the expert democrats should be to curb them immediatley.

तेषामन्योन्यभिन्नानां स्वशक्तिमनुतिष्ठताम् ।
निग्रहः पण्डितैः कार्यः क्षिप्रमेव प्रधानतः ।।

A quarrel arising in a *gaṇa* when overlooked by the elders brings about destruction of the clan.

कुलेषु कलहा जाताः कुलवृद्धैरुपेक्षिताः।
गोत्रस्य नाशं कुर्वन्ति..... ।।

An internal fear destined to bring about dissidence should be dispelled forthwith. An external fear is of lesser consequence. The former cuts the root of the *gaṇas* in no time.

..... गणभेदस्य कारकम् ।
आभ्यन्तरं भयं रक्ष्यमसारं बाह्यतो भयम् ।।
आभ्यन्तरं भयं राजन् सद्यो मूलानि कृन्तति ।।

When sudden appearance of anger, delusion or covetousness, which are but natural, blocks usual greetings among citizens, it indicates the ensuing discomfiture.

अकस्मात् क्रोधमोहाभ्यां लोभाद्वापि स्वभावजात् ।
अन्योन्यं नाभिभाषन्ते तत् पराभवलक्षणम् ।।

The citizens are equal in respect of birth and clan, but in respect of diligence, intellect, physical charm and wordly possessions every one is different from his counterpart.

जात्या वै सदृशाः सर्वे कुलेन सदृशास्तथा ।
नचोद्योगेन बुद्ध्या वा रूपद्रव्येण वा पुनः ।।

The enemies try to destroy the *gaṇas* by creating dissensions as well as by bribery. As such concord has been pronounced the safe shelter of the *gaṇas*.

Now it is for us, the citizens of a new republic to pause for a while to think if we follow the principles enunciated long ago. Do we respect the elders? Do the elders guard the interests of the republic? Are we alive to the danger-internal and external? Have quarrels and selfishness been eradicated to an appreciable extent? Do we consider public property as a sacred trust?

In a separate chapter (XII. 82,Crit. Ed.) the Mahabharata reproduces a converastion between Narada and Sri Krishna regarding the actual state of things in the Yadava republic. Sri Krishna it should be remembered here was the mainstay of the republic with Akrura, his uncle and Ugrasena his maternal grand father representing the Vṛṣṇis and Bhojas were its executive authority. Krihsna was an ideal

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

democrat. We hear his saying:

नेच्छाम्यनाशितं द्रष्टुं कृशं मलिनमेव वा।
देहीति नाभिभाषन्तं नगर्यां निर्धनं नरम्।।

(Harivamsa, Crt. Ed. 80)

He received the highest honour as a statesman from the court of Yudhisthira at the Rajasuya sacrifice where Bhisma recounts his virtues that entitled him the highest honour.

ऋत्विग्गुरुस्तथाचार्यः स्नाताको नृपतिः प्रियः।
सर्वमेतद्धृषीकेशः.....

(M.Bh. Gita Press edn, II. 38)

This bears much significance as it comes from the patriarch who was an ardent advocate of monarchy. We may incidentally refer to Dhritarastra's advice to Yudhisthira just before the former's retirement to forest in the Āśramavāsika parvan.

गणानां भेदने योगमातिष्ठेत् सह मन्त्रिभिः।

This is but the usual attitude of the monarchists towards the *gaṇas*.

Inspite of all his virtues and services to the Yadavas Krishna has to face serious difficulties due mainly to the enmity bteween Akrura and Ugasena. Dejected Sri Krishna addresses Narada saying that state secrets of utmost significance should not be disclosed to one who is not favourably disposed. Even if he is so, he cannot know of it if he is not learned enough. Again a learned and well-disposed citizen also cannot be trusted when he is not self-possessed. "My leadership over my fellow citizens" he goes on, "is indeed slavery to them. I receive only half of my dues and have got to endure harsh criticism. My kinsmen churn and burn my heart. My own men vie with one another. They are extremely proud for their personal virtues to the neglect of others. Balarama, Gada and Pradyumna are arrogant on this account or that. I am helpless. Other Yādavas are endowed with prosperity and strength. They are not easily accessible. Their favour makes and disfavour mars any body. Akrura and Ugrasensa are the leaders of the Vriṣṇi-Bhoja confederacy. I donot side with either and each create obstacles in my way. There is no misfortune greater than having these two as allies. Again there is no greater misfortune in not having them as such. I like the mother of the two gamblers, pray for the victory of one, and safety from defeat of the other."

Now Krishna respectfully requests Narada's advice which may lead himself and his fellow citizens to prosperity. Here Narada's analysis of the problem and the remedy suggested are in agreement with the principles enunciated earlier. The only difference is that he looks at them in a particular context. He says- "Dangers to the gaṇa rule are twofold. The one comes from outside and the other springs from within. The later also may either be created by oneself or by others. The danger in question was created by Krishna himself as he himself did not assume the charge of the state after the elimination of Kamsa."

Narada goes on,"You earned the power and handed it over to others. They have now spread their roots and the republic is now known to be rules by them. They have their respective political allies. You cannot take the leadership back easily. Any attempt for this is fraught with the danger of split. This is particularly so when you yourself become a party to the dispute. Even if the end is achieved after serious exertion it will mean a serious loss and waste. It may even mean total annihilation."

The advice of Narada is therefore, "Use a soft weapon not made of any metal that penetrates the heart alone and removes the crook (read जिह्मम् for जिह्ष्याम् in the printed text) by constantant sharpening." Narada further elucidates, Distribution of food, endurance, simplicity. sweet behaviour and due reception to the worthy on the part of the leader constitute the weapon in question. Through pleasant speech pacify the bitter and unbecoming speeches, hearts and minds of those who want to abuse you.

"None but a great soul, nor but a self-possessed man having strong allies can undertake a heavy responsibility just as a high breed ox carries heavy loads on perilous roads. Discord brings about destruction of a *saṅgha*. A *sangha* refuses to accept the leadership of even a learned man if he is not intelligent, tolerant, self-possessed and philanthropic.

"The elevation of the *gaṇa* is praiseworthy and condusive to fame and long life. Hence act

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

in such a way that your own people may flourish. You know all the six expedients of dealing with the external enemy. The Yadavas and their sub-*ganas*, the Kukaras, Bhojas, Andhakas and Vriṣṇis–all are subservient to you - both the primary senators and the elders."

We thus get a not too bright picture of the inner working of the Yadava republic during their hay-days in Dvārāvatī. Their military supremacy and the sound democratic conventions receive eloquent praises from Sanjaya, the wise minister of Dhritarastra (in M.Bh. VIII. 144).

But inspite of every advantages there were some cancerous growths among the Yadavas that did not allow the republic to survive its leader. The Yadava youths became discourtious to the intelligentia. Earlier rivalry persisted in disguise and assumed a magnitude inspite of Sri Krisna's best efforts. Their addiction to drinking was proverbial. The climax was reached in a pleasure trip to Raivataka and the entire Yadava race was killed as a result of an internicine quarrel.

The Mahabharata futher mentions the republics of the Yaudheyas, Kṣudrakas, Mālavas, Vasātis, Śibis, Ambasthas, Udumbaras, Trigartas, Madras, Kekayas, Prasthalas, Utsavas, Saṃketas and the Pañchālas, But we know not much about their position except some glimpses at the last one among which a tyrant, Ugrayodha by name userping all political hight of the people.Bhīsma uprooted him and made Pratīpa the head of Pañchāla republic. This brought about a temporary peace between Kurus and Pañchālas which evaporated due to offering shelter to Drona by Bhisma in the Kaurava court and Drona was an arch enemy of Drupada, son of Pratīpa and the then leader of Pañchālas.

The ancient republics in India vanished one after the other leaving traces of democracy here and there. They were the victims of violations of the principles of democaracy. They have left for us a warning that we should not repeat the same blunders to reap the same consequences. The whole human culture has been enriched by the free thinking developed in the three republics of the Yādavas, Vajjis and the Śākyas enbodied in the Bhagavadgītā and the works of Jainism and Buddhism respectively. Will it be too much to expect that our present day republic will benefit from our own past experinces?

●

Bankimchandra Chatterji (1838-1894)

A tribute to the greatest novelist of Bengal

❐ ***Prof. Nilratan Sen.***

Bankimchandra Chattopadhyay had born at Naihati-Kanthalpara (North 24- Parganas, West Bengal), on the 26th June, 1838, and died on the 8th April, 1894, at the age of 54 years only. It is only eight years now, since we celebrated in 1988, the 150th birth annyversary of this illustrious son of Bengal, in a befitting manner. Two years back, the year 1994 has also been observed as his death-centinary year. Seminars and symposiums were organised by various cultural groups and special issues of established journals, containing precious articles have been published. In comparison with other outstanding personalities born in Bengal during the 19th century, Bankimchandra got more prominece, thanks to his literary genius, as well as, his composition of the immortal song, *Vande mātaram*; which has been chosen as one of the National songs of India, after she achived indenpedence.

It is interesting to note how one group of critics have praised him unreservedly, both for his literary genius and profound insight. Sri Aurobinda has called him *rishi* (sage), great man with the power of prophesy; Rabindranath in his commemorative tribute after his immature death acclaimed him the *sabyasāchi* writer in the arena of Bengali literature; even the famous critic, ever hard to please, Mr. Nirode C.Chaudhury (aged 98 years), following the footsteps of Mohitlal Mazumdar, his preceptor, has paid rich tribute to this illustrious son of Bengal.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

There was a time when a large section of the Muslim intelligentsia, after reading his novels, like *Ānandamath, Durgeshnandini, Mriṇālini, Debichaudhurāni, Rājsinha, Sitārām* etc., branded him as anti-Muslim, communal writer. But happily. after the birht of Bangladesh (1971), a progressive section of Muslim critics, thoroughly open-minded, are voicing a different note. They are trying to project him in right perspective, as a non-communal, noble artist on the basis of some of his unforgettable characters like, Āyeshā, Dalāni Begam, Zebunnisā, Dariyā Bibi, and Chānd Shāh Fakir, depicted in his novels, and also in the light of his historical essays, *Bangadesher krishak* (the peasants of Bengal), where the misery of Rama Kaibarta, a Hindu peasant and of Hasem Sekh, a Muslim peasant, has been graphically narrated, with no discrimination.

Bankimchandra ushered in a new era of Bengali prose literature through his novels of new technique, and essays of very high standard, He edited a Bangali monthly journal, *Bangadarśan*, which is still considered the best among magazines in Indian languages. A detailed discussion about the versatile genius of this literateur is not possible within the limit of a short article. So I would like to make brief observation only on two of his supposedly controversial views projected in his novels and other prose-writings. In our College-days, when still young, we completed reading all his novels and various other prose-writings, with an attraction for wonderful stories. I still remember having shed tears for the untimely death of Rohiṇi and Kundanandini at the prime of their age. I could not forgive the author for inflicting such unjustified and severe punishment on these hapless characters. I also felt for Debichaudhurāni, when the author sent her back to the house of Brajeswar, to live as Prafulla, a co-wife, with other 'satins'. The penance inflicted on Saibalini for her adolecent love for Pratāp had also hurt me very much. Later as I grew mature and read again these novels, I perceived a clear dichotomy in the character of Bankimchandra. It was a kind of conflict between the artist and the social reformer, in which the former had to submit to the latter. Just for the sake of social justice he inflicted capital punishment on the innocent young lovers. It also hurt me to see that the punishments were heavier on the female characters than those meted out to their male counterparts. Gobindalāl, Nagendra or Brajeswar had to suffer through self-penance, but Rohini and Kunda had to sacrifice their lives. From the very start Bankimchandra portrayed Rohiṇi as a sex-hungry, lustful young widow. In the then raging social movement of Bengal, Bankimchandra belonged to the orthodox group, while the opposite group was led by Pundit Iswarchandra Vidyasagar, a strong propogator of the remarriage of young widows, and a firm crusader against child-marriage and poligamy. Perhaps the *Brahma religious* movement of that time was also disliked by Bankimchandra. He depicted a Brahmma character Devendra in *Bishbriksha*, as a dunkard. I often wonder, why an artist like him did not think of depicting a model young widow, having full success after her remarriage; why he never thought of, in terms of drawing an ideal Brahmma character in the model of Devendranath Tagore, or of Keshavchandra Sen. It is not difficult to find out the answer. Bankimchandra from the core of his heart, believed that remarriage of a widow was injurious for the Hindu society. To him Brahmma religious movement of that time was a symbol of social perversity. But this does not detract us from the fact that Bankim was also deeply interested in the progress of wonen. The characters like Bimalā, Āyeshā, Śānti, Prafulla and Jayanti offer us ample evidences for that. Humanist Bankim knew well that the urge of youth, both among girls and boys, cannot be subdued by social repression only. But unfortunately the moralist in him got the better of him, preventing the artist so often from doing justice to his wonderful characters.

A section of literary critics has pointed out another fault of this novelist. Bankimchandra, according to their opinion, was a communal writer, he has apathy towards the Muslim community of this country. Had he not written *Ānandamath*, perhaps he would not have been so vehimently criticised as a biased Hindu writer.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

In *Ānandamaṭh*, Satyānanda, the leader of the dedicated sanatan group, declared that their primary mission was to defeat the Muslim ruiers, and re-establish the reign of Hindu kings. That mission being fulfilled they should stop fighting, and the English rulers should be allowed to rule this country for the time being. That was the sermon of the *guru* (preceptor) of Satyānanda. Apparently it would seem as an anti-Muslim attitude of the author. It also indicates that he wanted to appease the then British rulers, being a high-ranking service-holder under them. But the more serious readers should not miss the real point. His earnest desire was to re-establish the original Hindu rule, after correcting the basic weaknesses of this nation with the help of the more advanced British race. Bankimchandra wanted to dethrone the foreign Muslim rulers, the Mughals and the Pathans; but he has no apathy, whatsoever, towards the poor native Muslims. These foreign rulers, far from doing any thing for the welfare of the Indian people, rather unashamedly had imposed punitive taxes only on the Hindu subjects of this country. So the mission of the *sanātan* group of Ānandamath, was to depose the Muslim rulers, and to establish temporarily the rule of the British-raj. The same motive has also been reflected in *Debichaudhurāni*. As long as the British ruler has not taken the responsibility of th[illegible]or subjects under their domain, Debichaudhurāni and Bhawani Pathak had to use arms for their protection. That phase over, Bhawani himself surrendered to the British rulers.; and Debi transformed hereself into her original role of a domestic wife, Prafulla. A group of Bankim-admirers explained these appeasing attitude towards the British rulers, and the hatred for the Muslim rulers, as a camouflage for his patriotism. His service under the British ruiers impelled him to adopt this disguise. According to another opinion, having been thoroughly disgusted with the misrule of the Muslims, he from the core of his heart, welcomed the new British admiministration. He sincerely believed that in ideal Hindu state no discrimination would be made between the subjects of different caste and creed. In his *Vande mātaram* song, while mentioning the voice of seven crores, he infact included all the Bengalees alike, belonging to Hindu, Muslim, and all other religions. In one of his articles *Bāngālir Itihās Samparke Kayekti Kathā* (A few words on the history of Bengal) Bankimchandra mentioned that the Bengali Muslims of the peasantry class are brethren of the Hindus having had the same origin. In his another famous article, *Bangadesher Krishak* (the peasantry of Bengal), he has narrated with equal sympathy the pitiable condition of the Bengali agriculturists, both Hindus and Muslims. It also should be noted that, most of the ideal female characters of his novels belong to the Muslim families. So it is rather unkind to brand him a communalist writer.

Bankimchandra, like the elite of the then Bengali society, was highly educated (He was a graduate of the first batch passed from the calcutta University in 1858 and passed B.L. exam. In 1869, from the presidency college) rational minded and a some what proud of his national, as well as, Hindu faith. As a high ranking Civil servant, he earned reputation among the rank and file of the society. A rare combination of literary ginius and intellectualism helped form his extra-ordinary character, which has been amply reflected in his writings and other social activities. In 1872 he brought out a monthly Bengali journal, *Bangadarśan*, which immediately captured the mind of the educated Bengalees, for the high qualities of its articles, written by erudite scholars. Bankimchandra was essentially an artist of high order, with rare qualities of a humanist. His all-pervasive love for every section of people earned him an appropriate title of *sāhitya-samrāṭ*, emperor of the realm of literature. We should however admit that like any eminent personality, he too was not totally free from lapses, both in his ideology and the art of expression. But these are not of much significance, which critics sensibly have not made much of. They have done him supreme honour by accepting as unquestionably the best of Indian novelists ever writing.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

On Mediating Between English and Kannada

❐ Dr. Ramchandra Sharma

Ezra Pound's statement that a great age in literature is perhaps always a great age in translations, or follows it is valid for Kannada, if not for other Indian literature. There is no doubt at all that it was the translation efforts of the first two decades of this century, particularly the translation of some sixty English poems of the Romantic period by B. M. Srikantia, that ushered in the modern age in Kannada literature. Srikantia's collection of translations, which was published in 1926, heralded a new dawn and poets all over the Kannada speaking land found their voice. His translations sparkled with their eye-catching newness in metre, form and language and established that Kannada could deal creatively with the agonies and the ecstasies of the ordinary people of the land instead of revelling in picturing the heroes either from mythology or history.

Over the last sixty years, a considerable body of work is to be seen in the field of translation, though mostly, it has been a case of works coming into Kannada from other languages, particularly English. Many of the translators have been creative writers in their own right. A small number among these have ventured into translating either their own writings into English or those of others.

I am one of the minority of two-way traffickers and my thoughts on translation have been shaped by my experience in mediating between Kannada and English.

When Dante said that nothing which the Muses have touched can be carried over to another tongue without losing its savour and harmony, I believe that he was speaking more in sorrow about the inevitable loss that occurs when the soul of a poem is transferred from one language into another. His is not the anger and rigidity of a man like Nabakov, to whom anything but literalism in translation is anathema. We all know the rhetorical question he asked.' What is translation ?' and the answer he gave.

What is translation ? On a platter
A poet's pale and glaring head;
A parrot's speech, a monkey's chatter,
A profanation of the dead.

One is glad that the field of translation has produced very few fundamentalists of Nabokov's type. One is also glad that only a few would choose the cloistered community headed by Nabokov while most would choose the company of Goethe, Schopenhauer and Pound who believed that the art of taking the essence of a poem from one language to another was not a reprehensible act but an act of creation.

Every translator, particularly of poetry, has to work out his own level regarding how close he intends to stay to the original. I believe that it is possible to frame this question of fidelity in terms of degrees of freedom a translator opts for. I hold that there is no single formula, even for the same translator, which holds good for all occasions. I also hold that a translator's decision on the matter of staying close to the original or straying from it, is not only a matter of his attitude, but also a function of the goal he sets for himself. If his purpose is merely to render a faithful version of the original, his role, in my opinion, is thqt of an official working in the department of translation set up by a government. More or less, let me hasten to add, before I rub the purists among you on the wrong side and incur their wrath. If, on the other hand, his goal is to create a surrogate poem which can stand on its own as a living entity, his role as a translator has taken on an additional responsibility, namely that of a creative poet. As a result, he puts into his translation qualities that any discerning reader of poetry in the target language associates with a good poem. In other words, he takes into account not only the genius of the target language, but also its cultural particularity. His is now an act of transcreation wherein the question of fidelity should naturally take a lowly place in the scheme of things.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

It was as far back as B. C. 46 that Cicero laughed at attempts to translate poetry word-by-word. Dryden followed him centuries later and gave such an act a name, *Metaphrase*. He was as severe as Cicero in ridiculing such attempts, likening them to the acrobatics of a tight-rope walker. We may, if we like, applaud the man for having survived such a daring act as tight-rope walking, but not for the art of it. There is no creativity at play in such an undertaking.

Once we accept that fidelity *perse* is neither a virtue nor one of the ten commandments we should never break, we are left with the problem of an acceptable degree of freedom in any translation of poetry. My own position on this has been that this, like the question of an individual's freedom in a democratic society, is to be ultimately answered in terms of the end product, namely, the citizen's behaviour, or in the case of translation, the poem the translator has created in the target language. Just like in the case of a man's freedom turning occasionally into licentiousness, excesses may also be seen in translation. I grant. But, I am sure you will agree with me when I point out that the solution to the problem is not in denying freedom to the individual or the tranlator. I abhor the idea of a societal structure where there is no freedom.

As I have already brought in the name of Dryden, let me hasten to add that he was as much against licentiousness in translation as he was against any kind of strait-jaketing. I am pretty sure he would have frowned on Robert Lowell's translation of European poerty. It is intersting that Lowell calls his book of translations *Imitations* like I have called mine *Roopantara.* Do I need to add that I admire Lowell ? I don't think so.

Now for thoughts on the problem of mediating between English and Kannada :

The little that I know of a couple of Indian languages other than Kannada encourages me to claim that what I have got to say about Kannada holds good for most Indian languages though I would hate to be called upon to quote chapter and verse in support of the claim.

There are always some poems in any language wherein we find that words and their meanings seem to be operating in an inseparable manner. Poems of this kind where meaning seems to spring out of the word-music are a translator's nightmare. It is well-nigh impossible to find words in the target language which carry an equivalent charge in terms of both music and meaning. It is when we take up poems of this sort for translation that we can, perhaps, make out a case for adopting the strategy of literal transaltion, thereby hoping to get at least the meaning right, if not the music of the original.

Bendre, one of the finest Kannada poets of all times, is as fine an example as any in this context. Various poets and scholars like Professors Gokak, Raghavendra Rao, Shankar Mokashi-Punear and Amur have translated Bendre's poems into English. If I have, on the whole, found their translations wanting, it may be because the word-music which I have responded to in the original is mostly missing in them. I have a feeling here that I am, perhaps, contradicting myself in expressing my dissatisfaction. Should I bring in my knowledge of the Kannada original in assessing the worth of the transaltion ? Should don't I be satisfied if the translation lives up to my expectation of what a good poem is in English, the target language in this case ?

The other great Kannada poet of this century, Gopalkrishna Adiga, poses a different kind of problem for the translator. It is not a problem particular to Adiga. I believe it is one which is common to any good poem written in any Indian language. Its genesis is to be partly understood in the larger context of how a language develops in tune with the cultural milieu which produces it. Perhaps in the way that certain words in any language have the quality of *dhwani* [ध्वनि]in addition to what they mean on the surface. The problem assumes gigantic proportions when we consider two languages which are culturally different, for example English and Kannada.

Different civilizations, different epochs, do not necessarily produce the same speech mass. Certain cultures speak less than others, some modes of sensibility prize taciturnity and elision, others reward prolixity and semantic ornamentation. These words of steiner have indeed a rare relevance with reference to the

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

behavioural patterns of the two languages, English and Kannada. Kannada, like any other Indian language, seems to be eager to resort to what I have called elsewhere an Amplification of Utterance. We may recall here that our poetics of the past gave a pride of place to utpreksha [उत्प्रेक्षा]. or exaggeration and called it an *alankara*. [अलङ्कार] Look at how we converse among ourselves, whether we are in a public place or in the privacy of our homes. The same characteristic is present in most of the Mediterranean languages and in the languages of Africa. People speaking these languages, like the peoples here, seem to believe in large gestures, exaggerated movements of both words and hands, in communicating with others. No wonder that the same characteristic appears in the poetry that we write. We have little use for whispers or for things said in an undertone.

Let me hazard a guesss and say that the behaviour of a langauge is governed by the historical fact of how late the printing press appeared on its scene. An oral tradition demands that anything said is said forcefully, with occasional repetition, without any ambiguity.

Gopalkrishna Adiga has been translated into English by Ramanujan, M. G. Krishnamurthy, Sumatheendra Nadig, Rajeev Taranath and others. There is an oratorical quality about Adiga's poetry, a rhetorical utterance, which is absolutely convicing in Kannada because we are expecting it to be there. Having developed a certain response structure to what we consider is good poetry in English, we are not prepared for Adiga's exuberance when we come acros it in the English translation of his poetry. The language sounds harsh on the ear. If most of the translations are unconvicing, it is not because the translators have not been able to catch the complexity or the local particularities of Adiga's peotry. It is because they have tried to retain the amplification level without daring to modify it. I have a feeling that even a translator like Ramanujan was overawed by the poet and his reputation and hence the check he imposed on his own creativity while doing the transaltion. The freedom he exercised in translating' the *vachanas* is missing here and hence the limited success he achieves.

The problem I have spoken of in translating Kannada poetry into English faces us again when we go from English into Kannada but what we see is the other face. When the tone of a good English poem - we have liked it because of the undertone in it - is retained in transaltion, it is likely to sound flat and lifeless. We are disappointed because it seems to lack the vitality or the rhetoric we have come to associate with what we think are good Kannada poems.

In my view a good translator between English and any of the Indian languages is a stabiliser. Very much like the one we use at home in order to control the vagaries of the supply of electricity, raising the voltage when there is a sudden plunge and pulling it down when there is a surge. If one is not creatively alive to the problem bedevilling the act of translation between English and the Indian language, one is likely to be left with a piece that fails to light up. What is needed in translating poetry from English is to move towards the primary colours while, what is needed in going into English is to move towards the pastel colurs.

* * *

Finally a word about one or two instances when the poet in the translator has not been able to suppress his creative urge and the surprinsing quality of the end product. Srikantia, a poet of some merit in his own right, while translating Hood's Bridge of Sighs, has added a stanza of his own with an original speculation of the reasons for the girl's suicide. The translation touches out heart because the speculation about her not having a child which lisped and held on to her apron strings is relevant in the Indian context. He has taken the same type of liberty in translating Charles Lamb's Familiar Faces. Particularly in the third staza in which the poet speaks of his love who had left him for another. In Srikantia's version. the poet mourns the death of his wife at an early age. The Kannada version comes close to us as we remember that Srikantia lost his wife when he was not even thirty and that he never married again.....

The translator in such instances has made the original poem come alive by letting his

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

creating urge to have a free scope. It is a case of the genius of the original poet interacting with the genius of the tanslation to create something more than the original. We have such a miracle happening in Bendre's translation of Kalidasa's *Meghadootha*, or again, in some of the translations done by Ezra Pound or Robert Lowell. These are instances wherein the original poet is reborn into a loving family.

We all know of the clever saying that what eludes the translator is the real poem. One is tickled by such a witty statement. One should, however, acknowledge the fact that, sometimes, it looks as if the translation scores over the original. I believe that the frequency of a good translation of this kind coming our way is the same as that of a genuinely good poem happening. Rarely, in other words, when we run into such a rare occurrence, we should like Prof.Moorthy Rao say that in the hands of a poet-translator, the real poem is not what eludes the translator, but what steals its way into the translation.

In my view, it is not important that one experiences a sense of loss in most translations. What is relevant from the viewpoint of the development of any language is the will to make repeated efforts in that direction. Without such efforts, to quote George Steiner, we would live in arrogant parishes bordered by silence.

Judging by what is happening in India, one may safely say that this is the decade for translations, not only between English and an Indian language but from one language into another. We have suffered up to now because of the paucity of good translations. Let us hope that more and more creative writers take to this act of translation and see it not as an adjunt to what they normally do, but as an integral aspect of their creativity.

●

Word and Meaning : Indentical ?

❒ *Prof. V. N. Jha*

O.O "Language-game" involves speaker on one side and hearer on the other and common meeting point namely the world of experience. As long as the world of common experience of both the speaker and the hearer is one and the same, there is agreement (saṁvāda) [संवाद] and when it is not so, the disagreement (visṁāda) [विसंवाद] is the winner.

Enquiries about philospophy of languages in India seem to have been directed from two angles : (1) from the point of view of a speaker or writer and (2) from the point of view of a hearer or listener or reader.

Bhartṛhari's enquiry, in my understanding, belongs to the first category and the other Indian philosophical systems like [Miaṅsya [मीमांसा],Nyāya [न्याय], Vaiseṣika[वैशेषिक] etc. concentrated more on the second.

Bhartṛhari's enquiry is more fundamental in the sense that it wants to know how human beings articulate their congitions, knowledges, feelings and the like. The enquiry of Nyāya-Vaiseṣika [न्याय-वैशेषिक] and Mimāsa [मीमांसा] systems begins after the cognitions, knowledges, feelings, and the like are articulated. In other words, while Bhartṛhari's enquiry is about the process of articulation, that of the later is about the process of the unfolding of the articulation.

In the eyes of the Indian logicians a speaker encodes his experience in a sentence and the hearer decodes it. Thus, there are three elements in this game. There is a speaker or writer, there is a world which the speaker experiences and with which he behaves, and there is a listner or hearer or reader. The speaker expriences his world, encodes that experience and passes it on to his listener or hearer. The listener receives that encoded experience in the form of a sentanece and decodes it and is expected to get at the world of speaker's experience. If everything goes smoothly in the process, there will be *saṁvāda*[संवाद] or else *visaṁvāda* [विसंवाद] is the consequence.

According to Indian logicians there are four types of human experiences namely perceptual, inferential, analogical and verbal. These

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

experiences arise through four distinct processes, called pramāṇa.[प्रमाण]. shabda [शब्द] or a sentence of a reliable speaker is one such pramāṇa or process of experience. The experience which arises from a sentence is called shābdabodha [शाब्दबोध] (verbal understanding). Indian logicians are more concerned about this process or epistemology of verbal understanding. According to them a sentence is an encoded experience.

Gautama defines a perceptual cognition as follows :

Indriyārtha-sannikarṣotpannam Jñānam avyapadeshyam avyabhicāri vyavasāyātmakam pratyakṣam [इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानम् अव्यपदेश्यम् अव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्]

(Nyāyasutra 1.1.4)

"Pratyakṣa [प्रत्यक्ष] is that congition which is not namable, which is not enoneous and which is determinate."

The clause which is not namable (avyapadeyas) ***[अव्यपदेश्य]*** had created a problem.

Vātsyāyana, the author of the *nyāyabhāṣya* ***[न्यायभाष्य]*** presents the following pūrvapakṣa [पूर्वपक्ष]:

Yāvadartham vai nāmadheyaśabdāḥ, taih arthasaṃpratyayaḥ, arthasampratyayāt ca vyavahāraḥ, tatra idam indriyārthasannikarṣād utpannam arthajñānam rūpam iti vā, rasaḥ iti evaṁ vā bhavati, rūpa-rasa-sabdāḥ ca viṣaya - nāmadheyam/tena vyapadishyate jñānam - rūpam iti jānīte, rasa itjānīte/nāmadheyashabd ena vyapadishyamānaṁ sat śabdaṁ prasajyate, ata āha - avyapadeshyam iti.

यावदर्थं वै नामधेयशब्दाः । तैः अर्थसम्प्रत्ययः । अर्थसम्प्रत्ययाच्च व्यवहारः । तत्रेदम्, इन्द्रियार्थसन्निकर्षाद् उत्पन्नम् अर्थज्ञानं रूपमिति वा रस इत्येवं वा भवति । रूप-रस-शब्दाश्च विषयनामधेयम् । तेन व्यपदिश्यते ज्ञानं रूपमिति जानीते, रस इति जानीते । नामधेयशब्देन व्यपदिश्यमानं सत् शब्दं प्रसज्यते । अत आह अव्यपदेश्यमिति ।

It means-There are so many words as many referents. By those words referents are properly known. When the things are properly known our behaviour with them also becomes proper. Now, for example, when a perception (of colour and taste) arises, the perecption appears as **idaṁ rūpam** [इदं रूपम्]"this is colour", **ayaṁ rasaḥ** [अयं रसः] "this is taste". Here the words **rūpa** and **rasa** are the name of objects. By those names, the cognition is also designated such as "He knows it as colour," "He knows it as taste". Since the cognition is designated by a name, it amounts to saying that it is caused by that name (of the object of cognition such as **rupa** and **rasa**). In order to avoid such contingency, Gautama put the clause "which is not namable" in the definition of perception. This is what Vātsyāyana thought.

This Pūrvapakṣa [पूर्वपक्ष] view, thus, holds that there cannot be any perception without interference of language.

Uddyotakara, while interpreting Vātsyāyana says that it is possible to have a perception without interference of language. He cites a case that even before the acquisition of language, perception of a thing can occur and one such perception can be distinguished from other similar perception. Moreover, as far as the form of the perception is concerned, there is no difference in the form before and after the acquisition of language. Thus, the *Pūrvapakṣin* [पूर्वपक्षिन्] is not right in holding such a view and this was indicated by Gautama in the clause "which is not namable" in the definition of perception.

While comenting on this issue Vācaspati Miśra formulates the issue more clearly and elaborately. He sees that the *Pūrvapakṣin* [पूर्वपक्षिन्] holds a view that the word and its referent are identical. According to this view one cannot perceive an object independent of its name, and when the same name of the object is applied to the cognition of the object also, one has to hold that no cognition is possible without intervention of language. Vācaspati quotes from Bhartṛhari the most oft - quoted verse—

Na so'sti pratyayo loke
yaḥ śabdānugamād ṛte /
anuviddham iva jñānaṁ
sarvaṁ śabdena bhāsate //

(न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमाद् ऋते ।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ।।)

Vākyapadīya [वाक्यपदीय] 1.123

"In this world there cannot be a cognition

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

without intervention of language, as if cognition and language are mixed with each other. Nothing can be known without language.

He quotes a verse from *Vākyapadīya*

Ādyaḥ Karaṇavinyāsaḥ
prāṇasyordhvasamīraṇam.
Sthānānām abhighātaś ca
na vinā Śabdabhāvanam .

आद्यः करणविन्यासः प्राणस्योर्ध्वसमीरणम्।
स्थानानाम् अभिघातश्च न विना शब्दभावनम् ॥

व्याक्यपदीय, 1.222

The first movement of the sound operators in the oral cavity, movement of the palmonic air in the lungs, the contacts of the places of articulation, nothing is possible without accepting inbuilt language structure. Thus, even in children and dumb one must postulate language impression coming from time immemorial

Bālamūkādīnām api vijñānaṁ śabdānuvya vasāyādev anādiśabdabhāvanāvaśāt 'p. 110'
बालमूकादीनामपि विज्ञानं शब्दानुव्यवसायादेव अनादिशब्दभावनावशात्।

From these descriptions of the pūrvapakṣa - view, it is clear that for Bhartṛhari it is impossible to think of a cognition without the intervention of language. As against this Indian logicians argue that there can arise a cognition without the intervention of language. There can be an indeterminate cognition *(nirvikalpaka jñāna)* [निर्विकल्पक ज्ञान] prior to the intervention of language. Such a cognition will produce another cognition which can be verbalised. Thus, there can be verbalisable and unverbalisable cognitions. What happens is a particular cognition arises through a particular process and the speaker then encodes it and verbalise it.

In this background I would like to present the traditionai dialogue for and against the view that there is identity between an expressive word and its meaning. Needless to say, Bhartṛhari will argue in favour of identity whereas the Indian logicians will agrue against such a stand. I shall present first the Indentity and then present the non-identity-view.

1.0 Word and its Meaning are Identical

The following are some of the grounds for pleading in favour of identity between word and its meaning :

(a) When some unknown item is seen by us we often say 'we do not know what this is'. And when some one tells the name of it, we say 'we know it now.' So. if in the cognition mere object appears, then how to explain his statement 'we do not know what this is'. This implies that object appears in the cognition as identified with its word.

(b) Suppose someone has seen an object *Kokila* and suppose he knows that kokila is *pika* (Cuckoo) and does not know that it is called *Kokila*. Still there will arise the contingency of his having the awareness (anuvya vasa) [अनुव्यवसाय] in this form.-'This is *Kokila'* since he has seen the object which is called Kokila also. In order to avoid such difficulty, one must accept the identity between the object and the word *Pika* which is known to him. Since he does not know the word *Kokila* there will not arise the awareness that 'This is *Kokila'*.

(c) Unless we accept that in the perception of an object called pot, there is identity between the object and pot, we cannot present the cogition of that object as a cognition in which potness is the qualifier (prakāra) [प्रकार]and pot is the qualificand (viśeṣya) [विशेष्य].

(d) The definition of perception by Gautama comes to support own view. He says that in perception the object is not word (avyapadeshya अव्यपदेश्य). Thereby, he endorses the view that in a verbal understanding (shàbdabodha शाब्दबोध). word is the object. This means that word and its meaning are identical. Even Vātsyāyana while formulating the pūrvapakṣa [पूर्वपक्ष] admits that in a verbal understanding the content is word. (*Shabdaviṣayakatvena pratyakṣaysa shābd-atvāpatih* [शब्दविषयकत्वेन प्रत्यक्षस्य शाब्दत्वापत्तिः]). Vācaspati Miśra is also in agreement of this view (*Shabdaviṣavakatyameva shābdatvam na tu sabdajanyatvam*[शब्दविषयकत्वमेव शाब्दत्वम्, न तु शब्दजन्यत्वम्].

(e) Not only that. Let us look at the form of a cognition 'This is a pot'. Here, *this* stands for the object and it is identified with the word 'pot.' There is co-referentiality in that for the cognition. That establishes identity. Not only that. The f s of cognition such as 'This is pot', 'pot is not cloth'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

endorse that idea and the fact that we can not have a statement such as 'Pot is cloth' confirms that idea that the object is identical with its word.

(f) Since all our verbalisable cognitions are language-oriented, we must accept them as having word as their content or as being prompted by word. In the former case there has to be identity between word and the object.

Let us examine the second alternative. Can a word prompt a cognition without itself being known ? Certainly not. Thus it has to be known. In that case our view gets, again, established.

(g) There can not be perception of a thing which is not in contact with the sense-organs. When pot is perceived, it is said 'This is pot'. The word 'pot' is not there : what is there is the object and still he says 'This is pot'. This is possible only if we accept that the object and the word are identical.

(h) When one asks What is the word for this object ? The answer comes 'Pot'. And when one asks What is the meaning of the word 'pot', still the answer comes 'Pot'. This is another ground to hold the identity between word and meaning.

(i) In conversation one tells - 'You have heard the word, now you listen to the meaning.' How listening of meaning is possible unless meaning is same as word ?

(j) Even Panini will support this view when he himself says *vṛddhih ād aich* [वृद्धिः आद् ऐच्] *'ā,ai,* and *au* are called **vṛddhi**. So the vowels **ā,ai** and au are identical with the word vṛddhi.

(k) Even the statement— *Om ityekākṣaram Brahma* [ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म] 'The single syllable 'om' is the Brahman' —supports our thesis.

(l) The following usages are also in our favour :

(i) *Rāmeti dvyakṣaraṁ nāma manabhangaḥ pinākinaḥ* [रामेति द्व्यक्षरं नाम मानभङ्गः पिनाकिनः] "The bysyllabic name 'Rāma' is the remover of the pride of Siva".

(ii) *Hiranyapūrvaṁ kashipuṁ prachakṣate* [हिरण्यपूर्वं कशिपुं प्रचक्षते]"The demon is Kashpu preceded by Hiranya.

In both these usages there is identity.

They clarify that this identity is between a conceptual word and conceptual meaning. This is the reason that when one utters the word 'food' one's mouth does not become full of food, because mouth can be full with 'external food' only and not by 'conceptual food'.

2.0 Word and Meaning are not Identieal

Some of the arguments of the Indian logicians are presented below.

(a) As regards the identity statements like ' 'This is pot', such statement is not possible unless the person has the knowledge of the relation between the object 'pot' and the word pot. But it is our experience that the object is known as it is even by children and deaf and dump persons even though they have no knowledge of the relationship between the object and its name. Thus, there is no identity between the object and its name.The argument of Sabdabhâvanā [शब्द भावना] being carried by children and deaf and dump persons from earlier birth has no ground.

(b) What one considers to be an identity-statement like 'This is pot', the word 'pot' stands here for the object 'pot' by convention. Moreover. If the object and its name were identical one should have a perception after seeing the pot 'this is the word pot.' But such cognition does not take place. Thus, they are not identical.

(c) The argument that when one does not know the name of an object he says 'he does not know it' and when he knows the name he says 'he knows it' implying identity between object and its name is also not tenable. Because when one asks : Who is he?, the word 'who' refers to the person of enquiry and that is to be known from the context etc. The answer to this question may be any thing : He is a man, He is Brahmin, he is teacher, He is PM and so on. The context will decide.

When a person says 'I do not know it' after seeing it 'what actually he says is 'I do not know the name of it.' Thus, a verbalisable cognition does not compell any one to accept the identity between the object and its name.

(d) As regards the problem of synonymous words, *kokila* [कोकिल] and *pika* [पिक]. it should not be a problem because the perceiver will have the awareness that he has knowledge similar to that which arises from the expression 'This is pika.'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

(e) It is also not true to say that in order to explain the structure of the context of a cognition the identity between object and its word is necessary. Because, where a property appears that is called qualificand and what appears is called qualifier. The terms like qualifier and qualificand are dependent terms and so they will appear at descriptive level and not as contents of the cognition 'This is pot.'

(f) It is wrong to believe that Gautama supports the view of identity. The term avyapadeshya [अव्यपदेश्य] is not used to exclude *shābdabodha* [शाब्दबोध] from perceptual cognition. rather it refers to indeterminate perception which is not verbalisable.

Vātsyāyana too does not endorse your view. The expression *Shabdavisayakam* [शब्दविषयकम्] in the *Vātsyāyanabhāṣya* needs to be properly understood as pratyakṣam api shabdaviṣaykam. shabdarahitam avikalpakam nāsti [प्रत्यक्षमपि शब्दविषयकम्: शब्दरहितम् अविकल्पकं नास्ति].

Even perception is language-oriented and so there is no cognition called indeterminate and not verbalisable.

(g) Before the arising of the verbalisable cognition (savikalpaka [सविकल्पक]), regularly there is absence of language. Even if one argues that the word is remembered still it can not be held that the cognition of the thing is prompted by word.

(h) As regards the view that when one gets the same answer (say, pot) when one enquires about the thing and its word, they have to be treated as identical, one may say that when one wants to know the meaning the word 'pot' stands for thing and when enquiry is about the word the word 'pot' stands for word. There is no identity.

(i) When you say 'listen now to the meaning' what you intend is 'listen to the word which express the meaning', or to the paraphrase. This does not prove identity. Ātmā shrotavyaḥ [आत्मा श्रोतव्यः] is to be interpreted in this way.

(j) The same is the solution for Pāṇinian *8sūtra. (1) Vṛddhir ād aich. (2) Râma iti dvyakṣaram nâma mânabhangaḥ pinākinaḥ and (3) Hiranyapûrvam kashipurm prachakṣate* [वृद्धिरादैः; वृ रामेतिद्व्यक्षरं नाम मानभङ्गः पिनाकिनः ; हिरण्यपूर्वं कशिपुं प्रचक्षते].

In all these cases the words stand for their meanings and there is no question of identity.

Thus, in the cognition 'This is pot' the word does not appear as its content. Merely, on the basis of co-referentiality in the statement 'This is pot' one can not jump to the conclusion that object and its name are identical.

The theory that a conceptual word (*sphoṭa* [स्फोट]) is the expressive word and conceptual meaning is the expressed meaning and there is identity between the two is also not acceptable to the Indian logicians.

3.0 Observations

We heard the dialogue. The following observations can be made on the basis of the above dialogue :

(i) While section 1.0 clamis that no thinking or knowledge or cognition is possible without language, section 2.0 attempts to point out that it is possible without interference of language.

(ii) That a cognition is always verbalisable is the view of Bhartṛhari. But Indian logicians think that a cognition can be both verbalisable and non-verbalisable, and there is a causal relationship between the two. The non-verbalisable is the cause of verbalisable.

(iii) According to Indian logicians there is a sequence in verbalisation. A cognition (say, perception) arises first through a particular process without taking the help of language and later the same cogition is verbalised by the cognizer.

(iv) It remains a fact that in the process of cognizing one goes from a thing to its name and from a name to a thing of which it is a name. Both the goings are based on a relationship between a word and its referent. Both the journeys are not simultáneous. At one time it may be from a thing to its name as in the case of perception and at some other time it may be from the word to its meaning as in the case of understanding a sentence-meaning. Indian logicians are trying to draw the attention to this fact.

(v) It also remains a fact that children who have not yet learnt any language and the deaf and dump are capable of cognizing and

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

distinguishing one object from the other. Explanation of Bhartṛhari that even here such cognizing presupposes language impressions (Shabdabhavana [शब्दभावना]) in such children and the deaf and dump carried from their previous birth should have received more attention. Is it not closer to the idea of Wittgenstein when he says — "This is what we human beings are."?

(vi) The idea of conceptual expressive word ai its conceptual meaning may merit pleasure ... the Western Thinking where a distinction is drawn between sense and reference. Indian logicians, howerver, can not contribute to this idea simply because they do not want to open even one window for the entrance of idealism.

(vii) In Indian tradition the term for identity is either *tādātmya* [तादात्म्य] or *abheda* [अभेद]. Although Indian logicians use both the terms in one and the same sense namely, 'total identity', other systems like *mīmāṁsā* [मीमांसा] use the term *tādtmya* [तादात्म्य] in the sense of difference-cum-identity (*bhedasahiṣṇu-abheda* [भेद सहिष्णु अभेद]). I think, in the tradition of Bhartṛhari also the term *tādātmya* [तादात्म्य] means difference-cum-identity. In that sense it will mean - when looked from one angle there is identity between word and its meaning since they are inseparable, as it were, and when looked from another angle word is word and meaning is meaning. As expressive of something word is word and as expressed by some word meaning is meaning.

Reference

1. ***Nyayadarshanam*** of Gautam with **Bhāṣya**, **Vārttika, Tātparyatīkā** and **Vṛtti**, Ed. by Taranatha Nyaya-Tarka-tirtha, Munshiram Manoharlal, Delhi1985, PP. 109-112 (on **Nyayasutra** 1.1.4).
2. ***Vākyapadīya*** of Bhartṛhari, Ed. by K. V. Abhyankar and V. P. Limaye, University of Poona, Pune 1965. Kanda I and II.
3. ***Shabdataraṅgiṇī*** of Pdt. V. Subrahmaṇya Sastri. The Sanskrit Education Society, Madras,1969, PP.66-88.
4. **The Philosophy of Bhartṛhari,** Gaurinath Shastri, Bharatiya Vidya Prakshan, Delhi, 1991.

Bandhu-relation in Utkal School of Dharmashastra

❒ ***Prof. Braja Kishore Swain***

Bandhus are near relatives of a person who are related to him in respect of śrāddha, impurity, inheritance and marriage. They are identified by different Nibandhakaras of different schools of Dharmashastra in different occasions. In the northern school of Dharmashastra Nibadhakaras like Kamalakara Bhatta (c. 1640 A. D.), Nandapandita (c. 1590-1630 A.D.), Mitra Mishra (c. 1615-1645 A.D.) and others put forth a composite view in connection with bandhu [बन्धु] whereas in the western school the Nibandhakaras headed by Vijnaneshvara (c. 1070-1100 A.D.) followed by the later Nibandhakaras like Nilakantha Bhatta (c. 1615-1645 A.D.) and others express their views in one tone with the southerners like Debbana Bhatta (c. 1200-1225 A.D.), Madhavacharya (c. 1300-1380 A. D.) and others. In contrast to these three schools the Eastern school (termed as prāchyas [प्राच्य]) comprising its three main sub-schools such as Mithila school, Gauda School and Utkal school gives a divergent opinion which is very technical in its core in this connection. As a matter of fact these three sub-schools unanimously go together on many points pertaining to identification of **bandhu** having their own speciality. Of these three sub-schools the view of Utkal school is a significant one. In it, the nibandhakars do not agree with that of the Maithilas and Guaudas. In course of showing their speciality in connection with bandhu-relation they differ from that of the other sub-schools of east along with north, west and south. This has been recorded in the smriti-digests of Orissa in general and Mitra Mishra's *Viramitrodaya. Saṁskāraprakāsha* [वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाश] (VMS) in particular.

In this paper an attempt has been made to identify the **bandhus** in marriage in Utkal school of Dharmashastra.

The views of Eastern school of Dharmashastra are of special interest in this conection on account of the fact that beginning with Laksmidhara, the author of *Kṛtyakalpataru* to Gopinath Vijapeyin, the author of *Panditasa-*

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

rvasva [पण्डितसर्वस्व], the bandhus are described in detail with considerable variations. For our present study we have taken into account Laksmidhara's *Kṛtyakalpataru Gṛahasthakāṇḍa* [कृत्यकल्पतरु-गृहस्थकाण्ड] (c. 1100-1150 A. D.), Chandeshvara's *Gṛhastha-ratnākara* [गृहस्थरत्नाकर] (c. 1290-1370 A. D.) from Mithila school; Shulapani's *Sambandhaviveka* [सम्बन्धविवेक] (c. 1375-1460 A.D.) and Raghunandana's *Udvāhatattva* [उद्वाहतत्व] (c. 1520-1575 A.D.) from Gauda (Bengal school); and Sambhukara's view on Shrāddha (c. 1278-1306 A.D.), Gadadhara's *Kālasāra* [कालसार] (c. 1715-1718 A.D.), Divyasimgha's *Saṁskārakalpalatikā* [संस्कारकल्पलतिका] and Gopinath Vajapeyin's (c. 1700 A.D.) *Panḍitasarvasva* from Utkal school as chief source.

1. Gadadhara Rajaguru in his *Kālasāra* [कालसार] (p. 189-190) has exhibited the views of leading nibandhakaras of Eastern school like Laksmidhara and Raghunandana. However, he begins his analysis with the view of Vijnanesvara (c. 1070-1100 A. D.). Vijnanesvara postulates as quoted by Gadadhara, that "these texts do not authorise a marriage with a girl who is distant from the common ancestor by a lesser number of degrees than those propounded by Yajnavalkya; but they only prohibit marriage with girls who are nearer in degrees than those stated in those texts".[1]

2. But this conciliation of the conflict among the smṛtis, although, is not at all satisfactory (accoriding to Dr. Kane) still Gadadhara does not comment upon it. It is held that Vijnanesvara, here, intends to impose *parisaṁkhyā* [परिसंख्या] (exclusive injunction) although no other nibandhakara of this line is found to have shown his inclination to point out this unexpressed intenstion of Vijnanesvara. Further, it can be adjudged that being afraid of parisaṁkhyā, Gadadhara does not (it seems) express his view on Vijnaneshvara and remains silent. His characteristic silence on Vijnaneshvara may be understood as a clear proof of his support to Vijnaneshvara.

3. Mention may be made here of all the nibandhakaras of Mithila school relying upon the view of Laksmidhara in connection with bandhu-relation i. e. sapinda-relation. Laksmidhara, in the present contex, is not found in favour of *mukhyakalpa anukalpa* [मुख्य कल्प-अनुकल्प] system. He follows Viswarupa and Vijnaneswara. Vijnaneswar says that if a person marries a brahmana and ksatriya girl, then a question arises as to the eligibility of marriage among the descendants of his two wives, then prohibition based on sapinda relationship extends up to only three degrees.[2] In persuance of this view of Vijnaneswara, Laksmidhara opines that conditional option (*vyavasthitavikalpa* [व्यवस्थित विकल्प]), in conformity with the dicta of Paithinasi[3] and Sumantu[4] should be followed in the present context.

4. It is observed that there are two ways of solution : *Mukhyakalpa-anukalpa* [मुख्य कल्प- अनुकल्प] system advocated by Madhavacharya and followed by Nandapandita, Nilakantha and Mitra Mishra and conditional option according to Laksmidhara based upon the view of Vijnaneswar. It is to be noted here that Vijnaneswara does not go expressly in favour of conditional option. He says that the *sapinda*-relationship for *bandhu* in marriage up to three degrees is a specific adjustment in case of marriage with other castes.[5] Laksmidhara, going deep into the theme of Vijnaneswara, construes that this view conveys nothing but conditional option. Chandeswara in *gṛhastharatnākara*[6], [गृहस्थरत्नाकर] following Laksmidhara, opines in favour of conditional option. Madanapala in *Madanpārijāta*[7] [मदनपारिजात] and kamalakara in *Nirṇayasindhu*[8] [निर्णयसिन्धु]are one with Vishvarupa, Vijnaneswara and Laksmidhara. It may be held that the method pertaining to conditional option to be followed in case of computing *bandhu* under *sapinda*-relationship up to fifth and third degree which is promulgated by Laksmidhara in Mithila school is accepted by Gadadhara[9] in Utkal school since it is very impossible to be implemented as per the statement of earlier nibandhakaras. First, it is construed that very clause 'although it is said in *kalpataru*'[10] informs that Gadadhara understands the core point of Laksmidhara reflected in *kalpataru*; secondly, he inclines to

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

resort to the regional tradition extolled by earlier *nibandhakaras* of Utkal school; thirdly, with a view to presenting the regional tradition Gadadhara takes help of Sambhukara's line of thought.[11] It is submitted that if the person becomes connected with the common ancestor under same *gotra* then he is to be identified as the descendant of the same person (*pitṛsantāna* [पितृसन्तान]) whereas in case of other *gotra* he is to be known as the descendant of the mother's side.

5. As a matter of fact, it is very difficult to identify the *bandhus* from both sides. Here, it is to be observed that when the computation of degree for *sapiṇḍa*-relationship is made, one has to find out the common ancestor (ādipuruṣa [आदिपुरुष]) of the person and the girl. Under one and the same *gotra* if the person is connected with a certain person within the same *sapinda*-relationship and the girl is related with that person through mother, then the person is to be identified as common ancestor. Gadadhara presupposes that as the male is *spinda* to the common ancestor and the girl is also related to him as *sapinda*, then both the male and the famale (girl) are related to each other as sapinda. Therefore marriage shall not take place. Here relatives of one person through the father under one and the same *gotra* are termed as *pitṛbandhu* [पितृबन्धु]and through the mother under different *gotra* are the *mātṛbandhus* [मातृबन्धु]. This explanation of shambhukara which is quoted by Gadadhara[12] represents the regional view of Utkal School in connection with *bandhu.*

6. From among the exponents of Gauda School Gadadhara refers to only Reghunandana in this connection. He addresses him as the author of *Tithitattva* [तिथितत्व], although, he quotes the line of *Udvāhatattva* in stead of *Tithitattva.*"[13] Basically Raghunandana follows the line of thinking of shulapani. In the context of propinquity under *bandhu*-relation Shulapani's *Sambandhaviveka* is taken into account as an authority in the Gauda School. Therefore, Raghunandana follows *Sambandhaviveka* in *Udvahātattva*. But peculiarity lies with *Kālasāra* of Gadadhara, for, Gadadhara quotes Raghunandana's view in this context without referring to Shulapani. In pursuit of precise thinking of Raghunandana it is not necessary to go through the line of Shulapani.

7. Mention may be made here that Sumantu, at the present context, gives two different views. In one view[14] he states that *sapinda*-relationship cannot be confined to only any one of these three directions i. e. marriage, inheritance and impurity or shrāddha. It is obvious that computation of degrees for tracing *sapiṇḍa - relationship* is to be made in accordance with the direction specified for. In second view he says that girls who are relatives of both father and mother within seven degrees are not married and within five degrees in case of others. Although this view of Sumantu has been adhered to by Mitra Mishra[15], still Gadadhara maintains proverbial silence about it. The third view is altogether different. It is analysed that all wives of the father are to be treated as mother i. e. stepmothers, their brothers are uncles, daughters are sisters and sons of those sisters are bhagineyas; therefore marriage should not be instituted among those relatives."[16]

8. It is observed with presumption that these three views are connected with one and the same contexts i. e. *sapinda relationship*, Of these three, the first one is considered to be generic whereas other two are specific in respect of marriage. In this connection, Shulapani gives a clearcut analysis of first view of Sumantu. He maintains that computation of degrees up to the tenth degree which shows the peculiarity of his assessment. He continues in saying that "the person whose father, grandfather and great-grandfather are the deities invoked in shrāddha, is to offer rice-ball in honour of them. Hence, computation of degrees for *sapinda-relationship* is made up to ten (3+3+3+1=10) degrees including the person who is the target of this calculation. Nandapandita in *Vaijayanti*[17], Nilakantha in *Saṁskāramayūkha*[18] and Mitra Mishra in *Saṁskāraprakṣha*[19], though rely upon the views of Madhavacharya[20] with regard to *sapinda-relationship* up to the tenth degree as *mukhyakalpa*, have not exercised their brilliance in presenting their method of computation. It is Shulapani who does this. But he does not say in

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

favour of *mukhyakalpa-anukalpa* system. The Eastern School, in reality, does not adher to the *mukhyakalpa-anukalpa* system and computation of degrees up to the tenth degree for tracing *sapinda*-relationship. That is why, most probably, Gadadhara is found to be reluctant in quoting the view of Shulapani. He puts forth the third view of Sumantu. In process of analysing the third view of Sumantu, Gadadhara refers to Raghunandana. As a matter of fact Raghunandana in his *Udvāhatattva*[21] makes a detailed study of these views. He shows their contextual relevance advocated by different *nibandhakaras* of Eastern School (Shulapani and Chandeshwara). He, not only rests on the view of Shulapani as incorporated in *Sambandhaviveka*, but also his *Dīpakalikā*.[22] He arrives at his conclusion that here by the term *pitṛ* and *matṛ*, the *pitṛ-sapindas* and *matṛ-sapindas* are understood and to this effect their children are designated as *pitṛbandhus* and mātṛbandhus. That is why mutual marriage among those is prohibited. Raghunandana continues to corroborate his conclusion on the strength of the views of *Nāradasmṛti* and *Kātyāyanasmṛti*.[23] According to their view "*bandhus* are computed thus : son of the sister of grandfather, son of the sister of grandmother and son of the brother of grandmother, They are relatives by father. Therefore they are termed pitṛbandhavas. Son of the sister of the maternal grandmother, son of the sister of the maternal grandfather and son of the brother of the maternal grandmother, They are relatives by mother. Therefore they are termed matṛbandhavas." This computation of degrees in case of *bandhu* under *sapinda*-relationship made by Raghunandana is not accepted by Gadadhara. With reference to *Udvāhatattva* of Raghunandana Gadadhara[24] explains that since the characteristic of *pitṛbandhu* in consonance with the view of Katyayana is coincided by the nibandhakaras of Utkal in the context of impurity on death, they do not connect this with marriage. Futher it can be apprehended that *ātmabandhus* can also be included in this characteristic of *bandhu* at the present state of consideration.

9. As a matter of fact Gadadhara[25] following the very dicta of *Devalasmṛti* maintains that on the death and birth impurity always follows the *sapindas* and *pitṛbandhus* even though they live in a distant place. Here the pitṛbandhus are to be construed as *samānodakas* whether they belong to a joint family or a divided one. With this, the view of Raghunandana on *pitṛbandhu* has been gainsaid by Gadadhara, for, it is very much detrimental to tne prevalent tradition of Utkal School of *Dharmashastra*. Further Gadadhara presupposes that *ātmabandhu, pitṛbandhu* and *mātṛbandhu* constitute a triumvirate. Where a computation of degrees in marriage pertaining to pitṛbandhu is made the computation of the same associated with *atmabandhu* cannot be relegated to the background. The persons who are necessarily placed under nine categories in this computation are related to ashauca, as it were. According to the view of Sumantu discussed earlier relationship in regard to impurity, inheritance and marriage is to be traced differently. That is why relatives identified in marriage are other than the relatives in impurity. Since earlier nibandhakaras of Utkal School of Dharmashastra like Shambhukara, Vidyakara and others do not hesitate to connect those relatives with impurity who are identified according to Katyayana's view expressed in *Udvāhatattva,* it is obvious that their association with marriage in Utkal School is dispensed with. This is the main point of difference in connection with identification of *bandhu* in both the schools of Gauda and Utkal.

10. Gopinath Vajapeyin[27] of eighteenth century Utkal, although, invariably follows the very core of Gadadhara's verdict, does not agree with Shambhukara whose view is accepted as *a priori* by almost all the nibandhakaras of Utkal. Gopinath says that from the very term mātṛtah (from mother) and *pitṛtah* (from father) relatives known as pitṛbandhu and mātṛbandhu are understood. They are, son of the sister of maternal grandfather, son of the sister of maternal grandmother and son of the maternal uncle of the mother on the one hand; and son of the sister of grandfather, son of the sister of the

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

grandmother and son of the maternal uncle of the father on the otherhand.[28] In course of analysis, Gadadhara refers to the view of Shambhukara which he does not appreciate.[28] According to Shambhukara the descents who are of one *gotra* with the common ancestor *(Kūṭastha)* are *pitṛbandhus* and who are not are the mātṛbandhus. This assertion of Sambhukara is not accepted by Gopinath. In this context he opines that had it been so, there arises a contradiction of two directions. First, the son of the maternal uncle of mother, who is not identified as matṛbandhu by Vijnaneshwara, would be construed as the pitṛbandhus by the followers of Shambhukara for he is related to the common ancestor through one *gotra.* Secondly, the son of the sister of the grandfather would be identified as mātṛbandhu due to the fact that they are related to the common ancestor under one and the same gotra. Hence it is believed that the computation made by Shambhukara is not acceptable.

11. It is observed that Gopinath Vajapeyin, in course of his discussion, analyses different views of different *smṛtis* relating to marriage of maternal uncle's daughter. In the same context he expatiates the views of Shambhukara and associates significant views of other smṛtis which are invariably quoted by Vijnaneshwara[29] in *Mitākṣarā* relating to pitṛbandhu and mātṛbandhu. However, this is not the fact. Both Vijnaneshwara and Shambhukara were the exponents of Mitākṣarā school and, in fact, they do not place their argument in favour of marriage with maternal uncle's daughter. The view of Shambhukara which is uncorruptly quoted and analysed by Gadadhara[29], realy, implies the sense of pitṛbandhu and mātṛbandhu prevalent in Utkal School. Besides, there is a different tradition prevalent in Eastern Schools which determines that in father's side the bandhus are identified as persons who are computed under seven degrees of the common ancestor. They are pitṛbandhus. Therefore, girls relating to later degrees can be ascertained for marriage. Unlike this, in mother's side, girls related to three *gotras* including the *gotra* of common ancestor are the mātṛbandhus. Girls born thereafter, can be considered for marriage. They are popularly known as *trigotrāntarita.*

12. While giving uniformity of views of the smṛtis (like Paiṭhinasi, Sumantu and others) Raghunandana expresses this view.[30] In Nirṇayasindhu[31], while commenting upon the view of different *smṛtis*, Kamalakara places the eastern analysis and the record of eastern tradition with respect and agrees with them. In associating the background of views of Sumantu, Kamalakara expresses his close inclination to the eastern view.[31] In *Vaijayanti*, Nandapandita exhibits the view of east without refuting those, although he expresses his view in contrast to the easterners.[32] He shows the basis of this view by referring to the dictum of Bṛhanmanusmṛti where *trigotrāntarita*-method is pointed out.[33] Kamalakara difines *trigotrāntarita* as the girl who is born in a family which is not related to three *gotras* including the common ancestor[34]. Mention may be made here that Nandapandita, without giving the source of his information regarding this extracts these terms from *Sambandhaviveka* of Shulapani. However, the views of Utkal School have been recorded by Mitra Mishra[35] by referring to the very opinion of Divyasingha based upon the line of thinking of *Ushanas Smṛti.* It is clearcut that the very opinion of Divyasingha is framed by taking recourse to the view of Shambhukara in this connection.

13. *Conclusion.* It is submitted that

(i) The *Mukhyakalpa-anukalpa* method as pointed out by the nibandhakaras in connection with *bandhus* is extolled by Madhavacharya and followed by Mitra Mishra. But this is not adhered to by the nibandhakaras of Eastern school in general.

(ii) In contrast to other schools, conditional option is not accepted in Utkal School, although, it is administered in *Kṛtyakalpataru* by Laksmidhara.

(iii) Trigotrāntarita-method which is advocated by all the schools of East, with their respective variations in analysis of smṛti-views, is resorted to in general.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

(iv) Trigotrāntarita-method, as expounded by Divyasingha Mishra, differs from that of the view of Śulapani since Divyasingha corroborates it by resorting to the dicta of *Ushanas smṛti* whereas Shulapani to *Bṛhanmanu.*

(v) Divyasingha follwos the view of sambhukara which is precisely analysed by Gadadhara in *Kālasāra*.[36]

(a) With this it is held that Vijnaneshwara's computation of degrees in identifying *bandhu* in inheritance is not to be associated with marriage.

(b) *Pitṛbandhus*, who are identified by Raghunandana,[37] are not taken into account since they are connected with impurity and identified as *samānodakas*.

(c) Shambhukara, Divyasingha and Gadadhara form a triumvirate in Utkal School. They unanimously conclude that *bandhus* are they who are the descendants of the common ancestors belonging to one gotra in the father's side. Therefore, they are *pitṛbandhus*, but not *mātṛbandhus*.

(d) The *mātṛbandhus* are they who are the descendants from the maternal gradfather within three *gotras* according to trigotrāntarita-method.

(e) Computation, made up to ten degrees under *sapiṇḍa*-relationship for *bandhus*, is not followed in the Utkal School of Dharmashāstra.

NOTES

1. Kane, P. V. : *History of Dharmaśāstra.* Vol. iii (B. O. R. I., Poona, 1973) p. 456.
2. Vijātīyāsu vise-ṣ.aḥ ··· tripuruṣameva sāpiṇḍyam.— Yājñavalkyasmṛti-mitākṣarā (Bombay),. 53.
3. Trīnatītya mātṛtaḥ pancātītya ca pitṛtaḥ– *Paiṭhīnasismṛti.*
4. Mātṛpitṛsambaddhā āsaptamādvivāhyāḥ kanyā bhavanti āpancamādanyāsāmiti.— *Sumantusmṛti* qouted in *Saṁskāraprakāsha* (Varanasi. 1989. p. 702)
5. *Mitākṣarā*. I. 53.
6. *Gṛhastharatnākara* (Calcutta.) p. 10.
7. *Madanapārijata* p. 138—140 .
8. *Nirṇayasindhu* (Thakurprasad and Book seller) p. 579
9. *Nirṇayasindhu*. p. 583.
10. *Kālasara,* Radharamana Press, Cuttack. p. 189.
11. *Kālasāra*. p. 190.
12. Vṛddhānām tu pitṛbandhumā tṛbandhulakṣaṇam, yathā, ādipuruṣasya sagotratve'pi, pitṛsantāno bhavati. anyagotratve mātṛsantano bhavati-kālasāra. p. 190.
13. Kālasāra. p. 189.
14. Brāhmaṇānāmekapindasvadhā nāmādaśamāddharmavichittir bhavati, āsaptamādrikthavichittir bhavati, ātṛtiyat pindavichittih. —Sumantu quoted in *Nirṇayasindhu*. p. 582.
15. Mātṛpitṛsambaddhā āsaptamāda-vivahyāḥ kanya bhavanti āpancamādanyeṣām.— –Sumantu in *Saṁskāraprakāśa*. p. 702.
16. Pitṛpatnyah sarvā mātaraḥ. tadbhrātaro matulāḥ. tadduhitāraśca bhaginyah, tadapatyā bhāgineyāḥ syuḥ saṁkarakārinyaḥ tatsakulyā nodvaheditī–*Kālasāra*. p. 189.
17. *Visṇusmṛti*. XXIV. 10.
18. Saṁskāramayūkha, Varanasi,1989, p.78 ,
19. *Saṁskāraprakāśa*. p. 702.
20. Madhavacharya quoted in *Nirṇayasindhu*. p. 578.
21. *Udvāhatattva*– Jivananda Ed, Calcutta, p.110, also quoted in *Kālasāra.* p. 190.
22. *Yājñavalkyasmṛti*. I. 53.
23. *Kālasāra*. p. 110.
24. *Kālasàra*. p. 190
25. *Kālasāra*. p. 214.
26. *Kālasàra*. p. 214.
27. *Panḍitasarvasva*, Cuttack, p. 23.
28. *Panḍitasarvasva*. p. 23.
29. *Udvāhatattva*, p. 109.
30. *Udvāhatattva*, p. 109.
31. *Nirṇayasindhu*, p. 584.
32. *Visṇusmṛti*, p. XXIV. 10.
33. *Visṇusmṛti*, p. XXIV. 10.
34. *Visṇusmṛti*, p. XXIV. 10.
35. *Saṁskāraprakāśa*, p. 710.
36. *Kālasàra*, p. 189.
37. *Kālasāra*, p. 190; *Udvāhatattva*, 109

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Witch Doctor and Nepali Society

❒ R. P. Lama

Spiritualism, superstitions and beliefs are closely interlinked with the cultural tradition and heritage of the people in the hills. In this aspect of Nepali social structure the witch doctors, locally known as *Jhankris*, and witches known as *Bokshis* and their witchcraft play a very significant role in shaping, moulding and determining the trends of social and cultural way of life of the hill people. Innumerable sayings, mythical stories, folklores and songs are interwoven around this esotoric cult of the Nepali witch doctors and witches. A few episodes of these witches, witch doctors and their enchanting witchcraft in the hills may be an interesting feature to the readers.

Every year the hills of Darjeeling and the Nepali speaking areas in the country, are echoed with the tomtoming of a Dhyangro (a kind of instrument made of dried skin) and the chantings by the Jhankris, the witch doctors in the hills. The jhankris along with the local people celebrate this colourful festival on the Guru-purnima or Bhadauray Purnay (full moon night in Bhadra) which normally coincides with the Raksha Bandhan. Excitement, *Joy-de* Vivre runs high as most of the jhankris dressed in their traditional costumes, feather head dress, beads, jingling of small bells with exercising spirit appear in groups in the streets, lanes and by-lanes of the hills accompanied by a retinue of their camp followers following the footsteps of their spiritual Gurus.

Jhankris inherit their spiritual cult from their forefathers who migrated from different parts of Nepal centuries ago. They keep their methods closely secret and guarded and pass them only to their children and followers who are sincere, receptive and can preserve them without distortion.

Jhankris offer their prayers and regards to their Gurus a day before the Purnima in their houses, temples and sacred places of worship. Next day early in the morning, they go to the village streams and rivers, take their holy dip and offer prayers before they come out in a procession. With the loud chanting of *'Sai Solo Bombo Sai Sai'* (a salute to the Bom Mahadev) and with the beating of dhyangro, Jhyali and thali, the jhankris come out from the villages, lanes and by-lanes of the town with scores of their followers. Women Jhankris (female witch doctor) mostly sprouting from lower class families in the hills also join the procession with composed faces and colourful costumes on their way to Mahakal Temple on the top of the Observatory Hill at Chourasta, Darjeeling for their annual congregation. Nepali jhankris worship *'Sarma Mabong'* their diety whom they regard as the savior of life in distress. They also worship *Pancha Pandav, Bhimsen and Hangma Raja-Hangma Rani,* their savior and the legendary king and the queen of the hills. Jhankris invoke blessings from the Devis like *Lati Bureni* and *Chamki Bureni* of the jungle, their protectors to cure physical and mental ailments of the sicks.

Jhankris or Nepali witch doctors are drawn mostly from the Tamang, Rai, Chhetri, Thami, Sarki and Limbu tribes of Nepali community.

Jhankris play an important role to ward off evil spirit during the death ceremonies. He is a mental healer of a number of unknown ailments and diseases which are beyond the parameter of the modern medical science. Most of the Nepali speaking people due to the advancement in society may not like or prefer the idea or conception of patronising jhankris and believe in witches, wizards and evil spirits now but the cult or the profession still remains alive. Even in the modern society, demand of Jhankris is there since from headaches, physical pains, mental disbalance to heart failure come within the purview of the cult of witch doctors.

Rollo Ahmet has rightly said in his article : The history of a man is the history of magic. Jhankris through their spiritual powers and uttering of indecipherable words make the dead soul speak in falsetto voice. To cure a sick or ward off the evil spirit from the house, the Jhakris go into a trance, shivering and intoning incantations in a falsetto voice. Sometime during the trance he will whittle a piece of bamboo, 'a

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

wooden stick or a large feather and ask questions from the spirits. The shavings fall to the ground and according to their dispositions, the questions are answered in the affirmative or in the negative. A male kid, chick, duckling or a squab is sacrificed but is not killed until it has given its assent by nodding. The sick person is attached to the sacrificial animal by a cord so that when magic incantations have driven the spirit out, it will enter the body of the animal. This is said to cause its death.

To ward off the dead soul or to frignten the soul sometimes conches are blown, cans beaten and much shouting is done by the exorcist. They pray or chant *mantras* as invocations to cure the victims of evil possession of Bokshis or female witch doctors.

Witches or the Bokshis are popularly termed to a woman bad tempared with evil designs casting their spells mostly on children. The witch is a mythic embodiment of both of male fear of woman and of the female distrust of self. Bokshis or the witches as is normally believed, take their bath in a group every tuesday at midnight in a nearby streams. After bath three coloured lights emerge out of their bodies which move in different directions at night.

Erica Jong, a celebrated author and feminist has also explored the legend of the witch in her serious and analytic book *The witches*. She comments that archtype is studied in all its complexity, as a symbol of tyrany and male domination as a means of reiigious exploitation. Erica has further stated that from the most ancient time to the present, the history of witchcraft has been inextricably bound up with the male fear of women, the tendency of masculine unconcsious to equate women with evil or at least with the unknown which is presumed to be evil.

No age is immune to witch hunting because witch hunting serves such a multiplicity of purposes. Ghosts, scratching spirits, churail and the sick and ailings are treated spiritually by the Jhankris. The idea of witches, devils, wizards etc have enriched the Nepali mythology and strenghtened the esotoric cult in the enchanted hills of Darjeeling to a great extent.

Witches or Bokshis which is popularly known in the Nepali society are still the talk of the table or near the evening fire. A large number of imaginary or sometimes the real or eye witness exciting stories on the magic of witchcraft are told by the grand pa and grand ma in the villages and towns.

The other interesting part of the witchcraft is the existence of Ban Jhankris who live in the deep forests and by the side of small and perrenial streams. Ban Jhankri is the witch doctor from the forests. Ban Jhankri is normally believed to be dwarf full of long hanging hair covering his whole body. His every hair jingles like a tiny bell and stays in a dark cave deep in the forests. Ban Jhankri moves in pure and neat places only by the side of a small village streams during midnight only. Even now people believe that during calm and dark nights drumming and jinglings of small bells by the Ban Jhankri are heard in the forest if carefully listened to. Ban Jhankri are locally called '*Ultay*' (one who moves in opposite direction) and *"Sunkhuttay'* (one who has tiny legs) by the Nepalese. His small footsteps on opposite direction are believed to have been found even now. Superstition goes that sometime Ban Jhankri secretly comes to the village and takes away a small but selected boy to his cave in the forest without the knowledge of his guardian, keeps him confined in the cave for about 25 days, teaches him the *mantras* and brings him back to the village. During confinement or training period, Ban Jhankri teaches him some secret *mantras,* offers one small Jhyali, seven *mantras,* a piece of his beads and a piece of his long hair as a proof of his perfection in the cult as is normally believed. During the period of retreat, the boy is offered milk, kheer and small earthworms only as his food. The lady Ban Jhankri is very much fond of male human body and devours, if found. As such the Ban Jhankri keeps his pupil secretly without the notice of his wife during the retreat.

But the cult of Ban Jhankri which thrived in the deep forests from centuries is fast eroding because of demographic problems and environmental degradation in the hills. But it has remained as an invaluable segment of our mythology and will remain so for the posterity.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

THE SATTRA INSTITUTION OF ASSAM

❐ *Prof. Keshavananda Deva Goswami*

The word *'sattra'* is first used in the *Śatapatha Brāhmaṇa*. In the Bhagavata-purāṇa, it is used at many places. But in Assam Vaisnavism, the term has acquired a wider and distinctive meaning. It is more than a Buddhis Vihāra or a maṭh. The satras is Assam resemble, to a certain extent, the Vaisnavite maṭhas and akhārās of other parts of India. It is a peculiar type of Vaisnava institution, a centre of socio-religous and cultural activities of the people living around it.

Mahapurusa Sri Sankaradeva (1449-1568 A.D.), in order to propagate the religion of *bhakti*, established this unique and novel type of organisation with manifold activities in different aspects of life, besides religious.

The great guru has left a deep impress on Assamese life, literature and culture. The religion preached by him knew no caste, creed or colour. The *sattra* institution establisted by him and later on by his followers contributed immensely to the socio-religious development of Assam. In the words of Dr. B. Kakati, the *sattra* institution and the village *namghars* combined the functions of a village parliament, a village court, a village school and a village church. These institutions 'worked to a large extent towards spread of intellectual and cultural activities of the people. So it is difficult to imagine how deep and widespread was the influence of Sankaradeva on the cultural renaissance that burst forth in mediaeval Assam. Dr. S. K. Chatterji, in the *Journal of Assam Research Society,* 1967, rightly opines, — 'Shankaradeva is the greatest name in the history of Assamese literature and early Assamese culture.' Dr. Maheswar Neog in his *Shankaradeva and His Times,* has dealt with in detail about the contributions Sri Shankaradeva to different aspects of Assamese socio-cultural life.

In order to preach and propagate the neo-Vaisnavism in Assam, Shankaradeva adopted the attractive method of holding *kirtana* and dramatic performances. His brother Ramaraya constructed a temple for that purpose at his native place Bardowa. This institution became the nucleus of the Vaisnava organisation, which later on spread through the three Assamese states of Asa, Kamarupa and Cooch Behar in the form of regional establishments called *sattra* and numerous village temples known as *namghar*. In that sense, Bardowa or Batadrava in the present district of Nagaon in central Assam is the first *sattra* of Assam. The abodes of Shankaradeva and his succeessor Madhavadeva and other religious heads are generally called *sattra* or *than* (*skt. sthāna*). There is however, a difference between *sattra* and a *than*, the function of the latter being limited in some respects.

Function of a *sattra* have been classified into two categories : primarily they are to propagate the Vaisnava faith, to initiate disciple, to provide ethico-devotional codes and rules of conduct for neophytes and to hold daily as well as occasional divotional services. The secondary functions of the *sattra* are to see that good social relation is maintained among the fraternity, 'to develop the spirit of co-operation to provide adequate facilities' for the dissemination of ancient and traditional learning, including the cultivation of art and craft. Educational and cultural activities fall within the second category and apart from religion, this aspect is most important having direct bearing on the Assamese society. The art of book illustration by means of miniature was cultivated within the religious atmosphere of certain *sattras*. The illuminated manuscript *Bhāgavata Purāṇa*, Adi of the Baaisattra of the 16th century A. D., is the most ancient and rare specimen of this kind. The work betrays a style akin to the Apeticramsa school, and 'termed the Sattriya school due to its nativity in the *sattras* or the Vaisnava monasteries of Assom.' Shankaradeva also introduced the art of dancing mainly in connection with the dramatic performances, called *Bhaonā*. The Bargit and other similar songs, sung on the basis of classical rāgas, is also worth mentioning. The tradition of writing a particular type of drama on the model of those introduced by Shankaradeva and Madhavadeva was followed by the sattra pontiffs at different periods. The dramas of Shankaradeva and his chief disciple Madhavadeva, as also other successors of theirs are known popularly as Ankiya-nat. The

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

representation of these dramas are popularly known as bhaona. It is realy a matter of pride that these dramatic literature in Assamese show an uninterrupted continuity from the time of Sankardeva down to the present day. The sattra dances still possess a number of hestas, footwork patterns, distinctive costumes and a variety of masks. Puppet-dance, which is now almost on the verge of extinction was also cultivated in the *sattra* circle. Another important contribution of the *sattra* in the field of literature, is the introduction of biographical literature both in prose and verse. The prose style as found in the *carit-puthi* (biography of saints) has to be specially mentioned. Numerous dramas and devotional songs (Gita, Bhatima etc.) were composed by the Vaisnavas of the sattra institution at different periods and these enriched the Assamese literature.

Musical instruments like daba (damàma), negera and khol (either of clay or of wood) were made and prepared by the people of the sattra. The ceremonial high tray (sarai) for divine and reverential offerings, bookcase and bookstand (thagi or thaga) and the Holy padestal (asana or simhasana) all made of wood was found in the prayer-house, are engraved, painted and decorated in the sattras. Besides woodcarving like lion over elephant (of the simhasana,) wooden lampstand (gacha) and legs of a stool (karani), the process of puppet making either of rags or of bamboo, deserve appreciation. For the Bhaona performance, the people of the sattra prepare different types of costumes, decorations and other accessories. The craft of making artistic mat (kath) and plaited fans (bicani) with finely split cane sticks and the decorations thereon draws special attention. Women also play their roles by weaving Gosain-kapor (pieces of finely woven cloth placed at the alter) with various motifs, flowers and creepers. Many sattras were founded by the Vaisnavas at various places of the state. The total number of sattras in Assam is nearly six hundred at present. All were grouped under four schism or sect, called Samhati (sanghati). These four sects are : 1 Purasa samhati, 2. Brahma samhati, 3. Nika samhati, and 4. Kala samhati. Narowa (Bardowa, Kowamara (and Salaguri), Dighali (including Bhogabari) and Camaguri are the four main sattras of Purusa Samhati. The bar-bara-janiya or the group of twelve apostles appointed by Purusottama Thakura (grandson of Sankaradeva) the saru-bara-janiya or the group of twelve appointed by saru-thakur (i.e., the younger thakur, meaning, Caturbhuja, the youngest grandson of Sankaradeva) and the apostle appointed by Damodara Ata (nephew of Caturbhuja who is said to have been adopted as a son by Caturbhuja), with the approval of Caturbhuja's wife Kanaklata, fall under this Samhati. Likewise, we have four main sattras of Brahma Samhati. They are : Anuniati, Gadamur. Dakhinpat and Kuruwabahi. These sattras became very famous by receiving royal patronage during the Ahom period. Barpeta, Madhupur (in Koc Behar) Kamalabari and Belaguri are the four main sattras of the Nika Samhati. Gopala Ata, Aniruddha, Yadumani and Srirama were the four dominant figures of Kala samhati. From these principal ones many more sattras sprang up.

The sattra institution served the purpose of a school to impart general education For the smooth functioning of the sattra, the responsibilities of different works were entrusted to some persons. This group of sattra functionaries is always headed by the Superior called Adhika Sattradhikara. Gosain or Mahanta. As head of the institution, he can be inducted to the office either by lineage or by seniority of the particular family, and rarely election is also resorted to. In early days succession to the office of the Superior was determined on the basis of religious accomplishment and intellectual attainments only. But it has now become almost hereditary in most of the sattras.

The commanding house within the campus of a sattra is the Namghar or Kirtanghar. There is, however, a thin conceptual difference between the two; in the sattra the prayer house is generally called kirtanghar and very rarely called namghar. Sometimes it is also called harigriha, hari mandir or Gosainghar. Practically speaking the whole of Assam abounds in namghar to the extent of each village having at least one. The kirtanghar may be divided into two parts—the main hall and the Manikut, where the holy scripture is kept. A namghar may also have a manikut. The manikut

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

served the purpose of the store house and the library. The altar is called thapana, asana, simhasana or guru-asana (the seat of the guru). The kirtanghar is generally surrounded by hati (rows of sheds for elderly monks and celibrates), such as *udasinar hati*, *bhakatar hati* or *hati-baha*. Residences of the sattradhikara and that of his nearest kiths and kins are also built within the sattra compound.

Gradation of Sattra functioneries : The personal attendants of the superior are called aldhara. The Head may delegate his power to the Medhi (representatives). Pacani is the messenger of the Adhikar. The Muktiyar is like a Majumdar of some sattras. He is to issue the general orders and to perform the duty of a revenue officer. He is the Registrar of a sattra. The Khataniyar is a sattra official who maintains relations between the church temporal and the church divine. It may be mentioned here that many sattras received royal patronage and encouragement from the Ahom kings and nobles in the form of land grants and other benevolent donations. The duty of the Hatimata is to summon the clerics in the hati (sets of cloisters) to prayer or to occassional meetings of general nature. The Namghariya (although the prayer hall of the sattra is generally called Kirtanghar and not Namghar probably to give it a Sanskritic garb, the term 'Nam-Kirtan' for prayer services is used without exception) is appointed to the task of sweeping the prayer house and scrubbing its floor with wet pieces of cloth. Paladhariya is the watchman of the sattra. The fourteen number of prasangas or prayer services are performed daily in the sattra. This is done by the Namlagowa, who heads the congregational prayer. The Pathak is to recite the holy scripture (works of Sankaradeva and Madhavadeva) after the prasanga. The duty of the Bhagavati or Bhagati is to recite and expound the Bhagavata. The sattra orchestra, giving music performance during prasanga : and dramatic representations is called gayan-bayan and is formed by a number of drummers (Bayan) and singers (Gayan). The Sutrahara is the chief Natuwa (dancer, actor) of the sattra. He, with the help of gayan-bayan is to impart training in dance and music. Likewise the Gayan is also to impart training in vocal music and the Bayan in instrumental music. Other dancers are called Natua. Offerings made to God in prasangas are distributed in the assembly as sacred food (prasada). The distribution is done by the Deuri or Bilaniya. Bharali (Bhandari) is another officer who is in charge of the general store. Copyists of the sattra are called Likhak. Each sattra maintains a library of manuscripts of its own. So the Likhak is to copy both rare and the new manuscripts for the use of the sattra library. Sometimes we find the Kakati (scribe) who is the private secretary to the sattradhikar. Persons who paint, engrave and decorate the walls and posts of sattra buildings are called Khanikar. They also provide miniature illustration to manuscripts. Moreover, they use to make masks (mukha) and other article required for drammatic performances.

There are few more functionaries like Oja, Satola and Bahuwa etc. These are in main the functionaries of a sattra. There was no salary system for their services. Persons were selected from any caste or community on the basis of their religious accomplishment and distinctive aptitude. A descendent of Candivara Kayastha, the able administrator of the Bhuyan-rajya, Sankaradeva himself was a non-Brahmin and therefore, he selected persons irrespective of any caste or community to be in charge of the above offices. This was followed by his immediate successor and others who also maintained that succession even to the Headship and other offices of the sattra is to be regulated by merit and not by birth alone.

BIBLIOGRAPHY

Barua, Birinchi Kumar – *Śankardeva, Vaiṣṇava Saint of Assam.*

Dubey, S.M. (ed) – *The North Eastern Research Bulletin*, Dibrugarh University, 1974.

Dutta, Kesav Narayan (ed) - *Aspects of the Heritage of Assam,* Souvenir of the All India History Congress, Gauhati. *Sattra Sanskritir Ruprekhā.*

Goswami, K.D.- *History and Development of the Puruṣa Samhati Sect of Assam Vaiṣṇavism* (type-scripts copy)

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा

राजेन्द्र-साहित्य-परिषद्, पटना, तुलसी जयन्ती 1996 मे भाषण करैत ।

परिशिष्ट

- चित्रावली
- सन्तति-लता
- साहित्य-मनीषीक दृष्टिमे
- प्रकाशन : मूल ओ अनूदित
- अनूदित रचनाक बानगी
- पुरस्कार, प्रशस्ति, अभिनन्दन
- समाचारपत्रमे
- Contributors
- याज्ञिक

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चित्रावली

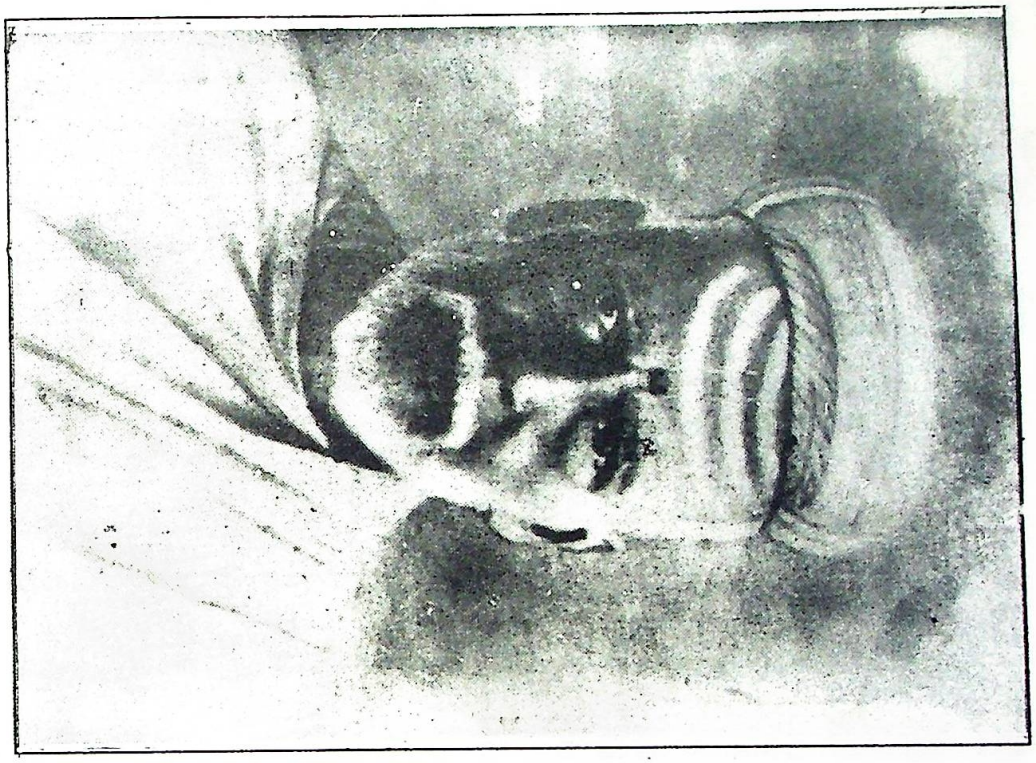

पिता महावैयाकरण दीनबन्धु झा

माता योगेश्वरी देवी

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पिताक संग तीनू भाए

गुरु पं० मधुसूदन मिश्र

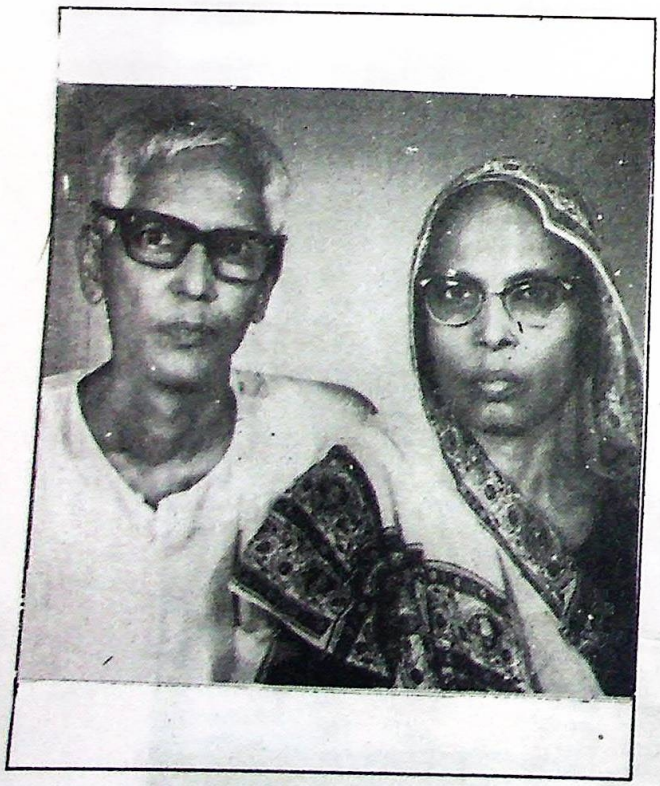

पत्नी श्रीमती सीता देवीक संग

पिता दीनबन्धु झाक प्रस्तरमूर्ति

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सन्ततिवर्गक सङ्ग (नाम पृ. १३ पर देखू)

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

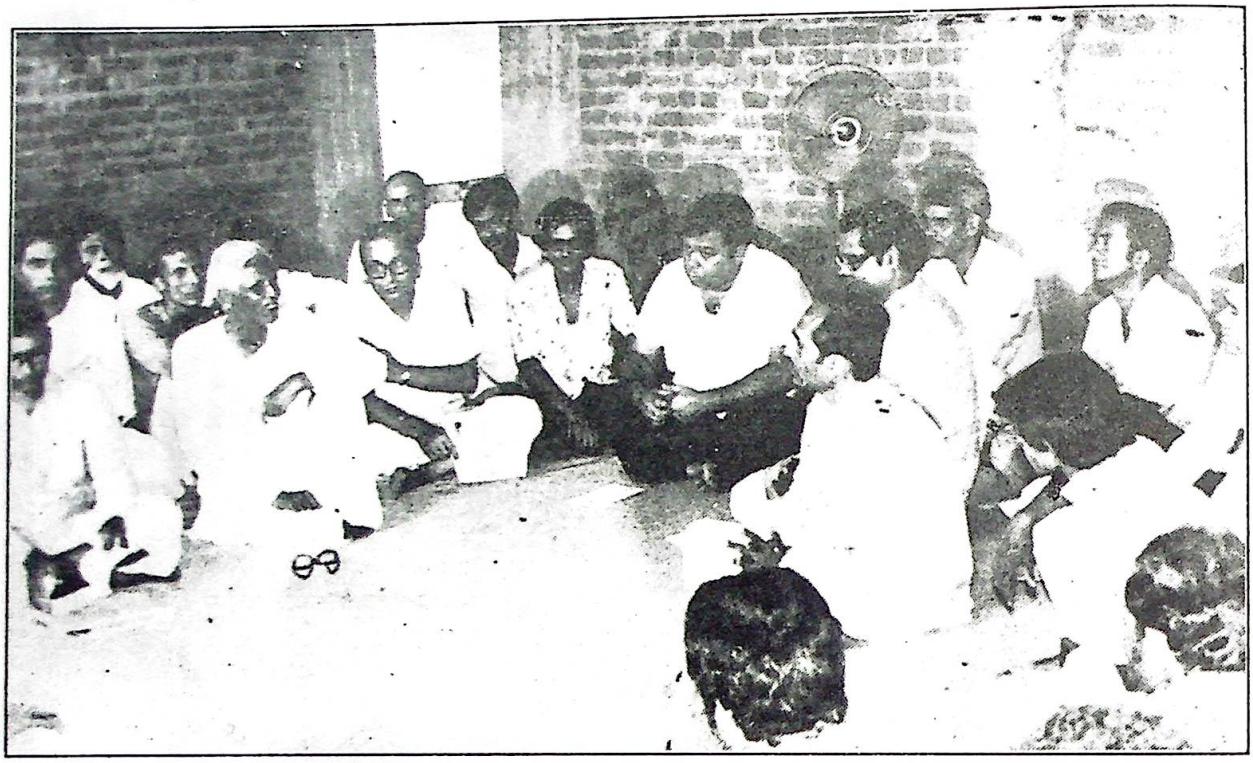

नबतुरिआ लेखक सम्मेलन (११.७.८२) कें सम्बोधित करैत

युवा-लेखन पटनाक कथा-संगोष्ठी (२२.११.८८)

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्रो. हरि मोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पणक अवसर पर कविवर आरसी प्रसाद सिंहक संग

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय साहित्यिक अनुवाद कार्यशाला (९१.११.९१–२.१.९२) । संगमे वेदनाथ झा, जगदीश प्र. कर्ण, छत्रानन्द सिंह झा, गंगेश गुंजेश, एवं रमानन्द झा 'रमण'

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

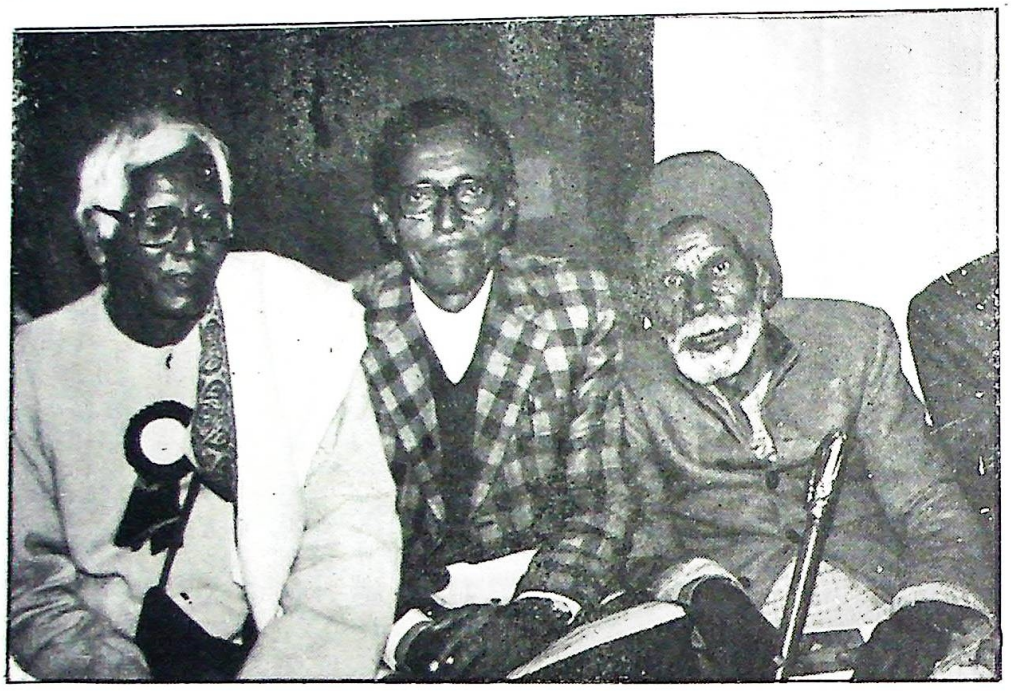

महाकवि यात्री ओ प्रो. सुरेश्वर झाक संग

सगर राति दीप जरए, विराटनगर (१२.४.९२) मे कथा-पाठ करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

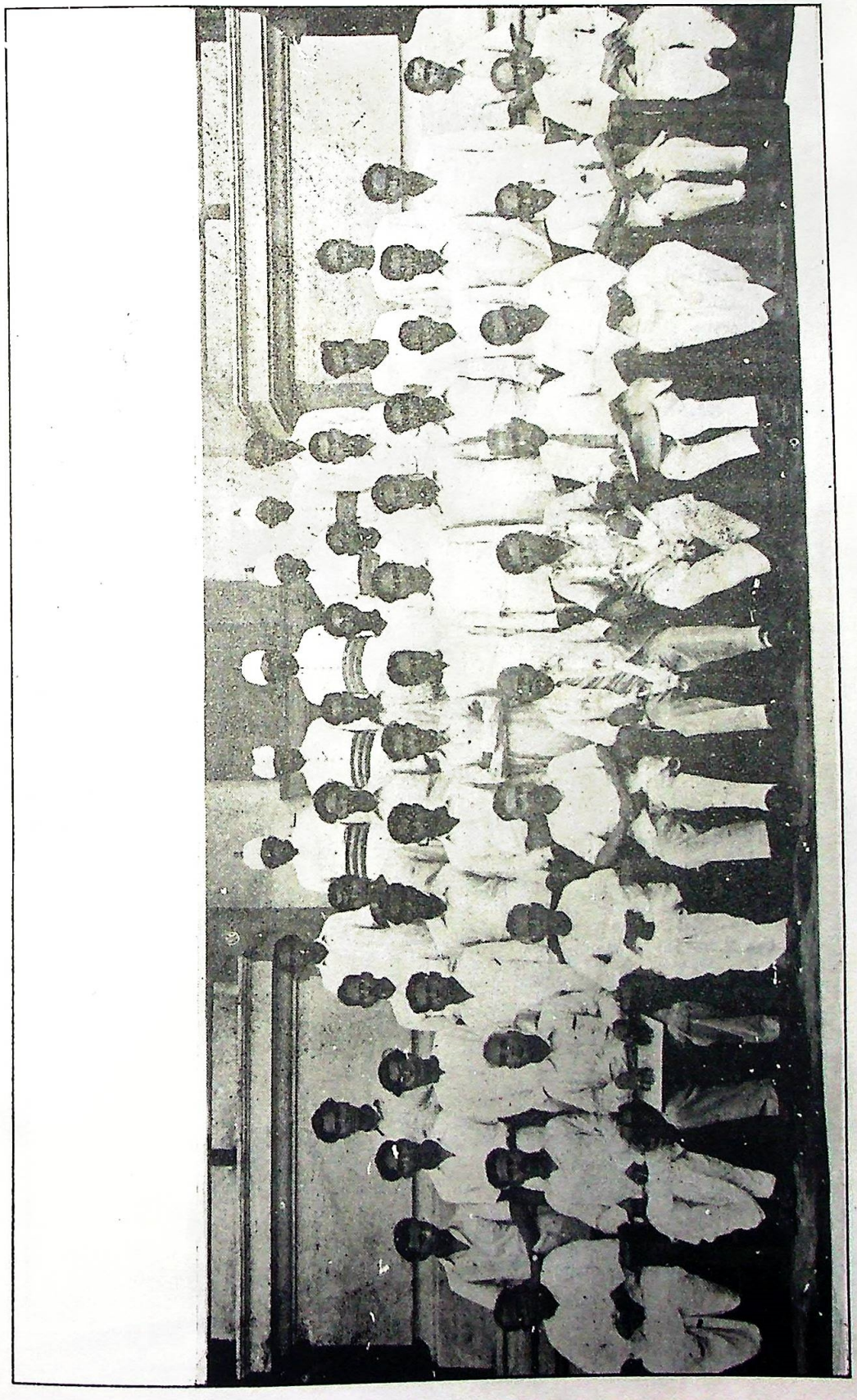

गोविन्द झा तेसर पंक्तिमे बामासँ छठम–अनुवाद विभागक प्रमुख अनवार अहमद बिदाई-समारोह मे । पहिल पंक्तिमे बामासँ तेसर रामलोचन शर्मा 'कण्टक'; पांचम अनवर अममद; आठम सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' (१९५३ ई.)

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं० श्री गोविन्द झाक राजभाषा-विभागसँ बिदाइक समारोह ३१.१०.८१ साहित्यिक बन्धुद्वय पहिल पंक्तिमे बामासँ सुशील झा (२), पाण्डेय कपिल (३), डा. बदरीदास (७), गोपेशजी (८), डा. शिववंश पाण्डेय (१०).

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

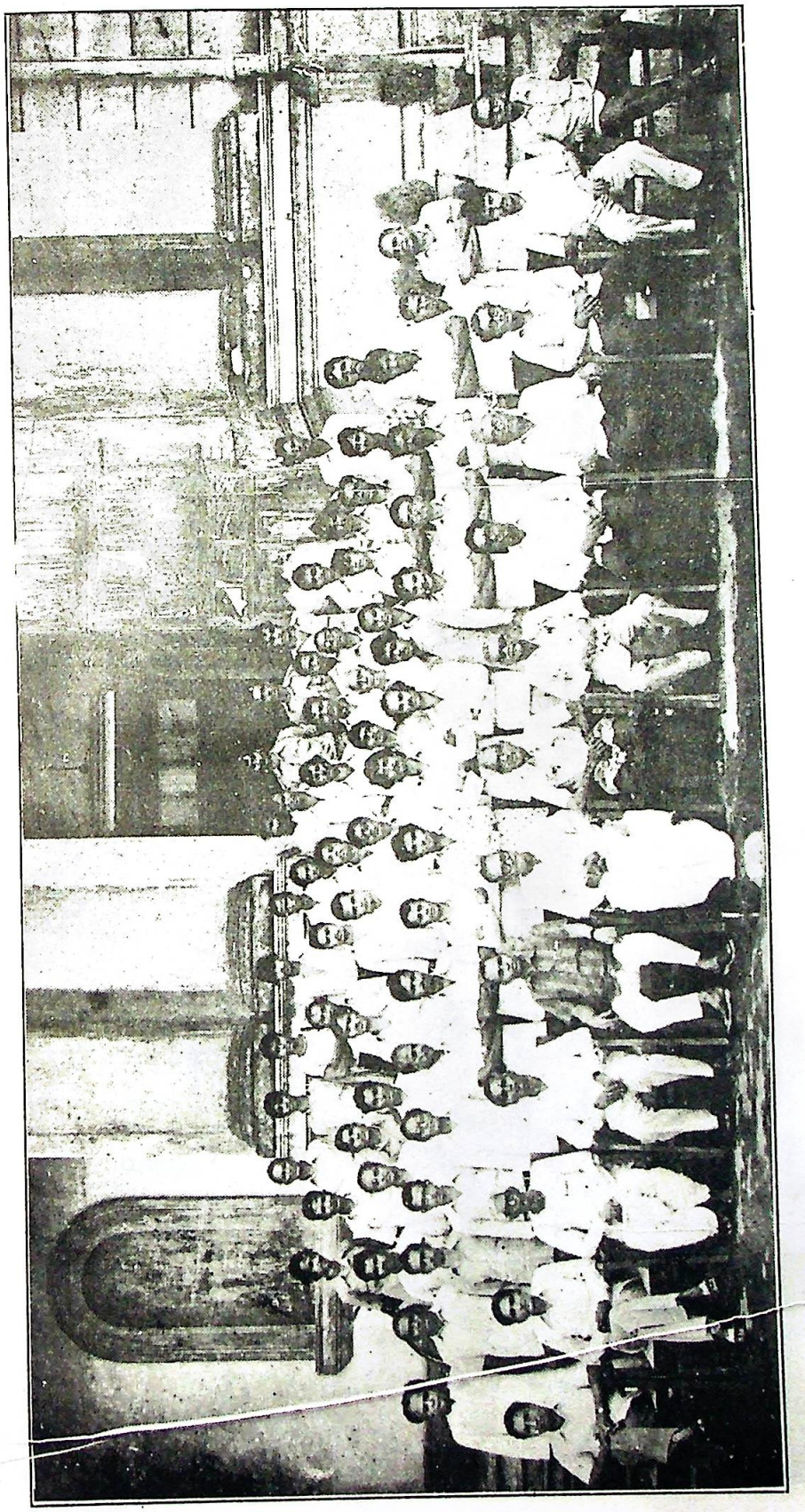

राजभाषा-विभागक सकल सहकर्मीक बीच,सचिव, उदित नारायण रायक बिदाइ (१९७८) मे

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मोहन किरफूफ बिआइ-समारोहम (८.५.८०) सहकर्मीक बीच

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

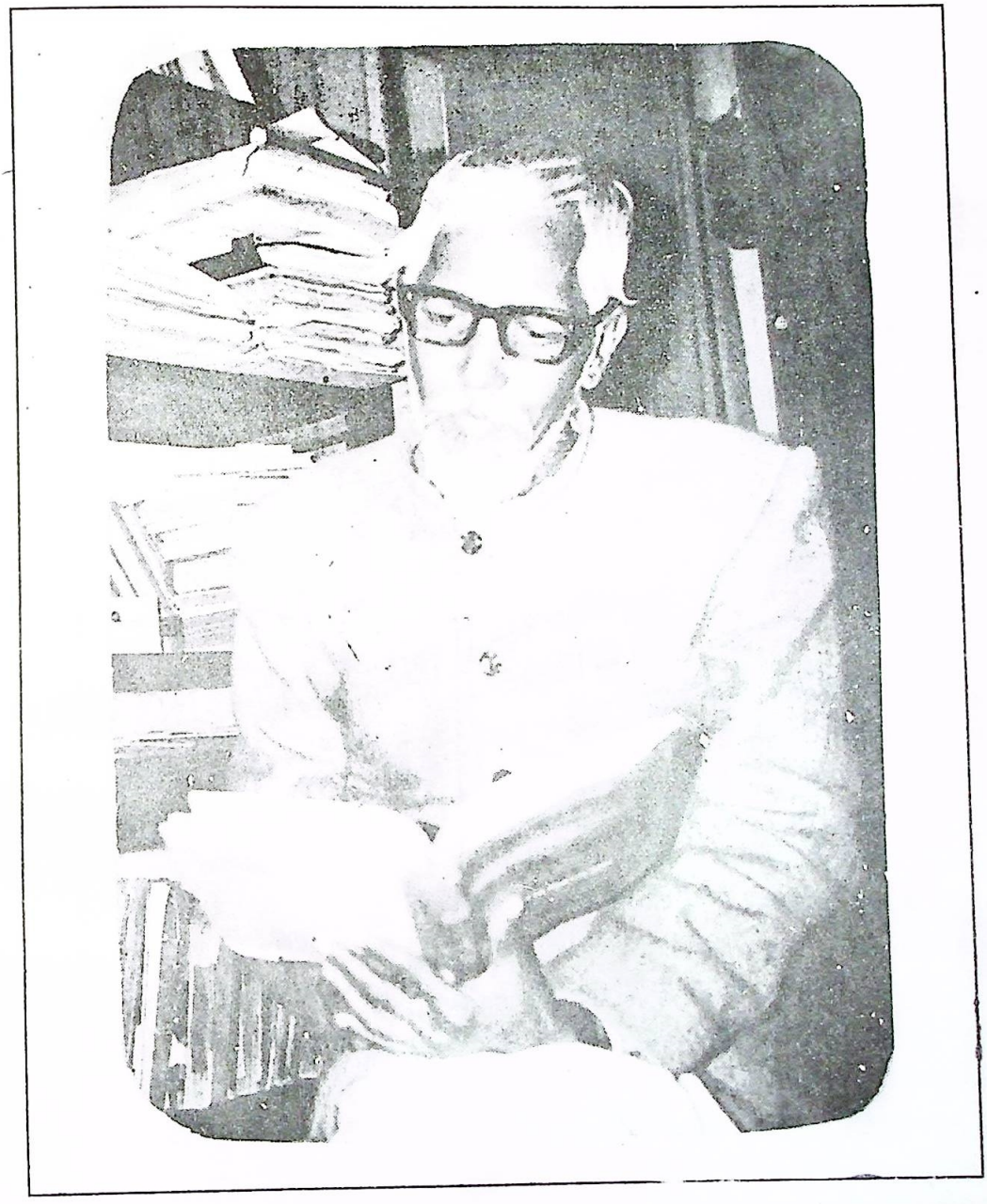

एकान्त साधनालीन यती

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

सन्तति-लता

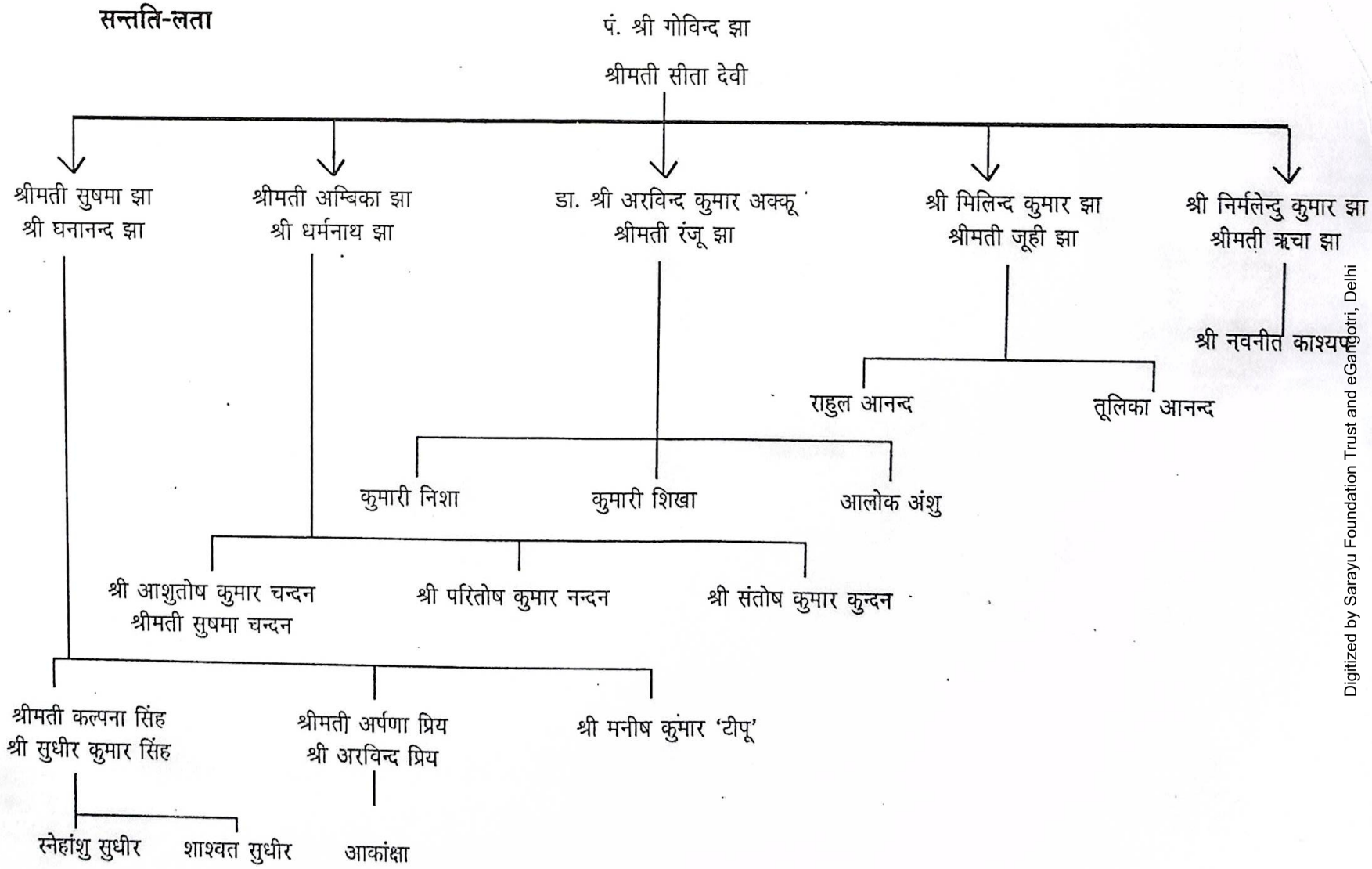

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं. गोविन्द झा : साहित्य-मनीषीक दृष्टिमे

MM. DR. UMESHA MISHRA, M. A., D. litt.

I have great pleasure in certifying that Pandit Govinda Jha, son of Mahavaiya-karana Pandit Dinabandhu Jha (of Phulagama, a village in the Nepal territory) is known to me for the last several years. He has studied under his father a well-known scholar of Sanskrit and has obtained the highest title in Sanskrit literature from the Bihar Sanskrit Association. He has written several poems in Sanskrit and his mother-tongue Maithili which have been very much appreciated by scholars. I have myself seen some of them and I am satisfied with the intelligence and scholarship of the author.

Coming from a well-known family of traditional Sanskrit scholarship Pandit Govinda Jha is very well equipped with the qualities of a good Sanskrit teacher. He is well-behaved and possesses a very good moral character. He carries my best wishes.

Allahabad 27.9.47.

RAMANATH JHA

I know Pandit Govinda Jha intimately since a very long time. He belongs to one of the most respectable shrotriya families of Mithila renowned alike for the cultivation of learning and piety. His father, Mahavaiyakarana Pandit Dinabandhu Jha is one of the greatest scholars of Mithila, the last perhaps of that race of erudite Pandits who have shed lustre on the name of Mithila throughout the whole of Aryavarta. Of such a worthy father, Pandit Govinda is a worthy son. He has studied the entire Vyakarana Shastra in the old orthodox way and passed the Acharya Examination of the Bihar Sanskrit Association with great credit. He has a natural in-sight into sahitya shastra which he has studies most extensively with the result that Pandit Govinda Jha is an excellent poet of Hindi and Maithili, widely popular far beyond his years, and some of his works have been published under the auspices of the Maithili Sahitya Parisad, Darbhanga, and elsewhere. He possesses, moreover, a working knowledge of English which is a great asset to him. An erudite scholar, a rising poet, a thoughtful writer, he has a thirst for knowledge and capacity to learn, and promises therefore to add to the glory of his native land by his manifold services. Of amiable disposition & exemplary character, unostentatious & conscientious, he is sure to attract the attention of men of light and learning wherever he may find himself and I wish him every success in life.

Raj Library, Darbhanga, 20.9.47.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

DR. AMARANATH JHA

Vice Chancelor, Benares Hindu University

I have pleasure in stating that I know Pandit Govind Jha, who has taken the Acharya degree in Vyakarana. He is also thoroughly familiar with the leading works in Sahitya and Alankara. He has also a sound knowledge of Hindi. He belongs to a family of well known Pandits and has, therefore, had the advantage of being brought up in an atmosphere of scholarship. I consider him to be thoroughly suitable for appointment as teacher in Sanskrit and Hindi.

Darbhanga, 7.6.1948.

पं. श्री त्रिलोकनाथ मिश्र, प्राचार्य

रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा

दरभङ्गासमीपस्थनेपालराज्यान्तर्गत-फुलगामाग्रामे निवासी पण्डितमण्डलमण्डन-स्वनामधन्य पण्डितश्रीदीनबन्धुझाशर्म्मतनूजन्मा समधिगत-व्याकरण-साहित्यादिविविधशास्त्रमर्म्मा पण्डितः श्रीगोविन्दझाशर्म्माऽसौ मम चिरपरिचितः । पठितापठितसंस्कृतग्रन्थकदम्बकतत्त्वानुभवबल प्रथितव्युत्पत्तिकौशल एष महाशयः संस्कृत-हिन्दी-मैथिलीविषयकानवद्य-हृद्य-गद्य-पद्यरचनास्वपि वचनावीताममलकीर्तिमुपेत्य सौहार्देन सौशील्येन क्षमया च विलक्षणो विचक्षणोऽयम्प्रतिक्षणमस्मादृक्षाणां प्रेक्षावतां क्षमतेतरामानन्दवृन्दंजनयितुमिति महितां योग्यतामुपेयुषेऽस्मै विदुषे प्रसन्नमनाः प्रतिष्ठापत्राम् अहं स्वयमर्पयन्नाशासे स्थानविशेषमासादयन्नयमनायासेनैव सर्वान् जनान्निजयोग्यतया प्रोक्तयाऽवश्यम्प्रसादयेदिति ।

भाद्रशुक्ल 5 संवत् 2004

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कृति-सूची

मौलिक

1. **विद्यापतिक आत्मकथा** (उपन्यास), शेखर प्रकाशन, पटना, 1992 ई.
2. **सामाक पौती** (कथासंग्रह), भाखा-प्रकाशन, पटना, 1990
3. **नखदर्पण** (कथासंग्रह), भाखा-प्रकाशन, पटना, 1995
4. **बसात** (नाटक), दरभंगा प्रेस कम्पनी लि., दरभंगा, 1954
5. **राजा शिवसिंह** (नाटक), लेखक द्वारा प्रकाशित, 1973
6. **अन्तिम प्रणाम** (नाटक), चेतना समिति, पटना, 1973
7. **लोढ़ानाथ** (नाटक), अप्रकाशित, 1988
8. **रुक्मिणी-हरण** (नाटक), चेतना समिति, पटना, 1990
9. **मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ** (आलोचना), मैथिली अकादमी, पटना, 1988
10. **उमेश मिश्र** (जीवनी), साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1983
11. **उच्चतर मैथिली व्याकरण**, मैथिली अकादमी, पटना, 1979
12. **मैथिलीक उद्गम ओ विकास**, मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता, 1963; (पुनर्मुद्रण, मैथिली अकादमी), 1988
13. **लघु विद्योतन** (व्याकरण), दरभंगा प्रेस कं. लि., दरभंगा, 1963
14. **छन्दशास्त्र**, दरभंगा प्रेस कं. लि., दरभंगा, 1960; (पुनर्मुद्रण), 1986
15. **मैथिली भाषा का विकास** (हिन्दी), बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1973
16. **मैथिली शब्दकोश**, मैथिली अकादमी, पटना, 1992
17. **विद्यापति** (अपभ्रंश) शब्दकोश, राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना, अप्रकाशित
18. **प्रलाप** (कवितासंग्रह), अप्रकाशित
19. **सीरध्वज** (कथाकाव्य), अप्रकाशित
20. **कालकूट** (नाटक), अप्रकाशित

अनूदित

1. **नेपाली साहित्यक इतिहास**—मूल कुमार प्रधान, अंग्रेजीसँ, मैथिली, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1991
2. **चन्दाझाकृत मैथिली रामायण**—मैथिलीसँ हिन्दी, भुवनवाणी ट्रष्ट, लखनऊ, 1987
3. **पाताल भैरवी**—उपन्यास, मूल लक्ष्मीनन्दन बड़ा, असमियासँ मैथिली, साहित्य अकादेमी, दिल्ली
4. **चण्डीदास**—मूल सुकुमार सेन, अंग्रेजीसँ मैथिली, साहित्य अकादेमी, दिल्ली, 1983
5. **मालविकाग्निमित्र**—नाटक, मूल कालिदास, संस्कृतसँ मैथिली, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1947
6. **भारतीय आर्यभाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण**—मूल जौन बीम्स, अंग्रजीसँ हिन्दी, चौखम्बा, वाराणासी, मुद्रणाधीन
7. **प्राचीन भारत**—इतिहास, मूल रामशरण शर्मा, अंग्रेजीसँ हिन्दी, एन. सी. ई. आर. टी; नई दिल्ली, 1990
8. **प्राचीन भारतका आर्थिक इतिहास**—मूल प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, अंग्रेजीसँ हिन्दी, जानकी प्रकाशन, पटना, 1986
9. **पूर्वकालीन भारतीय समाज**— इतिहास, मूल रामशरण शर्मा, अंग्रेजीसँ हिन्दी, मोतीलाल बनारसीदास, 1984
10. **कका देउता आरु नाति ल'रा**—मूल लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ, अरामिआसँ मैथिली, प्रकाशनाधीन, साहित्य अकादेमी, दिल्ली
11. **अभिज्ञानशाकुन्तल**—सरलीकृत, अप्रकाशित
12. **चित्राङ्गदा**— रवीन्द्रकृत, बंगलासँ मैथिली पद्यानुवाद, अप्रकाशित
13. **वीराङ्गना**—माइकेल मधुसूदन दत्त कृत, बंगलासँ मैथिली अनुवाद, अप्रकाशित
14. **स्वप्नवासवदत्त,** मूल भास, संस्कृतसँ मैथिली, अप्रकाशित

सम्पादित

1. **विभागसार**—विद्यापतिकृत, धर्मशास्त्र, मैथिली अनुवाद सहित, मैथिली अकादमी, पटना, 1976
2. **विभागसार**—हिन्दी अनुवाद सहित, राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना, प्रकाशनाधीन
3. **गङ्गावाक्यावली**—विद्यापतिकृत, धर्मशास्त्र, हिन्दी अनुवाद सहित, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1990

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

4. **कीर्तिलता**—विद्यापतिकृत, अपभ्रंशकाव्य, मैथिली अनुवाद सहित, मैथिली अकादमी, पटना, 1992
5. **विद्यापति-गीतावली**— गीतसंग्रह, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
6. **वर्णरत्नाकर**—ज्योतिरीश्वरकृत, काव्यशास्त्र, प्रो. आनन्द मिश्रक संग सम्पादित, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
7. **कीर्तिपताका**—विद्यापतिकृत, अपभ्रंशकाव्य, हिन्दी अनुवाद और संस्कृत छाया सहित, शोधपूर्वक सम्पादित, सह-सम्पादक, डा. शशिनाथ झा, नाग प्रकाशन, दिल्ली, 1992
8. **मिथिलातत्त्वविमर्श**—म. म. परमेश्वर झा कृत, सुसम्पादित, विस्तृत भूमिका सहित, मैथिली अकादमी, पटना, 1977
9. **विद्यापतिकृत वर्षकृत्य, गयापत्तलक** ओ **व्याड़ीभक्तितरङ्गिणी**, सानुवाद सम्पादन, अप्रकाशित
10. **मुदितकुवलयाश्व,** वंशमणिकृत, मैथिली अकदमीमे

निबन्ध आदि

(क) सामान्य विषय

1. *पुस्तक-प्रेम*—मैथिली साहित्य संग्रह, संम्पादक रमानाथ झा
2. *दौड़ि चली तँ ठेसि खसी,* आकाशवाणीमे प्रसारित

(ख) साहित्यालोचन

3. *मध्ययुगीन मिथिलामे प्रचलित कतिपय आस्पद*—श्री रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ
4. *लिखनावलीमे कतिपय विवेच्य शब्द*—कविशेखर पुष्पाञ्जलि
5. *पाण्डित्यक कसौटी : राधाविरह*— अमर कीर्ति कवि तोर
6. *श्रीसुमनजीक अनुवाद-साधना*—श्रीसुमन-साहित्यसौरभ
7. *मैथिली गद्यक विकास : व्याकरण ओ रचना*—साहित्य अकादमी राष्ट्रीय संगोष्ठी, पटना
8. *मैथिली पद्यक विकास : मैथिलीमे प्रबधकाव्य ओ महाकाव्य*—राष्ट्रीय संगोष्ठी, कलकत्ता
9. *मैथिली रामायणमे छन्द*—राष्ट्रीय रामायण संगोष्ठी, दरभंगा
10. *विद्यापतिक गीतमे पाठशुद्धि*—मैथिली साहित्य परिषद पत्रिका
11. *भूमिका,* विद्यापति-गीतावली, मैथिली अकादमी, पटना
12. *भूमिका,* गोविन्दास भजनावली, मैथिली अकादमी, पटना
13. *भूमिका,* वर्णरत्नाकर, प्रो. आनन्द मिश्रक संग, मैथिली अकादमी, पटना
14. *गोविन्ददासक कृष्णलीला*—चेतना समिति, पटना
15. *संस्कृत मैथिलीक संक्रमण-काल*—मैथिली अकादमी, पटना
16. *मैथिली गीतिसाहित्यक वस्तुपक्ष*—मैथिली अकादमी, पटना
17. *साहित्य एवं प्रतिबद्धता*—मैथिली अकादमी, पटना
18. *मिथिलामे बंगला-साहित्यक प्रचार*—मैथिली अकादमी, पटना
19. *समालोचा आ परम्पराक अवदान*—मैथिली अकादमी, पटना
20. *हमर रचना-प्रक्रिया*—संकल्प, सुपौल
21. *लोक-साहित्य की थिक ?*— मिथिला-मिहिर. पटना
22. *मैथिली नवीन कथा*— मिथिला-मिहिर, पटना
23. *मैथिली साहित्य का परिचय*—परिभाषा ?
24. *भारतीय चिन्तनमे मिथिलाक योगदान*—चेतना समिति, पटना
25. *भूमिका*—कीर्तिपताका, नाग प्रकाशन, नई दिल्ली
26. *भूमिका*—कीर्तिलता, अप्रकाशित
27. *विद्यापतिक आत्मकथाक आलोचना प्रत्यालोचना*— संकल्प, सुपौल

(ग) भाषालोचन

28. *अन्तःस्थ य् और व्*—साहित्य (त्रैमासिक), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना, 1955
29. *Verb Conjugation in Maithili*—JBRS, Patna, 1958
30. *भूमिका*—भारतक भाषा-सर्वेक्षण, मैथिली अकादमी
31. *मैथिली नवजागरणक अग्रदूत : सर जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन*—मिथिला-मिहिर, पटना, 1962
32. *धातुपाठविषये केचन विचाराः*—मनीषा, दरभंगा
33. *विधि की भाषा*—राजभाषा पत्रिका, पटना
34. *न्यायालयमें अंग्रेजी का प्रवेश कैसे हुआ ?*—राजभाषा पत्रिका, पटना
35. *आधुनिक भारतीय भाषा और मैथिली*—मिथिला दर्शन, कलकत्ता
36. *की मैथिली मरि सकैत अछि ?*—निखिल भारतीय मैथिलीभाषी छात्र-संघक प्रतिनिधि सम्मेलन स्मारिका, पटना, 1980
37. *विद्यापति ओ भाषा-परिवर्त्तनक प्रवाह*—हालचाल, पटना, नवम्बर, 1987
38. *समकालीन कविताक भाषा*—वैदेही समिति, दरभंगा, 1994

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

39. *मैथिली शब्दकोशक आलोचना-प्रत्यालोचना*–मिथिला-वाणी (त्रैमासिक), जनकपुर, वर्ष ।, अंक- 3, विक्र० 2051.
40. *श्रीमान अखरखौकू, सावधान*–भंगिमा, पटना
41. *नागार्जुन और उनकी भाषा*–अप्रकाशित ।
42. *रमानन्द रेणुक भाषा : एक सिंहावलोकन*–अप्रकाशित ।
43. *वर्णक्रमिक विन्यास*–अप्रकाशित ।

(घ) इतिहास ओ जीवनी

44. *New Light on Some Karnata Kings of Mithila*; JGRS, Allahabad
45. *भूमिका*–परमेश्वर झाक मिथिला तत्व-विमर्श, मैथिली अकादमी, पटना
46. *भूमिका*–विद्यापतिकृत विभागसार, मैथिली अकादमी, पटना
47. *की विद्यापति बंगाल गेल छलाह ?*–चेतना समिति, पटना
48. *संस्कृति की थिक ?*–चेतना समिति, पटना
49. *संस्कृति का उद्‌भव कैसे होता है ?*–राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्माक अभिनन्दनग्रन्थक हेतु लिखल ।
50. *खँड़हरमे भुकभुकाइत एकटा दीपः विद्यापति ठाकुर*–मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना
51. *देशक सभसँ पुरान पाबनि :* छठि–देस-कोस, नवारम्भ, अंक 1.
52. *विद्यापतिक रूप*–मिथिला मिहिर, पटना
53. *भारतीय लिपियाँ और देवनागरी*–इण्डियन एअर लाइन्स, ईष्टर्न जोनक हिन्दी रोमिनार, पटना 1987, अप्रकाशित

(ङ) सामाजिक

54. *हम आ हमर माटि-पानिक संस्कृति*–माटि पानि, अक्टू. 1983
55. *कनेक अपन मुह तँ देखल जाए*–लोकवेद, मार्च 1987
56. *पोखरि*–भाखा मासिक, पटना
57. *मिथिलाक जन-देवता : महादेव*–मिथिला मिहिर, पटना
58. *विश्वविद्यालय-शिक्षा पद्धति :* एक सुझाओ–मिथिला-मिहिर, पटना
59. *सासु-पुतोहुक झगड़ा :* एक विश्लेषण–मिथिला-मिहिर, पटना
60. *श्रोत्रियशिरोमणि कांचीनाथ बाबू*–विद्यापति सेवा-संस्थान,दरभंगा, स्मारिका.
61. *केओ अहाँक जीह घीचि रहल अछि*–मैथिली संघर्ष, प्रवेशांक, जनवरी 1995

(च) नाट्यशास्त्र

62. *स्व. शेखरजीक नाट्य-सिद्धान्त*–भंगिमा, 1990
63. *मैथिली रंगमंच : प्रयोगक चाक पर*–भंगिमा, 1989
64. *ग्रामांचलक मैथिली रंगमंच*–स्मारिका, अरिपन, पटना, 1984
65. *एकांकी ओ रंगमंच*–चेताना-समिति, पटना
66. *रंगमंच आ नाटककारक भूमिका : काल्हि आ आइ*–भंगिमा, पटना
67. *मैथिली नाटक : आरम्भ से अब तक*–समकालीन परिभाषा
68. *साहित्यक प्रति रंगमंचक दायित्व*–भंगिमा, पटना
69. *नपुंसक स्वर बदलल अछि*–लोकवेद, पटना

(छ)साक्षात्कार

70. मिथिला लोक संवाद, दिल्ली
71. *मैथिल गल्पेर विशिष्ट रूपकार*–साक्षात्कर्त्ता बांगला गल्प अकादमी पत्रिका, हेमन्त अंक–1401 (1994)
72. *Of life Literature and Laurels*—Pratibha India, Delhi; Vol xiii No 2, Jan—March, 1994.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अनूदित कृति

कृति	कतए प्रकाशित	भाषा	अनुवादक
1. *प्रभात* (कविता)	आज, साप्ताहिक, 1938	हिन्दी	स्वयम्
2. *सामाक पौती*(कथा)	कहानी, प्रयाग, 1952	हिन्दी	जितेन्द्र
,, ,,	हिन्दुस्तान, दिल्ली, 1,1,1995	हिन्दी	विभा रानी
3. *जरल जौरक ऐँठन*	समकालीन भारतीय साहित्य, 1981-82	हिन्दी	प्रवासी
4. ,, ,,	विपुला, हैदराबाद नवम्बर 1983	तेलुगु	डा. ए. सी. रामानुजाचारी श्री विरंचि
5. *पातक मनुक्ख*	कादम्बिनी	हिन्दी	श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय
6. ,, ,,	विपुला, मार्च 1995	तेलुगु	श्री विरंचि
7. *अयाचीक डीह पर*	समकालीन भारतीय साहित्य 1993	हिन्दी	श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय
8. ,, ,,	मातृभूमि, साहित्य वार्षिक, 1995, कांजिकोड	मलयालम	–
9. *एक धरिका अमोट*	नव भारत टाइम्स	हिन्दी	सुभाष चन्द्र यादव
10. ,,	विपुला 1995	तेलुगु	श्री विरंचि
11. ,,	प्रतिभा इंडिया	अंग्रेजी	स्वयम्
12. *अन्तिम एकन्नी*	राष्ट्रिय सहारा	हिन्दी	श्रीमती प्रतिमा पाण्डेय
13. *बसात* (नाटक)	संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	संस्कृत	डा. श्री शशिनाथ झा
14. *विद्यापतिक आत्मकथा*	आधार प्रकाशन, हरियाणा	हिन्दी	डा. श्री तारानन्द वियोगी
15. *उमेश मिश्र* (जीवनी)	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	अङरेजी	डा. श्री जयकान्त मिश्र

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Pratibha India, Vol. XIII No. 4, July-Sept. 1994

MAITHILI SHORT STORY

A PIECE OF MANGO CAKE

Govinda Jha

POUNDS CANNOT DETER you from running after a penny. A good saying indeed. My wife Kanta is a fine example. We live in a capital city, where one can get any and every thing one may want. I have always been fulfilling her demand even of the strange things of her rustic taste rarely found in any town, such as flour of finger millet (*marua*), green leaves of *tilkor*, of *patua* and of *arikonch*, fruit of wild citron and the like. Nevertheless as soon as I came back from my village home and stepped in, she received me with her usual question, 'Have you brought anything from your village?'

I retorted sharply, 'Yes. I have brought a lump of earth from your devastated kitchen garden. What else is left intact there worth bringing?'

She returned in the same coin, 'Thank you for the same,' and immediately searched my briefcase and lo! there was no lump of earth. Instead, she found out something more valuable than that. It was a piece of mango cake. A smile spread on her face and the children jumped. She unpacked it, tore three small pieces out of it and handed over to my three children one each. Then she gazed and smelt it and exclaimed, 'Good! It's of pure Bambai mango. Where did you find it, my love?'

'I will tell you later. Meanwhile keep it with care for the guests.', saying this I went for my bath. As soon as I got back and sat at the dining table, she came with a plate of snacks and placing it before me asked the same question, 'Now will you kindly tell me who gave you such a nice mango cake?'

I had to narrate the whole story.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

VIPULA Telugu Momthly, Hyderabad, August 1995

గోవింద్ ఝా

మామిడితాండ్ర

వేలు, లక్షలు మూలుగుతూ ఉండవచ్చు. అయినా రూపాయిలు, పైనలు కూడబెట్టుకోవడంలో ఎలాంటి అశ్రద్ధ వుండదు... అన్నది నామడి.

దీనికి ప్రత్యక్ష ఉదాహరణ నా భార్య కాంత.

నేను ఆమె అలవాట్లు, అభిరుచులు, పల్లెటూరి కోరికలు తీర్చటానికి ఎంతగానో కృషిచేశాను. ఇంకా చేస్తున్నాను.

అయినా ఎప్పటికప్పుడు ఏదో ఒక ఆకాంక్ష మొలకెత్తుతూనే ఉంటుంది.

నేను మా స్వగ్రామం వెళ్లి అప్పుడే తిరిగి వచ్చాను. 'మీ పల్లెటూరినుంచి మాకేం తెచ్చారు?' అని అడిగింది కాంత.

'అక్కడి కూలిపోతున్న ఇంటి దొడ్డిలో నుంచి ఇంత మట్టి తీసుకువచ్చాను. అంతకన్నా అక్కడ ఇంకేం మిగిలివుంది?' అని

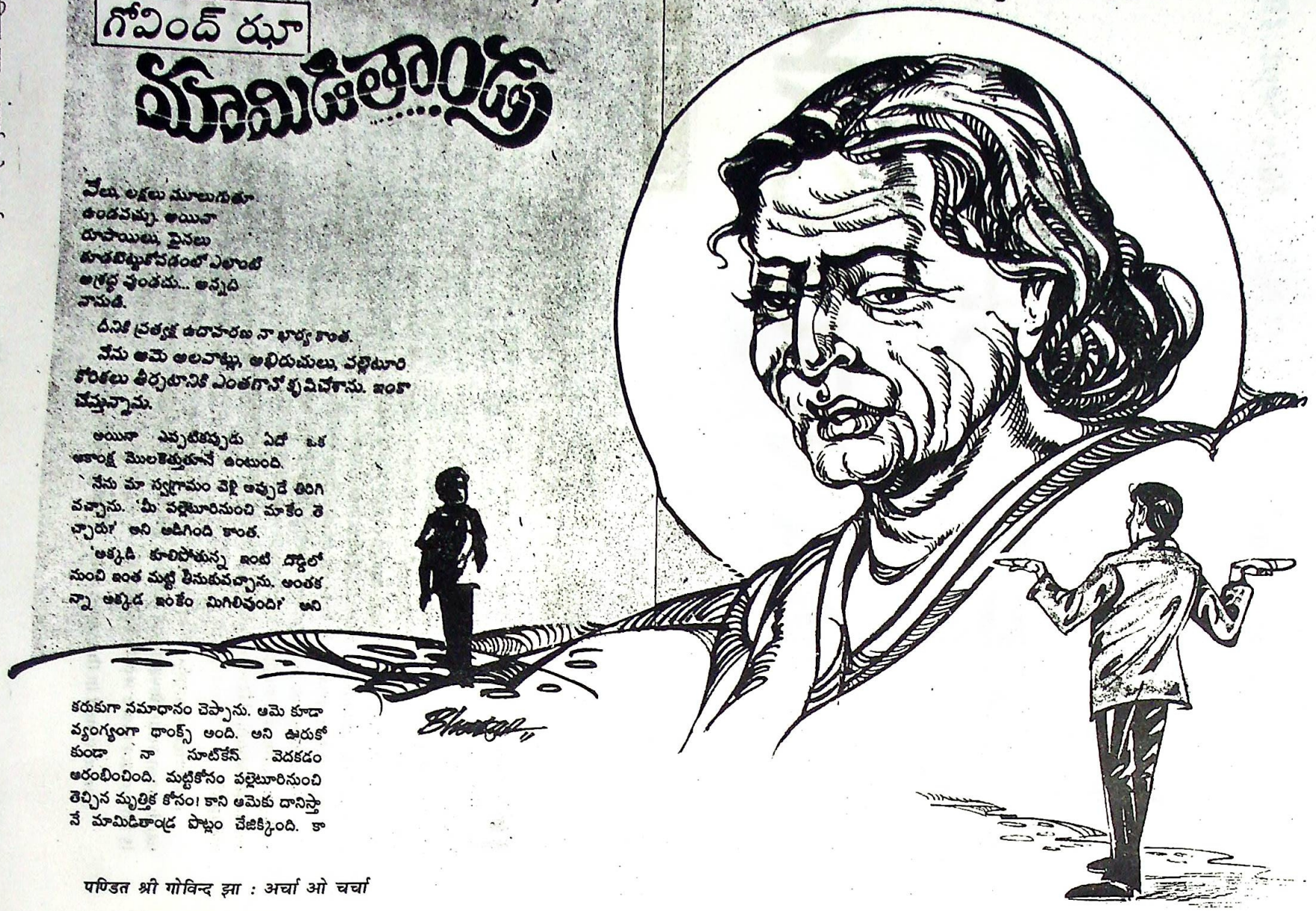

కరుకుగా సమాధానం చెప్పాను. ఆమె కూడా వ్యంగ్యంగా థాంక్స్ అంది. అని ఊరుకోకుండా నా సూట్‌కేస్ వెదకడం ఆరంభించింది. మట్టికోసం పల్లెటూరినుంచి తెచ్చిన మృత్తిక కోసం! కాని ఆమెకు దానిస్తానే మామిడితాండ్ర పొట్లం చేజిక్కింది. కా

पण्डित श्री गोविन्द झा : अर्चा ओ चर्चा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Mathrubhumi
Annual 1995

അയാചിയുടെ വാതിൽക്കൽ

ഗോവിന്ദ ഝാ

വിവ: വി.ഡി.കെ. നമ്പ്യാർ

1923—ൽ ബിഹാറിലെ മധുബനിയിൽ ജനിച്ചു. 'ബസാത്', 'രാജാ ശിവസിംഹ്', 'അന്തിം പ്രണാം', 'രുക്മിണീ ഹരൺ' എന്നീ നാടകങ്ങളും 'സാമാക് പാതീ' (കഥ) ഉൾപ്പെടെ 35 പുസ്തകങ്ങളും. നല്ല ഒരു വിവർത്തകനുംകൂടിയാണ് ഝാ. പാട്നായിലെ പുർവീപട്ടേൽ നഗറിൽ വിശ്രമജീവിതം നയിക്കുന്നു.

ഗ്രാമത്തിൽ രണ്ടു താവളങ്ങളുണ്ട്. ഒന്ന് ഗ്രാമത്തലവന്റെ അകത്തളം. മറ്റത് റായിജിയുടെ ചായക്കട. രണ്ടു താവളങ്ങളുടെയും രൂപവും സ്വഭാവവും വ്യത്യസ്തമാണ്. ഒന്ന് രാഷ്ട്രീയക്കളരിയാണെങ്കിൽ മറ്റത് ലോകകാര്യങ്ങളുടെ കേന്ദ്രം. ആദ്യത്തേതിന് പണത്തിന്റെ പിൻബലം ഉണ്ടെങ്കിൽ രണ്ടാമത്തേതിന് ആത്മസ്വാധീനമുണ്ട്. പക്ഷേ, രണ്ടിന്റെയും ലക്ഷ്യം ഒന്നാണ്—മുകളിൽ നിന്നും കിട്ടുന്ന സാധനങ്ങൾ തട്ടുക. ആര് എത്ര തട്ടിയെടുക്കുന്നു എന്നതിൽ ആണ് ഇരുകൂട്ടരും തമ്മിൽ മത്സരമുള്ളതും. ഈ മത്സരം ഗ്രാമത്തിലെ സർവ വഴക്കുകളുടെയും അടിസ്ഥാന കാരണമാണ്. ഗ്രാമത്തിന്റെ ചൈതന്യ സ്രോതസ്സും ഈ മത്സരംതന്നെ. ഈ ചൈതന്യം ഗ്രാമത്തിന്റെ ഐശ്വര്യമാണ്. ഇങ്ങനെ എല്ലാത്തിന്റെയും അടിസ്ഥാന കാരണം മുകളിൽനിന്നും വരുന്ന സാധനമാണ്. ഇങ്ങനെയുള്ള ഒരു സാധനമാണ് ക്വോട്ട (റേഷൻ).

ആനവായിൽ അമ്പഴങ്ങപോലെ ഒന്നോ രണ്ടോ മാസത്തിലൊരിക്കലേ ഇത് കിട്ടൂ. ഈയിടെ ഗ്രാമത്തിൽ റേഷൻ സാധനങ്ങൾക്കുവേണ്ടി കിണഞ്ഞ യുദ്ധം നടക്കാറില്ല. കാര

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

বাংলা গল্প আকাদেমী পত্রিকা থেকে সংখ্যা - ১৪০১ (1401)
বাংলা গল্প আকাদেমী পত্রিকা থেকে সং. 1401

সাক্ষাৎকার

মৈথিল গল্পের বিশিষ্ট রূপকার শ্রী গোবিন্দ ঝা

সাক্ষাৎকার : জীবনময় দত্ত

'সামাক পৌতী' গল্প সংগ্রহের জন্য শ্রী গোবিন্দ ঝা মৈথিল সাহিত্যে ১৯৯৩ সালের সাহিত্য আকাদেমি পুরস্কারে সম্মানিত হন। ৭১ বছরের এই যুবক মৈথিল ও হিন্দী সাহিত্যের এক বিশিষ্ট ব্যক্তিত্ব। তাঁর শিক্ষারম্ভ মিথিলাক্ষরের মাধ্যমে। বৈয়াকরণ ছিলেন পিতা। তাঁর কাছেই পড়াশোনার সূত্রপাত। ব্যাকরণ ও সংস্কৃত সাহিত্য। ভাষার প্রতি শুরু থেকেই অসীম প্রীতি ও আগ্রহ। এভাবেই ২১ বছর বয়স পর্যন্ত অধ্যয়ন। গুরু-শিষ্য পরম্পরার কঠিন অনুশাসন ও কঠোর তপস্যার মতো কাটছিল জীবনের ও যৌবনের দিনগুলি। সংস্কৃত সাহিত্যের লালিত্য এক ধরণের মুগ্ধতার জন্ম দিয়েছিল। শুরু করেন অনুবাদ। এভাবেই সাহিত্যের আঙিনায় প্রবেশ।

কোনদিন স্কুলে কলেজে পড়েন নি। নিজের চেষ্টায়, বাংলা, হিন্দী, ও উর্দু শিখেছেন। এই সকল ভাষার মণিমুক্তা সংগ্রহ করে পড়েছেন। জ্ঞানের পরিধি বাড়িয়েছেন। সেইসঙ্গে জীবিকার সন্ধানে বহু রকমের কাজ করেছেন। ছেড়েছেন। আবার ধরেছেন নতুন কিছু। ধরাবাঁধার মধ্যে থাকতে গিয়ে হাঁপিয়ে উঠতেন। সেই সময় বিহারের একমাত্র বিখ্যাত ইংরেজী দৈনিক পত্রিকা 'দি ইন্ডিয়ান নেশান'এ ১৯৫১ সালে প্রবেশ করেন। তাঁর কাজ ছিল একটি অভিধান প্রণয়ন করা। তিন ভাষার। হিন্দি-সংস্কৃত-ইংরেজী। সফল হয়নি সেই পরিকল্পনা। ছেড়ে দিলেন। বিহার সরকারের ইংরেজী থেকে হিন্দি শব্দ গঠনের কাজ করলেন কিছুদিন। একঘেঁয়ে লাগতেই সরে গেলেন। আসলে সৃজনশীলতা যে মানুষের ধমনীতে দ্রুত ঘুরে বেড়ায় তাঁর পক্ষে বোধ করি এ ধরণের কোন জীবিকার কাছে আবদ্ধ থাকা সম্ভব নয়।

এমন একজন সাহিত্য-প্রাণ ব্যক্তির বিশেষ সম্মান প্রাপ্তি উপলক্ষে পাটনা শহরে বসে তাঁর সঙ্গে কিছু আন্তরিক কথাবার্তা বলার জন্যে যোগাযোগ করি। আগে সামান্য পরিচয় ছিল। সেই সূত্রে আলাপ চারিতার শুরু। ব্যক্তিত্বময় সুভদ্র।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पुरस्कार/प्रशस्ति/अभिनन्दन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार १९९३
ताम्रपत्र

मैथिली
साहित्य अकादेमी सम्मान-चिह्न
सामाक पौती १९९३
अनंत मूर्ति

साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष श्री यू.आर. अनन्त मूर्तिसँ
पुरस्कार ग्रहण करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

বাংলা গল্প আকাদেমি পত্রিকা হেমন্ত সংখ্যা - ১৪০১ (1401)
বাংলা গল্প অকাদেমী পত্রিকা হেমন্ত, সং. 1401

সাক্ষাৎকার

মৈথিল গল্পের বিশিষ্ট রূপকার শ্রী গোবিন্দ ঝা

সাক্ষাৎকার ঃ জীবনময় দত্ত

'সামাক পৌতী' গল্প সংগ্রহের জন্য শ্রী গোবিন্দ ঝা মৈথিল সাহিত্যে ১৯৯৩ সালের সাহিত্য আকাদেমি পুরস্কারে সম্মানিত হন। ৭১ বছরের এই যুবক মৈথিল ও হিন্দী সাহিত্যের এক বিশিষ্ট ব্যক্তিত্ব। তাঁর শিক্ষারম্ভ মিথিলাক্ষরের মাধ্যমে। বৈয়াকরণ ছিলেন পিতা। তাঁর কাছেই পড়াশোনার সূত্রপাত। ব্যাকরণ ও সংস্কৃত সাহিত্য। ভাষার প্রতি শুরু থেকেই অসীম প্রীতি ও আগ্রহ। এভাবেই ২১ বছর বয়স পর্যন্ত অধ্যয়ন। গুরু-শিষ্য পরম্পরার কঠিন অনুশাসন ও কঠোর তপস্যার মতো কাটছিল জীবনের ও যৌবনের দিনগুলি। সংস্কৃত সাহিত্যের লালিত্য এক ধরণের মুগ্ধতার জন্ম দিয়েছিল। শুরু করেন অনুবাদ। এভাবেই সাহিত্যের আঙিনায় প্রবেশ।

কোনদিন স্কুলে কলেজে পড়েন নি। নিজের চেষ্টায়, বাংলা, হিন্দী, ও উর্দু শিখেছেন। এই সকল ভাষার মণিমুক্তা সংগ্রহ করে পড়েছেন। জ্ঞানের পরিধি বাড়িয়েছেন। সেইসঙ্গে জীবিকার সন্ধানে বহু রকমের কাজ করেছেন। ছেড়েছেন। আবার ধরেছেন নতুন কিছু। ধরাবাঁধার মধ্যে থাকতে গিয়ে হাঁপিয়ে উঠতেন। সেই সময় বিহারের একমাত্র বিখ্যাত ইংরেজী দৈনিক পত্রিকা 'দি ইন্ডিয়ান নেশান'এ ১৯৫১ সালে প্রবেশ করেন। তাঁর কাজ ছিল একটি অভিধান প্রণয়ন করা। তিন ভাষার। হিন্দি-সংস্কৃত ইংরেজী। সফল হয়নি সেই পরিকল্পনা। ছেড়ে দিলেন। বিহার সরকারের ইংরেজী থেকে হিন্দি শব্দ গঠনের কাজ করলেন কিছুদিন। একঘেঁয়ে লাগতেই সরে গেলেন। আসলে সৃজনশীলতা যে মানুষের ধমনীতে দ্রুত ঘুরে বেড়ায় তাঁর পক্ষে বোধ করি এ ধরণের কোন জীবিকার কাছে আবদ্ধ থাকা সম্ভব নয়।

এমন একজন সাহিত্য-প্রাণ ব্যক্তির বিশেষ সম্মান প্রাপ্তি উপলক্ষে পাটনা শহরে বসে তাঁর সঙ্গে কিছু আন্তরিক কথাবার্তা বলার জন্যে যোগাযোগ করি। আগে সামান্য পরিচয় ছিল। সেই সূত্রে আলাপ চারিতার শুরু। ব্যক্তিত্বময় সুভদ্র।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पुरस्कार/प्रशस्ति/अभिनन्दन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार १९९३
ताम्रपत्र

मैथिली
साहित्य अकादेमी सम्मान-चिह्न
सामाक पौती १९९३
अनंत मूर्ति

साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष श्री यू.आर. अनन्त मूर्तिसँ
पुरस्कार ग्रहण करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 1993

भारतीय साहित्य के अनुवाद में विशिष्ट योगदान के लिए साहित्य अकादेमी गोविन्द झा को उनके द्वारा मैथिली में अनूदित **नेपाली साहित्यक इतिहास** पर दस हजार रुपये के राष्ट्रीय अनुवाद पुरस्कार 1993 से सम्मानित करती है, जो कुमार प्रधान की अंग्रेजी कृति 'ए हिस्ट्री आफ नेपाली लिटरेचर' का अनुवाद है।

नई दिल्ली
2 अगस्त 1994

यू. आर. अनन्त मूर्ति
अध्यक्ष

साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष श्री यू.आर. अनन्त मूर्तिक हाथेँ
अनुवाद-पुरस्कार ग्रहण करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

कामिल बुल्के पुरस्कार, बिहार सरकार, राजभाषा-विभाग

(१ अगस्त, १९८८)

डा. कामिल बुल्के पुरस्कार योजना, 1987-88 के अन्तर्गत भक्ति-साहित्य से संबंधित श्री गोविन्द झा के अनूदित ग्रन्थ 'मैथिली रामायण' को दस हजार रुपये की राशि से पुरस्कृत किया जाता है ।

डा. भगवती शरण मिश्र
निदेशक

नागेन्द्र झा
मंत्री, राजभाषा

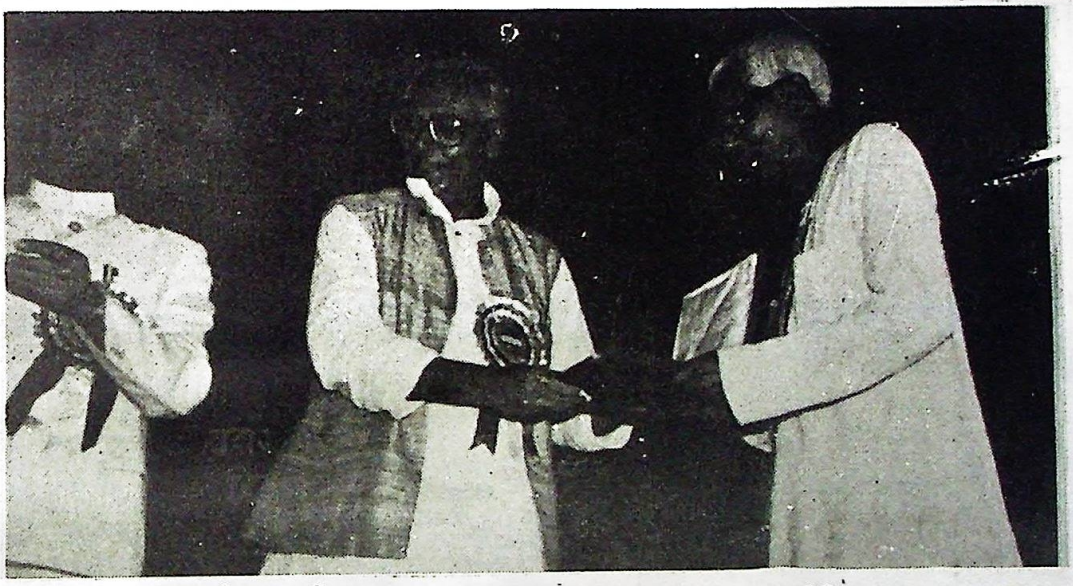

भगवती शरण मिश्र भागवत झा 'आजाद' गोविन्द झा

प्रशस्ति

अनेक भाषाओं एवं लोकभाषाओं के चूड़ान्त विद्वान् श्री गोविन्द झा सर्वतोमुख प्रतिभा-प्रभा-भास्वर साहित्यकार हैं । आपकी शारदा-सरिता पांडित्य एवं हार्दिकता की रस-फेनिल समन्वित रस-घाटी से प्रवाहित हुई है, जो साहित्यानुरागियों के संपूर्ण अन्तर्वाह्य को सहजतः आप्यायित-आप्लावित करेगी। अनुवाद की दिशा में तो आपने अपनी एक क्रोशशिला ही स्थापित की है।

हिन्दी साहित्य-भाण्डार की श्रीसमृद्धि में आपके यशस्य योगदान को दृष्टि-पथ में रखते हुए भागवत विद्वत्ता से विमंडित आपके अनूदित ग्रंन्थ 'मैथिली रामायण' को दस हजार रुपये के डा. कामिल बुल्के पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है ।

1 अगस्त–1988

भगवतीशरण मिश्र
निदेशक

विश्वास
आयुक्त

नागेन्द्र झा
मंत्री, राजभाषा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य पुरस्कार, १९८८

ई प्रमाणपत्र पं. श्री गोविन्द झाकें देल जाइत छनि जे अरिपन, पटना एवं अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्लीक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक लेखन प्रतियोगितामे भाग लेलनि तथा प्रथम घोषित कएल गेलाह। ई प्रतियोगिता २८ अप्रैल, १९८८ सँ ९ मइ, १९८८ धरि नयी दिल्लीमे सम्पन्न भेल ।

राजेन्द्र प्र. यादव	मन्त्रेश्वर झा	प्रकाश झा
अध्यक्ष	*अध्यक्ष*	*अध्यक्ष*
अखिल भारतीय मिथिला संघ	*अरिपन, पटना*	*निर्णायक मंडल*

प्रकाश झाक हाथेँ पुरस्कार प्राप्त करैत
बीच मे श्री रमानन्द झा 'रमण' ओ श्री छत्रानन्द सिंह झा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चेतना समिति, पटना सँ सम्मान, 1991

ताम्रपत्र

व्याकरण, साहित्य एवं भाषाशास्त्रक मर्मज्ञ विद्वान्, बहुभाषाविज्ञ, सुयोग्य, विविधभाषानुवादक, मातृभाषा मैथिलीक उन्नायक, कवि, कथाकार नाटककार आदि रूपेँ लब्धप्रतिष्ठ, सतत लेखन प्रवृत्त, वरिष्ठ साहित्यकार पण्डित श्री गोविन्द झाक कर-कमलमे ई ताम्रपत्र ससम्मान समर्पित ।

दिनांक

19.11.1991

जगदानन्द झा

सचिव

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

अध्यक्ष

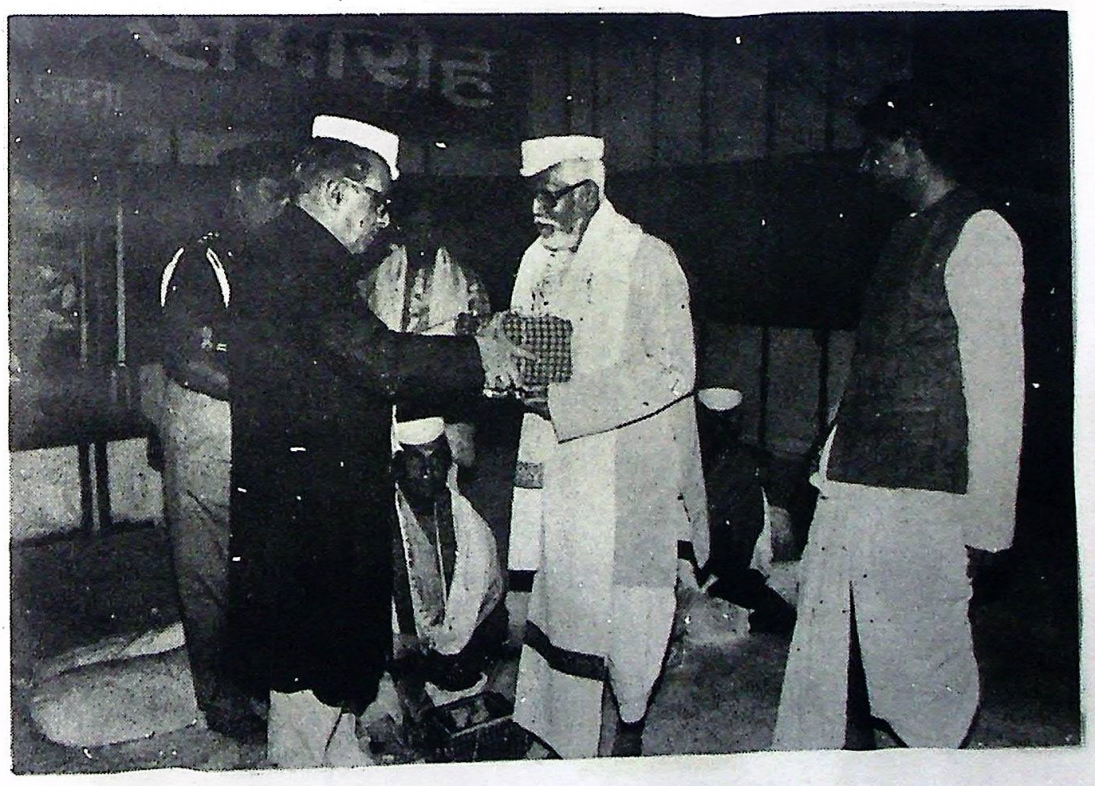

महामहिम राज्यपाल मो. शफी कुरैशी सँ सम्मान ग्रहण करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य पुरस्कार, १९८८

ई प्रमाणपत्र पं. श्री गोविन्द झाकेँ देल जाइत छनि जे अरिपन, पटना एवं अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्लीक संयुक्त तत्वावधानमे आयोजित पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक लेखन प्रतियोगितामे भाग लेलनि तथा प्रथम घोषित कएल गेलाह। ई प्रतियोगिता २८ अप्रैल, १९८८ सँ ९ मइ, १९८८ धरि नयी दिल्लीमे सम्पन्न भेल ।

राजेन्द्र प्र. यादव	मन्त्रेश्वर झा	प्रकाश झा
अध्यक्ष	*अध्यक्ष*	*अध्यक्ष*
अखिल भारतीय मिथिला संघ	*अरिपन, पटना*	*निर्णायक मंडल*

प्रकाश झाक हाथेँ पुरस्कार प्राप्त करैत
बीच मे श्री रमानन्द झा 'रमण' ओ श्री छत्रानन्द सिंह झा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

चेतना समिति, पटना सँ सम्मान, 1991

ताम्रपत्र

व्याकरण, साहित्य एवं भाषाशास्त्रक मर्मज्ञ विद्वान्, बहुभाषाविज्ञ, सुयोग्य, विविधभाषानुवादक, मातृभाषा मैथिलीक उन्नायक, कवि, कथाकार नाटककार आदि रूपेँ लब्धप्रतिष्ठ, सतत लेखन प्रवृत्त, वरिष्ठ साहित्यकार पण्डित श्री गोविन्द झाक कर-कमलमे ई ताम्रपत्र ससम्मान समर्पित ।

दिनांक

19.11.1991

जगदानन्द झा

सचिव

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

अध्यक्ष

महामहिम राज्यपाल मो. शफी कुरैशी सँ सम्मान ग्रहण करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सँ मानद उपाधि, 1993

श्री गोविन्द झा को, उनकी मैथिली भाषा और साहित्य की विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्यमें, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग अपनी मानद उपाधि 'साहित्य वारिधि' से सम्मानित करता है और प्रमाणस्वरूप यह उपाधिपत्र सहर्ष प्रदान करता है।

अध्यक्ष
राष्ट्रीय हिन्दी मेला–1993

श्रीधर शास्त्री
प्रधानमंत्री

अध्यक्षसँ उपाधिपत्र प्राप्त करैत

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अभिनन्दनपत्र

विद्यापति-सेवा-संस्थान, दरभंगा

मान्यवर !

(१)

कविता-कथा-निबन्ध-नाट्यरचना-पारंगत
छन्दशास्त्र भाषाविज्ञान समान हस्तगत
मौलिक रचनामे जहिना छी दक्ष विज्ञवर !
छी तहिना अनुवाद-कलोमे अपने पटुतर

(२)

अछि कौलिक तेँ पचल अहाँमे शब्दशास्त्र अति
अध्यवसाय-बलेँ अन्यहुमे बनल अहँक गति
संस्कृत हिन्दी आंग्ल मैथिली बङलहु दक्षे
प्रतिभा परिश्रमक दुर्लभ समगम प्रत्यक्षे

(३)

तेहन 'बसात' बहौलहुँ उड़ले विकृति कतेको
देल मातृभाषाकेँ अपने स्वकृति अनेको
अखनहुँ, अहू वयसमे तेहने स्फूर्ति-मूर्ति छी
मैथिलीक यावन्तो अभिलाषाक पूर्ति छी

(४)

बहुभाषाविद्, विविध विधा पटु, दक्ष सुधारक
अहाँ एखन छी ग्राह-ग्रसित-भाषा-उद्धारक
दीनबन्धु-सुत, नव जीवन बनि अयलहुँ अपने
हे गोविन्द ! कृतार्थ मैथिली नामहुँ जपने

मिथिला-विभूति-पर्व
११ नवम्बर १९८९

सदस्यगण
विद्यापति-सेवा-संस्थान

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

अरिपन, मैथिली नाट्य मंच, पटना

अभिनन्दन हो मैथिली साहित्य मनीषीक अभिनन्दन ! अभिनन्दन हो मैथिली गद्य गगनक जाज्वलयमान नक्षत्र पं. श्री गोविन्द झाक, जनिक कथा संग्रह 'सामाक पौती' राष्ट्रीय स्तर पर मैथिली साहित्यक सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार 'साहित्य अकादमी, पुरस्कार, 1993' सँ पुरस्कृत भेल ।

अभिनन्दन हो ओहि नटसम्राटक जनिक पहिले नाटक **बसात**क सिहकनि समकालीन ग्रामीण मंच कैं मोहि लेने छल । **राजा शिवसिंह, अन्तिम प्रणाम, लोढ़ानाथ** समकालीन आधुनिक मंच पर एक उदाहरण बनल । हिनक **रुक्मिणीहरण** मैथिलीक प्राचीन किर्तनिञा नाट्य परम्पराक अनुसंधानात्मक झलकी प्रस्तुत कए नाट्य संस्कृतिकैं नव गरिमा प्राप्त करौलक ।

अभिनन्दन हो भाषाविद् वैयाकरणक पितृपरम्पराकैं जे कएलनि पल्लवित–पुष्पित, लिखलनि भाषा विज्ञानक ग्रन्थ कतेको व्याकरण आ शब्दकोष, मैथिलीक आधारशिलाकैं दृढ़तर कएलनि । पूर्वांचलक अनेको भाषा पर अधिकारी आंग्ल आओर देवभाषाक निपुणता सँ संपोषित; कएलनि जे राष्ट्रभाषाक समृद्धि हेतु निरन्तर योगदान अभिनन्दन हो ताहि तपस्वी साहित्य-साधकक ।

अभिनन्दन हो सरिपहुँ साहित्यक एहि शिखर-पुरुष कैं । 'विद्यापतिक आत्मकथा' लिखि जे इतिहास-पुरुष कैं नव चारित्रिक आयाम देलनि । अपन नव विषयवस्तुक हेतु जे साहित्य जगतमे धूम मचौलक ।

मैथिलक साहित्यशिखर पर महिमामंडित, नवतूरक प्रेरणाप्रसूनकैं समस्त अरिपन परिवारक वन्दन, अभिनन्दन ।

भक्तीश्वर झा
उपाध्यक्ष

कौशलकुमार दास
महासचिव

मिथिला नाट्य कला परिषद्, जनकपुर धाम

मैथिली नाट्य साहित्यक आलोक स्तम्भ !

अपनेक पावन पद्-निक्षेपसँ मिथिला नाट्यकला परिषदक सदस्यंलोकनि मात्र नहि, अपितु एहि मैथिली नगरीक सम्पूर्ण साहित्यानुरागी आइ पुलकित छथि । 'बसात', 'राजा शिवसिंह', 'अन्तिम प्रणम', 'रुक्मिणीहरण' सन युगान्तकारी नाट्यकृतिक प्रणयनसँ मैथिली नाट्य साहित्य एवं रंगमंचकैं नव आलोकसँ समृद्धि भेटलैक तकर हेतु सर्वदा सम्पूर्ण मिथिलावासी अनेक ऋणी रहत । आइयो मिथिलांचलक सभ नाट्य स्रष्टा द्रष्टा आ रंगकर्मी आशापूर्ण दृष्टिसँ दिशाबोधक हेतु अपने दिशि अनवरत ताकि रहलाह अछि।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बहु आयामी व्यक्तित्वक सम्राट !

एतेक क्षीण कायामे प्रतिभाक एहन अद्‌भुत विस्फोट इतिहास कोनो कोनो कालमे देखवाक मात्र सौभाग्य पबैत अछि। 'सामाक पौती' कथा संग्रहक कथामे गलैतबहैत जीवनक इन्द्रधनुष खण्ड 'वर्णरत्नाकार', 'विभागसार' सन दर्जनहुँ पोथीक सम्पादन कलामे छिटकैत चिन्तनक विद्युतस्फुलिंग Indian Council of Historical Recorch द्वारा प्रकाशित अपनेक ग्रन्थ, श्री नरेन्द्र वागले द्वारा लिखित Society at the time of Buddha, श्री राधा कृष्ण चौधरी द्वारा लिखित 'Economic History of Ancient India' सन दर्जनहु ग्रन्थक अनुवादमे परिलक्षित अनुवाद सौष्ठव 'मैथिली अकादमी पत्रिका' एवं 'भाखा' सन प्रतिष्ठित पत्रिकाक सम्पादकक रूप मे प्रमाणित अपनेक पत्रकारिता-कला, मैथिली साहित्य अकादमीमे उपनिदेशक रूपमे अनेक सेवा-संलग्नता, साहित्य अकादमीक सल्लाहकार मण्डलक सदस्यक रूपमे अपनेक योगदान, धर्मशास्त्रसंबंधी अनेक पोथीक सम्पादन, गांधी चिन्तन एवं जीवन शैली सभ मिलि व्यक्तित्व जेना एक गोट फूट ब्रह्माण्डक सृष्टि करैछ, जकर अपने चक्रवर्ती सम्राट छी।

निष्णात भाषाविद !

पौर्वात्य एवं पाश्चात्य, प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषा शास्त्रीय परम्पराक ज्ञान संगमसँ अपनेक मेधा-तीर्थ नमनीय भए उठल अछि जाहिमे स्नान कए युग-युग धरि सरस्वतीपुत्र धन्य होइत रहताह। मैथिली भाषाक इतिहास आ मैथिली भाषाक उद्‌गम ओ विकास मैथिली भाषाक अध्ययन ओ विश्लेषणक दिशामे एक गोट ठोस कार्य थिक। मैथिली भाषाक विविध तत्वक नव्यतम दृष्टिसँ विश्लेषण भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे अपनेक द्वारा होइत रहत से विश्वास अछि।

मैथिली भाषा साहित्यक दधीचि

मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे लगभग आधा शताब्दीसँ अपन सोनितक प्रत्येक बूनसँ साधनाक जे दीप जरबैत रहलहुँ अछि ताहिसँ मैथिली वाङ्मयक अनेक खण्ड आइ उद्‌भासित अछि। अपनेक पावन आगमनक एहि मंगल मुहूर्तमे, हम शब्दपुष्पसँ अपनेक शत-सहस्र अभिनन्दन करैत छी आ अपनेसँ प्रेरणादायी अमृत वचनक विनम्रतापूर्ण याचना करैत छी।

परिषद्‌-परिवार

गते १५-७-२०४७

आंगन(नाट्यमंच), पटना

सामाक पौतीमे विधि भरल पूर्ण मिथिलाकेँ।
बुधियारी लेखकक आ छवि लिखबाक मिथिलाकेँ।
छोट कथामे व्यथा आर व्यवहार देखाकऽ।
की छल, की अछि, नीक बेजाय कर्म झलंकाकऽ।
मिथिलाक पूर्ण स्वरूपक हमरा ज्ञान करौलनि।
पौतीमे इतिहास बन्द कऽ आइ देखौलनि॥
कऽ रहलौं सम्मानित हिनका कहबो अछि अपराध जघन्य॥
जे हिनका सम्मानित करइछ ओ अपने भऽ जाइछ धन्य॥

विकास कुमार झा
अध्यक्ष

रोहिणी रमण झा
सचिव

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय-परिवार, सरिसब-पाही

अनन्य भाषाशास्त्री !

योग्य पिताक योग्य पुत्रक रूपमे स्वनामधन्य महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाजीक 'विद्योतन'क परम्पराकेँ निबाहैत मैथिलीक भाषाशास्त्रीय गूढ़ातिगूढ़ विषयकेँ सर्वसुलभ बनाय अपने जे यश अर्जित कएल से चिरस्मरणीय रहत। 'सामाक पौती' कथा-संग्रह पर अपनेक साहित्य अकादमी पुरस्कार द्वारा सम्मानित होएबाक अवसर पर एहि क्षेत्रक साहित्य-प्रेमीक आह्लादक सीमा नहि अछि।

अनुपम शब्द-शिल्पी !

अपनेक शब्दक सामाक पौतीमे मनोरंजक तथा युग-सत्य उद्घोषक गल्पे नहि–उपन्यास, नाटक, कविता आ की नहि भेटैत अछि। अपनेक बहुमुखी प्रतिभासँ सभ चमत्कृत अछि। शब्द-साधना द्वारा अपने जे साहित्यक सृजन कएल अछि से वस्तुतः उदात्त, लोकरंजक ओ कालजयी अछि।

लब्धप्रतिष्ठ अनुवादक !

अपने अनुवादक क्षेत्रमे सेहो विभिन्न भाषाक प्रकृतिक अनुकूल सहज ओ प्रशंसनीय अनुवाद द्वारा अपन बहु-भाषा-ज्ञानक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत कए अक्षय कीर्ति ओ प्रभूत प्रतिष्ठा अर्जित कएल अछि।

क्षेत्रीय विमल विभूति !

अपनेक प्रतिष्ठासँ अकादमी अपन विश्वसनीयता ओ गौरवक कीर्तिमान बढ़ओलक अछि आ अपनेक सम्मानसँ परिसरक सभ साहित्य-प्रेमी स्वयं सम्मानित अनुभव कए रहल अछि। हमरा लोकनिक कामना जे अपने सुदीर्घ काल तक अपन सत्साहित्य द्वारा मैथिली ओ परिसरक प्रतिष्ठा बढ़बैत रही।

महाविद्यालय-परिवार

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

पं. श्री गोविन्द झा : समाचारपत्रमे

राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली, 4.1.1994

गोविन्द झा के सम्मान पर साहित्य जगत प्रसन्न

पटना, 3 जनवरी । हिन्दी मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार पं. गोविन्द झा को उनके मैथिली कथा संग्रह **सामाक पौती** पर वर्ष 1993 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिलने की घोषणा का यहां पूरे साहित्य जगत में व्यापक स्वागत किया जा रहा है । इस घोषणा को 'देर से योग्य सृजनधर्मी के सम्मान' की संज्ञा दी जा रही है ।

केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली ने आज ही देश की बाइस भाषाओं के साहित्यकारों को यह पुरस्कार देने की घोषणा की है । मैथिली भाषा में यह सम्मान पं. झा को मिला है ।

उल्लेखनीय है कि विगत दो-तीन वर्षों से मैथिली में मिल रहे पुरस्कारों पर अंगुलियां उठायी जाती रही हैं । बताया जाता है कि पं. झा की यह पुस्तक अंतिम राउंड तक भी दो-एक बार पहुंची थी ।

सत्तर वर्षीय वयोवृद्ध साहित्यकार पं. गोविन्द झा आज भी गंभीरतापूर्वक सक्रिय और सृजनधर्म में संलग्न हैं । हाल ही में उनका ऐतिहासिक उपन्यास **विद्यापतिक आत्मकथा** प्रकाशित हुआ जिसकी सर्वत्र प्रशंसा की गयी ।

पं. झा की छवि एक साथ कवि, कथाकार और नाटककार की रही है । इसके अलावा वे राष्ट्रीय स्तर पर भाषाशास्त्री और अनुवादक के रूप में भी चर्चित हैं । पूर्वी भारत की कई भाषाओं के वे आचार्य माने जाते हैं ।

पुरस्कृत पुस्तक **सामाक पौती** में डेढ़ दर्जन कथाएँ संकलित हैं । 108 पृष्ठों वाले इस पुस्तक का प्रकाशन 'भाखा प्रकाशन', पटना ने किया है । इनकी पहली कथा 'खजनी' है, जो 1947 में छपी थी । इनकी कई कथाओं का अनुवाद हिन्दी, गुजराती, बंगला तथा कन्नड़ भाषाओं में हो चुका है ।

26 फरवरी 1990 को प्रकाशित इस पुस्तक में सामाक पौती, फूलक चोट, अंतिम एकन्नी, लालटेम, पातक मनुक्ख, दू बाट एक खन्ना, अयाचीक डीह पर जैसी चर्चित कथाएँ संकलित हैं । इनमें लगभग आधे दर्जन कथाएँ पहली बार पुस्तक में ही छपी । शेष पत्र-पत्रिकाओं में छपी हुई हैं । इसके अलावा पं. झा की मैथिली में करीब डेढ़ दर्जन तथा हिन्दी में भी दो पुस्तकें प्रकाशित हैं । इनमें अनुवाद, आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक सभी तरह की रचनाएं है । उनकी प्रमुख कृतियां हैं रुक्मिणीहरण, अंतिम प्रणाम, शिव सिंह, बसात (सभी नाटक), मैथिली शब्द रचना, उमेश मिश्र, मैथिली व्याकरण (सभी आलोचनात्मक) आदि ।

पं. झा राजभाषा विभाग और बाद में मैथिली अकादमी के निदेशक रह चुके हैं । इनको बुल्के पुरस्कार (1988) मिल चुका है । इसके अलावा लगभग आधा दर्जन साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्थाओं ने विभिन्न अवसरों पर पुरस्कृत किया ।

उनके नाटक रुक्मिणीहरण को स्थानीय नाट्य संस्था 'भंगिमा' ने संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित पूर्वांचलीय नाटक समारोह में मंचित किया था ।

10 अक्टूबर 1923 को मधुबनी के इसहपुर गांव में पं. झा का जन्म हुआ । साहित्य, व्याकरण और वेद की उन्होंने विधिवत् शिक्षा ग्रहण की । बाद में राजभाषा विभाग से जुड़ गये ।

प्रसिद्ध समीक्षक डा. बासुकी नाथ झा ने कहा कि उन्हें दो-तीन वर्षों से इस घोषणा की आशा थी । उन्होंने कहा कि उचित व्यक्ति को यह सम्मान मिला है ।

रंगकर्मी प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले दो-तीन वर्षों के दौरान यह श्रेष्ठ चयन है ।

प्रसिद्ध नाटककार और कथाकार ऋषिकेश सुलभ ने कहा है कि पं. झा का सम्मान वस्तुतः पूरी परम्परा और संस्कृति का सम्मान है । प्रसन्नता व्यक्त करने वाले अन्य प्रमुख लोगों में मोहन भारद्वाज, अरविन्द कुमार चौधरी, कुमार शैलेन्द्र, मनोज कुमार पाठक, धीरेन्द्र कुमार झा, डा. अरविन्द अक्कू, छत्रानंद सिंह झा, कुणाल, राजमोहन झा, अशोक कुमार झा, मार्कण्डेय प्रवासी, सुशील झा, पन्ना झा, उषा किरण खान आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

इंडिया टुडे 15 मार्च 1994

> लेखक को सम्मान मिलता भी है तो इस बुढ़ापे में और जीवन भर समाज उसे इस तरह देखता है मानो वह पागलखाने से छूटकर आया हो ।
>
> ● गोविन्द झा — राजस्थान पत्रिका

राजस्थान पत्रिका, सान्ध्य टाइम्स 17 फर. 94 ।

लेखक को सम्मान मिलता भी है तो बुढ़ापे में : गोविंद झा

साहित्य अकादमी से सम्मानित मैथिली साहित्यकार गोविंद झा देश की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति से काफी दुखी हैं । इस पीड़ा को उनकी आँखों में भी देखा जा सकता है, लेकिन वह बातचीत के दौरान हंसकर टाल भी देते हैं ।

वर्ष 1993 के लिए साहित्य अकादमी का पुरस्कार ग्रहण करने आए बिहार के इस वयोवृद्ध साहित्कयार ने 30 से अधिक ग्रंथो की रचना कर आधुनिक मैथिली साहित्य को समृद्ध किया है । बुहमुखी प्रतिभा के धनी श्री झा को उनके कहानी-संग्रह 'सामाक पौती' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

मैथिली के अलावा संस्कृत, अग्रेंजी, बंगला, नेपाली, उड़िया, असमिया, उर्दू और हिन्दी के अच्छे जानकार 72 वर्षीय श्री झा ने एक भेंटवार्ता में बताया कि भौतिक रूप से हमारा समाज भले ही बढ़ा हो, लेकिन सांस्कृतिक रूप से उसका पतन ही हुआ है । एक साहित्यकार उसे रोकने के लिए लिखने के सिवाय कर भी क्या सकता है । यही उसका दायित्व भी है । लेकिन लेखक की सामाजिक स्थिति से वह काफी असंतुष्ट है ।

उन्होने बताया कि लेखक को सम्मान मिलता भी है, तो इस बुढ़ापे में और जीवन भर समाज उसे इस तरह देखता है कि साहित्यकार मानो पागलखाने से छूटकर आया कोई व्यक्ति हो।

क्या मैथिली भाषा संकट के दौर से नहीं गुजर रही है ? श्री झा का कहना है कि मैथिली को अन्य भारतीय भाषाओं की तरह सहायता प्राप्त नहीं है, जो चिंताजनक है । इसके बावजूद आज भी मैथिली में साहित्य सृजन करने वाले लोग हैं और उन्हें अपनी भाषा से अगाध प्रेम है ।

मधुबनी जिले के ईशहपुर गाँव में जन्मे श्री झा की रुचि प्राचीन साहित्य के साथ-साथ आधुनिक साहित्य में भी है और वे सबसे ज्यादा यात्री जी (नागर्जुन) से प्रभावित हैं । लेकिन उनका यह भी कहना है कि हिंदी में यात्री जी नागार्जुन के नाम से जो कुछ भी लिखते हैं, उसमें और उनके मैथिली साहित्य में फर्क है ।

कालिदास, चण्डीदास के नाटकों और इतिहास की कई पुस्तकों का अनुवाद करने वाले श्री झा ने मैथिली अकादमी के निदेशक पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद 1992 में 'विद्यापति की आत्मकथा' जैसी मसत्वपूर्ण कृति लिखी है और आज भी वह उसी उत्साह के साथ साहित्य सेवा में लगे हैं । (वार्ता)

हिन्दुस्तान, पटना, 2 जून 1994

मैथिली के राहुल जी

तिहत्तर वर्ष के झुर्रीदार, मगर ठोस-सुलझे युवा से मिलना हो, तो चले आइये पटेल नगर, पटना पं. गोविन्द झा के पास। तय मानिये, खुद को बौना महसूस करेंगे, मगर जायेंगे त्वरित होकर । आप तय नहीं कर पायेंगे कि बातचीत औपचारिक हो रही है, या अनौपचारिक ? निकट सम्पर्क वाले कहते हैं कि साहित्य अकादमी पुरस्कार-93 (मैथिली) मिलने के पहले और बाद के गोविन्द झा में आप कोई ऐसी रेखा नहीं तलाश सकते, जिससे अलगाया जा सके । कहा भी जाता है कि पं. गोविन्द झा मैथिली के राहुल जी हैं । गुणवत्ता और मात्रा में भले ही अंतर हो, मगर कार्य-प्रणाली की एकरूपता और निष्ठा में वे खुद को राहुल जी के काफी निकट पाते हैं । राहुल जी इनके सबसे प्रिय रचनाकार हैं । उन्हीं की तरह पंडित, बहुभाषाविद्, खोजी, संग्रहकर्त्ता, भाषा विज्ञानी और सर्जनात्मक साहित्य के रचयिता होने के साथ-साथ रामशरण शर्मा की दो इतिहास-पुस्तकों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के जरिये आधुनिक-वैज्ञानिक इतिहास-दृष्टि से भी जुड़े हैं । पं. गोविंद झा का मैथिली, संस्कृत, प्राकृत, बंगला, असमिया, ओड़िया, नेपाली, अंग्रेजी और हिन्दी आदि भाषाओं पर समान अधिकार है ।

भाषा, साहित्य और संस्कृति की सरकारी-गैरसरकारी गंतिविधि में इनकी गंभीर सक्रियता में आप रुचि और पेशा-भावना को अलग नहीं कर सकते । बतौर मुलाजिम या सदस्य या फिर अनुबंधित लेखक गोविन्द झा भाषा-साहित्य की लगभग तमाम सरकारी संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। चाहे वह 'साहित्य अकादमी (दिल्ली) हो, मैथिली अकादमी (पटना) हो, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् हो, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (पटना) हो, राजभाषा-विभाग हो, या फिर चेतना समिति (पटना) हो । इन्हें

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

बहुत करीब से लगातार महसूसते गोविन्द झा इनके इतिहास और वर्तमान के प्रत्यक्ष गवाह हैं। उन्हीं की एक सधी टिप्पणी है कि ''आज अकादमी का अर्थ है 'एक आदमी' और 'एक आदमी' का अर्थ है 'सत्तारूढ़ दल का आदमी'। यह इसी तरह की विवेकहीनता का परिणाम है कि इन बिहारी अकादमियों परिषदों के पुरस्कार गैर-बिहारी लेखकों की ही झोली में अधिकतर जाते रहे हैं। अनुबंधित लेखकों की इनकी सूची में बिहारी लेखकोके नाम ढूंढ़ने पर ही मिलेंगे जबकि बिहार प्रतिभा में कभी पीछे नहीं रहा है–चाहे भाषाविज्ञान का क्षेत्र हो, चाहे अनुवाद का, चाहे सर्जनात्मक साहित्य का। अयोग्य लेखकों की पुस्तकों की भरमार यहां आसानी से देखी जा सकती है। और सबसे खतरनाक बात कि राजनीति से बुरी तरह प्रभावित ज्यादातर संस्थाओं में मुसलमान-तुष्टिकरण की प्रवृत्ति बुहत जोर पर रही है। भाषा, साहित्य और संस्कृति पर इसी तरह के अविवेकी सरकारी हस्तक्षेप का परिणाम है कि एक मुख्यमंत्री पर लिख कर एक 'तृतीय दर्जे का लेखक' 'बड़ा साहित्यकार' बन जाता हैं। ऐसे लोग मैथिली अकादमी के सदस्य इसी तरह बन जाते हैं जो कभी बैठक में उपस्थित भी नहीं होते। बतौर मुलजिम, गोविन्द झा को फाइल लेकर ऐसे लेगों के गांव जाना पड़ता था, मगर यात्रा–भत्ता लेते थे 'वे'। इन अकादमियों–परिषदों में अयोग्य सदस्यों की भरमार इसी करण है, तो इनकी निक्रिष्यता का एक बड़ा कारण यह भी है कि आमदनी से अधिक इनके कर्मचारियों का वेतन रहा है। यह शर्मनाक बात है कि 'मैथिली अकादमी' में न कमिटी है, न अधिकारी।

इन अकादमियों–परिषदों का संस्करण सुनाते गोविन्द झा कभी हंसते, कभी व्यंग्य करते और कभी भीतरघात के दंश की तरह आहत हो जाते हैं। इन सब की इकट्ठे बानगी देखिये 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद' पर उनकी टिप्पणी में–''शिवपूजन सहाय के समय रचनात्मक कार्य अधिक हुए, बम शंभूदत्त झा योजना ही बनाते रहे और हंस कुमार तिवारी पुरस्कार तथा प्रदर्शन में ही अधिक राशि लुटाते रहे। बाद में तो यह परिषद 'नटकिया' बन गई।'

बतौर सुलाजिम राजभाषा विभाग (बिहार) में अपने बिताये समय और किये कार्यों पर अभिमान है पं. गोविन्द झा को। बिहार में पहली बार सरकारी कामकाज में हिन्दी के व्यापक प्रवर्तन का व्यावहारिक श्रेय गोविन्द झा को जाता है। चाहे हिन्दी में प्रशासनिक शब्दावली का निर्माण हो, विभिन्न फॉर्मों या विधानमंडल मार्गदर्शिका का अनुवाद और संपादन। यह इनकी रुचि और निष्ठा ही थी कि पूरे सचिवालय में घूम-घूम कर नामपट, पद और विभाग नोट किये और क्षेत्रीय कार्यालयों की इस मद की सूची मांग-मांग कर हिन्दी में अनुवाद और लिप्यन्तर (देंवनागरी) किये। मगर, गोविन्द झा यह संस्मरण भी नहीं भूलते कि जब उन्हें अव्यावहारिक रूप से प्रशासनिक विभाग में दे दिया गया, तो किस तरह 'जाली विपत्रों को पास करने पर मजबूर हो जाया करते थे (वरना, कुछ भी हो सकता था)।'

मैथिली भाषा और साहित्य पर हमेशा सत्ता के मुखापेक्षी रहने के आरोप पर गोविन्द झा की प्रतिक्रिया है कि दोनों के बीच छत्तीस का रिश्ता रहा है। मध्य काल में भी राजा दरभंगा मैथिली के शत्रु रहे और आज भी विश्वविद्यालय में इसका प्रवेश सरकारी रुचि का परिणाम नहीं कहा जा सकता। मैथिली भाषा और साहित्य आम जनता की अभिव्यक्ति की ऊर्जा से हमेशा विकसित होती रही है। अभी भी, निजी तथा सामूहिक उन्माद पर ही जीवित है। अपने समकालीन मैथिली साहित्य पर संस्कृतका प्रभाव बताते गोविन्द झा बाद की पीढ़ी को अखिल भारतीय मुख्य धारा के ज्यादा निकट पाते हैं–खास कर, कथा-साहित्य और कविता को। मगर, समय-समाज के बदलाव से निम्न वर्ग की जनता में जो चेतना आयी, उसे नाना प्रकार से रचनात्मक रूपों में जितना कथा-साहित्य में रचा जा रहा है, उतना कविता में नहीं। कविता को भयानक आक्रोश के विस्फोट और निराशा के स्वर से लबालब शिकायतनामा बना दिया है कवियों ने। प्रभास कुमार चौधरी, जीवकांत, मायानन्द मिश्र, अशोक, धीरेंद्र, लिली रे इनके प्रिय रचनाकार हैं।

राजनेता के रूप में नेहरू व्यक्तित्व के कारण और जगजीवन राम अपने संतुलित उदार विचार एवं सफलता के कारण इहें सर्वाधिक प्रिय हैं। 'यंग तुर्क' कहे जाने वाले चंद्रखेखर से काफी अपेक्षाएं थीं, मगर सफलता उन्हें कभी हाथ नहीं लगी। गांधी, विनोबा और जय प्रकाश नारायण का सर्वोदयी समाजवाद इन्हें ज्यादा आकर्षित करता है। मरग 'इनके यूटोपिया पर ही हम चलते रहे। गांधी और विनोबा व्यावहारिक नहीं रहे तथा लेहिया रहे। इसी कारण आज हमारे बीच गांधी-विनोबा जिंदा नहीं हैं और लोहिया हैं। यही अव्यावहारिकता है कि जय प्रकाश ने जो

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

शासन-सुधार चलाया उसी का परिणाम है यह लालू सरकार ।'

मनुष्य अपनी अनावश्यक आवश्यकता की सृष्टि करके उसके बोझ तले दबा जा रहा है । गांधीवाद और विनोबा की विचार धारा यह नहीं थी । यह उद्दाम भोग-लालसा नेहरूवाद के निकट पड़ती है । व्यावहारिक स्तर पर मनुष्य को भोग की सुविधा कमकर देनी चाहिए । गोविन्द झा की आर्थिक समझ इसी पर आधारित है । मगर वैज्ञानिक विकास को ये उतना ही महत्व देते हैं ।

पं. गोविन्द झा न तो जीवोत्तर दर्शन में विश्वास करते हैं, न ही धर्म में । राहुल जी का पक्का चेला बताते हुए खुद को नेहरू के बाद दूसरा धर्म-निरपेक्ष व्यक्ति मानते हैं । "धर्मरिपेक्ष वह है जो किसी धर्म को नहीं मानता; जो धार्मिक है, वह धर्मनिरपेक्ष कैसे हो सकता है ?"

(दीपक कुमार गुप्ता)

टाइम्स आफ इंडिया, दिल्ली, 17.2.1994

LANGUAGES' DECLINE WORRIES WRITERS

NEW DELHI, February 16. "WHO should I write for, that is the question that confronts me today ?" states Govinda Jha, this year's Sahitya Akademi award winner in Maithili. "The electronic media seems to have left neither space, time nor consumers of the written word," he laments.

According to Jha, the writer's quandary is compounded by the fact that he is writing in Maithili, a language whose space has been usurped by the more dominant languages of the country.

Jha's lament finds an echo in the lamentations of most of the award winners this year. The marginalisation of literature due to the unprecedented growth of the audio-visual media and the gradual decimation of the languages that do not enjoy the protection of the Eighth Schedule: this forms the core of creative concern today.

Highlighting the anomaly, Jha feels that it is primarily the state that is responsible for the lopsided growth of Indian languages. "The state believes that the language of Mithila is Hindi and Urdu, not Maithili. English, meanwhile is the guest-language. Naturally then, all the state privileges accrue to these three languages. So much so that most of the Maithili writers prefer not to writ e in Maithili today," he asserts. Jha, on his part is a polyglot who chooses to write in his mother tongue despite his familiarity with Sanskrit, Urdu, English, Bengali, Nepali, Oriya, Assamese and Hindi.

Nikhat Kazmi

आज, पटना, 17. 1. 94

पं. गोविन्द झा : देरसे मिला अकादमी पुरस्कार

मैथिलीके जाने-माने कथाकार पंडित गोविंद झा को साहित्य अकादेमी का पुरस्कार मिलना किसीके लिए बहुत आश्चर्यजनक नहीं था । मैथिली साहित्य जगतकी पहली प्रतिक्रिया यही थी कि उन्हें पुरस्कार मिलनेमें थोड़ा विलंब हुआ क्योंकि पुरस्कारके हकदार वे पहले ही हो चुके थे ।

गोविंद झाको यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'सामाक पौती' पर मिला । यह पुस्तक पिछले तीन वर्षों से चयन-समिति के समक्ष पुरस्कारके लिए रखी गयी थी । नये नियमके मुताबिक इसे दो साल तक और रखा जा सकता था । अगर इस वर्ष भी पुरस्कार नहीं मिलता तो इसे अगले सालके लिए भी जारी रखा जा सकता था ।

उन्हें इस बार पुरस्कार मिल जानेकी एक वजह यह भी थी कि कतारमे ढेर सारे लोग लगे थे । चयन समितिके लिए यह अब संभव भी नहीं रह गया था कि 'सामाक पौती' को दरकिनार कर किसी दूसरी पुस्तकको पुरस्कृत कर दिया जाता । ऐसा इसलिए कि कतारमें खड़े लोगोंकी तुलनामें गोविंद झा न सिर्फ उम्रमें बड़े थे, बल्कि साहित्य-साधना की उम्र भी इनकी दूसरे लोगों की तुलनामें अधिक थी ।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

मैथिलीमें लेखन एक तरहसे जोखिम भरा काम माना जाता रहा है । यह इसलिए कि इस भाषाका लेखक इसे आजीविकाके रूपमें नहीं अपना सकता । छपनेकी गुंजाइश कम है । गिनी-चुनी मैथिली पत्रिकायें भी इस हैसियतमें नहीं होतीं कि लेखकोंको पारिश्रमिकके तौर पर मामूली रकम भी दे सकें । नतीजा यह निकलता है कि मैथिलीके लेखकको लेखके साथ-साथ उसके प्रकाशनकी व्यवस्था भी खुद करनी पड़ती है ।

ऐसेमें कोई बड़ा जीवट वाला आदमी ही मैथिलीमें बिना थके और नफे नुकसानकी परवाह किये लगातार लिख सकता है । गोविंद झा मैथिलीके इन्हीं गिने-चुने लेखकोंमें से एक हैं। साहित्य और भाषाशास्त्रमें रुचि रखने वाले गोविंद झा मैथिलीके अलावा संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिंदी, बंगला, असमिया, ओड़िया एवं नेपाली पर भी पकड़ रखते हैं ।

10 अक्तुबर 1923 में मधुबनी जिलेके इसहपुर गांवमें पैदा हुए पंडित गोविंद झाकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी आर्थिक लिहाजसे मजबूत नहीं थी । पिता संस्कृत स्कूलमें शिक्षक थे । साथ-आठ जनेके परिवारके लिए एक संस्कृत शिक्षककी आय काफी नहीं कही जा सकती । अभावोंके बीच ही उन्होंने बी. ए., साहित्य शास्त्री एवं आचार्य (व्याकरण, साहित्य और वेद) की उपाधि ली ।

1951 में वे पटना आ गये । राजभाषा विभागमें उन्होंने पारिभाषिक शब्द सहायक, अनुवादक और उप-निदेशककी नौकरी की । 1978 में वे राजभाषा विभागसे मुक्त हुए । मैथिली अकादमीमें वे 1978 से 85 तक उप-निदेशक रहे । उसके बादके दो वर्षों को उन्होंने सुलभ इंटरनेशनलमें लाइब्रेरियनकी हैसियतसे गुजारी । मैथिली अकादमीकी द्वैमासिक पत्रिका एवं मासिक 'भाखा' का भी उन्होंने संपादन किया ।

पैंतीससे अधिक सर्जनात्मक एवं विवेचनात्मक कृतियोंके रचनाकारको साहित्य अकादमीके सर्वोच्च पुरस्कारके अलावा दर्जनो दूसरा पुरस्कार भी मिल चुका है । उन्हें 1988 में बिहार सरकारकी तरफसे फादर कामिल बुल्के पुरस्कार मिला। लोक साहित्य संगम, गयाकी तरफसे सम्मानित किया गया । 1991 में चेतना समिति एवं विद्यापति सेवा संस्थानने भी इस रचनाकारको सम्मानित किया ।

वे साहित्य अकादमी की सलाहकार बोर्डके दो बार सदस्य रहे । बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, चेतना समिति एवं हिन्दी ग्रंथ अकादमीसे भी वे संबद्ध रहे । उनका नाटक 'रुक्मिणी हरण' का अभिनय कलकत्तामें 1991 में आयोजित पूर्वांचलीय नाट्य समारोहमें हुआ । सर्जनात्मक लेखनके अलावा सरकारी कामकाजमें हिन्दीके प्रयोगको बढ़ावा देनेमें भी उका विशिष्ट योगदान रहा । अंग्रेजीसे हिन्दीमें अनुवादका काम भी उन्होंने बड़े पैमाने पर किया ।

गोविन्द झाकी मौलिक कृतियोंकी सूची इस तरह है–मैथिली शब्दकोश, विद्यापतिक आत्मकथा (उपन्यास), सामाक पौती (कथासंग्रह), बसात, राजा शिवसिंह, अंतिम प्रणाम, लेढ़ानाथ एवं रुक्मिणी हरण (नाटक), मैथिली नाटक आधुनात संदर्भ (आलोचना), उमेश मिश्र (जीवनी), लघु विद्योतन (मैथिली व्याकरण), उच्चतर मैथिली व्याकरण, मैथिलीक उद्गम आ विकास, मैथिली भाषा का विकास एवं छंदशास्त्र ।

इसके अलावा कविवर चंदा झा कृत मैथिली रामायण, पूर्वकालीन भारतीय समाज, प्राचीन भारत, प्राचीन भारतका आर्थिक इतिहास, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओंका तुलनात्मक अध्ययन सहित हिन्दीमें उन्होंने अनुवाद किया।

जाहिर है साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत होनेकी खबर उन्हें अच्छी लगी । लेकिन, उनके लिए अचंभे जैसी बात नहीं थी। वे बताते हैं–'पुरस्कार मिलना तय था । इस साल नहीं मिलता तो अगले साल मिलता । मेरी दूसरी पुस्तक भी विचारार्थ भेजी गयी है ।'

वे बताते हैं कि बगैर किसी प्रोत्साहनके भी मैं लिखता रहा हूं । लेखन निर्बाध गतिसे जारी रहेगा । अब लेखनमें सहूलियत इसलिए भी मिलेगी, क्योंकि वे आर्थिक और पारिवारिक चिंताओंसे मुक्त हो गये है । तीनों पुत्र नौकरी पर हैं। इनमें एक अरविंद कुमार अक्कूकी गतिविधियां उनकी विरासतको संभालनेका संकेत देती है । गोविंद झा आज भी मानते हैं कि मैथिली लेखनको रोजगारके रूपमें नहीं अपनाया जा सकता । घरका आंटा गिला करनेकी कूबत रखनेवाला आदमी ही मैथिलीमें लिख सकता है।

अरुण अशेष

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

टाइम्स आफ इंडिया, दिल्ली, 7.1.1994

WRITER FOR SEPARATE MITHILANCHAL

PANDAUL, a block in Madhubani district, was the main centre of indigo planters/growers in Bihar during the pre-independence period, Even "Chota Lat" wanted to get one of his sons involved in the indigo trade, which was more lucrative at that time, When the farmers' resentment over their exploitation by the British rulers reached its zenith, the latter was compelled to shift to Champaran, But Pandaul were forgotten and could not be a page in the history of freedom struggle, whereas Champaran got that privileged place due to the visit of Mahatma Gandhi and his subsequent launching of the agitation against exploitation of indigo growers by the British rulers. This was the mere theme of the famous Maithili drama "Rukmini Haran", written by Pt Govind Jha.

In an excusive interview with this reporter. he said that this was for the first time such a "revolutionary drama" was written in Maithili, in which the expoited farmers raised their voice against misrule".

Pt Jha, who has achieved the rare distinction of being selected for the two Sahitya Academy Awards for 1993-one for his short stories collection, "Samak Pauti" and another for his translation of "Nepali Sahityak Itihas", written by Kumar Pradhan, from English into Maithili. He would have been happier had he been awarded for his original biographical book, "Vidyapatik Atmakatha". That would have given him more name and fame and his book would have been translated into different languages of the country. Pt Jha is the 26th writer in Maithili to be selected for this coveted honour on his original work and third translator in Maithili to be selected for this award after Pt Vyas and Dr Shailendra Mohan Jha.

Born in a poor Shrotriya Brahmin family in a small village Isahpur under Pandaul block of Madhubani district on October 10,1923, Pt Jha was the third issue of his parents. He had his primary education in Sanskrit school of Sarisavpahi village of Madhubani district. He did Acharya (equivalent to MA) in "Vyakarna, Sahitya and the Vedas" from the then Bihar Sanskrit Association in between 1947 and 1952. He was awarded the "Sahityaratna" degree by Hindi Sahitya Sammelan, Prayag (Allahabad), in 1952.

Besides being a master in Maithili, Sanskrit and Prakrit he also learnt English, Hindi, Bengali, Assamese, Oriya and Nepali languages through self study. He has been interested in "Sahitya" (literature), but more interested in "lexicon", He said that he had started his career as a lexicon assistant and would continue for its betterment.

Recipient of a number of awards and honour of the Bihar government, and outside, Pt. Jha wrote his first short story in Maithili, Khajani, in 1947, which was published in the then renowned Maithili weekly, Mithila Mihir. He also served the Rajbhasha department of the state government as a translator and then as its deputy director. More than 35 creative and critical writings go to his credit, besides writing plays, biographies, grammar and history of Maithili language and literature

His works under publication are Pralap, a collection of poems, Lorhanath, a play and a collection of short stories, For him work is worship,

Regarding the agitation for the inclusion of Maithili in the 8th schedule of the Constitution, Pt. Jha said that until and unless a separate Mithilanchal state was carved out, Maithili would not get its due place and recognition, because "language is an imposition, which will prosper only under political patronage", On the removal of Maithili language from the curriculum of the BPSC he held supporters of other regional languages more responsible than the chief minister Mr, Laloo Prasad Yadav. "Maithili is a language disowned by its own speakers and neglected by its government", he lamented and questioned. "How many Maithil. students study this language in the secondary schools?"

Speaking of his future plan, Pt. Jha said," I will not stop writing even after getting this prestigious award, following in the footprints of Vyasji".

Vinayanand Jha

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

टाइम्स आफ इंडिया, दिल्ली, 7.1.1994

'मैं अनुवाद को आजीविका समझता रहा'

साहित्य में मैंने न तो किसी नये वाद का प्रवर्तन किया न किसी पुराने वाद का अनुवर्तन, न किसी का गुरू बना न किसी का चेला; न समाज को पलटने का शंख फूका, न समाज को बदल डालने का नारा लगाया। इसलिए मैं अपने को बहुत मामूली साहित्यकार मानता हूँ–यदि आलोचक मुझे दब्बू साहित्यकार की संज्ञा दें तो भी मुझे कोई आपत्ति न होगी। वास्तव में अपने निकटवर्ती समाज की जड़ प्रशान्ति को भंग करने वाले नन्हें-नन्हे स्पन्दनों में मैं बड़ी-बड़ी क्रांति का दर्शन पाता हूँ। अचानक विस्फोट से मैं दूर भागता हूँ–उक्त विचार पं. गोविन्द झा ने हाल ही में व्यक्त किया है। पं. झा को उनके कथासंग्रह 'समाक पौती' (मैथिली कथासंग्रह) हेतु वर्ष 1993 के केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस वर्ष पं. गोविंद झा को सर्वश्रेष्ठ मैथिली में अनूदित पुस्तक 'नेपाली साहित्यक इतिहास' हेतु भी पुरस्कृत किया गया है। गोविंद बाबू लेखक, उपन्यासकार, नाटककार, अनुवादक एवं भाषाविद् हैं। पं. झा ने अब तक चार दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनकी अनूदित पुस्तक प्रो. रामशरण शर्मा लिखित 'पूर्वकालीन भारतीय समाज' बहुत ही प्रसिद्ध है। पं. झा ने मैथिली शब्दकोश का भी संकलन किया है जो 742 पृष्ठों का एक संकलनीय शब्दकोश है। दर्जनो अंग्रेजी, बंगला तथा असमिया भाषा पुस्तकों का मैथिली अनुवाद कर गोविंद बाबू ने मैथिली साहित्य संसार को समृद्ध किया है। प्रस्तुत हैं साहित्य संबंधी गोविंद बाबू के विचार।

प्र. : कुछ रचनाकार लिखते समय ही, कागज कलम पर ही अपने प्लौट को डेवेलप करते हैं, और कुछ रचनाकार हैं जो लिखने के बाद उसमें सुधार करते हैं। कुछ हैं जिनकी सारी प्रक्रिया उनकी कल्पना में–उनके दिमाग में होती है और इसके बाद वो फाइनल प्रॉडक्ट ही लिखते हैं। आपने कौन-सा तरीका अपनाया?

गोविन्द झा : मैं वही प्रवाह वाला तरीका अपनाता हूँ लिखते गये और जो आता गया वो बढ़ता गया, और आगे आकर उसमें यदि गड़बड़-सड़बड़ हो गया तो फिर उसको काटते हैं बनाते हैं। उसमें अवरोध भी हो जाता है। कभी-कभी एक कैरेक्टर हमने आरंभ किया, आगे चलकर के ऐसा रास्ता आया कि वह कैरेक्टर उसका समाप्त हो गया इसलिए फिर उसको सुधारना पड़ा। उसके व्यक्तित्व को मैंने सुधार करके लिखा।

प्र. : अच्छा गोविंद बाबू, आपने बहुत ज्यादा अनुवाद किया है और आप एक भाषाविद हैं। आपने मौलिक रचनायें भी की हैं। पुरस्कार को अगर तत्काल किनारे रख दें तो आप अपने आपको किस रूप में लोगों के बीच परिचित होना चाहेंगे। एक अच्छे अनुवादक, भाषाविद् के रूप में या एक कहानी लेखक के रूप में?

गोविन्द झा : मैं अनुवाद को अपनी जीविका समझता रहा। भाषाविज्ञान में मैं सबसे अधिक रुचि रखता हूं और इस रूप में जब मुझे कही स्थापित होने का अवसर खुद नहीं हुआ तो उसमें लिखना मैंने लाभकर नही समझा; केवल पढ़ना ही पढ़ना रह गया। तो अंततः रह गयी मेरे हाथ हें केवल कहानी, जिससे मैं अपने आपको लोगों के बीच स्थापित कर पाया। आपके प्रश्न को टेढ़ा कर यही मेरा उत्तर होगा।

प्र. : यहां मैं थोड़ा हटकर एक प्रश्न करूँ कि हिन्दी का तो बहुत व्यापक संसार है, लेकिन तत्काल अगर उड़िया का उदाहरण लें हमलोग तो देखेंगे कि उड़िया लेखक बहुत हैं जो बहुत ही व्यस्त एवं कठिन जिंदगी जीते हैं। इसके बाद भी उनकी जो रचनाएं हैं–उनकी जो साहित्यक कृतियां हैं वे भारतीय क्या विश्व साहित्य में भी सम्मानित हैं–सीताकांत महापात्र हैं। देवदास छोटराय साहब तो बिहार में ही सरकारी सेवा में हैं। तो यह कैसे संभव हो सका? इसमें मैथिली के रचनाकारों को कहां तक आप मुक्त करेंगे या दोषी मानेंगे?

गोविन्द झा : इसमें कोई दोषी नहीं है। मैथिली में भी बड़े व्यस्त लोग भी समय-समय पर खूब लिखते रहे हैं–और जो बेकार बैठे रहते हैं वे भी नहीं लिखते हैं। लिखने की प्रेरणा स्वयं फुरसत बना लेती है (दृढ़ता से) और बाध्यतावश ही उस प्रेरणा को कोई दवा पाता है लेकिन बाध्यता मैथिलीके क्षेत्र में अधिक है और अन्य भाषाओं के क्षेत्र में यह बाध्यता कम है–आर्थिक बाध्यता मैं समझता हूँ अन्य स्थानों में नहीं है क्योंकि कुछ अर्थकर भी हो जाता है साहित्यसर्जन; मैथिली में एकदम नहीं होता–इतना अन्तर तो आयेगा ही।

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

प्र. : हिंदी के जो पाठक हैं, रचनाकार हैं उनका मानना है कि मैथिली में ज्यादातर बातें वैसी लिखी जाती हैं जो कि हिंदी अथवा भारतीय अन्य भाषाओं की सकेंड रेट चीजें हैं–पिटी पिटाई बातों को दुहराया जाता है–न उनके कथ्य नये होते हैं–न उनके पात्र वैसे होते हैं–एक नयापन कहीं भी नहीं लगता है। ऐसा क्यों होता है ?

गोविन्द झा : इस निष्कर्ष से मैं सहमत नहीं हूँ। मैथिली साहित्य में लिखने के लिए जो बातें हैं–जो समाज है–जो समस्याएं हैं, वे बहुधा अन्य क्षेत्रों से पृथक हैं और मैथिली के आलोचक अभी भी यह कहते हैं कि इसको मैथिली रचना प्रथमतः होनी चाहिए उसके बाद वह साहित्य है।

प्र. : आपका यह जो कथासंग्रह है 'सामाक पौती' इसको, बहुत दिनों बाद मैथिली की जो रचनाएं और आती रही हैं, उनकी तुलना में कहा जाता है कि उनमें सही रूप में मैथिली की गंध है–और ऐसा लगता है कि मैथिली की कृति है– ऐसा नही है कि किसी अन्य भाषा में सोचा गया है और, तब लिखा गया है। लेकिन कुछ लोगों का यह भी कहना है कि यह बहुत ही कैजुअली लिखी गयी चीज है, जिनका एक संकलन निकल गया और चूँकि गोविंद झा जी को पुरस्कृत करना था, इसलिए इसको उठा लिया गया। आप क्या समझते हैं ?

गोविन्द झा : देखिये, साहित्य का मूल्यांकन मुंडे–मुंडे भिन्न होता है और यह तो जरूर है कि साहित्य की कुछ ऐसी हस्तियां आयी हैं, जिनके आगे छोटे-छोटे साहित्यकार टिक नहीं पाते। यदि उनसे मुझे टकराएं तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा। यदि मैथिली का जो स्तर है और हम जैसे लेखकों का जो स्तर है, उनमें विचार करें तो मैं नहीं समझता कि यह किसी तरह आ गया और उसपर पुरस्कार दे दिया गया। अंतर इतना ही है कि मैं बहुत सरल-वस्तु, बहुत सरल सुबोध भाषा में और बहुत सरल रीति से प्रस्तुत करता हूं जिसमें नाटकीयता भले ही हो लेनिक वक्रता नहीं है–न अभिव्यक्ति में वक्रता-न कथा की गति में वक्रता और न चिंतन की वक्रता।

–प्रमोद कुमार झा

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

OUR CONTRIBUTORS

1. **Prof. Anant Lal Thakur**
   Director (Retd.), K.P. Jaiswal Research Institute, Patna.
   59 A, Ram Mohun Sarani, Malir Bagan, At and P.O. Baidya Bati, Houghly—712101, West Bengal.
2. **Pt. Adya Charan Jha**
   Ex. Pro- V.C., K. S. D. Sanskrit University, Darbhanga.
   Ashiana Road, Patna–800023.
3. **Prof. Anand Mishra**
   University Prof. & Head of Maithili Deptt. (Retd); Patna University, Patna.
   Chitragupta Nagar (South), Kankarbagh, Patna-800020.
4. **Prof. Amarnath Jha**
   University Prof. & Head of Maithili Deptt. (Retd), L. N. M. University, Darbhanga.
   59-G, Diwani Takiya, Kathalbari, Darbhanga 846004.
5. **Ashok**
   C/o Ashok kumar Jha, Dy. Registrar, Co-operative Societies, Govt. of Bihar, Patna Division, Patna.
6. **Ajit Mishra**
   Research schollar, Deptt of Maithili, L.N.M. University, Darbhanga.
   At Navtol, P. O. Raje, Via-Sarisab- Pahi, Madhubani
7. **Late Arsi Prasad Singh**
   At P.O. Araut, Dist. Samastipur.
8. **Prof. Baidya Nath Saraswati**
   Indira Gandhi National Center for the Arts, Janpath, New Delhi– 110001.
   138, Madan Lal Block, Asiad Village, New Delhi—110049.
9. **Prof. Braj Kishor Swain,**
   Reader, Deptt. of Dharmashastra, Shree Jagannath Sanskrit University, Srivihar, Puri—752001.
   Siddha Mahaveer Colony, Puri—752002.
10. **Dr. Badri Narayan Jha**
    22/768, Subhash Nagar, Chemburn, Mumbai—400071.
11. **Sri Babu Saheb Chaudhary**
    9/1, Khelat Ghose Lane, Calcutta-700007.
12. **Dr. Bhimnath Jha**
    Deptt. of Maithili, L.N. Mithila University, Darbhanga.
    Dharmapur, Laxmisagar, Darbhanga, 846009.
13. **Buddhinath Jha**
    Qrts, I. T. O. 12 A/1032, Bokaro Steel City, Bokaro-8270/2.
14. **Dr. Batohi Jha**
    Kendriya Sanskrit Vidyapeetham, Vishal khanda–4, Gomati nagar, Lakhnau–226010.
15. **Banadeviputra Bhavanath**
    Bihar Sanskrit Siksha Board, East Boring Canal Road, Patna.
16. **Prof. Bhairaveshwar Jha.**
    Deptt of English, Harshpati Singh College, Madhepur, Madhubani—847408
17. **Chatranand Singh Jha**
    All India Radio, Patna.
18. **Prof. Damodar Thakur**
    D. P. I. (Retd), Deptt. of Education, Govt. of Bihar.
    Rood No. 11, Rajendra nagar, Patna—800016.
19. **Dr. Dhirendra.**
    Prof. & Head of Maithili Deptt., Tribhuwan University, Kathmandu, R. R. Campus, Janakpur Dham, Nepal.
20. **Dr. Durganath Jha 'Shreesh'**
    Head of Maithili Deptt. (Retd), Millat College, Laheria sarai.
    56-9. Diwani Takiya, Kathalbari, Darbhanga 846004.
21. **Prof. Dhumketu**
    Koilakh, Madhubani— 847426.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

22. **Dr. Devakant Jha**
Retd. University Prof. and Head, Deptt. of Sanskrit, Magadh Univrsity, BodhGaya and Veer Kuwere Singh University, Ara.
Devagaganam, Hanumannagar, Punai chak, Patna.

23. **Dr. Deo Shankar Navin**
National Book Trust of India, A-5, Green Park, New Delhi—110016.

24. **Dhirendra Premarshi**
Rural Save Grain Programme, Shree Mahal, Pulchok Lalitpur, Kathmandu, Nepal.

25. **Fazalur Rahman Hashmi**
Bhavanandapura (Bhujpura), P. O. Panapur, Begusrai— 851127.

26. **Dr. Gulab Das Broker**
397, Swami Vivekanand Road, Vile Parle (w), Mumbai—400056.

27. **Dr. (Late) Govind Mishra**
Faculty of Law, Delhi University, Delhi.

28. **Dr. Gopaljee Jha 'Gopash'**
Dy. Director (Retd), Deptt. of Official Language, Govt. of Bihar.
Prabha Niketan, Jankinagar, Kankarbagh, Patna 800020.

29. **Dr. Ganga Nath Jha 'Bujhanuk'**
At Bittho, P.O. Sarisab Pali, Madhubani 847424.

30. **Sri. Gangadhar Prasad Shrivastava**
Dy. Directer (Retd), Deptt, of Official Language, Govt. of Bihar.
Patel Nagar, Patna.

31. **Pt. Hiranand Jha Shastri**
Editor, Aryavart, (Retd).
MIGH, Hanuman Nagar, Kankarbagh, Patna 800 020.

32. **Prof. Hetukar Jha**
Dept. of Sociology, Patna University.
Ashianagar, Patna-800 023.

33. **Prof. Hiranath Jha**
Head of Sanskrit Deptt., Nalanda Mahila College, Biharsharif.

34. **Dr. (Smt.) Indira Jha**
Head of Maithili Deptt., Dwarika College. Kankarbagh, Patna.
Bihar stores, Narayan Market, Langartoli, Patna-800 003.

35. **Dr. Jayakant Mishra**
University Prof. & Head of English Deptt. (Retd), Allahabad University.
1, Sir P.C. Banerjee Road, Allenganj, Allahabad-211002.

36. **Pt. Jata Shankar Das**
At Sarhad, P.O. Sarhad-shahpur, Pandaul. Madhubani.

37. **Dr. Jagdish Chandra Jha**
University Prof. & Head of History Deptt, Patna University.
Premchand Marg, Rejendra nagar, Patna 8000016.

38. **Pt. Jitendra Narayan Jha**
P.O. Raje. Sarisab Pali, Madhubani.

39. **Dr. Jagdish Mishra**
Head of Maithili Deptt., M.L.S. College, Sarisab-pahi, Madhubani.

40. **Keerti Narayan Mishra**
Shokahara, Barauni, Begusarai.
Vijay shree Ltd., Fort Williom Jute Mills, Dev Shibpur, Howrah 711102, W.B.

41. **Dr. Kishor Nath Jha**
Reader, Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Institute, Azad Park, Allahabad.

42. **Kunal**
Road No 4., Q. No. 8, Shreekrishna Nagar, Patna. 8000 01.

43. **Krishnamohan Mishra**
Manikpur. Surjgarha, Munger.

44. **Kedar Kaman**
Kishun Kutir, Supaul .

45. **Dr. Keshawanand Dev Goswami**
Deptt. of Assamese, Dibrugarh University, Dibrugarh-786004.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

46. **Dr. Kota Shivarama Karanth**
P.O. Saligram, Udipi Taluk, South Karnatak, 576625.

47. **Dr. Madaneshwar Mishra**
Ex. Vice Chacellor, L. N. Mithila University, Darbhanga.
Nargona, Kameshwarnagar, Darbhanga 846005.

48. **Mantreshwar Jha. IAS**
Executive Director (Vig.) BHEL.
728. Mahabir Prasad Block, Asiad Village, New Delhi, 110049

49. **Dr. Mohananda Mishra.**
Principal, Balananda Sanskrit College, Karni Bagh, Chandra dwari Road, Deoghar, 814117.

50. **Markandeya Pravasi**
Aryavart, Fraser Raod, Patna 8000 01.

51. **Dr. (Mrs) Mithilesh Kumari Mishra.**
Rashtrabhasha Parishad, Prem Chand Marg, Rajendra Nagar, Patna. 8000 06.

52. **Dr. Madan Mohan Mishra.**
DGM, NAWARD.

53. **Mohan Bharadwaj**
5/25, R. Block, Patna 8000 01.

54. **Pt Madhava Jha**
Principal, Sanskrit College, Isahpur, Sarisb Pahi, Madhubani.

55. **Manoj Kumar Mishra**
138, Madan Lal Block, Asiad village, New Delhi.

56. **Dr. Navin Chandra Mishra**
University Prof. & Head of Maithili Deptt. (Retd), L. N. Mithila University,
Lalbagh, Darbhanga-846004.

57. **Dr. (Smt) Niraja Renu**
C/o Dr. Kishor nath Jha, Allahabad.

58. **Dr. Nar Narayan Ray**
Head of Hindi Deptt., Kasba College, Garh Banaili, Purnea. 854325.

59. **Navin Chaudhary**
Hindi officer, Botanical Survey of India, P. 8, Brabourne Road, Calcutta 700001.

60. **Nasirruddin Ansari**
Bihar Administrative Service, Regional Transport Authority, Chapra.

61. **Prof. Nilratan Sen**
B–10/247, P.O. Kalyani, Nadia, West Bengal 741235.

62. **Pt. Parmanandan Shastri**
Mandiri Sauth, Patna—8000 01.

63. **(Smt) Premlata Mishra. 'Prem'**
President, Bhangima.
L-2/33, PIT colony, Kankrbagh, Patna—8000 20.

64. **Smt. Pratima Pandey**
558, Pocket E, Mayurihar, Phase-II, New Delhi 110091.

65. **Dr(Smt) Pratibha Roy**
'Akhyayika', Tulsipur, Cuttack-753008.

66. **Dr. Prem Shankar Singh**
Prof. & Head of Maithili Deptt, Tilka Manjhi University, Bhagalpur.
'Richayatan', Radharani Singh Road, Bhagalpur-812001.

67. **Prof. Profulla Kumar Singh 'Maun'**
Inspector of Colleges, B. A. Bihar University, Muzaffarpur.
Professor colony, Mahnar, Vaishali. 844506.

69. **Dr. Phool Chandra Mishra 'Raman'**
Head of Sanskrit Deptt., Harshpatis Singh College, Madhepur, Madhubani.

70. **Dr. Rajendra Mishra**
Prof. & Head of Sanskrit Deptt., Shimla University.
114, Teachers Hostel, Summer Hill, Shimla 5

71. **Dr. Ramchandra Mishra**
Prof. & Head of Hindi Deptt. (Retd), Nagpur University.
'Vaidehi', 47 Vidyavihar', Ranapratapnagar, Nagpur 40002.

72. **Prof Ramashraya Jha**
Prof. & Head of Music & Fine Arts Deptt. (Retd), Allahabad University,
Sita Ram Bhawan, 557, Baghambari Housing Scheme, Bhaardwajpuram, Allahabad-211006.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

73. **Ramanand Renu**
Mithilanchal Prakashan, Rai Saheb Pokhar, (North), Laheriasarai, Darbhanga 846001.

74. **Radhaballabh Kanth**
Manager (Rajbhasha), Reserve Bank of India, Central Office, Shahid Bhagat Singh Marg, Mumbari-400001.

75. **Prof. Ramavatar Yadav.**
Member, Higher Secondary Education Sansthan, Govt of Royal Nepal.
34 k, Professors qurts, Tribhuvan University, Kirtipur, Kathmandoo, Nepal.

76. **Dr. Ram Chandra Sharma Parashar**
222, 39 th, C. Cross, 5th Block, Jayanagar, Banglore, 560041.

77. **Dr. Ranbir Rangra**
Director (Retd), Kendriya Hindi Directorate, New Delhi , Deptt. of Education & culture, Ministry of Human Resources.
C.7/180, Navim Niketan. Safdarjang Development Area, New Delhi-1100016.

78. **Dr. Ramji Thakur**
Head of Sanskrit Deptt (Retd), M. L. S. College, Sarisab-Pahi, Madhubani.
Dharmpur, Lohna Road, Darbhanga.

79. **Ram Lochan Thakur**
KC. 88, Saltlake, Calcutta, 700091

80. **Dr. Ram Prasad Lama**
Sammelan Bhawan, 15, Sonam Bangarshi Road, Darjeeling-734101, W. Bangal.

81. **Dr. Ram Kishor Jha**
Ganganath Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeeth, Azad Park, Allahabad.

82. **Dr. Rewati Raman Lal**
Nepal Rastra Bank, Janakpur Dham, Nepal, *via*-Jayanagar, 847426, Madhubani.

83. **Raj**
Lohna, Sarisab-Pahi, Madhubani-847424.

84. **Prof. Rajkumar Jha**
Deptt. of Maithili, Rameshwar College, Muzaffarpur.

85. **Dr. Ramanand Jha 'Raman'**
Lalganj, P. O. Lohna, *Via*. Sarisab-Pahi Madhubani–847424.
Flat No 13, RBI Staff Qrs, Rajendra Nagar, Patna 800016.

86. **Pt. Sri Shyam Sundar Jha**
Mahrail, Jhanjharpur, Madhubani.

87. **Pt. Sri Surendra Jha 'Suman'**
Maithili Mandir, Rajkumarganj, Darbhanga 846004.

88. **Dr. Shashinath Jha**
Deptt. of Vyakaran, KSD Sanskrit University, Kameshwar nagar, Darbhanga, 846005.

89. **ShreeDev**
C/o Bageshwar Jha, C-29. Nanakpura, New Delhi-110021.

90. **Pt. Shambhu Nath Jha**
Isahpur, Sarisab-Pahi, Madhubani 847424.

91. **Saraswat**
Firozegarh, Ghoghardiha, Madhubani-847402.

92. **Sushil Jha**
Dy, Directer (Retd), Deptt. of Official Language, Govt. of Bihar.
Janakinagar, Hanumannagar, Kankrbagh, Patna-800020.

93. **Dr. Shivashankar Jha 'Kanta'**
Prof. & Head of Maithili Deptt., L. N. Mithila University, Kameshwar Nagar, Darbhanga 846005.

94. **Dr. Shankar Kumar Jha**
Prof. & Head of Political Science Deptt. (Retd), L. N. Mithila University.
Mirzapur, Darbhanga–846004.

95. **Sri Shailendral Anand**
Ugratara Prakashan, Lohna, Sarisab–Pahi, Madhubani-847424.

96. **Dr. Satya Narayan Mehta**
Deptt. of Maithili, B.N. College, Patna-800004.

97. **Dr. Shiva Shankar Shreeniwas**
Lohana, Sarisab-Pahi, Madhubani-847424.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

98. **Dr. Shailendra Kumar Jha**
Reader, Deptt. of Economics, D. S. College, Katihar; Raj hata, Kalibari, Vinodpur, Katihar 854105.

99. **Dr. Shree Ranjan Surideva**
Bhikhna Pahari, Patna-800006.

100. **Dr. Shivabansh Pandey**
Director (Retd), Rashtrabhasha Parishad, Premchand Marg, Rajendra Negar, Patna 800016.

101. **Dr. Sureshwar Jha**
Convener, Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi, New Delhi.
Rambha Sadan, 2.B, Rajkumarganj, Darbhanga 846004.

102. **Sri Satish Chandra Jha**
General Manager, Prag Tools Ltd., Hyderabad.

103. **Dr. Tarakant Mishra**
Prof. & Head of Hindi Deptt. (Retd), B. S. College, Danapur.
Mithila Colony, Bataganj, Danapur, Patna 800018.

104. **Dr. Tarakant Jha**
Prof. & Head of Hindi Deptt., Pandu College, Pandu-781012. Assam.

105. **Dr. Taranand Viyogi**
Bihar Administrative Service, Circle Officer, Sahebganj-816109.

106. **Dr. Uma Raman Jha**
Principal, Kendriya Sanskrit Vidyapeetham, Vishal Khanda, 4 Gomtinagar, Lucknow 226010.

107. **Pt. Upendra Nath Jha 'Vyas'**
Engineer in chief (Retd), Deptt. of Public Health Engineering, Govt. of Bihar.
Shreebhavan, Boring Raod, Patna-800001.

108. **Prof Umanath Jha**
Ex. Pro. V. C. L. N. Mithila University,
Bela gardens, Darbhanga 846006.

109. **Dr. Umesh Chandra Bhatt**
97/3F/1, Shivakuti, Allahabad-211004.

110. **Uday Chandra Jha 'Vinod'**
Rohika, Madhubani.

111. **Dr. Vishnu Prabhakar**
818, Kundewalan, Ajmeriganj, Delhi-11006.

112. **Sri Vijay Nath Thakur**
Dy. Director (Retd), Deptt. of Official Language, Govt. of Bihar.
23/145, Shrikrishna nagar, Patna-800001.

113. **Dr. Vishnu kant Jha**
Adarsha Sanskrit College, Kalirakha, Deoghar 854112.

114. **Prof. Vashistha Marayan Jha**
Director, Centre for Advanced Studies in Sanskrit, University of Poona, Ganeshkhind, Pune 411001.

115. **Prof. Vinod Kumar Jha**
Head of Maithili Deptt., Mahanth Kabir College, Fatuha, Patna.

116. **Sri Yatri (Nagarjun)**
C/o Shobha Kant Mishra, Khaja sarai, Laheria sarai, Darbhanga 846001.

117. **Dr. Yogendra Prasad Yadava**
Linguist. Nepal Rajakiya Pragya Pratishthan, Kamladi, Kathmandoo, Nepal.

118. **Dr. Yashoda Nath Jha**
Deptt. of Maithili, R. K. College, Madhubani.
At Pahitol, Sarisab-Pahi, Madhubani-847424.

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

याज्ञिक

1. श्री रमेश, सहरसा
2. डा. श्री दीनानाथ मिश्र, सहरसा
3. श्री भोलाशंकर झा, उजान, लोहनारोड, दरभंगा
4. श्री अभयधारी सिंह, मधुबनी
5. श्री अवधेश आनन्द, महिषी
6. श्री उमानन्द राय, दुर्गागंज
7. श्री वरुणानन्द सिंह, कंकड़बाग, पटना
8. श्री शेषपति सिंह, कुर्जी, पटना
9. श्री विजय नारायण झा, जहानाबाद
10. श्री विनय कुमार सिन्हा, पटना
11. श्री रामसेवक राय, कंकड़बाग, पटना
12. श्री प्रेमानन्द मिश्र, ए. जी. ऑफिस, पटना
13. डा. श्री अशोक कुमार ठाकुर, कंकड़बाग, पटना
14. डा. श्री इन्द्रमोहन लाल दास, इलाहाबाद
15. डा. श्री बासुकीनाथ झा, पटना
16. डा. श्री अनिरुद्ध झा, पटना
17. श्री नरेन्द्र झा, पूर्णियाँ
18. श्री सतीशचन्द्र झा, शिवपुरी, पटना
19. श्री गौरीकान्त झा, इलाहाबाद
20. श्री बौआकान्त झा, पटना
21. श्री मधुसूदन प्रसाद, पुनाइचक, पटना
22. श्री जयनाथ तिवारी, शिवपुरी, पटना
23. श्री सुरेश मिश्र, धनबाद
24. डा. श्री जयधारी सिंह, मधुवनी
25. डा. श्री वरुण ठाकुर ,,
26. श्री गणपति झा, दरभंगा
27. श्री नारायणजी, मधुबनी
28. श्री राजीव कुमार झा, मधुबनी
29. प्रो. श्री परमेश्वर कापड़ि, जनकपुरधाम
30. श्री बदरीनारायण वर्मा, जलेश्वर, नेपाल
31. ड़ा. श्री गंगाप्रसाद 'अकेला', जनकपुरधाम
32. श्री दुर्गानन्द झा, लालगंज, मधुबनी
33. श्री लक्ष्मीकान्त झा, धर्मयुग प्रेस, पटना
34. श्रीमती मधु झा, विजयगर, पटना
35. डा. श्री लेखनाथ मिश्र, पटना
36. श्री अर्जुन ठाकुर, नयाटोला पटना
37. श्रीनारायण झा, आनंदपुरी, पटना
38. श्री देवेन्द्र चौधरी, राजभाषा विभाग, पटना
39. श्री नमोनाथ झा, मधुबनी
40. पं. श्री ताराकान्त झा, बोरिंग रोड, पटना
41. श्री ललित नारायण झा, सहरसा
42. श्री उपेन्द्र झा, पटेल नगर, पटना
43. श्री दुर्गानाथ झा, शिवपुरी, पटना
44. श्री रामचन्द्र खाँ, बन्दरबगीचा, पटना
45. डा. श्री तारानन्द वियोगी, साहेबगंज
46. डा. श्री अरुण कुमार सिंह, अरही, मधेपुरा
47. श्री तारानन्द झा 'तरुण', मलाढ़, सुपौल
48. श्री लाल बहादुर चौधरी, गुदड़ी रोड सुपौल
49. श्री असित कुमार दास, कायस्थ टोल, सुपौल
50. श्रीमती सुस्मिता पाठक, किसुन कुटीर, सुपौल
51. प्रो. श्री महेन्द्र झा ,सहरसा
52. श्री किशोरीकान्त मिश्र, नवीन प्रकाशन, कलकत्ता
53. श्री शारदानन्द झा, कलकत्ता
54. श्रीं शिवचन्द्र झा, कलकत्ता
55. श्री कामदेव झा, कलकत्ता
56. श्री राजमोहन झा, पटना
57. डा. (श्रीमती) नीता झा, दरभंगा
58. श्री उदय कुमार झा, दरभंगा
59. प्रो. (श्रीमती) मंजू सिंह, दरभंगा
60. डा. श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्र, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
61. श्री अरुण कुमार कर्ण, दिलाबरपुर, दरभंगा
62. प्रो. श्री लक्ष्मण चौधरी 'ललित', दरभंगा
63. श्री अमलेन्दुशेखर पाठक, दरभंगा
64. श्री. अशोक कुमार ठाकुर, स्टेशन रोड, दरभंगा
65. प्रो. श्री दमन कुमार झा, लक्ष्मीसागर. दरभंगा
66. डा. श्री मेघन प्रसाद, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

67. डा. श्री रामसेवक सिंह, भागलपुर
68. प्रो. श्री अशोक कुमार मेहता, दरभंगा
69. डा. रामनारायण सिंह रसलपुर नालन्दा
70. डा. श्री उपेन्द्र मेहता, पटना
71. डा. श्री उपेन्द्र प्रसाद यादव, सिंधियाघाट, समस्तीपुर
72. डा. श्री अर्जुन चौधरी, प्रधानाचार्य, पटौरी
73. डा. श्री श्रवण कुमार चौधरी, दरभंगा
74. डा. श्री जगन्नाथ झा, शुभंकरपुर, दरभंगा
75. श्री प्रेमचन्द्र झा, राजवंशीनगर, पटना
76. डा. श्री शिववंश पांडेय, पटना
77. श्री कौशल किशोर मिश्र, पटना
78. श्री धीरेन्द्र कुमार, पटना
79. डा. श्री देवकान्त झा, पटना
80. श्री जी. के. नन्दन, पाहीटोल, मधुबनी
81. श्री एस. के. कुन्दन, पाहीटोल, मधुबनी
82. श्री अभयनाथ मिश्र, कटिहार
83. श्री राजकुमार सिंह झा, कटिहार
84. श्री गंगानाथ झा, कटिहार
85. डा. श्री रामनरेश सिंह, सहरसा
86. श्री डी. सी. झा, कटिहार
87. श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम,' पटना
88. श्री छत्रानन्द सिंह झा, पटना
89. श्री सीताराम झा, मुम्बई
90. श्री शारदानन्द दास 'परिमल', नई दिल्ली
91. श्री जगन्नाथ झा, नई दिल्ली
92. श्री उमापति सिंह, मधेपुर
93. श्री सतीशचन्द्र झा, हैदराबाद
94. प्रो. श्री कुलधारी सिंह, मधुबनी
95. डा. श्री पी. एन. विद्यार्थी, मधेपुरा
96. श्री रेवानाथ मिश्र, उदयपुर
97. प्रो. श्री विजयधारी सिंह, मधुबनी
98. प्रो. श्रीनारायण झा, नरहन
99. श्री जीवकान्त, इयोढ़, मधुबनी
100. डा. श्री किशोरनाथ झा, इलाहाबाद
101. प्रो. श्री विष्णुकान्त झा, देवघर
102. श्री रामलोचन ठाकुर, कलकत्ता
103. प्रो. श्री भक्तिधारी सिंह, मधुबनी
104. श्री वरुणानन्द सिंह, पटना
105. श्री भोगेन्द्र झा, पटना
106. श्री श्यामानन्द चौधरी, मधुबनी
107. श्री भवनाथ झा, दरभंगा
108. डा. श्री नागेन्द्र नारायण झा, मधुबनी
109. श्री चन्द्रमोहन कर्ण, हैदराबाद
110. श्री रामकुमार झा, पटना
111 प्रो. श्री राजकुमार झा, मुजफ्फरपुर
112. श्री चन्द्रमोहन झा, रांची
113. श्री चन्द्रेश, दरभंगा
114. श्री वैद्यनाथ यादव, दरभंगा
115. श्रीमती अम्बिका देवी
116. श्रीमती सुषमा चन्दन
117. श्री नागेश चन्द्र मिश्र, पटना
118. डा. श्री गणपति नाथ झा, पटना
119. डा. श्री सुरेश्वर झा, दरभंगा
120. डा. श्री कालीकान्त झा. कलकत्ता
121. श्री पीताम्बर पाठक, कलकत्ता
122. श्री मन्त्रेश्वर झा, नई दिल्ली
123. डा. श्री इन्द्रकान्त झा, पटना
124. पं. श्री उमानन्द मिश्र, रैयाम
125. श्री विजयनारायण चौधरी, पटना
126. श्री बिन्दुनाथ मिश्र, नवटोल, मधुबनी
127. श्री हरिहर नाथ झा, नवादा
128. श्री विनीत चन्द्र, कंकड़बाग, पटना
129. श्री मनोज कुमार ठाकुर, पटना
130. श्री विकास कुमार झा, पटना
131. श्री विभूति नाथ झा, रिजर्व बैंक, पटना
132. श्री मनोज कुमार झा, हनुमानगर, पटना
133. श्री भवनाथ झा, पटना
127. श्री कामेश्वर प्रसाद सिंह, धनबाद
134. श्री इन्द्रकुमार झा, दरभंगा
135. श्री शरदिन्दु कुमार चौधरी, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

136. श्री बुचरू पासवान. सुपौल
137. श्री राजकुमार मिश्र, रांची
138. डा. श्री नवीन कुमार दास, सुपौल
139. श्री रामदत्त सिंह, लहेरियासराय
140. मैथिली साहित्य परिषद, राजविराज, नेपाल
141. श्री जीवनाथ मिश्र, लालगंज, मधुबनी
142. श्री नृपनारायण चौधरी, कलकत्ता
143. श्री विनोदानन्द झा, कलकत्ता
144. श्री राजनन्दन लाल दास, कलकत्ता
145. डा. श्री नरनारायण राय, दुर्गागंज
146. श्री गंगानाथ झा, केवटी, दरभंगा
147. श्री जगदानन्द झा, बेलीरोड, पटना
148. श्री लालटुना झा, शास्त्रीनगर, पटना
149. श्री रामनरेश झा, शास्त्रीनगर, पटना
150. श्री सूर्यकान्त पाठक, शास्त्रीनगर, पटना
151. श्री वैद्यनाथ झा, शास्त्रीनगर, पटना
152. श्री घनश्याम मिश्र, राजवंशीनगर, पटना
153. श्री विद्याधर मिश्र, राजवंशीनगर पटना
154. श्री जगन्नाथ राय, शास्त्रीनगर, पटना
155. श्री शिवनारायण झा, शास्त्रीनगर, पटना
156. श्री दयाशंकर झा, राजवंशीनगर, पटना
157. श्री बी. एन. ठाकुर, शास्त्रीनगर, पटना
158. श्री सत्येन्द्र कुमार दास, शास्त्रीनगर, पटना
159. श्री वैद्यनाथ मिश्र, शास्त्रीनगर, पटना
160. श्री नागेन्द्र झा, पूर्वी केनाल रोड, पटना
161. श्री वैद्यनाथ झा, शास्त्रीनगर, पटना
162. श्री नागेन्द्र झा, शास्त्रीनगर, पटना
163. श्री प्रेमकान्त झा, कंकड़बाग, पटना
164. श्री अजित कुमार ठाकुर, सी. डी. ए., पटना
165. श्री विश्वेश्वर दास, राजभाषा विभाग, रांची
166. श्री राम पुकार यादव, पिण्डारूच, दरभंगा
167. श्री अब्दुल मल्लिक, केवटी, दरभंगा
168. श्री शिवकान्त झा, पिण्डारूच, दरभंगा
169. श्री ध्रुवेन्दु कुमार, रघौली, दरभंगा
170. मो. मोगनी, जलवाए, दरभंगा
171. श्री ललित कुमार झा, नोएडा
172. श्री उमेश प्रसाद, दुमका
173. श्री युगधर मिश्र, बेहट, दरभंगा
174. श्री राजेन्द्र झा, धनबाद
175. श्री जयनारायण सिंह, राजभाषा विभाग, पटना
176. श्री अशेश्वर मोची, पटना
177. श्री सहिन्द्र राम, राजभाषा विभाग, पटना
178. श्री श्यामलेन्दु चक्रवर्ती ,,
179. श्री भक्तीश्वर झा, राजाबाजार, पटना
180. श्री देवीनाथ मिश्र, पटेलनगर, पटना
181. श्री सत्यनारायण पांडेय, राजभाषा विभाग, पटना
182. श्री जितेन्द्र प्रसाद पांडेय ,, ,, ,, ,, ,, ,,
183. श्री विजयनाथ ठाकुर, श्रीकृष्णनगर, पटना
184. श्री अमरनाथ ठाकुर, राजवंशीनगर, पटना
185. श्री नागेश कुमार सिंह झा, कटिहार
186. डा. श्री गंगानन्द सिंह झा, कटिहार
187. श्री पुरुषोत्तम मिश्र, भट्टपुरा, मधुबनी
188. श्री अरविन्द प्रिय, लालगंज, मधुबनी
189. श्री सुधीर कुमार सिंह, इन्द्रपुर डेउढ़ी, मधुबनी
190. श्री गोकुल नाथ मिश्र, लालगंज, मधुबनी
191. प्रो. जगदीश मिश्र, नवटोल, मधुबनी
192. पं. माधव झा, इसहपुर, मधुबनी
193. श्री उग्रानन्द झा, पटेलनगर, पटना
194. श्री अरविन्द कुमार वर्मा, पटना
195. श्री योगेश्वर झा, उजान, दरभंगा
196. श्रीमती उषा ओझा, पटना
197. श्री ज्ञान अतीश मिश्र, पटना
198. श्री भवेन्द्र झा, शास्त्रीनगर, पटना
199. डा. श्री हीरानाथ झा, बिहारशरीफ
200. श्री काशीनाथ शुक्ल, पटना
201. श्री अशोक मोहन ठाकुर, पटना
202. श्री उमाशंकर सिंह, पटना
203. श्री राधव जी, पटेल नगर, पटना
204. श्री नागेश झा, पटना
205. पं. श्री राधानन्दन झा, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

206. श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर, पटना
271. श्री वेदानन्द झा, पटना
208. श्री कुशेश्वर झा, पटना
209. डा. श्री अमरेश पाठंक, पटना
210. श्री कृपानाथ पाठक, पटना
211. श्री जगतनारायण प्रसाद, पटना
212. डा. श्री सुमनकान्त झा, पटना
213. श्री मधुकर भारद्वाज, आर ब्लाक, पटना
214. श्री जयनाथ ठाकुर, कंकड़बाग, पटना
215. श्री मदनमोहन मिश्र, नालारोड, पटना
216. श्री परमानन्द झा, सैदपुर, पटना
217. डा. श्री रामजी ठाकुर, धर्मपुर, दरभंगा
218. डा. श्री फूलकान्त मिश्र, लगमा, लोहनारोड
219. डा. श्री भवेन्द्र झा, दिल्ली
220. श्री हरनाथ ठाकुर, सर्वसीमा, मधुबनी
221. श्री देशपति सिंह, मधेपुर
222. डा. श्री फूलचन्द्र मिश्र 'रमण', मधेपुर
223. श्री तारेन्द्र ठाकुर, मधेपुर
224. श्री लीलानन्द झा, दीप, मधुबनी
225. पं. श्री सदानन्द झा, दीप, मधुबनी
226. श्री मनोजनाथ झा, दीप, मधुबनी
227. डा. श्री विश्वनाथ झा, दीप, मधुबनी
228. डा. श्री श्रीपति सिंह, पचही, मधुबनी
229. श्री विभूति नाथ झा, मधेपुर
230. श्री लोकपति सिंह, लखनौर, मधुबनी
231. प्रो. श्री खुशीलाल झा, झंझारपुर
232. डा. श्री रामकुमार शर्मा, लगमा, लोहनारोड
233. पं. श्री विश्वेश्वर झा, इसहपुर, मधुबनी
234. डा. श्री लक्ष्मीनाथ झा, मधुबनी
235. डा. श्री अमर नाथ झा, दीप, मधुबनी
236. श्री हंसधर झा, पटौरी, दरभंगा
237. श्री विमल ठाकुर, दरभंगा
238. श्री सुरेश्वर झा, कामेश्वर नगर, दरभंगा
239. श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्र, कादिराबाद, दरभंगा
240. डा. श्री प्रमोद झा, दीप, मधुबनी
241. श्रीमती मनीषा झा, शिवपुरी, पटना
242. श्री रवीन्द्रनाथ झा, राष्ट्रीय बैंक, पटना
243. श्री सुरेन्द्र नाथ झा, आशियानानगर, पटना
244. श्री गंगाधर प्रसाद श्रीवास्तव, पटेलनगर, पटना
245. श्री डा. अशरफून नबी, राजभाषा विभाग, पटना
246. श्री परमानन्द मिश्र, पटना
247. श्री रमानन्द कुमार, पटना
248. श्री सतीश चन्द्र झा, रिजर्व बैंक, पटना
249. डा. श्री उदयनाथ झा 'अशोक', शृंगेरी
250. श्री सुरेन्द्रनारायण रायचौधरी, पटना
251. श्री कलानाथ मिश्र, पटना
252. श्री रमानन्द चौधरी, पटना
253. श्री प्राणमोहन मिश्र, पटना
254. श्री मनोज कुमार झा, गाँधी बिहार, पटना
255. श्री सदानन्द झा, मुसल्लहपुर, पटना
256. श्री सरोज कुमार मिश्र, राजेन्द्रनगर, पटना
257. श्री राजेन्द्र नाथ चौधरी, छिंदवाड़ा राजस्थान
258. श्री ताराकान्त मिश्र, गर्दनीबाग, पटना
259. श्री नरेन्द झा, राजस्व विभाग, पटना
260. श्री मोहम्मद नसीम, राजभाषा विभाग, पटना
261. श्री सीतारमण झा, हाटी, मधुबनी
262. डा. श्री शाहिद जमील खाँ, राजभाषा विभाग, पटना
263. श्री जीतेन्द्र नाथ झा, चांदमारी रोड, पटना
264. श्री वैद्यनाथ साह, पाहीटोल, मधुबनी
265. श्री प्रबोध झा, पाहीटोल, मधुबनी
266. श्री शमीम अहमद, राजभाषा विभाग, पटना
267. श्री विश्वेश्वर चौधरी, राजभाषा विभाग, पटना
268. श्री विवेकानन्द झा, पटना
269. श्री मोहन चौधरी, पटना
270. श्री विजय कुमार मिश्र, पटना
271. डा. श्री दिनेश्वर लाल 'आनन्द', पटना
272. प्रेम कुमार मिश्र पटना
273. श्री मिथिलेश कुमार 'राजा', सी. डी. ए. कॉलोनी, पटना
274. श्री मणिकान्त झा, पटना
275. श्री तृप्तिनारायण झा, मिथिला कॉलोनी, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

276. रामकुमार झा, एडवोकेट, पटना
277. श्री पाण्डेय कपिल, इन्द्रपुरी, पटना
278. श्री चुनचुन झा, पटेलनगर, पटना
279. श्री शारदाचरण झा, पटना
280. डा. श्री जगन्नाथ मिश्र, पटना
281. श्री बुद्धिनाथ झा, बोकारो
282. श्री अर्धनारीश्वर, बोकारो
283. श्री तुलानन्द मिश्र, बोकारो
284. श्री रामसेवक महतो श्रीकृष्णपुरी, पटना
285. डा. श्री चेतकर झा, श्रीकृष्णपुरी, पटना
286. श्री राधानाथ झा, पटेलनगर, पटना
287. श्री योगेन्द्र नारायण झा, पुनाइचक, पटना
288. श्रीनारायण झा, वाटरटावर, पटना
289. श्री अरुण आचार्य, पटना
290. श्री अनमोल, कलकत्ता
291. डा. श्री निरंजन कुमार, दहौड़ा, सकरी, दरभंगा
292. डा. श्री नारायण झा, लोहना, मधुबनी
293. डा. श्री कुमरकान्त पाठक, झंझारपुर
294. डा. श्री अनिल कुमार झा, जानकीनगर, पटना
295. श्रीमती प्रभा मिश्र, पाहीटोल, मधबनी
296. श्री अमरनाथ झा, नवटोल, मधुबनी
297. श्री गोपालचन्द्र मिश्र, नवटोल, मधुबनी
298. डा. श्री यशोदानाथ झा, पाही टोल, मधुबनी
299. पं. श्री जितेन्द्र नारायण झा, राजे, मधुबनी
300. डा. श्री शान्तिनाथ झा, सरिसब, मधुबनी
301. प्रो. श्री मित्रनाथ मिश्र. मधुबनी
302. श्री गंगेश मिश्र, भट्टपुरा, मधुबनी
303. डा. श्री कृष्णानन्द झा, गंगौली, मधुबनी
304. श्री मोक्षानन्द मिश्र, राजे, मधुबनी
305. श्री उमापति मिश्र, गंगौली, मधुबनी
306. डा. श्री सदन मिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
307. डा. श्री कमलनाथ मिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
308. डा. श्री ललितकर झा, सरिसब, मधुबनी
309. डा. श्री सुबोध झा, रुपौली, मधुबनी
310. पं. श्री यन्त्रनाथ मिश्र, यमुथरि, मधुबनी
311. श्री एकनाथ झा, बिट्ठो, मधुबनी
312. डा. मिहिर कुमार ठाकुर, धर्मपुर, मधुबनी
313. प्रो. श्री प्रबोध झा, रुपौली, मधुबनी
314. प्रो. श्री मुक्तिनाथ झा, बिट्ठो, मधुबनी
315. डा. श्री गंगानाथ झा 'बुझनुक', बिट्ठो, मधुबनी
316. डा. श्री विद्यानन्द झा, बिट्टो, मधुबनी
317. श्री रणजीतमिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
318. डा. श्री वैद्यनाथ झा, पाहीटोल, मधुबनी
319. पं. श्री शंभुनाथ झा, इसहपुर, मधुबनी
320. प्रो. श्री कपिलेश्वर झा, कंकड़बाग, पटना
321. प्रो. (श्रीमती) राजकुमारी झा, पटना
322. प्रो. (श्रीमती) इन्दिरा झा, पटना
323. श्री श्यामानन्द झा, कंकड़बाग, पटना
324. डा. श्री चन्द्रधर झा, पटना
325. प्रो. (श्रीमती) शीला चौधरी, पटना
326. श्रीमती मिथिलेश कुमार मिश्र, पटना
327. श्री श्रीशेखर झा, रिजर्व बैंक, पटना
328. श्री वसन्त कुमार झा, पटेल नगर, पटना
329. श्री सत्यनारायण झा, नयाटोला, पटना
330. श्री मदनमोहन झा, कौटिल्यविहार, पटना
331. पं. श्री आद्याचरण झा, पटना
332. श्री मधुसूदन मिश्र, आशियाना नगर, पटना
333. श्री मदनमोहन झा, श्रीकृष्णपुरी, पटना
334. डा. शालिग्राम यादव, बुद्ध मार्ग, पटना
335. पं. श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', बोरिंग रोड, पटना
336. डा. श्री हरिनारायण मिश्र, बोरिंग रोड, पटना
337. श्री रत्नेश्वर झा, बुद्ध मार्ग, पटना
338. श्री रविकान्त झा, बुद्धमार्ग, पटना
339. श्री सियाराम झा 'सारस', धनबाद
340. श्री उदय चन्द्र लाल दास, धनबाद
341. श्री अंजनी कुमार दास, धनबाद
342. श्री एन. के. झा, आरा
343. श्री एम. के. झा, पटना
344. श्री ए. के. चन्दन, श्रीगंगानगर, राजस्थान
345. घनानन्द झा, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

276. रामकुमार झा, एडवोकेट, पटना
277. श्री पाण्डेय कपिल, इन्द्रपुरी, पटना
278. श्री चुनचुन झा, पटेलनगर, पटना
279. श्री शारदाचरण झा, पटना
280. डा. श्री जगन्नाथ मिश्र, पटना
281. श्री बुद्धिनाथ झा, बोकारो
282. श्री अर्धनारीश्वर, बोकारो
283. श्री तुलानन्द मिश्र, बोकारो
284. श्री रामसेवक महतो श्रीकृष्णपुरी, पटना
285. डा. श्री चेतकर झा, श्रीकृष्णपुरी, पटना
286. श्री राधानाथ झा, पटेलनगर, पटना
287. श्री योगेन्द्र नारायण झा, पुनाइचक, पटना
288. श्रीनारायण झा, वाटरटावर, पटना
289. श्री अरुण आचार्य, पटना
290. श्री अनमोल, कलकत्ता
291. डा. श्री निरंजन कुमार, दहौड़ा, सकरी, दरभंगा
292. डा. श्री नारायण झा, लोहना, मधुबनी
293. डा. श्री कुमरकान्त पाठक, झंझारपुर
294. डा. श्री अनिल कुमार झा, जानकीनगर, पटना
295. श्रीमती प्रभा मिश्र, पाहीटोल, मधबनी
296. श्री अमरनाथ झा, नवटोल, मधुबनी
297. श्री गोपालचन्द्र मिश्र, नवटोल, मधुबनी
298. डा. श्री यशोदानाथ झा, पाही टोल, मधुबनी
299. पं. श्री जितेन्द्र नारायण झा, राजे, मधुबनी
300. डा. श्री शान्तिनाथ झा, सरिसब, मधुबनी
301. प्रो. श्री मित्रनाथ मिश्र. मधुबनी
302. श्री गंगेश मिश्र, भट्टपुरा, मधुबनी
303. डा. श्री कृष्णानन्द झा, गंगौली, मधुबनी
304. श्री मोक्षानन्द मिश्र, राजे, मधुबनी
305. श्री उमापति मिश्र, गंगौली, मधुबनी
306. डा. श्री सदन मिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
307. डा. श्री कमलनाथ मिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
308. डा. श्री ललितकर झा, सरिसब, मधुबनी
309. डा. श्री सुबोध झा, रुपौली, मधुबनी
310. पं. श्री यत्रनाथ मिश्र, यमुथरि, मधुबनी
311. श्री एकनाथ झा, बिट्ठो, मधुबनी
312. डा. मिहिर कुमार ठाकुर, धर्मपुर, मधुबनी
313. प्रो. श्री प्रबोध झा, रुपौली, मधुबनी
314. प्रो. श्री मुक्तिनाथ झा, बिट्ठो, मधुबनी
315. डा. श्री गंगानाथ झा 'बुझनुक', बिट्ठो, मधुबनी
316. डा. श्री विद्यानन्द झा, बिट्टो, मधुबनी
317. श्री रणजीतमिश्र, पाहीटोल, मधुबनी
318. डा. श्री वैद्यनाथ झा, पाहीटोल, मधुबनी
319. पं. श्री शंभुनाथ झा, इसहपुर, मधुबनी
320. प्रो. श्री कपिलेश्वर झा, कंकड़बाग, पटना
321. प्रो. (श्रीमती) राजकुमारी झा, पटना
322. प्रो. (श्रीमती) इन्दिरा झा, पटना
323. श्री श्यामानन्द झा, कंकड़बाग, पटना
324. डा. श्री चन्द्रधर झा, पटना
325. प्रो. (श्रीमती) शीला चौधरी, पटना
326. श्रीमती मिथिलेश कुमार मिश्र, पटना
327. श्री श्रीशेखर झा, रिजर्व बैंक, पटना
328. श्री वसन्त कुमार झा, पटेल नगर, पटना
329. श्री सत्यनारायण झा, नयाटोला, पटना
330. श्री मदनमोहन झा, कौटिल्यविहार, पटना
331. पं. श्री आद्याचरण झा, पटना
332. श्री मधुसूदन मिश्र, आशियाना नगर, पटना
333. श्री मदनमोहन झा, श्रीकृष्णपुरी, पटना
334. डा. शालिग्राम यादव, बुद्ध मार्ग, पटना
335. पं. श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', बोरिंग रोड, पटना
336. डा. श्री हरिनारायण मिश्र, बोरिंग रोड, पटना
337. श्री रत्नेश्वर झा, बुद्ध मार्ग, पटना
338. श्री रविकान्त झा, बुद्धमार्ग, पटना
339. श्री सियाराम झा 'सारस', धनबाद
340. श्री उदय चन्द्र लाल दास, धनबाद
341. श्री अंजनी कुमार दास, धनबाद
342. श्री एन. के. झा, आरा
343. श्री एम. के. झा, पटना
344. श्री ए. के. चन्दन, श्रीगंगानगर, राजस्थान
345. घनानन्द झा, पटना

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi

Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri, Delhi